"बैनल अक़्वामी शोहरत याफ़्ता" सब से ज़ियादा पढ़ी जाने वाली वोह "सुन्नतों भरी किताब" जिसे पढ़/सुन कर अब तक लाखों मर्द व ज़न राहे रास्त पर गामज़न हो चुके हैं, दुन्या भर में खपत पूरी करने के लिये तक़रीबन सारा ही साल इस की छपाई जारी रहती है

FAIZANE SUNNAT JILD 1 (HINDI)

तख़्रीज शुदा

फ़ैज़ाने सुन्नत

(जिल्द अव्वल)

مکتبۃ المدینہ
MAKTABA TUL MADINA
MC 1286

DAWAT-E-ISLAMI

शैख़े त़रीक़त, अमीरे अहले सुन्नत, बानिये दा'वते इस्लामी, ह़ज़रते अ़ल्लामा मौलाना अबू बिलाल

دامت برکاتہم العالیہ

मुह़म्मद इल्यास अ़त्त़ार क़ादिरी रज़वी

इस किताब में जगह ब जगह दा'वते इस्लामी की बहारें खुश्बूएं लुटा रही हैं

اَلْحَمْدُ لِلّٰهِ رَبِّ الْعٰلَمِيْنَ وَ الصَّلٰوةُ وَالسَّلَامُ عَلٰى سَيِّدِ الْمُرْسَلِيْنَ اَمَّا بَعْدُ فَاَعُوْذُ بِاللّٰهِ مِنَ الشَّيْطٰنِ الرَّجِيْمِ ط بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ ط

किताब पढ़ने की दुआ़

दीनी किताब या इस्लामी सबक़ पढ़ने से पहले ज़ैल में दी हुई दुआ़ पढ़ लीजिये اِنْ شَآءَاللّٰه عَزَّوَجَلَّ जो कुछ पढ़ेंगे याद रहेगा । दुआ़ येह है :

اَللّٰهُمَّ افْتَحْ عَلَيْنَا حِكْمَتَكَ وَانْشُرْ عَلَيْنَا رَحْمَتَكَ يَا ذَاالْجَلَالِ وَالْاِكْرَام

तर्जमा : ऐ अल्लाह عَزَّوَجَلَّ ! हम पर इल्मो ह़िक्मत के दरवाज़े खोल दे और हम पर अपनी रह़मत नाज़िल फ़रमा ! ऐ अ़ज़मत और बुज़ुर्गी वाले ।

(مستطرف ج ١ ص ٤٠ دارالفکر بیروت)

नोट : अव्वल आख़िर एक-एक बार दुरूद शरीफ़ पढ़ लीजिये ।

तालिबे ग़मे मदीना
बक़ीअ़
व मग़फ़िरत
13 शव्वालुल मुकर्रम 1428 हि.

क़ियामत के रोज़ ह़सरत

फ़रमाने मुस्तफ़ा صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم : सब से ज़ियादा ह़सरत क़ियामत के दिन उस को होगी जिसे दुन्या में इल्म ह़ासिल करने का मौक़अ़ मिला मगर उस ने ह़ासिल न किया और उस शख़्स को होगी जिस ने इल्म ह़ासिल किया और दूसरों ने तो उस से सुन कर नफ़्अ़ उठाया लेकिन उस ने न उठाया (या'नी उस इल्म पर अ़मल न किया) (تاریخ دمشق لابن عساکر ج ٥١ ص ١٣٨ دارالفکر بیروت)

किताब के ख़रीदार मुतवज्जेह हों

किताब की त़बाअ़त में नुमायां ख़राबी हो या सफ़ह़ात कम हों या बाइन्डिंग में आगे पीछे हो गए हों तो मक्तबतुल मदीना से रुजूअ़ फ़रमाइये ।

اَلْحَمْدُ لِلّٰهِ رَبِّ الْعٰلَمِيْنَ وَ الصَّلٰوةُ وَ السَّلَامُ عَلٰى سَيِّدِ الْمُرْسَلِيْنَ اَمَّا بَعْدُ فَاَعُوْذُ بِاللّٰهِ مِنَ الشَّيْطٰنِ الرَّجِيْمِ ط بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ ط

मजलिसे तराजिम हिन्द (दा'वते इस्लामी)

اَلْحَمْدُ لِلّٰه عَزَّوَجَلَّ येह किताब शैख़े त़रीक़त, अमीरे अहले सुन्नत, बानिये दा'वते इस्लामी ह़ज़रते अ़ल्लामा मौलाना अबू बिलाल मुह़म्मद इल्यास अ़त़्त़ार क़ादिरी रज़वी دَامَتْ بَرَكَاتُهُمُ الْعَالِيَه ने "उर्दू" ज़बान में तह़रीर फ़रमाई है और मजलिसे तराजिम (दा'वते इस्लामी) ने इस किताब को हिन्दी रस्मुल ख़त़ में तरतीब दे कर पेश किया है और मक्तबतुल मदीना से शाएअ़ करवाया है।

इस किताब में अगर किसी जगह ग़लत़ी पाएं तो मजलिस को सफ़ह़ा और सत़र नम्बर के साथ Sms, E-mail, Whats App या Telegram के ज़रीए़ इत्तिलाअ़ दे कर सवाबे आख़िरत कमाइये।

मदनी इल्तिजा : इस्लामी बहनें डायरेक्ट राबित़ा न फ़रमाएं !!!

राबित़ा :-

सिलेक्टेड हाउस, अलिफ़ की मस्जिद के सामने, तीन दरवाज़ा, अह़मदाबाद-1, गुजरात (हिन्द)
+91 98987 32611
E-mail : hindibook@dawateislamihind.net

उर्दू से हिन्दी रस्मुल ख़त़ (लीपियांतर) ख़ाका

थ = تھ	त = ت	फ = پھ	प = پ	भ = بھ	ब = ب	अ = ا
छ = چھ	च = چ	झ = جھ	ज = ج	स = ث	ठ = ٹھ	ट = ٹ
ज़ = ذ	ढ = ڈھ	ड = ڈ	ध = دھ	द = د	ख़ = خ	ह़ = ح
श = ش	स = س	ज़ = ژ	ज़ = ز	ढ़ = ڑھ	ड़ = ڑ	र = ر
फ़ = ف	ग़ = غ	अ़ = ع	ज़ = ظ	त़ = ط	ज़ = ض	स = ص
म = م	ल = ل	घ = گھ	ग = گ	ख = کھ	क = ک	क़ = ق
ि = ئُ	ु = وُ	आ = آ	य = ی	ह = ه	व = و	न = ن

फ़ैज़ाने सुन्नत (जिल्द अव्वल)

इस जिल्द में येह 4 अबवाब शामिल हैं

ٱلْحَمْدُ لِلّٰهِ رَبِّ الْعٰلَمِيْنَ وَالصَّلٰوةُ وَالسَّلَامُ عَلٰى سَيِّدِ الْمُرْسَلِيْنَ اَمَّا بَعْدُ فَاَعُوْذُ بِاللّٰهِ مِنَ الشَّيْطٰنِ الرَّجِيْمِ بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ

नाम किताब : फ़ैज़ाने सुन्नत (जिल्द अव्वल)

मुअल्लिफ़ :

शैखे़ त़रीक़त, अमीरे अहले सुन्नत, बानिये दा'वते इस्लामी ह़ज़रते अ़ल्लामा मौलाना अबू बिलाल

मुह़म्मद इल्यास अ़त्तार क़ादिरी रज़वी دَامَتْ بَرَكَاتُهُمُ الْعَالِيَه

ता'दाद : 5100

सिने त़बाअ़त : शा'बानुल मुअ़ज़्ज़म 1440 सि. हि.

नाशिर : मक्तबतुल मदीना (दा'वते इस्लामी, हिन्द)

मक्तबतुल मदीना (हिन्द) की मुख़्तलिफ़ शाख़ें

- **देहली** :- मक्तबतुल मदीना, उर्दू मार्केट, मटिया मह़ल, जामेअ़ मस्जिद, देहली -6, फ़ोन : 011-23284560
- **अह़मदाबाद** :- फ़ैज़ाने मदीना, त्रीकोनिया बग़ीचे के सामने, मिरज़ापुर, अह़मदाबाद-1, गुजरात, फ़ोन : 9327168200
- **मुम्बई** :- फ़ैज़ाने मदीना, ग्राउन्ड फ़्लोर, 50 टन टन पुरा स्ट्रीट, खड़क, मुम्बई, महाराष्ट्र, फ़ोन : 09022177997
- **हैदराबाद** :- मक्तबतुल मदीना, मुग़ल पुरा, पानी की टांकी, हैदराबाद, तेलंगाना, फ़ोन : (040) 2 45 72 786
- **नागपुर** :- सैफ़ी नगर रोड, ग़रीब नवाज़ मस्जिद के सामने, मोमिन पुरा, नागपुर, महाराष्ट्र, फ़ोन : 9326310099
- **अजमेर** :- 19 / 216, फ़लाहे दारैन मस्जिद के क़रीब, नाला बाज़ार, स्टेशन रोड, राजस्थान, फ़ोन : 09352694586
- **हुबली** :- ए जे मुढोल कोम्पलेक्स, ए जे मुढोल रोड, ओल्ड हुबली, कर्नाटक - फ़ोन : 09900332092
- **बनारस** :- अल्लू की मस्जिद के पास, अम्बाशाह की तकिया, मदनपुरा, बनारस, यू.पी., फ़ोन : 09369023101

मदनी इल्तिजा : किसी और को येह किताब छापने की इजाज़त नहीं है।

इज्माली फ़ेहरिस्त

1) ह़म्द

2) ना'त

3) मुफ़्तियाने किराम की तक़ारीज़

4) किताब पढ़ने की निय्यतें

5) पेश लफ़्ज़

6) सौग़ाते अ़त्त़ार

7) दर्स का त़रीक़ा

8) फ़ैज़ाने बिस्मिल्लाह

9) आदाबे त़आ़म

10) पेट का क़ुफ़्ले मदीना

11) फ़ैज़ाने रमज़ान

तफ़्सीली फ़ेहरिस्त और मआख़िज़ो मराजेअ़ आख़िरी सफ़ह़ात पर हैं

मुनाजात

दर्दे दिल कर मुझे अ़त़ा या रब عَزَّوَجَلَّ
दे मेरे दर्द की दवा या रब عَزَّوَجَلَّ

लाज रख ले गुनाहगारों की
नाम रह़मान عَزَّوَجَلَّ है तेरा या रब عَزَّوَجَلَّ

ऐ़ब मेरे न खोल मह़शर में
नाम सत्तार عَزَّوَجَلَّ है तेरा या रब عَزَّوَجَلَّ

बे सबब बख़्श दे न पूछ अ़मल
नाम ग़फ़्फ़ार عَزَّوَجَلَّ है तेरा या रब عَزَّوَجَلَّ

ख़ाक कर अपने आस्ताने की
यूं हमें ख़ाक में मिला या रब عَزَّوَجَلَّ

سَبَقَت رَحمَتِی عَلٰی غَضَبِی
तू ने जब से सुना दिया या रब عَزَّوَجَلَّ

आसरा हम गुनाहगारों का
और मज़बूत़ हो गया या रब عَزَّوَجَلَّ

اَنَا عِندَ ظَنِّ عَبدِی بِی है
मेरे हर दर्द की दवा या रब عَزَّوَجَلَّ

तू ने मेरे ज़लील हाथों में
दामने मुस्त़फ़ा صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم दिया या रब عَزَّوَجَلَّ

ज़न नहीं बल्कि है यक़ीन मुझे
वोह भी तेरा दिया हुवा या रब عَزَّوَجَلَّ

होगा दुन्या में क़ब्रो मह़शर में
मुझ से अच्छा मुआ़मला या रब عَزَّوَجَلَّ

इस निकम्मे से काम ले ऐसे
येह निकम्मा हो काम का या रब عَزَّوَجَلَّ

हर भले की भलाई का सदक़ा
इस बुरे को भी कर भला या रब عَزَّوَجَلَّ

बोने वाले जो बोएं वोह काटें
येह हुवा तो मैं मर मिटा या रब عَزَّوَجَلَّ

तू ह़सन رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰى عَلَيْه को उठा ह़सन कर के
हो मआल ख़ैर ख़ातिमा या रब

(ज़ौक़े ना'त)

FRONT AFTER A 4

ना'ते पाक

शोरे महे नौ सुन कर तुझ तक मैं दवां आया
साक़ी मैं तेरे सदक़े मय दे रमज़ां आया

जन्नत को ह़रम समझा आते तो यहां आया
अब तक के हर इक का मुंह कहता हूं कहां आया

त़यबा के सिवा सब बाग़ पामाले फ़ना होंगे
देखोगे चमन वालो ! जब अ़हदे ख़ज़ां आया

सर और वोह संगे दर आंख और वोह बज़्मे नूर
ज़ालिम को वत़न का ध्यान आया तो कहां आया

कुछ ना'त के त़बक़े का आ़लम ही निराला है
सक्ते में पड़ी है अ़क़्ल चक्कर में गुमां आया

जलती थी ज़मीं कैसी थी धूप कड़ी कैसी
लो वोह क़दे बे साया अब साया कनां आया

त़यबा से हम आते हैं कहिये तो जिनां वालो
क्या देख के जीता है जो वां से यहां आया

नामे से रज़ा के अब मिट जाओ बुरे कामो
देखो मेरे पल्ले पर वोह अच्छे मियां[1] आया

---

1 : क़ुत्बुल आ़रिफ़ीन शम्सुद्दीन अबुल फ़ज़्ल ह़ज़रत सय्यिद शाह आले अह़मद अच्छे मियां क़ादिरी رَحْمَةُ اللّٰهِ تَعَالٰی عَلَيْه हुज़ूरे आ'ला ह़ज़रत رَحْمَةُ اللّٰهِ تَعَالٰی عَلَيْه के दादापीर थे।
आ'ला ह़ज़रत رَحْمَةُ اللّٰهِ تَعَالٰی عَلَيْه की अपने बुज़ुर्गों से हुस्ने अ़क़ीदत मरह़बा ! ! !

यादृदाश्त

दौराने मुतालआ ज़रूरतन अन्डर लाइन कीजिये, इशारात लिख कर सफ़्हा नम्बर नोट फ़रमा लीजिये । اِنْ شَآءَاللّٰه عَزَّوَجَلَّ इल्म में तरक़्क़ी होगी ।

उ़नवान	सफ़्हा	उ़नवान	सफ़्हा

मुफ़्तियाने किराम

की

तक़ारीज़े जलीला

तक़रीज़े जलील

मोह़सिने दा'वते इस्लामी, आ़लिमे बा अ़मल, ह़ज़रते अ़ल्लामा मौलाना मुह़म्मद इस्माईल क़ादिरी रज़वी नूरी مَدَّظِلُّهُ الْعَالِی

(शैख़ुल ह़दीस व रईसे दारुल इफ़्ता दारुल उ़लूम अम्जदिय्या)

اَلْحَمْدُ لِلّٰهِ رَبِّ الْعٰلَمِيْنَ وَالصَّلٰوةُ وَالسَّلَامُ عَلٰى سَيِّدِ الْمُرْسَلِيْنَ اَمَّا بَعْدُ

अमीरे अहले सुन्नत बानिये दा'वते इस्लामी अ़ल्लामा मौलाना मुह़म्मद इल्यास अ़त्तार क़ादिरी साहि़ब مَدَّظِلُّهُ الْعَالِی की किताबे मुस्तत़ाब **फ़ैज़ाने सुन्नत** जिल्द अव्वल (मत़्बूआ़ 1427 हिजरी) मुलाह़ज़ा करने का शरफ़ ह़ासिल हुवा जो कि चार अब्वाब पर मुश्तमिल है। मौसूफ़ की दीनी ख़िदमात का एक ज़माना मो'तरिफ़ है, आप की सअ़्ये पैहम से लाखों बे अ़मल मुसल्मान ख़ुसूसन नौ जवान न सिर्फ़ ख़ुद नेकी की राह पर गामज़न हो गए बल्कि मुबल्लिग़ बन कर दूसरों को राहे सुन्नत की त़रफ़ माइल करने लगे। येही वज्ह है कि आज मुल्क और बैरूने मुल्क दा'वते इस्लामी के मदनी क़ाफ़िले सफ़र करते दिखाई देते हैं। मेरी आख़िरी मा'लूमात के मुत़ाबिक़ इस वक़्त तक़रीबन **60** ममालिक में दा'वते इस्लामी का पैग़ाम पहुंच चुका है।

ह़ज़रत ने इस किताब में वोह बेश क़ीमत मवाद जम्अ़ किया है जो सेंकड़ों किताबों के मुत़ालए़ के बा'द ही ह़ासिल हो सकता है, येह किताब बयक वक़्त मसाइले शरइय्या की निशान देही के साथ साथ तसव्वुफ़ व ह़िक्मत के लिये भी मुफ़ीद है। اَللّٰهُمَّ زِدْ فَزِدْ। दरजनों मौज़ूआ़त पर पेश कर्दा आयाते क़ुरआनी, अह़ादीसे नबवी व अक़्वाले अकाबिरीन के साथ साथ दिलचस्प ह़िकायात ने इस किताब के ह़ुस्न में मज़ीद इज़ाफ़ा कर दिया है। अह़ादीसो रिवायात और फ़िक़्ही मसाइल के ह़वाला जात की तख़्रीज ने इस किताब को उ़लमा के लिये भी मुफ़ीद तर बना दिया है। इस बात से बहुत ख़ुशी हुई कि ह़ज़रत ने मुतअ़द्दद मक़ामात पर अकाबिरीने अहले सुन्नत رَحِمَهُمُ الله का ज़िक्रे ख़ैर भी किया है, जिस से इन की अपने उ़लमाए अकाबिरीन से वालिहाना मह़ब्बत ज़ाहिर होती है। इस ज़िक्रे ख़ैर का एक फ़ाएदा येह भी है कि हमारी आने वाली नस्लें अपने अस्लाफ़ से मुतआ़रिफ़ होती रहेंगी। अल्लाह तआ़ला इस किताब को अपनी बारगाह में क़बूलिय्यत से सरफ़राज़ फ़रमाए और हर मुसल्मान को इस का मुत़ालआ़ करने और ह़त्तल वस्अ़ इस से दर्स देने की तौफ़ीक़ दे। اٰمِين بِجَاهِ النَّبِيِّ الْاَمِين صَلَّى اللهُ تَعَالٰی عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم

محمد اسماعیل خادم الحدیث
دارالعلوم امجدیہ

17 मुह़र्रमुल ह़राम 1428
6-2-2007

तक़रीज़े जलील

शरफ़े मिल्लत, उस्ताज़ुल उ़लमा ह़ज़रते अ़ल्लामा मौलाना अ़ब्दुल ह़कीम शरफ़ क़ादिरी اطال اللّٰہ عُمرَہٗ

بِسۡمِ اللّٰهِ الرَّحۡمٰنِ الرَّحِیۡم ط نَحۡمَدُهٗ وَ نُصَلِّیۡ عَلٰی رَسُوۡلِهِ الۡكَرِیۡم

ह़दीस शरीफ़ में है . مَنۡ اَحۡیَا سُنَّتِیۡ بَعۡدَ مَا اُمِیۡتَتۡ فَلَهٗ اَجۡرُ مِائَةِ شَهِیۡدٍ जिस शख़्स ने हमारी ऐसी सुन्नत को राइज किया जिसे तर्क कर दिया गया हो उस के लिये सो शहीदों का सवाब है। इस ह़दीसे मुबारक की रोशनी में अन्दाज़ा कीजिये कि अमीरे दा'वते इस्लामी ह़ज़रत मौलाना अ़ल्लामा मुह़म्मद इल्यास अ़त्तार क़ादिरी रज़वी دامت برکاتہم العالیہ और दा'वते इस्लामी के मुबल्लिग़ीन को कितने शहीदों का सवाब मिलेगा जिन की मसाइये जमीला से लाखों अफ़राद न सिर्फ़ नमाज़ी बन गए हैं बल्कि सरकारे दो आ़लम صلی اللہ تعالٰی علیہ والہٖ وسلم की सुन्नतों पर अ़मल पैरा हो गए हैं। इस काम्याबी में जहां ह़ज़रत अमीरे दा'वते इस्लामी مدظلہ العالی की शबो रोज़ कोशिशों और उन के बयानात का दख़्ल है वहां **फ़ैज़ाने सुन्नत** का भी बड़ा अ़मल दख़्ल है, **फ़ैज़ाने सुन्नत** फ़क़ीर के अन्दाज़े के मुत़ाबिक़ हमारे मुल्क में सब से ज़ियादा शाएअ़ होने वाली किताब है। इस की ज़बान आ़म फ़हम और अन्दाज़ नासिह़ाना और मुबल्लिग़ाना है। इस वक़्त मेरे सामने 1427 हि. के छपे हुए एडीशन की पहली जिल्द है। येह जिल्द चार अब्वाब पर मुश्तमिल है :

(1) फ़ैज़ाने बिस्मिल्लाह (2) आदाबे त़आ़म (3) पेट का क़ुफ़्ले मदीना (4) फ़ैज़ाने रमज़ान

इस एडीशन में क़ाबिले क़द्र काम येह हुवा कि ह़वालों की तख़्रीज की गई है। क़ुरआने पाक, अह़ादीसे मुबारका और फ़िक़्ही इक़्तिबासात के ह़वालों ने इस की इफ़ादियत में कई गुना इज़ाफ़ा कर दिया है।

आज जब कि रोशन ख़याली और ए'तिदाल पसन्दी के अंधेरे चार सू फैल रहे हैं, मुसल्मानों के लिये सरकारे दो आ़लम صلی اللہ تعالٰی علیہ والہٖ وسلم की ता'लीमात और सुन्नतों से वाबस्तगी और इन की इशाअ़त की ज़रूरत पहले से कई सो गुना बढ़ गई है।

6, ज़ुल ह़िज्जा 1427 हि.
28, दिसम्बर 2006 ई.

तक़रीज़े जलील

ख़्वाजए इल्मो फ़न, ख़ैरुल अज़्किया, उस्ताज़ुल उ़लमा वल मशाइख़, जामेए़ मा'क़ूल व मन्क़ूल ह़ज़रते अ़ल्लामा व मौलाना ख़्वाजा मुज़फ़्फ़र हुसैन साहि़ब دَامَتْ بَرَکَاتُہُمُ الْعَالِیَہ

(शैख़ुल ह़दीस दारुल उ़लूम नूरुल ह़क़, चरा मुह़म्मद पूर, फ़ैज़आबाद, यूपी, अल हिन्द)

بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِیْمِ ० نَحْمَدُهٗ وَ نُصَلِّی عَلٰی رَسُوْلِهِ الْکَرِیْم

اَلْحَمْدُ لِلّٰہ عَزَّوَجَلَّ फ़क़ीर को येह शरफ़ व सआ़दत ह़ासिल है कि फ़क़ीर ने बहुत से उ़लमाए अहले सुन्नत की बेश बहा कुतुब पर तक़ारीज़ तह़रीर कीं । ख़ुसूसन फ़ख़्रुल अमासिल, बह़रुल उ़लूम ह़ज़रते अ़ल्लामा मुफ़्ती अफ़्ज़ल हुसैन साहि़ब मूंगीरी قُدِّسَ سِرُّہُ الرَّبَّانِی (साबिक़ सदरुल मुदर्रिसीन मन्ज़रे इस्लाम, बरेली शरीफ़) की हिन्दुस्तान से शाएअ़ होने वाली तक़रीबन तमाम कुतुब पर फ़क़ीर को तक़ारीज़ तह़रीर करने का शरफ़ ह़ासिल रहा है । **दा'वते इस्लामी** की मजलिसे **राबित़ा बिल उ़लमा वल मशाइख़** के निगरान ने जब "**फ़ैज़ाने सुन्नत**" जिल्द अव्वल (1427 हि.) का जदीद एडीशन ब ग़रज़े मुत़ालआ़ व तक़रीज़ ह़ाज़िर किया तो मेरी दिल की कलियां खिल उठीं और क़लम बरदाश्ता येह तह़रीर ह़ाज़िर की ।

क़ुरआने करीम जो कि एक मुकम्मल ज़ाबित़ए ह़यात है, जिस में सिरात़े मुस्तक़ीम की हिदायत के लिये जा ब जा "अम्र व नह्य" की शम्अ़ रोशन कर दी गई है। और لَقَدْ كَانَ لَكُمْ فِیْ رَسُوْلِ اللّٰهِ اُسْوَةٌ حَسَنَةٌ (**तरजमए कन्ज़ुल ईमान :** बेशक तुम्हें रसूलुल्लाह की पैरवी बेहतर है (پ ۲۱ سورۃ الاحزاب ۲۱) फ़रमा कर एक बेहतरीन नुमूनए अ़मल की निशान देही कर के उन की पैरवी को जुज़्वे ह़यात क़रार दिया गया है । या'नी क़ुरआने करीम एक किताब है और हुज़ूर सरापा नूर صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم के क़ौल व फ़े'ल गोया इस किताब की अ़मली तफ़्सीर है । जिस पर अ़मल कर के इन्सान ख़ाक से बुलन्द हो कर मलकूती सिफ़ात का ह़ामिल बन जाता है । रसूलुल्लाह صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم के येह अक़्वाल व अफ़्आ़ल जिन्हें **सुन्नत** कहते हैं, अह़ादीसे करीमा, अक़्वाले मशाइख़ और उ़लमाए किराम की किताबों में फैले हुए थे। हज़ारों हज़ार फ़ज़्लो करम की बरसात हो अमीरे अहले सुन्नत बानी व अमीरे दा'वते इस्लामी आ़शिक़े मदीना ह़ज़रते अ़ल्लामा व मौलाना मुह़म्मद इल्यास अ़त्तार क़ादिरी रज़वी ज़ियाई دَامَتْ بَرَکَاتُہُمُ الْقُدْسِیَّہ पर कि उन्हों ने इन ला'लो जवाहिर और गौहर पारों को चुन चुन कर यकजा फ़रमा दिया और "**फ़ैज़ाने सुन्नत**" के ह़सीन नाम से मौसूम कर के यादे नबी صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم में धड़क्ने वाले दिलों की ख़िदमत में पेश फ़रमाया । ज़बानो बयान की रवानी और त़र्ज़े तह़रीर की शीरीनी के साथ जब येह किताब सामने आई तो लोग इसे बरसती आंखों और तरसते दिलों के साथ पढ़ने और इस पर अ़मल करने लगे ।

बन्दए नाचीज़ ख़ुद भी इस किताब से इतना मुतअस्सिर हुवा कि जब इस का पहला एडीशन मुझे मिला तो बा वुज़ू भीगी आंखों से रिह़ल पर रख कर पढ़ता रहा और बार बार पढ़ता रहा। और अब तो येह जदीद एडीशन कुछ और ही ख़ूबियों के साथ बन संवर कर सामने आया है। ह़वाला जात से मुरस्सअ़, तख़्रीजात से आरास्ता और मज़ीद इज़ाफ़ात से सजा हुवा है। नीज़ इस किताब की एक ख़ास और अछूती ख़ूबी येह है कि इस में जगह ब जगह तब्लीग़े क़ुरआनो सुन्नत की आ़लमगीर ग़ैर सियासी तह़रीक, **दा'वते इस्लामी** के सुन्नतों की तरबियत के **मदनी क़ाफ़िलों** की "ईमान अफ़रोज़ बहारें" अपनी ख़ुश्बूएं लुटा रही हैं।

मेरी मा'लूमात के मुताबिक़ कसीरुल इशाअ़त होने के ए'तिबार से येह पहली उर्दू किताब है जो देखते ही देखते दुन्या के कई ममालिक में पहुंच गई। सुनने में आया है कि **दा'वते इस्लामी** में ऐसे ऐसे दीवाने भी हैं कि तक़रीबन साढ़े पन्दरह सो सफ़ह़ात पर मुश्तमिल किताब **फ़ैज़ाने सुन्नत** (जिल्द अव्वल) उन में से किसी ने 12 दिन में तो किसी ने फ़क़त़ सात अय्याम में मुकम्मल पढ़ ली। इस बात से इस किताबे मुस्तत़ाब की ख़ूबियों और तह़रीरे दिल पज़ीर की चाश्नियों का ब ख़ूबी अन्दाज़ा लगाया जा सकता है। मेरी अपील है कि लोग इसे ख़रीद कर अपने घर के हर त़ाक़ पर सजाए रखें ताकि जहां से जी चाहे इसे ह़ासिल कर के पढ़ते रहें। दोस्तों को बत़ौरे तोह़फ़ा ख़रीद कर पेश करें। बहन, बेटी की शादी के मौक़अ़ पर बत़ौरे जहेज़ इस किताब को इ़नायत करें। बिल ख़ुसूस अहले सर्वत इस किताब को ख़रीद कर मसाजिद, मदारिस और ख़ानक़ाहों में वक़्फ़ करें। तमाम मुबल्लिग़ीन व मुबल्लिग़ाते दा'वते इस्लामी और अ़वाम व ख़वास भी इस का दर्स घर घर, मस्जिद मस्जिद, दुकान दुकान, कारख़ानों, बाज़ारों और चौकों पर जारी करें।

ह़दीस शरीफ़ में आया है कि जो हमारी तर्क शुदा किसी सुन्नत को राइज करे, उस के लिये सो शहीदों का सवाब है। आइये हम और आप तर्क शुदा सुन्नतों पर अ़मल करने और इस को राइज करने का अ़ह्द करें और इस अ़ह्द को निबाह कर सो शहीदों का सवाब नहीं बल्कि हज़ारों शहीदों का सवाब ह़ासिल करें।

ख़्वाजा मुज़फ़्फ़र हुसैन रज़वी, 26 मुह़र्रमुल ह़राम, 1428 सि.हि.

शैख़ुल ह़दीस दारुल उ़लूम नूरुल ह़क़, चरा मुह़म्मद पूर, फ़ैज़आबाद (यूपी, अल हिन्द)

اَلْحَمْدُ لِلّٰهِ رَبِّ الْعٰلَمِيْنَ وَ الصَّلٰوةُ وَالسَّلَامُ عَلٰى سَيِّدِ الْمُرْسَلِيْنَ
اَمَّا بَعْدُ فَاَعُوْذُ بِاللّٰهِ مِنَ الشَّيْطٰنِ الرَّجِيْمِ ط بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ ط

"या अल्लाह ! फै़ज़ाने सुन्नत आ़म हो जाए" के तेईस[23] हुरूफ़ की निस्बत से इस किताब को पढ़ने की 23 निय्यतें

फ़रमाने मुस्तफ़ा صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم : نِيَّةُ الْمُؤْمِنِ خَيْرٌ مِّنْ عَمَلِهٖ۔

"मुसल्मान की निय्यत उस के अ़मल से बेहतर है।"

(طبرانی معجم کبیر ج٦ ص١٨٥ حدیث٥٩٤٢)

दो मदनी फूल : (1) बिग़ैर अच्छी निय्यत के किसी भी अ़मले ख़ैर का सवाब नहीं मिलता।

(2) जितनी अच्छी निय्यतें ज़ियादा, उतना सवाब भी ज़ियादा।

﴾1﴿ हर बार ह़म्द व ﴾2﴿ सलात और ﴾3﴿ तअ़व्वुज़ व ﴾4﴿ तस्मिया से आग़ाज़ करूंगा। (इसी सफ़हे पर ऊपर दी हुई दो अ़रबी इबारात पढ़ लेने से चारों[4] निय्यतों पर अ़मल हो जाएगा) ﴾5﴿ रिज़ाए इलाही عَزَّوَجَلَّ के लिये इस किताब का अव्वल ता आख़िर मुत़ालआ़ करूंगा ﴾6﴿ ह़त्तल वस्अ़ इस का बा वुज़ू और ﴾7﴿ क़िब्ला रू मुत़ालआ़ करूंगा ﴾8﴿ कुरआनी आयात और ﴾9﴿ अह़ादीसे मुबारका की ज़ियारत करूंगा ﴾10﴿ जहां जहां "**अल्लाह**" का नाम पाक आएगा वहां عَزَّوَجَلَّ और ﴾11﴿ जहां जहां "सरकार" का इस्मे मुबारक आएगा वहां صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم पढ़ूंगा ﴾12﴿ इस रिवायत "عِنْدَ ذِكْرِ الصَّالِحِيْنَ تَنَزَّلُ الرَّحْمَةُ۔" या'नी नेक लोगों के ज़िक्र के वक़्त रह़मत नाज़िल होती है।"

(حِليةُ الاولیاء، حدیث ۱۰۷۵۰، ج ۷ ص ۳۳۵) पर अ़मल करते हुए इस किताब में दिये गए बुज़ुर्गाने दीन के वाक़िआत दूसरों को सुना कर ज़िक्रे सालिहीन की बरकतें लूटूंगा ﴾13﴿ (अपने ज़ाती नुस्ख़े पर) इन्दज़्ज़रूरत ख़ास ख़ास मक़ामात अन्डर लाइन करूंगा ﴾14﴿ (अपने ज़ाती नुस्ख़े के) "याद दाश्त" वाले सफ़्हे पर ज़रूरी निकात लिखूंगा ﴾15﴿ दूसरों को येह किताब पढ़ने की तरग़ीब दिलाऊंगा ﴾16﴿ इस ह़दीसे पाक "تَهَادَوْا تَحَابُّوْا" या'नी एक दूसरे को तोह़फ़ा दो आपस में मह़ब्बत बढ़ेगी ।" (مُؤَطّا امام مالك ج ۲، ص ۴۰۷، رقم: ۱۷۳۱) पर अ़मल की निय्यत से (एक या ह़स्बे तौफ़ीक़) येह किताब ख़रीद कर दूसरों को तोह़फ़तन दूंगा (उ़लमा व अइम्मा को बिल ख़ुसूस पेश कीजिये, اِنْ شَآءَاللّٰه عَزَّوَجَلَّ सवाब ज़ियादा मिलेगा) ﴾17﴿ इस किताब के मुत़ालए का सवाब सारी उम्मत को ईसाल करूंगा ﴾18﴿ किताबत वग़ैरा में शरई ग़लती मिली तो नाशिरीन को तह़रीरी त़ौर पर मुत्त़लअ़ करूंगा (मुसन्निफ़ या नाशिरीन वग़ैरा को किताबों की अग़लात़ सिर्फ़ ज़बानी बताना ख़ास मुफ़ीद नहीं होता) ﴾19﴿ इस किताब से दर्स दिया करूंगा ﴾20﴿ हर साल एक बार येह किताब पूरी पढ़ा करूंगा ﴾21﴿ जो मस्अला समझ में नहीं आएगा उस के लिये आयते करीमा فَسْــَٔلُوْۤا اَهْلَ الذِّكْرِ اِنْ كُنْتُمْ لَا تَعْلَمُوْنَ **तरजमए कन्ज़ुल ईमान :** तो ऐ लोगो इ़ल्म वालों से पूछो अगर तुम्हें इ़ल्म नहीं । (پ ۱۴ النحل، ۴۳) पर अ़मल करते हुए उ़लमा से रुजूअ़ करूंगा ﴾22﴿ जिस मस्अले में दुश्वारी होगी उस को बार बार पढ़ूंगा ﴾23﴿ जो नहीं जानते उन्हें सिखाऊंगा ।

اَلۡحَمۡدُ لِلّٰہِ رَبِّ الۡعٰلَمِیۡنَ وَ الصَّلٰوۃُ وَالسَّلَامُ عَلٰی سَیِّدِ الۡمُرۡسَلِیۡنَ
اَمَّا بَعۡدُ فَاَعُوۡذُ بِاللّٰہِ مِنَ الشَّیۡطٰنِ الرَّجِیۡمِ ؕ بِسۡمِ اللّٰہِ الرَّحۡمٰنِ الرَّحِیۡمِ ؕ

पेश लफ़्ज़

अज़ : शैखे़ त़रीक़त अमीरे अहले सुन्नत बानिये दा'वते इस्लामी ह़ज़रते अ़ल्लामा मौलाना अबू बिलाल मुह़म्मद इल्यास अ़त्तार क़ादिरी रज़वी دَامَتۡ بَرَکَاتُہُمُ الۡعَالِیَہ

अल्लाह عَزَّوَجَلَّ के मह़बूब, दानाए ग़ुयूब, मुनज़्ज़हुन अ़निल उ़यूब صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیۡہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم का फ़रमाने जन्नत निशान है : जो शख़्स मेरी उम्मत तक कोई इस्लामी बात पहुंचाए ताकि उस से सुन्नत क़ाइम की जाए या उस से बद मज़्हबी दूर की जाए तो वोह जन्नती है। (حلیۃ الاولیاء ج ١٠ ص ٤٥ حدیث ١٤٤٦٦) तब्लीग़े क़ुरआनो सुन्नत की आ़लमगीर ग़ैर सियासी तह़रीक **दा'वते इस्लामी** के मदनी कामों में से एक मदनी काम येह भी है कि हर इस्लामी भाई रोज़ाना **दो दर्स** (मस्जिद, घर वग़ैरा में) दे या सुने। इस दर्स वाले मदनी काम के लिये अच्छी अच्छी निय्यतों के साथ **फ़ैज़ाने सुन्नत** (जिल्द अव्वल) हाज़िर करने की सआ़दत ह़ासिल की है। इस किताबे मुस्तत़ाब के ज़रीए़ खू़ब दर्स दीजिये या'नी पढ़ पढ़ कर मुसल्मानों को सुनाइये अगर किसी का दिल चोट खा गया और वोह क़ुरआनो सुन्नत की राह पर आ गया तो اِنۡ شَآءَ اللّٰہ عَزَّوَجَلَّ आप का भी बेड़ा पार हो जाएगा। **मीठे मीठे आक़ा**, मक्की मदनी मुस्त़फ़ा صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیۡہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم का फ़रमाने फ़ज़ीलत निशान है : "अगर **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ तेरे ज़रीए़ किसी एक शख़्स को भी हिदायत दे तो वोह तेरे लिये सुर्ख़ ऊंटों से बेहतर है।"

(صحیح مسلم ص ١٣١١ الحدیث ٢٤٠٦ دار ابن حزم بیروت)

फ़ैज़ाने सुन्नत (जिल्द अव्वल) चार अब्वाब और तक़रीबन 1572 सफ़ह़ात पर मुश्तमिल है। **दा'वते इस्लामी** एक ऐसी सुन्नतों भरी तह़रीक है जिस में उ़लमा व ज़ुअ़मा के साथ साथ अ़वाम का भी एक जम्मे ग़फ़ीर है। अ़वाम की सहूलत को मद्दे नज़र रखते हुए **फ़ैज़ाने सुन्नत** (जिल्द अव्वल) को ह़त्तल इम्कान आसान पैराए में लिखने की सअ़्य (या'नी कोशिश) की है और कई मक़ामात पर क़स्दन दक़ीक़ (या'नी मुश्किल) अल्फ़ाज़ लिख कर हिलालैन में इस के मा'ना भी लिख दिये हैं ताकि कम पढ़े लिखे इस्लामी भाइयों और इस्लामी बहनों को दीगर इस्लामी कुतुब

का मुत़ालआ़ करने में मदद ह़ासिल हो। किताबे हाज़ा को अग़्लात़ से बचाने की बहुत कोशिश की गई है ताहम मुम्किन है कि ग़लत़ियां रह गई हों। लिहाज़ा इस में अगर कोई शरई ग़लत़ी पाएं तो बराए मेह्रबानी मुझे ज़रूर तह़रीरी त़ौर पर ख़बरदार फ़रमाएं और ख़ुद को सवाब का ह़क़दार बनाएं। اِنْ شَآءَاللّٰه عَزَّوَجَلَّ सगे मदीना عُفِیَ عَنْهُ को हटधर्म नहीं शुक्रिय्या के साथ रुजूअ़ करने वाला पाएंगे।

आख़िर में सुन्नी आ़लिमों पर मब्नी **दा'वते इस्लामी** के एक अहम शो'बे, **अल मदीनतुल इल्मिय्या** के उ़लमाए किराम كَثَّرَهُمُ اللّٰهُ تَعَالٰی का बेह़द शुक्र गुज़ार हूं कि उन्हों ने बिल इस्तीआ़ब (या'नी ह़र्फ़ ब ह़र्फ़) तफ़्तीश फ़रमाई, रिवायात की तख़्रीज की और जगह ब जगह ह़वाला जात से मुज़य्यन कर के **फ़ैज़ाने सुन्नत** (जिल्द अव्वल) को **दा'वते इस्लामी** के मुबल्लिग़ीन व मुबल्लिग़ात के साथ साथ उ़लमा व वाइज़ीन, ख़ुत़बा व मुक़र्रिरीन और मुसन्निफ़ीन व मुअल्लिफ़ीन के लिये मुफ़ीद तरीन बना दिया। جَزَى اللّٰهُ عَنَّا عُلَمَائَنَا اَحْسَنَ الْجَزَاءِ (या'नी : **अल्लाह** तआ़ला हमारी त़रफ़ से हमारे उ़लमा को अच्छी जज़ा अ़त़ा फ़रमाए)।

اٰمِين بِجَاهِ النَّبِيِّ الْاَمِين صَلَّى اللّٰه تعالٰى عليه واٰله وسلّم

दुआ़ए अ़त्त़ार

या रब्बे मुस्त़फ़ा صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم जो कोई 163 अय्याम के अन्दर अन्दर **फ़ैज़ाने सुन्नत** (जिल्द अव्वल) को मुकम्मल पढ़ ले उसे ईमान पर इस्तिक़ामत, सकरात में सरवरे काएनात صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم की ज़ियारत, क़ब्रो ह़श्र में राह़त और अपनी रह़मत से बे ह़िसाब मग़्फ़िरत से नवाज़ कर जन्नतुल फ़िरदौस में अपने मदनी ह़बीब صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم का पड़ोस इनायत फ़रमा और सगे मदीना عُفِیَ عَنْهُ, मुआ़विनीन, मुफ़्तिशीन उ़लमाए किराम, निगरान व अराकीने मजलिसे मक्तबतुल मदीना और मक्तबतुल मदीना के मदनी अ़मले के ह़क़ में भी येह तमाम दुआ़एं क़बूल कर और सारी उम्मत की मग़्फ़िरत फ़रमा। اٰمِين بِجَاهِ النَّبِيِّ الْاَمِين صَلَّى اللّٰه تعالٰى عليه واٰله وسلّم

ग़मे मदीना व बक़ीअ़
व बिला ह़िसाब मग़्फ़िरत व
जन्नतुल फ़िरदौस में
सरकार के पड़ोस का
त़लब गार अ़त्त़ारे गुनहगार

11 रमज़ानुल मुबारक 1427 सि.हि.

सौग़ाते अ़त्तार

या रब्बे मुस्तफ़ा عَزَّوَجَلَّ ! **फ़ैज़ाने सुन्नत** (जिल्द अव्वल) को अपनी बारगाहे अ़ज़मत में क़बूल फ़रमा और इस का सवाब मेरे नाक़िस अ़मल के मुताबिक़ नहीं अपनी कामिल रह़मत के शायाने शान मर्ह़मत फ़रमा। **या अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ ! इस का सवाब मेरी त़रफ़ से अपने मदनी ह़बीब صَلَّى اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم को इनायत फ़रमा। **या अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ ! इस का सवाब जनाबे रिसालते मआब صَلَّى اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم के तु़फ़ैल जुम्ला अम्बिया व मुर्सलीन عَلَیْہِمُ الصَّلٰوۃُ وَالسَّلَام, सह़ाबा व ताबेईन رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْھُم, आइम्मए मुज्तहिदीन, उ़लमाए कामिलीन, मशाइख़े आ़मिलीन और तमाम बुज़ुर्गाने दीन عَلَیْھِم رَحمَۃُ اللّٰہِ الْمَتِیْن को पहुंचा। **या अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ ! इस का सवाब अइम्मए मज़ाहिबे अर्बआ़, पेश्वायाने सलासिले अर्बआ़ عَلَیْھِمُ الرَّحْمَۃ ख़ुसूसन सय्यिदुना इमामे आ'ज़म عَلَیْہِ رَحْمَۃُ اللّٰہِ الْاَکْرَم, सय्यिदुना ग़ौसे आ'ज़म عَلَیْہِ رَحْمَۃُ اللّٰہِ الْاَعْظَم, सय्यिदुना मुजद्दिदे आ'ज़म इमाम अह़मद रज़ा ख़ान عَلَیْہِ رَحمَۃُ الرَّحْمٰن, सय्यिदी व मुर्शिदी क़ुत़्बे मदीना मौलाना ज़ियाउद्दीन मदनी عَلَیْہِ رَحمَۃُ اللّٰہِ الْغَنِی, मेरे वालिदैन करीमैन رَحْمَۃُ اللّٰہِ تعالٰی عَلَیْھِما, मुफ़्तिये दा'वते इस्लामी अलह़ाज अल ह़ाफ़िज़ मुह़म्मद फ़ारूक़ अल अ़त्तारी अल मदनी عَلَیْہِ رَحمَۃُ اللّٰہِ الْغَنِی, बुलबुले रौज़ए रसूल ह़ाजी मुह़म्मद मुश्ताक़ अ़त्तारी عَلَیْہِ رَحْمَۃُ اللّٰہِ الْبَارِی और तमाम फ़ौत शुदा **दा'वते इस्लामी** वालों और वालियों और हर मुसल्मान जिन्नो इन्स को पहुंचा। **या अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ ! बिल ख़ुसूस इस का सवाब दा'वते इस्लामी के हर उस मुबल्लिग़ व मुबल्लिग़ा को पहुंचा जो कम अज़ कम 40 **रोज़** तक **फ़ैज़ाने सुन्नत** जिल्द अव्वल से रोज़ाना **दो दर्स** देने की सआ़दत ह़ासिल करे।

ग़मे मदीना व बक़ीअ़
व बिला ह़िसाब मग़्फ़िरत व
जन्नतुल फ़िरदौस में
सरकार के पड़ोस का
त़लब गार अ़त्तारे गुनहगार

11 रमज़ानुल मुबारक 1427 सि.हि.

اٰمِین بِجَاہِ النَّبِیِّ الْاَمِین صَلَّی اللّٰہ تعالٰی علیہ واٰلہٖ وسلّم

اَلْحَمْدُ لِلّٰہِ رَبِّ الْعٰلَمِیْنَ وَالصَّلٰوۃُ وَالسَّلَامُ عَلٰی سَیِّدِ الْمُرْسَلِیْنَ
اَمَّا بَعْدُ فَاَعُوْذُ بِاللّٰہِ مِنَ الشَّیْطٰنِ الرَّجِیْمِ ط بِسْمِ اللّٰہِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِیْمِ ط

"मुझे दा'वते इस्लामी से प्यार है" के बाईस हुरूफ़ की निस्बत से दर्से फ़ैज़ाने सुन्नत के 22 मदनी फूल

1 **फ़रमाने मुस्त़फ़ा** صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم : "जो शख़्स मेरी उम्मत तक कोई इस्लामी बात पहुंचाए ताकि उस से सुन्नत क़ाइम की जाए या उस से बद मज़्हबी दूर की जाए तो वोह **जन्नती** है।"

(حِلْیَۃُ الْاولیاء ج ۱۰ ص ۴۵ رقم ۱۴۴۶۶)

2 **सरकारे** मदीना صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने इर्शाद फ़रमाया : "**अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ उस को तरो ताज़ा रखे जो मेरी ह़दीस को सुने, याद रखे और दूसरों तक पहुंचाए।"

(سُنَنِ ترمِذی ج ۴ ص ۲۹۸ حدیث ۲۶۶۵)

3 **ह़ज़रते** सय्यिदुना इदरीस عَلٰی نَبِیِّنَا وَعَلَیْہِ الصَّلٰوۃُ وَالسَّلَام के नामे मुबारक की एक ह़िक्मत येह भी है के कुतुबे इलाहिय्यह की कस्रते दर्सो तदरीस के बाइस आप عَلٰی نَبِیِّنَا وَعَلَیْہِ الصَّلٰوۃُ وَالسَّلَام का नाम **इदरीस** हुवा। (تفسیرکبیر ج ۷ ص ۵۵۰ ، تفسیر الحسنات ج ۴ ص ۴۸)

4 **ह़ुज़ूरे ग़ौसे** पाक رَحْمَۃُ اللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہ फ़रमाते हैं : دَرَسْتُ الْعِلْمَ حَتّٰی صِرْتُ قُطْبًا या'नी मैं ने इल्म का **दर्स** लिया यहां तक के मक़ामे क़ुत़्बिय्यत पर फ़ाइज़ हो गया। (क़सीदए ग़ौसिय्या)

5 **फ़ैज़ाने सुन्नत** से दर्स देना भी दा'वते इस्लामी का एक मदनी काम है। घर, मस्जिद, दुकान, स्कूल, कॉलेज, चौक वग़ैरा में

वक़्त मुक़र्रर कर के रोज़ाना दर्स के ज़रीए़ ख़ूब ख़ूब सुन्नतों के **मदनी फूल** लुटाइये और ढेरों सवाब कमाइये।

6 **फ़ैज़ाने सुन्नत** से रोज़ाना कम अज़ कम **दो दर्स** देने या सुनने की सआ़दत ह़ासिल कीजिये। (इन दो में एक "घर दर्स" ज़रूर हो)

7 पारह 28 **सूरतुत्तह़रीम** की छटी आयत में इर्शाद होता है :

يٰۤاَيُّهَا الَّذِيْنَ اٰمَنُوْا قُوْۤا اَنْفُسَكُمْ وَ اَهْلِيْكُمْ نَارًا وَّ قُوْدُهَا النَّاسُ وَ الْحِجَارَةُ

तरजमए कन्ज़ुल ईमान : ऐ ईमान वालो ! अपनी जानों और अपने घर वालों को उस आग से बचाओ जिस के ईंधन आदमी और पथ्थर हैं।

अपने आप को और अपने घर वालों को दोज़ख़ की आग से बचाने का एक ज़रीआ़ **फ़ैज़ाने सुन्नत** का दर्स भी है। (दर्स के इ़लावा दा'वते इस्लामी के इशाअ़ती इदारे मक्तबतुल मदीना से जारी कर्दा सुन्नतों भरे बयान या मदनी मुज़ाकरे की एक केसिट या V.C.D भी घर वालों को सुनाइये)

8 **ज़िम्मेदार** घड़ी का वक़्त मुक़र्रर कर के रोज़ाना चौकदर्स का एहतिमाम करें मसलन : रात 9 बजे **मदीना चौक** (साढ़े नव बजे) **बग़दादी चौक** में वग़ैरा। छुट्टी वाले दिन एक से ज़ियादा मक़ामात पर चौक दर्स का एहतिमाम कीजिये। (मगर हुक़ूक़े आ़म्मा तलफ़ न हों मसलन आप की वज्ह से मुसल्मानों का रास्ता न रुके वरना गुनहगार होंगे)

9 **दर्स** के लिये वोह नमाज़ मुन्तख़ब कीजिये जिस में ज़ियादा से ज़ियादा इस्लामी भाई शरीक हो सकें।

10 **दर्स** वाली नमाज़ उसी मस्जिद की पहली सफ़ में तक्बीरे ऊला के साथ **बा जमाअ़त** अदा फ़रमाइये।

11 **मेह़राब** से हट कर (सेह़्न वग़ैरा में) कोई ऐसी जगह दर्स के लिये मख़्सूस कर लीजिये जहां दीगर नमाज़ियों और तिलावत करने वालों को दुश्वारी न हो।

12 जै़ली मुशावरत के निगरान को चाहिये के अपनी मस्जिद में दो **ख़ैर ख़्वाह** मुक़र्रर करे जो दर्स (बयान) के मौक़अ़ पर जाने वालों को नरमी से रोकें और सब को क़रीब क़रीब बिठाएं।

13 **पर्दे में पर्दा** किये दो ज़ानू बैठ कर **दर्स** दीजिये। अगर सुनने वाले ज़ियादा हों तो खड़े हो कर या माईक पर देने में भी ह़रज नहीं जब कि किसी एक भी नमाज़ी या तिलावत करने वाले वग़ैरा को तश्वीश न हो।

14 आवाज़ न तो ज़ियादा बुलन्द हो और न ही बिल्कुल आहिस्ता, ह़त्तल इम्कान इतनी आवाज़ से दर्स दीजिये के सिर्फ़ ह़ाज़िरीन सुन सकें। इस बात की हमेशा एह़तियात़ फ़रमाइये कि दर्सो बयान की आवाज़ से किसी सोए हुए या किसी नमाज़ी या मश्ग़ूले तिलावत वग़ैरा को तक्लीफ़ न हो।

15 **दर्स** हमेशा ठहर ठहर कर और धीमे अन्दाज़ में दीजिये।

16 **जो** कुछ **दर्स** देना है पहले उस का कम अज़ कम एक बार मुत़ालआ़ कर लीजिये ताकि ग़लत़ियां न हों।

17 **फ़ैज़ाने सुन्नत** के मुअ़र्रब अल्फ़ाज़ ए'राब के मुत़ाबिक़ ही अदा कीजिये इस त़रह़ اِنْ شَآءَاللّٰہ عَزَّوَجَلَّ **तलफ़्फ़ुज़** की दुरुस्त अदाएगी की आ़दत बनेगी।

18 **ह़म्दो सलात,** दुरूदो सलाम के दोनों सीग़े, आयते दुरूद और इख़्तितामी आयात वग़ैरा किसी सुन्नी आ़लिम या क़ारी को ज़रूर सुना दीजिये। इसी त़रह़ अ़रबी दुआ़एं वग़ैरा जब तक उ़लमाए अहले सुन्नत को न सुना लें अकेले में भी न पढ़ा करें।

19 **फ़ैज़ाने सुन्नत** के इलावा दा'वते इस्लामी के इशाअ़ती इदारे मक्तबतुल मदीना से शाएअ़ होने वाले **मदनी रसाइल** से भी **दर्स** दे सकते हैं।[1]

20 **दर्स** मअ़ इख़्तितामी दुआ़ सात मिनट के अन्दर अन्दर मुकम्मल कर लीजिये।

21 हर मुबल्लिग़ को चाहिये कि वोह **दर्स का त़रीक़ा,** बा'द की तरग़ीब और **इख़्तितामी दुआ़** ज़बानी याद कर ले।

22 **दर्स** के त़रीक़े में इस्लामी बहनें ह़स्बे ज़रूरत तरमीम कर लें।

1 : अमीरे अहले सुन्नत دَامَتْ بَرَكَاتُهُمُ الْعَالِیَه के रसाइल के इलावा किसी और किताब से दर्स की इजाज़त नहीं। **मर्कज़ी मजलिसे शूरा**

फ़ैज़ाने सुन्नत से दर्स देने का त़रीक़ा

तीन बार इस त़रह़ ए'लान फ़रमाइये : "क़रीब क़रीब तशरीफ़ लाइये।" पर्दे में पर्दा किये दो ज़ानू बैठ कर इस त़रह़ इब्तिदा कीजिये :

(माइक इस्ति'माल न करें, बिग़ैर माइक के भी आवाज़ धीमी रखें, किसी नमाज़ी वग़ैरा को तश्वीश न हो)

اَلْحَمْدُ لِلّٰہِ رَبِّ الْعٰلَمِیْنَ وَالصَّلٰوۃُ وَالسَّلَامُ عَلٰی سَیِّدِ الْمُرْسَلِیْنَ
اَمَّا بَعْدُ فَاَعُوْذُ بِاللّٰہِ مِنَ الشَّیْطٰنِ الرَّجِیْمِ ؕ بِسْمِ اللّٰہِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِیْمِ ؕ

इस के बा'द इस त़रह़ दुरूदो सलाम पढ़ाइये :

اَلصَّلٰوۃُ وَالسَّلَامُ عَلَیْکَ یَا رَسُوْلَ اللّٰہ وَعَلٰی اٰلِکَ وَاَصْحٰبِکَ یَا حَبِیْبَ اللّٰہ

اَلصَّلٰوۃُ وَالسَّلَامُ عَلَیْکَ یَا نَبِیَّ اللّٰہ وَعَلٰی اٰلِکَ وَاَصْحٰبِکَ یَا نُوْرَ اللّٰہ

अगर मस्जिद में हैं तो इस त़रह़ **ए'तिकाफ़** की निय्यत करवाइये :

نَوَیْتُ سُنَّتَ الْاِعْتِکَاف

(**तरजमा :** मैं ने सुन्नते ए'तिकाफ़ की निय्यत की)

फिर इस त़रह़ कहिये, **प्यारे प्यारे इस्लामी भाइयो !** निगाहें नीची किये तवज्जोह के साथ रिज़ाए इलाही के लिये इल्मे दीन ह़ासिल करने की निय्यत से "**फ़ैज़ाने सुन्नत**" का दर्स सुनिये। इधर उधर देखते हुए, ज़मीन पर उंगली से खेलते हुए, लिबास बदन या बालों वग़ैरा को सहलाते हुए सुनने से हो सकता है इस की बरकतें जाती रहें। (बयान के आग़ाज़ में भी क़रीब क़रीब आ जाइये कह कर इसी अन्दाज़ में रग़बत दिलाइये और अच्छी अच्छी निय्यतें भी करवाइये) येह कहने के बा'द **फ़ैज़ाने सुन्नत** से देख कर **दुरूद शरीफ़** की एक फ़ज़ीलत बयान कीजिये। फिर कहिये :

صَلُّوْا عَلَی الْحَبِیْب ! صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلٰی مُحَمَّد

जो कुछ लिखा हुवा है वोही पढ़ कर सुनाइये। आयात व अ़रबी इबारात का सिर्फ़ तरजमा पढ़िये, लिखे हुए मज़्मून का अपनी राय से हरगिज़ ख़ुलासा मत कीजिये।

दर्स के आख़िर में इस त़रह़ तरग़ीब दिलाइये

(हर मुबल्लिग़ को चाहिये कि ज़बानी याद कर ले और दर्सो बयान के आख़िर में बिला कमी बेशी इसी त़रह़ तरग़ीब दिलाया करे)

ख़ौफ़े ख़ुदा व इश्क़े मुस्त़फ़ा के ह़ुसूल के लिये हर सनीचर को इशा की नमाज़ के बा'द अमीरे अहले सुन्नत का मदनी मुज़ाकरा देखने सुनने और हर जुमे'रात मग़रिब की नमाज़ के बा'द आ़शिक़ाने रसूल की मदनी तह़रीक, दा'वते इस्लामी के हफ़्तावार सुन्नतों भरे इज्तिमाअ़ में ब निय्यते सवाब सारी रात गुज़ारने की मदनी इल्तिजा है, इशा के बा'द बेशक वहीं आराम फ़रमा लीजिये और **अल्लाह** पाक तौफ़ीक़ दे तो तहज्जुद भी अदा कीजिये, हर माह कम अज़ कम तीन दिन के **मदनी क़ाफ़िले** में सुन्नतों भरा सफ़र और रोज़ाना **फ़िक्रे मदीना** के ज़रीए़ "नेक बनने का नुस्ख़ा" बनाम **मदनी इन्आ़मात** का रिसाला पुर कर के हर इस्लामी माह की पहली तारीख़ को अपने यहां के ज़िम्मेदार को जम्अ़ करवाने का मा'मूल बना लीजिये, اِنْ شَآءَاللّٰه عَزَّوَجَلَّ इस की बरकत से पाबन्दे सुन्नत बनने, गुनाहों से नफ़रत करने और **ईमान की ह़िफ़ाज़त** के लिये कुढ़ने का ज़ेह्न बनेगा।

आख़िर में ख़ुशूओ़ ख़ुज़ूअ़ (या'नी जिस्म व दिल की आ़जिज़ी) और क़बूलिय्यत के यक़ीन के साथ दुआ़ में हाथ उठाने के आदाब बजा लाते हुए बिला कमी बेशी इस त़रह़ दुआ़ मांगिये :

اَلْحَمْدُ لِلّٰهِ رَبِّ الْعٰلَمِيْنَ ۝ وَ الصَّلٰوةُ وَالسَّلَامُ عَلٰى سَيِّدِ الْمُرْسَلِيْنَ

या रब्बे मुस्त़फ़ा عَزَّوَجَلَّ ! ब तुफ़ैले मुस्त़फ़ा صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم हमारी, हमारे मां बाप की और सारी उम्मत की मग़्फ़िरत फ़रमा। **या अल्लाह** पाक ! दर्स की ग़लतियां और तमाम गुनाह मुआ़फ़ फ़रमा, हमें आ़शिक़े रसूल, परहेज़ गार और मां बाप का फ़रमां बरदार बना। **या अल्लाह** पाक ! हमें मदनी इन्आ़मात पर अ़मल करने, मदनी क़ाफ़िलों में सफ़र करने और नेकी की दा'वत की धूमें मचाने की तौफ़ीक़ अ़ता फ़रमा। **या अल्लाह** पाक ! मुसल्मानों को बीमारियों, क़र्ज़ दारियों, बे रोज़गारियों, बे औलादियों, झूटे मुक़द्दमों और त़रह़ त़रह़ की परेशानियों से नजात अ़ता फ़रमा। **या अल्लाह** पाक ! इस्लाम का बोलबाला कर। **या अल्लाह** पाक ! हमें दा'वते इस्लामी के मदनी माह़ोल में इस्तिक़ामत अ़ता फ़रमा। **या अल्लाह** पाक ! हमें ज़ेरे गुम्बदे ख़ज़रा जल्वए मह़बूब صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم में शहादत, जन्नतुल बक़ीअ़ में मदफ़न और जन्नतुल फ़िरदौस में अपने मदनी ह़बीब صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم का पड़ोस नसीब फ़रमा। **या अल्लाह** पाक ! मदीने की ख़ुश्बूदार ठन्डी ठन्डी हवाओं का वासित़ा ह़मारी जाइज़ मुरादों पर रह़मत की नज़र फ़रमा।

कहते रहते हैं दुआ़ के वासित़े बन्दे तेरे
कर दे पूरी आरज़ू हर बे कसो मजबूर की

اٰمِين بِجاہِ النَّبِیِّ الْاَمین صَلَّی اللہ تعالٰی علیہ واٰلہٖ وسلَّم

शे'र के बा'द येह आयते मुबारक पढ़िये :

اِنَّ اللّٰهَ وَمَلٰٓئِكَتَهٗ يُصَلُّوْنَ عَلَى النَّبِيِّ ؕ يٰۤاَيُّهَا الَّذِيْنَ اٰمَنُوْا صَلُّوْا عَلَيْهِ وَسَلِّمُوْا تَسْلِيْمًا ﴿۵۶﴾ (پ۲۲ الاحزاب:۵۶)

सब दुरूद शरीफ़ पढ़ लें फिर पढ़िये :

سُبْحٰنَ رَبِّكَ رَبِّ الْعِزَّةِ عَمَّا يَصِفُوْنَ ﴿۱۸۰﴾ وَسَلٰمٌ عَلَى الْمُرْسَلِيْنَ ﴿۱۸۱﴾ وَالْحَمْدُ لِلّٰهِ رَبِّ الْعٰلَمِيْنَ ﴿۱۸۲﴾

(आख़िर में कलिमा पढ़ कर सुन्नत पर अ़मल की निय्यत से मुंह पर दोनों हाथ फैर लीजिये)

फ़ैज़ाने बिस्मिल्लाह

بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْم

इस बाब में......

जिन्नात से सामान की ह़िफ़ाज़त का त़रीक़ा	2
पुर असरार बूढ़ा और काला जिन्न	11
घरेलू झगड़ों का इलाज	41
निगाहे मुस्त़फ़ा صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم से कुछ पोशीदा नहीं	44
बुख़ार के पांच मदनी इलाज	64
आधे सर के दर्द के छॅ इलाज	70
दर्दे सर के सात इलाज	71
आफ़तें दूर होने का आसान विर्द	80
रोंगटे खड़े कर देने वाली ह़िकायत	99
जानवर भी वली की ता'ज़ीम करते हैं	107
ख़्वाब बयान करने के दलाइल	147
चालीस रूह़ानी इलाज	167

वरक़ उलटिये......

SINGLE AFTER A 22

फ़रमाने मुस्तफ़ा صَلَّى اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم : उस शख़्स की नाक ख़ाक आलूद हो जिस के पास मेरा ज़िक्र हो और वोह मुझ पर दुरूदे पाक न पढ़े। (ترمذی)

اَلْحَمْدُ لِلّٰہِ رَبِّ الْعٰلَمِیْنَ وَ الصَّلٰوۃُ وَ السَّلَامُ عَلٰی سَیِّدِ الْمُرْسَلِیْنَ

اَمَّا بَعْدُ فَاَعُوْذُ بِاللّٰہِ مِنَ الشَّیْطٰنِ الرَّجِیْمِ ط بِسْمِ اللّٰہِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِیْمِ ط

फ़ैज़ाने बिस्मिल्लाह

अल्लाह عَزَّوَجَلَّ के महबूब, दानाए ग़ुयूब, मुनज़्ज़हुन अ़निल उ़यूब صَلَّى اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم फ़रमाते हैं, "जो मुझ पर एक बार दुरूद भेजे **अल्लाह तआ़ला उस पर दस 10 बार रह़मत** नाज़िल फ़रमाएगा।"

(مسلم ج ۱ ص۱۷۵ رقم الحدیث ۴۰۸)

صَلُّوْا عَلَی الْحَبِیْب ! صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلٰی مُحَمَّد

अधूरा काम : सरकारे मक्कए मुकर्रमा, सरदारे मदीनए मुनव्वरह صَلَّى اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया, "जो भी अहम काम بِسْمِ اللّٰہِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِیْمِ ط के साथ शुरूअ़ नहीं किया जाता वोह अधूरा रह जाता है।" (اَلدُّرُّالْمَنْثُوْر ج ۱ ص ۲۶)

बिस्मिल्लाह पढ़ जाइये : प्यारे प्यारे इस्लामी भाइयो ! खाने खिलाने, पीने पिलाने, रखने उठाने, धोने पकाने, पढ़ने पढ़ाने, चलने (गाड़ी वग़ैरा) चलाने, उठने उठाने, बैठने बिठाने, बत्ती जलाने, पंखा चलाने, दस्तर ख़्वान बिछाने बढ़ाने, बिछौना लपेटने बिछाने, दुकान खोलने बढ़ाने,

ताला खोलने लगाने, तेल डालने इत्र लगाने, बयान करने ना'त शरीफ़ सुनाने, जूती पहनने इमामा सजाने, दरवाज़ा खोलने बन्द फ़रमाने, अल ग़रज़ हर जाइज़ काम के शुरूअ़ में (जब कि कोई मानेए़ शरई न हो) بِسْمِ اللّٰہِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِیْمِ पढ़ने की आ़दत बना कर इस की बरकतें लूटना ऐ़न सआ़दत है।

जिन्नात से सामान की ह़िफ़ाज़त का त़रीक़ा : ह़ज़रते सय्यिदुना सफ़्वान बिन सुलैम رَحْمَۃُ اللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہ फ़रमाते हैं, "इन्सान के साज़ो सामान और मल्बूसात को जिन्नात इस्ति'माल करते हैं। लिहाज़ा तुम में से जब कोई शख़्स कपड़ा (पहनने के लिये) उठाए या (उतार कर) रखे तो "बिस्मिल्लाह शरीफ़" पढ़ लिया करे। इस के लिये **अल्लाह** तआ़ला का नाम मोहर है।" (या'नी बिस्मिल्लाह पढ़ने से जिन्नात उन कपड़ों को इस्ति'माल नहीं करेंगे।) (لقط المرجان فی احکام الجان لِلسُّیوطی ص ۹۸)

प्यारे प्यारे इस्लामी भाइयो ! इसी त़रह़ हर चीज़ रखते उठाते بِسْمِ اللّٰہِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِیْمِ पढ़ने की आ़दत बनानी चाहिये। اِنْ شَآءَ اللّٰہ عَزَّوَجَلَّ शरीर जिन्नात की दस्त बुर्द से ह़िफ़ाज़त ह़ासिल होगी।

صَلُّوا عَلَی الْحَبِیْب ! صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلٰی مُحَمَّد

बिस्मिल्लाह दुरुस्त पढ़िये : بِسْمِ اللّٰہِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِیْمِ पढ़ने में दुरुस्त मख़ारिज से ह़ुरूफ़ की अदाएगी लाज़िमी है। और कम अज़ कम इतनी आवाज़ भी ज़रूरी है कि रुकावट न होने की सूरत में अपने कानों से

सुन सकें। जल्द बाज़ी में बा'ज़ लोग हुरूफ़ चबा जाते हैं। जान बूझ कर इस त़रह़ पढ़ना मम्नूअ़ है और मा'ना फ़ासिद होने की सूरत में **गुनाह**। लिहाज़ा जल्दी जल्दी पढ़ने की आ़दत की वज्ह से जो लोग ग़लत़ पढ़ डालते हैं वोह अपनी इस्लाह़ कर लें नीज़ जहां पूरी पढ़ने की कोई ख़ास वज्ह मौजूद न हो वहां सिर्फ़ "**बिस्मिल्लाह**" कह लें तब भी दुरुस्त है।

खल्बली मच गई : ह़ज़रते सय्यिदुना जाबिर बिन अ़ब्दुल्लाह رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْهُ ने फ़रमाया, "जब بِسۡمِ اللّٰهِ الرَّحۡمٰنِ الرَّحِیۡمِ नाज़िल हुई तो बादल मशरिक़ की सम्त दौड़े, हवाएं साकिन हो गईं, समुन्दर जोश में आ गया, चौपायों ने ग़ौर से सुनने के लिये अपने कान लगा दिये और शैत़ानों को आस्मानों से पथ्थर मारे गए और **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ ने फ़रमाया, "मुझे मेरी इ़ज़्ज़तो जलाल की क़सम ! जिस शै पर بِسۡمِ اللّٰهِ الرَّحۡمٰنِ الرَّحِیۡمِ पढ़ी गई मैं उस में बरकत दूंगा।" (الدُّرُّالْمَنْثُور ج ۱ ص ۲۶)

بِسۡمِ اللّٰهِ الرَّحۡمٰنِ الرَّحِیۡمِ पारह 19 **सूरतुन्नम्ल** की तीसवीं आयत का हि़स्सा भी है और क़ुरआने मजीद की एक पूरी आयते मुबारका भी जो कि दो सूरतों के माबैन[1] फ़ासिले के लिये उतारी गई।

(حَلْبِی کبیر ص۳۰۷)

1....या'नी दरमियान

फ़रमाने मुस्तफ़ा صَلَّى اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم : जिस ने मुझ पर सुब्ह़ व शाम दस दस बार दुरूदे पाक पढ़ा उसे क़ियामत के दिन मेरी शफ़ाअ़त मिलेगी। (مجمع الزوائد)

बिस्मिल्लाह की "ب" की जामेइय्यत : अल्लाह عَزَّوَجَلَّ ने बा'ज़ अम्बिया عَلَیْہِمُ الصَّلٰوۃُ وَالسَّلَام पर सह़ाइफ़ और कुतुब नाज़िल फ़रमाई जिन की ता'दाद 104 है। इन में से 50 **सह़ीफ़े** ह़ज़रते सय्यिदुना शीस عَلٰی نَبِیِّنَا وَعَلَیْہِ الصَّلٰوۃُ وَالسَّلَام पर, 30 **सह़ीफ़े** ह़ज़रते सय्यिदुना इदरीस عَلٰی نَبِیِّنَا وَعَلَیْہِ الصَّلٰوۃُ وَالسَّلَام पर, 10 **सह़ीफ़े** ह़ज़रते सय्यिदुना इब्राहीम عَلٰی نَبِیِّنَا وَعَلَیْہِ الصَّلٰوۃُ وَالسَّلَام पर, 10 **सह़ीफ़े** ह़ज़रते सय्यिदुना मूसा कलीमुल्लाह عَلٰی نَبِیِّنَا وَعَلَیْہِ الصَّلٰوۃُ وَالسَّلَام पर तौरात शरीफ़ उतरने से क़ब्ल नाज़िल हुए नीज़ येह चार[4] बड़ी किताबें नाज़िल हुईं : (1) **तौरात शरीफ़** ह़ज़रते सय्यिदुना मूसा कलीमुल्लाह عَلٰی نَبِیِّنَا وَعَلَیْہِ الصَّلٰوۃُ وَالسَّلَام पर। (2) **ज़बूर शरीफ़** ह़ज़रते सय्यिदुना दावूद عَلٰی نَبِیِّنَا وَعَلَیْہِ الصَّلٰوۃُ وَالسَّلَام पर। (3) **इन्जीले मुक़द्दस** ह़ज़रते सय्यिदुना ईसा रूह़ुल्लाह عَلٰی نَبِیِّنَا وَعَلَیْہِ الصَّلٰوۃُ وَالسَّلَام पर और (4) क़ुरआने मुबीन जनाबे रह़्मतुल्लिल आ़लमीन صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم पर। (الاحسان بترتیب صحیح ابن حبان ج ۱ ص ۲۸۸، حلیۃ الاولیاء ج ۱ ص ۲۲۲ ملخصاً) इन तमाम किताबों और जुम्ला सह़ाइफ़ का मत्न और मज़ामीन क़ुरआने मजीद में और सारे क़ुरआने मजीद का मज़मून सूरए फ़ातिह़ा में, और सूरए फ़ातिह़ा का सारा मज़मून بِسۡمِ اللّٰہِ الرَّحۡمٰنِ الرَّحِیۡمِ में और بِسۡمِ اللّٰہِ الرَّحۡمٰنِ الرَّحِیۡمِ का सारा मज़मून इस के ह़र्फ़ "ب" में मौजूद है, और इस के मा'ना येह हैं कि بِیۡ کَانَ مَا کَانَ وَ بِیۡ یَکُوۡنُ مَا یَکُوۡنُ। (या'नी जो कुछ भी है मुझ (या'नी

अल्लाह عَزَّوَجَلَّ) ही से है और जो कुछ होगा मुझ (या'नी अल्लाह عَزَّوَجَلَّ) ही से होगा।) (اَلْمَجَالِسُ السَّنِيَّة ص٣)

صَلُّوْا عَلَى الْحَبِيْب ! صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلٰى مُحَمَّد

इस्मे आ'ज़म : हज़रते सय्यिदुना अ़ब्दुल्लाह इब्ने अ़ब्बास رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُمَا से रिवायत है कि **अमीरुल मुअमिनीन** हज़रते सय्यिदुना उ़स्मान इब्ने अ़फ़्फ़ान رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ने नबियों के सुल्तान, सरवरे ज़ीशान, सरदारे दो2 जहान صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم से بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ (की फ़ज़ीलत) के बारे में इस्तिफ़्सार किया, तो **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ के महबूब, दानाए ग़ुयूब, मुनज़्ज़हुन, अ़निल उ़यूब صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया, "येह **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ के नामों में से एक नाम है और **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ के इस्मे आ'ज़म और इस के दरमियान ऐसा ही कुर्ब है जैसे आंख की सियाही (पुतली) और सफ़ेदी में।" (اَلْمُسْتَدْرَك لِلْحاكِم ج اوّل ص٧٣٨ رقم الحديث ٢٠٧١)

इस्मे आ'ज़म के साथ दुआ क़बूल होती है : प्यारे प्यारे इस्लामी भाइयो ! "इस्मे आ'ज़म" की बहुत बरकतें हैं, इस्मे आ'ज़म के साथ जो दुआ की जाए वोह क़बूल हो जाती है। सरकारे आ'ला हज़रत رَحْمَةُ اللّٰهِ تَعَالٰى عَلَيْه के वालिदे माजिद हज़रते रईसुल मुतकल्लिमीन मौलाना नक़ी अ़ली ख़ान عَلَيْهِ رَحْمَةُ الْحَنَّان फ़रमाते हैं, "बा'ज़ उ़लमा ने بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ को इस्मे आ'ज़म कहा। सरकारे बग़दाद हुज़ूरे

गौ़से पाक رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْهُ से मन्क़ूल है, "**बिस्मिल्लाह** ज़बाने आ़रिफ़ (आ़रिफ़ या'नी **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ को पहचानने वाला) से ऐसी है जैसे कलामे ख़ालिक़ عَزَّوَجَلَّ से "कुन"। ("कुन" या'नी "हो जा।")

(अह्सनुल विआ़अ, सफ़्हा : 6)

प्यारे प्यारे इस्लामी भाइयो ! अपने नेक और जाइज़ कामों में बरकत दाख़िल करने के लिये हमें पहले بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ ज़रूर पढ़ लेना चाहिये। अगर आप बात बात पर بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ पढ़ने की आ़दत बनाने के आरज़ू मन्द हैं तो दा'वते इस्लामी के सुन्नतों की तरबियत के मदनी क़ाफ़िलों में आ़शिक़ाने रसूल के साथ सुन्नतों भरे सफ़र को अपना मा'मूल बना लीजिये। اَلْحَمْدُ لِلّٰهِ عَزَّوَجَلَّ दा'वते इस्लामी के मदनी क़ाफ़िलों में दुआ़एं करने वालों के मसाइल ह़ल होने के मुतअ़द्दद वाक़िआ़त मिलते रहते हैं। चुनान्चे

टेढ़ी नाक : एक इस्लामी भाई का बयान अपने अन्दाज़ में पेश करने की सई करता हूं, मेरी नाक की हड्डी टेढ़ी थी, आंखों और सर का दर्द भी पीछा नहीं छोड़ता था। मैं ने निश्तर मेडिकल अस्पताल में ऑपरेशन करवाने का इरादा किया था। इस से क़ब्ल आ़शिक़ाने रसूल के सुन्नतों की तरबियत के मदनी क़ाफ़िले के साथ पाक पत्तन शरीफ़ के सुन्नतों भरे सफ़र की सआ़दत ह़ासिल हुई। पहले ही से सुन रखा था कि मदनी क़ाफ़िले में दुआ़एं क़बूल होती हैं लिहाज़ा मैं ने बारगाहे ख़ुदा वन्दी عَزَّوَجَلَّ में दुआ़ की, "या **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ ! दा'वते इस्लामी के मदनी क़ाफ़िले की

बरकत से मेरी नाक की हड्डी दुरुस्त फ़रमा दे।" **मदनी क़ाफ़िले** से वापसी के चन्द रोज़ बा'द जो नाक की हड्डी को बग़ौर देखा तो मेरी खुशी की इन्तिहा न रही क्यूं कि आशिक़ाने रसूल के क़ुर्ब में रह कर **मदनी क़ाफ़िले** के सदक़े मांगी हुई दुआ की क़बूलिय्यत खुली आंखों से नज़र आ रही थी और वोह यूं कि मेरी **नाक की टेढ़ी हड्डी** बिल्कुल दुरुस्त हो चुकी थी !

लूटने रह़मतें क़ाफ़िले में चलो *सीखने सुन्नतें क़ाफ़िले में चलो*
पाओगे राह़तें क़ाफ़िले में चलो *लेने को बरकतें क़ाफ़िले में चलो*
दर्द सारे मिटें क़ाफ़िले में चलो *टेढ़ी हों हड्डियां होंगी सीधी मियां*

صَلُّوْا عَلَى الْحَبِيْب ! صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلٰى مُحَمَّد

प्यारे प्यारे इस्लामी भाइयो ! बेशक मुसाफ़िरों की दुआ क़बूल है और फिर राहे खुदा का मुसाफ़िर हो और मज़ीद आशिक़ाने रसूल के क़ुर्ब में दुआ मांगी जाए वोह क्यूं न क़बूल होगी। सरकारे आ'ला ह़ज़रत رَحْمَةُ اللّٰهِ تَعَالٰى عَلَيْه के वालिदे माजिद रईसुल मुतकल्लिमीन ह़ज़रते मौलाना नक़ी अ़ली ख़ान عَلَيْهِ رَحْمَةُ الْحَنَّان "अह़सनुल विआ़अ" सफ़ह़ा 57 पर दुआ की क़बूलिय्यत के आदाब में से 23वां "अदब" बयान करते हुए फ़रमाते हैं, "औलिया व उ़लमा की मजालिस" (या'नी किसी भी वली और सुन्नी आ़लिम की मह़फ़िल में या उन के क़ुर्ब में दुआ मांगेंगे तो क़बूल होगी।) इस "अदब" के ह़ाशिये में सरकारे आ'ला ह़ज़रत رَحْمَةُ اللّٰهِ تَعَالٰى عَلَيْه

औलिया व उ़लमा के बारे में फ़रमाते हैं, "रब عَزَّوَجَلَّ सह़ीह़ ह़दीसे क़ुदसी में फ़रमाता हैं, "هُمُ الْقَوْمُ لَا يَشْقٰى بِهِمْ جَلِيْسُهُمْ" या'नी येह वोह लोग हैं कि इन के पास बैठने वाला बद बख़्त नहीं रहता। (मत़्बूआ़ मक्तबतुल मदीना)

يك زمانه صُحبتِ با اولياء بِہتر از صد ساله طاعت بے ریا

(या'नी औलियाए किराम की लम्ह़ा भर सोह़बत, सो100 साल की ख़ालिस इ़बादत से बेहतर है।)

वली ख़्वाह ह़याते ज़ाहिरी के साथ मुत्तसिफ़ हो या मज़ार शरीफ़ में तशरीफ़ फ़रमा हो उस का क़ुर्ब क़बूलिय्यते दुआ़ का सबब है। करोड़ों शाफ़ेइय्यों के पेश्वा ह़ज़रते सय्यिदुना इमामे शाफ़ेई رَحْمَۃُ اللہِ تَعَالٰی عَلَیْہ फ़रमाते हैं, "मुझे जब कोई ह़ाजत पेश आती है, दो2 रक्अ़त नमाज़ अदा कर के इमामे आ'ज़म अबू ह़नीफ़ा رَحْمَۃُ اللہِ تَعَالٰی عَلَیْہ के मज़ारे पुर अन्वार पर जा कर दुआ़ मांगता हूं, **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ मेरी ह़ाजत पूरी कर देता है।"

(الخیرات الحسان ص ۲۳۰، مدینہ پبلشنگ)

आ'ला ह़ज़रत رَحْمَۃُ اللہِ تَعَالٰی عَلَیْہ **की करामत : मा'लूम** हुवा मज़ाराते औलिया رَحِمَہُمُ اللہُ تَعَالٰی पर भी दुआ़एं क़बूल होतीं, इल्तिजाएं सुनी जातीं और मुरादें बर आती हैं। चुनान्चे सरकारे आ'ला ह़ज़रत رَحْمَۃُ اللہِ تَعَالٰی عَلَیْہ जब 21 बरस के नौ जवान थे उस वक़्त का वाक़िआ़ ख़ुद उन ही की ज़बानी मुलाह़ज़ा हो, चुनान्चे फ़रमाते हैं, "सत्तरहवीं शरीफ़ माहे फ़ाख़िर रबीउ़ल आख़िर 1293 सि.हि. में कि फ़क़ीर को इक्कीसवां साल था।

आ'ला ह़ज़रत मुसन्निफ़े अ़ल्लाम सय्यिदुनल वालिद قُدِّسَ سِرُّہُ الْمَاجِد व ह़ज़रते मुह़िब्बुर्रसूल जनाब मौलाना मौलवी मुह़म्मद अ़ब्दुल क़ादिर साह़िब बदायूनी دَامَتْ بَرَكَاتُهُمُ الْعَالِيَه के हमराहे रिकाब ह़ाज़िरे बारगाहे बेकस पनाहे ह़ुज़ूरे पुरनूर मह़बूबे इलाही निज़ामुल ह़क़्क़े वद्दीन सुल्त़ानुल औलिया رَضِىَ اللّٰهُ تَعَالٰى عَنْهُ हुवा । ह़ुजरए मुक़द्दसा के चार त़रफ़ मजालिसे बात़िला लह्वो सुरूद गर्म थीं। शोरो ग़ोग़ा से कान पड़ी आवाज़ न सुनाई देती। दोनों ह़ज़राते आ़लिय्यात अपने क़ुलूबे मुत़्मइन्नह के साथ ह़ाज़िरे मुवाजहए अक़्दस हो कर मश्ग़ूल हुए। इस फ़क़ीरे बे तौक़ीर ने हुजूमे शोरो शर से ख़ात़िर (या'नी दिल) में परेशानी पाई। दरवाज़ए मुत़ह्हरा पर खड़े हो कर ह़ज़रते सुल्त़ानुल औलिया رَحْمَةُ اللّٰهِ تَعَالٰى عَلَيْه से अ़र्ज़ की, कि ऐ मौला! ग़ुलाम जिस के लिये ह़ाज़िर हुवा, येह आवाज़ें उस में ख़लल अन्दाज़ हैं। (लफ़्ज़ येही थे या इन के क़रीब, बहर ह़ाल मज़्मूने मा'रूज़ा येही था) येह अ़र्ज़ कर के **बिस्मिल्लाह** कह कर दहना पाउं दरवाज़ए ह़ुजरए त़ाहिरा में रखा बिऔ़ने रब्बे क़दीर عَزَّوَجَلَّ वोह सब आवाज़ें दफ़्अ़तन गुम थीं। मुझे गुमान हुवा कि येह लोग ख़ामोश हो रहे, पीछे फिर कर देखा तो वोही बाज़ार गर्म था। क़दम कि रखा था बाहर हटाया फिर आवाज़ों का वोही जोश पाया। फिर **बिस्मिल्लाह** कह कर दहना पाउं अन्दर रखा। بِحَمْدِ اللّٰهِ تَعَالٰى फिर वैसे ही कान ठन्डे थे। अब मा'लूम हुवा कि येह मौला عَزَّوَجَلَّ का करम और ह़ज़रते सुल्त़ानुल औलिया رَحْمَةُ اللّٰهِ تَعَالٰى عَلَيْه की करामत और इस बन्दए नाचीज़ पर

रह़मत व मऊ़नत है। शुक्र बजा लाया और ह़ाज़िरे मुवाजहए आ़लिया हो कर मश्ग़ूल रहा। कोई आवाज़ न सुनाई दी, जब बाहर आया फिर वोही ह़ाल था कि ख़ानक़ाहे अक्दस के बाहर क़ियाम गाह तक पहुंचना दुश्वार हुवा। फ़क़ीर ने येह अपने ऊपर गुज़री हुई गुज़ारिश की, कि अव्वल तो वोह ने'मते इलाही عَزَّوَجَلَّ थी और रब عَزَّوَجَلَّ फ़रमाता है, وَاَمَّا بِنِعْمَةِ رَبِّكَ فَحَدِّثْ[1] अपने रब عَزَّوَجَلَّ की ने'मतों को लोगों से ख़ूब बयान कर। मअ़ हाज़ा इस में ग़ुलामाने औलियाए किराम رَحِمَهُمُ اللّٰهُ تَعَالٰی के लिये बिशारत और मुन्किरों पर बला व ह़सरत है। इलाही عَزَّوَجَلَّ ! सदक़ा अपने मह़बूबों (رِضْوَانُ اللّٰهِ تَعَالٰی عَلَيْهِمْ اَجْمَعِيْن) का हमें दुन्या व आख़िरत व क़ब्रो ह़श्र में अपने मह़बूबों عَلَيْهِمُ الرِّضْوَان के बरकाते बे पायां से बहरा मन्द फ़रमा।

(अह़सनुल विआ़ लि आदाबिद्दुआ़, स. 60 ता 61)

صَلُّوْا عَلَى الْحَبِيْب! صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلٰى مُحَمَّد

प्यारे प्यारे इस्लामी भाइयो ! येह ह़िकायत "बाईस ख़्वाजा की चौखट देहली शरीफ़" की है। इस में ताजदारे देहली ह़ज़रते सय्यिदुना ख़्वाजा मह़बूबे इलाही निज़ामुद्दीन औलिया رَحْمَةُ اللّٰهِ تَعَالٰی عَلَيْه की नुमायां करामत है। जब कि मेरे आक़ा आ'ला ह़ज़रत رَحْمَةُ اللّٰهِ تَعَالٰی عَلَيْه की भी येह करामत ही है कि क़ब्रे अन्वर वाले कमरे में क़दम रखते थे तो उन्हें ढोल बाजों की आवाज़ें न सुनाई देती थीं। इस ह़िकायत से येह भी मा'लूम हुवा

1 پ ۳۰ سورةُ الضّحٰی آیت ۱۱

कि बिलफ़र्ज़ अगर मज़ाराते औलिया पर जुहला ग़ैर शरई ह़रकात कर रहे हों और उन को रोकने की कुदरत न हो तब भी अपने आप को अहलुल्लाह رَحِمَهُمُ اللهُ تَعَالٰى के दरबारों की ह़ाज़िरी से मह़रूम न करे। हां मगर येह वाजिब है कि उन ख़ुराफ़ात को दिल से बुरा जाने और उन में शामिल होने से बचे। बल्कि उन की त़रफ़ देखने से भी ख़ुद को बचाए।

पुर असरार बूढ़ा और काला जिन्न :

मस्जिदुन्नबविय्यिश्शरीफ़ عَلٰى صَاحِبِهَا الصَّلٰوةُ وَالسَّلَام की पुर बहार फ़ज़ाओं में एक बार अमीरुल मुअमिनीन ह़ज़रते सय्यिदुना उ़मर फ़ारूक़े आ'ज़म और दीगर सह़ाबए किराम عَلَيْهِمُ الرِّضْوَان में कुरआने पाक के फ़ज़ाइल पर मुज़ाकरा हो रहा था। इस दौरान ह़ज़रते सय्यिदुना अ़म्र बिन मअ़दी करिब رَضِیَ اللهُ تَعَالٰی عَنْه ने अ़र्ज़ किया, "या अमीरल मुअमिनीन ! आप ह़ज़रात بِسْمِ اللهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ के अ़जाइबात को क्यूं भूल रहे हैं, ख़ुदा عَزَّوَجَلَّ की क़सम ! بِسْمِ اللهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ बहुत ही बड़ा अ़जूबा है, अमीरुल मुअमिनीन ह़ज़रते सय्यिदुना उ़मर फ़ारूक़े आ'ज़म رَضِیَ اللهُ تَعَالٰی عَنْه सीधे हो कर बैठ गए और फ़रमाने लगे, "ऐ अबू सौर ! (येह ह़ज़रते सय्यिदुना अ़म्र बिन मअ़दी करिब की कुन्यत थी) आप हमें कोई अ़जीबा सुनाइये, चुनान्चे ह़ज़रते सय्यिदुना अ़म्र बिन मअ़दी करिब رَضِیَ اللهُ تَعَالٰی عَنْه ने फ़रमाया, "ज़मानए जाहिलिय्यत था, क़ह़त़ साली के दौरान तलाशे रिज़्क़ की ख़ात़िर मैं एक जंगल से गुज़रा, दूर से एक ख़ैमे पर नज़र पड़ी, क़रीब ही एक घोड़ा और कुछ मवेशी भी नज़र आए। जब क़रीब पहुंचा तो वहां एक ह़सीनो जमील औ़रत भी मौजूद थी

और ख़ैमे के सेहन में एक बूढ़ा शख़्स टेक लगा कर बैठा हुवा था।" मैं ने उस को धम्काते हुए कहा, "जो कुछ तेरे पास है मेरे ह़वाले कर दे!" उस ने कहा, "ऐ आदमी! अगर तू मेहमानी चाहता है तो आ जा और अगर इमदाद दरकार है तो हम तेरी मदद करेंगे।" मैं ने कहा, "बातें मत बना, तेरे पास जो कुछ है मेरे ह़वाले कर दे!" तो वोह बूढ़ा कमज़ोरों की त़रह़ ब मुश्किल तमाम खड़ा हुवा और بِسۡمِ اللّٰہِ الرَّحۡمٰنِ الرَّحِیۡمِ पढ़ कर मेरे क़रीब आया और निहायत फुरती से मुझ पर झपटा और मुझे पटख़ कर मेरे सीने पर चढ़ बैठा और कहने लगा, "अब बोल! मैं तुझे ज़ब्ह़ कर दूं या छोड़ दूं?" मैं ने घबरा कर कहा, "छोड़ दो।" वोह मेरे सीने से हट गया। मैं ने दिल में अपने आप को मलामत की और कहा, "ऐ अ़म्र! तू अ़रब का मश्हूर शह सुवार है इस कमज़ोर बूढ़े से हार कर भागना नामर्दी है। इस ज़िल्लत से तो मर जाना ही बेहतर है।" चुनान्चे मैं ने फिर उस से कहा, "तेरे पास जो कुछ है मेरे ह़वाले कर दे!" येह सुनते ही بِسۡمِ اللّٰہِ الرَّحۡمٰنِ الرَّحِیۡمِ पढ़ कर वोह **पुर असरार बूढ़ा** फिर मुझ पर ह़म्ला आवर हुवा और चश्मे ज़दन में मुझे गिरा कर सीने पर सुवार हो गया और कहने लगा, "बोल, तुझे ज़ब्ह़ कर दूं या छोड़ दूं?" मैं ने कहा, "मुझे मुआ़फ़ कर दो।" उस ने छोड़ दिया मगर फिर मैं ने उस से सारे माल का मुत़ालबा कर दिया। उस ने بِسۡمِ اللّٰہِ الرَّحۡمٰنِ الرَّحِیۡمِ पढ़ कर फिर पछाड़ कर मुझ पर क़ाबू पा लिया, मैं ने कहा, "मुझे छोड़ दो!" उस ने कहा, "अब तीसरी बार मैं ऐसे ही नहीं छोड़ूंगा" येह कह कर उस ने पुकार कर कहा,

"ऐ कनीज़ ! तेज़ धारदार तलवार ले आ !" वोह ले आई, उस ने मेरे सर के अगले हिस्से की चोटी काट डाली और मुझे छोड़ दिया। हम अ़रबों में रवाज है कि जब किसी की चोटी के बाल काट दिये जाते हैं तो वोह दोबारा उगने से क़ब्ल अपने घर वालों को मुंह दिखाते हुए शरमाता है। (क्यूं कि चोटी कट जाना शिकस्त खुर्दा की अ़लामत है।) चुनान्चे मैं एक साल तक उस **पुर असरार** बूढ़े की ख़िदमत का पाबन्द हो गया।

साल पूरा हो जाने के बा'द वोह मुझे एक वादी में ले गया। वहां उस ने बुलन्द आवाज़ से بِسۡمِ اللّٰہِ الرَّحۡمٰنِ الرَّحِیۡمِ पढ़ी तो तमाम परिन्दे अपने घोंसलों से बाहर निकल कर उड़ गए, दोबारा इसी त़रह़ पढ़ने पर तमाम दरिन्दे अपनी अपनी पनाह गाहों से बाहर चले गए। फिर तीसरी बार ज़ोर से पढ़ने पर **ऊनी लिबास में मल्बूस खजूर के तने जितना लम्बा ख़ौफ़नाक काला जिन्न** ज़ाहिर हुवा, उस को देख कर मेरे बदन में झुरझुरी की लहर दौड़ गई। **पुर असरार बूढ़े** ने कहा, "ऐ अ़म्र ! हिम्मत रख, अगर येह मुझ पर ग़लबा पा ले तो कहना, "अब की बार मेरा साथी بِسۡمِ اللّٰہِ الرَّحۡمٰنِ الرَّحِیۡمِ की बरकत से ग़ालिब होगा।" फिर वोह पुर **असरार बूढ़ा** और **काला जिन्न** दोनों गुथ्थम गुथ्था हो गए, पुर असरार बूढ़ा हार गया और **काला जिन्न** उस पर ग़ालिब आ गया। इस पर मैं ने कहा, "अब की बार मेरा साथी लात व उ़ज़्ज़ा (या'नी काफ़िरों के इन दोनों बुतों) की वज्ह से जीत जाएगा। येह सुन कर **पुर असरार** बूढ़े ने मुझे ऐसा ज़ोरदार त़मांचा रसीद किया कि मुझे दिन दिहाड़े तारे नज़र आ

गए। और ऐसा मह़सूस हुवा कि अभी मेरा सर उखड़ कर धड़ से जुदा हो जाएगा। मैं ने मा'ज़िरत चाही और कहा कि दोबारा ऐसी ह़रकत नहीं करूंगा। चुनान्चे दोनों में फिर मुक़ाबला हुवा। **पुर असरार बूढ़ा** उस **काले जिन्न** को दबोचने में काम्याब हो गया तो मैं ने कहा, "मेरा साथी بِسۡمِ اللّٰہِ الرَّحۡمٰنِ الرَّحِیۡمِ की बरकत से ग़ालिब आ गया।" येह कहने की देर थी कि **पुर असरार बूढ़े** ने निहायत फुरती के साथ उस को ज़मीन में लकड़ी की त़रह़ गाड़ दिया। और फिर उस का पेट चीर कर उस में से लालटेन की त़रह़ कोई चीज़ निकाली और कहा, "ऐ अ़म्र ! येह इस का धोका और कुफ़्र है।" मैं ने उस **पुर असरार बूढ़े** से इस्तिफ़्सार किया, आप का और इस काले जिन्न का क़िस्सा क्या है ?" कहने लगा, "एक नसरानी जिन्न मेरा दोस्त था, उस की क़ौम से हर साल एक जिन्न मेरे साथ जंग लड़ता है और **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ "بِسۡمِ اللّٰہِ الرَّحۡمٰنِ الرَّحِیۡمِ" की बरकत से मुझे फ़त्ह़ अ़त़ा फ़रमाता है।"

फिर हम आगे बढ़ गए। एक मक़ाम पर वोह **पुर असरार बूढ़ा** जब ग़ाफ़िल हो कर सो गया तो मौक़अ़ पा कर मैं ने उस की तलवार छीन कर निहायत फुरती के साथ उस की पिंडलियों पर एक ज़ोरदार वार किया जिस से दोनों टांगें कट कर जिस्म से जुदा हो गईं, वोह चीख़ने लगा, "ओ गद्दार ! तूने मुझे सख़्त धोका दिया है !" मगर मैं ने उस को संभलने का मौक़अ़ ही न दिया, पै दर पै वार कर के उस के टुकड़े टुकड़े कर डाले ! फिर जब मैं ख़ैमे में वापस आया तो वोह कनीज़ बोली, "ऐ अ़म्र ! जिन्न से

मुक़ाबले का क्या बना ? मैं ने कहा, "बूढ़े शैख़ को जिन्नात ने क़त्ल कर दिया है।" वोह कहने लगी, "तू झूट बोल रहा है। ओ बे वफ़ा ! उस के क़ातिल जिन्नात नहीं बल्कि तू ख़ुद है येह कह कर उस ने बे क़रारो अश्कबार हो कर अ़रबी में पांच अश्आ़र पढ़े जिन का तरजमा है :

"(1) ऐ मेरी आंख ! तू उस बहादुर शह सुवार पर ख़ूब रो और पै दर पै आंसू बहा। (2) ऐ अ़म्र ! तेरी ज़िन्दगी पर अफ़्सोस है, ह़ालां कि तेरे दोस्त को ज़िन्दगी ने मौत की त़रफ़ धकेल दिया है। (3) और (ऐ अ़म्र ! अपने दोस्त को अपने हाथों) क़त्ल करने के बा'द तू (अपने क़बीले) बनी ज़ुबैदा और कुफ़्फ़ार (या'नी ना शुक्रों) के गुरौह के सामने किस त़रह़ फ़ख़्र के साथ चल सकता है। (4) मुझे मेरी उ़म्र की क़सम ! (ऐ अ़म्र) अगर तू लड़ने में वाक़ेई सच्चा होता (या'नी बिग़ैर धोका दिये मर्दों की त़रह़ उस से मुक़ाबला करता) तो उस की त़रफ़ से ज़रूर तेज़ धारदार तलवार तुझ तक पहुंच कर रहती। (और तेरा काम तमाम कर देती)। (5) (ऐ उस बूढ़े को क़त्ल करने वाले !) बादशाहे ह़क़ीक़ी (**अल्लाह** तआ़ला) तुझे बुरा और ज़िल्लत वाला बदला दे (तेरे जुर्म के बदले में) और तुझे भी उस की त़रफ़ से ज़िल्लतो रुस्वाई वाली ज़िन्दगी मिले (जिस त़रह़ कि तूने अपने दोस्त के साथ ज़िल्लतो रुस्वाई वाला सुलूक किया है)।"

मैं झल्ला कर क़त्ल करने के लिये उस पर चढ़ दौड़ा मगर वोह ह़ैरत अंगेज़ त़ौर पर मेरी नज़रों से ओझल हो गई गोया उस को ज़मीन ने निगल लिया। (مُلَخَّص از: لقط المرجان فی احکام الجان لِلسُّیوطی ص ۱۴۱ تا ۱۴۳)

صَلُّوا عَلَی الْحَبِیْب! صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلٰی مُحَمَّد

प्यारे प्यारे इस्लामी भाइयो ! देखा आप ने بِسۡمِ اللّٰہِ الرَّحۡمٰنِ الرَّحِیۡمِ की किस क़दर ह़ैरत अंगेज़ बरकात हैं। इन बरकतों को लूटने की आ़दत बनाने के लिये दा'वते इस्लामी के मदनी क़ाफ़िलों में आ़शिक़ाने रसूल के साथ सफ़र की सआ़दत ह़ासिल कीजिये । اِنۡ شَآءَاللّٰہ عَزَّوَجَلَّ आप के मसाइल ह़ैरत अंगेज़ तौर पर ह़ल होंगे और **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ के फ़ज़्लो करम से ग़ैबी इमदादें होंगी।

निय्यत साफ़ मन्ज़िल आसान : आ़शिक़ाने रसूल का एक मदनी क़ाफ़िला कपड़ वन्ज (गुजरात, अल हिन्द) पहुंचा **"मदनी दौरा"** के दौरान एक शराबी से मुडभेड़ हो गई, आ़शिक़ाने रसूल ने उस पर ख़ूब **इन्फ़िरादी कोशिश** की, जब उस ने सब्ज़ सब्ज़ इमामे वालों की शफ़्क़तें और प्यार देखा तो हाथों हाथ उन के साथ चल पड़ा, आ़शिक़ाने रसूल की सोह़बत की बरकत से गुनाहों से तौबा की, दाढ़ी मुबारक बढ़ा ली, सब्ज़ इमामे का ताज भी सर पर सज गया, मदनी लिबास का भी ज़ेह्न बन गया, छ[6] दिन तक **मदनी क़ाफ़िले** में सफ़र की सआ़दत ह़ासिल कर सका, मज़ीद 92 दिन के लिये मदनी क़ाफ़िले में सफ़र की निय्यत की मगर ज़ादे क़ाफ़िला या'नी सफ़र के अख़्राजात न थे । एक दिन एक रिश्तेदार से मुलाक़ात हो गई उस ने जब मुआ़शरे के बदनाम और शराबी को दाढ़ी, सब्ज़ सब्ज़ इमामे और मदनी लिबास में देखा तो देखता रह गया, जब उस को बताया गया कि येह सब मदनी क़ाफ़िले में सफ़र की

बरकत है और اِنْ شَآءَاللّٰه عَزَّوَجَلَّ अस्बाब हो जाने की सूरत में मज़ीद 92 दिन के सफ़र का अ़ज़्मे मुसम्मम है। तो उस रिश्तेदार ने कहा, "पैसों की फ़िक्र मत करो। 92 दिन के मदनी क़ाफ़िले में सफ़र का ख़र्च मुझ से क़बूल कर लो और साथ में 92 दिन तक घर के अख़्राजात भी अपने ज़िम्मे लेता हूं," यूं वोह "दीवाना" 92 दिन के लिये मदनी क़ाफ़िले का मुसाफ़िर बन गया।

صَلُّوْا عَلَى الْحَبِيْب ! صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلٰى مُحَمَّد

ग़ैबी इमदाद हो, घर भी आबाद हो चल के ख़ुद देख लें, क़ाफ़िले में चलो

रिज़्क़ के दर खुलें, बरकतें भी मिलें लुत्फ़े ह़क़ देख लें, क़ाफ़िले में चलो

पांच मदनी फूल : ह़ज़रते सय्यिदुना अ़ब्दुल्लाह बिन अ़म्र बिन आ़स رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْهُ का इर्शादे सआ़दत बुन्याद है, "पांच आ़दतें ऐसी हैं कि कोई उन्हें इख़्तियार कर ले तो दुन्या व आख़िरत में सआ़दत मन्द हो जाए। (1) वक़्तन फ़ वक़्तन لَآ اِلٰهَ اِلَّا اللّٰهُ مُحَمَّدٌ رَّسُوْلُ اللّٰهِ صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم कहता रहे (2) जब किसी मुसीबत में मुब्तला हो (मसलन : बीमार हो या नुक़्सान हो जाए या परेशानी की ख़बर सुने) तो اِنَّا لِلّٰهِ وَاِنَّآ اِلَيْهِ رٰجِعُوْنَ और لَا حَوْلَ وَلَا قُوَّةَ اِلَّا بِاللّٰهِ الْعَلِيِّ الْعَظِيْم पढ़े। (3) जब भी ने'मत मिले तो शुक्राने में اَلْحَمْدُ لِلّٰهِ رَبِّ الْعٰلَمِيْن कहे। (4) जब किसी (जाइज़) काम का आग़ाज़ करे तो بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْم पढ़े और (5) जब गुनाह

कर बैठे तो यूं कहे, اَسْتَغْفِرُ اللّٰهَ الْعَظِيْمَ وَ اَتُوْبُ اِلَيْه (या'नी मैं अ़ज़मत वाले **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ से मग़्फ़िरत त़लब करते हुए उस की त़रफ़ तौबा करता हूं।)

(اَلْمُنَبِّهَات لِلْعَسْقَلانی ص ٥٨)

जैसा दरवाज़ा वैसी भीक : मुफ़स्सिरे शहीर ह़ज़रते मुफ़्ती अह़मद यार ख़ान عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللّٰهِ الْمَنَّان फ़रमाते हैं, "**अल्लाह** तआला ने بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ में अपने इस्मे ज़ात के साथ रह़मत की दो[2] सिफ़ात का बयान फ़रमाया है क्यूं कि **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ के नामे मुबारक में हैबत थी और रह़मान और रह़ीम में रह़मत। **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ का नाम सुन कर नेक बन्दों को भी कुछ अ़र्ज़ करने की जुर्अत न होती थी लेकिन रह़मान और रह़ीम सुन कर हर मुजरिम और ख़त़ाकार को भी अ़र्ज़ करने की हिम्मत पड़ी और ह़क़ीक़त भी येही है, उस के जलाल के सामने कौन दम मार सकता है और ज़ुहूरे जमाल के वक़्त हर एक नाज़ कर सकता है। "तफ़्सीरे कबीर शरीफ़" में इस के मा तह़त एक **अ़जीब ह़िकायत** लिखी है कि एक साइल एक बहुत बड़े मालदार के अ़ज़ीमुश्शान दरवाज़े पर आया और कुछ सुवाल किया, मकान में से मा'मूली सी चीज़ आई। फ़क़ीर ने ले ली और चला गया। दूसरे दिन एक बहुत मज़बूत़ फावड़ा ले कर आया और दरवाज़ा खोदने लगा, मालिक ने पूछा, "येह क्या करता है?" फ़क़ीर ने कहा, "या तो अ़त़ा को दरवाज़े के लाइक़ कर या दरवाज़ा अ़त़ा के लाइक़ कर।" या'नी जब दरवाज़ा इतना बड़ा बनाया है तो ज़रूरी है कि

बड़े दरवाज़े से बड़ी ही भीक मिला करे क्यूं कि अ़त़ा दरवाज़े और नाम के लाइक़ ही होनी चाहिये। हम फ़क़ीर गुनहगार बन्दे भी अ़र्ज़ करते हैं, "**ऐ मौला** عَزَّوَجَلَّ **!** हम को हमारे लाइक़ न दे बल्कि अपने जूदो सख़ा के लाइक़ दे। बेशक हम गुनहगार हैं लेकिन तेरी ग़फ़्फ़ारी हमारी गुनहगारी से वसीअ़ है।" (तफ़्सीरे नईमी, पहला पारह, सफ़ह़ा : 40)

गुनहे गदा का ह़िसाब क्या वोह अगर्चे लाख से हैं सिवा
मगर ऐ अ़फ़ुव्व عَزَّوَجَلَّ *तेरे अ़फ़्व का न ह़िसाब है न शुमार है*

صَلُّوْا عَلَی الْحَبِیْب! صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلٰی مُحَمَّد

प्यारे प्यारे इस्लामी भाइयो ! अल्लाह عَزَّوَجَلَّ यक़ीनन रह़मान और रह़ीम है, जो उस की रह़मत पर नज़र रखे और उस के साथ अपना हुस्ने ज़न क़ाइम करे اِنْ شَآءَاللّٰہ عَزَّوَجَلَّ दोनों जहां में उस का बेड़ा पार है, **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ की रह़मत से उस को कभी भी मह़रूमी नहीं हो सकती। चुनान्चे **तफ़्सीरे नईमी** पारह अव्वल सफ़ह़ा 38 पर है,

रह़मत भरी ह़िकायत : दो[2] भाई थे, एक परहेज़गार दूसरा बदकार। जब बदकार मरने लगा तो परहेज़गार भाई ने कहा, "देखा तुझे मैं ने बहुत समझाया मगर तू अपने गुनाहों से बाज़ न आया, अब बोल तेरा क्या ह़ाल होगा ? उस ने जवाब दिया कि अगर क़ियामत के रोज़ मेरा रब عَزَّوَجَلَّ मेरा फ़ैसला **मेरी मां** के सिपुर्द कर दे तो बताओ कि मां मुझे कहां भेजेगी दोज़ख़ में या जन्नत में ? परहेज़ गार भाई ने कहा कि मां तो वाक़ेई जन्नत

में ही भेजेगी। गुनहगार ने जवाब दिया : **"मेरा रब عَزَّوَجَلَّ मेरी मां से भी ज़ियादा मेहरबान है।"** येह कहा और इन्तिक़ाल हो गया। बड़े भाई ने ख़्वाब में उसे निहायत ख़ुशहाल देखा, मग़्फ़िरत की वज्ह पूछी, कहा, "मरते वक़्त की उसी बात ने मेरे तमाम गुनाह बख़्शवा दिये।"

अल्लाह عَزَّوَجَلَّ की उन पर रह़मत हो और उन के सदक़े हमारी मग़्फ़िरत हो।

हम गुनहगारों पे तेरी मेहरबानी चाहिये

सब गुनह धुल जाएंगे रह़मत का पानी चाहिये

صَلُّوا عَلَى الْحَبِيب! صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلٰى مُحَمَّد

प्यारे प्यारे इस्लामी भाइयो ! वाक़ेई **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ की रह़मत बहुत बड़ी है, ज़बान से निकला हुवा "एक लफ़्ज़" मग़्फ़िरत का सबब भी हो सकता है और हलाकत का भी। जैसा कि अभी ह़िकायत में आप ने सुना कि एक जुम्ले ने उस गुनहगार का बेड़ा पार करवा दिया। इसी त़रह़ हलाकत की मिसाल येह है कि अगर कोई ज़बान से सरीह़ कुफ़्र बक दे और तौबा किये बिग़ैर मर जाए तो हमेशा के लिये जहन्नम उस का मुक़द्दर है। हलाकत से ख़ुद को बचाने और मग़्फ़िरत पाने का एक बेहतरीन ज़रीआ़ तब्लीग़े क़ुरआनो सुन्नत की आ़लमगीर ग़ैर सियासी तह़रीक, **दा'वते इस्लामी** के मदनी क़ाफ़िलों में आ़शिक़ाने रसूल के साथ सुन्नतों भरा सफ़र भी है। अगर सफ़र की सच्ची निय्यत कर ली जाए और किसी वज्ह से सफ़र

नसीब न हो तब भी اِنْ شَآءَاللہ عَزَّوَجَلَّ बेड़ा पार है। **मदनी क़ाफ़िले** में सफ़र की निय्यत करने वाले एक ख़ुश नसीब की ईमान अफ़्रोज़ हिकायत सुनिये और झूमिये। चुनान्चे

बाग़ का झूला : एक मह़ल्ले में **मदनी दौरे** से मुतअस्सिर हो कर एक मॉडर्न नौ जवान मस्जिद में आ गया। बयान में मदनी क़ाफ़िलों में सफ़र की तरग़ीब दिलाई गई तो उस ने मदनी क़ाफ़िले में सफ़र करने के लिये नाम लिखवा दिया। अभी **मदनी क़ाफ़िले** में उस की रवानगी में कुछ दिन बाक़ी थे कि क़ज़ाए इलाही عَزَّوَجَلَّ से उस का इन्तिक़ाल हो गया। किसी अहले ख़ाना ने मर्हूम को ख़्वाब में इस ह़ालत में देखा कि वोह एक हरियाले बाग़ में हश्शाश बश्शाश झूला झूल रहा है। पूछा, "यहां कैसे आ गए ?" जवाब दिया, "**दा'वते इस्लामी के मदनी क़ाफ़िले के साथ आया हूं, अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ **का बड़ा करम हुवा है, मेरी मां से कह देना कि वोह मेरा ग़म न करे मैं यहां बहुत चैन से हूं।**"

ख़ुल्द में होगा हमारा दाख़िला इस शान से
या रसूलल्लाह ! का ना'रा लगाते जाएंगे

صَلُّوْا عَلَی الْحَبِیْب ! صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلٰی مُحَمَّد

ग़ैरे नबी का ख़्वाब शरीअ़त में हुज्जत नहीं मगर हमें **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ की रह़मत की उम्मीद रखनी चाहिये और साथ ही साथ उस की ख़ुफ़्या तदबीर से डरना भी चाहिये।

येह सब **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ की मशिय्यत पर है कि अगर चाहे तो किसी एक गुनाह पर गरिफ़्त फ़रमा ले और चाहे तो किसी एक नेकी पर नवाज़ दे। या मह़ज़ अपने फ़ज़्लो करम से यूं ही नवाज़ दे। चुनान्चे पारह 24 **सूरतुज़्ज़ुमर** की आयत नम्बर 53 में ख़ुदाए रह़मान عَزَّوَجَلَّ का फ़रमाने मग़्फ़िरत निशान है,

قُلْ يٰعِبَادِيَ الَّذِيْنَ اَسْرَفُوْا عَلٰٓى اَنْفُسِهِمْ لَا تَقْنَطُوْا مِنْ رَّحْمَةِ اللّٰهِ ؕ اِنَّ اللّٰهَ يَغْفِرُ الذُّنُوْبَ جَمِيْعًا ؕ اِنَّهٗ هُوَ الْغَفُوْرُ الرَّحِيْمُ

तरजमए कन्ज़ुल ईमान : तुम फ़रमाओ, ऐ मेरे वोह बन्दो जिन्हों ने अपनी जानों पर ज़ियादती की, **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ की रह़मत से ना उम्मीद न हो, बेशक **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ सब गुनाह बख़्श देता है। बेशक वोही बख़्शने वाला मेह्रबान है।

बुख़ारी शरीफ़ की ह़दीस में येह मज़मून मौजूद है कि

100 अफ़राद का क़ातिल बख़्शा गया : बनी इसराईल का एक शख़्स जिस ने 99 क़त्ल किये थे एक राहिब[1] के पास पहुंचा और पूछा, "क्या मेरे जैसे मुजरिम के लिये कोई तौबा की गुन्जाइश है ?"

1 : या'नी ईसाई इबादत गुज़ार, तारिकुद्दुन्या।

राहिब ने उसे मायूस कर दिया तो उस ने राहिब को भी क़त्ल कर डाला। मगर फिर नादिम हो कर तौबा का त़रीक़ा लोगों से पूछता फिरा। आख़िर किसी ने कहा कि फ़ुलां क़स्बे में चले जाओ।" (वहां **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ का एक वली है वोह तुम्हारी रहनुमाई करेगा।) चुनान्चे वोह उस की त़रफ़ चल दिया मगर रास्ते में बीमार हो गया। जब **क़रीबुल मर्ग** हुवा तो उस ने अपना सीना उस क़स्बे की त़रफ़ कर दिया और फ़ौत हो गया। अब उस को ले जाने के बारे में रह़मतो अ़ज़ाब के फ़िरिश्तों में इख़्तिलाफ़ हुवा। **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ ने मय्यित और क़स्बे के दरमियान वाले ह़िस्सए ज़मीन को सिमट कर मय्यित के क़रीब हो जाने का हुक्म फ़रमाया और जिधर से वोह चला था और जहां पहुंच कर फ़ौत हुवा था उस दरमियानी फ़ासिले को मज़ीद त़वील हो जाने का हुक्म फ़रमाया। फिर पैमाइश का हुक्म फ़रमाया तो वोह जिस क़स्बे की त़रफ़ जा रहा था उस से एक बालिश्त क़रीब पाया गया और **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ ने उस की मग़्फ़िरत फ़रमा दी।

(صحیح بخاری رقم الحدیث ۳۴۷۰ ج۲ ص ۴۶۶)

अल्लाह عَزَّوَجَلَّ **की उन पर रह़मत हो और उन के सदक़े हमारी मग़्फ़िरत हो।**

صَلُّوْا عَلَى الْحَبِيْب ! صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلٰى مُحَمَّد

प्यारे प्यारे इस्लामी भाइयो ! मा'लूम हुवा औलियाए किराम رَحِمَهُمُ اللّٰهُ تَعَالٰى की बारगाह में ह़ाज़िरी और उन की बस्ती की ता'ज़ीम करते हुए उस को अपनी रूह़ का क़िब्ला बनाना इन्तिहाई पसन्दीदा अ़मल है, बस **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ की रह़मत पर झूम जाइये जो परवर्दगार

عَزَّوَجَلَّ 100 आदमियों के क़ातिल को मह़्ज़ अपनी रह़मत से बख़्श दे वोह अगर सुन्नतों की तरबियत के लिये आ़शिक़ाने रसूल के साथ **मदनी क़ाफ़िले** में सफ़र की निय्यत करने वाले किसी ख़ुश नसीब नौ जवान पर मेह्रबान हो जाए तो येह भी उस की रह़मत ही रह़मत है और **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ को हर शै पर क़ुदरत ह़ासिल है। मेरा मदनी मश्वरा है कि दा'वते इस्लामी के मदनी माह़ोल से हर दम वाबस्ता रहिये। اِنْ شَآءَاللّٰه عَزَّوَجَلَّ दोनों जहां में बेड़ा पार हो जाएगा। **दा'वते इस्लामी** के मदनी माह़ोल की बरकतों के क्या कहने ! यक़ीनन आ़शिक़ाने रसूल की सोह़बत रंग ला कर रहती है। ज़िन्दगी अपनी जगह पर, मगर बा'ज़ अम्वात भी क़ाबिले रश्क हुवा करती हैं, ऐसी ही एक क़ाबिले रश्क मौत का तज़्किरा सुनिये और रश्क कीजिये :

क़ाबिले रश्क मौत : मुह़म्मद वसीम अ़त्तारी सगे मदीना عُفِیَ عَنْهُ के पास तशरीफ़ लाते थे, बेचारे के हाथ में केन्सर हो गया और डॉक्टरों ने हाथ काट डाला। उन के अ़लाक़े के एक इस्लामी भाई ने बताया, वसीम भाई शिद्दते दर्द के सबब सख़्त अज़िय्यत में हैं। मैं अस्पताल में इ़यादत के लिये ह़ाज़िर हुवा और तसल्ली देते हुए कहा, "दीवाने ! बायां हाथ कट गया इस का ग़म मत करो। اَلْحَمْدُ لِلّٰه عَزَّوَجَلَّ दायां हाथ तो मह़फ़ूज़ है और सब से बड़ी सआ़दत येह कि اِنْ شَآءَاللّٰه عَزَّوَجَلَّ ईमान भी सलामत है। اَلْحَمْدُ لِلّٰه عَزَّوَجَلَّ मैं ने उन्हें काफ़ी साबिर पाया, सिर्फ़ मुस्कुराते रहे यहां तक कि बिस्तर से उठ कर मुझे बाहर तक पहुंचाने आए। रफ़्ता रफ़्ता हाथ की तक्लीफ़ ख़त्म हो

गई मगर बेचारे का दूसरा इम्तिहान शुरूअ़ हो गया और वोह येह कि सीने में पानी भर गया, दर्दो कर्ब में दिन कटने लगे। आख़िर एक दिन तक्लीफ़ बहुत बढ़ गई। **ज़िक्रुल्लाह** शुरूअ़ कर दिया। सारा दिन **अल्लाह, अल्लाह** की सदाओं से कमरा गूंजता रहा, त़बीअ़त बहुत ज़ियादा तश्वीश नाक हो गई थी, डॉक्टर के पास ले जाने की कोशिश की गई मगर इन्कार कर दिया, दादी जान ने फ़र्ते शफ़्क़त से गोद में ले लिया, ज़बान पर कलिमए त़य्यिबा لَآ اِلٰهَ اِلَّا اللّٰهُ مُحَمَّدٌ رَّسُوْلُ اللّٰهِ صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم जारी हुवा और 22 सालह मुह़म्मद वसीम अ़त्तारी की रूह़ क़फ़से उ़न्सुरी से परवाज़ कर गई। اِنَّا لِلّٰهِ وَاِنَّاۤ اِلَیْهِ رٰجِعُوْنَ

जब मर्ह़ूम को ग़ुस्ल के लिये ले जाने लगे तो अचानक चादर चेहरे से हट गई, मर्ह़ूम का चेहरा गुलाब के फूल की त़रह़ खिला हुवा था, ग़ुस्ल के बा'द चेहरे की बहार में मज़ीद निखार आ गया। तदफ़ीन के बा'द आ़शिक़ाने रसूल ना'तें पढ़ रहे थे, क़ब्र से ख़ुश्बूओं की ऐसी लपटें आने लगीं कि मशामे जां मुअ़त्त़र हो गए मगर जिस ने सूंघी उस ने सूंघी। घर के किसी फ़र्द ने इन्तिक़ाल के बा'द ख़्वाब में मर्ह़ूम मुह़म्मद वसीम अ़त्तारी को फूलों से सजे हुए कमरे में देखा, पूछा, "कहां रहते हो ?" हाथ से एक कमरे की त़रफ़ इशारा करते हुए कहा, "येह मेरा मकान है। यहां मैं बहुत ख़ुश हूं।" फिर एक आरास्ता बिस्तर पर लेट गए। मर्ह़ूम के वालिद साह़िब ने ख़्वाब में अपने आप को वसीम अ़त्तारी की क़ब्र के पास पाया, यकायक क़ब्र शक़ हुई और मर्ह़ूम सर पर सब्ज़ सब्ज़ इमामा सजाए हुए सफ़ेद कफ़न में मल्बूस बाहर

निकल आए ! कुछ बातचीत की और फिर क़ब्र में दाख़िल हो गए और क़ब्र दोबारा बन्द हो गई ।

अल्लाह عَزَّوَجَلَّ की उन पर रह़मत हो और उन के सदक़े हमारी मग़्फ़िरत हो ।

या अल्लाह عَزَّوَجَلَّ ! मेरी, मर्ह़ूम की और उम्मते मह़बूब صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم की मग़्फ़िरत फ़रमा और हम सब को दा'वते इस्लामी के मदनी माह़ोल में इस्तिक़ामत दे और मरते वक़्त ज़िक्रो दुरूद और कलिमए त़य्यिबा नसीब फ़रमा ।

اٰمِين بِجاهِ النَّبِيِّ الْاَمين صَلَّى اللهُ تعالٰى عليه واٰله وسلَّم

अ़ासी हूं, मग़्फ़िरत की दुआ़एं हज़ार दो
ना'ते नबी सुना के लह़द में उतार दो

صَلُّوا عَلَى الْحَبِيب ! صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلٰى مُحَمَّد

"बिस्मिल्लाह कीजिये" कहना मम्नूअ़ है : बा'ज़ लोग इस त़रह़ कह देते हैं, "**बिस्मिल्लाह** कीजिये !" "**आओ जी बिस्मिल्लाह**", "मैं ने **बिस्मिल्लाह कर डाली ।**" ताजिर ह़ज़रात जो दिन में पहला सौदा बेचते हैं उस को उ़मूमन "बोनी" कहा जाता है मगर बा'ज़ लोग उस को भी "**बिस्मिल्लाह**" कहते हैं मसलन : "मेरी तो आज अभी तक "**बिस्मिल्लाह** ही नहीं हुई !" जिन जुम्लों की मिसालें पेश की गईं येह सब ग़लत़ अन्दाज़ हैं। इसी त़रह़ खाना खाते वक़्त अगर कोई आ जाता है तो अक्सर खाने वाला उस से कहता है," आइये आप भी खा लीजिये ।" आ़म तौ़र पर जवाब मिलता है, "**बिस्मिल्लाह**" या इस त़रह़ कहते हैं,

"**बिस्मिल्लाह** कीजिये।" बहारे शरीअ़त हिस्सा 16, सफ़्हा 32 पर है कि, "इस मौक़अ़ पर इस त़रह़ **बिस्मिल्लाह** कहने को उ़लमा ने बहुत **सख़्त मम्नूअ़** क़रार दिया है।" हां ! येह कह सकते हैं, "**बिस्मिल्लाह** पढ़ कर खा लीजिये।" बल्कि ऐसे मौक़अ़ पर दुआ़इया अल्फ़ाज़ कहना बेहतर है, मसलन : بَارَکَ اللّٰہُ لَنَا وَلَکُمْ या'नी **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ हमें और तुम्हें बरकत दे। या अपनी मादरी ज़बान में कह दीजिये, "**अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ बरकत दे।"

"बिस्मिल्लाह" कहना कब कुफ़्र है ? : **ह़राम** व ना जाइज़ काम से क़ब्ल **बिस्मिल्लाह** शरीफ़ हरगिज़, हरगिज़, हरगिज़ न पढ़ी जाए कि "फ़तावा आ़लमगीरी" में है, "**शराब पीते वक़्त, ज़िना करते वक़्त, या जूआ खेलते वक़्त "बिस्मिल्लाह" कहना कुफ़्र है।**

(فتاوی عالمگیری ج ۲ ص ۲۷۳)

फ़िरिश्ते नेकियां लिखते रहते हैं : ह़ज़रते सय्यिदुना अबू हुरैरा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ से रिवायत है कि सरकारे मदीना, सुल्त़ाने बा क़रीना, क़रारे क़ल्बो सीना, फ़ैज़ गन्जीना, साह़िबे मुअ़त़्त़र पसीना, बाइसे नुज़ूले सकीना صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने इर्शाद फ़रमाया, "ऐ अबू हुरैरा (رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ) ! जब तुम **वुज़ू** करो तो بِسْمِ اللّٰہِ وَ الْحَمْدُ لِلّٰہِ कह लिया करो जब तक तुम्हारा वुज़ू बाक़ी रहेगा उस वक़्त तक तुम्हारे फ़िरिश्ते (या'नी किरामन कातिबीन) तुम्हारे लिये नेकियां लिखते रहेंगे।" (طَبرانی صَغیر ج۱ ص۷۳ رقم الحدیث ۱۸۶)

हर हर क़दम पर एक नेकी : जो शख़्स किसी जानवर पर सुवार होते वक़्त **बिस्मिल्लाह** और اَلْحَمْدُ لِلّٰه पढ़ ले तो उस जानवर के हर **क़दम** पर उस सुवार के ह़क़ में एक नेकी लिखी जाएगी ।

(तफ़्सीरे नईमी, जिल्द अव्वल, स. 42)

कश्ती में नेकियां ही नेकियां : जो शख़्स **कश्ती** में सुवार होते वक़्त **बिस्मिल्लाह** और اَلْحَمْدُ لِلّٰه पढ़ ले, जब तक वोह उस में सुवार रहेगा उस के वासिते़ नेकियां लिखी जाती रहेंगी ।

(तफ़्सीरे नईमी, जिल्द अव्वल, स. 42)

प्यारे प्यारे इस्लामी भाइयो ! بِسْمِ اللهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ के फ़ज़ाइल इस क़दर ज़ियादा हैं कि पढ़ या सुन कर जी चाहता है कि हर वक़्त "بِسْمِ اللهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ" ही पढ़ते रहें, मगर येह सआ़दत सिर्फ़ रब्बुल इ़ज़्ज़त عَزَّوَجَلَّ ही की इनायत से मिल सकती है, **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ की अ़ता से **दा'वते इस्लामी** के मदनी माहोल में रह कर एक दूसरे पर **इन्फ़िरादी कोशिश** के ज़रीए़ भी **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ का करम हो जाए तो بِسْمِ اللهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ पढ़ते रहने की आ़दत बन सकती है । यक़ीनन दीन की तब्लीग़ो इशाअ़त में इन्फ़िरादी कोशिश को बड़ा अ़मल दख़्ल है । **ह़त्ता कि हमारे मीठे मीठे आक़ा मदीने वाले मुस्त़फ़ा** صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم **नीज़ सब के सब अम्बिया** عَلَيْهِمُ السَّلَام **ने नेकी की दा'वत के काम में**

इन्फ़िरादी कोशिश फ़रमाई है । اَلْحَمْدُ لِلّٰه عَزَّوَجَلَّ दा'वते इस्लामी के मुबल्लिग़ीन भी इन्फ़िरादी कोशिश करने वाली सुन्नत पर अ़मल कर के लोगों के दिलों में इश्क़े रसूल صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم की शम्अ़ रोशन करने में मश्ग़ूल हैं । उन की इन्फ़िरादी कोशिशों की बरकतों भरी तह़रीरें कभी कभी मुझे नज़र नवाज़ हो जाती हैं । चुनान्चे

ड्राइवर पर इन्फ़िरादी कोशिश : एक आ़शिक़े रसूल ने मुझे तह़रीर दी थी, उस का ख़ुलासा अपने अन्दाज़ो अल्फ़ाज़ में अ़र्ज़ करने की कोशिश करता हूं, "दा'वते इस्लामी के मदनी मर्कज़ **फ़ैज़ाने मदीना** में जुमे'रात को होने वाले हफ़्तावार सुन्नतों भरे इज्तिमाअ़ में शिर्कत के लिये मुख़्तलिफ़ अ़लाक़ों से भर कर आई हुई मख़्सूस बसें वापसी के इन्तिज़ार में जहां खड़ी होती हैं, वहां से गुज़रा तो क्या देखता हूं कि एक ख़ाली बस में गाने बज रहे हैं और ड्राइवर बैठ कर चरस के कश लगा रहा है, मैं ने जा कर ड्राइवर से मह़ब्बत भरे अन्दाज़ में मुलाक़ात की, اَلْحَمْدُ لِلّٰه عَزَّوَجَلَّ मुलाक़ात की बरकात फ़ौरन ज़ाहिर हुईं और उस ने ख़ुद बख़ुद गाने बन्द कर दिये और चरस वाली सिगरेट भी बुझा दी । मैं ने मुस्कुरा कर सुन्नतों भरे बयान की केसेट **क़ब्र की पहली रात** उस को पेश की, उस ने उसी वक़्त टेप रेकॉर्डर में लगा दी, मैं भी साथ ही बैठ कर सुनने लगा कि दूसरों को बयान सुनाने का मुफ़ीद त़रीक़ा येही है कि ख़ुद भी साथ में सुने । اَلْحَمْدُ لِلّٰه عَزَّوَجَلَّ

उस ने बहुत अच्छा असर लिया, घबरा कर गुनाहों से तौबा की और बस से निकल कर मेरे साथ इज्तिमाअ़ में आ कर बैठ गया।"

صَلُّوْا عَلَی الْحَبِیْب! صَلَّی اللّٰهُ تَعَالٰی عَلٰی مُحَمَّد

बयान की केसेट तोहूफ़तन दीजिये : प्यारे प्यारे इस्लामी भाइयो ! देखा आप ने ! **इन्फ़िरादी कोशिश** से कितना फ़ाएदा होता है ! लिहाज़ा हर मुसल्मान पर इन्फ़िरादी कोशिश करना और उन को नमाज़ों की दा'वत देना चाहिये। इज्तिमाअ़ वग़ैरा के लिये अगर बस या वेगन में आएं तो ड्राइवर व कन्डक्टर को भी शिर्कत की दरख़्वास्त करनी चाहिये। अगर बिलफ़र्ज़ कोई आने के लिये तय्यार नहीं होता तो सुनने की दरख़्वास्त कर के उस को बयान की केसेट पेश कर दी जाए, और वोह सुन ले तो वापस ले कर दूसरी दी जाए। और जहां तक मुम्किन हो बयान की **केसेटें** दे कर बदले में उन से गानों की **केसेटें** ले कर डब करवा कर मज़ीद आगे बढ़ा देनी चाहिएं, इस त़रह़ कुछ न कुछ गुनाहों भरी **केसेटों** का اِنْ شَآءَ اللّٰه عَزَّوَجَلَّ ख़ातिमा होगा। **इन्फ़िरादी कोशिश** और समझाना तर्क नहीं करना चाहिये। **अल्लाह** रब्बुल आ़लमीन جَلَّ جَلَالُهٗ पारह 27 **सूरतुज़्ज़ारियात** की आयत नम्बर 55 में इर्शाद फ़रमाता है,

وَّذَكِّرْ فَاِنَّ الذِّكْرٰى تَنْفَعُ الْمُؤْمِنِيْنَ ○

तरजमए कन्ज़ुल ईमान : और समझाओ कि समझाना मुसल्मानों को फ़ाएदा देता है।

कोई माने या न माने अपना सवाब खरा : अगर हमारी बात कोई नहीं मानता फिर भी اِنْ شَآءَاللّٰہ عَزَّوَجَلَّ हमें नेकी की दा'वत देने का सवाब मिल जाएगा। चुनान्चे **हुज्जतुल इस्लाम** ह़ज़रते सय्यिदुना इमाम मुह़म्मद ग़ज़ाली عَلَیْہِ رَحْمَۃُ اللّٰہِ الْوَالِی "**मुकाशफ़तुल क़ुलूब**" में फ़रमाते हैं, ह़ज़रते सय्यिदुना मूसा कलीमुल्लाह عَلٰی نَبِیِّنَا وَعَلَیْہِ الصَّلٰوۃُ وَالسَّلَام ने अ़र्ज़ किया, "ऐ **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ ! जो अपने भाई को बुलाए उसे नेकी का हुक्म करे और बुराई से रोके, उस की क्या जज़ा है?" फ़रमाया, "मैं उस की हर बात पर एक साल की इ़बादत का सवाब लिखता हूं और उसे जहन्नम की सज़ा देने में मुझे ह़या आती है।" (مُکاشَفَۃُالقُلُوب ص۴۸)

रूए ज़मीन की सल्त़नत से बेहतर : अगर आप की **इन्फ़िरादी कोशिश** से कोई नमाज़ों और सुन्नतों की राह पर चल पड़ा तो आप का भी बेड़ा पार हो जाएगा। जैसा कि रह़मते आ़लम, नूरे मुजस्सम, शाहे बनी आदम, रसूले मोह़्तशम صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم का इर्शादे मुअ़ज़्ज़म है, "**अल्लाह** तआ़ला एक शख़्स को तेरे ज़रीए़ से हिदायत फ़रमा दे तो येह तेरे लिये तमाम रूए ज़मीन की सल्त़नत मिलने से बेहतर है।"

(الجامِعُ الصَّغیر ص۲۴۴ رقم الحدیث ۴۲۱۹)

ज़हरे क़ातिल बे असर हो गया : एक मरतबा सय्यिदुना ख़ालिद बिन वलीद رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ से कुछ मजूसियों ने अ़र्ज़ किया कि आप

(رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ) हमें कोई ऐसी निशानी बताइये जिस से हम पर इस्लाम की **हक़्क़ानिय्यत** वाज़ेह हो। चुनान्चे आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ने **ज़हरे क़ातिल** मंगवाया और بِسۡمِ اللّٰہِ الرَّحۡمٰنِ الرَّحِیۡمِ पढ़ कर उसे खा लिया। **बिस्मिल्लाह** की बरकत से उस **ज़हरे क़ातिल** ने आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ पर कोई असर न किया। येह मन्ज़र देख कर मजूसी (आतश परस्त) बे साख़्ता पुकार उठे, **दीने इस्लाम हक़ है।** (تفسيرِ كبير ج اول ص١٥٥)

صَلُّوا عَلَى الْحَبِيب! صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلٰى مُحَمَّد

प्यारे प्यारे इस्लामी भाइयो ! मा'लूम हुवा कि खाने या पीने से क़ब्ल بِسۡمِ اللّٰہِ الرَّحۡمٰنِ الرَّحِیۡمِ पढ़ लेने से जहां आख़िरत का अ़ज़ीम सवाब है वहीं दुन्या में भी इस का येह फ़ाएदा है कि अगर खाने या पीने की चीज़ में कोई मुज़िर (नुक़्सान देह) अज्ज़ा शामिल हों भी तो वोह اِنْ شَآءَ اللّٰه عَزَّوَجَلَّ नुक़्सान नहीं करेंगे। ह़ज़रते सय्यिदुना ख़ालिद बिन वलीद رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ पर **ज़ह्र असर न करने** का येह वाक़िआ़ दीगर कुतुब में कुछ अल्फ़ाज़ के फ़र्क़ के साथ भी मिलता है या येह भी हो सकता है कि एक से ज़ियादा बार येह करामत ज़ाहिर हुई हो। चुनान्चे

ख़ौफ़नाक ज़ह्र : ह़ज़रते सय्यिदुना ख़ालिद बिन वलीद رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ने मक़ामे "ह़ैरह" में जब अपने लश्कर के साथ पड़ाव किया तो लोगों ने अ़र्ज़ किया, या सय्यिदी ! हमें अन्देशा है कि कहीं येह अ़जमी लोग आप को **ज़ह्र** न दे दें लिहाज़ा मोह़तात़ रहियेगा। आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ने फ़रमाया,

फ़रमाने मुस्तफ़ा صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰی عَلَیْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم : जिस के पास मेरा ज़िक्र हो और वोह मुझ पर दुरूद शरीफ़ न पढ़े तो वोह लोगों में से कन्जूस तरीन शख़्स है। (مسند احمد)

"लाओ मैं देख लूं कि अ़जमिय्यों का **ज़हर** कैसा होता है ?" लोगों ने आप رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْهُ को दिया तो आप رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْهُ ने "**बिस्मिल्लाह**" पढ़ कर खा लिया। اَلْحَمْدُ لِلّٰه عَزَّوَجَلَّ आप رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْهُ को बाल बराबर भी ज़रर (या'नी नुक़्सान) न पहुंचा और "कल्बी" की रिवायत में येह है कि एक **ईसाई पादरी** जिस का नाम **अ़ब्दुल मसीह़** था एक ऐसा **ज़हर** ले कर आया कि उस के खा लेने से एक घन्टे के बा'द मौत यक़ीनी होती है। आप رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْهُ ने उस से **ज़हर** मांग कर उस के सामने ही بِسْمِ اللّٰهِ وَبِاللّٰهِ رَبِّ الْاَرْضِ وَالسَّمَآءِ بِسْمِ اللّٰهِ الَّذِیْ لَا یَضُرُّ مَعَ اسْمِهٖ دَاءٌ۔ पढ़ा और ज़हर खा गए। येह मन्ज़र देख कर **अ़ब्दुल मसीह़** ने अपनी क़ौम से कहा, "ऐ मेरी क़ौम ! इन्तिहाई हैरत नाक बात है कि येह इतना **ख़तरनाक ज़हर** खा कर भी ज़िन्दा हैं, अब बेहतर येही है कि इन से सुल्ह़ कर ली जाए, वरना इन की फ़त्ह़ यक़ीनी है।" येह वाक़िआ़ अमीरुल मुअमिनीन ह़ज़रते सय्यिदुना अबू बक्र सिद्दीक़ رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْهُ के दौरे ख़िलाफ़त में हुवा। (مُلخّص از حُجَّةُ اللّٰهِ عَلَی الْعٰلَمِین ج ۲ ص ٦١٧)

अल्लाह عَزَّوَجَلَّ की उन पर रह़मत हो और उन के सदक़े हमारी मग़्फ़िरत हो।

صَلُّوْا عَلَی الْحَبِیْب ! صَلَّی اللّٰهُ تَعَالٰی عَلٰی مُحَمَّد

प्यारे प्यारे इस्लामी भाइयो ! देखा आप ने ! सय्यिदुना ख़ालिद बिन वलीद رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْهُ पर **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ का कितना ख़ास करम था और यक़ीनन बि इज़्निल्लाह येह आप رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْهُ की **करामत** थी। करामत की बे शुमार अक़्साम हैं जिन में से एक क़िस्म

"मोहलिकात (या'नी हलाक कर देने वाली अश्या) का असर न करना" भी है। औलियाउल्लाह رَحِمَهُمُ اللّٰهُ تَعَالٰی पर भी ज़हर वग़ैरा असर न करने के वाक़िआ़त मन्क़ूल हैं चुनान्चे,

आग थी या बाग़ ? : एक बद अ़क़ीदा बादशाह ने एक ख़ुदा रसीदा बुज़ुर्ग رَحْمَةُ اللّٰهِ تَعَالٰی عَلَيْه को बमअ़ रुफ़क़ा गिरिफ़्तार कर लिया और कहा कि करामत दिखाओ वरना आप رَحْمَةُ اللّٰهِ تَعَالٰی عَلَيْه को साथियों समेत शहीद कर दिया जाएगा। आप رَحْمَةُ اللّٰهِ تَعَالٰی عَلَيْه ने ऊंट की मेंग्नियों की त़रफ़ इशारा कर के फ़रमाया कि उन को उठा लाओ और देखो कि वोह क्या हैं? जब लोगों ने उन को उठा कर देखा तो वोह **ख़ालिस सोने के टुकड़े** थे। फिर आप رَحْمَةُ اللّٰهِ تَعَالٰی عَلَيْه ने एक ख़ाली पियाले को उठा कर घुमाया और औंधा कर के बादशाह को दिया तो वोह पानी से भरा हुवा था। और औंधा होने के बा वुजूद उस में से एक क़त़रा भी पानी नहीं गिरा। येह दो[2] करामतें देख कर **बद अ़क़ीदा बादशाह** कहने लगा कि येह सब नज़र बन्दी और जादू है। फिर बादशाह ने **आग** जलाने का हुक्म दिया। जब आग के शो'ले बुलन्द हुए तो वोह बुज़ुर्ग رَحْمَةُ اللّٰهِ تَعَالٰی عَلَيْه और उन के रुफ़क़ा आग में कूद पड़े। साथ में छोटे से शहज़ादे को भी लेते गए, बादशाह अपने बच्चे को आग में गिरते देख कर उस के फ़िराक़ में बेचैन हो गया, कुछ देर के बा'द नन्हे शहज़ादे को इस ह़ाल में बादशाह की गोद में डाल दिया गया कि उस के एक हाथ में **सेब** और दूसरे हाथ में **अनार** था। बादशाह ने पूछा, "बेटा ! तुम कहां चले गए थे ?" तो उस ने कहा, मैं एक **बाग़** में था, येह देख कर ज़ालिम व **बद अ़क़ीदा बादशाह** के दरबारी कहने लगे इस काम की

कोई ह़क़ीक़त नहीं (येह जादू है) बादशाह ने कहा, "अगर तुम येह ज़हर का पियाला पी लो तो मैं तुम्हें सच्चा मान लूंगा। उन बुज़ुर्ग رَحْمَةُ اللّٰهِ تَعَالٰی عَلَیْه ने बार बार **ज़हर** का पियाला पिया, हर मरतबा **ज़हर** के असर से उन बुज़ुर्ग رَحْمَةُ اللّٰهِ تَعَالٰی عَلَیْه के फ़क़त कपड़े फटते रहे मगर उन की ज़ात पर **ज़हर** का कोई असर नहीं हुवा। (مُلخّص از حُجَّةُ اللّٰهِ عَلَى الْعٰلَمِين ج ٢ ص ٦١١)

अल्लाह عَزَّوَجَلَّ की उन पर रह़मत हो और उन के सदके़ हमारी मग़्फ़िरत हो।

फ़ानूस बन के जिस की हि़फ़ाज़त "हवा" करे
वोह शम्अ़ क्या बुझे जिसे रोशन ख़ुदा करे

صَلُّوا عَلَى الْحَبِيب! صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلٰى مُحَمَّد

प्यारे प्यारे इस्लामी भाइयो ! बेशक औलियाउल्लाह رَحِمَهُمُ اللّٰهُ تَعَالٰی की तो बहुत बड़ी शान है और उन की करामात के भी क्या कहने ! औलियाए किराम رَحِمَهُمُ اللّٰهُ تَعَالٰی की ग़ुलामी तब्लीग़े क़ुरआनो सुन्नत की आ़लमगीर ग़ैर सियासी तह़रीक, **दा'वते इस्लामी** का तु़र्रए इम्तियाज़ है, इस से वाबस्तगान पर भी रब्बे काएनात عَزَّوَجَلَّ के ऐसे ऐसे इन्आ़मात होते हैं कि अ़क़्लें ह़ैरान रह जाती हैं चुनान्चे

ह़ैरत अंगेज़ ह़ादिसा : बरोज़ इतवार 26 रबीउ़न्नूर शरीफ़ 1420 सि.हि. ब मुत़ाबिक़ 11/7/1999 ब वक़्ते दोपहर एक मसरूफ़ शाहराह पर किसी ट्रेलर ने **दा'वते इस्लामी** के एक ज़िम्मादार मुबल्लिग़े दा'वते इस्लामी मुह़म्मद मुनीर हुसैन अ़त्तारी عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللّٰهِ الْبَارِى को बुरी त़रह़ कुचल दिया। यहां तक कि उन के पेट की जानिब से ऊपर और नीचे का ह़िस्सा

अलग अलग हो गया। मगर हैरत की बात येह थी कि फिर भी वोह ज़िन्दा थे, और हैरत बालाए हैरत येह कि हवास इतने बहाल थे कि बुलन्द आवाज़ से اَلصَّلٰوۃُ وَ السَّلَامُ عَلَیْکَ یَا رَسُوْلَ اللّٰہ और لَآ اِلٰہَ اِلَّا اللّٰہُ مُحَمَّدٌ رَّسُوْلُ اللّٰہِ صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰی عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم पढ़े जा रहे थे। अस्पताल में डॉक्टरों के जवाब दे देने पर उन्हें शहर **गुजरात** के अ़ज़ीज़ भट्टी अस्पताल ले जाया गया। उन्हें अस्पताल ले जाने वाले इस्लामी भाई का ब क़सम बयान है, اَلْحَمْدُ لِلّٰہ عَزَّوَجَلَّ मुहम्मद मुनीर हुसैन अ़त्तारी عَلَیْہِ رَحْمَۃُ اللّٰہِ الْبَارِی की ज़बान पर पूरे रास्ते इसी त़रह़ बुलन्द आवाज़ से दुरूदो सलाम और कलिमए त़य्यिबा का विर्द जारी था। येह मदनी मन्ज़र देख कर डॉक्टर्ज़ भी हैरानो शश्दर थे कि येह ज़िन्दा किस त़रह़ हैं ! और हवास इतने बहाल कि बुलन्द आवाज़ से दुरूदो सलाम और कलिमए त़य्यिबा पढ़े जा रहे हैं ! उन का कहना था कि हम ने अपनी ज़िन्दगी में ऐसा बा हौसला और बा कमाल मर्द पहली मरतबा ही देखा है। कुछ देर बा'द वोह खुश नसीब आ़शिक़े रसूल मुहम्मद मुनीर हुसैन अ़त्तारी عَلَیْہِ رَحْمَۃُ اللّٰہِ الْبَارِی ने बारगाहे महबूबे बारी صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰی عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم में बसद बे क़रारी इस त़रह़ इस्तिग़ासा किया,

या रसूलल्लाह صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰی عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم आ भी जाइये !

या रसूलल्लाह صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰی عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم मेरी मदद फ़रमाइये !

या रसूलल्लाह صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰی عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم मुझे मुआ़फ़ फ़रमा दीजिये !

इस के बा'द ब आवाज़े बुलन्द لَآ اِلٰهَ اِلَّا اللّٰهُ مُحَمَّدٌ رَّسُوْلُ اللّٰهِ صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم पढ़ते हुए जामे शहादत नोश कर गए। जी हां ! जो मुसल्मान ह़ादिसे में फ़ौत हो वोह शहीद है।

अल्लाह عَزَّوَجَلَّ की उन पर रह़मत हो और उन के सदक़े हमारी मग़्फ़िरत हो।

वासित़ा प्यारे का ऐसा हो कि जो सुन्नी मरे

यूं न फ़रमाएं तेरे शाहिद कि वोह फ़ाजिर गया

(ह़दाइक़े बख़्शिश शरीफ़)

صَلُّوْا عَلَى الْحَبِيْب ! صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلٰى مُحَمَّد

नमाज़े फ़ज्र के लिये जगाना सुन्नत है : प्यारे प्यारे इस्लामी भाइयो ! येह वाक़िआ़ उन दिनों मुख़्तलिफ़ अख़्बारात ने शाएअ़ किया था। اَلْحَمْدُ لِلّٰه عَزَّوَجَلَّ शहीदे दा'वते इस्लामी मुह़म्मद मुनीर हुसैन अ़त्त़ारी عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللّٰهِ الْبَارِى दा'वते इस्लामी के ज़िम्मादार मुबल्लिग़ थे और ह़ादिसे के एक रोज़ क़ब्ल ही आ़शिक़ाने रसूल के सुन्नतों की तरबियत के मदनी क़ाफ़िले के साथ सफ़र कर के लौटे थे। मर्ह़ूम रोज़ाना सदाए मदीना भी लगाते थे। दा'वते इस्लामी के मदनी माहोल में नमाज़े फ़ज्र के लिये मुसल्मानों को जगाना "सदाए मदीना लगाना" कहलाता है। اَلْحَمْدُ لِلّٰه عَزَّوَجَلَّ बे शुमार ख़ुश नसीब इस्लामी भाई येह सुन्नत अदा करते हैं। जी हां ! नमाज़े फ़ज्र के लिये मुसल्मानों को जगाना सुन्नत है। चुनान्चे ह़ज़रते सय्यिदुना अबू बकरह رَضِىَ اللّٰهُ تَعَالٰى عَنْه (जो कि बनी सक़ीफ़ के एक सह़ाबी हैं) फ़रमाते हैं,

"मैं सरकारे मदीना صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم के साथ नमाज़े फ़ज्र के लिये निकला तो आप صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم जिस सोते हुए शख़्स पर गुज़रते उसे नमाज़ के लिये आवाज़ देते या अपने पाउं मुबारक से हिलाते।"

(ابو داوٗد شریف ج۲ ص۳۳رقم الحدیث۱۲٦٤)

कौन पाउं से हिलाए ? : जो खुश नसीब "सदाए मदीना" लगाते हैं اَلْحَمْدُ لِلّٰہ عَزَّوَجَلَّ अदाए सुन्नत का सवाब पाते हैं। याद रहे पाउं से हिलाने की सब को इजाज़त नहीं। सिर्फ़ वोह बुज़ुर्ग पाउं से हिला सकते हैं कि जिस से सोने वाले की दिल आज़ारी न होती हो। हां अगर कोई मानेए शरई न हो तो अपने हाथों से पाउं दबा कर जगाने में ह़रज नहीं। यक़ीनन हमारे मीठे मीठे आक़ा, मदीने वाले मुस्त़फ़ा صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم अगर अपने किसी ग़ुलाम को मुबारक पाउं से हिला दें तो उस के सोए नसीब जगा दें और किसी खुश बख़्त के सर, आंखों या सीने पर अपना मुबारक क़दम रख दें तो खुदा की क़सम ! कौनैन का चैन बख़्श दें।

एक ठोकर में उहुद का ज़ल्ज़ला जाता रहा रखती हैं कितना वक़ार अल्लाहु अक्बर एड़ियां

येह दिल, येह जिगर है, येह आंखें, येह सर है जिधर चाहो रख्खो क़दम जाने आ़लम

صَلُّوْا عَلَی الْحَبِیْب ! صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلٰی مُحَمَّد

मरते वक़्त कलिमा पढ़ने की फ़ज़ीलत : اَلْحَمْدُ لِلّٰہ عَزَّوَجَلَّ ऐसा लगता है मुह़म्मद मुनीर हुसैन अ़त्तारी عَلَیْہِ رَحْمَۃُ اللّٰہِ الْبَارِی की ख़िदमते दा'वते इस्लामी रंग लाई और उन्हें आख़िरी वक़्त कलिमा नसीब हो गया। और

जिस को मरते वक़्त कलिमा नसीब हो जाए उस का आख़िरत में बेड़ा पार है। चुनान्चे नबिय्ये रह़मत, शफ़ीए उम्मत, मालिके जन्नत, मह़बूबे रब्बुल इ़ज़्ज़त صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰی عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم का फ़रमाने जन्नत निशान है, जिस का आख़िरी कलाम لَآ اِلٰهَ اِلَّا اللّٰه हो वोह दाख़िले जन्नत होगा।

(ابوداوٗد شریف ج ۳ ص ۱۳۲ رقم الحديث ۳۱۱٦)

फ़ज़्लो करम जिस पर भी हुवा उस ने मरते दम कलिमा
पढ़ लिया और जन्नत में गया لَا اِلٰهَ اِلَّا اللّٰه

صَلُّوا عَلَى الْحَبِيْب ! صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلٰى مُحَمَّد

मोटा ताज़ा शैत़ान : एक मरतबा दो[2] शयात़ीन में मुलाक़ात हुई। एक शैत़ान ख़ूब **मोटा ताज़ा** था। जब कि दूसरा **दुबला पतला**। मोटे ने दुबले से पूछा, "भाई ! आख़िर तुम इतने कमज़ोर क्यूं हो ?" उस ने जवाब दिया, "मैं एक ऐसे नेक बन्दे के साथ हूं जो घर में दाख़िल होते और खाते पीते वक़्त बिस्मिल्लाह शरीफ़ पढ़ लेता है तो मुझे उस से दूर भागना पड़ता है। यार ! येह तो बताओ ! तुम ने बहुत जान बना रखी है इस में क्या राज़ है ?" मोटा बोला, "मैं एक ऐसे ग़ाफ़िल शख़्स पर मुसल्लत़ हूं जो घर में **बिस्मिल्लाह** पढ़े बिग़ैर दाख़िल हो जाता है और खाते पीते वक़्त भी **बिस्मिल्लाह** नहीं पढ़ता लिहाज़ा मैं उस के इन तमाम कामों में शरीक हो जाता हूं और उस पर जानवर की त़रह़ सुवार रहता हूं। (येह राज़ है मेरी सिह़ह़त मन्दी का)। (اَسرارُالفاتِحہ ص ۱۵۵)

नव[9] शयातीन के नाम व काम : प्यारे प्यारे इस्लामी भाइयो ! इस हिकायत से येह दर्स मिलता है कि अगर हम अपने कामों में शैतान की शिर्कत से हिफ़ाज़त और ख़ैरो बरकत के तलब गार हैं तो हर नेक काम के आग़ाज़ में **बिस्मिल्लाह** पढ़ा करें। ब सूरते दीगर हर फे'ल में शैताने लईन शरीक हो जाएगा। शैतान की कसीर औलाद है और उन की मुख़्तलिफ़ कामों पर ड्यूटियां लगी हुई हैं चुनान्चे हज़रते अल्लामा इब्ने हजर अस्क़लानी قُدِّسَ سِرُّهُ الرَّبَّانِی नक़्ल करते हैं, अमीरुल मुअमिनीन हज़रते सय्यिदुना उमर फ़ारूके आ'ज़म رَضِیَ اللهُ تَعَالٰی عَنْهُ फ़रमाते हैं कि शैतान की औलाद नव[9] हैं :

(1) ज़लीतून (2) वसीन (3) लकूस (4) आ'वान (5) हफ़्फ़ाफ़ (6) मुर्रह (7) मुसव्वित (8) दासिम और (9) वल्हान।

ज़लीतून :- बाज़ारों में मुक़र्रर है, और वहां अपना झन्डा गाड़े रहता है।

वसीन :- लोगों को ना गहानी आफ़ात में मुब्तला करने के लिये मुक़र्रर है।

लकूस :- आतश परस्तों पर मुक़र्रर है।

आ'वान :- हुक्मरानों के साथ होता है।

हफ़्फ़ाफ़ :- शराबियों के साथ होता है।

मुर्रह :- गाने बाजे, बजाने वालों पर मुक़र्रर है।

मुसव्वित़ : अफ़्वाहें आ़म करने पर मुक़र्रर है। वोह लोगों की ज़बानों पर अफ़्वाहें जारी करवा देता है, और अस्ल ह़क़ीक़त से लोग बे ख़बर रहते हैं।

दासिम : घरों में मुक़र्रर है। अगर साह़िबे ख़ाना घर में दाख़िल हो कर न सलाम करे और न **बिस्मिल्लाह** पढ़ कर क़दम अन्दर रखे, तो येह उन घर वालों को आपस में लड़वा देता है, ह़त्ता कि त़लाक़ या ख़ुलअ़ या मारपीट तक नौबत पहुंच जाती है।

वल्हान : वुज़ू, नमाज़ और दीगर इ़बादात में वस्वसे डालने के लिये मुक़र्रर है। (المنبّهات لِلعَسقلانی، ص ۹۱)

घरेलू झगड़ों का इलाज : **मुफ़्ती** अह़मद यार ख़ान عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللهِ الْمَنَّان फ़रमाते हैं, "**घर** में दाख़िल होते वक़्त بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ पढ़ कर पहले सीधा क़दम दरवाज़े में दाख़िल करना चाहिये फिर घर वालों को **सलाम** करते हुए घर के अन्दर आएं। अगर घर में कोई न हो तो اَلسَّلَامُ عَلَيْكَ اَيُّهَا النَّبِىُّ وَرَحْمَةُ اللّٰهِ وَ بَرَكَاتُهٗ कहें। बा'ज़ बुज़ुर्गों को देखा गया है कि दिन की इब्तिदा में घर में दाख़िल होते वक़्त بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ और قُلْ هُوَ اللّٰه शरीफ़ पढ़ लेते हैं कि इस से घर में इत्तिफ़ाक़ भी रहता है (या'नी झगड़ा नहीं होता) और रोज़ी में **बरकत** भी।

(मिरआतुल मनाजीह़, जि. 6, स. 9)

या इलाही हर घड़ी शैत़ान से मह़फ़ूज़ रख

दे जगह फ़िरदौस में नीरान से मह़फ़ूज़ रख

صَلُّوا عَلَى الْحَبِيب! صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلٰى مُحَمَّد

खाने से पहले बिस्मिल्लाह ज़रूर पढ़िये : खाने पीने से क़ब्ल बिस्मिल्लाह पढ़ना **सुन्नत** है। ह़ज़रते सय्यिदुना हुज़ैफ़ा رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْهُ रिवायत करते हैं कि ताजदारे मदीना صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰی عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم का फ़रमाने आ़लीशान है कि जिस खाने पर **बिस्मिल्लाह** न पढ़ी जाए वोह खाना शैत़ान के लिये ह़लाल हो जाता है। (या'नी **बिस्मिल्लाह** न पढ़ने की सूरत में शैत़ान उस खाने में शरीक हो जाता है।)

(صحیح مُسلم ج ۲ ص ۱۷۲ رقم الحدیث ۲۰۱۷)

खाने को शैत़ान से बचाओ : खाने से पहले **बिस्मिल्लाह** न पढ़ने से खाने में **बे बरकती** होती है। ह़ज़रते सय्यिदुना अबू अय्यूब अन्सारी رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْهُ फ़रमाते हैं, हम ताजदारे रिसालत, माहे नुबुव्वत, मालिके कौसरो जन्नत, मह़बूबे रब्बुल इ़ज़्ज़त صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰی عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم की ख़िदमते सरापा रह़मत में ह़ाज़िर थे। खाना पेश किया गया, इब्तिदा में इतनी बरकत हम ने किसी खाने में नहीं देखी मगर आख़िर में बड़ी बे बरकती देखी। हम ने अ़र्ज़ की, "**या रसूलल्लाह** صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰی عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ! ऐसा क्यूं हुवा ?" इर्शाद फ़रमाया, "हम सब ने खाना खाते वक़्त **बिस्मिल्लाह** पढ़ी थी। फिर एक शख़्स बिग़ैर **बिस्मिल्लाह** पढ़े खाने को बैठ गया, उस के साथ शैत़ान ने खाना खा लिया। (شَرحُ السُّنّه ج ٦ ص ٦٢ رقم الحدیث ۲۸۱۸)

بِسۡمِ اللّٰهِ اَوَّلَهٗ وَ اٰخِرَهٗ : उम्मुल मुअमिनीन हज़रते सय्यिदतुना आइशा सिद्दीक़ा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنۡہَا फ़रमाती हैं कि ताजदारे मदीना, राहते क़ल्बो सीना, फ़ैज़ गन्जीना, साहिबे मुअ़त्तर पसीना, बाइसे नुज़ूले सकीना صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم का फ़रमाने बा क़रीना है, "जब कोई शख़्स खाना खाए तो **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ का नाम ले। या'नी **बिस्मिल्लाह** पढ़े और अगर शुरूअ़ में **बिस्मिल्लाह** पढ़ना भूल जाए तो यूं कहे, "بِسۡمِ اللّٰهِ اَوَّلَهٗ وَ اٰخِرَهٗ"।

(ابوداؤد شریف ج ۳ ص ۳۵٦ رقم الحدیث ۳۷٦۷)

शैतान ने खाना उगल दिया : हज़रते सय्यिदुना उमय्या बिन मख़्शी رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنۡہُ फ़रमाते हैं, हुज़ूर सरापा नूर, फ़ैज़ गन्जूर, शाहे ग़यूर, महबूबे रब्बे ग़फ़ूर صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم तशरीफ़ फ़रमा थे। एक शख़्स बिग़ैर **बिस्मिल्लाह** पढ़े खाना खा रहा था, जब खा चुका और सिर्फ़ एक ही लुक़्मा बाक़ी रह गया तो वोह लुक़्मा उठाया और उस ने कहा, "بِسۡمِ اللّٰهِ اَوَّلَهٗ وَ اٰخِرَهٗ"। ताजदारे मदीना صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने मुस्कुरा कर इर्शाद फ़रमाया, "शैतान इस के साथ खाना खा रहा था, जब इस ने **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ का नाम लिया तो जो कुछ उस के पेट में था **उगल** दिया।

(اَبوداؤدشریف، ج ۳ ص ۳۵٦ رقم الحدیث ۳۷٦۸)

صَلُّوۡا عَلَی الۡحَبِيۡب ! صَلَّی اللّٰهُ تَعَالٰی عَلٰی مُحَمَّد

निगाहे मुस्त़फ़ा से कुछ पोशीदा नहीं : प्यारे प्यारे इस्लामी भाइयो ! जब भी खाना खाएं याद कर के بِسۡمِ اللّٰهِ الرَّحۡمٰنِ الرَّحِيۡمِ पढ़ लिया करें। जो नहीं पढ़ता उस का **क़रीन** नामी शैत़ान भी खाने में साथ शरीक हो जाता है। सय्यिदुना उमय्या बिन मख़्शी رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنۡهُ वाली रिवायत से साफ़ ज़ाहिर हो रहा है कि हमारे मीठे मीठे आक़ा, मदीने वाले मुस्त़फ़ा صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم की **मुक़द्दस निगाहें** सब कुछ देख लिया करती हैं, जभी तो शैत़ान को क़ै करता हुवा मुलाह़ज़ा फ़रमा लिया और शैत़ान की बद ह़वासी देख कर मुस्कुरा दिये। चुनान्चे **मुफ़्ती अह़मद यार ख़ान** عَلَيْهِ رَحْمَةُ الْمَنَّان फ़रमाते हैं, **रह़मते आ़लम** صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم की मुक़द्दस नज़रें ह़क़ीक़त में छुपी हुई मख़्लूक़ को भी मुलाह़ज़ा फ़रमाती हैं, और ह़दीसे मुबारक बिल्कुल अपने ज़ाहिरी मा'ना पर है किसी तावील की ज़रूरत नहीं। जैसे हमारा पेट मख्खी वाला खाना (जब कि मख्खी उस में मौजूद हो) क़बूल नहीं करता। ऐसे ही शैत़ान का मे'दा **बिस्मिल्लाह** वाला खाना हज़्म नहीं कर पाता। अगर्चे उस का क़ै किया हुवा खाना हमारे काम नहीं आता, मगर मरदूद बीमार पड़ जाता है और **भूका** भी रह जाता है और हमारे खाने की फ़ौत शुदा बरकत लौट आती है। ग़रज़ येह कि इस में हमारा फ़ाएदा है और शैत़ान के दो[2] नुक़्सान और मुम्किन है कि वोह मरदूद आयिन्दा हमारे साथ बिग़ैर **बिस्मिल्लाह** वाला खाना भी इस डर से न खाए कि शायद येह बीच में **बिस्मिल्लाह** पढ़ ले और मुझे क़ै करनी पड़ जाए। ह़दीसे पाक में जिस आदमी का ज़िक्र है ग़ालिबन वोह अकेला खा

रहा था अगर हुज़ूरे अकरम صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم के साथ खाता तो **बिस्मिल्लाह** न भूलता क्यूं कि वहां तो ह़ाज़िरीन **बिस्मिल्लाह** बुलन्द आवाज़ से कहते थे और साथ वालों को **बिस्मिल्लाह** कहने का हुक्म करते थे। (मिरआत शर्हे मिश्कात, जि. 6, स. 30)

اَلْحَمْدُ لِلّٰه عَزَّوَجَلَّ **दा'वते इस्लामी** के मदनी क़ाफ़िलों में भी खाने की इब्तिदा व इन्तिहा के वक़्त अक्सर बुलन्द आवाज़ से **बिस्मिल्लाह** शरीफ़ के साथ दुआ़एं पढ़ाई जाती हैं, मदनी क़ाफ़िलों का मुसाफ़िर दुआ़एं और सुन्नतें सीखने की सआ़दत ह़ासिल करता रहता है, आप भी **दा'वते इस्लामी** के **मदनी क़ाफ़िलों** में सफ़र को अपना मा'मूल बना लीजिये। आ़शिक़ाने रसूल के मदनी क़ाफ़िलों के तो क्या कहने ! सुनिये और झूमिये।

सिद्दीक़े अक्बर رَضِىَ اللهُ تَعَالٰى عَنْه ने मदनी ऑपरेशन फ़रमाया !

एक आ़शिक़े रसूल का बयान अपने अन्दाज़ो अल्फ़ाज़ में पेश करने की कोशिश करता हूं, हमारा **मदनी क़ाफ़िला** सुन्नतों की तरबियत के लिये ह़ाज़िर हुवा था, **मदनी क़ाफ़िले** के एक मुसाफ़िर के सर में चार[4] छोटी छोटी गांठें हो गई थीं। जिन के सबब उन को आधा सीसी (या'नी आधे सर) का दर्द हुवा करता था। जब दर्द उठता तो दर्द की त़रफ़ वाले चेहरे का हिस्सा सियाह पड़ जाता और वोह तक्लीफ़ के सबब इस क़दर तड़पते कि देखा न जाता। एक रात इसी त़रह़ वोह दर्द से तड़पने लगे, हम ने गोलियां खिला कर उन को सुला दिया। सुब्ह़ उठे तो हश्शाश बश्शाश थे। उन्होंने

बताया कि اَلْحَمْدُ لِلّٰه عَزَّوَجَلَّ मुझ पर करम हो गया, मेरे ख़्वाब में **सरकारे रिसालत मआब** صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने बमअ़ चार[4] यार عَلَيْهِمُ الرِّضْوَان करम फ़रमाया। **सरकारे मदीना** صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने मेरी जानिब इशारा करते हुए ह़ज़रते सय्यिदुना अबू बक्र सिद्दीक़ رَضِىَ اللهُ تَعَالٰى عَنْه से फ़रमाया, "इस का दर्द ख़त्म कर दो।" चुनान्चे यारे ग़ार व यारे मज़ार सय्यिदुना सिद्दीक़े अक्बर رَضِىَ اللهُ تَعَالٰى عَنْه ने मेरा इस त़रह़ **मदनी ऑपरेशन** किया कि मेरा सर खोल दिया और मेरे दिमाग़ में से चार काले दाने निकाले और फ़रमाया, "बेटा ! अब तुम्हें कुछ नहीं होगा।" वाक़ेई वोह इस्लामी भाई बिल्कुल तन्दुरुस्त हो चुके थे। सफ़र से वापसी पर उन्हों ने दोबारा "चेकअप" करवाया। डॉक्टर ने ह़ैरान हो कर कहा, "भाई कमाल है, तुम्हारे दिमाग़ के चारों दाने ग़ाइब हो चुके हैं ! इस पर उस ने रो रो कर **मदनी क़ाफ़िले** में सफ़र की बरकत और ख़्वाब का तज़्किरा किया। डॉक्टर बहुत मुतअस्सिर हुवा। उस अस्पताल के डॉक्टरों समेत वहां मौजूद बारह अफ़राद ने 12 दिन के **मदनी क़ाफ़िले** में सफ़र की निय्यतें लिखवाईं और बा'ज़ डॉक्टर्ज़ ने अपने चेहरे पर हाथों हाथ सरवरे काएनात صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم की मह़ब्बत की निशानी या'नी दाढ़ी मुबारक सजाने की निय्यत की।

है नबी की नज़र क़ाफ़िले वालों पर आओ सारे चलें क़ाफ़िले में चलो
सीखने सुन्नतें क़ाफ़िले में चलो लूटने रह़मतें क़ाफ़िले में चलो

صَلُّوا عَلَى الْحَبِيب ! صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلٰى مُحَمَّد

प्यारे प्यारे इस्लामी भाइयो ! ख़्वाब में इलाज का येह वाक़िआ़ नया नहीं है। **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ के ह़बीब, ह़बीबे लबीब, हम गुनाहों के मरीज़ों के त़बीब صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ब अ़त़ाए रब्बे मुजीब عَزَّوَجَلَّ मरीज़ों को शिफ़ा देते हैं। चुनान्चे ह़ज़रते सय्यिदुना इमाम यूसुफ़ बिन इस्माईल नब्हानी قُدِّسَ سِرُّہُ الرَّبَّانِی की मश्हूर किताब **"ह़ुज्जतुल्लाहि अ़लल आ़लमीन फ़ी मो'जिज़ाति सय्यिदिल मुर्सलीन"** صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم की दूसरी जिल्द से ख़्वाब के ज़रीए़ शिफ़ा की **5 ह़िकायात** सुनिये, और अपना ईमान ताज़ा फ़रमाइये।

(1) आक़ा ने आंखों को रोशन फ़रमा दिया !

ह़ज़रते सय्यिदुना मुह़म्मद बिन मुबारक ह़र्बी رَحْمَۃُ اللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہ का बयान है, अ़ली अबुल कबीर عَلَیْہِ رَحْمَۃُ اللّٰہِ الْقَدِیْر नाबीना थे, ख़्वाब में जनाबे रिसालत मआब صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم के दीदारे फ़ैज़ आसार से फ़ैज़याब हुए, मीठे मीठे मुस्त़फ़ा صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने उन की आंखों पर अपना दस्ते शिफ़ा फेरा, सुब्ह़ उठे तो आंखें रोशन हो चुकी थीं।

(مُلَخَّص از حُجَّةُ اللّٰهِ الْعٰلَمِین ج ۲ ص ۵۲۶)

आंख अ़त़ा कीजिये उस में ज़िया दीजिये
जल्वा क़रीब आ गया तुम पे करोड़ों दुरूद

صَلُّوا عَلَی الْحَبِیْب ! صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلٰی مُحَمَّد

(2) आक़ा ने गिल्टियों का इलाज फ़रमा दिया

हज़रते सय्यिदुना तक़िय्युद्दीन अबू मुहम्मद अ़ब्दुस्सलाम عَلَيْهِ رَحْمَةُ رَبِّ الْاَنَام फ़रमाते हैं, "मेरे भाई इब्राहीम के गले में ख़नाज़ीर (या'नी गिल्टियां) हो गई थीं, शिद्दते दर्द के सबब बे क़रार थे, ख़्वाब में सरकारे नामदार صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने करम फ़रमाया," अ़र्ज़ किया, "**या रसूलल्लाह** صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ! बीमारी के सबब सख़्त तक्लीफ़ में हूं।" फ़रमाया, "तुम्हारी फ़रियाद सुन ली गई है।" اَلْحَمْدُ لِلّٰه عَزَّوَجَلَّ सरकारे मदीना صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم की बरकत से मेरे भाई को शिफ़ा हासिल हो गई। (اَیضاً ص۵۲۶)

सरे बालीं उन्हें रह़मत की अदा लाई है

ह़ाल बिगड़ा है तो बीमार की बन आई है

صَلُّوا عَلَى الْحَبِيْب ! صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلٰى مُحَمَّد

(3) आक़ा के करम से दम्मा के मरीज़ को शिफ़ा मिली

एक बुज़ुर्ग رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰى عَلَيْه फ़रमाते हैं, "मैं सख़्त बीमार था और अपने मकान की निचली मन्ज़िल पर साहि़बे फ़िराश (या'नी बिछोने पर पड़ा) था, मेरे ज़ईफ़ुल उ़म्र वालिदे गिरामी رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰى عَلَيْه ज़ीक़ुन्नफ़्स (या'नी दम्मा) के मरज़ की शिद्दत के बाइ़स ऊपर की मन्ज़िल पर बिस्तर में थे। न मैं ऊपर चढ़ सकता था न वोह बेचारे नीचे उतर पाते थे। اَلْحَمْدُ لِلّٰه عَزَّوَجَلَّ ख़ुश क़िस्मती से मैं एक रात सरवरे काएनात, शाहे मौजूदात, सरापा

फ़रमाने मुस्तफ़ा صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم: उस शख़्स की नाक ख़ाक आलूद हो जिस के पास मेरा ज़िक्र हो और वोह मुझ पर दुरूदे पाक न पढ़े। (ترمذی)

बरकात, मम्बए़ इनायात صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم की ज़ियारत से मुशर्रफ़ हुवा, मैं ने सरकारे नामदार صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم की ख़िदमत में तक्या पेश किया, सरकार صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم टेक लगा कर तशरीफ़ फ़रमा हुए, मैं ने अपनी और अपने ज़ईफ़ुल उ़म्र वालिद साहि़ब की बीमारी के बारे में फ़रियाद की। मेरी फ़रियाद सुन कर सरकारे मदीना صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ऊपर की मन्ज़िल पर तशरीफ़ ले गए। जब नमाज़े फ़ज्र का वक़्त हुवा तो मेरे कानों में आह ! आह ! की आवाज़ आई, दर अस्ल मेरे वालिदे मोह़तरम सीढ़ियों से नीचे उतर रहे थे, मेरे पास आ कर फ़रमाने लगे, "बेटा करम बालाए करम हो गया, आज शब रह़मते आ़लम صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने मुझ पर करम फ़रमा दिया।" मैं ने अ़र्ज़ किया, "अब्बाजान ! सरकार صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم मुझ गुनहगार के पास ही से हो कर आप को नवाज़ने के लिये ऊपर की मन्ज़िल पर जल्वा आरा हुए थे। اَلْحَمْدُ لِلّٰهِ عَلٰى اِحْسَانِهٖ इस के बा'द महबूबे रब्बुल इ़ज़्ज़त, ताजदारे रिसालत, शहन्शाहे नुबुव्वत, मम्बए़ जूदो सख़ावत, सरापा रह़मत صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم की बरकत से हम दोनों रू ब सिह़ह़त हो गए।

(ایضاً ص ۵۲۷)

मरीज़ाने जहां को तुम शिफ़ा देते हो दम भर में
ख़ुदारा दर्द का हो मेरे दरमां या रसूलल्लाह !

(क़बालए बख़्शिश)

صَلُّوْا عَلَى الْحَبِيْب ! صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلٰى مُحَمَّد

(4) आक़ा ने बरस का इलाज फ़रमाया

हज़रते सय्यिदुना शैख़ अबू इस्हाक़ رَحْمَۃُ اللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہ फ़रमाते हैं, "मेरे कन्धे पर बरस (कोढ़) का दाग़ पैदा हो गया, اَلْحَمْدُ لِلّٰہ عَزَّوَجَلَّ ख़्वाब में जनाबे रिसालत मआब صَلَّى اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم का दीदार हुवा तो मैं ने अपने मरज़ की शिकायत की। सरकारे नामदार صَلَّى اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने दस्ते शिफ़ा फेरा, सुब्ह जागा तो اَلْحَمْدُ لِلّٰہ عَزَّوَجَلَّ बरस का नामो निशान तक न था।" (اَیضاً ص ۵۳۱)

मरज़े इस्यां की तरक़्क़ी से हुवा हूं जां बलब
मुझ को अच्छा कीजिये हालत मेरी अच्छी नहीं

صَلُّوا عَلَی الْحَبِیْب! صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلٰی مُحَمَّد

(5) आक़ा ने हाथ के आबले दुरुस्त कर दिये

एक बुज़ुर्ग رَحْمَۃُ اللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہ बयान करते हैं, हज़रते हम्माद رَحْمَۃُ اللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہ के हाथों में आबले पड़ कर फट गए थे तबीबों ने मुत्तफ़िक़ा तौर पर राय दी कि हाथ काट दिया जाए। हज़रते सय्यिदुना हम्माद رَحْمَۃُ اللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہ फ़रमाते हैं, वोह रात मैं ने इन्तिहाई कर्बो इज़्तिराब के आलम में घर की छत पर गुज़ारी और गिड़गिड़ा कर बारगाहे ख़ुदावन्दी عَزَّوَجَلَّ में दुआए शिफ़ा की। जब सोया और ज़ाहिरी आंख बन्द हुई तो दिल की आंख खुल गई, اَلْحَمْدُ لِلّٰہ عَزَّوَجَلَّ ताजदारे रिसालत صَلَّى اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم की ख़्वाब में ज़ियारत हुई, मैं ने अर्ज़ की, "**या**

रसूलल्लाह صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ! मेरे हाथ पर चश्मे करम फ़रमाइये।" फ़रमाया, "हाथ फैलाओ," मैं ने फैला दिया तो सरकार صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने अपना दस्ते मुबारक फेर दिया और फ़रमाया, "खड़े हो जाओ !" जब खड़ा हुवा तो اَلْحَمْدُ لِلّٰہ عَزَّوَجَلَّ **मीठे मीठे मुस्तफ़ा** صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم की बरकत से मेरे हाथ की बीमारी ख़त्म हो चुकी थी। (ایضاً ص ۵۲۸)

येह मरीज़ मर रहा है, तेरे हाथ में शिफ़ा है

ऐ त़बीब ! जल्द आना, मदनी मदीने वाले

صَلُّوا عَلَی الْحَبِیْب ! صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلٰی مُحَمَّد

वस्वसा : सिर्फ़ **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ ही शिफ़ा देने वाला है मगर इन हिकायात को सुन कर वस्वसे आते हैं कि क्या **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ के इलावा भी कोई शिफ़ा दे सकता है ?

इलाजे वस्वसा : बेशक ज़ाती तौर पर सिर्फ़ और सिर्फ़ **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ ही शिफ़ा देने वाला है, मगर **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ की अ़ता से उस के बन्दे भी शिफ़ा दे सकते हैं। हां अगर कोई येह दा'वा करे कि **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ की दी हुई त़ाक़त के बिग़ैर फ़ुलां दूसरे को शिफ़ा दे सकता है तो यक़ीनन वोह काफ़िर है। क्यूं कि शिफ़ा हो या दवा एक ज़र्रा भी कोई किसी को **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ की अ़ता के बिग़ैर नहीं दे सकता। हर मुसल्मान का येही अ़क़ीदा है कि अम्बिया व औलिया عَلَیْہِمُ السَّلَام وَرَحِمَہُمُ اللّٰہُ تَعَالٰی जो कुछ भी देते हैं वोह मह्‌ज़ **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ की अ़ता से देते हैं, مَعَاذَ اللّٰہ عَزَّوَجَلَّ अगर कोई

येह अक़ीदा रखे कि **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ ने किसी नबी या वली को मरज़ से शिफ़ा देने या कुछ अ़ता करने का इख़्तियार ही नहीं दिया। तो ऐसा शख़्स हुक्मे क़ुरआनी को झुटला रहा है। पारह 3 सूरए **आले इमरान** की आयत नम्बर 49 और उस का तरजमा पढ़ लीजिये اِنْ شَآءَاللّٰه عَزَّوَجَلَّ वस्वसे की जड़ कट जाएगी और शैतान नाकामो ना मुराद होगा। चुनान्चे ह़ज़रते सय्यिदुना ईसा रूहुल्लाह عَلٰى نَبِيِّنَا وَعَلَيْهِ الصَّلٰوةُ وَالسَّلَام के मुबारक क़ौल की ह़िकायत करते हुए क़ुरआने पाक में इर्शाद होता है :

وَاُبْرِئُ الْاَكْمَهَ وَالْاَبْرَصَ وَاُحْيِ الْمَوْتٰى بِاِذْنِ اللّٰهِ

(پ۳ سورۂ اٰلِ عمران آیت نمبر ۴۹)

तरजमए कन्ज़ुल ईमान : और मैं शिफ़ा देता हूं मादर ज़ाद अन्धे और सपेद (सफ़ेद) दाग़ वाले को और मैं मुर्दे जिलाता (ज़िन्दा करता) हूं **अल्लाह** (عَزَّوَجَلَّ) के हुक्म से।

देखा आप ने ? ह़ज़रते सय्यिदुना ईसा रूहुल्लाह عَلٰى نَبِيِّنَا وَعَلَيْهِ الصَّلٰوةُ وَالسَّلَام साफ़ साफ़ फ़रमा रहे हैं कि मैं **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ की बख़्शी हुई क़ुदरत से मादर ज़ाद अन्धों को बीनाई और कोढ़ियों को शिफ़ा देता हूं। ह़त्ता कि मुर्दों को भी ज़िन्दा कर दिया करता हूं।

अल्लाह عَزَّوَجَلَّ की त़रफ़ से अम्बिया عَلَيْهِمُ السَّلَام को त़रह त़रह के इख़्तियारात अ़ता किये गए हैं और फ़ैज़ाने अम्बिया से औलिया को भी अ़ता किये जाते हैं लिहाज़ा वोह भी शिफ़ा दे सकते हैं और बहुत कुछ अ़ता फ़रमा सकते हैं। जब ह़ज़रते सय्यिदुना ईसा रूहुल्लाह

عَلٰی نَبِیِّنَا وَعَلَیْہِ الصَّلٰوۃُ وَالسَّلَام की येह शान है तो आक़ाए ईसा, सरदारे अम्बिया, मीठे मीठे मुस्त़फ़ा صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم की शाने अ़ज़मत निशान कैसी होगी ! येह याद रखिये कि सरवरे काएनात صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم जमीअ़ मख़्लूक़ात और जुम्ला अम्बियाओ मुर्सलीन عَلَیْہِمُ السَّلَام के कमालात के जामेअ़ हैं, बल्कि जिस को जो मिला सरकार صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ही के सदक़े मिला। तो मा'लूम हुवा कि जब सय्यिदुना ईसा عَلَیْہِ السَّلَام मरीज़ों को शिफ़ा, अन्धों को आंखें और मुर्दों को ज़िन्दगी दे सकते हैं तो सरकारे मदीना صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم येह सब ब दरजए ऊला अ़त़ा फ़रमा सकते हैं।

हुस्ने यूसुफ़, दमे ईसा पे नहीं कुछ मौक़ूफ़
जिस ने जो पाया है, पाया है बदौलत उन की
(ज़ौक़े ना'त)

صَلُّوْا عَلَی الْحَبِیْب ! صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلٰی مُحَمَّد

76 हज़ार नेकियां : ह़ज़रते सय्यिदुना इब्ने मस्ऊ़द رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ से रिवायत है कि ताजदारे मदीनए मुनव्वरह, सरदारे मक्कए मुकर्रमा, सरवरे हर दो सरा, मह़बूबे किब्रिया صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم का फ़रमाने फ़रह़त निशान है, "जो بِسْمِ اللّٰہِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِیْمِ पढ़ेगा **अल्लाह** तबारक व तआ़ला हर ह़र्फ़ के बदले उस के नामए आ'माल में **चार हज़ार** नेकियां दर्ज फ़रमाएगा, **चार हज़ार** गुनाह बख़्श देगा और **चार हज़ार** दरजात बुलन्द फ़रमाएगा।" (فِردوسُ الأخبار ج٤ ص٢٦ رقم الحديث ٥٥٧٣)

फ़रमाने मुस्तफ़ा صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم : जो मुझ पर रोज़े जुमुआ दुरूद शरीफ़ पढ़ेगा मैं क़ियामत के दिन उस की शफ़ाअत करूंगा । (جمع الجوامع)

प्यारे प्यारे इस्लामी भाइयो ! झूम जाइये ! अपने प्यारे प्यारे **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ की रहमत पर कुरबान हो जाइये !! ज़रा हिसाब तो लगाइये بِسۡمِ اللّٰہِ الرَّحۡمٰنِ الرَّحِیۡمِ में 19 हुरूफ़ हैं । यूं एक बार بِسۡمِ اللّٰہِ الرَّحۡمٰنِ الرَّحِیۡمِ पढ़ने से छिहत्तर76 हज़ार नेकियां मिलेंगी, छिहत्तर हज़ार गुनाह मुआफ़ होंगे और छिहत्तर हज़ार दरजात बुलन्द होंगे । وَاللّٰهُ ذُوالْفَضْلِ الْعَظِيْم (या'नी और **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ साहिबे फ़ज़्लो अज़मत है ।)

ब वक़्ते ज़ब्ह़ اَلرَّحۡمٰنِ الرَّحِیۡمِ न पढ़ने की ह़िक्मत : **ह़ज़रते** मुफ़्ती अह़मद यार ख़ान عَلَيْهِ رَحْمَةُ الْمَنَّان ख़ुदाए रह़मान عَزَّوَجَلَّ की रह़मते बेपायां का तज़्किरा करते हुए फ़रमाते हैं, "ग़ौर तो करो कि सूरए तौबह में بِسۡمِ اللّٰہِ الرَّحۡمٰنِ الرَّحِیۡمِ नहीं लिखी गई इसी त़रह़ **ज़ब्ह़** के वक़्त पूरी **बिस्मिल्लाह** नहीं पढ़ते बल्कि यूं कहते हैं, "بِسْمِ اللّٰهِ اَللّٰهُ اَكْبَر ।" इस में क्या ह़िक्मत है ? **ह़िक्मत** येह है कि सूरए तौबह में अव्वल से आख़िर तक जिहाद और क़िताल का ज़िक्र है और येह काफ़िरों पर क़ह्र है, इसी त़रह़ ज़ब्ह़ में जानवर की जान ली जाती है । येह भी जब्रो क़ह्र का वक़्त होता है इस मौक़अ़ पर रह़मत का ज़िक्र न करो । سُبْحٰنَ اللّٰهِ عَزَّوَجَلَّ तो जो शख़्स पूरी **बिस्मिल्लाह** शरीफ़ (या'नी بِسۡمِ اللّٰہِ الرَّحۡمٰنِ الرَّحِیۡمِ) का विर्द करे तो اِنْ شَآءَ اللّٰه عَزَّوَجَلَّ ख़ुदा के ग़ज़ब से मह़फ़ूज़ रहेगा ।

(तफ़सीरे नईमी, जिल्द अव्वल, स. 43)

صَلُّوْا عَلَى الْحَبِيْب ! صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلٰى مُحَمَّد

उन्नीस हुरूफ़ की हिक्मतें : بِسۡمِ اللّٰہِ الرَّحۡمٰنِ الرَّحِیۡمِ के 19 हुरूफ़ हैं और दोज़ख़ पर अ़ज़ाब देने वाले फ़िरिश्ते भी उन्नीस[19]। पस उम्मीद है कि इस के एक एक हर्फ़ की बरकत से एक एक फ़िरिश्ते का अ़ज़ाब दूर हो जाए। दूसरी ख़ूबी येह भी है कि दिन रात में 24 घन्टे हैं जिन में से 5 घन्टे पांच नमाज़ों ने घेर लिये और 19 घन्टों के लिये بِسۡمِ اللّٰہِ الرَّحۡمٰنِ الرَّحِیۡمِ के उन्नीस[19] हुरूफ़ अ़ता फ़रमाए गए। पस जो بِسۡمِ اللّٰہِ الرَّحۡمٰنِ الرَّحِیۡمِ का विर्द करता रहे اِنۡ شَآءَ اللّٰہ عَزَّوَجَلَّ उस का हर घन्टा इबादत में शुमार होगा और हर घन्टे के गुनाह मुआ़फ़ होंगे।

(تفسیر کبیر ج اول ص۱۵٦)

क़ब्र से अ़ज़ाब उठ गया : **हज़रते** सय्यिदुना ईसा रूहुल्लाह عَلٰی نَبِیِّنَا وَعَلَیْہِ الصَّلٰوۃُ وَالسَّلَام एक क़ब्र के क़रीब गुज़रे तो अ़ज़ाब हो रहा था। कुछ वक़्फ़े के बा'द फिर गुज़रे तो मुलाहज़ा फ़रमाया कि उस क़ब्र में नूर ही नूर है और वहां रहमते इलाही عَزَّوَجَلَّ की बारिश हो रही है। आप عَلَیْہِ السَّلَام बहुत हैरान हुए और बारगाहे इलाही عَزَّوَجَلَّ में अ़र्ज़ किया, कि मुझे इस का भेद बताया जाए। इर्शाद हुवा, "**ऐ ईसा !** (عَلَیْہِ السَّلَام) येह शख़्स सख़्त गुनहगार होने के सबब अ़ज़ाब में गिरिफ़्तार था, लेकिन ब वक़्ते इन्तिक़ाल इस की बीवी "उम्मीद" से थी, उस के लड़का पैदा हुवा और आज उस को मक्तब भेजा गया, उस्ताद ने उस को **बिस्मिल्लाह** पढ़ाई, **मुझे हया आई कि मैं उस शख़्स को ज़मीन के अन्दर अ़ज़ाब**

दूं कि जिस का बच्चा ज़मीन के ऊपर मेरा नाम ले रहा है।''

(تفسير كبير ج اول ص ١٥٥)

अल्लाह عَزَّوَجَلَّ की उन पर रहमत हो और उन के सदके हमारी मग़्फ़िरत हो।

ऐ ख़ुदाए मुस्तफ़ा मैं तेरी रहमतों पे कुरबां
हो करम से मेरी बख़्शिश, ब तुफ़ैले शाहे जीलां

صَلُّوا عَلَى الْحَبِيْب! صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلٰى مُحَمَّد

سُبْحَانَ اللّٰه عَزَّوَجَلَّ! سُبْحَانَ اللّٰه عَزَّوَجَلَّ! سُبْحَانَ اللّٰه عَزَّوَجَلَّ! हम सब को चाहिये कि अपने बच्चों को ''टाटा पापा'' सिखाने के बजाए इब्तिदा ही से **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ का नाम लेना सिखाएं और येह नहीं कि सिर्फ़ मरने वाले वालिदैन को ही इस की बरकतें ह़ासिल होती हैं, ख़ुद सीखने और सिखाने वाले को भी इस की बरकतें नसीब होती हैं लिहाज़ा अपने मदनी मुन्ने और मदनी मुन्नी से खेलते हुए सिखाने की निय्यत से उन के सामने बार बार **अल्लाह अल्लाह** करते रहें तो वोह भी اِنْ شَآءَ اللّٰه عَزَّوَجَلَّ ज़बान खोलते ही सब से पहला लफ़्ज़ **अल्लाह** कहेंगे।

बच्चे की मदनी तरबियत की ह़िकायत : ह़ज़रते सय्यिदुना सह्ल बिन अ़ब्दुल्लाह तुस्तरी عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللّٰهِ الْبَارِى फ़रमाते हैं, ''मैं तीन[3] साल की उ़म्र का था कि रात के वक़्त उठ कर अपने मामूं ह़ज़रते सय्यिदुना **मुह़म्मद बिन सुवार** عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللّٰهِ الْغَفَّار को नमाज़ पढ़ते देखता, एक दिन उन्हों ने मुझ से फ़रमाया, ''क्या तू उस **अल्लाह** तआ़ला को याद नहीं करता जिस ने तुझे पैदा फ़रमाया ? मैं ने पूछा, ''मैं उसे किस तरह़ याद

करूं ?'' फ़रमाया, जब रात सोने लगो तो ज़बान को ह़रकत दिये बिग़ैर मह़्ज़ दिल में **तीन**[3] **मरतबा** येह कलिमात कहो :

اَللّٰهُ مَعِی ،اَللّٰهُ نَاظِرٌ اِلَیَّ ،اَللّٰهُ شَاهِدِی۔

या'नी **अल्लाह** तआ़ला मेरे साथ है, **अल्लाह** तआ़ला मुझे देखता है, **अल्लाह** तआ़ला मेरा गवाह है।[1]

फ़रमाते हैं, ''मैं ने चन्द रातें येह कलिमात पढ़े और फिर उन को बताया।'' उन्हों ने फ़रमाया, ''अब हर रात **सात मरतबा** पढ़ो,'' मैं ने ऐसा ही किया और फिर उन को मुत्तलअ़ किया। फ़रमाया, ''हर रात **ग्यारह मरतबा** येही कलिमात पढ़ो।''(फ़रमाते हैं) मैं ने इसी त़रह़ पढ़ा तो मेरे दिल में इस की लज़्ज़त मा'लूम हुई। जब एक साल गुज़र गया तो मेरे मामूंजान عَلَیْہِ رَحْمَۃُ الْحَنَّان ने फ़रमाया, ''मैं ने जो कुछ तुम्हें सिखाया है उसे क़ब्र में जाने तक हमेशा पढ़ते रहना। اِنْ شَآءَاللّٰہ عَزَّوَجَلَّ येह तुम्हें दुन्या और आख़िरत में नफ़अ़ देगा।'' सय्यिदुना सह्ल बिन अ़ब्दुल्लाह तुस्तरी عَلَیْہِ رَحْمَۃُ اللّٰہِ الْبَرِّی फ़रमाते हैं, ''मैं ने कई साल तक ऐसा ही किया तो मैं ने अपने अन्दर इस का बे इन्तिहा मज़ा पाया। मैं तन्हाई में येह ज़िक्र करता रहा। **फिर** एक दिन मेरे मामूंजान عَلَیْہِ رَحْمَۃُ الْحَنَّان ने फ़रमाया, ''**ऐ सह्ल !** **अल्लाह** तआ़ला जिस शख़्स के साथ हो, उसे देखता हो और उस का गवाह हो, क्या वोह उस की ना फ़रमानी करता है ? हरगिज़ नहीं। लिहाज़ा तुम अपने आप को गुनाह से बचाओ। फिर मामूंजान عَلَیْہِ رَحْمَۃُ الْحَنَّان ने मुझे

मदीना

1 : हो सके तो येह कलिमात लिख कर घर और दुकान वग़ैरा में ऐसी जगह आवेज़ां कर दीजिये जहां आप की नज़र पड़ती रहे।

मक्तब में भेज दिया।" मैं ने सोचा कहीं मेरे ज़िक्र में ख़लल न आ जाए लिहाज़ा उस्ताज़ साहिब से येह शर्त़ मुक़र्रर कर ली कि मैं उन के पास जा कर सिर्फ़ एक घन्टा पढ़ूंगा और वापस आ जाऊंगा। اَلْحَمْدُ لِلّٰه عَزَّوَجَلَّ मैं ने मक्तब में **छ**[6] या **सात बरस** की उ़म्र में कुरआने पाक **ह़िफ़्ज़** कर लिया।

اَلْحَمْدُ لِلّٰه عَزَّوَجَلَّ मैं रोज़ाना रोज़ा रखता था। **बारह**[12] **साल** की उ़म्र तक मैं जव की रोटी खाता रहा। **तेरह**[13] **साल** की उ़म्र में मुझे एक मस्अला पेश आया। उस के ह़ल के लिये घर वालों से इजाज़त ले कर मैं **बसरा** आया और वहां के उ़लमा से वोह मस्अला पूछा, लेकिन उन में से किसी ने भी मुझे शाफ़ी जवाब न दिया। फिर मैं **अब्बादान** की त़रफ़ चला गया। वहां के मश्हूर आ़लिमे दीन ह़ज़रते सय्यिदुना अबू ह़बीब ह़म्ज़ा बिन अबी अ़ब्दुल्लाह अ़ब्बादानी قُدِّسَ سِرُّهُ الرَّبَّانِی से मैं ने मस्अला पूछा तो उन्हों ने मुझे तसल्ली बख़्श जवाब दिया। मैं एक अ़र्से तक उन की सोह़बत में रहा, उन के कलाम से फ़ैज़ ह़ासिल करता और उन से आदाब सीखता फिर मैं **तुस्तर** की त़रफ़ आ गया। मैं ने गुज़ारे का इन्तिज़ाम यूं किया कि मेरे लिये **एक दिरहम** के जव शरीफ़ ख़रीद लिये जाते और उन्हें पीस कर रोटी पका ली जाती। मैं हर रात सह़री के वक़्त **एक ऊक़िया** (या'नी तक़रीबन 70 ग्राम) जव की रोटी खाता, जिस में न नमक होता और न ही सालन। येह एक दिरहम मुझे साल भर के लिये काफ़ी होता। फिर मैं ने इरादा किया कि **तीन**[3] **दिन** मुसल्सल फ़ाक़ा करूंगा और उस के बा'द खाऊंगा। फिर **पांच**[5] **दिन**, फिर **सात**[7] **दिन** और फिर **पच्चीस**[25] **दिनों** का मुसल्सल

फ़ाक़ा रखा। (या'नी **25** दिन के बा'द एक बार खाना खाता।) बीस[20] साल तक येही त़रीक़ा रहा फिर मैं ने कई साल तक सैरो सियाह़त की, वापस **तुस्तर** आया तो जब तक **अल्लाह** तआला ने चाहा शब बेदारी इख़्तियार की। ह़ज़रते सय्यिदुना इमाम अह़मद عَلَيْهِ رَحْمَةُ الْاَحَد फ़रमाते हैं, "मैं ने मरते दम तक सय्यिदुना सह्ल बिन अ़ब्दुल्लाह तुस्तरी عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللهِ الْبَرِى को कभी **नमक** इस्ति'माल करते हुए नहीं देखा।

(اِحیاءُ العُلوم ج ۳ ص ۹۱)

अल्लाह عَزَّوَجَلَّ **की उन पर रह़मत हो और उन के सदक़े हमारी मग़फ़िरत हो।**

صَلُّوْا عَلَی الْحَبِیْب ! صَلَّی اللّٰهُ تَعَالٰی عَلٰی مُحَمَّد

प्यारे प्यारे इस्लामी भाइयो ! खुश नसीब वालिदैन दुन्या के बजाए आख़िरत के मुआ़मले में अपनी औलाद के लिये ज़ियादा मुतफ़क्किर होते हैं, चुनान्चे एक ऐसी ही समझदार मां ने अपने बेटे पर **इन्फ़िरादी कोशिश** की जिस के नतीजे में उस की इस्लाह़ का सामान हुवा। येह ईमान अफ़रोज़ वाक़िआ़ पढ़िये और झूमिये।

दा'वते इस्लामी के तरबियती कोर्स की बहार : एक आ़शिक़े रसूल के बयान का अपने अन्दाज़ में खुलासा पेश करता हूं, "अम्मीजान त़वील अ़र्से से अ़लील थीं, उन की शदीद ख़्वाहिश थी कि मैं किसी त़रह़ गुनाहों के दलदल से निकल जाऊं और सुधर जाऊं। अम्मीजान को **दा'वते इस्लामी** से बेह़द प्यार था। उन्हों ने अख़राजात दे कर मुझे ब इसरार फ़ैज़ाने मदीना भेजा और ताकीद की, कि आ़शिक़ाने रसूल के

आ़लमी मदनी मर्कज़ **फ़ैज़ाने मदीना** में रह़मतों की छमाछम बरसात के अन्दर **तरबियती कोर्स** करना और मेरी शिफ़ायाबी की दुआ़ भी मांगना। اَلْحَمْدُ لِلّٰہ عَزَّوَجَلَّ मैं ने "तरबियती कोर्स" करने की सआ़दत ह़ासिल की, मदनी क़ाफ़िलों में सफ़र से मुशर्रफ़ हुवा, अम्मीजान के लिये ख़ूब दुआ़एं भी कीं। फ़रागत के बा'द जब घर आया तो मेरी ख़ुशी की इन्तिहा न रही क्यूं कि तरबियती कोर्स के दौरान फ़ैज़ाने मदीना में मांगी हुई दुआ़ओं की बरकत से मेरी अम्मीजान सिह़्ह़त याब हो चुकी थीं, اَلْحَمْدُ لِلّٰہ عَزَّوَجَلَّ तरबियती कोर्स की बरकत से मैं नमाज़ी बन गया और मदनी माह़ोल से वाबस्तगी नसीब हुई, सुन्नतों की ख़िदमत और मदनी क़ाफ़िलों में सफ़र का जज़्बा मिला। मेरी तमन्ना है कि हमारे घर का हर फ़र्द दा'वते इस्लामी के मदनी माह़ोल में रंग जाए और हमारी तमाम परेशानियां दूर हों।

फ़ैज़ाने मदीना में अल्लाह عَزَّوَجَلَّ *की रह़मत है* *अम्मी को मुयस्सर अब सिह़्ह़त की सआ़दत है*
फ़ैज़ाने मदीना में आने ही की बरकत है *ख़ूब और बढ़ी मुझ को सुन्नत से मह़ब्बत है*

صَلُّوْا عَلَی الْحَبِیْب ! صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلٰی مُحَمَّد

जो लोग अपनी औलाद को सिर्फ़ दुन्या बनाने के लिये ही वक़्फ़ रखते हैं और उस को अच्छी सोह़बत से रोकते हैं, वोह अपनी आख़िरत को सख़्त ख़त़रे में डाल देते हैं और बसा अवक़ात दुन्या में भी पछताने के दिन आते हैं चुनान्चे

मदनी क़ाफ़िले से रोकने का नुक़्सान : मदीनतुल औलिया अह़मदआबाद शरीफ़ (अल हिन्द) के एक आ़शिक़े रसूल ने एक नौ जवान पर **इन्फ़िरादी कोशिश** कर के उस को मदनी क़ाफ़िले में सफ़र के लिये आमादा कर लिया, मगर वालिद साहिब ने दुन्यवी ता'लीम में रुकावट के ख़ौफ़ से उख़्रवी ता'लीम के सफ़र से रोक दिया। बेचारे को आ़शिक़ाने रसूल की सोह़बत मिलते मिलते रह गई, नतीजतन वोह बुरे दोस्तों के हथ्थे चढ़ गया और शराबी बन गया। अब उस के वालिद साहिब को अपनी ग़लती का एह़सास हुवा, उस ने उसी आ़शिक़े रसूल को दरख़्वास्त की, "इस को क़ाफ़िले में ले जाओ कि कहीं इस की शराब की लत छूटे।" उस नौ जवान पर दोबारा इन्फ़िरादी कोशिश की गई मगर चूं कि पानी सर से ऊंचा हो चुका था। या'नी बेचारा बहुत ज़ियादा बिगड़ चुका था लिहाज़ा किसी सूरत मदनी क़ाफ़िले में सफ़र के लिये आमादा न हुवा।

वालिदैन को चाहिये कि अपनी औलाद को शुरूअ़ ही से अच्छा और मदनी माह़ोल फ़राहम करें, वरना बुरी सोह़बत की वज्ह से बिगड़ जाने की सूरत में बाज़ी हाथ से निकल जाती है। सगे मदीना عُفِيَ عَنْهُ को इस की बड़ी बहन ने बताया, एक इस्लामी बहन ने रो रो कर दुआ़ के लिये कहा है कि मेरे बेटे की इस्लाह़ के लिये दुआ़ करें, हाए ! हाए ! मैं ने ख़ुद ही उस को बरबाद किया है, उस को दा'वते इस्लामी के

मद्रसतुल मदीना में हिफ़्ज़ के लिये बिठाते तो बिठा दिया मगर बेचारा जो सुन्नतें वग़ैरा सीख कर आता वोह घर में बयान कर देता तो उस का मज़ाक़ उड़ाते। आख़िरश उस का दिल टूट गया और उस ने मद्रसतुल मदीना में जाना छोड़ दिया। अब बुरे दोस्तों की सोहबत में रह कर आवारा हो गया है, इत्तिफ़ाक़ से मुझे दा'वते इस्लामी का मदनी माहोल मिल गया है अब मैं सख़्त पछता रही हूं, हाए मेरा क्या बनेगा !

صُحبتِ صالِح تُرا صالِح کُنَد   صُحبتِ طالِح تُرا طالِح کُنَد

(या'नी अच्छों की सोहबत तुझे अच्छा बना देगी, और बुरे की सोहबत तुझे बुरा बना देगी)

दरिन्दों का घर : प्यारे प्यारे इस्लामी भाइयो ! हज़रते सय्यिदुना सह्ल बिन अ़ब्दुल्लाह तुस्तरी عَلَیْہِ رَحْمَۃُ اللہِ الْبَرِی **सिद्दीक़** (या'नी अव्वल दरजे के औलिया में से) थे। आप رَحْمَۃُ اللہِ تَعَالٰی عَلَیْہ नमक इस लिये इस्ति'माल नहीं फ़रमाते थे कि नमक की वज्ह से खाना लज़ीज़ हो जाता है। और आप رَحْمَۃُ اللہِ تَعَالٰی عَلَیْہ लज़्ज़तों से दूर रहते थे। वाक़ेई क़ोरमा, बिरयानी वग़ैरा में चाहे हज़ार मसालहा जात डालें, अगर नमक नहीं डालेंगे तो खाने का सारा मज़ा किरकिरा हो जाएगा। येह भी याद रहे कि **नमक** की एक मख़्सूस मिक़्दार बदने इन्सानी के लिये ज़रूरी है और येह आप رَحْمَۃُ اللہِ تَعَالٰی عَلَیْہ की करामत थी कि बिग़ैर नमक इस्ति'माल किये ज़िन्दा थे ! तुस्तर शरीफ़ में वाक़ेअ़ आप رَحْمَۃُ اللہِ تَعَالٰی عَلَیْہ के मकाने आ़लीशान को लोग "बैतुस्सिब्बाअ़" या'नी **दरिन्दों का घर** कहते थे क्यूं कि आप

फ़रमाने मुस्तफ़ा صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم : जिस ने किताब में मुझ पर दुरूदे पाक लिखा तो जब तक मेरा नाम उस में रहेगा फ़िरिश्ते उस के लिये इस्तिग़्फ़ार (या'नी बख़्शिश की दुआ) करते रहेंगे। (طبرانی)

رَحْمَةُ اللّٰهِ تَعَالٰى عَلَيْه के यहां **ब कसरत दरिन्दे** (शेर, चीते) वग़ैरा हाज़िर होते थे और आप رَحْمَةُ اللّٰهِ تَعَالٰى عَلَيْه गोश्त के ज़रीए उन की ज़ियाफ़त फ़रमाते। आप رَحْمَةُ اللّٰهِ تَعَالٰى عَلَيْه आख़िरी उम्र में **अपाहज** हो गए थे मगर जब **नमाज़** का वक़्त आता तो हाथ पाउं खुल जाते और नमाज़ से फ़ारिग़ हो जाते तो ह़स्बे साबिक़ मा'ज़ूर हो जाते। (الرسالة القشيرية ص ٣٨٧)

अल्लाह عَزَّوَجَلَّ की उन पर रह़मत हो और उन के सदक़े हमारी मग़्फ़िरत हो।

صَلُّوْا عَلَى الْحَبِيْب! صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلٰى مُحَمَّد

बुख़ार का इलाज : मन्क़ूल है, एक शख़्स को बुख़ार आ गया, उस के उस्ताज़े मोह़तरम ह़ज़रते शैख़ फ़क़ीह वली उ़मर बिन सई़द عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللّٰهِ الْمُعِيْد इयादत के लिये तशरीफ़ लाए, जाते हुए एक **ता'वीज़** इनायत कर के फ़रमाया "इस को खोल कर देखना मत। उन के जाने के बा'द उस ने ता'वीज़ बांध लिया, फ़ौरन **बुख़ार** जाता रहा। उस से रहा न गया, खोल कर जो देखा तो بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْم लिखा था। दिल में वस्वसा आया येह तो कोई भी लिख सकता है! अ़क़ीदत में कमी आते ही फ़ौरन बुख़ार लौट आया। घबरा कर ह़ज़रत की ख़िदमत में ह़ाज़िर हो कर ग़लती की मुआफ़ी चाही। उन्हों ने ता'वीज़ बना कर अपने दस्ते मुबारक से बांध दिया, **बुख़ार** फ़ौरन चला गया। अब की बार देखने की मुमानअ़त न फ़रमाई थी मगर डर के मारे खोल कर न देखा। बिल आख़िर साल भर के बा'द जब खोल कर देखा तो वोही

بِسۡمِ اللّٰہِ الرَّحۡمٰنِ الرَّحِیۡمِ तह़रीर थी।

अल्लाह عَزَّوَجَلَّ की उन पर रह़मत हो और उन के सदक़े हमारी मग़्फ़िरत हो।

صَلُّوا عَلَی الْحَبِیْب ! صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلٰی مُحَمَّد

प्यारे प्यारे इस्लामी भाइयो ! वाक़ेई بِسۡمِ اللّٰہِ الرَّحۡمٰنِ الرَّحِیۡمِ की बड़ी बरकतें हैं और इस में बीमारियों का इलाज भी। इस हिकायत से दर्स मिला कि बुज़ुर्गाने दीन عَلَیْہِ رَحْمَۃُ اللّٰہِ الْمُبِیْن अगर किसी मुबाह़ बात से भी मन्अ़ कर दें तो समझ में न आने के बा वुजूद भी उस से बाज़ रहना चाहिये येह भी दर्स मिला कि ता'वीज़ खोल कर नहीं देखना चाहिये कि इस से ए'तिक़ाद मुतज़ल्ज़िल होने का अन्देशा रहता है। फिर इस की तह करने के मख़्सूस त़रीक़े के साथ साथ लपेटने के दौरान बा'ज़ अवक़ात कुछ पढ़ा हुवा भी होता है। लिहाज़ा खोल कर देखने से उस के फ़वाइद में कमी आ सकती है।

"या नबी" के पांच हुरूफ़ की निस्बत से बुख़ार के 5 मदनी इलाज

1 لَا یَرَوْنَ فِیْهَا شَمْسًا وَّ لَا زَمْهَرِیْرًا ۚ (**तरजमए कन्ज़ुल ईमान :** न उस में धूप देखेंगे न ठिठर (या'नी सर्दी) (پ۲۹ الدّھر ۱۳) येह आयते करीमा सात बार (अव्वल आख़िर एक बार दुरूद शरीफ़) पढ़ कर दम कीजिये اِنْ شَآءَ اللّٰہ عَزَّوَجَلَّ **बुख़ार** की शिद्दत में नुमायां

कमी महसूस होगी और मरीज़ सुकून महसूस करेगा। (तरजमा पढ़ने की ज़रूरत नहीं)

2 **हज़रते** सय्यिदुना इमाम जा'फ़रे सादिक़ رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ फ़रमाते हैं, "**सूरतुल फ़ातिहा 40** बार (अव्वल आख़िर एक बार दुरूद शरीफ़) पढ़ कर पानी पर दम कर के बुख़ार वाले के मुंह पर छींटे मारिये اِنْ شَآءَاللّٰہ عَزَّوَجَلَّ बुख़ार चला जाएगा।"

3 **सरकारे** नामदार, मदीने के ताजदार صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم को बुख़ार था तो हज़रते सय्यिदुना जिब्रईले अमीन عَلَیْہِ الصَّلٰوۃُ وَالسَّلَام ने येह दुआ पढ़ कर दम किया था :

بِسْمِ اللّٰهِ اَرْقِيْكَ مِنْ كُلِّ دَاءٍ يُّؤْذِيْكَ وَمِنْ شَرِّ كُلِّ
نَفْسٍ اَوْ عَيْنٍ حَاسِدٍ ط اَللّٰهُ يَشْفِيْكَ بِسْمِ اللّٰهِ اَرْقِيْكَ۔

(तरजमा : **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ के नाम से आप पर दम करता हूं हर उस बीमारी के लिये जो आप को ईज़ा देती है और दूसरों के शर और हसद करने वालों की बुरी नज़र से **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ आप को शिफ़ा अ़ता फ़रमाए। मैं आप पर **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ के नाम से दम करता हूं। (مسلم ص ١٢٠٢ رقم الحدیث ٢١٨٦) बुख़ार के मरीज़ को सिर्फ़ अ़रबी में दुआ (अव्वल आख़िर एक बार दुरूद शरीफ़) पढ़ कर दम कर दीजिये।

4 **बुख़ार** वाला ब कसरत بِسْمِ اللّٰہِ الْکَبِیْر पढ़ता रहे।

5 **ह़दीसे** पाक में है, जब तुम में से किसी को बुख़ार आ जाए तो उस पर तीन[3] दिन तक सुब्ह़ के वक़्त ठन्डे पानी के छींटे मारे जाएं। (اَلْمُستَدرَک لِلحاکِم ج ٤ ص ٢٢٣ رقم الحديث ٧٤٣٨)

صَلُّوا عَلَى الْحَبِيب ! صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلٰى مُحَمَّد

اَلْحَمْدُ لِلّٰه عَزَّوَجَلَّ तब्लीग़े क़ुरआनो सुन्नत की आ़लमगीर ग़ैर सियासी तह़रीक, दा'वते इस्लामी से वाबस्ता इस्लामी भाइयों और इस्लामी बहनों को **मीठे मीठे मुस्तफ़ा** صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم की ग़ुलामी पर नाज़ है। सरकारे मदीना صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم की सुन्नतों की तरबियत के मदनी क़ाफ़िलों में आ़शिक़ाने रसूल के साथ सफ़र कर के दुआ़ मांगने से बसा अवक़ात डॉक्टरों की त़रफ़ से ला इलाज क़रार दिये गए मरीज़ों की ख़ुशियां भी اَلْحَمْدُ لِلّٰه عَزَّوَجَلَّ दोबारा लौट आई हैं। चुनान्चे

आंखें रोशन हो गईं : दा'वते इस्लामी के मुबल्लिग़ ने एक नौ जवान को **मदनी क़ाफ़िले** की दा'वत पेश की जिस पर वोह बरहम हो कर कहने लगे "आप लोग किसी की परेशानी का ख़याल भी फ़रमाया करें मेरी वालिदा की आंखों का ऑपरेशन डॉक्टरों ने ग़लत़ कर दिया जिस की बिना पर उन की बीनाई चली गई, हमारे घर में सफ़े मातम बिछी है और आप कहते हैं, "**मदनी क़ाफ़िले** में सफ़र करो।" मुबल्लिग़ ने इन्फ़िरादी कोशिश करते हुए हमदर्दाना अन्दाज़ में दुआ़ देते हुए कहा, "**अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ आप की वालिदा को शिफ़ा अ़त़ा फ़रमाए। डॉक्टर क्या कह रहे हैं?" वोह बोले, "डॉक्टर्ज़ कहते हैं

अब अमरीका ले जाओगे तब भी इलाज मुम्किन नहीं'' । येह कहते हुए उस की आवाज़ भर्रा गई । मुबल्लिग़ ने बड़ी मह़ब्बत से उस की पीठ थपक्ते हुए तसल्ली आमेज़ लहजे में कहा, ''भाई ! डोक्टरों ने जवाब दे दिया है इस पर मायूस क्यूं होते हैं, **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ शिफ़ा अ़ता फ़रमाने वाला है, मुसाफ़िर की दुआ़ **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ क़बूल फ़रमाता है आप आ़शिक़ाने रसूल के साथ **मदनी क़ाफ़िले** में सफ़र कीजिये और इस दौरान वालिदा के लिये दुआ़ भी मांगिये, उस मुबल्लिग़ की दिलजूई भरी इन्फ़िरादी कोशिश के नतीजे में ग़मज़दा नौ जवान ने सुन्नतों की तरबियत के **मदनी क़ाफ़िले** में सफ़र किया, दौराने सफ़र वालिदा के लिये ख़ूब दुआ़ मांगी । **जब घर लौटा तो येह देख कर उस की ख़ुशी की इन्तिहा न रही कि मदनी क़ाफ़िले की बरकत से उस की वालिदा की आंखों का नूर वापस आ चुका था ।** اَلْحَمْدُ لِلّٰهِ عَلٰى اِحْسَانِهٖ

लूटने रह़मतें क़ाफ़िले में चलो सीखने सुन्नतें क़ाफ़िले में चलो
चश्मे बीना मिले सुख से जीना मिले पाओगे राह़तें क़ाफ़िले में चलो

صَلُّوْا عَلَى الْحَبِيْب ! صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلٰى مُحَمَّد

प्यारे प्यारे इस्लामी भाइयो ! मदीने के ताजदार صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم का फ़रमाने ख़ुश गवार है, ''तीन[3] क़िस्म की दुआ़एं मक़्बूल हैं उन की क़बूलिय्यत में कोई शक नहीं । (1) मज़्लूम की दुआ़ (2) मुसाफ़िर की दुआ़ (3) अपने बेटे के ह़क़ में बाप की दुआ़ ।

(جامع ترمذی ج ٥ ص ٢٨٠ رقم الحديث ٣٤٥٩)

सफ़र और वोह भी **मदनी क़ाफ़िले** में आ़शिक़ाने रसूल के साथ हो तो फिर उस के क्या कहने ! इस में दुआएं क्यूं क़बूल न होंगी ! इस हिकायत से येह भी दर्स मिला कि इन्फ़िरादी कोशिश में निहायत सब्रो तह़म्मुल की ज़रूरत है, सामने वाला झाड़े बल्कि मारे तब भी मायूस हुए बिग़ैर इन्फ़िरादी कोशिश जारी रखिये। अगर आप गुस्से में आ गए या छिछोर पन पर उतर आए तो दीन का बहुत सारा नुक़्सान कर बैठेंगे। समझाना तर्क न करें कि समझाना ज़रूर रंग लाता है और क्यूं रंग न लाए कि पारह 27 सूरतुज़्ज़ारियात की आयत नंबर 55 में हमारे प्यारे **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ का फ़रमाने ढारस निशान है,

وَّذَكِّرْ فَاِنَّ الذِّكْرٰى تَنْفَعُ الْمُؤْمِنِيْنَ ○

तरजमए कन्ज़ुल ईमान : और समझाओ कि समझाना मुसल्मानों को फ़ाएदा देता है।

दर्दे सर का इलाज : **क़ैसरे** रूम ने अमीरुल मुअमिनीन ह़ज़रते सय्यिदुना उ़मर फ़ारूक़े आ'ज़म رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْه को ख़त़ लिखा कि मुझे **दाइमी दर्दे सर** की शिकायत है अगर आप के पास इस की दवा हो तो भेज दीजिये ! ह़ज़रते सय्यिदुना उ़मर फ़ारूक़े आ'ज़म رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْه ने उस को एक टोपी भेज दी क़ैसरे रूम उस टोपी को पहनता तो उस का **दर्दे सर** काफ़ूर हो जाता और जब सर से उतारता तो **दर्दे सर** फिर लौट आता उसे बड़ा तअ़ज्जुब हुवा। आख़िरे कार उस ने उस टोपी को उधेड़ा तो उस में से एक काग़ज़ बरआमद हुवा जिस पर بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ लिखा था। (اسرار الفاتحہ ص ١٦٣، تفسیر کبیر ج اول ص ١٥٥)

अल्लाह عَزَّوَجَلَّ की उन पर रह़मत हो और उन के सदक़े हमारी मग़्फ़िरत हो।

बिस्मिल्लाह से इलाज का त़रीक़ा : प्यारे प्यारे इस्लामी भाइयो ! इस ह़िकायत से येह भी मा'लूम हुवा कि जिस को **दर्दे सर** हो वोह एक काग़ज़ पर بِسۡمِ اللّٰہِ الرَّحۡمٰنِ الرَّحِیۡمِ लिख कर या लिखवा कर उस का **ता'वीज़** सर पर बांध ले। **लिखने का त़रीक़ा** येह है कि अनमिट सियाही मसलन : बॉल पोइन्ट से लिखिये और بِسۡمِ اللّٰہِ الرَّحۡمٰنِ الرَّحِیۡمِ के "ہ" और तीनों "م" के दाएरे खुले रखिये। ता'वीज़ लिखने का उसूल येह है कि आयत या इबारत लिखने में हर दाएरे वाले ह़र्फ़ का दाएरा खुला हो या'नी इस त़रह़ मसलन : ط، ظ، ہ، ھ، ص، ض، و، م، ف، ق वग़ैरा। ए'राब लगाना ज़रूरी नहीं, लिख कर मोमजामा (या'नी, मोम में तर किये हुवे कपड़े का टुकड़ा लपेट लें) या प्लास्टिक कोटिंग कर लें फिर कपड़े, रेगज़ीन या चमड़े में ता'वीज़ बना लें और सर पर बांध लें जिन को **इमामा शरीफ़** का ताज सजाने की सआ़दत ह़ासिल है, वोह चाहें तो इमामे शरीफ़ की टोपी में सी लें इसी त़रह़ इस्लामी बहनें दुपट्टे या बुरक़अ़ के उस ह़िस्से में सी लें जो सर पर रहता है। अगर ए'तिक़ाद कामिल होगा तो اِنْ شَآءَ اللّٰه عَزَّوَجَلَّ दर्दे सर जाता रहेगा। सोने या चांदी या किसी भी धात की डिबिया में ता'वीज़ पहनना मर्द को जाइज़ नहीं। इसी त़रह़ किसी भी धात की ज़न्जीर ख़्वाह उस में ता'वीज़ हो या न हो मर्द को पहनना **ना जाइज़** व गुनाह है। इसी त़रह़ सोने, चांदी और स्टील वग़ैरा किसी भी धात की

तख़्ती या कड़ा जिस पर कुछ लिखा हुवा हो या न लिखा हुवा हो अगर्चे **अल्लाह** का मुबारक नाम या कलिमए त़य्यिबा वग़ैरा खुदाई किया हुवा हो उस का पहनना मर्द के लिये ना जाइज़ है औरत सोने चांदी की डिबिया में ता'वीज़ पहन सकती है।

"या अल्लाह" के छ[6] हुरूफ़ की निस्बत से आधे सर के दर्द के 6 इलाज

1 **अगर** किसी को आधे सर का दर्द हो तो एक बार **सूरतुल इख़्लास** (अव्वल आख़िर एक बार दुरूद शरीफ़) पढ़ कर दम कीजिये। हस्बे ज़रूरत तीन[3] बार, सात[7] बार या **ग्यारह**[11] बार इसी तरह दम कीजिये। ग्यारह का अदद पूरा होने से क़ब्ल ही اِنْ شَآءَاللّٰه عَزَّوَجَلَّ **आधे सर** का दर्द ठीक हो जाएगा।

2 **जब** दर्द हो रहा हो उस वक़्त सूंठ (या'नी सूखी हुई अदरक जो कि पन्सारी या'नी देसी दवा वालों से मिल सकती है) को थोड़े से पानी में घिस कर सूंठ का घिसा हुवा हिस्सा पेशानी पर मलने से اِنْ شَآءَاللّٰه عَزَّوَجَلَّ **आधे** सर का दर्द जाता रहेगा।

3 **ख़ुश्क** धन्या के थोड़े दाने और थोड़ी सी किशमिश[1] मटके के ठन्डे या सादा पानी में चन्द घन्टे भिगो कर पीने से اِنْ شَآءَاللّٰه عَزَّوَجَلَّ फ़ाएदा होगा।

4 **गर्म** दूध में देसी घी मिला कर पीने से भी फ़ाएदा होता है।

1 : या'नी सूखे हुए छोटे अंगूर जिस को पंजाबी में "सोगी" कहते हैं।

5 **नारियल** का पानी पीने से आधा सीसी (या'नी आधे सर का दर्द) और पूरे सर के दर्द में कमी आती है।

6 **नीम** गर्म पानी के बड़े बरतन में नमक डाल कर दोनों पाउं 12 मिनट के लिये उस में डाले रहें اِنْ شَآءَاللّٰه عَزَّوَجَلَّ फ़ाएदा हो जाएगा। (ज़रूरतन वक़्त में कमी बेशी कर लीजिये।)

"या मुस्तफ़ा" के सात हुरूफ़ की निस्बत से दर्दे सर के 7 इलाज

1 لَا يُصَدَّعُوْنَ عَنْهَا وَلَا يُنْزِفُوْنَ ۙ **तरजमए कन्ज़ुल ईमान :** न उन्हें दर्दे सर हो न होश में फ़र्क़ आए। (پ ۲۷ الواقعه ۱۹) येह आयते करीमा तीन बार (अव्वल आख़िर एक बार दुरूद शरीफ़) पढ़ कर दर्दे सर वाले पर दम कर दीजिये। اِنْ شَآءَاللّٰه عَزَّوَجَلَّ फ़ाएदा हो जाएगा। (तरजमा पढ़ने की ज़रूरत नहीं)

2 **सूरतुन्नास** सात बार (अव्वल आख़िर एक बार दुरूद शरीफ़) पढ़ कर सर पर दम कीजिये, और पूछिये, अगर अभी दर्द बाक़ी हो तो दूसरी बार भी इसी त़रह़ दम कीजिये। अगर अब भी दर्द हो तो तीसरी बार भी इसी त़रह़ दम कीजिये। **पूरे सर** का दर्द हो या **आधे सर** का कैसा ही शदीद दर्द हो तीन बार में اِنْ شَآءَاللّٰه عَزَّوَجَلَّ जाता रहेगा।

3 **पूरे** सर का दर्द हो या शक़ीक़ा (या'नी आधे सर का दर्द) बा'द नमाज़े अ़स्र **सूरतुत्तकासुर** एक बार (अव्वल आख़िर एक बार दुरूद शरीफ़) पढ़ कर दम कीजिये। اِنْ شَآءَاللّٰہ عَزَّوَجَلَّ दर्द में इफ़ाक़ा होगा।

4 **ज़बान** पर एक चुटकी **नमक** रख कर 12 मिनट के बा'द एक गिलास पानी पी लें। सर में कैसा ही दर्द हो اِنْ شَآءَاللّٰہ عَزَّوَجَلَّ इफ़ाक़ा हो जाएगा। (हाई ब्लड प्रेशर के मरीज़ के लिये नमक का इस्ति'माल नुक़्सान देह होता है।)

5 **एक** कप पानी में एक चम्मच **हल्दी** डाल कर जोश दे कर पीने या भाप लेने से اِنْ شَآءَاللّٰہ عَزَّوَجَلَّ **सर का दर्द** दूर हो जाएगा। (सालन वग़ैरा में हल्दी ज़रूर इस्ति'माल कीजिये, रोज़ाना एक ग्राम (या'नी चुटकी भर) हल्दी खाने वाला اِنْ شَآءَاللّٰہ عَزَّوَجَلَّ केन्सर से मह़फ़ूज़ रहेगा।)

6 **देसी** घी में तली हुई, गर्मा गर्म ताज़ा **जलेबियां** तुलूए़ आफ़्ताब से क़ब्ल खाने से اِنْ شَآءَاللّٰہ عَزَّوَجَلَّ दर्दे सर में आराम आ जाएगा।

7 **कभी** इत्तिफ़ाक़िया **दर्दे सर** हो जाए तो खाना खाने के बा'द डिस्प्रीन (DISPRIN) की दो टिक्या पानी में घोल कर पी लीजिये। اِنْ شَآءَاللّٰہ عَزَّوَجَلَّ ठीक हो जाएगा। (हर त़रह़ के दर्द की टिक्या खाना खाने के बा'द ही इस्ति'माल की जाए वरना नुक़्सान का अन्देशा है)

मदनी मश्वरा : अगर दवाओं से दर्दे सर ठीक न होता हो तो आंखें टेस्ट करवा लीजिये। अगर नज़र कमज़ोर हो तो ऐनक पहनने से اِنْ شَآءَاللّٰہ عَزَّوَجَلَّ **दर्दे सर** ठीक हो जाएगा। फिर भी ठीक न हो तो दिमाग़ के ख़ुसूसी डॉक्टर से रुजूअ़ करना ज़रूरी है। इस में कोताही बा'ज़ अवक़ात सख़्त नुक़्सान देह साबित होती है।

नक्सीर फूटने का इलाज : अगर किसी की नक्सीर फूट जाए और ख़ून बहने लगे तो शहादत की उंगली से पेशानी पर से بِسۡمِ اللّٰہِ الرَّحۡمٰنِ الرَّحِیۡمِ ؕ लिखना शुरूअ़ कर के नाक के आख़िर पर ख़त्म करे اِنْ شَآءَاللّٰہ عَزَّوَجَلَّ ख़ून बन्द हो जाएगा।

दवा की हिकायत : **हज़रते** मुफ़्ती अहमद यार ख़ान عَلَیْہِ رَحۡمَۃُ الْمَنَّان फ़रमाते हैं, "जो बीमार **बिस्मिल्लाह** कह कर दवा पिये اِنْ شَآءَاللّٰہ عَزَّوَجَلَّ दवा फ़ाएदा देगी। एक बार हज़रते सय्यिदुना मूसा कलीमुल्लाह عَلٰی نَبِیِّنَا وَعَلَیْہِ الصَّلٰوۃُ وَالسَّلَام के पेट में निहायत सख़्त दर्द हुवा, हक़ तआ़ला की बारगाह में अ़र्ज़ किया, इर्शाद हुवा कि जंगल की फुलां बूटी खाओ। चुनान्चे आप عَلَیْہِ السَّلَام ने खाई और फ़ौरन आराम हो गया। कुछ दिनों बा'द फिर वोही बीमारी हुई, हज़रते सय्यिदुना मूसा कलीमुल्लाह عَلٰی نَبِیِّنَا وَعَلَیْہِ الصَّلٰوۃُ وَالسَّلَام ने फिर वोही इस्ति'माल की मगर दर्द में ज़ियादती हो गई! जनाबे बारी عَزَّوَجَلَّ में अ़र्ज़ किया कि इलाही عَزَّوَجَلَّ! येह क्या भेद है? कि दवा एक तासीर दो! कि पहली बार इस ने शिफ़ा दी और इस दफ़्आ़ बीमारी बढ़ाई! इर्शादे इलाही عَزَّوَجَلَّ हुवा कि **ऐ मूसा**! उस बार तुम मेरी त़रफ़ से बूटी के पास गए थे और इस दफ़्आ़ अपनी त़रफ़ से।

ऐ मूसा ! शिफ़ा तो मेरे नाम में है मेरे नाम के बिग़ैर दुन्या की हर चीज़ ज़हरे क़ातिल है। और मेरा नाम ही इस का तिर्याक़ (या'नी इलाज) है।

(तफ़्सीरे नईमी, जिल्द अव्वल, स. 42)

अल्लाह عَزَّوَجَلَّ की उन पर रहमत हो और उन के सदक़े हमारी मग़्फ़िरत हो।

दवा पर नहीं ख़ुदा عَزَّوَجَلَّ पर भरोसा रखिये : मा'लूम हुवा कि भरोसा दवा पर नहीं ख़ुदा عَزَّوَجَلَّ पर रखना चाहिये। अगर **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ चाहे तो ही दवा से शिफ़ा मिलेगी वोह न चाहे तो येही दवा बीमारी बढ़ने का सबब बन जाएगी और आ़म मुशाहदा है कि एक ही दवा से एक बीमार सिह्हत मन्द हो जाता है और वोही दवा जब दूसरा मरीज़ पीता है तो उस को मन्फ़ी असर (REACTION) हो जाता और मज़ीद सख़्त अमराज़ में मुब्तला या मा'ज़ूर हो जाता या मौत के घाट उतर जाता है। जब भी दवा पियें तो بِسۡمِ اللہِ الرَّحۡمٰنِ الرَّحِیۡمِ पढ़ लीजिये या بِسۡمِ اللہِ شَافِی بِسۡمِ اللہِ کَافِی कह लीजिये।

रूह़ की सैराबी : अल्लाह तआ़ला ने ह़ज़रते सय्यिदुना मूसा कलीमुल्लाह عَلٰی نَبِیِّنَا وَعَلَیْہِ الصَّلٰوۃُ وَالسَّلَام की त़रफ़ वह़्य नाज़िल फ़रमाई कि "दुन्या से हर **रूह़** प्यासी जाती है सिवाए उस के जिस ने بِسۡمِ اللہِ الرَّحۡمٰنِ الرَّحِیۡمِ पढ़ा होगा।" (اسرار الفاتحہ ص ١٦٢)

उ़म्दगी से पढ़ने की फ़ज़ीलत : ह़ज़रते मौलाए काएनात अ़लिय्युल मुर्तज़ा शेरे ख़ुदा کَرَّمَ اللّٰہُ تَعَالٰی وَجْہَہُ الْکَرِیْم से रिवायत है, "एक शख़्स ने بِسْمِ اللّٰہِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِیْمِ को ख़ूब उ़म्दगी से पढ़ा, उस की **बख़्शिश** हो गई।" (شُعَبُ الایمان ج٢ ص٤٥ رقم الحديث ٢٦٦٧)

नामे ख़ुदा عَزَّوَجَلَّ की मिठास बाइसे नजात है : एक गुनहगार को मरने के बा'द किसी ने ख़्वाब में देख कर पूछा, مَا فَعَلَ اللّٰہُ بِکَ ؟ या'नी **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ ने तेरे साथ क्या मुआ़मला फ़रमाया ? उस ने जवाब दिया, "एक बार मैं एक मद्रसे की त़रफ़ से गुज़रा और एक पढ़ने वाले ने بِسْمِ اللّٰہِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِیْمِ पढ़ी, सुन कर मेरे दिल में **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ के मीठे मीठे नाम की मिठास ने असर किया और उसी वक़्त मैं ने येह ग़ैबी आवाज़ सुनी, "हम दो चीज़ों को जम्अ़ न करेंगे (1) **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ के नाम की लज़्ज़त (2) मौत की तल्ख़ी।" (انيس الواعِظين ص ٤)

अल्लाह عَزَّوَجَلَّ **की उन पर रह़मत हो और उन के सदक़े हमारी मग़्फ़िरत हो।**

प्यारे प्यारे इस्लामी भाइयो ! इस ह़िकायत से मा'लूम हुवा कि **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ के नामे नामी इस्मे गिरामी से लज़्ज़त अन्दोज़ होने वाला, रह़मतों के साए में दुन्या से रुख़्सत होता है और मौत उस के लिये नजातो बख़्शिश का पयाम लाती है, **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ की रह़मत बहुत बड़ी है, वोह नुक्ता नवाज़ है, ब ज़ाहिर मा'मूली नज़र आने वाले आ'माल के सबब

बड़े से बड़े गुनहगारों को बख़्श दिया जाता है।

رَحمتِ حق ''بہا'' نہ می جُوید   رَحمتِ حق ''بہانہ'' می جُوید

(अल्लाह عَزَّوَجَلَّ की रह़मत ''बहा''(या'नी क़ीमत) त़लब नहीं करती बल्कि अल्लाह عَزَّوَجَلَّ की रह़मत तो बहाना तलाश करती है।)

क़ियामत के लिये निराली सनद : **ह़ज़रते** मुफ़्ती अह़मद यार ख़ान عَلَيْهِ رَحْمَةُ الْمَنَّان फ़रमाते हैं, ''तफ़्सीरे अ़ज़ीज़ी'' में बिस्मिल्लाह के फ़वाइद में लिखा है कि एक वलिय्युल्लाह رَحْمَةُ اللّٰهِ تَعَالٰى عَلَيْه ने मरते वक़्त वसिय्यत की थी कि मेरे कफ़न में بِسۡمِ اللّٰهِ الرَّحۡمٰنِ الرَّحِيۡمِ लिख कर रख देना। लोगों ने इस की वज्ह पूछी तो उन्हों ने जवाब दिया कि क़ियामत के दिन येह मेरी **दस्तावेज़** (या'नी तह़रीरी सुबूत) होगी जिस के ज़रीए़ से रह़मते इलाही عَزَّوَجَلَّ की दरख़्वास्त करूंगा।''

(तफ़्सीरे नई़मी, पारह अव्वल, स. 42)

अल्लाह عَزَّوَجَلَّ की उन पर रह़मत हो और उन के सदक़े हमारी मग़्फ़िरत हो।

मिलेगा दोनों आ़लम का ख़ज़ाना पढ़ लो बिस्मिल्लाह

ख़ुदा चाहे तो हो जन्नत ठिकाना, पढ़ लो बिस्मिल्लाह

صَلُّوا عَلَى الْحَبِيب!   صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلٰى مُحَمَّد

تُوبُوا اِلَى الله! اَسْتَغْفِرُ الله

صَلُّوا عَلَى الْحَبِيب!   صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلٰى مُحَمَّد

तू अ़ज़ाब से बच गया : फ़िक़्हे ह़नफ़ी की मश्हूरो मा'रूफ़ किताब **"दुर्रे मुख़्तार"** में है एक शख़्स ने मरने से पहले येह वसिय्यत की, कि इन्तिक़ाल के बा'द मेरे सीने और पेशानी पर بِسۡمِ اللّٰہِ الرَّحۡمٰنِ الرَّحِیۡمِ लिख देना। चुनान्चे ऐसा ही किया गया। फिर किसी ने ख़्वाब में उस शख़्स को देख कर ह़ाल पूछा, उस ने बताया कि जब मुझे क़ब्र में रखा गया, अ़ज़ाब के फ़िरिश्ते आए, जब पेशानी पर बिस्मिल्लाह शरीफ़ देखी तो कहा, **"तू अ़ज़ाब से बच गया !"**

(اَلدُّرُّالْمُخْتَار مَعَهٗ رَدُّالْمُحْتَار ج٣ ص ١٥٦)

अल्लाह عَزَّوَجَلَّ की उन पर रह़मत हो और उन के सदक़े हमारी मग़्फ़िरत हो।

صَلُّوْاعَلَی الْحَبِیْب ! صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلٰی مُحَمَّد

कफ़न पर लिखने का त़रीक़ा : प्यारे प्यारे इस्लामी भाइयो ! जब भी कोई मुसल्मान फ़ौत हो जाए तो بِسۡمِ اللّٰہِ الرَّحۡمٰنِ الرَّحِیۡمِ वग़ैरा ज़रूर लिख लिया करें। आप की थोड़ी सी तवज्जोह बेचारे मरने वाले की बख़्शिश का ज़रीआ़ बन सकती है। और मय्यित के साथ हमदर्दी की नेकी आप की भी नजात का बाइ़स बन सकती है। ह़ज़रते अ़ल्लामा **शामी** رَحْمَۃُ اللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہِ फ़रमाते हैं, "यूं भी हो सकता है कि मय्यित की पेशानी पर بِسۡمِ اللّٰہِ الرَّحۡمٰنِ الرَّحِیۡمِ लिखिये और सीने पर لَا اِلٰهَ اِلَّا اللّٰهُ مُحَمَّدٌ رَّسُولُ اللّٰه صَلَّى اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم लिखिये। मगर नहलाने के बा'द और कफ़न पहनाने से पहले **कलिमे की उंगली** से

लिखिये। रोशनाई (INK) से न लिखिये। (رَدُّ الْمُحْتَار ج ٣ ص ١٥٧) ए'राब लगाने की ह़ाजत नहीं। "शजरह या अ़ह्द नामा **क़ब्र** में रखना जाइज़ है और बेहतर येह है कि मय्यित के मुंह के सामने क़िब्ले की जानिब **ताक़** खोद कर उस में रखें। बल्कि "**दुर्रे मुख़्तार**" में कफ़न में **अ़हद नामा** लिखने को जाइज़ कहा है और फ़रमाया कि इस से मग़्फ़िरत की उम्मीद है।" (बहारे शरीअ़त, ह़िस्सा : 4, स. 108)

जा, हम ने तुझे बख़्श दिया : क़ियामत के रोज़ अ़ज़ाब के फ़िरिश्ते एक बन्दे को पकड़ लेंगे। हुक्म होगा कि इस के आ'ज़ा को देख लो इस में कोई नेकी है या नहीं ? चुनान्चे फ़िरिश्ते तमाम आ'ज़ा को देख डालेंगे, कोई नेकी नहीं मिलेगी। फिर फ़िरिश्ते उस से कहेंगे, "अब ज़रा अपनी ज़बान बाहर निकालो कि उस में देख लें कोई नेकी है या नहीं ?" जब वोह ज़बान निकालेगा तो उस पर सफ़ेद ख़त़ में بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ लिखा हुवा पाएंगे। उसी वक़्त हुक्म होगा, "**जा, हम ने तुझे बख़्श दिया।**" (نُزهَةُ الْمَجالِس ج اول ص ٢٥)

अल्लाह عَزَّوَجَلَّ की उन पर रह़मत हो और उन के सदक़े हमारी मग़्फ़िरत हो।

गुनहगारो, न घबराओ, न घबराओ, न घबराओ
नज़र रह़मत पे रख्खो जन्नतुल फ़िरदौस में जाओ

صَلُّوا عَلَى الْحَبِيْب ! صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلٰى مُحَمَّد

प्यारे प्यारे इस्लामी भाइयो ! अल्लाह عَزَّوَجَلَّ के करम की बात है कि जिस को चाहे बख़्श दे। यक़ीनन उस शख़्स ने इख़्लास के साथ بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ पढ़ी थी जो काम आ गई कि **इख़्लास** के साथ किया जाने वाला ब ज़ाहिर छोटा अ़मल भी बहुत बड़ा दरजा रखता है। चुनान्चे इमामुल मुख़्लिसीन, सय्यिदुल मुर्सलीन, रह़मतुल्लिल आ़लमीन صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰی عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم का फ़रमाने क़बूलिय्यत निशान है, اَخلِص دِيْنَک يَكْفِک الْعَمَلُ الْقَلِيْلُ "अपने दीन में मुख़्लिस हो जाओ थोड़ा अ़मल भी काफ़ी होगा।" (اَلْمُسْتَدْرَك لِلحاكم ج٥ص ٤٣٥ رقم الحديث ٧٩١٤)

हुज्जतुल इस्लाम, ह़ज़रते इमाम मुह़म्मद ग़ज़ाली عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللّٰهِ الْوَالِى एक बुज़ुर्ग से नक़्ल करते हैं, "एक साअ़त का इख़्लास हमेशा की नजात का बाइ़स है। मगर **इख़्लास** बहुत कम पाया जाता है।" (اِحياءُ الْعُلوم ج ٤ ص ٣٩٩)

ख़ालिस अ़मल की पहचान : ह़ज़रते सय्यिदुना ई़सा रूहुल्लाह के ह़वारियों ने आप عَلَيْهِ السَّلَام की ख़िदमत में अ़र्ज़ किया, "किस का अ़मल **ख़ालिस** होता है ?" फ़रमाया, "उसी शख़्स का अ़मल **इख़्लास** पर मब्नी माना जाएगा जो सिर्फ़ **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ की रिज़ा के लिये अ़मल करे और इस बात को ना पसन्द करे कि लोग इस अ़मल के सबब इस की ता'रीफ़ करें।" (اَيضاً ص ٤٠٣)

अल्लाह عَزَّوَجَلَّ **की उन पर रह़मत हो और उन के सदक़े हमारी मग़्फ़िरत हो।**

صَلُّوْا عَلَى الْحَبِيْب ! صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلٰى مُحَمَّد

या अल्लाह عَزَّوَجَلَّ तेरे मुख़्लिस नबी सय्यिदुना ईसा عَلَيْهِ السَّلَام का वासिता हमें बे सबब बख़्श दे। आमीन। हाए ! हाए ! नफ़्सो शैतान के हाथों हम तेज़ी के साथ तबाही के गढ़े में गिरते जा रहे हैं। आह ! आह ! आह ! "हौसला अफ़्ज़ाई" के नाम पर जब तक हमारे आ'माल और दीनी अफ़्आ़ल की ता'रीफ़ और वाह ! वाह ! नहीं की जाती हमें सुकून ही नहीं मिलता।

मेरा हर अ़मल बस तेरे वासिते हो

कर इख़्लास ऐसा अ़ता या इलाही

आफ़तें दूर होने का आसान विर्द : मौलाए काएनात, ह़ज़रते सय्यिदुना अ़लिय्युल मुर्तज़ा शेरे ख़ुदा كَرَّمَ اللّٰهُ تَعَالٰى وَجْهَهُ الْكَرِيْم से रिवायत है कि सुल्त़ाने मक्कए मुकर्रमा, ताजदारे मदीनए मुनव्वरा, मकीने गुम्बदे ख़ज़रा صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने इर्शाद फ़रमाया, "ऐ अ़ली ! (كَرَّمَ اللّٰهُ تَعَالٰى وَجْهَهُ الْكَرِيْم) मैं तुम्हें ऐसे कलिमात न बता दूं जिन्हें तुम **मुसीबत** के वक़्त पढ़ लो।" अ़र्ज़ किया, "ज़रूर इर्शाद फ़रमाइये ! आप صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم पर मेरी जान क़ुरबान ! तमाम अच्छाइयां मैं ने आप صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ही से सीखी हैं"। इर्शाद फ़रमाया, "जब तुम किसी मुश्किल में फंस जाओ तो इस त़रह़ पढ़ो :

फ़रमाने मुस्त़फ़ा صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم : जिस के पास मेरा ज़िक्र हो और वोह मुझ पर दुरूद शरीफ़ न पढ़े तो वोह लोगों में से कन्जूस तरीन शख़्स है। (مسند احمد)

بِسْمِ اللهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِیْمِ وَلَاحَوْلَ وَلَاقُوَّۃَ اِلَّابِاللهِ الْعَلِیِّ الْعَظِیْم

पस **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ इस की बरकत से जिन बलाओं को चाहेगा दूर फ़रमा देगा। (عَمَلُ الْیَوْمِ وَاللَّیْلَۃِ لا بن سُنّی ص ۱۲۰)

मुश्किलें ह़ल होंगी اِنْ شَآءَاللہ عَزَّوَجَلَّ **: प्यारे प्यारे इस्लामी भाइयो !** जब भी **बीमारी,** क़र्ज़दारी, मुक़द्दमे बाज़ी, दुश्मन की त़रफ़ से ईज़ा रसानी, बे रोज़गारी या कोई सी भी आफ़ते ना गहानी आन पड़े। कोई चीज़ **गुम** हो जाए, किसी की बात सुन कर **सदमा** पहुंचे, कोई मारे, दिल दुख जाए, ठोकर लगे, गाड़ी ख़राब हो जाए, **ट्राफ़िक** जाम हो जाए, कारोबार में **नुक़्सान** हो जाए, **चोरी** हो जाए, अल ग़रज़ छोटी या बड़ी कोई सी भी परेशानी हो بِسْمِ اللهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِیْمِ وَلَاحَوْلَ وَلَاقُوَّۃَ اِلَّابِاللهِ الْعَلِیِّ الْعَظِیْم पढ़ते रहने की आ़दत बना लीजिये। निय्यत साफ़ होगी तो اِنْ شَآءَاللہ عَزَّوَجَلَّ मन्ज़िल आसान होगी। मुश्किल की आसानी के लिये एक अ़मल येह भी है, क़ब्ल अज़ नमाज़े जुमुआ़ ग़ुस्ल कर के पाक साफ़ लिबास पहन कर तन्हाई में یَا اَللّٰہُ 200 बार (अव्वल आख़िर तीन बार दुरूदे पाक) पढ़ लीजिये। कैसी ही मुसीबत हो दूर होगी या कैसी ही ह़ाजत हो पूरी होगी اِنْ شَآءَاللہ عَزَّوَجَلَّ।

اَلْحَمْدُ لِلّٰہ عَزَّوَجَلَّ **दा'वते इस्लामी** के सुन्नतों की तरबियत के **मदनी क़ाफ़िलों** में आ़शिक़ाने रसूल के साथ सफ़र कर के दुआ़एं मांगने से भी बे शुमार इस्लामी भाइयों की मुश्किलात ह़ल होने के वाक़िआ़त हैं। चुनान्चे

नई ज़िन्दगी : एक मज़्दूर के गुर्दे फ़ेल हो गए। अ़ज़ीज़ों ने अस्पताल में दाख़िल करवा दिया। उस का औबाश भान्जा इ़यादत के लिये आया। मामूंजान ज़िन्दगी की आख़िरी घड़ियां गिन रहे थे। उस का दिल भर आया और आंखों से आंसू छलक पड़े। उस ने सुन रखा था कि **दा'वते इस्लामी** के मदनी क़ाफ़िले में सफ़र के दौरान दुआ़ क़बूल होती है। चुनान्चे वोह मदनी क़ाफ़िले में सफ़र पर चल दिया और ख़ूब गिड़गिड़ा कर मामूंजान की सिह़्ह़त याबी के लिये दुआ़ की। **जब वापस पलटा तो मामूंजान सिह़्ह़त याब हो कर घर भी आ चुके थे और अब नमाज़ के लिये घर से निकल कर ख़िरामां ख़िरामां जानिबे मस्जिद रवां दवां थे।** येह रह़मत भरा मन्ज़र देख कर उस नौ जवान ने गुनाहों भरी ज़िन्दगी से तौबा की और अपने आप को मदनी रंग में रंग लिया।

मर्ज़ गम्भीर हो, गर्चे दिलगीर हो   होंगी ह़ल मुश्किलें, क़ाफ़िले में चलो
ग़म के बादल छटें, और ख़ुशियां मिलें   दिल की कलियां खिलें, क़ाफ़िले में चलो

صَلُّوْا عَلَی الْحَبِیْب ! صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلٰی مُحَمَّد

تُوْبُوْا اِلَی اللّٰہِ ! اَسْتَغْفِرُ اللّٰہ

صَلُّوْا عَلَی الْحَبِیْب ! صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلٰی مُحَمَّد

اَلْحَمْدُ لِلّٰہ عَزَّوَجَلَّ दिल की गहराई से निकली हुई दुआ़ कभी रद नहीं हो सकती। **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ की बारगाह में जो भी दुआ़ मांगी जाए वोह लाज़िमन क़बूल होती है और क्यूं न हो कि ख़ुद हमारे प्यारे प्यारे सच्चे **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ का सच्चा फ़रमान है :

وَقَالَ رَبُّكُمُ ادْعُوْنِیْۤ اَسْتَجِبْ لَكُمْ ط (پ ۲۴ المؤمن ۶۰)

तरजमए कन्ज़ुल ईमान : और तुम्हारे रब (عَزَّوَجَلَّ) ने फ़रमाया, "मुझ से दुआ़ करो मैं क़बूल करूंगा।"

वस्वसा : ख़ुदाए ह़मीद عَزَّوَجَلَّ कलामे मजीद में जब ख़ुद इर्शाद फ़रमाता है कि "मुझ से दुआ़ करो, मैं क़बूल करूंगा" मगर बारहा क़बूलिय्यते दुआ़ का इज़्हार नहीं होता। मसलन : दुआ़ की जाती है फ़ुलां जगह नोकरी मिल जाए मगर नहीं मिलती।

वस्वसे का इलाज : क़बूल होने के मा'ना समझने में ख़त़ा खाने की वज्ह से शैत़ान **वस्वसे** डालता हैं। दुआ़ क़बूल ही क़बूल है। क़बूलिय्यत की सूरतें मुख़्तलिफ़ हैं, क़बूलिय्यते दुआ़ की **तीन सूरतें** मुलाह़ज़ा फ़रमाइये : (1) जो उस ने मांगा वोह न दिया गया कि उस के ह़क़ में बेहतर न था और वोह अर्‌ह़मुर्राह़िमीन جَلَّ جَلَالُہٗ अपने बन्दों के ह़क़ में बेहतरी चाहता है।

وَعَسٰۤى اَنْ تَكْرَهُوْا شَیْــٴًـا وَّ هُوَ خَیْرٌ لَّكُمْۚ وَ عَسٰۤى اَنْ تُحِبُّوْا شَیْــٴًـا وَّ هُوَ شَرٌّ لَّكُمْؕ وَ اللّٰهُ یَعْلَمُ وَ اَنْتُمْ لَا تَعْلَمُوْنَ۠

(پ ۲ البقرہ ۲۱۶)

तरजमए कन्ज़ुल ईमान : और क़रीब है कि कोई बात तुम्हें बुरी लगे और वोह तुम्हारे ह़क़ में बेहतर हो। और क़रीब है कि कोई बात तुम्हें पसन्द आए और वोह तुम्हारे ह़क़ में बुरी हो और **अल्लाह** जानता है और तुम नहीं जानते।

(2) उस दुआ़ मांगने वाले पर कोई सख़्त बला व मुसीबत आनी थी। जिसे उस का परवर्दगार عَزَّوَجَلَّ इस ब ज़ाहिर क़बूल न होने वाली दुआ़ के सिले में दूर फ़रमा देता है। मसलन : इतवार को बा'द नमाज़े मग़रिब स्कूटर के ह़ादिसे में उस का पाउं टूटने वाला था और अ़स्र की नमाज़ में इस ने दुआ़ मांगी, **या अल्लाह** ! फ़ुलां पर मेरा 1000 रुपिया क़र्ज़ है वोह आज मग़रिब के बा'द मिल जाए। येह नमाज़े मग़रिब अदा कर के सह़ीह़ सलामत मक़्रूज़ के पास पहुंच गया। उस ने कर्ज़ नहीं लौटाया, येह दुआ़ मांगने वाला समझा कि मेरी दुआ़ क़बूल नहीं हुई। मगर इस बे ख़बर को क्या ख़बर कि मक़्रूज़ के पास पहुंचने से क़ब्ल ह़ादिसे में इस का जो पाउं टूटने वाला था वोह इस दुआ़ की बरकत से नहीं टूटा !

(3) येह कि जो मांगा वोह नहीं दिया जाता बल्कि उस दुआ़ के इ़वज़ आख़िरत में सवाब का ज़ख़ीरा अ़त़ा किया जाएगा। जैसा कि ह़दीसे पाक में फ़रमाया, "जब बन्दा आख़िरत में अपनी उन दुआ़ओं का सवाब देखेगा जो दुन्या में मक़्बूल न हुई थीं, तमन्ना करेगा, "काश ! दुन्या में

मेरी कोई दुआ क़बूल न होती और सब यहीं (या'नी आख़िरत) के वासिते जम्अ़ हो जातीं।" (अह़सनुल विआ़अ, स. 37, हाशिया मअ़ तौज़ीह़) एक ह़दीसे पाक में है, "जिस को दुआ की तौफ़ीक़ दी जाए दरवाज़े बिहिश्त (या'नी जन्नत) के उस के लिये खोले जाएंगे।" (ऐज़न, स. 141)

"बिस्मिल्लाह" की दीवानी : एक मुबल्लिग़ इज्तिमाअ़ में **बिस्मिल्लाह** शरीफ़ के फ़ज़ाइल बयान फ़रमा रहे थे। एक यहूदन लड़की फ़ज़ाइले **बिस्मिल्लाह** सुन कर बेहद मुतअस्सिर हुई और उस ने **इस्लाम** क़बूल कर लिया। उस की ज़बान पर بِسۡمِ اللّٰہِ الرَّحۡمٰنِ الرَّحِیۡمِ का विर्द जारी हो गया। हर वक़्त उठते, बैठते, सोते, जागते, चलते फिरते **बिस्मिल्लाह** पढ़ती रहती। लड़की के काफ़िर मां बाप उस से सख़्त नाराज़ रहने और उस को त़रह़ त़रह़ की तक्लीफ़ें देने लगे। नीज़ इस्लाम दुश्मनी के सबब इस कोशिश में लग गए कि अपनी बेटी पर कोई इल्ज़ाम आइद कर के مَعَاذَ اللّٰہ عَزَّوَجَلَّ उस को **क़त्ल** करवा दें। चुनान्चे एक दिन उस के बाप ने जो कि बादशाहे वक़्त का **वज़ीर** था। शाही मोह्र वाली **अंगूठी** बेटी को रखने के लिये दी, بِسۡمِ اللّٰہِ الرَّحۡمٰنِ الرَّحِیۡمِ पढ़ कर उस ने ली और بِسۡمِ اللّٰہِ الرَّحۡمٰنِ الرَّحِیۡمِ पढ़ कर जेब में डाल ली। रात को जब वोह सो गई तो उस के बाप ने उस की जेब से **अंगूठी** निकाल कर दरिया में डाल दी। एक **मछली** ने वोह अंगूठी निगल ली। सुब्ह़ को एक माहीगीर

फ़रमाने मुस्तफ़ा صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم : मुझ पर कसरत से दुरूदे पाक पढ़ो बेशक तुम्हारा मुझ पर दुरूदे पाक पढ़ना तुम्हारे गुनाहों के लिये मग़्फ़िरत है। (ابن عساکر)

ने जाल डाला तो इत्तिफ़ाक़ से वोही मछली जाल में फंस गई, उस ने ला कर वज़ीर को तोहूफ़तन दे दी, वज़ीर ने पकाने के लिये लड़की के ह़वाले की। उस ने بِسۡمِ اللّٰہِ الرَّحۡمٰنِ الرَّحِیۡمِ कह कर मछली ली, जब بِسۡمِ اللّٰہِ الرَّحۡمٰنِ الرَّحِیۡمِ कह कर उस का पेट चाक किया तो उस में से **अंगूठी** निकल पड़ी, उस ने بِسۡمِ اللّٰہِ الرَّحۡمٰنِ الرَّحِیۡمِ पढ़ कर जेब में डाल ली और मछली पका कर बाप के आगे रख दी। खाना खाने के बा'द जब दरबार का वक़्त आया, बाप ने लड़की से **अंगूठी** त़लब की। उस ने بِسۡمِ اللّٰہِ الرَّحۡمٰنِ الرَّحِیۡمِ पढ़ कर जेब से निकाल कर दे दी। बाप येह देख कर हैरानो शश्दर रह गया और **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ ने **बिस्मिल्लाह की दीवानी** को क़त्ल से मह़फ़ूज़ फ़रमा लिया। (لَمعانِ صُوفیاء)

अल्लाह عَزَّوَجَلَّ **की उस पर रह़मत हो और उस के सदक़े हमारी मग़्फ़िरत हो।**

बिस्मिल्लाह लिखने की फ़ज़ीलत : ह़ज़रते सय्यिदुना अनस رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ से रिवायत है कि **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ के मह़बूब, दानाए ग़ुयूब, मुनज़्ज़हुन अ़निल ड़यूब صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने इर्शाद फ़रमाया, "जिस ने **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ की ता'ज़ीम के लिये उ़म्दा शक्ल में بِسۡمِ اللّٰہِ الرَّحۡمٰنِ الرَّحِیۡمِ तह़रीर किया **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ उसे बख़्श देगा।" (اَلدُّرُّالْمَنْثُور ج ۱ ص ۲۷)

सरकारे आ'ला ह़ज़रत, इमामे अहले सुन्नत मौलाना शाह अह़मद रज़ा ख़ान عَلَيْهِ رَحْمَةُ الرَّحْمٰن के वालिदे गिरामी ताजुल ड़लमा रईसुल फ़ुज़ला,

रईसुल मुतकल्लिमीन ह़ज़रते सय्यिदुना शाह **नक़ी अ़ली ख़ान** क़ादिरी رَحْمَۃُ اللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہ ने ज़ुल क़ा'दतुल ह़राम 1297 सि.हि. जुमे'रात ब वक़्ते ज़ोह्‌र विसाल फ़रमाया। आप رَحْمَۃُ اللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہ की ज़िन्दगी की आख़िरी तह़रीर بِسۡمِ اللّٰہِ الرَّحۡمٰنِ الرَّحِیۡمِ थी। सरकारे आ'ला ह़ज़रत رَحْمَۃُ اللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہ आप رَحْمَۃُ اللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہ के विसाल शरीफ़ की रिक़्क़त अंगेज़ मन्ज़र कशी करते हुए फ़रमाते हैं, "रोज़े विसाल नमाज़े सुब्ह़ (फ़ज्र) पढ़ ली थी और हुनूज़ (या'नी अभी) वक़्ते ज़ोह्‌र बाक़ी था कि इन्तिक़ाल फ़रमाया। नज़्अ़ में सब ह़ाज़िरीन ने देखा कि आंखें बन्द किये मुतवातिर सलाम फ़रमाते थे। (येह इस त़रफ़ इशारा मा'लूम होता है कि औलियाए किराम رَحِمَہُمُ اللّٰہُ تَعَالٰی की अरवाहे़ मुक़द्दसा इस्तिक़्बाल के लिये जम्अ़ हो रही थीं।) जब चन्द सांस बाक़ी रहे। हाथों को आ'ज़ाए वुज़ू पर यूं फेरा गोया वुज़ू फ़रमा रहे हैं। यहां तक कि इस्तिन्शाक़ (या'नी नाक की सफ़ाई) भी फ़रमाया। سُبْحٰنَ اللّٰہ عَزَّوَجَلَّ वोह अपने तौ़र पर ह़ालते बेहोशी में नमाज़े ज़ोह्‌र भी अदा फ़रमा गए। जिस वक़्त रूहे़ पुर फ़ुतूह़ ने जुदाई फ़रमाई, फ़क़ीर सिरहाने ह़ाज़िर था। وَاللّٰہِ الْعَظِیْم एक नूरे मलीह़ (या'नी ह़सीन नूर) अ़लानिया नज़र आया (या'नी जो भी मौजूद था वोह देख सकता था) कि सीने से उठ कर बर्क़े ताबिन्दा (या'नी चमकदार बिजली) की त़रह़ चेहरे पर चमका जिस त़रह़ लम्आ़ने ख़ुरशीद (या'नी सूरज की रोशनी) आईने में जुम्बिश करता है। येह ह़ालत हो कर ग़ाइब हो गया इस के साथ ही रूह़ बदन में न थी। पिछला (या'नी आख़िरी) कलिमा ज़बाने फ़ैज़ तर्जुमान से निकला, लफ़्ज़

"**अल्लाह**" था व बस। और **अख़ीर तह़रीर** कि दस्ते मुबारक से हुई بِسۡمِ اللّٰہِ الرَّحۡمٰنِ الرَّحِیۡمِ थी कि इन्तिक़ाल से दो रोज़ पहले एक काग़ज़ पर लिखी थी। बा'द, फ़क़ीर (या'नी सरकारे आ'ला ह़ज़रत رَحْمَۃُ اللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہ) ने हु़ज़ूर पीरो मुर्शिदे बर ह़क़ رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ को रुअ्या (या'नी ख़्वाब) में देखा कि ह़ज़रत वालिदे माजिद قُدِّسَ سِرُّہُ الْمَاجِد के मर्क़द (मज़ार) पर तशरीफ़ लाए। ग़ुलाम ने अ़र्ज़ किया, "हु़ज़ूर ! यहां कहां ?" फ़रमाया, "आज से, या अब से यहीं रहा करेंगे।"

(ह़याते आ'ला ह़ज़रत, जि. 1, स. 50,51, मक्तबतुल मदीना)

अल्लाह عَزَّوَجَلَّ की उन पर रह़मत हो और उन के सदक़े हमारी मग़्फ़िरत हो।

अ़र्श पर धूमें मचें वोह मोमिने सालेह़ मिला

फ़र्श से मातम उठे वोह त़य्यिबो त़ाहिर गया

(ह़दाइक़े बख़्शिश शरीफ़)

صَلُّوْا عَلَی الْحَبِیْب ! صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلٰی مُحَمَّد

प्यारे प्यारे इस्लामी भाइयो ! بِسۡمِ اللّٰہِ الرَّحۡمٰنِ الرَّحِیۡمِ लिखने का अ़ज़ीम सवाब पाने के लिये हो सके तो कभी कभी बा वुज़ू **ख़ुश ख़त़ी** के साथ काग़ज़ वग़ैरा पर بِسۡمِ اللّٰہِ الرَّحۡمٰنِ الرَّحِیۡمِ तह़रीर फ़रमा लिया करें, लेकिन बे अदबी की जगह हरगिज़ न लिखिये, दीवारों पर भी आयात व मुक़द्दस कलिमात मत लिखिये कि आहिस्ता, आहिस्ता लिखाई के ज़र्रात ज़मीन पर झड़ जाते हैं। (लिहाज़ा मसाजिद में भी इस अदब का ख़याल रखिये।) और ज़मीन पर लिखने के बारे में तो ख़ुद हमारे मीठे मीठे आक़ा صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने सराह़तन मन्अ़ फ़रमा दिया है, चुनान्चे,

फ़रमाने मुस्तफ़ा صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم : बरोज़े क़ियामत लोगों में से मेरे क़रीब तर वोह होगा जिस ने दुन्या में मुझ पर ज़ियादा दुरूदे पाक पढ़े होंगे। (ترمذی)

ज़मीन पर लिखना : **हुज़ूरे** पुरनूर, शाहे ग़यूर, शाफ़ेए़ यौमुन्नुशूर صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم एक जगह से गुज़रे जहां **ज़मीन** पर कुछ लिखा हुवा था। सरकारे आ़ली वक़ार صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने क़रीब बैठे हुए नौ जवान से इस्तिफ़्सार फ़रमाया, "येह क्या लिखा हुवा है ?" उस ने अ़र्ज़ की, "**बिस्मिल्लाह**।" फ़रमाया, "ऐसा करने वाले पर ला'नत हो, **बिस्मिल्लाह** को उस की जगह पर ही रखो।" (الدرالمنثور ج ۱ ص ۲۹)

از خدا خواہیم توفیقِ ادب

بے ادب محروم گشت از فضلِ ربّ

(हम **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ से अदब की तौफ़ीक़ के त़लबगार हैं कि बे अदब फ़ज़्ले रब عَزَّوَجَلَّ से मह़रूम हो कर दर बदर ज़लीलो ख़्वार फिरता है।)

हर ज़बान के ह़ुरूफ़ की ता'ज़ीम कीजिये : प्यारे प्यारे इस्लामी भाइयो ! ज़मीन पर किसी भी ज़बान में कोई लफ़्ज़ नहीं लिखना चाहिये बा'ज़ अवक़ात लोग समझते हैं कि इंग्रेज़ी ज़बान का अदब करने की ज़रूरत नहीं है। येह उन की सख़्त ग़लत़ फ़हमी है। ग़ौर तो फ़रमाइये ! अगर इंग्रेज़ी में **ALLAH** लिखा होगा तो क्या आप अदब नहीं करेंगें ? करेंगे और यक़ीनन करेंगे। यहां तक कि अगर तौहीन की निय्यत से مَعَاذَ اللّٰہ عَزَّوَجَلَّ उस पर पाउं रख दे या पटख़ दे तो काफ़िर हो जाएगा। बहर ह़ाल इंग्रेज़ी और दुन्या की हर ज़बान के ह़ुरूफ़ का अदब करना चाहिये। **तफ़्सीरे कबीर** शरीफ़ जिल्द अव्वल सफ़ह़ा 396 के मुत़ाबिक़ **दुन्या में**

बोली जाने वाली तमाम ज़बानें इल्हामी हैं। ज़ाहिर है ज़मीन पर किसी भी ज़बान में लिखने से उस की बे अदबी यक़ीनी है, आज कल ट्राफ़िक के महकमे की जानिब से रहनुमाई के लिये सड़कों पर बा'ज़ तहरीरें होती हैं येह ग़लत़ त़रीक़ा है। काश सिर्फ़ रंग बिरंगे (मगर सब्ज़ के इलावा) पट्टों से काम चलाया जाता। दरवाज़ों पर ऐसे **पाएदान** न रखें जाएं जिन पर WEL COME लिखा होता है। अफ़्सोस ! आजकल हुरूफ़ का अदब करना तक़रीबन ना मुम्किन हो गया है। उ़मूमन बिछाने की दरी व चादर पर नीज़ फ़ोम के गदेलों के अस्तर और पलंग की चादरों पर कम्पनी या डेकोरेशन का नाम तह़रीर होता है, W.C. पर, चप्पलों और जूतों के अन्दरूनी हिस्सों बल्कि तल्वों पर और कपड़े की कनारियों पर कारख़ाने के नाम वग़ैरा की लिखाई होती है। बा'ज़ अवक़ात सिलाई में पाजामे के अन्दर बैठने की जगह पर तह़रीर आ जाती है तो मुसल्सल बे अदबी का सिल्सिला रहता है। बल्कि सब से ज़ियादा तश्वीशनाक बात येह है कि उ़मूमन हर ''लाल ईंट'' पर और ''फ़्लोर टाइल'' के नीचे लिखाई होती है। भट्टे की लाल ईंटों और फ़्लोर टाइल्ज़ की लिखाई ग्रेन्डर से मिटाई जा सकती है और ज़ियादा मिक़्दार में ख़रीदने वाले कारख़ाने वालों से बिग़ैर लिखाई के भी बनवा सकते हैं मगर इतनी सारी ज़ह़मतें उठाने वाला बा अदब मदनी ज़ेहन कैसे बने ? **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ की अ़त़ा कर्दा तौफ़ीक़ से सब मुम्किन है। एक बार फ़र्श पर रखी एक लाल ईंट की लिखाई देख कर सगे मदीना عُفِيَ عَنْهُ का दिल बे क़रार हो गया उस पर **उ़मर** लिखा हुवा था। लाल ईंटें ह़म्माम में, बैतुल ख़ला में हर जगह की

दीवार व फ़र्श में इस्ति'माल होती हैं। येह अल्फ़ाज़ लिखते हुए माज़ी की एक दिल ख़राश याद ज़ेहन पर उभर रही है उस को भी अ़र्ज़ किये देता हूं।

मदीने शरीफ़ की एक दिल ख़राश याद :

मस्जिदुन्नबविय्यिश्शरीफ़ عَلٰی صَاحِبِهَا الصَّلٰوۃُ وَالسَّلَام की मशरिक़ी जानिब बाबे जिब्रईल के सामने एक क़दीम गली थी जो कि जन्नतुल बक़ीअ़ की त़रफ़ जाती थी उस मुक़द्दस गली को उ़श्शाक़ **बिहिश्ती गली** कहा करते थे, उस में कई यादगारें मसलन : अहले बैते अत़्हार عَلَيْهِمُ الرِّضْوَان के मकानाते त़य्यिबात वग़ैरा थे, अब वोह मीठी मीठी ह़क़ीक़ी **मदनी गली** शहीद कर दी गई है। 1400 सि.हि. की एक सुहानी शाम को (सगे मदीना عُفِیَ عَنْہُ) उसी **बिहिश्ती गली** से गुज़र रहा था कि **गटर** के एक ढक्कन की अ़रबी लिखाई पर नज़र पड़ी। ग़ौर से देखा तो उस पर लोहे की ढलाई से "**मजारिल मदीना**" तह़रीर था मैं ने जज़्बए अ़क़ीदत में उस तह़रीर को चूम लिया और जिन बद नसीबों ने मेरे मीठे मीठे मदीने (زَادَهَا اللّٰهُ شَرَفًا) के नाम को **गटर** के ढक्कन पर लिखवाया उन से मेरे दिल में इस क़दर शदीद नफ़रत पैदा हुई कि मैं बता नहीं सकता। चूमता हुवा देख कर एक यमनी बूढ़े ने मुझे झिड़का, मैं सर नीचा किये तेज़ी से आगे बढ़ गया। अभी थोड़ा ही चला था कि पीछे से किसी के **सलाम** करने की आवाज़ आई, मैं ने मुड़ कर देखा तो कोई अपने वत़न का था, बड़े पुर तपाक त़रीक़े से मिला और तअ़ज्जुब की बात येह है कि मुझ से मा'ज़िरत करते हुए कहने लगा, "उस यमनी बूढ़े का बुरा मत मनाइयेगा।" मज़ीद उस ने

कहा, "**मस्जिदुन्नबविय्यिश्शरीफ़** عَلٰی صَاحِبِهَا الصَّلٰوةُ وَالسَّلَام में हाज़िरी का अन्दाज़ देख कर मुझे कशिश हुई और मैं मुसल्सल आप का पीछा किये चला आ रहा हूं और आप की हर नक़्लो ह़रकत का जाएज़ा ले रहा हूं, आप मेरे मकान पर क़ियाम कर लीजिये।" मैं ने जवाब दिया, اَلْحَمْدُ لِلّٰه عَزَّوَجَلَّ मेरे पास क़ियाम की सहूलत मौजूद है।" कहा, "खाना ही खा लीजिये।" मैं ने जवाब दिया, "इस की फ़िलह़ाल ह़ाजत नहीं।" कहा, "मेरी त़रफ़ से कुछ रक़म क़बूल कर लीजिये," मैं ने शुक्रिय्या अदा करते हुए कहा, "मैं ह़ाजत मन्द नहीं, اَلْحَمْدُ لِلّٰه عَزَّوَجَلَّ मेरे पास अख़्राजात मौजूद हैं।" बहर ह़ाल वोह खुश अ़क़ीदा शख़्स था और उस ने मुझ से बहुत ही मह़ब्बत का इज़्हार किया, मेरे लिये वोह अजनबी था और उस के बा'द फिर कभी उस से मुलाक़ात नहीं हुई। **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ उस को इस का अज्रे अ़ज़ीम अ़त़ा फ़रमाए। और हर मुसल्मान को बे अदबी और बे अदबों के शर से मह़फ़ूज़ रखे। اٰمِیْن بِجَاہِ النَّبِیِّ الْاَمِیْن صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم

मह़फ़ूज़ ख़ुदा रखना सदा बे अदबों से
और मुझ से भी सरज़द न कभी बे अदबी हो

صَلُّوْا عَلَی الْحَبِیْب! صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلٰی مُحَمَّد

सियाने की दलील : अ़रबी में **मदीना** के मा'ना "शहर" है। इस लिये **गटर** के ढक्कन पर **मदीना** लिखने में ह़रज नहीं।

दीवाने का जवाब : अ़रबी में शह्‌र के लिये बलद का लफ़्ज़ भी मा'रूफ़ है। मदीनए मुनव्वरह की शहरी इन्तिज़ामिया को भी बलदिय्या ही कहते हैं आख़िर ऐसा प्यारा नाम **मदीना** زَادَهَا اللّٰهُ شَرَفًا **गटर** के ढक्कन ही पर लिखने की क्यूं सूझी ? अ़रबी ज़बान के इलावा ब शुमूल **उर्दू** दुन्या की किसी भी ज़बान में जब **मदीना** कहा जाएगा तो हर एक उस से मुराद **मदीनतुन्नबी** عَلٰى صَاحِبِهَا الصَّلٰوةُ وَالسَّلَام ही लेगा। बल्कि उ़लमाए किबार رَحِمَهُمُ اللّٰهُ الْغَفَّار ने मदीनए मुनव्वरह زَادَهَا اللّٰهُ شَرَفًا के जो मुतअ़द्दद अस्माए मुबारका तह़रीर फ़रमाए हैं उन में मुजर्रद (या'नी तन्हा) लफ़्ज़ **मदीना** भी शामिल किया है। और इस को मदीनतुल मुनव्वरह زَادَهَا اللّٰهُ شَرَفًا की तारीख़ पर लिखी हुई किताबों में देखा जा सकता है। मसलन : अ़ल्लामा नूरुद्दीन अ़ली बिन अह़मद अस्सम्हूदी عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللّٰهِ الْقَوِى ने **वफ़ाउल वफ़ा** जिल्द 1 सफ़्ह़ा 22 में मदीना शरीफ़ के बहुत सारे अस्माए मुबारका लिखे हैं उन में एक नाम **मदीना** भी लिखा है। बहर ह़ाल किसी भी ज़ाविये से **गटर** के ढक्कन पर मदीना बल्कि **अल मदीना** लिखने को उ़श्शाक़ का दिल तस्लीम कर ही नहीं सकता। "**अल मदीना**" क्या है येह तो उ़श्शाक़ का दिल ही जानता है। आ़शिक़ों के इमाम, इमामे अहले सुन्नत, मुजद्दिदे दीनो मिल्लत, परवानए शम्ए़ रिसालत, आ़शिक़े माहे नुबुव्वत मौलाना शाह अह़मद रज़ा ख़ान عَلَيْهِ رَحْمَةُ الرَّحْمٰن के नज़्दीक **मदीना** زَادَهَا اللّٰهُ شَرَفًا की अहम्मिय्यत मुलाह़ज़ा हो। चुनान्चे फ़रमाते हैं :

नामे मदीना ले दिया चलने लगी नसीमे ख़ुल्द
सोज़िशे ग़म को हम ने भी कैसी हवा बताई क्यूं

(ह़दाइक़े बख़्शिश शरीफ़)

आ'ला हज़रत رَحْمَةُ اللّٰهِ تَعَالٰى عَلَيْه के भाईजान हज़रत **मौलाना हसन रज़ा ख़ान** عَلَيْهِ رَحْمَةُ الْحَنَّان यूं इज़्हारे तमन्ना करते हैं।

रहें उन के जल्वे बसें उन के जल्वे

मेरा दिल बने यादगारे मदीना

(ज़ौक़े ना'त)

صَلُّوْا عَلَى الْحَبِيْب! صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلٰى مُحَمَّد

वस्वसा : गटर फिर **गटर** होता है इस का ढक्कन चूमना सख़्त मा'यूब है।

इलाजे वस्वसा : गटर का ढक्कन ऊपर होता है मवाद अन्दर। सूखे हुए ढक्कन को जिस पर नजासत का कोई ज़ाहिरी असर न हो उस को नापाक कहने की कोई वज्ह नहीं, लिहाज़ा मदीनतुल मुनव्वरह زَادَهَا اللّٰهُ شَرَفًا के **अल मदीना** लिखे हुए सूखे हुए ढक्कन को इश्क़ो मस्ती में चूमने को اِنْ شَآءَاللّٰه عَزَّوَجَلَّ दुन्या का कोई भी मुफ़्तिये इस्लाम ना जाइज़ नहीं कहेगा। सरकारे वाला तबार, मदीने के ताजदार صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم के मुक़द्दस दियार के ढक्कन पर लिखे हुए **अल मदीना** को चूमना और मस्ती में झूमना सिर्फ़ **आशिक़ाने मदीना** كَثَّرَهُمُ اللّٰهُ تَعَالٰى का हिस्सा है। मीठे मीठे मुस्तफ़ा صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم के दीवानो, मदीने के मस्तानो और शम्ए बज़्मे रिसालत के परवानो झूम झूम कर कहिये :

अल मदीना से हमें तो प्यार है

اِنْ شَآءَاللّٰه *अपना बेड़ा पार है*

صَلُّوْا عَلَى الْحَبِيْب! صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلٰى مُحَمَّد

शराबी की बख़्शिश हो गई : एक नेक आदमी ने अपने भाई को नशा करने के बाइस अपने पास बुला कर सज़ा दी, वापसी में वोह पानी में डूब कर फ़ौत हो गया। जब उसे दफ़्न कर चुके तो उसी रात उस नेक शख़्स ने ख़्वाब देखा के **उस का मर्हूम भाई जन्नत में टहल रहा है।** उस ने पूछा, "तू तो शराबी था और नशे ही की हालत में **मरा** फिर तुझे **जन्नत** कैसे नसीब हुई ? वोह कहने लगा, "आप से मार खाने के बा'द जब मैं वापस हुवा तो राह में एक काग़ज़ देखा जिस पर بِسْمِ اللهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ तहरीर था, मैं ने उसे उठाया और निगल लिया। फिर पानी में गिर गया और दम निकल गया। जब **क़ब्र** में पहुंचा तो मुन्कर नकीर के सुवालात पर मैं ने अ़र्ज़ किया, "आप मुझ से सुवालात फ़रमा रहे हैं, हालां कि मेरे प्यारे परवर्दगार عَزَّوَجَلَّ का पाक नाम मेरे पेट में मौजूद है। इतने में ग़ैब से आवाज़ आई, "صَدَقَ عَبْدِی قَدْ غَفَرْتُ لَهٗ" या'नी मेरा बन्दा सच कहता है बेशक मैं ने इसे बख़्श दिया।

(نُزهةُالمجالس ج اوّل ص۲۷)

अल्लाह عَزَّوَجَلَّ की उन पर रह़मत हो और उन के सदक़े हमारी मग़्फ़िरत हो।

صَلُّوْا عَلَى الْحَبِيْب ! صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلٰى مُحَمَّد

تُوْبُوْا اِلَى الله ! اَسْتَغْفِرُ الله

صَلُّوْا عَلَى الْحَبِيْب ! صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلٰى مُحَمَّد

काश ! हर मुसल्मान तब्लीग़े क़ुरआनो सुन्नत की आ़लमगीर ग़ैर सियासी तह़रीक **दा'वते इस्लामी** के साथ वाबस्ता हो कर सुन्नतें सीखने सिखाने वाले आ़शिक़ाने रसूल में शामिल हो जाए। हर दर्स और हर सुन्नतों भरे इज्तिमाअ़ में अव्वल ता आख़िर ह़ाज़िरी की सआ़दत ह़ासिल करे और इस के लिये सिद्क़े दिल से जिद्दो जोह्द करे जैसा कि

मग़्फ़िरत का इन्आ़म : एक इस्लामी भाई का बयान है, येह उन दिनों की बात है जब तब्लीग़े क़ुरआनो सुन्नत की आ़लमगीर ग़ैर सियासी तह़रीक, **दा'वते इस्लामी** के तीन रोज़ा सुन्नतों भरे इज्तिमाअ़ की तय्यारियां ज़ोरो शोर से जारी थीं। मदनी क़ाफ़िले लाने के लिये मुतअ़द्दद शहरों से ख़ुसूसी ट्रेनों का सिल्सिला था। उन्हीं दिनों हमारे एक अ़ज़ीज़ फ़ौत हो गए। चन्द रोज़ के बा'द घर के किसी फ़र्द ने मर्हूम को ख़्वाब में देख कर जब ह़ाल पूछा तो कहने लगे, "मैं ने **दा'वते इस्लामी** के सुन्नतों भरे इज्तिमाअ़ में शिर्कत की निय्यत से ख़ुसूसी ट्रेन में निशस्त बुक करवाई थी। और **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ ने इस सच्ची निय्यत के सबब मेरी मग़्फ़िरत फ़रमा दी।"

رحمتِ حق "بہا" نہ می جوید رحمتِ حق "بہانہ" می جوید

(**अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ की रह़मत "बहा" या'नी क़ीमत नहीं मांगती। **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ की रह़मत तो "बहाना" ढूंढती है।)

صَلُّوا عَلَی الْحَبِیْب! صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلٰی مُحَمَّد

अच्छी निय्यत की बरकतें : प्यारे प्यारे इस्लामी भाइयो ! देखा आप ने ? अच्छी निय्यत का किस क़दर बुलन्द रुत्बा है कि अ़मल करने का मौक़अ़ न मिलने के बा वुजूद इज्तिमाअ़ में शिर्कत की निय्यत करने वाले ख़ुश नसीब की मग़्फ़िरत कर दी गई। ह़ज़रते सय्यिदुना ह़सन बसरी رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ फ़रमाते हैं, "इन्सान को चन्द रोज़ के अ़मल से नहीं अच्छी निय्यत से जन्नत ह़ासिल होगी।"

(کیمیائے سعادت ج۲ص ۸۶۱)

याद रखिये ! निय्यत दिल के इरादे को कहते हैं। दिल में इरादा न होने की सूरत में ख़ाली हां कर देने से निय्यत का सवाब नहीं मिलता। मसलन : किसी से कहा गया, कि कल आना। उस ने हां कह दिया और दिल में येह इरादा है कि नहीं जाऊंगा तो येह झूटा वा'दा हुवा और झूटा वा'दा करना ह़राम और जहन्नम में ले जाने वाला काम है। जब नबिय्ये अकरम, नूरे मुजस्सम, रह़मते आ़लम, शाहे बनी आदम صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ग़ज़्वए तबूक के लिये तशरीफ़ ले गए तो फ़रमाया, मदीनए त़य्यिबा में कुछ लोग हैं कि हम जो भी वादी त़ै करते हैं या ऐसी जगह को पामाल करते हैं जिस से कुफ़्फ़ार को ग़ुस्सा आए नीज़ हम कोई माल ख़र्च करते हैं या हम भूके होते हैं तो वोह इन तमाम बातों में हमारे साथ शरीक होते हैं ह़ालां कि वोह मदीनए मुनव्वरह में हैं। सह़ाबए किराम عَلَیْہِمُ الرِّضْوَان ने अ़र्ज़ किया, **या रसूलल्लाह** صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ! वोह कैसे ? वोह तो हमारे साथ नहीं हैं। आप صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया, उन्हें उ़ज़्र (या'नी मजबूरी) ने रोक रखा है।

(वोह इस लिये सवाब के हक़दार क़रार पाए कि शिर्कत की पक्की निय्यत होने के बावुजूद मजबूरन शरीक न हो सके थे।) (سُنَن الکُبریٰ لِلبَیْهَقِی ج ۹ ص ۲۴ وغیرہ)

जो शख़्स **अल्लाह** तआला की (रिज़ा जूई) के लिये खुश्बू लगाए तो वोह क़ियामत के दिन इस तरह आएगा कि उस की खुश्बू कस्तूरी से ज़ियादा महक रही होगी और जो आदमी ग़ैरे खुदा की ख़ातिर खुश्बू लगाए वोह क़ियामत के दिन यूं आएगा कि उस की बू मुर्दार से ज़ियादा बदबूदार होगी।

(مُصَنَّف عبدُ الرَّزّاق ج ٤ ص ٣١٩ حدیث ٧٩٣٢،اِحیاءُ العُلُوم ج ٤ ص ٨١٣)

हुज्जतुल इस्लाम इमाम मुहम्मद ग़ज़ाली عَلَیْهِ رَحمَةُ اللّٰهِ الْوَالِی **कीमियाए सआदत** में हदीसे पाक नक़्ल करते हैं, "सरकारे मदीना صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم का फ़रमाने आलीशान है, "जो शख़्स इस निय्यत से क़र्ज़ ले कि वापस नहीं करेगा तो वोह चोर है"।

(اَلتَّرغِیب وَالتَّرهِیب ج ٢ ص ٦٠٢)

अल्लाह तआला की खुफ़्या तदबीर : खुदाए रहमान عَزَّوَجَلَّ की रहमत पर कुरबान ! वोह बे नियाज़ है। किस बन्दे के साथ उस की क्या **खुफ़्या तदबीर** है येह कोई नहीं जानता कि जब वोह नवाज़ने पर आता है तो ब ज़ाहिर बहुत ही छोटे से अमल पर जन्नत की आ'ला ने'मतों से मालामाल फ़रमा देता है और जब गिरिफ़्त करने पर आता है तो किसी एक सग़ीरा गुनाह पर पकड़ लेता है। लिहाज़ा बन्दे को चाहिये कि किसी भी

नेकी को हरगिज़ तर्क न करे और गुनाह से हर सूरत में अपने आप को बचाए और हर ह़ाल में रब्बे ज़ुल जलाल عَزَّوَجَلَّ की **बे नियाज़ी** से डरता रहे। ह़ज़रते अ़ल्लामा अ़ब्दुर्रह़मान इब्ने जौज़ी رَحْمَةُ اللّٰهِ تَعَالٰی عَلَيْه नक़्ल करते हैं :

रोंगटे खड़े कर देने वाली ह़िकायत : ह़ज़रते सय्यिदुना ह़सन बसरी رَحْمَةُ اللّٰهِ تَعَالٰی عَلَيْه अपने अह़बाब के साथ तशरीफ़ फ़रमा थे कि लोग एक मक़्तूल (या'नी क़त्ल किये हुए मुर्दे) को घसीटते हुए वहां से गुज़रे। सय्यिदुना ह़सन बसरी رَحْمَةُ اللّٰهِ تَعَالٰی عَلَيْه ने जब मक़्तूल की शक्ल देखी तो एक दम **बेहोश** हो कर ज़मीन पर तशरीफ़ ले आए। जब होश आया, किसी ने माजरा दरयाफ़्त किया तो फ़रमाया, "येह **मक़्तूल** किसी वक़्त बहुत बड़ा आ़बिदो ज़ाहिद था। लोगों का तजस्सुस बढ़ा। अ़र्ज़ किया, "या सय्यिदी ! हमें तफ़्सीली वाक़िआ़ इर्शाद फ़रमाइये !" फ़रमाया, "येह **आ़बिद** एक रोज़ नमाज़ के लिये घर से चला तो रास्ते में एक ईसाई लड़की पर नज़र पड़ गई और एक दम उस के दिल में इ़श्क़ की आग शो'ला ज़न हुई और उस के फ़ित्ने में पड़ गया, उस से शादी का मुत़ालबा किया, उस ने शर्त़ रखी कि ईसाई हो जाओ। कुछ अ़र्सा **आ़बिद** ने ज़ब्त़ किया मगर आख़िरे कार शहवत के हाथों लाचार हो कर इस्लाम छोड़ कर नसरानी बन गया। जब उस ने लड़की को आ कर ख़बर दी तो वोह बिफर गई और नफ़रीन[1] करते हुए कहा, "**ओ बद नसीब** ! तेरे अन्दर कोई

1 : या'नी मलामत

भलाई नहीं, तूने अपने दीन से वफ़ा नहीं की तो किसी और के साथ क्या वफ़ा करेगा ! **बद बख़्त** ! तूने शह्वत से बद मस्त हो कर उ़म्र भर की इ़बादतो रियाज़त बल्कि अपना दीन तक दाव पर लगा दिया ! **ले सुन ! तू इस्लाम से फिर कर मुरतद हो चुका है और** اَلْحَمْدُ لِلّٰه **मैं ईसाइयत को छोड़ कर मुसल्मान हो चुकी हूं।** येह कह कर उस ने **सूरतुल इख़्लास** की तिलावत की, किसी सुनने वाले ने ह़ैरत से पूछा, "येह तुझे कैसे याद हो गई ?" कहने लगी, "दर अस्ल बात येह है कि ख़्वाब के अन्दर मैं जहन्नम में दाख़िल होने लगी, अचानक एक साह़िब वहां आ गए और मुझे तसल्ली देते हुए कहने लगे, "डरो मत, तुम्हारी जगह उसी शख़्स को फ़िदया बना दिया गया है। इतने में येह आ़शिक़े नाशादो ना मुराद मेरी जगह जहन्नम में जाने के लिये आ गया। फिर वोह साह़िब मुझे जन्नत में ले गए वहां मैं ने येह लिखा हुवा देखा,

يَمْحُوا اللّٰهُ مَا يَشَآءُ وَيُثْبِتُ ۚۖ وَعِنْدَهٗۤ اُمُّ الْكِتٰبِ ۝

(پ ۱۳ الرّعد ۳۹)

तरजमए कन्ज़ुल ईमान : अल्लाह जो चाहे मिटाता और साबित करता है और अस्ल लिखा हुवा उसी के पास है।

फिर उन्हों ने मुझे **सूरतुल इख़्लास** याद करवाई, जब मैं बेदार हुई तो येह मुझे याद हो चुकी थी।

ह़ज़रते सय्यिदुना ह़सन बसरी رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰى عَلَيْه ने फ़रमाया, "वोह ख़ुश नसीब लड़की तो मुसल्मान हो गई लेकिन बद नसीब आ़बिद

शह्वत से मग़्लूब हो कर मुरतद होने के बा'द आज क़त्ल कर दिया गया। نَسْأَلُ اللّٰهَ العَافِيَةَ हम **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ से आफ़िय्यत का सुवाल करते हैं।

(بَحرُ الدُّمو ع الفصل السّادِس عشرص ۷٦)

प्यारे प्यारे इस्लामी भाइयो ! अल्लाह عَزَّوَجَلَّ की बे नियाज़ी और उस की **ख़ुफ़्या तदबीर** से हर एक को हर दम डरते रहना चाहिये हम में से किसी को नहीं मा'लूम कि हमारा ख़ातिमा ईमान पर होगा भी या नहीं। आह ! आह ! आह ! ख़ुदा عَزَّوَجَلَّ की क़सम ! हम दुन्या में पैदा हो कर सख़्त तरीन आज़्माइश में पड़ गए, इस मुआमले में तो जानवर और कीड़े मकोड़े अच्छे रहे कि न उन्हें सल्बे ईमान का ख़ौफ़, न सकरात व क़ब्रो हश्र की होलनाकियों की वह्शत, न अज़ाबे जहन्नम का डर।

काश कि न दुन्या में पैदा मैं हुवा होता   क़ब्रो हश्र का हर ग़म ख़त्म हो गया होता

आह ! सल्बे ईमां का ख़ौफ़ खाए जाता है   काश के मेरी मां ने ही नहीं जना होता

आह ! कस्रते इस्यां हाए ! ख़ौफ़ दोज़ख़ का

काश ! मैं न दुन्या का इक बशर बना होता

अल्लाह عَزَّوَجَلَّ बे नियाज़ है, हमें उस से हर दम डरते रहना चाहिये, ईमान की हिफ़ाज़त के मुआमले में कभी भी ग़फ़्लत नहीं करना चाहिये, बुरी सोह्बत में हलाकत ही हलाकत और अच्छी सोह्बत और अच्छों से महब्बत व निस्बत में हर त़रह़ से आफ़िय्यत है। तब्लीग़े क़ुरआनो सुन्नत की आ़लमगीर ग़ैर सियासी तह़रीक, **दा'वते इस्लामी** के

मदनी माह़ोल से मुन्सलिक हो कर जो उ़म्र भर वाबस्ता रहता है उस पर वोह रह़मतें बरस्ती हैं कि सुनने वाले वर्त़ए ह़ैरत में डूब जाते हैं। चुनान्चे

मदीने का मुसाफ़िर : एक मुबल्लिग़े दा'वते इस्लामी का बयान अपने अन्दाज़ो अल्फ़ाज़ में पेश करता हूं, उन का कहना है कि मेरे वालिदे बुज़ुर्ग वार ह़ाजी **अ़ब्दुर्रह़ीम अ़त्तारी** (पटनी) जिन की उ़म्र कमो बेश 70 साल थी। इब्तिदाई दौर दुन्या की रंगीनियों की नज़्र रहा मगर फिर اَلْحَمْدُ لِلّٰہ عَزَّوَجَلَّ दा'वते इस्लामी के मदनी माह़ोल की बरकत से ज़िन्दगी में मदनी इन्क़िलाब बरपा हो गया। 1995 ई. में जब दूसरी बार ह़ज का मुज़्दए जां फ़िज़ा मिला तो उन की ख़ुशी क़ाबिले दीद थी। जैसे जैसे रवानगी का वक़्त क़रीब आ रहा था ख़ुशी दो चन्द होती जा रही थी। आख़िर उन की ख़ुशियों की मे'राज का वक़्त क़रीब आ गया। रात 4:00 बजे एरपोर्ट की त़रफ़ रवानगी थी। पूरी रात ख़ुशी ख़ुशी तय्यारी में मश्ग़ूल रहे, मेहमानों से घर भरा हुवा था तक़रीबन 3:00 बजे एह़राम बराबर में रख कर अपने कमरे में लैट गए। मैं भी लैट गया, अभी ब मुश्किल पन्दरह[15] मिनट हुए होंगे कि मेरे कमरे के दरवाज़े पर दस्तक पड़ी। चौंक कर दरवाज़ा खोला तो सामने वालिदा परेशानी के आ़लम में खड़ी फ़रमा रही थीं, तुम्हारे वालिद साह़िब की त़बीअ़त ख़राब हो गई है। मैं ब उ़ज्लत तमाम पहुंचा तो वालिद साह़िब बे क़रारी के साथ सीना सहला रहे थे, फ़ौरन अस्पताल ले जाया गया डोक्टर ने बताया कि हार्ट अटेक हुवा है।

घर में कोहराम मच गया कि कुछ ही देर बा'द सफ़रे मदीना के लिये रवानगी है और वालिद साह़िब को येह क्या हो गया ! अफ़्सोस त़य्यारा वालिद साह़िब को लिये बिग़ैर ही सूए मदीना परवाज़ कर गया। वालिदे मोह़तरम 5 दिन अस्पताल में रहे। इस दौरान मज़ीद चार बार दिल का दौरा पड़ा। मगर اَلْحَمْدُ لِلّٰه عَزَّوَجَلَّ दा'वते इस्लामी की बरकत से होश के आ़लम में उन की एक भी नमाज़ क़ज़ा न हुई। जब भी नमाज़ का वक़्त आता तो कान में अ़र्ज़ कर दी जाती, नमाज़ पढ़ लें, आप फ़ौरन आंख खोल देते। **तयम्मुम** करा दिया जाता और आप नक़ाहत के बाइ़स इशारे से नमाज़ पढ़ लेते। आख़िरी "अटेक" पर फिर बेहोश हो गए। इ़शा की अज़ान पर आंखें झपकीं तो मैं ने फ़ौरन अ़र्ज़ किया, अब्बाजान नमाज़ के लिये **तयम्मुम** करवा दूं, इशारे से फ़रमाया, हां। اَلْحَمْدُ لِلّٰه عَزَّوَجَلَّ मैं ने **तयम्मुम** करवाया और वालिद साह़िब ने **अल्लाहु अक्बर** कह कर हाथ बांध लिये मगर फिर बेहोश हो गए। हम घबरा कर दौड़े और डॉक्टर को बुला लाए। फ़ौरन I.C.U में ले जाया गया, चन्द मिनट बा'द डॉक्टर ने आ कर बताया कि आप के वालिद बड़े ख़ुश नसीब थे कि उन्हों ने बुलन्द आवाज़ से لَآ اِلٰهَ اِلَّا اللّٰهُ مُحَمَّدٌ رَّسُوْلُ اللّٰه صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰی عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم पढ़ा और उन का इन्तिक़ाल हो गया।

اِنَّا لِلّٰهِ وَ اِنَّاۤ اِلَيْهِ رٰجِعُوْنَ (پ ۲ البقرہ ۱۵۶)

एक सय्यिद ज़ादे ने वालिदे मर्ह़ूम को ग़ुस्ल दिया। चूंकि वालिद साहि़ब को उंग्लियों पर गिन कर अज़्कार पढ़ने की आ़दत थी लिहाज़ा आप की उंगली उसी अन्दाज़ में थी गोया कुछ पढ़ रहे हैं, बार बार उंग्लियां सीधी की जातीं मगर दोबारा उसी अन्दाज़ पर हो जातीं, اَلْحَمْدُ لِلّٰه عَزَّوَجَلَّ कसीर इस्लामी भाई जनाज़े में शरीक हुए। اَلْحَمْدُ لِلّٰه عَزَّوَجَلَّ मेरे भाई की भी वालिद साहि़ब के साथ ह़ज पर जाने की तरकीब थी। वोह ह़ज की सआ़दत से बहरा मन्द हुए। बड़े भाई का कहना है कि मैं ने मदीनए मुनव्वरह में रो रो कर **बारगाहे रिसालत** صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم में अ़र्ज़ की कि मेरे मर्ह़ूम वालिद का ह़ाल मुझ पर मुन्कशिफ़ हो, जब रात को सोया तो ख़्वाब में देखा कि वालिदे बुज़ुर्ग वार عَلَيْهِ رَحْمَةُ الْغَفَّار एह़राम पहने तशरीफ़ लाए और फ़रमा रहे हैं, "मैं उ़मरह की निय्यत करने (मदीने शरीफ़) आया हूं, तुम ने याद किया तो चला आया, اَلْحَمْدُ لِلّٰه عَزَّوَجَلَّ मैं बहुत ख़ुश हूं।" दूसरे साल मेरे भतीजे ने मस्जिदुल ह़राम शरीफ़ के अन्दर का'बतुल्लाह शरीफ़ के सामने अपने दादाजान या'नी मेरे वालिदे मर्ह़ूम ह़ाजी अ़ब्दुर्रह़ीम अ़त्तारी को ऐन बेदारी के आ़लम में अपने बराबर में नमाज़ पढ़ते देखा। नमाज़ से फ़ारिग़ हो कर बहुत तलाश किया मगर न पा सके।

अल्लाह عَزَّوَجَلَّ **की उन पर रह़मत हो और उन के सदक़े हमारी मग़्फ़िरत हो।**

मदीने का मुसाफ़िर हिन्द से पहुंचा मदीने में

क़दम रखने की नौबत भी न आई थी सफ़ीने में

صَلُّوْا عَلَى الْحَبِيْب! صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلٰى مُحَمَّد

अल्लाह عَزَّوَجَلَّ अपने नाम की ता'ज़ीम करने वालों से बहुत खुश होता और इन्आ़मो इक्राम की बारिशें फ़रमा देता है येह भी उस की **खुफ़्या** तदबीर है कि सख़्त गुनहगार व शराब ख़ोर के ब ज़ाहिर छोटे से नेक अ़मल से खुश हो कर तौबा की तौफ़ीक़ दे कर वलिय्ये कामिल बना दे । चुनान्चे

शराबी वली बन गया : हज़रते सय्यिदुना बिश्रे हाफ़ी عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللهِ الْكَافِى तौबा से क़ब्ल बहुत बड़े शराबी थे । आप رَحْمَۃُ اللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہ एक मरतबा शराब के नशे में धुत कहीं जा रहे थे कि रास्ते में एक काग़ज़ पर नज़र पड़ी जिस पर بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ लिखा हुवा था । आप رَحْمَۃُ اللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہ ने ता'ज़ीमन उठा लिया और इत्र ख़रीद कर मुअ़त्तर किया फिर उसे एक बुलन्द जगह पर अदब के साथ रख दिया । उसी रात एक बुज़ुर्ग رَحْمَۃُ اللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہ ने ख़्वाब में सुना कि कोई कह रहा है, "जाओ ! **बिश्र** से कह दो कि तुम ने मेरे नाम को मुअ़त्तर किया, उस की ता'ज़ीम की और उसे बुलन्द जगह रखा हम भी तुम्हें पाक करेंगे" । उन बुज़ुर्ग رَحْمَۃُ اللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہ ने दिल में सोचा कि **बिश्र तो शराबी है** । शायद मुझे ख़्वाब में ग़लत़ फ़हमी हुई है । चुनान्चे उन्हों ने वुज़ू किया, नफ़्ल पढ़े और फिर सो रहे । दूसरी और तीसरी बार भी येही ख़्वाब देखा और येह भी सुना कि "हमारा येह पैग़ाम बिश्र ही की त़रफ़ है, जाओ उन्हें हमारा पैग़ाम पहुंचा दो !" चुनान्चे वोह बुज़ुर्ग رَحْمَۃُ اللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہ हज़रते बिश्र رَحْمَۃُ اللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہ की तलाश में निकल पड़े । उन को पता चला कि वोह शराब की मह़फ़िल में है तो वहां

पहुंचे और **बिश्र** को आवाज़ दी। लोगों ने बताया कि वोह तो नशे में बद मस्त हैं ! उन्हों ने कहा, उन्हें जा कर किसी त़रह़ बता दो कि एक आदमी आप के नाम कोई पैग़ाम लाया है और वोह बाहर खड़ा है। किसी ने जा कर अन्दर ख़बर दी। ह़ज़रते सय्यिदुना बिश्रे ह़ाफ़ी عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللّٰهِ الْكَافِى ने फ़रमाया, उस से पूछो कि वोह किस का पैग़ाम लाया है ? दरयाफ़्त करने पर वोह बुज़ुर्ग رَحْمَةُ اللّٰهِ تَعَالٰى عَلَيْه फ़रमाने लगे, **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ का पैग़ाम लाया हूं। जब आप رَحْمَةُ اللّٰهِ تَعَالٰى عَلَيْه को येह बात बताई गई तो झूम उठे और फ़ौरन नंगे पाउं बाहर तशरीफ़ ले आए पैग़ामे ह़क़ عَزَّوَجَلَّ सुन कर सच्चे दिल से तौबा की और उस बुलन्द मक़ाम पर जा पहुंचे कि मुशाहदए ह़क़ عَزَّوَجَلَّ के ग़लबे की शिद्दत से नंगे पाउं रहने लगे। इसी लिये आप رَحْمَةُ اللّٰهِ تَعَالٰى عَلَيْه **ह़ाफ़ी** (या'नी नंगे पाउं वाला) के लक़ब से मश्हूर हो गए।

(تذکرۃ الاولیاء ص٦٨)

अल्लाह عَزَّوَجَلَّ की उन पर रह़मत हो और उन के सदक़े हमारी मग़्फ़िरत हो।

صَلُّوا عَلَى الْحَبِيب ! صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلٰى مُحَمَّد

बा अदब बा नसीब बे अदब बे नसीब : प्यारे प्यारे इस्लामी भाइयो ! **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ का नाम लिखे हुए काग़ज़ के टुकड़े का अदब करने से एक सख़्त गुनहगार और शराबी वलिय्युल्लाह बन गया तो जिन के दिलों में **रब्बुल अनाम** عَزَّوَجَلَّ का नाम कन्दा है और जिन के क़ुलूब ज़िक्रुल्लाह عَزَّوَجَلَّ से मा'मूर हैं उन नुफ़ूसे क़ुदसिय्या के अदब के सबब हम गुनहगार, **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ के फ़ज़्लो करम से क्यूं बहरा वर न होंगे ?

नीज़ जो तमाम औलिया व अम्बिया के भी आक़ा हैं या'नी सय्यिदुल अम्बिया, अह़मदे मुज्तबा, मुह़म्मदे मुस्त़फ़ा صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰی عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم इन का अदब हमारे रब عَزَّوَجَلَّ को किस क़दर मह़बूब होगा। यक़ीनन किसी शान वाले के नाम का अदब अज्रो सवाब का मूजिब है। ह़ज़रते सय्यिदुना बिश्रे ह़ाफ़ी عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللّٰهِ الْكَافِى ने **अल्लाह** रब्बुल इ़ज़्ज़त عَزَّوَجَلَّ के नाम का अदब किया तो अ़ज़मत पाई। तो आज हम अगर शहन्शाहे आ़ली नसब, सुल्त़ाने अ़रब, मह़बूबे रब صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰی عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم के नामे पाक का अदब करें, जहां सुनें **चूम** कर आंखों से लगा लें तो क्यूंकर इ़ज़्ज़त न पाएंगे। ह़ज़रते सय्यिदुना बिश्रे ह़ाफ़ी عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللّٰهِ الْكَافِى ने जहां **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ का नाम देखा वहां इ़त्र लगाया तो पाक हो गए, हम भी जहां ज़िक्रे रिसालत मआब صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰی عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم हो वहां **अ़रक़े गुलाब** छिड़कें तो क्यूं पाक न होंगे ?

क्या महक्ते हैं महक्ने वाले   बू पे चलते हैं भटक्ने वाले

आ़सियो ! थाम लो दामन उन का   वोह नहीं हाथ झटक्ने वाले

(ह़दाइक़े बख़्शिश शरीफ़)

صَلُّوْا عَلَى الْحَبِيْب !   صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلٰى مُحَمَّد

जानवर भी वली की ता'ज़ीम करते हैं : ह़ज़रते सय्यिदुना बिश्रे ह़ाफ़ी عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللّٰهِ الْكَافِى हमेशा नंगे पाउं चलते थे और जब तक **बग़दाद शरीफ़** में आप رَحْمَةُ اللّٰهِ تَعَالٰى عَلَيْه ह़यात रहे किसी चौपाए ने रास्ते में गोबर न किया और वोह सिर्फ़ इस ह़ुर्मतो अदब के पेशे नज़र कि ह़ज़रते सय्यिदुना बिश्रे ह़ाफ़ी عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللّٰهِ الْكَافِى यहां नंगे पाउं चलते फिरते हैं। एक दिन एक

चौपाए ने रास्ते में गोबर कर दिया तो उस का मालिक येह बात देख कर घबरा गया कि हो न हो आज ह़ज़रते सय्यिदुना बिश्रे ह़ाफ़ी عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللّٰهِ الْكَافِى का **इन्तिक़ाल** हो गया है वरना येह जानवर कभी रास्ते में गोबर न करता। चुनान्चे थोड़ी देर के बा'द उस ने सुन लिया कि ह़ज़रत رَحْمَةُ اللّٰهِ تَعَالٰى عَلَيْه का **विसाल** हो गया है। (मुलख़्ख़स अज़ अह़्सनुल विआ़अ, स. 137)

अल्लाह عَزَّوَجَلَّ की उन पर रह़मत हो और उन के सदक़े हमारी मग़्फ़िरत हो।

जो कि इस दर का हुवा ख़ल्क़े ख़ुदा उस की हुई
जो कि इस दर से फिरा अल्लाह उस से फिर गया
ठोकरें खाते फिरोगे इन के दर पर पड़ रहो
क़ाफ़िला तो ऐ रज़ा अव्वल गया आख़िर गया

अ़क़ीदत मन्दों की भी मग़्फ़िरत : **ह़ज़रते** सय्यिदुना बिश्रे ह़ाफ़ी عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللّٰهِ الْكَافِى को इन्तिक़ाल के बा'द क़ासिम बिन मुनब्बेह ने ख़्वाब में देख कर पूछा, مَا فَعَلَ اللّٰهُ بِكَ ؟ **या'नी अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ ने आप के साथ क्या मुआ़मला फ़रमाया ? जवाब दिया, **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ ने मुझे बख़्श दिया और इर्शाद फ़रमाया, तुम को बल्कि तुम्हारे जनाज़े में जो जो शरीक हुए उन को भी मैं ने बख़्श दिया। तो मैं ने अ़र्ज़ किया, **या अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ मुझ से मह़ब्बत करने वालों को भी बख़्श दे। तो **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ की रह़मत मज़ीद जोश पर आई, और फ़रमाया, **क़ियामत तक जो तुम से मह़ब्बत करेंगे उन सब को भी मैं ने बख़्श दिया।** (شرح الصُدور ص ٢٨٩)

صَلُّوْا عَلَى الْحَبِيْب ! صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلٰى مُحَمَّد

आ'माल न देखे येह देखा, है मेरे वली के दर का गदा

ख़ालिक़ ने मुझे यूं बख़्श दिया, سُبْحٰنَ اللّٰه سُبْحٰنَ اللّٰه

प्यारे प्यारे इस्लामी भाइयो ! بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِیْمِ की ता'ज़ीम की बरकत से सय्यिदुना बिश्रे हाफ़ी عَلَیْهِ رَحْمَةُ اللّٰهِ الْكَافِی का मक़ाम कितना बुलन्द हो गया कि उन की बरकतों से हमें भी इस का हिस्सा मिल रहा है ! जी हां ! बारगाहे ख़ुदावन्दी عَزَّوَجَلَّ में अ़र्ज़ करने पर उन्हें उन से महब्बत करने वालों की मग़्फ़िरत की भी बिशारत मिल गई। اِنْ شَآءَاللّٰه عَزَّوَجَلَّ हमारी भी बिगड़ी बन जाएगी, क्यूं कि **हमें तमाम औलियाउल्लाह से महब्बत और वलिय्ये कामिल ह़ज़रते सय्यिदुना बिश्रे हाफ़ी** عَلَیْهِ رَحْمَةُ اللّٰهِ الْكَافِی **से भी प्यार है।**

बिश्रे हाफ़ी से हमें तो प्यार है اِنْ شَآءَاللّٰه अपना बेड़ा पार है

हम को सारे औलिया से प्यार है اِنْ شَآءَاللّٰه अपना बेड़ा पार है

صَلُّوْا عَلَى الْحَبِيْب ! صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلٰى مُحَمَّد

अब ज़मीन से मुक़द्दस काग़ज़ उठाने की फ़ज़ीलत सुनिये और झूमिये :

मुतबर्रक काग़ज़ उठाने की फ़ज़ीलत : अमीरुल मुअमिनीन ह़ज़रते मौलाए काएनात अ़लिय्युल मुर्तज़ा शेरे ख़ुदा كَرَّمَ اللّٰهُ تَعَالٰی وَجْهَهُ الْكَرِیْم से रिवायत है कि दो जहां के सुल्तान, सरवरे ज़ीशान, महबूबे रहमान صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰی عَلَیْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم का फ़रमाने फ़ज़ीलत निशान है, “जो कोई ज़मीन से ऐसा काग़ज़ उठाए जिस में **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ के नामों में से कोई नाम हो तो

अल्लाह عَزَّوَجَلَّ उस (उठाने वाले) का नाम (रूहों के सब से आ'ला मक़ाम) इल्लिय्यीन में बुलन्द फ़रमाएगा और उस के वालिदैन के अ़ज़ाब में तख़्फ़ीफ़ (या'नी कमी) करेगा अगर्चे उस के वालिदैन काफ़िर ही क्यूं न हों।"

(مَجمعُ الزَّوائد ج٤ ص٣٠٠)

मुफ़्तिये आ'ज़मे हिन्द رَحْمَةُ اللّٰهِ تَعَالٰی عَلَيْه **और काग़ज़ात व हुरूफ़ की ता'ज़ीम : आलिमे** बा अ़मल, फ़ाज़िले अजल, आ़शिक़े नबिय्ये मुरसल, वलिय्ये रब्बे लम यज़ल, आफ़्ताबे विलायत, माहताबे हिदायत, ताजदारे अहले सुन्नत, शहज़ादए आ'ला ह़ज़रत सय्यिदुना व मौलाना अल्ह़ाज मुह़म्मद मुस्तफ़ा रज़ा ख़ान عَلَيْهِ رَحْمَةُ الْمَنَّان अल मा'रूफ़ "हुज़ूर मुफ़्तिये आ'ज़मे हिन्द" **सादा काग़ज़ात और हुरूफ़े मुफ़रदह** की भी ता'ज़ीम बजा लाते थे क्यूं कि वोह कुरआनो ह़दीस और शरीअ़त की बातों को लिखने में काम आते हैं। 1391 सि.हि. में **दारुल उ़लूम रब्बानिय्या,** बान्दा (अल हिन्द) के सालाना जल्सए दस्तार बन्दी में **हुज़ूर मुफ़्तिये** आ'ज़मे हिन्द رَحْمَةُ اللّٰهِ تَعَالٰی عَلَيْه तशरीफ़ लाए। सुवारी से उतर कर चन्द ही क़दम चले थे कि आप की नज़र उर्दू लिखाई वाले काग़ज़ के चन्द बोसीदा टुकड़ों पर पड़ी आप رَحْمَةُ اللّٰهِ تَعَالٰی عَلَيْه ने फ़ौरन उन को ज़मीन से उठाया और फ़रमाया : **काग़ज़ात और अ़रबी हुरूफ़** (कि उर्दू के भी चन्द के इलावा सभी हुरूफ़ अ़रबी हैं इन) का एह़तिराम करना चाहिये इस लिये कि इन से कुरआने अ़ज़ीम व अह़ादीसे मुक़द्दसा और तफ़ासीर वग़ैरा मुरत्तब होती हैं।"

(मुलख़्ख़सन मुफ़्तिये आ'ज़म की इस्तिक़ामत व करामत, स. 124)

अल्लाह عَزَّوَجَلَّ **की उन पर रह़मत हो और उन के सदक़े हमारी मग़्फ़िरत हो।**

हुज़ूर मुफ़्तिये आ'ज़मे हिन्द رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰى عَلَيْه और दुख्यारों की ग़म ख़्वारी : प्यारे प्यारे इस्लामी भाइयो ! देखा आप ने ! **हुज़ूर मुफ़्तिये आ'ज़मे हिन्द** رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰى عَلَيْه का जज़्बए अदब ! जो शख़्स हुरूफ़े तहज्जी (ALPHABETS) बल्कि सादा काग़ज़ तक का एहतिराम करता होगा वोह **एह़तिरामे मुस्लिम** का न जाने कितना ख़याल रखता होगा ! चुनान्चे **हुज़ूर मुफ़्तिये आ'ज़म** رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰى عَلَيْه मुसल्मानों की ग़म ख़्वारी और दिलजूई करने में भी अपनी मिसाल आप थे, मुसल्मान का दिल तोड़ने से हर दम इज्तिनाब फ़रमाते, उन को फ़ाएदा पहुंचाने के बेहद ह़रीस थे और ह़रीस क्यूं न होते कि जिस **मदनी आक़ा मीठे मीठे मुस्त़फ़ा** صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم से वालिहाना इश्क़ था उन्हीं का इर्शादे ह़क़ीक़त बुन्याद है : خَيرُ النَّاسِ اَنفَعُهُم لِلنَّاسِ या'नी "बेहतरीन शख़्स वोह है जो लोगों को फ़ाएदा पहुंचाए।" (الجامع الصغیر للسیوطی ص ۲۴۶ حدیث ۴۰۴۴ دار الکتب العلمیة بیروت) इस ह़दीसे पाक पर अ़मल की मदनी झलक पेश करते हुए एक **अनोखी ह़िकायत** मुलाह़ज़ा फ़रमाइये चुनान्चे **हुज़ूर मुफ़्तिये आ'ज़म** رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰى عَلَيْه एक ख़ास मौक़अ़ पर मद्रसए फ़ैज़ुल उ़लूम (धतकेडीह जमशेद पूर, झारखंड अल हिन्द) में मदऊ़ किये गए । वापसी पर रेल्वे स्टेशन जाने के लिये **हुज़ूर मुफ़्तिये आ'ज़मे हिन्द** رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰى عَلَيْه रिक्शा में तशरीफ़ फ़रमा

हुए ही थे कि इतने में एक शख़्स ने हाज़िर हो कर अ़र्ज़ की : हुज़ूर ! फ़ुलां परेशानी से दो चार हूं, ता'वीज़ मर्हमत फ़रमा दीजिये। मद्रसे के मोहतमिम रईसुल क़लम हज़रत अ़ल्लामा अर्शदुल क़ादिरी साहिब ने उस शख़्स से फ़रमाया : गाड़ी का टाइम हो चुका है और तुम अभी ता'वीज़ के लिये बोल रहे हो ! **हुज़ूर मुफ़्तिये आ'ज़म** عَلَیْهِ رَحمَةُ اللّٰهِ الْاَکْرَم ने अ़ल्लामा زِیْدَ مَجْدُہٗ[1] को, उस शख़्स को रोकने से मन्अ़ फ़रमाया। अ़ल्लामा साहिब ने अ़र्ज़ की : हुज़ूर ! गाड़ी छूट जाएगी। इस पर **हुज़ूर मुफ़्तिये आ'ज़मे हिन्द** قُدِّسَ سِرُّہٗ ने ख़ौफ़े ख़ुदा عَزَّوَجَلَّ से सरशार और दुख्यारी उम्मत की दिलजूई में बे क़रार हो कर जो जवाब दिया वोह सुनहरी हर्फ़ों से लिखने के क़ाबिल है चुनान्चे फ़रमाया : छूट जाने दो, दूसरी ट्रेन से चला जाऊंगा। कल क़ियामत के दिन अगर ख़ुदावन्दे करीम جَلَّ جَلَالُہٗ ने पूछ लिया कि तूने मेरे फ़ुलां बन्दे की परेशानी में क्यूं मदद नहीं की ? तो मैं क्या जवाब दूंगा !" येह फ़रमा कर रिक्शा से सारा सामान उतरवा लिया।

(मुफ़्तिये आ'ज़म की इस्तिक़ामत व करामत, स. 120, 121)

अल्लाह عَزَّوَجَلَّ की उन पर रहमत हो और उन के सदक़े हमारी मग़्फ़िरत हो।

ख़याले ख़ातिरे अह़बाब चाहिये हर दम

अनीस ठेस न लग जाए आबगीने[2] को

---

1 : येह मज़्मून ग़ालिबन हज़रत अ़ल्लामा अर्शदुल क़ादिरी رَحْمَةُ اللّٰهِ تَعَالٰی عَلَيْه की ज़िन्दगी में लिखा गया है क्यूं कि "زِیْدَ مَجْدُہٗ" ज़िन्दों पर लिखने का उ़र्फ़ है। 2 : आबगीना या'नी दिल

मुक़द्दस काग़ज़ की बरकत : हज़रते सय्यिदुना मन्सूर बिन अ़म्मार عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللّٰهِ الْغَفَّار की तौबा का सबब येह हुवा कि एक मरतबा उन को राह में काग़ज़ का पुर्ज़ा मिला। जिस पर بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ लिखा था। उन्हों ने अदब से रखने की कोई मुनासिब जगह न पाई तो उसे निगल लिया। रात ख़्वाब देखा कोई कह रहा है, उस मुक़द्दस काग़ज़ के एह़तिराम की बरकत से **अल्लाह** रब्बुल इ़ज़्ज़त جَلَّ جَلَالُهٗ ने तुझ पर ह़िक्मत के दरवाज़े खोल दिये। (الرسالةالقُشيرِيّة ص ٤٨)

अल्लाह عَزَّوَجَلَّ की उन पर रह़मत हो और उन के सदक़े हमारी मग़्फ़िरत हो।

صَلُّوْا عَلَى الْحَبِيْب! صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلٰى مُحَمَّد

प्यारे प्यारे इस्लामी भाइयो ! देखा आप ने ! بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ लिखे हुए काग़ज़ को उठा कर उस की ता'ज़ीम करने वाले को **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ ने तौबा की तौफ़ीक़ दे कर विलायत का रुत्बा इनायत फ़रमा कर **अवताद** के अ़ज़ीम मन्सब से सरफ़राज़ फ़रमा दिया जैसा कि "**बहजतुल असरार शरीफ़**" में है, ह़ज़रते सय्यिदुना शैख़ **अबू बक्र बिन हवार** عَلَيْهِ رَحْمَةُ الْجَبَّار फ़रमाते हैं, इ़राक़ के अवताद सात हैं, (1) ह़ज़रते सय्यिदुना शैख़ **मा'रूफ़** कर्ख़ी (2) ह़ज़रते सय्यिदुना शैख़ इमाम **अह़मद** बिन ह़म्बल (3) ह़ज़रते सय्यिदुना शैख़ **बिश्रे ह़ाफ़ी** (4) ह़ज़रते सय्यिदुना शैख़ **मन्सूर बिन अ़म्मार** (5) ह़ज़रते सय्यिदुना शैख़ **जुनैद** (6) ह़ज़रते सय्यिदुना शैख़ **सह्ल** बिन अ़ब्दुल्लाह तुस्तरी

(7) ह़ज़रते सय्यिदुना शैख़ **अ़ब्दुल क़ादिर जीलानी** رَحِمَهُمُ اللهُ تَعَالٰی (हमारे ग़ौसे आ'ज़म رَضِیَ اللهُ تَعَالٰی عَنْه की अभी विलादत भी नहीं हुई थी इस लिये येह ग़ैब की ख़बर सुन कर) अ़र्ज़ किया गया, अ़ब्दुल क़ादिर जीलानी कौन ? ह़ज़रते सय्यिदुना शैख़ हवार عَلَیْهِ رَحْمَةُ الْجَبَّار ने जवाबन इर्शाद फ़रमाया, "एक अ़जमी "शरीफ़" होंगे (अहले अ़रब के यहां सादाते किराम को "शरीफ़" और "ह़बीब" बोलते हैं जब कि जनाब की जगह लफ़्ज़ "सय्यिद" इस्ति'माल किया जाता है मत़लब येह है कि एक ग़ैर अ़रबी सय्यिद साहिब) जो कि **बग़दाद शरीफ़** में क़ियाम फ़रमाएंगे, उन का ज़ुहूर **पांचवीं सदी हिजरी** में होगा और वोह सिद्दीक़ीन (या'नी औलियाए किराम की सब से आ'ला क़िस्म) से होंगे।" अवताद वोह अफ़राद हैं जो दुन्या के सरदार और ज़मीन के क़ुत़्ब हैं। (بَهْجَةُ الْاَسرار ص ۲۰۵)

अल्लाह عَزَّوَجَلَّ की उन पर रह़मत हो और उन के सदक़े हमारी मग़्फ़िरत हो।

किसी ख़ित़्त़ए ज़मीन या'नी शहर वग़ैरा का इन्तिज़ाम जिस वलिय्युल्लाह के सिपुर्द हो उस को **क़ुत़्ब** कहते हैं।

चार दुआ़ओं की ह़िकायत : बिस्मिल्लाह शरीफ़ की तह़रीर वाले काग़ज़ की ता'ज़ीम की बरकत से ह़ज़रते सय्यिदुना **मन्सूर बिन अ़म्मार** عَلَیْهِ رَحْمَةُ اللهِ الْغَفَّار का शुमार औलियाए किबार से होने लगा, आप رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰی عَلَیْه नेकी की दा'वत की धूमें मचाते थे, ला ता'दाद अफ़राद बसद अ़क़ीदत आप رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰی عَلَیْه का बयान सुनने आते थे। एक बार आप رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰی عَلَیْه के इज्तिमाअ़ में किसी ह़क़दार ने चार दिरहम का सुवाल किया, आप رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰی عَلَیْه ने ए'लान फ़रमाया, जो इस को **चार**

फ़रमाने मुस्तफ़ा صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم : जिस ने किताब में मुझ पर दुरूदे पाक लिखा तो जब तक मेरा नाम उस में रहेगा फ़िरिश्ते उस के लिये इस्तिग़्फ़ार (या'नी बख़्शिश की दुआ) करते रहेंगे। (طبرانی)

दिरहम देगा मैं उस के लिये **चार दुआएं** करूंगा। उस वक़्त वहां से एक गुलाम गुज़र रहा था एक वलिय्ये कामिल की रह़मत भरी आवाज़ सुन कर उस के क़दम थम गए और उस के पास जो चार दिरहम थे वोह उस ने साइल को पेश कर दिये। ह़ज़रते सय्यिदुना मन्सूर رَحْمَةُ اللّٰهِ تَعَالٰى عَلَيْه ने फ़रमाया, बताओ कौन कौन सी चार दुआएं करवाना चाहते हो? अ़र्ज़ किया, (1) मैं गुलामी से आज़ाद कर दिया जाऊं (2) मुझे इन दराहिम का बदला मिल जाए (3) मुझे और मेरे आक़ा को तौबा नसीब हो (4) मेरी, मेरे आक़ा की, आप की और तमाम ह़ाज़िरीन की बख़्शिश हो जाए। ह़ज़रते सय्यिदुना मन्सूर बिन अ़म्मार عَلَيْهِ رَحْمَةُ الْغَفَّار ने हाथ उठा कर **दुआ** फ़रमा दी। गुलाम अपने आक़ा के पास देर से पहुंचा। आक़ा ने सबबे ताख़ीर दरयाफ़्त किया तो उस ने वाक़िआ़ कह सुनाया, आक़ा ने पूछा, **पहली दुआ** कौन सी थी? गुलाम बोला, मैं ने अ़र्ज़ किया, दुआ कीजिये मैं गुलामी से आज़ाद कर दिया जाऊं। येह सुन कर आक़ा की ज़बान से बे साख़्ता निकला, "जा तू गुलामी से आज़ाद है।" पूछा, **दूसरी दुआ** कौन सी करवाई? कहा, जो चार दिरहम मैं ने दे दिये हैं उस का ने'मल बदल मिल जाए। आक़ा बोल उठा, मैं ने तुझे चार दिरहम के बदले चार हज़ार दिरहम दिये। पूछा, **तीसरी दुआ** क्या थी? बोला, मुझे और मेरे आक़ा को गुनाहों से तौबा की तौफ़ीक़ नसीब हो जाए। येह सुनते ही आक़ा की ज़बान पर इस्तिग़्फ़ार जारी हो गया और कहने लगा, मैं **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ की बारगाह में अपने तमाम गुनाहों से तौबा करता हूं। **चौथी दुआ** भी बता दो, कहा, मैं ने इल्तिजा की, कि मेरी, मेरे आक़ा की, आप जनाब की और तमाम ह़ाज़िरीने

इज्तिमाअ़ की मग़्फ़िरत हो जाए। येह सुन कर आक़ा ने कहा, "**तीन** बातें जो मेरे इख़्तियार में थीं वोह कर ली हैं चौथी सब की मग़्फ़िरत वाली बात मेरे इख़्तियार से बाहर है। उसी रात आक़ा ने ख़्वाब में किसी कहने वाले को सुना, "**जो तुम्हारे इख़्तियार में था वोह तुम ने कर दिया। और मैं अर्हमुर्राहिमीन हूं मैं ने तुम्हें, तुम्हारे ग़ुलाम को, मन्सूर को और तमाम हाज़िरीन को बख़्श दिया।** (روض الرّیاحین ص ۲۲۲،۲۲۳)

अल्लाह عَزَّوَجَلَّ की उन पर रह़मत हो और उन के सदक़े हमारी मग़्फ़िरत हो।

दुआ़ए वली में वोह तासीर देखी बदलती हज़ारों की तक़्दीर देखी

صَلُّوا عَلَى الْحَبِيْب ! صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰی عَلٰی مُحَمَّد

मिट्टी का शिकस्ता पियाला : सिल्सिलए आ़लिय्या **नक़्शबन्दिय्या** के अ़ज़ीम पेश्वा ह़ज़रते सय्यिदुना मुजद्दिद अल्फ़े सानी قُدِّسَ سِرُّهُ الرَّبَّانِی ने एक दिन आ़म बैतुल ख़ला में भंगी का सफ़ाई के लिये रखा हुवा गन्दगी से आलूदा कोना टूटा हुवा बड़ा सा मिट्टी का पियाला मुलाह़ज़ा फ़रमाया, "ग़ौर से देखा तो बेताब हो गए क्यूं कि उस पियाले पर लफ़्ज़ "**अल्लाह**" कन्दा था ! लपक कर पियाला उठा लिया और ख़ादिम से पानी का आफ़्ताबा (या'नी ढक्कन वाला दस्ता लगा हुवा लोटा) मंगवा कर अपने दस्ते मुबारक से ख़ूब मल मल कर अच्छी त़रह़ धो कर उस को पाक किया, फिर एक सफ़ेद कपड़े में लपेट कर अदब के साथ ऊंची जगह रख दिया। आप رَحْمَةُ اللّٰهِ تَعَالٰی عَلَيْه उसी पियाले में पानी पिया करते। एक दिन **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ की त़रफ़ से आप رَحْمَةُ اللّٰهِ تَعَالٰی عَلَيْه को

इल्हाम फ़रमाया गया, "जिस त़रह़ तुम ने मेरे नाम की ता'ज़ीम की मैं भी दुन्या व आख़िरत में तुम्हारा नाम ऊंचा करता हूं। आप رَحْمَةُ اللّٰهِ تَعَالٰی عَلَیْه फ़रमाया करते थे, "**अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ के नामे पाक का अदब करने से मुझे वोह मक़ाम ह़ासिल हुवा जो सो100 साल की इबादतो रियाज़त से भी ह़ासिल न हो सकता था !" (مُلَخَّص از حضراتُ القدس،دفتر دوم ص۱۱۳مکاشفہ نمبر۳۵)

सादा कागज़ का भी अदब : सिल्सिलए आ़लिय्या नक़्श बन्दिय्या के अ़ज़ीम पेश्वा ह़ज़रते सय्यिदुना शैख़ अह़मद सरहिन्दी अल मा'रूफ़ मुजद्दिद अल्फ़े सानी عَلَیْهِ رَحْمَةُ الرَّبَّانِی सादा कागज़ का भी एह़तिराम फ़रमाते थे। चुनान्चे एक रोज़ अपने बिछोने पर तशरीफ़ फ़रमा थे कि यकायक बे क़रार हो कर नीचे उतर आए और फ़रमाने लगे, "मा'लूम होता है इस बिछोने के नीचे कोई कागज़ है।" (زُبدَةُ الْمقامات ص ١٩٢)

राह चलते हुए कागज़ात को लात मत मारिये ! : प्यारे प्यारे इस्लामी भाइयो ! मा'लूम हुवा, सादा कागज़ का भी अदब है और क्यूं न हो कि इस पर कुरआनो ह़दीस और इस्लामी बातें लिखी जाती हैं। اَلْحَمْدُ لِلّٰه عَزَّوَجَلَّ बयान कर्दा ह़िकायत में ह़ज़रते सय्यिदुना मुजद्दिद अल्फ़े सानी عَلَیْهِ رَحْمَةُ الرَّبَّانِی की खुली करामत है कि बिछोने के नीचे के कागज़ का ज़ाहिरी त़ौर पर बिन देखे पता चल गया और आप رَحْمَةُ اللّٰهِ تَعَالٰی عَلَیْه नीचे उतर आए ता कि गुलामों को भी कागज़ात के अदब की तरग़ीब मिले। "बहारे शरीअ़त" में है, कागज़ से इस्तिन्जा मन्अ़ है अगर्चे उस पर कुछ भी न लिखा हो या अबू जह्ल ऐसे काफ़िर का नाम लिखा हो।

(हिस्सा : 2, स. 114, मत़्बूआ़ मदीनतुल मुर्शिद, बरेली शरीफ़)

चूंकि लफ़्ज़े "अबू जहल" के तमाम हुरूफ़े तहज्जी (ا ب و ج ہ ل) कुरआनी हैं। इस लिये लिखे हुए लफ़्ज़े "अबू जहल" की (न कि शख़्से अबू जहल की) इन मा'नों पर ता'ज़ीम है कि उस को नापाक या गन्दी जगहों पर डालने और जूते मारने वग़ैरा की इजाज़त नहीं। इस से वोह लोग इब्रत हासिल करें जो अख़्बारात को बतौरे पुड़िया इस्ति'माल करते और फिर مَعَاذَ اللهِ عَزَّوَجَلَّ वोह अख़्बारात बे अदबियों के मुख़्तलिफ़ मराहिल मसलन : مَعَاذَ اللهِ عَزَّوَجَلَّ घर के कचरा डालने के डिब्बे, गलियों में क़दमों तले रौंदे जाने, गन्दगियों और तरह तरह की आलूदगियों से दो चार होने के बा'द बिल आख़िर कचरा कूंडी में जा पहुंचते हैं, नीज़ बा'ज़ लोगों की येह ना मा'कूल आदत होती है कि चलते चलते राह में पड़े हुए लिखाई वाले ख़ाली डिब्बों, अख़्बारात और काग़ज़ात वग़ैरा को مَعَاذَ اللهِ عَزَّوَجَلَّ लातें मारते हैं। हालां कि सवाब तो इस में है कि तहरीरों वाले काग़ज़ात और गत्ते उठा कर अदब की जगह रखे जाएं या ठन्डे किये जाएं। बहर हाल लातें मारने और इधर उधर फेंकने, अख़्बारात या लिखे हुए काग़ज़ात से मेज़ या बरतन वग़ैरा साफ़ करने, हाथ पोंछने, उन पर पाउं रखने नीज़ अख़्बारात वग़ैरा बिछा कर उस के ऊपर बैठने वग़ैरा से बचना बहुत ज़रूरी है।

क़लम की छीलन : "**बहारे शरीअत**" में है, नए क़लम का तराशा (या'नी छीलन) इधर उधर फेंक सकते हैं। मगर मुस्ता'मल (या'नी इस्ति'माल शुदा) क़लम का तराशा ऐसी जगह न फेंका जाए कि एहतिराम के ख़िलाफ़ हो। (जब तराशे का एहतिराम है तो ख़ुद मुस्ता'मल क़लम का कितना

एह़तिराम होगा येह हर ज़ी शुऊ़र समझ सकता है।) नीज़ जिस काग़ज़ पर **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ का नाम लिखा हो उस में कोई चीज़ रखना मकरूह है और थेली पर अस्माए इलाही عَزَّوَجَلَّ) लिखे हों उस में रुपिया पैसा रखना मकरूह नहीं। खाने के बा'द उंग्लियों को काग़ज़ से पोंछना मकरूह है। (बहारे शरीअ़त, हिस्सा : 16, स. 119, मदीनतुल मुर्शिद बरेली शरीफ़, عالمگیری) टिश्यू पेपर से हाथ पोंछने, जहां मुफ़्त ढेले वग़ैरा दस्त याब न हों वहां टॉयलेट पेपर से जाए इस्तिन्जा ख़ुश्क करने की उ़लमा इजाज़त देते हैं क्यूं कि येह इसी काम के लिये है इस पर कुछ लिखा नहीं जाता। जब कि काग़ज़ लिखने के लिये बनाए जाते हैं।

صَلُّوا عَلَی الْحَبِیْب ! صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلٰی مُحَمَّد

सियाही (INK) के नुक़्ते का अदब : **ह़ज़रते** सय्यिदुना मुह़म्मद हाशिम कशमी رَحْمَۃُ اللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہ फ़रमाते हैं, "मैं सिलसिलए आ़लिय्या नक़्श बन्दिय्या के अ़ज़ीम पेशवा ह़ज़रते सय्यिदुना मुजद्दिद अल्फ़े सानी عَلَیْہِ رَحْمَۃُ الرَّبَّانِی की ख़िदमत में ह़ाज़िर था। आप رَحْمَۃُ اللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہ तह़रीरी काम कर रहे थे, ज़रूरतन बैतुल ख़ला गए मगर फ़ौरन वापस आ कर पानी का लोटा मंगवा कर बाएं हाथ के अंगूठे का नाख़ुन शरीफ़ धोया, फिर बैतुल ख़ला तशरीफ़ ले गए। बा'दे फ़राग़त जब तशरीफ़ लाए तो फ़रमाया, बैतुल ख़ला में जूं ही बैठा कि मेरी नज़र बाएं हाथ के अंगूठे के नाख़ुन की पुश्त पर पड़ी जिस पर क़लम का इम्तिह़ान करते वक़्त का (या'नी क़लम को चेक करने के लिये के काम कर रहा है या नहीं उस मौक़अ़ का) सियाही

(INK) का नुक़्ता लगा हुवा था। चूं कि येह उसी क़लम से था जिस से कुरआनी हुरूफ़ (अ़रबी ज़बान के सारे जब कि फ़ारसी और उर्दू के अक्सर हुरूफ़ कुरआनी हैं।) लिखे जाते हैं। इस लिये बाएं हाथ के अंगूठे पर लगे हुए उस नुक्ते के साथ वहां बैठना अदब के ख़िलाफ़ था, हालां कि बहुत शिद्दत से पेशाब की हाजत थी मगर उस तक्लीफ़ के मुक़ाबले में इस बे अदबी की तक्लीफ़ बहुत ज़ियादा थी लिहाज़ा फ़ौरन बाहर आ कर सियाही के नुक्ते को धो कर फिर गया।" (زُبدَۃُ الْمقامات ص ١٨٠)

दीवारों पर इश्तिहार न लगाएं : अल्लाह ! अल्लाह !

सिल्सिलए आ़लिय्या नक़्श बन्दिय्या के अ़ज़ीम पेश्वा ह़ज़रते मुजद्दिदे अल्फ़े सानी عَلَيْهِ رَحْمَةُ الرَّبَّانِى क़लम की सियाही (INK) के नुक़्ते का भी इस क़दर अदब फ़रमाते थे जब कि हमारे यहां ह़ालत येह है कि लिखने के दौरान लगी हुई सियाही के निशानात धो कर उ़मूमन **गटर** में बहा दिया जाता है और ना क़ाबिले इस्ति'माल हो जाने पर क़लम और उस के अज्ज़ा को पहले कचरे के डिब्बे में डालते और बा'द में कचरा कूंडी की नज़्र कर देते हैं। ब्लेक बोर्ड पर चोक (CHALK) की आ़म लिखाई कुजा अक्सर अहादीसे मुबारका लिखने वाले भी बिला तकल्लुफ़ साफ़ी से पोंछ कर चोक के ज़र्रात के अदब का बिल्कुल भी ख़याल नहीं करते। हुक़ूक़ुल इ़बाद की मुत़्लक़ परवाह किये बिग़ैर दीवारों पर "चोकिंग" की जाती और दुन्यवी या दीनी लिखाई वाले इश्तिहारात दूसरों के साइन बोर्डों और लोगों के घरों या दुकानों वग़ैरा की दीवारों पर बिला इजाज़ते मालिकान लगा दिये जाते हैं जो कि मालिक को ना गवार गुज़रने की सूरत में ह़राम और जहन्नम में ले जाने वाले काम हैं। और बच्चा बच्चा जानता है कि दीवार

पर चस्पां कर्दा मज़हबी इश्तिहार अन्जामे कार पुर्ज़ा पुर्ज़ा हो कर ज़मीन पर तशरीफ़ ले आता है और जो कुछ बे अदबी होती है उस का तसव्वुर ही दिल हिला देने वाला है। काश ! इश्तिहार चस्पां करने के बजाए गत्तों पर लगा कर मुनासिब मक़ामात पर टांगने की तरकीब रवाज पा जाए। मगर ज़रूरत पूरी हो जाने के बा'द गत्तों को भी उतार लेना चाहिये। इसी त़रह ज़रूरत पूरी हो जाने के बा'द बेनर्ज़ भी उतार लिये जाएं वरना फट कर लीरे लीरे हो कर बिखर जाते हैं।

अख़्बारात रद्दी में न बेचें : प्यारे प्यारे इस्लामी भाइयो ! आज कल उ़मूमन अख़्बारात में بِسۡمِ اللّٰہِ الرَّحۡمٰنِ الرَّحِیۡمِ, आयाते करीमा, अह़ादीसे मुबारका और इस्लामी मज़ामीन होते और लोग सिर्फ़ चन्द सिक्कों की ख़ात़िर उन्हें रद्दी में फ़रोख़्त कर देते हैं। अफ़्सोस ! सद करोड़ अफ़्सोस ! इस क़िस्म के अख़्बारात गन्दी नालियों तक में नज़र आते हैं। काश ! **मुक़द्दस अवराक़** का हमें अदब नसीब हो जाता। **मेरे ज़िन्दा दिल इस्लामी भाइयो** ! बराए करम ह़क़ीर रक़म पाने के लिये रद्दी में बेचने के बजाए अख़्बारात को बीच समुन्दर में ठन्डा कर दिया करें, اِنۡ شَآءَ اللّٰه عَزَّوَجَلَّ दोनों जहां में बेड़ा पार होगा। **मेरे ताजिर इस्लामी भाइयो** ! आप भी रब्बुल इ़ज़्ज़त عَزَّوَجَلَّ और ताजदारे रिसालत صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰی عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم की मह़ब्बत और अ़ज़मत की ख़ात़िर अख़्बारात को पुड़िया बांधने के लिये इस्ति'माल करने से गुरेज़ फ़रमाइये। बा'ज़ लोग मज़हबी मज़ामीन जुदा कर के बक़िय्या अख़्बार को बन्डल वग़ैरा बनाने में इस्ति'माल कर के

दिल को यूं मना लेते हैं कि हम ने कोई बे अदबी नहीं की। ऐसों की ख़िदमत में अ़र्ज़ है कि मुकम्मल अख़्बार ही ठन्डा कर दीजिये क्यूं कि ख़बरें हों या फ़िल्मी इश्तिहार जगह ब जगह इस्लामी नाम होते हैं और इन में उ़मूमन "**अल्लाह**" और "**मुह़म्मद**" के अल्फ़ाज़ भी शामिल होते हैं। मसलन : अ़ब्दुल्लाह, अ़ब्दुर्रह़मान, ग़ुलाम मुह़म्मद वग़ैरा। उर्दू हो या सिन्धी, इंग्रेज़ी हो या हिन्दी दुन्या की हर ज़बान में शाएअ़ होने वाले हर अख़्बार में मुक़द्दस नामों का इम्कान मौजूद है। बल्कि दुन्या की हर ज़बान के हुरूफ़े तहज्जी (ALPHABETS) का अदब करना चाहिये क्यूं कि **साह़िबे तफ़्सीरे सावी शरीफ़ के क़ौल के मुत़ाबिक़ दुन्या में बोली जाने वाली तमाम ज़बानें इल्हामी हैं**। (تفسیر صاوی ج۱ص۳۰) लिहाज़ा इन को ठन्डा कर देने ही में आ़फ़िय्यत है। **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ इस अदब का आप को ज़रूर सिला अ़त़ा फ़रमाएगा।

मेरे वालिद साह़िब ज़ेह्नी मरीज़ हैं : एक बार सगे मदीना (राक़िमुल हुरूफ़) के पास एक नौ जवान आया और कहने लगा कि मुझे अपने वालिद साह़िब के लिये दुआ़ करवानी है ताकि उन का ज़ेह्न ठीक हो जाए, वोह ज़ेह्नी मरीज़ हैं, उन पर एक धुन सुवार रहती है और वोह **अख़्बारात**, लिखे हुए काग़ज़ात सड़कों से चुनते और जम्अ़ कर के ठन्डे करते हैं, मेरे पैसे भी इस्ति'माल नहीं करते। मैं मुआ़मला समझ गया, मैं ने उस नौ जवान से पूछा, "क्या आप **सरकारी मुलाज़िम** हैं ?" उस ने

कहा, "हां"। तो मैं ने उन से कहा, "वालिद साहिब को मेरा सलाम अ़र्ज़ कर के और मेरे लिये दुआए मग़्फ़िरत करवाइये, आप भी उन की ख़िदमत कीजिये वोह अख़्बार वग़ैरा इस लिये चुनते हैं कि उन में मुक़द्दस तहरीरें होती हैं और आप के पैसे इस लिये इस्ति'माल नहीं फ़रमाते कि आप सरकारी मुलाज़िम हैं और अक्सर सरकारी मुलाज़िमीन पूरी ड्यूटी न कर के ना जाइज़ तनख़्वाह लेते हैं। येह बात सुन कर उस ने तस्लीम किया कि वाक़ेई मैं ड्यूटी में कोताही करता हूं। **इस्लामी भाइयो !** अगर उस नौ जवान के वालिद साहिब كَثَّرَاللّٰهُ تَعَالٰى اَمْثَالَهُمْ (या'नी **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ ऐसों की कसरत करे) की त़रह़ हर मुसल्मान ज़ेहनी **मदनी मरीज़** हो जाए तो यक़ीनन हर त़रफ़ अन्वारो तजल्लियात की बरसात और बरकात की बोहतात हो और हमारा सारा मुआ़शरा "मदनी मुआ़शरा" बन जाए।

ऐ हम नशीं ! अज़िय्यते फ़रज़ान्गी न पूछ

जिस में ज़रा सी अ़क़्ल थी दीवाना हो गया

صَلُّوا عَلَى الْحَبِيب ! صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلٰى مُحَمَّد

प्यारे प्यारे इस्लामी भाइयो ! "मदनी सोच" पैदा करने के लिये आ़शिक़ाने रसूल के साथ मदनी क़ाफ़िलों में सफ़र फ़रमाते रहिये, दा'वते इस्लामी के मदनी क़ाफ़िले वालों पर सरकारे मदीना صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم के लुत़्फ़ो करम का ईमान अफ़्रोज़ वाक़िआ़ सुनिये और झूमिये :

मदनी क़ाफ़िले पर सरकार ﷺ की करम नवाज़ी : एक आ़शिके़ रसूल के बयान का अपने अन्दाज़ो अल्फ़ाज़ में ख़ुलासा पेशे ख़िदमत है, हमारा **मदनी क़ाफ़िला** सुन्नतों की तरबियत लेने के लिये पहुंचा। एक मस्जिद में तीन[3] दिन गुज़ार कर दूसरे अ़लाके़ की त़रफ़ जाते हुए रास्ता भूल कर हम जंगल की त़रफ़ जा निकले, रात की सियाही हर त़रफ़ फैल चुकी थी, दूर दूर तक आबादी का कोई नामो निशान नहीं था, लम्ह़ा ब लम्ह़ा तश्वीश में इज़ाफ़ा होता जा रहा था, इतने में उम्मीद की एक किरन फूटी और काफ़ी दूर एक बत्ती टिमटिमाती नज़र आई, ख़ुशी के मारे हम उस सम्त लपके मगर आह ! चन्द ही लम्ह़ों के बा'द वोह रोशनी ग़ाइब हो गई, हम ठिठक कर खड़े के खड़े रह गए, हमारी घबराहट में एक दम इज़ाफ़ा हो गया ! क्या करें, क्या न करें और किस सम्त को चलें कुछ भी समझ में नहीं आ रहा था। आह ! आह ! आह !

सूना जंगल रात अंधेरी छाई बदली काली है — सोने वालो ! जागते रहियो चोरों की रखवाली है
जुगनू चमके पत्ता खड़के मुझ तन्हा का दिल धड़के — डर समझाए कोई पवन है या अगिया बेताली है
बादल गरजे बिजली तड़पे धक से कलेजा हो जाए — बन में घटा की भयानक सूरत कैसी काली काली है
पाउं उठा और ठोकर खाई कुछ संभला फिर औंधे मुंह — मींह ने फिस्लन कर दी है और धुर तक खाई नाली है
साथी साथी कह के पुकारूं साथी हो तो जवाब आए — फिर झुंझुला कर सर दे पटकूं चल रे मौला वाली है
फिर फिर कर हर जानिब देखूं कोई आस न पास कहीं — हां इक टूटी आस ने हारे जी से रफ़ाक़त पाली है

तुम तो चांद अ़रब के हो प्यारे तुम तो अ़जम के सूरज हो
देखो मुझ बेकस पर शब ने कैसी आफ़त डाली है

इस परेशानी में न जाने कितना वक़्त गुज़र गया, यकायक उसी सम्त फिर रोशनी नुमूदार हुई। हम ने **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ का नाम ले कर हिम्मत की और एक बार फिर आबादी की उम्मीद पर रोशनी की जानिब तेज़ तेज़ क़दम चल पड़े। जब क़रीब पहुंचे तो एक शख़्स रोशनी लिये खड़ा था, वोह निहायत पुर तपाक त़रीक़े पर हम से मिला और हमें अपने मकान में ले गया, आ़शिक़ाने रसूल के मदनी क़ाफ़िले के बारह[12] मुसाफ़िरों की ता'दाद के मुत़ाबिक़ **12** कप मौजूद थे और चाय भी तय्यार। उस ने गर्म गर्म चाय के ज़रीए़ हमारी "ख़ैर ख़्वाही" की। हम इस ग़ैबी इमदाद और पूरे बारह[12] कप चाय की पहले से तय्यारी पर ह़ैरान थे। इस्तिफ़्सार पर हमारे अजनबी मेज़बान ने इन्किशाफ़ किया कि मैं सोया हुवा था कि क़िस्मत अंगड़ाई ले कर जाग उठी, **जनाबे रिसालत मआब** صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم **मेरे ख़्वाब में तशरीफ़ लाए और कुछ इस त़रह़ इर्शाद फ़रमाया, "दा'वते इस्लामी के मदनी क़ाफ़िले के मुसाफ़िर रास्ता भूल गए हैं उन की रहनुमाई के लिये तुम रोशनी ले कर बाहर खड़े हो जाओ।"** मेरी आंख खुल गई और बत्ती ले कर बाहर निकल पड़ा। कुछ देर तक खड़ा रहा मगर कुछ नज़र न आया, वस्वसा आया कि शायद ग़लत़ फ़ह्मी हुई है, आंखों में नींद भरी हुई थी, घर में दाख़िल हो कर फिर सो रहा, सर की आंख बन्द होते ही दिल की आंख वापस खुल गई और फिर एक बार मदीने के ताजदार صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم का चेहरए नूरबार नज़र आया, लबहाए मुबारका को जुम्बिश हुई और रह़मत के फूल

झड़ने लगे, अल्फ़ाज़ कुछ यूं तरतीब पाए, **दीवाने ! मदनी क़ाफ़िले में बारह मुसाफ़िर हैं, उन के लिये चाय का इन्तिज़ाम कर के फ़ौरन रोशनी ले कर बाहर खड़े हो जाओ ।** मैं ने दम ज़दन में ख़ैर ख़्वाही की तरकीब की और रोशनी ले कर बाहर निकल आया कि इतने में आ़शिक़ाने रसूल का मदनी क़ाफ़िला भी आ पहुंचा ।

आता है फ़क़ीरों पे उन्हें प्यार कुछ ऐसा ख़ुद भीक दें और ख़ुद कहें मंगता का भला हो
तुम को तो ग़ुलामों से है कुछ ऐसी महब्बत है तर्के अदब वरना कहें हम पे फ़िदा हो

صَلُّوا عَلَی الْحَبِیْب ! صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلٰی مُحَمَّد

सरकार ﷺ ने खाना खिलाया : प्यारे प्यारे इस्लामी भाइयो ! इस वाक़िए से जहां इल्मे ग़ैबे माहे रिसालत صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم का मा'लूम हुवा वहां दा'वते इस्लामी की ह़क़्क़ानिय्यत और बारगाहे रिसालत صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم में मक़्बूलिय्यत का भी पता लगा। اَلْحَمْدُ لِلّٰہ عَزَّوَجَلَّ हमारे मीठे मीठे मदनी आक़ा صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم अपने ग़ुलामों को हर वक़्त अपनी नज़र में रखते हैं, मुसीबत में फंस जाने की सूरत में इमदाद फ़रमाते और भूकों को खाना खिलाते हैं, चुनान्चे ह़ज़रते इमाम यूसुफ़ बिन इस्माईल नब्हानी قُدِّسَ سِرُّہُ الرَّبَّانِی नक़्ल करते हैं, ह़ज़रते शैख़ अबुल अ़ब्बास अह़मद बिन नफ़ीस तूनिसी رَحْمَۃُ اللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہ फ़रमाते हैं, मैं एक बार मदीनए मुनव्वरह में सख़्त भूक के आ़लम में सरकारे आ़ली वक़ार, मक्के मदीने के ताजदार صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم के मज़ारे पुर अन्वार पर ह़ाज़िर हो कर अ़र्ज़ गुज़ार

हुवा, **या रसूलल्लाह** صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ! मैं भूका हूं, यकबारगी आंख लग गई, दरीं अस्ना किसी ने जगा दिया, और मुझे साथ चलने की दा'वत दी, चुनान्चे मैं उन के साथ उन के घर आया, मेज़बान ने खजूरें, घी और गन्दुम की रोटी पेश कर के कहा, पेट भर कर खा लीजिये क्यूं कि मुझे मेरे जद्दे अमजद, मीठे मक्की मदनी मुहम्मद صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने आप की मेज़बानी का हुक्म दिया है। आयिन्दा भी जब कभी भूक महसूस हो हमारे पास तशरीफ़ लाया करें। (حُجَّةُ اللّٰهِ عَلَى الْعٰلَمِين ج ٢ ص ٥٧٣)

पीते हैं तेरे दर का खाते हैं तेरे दर का

पानी है तेरा पानी दाना है तेरा दाना (सामाने बख़्शिश)

صَلُّوا عَلَى الْحَبِيب ! صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلٰى مُحَمَّد

हर ज़बान के हुरूफ़ का अदब कीजिये : प्यारे प्यारे इस्लामी भाइयो ! بِسْمِ اللهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ और दीगर अस्माए मुक़द्दसा को ऐसी जगह हरगिज़ मत लिखिये जहां इन की बे हुर्मती होने का अन्देशा हो। बल्कि किसी भी ज़बान में ज़मीन पर कुछ न लिखा जाए हर ज़बान के हुरूफ़े तहज्जी (या'नी ALPHABETS) की ता'ज़ीम की जाए। लिखाई किसी भी ज़बान में हो उस पर पाउं न रखा जाए। मसलन : ऐसे पाएदान (DOOR MATE) दरवाज़े के बाहर न रखे जाएं जिन पर WEL COME लिखा होता है। चप्पल वग़ैरा पर ख़्वाह इंग्लिश ज़बान ही में कम्पनी का

नाम लिखा हो पहनने से क़ब्ल उसे मिटा देना चाहिये। अक्सर मुसल्लों के साथ चिट लगी होती है जिस पर अ़रबी उर्दू या इंग्लिश में फ़ेक्टरी वग़ैरा का नाम लिखा होता है और वोह भी अक्सर पाउं रखने की जगह पर। नीज़ प्लास्टिक की चटाई, लिह़ाफ़ व तोलिया वग़ैरा में भी अक्सर तह़रीरी चिट होती है, लिहाज़ा ऐसी चिट को जुदा कर के ठन्डी कर देना चाहिये। पलंग पर बिछे हुए फ़ोम के गदेलों के अस्तर पर उ़मूमन MOLTY FOAM वग़ैरा लिखा होता है काश ! कम्पनियों वाले हमें इम्तिह़ान में न डालें, येह फ़िक़्ही जुज़इय्या ग़ौर से मुलाह़ज़ा फ़रमाइये, चुनान्चे **बहारे शरीअ़त** हि़स्सा 16 स. 237 पर रद्दुल मोह़तार के ह़वाले से लिखा है, "**बिछोने** या मुसल्ले पर कुछ लिखा हुवा हो तो उस को इस्ति'माल करना **ना जाइज़** है येह इ़बारत उस की बनावट में हो या काढ़ी गई हो या रोश्नाई (INK) से लिखी हो अगर्चे हुरूफ़े मुफ़रदह (ALPHABETS) लिखे हों क्यूं कि हुरूफ़े मुफ़रदह (या'नी जुदा जुदा लिखे हुए हुरूफ़) का भी एह़तिराम है।" साहि़बे बहारे शरीअ़त رَحْمَةُ اللّٰهِ تَعَالٰی عَلَيْه मज़ीद फ़रमाते हैं, "अक्सर दस्तर ख़्वान पर इ़बारत लिखी होती है ऐसे (कम्पनी का नाम या अश्आ़र लिखे हुए) दस्तर ख़्वान को इस्ति'माल में लाना और उन पर खाना न खाना चाहिये। बा'ज़ लोगों के तकियों पर अश्आ़र लिखे होते हैं उन को भी इस्ति'माल न किया जाए।" बहर ह़ाल मुसल्ले हों या चादरें, क़ालीन हों या डेकोरेशन की दरियां, तकिया हो या गदेला जिस चीज़ पर भी बैठने या पाउं रखने की ज़रूरत पड़ती हो उस पर किसी भी ज़बान में कुछ भी न

लिखा जाए न ही छपी हुई चिट सिलाई की जाए। ख़ूब सूरत मुकम्मल क़ालीन (ONE PIECE CARPET) के पीछे आ़म तौ़र पर कम्पनी का नाम व पता लिखा हुवा स्टीकर चस्पां होता है, उस स्टीकर पर पानी लगा दीजिये फिर चन्द मिनट के बा'द उतार लीजिये। **अ़रबी तह़रीरों** का तो ख़ास़ तौ़र पर अदब करना चाहिये कि मीठे मीठे अ़रबी आक़ा صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم की मुबारक ज़बान अ़रबी है, कुरआने पाक की ज़बान अ़रबी और जन्नत में अहले जन्नत की ज़बान भी अ़रबी है। **अ़रबी तह़रीरें** ख़्वाह खाने पीने के पेकेट पर ही क्यूं न हों उस को फेंक देना या مَعَاذَ اللّٰه عَزَّوَجَلَّ कचरा कूंडी में डाल देना सख़्त बे अदबी व बद नसीबी है।

नम्बरों की निस्बतें : बा'ज़ अवक़ात चप्पल पर अगर कुछ नहीं भी लिखा होता तो नम्बर ज़रूर नक़्श होता है उस पर पांव रखने में भी अहले मह़ब्बत का दिल नहीं करता, क्यूं कि हर नम्बर में कोई न कोई निस्बत होती है। मसलन : **त़ाक़ अ़दद (ODD)** के बारे में "अह़्सनुल विआ़अ" सफ़ह़ा 22 पर दुआ़ की तकरार के बारे में है, "**अल्लाह** वित्र (अकेला) और वित्र (या'नी एक, तीन, पांच, सात वग़ैरा को) दोस्त (मह़बूब) रखता है, **पांच** बेहतर है और **सात** का अ़दद **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ को निहायत मह़बूब और अक़ल (या'नी कम अज़ कम) तीन है।" (मत़लब येह है कि जब भी दुआ़ मांगो तो उस को **सात** मरतबा दोहराओ, वरना **पांच** मरतबा या कम अज़ कम **तीन** मरतबा ही दोहरा लो।) **जुफ़्त अ़दद (EVEN)** में भी निस्बतें ही निस्बतें हैं। **2 की निस्बत :** मसलन 2, मुह़र्रमुल ह़राम को ह़ज़रते

सय्यिदुना मा'रूफ़ कर्ख़ी رَحْمَۃُ اللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہ और 2 ज़ी क़ा'दतुल ह़राम को सदरुशशरीअ़ह मुसन्निफ़े बहारे शरीअ़त رَحْمَۃُ اللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہ का यौमे उ़र्स । **4 की निस्बत :** चार यार عَلَیْہِمُ الرِّضْوَان से जिस किसी को प्यार है, اِنْ شَآءَاللّٰه عَزَّوَجَلَّ उस का बेड़ा पार है, **6 की निस्बत :** 6 रजबुल मुरज्जब को ग़रीब नवाज़ رَحْمَۃُ اللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہ की छटी शरीफ़ । **8 की निस्बत :** जन्नतें आठ हैं और 8 मुहर्रमुल ह़राम शेरे बेशए अहले सुन्नत ह़ज़रते मौलाना ह़श्मत अ़ली ख़ान عَلَیْہِ رَحْمَۃُ الْمَنَّان का यौमे उ़र्स, **10 की निस्बत :** यौमे आ़शूरा, इमामे आ़ली मक़ाम सय्यिदुश्शुहदा, सुल्ताने करबला इमाम हुसैन رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ का यौमे शहादत, बक़रह ईद और **11, 12 की निस्बतों की तो उ़श्शाक़ में हर त़रफ़ धूमधाम है ।**

किया ग़ौर जब ग्यारहवीं बारहवीं में मुअ़म्मा येह हम पर खुला ग़ौसे आ'ज़म
तुम्हें वस्ले बे फ़स्ल है शाहे दीं से दिया ह़क़ ने येह मर्तबा ग़ौसे आ'ज़म

मुक़द्दस अवराक़ ठन्डे करने का त़रीक़ा : जो ख़ुश नसीब मुसल्मान तह़रीरों का अदब करते हुए अख़्बारात व मुक़द्दस काग़ज़ात और गत्ते वग़ैरा ज़मीन पर देख कर उठा लेते और उन को बीच समुन्दर या गहरे दरिया में ठन्डा कर देते हैं वोह क़ाबिले रश्क हैं । कम गहरे समुन्दर में **मुक़द्दस अवराक़** न डाले जाएं कि उ़मूमन बह कर कनारे पर आ जाते हैं, **ठन्डा करने का त़रीक़ा** येह है कि मुक़द्दस अवराक़ किसी थेली या ख़ाली बोरी में भर कर उस में वज़्नी पथ्थर डाल दिया जाए नीज़ थेली या बोरी पर चन्द जगह चीरे ज़रूर लगाए जाएं ता कि उस में फ़ौरन पानी

भर जाए और वोह तह में चली जाए। कि पानी अन्दर न जाने की सूरत में बा'ज़ अवक़ात मीलों तक तैरती हुई कनारे पहुंच जाती है और बा'ज़ अवक़ात गंवार या कुफ़्फ़ार बोरी ह़ासिल करने की लालच में **मुक़द्दस अवराक़** कनारे ही पर ढेर कर देते हैं और फिर इतनी सख़्त बे अदबियां होती हैं कि सुन कर **उ़श्शाक़** का कलेजा कांप उठे ! मुक़द्दस अवराक़ की बोरी गहरे पानी तक पहुंचाने के लिये मुसल्मान **कश्ती वाले** से भी तआ़वुन ह़ासिल किया जा सकता है। मगर बोरी में चीरे हर ह़ाल में डालने होंगे।

صَلُّوْا عَلَى الْحَبِيْب ! صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰی عَلٰی مُحَمَّد

मुक़द्दस अवराक़ दफ़्न करने का त़रीक़ा : मुक़द्दस अवराक़ को **दफ़्न** भी कर सकते हैं, इस का त़रीक़ा मुलाह़ज़ा फ़रमाइये, चुनान्चे **बहारे शरीअ़त** ह़िस्सा 16 सफ़्ह़ा नम्बर 121 पर आ़लमगीरी के ह़वाले से लिखा है, "अगर मुस्ह़फ़ शरीफ़ पुराना हो गया, इस क़ाबिल न रहा कि उस में तिलावत की जाए और येह अन्देशा है कि इस के अवराक़ मुन्तशिर हो कर ज़ाएअ़ होंगे तो किसी पाक कपड़े में लपेट कर एह़तियात़ की जगह **दफ़्न** किया जाए और दफ़्न करने में इस के लिये (गढ़ा खोद कर जानिबे क़िब्ला की दीवार को इतना खोदें कि सारे मुक़द्दस अवराक़ समा जाएं ऐसी) **लह़द** बनाई जाए ताकि उस पर मिट्टी न पड़े या (गढ़े में रख कर) उस पर तख़्ता लगा कर छत बना कर मिट्टी डालें कि उस पर मिट्टी न पड़े, मुस्ह़फ़ शरीफ़ पुराना हो जाए तो उस को जलाया न जाए।"

صَلُّوْا عَلَى الْحَبِيْب ! صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰی عَلٰی مُحَمَّد

"लूट लो फ़ैज़ाने بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ"

के उन्तीस हुरूफ़ की निस्बत से 29 मदनी फूल

(इब्तिदाई दस मदनी फूल तफ़्सीरे नईमी पारह अव्वल सफ़्हा नम्बर 44 से लिये गए हैं)

1 بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ कुरआने पाक की पूरी आयत है मगर किसी सूरत का जुज़्व नहीं बल्कि सूरतों में फ़ासिला करने के लिये उतारी गई है इसी लिये नमाज़ में इस को आहिस्ता ही पढ़ते हैं हां जो हाफ़िज़ तरावीह में पूरा कुरआने पाक ख़त्म करे वोह ज़रूर किसी न किसी सूरत के साथ एक बार بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ ज़ोर से पढ़े।

2 **सूरए** तौबह के इलावा बाक़ी हर सूरत بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ से शुरूअ़ कीजिये अगर **सूरए तौबह** से ही तिलावत शुरूअ़ करें तो तिलावत के लिये بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ पढ़ लीजिये।

3 **शामी** में है कि हुक़्क़ा पीते वक़्त और बदबूदार चीज़ें (कच्ची प्याज़ व लहसन वग़ैरा) खाते वक़्त **बिस्मिल्लाह** न पढ़ना बेहतर है।

4 **इस्तिन्जा** ख़ाने में पहुंच कर **बिस्मिल्लाह** पढ़ना मन्अ़ है।

5 **नमाज़ी** नमाज़ में जब कोई सूरत पढ़े तो पहले आहिस्ता से بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ पढ़ना मुस्तहब है।

6 **जो** साहिबे शान काम बिग़ैर **बिस्मिल्लाह** के शुरूअ़ किया जाएगा उस में बरकत न होगी।

7 **जब** मुर्दे को क़ब्र में उतारा जाए तो उतारने वाले येह पढ़ते जाएं بِسْمِ اللّٰهِ وَ عَلٰى مِلَّةِ رَسُوْلِ اللّٰه (صَلَّى اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم)

8 **जुमुआ**, ईदैन, निकाह वग़ैरा का ख़ुत्बा اَلْحَمْدُ لِلّٰه से शुरूअ़ किया जाए या'नी (इब्तिदाअन) **बिस्मिल्लाह** आहिस्ता से पढ़ी जाए फिर जब कुरआने पाक की आयत आए तब ख़तीब बुलन्द आवाज़ से **बिस्मिल्लाह** पढ़े।

9 **जानवर** को ज़ब्ह करते वक़्त **बिस्मिल्लाह** पढ़ना (या'नी **अल्लाह** का नाम लेना) वाजिब है कि अगर जान बूझ कर छोड़ दिया (या'नी **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ का नाम न लिया) तो जानवर मुर्दार होगा अगर भूले से छूट गई तो जानवर ह़लाल है।

10 (ज़ब्हे इज़्तिरारी मसलन) शिकारी तीर या भाला वग़ैरा धारदार चीज़ से शिकार करे और येह चीज़ें फेंकते वक़्त **बिस्मिल्लाह** पढ़ ले तो अगर जानवर उस के पास पहुंचते पहुंचते मर भी गया तब भी ह़लाल होगा। यूं ही अगर पालतू जानवर क़ब्ज़े से निकल गया मसलन : गाय कूंएं में गिर गई या ऊंट भाग गया तो **बिस्मिल्लाह** कह कर तीर या भाला या तलवार मार दी गई तो जानवर ह़लाल है। (**बिस्मिल्लाह** पढ़ कर डन्डा या पथ्थर मारने या बन्दूक से गोली या छर्रा चलाने से वहशी

जानवर या परिन्दा मर गया तो ह़राम है क्यूं कि येह ख़ून बहने के सबब नहीं बल्कि चोट से मरा है। हां अगर ज़ख़्मी ह़ालत में हाथ आ गया तो ज़ब्हे शरई से ह़लाल हो जाएगा। जो वह़्शी जानवर या परिन्दा क़ब्ज़े में है उस के ह़लाल होने के लिये ज़ब्हे इख़्तियारी ज़रूरी है। या'नी **अल्लाह** का नाम ले कर उस को क़ाइदे के मुत़ाबिक़ ज़ब्ह़ करना होगा)

11 **ह़ज़रते** सय्यिदुना शैख़ अबुल अ़ब्बास अह़मद बिन अ़ली बूनी رَحْمَةُ اللّٰهِ تَعَالٰى عَلَيْه फ़रमाते हैं, जो बिला नाग़ा **सात दिन** तक بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ 786 बार (अव्वल आख़िर एक बार दुरूद शरीफ़) पढ़े اِنْ شَآءَاللّٰه عَزَّوَجَلَّ उस की हर ह़ाजत पूरी हो। अब वोह ह़ाजत ख़्वाह किसी भलाई के पाने की हो या बुराई दूर होने की या कारोबार चलने की।

(शम्सुल मआ़रिफ़ मुतर्जम, स. 73)

12 जो कोई सोते वक़्त بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ 21 बार (अव्वल आख़िर एक बार दुरूद शरीफ़) पढ़ ले اِنْ شَآءَاللّٰه عَزَّوَجَلَّ उस रात शैत़ान, चोरी, अचानक मौत और हर त़रह़ की आफ़तो बला से मह़फ़ूज़ रहे। (ऐज़न, स. 73)

13 **जो** किसी ज़ालिम के सामने بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ 50 बार (अव्वल आख़िर एक बार दुरूद शरीफ़) पढ़े उस ज़ालिम के दिल में पढ़ने वाले की हैबत पैदा हो और उस के शर से बचा रहे। (ऐज़न, स. 73)

14 **जो** शख़्स तुलूए आफ़्ताब के वक़्त सूरज की त़रफ़ रुख़ कर के بِسۡمِ اللّٰہِ الرَّحۡمٰنِ الرَّحِیۡمِ 300 बार और दुरूद शरीफ़ 300 बार पढ़े **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ उस को ऐसी जगह से रिज़्क़ अ़त़ा फ़रमाएगा जहां उस का गुमान भी न होगा। और (रोज़ाना पढ़ने से) اِنۡ شَآءَاللّٰہ عَزَّوَجَلَّ एक साल के अन्दर अन्दर अमीरो कबीर हो जाएगा। (ऐज़न, स. 73)

15 **कुन्द** ज़ेहन अगर بِسۡمِ اللّٰہِ الرَّحۡمٰنِ الرَّحِیۡمِ 786 बार (अव्वल आख़िर एक बार दुरूद शरीफ़) पढ़ कर पानी पर दम कर के पी ले तो اِنۡ شَآءَاللّٰہ عَزَّوَجَلَّ उस का ह़ाफ़िज़ा मज़बूत़ हो जाए और जो बात सुने याद रहे। (ऐज़न, स. 73)

16 **अगर** क़ह़त़ साली हो तो بِسۡمِ اللّٰہِ الرَّحۡمٰنِ الرَّحِیۡمِ 61 बार (अव्वल आख़िर एक बार दुरूद शरीफ़) पढ़ें, (फिर दुआ़ करें) اِنۡ شَآءَاللّٰہ عَزَّوَجَلَّ बारिश होगी। (ऐज़न, स. 73)

17 بِسۡمِ اللّٰہِ الرَّحۡمٰنِ الرَّحِیۡمِ काग़ज़ पर **35** बार (अव्वल आख़िर एक बार दुरूद शरीफ़) लिख कर घर में लटका दें اِنۡ شَآءَاللّٰہ عَزَّوَجَلَّ शैत़ान का गुज़र न हो और ख़ूब बरकत हो। अगर दुकान में लटकाएं तो اِنۡ شَآءَاللّٰہ عَزَّوَجَلَّ कारोबार ख़ूब चमके।

(ऐज़न, स. 73,74)

18 **यकुम** मुहर्रमुल ह़राम को بِسْمِ اللّٰہِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِیْمِ **130** बार लिख कर (या लिखवा कर) जो कोई अपने पास रखे (या प्लास्टिक कोटिंग करवा कर कपड़े, रेग्ज़ीन या चमड़े में सिलवा कर पहन ले, धात की डिबिया में किसी क़िस्म का ता'वीज़ न पहनें इस का मस्अला सफ़ह़ा 69 पर गुज़रा) اِنْ شَآءَاللّٰہ عَزَّوَجَلَّ उ़म्र भर उस को या उस के घर में किसी को कोई बुराई न पहुंचे। (ऐज़न, स. 74)

19 **जिस** औ़रत के बच्चे ज़िन्दा न रहते हों वोह بِسْمِ اللّٰہِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِیْمِ **61** बार लिख कर (या लिखवा कर) अपने पास रखे। (चाहे तो मोमजामा या प्लास्टिक कोटिंग कर के कपड़े, रेग्ज़ीन या चमड़े में सी कर गले में पहन ले या बाज़ू में बांध ले।) اِنْ شَآءَاللّٰہ عَزَّوَجَلَّ बच्चे ज़िन्दा रहेंगे। (ऐज़न, स. 74)

20 بِسْمِ اللّٰہِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِیْمِ **70** बार लिख कर मय्यित के कफ़न में रख दीजिये। اِنْ شَآءَاللّٰہ عَزَّوَجَلَّ मुन्कर नकीर का मुआ़मला आसान हो जाएगा। (बेहतर येह है कि मय्यित के चेहरे के सामने दीवारे क़िब्ला में मेह़राब नुमा ताक़ बना कर उस में रखिये साथ ही अ़हद नामा और मय्यित के पीर साहिब का शजरह वग़ैरा भी रख दीजिये।) (ऐज़न, स. 84)

21 بِسْمِ اللّٰہِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِیْمِ किसी क़ारी या आ़लिम को पढ़ कर सुना दीजिये अगर हुरूफ़ सह़ीह़ मख़ारिज से अदा न होते हों तो सीख लीजिये वरना फ़ाएदे के बदले नुक़्सान का अन्देशा है।

22 **लिखने** में ए'राब लगाने की ज़रूरत नहीं। जब भी पहनने, पीने या लटकाने के लिये बत़ौरे ता'वीज़ कोई आयत या इ़बारत लिखें तो दाएरे वाले हुरूफ़ के दाएरे खुले रखने होंगे। मसलन : "اللّٰہ" में " ہ " का और " رَحْمٰن " और رَحِيْم दोनों में "م" का दाएरा खुला हो।

23 **कपड़े** उतारते वक़्त **बिस्मिल्लाह** पढ़ लेने से जिन्नात सित्र नहीं देख सकते। (عَمَلُ الْيَوْمِ واللیلة لا بن سُنّی ص۸) **कमरे** का दरवाज़ा, खिड़कियां, अलमारी की दरवाज़े जितनी बार भी खोल बन्द करें नीज़ लिबास, बरतन वग़ैरा हर चीज़ रखते उठाते हर बार بِسۡمِ اللّٰہِ الرَّحۡمٰنِ الرَّحِیۡمِ पढ़ने की आ़दत बना लीजिये। اِنۡ شَآءَاللّٰه عَزَّوَجَلَّ सरकश जिन्नात आप के घर में दाख़िले, चोरी और आप की चीज़ें इस्ति'माल करने से बाज़ रहेंगे।

24 **सुवारी** (गाड़ी) फिसले, या उस को झटका लगे तो **बिस्मिल्लाह** कहिये।

25 **सर** में तेल डालने से क़ब्ल بِسۡمِ اللّٰہِ الرَّحۡمٰنِ الرَّحِیۡمِ पढ़ लीजिये वरना **70** शैत़ान सर में तेल डालने में शरीक हो जाते हैं।

26 **घर** का दरवाज़ा बन्द करते वक़्त याद कर के بِسۡمِ اللّٰہِ الرَّحۡمٰنِ الرَّحِیۡمِ पढ़ लीजिये اِنۡ شَآءَاللّٰه عَزَّوَجَلَّ शैत़ान और सरकश जिन्नात घर में दाख़िल न हो सकेंगे। (صحیح بخاری ج۲ ص ۳۱۲)

27 **रात** को खाने पीने के बरतन **बिस्मिल्लाह** शरीफ़ पढ़ कर ढक दीजिये, अगर ढकने के लिये कोई चीज़ न हो तो بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ कह कर बरतन के मुंह पर तिन्का वग़ैरा रख दीजिये। (اَیضاً) **मुस्लिम शरीफ़** की एक रिवायत में है, साल में एक रात ऐसी आती है कि उस में वबा उतरती है जो बरतन छुपा हुवा नहीं है या मश्क का मुंह बंधा हुवा नहीं है अगर वहां से वोह वबा गुज़रती है तो उस में उतर जाती है।

(مسلم ص ١١١٥ رقم الحديث ٢١١٤)

28 **सोने** से क़ब्ल بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ पढ़ कर तीन बार बिस्तर झाड़ लीजिये, اِنْ شَآءَاللّٰه عَزَّوَجَلَّ मूज़िय्यात (या'नी ईज़ा देने वाली चीज़ों) से पनाह ह़ासिल होगी।

29 **कारोबार** में जाइज़ लेन देन के वक़्त या'नी जब किसी से लें तो بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ पढ़ें और जब किसी को दें तो بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ कहें اِنْ شَآءَاللّٰه عَزَّوَجَلَّ ख़ूब बरकत होगी। या रब्बे मुस्तफ़ा ! عَزَّوَجَلَّ हमें بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ की बरकतों से मालामाल फ़रमा और हर नेक व जाइज़ काम की इब्तिदा में بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ पढ़ने की तौफ़ीक़ अ़ता फ़रमा। اٰمِين بِجاهِ النَّبِيِّ الْاَمين صَلَّى اللّٰهُ تعالٰی علیه واٰله وسلَّم

صَلُّوْا عَلَى الْحَبِيْب ! صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلٰى مُحَمَّد

"बिस्मिल्लाह" के सात हुरूफ़ की निस्बत से सात ह़िकायात

(1) लकड़ हारा कैसे मालदार बना ?

एक लकड़ हारा रोज़ाना दरिया पार जा कर लकड़ियां काट कर लाता और बेच कर अपने बाल बच्चों का पेट पालता। पुल चूंकि उस के घर से काफ़ी दूर था इस लिये आने जाने में काफ़ी वक़्त सर्फ़ हो जाता और यूं माली त़ौर पर वोह मुस्तह़्कम नहीं हो पाता था। एक दिन उस ने मस्जिद के अन्दर **मुबल्लिग़** के बयान में بِسۡمِ اللّٰہِ الرَّحۡمٰنِ الرَّحِیۡمِ के अ़ज़ीमुश्शान फ़ज़ाइल सुने, मुबल्लिग़ की येह बात उस के ज़ेह्न में बैठ गई कि "**बिस्मिल्लाह** शरीफ़ की बरकत से बड़े से बड़ा मस्अला ह़ल हो सकता है।" चुनान्चे जब जंगल में जाने का वक़्त हुवा तो **पुल** पर जाने के बजाए بِسۡمِ اللّٰہِ الرَّحۡمٰنِ الرَّحِیۡمِ पढ़ कर वोह **दरिया** में उतर गया और चलता हुवा जल्द ही आसानी के साथ दूसरे कनारे पहोंच गया, लकड़ियां काटने के बा'द उस ने फिर इसी त़रह़ किया **बिस्मिल्लाह** की बरकतों का ज़ुहूर होने लगा और थोड़े ही अ़र्से में वोह **मालदार** हो गया।

(مُلَخَّص از شَمسُ الواعِظِین)

है पाक रुत्बा फ़िक्र से उस बे नियाज़ का
कुछ दख़्ल अ़क़्ल का है न काम इम्तियाज़ का

(ज़ौक़े ना'त)

صَلُّوا عَلَی الْحَبِیْب ! صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلٰی مُحَمَّد

प्यारे प्यारे इस्लामी भाइयो ! येह सब यक़ीने कामिल की बहारें हैं, अगर ए'तिक़ाद मुतज़ल्ज़िल हो तो इस तरह के नताइज बरआमद नहीं हो सकते "यक़ीने कामिल" से मुतअ़ल्लिक़ हुज्जतुल इस्लाम ह़ज़रते सय्यिदुना इमाम मुह़म्मद ग़ज़ाली عَلَیْہِ رَحْمَۃُ اللّٰہِ الْوَالِی ने **सूरए यूसुफ़** की तफ़्सीर में एक इन्तिहाई **सबक़ आमोज़ ह़िकायत** नक़्ल की है। चुनान्चे एक मरतबा बग़दादे मुअ़ल्ला में एक शख़्स ने खड़े हो कर लोगों से एक दिरहम का सुवाल किया, मश्हूर मुह़द्दिस ह़ज़रते **सय्यिदुना इब्ने सम्माक** رَحْمَۃُ اللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہ ने फ़रमाया, तुम को कौन सी सूरह अच्छी त़रह़ याद है ? उस ने कहा, **सूरतुल फ़ातिह़ा**। फ़रमाया, एक बार पढ़ कर उस का सवाब मेरे हाथ बेच दो, मैं इस के बदले अपनी सारी दौलत तुम्हारे ह़वाले कर दूंगा ! साइल कहने लगा, ह़ज़रत ! मैं मजबूर हो कर एक दिरहम का सुवाल करने आया हूं, क़ुरआन बेचने नहीं आया। येह कह कर वोह साइल क़ब्रिस्तान की त़रफ़ चला गया, **बारिश** शुरूअ़ हो गई ह़त्ता कि ओले बरसने लगे, वोह एक छज्जे के नीचे पनाह लेने के लिये लपका, वहां **सब्ज़ लिबास** में मल्बूस एक सुवार पहले ही से मौजूद था उस ने कहा, तुम ने ही **सूरतुल फ़ातिह़ा** का सवाब बेचने से इन्कार किया था ? कहा, जी हां। सुवार ने उस को दस हज़ार दिरहम की थैली दी और कहा "इन को ख़र्च करो ख़त्म होने पर اِنْ شَآءَ اللّٰہ عَزَّوَجَلَّ इतने ही मज़ीद दूंगा। **साइल** ने पूछा "आप कौन हैं ?" सुवार ने बताया "मैं तेरा **यक़ीन** हूं।" येह कह कर सुवार चला गया। (مُلَخَّص ازتفسیرِ سورۂ یوسف لِلغزالی ص ۱۷، ۱۸)

صَلُّوْا عَلَی الْحَبِیْب ! صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلٰی مُحَمَّد

फ़रमाने मुस्तफ़ा صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم : बरोज़े क़ियामत लोगों में से मेरे क़रीब तर वोह होगा जिस ने दुन्या में मुझ पर ज़ियादा दुरूदे पाक पढ़े होंगे। (ترمذی)

यहां उन लोगों को इ़ब्रत ह़ासिल करनी चाहिये जो भीक मांगने के लिये तिलावत करते, पैसे और खाना मिलने की लालच में मह़ाफ़िले ख़त्मे क़ुरआन और इज्तिमाए़ ज़िक्रो ना'त में शिर्कत करते और रक़म मिलने के शौक़ में तरावीह़ में क़ुरआने पाक सुनाते हैं **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ हमें **इख़्लास** व **यक़ीन** की ला ज़वाल दौलत से मालामाल फ़रमाए।

اٰمِین بِجاہِ النَّبِیِّ الْاَمین صَلَّی اللہ تعالٰی علیہ واٰلہٖ وسلَّم

मेरा हर अ़मल बस तेरे वासित़े हो

कर इख़्लास ऐसा अ़त़ा या इलाही !

प्यारे प्यारे इस्लामी भाइयो ! यक़ीनन इख़्लास निहायत ही अ़ज़ीम दौलत है, जिस को मिल जाए उस का बेड़ा पार हो जाए। आ़शिक़ाने रसूल के साथ मदनी क़ाफ़िलों में सुन्नतों भरा सफ़र इख़्तियार कीजिये। اِنْ شَآءَاللہ عَزَّوَجَلَّ आ'माल में इख़्लास पैदा करने की "मदनी सोच" बनेगी और जब आ'माल में इख़्लास पैदा हो जाएगा तो اِنْ شَآءَاللہ عَزَّوَجَلَّ

जल्वे ख़ुद आएं त़ालिबे दीदार की त़रफ़

केसेट इज्तिमाअ़ में दीदारे मुस्त़फ़ा صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم :

दा'वते इस्लामी के तीन रोज़ा बैनल अक़्वामी सुन्नतों भरे इज्तिमाअ़ के इख़्तिताम पर आ़शिक़ाने रसूल के ढेरों **मदनी क़ाफ़िले** सुन्नतों की तरबियत ह़ासिल करने के लिये शहर ब शहर और गाउं ब गाउं रवाना

होते हैं, चुनान्चे एक आ़शिक़े रसूल के बयान का अपने अन्दाज़ में ख़ुलासा पेशे ख़िदमत है। 1423 सि.हि. के बैनल अक़्वामी तीन[3] रोज़ा सुन्नतों भरे इज्तिमाअ़ से आ़शिक़ाने रसूल का एक मदनी क़ाफ़िला 12 दिन के लिये एक अ़लाक़े में पहुंचा, जद्वल के मुत़ाबिक़ एक दिन जब **केसेट इज्तिमाअ़** हुवा तो केसेट का सुन्नतों भरा बयान सुन कर एक आ़शिक़े रसूल पर रिक़्क़त त़ारी हो गई और वोह बिलक बिलक कर रोने लगे यहां तक कि होश जाता रहा, जब इफ़ाक़ा हुवा तो काफ़ी हश्शाश बश्शाश थे, उन्हों ने बताया कि اَلْحَمْدُ لِلّٰه عَزَّوَجَلَّ मुझ गुनहगार पर फ़ैज़ाने करम हुवा और मुझे मदीने के ताजदार صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم के दीदार का शरबत नसीब हो गया। दूसरे दिन फिर **केसेट इज्तिमाअ़** हुवा, उन के साथ वोही कैफ़िय्यत हुई, अब की बार ख़्वाब में वोह ज़ियारते रिसालत मआब صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم से इस त़रह फ़ैज़याब हुए कि मदनी क़ाफ़िले के तमाम मुसाफ़िर भी ह़ाज़िरे ख़िदमत थे।

आंखें जो बन्द हों तो मुक़द्दर खुलें ह़सन

जल्वे ख़ुद आएं त़ालिबे दीदार की त़रफ़ (ज़ौक़े ना'त)

صَلُّوْا عَلَی الْحَبِیْب! صَلَّی اللّٰهُ تَعَالٰی عَلٰی مُحَمَّد

वस्वसा : बा'ज़ लोग ख़्वाब सुना सुना कर लोगों को अपना गिर्वीदा बना लेते हैं, लिहाज़ा जो भी ख़्वाब में ज़ियारत का दा'वा करे उस पर

आंखें बन्द कर के ए'तिमाद नहीं करना चाहिये कम अज़् कम उस से क़सम तो लेनी ही चाहिये।

इलाजे वस्वसा : सह़ीह़ बुख़ारी शरीफ़ की सब से पहली ह़दीस है : اِنَّمَا الْاَعْمَالُ بِالنِّيَّات या'नी आ'माल का दारो मदार निय्यतों पर है। तो अगर कोई हुब्बे जाह के बाइस लोगों को अपना ख़्वाब सुनाता, अपनी शोहरत और वाह ! वाह चाहता है तो वाक़ेई मुजरिम है। और अगर अच्छी निय्यत से सुनाता है, मसलन : **दा'वते इस्लामी** के सुन्नतों की तरबियत के मदनी क़ाफ़िले में ख़ुश क़िस्मती से किसी ने अच्छा ख़्वाब देखा अब वोह इस लिये सुना रहा है ताकि इस गए गुज़रे दौर में लोगों को राहे ख़ुदा عَزَّوَجَلَّ में सफ़र की तरग़ीब मिले और उन्हें इत़्मीनान की दौलत नसीब हो कि दा'वते इस्लामी अहले ह़क़ और आ़शिक़ाने रसूल की सुन्नतों भरी तह़रीक है और यूं इस से वाबस्ता हो कर अपने ईमान की ह़िफ़ाज़त का सामान करें। येह निय्यत मह़मूद है और इस निय्यत से ख़्वाब सुनाने वाले को اِنْ شَآءَاللّٰہ عَزَّوَجَلَّ सवाब मिलेगा। नीज़ तह़्दीसे ने'मत या'नी ने'मत का चरचा करने की निय्यत से सुनाता है तब भी जाइज़ है। हां अगर रियाकारी का ख़ौफ़ हो तो अपना नाम ज़ाहिर न करे कि इस में ज़ियादा आ़फ़िय्यत है। बहर ह़ाल दिल की निय्यत का ह़ाल **अल्लाह ज़ुल जलाल** عَزَّوَجَلَّ जानता है, मुसल्मान के बारे में बिला वज्ह बद गुमानी करना ह़राम और जहन्नम में ले जाने वाला काम है, बद गुमानी की

क़ुरआने पाक और अह़ादीसे मुबारका में मज़म्मत वारिद हुई है। चुनान्चे पारह : **26 सूरतुल ह़ुजुरात** की बारहवीं आयत में इर्शादे रब्बानी है :

يٰۤاَیُّهَا الَّذِیْنَ اٰمَنُوا اجْتَنِبُوْا كَثِیْرًا مِّنَ الظَّنِّ٘ اِنَّ بَعْضَ الظَّنِّ اِثْمٌ

तरजमए कन्ज़ुल ईमान : ऐ ईमान वालो ! बहुत गुमानों से बचो बेशक कोई गुमान गुनाह हो जाता है।

ह़दीसे पाक में है, "बद गुमानी से बचो, क्यूं कि बद गुमानी सब से ज़ियादा झूटी बात है।" (صحیح بخاری شریف ج ٦ ص ١٦٦ رقم الحدیث ٥١٤٣)

मेरे आक़ा आ'ला ह़ज़रत عَلَیْہِ رَحْمَۃُ رَبِّ الْعِزَّت फ़तावा रज़विय्या शरीफ़ में नक़्ल करते हैं, "ह़ज़रते सय्यिदुना ईसा रूहुल्लाह عَلٰی نَبِیِّنَا وَعَلَیْہِ الصَّلٰوۃُ وَالسَّلَام ने एक शख़्स को चोरी करते हुए देख लिया तो फ़रमाया, "क्या तूने चोरी नहीं की ?" उस ने कहा, "ख़ुदा عَزَّوَجَلَّ की क़सम ! मैं ने चोरी नहीं की," येह सुन कर आप عَلَیْہِ السَّلَام ने फ़रमाया, "वाक़ेई तूने चोरी नहीं की मेरी आंखों ने धोका खाया।

प्यारे प्यारे इस्लामी भाइयो ! इस ह़िकायत से **एह़तिरामे मुस्लिम** की अहम्मिय्यत का बख़ूबी अन्दाज़ा लगाया जा सकता है, कि शरीअ़त के दाएरे में रहते हुए मुसल्मान की पर्दा पोशी की जाए येह न हो कि बे सबब उस पर बद गुमानी का दरवाज़ा खोल कर उसे झूटा और गप्पी वग़ैरा क़रार दे कर अपनी आख़िरत को दाव पर

लगाते हुए ख़ुद को مَعَاذَ اللّٰه عَزَّوَجَلَّ जहन्नम का ह़क़दार बना दिया जाए।

تُوْبُوْا اِلَى اللّٰهِ! اَسْتَغْفِرُ اللّٰه

झूटा ख़्वाब सुनाने का अ़ज़ाब : बिलफ़र्ज़ कोई झूटा ख़्वाब घड़ कर सुनाता भी है तो इस का वोह ख़ुद ही ज़िम्मादार, सख़्त गुनहगार और अ़ज़ाबे नार का ह़क़दार है। **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ के मह़बूब, दानाए ग़ुयूब, मुनज़्ज़हुन अ़निल उ़यूब صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم का फ़रमाने इ़ब्रत निशान है, "जो झूटा ख़्वाब बयान करे उसे बरोज़े क़ियामत जव के दो[2] दानों में गांठ लगाने की तक्लीफ़ दी जाएगी और वोह हरगिज़ गांठ नहीं लगा पाएगा।"

(صحیح بخاری ج ۸ص۱۰۶ رقم الحدیث ۷۰۴۲)

बे सोचे समझे बोल पड़ने वालो ख़बरदार ! : एक और ह़दीसे पाक में है, एक शख़्स ऐसा कलाम करता है जिस में वोह ग़ौरो फ़िक्र नहीं करता (ह़ालांकि येह गुफ़्त्गू, झूट, ग़ीबत, ऐबजूई या मन घड़त ख़्वाब वग़ैरा ह़राम पर मब्नी होती है।) तो वोह इस बात के सबब जहन्नम में इस मिक़्दार से भी ज़ियादा गिरेगा जिस क़दर मश्रिक़ो मग़रिब के दरमियान फ़ासिला है। (صحیح بخاری ج۷ص۲۳۶ رقم الحدیث ٦٤٧٧)

ख़्वाब सुनाने वाले से क़सम का मुत़ालबा शरअ़न वाजिब नहीं। और जो مَعَاذَ اللّٰه عَزَّوَجَلَّ झूटा होगा, हो सकता है वोह झूटी क़सम भी खा ले।

वस्वसा : येही मुनासिब लगता है कि लोगों में बयान करने के बजाए ख़्वाब को सीग़ए राज़ में रखा जाए।

इलाजे वस्वसा : क्या मुनासिब है और क्या मुनासिब नहीं, इस को बुज़ुर्गाने दीन رَحِمَهُمُ اللّٰهُ الْمُبِین हम से ज़ियादा बेहतर समझते थे। अच्छे ख़्वाब बयान करने से शरीअ़त ने मन्अ़ नहीं फ़रमाया तो हम कौन हैं रोकने वाले ! क़ुरआने करीम, अहादीसे मुबारका, और बुज़ुर्गाने दीन رَحِمَهُمُ اللّٰهُ الْمُبِین की किताबों में ख़्वाबों का बकसरत तज़्किरा है। हज़रते सय्यिदुना इमाम अबुल क़ासिम क़ुशैरी رَحْمَةُ اللّٰهِ تَعَالٰى عَلَيْه ने **रिसालए क़ुशैरिय्या** में "रुअ्यल क़ौम" नामी बाब में सफ़्हा 368 ता 377 पर औलियाए किराम के **66** ख़्वाब नक़्ल किये हैं। हुज्जतुल इस्लाम हज़रते सय्यिदुना इमाम मुहम्मद ग़ज़ाली عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللّٰهِ الْوَالِی ने **एह़्याउल उ़लूम** की चौथी जिल्द के सफ़्हा नम्बर 540 ता 543 पर "मनामातुल मशाइख़" नामी बाब में **49** ख़्वाब नक़्ल किये हैं। नीज़ "ह़याते आ'ला ह़ज़रत" (मत़्बूआ़ मक्तबए नबविय्या गंज बख़्श रोड, लाहौर) के **सफ़्हा नम्बर 424 ता 432 पर मेरे आक़ा आ'ला ह़ज़रत, इमामे अहले सुन्नत, वलिय्ये ने'मत, अ़ज़ीमुल बरकत, अ़ज़ीमुल मर्तबत, परवानए शम्ए़ रिसालत, मुजद्दिदे दीनो मिल्लत, ह़ामिये सुन्नत, माहिये बिद्अ़त, आ़लिमे शरीअ़त, पीरे त़रीक़त, बाइसे ख़ैरो बरकत, ह़ज़रते अ़ल्लामा मौलाना अलह़ाज अल ह़ाफ़िज़ अल क़ारी शाह इमाम अह़मद रज़ा ख़ान** عَلَيْهِ رَحْمَةُ الرَّحْمٰن के **14** ख़्वाब ख़ुद आप ही की ज़बानी मरवी हैं। उन में से एक ख़्वाब के ज़िम्न में अ़र्ज़ है,

आ'ला ह़ज़रत رَحْمَۃُ اللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہ **का ख़्वाब : सरकारे आ'ला ह़ज़रत** رَحْمَۃُ اللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہ ने दो[2] हाथ से मुसाफ़ह़ा के जवाज़ में **40** सफ़ह़ात का रिसाला बनाम "صَفَائِحُ اللُّجَیْن فِیْ کَوْنِ تَصَافُحِ بِکَفِّی الْیَدَیْن" (या'नी चांदी के पत्तर दोनों हाथों की हथेलियों से मुसाफ़ह़ा करने के बयान में) तह़रीर फ़रमाया है, उस के सफ़ह़ा नम्बर 3 पर अपना वोह ख़्वाब मुफ़स्सल तौर पर बयान फ़रमाया है जिस में आप رَحْمَۃُ اللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہ को ह़ज़रते सय्यिदुना इमाम क़ाज़ी ख़ान عَلَیْہِ رَحْمَۃُ الْحَنَّان की ज़ियारत हुई है। नीज़ मुसल्मानों को वसाविस से बचाने और उन की मा'लूमात में इज़ाफ़ा फ़रमाने की ख़ातिर इसी रिसालए मुबारका में लोगों के आगे ख़्वाब बयान करने के बारे में दलाइल क़ाइम किये हैं। चुनान्चे मज़्कूरा रिसाले में फ़रमाते हैं :

आज किस ने ख़्वाब देखा ? : अह़ादीसे **सह़ीह़ा** से साबित ह़ुज़ूरे अक़्दस सय्यिदे आ़लम صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم इसे (या'नी ख़्वाब को) अम्रे अ़ज़ीम जानते और इस के सुनने, पूछने, बताने, बयान फ़रमाने में निहायत दरजे का एहतिमाम फ़रमाते। सह़ीह़ बुख़ारी वग़ैरा में ह़ज़रते समुरह बिन जुन्दब رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ से है, ह़ुज़ूरे पुरनूर صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم नमाज़े सुब्ह़ पढ़ कर ह़ाज़िरीन से दरयाफ़्त फ़रमाते, "आज की शब किसी ने कोई ख़्वाब देखा ?" जिस किसी ने देखा होता अ़र्ज़ कर देता, ह़ुज़ूर صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ता'बीर फ़रमाते। (صحیح بخاری ج۲ص۱۲۷رقم الحدیث۱۳۸۶)

सरकारे आ'ला ह़ज़रत رَحْمَۃُ اللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہ मज़ीद फ़रमाते हैं, "अह़मद व बुख़ारी व तिरमिज़ी ह़ज़रते अबू सईद ख़ुदरी رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ से रावी, हुज़ूरे अक़्दस صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم फ़रमाते हैं, "जब तुम में से कोई ऐसा ख़्वाब देखे जो उसे प्यारा मा'लूम हो तो वोह **अल्लाह** तआला की त़रफ़ से है, चाहिये कि इस पर **अल्लाह** तआला की ह़म्द बजा लाए और **लोगों के सामने बयान करे।** (مُسندِ امام احمد ج٢ص ٥٠٢ رقم الحدیث ٦٢٢٣)

बिशारतें बाक़ी हैं : सरकारे आ'ला ह़ज़रत رَحْمَۃُ اللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہ मज़्कूरा रिसाले में नक़्ल फ़रमाते हैं : "हुज़ूर मुफ़ीज़ुन्नूर صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم फ़रमाते हैं, "नुबुव्वत गई, अब मेरे बा'द नुबुव्वत न होगी। मगर बिशारतें। वोह क्या हैं ? नेक ख़्वाब कि आदमी ख़ुद देखे या उस के लिये देखी जाए। (طبرانی اَلْمُعْجَمُ الکبیر ج٣ص ١٧٩ رقم الحدیث ٣٠٥١)

अपने बारे में अच्छा ख़्वाब देखने वाले को इन्आम :

सरकारे आ'ला ह़ज़रत رَحْمَۃُ اللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہ मज़ीद फ़रमाते हैं, "येह भी सुन्नते सह़ाबा عَلَیْہِمُ الرِّضْوَان से साबित, कि जो ख़्वाब ऐसा देखा गया जिस में उन के क़ौल की ताईद निकली इस पर शाद (या'नी ख़ुश) हुए और देखने वाले की तौक़ीर (इ़ज़्ज़तो अहम्मिय्यत) बढ़ा दी। **सह़ीह़ैन** में है, "अबू **जमरह ज़ब्ई** رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ने **तमत्तोअ़** ह़ज में ख़्वाब देखा, जिस से (फ़िक़्ही मसाइल में) मज़्हबे इब्ने अ़ब्बास رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُمَا की ताईद हुई। इब्ने

अ़ब्बास رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْهُمَا ने (वोह मुबारक ख़्वाब सुन कर अपने माल से) उन का वज़ीफ़ा मुक़र्रर कर दिया। और उस रोज़ से उन्हें अपने साथ तख़्त पर बिठाना शुरूअ़ किया। (مُلَخَّصاً از صحیح بُخاری ج۲ ص۱۸۶ رقم الحدیث۱۵۶۷)

अल्लाह عَزَّوَجَلَّ की उन पर रह़मत हो और उन के सदक़े हमारी मग़्फ़िरत हो।

इमाम बुख़ारी की वालिदा का ख़्वाब : प्यारे प्यारे इस्लामी भाइयो ! आप ने दूसरों को ख़्वाब सुनाने के ज़िम्न में सह़ीह़ बुख़ारी शरीफ़ के ह़वाले से भी दो[2] रिवायात मुलाह़ज़ा फ़रमाईं। सह़ीह़ बुख़ारी शरीफ़ के मुअल्लिफ़ ह़ज़रते सय्यिदुना शैख़ अबू अ़ब्दुल्लाह मुह़म्मद बिन इस्माईल बुख़ारी عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللّٰهِ الْبَارِى ने निहायत ही अ़रक़ रेज़ी के साथ अह़ादीसे मुबारका की तदवीन फ़रमाई, आप رَحْمَةُ اللّٰهِ تَعَالٰى عَلَيْه ख़ुद फ़रमाते हैं, "اَلْحَمْدُ لِلّٰه عَزَّوَجَلَّ" मैं ने "सह़ीह़ बुख़ारी" में तक़रीबन छ हज़ार[6000] अह़ादीसे शरीफ़ा ज़िक्र की हैं, "हर ह़दीस को लिखने से क़ब्ल ग़ुस्ल कर के **दो[2] रक्अ़तें** नमाज़ अदा कर लिया करता था।" आप رَحْمَةُ اللّٰهِ تَعَالٰى عَلَيْه के वालिदे माजिद ह़ज़रते सय्यिदुना शैख़ इस्माईल رَحْمَةُ اللّٰهِ تَعَالٰى عَلَيْه बहुत नेक आदमी थे और आप की वालिदए माजिदा رَحْمَةُ اللّٰهِ تعالٰى عَلَيْهَا सालेह़ा और मुजाबतुद्दुआ़ (या'नी वोह ख़ातून जिस की दुआ़ क़बूल होती हो) थीं। बचपन शरीफ़ में ह़ज़रते सय्यिदुना इमाम बुख़ारी عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللّٰهِ الْبَارِى की बीनाई जाती रही। वालिदए माजिदा رَحْمَةُ اللّٰهِ تَعَالٰى عَلَيْهَا इस सदमे से रोती

रहतीं और गिड़गिड़ा कर दुआ मांगा करतीं। एक रात सोते में क़िस्मत का सितारा चमक उठा, दिल की आंखें खुल गईं, ख़्वाब में देखा कि ह़ज़रते सय्यिदुना इब्राहीम ख़लीलुल्लाह عَلٰی نَبِیِّنَا وَعَلَیْہِ الصَّلٰوۃُ وَالسَّلَام तशरीफ़ लाए हैं और फ़रमा रहे हैं, ''आप अपने बेटे की बीनाई की वापसी के लिये दुआएं मांगती रही हैं। मुबारक हो कि आप की दुआ क़बूल हो चुकी है। **अल्लाह** तबारक व तआला ने आप के बेटे की बीनाई बह़ाल फ़रमा दी है।'' जब सुब्ह़ हुई और देखा तो ह़ज़रते सय्यिदुना इमाम बुख़ारी عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللهِ الْبَارِى की आंखें रोशन हो चुकी थीं।

(مُلَخَّص از تفهيمُ البُخارى ج اوّل ص ٤، مُؤَلِّف شيخ الحديث علّامه غُلام رسول رضوى)

अल्लाह عَزَّوَجَلَّ **की उन पर रह़मत हो और उन के सदक़े हमारी मग़्फ़िरत हो।**

صَلُّوا عَلَى الْحَبِيب! صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلٰى مُحَمَّد

(2) यहूदी और यहूदन की दिलचस्प ह़िकायत

एक यहूदी एक यहूदन पर आ़शिक़ हो गया और उस के इ़श्क़ में मजनून की मिस्ल हो गया कि खाने पीने तक का होश न रहता। आख़िरश ह़ज़रते सय्यिदुना **अ़ताउल अक्बर** عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللهِ الدَّاوَر की ख़िदमते बा बरकत में ह़ाज़िर हो कर अपना ह़ाल अ़र्ज़ किया, आप رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰى عَلَيْه ने एक काग़ज़ के पुर्ज़े पर بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْم लिख कर दी और फ़रमाया,

इस को निगल जाओ इस उम्मीद पर कि **अल्लाह** तआ़ला तुम्हें उस के मुआ़मले में तसल्ली अ़ता फ़रमा दे या तुम्हें उस से नवाज़ दे। जब उस **यहूदी** ने उसे निगल लिया, (बस निगलते ही उस के दिल में मदनी इन्क़िलाब आ गया चुनान्चे उस ने) अ़र्ज़ की, "ऐ अ़ता ! رَحْمَةُ اللّٰهِ تَعَالٰی عَلَیْه मैं ने ह़लावते ईमान (या'नी ईमान की मिठास) को पा लिया और मेरे दिल में नूर ज़ाहिर हो चुका, मैं उस औ़रत (के इ़श्क़) को भूल चुका, मुझे **इस्लाम** के बारे में आगाह फ़रमाइये। सय्यिदुना अ़ता رَحْمَةُ اللّٰهِ تَعَالٰی عَلَیْه ने उस पर इस्लाम पेश किया। और येह **बिस्मिल्लाह** की बरकत से मुसल्मान हो गया। उधर उस **यहूदन** ने जब उस की इस्लाम आवरी की ख़बर सुनी तो ह़ज़रते सय्यिदुना अ़त़ाउल अक्बर عَلَیْهِ رَحْمَةُ اللّٰهِ الدَّاوَر की बारगाहे आ़ली में ह़ाज़िर हो कर अ़र्ज़ गुज़ार हुई, "ऐ इमामल मुस्लिमीन ! मैं ही वोह औ़रत हूं जिस का तज़्किरा इस्लाम क़बूल करने वाले यहूदी ने आप رَحْمَةُ اللّٰهِ تَعَالٰی عَلَیْه से किया और मैं ने गुज़श्ता शब ख़्वाब देखा कि एक आने वाला मेरे पास आ कर कहने लगा, "अगर तू जन्नत में अपना ठिकाना देखना चाहती है तो सय्यिदुना अ़त़ाउल अक्बर عَلَیْهِ رَحْمَةُ اللّٰهِ الدَّاوَر की ख़िदमत में ह़ाज़िर हो जा वोह तुझे तेरा ठिकाना दिखा देंगे।" तो मैं आप رَحْمَةُ اللّٰهِ تَعَالٰی عَلَیْه की बारगाह में ह़ाज़िर हुई हूं इर्शाद फ़रमाइये, "जन्नत कहां है ?" इर्शाद फ़रमाया, "अगर **जन्नत** का

इरादा है तो पहले तुझे उस का दरवाज़ा खोलना होगा इस के बा'द ही तू उस (अपने ठिकाने) की त़रफ़ जा सकेगी ।" अ़र्ज़ किया, "मैं उस का दरवाज़ा किस त़रह़ खोल सकूंगी ?" इर्शाद फ़रमाया, "بِسۡمِ اللّٰهِ الرَّحۡمٰنِ الرَّحِيۡمِ पढ़ ।" उस ने **बिस्मिल्लाह** शरीफ़ पढ़ी । (बस पढ़ते ही उस के दिल में मदनी इन्क़िलाब बरपा हो गया चुनान्चे) कहने लगी, "ऐ अ़ता (رَحْمَةُ اللّٰهِ تَعَالٰى عَلَيْه) ! मैं ने अपने दिल में नूर पा लिया और **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ की ख़ुदाई को देख लिया, मुझे **इस्लाम** से आगाह फ़रमाइये ।" आप رَحْمَةُ اللّٰهِ تَعَالٰى عَلَيْه ने उस पर इस्लाम पेश किया तो **बिस्मिल्लाह** शरीफ़ की बरकत से वोह भी मुसल्मान हो गई, फिर अपने घर लौटी । उसी रात जब सोई तो आ़लमे ख़्वाब में जन्नत में दाख़िल हुई और उस ने **जन्नत** के मह़ल और गुम्बद देखे और उन में से एक गुम्बद पर लिखा था : بِسۡمِ اللّٰهِ الرَّحۡمٰنِ الرَّحِيۡم لَآ اِلٰهَ اِلَّا اللّٰهُ مُحَمَّدٌ رَّسُوۡلُ اللّٰهِ (صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم) उस ने इसे (या'नी इस इ़बारत को) पढ़ा तो एक मुनादी कह रहा था, "ऐ पढ़ने वाली ! जो तूने पढ़ा, **अल्लाह** तआ़ला ने इसी त़रह़ सब का सब तुझे अ़त़ा फ़रमा दिया ।" औ़रत जाग उठी और अ़र्ज़ किया, "**या इलाही** عَزَّوَجَلَّ ! मैं जन्नत में दाख़िल हो चुकी थी फिर तूने मुझे इस से बाहर निकाल दिया । ऐ **अल्लाह** (عَزَّوَجَلَّ) ! अपनी कुदरते कामिला के वासित़े मुझे ग़मे दुन्या से नजात अ़त़ा फ़रमा" । जब अपनी दुआ़ से

फ़ारिग़ हुई तो घर की छत उस पर गिर पड़ी और येह शहीद हो गई। तो **अल्लाह** तआला ने بِسۡمِ اللّٰہِ الرَّحۡمٰنِ الرَّحِیۡمِ की बरकत से उस पर रहम फ़रमाया। (قلیوبی حکایت۲٦ ص ۲۲،۲۳،)

अल्लाह عَزَّوَجَلَّ की उन पर रहमत हो और उन के सदक़े हमारी मग़्फ़िरत हो।

صَلُّوۡا عَلَی الۡحَبِیۡب! صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلٰی مُحَمَّد

تُوۡبُوۡا اِلَی اللّٰہِ! اَسۡتَغۡفِرُ اللّٰہ

صَلُّوۡا عَلَی الۡحَبِیۡب! صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلٰی مُحَمَّد

बिस्मिल्लाह की बरकत है कितनी अच्छी क़िस्मत है
हम ने पाई जन्नत है येह सब रब عَزَّوَجَلَّ की रहमत है

प्यारे प्यारे इस्लामी भाइयो! अल्लाह عَزَّوَجَلَّ की रहमत बहुत बड़ी है, वोह अपने फ़ज़्लो करम से अपने वलियों के आस्तानों पर भेज कर बड़े से बड़े बिगड़े हुए की भी बिगड़ी बना देता है। اَلۡحَمۡدُ لِلّٰہ عَزَّوَجَلَّ तब्लीग़े कुरआनो सुन्नत की आ़लमगीर ग़ैर सियासी तह़रीक **दा'वते इस्लामी** का बच्चा बच्चा औलियाउल्लाह رَحِمَهُمُ اللّٰهُ تَعَالٰی की गुलामी पर नाज़ां है।

मक़्बूल जहां भर में हो "दा'वते इस्लामी"
सदक़ा तुझे ऐ रब्बे ग़फ़्फ़ार عَزَّوَجَلَّ मदीने का

صَلُّوۡا عَلَی الۡحَبِیۡب! صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلٰی مُحَمَّد

(3) बुज़ुर्ग पहलवान

एक काफ़िर डाकू किसी शानदार महल में दाख़िल हुवा, वहां एक बूढ़े बुज़ुर्ग और उन की एक नौ जवान बेटी के सिवा कोई न था, उस ने इरादा किया कि उन बुज़ुर्ग رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰى عَلَيْه को शहीद कर के उन की लड़की पर बमअ़ मालो दौलत क़ाबिज़ हो जाऊं, चुनान्चे उस ने ह़म्ला कर दिया, मगर **वोह बुज़ुर्ग** رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰى عَلَيْه तो **पहलवान** निकले ! उन्हों ने फ़ौरन उस नौ जवान डाकू को चारों ख़ाने चित गिरा दिया ! डाकू किसी त़रह़ आज़ाद हो कर फिर ह़म्ला आवर हो गया मगर **बुज़ुर्ग पहलवान** رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰى عَلَيْه दोबारा ह़ावी हो गए ! इस त़रह़ कुश्ती चलती रही, हर बार वोह ज़ईफ़ुल उ़म्र बुज़ुर्ग رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰى عَلَيْه ही काम्याब होते रहे, डाकू ने मह़सूस किया कि वोह बुज़ुर्ग رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰى عَلَيْه आहिस्ता आहिस्ता कुछ पढ़ रहे हैं, उस ने पूछा, क्या पढ़ते हो ? उन्हों ने अपनी पहलवानी का राज़ फ़ाश करते हुए मुस्कुरा कर फ़रमाया, मैं इन्तिहाई कमज़ोर शख़्स हूं, بِسْمِ اللهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ पढ़ता हूं तो तुम पर **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ ग़लबा अ़त़ा फ़रमा देता है। जब उस काफ़िर डाकू ने येह सुना तो उस के दिल में **मदनी इन्क़िलाब** बरपा हो गया, और कहने लगा, जिस दीन में **फ़ैज़ाने बिस्मिल्लाह** की येह शान है तो ख़ुद उस दीन की

न जाने क्या आन बान होगी ! लिहाज़ा वोह بِسۡمِ اللّٰہِ الرَّحۡمٰنِ الرَّحِیۡمِ सुनने की बरकत से मुसल्मान हो गया। उन के आपस में गहरे मुरासिम हो गए यहां तक कि उन बुज़ुर्ग رَحْمَةُ اللّٰهِ تَعَالٰى عَلَيْه के इन्तिक़ाल के बा'द वोह **शानदार महल** और सारी दौलत उसी **नौ मुस्लिम** को मिल गई और उस बुज़ुर्ग رَحْمَةُ اللّٰهِ تَعَالٰى عَلَيْه की बेटी से उस की शादी हो गई।

(مُلَخَّص از اسرار الفاتحة ص ١٦٥)

अल्लाह عَزَّوَجَلَّ **की उन पर रहमत हो और उन के सदक़े हमारी मग़्फ़िरत हो।**

हम्द है उस ज़ात को जिस ने मुसल्मां कर दिया

इश्क़े सुल्ताने जहां सीने में पिन्हां कर दिया

(क़बालए बख़्शिश)

प्यारे प्यारे इस्लामी भाइयो ! वोह बुज़ुर्ग यक़ीनन वलिय्युल्लाह थे और بِسۡمِ اللّٰہِ الرَّحۡمٰنِ الرَّحِیۡمِ की बरकत से वोह काफ़िर पर ग़लबा पा लेते थे जो कि उन की करामत थी और बिल आख़िर بِسۡمِ اللّٰہِ الرَّحۡمٰنِ الرَّحِیۡمِ की बरकत से काफ़िर डाकू को इस्लाम की अज़ीम ने'मत मुयस्सर आ गई। अब एक **बिस्मिल्लाह** की दीवानी की ईमान अफ़्रोज़ हिकायत सुनिये और झूमिये :

صَلُّوۡا عَلَى الۡحَبِیۡب ! صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلٰى مُحَمَّد

(4) कूंएं से थेली कैसे निक्ली ?

एक नेक ख़ातून थीं जो बात बात पर بِسۡمِ اللّٰهِ الرَّحۡمٰنِ الرَّحِیۡمِ पढ़ा करती थीं, उन का शोहर जो कि **मुनाफ़िक़** था वोह उन की इस आ़दत से बहुत चिड़ता था, आख़िरे कार उस ने येह तै किया कि मैं अपनी ज़ौजा को ऐसा ज़लील करूंगा कि याद करेगी। चुनान्चे इस ने उस को एक थेली देते हुए कहा, संभाल कर रख लो, ख़ातून ने वोह थेली ब हिफ़ाज़त रख ली, शोहर ने मौक़अ़ पा कर वोह थेली उठा ली और अपने घर के **कूंएं** में फेंक दी ताकि मिलने का सुवाल ही न रहे। इस के बा'द उस ने उन से थेली त़लब की। येह नेक बन्दी थेली की जगह आई और जूं ही **बिस्मिल्लाह** कहा, तो **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ ने **जिब्रील** عَلَیۡهِ السَّلَام को हुक्म दिया कि तेज़ी के साथ जाओ और थेली उसी जगह रख दो। चुनान्चे सय्यिदुना जिब्रईल عَلَیۡهِ السَّلَام ने आनन फ़ानन थेली कूंएं से निकाल कर उस की जगह रख दी। जब ख़ातून ने उठाने के लिये हाथ बढ़ाया तो थेली को वैसे ही पाया कि जैसे रखा था। शोहर थेली पा कर सख़्त मुतअ़ज्जिब हुवा और **अल्लाह** तआ़ला से उस ने सच्चे दिल से **तौबा** की।

(क़ल्यूबी, हिकायत : 11, स. : 11, 12)

अल्लाह عَزَّوَجَلَّ **की उन पर रह़मत हो और उन के सदक़े हमारी मग़्फ़िरत हो।**

صَلُّوۡا عَلَی الۡحَبِیۡب ! صَلَّی اللّٰهُ تَعَالٰی عَلٰی مُحَمَّد

फ़रमाने मुस्त़फ़ा صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم : जिस के पास मेरा ज़िक्र हो और वोह मुझ पर दुरूद शरीफ़ न पढ़े तो वोह लोगों में से कन्जूस तरीन शख़्स है। (مسند احمد)

प्यारे प्यारे इस्लामी भाइयो ! येह सब **बिस्मिल्लाह** की बहारें हैं कि उठते बैठते और हर जाइज़ व साहि़बे शान छोटे बड़े काम से क़ब्ल जो ख़ुश नसीब بِسۡمِ اللّٰہِ الرَّحۡمٰنِ الرَّحِیۡمِ पढ़ता रहता है मुसीबत के वक़्त उस की ग़ैब से मदद की जाती है।

मह़ब्बत में ऐसा गुमा या इलाही

न पाऊं फिर अपना पता या इलाही

(5) फ़िरऔ़न का मह़ल

फ़िरऔ़न ने ख़ुदाई के दा'वे से पहले मह़ल बनाया था और उस के बाहरी दरवाज़े पर بِسۡمِ اللّٰہِ الرَّحۡمٰنِ الرَّحِیۡمِ लिखवाया था, जब उस ने ख़ुदाई का दा'वा किया और **ह़ज़रते सय्यिदुना मूसा कलीमुल्लाह** عَلٰی نَبِیِّنَا وَعَلَیْہِ الصَّلٰوۃُ وَالسَّلَام ने उस को **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ पर ईमान लाने की दा'वत दी, तो उस ने सरकशी की। ह़ज़रते सय्यिदुना मूसा कलीमुल्लाह عَلٰی نَبِیِّنَا وَعَلَیْہِ الصَّلٰوۃُ وَالسَّلَام ने **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ की बारगाह में अ़र्ज़ किया, "**या अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ मैं बार बार इसे तेरी त़रफ़ बुलाता हूं लेकिन येह सरकशी से बाज़ नहीं आता, मुझे तो इस में भलाई के आसार नज़र नहीं आते।" **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ ने फ़रमाया, "**ऐ मूसा** عَلٰی نَبِیِّنَا وَعَلَیْہِ الصَّلٰوۃُ وَالسَّلَام तुम इसे हलाक कर देना चाहते हो, तुम इस के कुफ़्र को देख रहे हो और मैं अपना नाम देख रहा हूं जो इस ने अपने दरवाज़े पर लिख रखा है!

(تفسیر کبیر ج اول ص ۱۵۲)

घर की हिफ़ाज़त के लिये : प्यारे प्यारे इस्लामी भाइयो ! हमें चाहिये कि हम अपने घर के दरवाज़े पर بِسۡمِ اللّٰہِ الرَّحۡمٰنِ الرَّحِیۡمِ लिख लें اِنۡ شَآءَ اللّٰہ عَزَّوَجَلَّ हर तरह की दुन्यवी आफ़तों से हिफ़ाज़त होगी। हज़रते सय्यिदुना इमाम फ़ख़्रुद्दीन राज़ी رَحۡمَۃُ اللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیۡہِ फ़रमाते हैं, "जिस ने अपने घर के बाहरी दरवाज़े (MAIN GATE) पर بِسۡمِ اللّٰہِ الرَّحۡمٰنِ الرَّحِیۡمِ लिख लिया वोह (सिर्फ़ दुन्या में) हलाकत से बे ख़ौफ़ हो गया ख़्वाह काफ़िर ही क्यूं न हो, तो भला उस मुसलमान का क्या आलम होगा जो ज़िन्दगी भर अपने **दिल** के आबगीने पर इस को लिखे हुए होता है।" (تفسیرِ کبیر ج اول ص ۱۵۲)

صَلُّوۡا عَلَی الۡحَبِیۡب ! صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلٰی مُحَمَّد

(6) आप इन्सान हैं या जिन्न ?

किताबुन्नसाएह में है, मश्हूर सहाबी हज़रते सय्यिदुना **अबुद्दर्दा** رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنۡہُ की कनीज़ ने एक दिन अर्ज़ किया, "हुज़ूर ! सच बताइये कि **आप इन्सान हैं या जिन्न ?**" फ़रमाया, "اَلۡحَمۡدُ لِلّٰہ عَزَّوَجَلَّ मैं इन्सान ही हूं।" कहने लगी, "मुझे तो इन्सान नहीं लगते क्यूं कि मैं चालीस40 दिन से लगातार आप को **ज़हर** खिला रही हूं मगर आप का बाल तक बीका नहीं हुवा !" फ़रमाया, "क्या तुझे मा'लूम नहीं जो लोग हर हाल में ज़िक्रुल्लाह عَزَّوَجَلَّ करते रहते हैं उन को कोई चीज़ नुक़्सान नहीं पहुंचा सकती और मैं اَلۡحَمۡدُ لِلّٰہ عَزَّوَجَلَّ इस्मे आ'ज़म के साथ **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ का ज़िक्र करता हूं।

पूछा, "वोह इस्मे आ'ज़म कौन सा है ?" फ़रमाया, (मैं हर बार खाने पीने से क़ब्ल येह पढ़ लिया करता हूं) :

بِسۡمِ اللّٰهِ الَّذِىۡ لَا يَضُرُّ مَعَ اسۡمِهٖ شَىۡءٌ فِى الۡاَرۡضِ وَلَا فِى السَّمَآءِ وَهُوَ السَّمِيۡعُ الۡعَلِيۡمُ

(या'नी **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ के नाम से शुरूअ़ करता हूं जिस के नाम की बरकत से ज़मीनो आस्मान की कोई चीज़ नुक़्सान नहीं पहुंचा सकती और वोह सुनने जानने वाला है)

इस के बा'द आप رَضِىَ اللّٰهُ تَعَالٰى عَنْهُ ने इस्तिफ़्सार फ़रमाया कि तूने किस वज्ह से मुझे **ज़हर** दिया ? अ़र्ज़ किया, "मुझे आप से बुग़्ज़ था।" येह जवाब सुनते ही आप رَضِىَ اللّٰهُ تَعَالٰى عَنْهُ ने फ़रमाया, तू लि वज्हिल्लाह (या'नी **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ के लिये) आज़ाद है। और तूने मेरे साथ जो कुछ किया वोह भी मैं ने तुझे मुआ़फ़ किया।" (حياةُ الحَيوانُ الكُبرىٰ جلد اوّل ص ٣٩١)

अल्लाह عَزَّوَجَلَّ की उन पर रहमत हो और उन के सदक़े हमारी मग़्फ़िरत हो।

मानिन्दे शम्अ़ तेरी त़रफ़ लौ लगी रहे
दे लुत़्फ़ मेरी जान को सोज़ो गुदाज़ का

سُبۡحٰنَ اللّٰهِ عَزَّوَجَلَّ सह़ाबए किराम عَلَيۡهِمُ الرِّضۡوَان की अ़ज़्मतों के क्या कहने ! येह ह़ज़रात हुक्मे कुरआनी, اِدۡفَعۡ بِالَّتِىۡ هِىَ اَحۡسَنُ (**तरजमए कन्ज़ुल ईमान :** ऐ सुनने वाले ! बुराई को भलाई से टाल। (پ ٢٤ حٰم السجدہ ٣٤) की सह़ीह़ तफ़्सीर थे, बार बार ज़हर पिलाने वाली कनीज़ को सज़ा दिलवाने के बजाए आज़ाद फ़रमा दिया ! इस ह़िकायत से मिलती जुलती एक और ह़िकायत मुलाह़ज़ा हो :

صَلُّوۡا عَلَى الۡحَبِيۡب ! صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلٰى مُحَمَّد

(7) ज़हर आलूद खाना

हज़रते सय्यिदुना अबू मुस्लिम ख़ौलानी قُدِّسَ سِرُّهُ الرَّبَّانِی की एक कनीज़ उन से बुग़्ज़ रखती थी। येह आप رَحْمَةُ اللّٰهِ تَعَالٰی عَلَيْه को **ज़हर** देती थी मगर असर न करता था। जब अ़र्सए दराज़ तक येह मुआ़मला चलता रहा तो कहने लगी, "एक दराज़ मुद्दत से मैं आप رَحْمَةُ اللّٰهِ تَعَالٰی عَلَيْه को **ज़हर** देती चली आ रही हूं मगर आप رَحْمَةُ اللّٰهِ تَعَالٰی عَلَيْه पर असर अन्दाज़ ही नहीं हो रहा! इर्शाद फ़रमाया, "ऐसा क्यूं करना पड़ा?" कहा, "इस लिये कि आप رَحْمَةُ اللّٰهِ تَعَالٰی عَلَيْه बहुत बूढ़े हो चुके हैं।" इर्शाद फ़रमाया "اَلْحَمْدُ لِلّٰه عَزَّوَجَلَّ मैं खाने पीने से क़ब्ल بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْم पढ़ लिया करता हूं।" (इस की बरकत से ज़हर से हिफ़ाज़त होती रही) आप رَحْمَةُ اللّٰهِ تَعَالٰی عَلَيْه ने फिर उसे आज़ाद फ़रमा दिया।

(क़ल्यूबी, हिकायत : 64, स. 52)

बे नवा मुफ़्लिसो मोह़ताज गदा कौन? कि मैं
साहि़बे जूदो करम वस्फ़ है किस का? तेरा (ज़ौक़े ना'त)

صَلُّوا عَلَى الْحَبِيْب ! صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلٰى مُحَمَّد

سُبْحٰنَ اللّٰه عَزَّوَجَلَّ ! **बिस्मिल्लाह शरीफ़** की क्या ख़ूब बहारें हैं।

वस्वसा : रिवायात व हि़कायात से येही ज़ाहिर होता है कि **बिस्मिल्लाह** शरीफ़ पढ़ कर **ज़हर** भी खा लें तो कोई असर नहीं होता

मगर हम इतना बड़ा ख़त़रा किस त़रह़ मोल लें ! क्यूं कि हमारा तो तजरिबा है कि अगर्चे बिस्मिल्लाह पढ़ कर भी कोई मुरग़्ग़न ग़िज़ा खा ली तो पेट में "गड़बड़" हो जाती है !

इलाजे वस्वसा : "कारतूस" शेर को भी मार सकता है जब कि बेहतरीन बन्दूक़ से अच्छी त़रह फ़ायर (FIRE) किया जाए, इसी त़रह यूं समझें कि अवरादो वज़ाइफ़ और दुआएं "कारतूस" की त़रह हैं और पढ़ने वाले की ज़बान मिस्ले बन्दूक़। तो दुआएं वोही हैं मगर हमारी ज़बानें सह़ाबा व औलिया عَلَیْهِمُ الرِّضْوَان की सी नहीं। जिस ज़बान से रोज़ाना झूट, ग़ीबत, चुग़ली, गाली गलोच, दिल आज़ारी व बद अख़्लाक़ी का सुदूर जारी रहे उस में तासीर कहां से आए ? हम **दुआ** तो मांगते ही हैं मगर जब मुश्किल आती है तो बुज़ुर्गों के पास ह़ाज़िर हो कर भी दुआ की दरख़्वास्त करते हैं, क्यूं ? इस लिये कि हर एक का ज़ेहन येही बना हुवा है कि **पाक ज़बान** से निकली हुई दुआ ज़ियादा कारगर होती है। यक़ीनन بِسۡمِ اللّٰہِ الرَّحۡمٰنِ الرَّحِیۡمِ पढ़ कर **ख़ालिद** बिन वलीद رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْهُ ने बिला ख़त़र ज़हर पी लिया, اَلۡحَمۡدُ لِلّٰه عَزَّوَجَلَّ उन की ज़बान पाक, उन का दिल पाक, उन का सारा वुजूद गुनाहों से पाक लिहाज़ा **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ के नामे पाक की बरकत से ज़हर ने असर न किया। इसी त़रह ह़ज़रते सय्यिदुना **अबुद्दरदा** और सय्यिदुना **अबू मुस्लिम** ख़ौलानी رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْهُمَا अपनी

पाक ज़बान से **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ का पाक नाम लेते तो ज़हर बे असर हो कर रह जाता था। वरना **ज़हर** फिर **ज़हर** होता है इन्सान को कहीं का नहीं छोड़ता इस को इस **सन्सनी ख़ैज़ हिकायत** से समझने की कोशिश कीजिये, **किताबुल अज़्किया** में है, एक हज का क़ाफ़िला दौराने सफ़र एक चश्मे पर पहुंचा, मा'लूम हुवा कि यहां माहिर तबीबों का घर है, उन के पास जाने का उन्हों ने येह हीला निकाला कि जंगल की एक लकड़ी से अपने एक साथी की पिंडली पर **ख़राश** लगा दी जिस से वोह ख़ून आलूद हो गई, फिर उस को ले कर उस घर के दरवाज़े पर पहुंच कर आवाज़ लगाई, क्या **सांप के काटे** का यहां इलाज मुम्किन है ? आवाज़ सुन कर एक छोटी लड़की बाहर निकल पड़ी, उस ने पिंडली के ज़ख़्म को ग़ौर से देखते हुए कहा, "इस को सांप ने नहीं काटा बल्कि जिस चीज़ से इस को ख़राश लगी है उस पर कोई **नर सांप** पेशाब कर गया होगा, अब येह शख़्स बचेगा नहीं, जब आफ़्ताब तुलूअ़ होगा तो इन्तिक़ाल कर जाएगा !" चुनान्चे ऐसा ही हुवा सूरज निकलते ही उस ने दम तोड़ दिया। (مُلَخَّص از حَیاۃُ الْحَیوان الکبری جلد اوّل ص ۳۹۱)

हर शै से हैं इयां मेरे सानेअ़ की सन्अ़तें
आ़लम सब आईनों में है आईना साज़ का (ज़ौक़े ना'त)

या रब्बे मुस्तफ़ा ! عَزَّوَجَلَّ हमें बार बार بِسْمِ اللهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِیْمِ पढ़ने की सआ़दत दे, गुनाहों से नजात अ़ता कर के हमारी मग़्फ़िरत फ़रमा।

या अल्लाह عَزَّوَجَلَّ हमें मदीनए मुनव्वरह में ज़ेरे गुम्बदे ख़ज़रा जल्वए मह़बूब صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم में शहादत और जन्नतुल बक़ीअ़ में मदफ़न और जन्नतुल फ़िरदौस में अपने मदनी ह़बीब صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم का पड़ोस अ़ता फ़रमा। अपने मह़बूब صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم की सारी उम्मत की मग़्फ़िरत फ़रमा। اٰمِين بِجَاهِ النَّبِيِّ الْاَمِين صَلَّى اللهُ تعالٰى عليه واٰله وسلّم

صَلُّوْا عَلَى الْحَبِيْب! صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلٰى مُحَمَّد

تُوْبُوْا اِلَى الله! اَسْتَغْفِرُ الله

صَلُّوْا عَلَى الْحَبِيْب! صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلٰى مُحَمَّد

ग़म ख़्वारी का सवाब

फ़रमाने मुस्त़फ़ा صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم : "जो शख़्स अपने किसी (मुसल्मान) भाई की मुसीबत में ता'ज़ियत करता (या'नी तसल्ली देता) है अल्लाह عَزَّوَجَلَّ बरोज़े क़ियामत उसे इ़ज़्ज़त का लिबास पहनाएगा।" (اَلتَّرغِيب وَالتَّرهِيب ج ٤ ص ٣٤٤)

फ़रमाने मुस्तफ़ा صَلَّى اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم : जो मुझ पर एक दिन में 50 बार दुरूदे पाक पढ़े क़ियामत के दिन मैं उस से मुसाफ़हा करूं (या'नी हाथ मिलाऊं)गा।(ابن بشکوال)

اَلْحَمْدُ لِلّٰہِ رَبِّ الْعٰلَمِیْنَ وَ الصَّلٰوۃُ وَالسَّلَامُ عَلٰی سَیِّدِ الْمُرْسَلِیْنَ
اَمَّا بَعْدُ فَاَعُوْذُ بِاللّٰہِ مِنَ الشَّیْطٰنِ الرَّجِیْمِ ط بِسْمِ اللّٰہِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِیْمِ ط

महमूद ग़ज़्नवी की बारगाहे रिसालत में मक़्बूलिय्यत

हज़रते सुल्तान महमूद ग़ज़्नवी عَلَیْہِ رَحْمَۃُ اللّٰہِ الْقَوِی[1] की ख़िदमत में एक शख़्स हाज़िर हुवा और अ़र्ज़ की, कि मैं मुद्दते मदीद से ह़बीबे रब्बे मजीद صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم की दीद की ईदे सईद का आरज़ू मन्द था। क़िस्मत से गुज़श्ता रात सरवरे काएनात, शाहे मौजूदात صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم की **ज़ियारत** की सआ़दत मिली। हुज़ूर मुफ़ीज़ुन्नूर, शाहे ग़यूर صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم को मसरूर पा कर अ़र्ज़ की, **"या रसूलल्लाह** صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ! मैं एक हज़ार दिरहम का मक़रूज़ हूं, इस की अदाएगी से आ़जिज़ हूं और डरता हूं कि अगर इसी ह़ालत में मर गया तो बारे क़र्ज़ मेरी गरदन पर होगा। रह़मते आ़लम, नूरे मुजस्सम, शाहे बनी आदम, रसूले मोह़्तशम صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया : महमूद सुबुक्तगीन के पास जाओ वोह तुम्हारा क़र्ज़ उतार देगा। मैं ने अ़र्ज़ की, "वोह कैसे ए'तिमाद करेंगे ?" अगर उन के लिये कोई निशानी इनायत फ़रमा दी जाए तो करम बालाए करम होगा। आप صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया : "जा कर उस से कहो, **"ऐ महमूद ! तुम रात के अव्वल हिस्से में तीस**

1 : महमूद ग़ज़्नवी عَلَیْہِ رَحْمَۃُ اللّٰہِ الْقَوِی दसवीं सदी ईसवी में ग़ज़्नी के बहुत बहादुर और आ़शिक़े रसूल बादशाह गुज़रे हैं। इन का नाम सुल्तान नासिरुद्दीन इब्ने सुबुक्तगीन था, इन्हों ने काफ़ी फ़ुतूह़ात और ज़बर दस्त काम्याबियां ह़ासिल कीं।

हज़ार 30000 बार दुरूद पढ़ते हो और फिर बेदार हो कर रात के आख़िरी हिस्से में मज़ीद तीस हज़ार 30000 बार पढ़ते हो। इस निशानी के बताने से (اِنْ شَآءَاللّٰه عَزَّوَجَلَّ) वोह तुम्हारा क़र्ज़ उतार देगा। सुल्तान महमूद عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللّٰهِ الْوَدُوْد ने जब **शाहे ख़ैरुल अनाम** صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم का रहमतों भरा पैग़ाम सुना तो रोने लगे और तस्दीक़ करते हुए उस का क़र्ज़ उतार दिया और एक हज़ार दिरहम मज़ीद पेश किये। वुज़रा वग़ैरा मुतअ़ज्जिब हो कर अ़र्ज़ गुज़ार हुए ! "आ़लीजाह ! इस शख़्स ने एक ना मुम्किन सी बात बताई है और आप ने भी उस की तस्दीक़ फ़रमा दी हालां कि हम आप की ख़िदमत में हाज़िर होते हैं आप ने कभी इतनी ता'दाद में दुरूद शरीफ़ पढ़ा ही नहीं और न ही कोई आदमी रात भर में साठ हज़ार बार दुरूद शरीफ़ पढ़ सकता है। सुल्तान महमूद عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللّٰهِ الْوَدُوْد ने फ़रमाया ! "तुम सच कहते हो लेकिन मैं ने उ़लमाए किराम से सुना है कि जो शख़्स **दस हज़ारी दुरूद शरीफ़** एक बार पढ़ ले उस ने गोया दस हज़ार बार दुरूद शरीफ़ पढ़े। मैं तीन बार अव्वल शब में और तीन बार आख़िरी शब में **दस हज़ारी दुरूद शरीफ़** पढ़ लेता हूं। इस त़रह़ से मेरा गुमान था कि मैं हर रात साठ हज़ार बार दुरूद शरीफ़ पढ़ता हूं।" जब इस ख़ुश नसीब आ़शिक़े रसूल ने **शाहे ख़ैरुल अनाम** صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم का रहमतों भरा पयाम पहुंचाया, मुझे इस **दस हज़ारी**

दुरूद शरीफ़ की तस्दीक़ हो गई, और गिर्या करना (या'नी रोना) इस खुशी से था कि उ़लमाए किराम का फ़रमान सह़ीह़ साबित हुवा कि रसूले ग़ैबदान, रह़मते आ़लमिय्यान صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰی عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने इस पर गवाही दी है।

(مُلَخّص از : تفسیرِ روحُ البیان ج ۷ صَفحہ ۲۳٤ کوئٹہ)

अल्लाह عَزَّوَجَلَّ की उन पर रह़मत हो और उन के सदक़े हमारी मग़्फ़िरत हो।

صَلُّوْا عَلَی الْحَبِیْب! صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلٰی مُحَمَّد

दस हज़ारी दुरूद शरीफ़

اَللّٰھُمَّ صَلِّ عَلٰی سَیِّدِنَا مُحَمَّدٍ مَّا اخْتَلَفَ الْمَلَوَانِ وَتَعَاقَبَ الْعَصْرَانِ وَکَرَّ الْجَدِیْدَانِ وَاسْتَقَلَّ الْفَرْقَدَانِ وَ بَلِّغْ رُوْحَهٗ وَاَرْوَاحَ اَھْلِ بَیْتِهٖ مِنَّا التَّحِیَّةَ وَالسَّلَامَ وَ بَارِكْ وَسَلِّمْ عَلَیْهِ کَثِیْرًا ط

तरजमा : ऐ अल्लाह عَزَّوَجَلَّ ! हमारे सरदार मुह़म्मद (صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰی عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم) पर दुरूद भेज जब तक कि दिन गर्दिश में रहें और बारी बारी आएं सुब्ह़ो शाम, और बारी बारी आएं रात दिन, और जब तक कि दो सितारे बुलन्द हैं। और हमारी त़रफ़ से आप (صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰی عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم) की और अहले बैत (رِضْوَانُ اللّٰهِ تَعَالٰی عَلَيْهِمْ اَجْمَعِيْن) की अरवाह़ को सलाम पहुंचा और बरकत दे और उन पर बहुत सलाम भेज।

اَلْحَمْدُ لِلّٰهِ رَبِّ الْعٰلَمِيْنَ وَ الصَّلٰوةُ وَالسَّلَامُ عَلٰى سَيِّدِ الْمُرْسَلِيْنَ
اَمَّا بَعْدُ فَاَعُوْذُ بِاللّٰهِ مِنَ الشَّيْطٰنِ الرَّجِيْمِ ط بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ ط

40 रूहानी इलाज

मअ़ तिब्बी इलाज

दुरूद शरीफ़ की फ़ज़ीलत

अल्लाह عَزَّوَجَلَّ के प्यारे ह़बीब, ह़बीबे लबीब, त़बीबों के त़बीब का फ़रमाने रह़मत निशान है : जो मुझ पर शबे जुमुआ़ और रोज़े जुमुआ़ (या'नी जुमे'रात के गुरूबे आफ़्ताब से ले कर जुमुआ़ का सूरज डूबने तक) सो बार दुरूद शरीफ़ पढ़े **अल्लाह** तआ़ला उस की सो ह़ाजतें पूरी फ़रमाएगा 70 **आख़िरत** की और 30 दुन्या की। (شُعَبُ الْاِیمان ج۳ص ۱۱۱ حدیث ۳۰۳۵)

صَلُّوْا عَلَى الْحَبِيْب ! صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلٰى مُحَمَّد

हर विर्द के अव्वल व आख़िर एक बार दुरूद शरीफ़ पढ़ लीजिये, फ़ाएदा ज़ाहिर न होने की सूरत में शिक्वा करने के बजाए अपनी कोताहियों की शामत तसव्वुर कीजिये, **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ की ह़िक्मत पर नज़र रखिये।

1 "هُوَاللّٰهُ الرَّحِيْمُ" जो हर नमाज़ के बा'द सात बार पढ़ लिया करेगा اِنْ شَآءَاللّٰه عَزَّوَجَلَّ शैत़ान के शर से बचा रहेगा और उस का ईमान पर ख़ातिमा होगा।

2 "يَااَللّٰهُ" 100 बार सोते वक़्त पढ़ने से اِنْ شَآءَاللّٰه عَزَّوَجَلَّ शयात़ीन की शरारत व फ़ालिज और लक़्वे की आफ़त से ह़िफ़ाज़त होगी।

3 "يَامَلِكُ" 90 बार जो ग़रीब व नादार रोज़ाना पढ़ा करे اِنْ شَآءَاللّٰه عَزَّوَجَلَّ ग़ुरबत से नजात पाएगा।

फ़रमाने मुस्त़फ़ा صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم : जो मुझ पर एक बार दुरूद पढ़ता है अल्लाह उस के लिये एक क़ीरात़ अज्र लिखता है और क़ीरात़ उहुद पहाड़ जितना है। (عبدالرزاق)

4 "يَاقُدُّوسُ" का जो कोई दौराने सफ़र विर्द करता रहे اِنْ شَآءَاللّٰه عَزَّوَجَلَّ थकन से मह़फ़ूज़ रहेगा।

5 "يَاسَلَامُ" 111 बार पढ़ कर बीमार पर दम करने से اِنْ شَآءَاللّٰه عَزَّوَجَلَّ शिफ़ा ह़ासिल होगी।

6 "يَامُهَيْمِنُ" 29 बार जो कोई ग़मज़दा रोज़ाना पढ़ ले اِنْ شَآءَاللّٰه عَزَّوَجَلَّ उस का ग़म दूर हो, नीज़ اِنْ شَآءَاللّٰه عَزَّوَجَلَّ आफ़तों और बलाओं से भी मह़फ़ूज़ रहे।

7 "يَاعَزِيْزُ" 41 बार ह़ाकिम या अफ़्सर वग़ैरा के पास जाने से क़ब्ल पढ़ लीजिये اِنْ شَآءَاللّٰه عَزَّوَجَلَّ वोह ह़ाकिम या अफ़्सर मेहरबान हो जाएगा।

8 "يَامُتَكَبِّرُ" 21 बार रोज़ाना पढ़ लीजिये, डरावने ख़्वाब आते होंगे तो اِنْ شَآءَاللّٰه عَزَّوَجَلَّ नहीं आएंगे। (मुद्दते इलाज : ता ह़ुसूले शिफ़ा)

9 "يَامُتَكَبِّرُ" ज़ौजा से "मिलाप" से क़ब्ल 10 बार पढ़ लेने वाला اِنْ شَآءَاللّٰه عَزَّوَجَلَّ नेक बेटे का बाप बनेगा।

10 "يَابَارِئُ" 10 बार जो कोई हर जुमुआ़ को पढ़ लिया करे اِنْ شَآءَاللّٰه عَزَّوَجَلَّ उस को बेटा अ़त़ा होगा।

11 "يَاقَهَّارُ" 100 बार अगर कोई मुसीबत आ पड़े तो पढ़िये اِنْ شَآءَاللّٰه عَزَّوَجَلَّ मुश्किल आसान होगी।

12 "يَاوَهَّابُ" सात बार जो रोज़ाना पढ़ा करेगा اِنْ شَآءَاللّٰه عَزَّوَجَلَّ मुस्तजाबुद्दा'वात होगा (या'नी उस की दुआ़एं क़बूल हुवा करेंगी)

13 "يَافَتَّاحُ" 70 बार जो रोज़ाना बा'द नमाज़े फ़ज्र दोनों हाथ सीने पर रख कर पढ़ा करेगा اِنْ شَآءَاللّٰه عَزَّوَجَلَّ उस के दिल का ज़ंग व मैल दूर होगा।

14 "يَافَتَّاحُ" सात बार जो रोज़ाना (किसी भी वक़्त दिन में एक मर्तबा) पढ़ा करेगा اِنْ شَآءَاللّٰه عَزَّوَجَلَّ उस का दिल रोशन होगा।

फ़रमाने मुस्तफ़ा صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم : जब तुम रसूलों पर दुरूद पढ़ो तो मुझ पर भी पढ़ो, बेशक मैं तमाम जहानों के रब का रसूल हूं। (جمع الجوامع)

15 "یَاقَابِضُ، یَابَاسِطُ" 30 बार जो हर रोज़ पढ़ा करे اِنْ شَآءَاللہ عَزَّوَجَلَّ वोह दुश्मन पर फ़त्ह पाएगा।

16 "یَارَافِعُ" 20 बार जो रोज़ाना पढ़ा करेगा اِنْ شَآءَاللہ عَزَّوَجَلَّ उस की मुराद पूरी होगी।

17 "یَابَصِیْرُ" सात बार जो कोई रोज़ाना ब वक़्ते अ़स्र (या'नी इब्तिदाए वक़्ते अ़स्र ता गुरूबे आफ़्ताब किसी भी वक़्त) पढ़ लिया करेगा اِنْ شَآءَاللہ عَزَّوَجَلَّ अचानक मौत से मह़फ़ूज़ रहेगा।

18 "یَاسَمِیْعُ" 100 बार जो रोज़ाना पढ़े और इस दौरान गुफ़्तगू न करे और पढ़ कर दुआ़ मांगे اِنْ شَآءَاللہ عَزَّوَجَلَّ जो मांगेगा पाएगा।

19 "یَاحَکِیْمُ" 80 बार जो रोज़ाना पांचों नमाज़ों के बा'द पढ़ लिया करे, اِنْ شَآءَاللہ عَزَّوَجَلَّ किसी का मोह़ताज न हो।

20 "یَاجَلِیْلُ" दस बार पढ़ कर जो अपने मालो अस्बाब और रक़म वग़ैरा पर दम कर दे اِنْ شَآءَاللہ عَزَّوَجَلَّ चोरी से मह़फ़ूज रहेगा।

21 "یَاشَہِیْدُ" 21 बार, सुब्ह़ (तुलूए़ आफ़्ताब से पहले पहले) ना फ़रमान बच्चे या बच्ची की पेशानी पर हाथ रख कर आस्मान की त़रफ़ मुंह कर के जो पढ़े اِنْ شَآءَاللہ عَزَّوَجَلَّ उस का वोह बच्चा या बच्ची नेक बने।

22 "یَاوَکِیْلُ" सात बार जो रोज़ाना अ़स्र के वक़्त पढ़ लिया करे اِنْ شَآءَاللہ عَزَّوَجَلَّ आफ़तों से पनाह पाए।

23 "یَاحَمِیْدُ" 90 बार, जिस की गन्दी बातों की आ़दत न जाती हो वोह पढ़ कर किसी ख़ाली पियाले या गिलास में दम कर दे। ह़स्बे ज़रूरत उसी में पानी पिया करे اِنْ شَآءَاللہ عَزَّوَجَلَّ फ़ोह़्श गोई (या'नी बे ह़याई की बातों) की आ़दत निकल जाएगी। (एक बार का दम किया हुवा गिलास बरसों तक चला सकते हैं)

फ़रमाने मुस्तफ़ा صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم : मुझ पर दुरूद पढ़ कर अपनी मजालिस को आरास्ता करो कि तुम्हारा दुरूद पढ़ना बरोज़े क़ियामत तुम्हारे लिये नूर होगा। (فردوس الاخبار)

24 "يَامُحْصِيْ" एक हज़ार बार, जो कोई हर शबे जुमुआ (या'नी जुमे'रात व जुमुआ की दरमियानी शब) पढ़ लिया करे اِنْ شَآءَاللّٰه عَزَّوَجَلَّ क़ब्र व क़ियामत के अ़ज़ाब से मह़फ़ूज़ हो।

25 "يَامُحْيِيْ" 7 बार पढ़ कर अपने ऊपर दम कर लीजिये, गेस हो या पेट या किसी भी जगह दर्द हो या किसी उ़ज़्व के ज़ाएअ़ हो जाने का ख़ौफ़ हो اِنْ شَآءَاللّٰه عَزَّوَجَلَّ फ़ाएदा होगा। (मुद्दते इलाज : ता हुसूले शिफ़ा, रोज़ाना कम अज़ कम एक बार)

26 "يَامُحْيِيْ،يَامُمِيْتُ" सात बार रोज़ाना पढ़ कर अपने ऊपर दम कर लिया कीजिये اِنْ شَآءَاللّٰه عَزَّوَجَلَّ **जादू** असर नहीं करेगा।

27 "يَاوَاجِدُ" जो कोई खाना खाते वक़्त हर निवाले पर पढ़ा करेगा اِنْ شَآءَاللّٰه عَزَّوَجَلَّ वोह खाना उस के पेट में नूर होगा और बीमारी दूर होगी।

28 "يَامَاجِدُ" 10 बार पढ़ कर शरबत वग़ैरा पर दम कर के जो पी लिया करे اِنْ شَآءَاللّٰه عَزَّوَجَلَّ (सख़्त) बीमार न होगा।

29 "يَاوَاحِدُ" एक हज़ार एक बार, जिस को अकेले में डर लगता हो, तन्हाई में पढ़ ले اِنْ شَآءَاللّٰه عَزَّوَجَلَّ उस के दिल से ख़ौफ़ जाता रहेगा।

30 "يَاقَادِرُ" जो वुज़ू के दौरान हर उ़ज़्व धोते हुए पढ़ने का मा'मूल बना ले اِنْ شَآءَاللّٰه عَزَّوَجَلَّ दुश्मन उस को इग़्वा नहीं कर सकेगा।

31 "يَاقَادِرُ" 41 बार, मुश्किल आ पड़े तो पढ़ लीजिये اِنْ شَآءَاللّٰه عَزَّوَجَلَّ आसानी हो जाएगी।

32 "يَامُقْتَدِرُ" 20 बार, जो रोज़ाना पढ़ लिया करेगा اِنْ شَآءَاللّٰه عَزَّوَجَلَّ रह़मतों के साए में रहेगा।

33 "يَامُقْتَدِرُ" 20 बार, जो नींद से बेदार हो कर पढ़ लिया करेगा उस के हर काम में मददे इलाही शामिल रहेगी।

34 "يَااَوَّلُ" 100 बार, जो रोज़ाना पढ़ लिया करेगा اِنْ شَآءَاللّٰه عَزَّوَجَلَّ उस की ज़ौजा उस से मह़ब्बत करेगी।

फ़रमाने मुस्तफ़ा صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم **:** शबे जुमुआ और रोज़े जुमुआ मुझ पर कसरत से दुरूद पढ़ो क्यूं कि तुम्हारा दुरूद मुझ पर पेश किया जाता है। (طبرانی)

35 "يَامَانِعُ، يَامُعْطِي" 20 बार, बीवी नाराज़ हो तो शोहर और अगर शोहर नाराज़ हो तो बीवी सोने से क़ब्ल बिछोने पर बैठ कर पढ़े اِنْ شَآءَاللّٰه عَزَّوَجَلَّ सुल्ह हो जाएगी। (मुद्दत : ता हुसूले मुराद)

36 "يَاظَاهِرُ" घर की दीवार पर लिख लीजिये اِنْ شَآءَاللّٰه عَزَّوَجَلَّ दीवार सलामत रहेगी।

37 "يَارَءُوْفُ" जो किसी मज़्लूम का किसी ज़ालिम से पीछा छुड़ाना चाहे, **10** बार पढ़े फिर उस ज़ालिम से बात करे اِنْ شَآءَاللّٰه عَزَّوَجَلَّ वोह ज़ालिम उस की सिफ़ारिश क़बूल कर लेगा।

38 "يَاغَنِيُّ" रीढ़ की हड्डी, घुटनों, जोड़ों या जिस्म में कहीं भी दर्द हो, चलते फिरते उठते बैठते पढ़ते रहिये اِنْ شَآءَاللّٰه عَزَّوَجَلَّ दर्द जाता रहेगा।

39 "يَامُغْنِي" एक बार पढ़ कर हाथों पर दम कर के दर्द की जगह पर मलने से اِنْ شَآءَاللّٰه عَزَّوَجَلَّ सुकून मिलेगा।

40 "يَانَافِعُ" 20 बार, जो कोई काम शुरूअ़ करने से क़ब्ल पढ़ ले اِنْ شَآءَاللّٰه عَزَّوَجَلَّ वोह काम उस की मरज़ी के मुताबिक़ पूरा होगा।

15 तिब्बी इलाज

﴾1, 2﴿ बाल लम्बे करने के दो नुस्ख़े

❖ 250 ग्राम आम्ला, 125 ग्राम सिकाकाई और 125 ग्राम मेथी दाने पीस कर मह़फ़ूज़ कर लीजिये। दो चम्मच ह़स्बे ज़रूरत पानी में रात को भिगो दीजिये, सुब्ह़ छान कर सर धो लीजिये, हफ़्ते में एक बार येह अ़मल कीजिये, اِنْ شَآءَاللّٰه عَزَّوَجَلَّ बाल गिरना बन्द होंगे और बाल लम्बे होने भी शुरूअ़ हो जाएंगे ❖ आम्ले का सुफ़ूफ़ (पाउडर) बनवा लीजिये, ह़स्बे ज़रूरत पाउडर में पानी मिला कर गाढ़ा सा लेप बना लीजिये, फिर उसे तमाम बालों की जड़ों में लगा कर कुछ देर बा'द सर धो लीजिये।

《3》 दांतों के दर्द और सूजन का त़िब्बी इलाज

मसूढ़ों में सूजन हो, ख़ून या पीप निकलता हो तो थोड़ा सा गर्म पानी ले कर उस में थोड़ी सी फिट्करी डाल दीजिये, फिट्करी ह़ल हो जाने के बा'द वोह पानी दांतों और मसूढ़ों पर मलिये, اِنْ شَآءَاللّٰه عَزَّوَجَلَّ काफ़ी फ़ाएदा होगा।

《4,5》 शूगर का त़िब्बी इलाज

❁ बड़ी इलायची के अन्दर से दाने निकाल कर रोज़ाना सुब्ह़ व शाम पांच पांच दाने चबा लिया करें, اِنْ شَآءَاللّٰه عَزَّوَجَلَّ जल्द शिफ़ा ह़ासिल होगी ❁ **आम्ला**, जामुन के बीज और करेलों के बीज येह तीनों चीज़ें हम वज़्न ले कर उन का सुफ़ूफ़ (पाउडर) बना लीजिये, ज़ियाबीतुस (DIABETES) की उ़म्दा दवा तय्यार है, इस सुफ़ूफ़ की एक छोटी चम्मच दिन में एक या दो बार लेना मरज़ बढ़ने से रोकता है।

《6》 माहवारी के दर्द का त़िब्बी इलाज

जिस को माहवारी (M.C.) के दिनों में पेट और कमर वग़ैरा में दर्द होता हो, नाफ़ में तेल लगा लिया करे, اِنْ شَآءَاللّٰه عَزَّوَجَلَّ दर्द से छुटकारा मिल जाएगा।

《7,8》 दस्त (लूज़ मोशन) के 2 त़िब्बी इलाज

❁ आधी चम्मच चाय की पत्ती पानी से फांक लीजिये اِنْ شَآءَاللّٰه عَزَّوَجَلَّ दस्त ख़त्म हो जाएंगे। छोटे बच्चों को एक चुटकी चाय की पत्ती पानी से देना ही काफ़ी है, اِنْ شَآءَاللّٰه عَزَّوَجَلَّ उन को भी फ़ाएदा हो जाएगा ❁ **सब्ज़** पोदीना धूप में सुखा कर, पीस कर उस का पाउडर किसी बोतल में मह़फ़ूज़ कर लीजिये। अगर कभी दस्त (लूज़ मोशन) लग जाएं तो सुब्ह़ो शाम आधा चम्मच पानी से इस्ति'माल कीजिये اِنْ شَآءَاللّٰه मे'दे में ठन्डक हो जाएगी और शिफ़ा ह़ासिल होगी।

《9》 नक्सीर बन्द करने का त़िब्बी इलाज

लीमूं का रस कपड़े में छान कर ड्रॉपर से नाक में क़त़रा क़त़रा डालिये, اِنْ شَآءَاللّٰه عَزَّوَجَلَّ ख़ून बन्द हो जाएगा।

फ़रमाने मुस्तफ़ा صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰی عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم: उस शख़्स की नाक ख़ाक आलूद हो जिस के पास मेरा ज़िक्र हो और वोह मुझ पर दुरूदे पाक न पढ़े। (ترمذی)

《10》 नाक बन्द होने का तिब्बी इलाज

रात को नाक बन्द हो जाए और सांस लेने में रुकावट आती हो तो नीम के थोड़े से ताज़े पत्ते साफ़ कर के इन को पानी में चुल्हे पर जोश दे कर खाने का नमक हल कर के क़ाबिले बरदाश्त हो जाने पर उस पानी से नाक धोइये और दिन में दो बार इसी से ग़रारे कीजिये, اِنْ شَآءَاللّٰه عَزَّوَجَلَّ नाक खुल जाएगी।

《11,12》 हिचकी के दो चुटकुले

❁ **काग़ज़** की थेली या प्लास्टिक का शोपर मुंह और नाक पर चढ़ा कर हाथों से इस त़रह़ दबा कर रखिये की नाक और मुंह की सांस की हवा बाहर न निकलने पाए, उसी शोपर के अन्दर सांस लीजिये, اِنْ شَآءَاللّٰه एक दो मिनट के अन्दर अन्दर हिचकी बन्द हो जाएगी ❁ एक छोटी इलायची अच्छी त़रह़ चबा कर निगल लीजिये और फ़ौरन ठन्डे पानी का एक गिलास पी लीजिये, اِنْ شَآءَاللّٰه عَزَّوَجَلَّ हिचकी बन्द हो जाएगी।

《13 ता 15》 मुंह की बदबू के तीन तिब्बी इलाज

❁ **कच्ची** पियाज़ और कच्चा लहसन खाने से मुंह में बदबू हो जाती है, **अदरक** का टुकड़ा ख़ूब चबा कर खा लीजिये, इसी त़रह़ **अज्वाइन** या, **गुड़** या **सौंफ़** या चन्द छोटी **इलायचियां** ख़ूब चबा कर निगल लीजिये, اِنْ شَآءَاللّٰه عَزَّوَجَلَّ बदबू ख़त्म हो जाएगी ❁ नीम के 12 पत्ते एक गिलास पानी में अच्छी त़रह़ उबाल कर छान लीजिये, पानी की गरमी कुछ कम होने पर इस से ग़रारे कीजिये, येह जरासीम कुश है, इस के बा क़ाइदा इस्ति'माल से मुंह का अन्दरूनी हिस्सा साफ़ होता और मुंह की बदबू दूर हो जाती है ❁ **नीम** गर्म पानी में नमक मिला कर ग़रारे कीजिये, नमक में पाए जाने वाले अ़नासिर मुर्दा ख़लियों को निकाल कर **मुंह की बदबू** दूर करते हैं।

اَلْحَمْدُ لِلّٰهِ رَبِّ الْعٰلَمِیْنَ وَ الصَّلٰوۃُ وَالسَّلَامُ عَلٰی سَیِّدِ الْمُرْسَلِیْنَ
اَمَّا بَعْدُ فَاَعُوْذُ بِاللّٰهِ مِنَ الشَّیْطٰنِ الرَّجِیْمِ ط بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِیْمِ ط

कफ़न के लिये तीन अनमोल तोह़फ़े

(1) जो हर नमाज़ (या'नी फ़र्ज़ व सुन्नतें वग़ैरा पढ़ने) के बा'द अ़ह्द नामा पढ़े, फ़िरिश्ता उसे लिख कर मोहर लगा कर क़ियामत के लिये उठा रखे, जब **अल्लाह** तआ़ला उस बन्दे को क़ब्र से उठाए, फ़िरिश्ता वोह नविश्ता (या'नी दस्तावेज़) साथ लाए और निदा की जाए अ़ह्द वाले कहां हैं, उन्हें वोह अ़ह्द नामा दिया जाए। इमाम ह़कीम तिरमिज़ी رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰی عَلَيْه ने इसे रिवायत कर के फ़रमाया, इमाम त़ाऊस رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰی عَلَيْه की वसिय्यत से येह अ़हदनामा उन के कफ़न में लिखा गया। (الدر المنثور، ج ٥، ص ٥٤٢ دارُ الفكر بيروت)
इमाम फ़क़ीह इब्ने अ़जील رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰی عَلَيْه ने इसी दुआ़ए **अ़ह्द नामा** की निस्बत फ़रमाया, जब येह अ़ह्द नामा लिख कर मय्यित के साथ क़ब्र में रख दें तो **अल्लाह तआ़ला उसे सुवाले नकीरैन व अ़ज़ाबे क़ब्र** से अमान दे, अ़ह्द नामा येह है :

اَللّٰهُمَّ فَاطِرَ السَّمٰوٰتِ وَالْاَرْضِ عَالِمَ الْغَيْبِ وَالشَّهَادَةِ، اَلرَّحْمٰنَ الرَّحِيْمَ اِنِّيْ اَعْهَدُ اِلَيْكَ فِيْ هٰذِهِ الْحَيَاةِ الدُّنْيَا بِاَنَّكَ اَنْتَ اللّٰهُ الَّذِيْ لَا اِلٰهَ اِلَّا اَنْتَ وَحْدَكَ لَا شَرِيْكَ لَكَ وَ اَنَّ مُحَمَّدًا عَبْدُكَ وَرَسُوْلُكَ فَلَا تَكِلْنِيْ اِلٰى نَفْسِيْ فَاِنَّكَ اِنْ تَكِلْنِيْ اِلٰى نَفْسِيْ تُقَرِّبْنِيْ مِنَ الشَّرِّ وَتُبَاعِدْنِيْ مِنَ الْخَيْرِ وَاِنِّيْ لَا اَثِقُ اِلَّا بِرَحْمَتِكَ فَاجْعَلْ رَحْمَتَكَ لِيْ عَهْدًا عِنْدَكَ تُؤَدِّيْهِ اِلٰى يَوْمِ الْقِيٰمَةِ اِنَّكَ لَا تُخْلِفُ الْمِيْعَادَ" (الدر المنثور، ج٥، ص ٥٤٢ دارُ الفكر بيروت)

(2) जो येह दुआ मय्यित के कफ़न पर लिखे अल्लाह तआला क़ियामत तक उस से अ़ज़ाब उठा ले। वोह दुआ येह है :

اَللّٰهُمَّ اِنِّیْٓ اَسْئَلُکَ یَاعَالِمَ السِّرِّ یَاعَظِیْمَ الْخَطَرِیَاخَالِقَ الْبَشَرِ
یَامُوْقِعَ الظَّفَرِ یَامَعْرُوْفَ الْاَثَرِ یَاذَا الطَّوْلِ وَالْمَنِّ یَاکَاشِفَ الضَّرِّ
وَالْمِحَنِ یَآاِلٰـهَ الْاَوَّلِیْنَ وَالْاٰخِرِیْنَ فَرِّجْ عَنِّیْ هُمُوْمِیْ وَاکْشِفْ
عَنِّیْ غُمُوْمِیْ وَصَلِّ اللّٰهُمَّ عَلٰی سَیِّدِنَا مُحَمَّدٍ وَّسَلِّمْ.

(फ़तावा रज़विय्या जदीद ब ह़वाला फ़तावा कुब्रा, जि. 9, स. 110)

(3) जो येह दुआ किसी परचे पर लिख कर सीने पर कफ़न के नीचे रख दे उसे अ़ज़ाबे क़ब्र न हो न मुन्कर नकीर नज़र आएं। और वोह दुआ येह है :

لَا اِلٰـهَ اِلَّا اللّٰهُ وَاللّٰهُ اَکْبَرُ لَآ اِلٰـهَ اِلَّا اللّٰهُ وَحْدَهٗ لَا شَرِیْكَ لَهٗ لَا اِلٰهَ اِلَّا اللّٰهُ لَهُ الْمُلْكُ
وَلَهُ الْحَمْدُ لَا اِلٰهَ اِلَّا اللّٰهُ وَلَا حَوْلَ وَلَا قُوَّةَ اِلَّا بِاللّٰهِ الْعَلِیِّ الْعَظِیْمِ "

(फ़तावा रज़विय्या जदीद ब ह़वाला फ़तावा कुब्रा, जि. : 9, स. 108)

मदनी फूल : बेहतर येह है कि अ़ह्द नामा (बल्कि येह परचा और शजरह वग़ैरा) मय्यित के मुंह के सामने क़िब्ले की जानिब (क़ब्र की अन्दरूनी दीवार में) ताक़ खोद कर उस में रखें।

(बहारे शरीअ़त, ह़िस्सा : 4, स. 164, मक्तबए रज़विय्या)

मदनी मश्वरा : कुछ परचे अपने पास रख लीजिये और मुसल्मानों की फ़ौतगी के मवाक़ेअ़ पर पेश कर के सवाब कमाइये नीज़ कफ़न फ़रोशों और तज्हीज़ो तक्फ़ीन करने वाले समाजी इदारों को भी पेश कीजिये कि वोह हर मुसल्मान के लिये कफ़न के साथ एक परचा फ़ी सबीलिल्लाह दे दिया करें।

(दा'वते इस्लामी के इदारे मक्तबतुल मदीना और इस की तमाम शाख़ों से हदिय्यतन त़लब कीजिये)

اَلْحَمْدُ لِلّٰہِ رَبِّ الْعٰلَمِیْنَ وَ الصَّلٰوۃُ وَالسَّلَامُ عَلٰی سَیِّدِ الْمُرْسَلِیْنَ
اَمَّا بَعْدُ فَاَعُوْذُ بِاللّٰہِ مِنَ الشَّیْطٰنِ الرَّجِیْمِ ط بِسْمِ اللّٰہِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِیْمِ ط

मजलिस से उठते वक़्त की दुआ की फ़ज़ीलत

हज़रते सय्यिदुना अबू हुरैरा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ से रिवायत है कि सरकारे मदीना, राहते क़ल्बो सीना, बाइसे नुज़ूले सकीना صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने इर्शाद फ़रमाया : जो किसी मजलिस में बैठा पस उस ने कसीर गुफ़्तगू की तो उस मजलिस से उठने से पहले कहे

سُبْحٰنَکَ اللّٰھُمَّ وَبِحَمْدِکَ اَشْھَدُ اَنْ لَّآ
اِلٰہَ اِلَّآ اَنْتَ اَسْتَغْفِرُکَ وَاَتُوْبُ اِلَیْکَ o

तो बख़्श दिया जाएगा जो उस मजलिस में हुवा। (جامع الترمذی کتاب الدعوات ص ۱۵۵)

भलाई की मोहर और गुनाह मुआफ़

हज़रते सय्यिदुना अ़ब्दुल्लाह बिन अ़म्र बिन आ़स رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ फ़रमाते हैं, जो येह दुआ़ किसी मजलिस से उठते वक़्त तीन मरतबा पढ़े तो उस की ख़ताएं मिटा दी जाती हैं। और जो मजलिसे ख़ैर व मजलिसे ज़िक्र में पढ़े तो उस के लिये ख़ैर (या'नी भलाई) पर मोहर लगा दी जाएगी। वोह दुआ़ येह है :

سُبْحٰنَکَ اللّٰھُمَّ وَ بِحَمْدِکَ لَآ اِلٰہَ
اِلَّآ اَنْتَ اَسْتَغْفِرُکَ وَاَتُوْبُ اِلَیْکَo

(ابو داوٗد شریف کتاب الادب ج ۲ ص ۲۶۷)

तरजमा : तेरी ज़ात पाक है और ऐ **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ तेरे ही लिये तमाम ख़ूबियां हैं, तेरे सिवा कोई मा'बूद नहीं, तुझ से बख़्शिश चाहता हूं और तेरी त़रफ़ तौबा करता हूं।

दुआ़ए अ़त्तार : या रब्बे मुस्त़फ़ा عَزَّوَجَلَّ जो कोई इज्तिमाअ़, दर्स, मदनी क़ाफ़िलों के ह़ल्क़े और दीनी व दुन्यवी बैठक के इख़्तिताम पर ह़स्बे ह़ाल येह दुआ़ पढ़े और मौक़अ़ पा कर पढ़वाने की आ़दत बनाए उस को जन्नतुल फ़िरदौस में अपने मदनी ह़बीब صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم का पड़ोस इनायत कर और मुझ पापी व बदकार गुनहगारों के सरदार के ह़क़ में भी येह दुआ़ क़बूल फ़रमा। اٰمِین بِجاہِ النَّبِیِّ الْاَمین صَلَّی اللّٰہ تعالٰی علیہ واٰلہٖ وسلَّم

(दा'वते इस्लामी के इदारे मक्तबतुल मदीना और इस की तमाम शाख़ों से हदिय्यतन त़लब कीजिये)

आदाबे त़आ़म

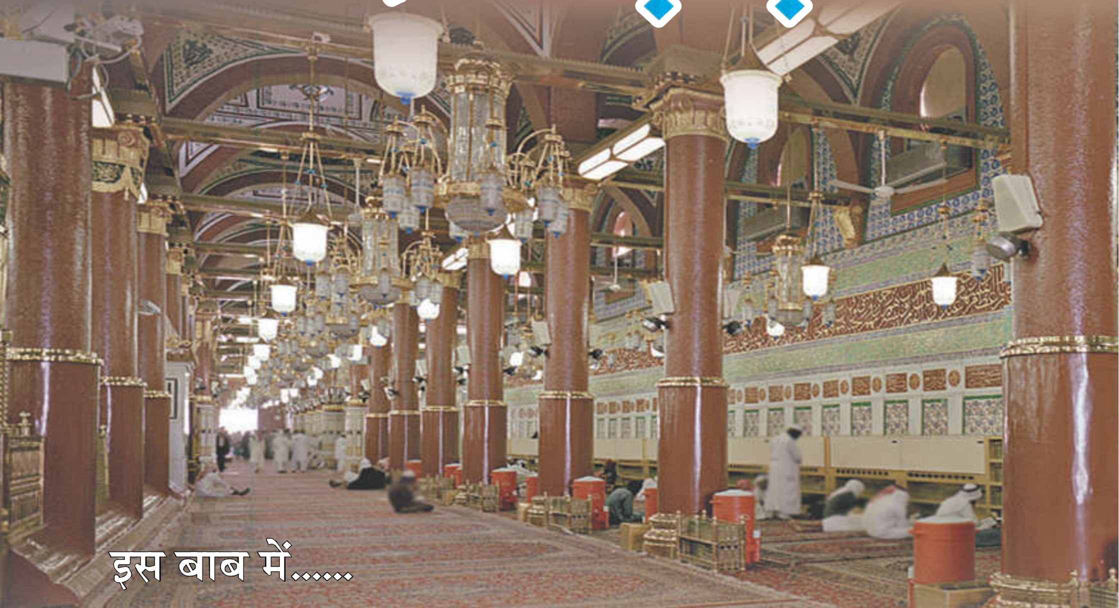

इस बाब में......

लुक़्मए ह़लाल की फ़ज़ीलत	179	गर्म खाने के नुक़्सानात	280
बीमारियों से ह़िफ़ाज़त के नुस्ख़े	186	जिन्नात लीमूं से घबराते हैं	333
साह़िबे मज़ार की इन्फ़िरादी कोशिश	236	99 ह़िकायात	343
हाथ से खाने के त़िब्बी फ़वाइद	247	दा'वते इस्लामी का अव्वलीन मदनी मर्कज़	444
बिग़ैर बेहोशी के ओपरेशन	248	सुवालात व जवाबात	566
टेक लगा कर खाने के त़िब्बी नुक़्सानात	253	मक्तूबे अ़त्तार دَامَتْ بَرَكَاتُهُمُ الْعَالِيَه	619
औलाद को कम अ़क़्ली से बचाने का नुस्ख़ा	262	ह़ाजी मुश्ताक़ अ़त्तारी رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰی عَلَیْه	629

वरक़ उलटिये......

SINGLE AFTER 176

اَلْحَمْدُ لِلّٰہِ رَبِّ الْعٰلَمِیْنَ وَ الصَّلٰوۃُ وَ السَّلَامُ عَلٰی سَیِّدِ الْمُرْسَلِیْنَ

اَمَّا بَعْدُ فَاَعُوْذُ بِاللّٰہِ مِنَ الشَّیْطٰنِ الرَّجِیْمِ ط بِسْمِ اللّٰہِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِیْمِ ط

आदाबे त़आ़म

शैत़ान लाख रोके येह बाब मुकम्मल पढ़ लीजिये । शायद आप को एह़सास हो कि आज तक मुझे "खाना" ही नहीं आता था !

बा कमाल फ़िरिश्ता : सरकारे मदीना, राह़ते क़ल्बो सीना, फ़ैज़े गन्जीना, साहि़बे मुअ़त्त़र पसीना صَلَّى اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم का फ़रमाने शफ़ाअ़त निशान है, "**बेशक अल्लाह** तआ़ला ने एक फ़िरिश्ता मेरी क़ब्र पर मुक़र्रर फ़रमाया है जिसे तमाम मख़्लूक़ की आवाज़ें सुनने की त़ाक़त अ़त़ा फ़रमाई है, पस क़ियामत तक जो कोई मुझ पर दुरूदे पाक पढ़ता है तो वोह मुझे उस का और उस के बाप का नाम पेश करता है । कहता है, फ़ुलां बिन फ़ुलां ने आप صَلَّى اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم पर दुरूदे पाक पढ़ा है ।"

(مجمع الزوائد ج ۱۰ ص ۲۵۱ حدیث ۱۷۲۹۱)

صَلُّوْا عَلَی الْحَبِیْب ! صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلٰی مُحَمَّد

سُبْحٰنَ اللّٰہ عَزَّوَجَلَّ ! दुरूद शरीफ़ पढ़ने वाला किस क़दर बख़्त वर है कि उस का नाम बमअ़ वलदिय्यत बारगाहे रिसालत صَلَّى اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم

में पेश किया जाता है। यहां येह **नुक्ता** भी इन्तिहाई ईमान अफ़्रोज़ है कि क़ब्रे मुनव्वर عَلٰی صَاحِبِهَا الصَّلٰوةُ وَالسَّلَام पर ह़ाज़िर फ़िरिश्ते को इस क़दर ज़ियादा **क़ुव्वते समाअ़त** दी गई है कि वोह दुन्या के कोने कोने में एक ही वक़्त के अन्दर दुरूद शरीफ़ पढ़ने वाले लाखों मुसल्मानों की इन्तिहाई धीमी आवाज़ भी सुन लेता है और उसे इल्मे ग़ैब भी अ़त़ा किया गया है कि वोह दुरूदे पाक पढ़ने वालों के नाम बल्कि उन के वालिद साहि़बान तक के नाम जान लेता है। जब ख़ादिमे दरबारे रिसालत صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم की क़ुव्वते समाअ़त और **इल्मे ग़ैब** का येह ह़ाल है तो सरकारे वाला तबार, मक्के मदीने के ताजदार, मह़बूबे परवर्दगार صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم के इख़्तियारात व **इल्मे ग़ैब** की क्या शान होगी ! वोह क्यूं न अपने ग़ुलामों को पहचानेंगे और क्यूं न उन की फ़रियाद सुन कर بِاِذْنِهٖ تعَالٰی इमदाद फ़रमाएंगे !

मैं क़ुरबां इस अदाए दस्त गीरी पर मेरे आक़ा

मदद को आ गए जब भी पुकारा या रसूलल्लाह

صَلُّوْا عَلَى الْحَبِيْب ! صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلٰى مُحَمَّد

खाना भी इबादत है : प्यारे प्यारे इस्लामी भाइयो ! खाना **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ की बहुत ही प्यारी ने'मत है, इस में हमारे लिये त़रह़ त़रह़

की लज़्ज़त भी रखी गई है। अच्छी अच्छी निय्यतों के साथ शरीअ़त व सुन्नत के मुताबिक़ ह़लाल खाना कारे सवाब है, मुफ़स्सिरे शहीर ह़कीमुल उम्मत ह़ज़रते मुफ़्ती **अह़मद यार ख़ान** عَلَيْهِ رَحْمَةُ الْمَنَّان फ़रमाते हैं, "खाना भी **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ की इबादत है मोमिन के लिये।" मज़ीद फ़रमाते हैं, "देखो **निकाह़** सुन्नते अम्बिया عَلَيْهِمُ السَّلَام है मगर ह़ज़रते सय्यिदुना यह़्या عَلٰی نَبِیِّنَا وَعَلَیْہِ الصَّلٰوۃُ وَالسَّلَام और ह़ज़रते सय्यिदुना **ईसा** रूहुल्लाह عَلٰی نَبِیِّنَا وَعَلَیْہِ الصَّلٰوۃُ وَالسَّلَام ने निकाह़ नहीं किया मगर **खाना** वोह सुन्नत है कि अज़ ह़ज़रते सय्यिदुना आदम सफ़िय्युल्लाह عَلٰی نَبِیِّنَا وَعَلَیْہِ الصَّلٰوۃُ وَالسَّلَام ता ह़ज़रते सय्यिदुना **मुह़म्मदुर्रसूलुल्लाह** صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم सब ही नबियों ने ज़रूर खाया। जो शख़्स **भूक हड़ताल** कर के भूक से जान दे दे वोह ह़राम मौत मरेगा।" (तफ़्सीरे नईमी, जि. 8, स. 51) सरकारे मदीना صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم का इर्शादे ह़क़ीक़त बुन्याद है, "**खाने वाला शुक्र गुज़ार वैसा ही है जैसा सब्र करने वाला रोज़ादार।**"

(ترمذی ج٤ ص ٢١٩ حدیث ٢٤٩٤)

लुक़्मए ह़लाल की फ़ज़ीलत : हम अगर **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ के प्यारे ह़बीब صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم की सुन्नत के मुताबिक़ खाना खाएं तो इस में हमारे लिये बरकतें ही बरकतें हैं। ह़ज़रते सय्यिदुना इमाम मुह़म्मद ग़ज़ाली عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللهِ الْوَالِى **एह़याउल उ़लूम** की दूसरी जिल्द में एक बुज़ुर्ग رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰى عَلَيْه का क़ौल नक़्ल करते हैं कि **मुसल्मान जब ह़लाल खाने का पहला लुक़्मा खाता है, उस के पहले के गुनाह मुआ़फ़ कर दिये**

जाते हैं । और जो शख़्स त़लबे ह़लाल के लिये रुस्वाई के मक़ाम पर जाता है उस के गुनाह दरख़्त के पत्तों की त़रह़ झड़ते हैं

(اِحیاءُ العُلُومِ الدین ، ج۲ ص۱۱٦)

खाने की निय्यत किस त़रह़ करें : खाते वक़्त भूक लगी होना सुन्नत है । खाने में येह निय्यत कीजिये कि **अल्लाह रब्बुल इ़ज़्ज़त** عَزَّوَجَلَّ **की इ़बादत पर क़ुव्वत ह़ासिल करने के लिये खा रहा हूं ।** खाने से फ़क़त़ लज़्ज़त मक़्सूद न हो । ह़ज़रते सय्यिदुना इब्राहीम बिन शैबान عَلَيْهِ رَحْمَةُ الْمَنَّان फ़रमाते हैं, ''मैं ने अस्सी80 बरस से कोई भी चीज़ फ़क़त़ लज़्ज़ते नफ़्स की ग़रज़ से नहीं खाई ।'' (اِحیاءُ العُلُوم ج۲ ص۵) कम खाने की निय्यत भी करे कि इ़बादत पर क़ुव्वत ह़ासिल करने की निय्यत जभी सच्ची होगी क्यूं कि पेट भर के खाने से इ़बादत में उलटा रुकावट पैदा होती है ! कम खाना सिह़्ह़त के लिये मुफ़ीद है ऐसे शख़्स को डोक्टर की ज़रूरत कम ही पेश आती है ।

खाना कितना खाना चाहिये : अल्लाह के मह़बूब, दानाए ग़ुयूब, मुनज़्ज़हुन अ़निल उ़यूब صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم का फ़रमाने सिह़्ह़त निशान है, ''आदमी अपने पेट से ज़ियादा बुरा बरतन नहीं भरता, इन्सान के लिये **चन्द लुक़्मे** काफ़ी हैं जो उस की पीठ को सीधा रखें अगर ऐसा न कर सके तो तिहाई (1/3) खाने के लिये तिहाई पानी के लिये और एक तिहाई सांस के लिये हो ।'' (سنن ابن ماجہ ج٤ص٤٨ حدیث ٣٣٤٩)

निय्यत की अहम्मिय्यत : बुख़ारी शरीफ़ की सब से पहली ह़दीसे पाक है, **اِنَّمَا الْاَعْمَالُ بِالنِّيَّات** या'नी आ'माल का दारो मदार निय्यतों पर है। (صحیح البخاری ج۱ ص۵ الحدیث ۱) जो अ़मल **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ की रिज़ा के लिये किया जाए उस में सवाब मिलता है, रिया या'नी अगर दिखावे के लिये किया जाए तो वोही अ़मल गुनाह का बाइस बन जाता है और अगर कुछ भी निय्यत न हो तो न सवाब मिले न गुनाह जब कि वोह अ़मल फ़ी नफ़्सिही मुबाह़ (या'नी जाइज़) हो। मसलन कोई ह़लाल चीज़ जैसा कि आइसक्रीम या मिठाई या रोटी खाई और इस में कुछ भी निय्यत न की तो न सवाब होगा न गुनाह। अलबत्ता क़ियामत में ह़िसाब का मुआ़मला दरपेश होगा जैसा कि सरकारे नामदार, दो[2] आ़लम के मालिको मुख़्तार, शहन्शाहे अबरार صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم का इर्शादे ह़क़ीक़त बुन्याद है, حَلالُها حِسَابٌ وَّ حَرامُها عِقاب या'नी इस के ह़लाल में ह़िसाब है और ह़राम में अ़ज़ाब। (فردوس بما ثور الخطاب ج ۵ ص ۲۸۳ حدیث ۸۱۹۲)

सुरमा क्यूं डाला ? : रसूले पाक, साह़िबे लौलाक, सय्याहे़ अफ़्लाक صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم का फ़रमाने इब्रत निशान है, बेशक क़ियामत के दिन आदमी से उस के हर हर काम ह़त्ता कि आंख के सुरमे के बारे में भी पूछा जाएगा। (حِلیةُ الاولیاء ج ۱۰ ص ۳۱ حدیث ۱٤٤۰٤) लिहाज़ा आ़फ़िय्यत इसी में है कि अपने हर मुबाह़ काम में अच्छी अच्छी निय्यतें शामिल कर

मक्कतुल मुकर्रमा मदीनतुल मुनव्वरा जन्नतुल बक़ीअ़

ली जाएं। चुनान्चे **एक** बुज़ुर्ग رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰى عَلَيْه फ़रमाते हैं मैं हर काम में निय्यत पसन्द करता हूं ह़त्ता कि खाने, पीने, सोने और बैतुल ख़ला में दाख़िल होने के लिये भी। (إحياءُ العُلوم ج ٤ ص١٢٦) नबियों के सुल्त़ान, रह़मते आ़लमिय्यान, सरदारे दो जहान, मह़बूबे रह़मान صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم का फ़रमाने अ़ज़ीमुश्शान है, "**मुसल्मान की निय्यत उस के अ़मल से बेहतर है।**" (طبرانی مُعجم کبیر ج٦ص١٨٥حدیث ٥٩٤٢) निय्यत दिल के इरादे को कहते हैं, ज़बान से कहना शर्त़ नहीं बल्कि ज़बान से निय्यत के अल्फ़ाज़ कहे मगर दिल में निय्यत मौजूद न हुई तो निय्यत ही नहीं कहलाएगी और सवाब नहीं मिलेगा। **खाने की 43 निय्यतें** पेशे ख़िदमत हैं। इन में से जो जो ह़स्बे ह़ाल हों और मुम्किन हों कर लेनी चाहिएं। येह भी अ़र्ज़ करता चलूं कि येह निय्यतें मुकम्मल नहीं, इल्मे निय्यत रखने वाला इस के ज़रीए़ और बहुत सारी निय्यतें निकाल सकता है। जितनी निय्यतें ज़ियादा होंगी उतना ही सवाब भी ज़ियादा मिलेगा। اِنْ شَآءَاللهُ عَزَّوَجَلَّ

खाने की 43 निय्यतें : ﴾1, 2﴿ खाने से क़ब्ल और बा'द का वुज़ू करूंगा (या'नी हाथ मुंह का अगला हिस्सा धोऊंगा और कुल्लियां करूंगा) ﴾3﴿ खाना खा कर इ़बादत ﴾4﴿ तिलावत ﴾5﴿ वालिदैन की ख़िदमत ﴾6﴿ तह़सीले इ़ल्मे दीन ﴾7﴿ सुन्नतों की तरबियत की ख़ात़िर मदनी क़ाफ़िले में सफ़र ﴾8﴿ अ़लाक़ाई दौरा बराए नेकी की दा'वत में शिर्कत ﴾9﴿ उमूरे आख़िरत और ﴾10﴿ ह़स्बे ज़रूरत कस्बे ह़लाल के लिये

भागदौड़ पर क़ुव्वत ह़ासिल करूंगा (येह निय्यतें उसी सूरत में मुफ़ीद होंगी जब कि भूक से कम खाए। ख़ूब डट कर खाने से उलटा इबादत में सुस्ती पैदा होती, गुनाहों की त़रफ़ रुज्ह़ान बढ़ता और पेट की ख़राबियां जनम लेती हैं) ﴾11﴿ ज़मीन पर ﴾12﴿ इत्तिबाए़ सुन्नत में दस्तर ख़्वान पर ﴾13﴿ (चादर या कुरते के दामन के ज़रीए़) पर्दे में पर्दा कर के ﴾14﴿ सुन्नत के मुत़ाबिक़ बैठ कर ﴾15﴿ खाने से क़ब्ल **बिस्मिल्लाह** और ﴾16﴿ दीगर दुआ़एं पढ़ कर ﴾17﴿ तीन उंग्लियों से ﴾18﴿ छोटे छोटे निवाले बना कर ﴾19﴿ अच्छी त़रह़ चबा कर खाऊंगा ﴾20﴿ हर लुक़्मे पर يَا وَاجِدُ पढ़ूंगा (या हर लुक़्मे के ख़त्म पर اَلْحَمْدُ لِلّٰه और हर लुक़्मे के आग़ाज़ पर يَا وَاجِدُ और **बिस्मिल्लाह**) ﴾21﴿ जो दाना वग़ैरा गिर गया उठा कर खा लूंगा ﴾22﴿ रोटी का हर निवाला सालन के बरतन के ऊपर कर के तोड़ूंगा (ताकिरोटी के ज़र्रात बरतन ही में गिरें) ﴾23﴿ हड्डी और गर्म मसालह़ा वग़ैरा अच्छी त़रह़ साफ़ करने और चाटने के बा'द फेंकूंगा ﴾24﴿ भूक से कम खाऊंगा ﴾25﴿ आख़िर में सुन्नत की अदाएगी की निय्यत से बरतन और ﴾26﴿ तीन[3] बार उंग्लियां चाटूंगा ﴾27﴿ खाने के बरतन धो पी कर एक ग़ुलाम आज़ाद करने के सवाब का ह़क़दार बनूंगा ﴾28﴿ जब तक दस्तर ख़्वान न उठा लिया जाए उस वक़्त तक बिला ज़रूरत नहीं उठूंगा (कि येह भी सुन्नत है) ﴾29﴿ खाने के बा'द बमअ़ अव्वल आख़िर दुरूद शरीफ़ मस्नून दुआ़एं पढ़ूंगा ﴾30﴿ ख़िलाल करूंगा।

फ़रमाने मुस्तफ़ा صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم : जिस ने मुझ पर रोज़े जुमुआ़ दो सो बार दुरूदे पाक पढ़ा उस के दो सो साल के गुनाह मुआ़फ़ होंगे। (جمع الجوامع)

मिल कर खाने की मज़ीद निय्यतें : ﴾31﴿ दस्तर ख़्वान पर अगर कोई आ़लिम या बुज़ुर्ग मौजूद हुए तो उन से पहले खाना शुरूअ़ नहीं करूंगा ﴾32﴿ मुसल्मानों के कु़र्ब की बरकतें हा़सिल करूंगा ﴾33﴿ उन को बोटी, कद्दू शरीफ़, खुरचन और पानी वग़ैरा की पेशकश कर के उन का दिल खु़श करूंगा (किसी की प्लेट में अपने हाथ से उठा कर डाल देना आदाब के ख़िलाफ़ है। जो चीज़ हम ने डाली हो सकता है उस वक़्त उसे उस की ख़्वाहिश न हो) ﴾34﴿ उन के सामने मुस्कुरा कर सदके़ का सवाब कमाऊंगा ﴾35﴿ किसी को मुस्कुराता देख कर इस की मस्नून दुआ़ पढ़ूंगा (मुस्कुराता देख कर पढ़ने की दुआ़ : اَضْحَكَ اللّٰهُ سِنَّكَ या'नी **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ तुझे सदा हंसता रखे। (صحيح البخاری ج٤ ص٤٠٣ حديث٣٢٩٤) ﴾36﴿ खाने की निय्यतें और ﴾37﴿ सुन्नतें बताऊंगा ﴾38﴿ मौक़अ़ मिला तो खाने से क़ब्ल और ﴾39﴿ बा'द की दुआ़एं पढ़ाऊंगा ﴾40﴿ गिज़ा का उ़म्दा हि़स्सा मसलन बोटी वग़ैरा हि़र्स से बचते हुए दूसरों की ख़ाति़र ईसार करूंगा (ताजदारे मदीना صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم का फ़रमाने बख़्शिश निशान है, "जो शख़्स उस चीज़ को जिस की खुद इसे हा़जत हो दूसरे को दे दे **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ उसे बख़्श देता है।") (اتحاف السادة المتقين ج٩ ص ٧٧٩) ﴾41﴿ उन को ख़िलाल और ﴾42﴿ तीन[3] उंग्लियों से खाने की मश्क़ करने के लिये रबड़ बेन्ड का तोह़फ़ा पेश करूंगा ﴾43﴿ खाने के हर लुक़्मे पर हो सका तो इस निय्यत के साथ बुलन्द आवाज़ से يَا وَاجِدُ कहूंगा कि दूसरों को भी याद आ जाए।

खाने का वुज़ू मोह़ताजी दूर करता है : ह़ज़रते सय्यिदुना अ़ब्दुल्लाह इब्ने अ़ब्बास رَضِیَ اللهُ تَعَالٰی عَنْهُمَا से रिवायत है कि सरकारे मदीना, सुल्त़ाने बा करीना, क़रारे क़ल्बो सीना, फ़ैज़ गन्जीना صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم का इर्शादे रह़मत बुन्याद है, "खाने से पहले और बा'द में **वुज़ू** करना मोह़ताजी को दूर करता है और येह मुर्सलीन (عَلَيْهِمُ السَّلَام) की सुन्नतों में से है।"

(المعجم الاوسط ج ٥ ص ٢٣١ حديث ٧١٦٦)

खाने का वुज़ू घर में भलाई बढ़ाता है : ह़ज़रते सय्यिदुना अनस رَضِیَ اللهُ تَعَالٰی عَنْهُ से रिवायत है कि **अल्लाह** के मह़बूब, दानाए गुयूब, मुनज़्ज़हुन अ़निल उ़यूब صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया, "जो येह पसन्द करे कि **अल्लाह** तआ़ला उस के घर में ख़ैर (या'नी भलाई) ज़ियादा करे तो जब खाना ह़ाज़िर किया जाए, **वुज़ू** करे और जब उठाया जाए उस वक़्त भी **वुज़ू** करे।" (ابنِ ماجه شریف ج ٤ ص ٩ حديث ٣٢٦٠)

खाने के वुज़ू की नेकियां : उम्मुल मुअमिनीन ह़ज़रते सय्यिदतुना आ़इशा सिद्दीक़ा رَضِیَ اللهُ تَعَالٰی عَنْهَا से रिवायत है कि सरकारे मदीना صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने इर्शाद फ़रमाया, "खाने से पहले **वुज़ू** करना **एक नेकी** और खाने के बा'द करना **दो नेकियां** हैं।"

(جامع صغير ص ٥٧٤ حديث ٩٦٨٢)

प्यारे प्यारे इस्लामी भाइयो ! खाने के अव्वल आख़िर हाथ वग़ैरा धोने में सुस्ती नहीं करनी चाहिये। खु़दा की क़सम ! "एक नेकी" की अस्ल ह़क़ीक़त बरोज़े क़ियामत ही पता चलेगी कि जब किसी की सिर्फ़ एक ही नेकी कम पड़ रही होगी और वोह अपने अ़ज़ीज़ों से सिर्फ़ एक नेकी का सुवाल करेगा मगर देने के लिये कोई तय्यार न होगा।

शैत़ान से ह़िफ़ाज़त : सरकारे नामदार, मदीने के ताजदार صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰی عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم का फ़रमाने बरकत निशान है, "खाने से पहले और बा'द वुज़ू (या'नी हाथ मुंह धोना) रिज़्क़ में कुशादगी करता और शैत़ान को दूर करता है।" (كَنزُالعُمّال ج ١٠ ص ١٠٦ حديث ٤٠٧٥٥)

बीमारियों से ह़िफ़ाज़त के नुस्ख़े : प्यारे प्यारे इस्लामी भाइयो ! खाने के वुज़ू से मुराद नमाज़ वाला वुज़ू नहीं बल्कि इस में दोनों हाथ गिट्टों तक और मुंह का अगला ह़िस्सा धोना और कुल्ली करना है। **मुफ़स्सिरे** शहीर ह़कीमुल उम्मत ह़ज़रते मुफ़्ती अह़मद यार ख़ान عَلَيْهِ رَحْمَةُ الْحَنَّان फ़रमाते हैं, "तौरेत शरीफ़ में दो[2] बार हाथ धोने कुल्ली करने का हुक्म था, खाने से पहले और खाने के बा'द मगर यहूद ने सिर्फ़ बा'द वाला बाक़ी रखा पहले का ज़िक्र मिटा दिया। खाने से पहले हाथ धोने कुल्ली करने की तरग़ीब इस लिये है कि उ़मूमन कामकाज की वज्ह से हाथ मैले, दांत मैले हो जाते हैं, और खाने से हाथ मुंह चिक्ने हो जाते

हैं लिहाज़ा दोनों[2] वक़्त सफ़ाई की जाए। खाना खा कर कुल्ली करने वाला शख़्स اِنْ شَآءَاللّٰه عَزَّوَجَلَّ दांतों के मूज़ी मरज़ पाएरिया (PHYORRHEA) से महफ़ूज़ रहेगा, वुज़ू में मिस्वाक का आदी दांतों और मे'दे के अमराज़ से बचा रहता है। **खाना खाने के फ़ौरन बा'द पेशाब करने की आदत डालो इस से गुर्दा व मसाने के अमराज़ से हिफ़ाज़त होती है।** बहुत मुजर्रब (या'नी आज़्माया हुवा) है।" (मिरआत शर्हे मिश्कात, जि. 6, स. 32)

ड्राइवर की पुर असरार मौत : प्यारे प्यारे इस्लामी भाइयो ! यक़ीनन सुन्नत में अ़ज़्मत है, जहां सुन्नत पर अ़मल करने में सवाब मिलता है वहीं इस के दुन्यवी फ़वाइद भी होते हैं। खाने से पहले दोनों[2] हाथ पहुंचों तक धो लेना सुन्नत है। मुंह का अगला हिस्सा धोना और कुल्ली भी कर लेना चाहिये। चूंकि हाथों से जुदा जुदा काम किये जाते हैं और वोह मुख़्तलिफ़ चीज़ों से मस होते हैं लिहाज़ा इन पर मैल कुचैल और कई तरह के जरासीम लग जाते हैं। खाने से पहले हाथ धो लेने से इन की सफ़ाई हो जाती और इस सुन्नत की बरकत के सबब हमें कई बीमारियों से तहफ़्फ़ुज़ हासिल हो जाता है खाने से पहले धोए हुए हाथ न पोंछे जाएं कि तोलिया वग़ैरा के जरासीम हाथों में लग सकते हैं। कहा जाता है, एक **ट्रक ड्राइवर** ने होटल में खाना खाया और खाने के फ़ौरन बा'द तड़प तड़प कर मर गया। दूसरे कई लोगों ने भी उस होटल में खाना खाया मगर उन्हें कुछ भी न हुवा। तहक़ीक़ शुरूअ़ हुई, किसी ने

बताया कि ड्राइवर ने खाने से क़ब्ल होटल के क़रीब ट्रक के टायर चेक किये थे, फिर हाथ धोए बिग़ैर उस ने खाना खाया था। चुनान्चे ट्रक के टायरों को चेक किया गया तो इन्किशाफ़ हुवा कि पहिय्ये के नीचे एक ज़हरीला सांप कुचला गया था जिस का ज़हर टायर पर फैल गया और वोह ड्राइवर के हाथों पर लग गया, **हाथ न धोने के सबब खाने के साथ वोह ज़हर पेट में चला गया जो कि ड्राइवर की फ़ौरी मौत का सबब बना।**

अल्लाह की रह़मत से सुन्नत में शराफ़त है

सरकार की सुन्नत में हम सब की ह़िफ़ाज़त है

बाज़ार में खाना : ह़ज़रते सय्यिदुना अबू उमामा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ से रिवायत है कि नबिय्ये करीम, रसूले अ़ज़ीम, रऊफ़ुर्रह़ीम عَلَيْهِ اَفْضَلُ الصَّلٰوةِ وَالتَّسْلِيْم ने इर्शाद फ़रमाया, "बाज़ार में खाना बुरा है।" (جامع صغير ص ١٨٤ حديث ٣٠٧٣)

सदरुश्शरीअ़ह बदरुत्त़रीक़ह अ़ल्लामा मौलाना मुफ़्ती मुह़म्मद अमजद अ़ली आ'ज़मी عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللّٰهِ الْقَوِى फ़रमाते हैं, "रास्ते और बाज़ार में खाना मक्रूह है।" (बहारे शरीअ़त, ह़िस्सा : 11, स. 19)

बाज़ार की रोटी : ह़ज़रते सय्यिदुना इमाम बुरहानुद्दीन इब्राहीम ज़रनूजी عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللّٰهِ الْقَوِى फ़रमाते हैं, इमामे जलील ह़ज़रते सय्यिदुना मुह़म्मद बिन फ़ज़्ल رَحْمَةُ اللّٰهِ تَعَالٰى عَلَيْه ने दौराने ता'लीम कभी भी बाज़ार से खाना

नहीं खाया उन के वालिद साहि़ब हर जुमुआ़ को अपने गाउं से उन के लिये खाना ले आते थे। एक मरतबा जब वोह खाना देने आए तो उन के कमरे में **बाज़ार की रोटी** रखी देख कर सख़्त नाराज़ हुए और अपने बेटे से बात तक नहीं की। साहि़ब ज़ादे ने मा'ज़िरत करते हुए अ़र्ज़ की, अब्बाजान ! येह रोटी बाज़ार से मैं नहीं लाया मेरा रफ़ीक़ मेरी रिज़ा मन्दी के बिग़ैर ख़रीद कर लाया था। वालिद साहि़ब ने येह सुन कर डांटते हुए फ़रमाया, अगर तुम्हारे अन्दर तक़्वा होता तो तुम्हारे दोस्त को कभी भी येह जुरअत न होती।

(تَعلِیمُ الْمُتَعَلِّمِ طَرِیْقُ التَّعَلُّمِ ص٦٧ بابُ المدینه کراچی)

बाज़ारी खाना बे बरकत होता है : प्यारे प्यारे इस्लामी भाइयो ! देखा आप ने ! हमारे बुज़ुर्गाने दीन رَحِمَهُمُ اللّٰهُ الْمُبِین तक़्वे का किस क़दर ख़याल रखते थे और अपनी औलाद की कैसी ज़बर दस्त तरबियत फ़रमाते थे कि होटल की और बाज़ारी ग़िज़ाएं उन्हें नहीं खाने देते थे। ह़ज़रते इमाम ज़रनूजी عَلَيْهِ رَحمَةُ اللّٰهِ الْقَوِی फ़रमाते हैं, "अगर मुम्किन हो तो ग़ैर मुफ़ीद और बाज़ारी खाने से परहेज़ करना चाहिये क्यूं कि बाज़ारी खाना इन्सान को ख़ियानत व गन्दगी के क़रीब और ज़िक्रे ख़ुदावन्दी عَزَّوَجَلَّ से दूर कर देता है। इस की वज्ह येह है कि बाज़ार के खानों पर ग़ुरबा और फ़ुक़रा की नज़रें भी पड़ती हैं और वोह अपनी ग़ुरबत व

इफ़्लास की बिना पर जब उस खाने को नहीं ख़रीद सकते तो दिल बरदाश्ता हो जाते हैं और यूं उस खाने से बरकत उठ जाती है।"

(ایضاً ص ۸۸)

होटल में खाना कैसा ? : बाज़ारों में ठेलों और बस्तों वग़ैरा पर त़रह़ त़रह़ की चटपटी ग़िज़ाओं के चटख़ारे लेने वाले इस से दर्से इ़ब्रत ह़ासिल करें। जब बाज़ार में खाना बुरा है तो फ़िल्मी गीतों की धुनों में होटलों के अन्दर वक़्त बे वक़्त खाना, चाय की चुस्कियां लेना और ठन्डे मश्‍रूबात पीना किस क़दर मा'यूब होगा ! अगर गाने न भी बज रहे हों तब भी होटलों का माह़ोल अक्सर ग़फ़्लतों भरा होता है, इन में जा कर बैठना शुरफ़ा और बा शरअ़ ह़ज़रात के शायाने शान नहीं। लिहाज़ा ज़रूरत हो तब भी ख़रीद कर किसी मह़फ़ूज़ जगह पर खाने पीने ही में भलाई है। हां जो मजबूर है वोह मा'ज़ूर है। मगर जब होटल में फ़िल्में डिरामे या गाने बाजे का सिल्सिला हो तो वहां न जाए कि जानबूझ कर मूसीक़ी की आवाज़ सुनना गुनाह है। चुनान्चे

मूसीक़ी की आवाज़ से बचना वाजिब है : ह़ज़रते सय्यिदुना अ़ल्लामा शामी رَحْمَةُ اللّٰهِ تَعَالٰى عَلَيْه फ़रमाते हैं, "(लचके तोड़े के साथ) नाचना, मज़ाक़ उड़ाना, ताली बजाना, सितार के तार बजाना, बरबत़, सारंगी, रबाब, बांसरी, क़ानून (एक साज़ का नाम), झांझन, बिगल बजाना मक्‍रूहे तह़रीमी (या'नी क़रीब ब ह़राम) है क्यूं कि येह सब कुफ़्फ़ार के शिआ़र हैं,

नीज़ बांसरी और (मूसीक़ी के) दीगर साज़ों का सुनना भी ह़राम है अगर अचानक सुन लिया तो मा'ज़ूर है और इस पर वाजिब है कि न सुनने की पूरी कोशिश करे।" (رَدُّالْمُحتَار ج۹ص۵٦٦)

कानों में उंगलियां डालना : प्यारे प्यारे इस्लामी भाइयो ! खुश नसीब हैं वोह मुसल्मान जो कलामे रब्बे काएनात عَزَّوَجَلَّ, ना'ते शाहे मौजूदात صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم और सुन्नतों भरे बयानात तो सुनते हैं मगर फ़िल्मी गानों और मूसीक़ी की आवाज़ आने पर ब सबबे ख़ौफ़े खुदावन्दी न सुनने की पूरी कोशिश करते हुए कानों में उंगलियां दाख़िल कर के वहां से फ़ौरन दूर हट जाते हैं। चुनान्चे ह़ज़रते सय्यिदुना नाफ़ेअ़ رَضِیَ اللهُ تَعَالٰی عَنْه फ़रमाते हैं, मैं बचपन में ह़ज़रते सय्यिदुना अ़ब्दुल्लाह इब्ने उ़मर رَضِیَ اللهُ تَعَالٰی عَنْهُمَا के साथ कहीं जा रहा था कि रास्ते में मिज़्मार (या'नी बाजा) बजाने की आवाज़ आने लगी, इब्ने उ़मर رَضِیَ اللهُ تَعَالٰی عَنْهُمَا ने **अपने कानों में उंगलियां डाल दीं** और रास्ते से दूसरी त़रफ़ हट गए और दूर जाने के बा'द पूछा, **नाफ़ेअ़**! आवाज़ आ रही है? मैं ने अ़र्ज़ की, अब नहीं आ रही। तो कानों से उंगलायां निकालीं और इर्शाद फ़रमाया, "एक बार मैं **सरकारे** मदीनए मुनव्वरह, सरदारे मक्कए मुकर्रमा صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم के साथ कहीं जा रहा था, सरकार صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने इसी त़रह़ किया जो मैं ने किया।" (ابوداوٗد ج٤ص ٣٠٧ الحديث ٤٩٢٤)

मूसीक़ी की आवाज़ आती हो तो हट जाइये : मा'लूम हुवा कि जूं ही मूसीक़ी की आवाज़ आए फ़ौरन कानों में उंग्लियां दाख़िल कर के वहां से दूर हट जाए क्यूं कि अगर उंग्लियां तो कानों में डाल दीं मगर वहीं खड़े या बैठे रहे या मा'मूली सा परे हट गए तो मूसीक़ी की आवाज़ से बच नहीं सकेंगे। उंग्लियां कानों में डाल कर न सही मगर किसी त़रह भी मूसीक़ी की आवाज़ से बचने की भरपूर कोशिश करना वाजिब है। आह ! आह ! आह ! अब तो सय्यारों, त़य्यारों, मकानों, दुकानों, गलियों बाज़ारों में जिस त़रफ़ भी चले जाइये मूसीक़ी की धुनें और गानों की आवाज़ें सुनाई देती हैं और जो आ़शिक़े रसूल कानों में उंग्लियां डाल कर दूर हट जाए, उस का मज़ाक़ उड़े।

वोह दौर आया कि दीवानए नबी के लिये
हर एक हाथ में पथ्थर दिखाई देता है

प्यारे प्यारे इस्लामी भाइयो ! दा'वते इस्लामी के मदनी माह़ोल के साथ वाबस्तगी से ज़िन्दगी में वोह वोह ह़ैरत अंगेज़ तब्दीलियां आती हैं कि कई बार इस्लामी भाइयों को कहते सुना गया है कि काश ! हमें बहुत पहले दा'वते इस्लामी का **मदनी माह़ोल** मुयस्सर आ गया होता ! दा'वते इस्लामी के **मदनी माह़ोल** की बरकतों से मालामाल एक **मदनी बहार** मुलाह़ज़ा फ़रमाइये चुनान्चे,

घर दर्स की बरकत की ह़िकायत : आकोला (महाराष्ट्र, अल हिन्द) के एक इस्लामी भाई ने कुछ इस त़रह़ का बयान दिया कि बद मज़्हबों के साथ तअ़ल्लुक़ात के बाइस हमारा घराना बद अ़मली के साथ साथ बद अ़क़ीदगी की त़रफ़ भी गामज़न था, एक दिन हम सब घर वाले मिल कर T.V. देखने में मश्ग़ूल थे कि मेरा सतरह सालह छोटा भाई जो कि **दा'वते इस्लामी** के सुन्नतों भरे इज्तिमाअ़ में आने जाने लगा था, वोह T.V. की त़रफ़ पीठ किये उलटा चलता हुवा कमरे में दाख़िल हुवा और अपनी कोई चीज़ अलमारी से निकाल कर इसी अन्दाज़ पर वापस पलटा। उस की येह अ़जीबो ग़रीब ह़रकत देख कर मैं ग़ुस्से में चीख़ा, "क्या तेरा दिमाग़ ख़राब हो गया है जो आज येह अ़जीब बचकाना ह़रकत कर रहा है !" वोह जवाबी कारवाई किये बिग़ैर दूसरे कमरे में चला गया। वालिदा साहिबा ने खुलासा किया, कि इस ने मुझे बताया था कि मैं ने क़सम खाई है कि आयिन्दा T.V. की त़रफ़ देखूंगा भी नहीं ! मैं ने ग़ुस्से की वज्ह से छोटे भाई से बातचीत बन्द कर दी। उस ने घर में सब को इकठ्ठा कर के **फ़ैज़ाने सुन्नत** का दर्स जारी कर दिया। मैं उस में नहीं बैठता था, एक दिन मैं क़रीब हो कर बैठ गया कि सुनूं तो सही येह दर्स में क्या बताता है, सुना तो बहुत अच्छा लगा, लिहाज़ा मैं रोज़ाना **घर दर्स** में शरीक होने लगा। रफ़्ता रफ़्ता मेरे दिल की सियाही दूर होने लगी, ह़त्ता कि दा'वते इस्लामी के **हफ़्तावार सुन्नतों भरे इज्तिमाअ़** में ह़ाज़िरी

देने लगा। اَلْحَمْدُ لِلّٰه عَزَّوَجَلَّ अ़क़्ल ठिकाने आई, बद मज़्हबों की सोहबत से जान छुड़ाई और चेहरे पर दाढ़ी सजाई नीज़ बद अ़क़ीदा मुक़र्रिर की गुमराह कुन केसिटें जो कि शौक़ से सुना करता था अब इस की जगह मक्तबतुल मदीना की त़रफ़ से जारी होने वाले सुन्नतों भरे बयानात की केसिटें सुनने लगा। हमारे चारों कमरों में T.V. रखे हुए थे اَلْحَمْدُ لِلّٰه عَزَّوَجَلَّ बाहमी मश्वरे से चारों T.V. घर से निकाल दिये हैं।

बुरी सोहबतों से कनारा कशी कर और अच्छों के पास आ के पा मदनी माहोल
तुम्हें लुत्फ़ आ जाएगा ज़िन्दगी का क़रीब आ के देखो ज़रा मदनी माहोल

صَلُّوا عَلَى الْحَبِيب ! صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلٰى مُحَمَّد

ईमान की हि़फ़ाज़त का ज़रीआ़ : **प्यारे प्यारे इस्लामी भाइयो !** देखा आप ने ! اَلْحَمْدُ لِلّٰه عَزَّوَجَلَّ **घर दर्स** में अहले ख़ाना के ईमान के तह़फ़्फ़ुज़ और इस्लाहे़ आ'माल के अस्बाब मौजूद हैं। इसी त़रह़ इस्लामी भाइयों और इस्लामी बहनों की अख़्लाक़ी तरबियत के लिये **फ़िक्रे मदीना** के ज़रीए़ रोज़ाना **मदनी इन्आ़मात** का कार्ड पुर करने की भी तरकीब है और इस कार्ड में दर्ज शुदा ग्यारहवें मदनी इन्आ़म के मुत़ाबिक़ हर एक को रोज़ाना **फ़ैज़ाने सुन्नत** से **दो2 दर्स** देने या सुनने की तरग़ीब भी मौजूद है। इन दो2 दर्सों में एक "घर दर्स" भी है। आप सब की ख़िदमत में घर दर्स जारी करने की **मदनी इल्तिजा** है।

अ़मल का हो जज़्बा अ़ता या इलाही — *गुनाहों से मुझ को बचा या इलाही*

सआ़दत मिले दर्से फ़ैज़ाने सुन्नत — *की रोज़ाना दो मरतबा या इलाही*

اٰمِين بِجاهِ النَّبِيِّ الْاَمين صَلَّى اللهُ تعالٰى عليه واٰلهٖ وسلَّم

क़ब्र की रोशनी : दर्सो बयान के सवाब का भी क्या कहना ! ह़ज़रते अ़ल्लामा जलालुद्दीन सुयूत़ी अश्शाफ़ेई عَلَيْهِ رَحمَةُ اللهِ القَوِی "शरहुस्सुदूर" में नक़्ल करते हैं, **अल्लाह** तबारक व तआ़ला ने ह़ज़रते सय्यिदुना मूसा कलीमुल्लाह عَلٰى نَبِيِّنَا وَعَلَيْهِ الصَّلٰوةُ وَالسَّلَام की त़रफ़ वह़्य फ़रमाई, "**भलाई की बातें ख़ुद भी सीखो और दूसरों को भी सिखाओ, मैं भलाई सीखने और सिखाने वालों की क़ब्रों को रोशन फ़रमाऊंगा ताकि उन को किसी क़िस्म की वह़शत न हो।**" (حلية الاولياء ج٦ ص٥ حديث ٧٦٢٢)

क़ब्रें जगमगा रही होंगी : इस रिवायत से नेकी की बात सीखने सिखाने का अज्रो सवाब मा'लूम हुवा। सुन्नतों भरा बयान करने या दर्स देने और सुनने वालों के तो वारे ही न्यारे हो जाएंगे, اِنْ شَآءَاللّٰه عَزَّوَجَلَّ उन की क़ब्रें अन्दर से जगमग जगमग कर रही होंगी और उन्हें किसी क़िस्म का ख़ौफ़ मह़सूस नहीं होगा। **इन्फ़िरादी कोशिश** करते हुए नेकी की दा'वते देने वालों, **मदनी क़ाफ़िले** में सफ़र और फ़िक्रे मदीना कर के **मदनी इन्आ़मात** का कार्ड रोज़ाना पुर करने की तरग़ीब

दिलाने वालों और सुन्नतों भरे इजतिमाअ़ की दा'वत पेश करने वालों नीज़ मुबल्लिग़ीन की नेकी की दा'वत को सुनने वालों की क़ुबूर भी اِنْ شَآءَاللہ عَزَّوَجَلَّ हुज़ूर मुफ़ीज़ुन्नूर صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم के नूर के सदक़े नूरुन अ़ला नूर होंगी।

क़ब्र में लहराएंगे ता ह़श्र चश्मे नूर के
जल्वा फ़रमा होगी जब त़ल्अ़त रसूलुल्लाह की (ह़दाइके़ बख़्शिश)

घर वालों की इस्लाह़ ज़रूरी है : प्यारे प्यारे इस्लामी भाइयो ! अपनी और अपने अहले ख़ाना की इस्लाह़ हम पर ज़रूरी है चुनान्चे पारह 28 **सूरतुत्तह़रीम** की आयत नम्बर 6 में इर्शादे ख़ुदावन्दी عَزَّوَجَلَّ है,

يٰۤاَيُّهَا الَّذِيْنَ اٰمَنُوْا قُوْۤا اَنْفُسَكُمْ وَاَهْلِيْكُمْ نَارًا وَّ قُوْدُهَا النَّاسُ وَالْحِجَارَةُ

तरजमए कन्ज़ुल ईमान : ऐ ईमान वालो ! अपनी जानों और अपने घर वालों को उस आग से बचाओ जिस के ईंधन आदमी और पथ्थर हैं।

اَلْحَمْدُ لِلّٰہ عَزَّوَجَلَّ "घर दर्स" के ज़रीए़ भी इस आयते करीमा में दिये गए हुक्म पर अ़मल मुम्किन हो जाएगा। नीज़ इस ज़िम्न में मक्तबतुल मदीना से जारी कर्दा सुन्नतों भरे रसाइल पढ़ना पढ़ाना और सुन्नतों भरे बयानात और मदनी मुज़ाकरे की केसीटें घर में चलाना भी मुफ़ीद है। اَلْحَمْدُ لِلّٰہ عَزَّوَجَلَّ सुन्नतों भरे रसाइल व केसीटों के ज़रीए़ भी कई लोगों की इस्लाह़ के वाक़िआ़त मिलते हैं, चुनान्चे

मक्तबतुल मदीना के रिसाले की बहार : एक इस्लामी भाई का बयान है कि स्कूल में बुरे माहोल के सबब फ़िल्मों का जुनून की ह़द तक शौक़ीन हो गया था, सिर्फ़ फ़िल्में देखने दूसरे शहरों तक पहुंच जाता। फ़िल्मों के SEX APEAL मनाज़िर की नुहूसत के बाइस مَعَاذَ اللهِ عَزَّوَجَلَّ बे पर्दा लड़कियों का कॉलेज तक पीछा करना और रोज़ाना दाढ़ी मुंडाना मेरी आ़दत थी। नुहूसत बालाए नुहूसत येह कि मुझ पर थियेटर में, सरकस और मौत के कूंएं के अन्दर काम करने का भूत सुवार हो गया। घर वाले इन्तिहाई परेशान थे। एक दिन वालिद साहि़ब ने **दा'वते इस्लामी** के ज़िम्मादारान से बात कर के अ़लाक़े के **आ़शिक़ाने रसूल** के हमराह **मदनी क़ाफ़िले** में सफ़र पर भेज दिया। आख़िरी दिन अमीरे क़ाफ़िला ने मुझे **काले बिच्छू** (मत़्बूआ़ मक्तबतुल मदीना) नामी रिसाला पढ़ने को दिया, मैं ने पढ़ा तो कांप उठा। फ़ौरन गुनाहों से तौबा की और चेहरे पर एक मुठ्ठी दाढ़ी सजाने की निय्यत कर ली। वापसी पर दा'वते इस्लामी के होने वाले हफ़्तावार **सुन्नतों भरे इज्तिमाअ़** में शिर्कत की और मक्तबतुल मदीना की जानिब से जारी होने वाले बयान की केसेट जिस का नाम "**ढल जाएगी येह जवानी**" था ख़रीदी और जब घर आ कर बयान सुना तो उस ने मेरे दिल की दुन्या ही बदल कर रख दी ! اَلْحَمْدُ لِلّٰهِ عَزَّوَجَلَّ मैं पाबन्दी से नमाज़ें पढ़ने लगा और दा'वते इस्लामी का

मदनी काम शुरूअ़ कर दिया। اَلْحَمْدُ لِلّٰہ عَزَّوَجَلَّ इस वक़्त (येह बयान देते वक़्त) मैं अपने शहर में **मदनी क़ाफ़िला ज़िम्मादार** की ह़ैसिय्यत से **दा'वते इस्लामी** का मदनी काम कर रहा हूं।

صَلُّوْا عَلَی الْحَبِیْب ! صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلٰی مُحَمَّد

मिल कर खाने में बरकत है : ख़लीफ़ए सानी, अमीरुल मुअमिनीन ह़ज़रते सय्यिदुना उ़मर फ़ारूके़ आ'ज़म رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ रिवायत करते हैं कि सरकारे मदीनए मुनव्वरह, सरदारे मक्कए मुकर्रमा صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم का फ़रमाने बरकत निशान है, कि इकट्ठे हो कर खाओ अलग अलग न खाओ कि बरकत जमाअ़त के साथ है। (ابنِ مَاجہ شریف ج ٤ ص ٢١ حدیث ٣٢٨٧)

सैर होने का नुस्ख़ा : ह़ज़रते सय्यिदुना वह़शी बिन ह़र्ब رَحْمَۃُ اللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہ अपने दादाजान رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ से रिवायत करते हैं कि सह़ाबए किराम رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُم ने बारगाहे रिसालत में अ़र्ज़ की, "**या रसूलल्लाह** ! صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم हम खाना तो खाते हैं मगर **सैर** नहीं होते ?" सरकारे दो² आ़लम صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया, "तुम अलग अलग खाते होगे ?" अ़र्ज़ की, "जी हां," फ़रमाया, "मिल बैठ कर खाना खाया करो और **बिस्मिल्लाह** पढ़ लिया करो तुम्हारे लिये खाने में बरकत दी जाएगी।"

(ابوداؤد شریف ج٣ص٤٨٦ حدیث ٣٧٦٤)

मिल कर खाने की फ़ज़ीलत : एक ही दस्तर ख़्वान पर मिल कर खाने वालों को मुबारक हो कि ह़ज़रते सय्यिदुना अनस बिन मालिक رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ से रिवायत है कि **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ को येह बात सब से ज़ियादा पसन्द है कि वोह बन्दए मोमिन को बीवी बच्चों के साथ दस्तर ख़्वान पर बैठ कर खाता देखे । क्यूं कि जब सब दस्तर ख़्वान पर जम्अ़ होते हैं तो **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ उन को **रह़मत** की निगाह से देखता है और जुदा होने से पहले पहले उन सब को **बख़्श** देता है । (تنبيه الغافلين ص ٣٤٣)

मिल कर खाने में मे'दे का इलाज : पेथॉलोजी के एक प्रोफ़ेसर ने इन्किशाफ़ किया है जब मिल कर खाना खाया जाता है तो सब खाने वालों के जरासीम खाने में मिल जाते हैं और वोह दूसरे अमराज़ के जरासीम को मार डालते हैं नीज़ बा'ज़ अवक़ात खाने में **शिफ़ा** के जरासीम शामिल हो जाते हैं जो **मे'दे के अमराज़** के लिये मुफ़ीद होते हैं ।

एक का खाना दो[2] को काफ़ी है : ह़ज़रते सय्यिदुना जाबिर رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ फ़रमाते हैं कि मैं ने नबिय्ये करीम, रऊफ़ुर्रह़ीम عَلَيْهِ اَفْضَلُ الصَّلٰوةِ وَالتَّسْلِيْم को फ़रमाते सुना, "एक का खाना दो[2] को काफ़ी है और दो[2] का खाना चार[4] को और चार[4] का खाना आठ[8] को किफ़ायत करता है ।"

(صحيح مسلم ص ١١٤٠ حديث ٢٠٥٩)

मीठे मीठे आक़ा मदीने वाले मुस्त़फ़ा صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم का फ़रमाने किफ़ायत निशान है, दो[2] का खाना तीन[3] को और तीन[3] का खाना चार[4] को काफ़ी है। (بخاری شریف ج ٦ ص ٣٤٦ حدیث ٥٣٩٢)

क़नाअ़त की ता'लीम : मुफ़स्सिरे शहीर **ह़कीमुल उम्मत** ह़ज़रते मुफ़्ती अह़मद यार ख़ान عَلَیْہِ رَحْمَۃُ الْمَنَّان इस ह़दीसे मुबारक के तह़त फ़रमाते हैं, "अगर खाना थोड़ा हो और खाने वाले ज़ियादा, तो उन्हें चाहिये कि दो[2] आदमियों के खाने पर तीन[3] आदमी और तीन[3] के खाने पर चार[4] आदमी गुज़ारा कर लें अगर्चे पेट तो न भरेगा मगर इतना खा लेने से ज़ो'फ़ (या'नी कमज़ोरी) भी न होगा, इबादात ब ख़ूबी अदा हो सकेंगी। इस फ़रमाने आ़लीशान में **क़नाअ़त** व मुरव्वत की आ'ला ता'लीम है।"

(मिरआत, जि. 6, स. 16)

तनख़्वाह कम करवा दी : ख़लीफ़तुर्रसूल ह़ज़रते सय्यिदुना सिद्दीक़े अक्बर رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ के दौरे ख़िलाफ़त का वाक़िआ़ है। एक बार ह़ज़रते सय्यिदुना अबू बक्र सिद्दीक़ رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ की अहलियए मोह़तरमा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہَا को ह़ल्वा खाने की ख़्वाहिश हुई तो आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ ने इर्शाद फ़रमाया हमारे पास इतनी रक़म नहीं कि हम ह़ल्वा ख़रीद सकें अ़र्ज़ की मैं अपने घरेलू अख़राजात में से चन्द दिनों में थोड़े थोड़े पैसे बचा कर कुछ रक़म जम्अ़ कर लूंगी उसी से ह़ल्वा ख़रीद लेंगे।" फ़रमाया : "ऐसा कर लेना"। चुनान्चे, आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ की ज़ौजए मोह़तरमा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہَا ने रक़म जम्अ़ करना शुरूअ़ की। चन्द दिनों में थोड़ी सी रक़म जम्अ़ हो गई। जब उन्हों ने आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ को बताया ताकि

आप हल्वा ख़रीद लें तो आप رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْه ने वोह रक़म ली और बैतुल माल में लौटा दी और फ़रमाया कि येह हमारे अख़राजात से ज़ाइद है। इस के बा'द आप رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْه ने आयिन्दा के लिये बैतुल माल से मिलने वाले वज़ीफ़े में इतनी रक़म कम करवा दी। (الکامل فی التاریخ ج۲ص ۲۷۱)

प्यारे प्यारे इस्लामी भाइयो ! इस हिकायत को सुन कर फ़क़त़ ना'रए दादो तह़सीन बुलन्द कर के दिल को ख़ुश कर लेने के बजाए हमें भी तक़्वा और क़नाअ़त का दर्स ह़ासिल करना चाहिये। बिल ख़ुसूस अरबाबे इक़्तिदार व हुकूमती अफ़्सरान नीज़ आइम्मए मसाजिद, दीनी मदारिस के मुदर्रिसीन और मुख़्तलिफ़ इस्लामी शो'बाजात से वाबस्ता इस्लामी भाइयों के लिये इस हिकायत में क़नाअ़त व ख़ुद्दारी अपनाने, हि़र्स व तमअ़ से ख़ुद को बचाने और अपनी आख़िरत को बेहतर बनाने के लिये ख़ूब ख़ूब ख़ूब सामाने इ़ब्रत है। काश ! हम सब मह़्ज़ नफ़्स की तह़रीक पर तनख़्वाह की कमी बेशी या'नी "उस की तनख़्वाह तो इतनी ज़ियादा और मेरी इतनी कम" कह कह कर इस त़रह़ के मुआ़मलात में उलझने के बजाए क़लील आमदनी पर क़नाअ़त करते हुए नेकियों में कसरत के तमन्नाई बन जाएं। **सय्यिदुना सिद्दीक़े अक्बर** رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْه की परहेज़गारी और दौलते दुन्यवी से बे रग़्बती के मुतअ़ल्लिक़ एक और हि़कायत समाअ़त फ़रमाइये चुनान्चे,

वक़्फ़ की चीज़ों के बारे में एह़तियात़ : इमामे आ़ली मक़ाम, इमामे अ़र्श मक़ाम, इमामुल हुमाम ह़ज़रते सय्यिदुना इमामे ह़सन मुज्तबा رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْه फ़रमाते हैं, **ख़लीफ़तुर्रसूल** ह़ज़रते सय्यिदुना सिद्दीक़े अक्बर

رَضِىَ اللّٰهُ تَعَالٰى عَنْه ने अपनी वफ़ात के वक़्त उम्मुल मुअमिनीन ह़ज़रते सय्यिदतुना आ़इशा सिद्दीक़ा رَضِىَ اللّٰهُ تَعَالٰى عَنْهَا से फ़रमाया, देखो ! येह **ऊंटनी** जिस का हम दूध पीते हैं और येह **बड़ा पियाला** जिस में खाते पीते हैं और येह **चादर** जो मैं ओढ़े हुए हूं येह सब बैतुल माल से लिया गया है। हम इन से उसी वक़्त तक नफ़्अ़ अन्दोज़ हो सकते थे जब तक मैं मुसल्मानों के उमूरे ख़िलाफ़त अन्जाम देता था। जिस वक़्त मैं वफ़ात पा जाऊं तो येह तमाम सामान ह़ज़रते सय्यिदुना उ़मर फ़ारूक़े आ'ज़म رَضِىَ اللّٰهُ تَعَالٰى عَنْه को दे देना। चुनान्चे जब ह़ज़रते सय्यिदुना सिद्दीक़े अक्बर رَضِىَ اللّٰهُ تَعَالٰى عَنْه का इन्तिक़ाल हो गया तो उम्मुल मुअमिनीन ह़ज़रते सय्यिदतुना आ़इशा सिद्दीक़ा رَضِىَ اللّٰهُ تَعَالٰى عَنْهَا ने येह तमाम चीज़ें ह़स्बे वसिय्यत वापस कर दीं। ह़ज़रते सय्यिदुना उ़मर फ़ारूक़े आ'ज़म رَضِىَ اللّٰهُ تَعَالٰى عَنْه ने (चीज़ें वापस पा कर) फ़रमाया कि **अल्लाह** तआ़ला उन पर रह़्म फ़रमाए कि उन्हों ने तो अपने बा'द में आने वालों को थका दिया है। (تاريخ الْخُلفاء ص ٦٠)

खाने वाले की मग़्फ़िरत की एक सूरत : जो भी साह़िबे शान काम शुरूअ़ किया जाए उस से क़ब्ल **बिस्मिल्लाह शरीफ़** ज़रूर पढ़नी चाहिये कि सुन्नत है। इसी त़रह़ खाने या पीने से क़ब्ल भी **बिस्मिल्लाह** पढ़ना सुन्नत है और इस की बड़ी बरकतें हैं। चुनान्चे ह़ज़रते सय्यिदुना अनस رَضِىَ اللّٰهُ تَعَالٰى عَنْه से रिवायत है कि मक्की मदनी सरकार, दो[2] आ़लम के मालिको मुख़्तार صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने इर्शाद फ़रमाया, "आदमी के सामने खाना रखा जाता है और उठाने से पहले ही उस की मग़्फ़िरत हो जाती है, इस की सूरत येह है कि जब रखा जाए **बिस्मिल्लाह** कहे और जब उठाया जाने लगे, اَلْحَمْدُ لِلّٰه कहे।"

(الجامع الصغير ص ١٢٢ حديث ١٩٧٤)

टेबल कुर्सी पर खाना सुन्नत नहीं : सह़ीह़ बुख़ारी में ह़ज़रते सय्यिदुना अनस رَضِىَ اللّٰهُ تَعَالٰى عَنْه से रिवायत है, नबिय्ये आख़िरुज़्ज़मान, रह़मते आ़लमिय्यान, दो² आ़लम के सुल्त़ान, सरवरे ज़ीशान صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने ख़्वान (या'नी मेज़) पर खाना खाया न ही छोटी छोटी पियालियों में खाया और न आप صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم के लिये पतली चपातियां पकाई गईं। ह़ज़रते सय्यिदुना क़तादा رَضِىَ اللّٰهُ تَعَالٰى عَنْه से जब पूछा गया, वोह ह़ज़रात किस चीज़ पर खाते थे ? फ़रमाया, दस्तर ख़्वान पर। (صحيح البخاری ج٣ص٥٣٢ حديث٥٤١٥)

सदरुश्शरीअ़ह رَحْمَةُ اللّٰهِ تَعَالٰى عَلَيْه **फ़रमाते हैं : प्यारे प्यारे इस्लामी भाइयो !** टेबल कुर्सी पर खाना अगर्चे गुनाह नहीं मगर सुन्नत भी नहीं। **सदरुश्शरीअ़ह, बदरुत्त़रीक़ह** अ़ल्लामा मौलाना मुफ़्ती मुह़म्मद अमजद अ़ली आ'ज़मी عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللّٰهِ الْقَوِى **बहारे शरीअ़त** ह़िस्सा 16 में फ़रमाते हैं, "ख़्वान, तिपाई (या मेज़) की त़रह़ ऊंची चीज़ होती है जिस पर उमरा के यहां खाना चुना जाता है। ताकि खाते वक़्त झुकना न पड़े उस पर खाना खाना मुतकब्बिरीन का त़रीक़ा था जिस त़रह़ बा'ज़ लोग इस ज़माने में मेज़ या'नी (टेबल) पर खाते हैं, छोटी छोटी पियालियों में खाना उमरा का त़रीक़ा है उन के यहां मुख़्तलिफ़ क़िस्म के खाने छोटे छोटे बरतनों में रखे जाते हैं।" (बहारे शरीअ़त, ह़िस्सा : 16,

कौन सा दस्तर ख़्वान सुन्नत है ? : मुफ़स्सिरे शहीर हकीमुल उम्मत हज़रते मुफ़्ती अहमद यार ख़ान عَلَيْهِ رَحْمَةُ الْمَنَّان फ़रमाते हैं, "सुन्नत येह है कि खाने के आगे क़दरे झुक कर बैठे। **दस्तर ख़्वान कपड़े का, चमड़े का और खजूर के पत्तों का होता था** इन तीन क़िस्म के दस्तर ख़्वानों पर खाना हुज़ूर صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने खाया है, दस्तर ख़्वान भी नीचे ज़मीन पर बिछता था और ख़ुद सरकार صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم भी ज़मीन पर तशरीफ़ फ़रमा होते थे।" (मिरआत, जि. 6, स. 13) **प्यारे प्यारे इस्लामी भाइयो !** टेबल कुर्सी पर खाना अगर्चे गुनाह नहीं मगर ज़मीन पर दस्तर ख़्वान बिछा कर खाना सुन्नत है और सुन्नत ही में अ़ज़मत है। अफ़्सोस ! आजकल येह सुन्नत मुसल्मानों ने काफ़ी हद तक तर्क कर रखी है, मज़्हबी घरानों में भी अब **टेबल कुर्सी** पर खाने का रवाज हो गया है। शादियों में भी टेबल कुर्सी बल्कि अब तो कुर्सी भी हटा ली गई है लोग टेबल के इर्द गिर्द फिर कर खाना खाते हैं। आह ! सुन्नतों भरा दौर फिर कब आएगा !

सुन्नतें आ़म करें दीन का हम काम करें
नेक हो जाएं मुसल्मान मदीने वाले

हर लुक़्मे पर ज़िक्रुल्लाह جَلَّ جَلَالُهٗ **: हज़रते** सय्यिदुना अनस رَضِىَ اللهُ تَعَالٰى عَنْهُ से मरवी है, "**अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ उस बन्दे से राज़ी होता है कि

जब लुक़्मा खाता है तो उस पर **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ की **ह़म्द** करता है और पानी पीता है तो इस पर उस की **ह़म्द** करता है।"

(صحيح مسلم ص ۱۴۶۳ الحديث ۲۷۳۴)

हर लुक़्मे पर पढ़ने का त़रीक़ा : سُبْحٰنَ اللّٰہ عَزَّوَجَلَّ ! रिज़ाए इलाही عَزَّوَجَلَّ पाने का कितना आसान नुस्ख़ा है। ख़ुदा عَزَّوَجَلَّ की क़सम ! **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ की रिज़ा से बढ़ कर कोई सआ़दत ही नहीं। जिस से वोह राज़ी होगा उसी को अपना दीदार बख़्शेगा, उसी को जन्नतुल फ़िरदौस में दाख़िल फ़रमाएगा। हर लुक़्मा खाने और हर घूंट पीने पर **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ का नाम लेने और लुक़्मा खा चुकने और घूंट पी चुकने के बा'द اَلْحَمْدُ لِلّٰہ कहने की आ़दत बनाने की कोशिश कीजिये। ताकि खाने पीने का वक़्त भी ग़फ़्लत में न गुज़रे। हो सके तो हर दो लुक़्मे के दरमियान اَلْحَمْدُ لِلّٰہ, یَا وَاجِدُ और **बिस्मिल्लाह** कहने की आ़दत बनाइये कि यूं हर लुक़्मे की इब्तिदा **बिस्मिल्लाह** और یَا وَاجِدُ के ज़िक्र पर और हर लुक़्मे का इख़्तिताम **ह़म्द** पर होगा। اِنْ شَآءَاللّٰہ عَزَّوَجَلَّ नेकियों का अ़म्बार और सवाब के अन्वार ही अन्वार होंगे। मक्तबतुल मदीना के मत़्बूआ़ जेबी साइज़ के रिसाले **40 रूह़ानी इलाज**[1] के सफ़्ह़ा 11 पर है, یَا وَاجِدُ जो कोई खाना खाते वक़्त हर निवाले पर पढ़ा करेगा اِنْ شَآءَاللّٰہ عَزَّوَجَلَّ वोह खाना उस के पेट में नूर होगा और मरज़ दूर होगा।

مدینہ

1 : येह सिर्फ़ 18 सफ़्ह़ात का रह़मतों और बरकतों भरा रिसाला मक्तबतुल मदीना की किसी भी शाख़ से हदिय्यतन त़लब फ़रमाइये। – **मजलिसे मक्तबतुल मदीना**

कर उल्फ़त में अपनी फ़ना या इलाही

अ़त़ा कर दे अपनी रिज़ा या इलाही

प्यारे प्यारे इस्लामी भाइयो ! सुन्नतों की तरबियत के लिये **आ़शिक़ाने रसूल** के साथ **दा'वते इस्लामी** के मदनी क़ाफ़िलों में सफ़र की तरकीब बनाते रहिये اِنْ شَآءَاللّٰہ عَزَّوَجَلَّ अ़मली तौर पर खाने की सुन्नतों भरी तरबियत होती रहेगी और اِنْ شَآءَاللّٰہ عَزَّوَجَلَّ कभी तो ऐसा खाना मिल जाएगा कि आप के वारे न्यारे हो जाएंगे चुनान्चे इस्लामी भाइयों के साथ पेश आने वाला **मदनी वाक़िआ़** अपने अन्दाज़ में पेश करने की सअ़्य करता हूं।

दाता साहिब رَحْمَۃُ اللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہ **की त़रफ़ से मदनी क़ाफ़िले की ख़ैर ख़्वाही :** **हमारा** मदनी क़ाफ़िला **दाता दरबार** رَحْمَۃُ اللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہ की मस्जिद के अन्दर तीन दिन के लिये क़ियाम पज़ीर था। हम मदनी क़ाफ़िले के जद्‌वल के मुत़ाबिक़ सुन्नतों की तरबियत ह़ासिल कर रहे थे, दौराने ह़ल्क़ा एक साहिब तशरीफ़ लाए उन्हों ने आ़शिक़ाने रसूल के साथ बड़ी मह़ब्बत के साथ मुलाक़ात की फिर कहने लगे, اَلْحَمْدُ لِلّٰہ عَزَّوَجَلَّ आज रात मेरी क़िस्मत का सितारा चमका और **हुज़ूर दाता गन्ज बख़्श अ़ली हिज्वेरी** رَحْمَۃُ اللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہ मुझ गुनहगार के ख़्वाब में तशरीफ़ लाए और कुछ इस त़रह़ फ़रमाया, **"दा'वते इस्लामी के मदनी क़ाफ़िले वाले आ़शिक़ाने रसूल तीन दिन के लिये मेरी मस्जिद में ठहरे हुए हैं**

लिहाज़ा तुम उन के खाने का इन्तिज़ाम करो।" लिहाज़ा मैं मदनी क़ाफ़िले वालों की ख़ैर ख़्वाही के लिये खाना लाया हूं आप ह़ज़रात क़बूल फ़रमाइये।

क्या ग़रज़ दर दर फिरूं मैं भीक लेने के लिये
है सलामत आस्ताना आप का दाता पिया
झोलियां भर भर के ले जाते हैं मंगते रात दिन
हो मेरी उम्मीद का गुलशन हरा दाता पिया

صَلُّوْا عَلَى الْحَبِيْب ! صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلٰى مُحَمَّد

साहि़बे मज़ार ने मदद फ़रमाई : سُبْحٰنَ اللهِ عَزَّوَجَلَّ ! औलियाए किराम رَحِمَهُمُ اللهُ تَعَالٰى मज़ारात में रहते हुए भी अपने मेहमानों की ख़ात़िर मदारात फ़रमाते हैं चुनान्चे **हुज्जतुल इस्लाम** ह़ज़रते सय्यिदुना इमाम मुह़म्मद ग़ज़ाली عَلَيْهِ رَحْمَةُ الْوَالِى कुछ इस त़रह़ नक़्ल करते हैं, मक्कए मुकर्रमा के एक शाफ़ेई मुजावर का कहना है, मिस्र में एक ग़रीब शख़्स के यहां बच्चे की **विलादत** हुई, उस ने एक समाजी कारकुन से राबित़ा किया, वोह नौ मौलूद के वालिद को ले कर कई लोगों से मिला मगर किसी ने माली इमदाद न की, आख़िर कार एक **मज़ार** पर हाज़िरी दी, उस समाजी कारकुन ने कुछ इस त़रह़ **फ़रियाद** की, "या सय्यिदी ! **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ आप पर रह़्म फ़रमाए, आप अपनी **ज़ाहिरी ज़िन्दगी** में बहुत कुछ दिया करते थे, आज कई लोगों से **नौ मौलूद** के लिये मांगा मगर किसी ने कुछ न दिया।" येह कहने के बा'द उस समाजी कारकुन ने ज़ाती त़ौर पर आधा दीनार नौ मौलूद के वालिद को उधार पेश करते हुए कहा, "जब कभी

आप के पास पैसों की तरकीब बन जाए मुझे लौटा देना।" दोनों अपने अपने रास्ते हो लिये। समाजी कारकुन को रात ख़्वाब में **साह़िबे मज़ार का दीदार हुवा**, फ़रमाया, आप ने मुझ से जो कहा वोह मैं ने सुन लिया था मगर उस वक़्त जवाब देने की इजाज़त न थी, मेरे घर वालों से जा कर कहिये कि वोह **अंगीठी** के नीचे की जगह खोदें, एक मश्कीज़ा निकलेगा उस में 500 दीनार होंगे वोह सारी रक़म उस नौ मौलूद के वालिद को पेश कर दीजिये।" चुनान्चे वोह **साह़िबे मज़ार** के घर वालों के पास पहुंचा और सारा माजरा कह सुनाया। उन लोगों ने निशान देही के मुत़ाबिक़ जगह खोदी और 500 दीनार निकाल कर ह़ाज़िर कर दिये। समाजी कारकुन ने कहा, येह सब दीनार आप ही के हैं, मेरे ख़्वाब का क्या ए'तिबार! वोह बोले, **जब हमारे बुज़ुर्ग दुन्या से पर्दा फ़रमाने के बा'द भी सख़ावत करते हैं तो हम क्यूं पीछे हटें!** चुनान्चे उन लोगों ने ब इसरार वोह दीनार उस समाजी कारकुन को दिये और उस ने जा कर उस नौ मौलूद के वालिद को पेश कर दिये और सारा वाक़िआ़ सुनाया। उस ग़रीब शख़्स ने **आधे दीनार** से क़र्ज़ा उतारा और **आधा दीनार** अपने पास रखते हुए कहा, "मुझे येही काफ़ी है।" बाक़ी सब उसी समाजी कारकुन को देते हुए कहा, बक़िय्या तमाम दीनार ग़रीब व नादार लोगों में तक़्सीम फ़रमा दीजिये। रावी का बयान है, मुझे समझ नहीं आती कि इन सब में कौन ज़ियादा सख़ी है! (إحياءُ عُلوم الدين ج٣ ص٣٠٩)

अल्लाह عَزَّوَجَلَّ की उन पर रह़मत हो और उन के सदक़े हमारी मग़्फ़िरत हो।

ख़ाली कभी फेरा ही नहीं अपने गदा को ऐ साइलो मांगो तो ज़रा हाथ बढ़ा कर

ख़ुद अपने भिकारी की भरा करते हैं झोली ख़ुद कहते हैं या रब ! मेरे मंगता का भला कर

صَلُّوا عَلَی الْحَبِیْب ! صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلٰی مُحَمَّد

औलिया बा'दे वफ़ात भी नफ़्अ़ पहुंचाते हैं : प्यारे प्यारे इस्लामी भाइयो ! पहले के लोग बुज़ुर्गों के बारे में किस क़दर अच्छा अ़क़ीदा रखते थे और ब वक़्ते ज़रूरत उन से अपनी ह़ाजतें त़लब करते थे। उन का येह ज़ेह्न बना हुवा होता था कि **अल्लाह** वाले ब अ़त़ाए इलाही عَزَّوَجَلَّ मदद किया करते हैं। बहर ह़ाल औलियाउल्लाह رَحِمَهُمُ اللّٰهُ تَعَالٰی अपने रब्बे काएनात عَزَّوَجَلَّ की इनायात से मज़ारात में ह़यात होते हैं, आने जाने वालों की बात सुनते हैं, हिदायत व इस्तिआ़नत करते हैं और अपने घरों के मुआ़मलात की भी ख़बर रखते हैं, जभी तो साह़िबे मज़ार बुज़ुर्ग رَحْمَةُ اللّٰهِ تَعَالٰی عَلَيْه ने ख़्वाब में जा कर उस समाजी कारकुन की रहनुमाई फ़रमाई और उस नौ मौलूद के ग़रीब बाप की दस्त गीरी और माली इमदाद की। **ह़ज़रते** अ़ल्लामा इब्ने आ़बिदीन शामी رَحْمَةُ اللّٰهِ تَعَالٰی عَلَيْه फ़रमाते हैं, "औलियाउल्लाह رَحِمَهُمُ اللّٰهُ تَعَالٰی रब्बे काएनात عَزَّوَجَلَّ की बारगाह में मुख़्तलिफ़ दरजात रखते हैं और ज़ाइरीन को अपने मआ़रिफ़ व असरार के लिह़ाज़ से नफ़्अ़ पहुंचाते हैं।" (رَدُّالْمُحتَار ج ۱ ص ٦٠٤)

हम को सारे औलिया से प्यार है

اِنْ شَآءَاللّٰہ *अपना बेड़ा पार है*

कौन सा खाना बीमारी है : हज़रते सय्यिदुना उ़क़्बा बिन आ़मिर رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ से रिवायत है, **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ के प्यारे नबी, मक्की मदनी, अ़रबी क़ुरशी صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم का फ़रमाने सिह़ह़त निशान है, "जिस खाने पर **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ का नाम न लिया गया हो वोह **बीमारी** है और उस में बरकत नहीं है और इस का कफ़्फ़ारा येह है कि अगर अभी दस्तर ख़्वान न उठाया गया हो तो **बिस्मिल्लाह** पढ़ कर कुछ खा ले और दस्तर ख़्वान उठा लिया गया हो तो **बिस्मिल्लाह** पढ़ कर उंग्लियां चाट ले।"

(الجامع الصغیر ص ۲۹٤ حدیث ٦٣٢٧)

शैत़ान के लिये खाना ह़लाल : हज़रते सय्यिदुना हुज़ैफ़ा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ रिवायत करते हैं कि ताजदारे मदीना, क़रारे क़ल्बो सीना صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم का फ़रमाने बा क़रीना है, "जिस खाने पर **बिस्मिल्लाह** न पढ़ी जाए वोह खाना शैत़ान के लिये ह़लाल हो जाता है।" (या'नी **बिस्मिल्लाह** न पढ़ने की सूरत में शैत़ान उस खाने में शरीक हो जाता है)

(صحیح مسلم ص ١١١٦ حدیث ٢٠١٧)

खाने को शैत़ान से बचाओ : खाने से पहले **बिस्मिल्लाह** न पढ़ने से खाने में बे बरकती होती है। ह़ज़रते सय्यिदुना अबू अय्यूब अन्सारी رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ फ़रमाते हैं, "हम ताजदारे रिसालत, माहे नुबुव्वत

صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم की ख़िदमते बा बरकत में ह़ाज़िर थे। खाना पेश किया गया, इब्तिदा में इतनी बरकत हम ने किसी खाने में नहीं पाई, मगर आख़िर में बड़ी बे बरकती देखी। हम ने अ़र्ज़ की, "**या रसूलल्लाह** صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ! ऐसा क्यूं हुवा ?" इर्शाद फ़रमाया, "हम सब ने खाना खाते वक़्त **बिस्मिल्लाह** पढ़ी थी। फिर एक शख़्स बिग़ैर **बिस्मिल्लाह** पढ़े खाने को बैठ गया, उस के साथ शैत़ान ने खाना खा लिया।"

(شرح السنة ج٦ ص ٦٢ حديث ٢٨١٨)

शैत़ान से ह़िफ़ाज़त : ह़ज़रते सय्यिदुना सल्मान फ़ारसी رَضِیَ اللهُ تَعَالٰی عَنْهُ रिवायत करते हैं, रह़मते आ़लम, नूरे मुजस्सम, शाहे बनी आदम, रसूले मोह़्तशम صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने इर्शाद फ़रमाया, "जिसे येह बात पसन्द हो कि शैत़ान उस के पास से न तो खाना पाए और न क़ैलूला करने पाए और न ही रात गुज़ार सके तो उसे चाहिये कि जब घर में दाख़िल हो तो सलाम कर ले और खाने के लिये **बिस्मिल्लाह** पढ़ ले।"

(مجمع الزوائد ج٨ ص ٧٧ حديث ١٢٧٧٣)

घरेलू झगड़ों का इलाज : मुफ़स्सिरे शहीर ह़कीमुल उम्मत मुफ़्ती अह़मद यार ख़ान عَلَيْهِ رَحْمَةُ الْمَنَّان फ़रमाते हैं, "घर में दाख़िल होते वक़्त بِسْمِ اللهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْم पढ़ कर पहले सीधा क़दम दरवाज़े में दाख़िल

करना चाहिये फिर घर वालों को सलाम करते हुए घर के अन्दर आएं। अगर घर में कोई न हो तो اَلسَّلَامُ عَلَيْكَ اَيُّهَا النَّبِيُّ وَرَحْمَةُ اللّٰهِ وَبَرَكَاتُهٗ कहिये। बा'ज़ बुज़ुर्गों को देखा गया है कि दिन की इब्तिदा में घर में दाखि़ल होते वक़्त بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ और قُلْ هُوَ اللّٰه शरीफ़ पढ़ लेते हैं कि इस से घर में इत्तिफ़ाक़ भी रहता है (या'नी झगड़ा नहीं होता) और रोज़ी में बरकत भी।" (मिरआत, जि. 6, स. 9)

बिस्मिल्लाह पढ़ना भूल जाए तो क्या करे : उम्मुल मुअमिनीन ह़ज़रते सय्यिदतुना आ़इशा सिद्दीक़ा رَضِىَ اللّٰهُ تَعَالٰى عَنْهَا फ़रमाती हैं कि ताजदारे मदीनए मुनव्वरह, सुल्ताने मक्कए मुकर्रमा صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने इर्शाद फ़रमाया, "जब कोई शख़्स खाना खाए तो **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ का नाम ले। या'नी **बिस्मिल्लाह** पढ़े और अगर शुरूअ़ में **बिस्मिल्लाह** पढ़ना भूल जाए तो यूं कहे, "بِسْمِ اللّٰهِ اَوَّلَهٗ وَاٰخِرَهٗ।" (ابوداؤد شريف ج٣ص٤٨٧ حديث ٣٧٦٧)

शैत़ान ने खाना उगल दिया ! : ह़ज़रते सय्यिदुना उमय्या बिन **मख़्शी** رَضِىَ اللّٰهُ تَعَالٰى عَنْهُ फ़रमाते हैं, एक शख़्स बिग़ैर **बिस्मिल्लाह** पढ़े खाना खा रहा था, जब खा चुका, सिर्फ़ एक ही लुक़्मा बाक़ी रह गया, वोह लुक़्मा उठाया और उस ने येह कहा, بِسْمِ اللّٰهِ اَوَّلَهٗ وَاٰخِرَهٗ। ताजदारे मदीना صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم मुस्कुराने लगे और येह इर्शाद फ़रमाया,

फ़रमाने मुस्त़फ़ा صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم : मुझ पर दुरूद शरीफ़ पढ़ो, **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ तुम पर रह़मत भेजेगा।

''शैत़ान इस के साथ खाना खा रहा था जब इस ने **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ का नाम ज़िक्र किया तो जो कुछ उस के पेट में था **उगल** दिया।'' (ابوداؤد شریف ج۳ ص۳۵۶ حدیث ۳۷۶۸)

निगाहे मुस्त़फ़ा صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم से कुछ पोशीदा नहीं :

प्यारे प्यारे इस्लामी भाइयो ! जब भी खाना खाएं याद कर के بِسۡمِ اللّٰہِ الرَّحۡمٰنِ الرَّحِیۡمِ पढ़ लेना चाहिये। जो नहीं पढ़ता उस का ''क़रीन'' नामी शैत़ान भी खाने में साथ शरीक हो जाता है। सय्यिदुना **उमय्या बिन मख़्शी** رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ वाली रिवायत से साफ़ ज़ाहिर हो रहा है कि हमारे **मीठे मीठे आक़ा** मदीने वाले मुस्त़फ़ा صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم की निगाहें सब कुछ देख लिया करती थीं जभी तो शैत़ान को बद ह़वासी के आ़लम में क़ै करता हुवा मुलाह़ज़ा फ़रमा कर मुस्कुरा दिये। चुनान्चे **मुफ़स्सिरे** शहीर ह़कीमुल उम्मत मुफ़्ती अह़मद यार ख़ान عَلَیْہِ رَحْمَۃُ الْمَنَّان फ़रमाते हैं, ''रह़मते आ़लम صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم की मुक़द्दस नज़रें ह़क़ीक़त में छुपी हुई मख़्लूक़ को भी मुलाह़ज़ा फ़रमाती हैं, और ह़दीसे मुबारक बिल्कुल अपने ज़ाहिरी मा'ना पर है किसी तावील की ज़रूरत नहीं, जैसे हमारा पेट मख्खी वाला खाना (जब कि मख्खी उस में मौजूद हो) क़बूल नहीं करता। ऐसे ही शैत़ान का मे'दा **बिस्मिल्लाह** वाला खाना हज़्म नहीं कर पाता। अगर्चे उस का क़ै किया हुवा खाना हमारे काम नहीं आता, मगर मरदूद बीमार पड़ जाता है और भूका भी रह जाता है और

हमारे खाने की फ़ौत शुदा बरकत लौट आती है। ग़रज़े कि इस में हमारा फ़ाएदा है और शैत़ान के दो[2] नुक़्सान, और मुम्किन है कि वोह मरदूद आयिन्दा हमारे साथ बिग़ैर **बिस्मिल्लाह** वाला खाना भी इस डर से न खाए कि शायद येह बीच में **बिस्मिल्लाह** पढ़ ले और मुझे क़ै करनी पड़ जाए। ह़दीसे पाक में जिस आदमी का ज़िक्र है ग़ालिबन वोह अकेला खा रहा था अगर हुज़ूरे अकरम صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم के साथ खाता होता तो **बिस्मिल्लाह** न भूलता क्यूं कि वहां तो ह़ाज़िरीन **बिस्मिल्लाह** बुलन्द आवाज़ से कहते थे और साथ वालों को **बिस्मिल्लाह** कहने का हुक्म करते थे।" (मिरआत शर्हे मिश्कात, जि. 6, स. 30)

प्यारे प्यारे इस्लामी भाइयो ! اَلْحَمْدُ لِلّٰه عَزَّوَجَلَّ **दा'वते इस्लामी** के **मदनी माह़ोल** और बिल ख़ुसूस **मदनी क़ाफ़िलों** में ख़ूब दुआ़एं पढ़ने और सीखने का मौक़अ़ मिलता है, दा'वते इस्लामी की बहारों के तो क्या कहने ! एक इस्लामी भाई का बयान अपने अन्दाज़ में पेश करने की सआ़दत ह़ासिल करता हूं।

मां चारपाई से उठ खड़ी हुई ! : मेरी अम्मीजान सख़्त बीमारी के सबब चारपाई से उठने तक से मा'ज़ूर हो गई थीं और डोक्टरों ने भी जवाब दे दिया था। मैं सुना करता था कि **आ़शिक़ाने रसूल** के साथ सुन्नतों की तरबियत के **दा'वते इस्लामी** के मदनी क़ाफ़िलों में सफ़र

फ़रमाने मुस्त़फ़ा صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم : जिस ने किताब में मुझ पर दुरूदे पाक लिखा तो जब तक मेरा नाम उस में रहेगा फ़िरिश्ते उस के लिये इस्तिग़्फ़ार (या'नी बख़्शिश की दुआ) करते रहेंगे। (طبرانی)

करने से दुआएं क़बूल होतीं और बीमारियां दूर हो जाती हैं। चुनान्चे मैं ने भी दिल बांधा और **दा'वते इस्लामी** के नूर बरसाते आलमी मदनी मर्कज़ **फ़ैज़ाने मदीना** में "**दारुस्सुन्नह**" हाज़िर हो कर तीन दिन के लिये **मदनी क़ाफ़िले** में सफ़र का इरादा ज़ाहिर किया, इस्लामी भाइयों ने निहायत शफ़्क़त के साथ हाथों हाथ लिया, आशिक़ाने रसूल की **मइय्यत** में हमारा **मदनी क़ाफ़िला** एक गोठ में पहुंचा, दौराने सफ़र **आशिक़ाने रसूल** की ख़िदमात में दुआ की दर ख़्वास्त करते हुए मैं ने अम्मीजान की तश्वीश नाक ह़ालत बयान की, इस पर उन्हों ने अम्मीजान के लिये ख़ूब दुआएं करते हुए मुझे काफ़ी दिलासा दिया, अमीरे क़ाफ़िला ने बड़ी नरमी के साथ **इन्फ़िरादी कोशिश** करते हुए मुझे मज़ीद 30 दिन के **मदनी क़ाफ़िले** में सफ़र के लिये आमादा किया, मैं ने भी निय्यत कर ली। मैं ने अम्मीजान की सिह़्ह़त याबी के लिये ख़ूब गिड़गिड़ा कर दुआएं कीं, तीन दिन के इस मदनी क़ाफ़िले की **तीसरी** रात मुझे एक रोशन चेहरे वाले बुज़ुर्ग की ज़ियारत हुई, उन्हों ने फ़रमाया, "अपनी अम्मीजान की फ़िक्र मत करो اِنْ شَآءَ اللہ عَزَّوَجَلَّ वोह सिह़्ह़त याब हो जाएंगी।" तीन[3] दिन के **मदनी क़ाफ़िले** से फ़ारिग़ हो कर मैं ने घर आ कर दरवाज़े पर दस्तक दी, **दरवाज़ा खुला तो मैं ह़ैरत से खड़े का खड़ा रह गया, क्यूं कि मेरी वोह बीमार अम्मीजान जो कि चारपाई से उठ तक नहीं सकती थीं उन्हों ने अपने पाउं पर चल**

कर दरवाज़ा खोला था ! मैं ने फ़र्ते मसर्रत से मां के क़दम चूमे और मदनी क़ाफ़िले में देखा हुवा ख़्वाब सुनाया । फिर मां से इजाज़त ले कर मज़ीद 30 दिन के लिये **आशिक़ाने रसूल** के साथ **मदनी क़ाफ़िले** में सफ़र पर रवाना हो गया ।

मां जो बीमार हो क़र्ज़ का बार हो — रन्जो ग़म मत करें क़ाफ़िले में चलो
रब के दर पर झुकें इल्तिजाएं करें — बाबे रह़मत खुलें क़ाफ़िले में चलो
दिल की कालक धुले मरज़े इस्यां टले — आओ सब चल पड़ें क़ाफ़िले में चलो

صَلُّوا عَلَی الْحَبِیب ! صَلَّی اللّٰهُ تَعَالٰی عَلٰی مُحَمَّد

प्यारे प्यारे इस्लामी भाइयो ! देखा आप ने ! मदनी क़ाफ़िले में सफ़र कर के दुआ़ करने की बरकत से इस्लामी भाई की मायूसुल इलाज मां शिफ़ायाब हो गई । दुआ़ फिर दुआ़ होती है । अमीरुल मुअमिनीन ह़ज़रते मौलाए काएनात, अ़लिय्युल मुर्तज़ा शेरे खुदा كَرَّمَ اللّٰهُ تَعَالٰی وَجْهَهُ الْكَرِيْم से रिवायत है कि **मक्की मदनी सरकार,** दो[2] आ़लम के मालिको मुख़्तार صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰی عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने इर्शाद फ़रमाया, اَلدُّعاءُ سِلاحُ المؤ مِنِ ، وَ عِمَادُالدِّيْنِ ،وَنُورُ السَّمٰوٰتِ وَالْاَرضِ (مُسنَد اَبی یَعْلٰی ج ۱ ص ۲۱۵ حديث ٤٣٥) या'नी "दुआ़ मोमिन का हथियार है और दीन का सुतून है और ज़मीनो आस्मान का नूर है ।" आइये ज़िम्नन दुआ़ के मदनी फूलों से अपने दिलों के मदनी गुलदस्तों को महकाते हैं ।

صَلُّوا عَلَی الْحَبِیب ! صَلَّی اللّٰهُ تَعَالٰی عَلٰی مُحَمَّد

"दुआ़ मोमिन का हथियार है" के सतरह़ ह़ुरूफ़ की निस्बत से दुआ़ मांगने के 17 मदनी फूल

(तक़रीबन तमाम मदनी फूल **अह़्सनुल विआ़अ लि आदाबिद्दुआ़** मअ़ **शर्हे ज़ैलुल मुद्दआ़ लि अह़्सनिल विआ़अ** मत़्बूआ़ मक्तबतुल मदीना से माख़ूज़ हैं)

﴾1﴿ हर रोज़ कम अज़ कम बीस[20] बार दुआ़ करना वाजिब है। اَلْحَمْدُ لِلّٰہ नमाज़ियों का येह वाजिब, नमाज़ में सूरतुल फ़ातेह़ा से अदा हो जाता है कि اِھْدِنَا الصِّرَاطَ الْمُسْتَقِیْمَ (**तरजमए कन्ज़ुल ईमान :** हम को सीधा रास्ता चला) भी दुआ़ और اَلْحَمْدُ لِلّٰہِ رَبِّ الْعٰلَمِیْنَ (**तरजमए कन्ज़ुल ईमान :** सब ख़ूबियां **अल्लाह** को जो मालिक सारे जहान वालों का) कहना भी दुआ़ है। (स. 123, 124) ﴾2﴿ दुआ़ में ह़द से न बढ़े। मसलन अम्बियाए किराम عَلَیْہِمُ الصَّلٰوۃُ وَالسَّلَام का मर्तबा मांगना या आस्मान पर चढ़ने की तमन्ना करना। नीज़ दोनों[2] जहां की सारी भलाइयां और सब की सब ख़ूबियां मांगना भी मन्अ़ है कि इन ख़ूबियों में मरातिबे अम्बिया عَلَیْہِمُ الصَّلٰوۃُ وَالسَّلَام भी हैं जो नहीं मिल सकते। (स. 80, 81) ﴾3﴿ जो मुह़ाल (या'नी ना मुम्किन) या क़रीब ब मुह़ाल हो उस की दुआ़ न मांगे। लिहाज़ा हमेशा के लिये तन्दुरुस्ती आ़फ़िय्यत मांगना कि आदमी उ़म्र भर कभी किसी त़रह़ की तक्लीफ़ में न पड़े येह मुह़ाले आ़दी की दुआ़ मांगना है। यूंही लम्बे क़द के आदमी का छोटा क़द होने या छोटी आंख वाले का बड़ी आंख की दुआ़ करना मम्नूअ़ है कि येह ऐसे अम्र की दुआ़ है जिस पर क़लम जारी हो चुका है। (स. 81) ﴾4﴿ गुनाह की दुआ़ न करे कि मुझे पराया माल मिल जाए कि गुनाह की त़लब करना भी गुनाह है। (स. 82)

मक्कतुल मुकर्रमा

﴾5﴿ क़त्ए रेह़्म (मसलन फुलां रिश्तेदारों में लड़ाई हो जाए) की दुआ न करे। (स. 82) ﴾6﴿ **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ से सिर्फ़ ह़क़ीर चीज़ न मांगे कि परवर्द गार عَزَّوَجَلَّ ग़नी है बल्कि अपनी तमाम तवज्जोह उसी की त़रफ़ रखे और हर चीज़ का उसी से सुवाल करे। (सफ़ह़ा : 84) ﴾7﴿ रन्जो मुसीबत से घबरा कर अपने मरने की दुआ न करे। ख़याल रहे कि दुन्यवी नुक़्सान से बचने के लिये मौत की तमन्ना ना जाइज़ है और दीनी मज़र्रत (या'नी दीनी नुक़्सान) के ख़ौफ़ से जाइज़ (स. : 85,87) ﴾8﴿ बिला ज़रूरते शरई किसी के मरने और ख़राबी (बरबादी) की दुआ न करे, अलबत्ता अगर किसी काफ़िर के ईमान न लाने पर यक़ीन या ज़न्ने ग़ालिब हो और (उस के) जीने से दीन का नुक़्सान हो या किसी ज़ालिम से तौबा और ज़ुल्म छोड़ने की उम्मीद न हो और उस का मरना, तबाह होना मख़्लूक़ के ह़क़ में मुफ़ीद हो तो ऐसे शख़्स पर बद दुआ करना दुरुस्त है। (स. 86,89) ﴾9﴿ किसी मुसल्मान को येह बद दुआ न दे कि "तू काफ़िर हो जाए" कि बा'ज़ उ़लमा के नज़्दीक (ऐसी दुआ मांगना) कुफ़्र है और तह़क़ीक़ येह है कि अगर कुफ़्र को अच्छा या इस्लाम को बुरा जान कर कहे तो बेशक कुफ़्र है वरना बड़ा गुनाह है कि मुसल्मान की बद ख़्वाही (या'नी बुरा चाहना) ह़राम है, ख़ुसूसन येह बद ख़्वाही (कि फुलां का ईमान बरबाद हो जाए) तो सब बद ख़्वाहियों से बदतर है। (स. : 90) ﴾10﴿ किसी मुसल्मान पर ला'नत न करे और उसे मरदूद व मल्ऊन न कहे और जिस काफ़िर का कुफ़्र पर मरना यक़ीनी नहीं उस पर भी नाम ले कर ला'नत न करे। यूंही मच्छर और हवा और जमादात (या'नी बेजान चीज़ों मसलन पथ्थर, लोहा वग़ैरा)

व हैवानात पर ला'नत मम्नूअ़ है। अलबत्ता बिच्छू वग़ैरा बा'ज़ जानवरों पर ह़दीसे पाक में ला'नत आई है। (स. 90) ﴾11﴿ किसी मुसल्मान को येह बद दुआ न दे कि "तुझ पर ख़ुदा عَزَّوَجَلَّ का ग़ज़ब नाज़िल हो और तू (भाड़ और) आग या दोज़ख़ में दाख़िल हो।" कि ह़दीस शरीफ़ में इस की मुमानअ़त वारिद है। (स. 100) ﴾12﴿ जो काफ़िर मरा उस के लिये दुआए मग़्फ़िरत ह़राम व कुफ़्र है। (स. 101) ﴾13﴿ येह दुआ करना, "ख़ुदाया ! सब मुसल्मानों के सब गुनाह बख़्श दे।" जाइज़ नहीं कि इस में उन अह़ादीसे मुबारका की तक्ज़ीब (या'नी झुटलाना) होती है जिन में बा'ज़ मुसल्मान का दोज़ख़ में जाना वारिद हुवा। (स. 106) अलबत्ता यूं दुआ करना "सारी उम्मते मुह़म्मद صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم की मग़्फ़िरत (या'नी बख़्शिश) हो या सारे मुसल्मानों की मग़्फ़िरत हो" जाइज़ है। (स. 102) ﴾14﴿ अपने लिये और अपने दोस्त अह़बाब, अहलो माल और औलाद के लिये बद दुआ न करे, क्या मा'लूम कि क़बूलिय्यत का वक़्त हो और बद दुआ का असर ज़ाहिर होने पर नदामत हो। (स. 107) ﴾15﴿ जो चीज़ ह़ासिल हो (या'नी अपने पास मौजूद हो) उस की दुआ न करे मसलन मर्द यूं न कहे, "**या अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ मुझे मर्द कर दे" कि इस्तिहज़ा (मज़ाक़ बनाना) है। अलबत्ता ऐसी दुआ जिस में शरीअ़त के हुक्म की ता'मील या आ़जिज़ी व बन्दगी का इज़्हार या परवर्दगार عَزَّوَجَلَّ और मदीने के ताजदार صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم से मह़ब्बत या दीन या अहले दीन की त़रफ़ रग़्बत या कुफ़्रो काफ़िरीन से नफ़्रत वग़ैरा के फ़वाइद निकलते हों वोह जाइज़ है

अगर्चे इस अम्र का हुसूल यक़ीनी हो। जैसे दुरूद शरीफ़ पढ़ना, वसीले की, सिराते मुस्तक़ीम की **अल्लाह** व रसूल عَزَّوَجَلَّ وصَلَّى اللّٰه تعالیٰ علیه واٰلهٖ وسلَّم के दुश्मनों पर ग़ज़ब व ला'नत की दुआ़ करना। (स. 108, 109)

﴾16﴿ दुआ़ में तंगी न करे मसलन यूं न मांगे **या अल्लाह** तन्हा मुझ पर रह्‌म फ़रमा या सिर्फ़ मुझे और मेरे फुलां फुलां दोस्त को ने'मत बख़्श। (स. 109) बेहतर येह है कि सब मुसल्मानों को दुआ़ में शामिल कर ले इस का एक फ़ाएदा येह भी होगा कि अगर ख़ुद उस नेक बात का ह़क़दार न भी हुवा तो अच्छे मुसल्मानों के तुफ़ैल पा लेगा। ﴾17﴿ **हुज्जतुल इस्लाम** ह़ज़रते सय्यिदुना इमाम मुह़म्मद ग़ज़ाली عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللهِ الْوَالِى फ़रमाते हैं, मज़बूत अ़क़ीदे के साथ दुआ़ मांगे और क़बूलिय्यत का यक़ीन रखे। (احياءُ العُلوم ج ٤ ص ٧٧٠)

बैठने की एक सुन्नत : खाना खाने के लिये बैठने की एक सुन्नत येह है कि सीधा घुटना खड़ा करें और उलटा पाउं बिछा कर उस पर बैठ जाएं। जब कि एक और भी सुन्नत बैठने की है। चुनान्चे ह़ज़रते सय्यिदुना अनस رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْهُ फ़रमाते हैं कि मैं ने हुज़ूर सरापा नूर, शाहे ग़यूर صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰی عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم को छुहारे तनावुल फ़रमाते देखा और हुज़ूर صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰی عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ज़मीन से लग कर इस त़रह़ बैठे थे कि दोनों घुटने खड़े थे। (صحيح مسلم ص ١١٣٠ الحديث ٢٠٤٤)

घुटने खड़े कर के खाने के फ़वाइद : प्यारे प्यारे इस्लामी भाइयो ! दोनों घुटने खड़े कर के ज़मीन से सुरीन लगा कर खाने से ब क़दरे ज़रूरत ही खाना मे'दे में जाता है जिस के सबब अमराज़ से

हिफ़ाज़त होती है। एक पाउं खड़ा कर के और दूसरा बिछा कर खाने की सुन्नत की बरकत से **तिल्ली की बीमारियों** से बचाव होता है और रानों के पठ्ठे मज़बूत़ होते हैं। कहते हैं, चार ज़ानू या'नी चोकड़ी मार कर खाने के आ़दी का **मोटापा** बढ़ता और तोंद निकल आती है। नीज़ चार ज़ानू खाने से दर्दे कूलन्ज (बड़ी आंत का दर्द) हो जाने का भी ख़त़रा रहता है। एक आदमी का कहना है, "मैं ने एक **इंग्रेज़** को देखा कि दोनों घुटने खड़े कर के ज़मीन पर सुरीन लगा कर खा रहा था, मैं ने ह़ैरत से इस का सबब पूछा, तो फ़ौरन अपने निकले हुए पेट पर हाथ मार कर कहने लगा, "इस को अन्दर करने के लिये।"

खाना और पर्दे में पर्दा : खाने में सुन्नत के मुत़ाबिक़ बैठने वाले इस्लामी भाई और इस्लामी बहन को चाहिये कि घुटनों से ले कर पाउं के पन्जों तक चादर से अच्छी त़रह़ **पर्दे में पर्दा** कर ले। अगर कुरते का दामन बड़ा हो तो उसी को अच्छी त़रह़ फैला कर **पर्दे में पर्दा** कर लीजिये। पर्दे में पर्दा न करने से सामने बैठे हुए लोगों के लिये बा'ज़ अवक़ात आंखों की हिफ़ाज़त बहुत मुश्किल हो जाती है। अकेले में भी पर्दे में पर्दा करना चाहिये कि **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ से **ह़या** करने का सब से ज़ियादा ह़क़ है। **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ से ह़या कर रहा हूं येह निय्यत कर लेंगे तो اِنْ شَآءَاللّٰه عَزَّوَجَلَّ इस का कसीर सवाब पाएंगे और दूसरों की मौजूदगी में **पर्दे में पर्दा** करते वक़्त येह निय्यत भी की जा सकती है कि मुसल्मानों के लिये बद निगाही

का सबब दूर कर रहा हूं।" हर काम में जिस क़दर हो सके अच्छी अच्छी निय्यतें कर लेनी चाहिएं, जितनी अच्छी निय्यतें ज़ियादा होंगी उसी क़दर सवाब भी ज़ियादा मिलेगा। **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ के प्यारे मह़बूब صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم का फ़रमाने अ़ज़ीमुश्शान है, **"मुसल्मान की निय्यत उस के अ़मल से बेहतर है।"** (طبرانی معجم کبیر ج٦ص١٨٥حدیث ٥٩٤٢)

टेबल कुर्सी पर खाना : आ'ला ह़ज़रत मौलाना शाह इमाम अह़मद रज़ा ख़ान عَلَيْهِ رَحمَةُ الرَّحْمٰن फ़रमाते हैं, "जूता पहने खाना अगर इस उ़ज़्र से हो कि ज़मीन पर बैठा है और फ़र्श (या'नी दरी वग़ैरा) नहीं जब तो सिर्फ़ एक सुन्नते मुस्तह़ब्बा का तर्क है। इस के लिये बेहतर येही था कि जूता उतार लेता और मेज़ पर खाना (रखा हुवा) है और येह कुर्सी पर जूता पहने तो वज़्अ़ ख़ास नसारा की है। इस से दूर भागे और सरकारे मदीना صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم फ़रमाते हैं,

مَنْ تَشَبَّهَ بِقَوْمٍ فَهُوَ مِنْهُمْ

जो किसी क़ौम से मुशाबहत पैदा करे वोह उन्हीं में से है।

(ابو داوٗد ج٤ص٦٢حدیث٤٠٣١)

शादी ख़ाना बरबादी के अस्बाब : प्यारे प्यारे इस्लामी भाइयो ! अफ़्सोस सद करोड़ अफ़्सोस ! आजकल हमारे यहां तक़रीबन हर मुआ़मले में यहूदो नसारा की नक़्ल की जाती है। शादी यक़ीनन मीठी मीठी सुन्नत है मगर अफ़्सोस कि इस अ़ज़ीम सुन्नत की अदाएगी में दीगर मुक़द्दस

फ़रमाने मुस्त़फ़ा صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم : शबे जुमुआ़ और रोज़े जुमुआ़ मुझ पर कसरत से दुरूद पढ़ो क्यूं कि तुम्हारा दुरूद मुझ पर पेश किया जाता है। (طبرانی)

सुन्नतों बल्कि मुतअ़द्दद फ़राइज़ तक का ख़ून कर दिया जाता है ! गाने बाजे, फ़िल्में, डिरामे, वेराइटी प्रोगाम और न जाने क्या क्या धमा चोकड़ियां होती हैं, कि घर की औ़रतें ख़ूब ढोल पीटती हैं, مَعَاذَاللّٰہ ثُمَّ مَعَاذَاللّٰہ عَزَّوَجَلَّ रक़्स भी करती हैं आख़िर कौन सा ह़राम काम ऐसा है जो आजकल हमारे यहां शादियों में नहीं किया जाता ? مَعَاذَاللّٰہ عَزَّوَجَلَّ दूल्हा शादी से क़ब्ल ही अपनी मंगेतर को अपने हाथ से अंगूठी पहनाता है, साथ सैरो तफ़रीह़ होती है, शादी में बे ह़याई से भरपूर तक़ारीब मुन्अ़क़िद होती हैं। औ़रतों में अजनबी मर्द मूवीज़ बनाते हैं। खाने की दा'वत भी तो मेज़ कुर्सी पर, बल्कि अब तो ज़ियादा "तरक़्क़ी" होने लगी है कि कुर्सियां भी हटा ली गई हैं सिर्फ़ मेज़ पर अन्वाओ़ अक़्साम के खाने चुन दिये जाते हैं और लोग चलते फिरते मेज़ के गिर्द घूमते हुए खाते पीते हैं, ह़ालां कि ऐसा करना हरगिज़ सुन्नत नहीं। आप ग़ौर तो फ़रमाइये कि आज "शादी खाना आबादी होती किस की है ?" शादी के बा'द उ़मूमन हर कोई "खाना बरबादी" का शिकार नज़र आ रहा है ! कहीं ऐसा तो नहीं कि शादी जैसी पाकीज़ा और मीठी मीठी सुन्नत में ग़ैर शरई रुसूमात की दुन्या ही में सज़ा दी जा रही हो ! अगर **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ ग़ज़ बनाक हुवा तो आख़िरत की सज़ा किस क़दर होलनाक होगी !! **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ हमें फ़िरंगी तहज़ीब व फ़ेशन से नजात अ़त़ा फ़रमा कर सुन्नतों का आईनादार बनाए।

اٰمین بِجاہِ النَّبِیِّ الْاَمین صَلَّی اللّٰہُ تعالٰی علیہ واٰلہٖ وسلَّم

प्यारे प्यारे इस्लामी भाइयो ! सुन्नतों भरी तह़रीक, दा'वते इस्लामी के **मदनी माह़ोल** से हर दम वाबस्ता रहिये, اِنْ شَآءَاللّٰہ عَزَّوَجَلَّ बरकतें और सआ़दतें ही सआ़दतें पाएंगे। एक मुबल्लिग़े **दा'वते इस्लामी** ने दा'वते इस्लामी में अपनी शुमूलिय्यत के जो अस्बाब बयान किये वोह सुनने से तअ़ल्लुक़ रखते हैं, चुनान्चे उन के जज़्बात अपने अल्फ़ाज़ में बयान करने की कोशिश करता हूं,

मैं दा'वते इस्लामी में कैसे आया ? : मंडन गढ़ ज़िलअ़ रतनागरी महाराष्ट्र (हिन्द) के एक इस्लामी भाई ने बताया कि 2002 ई. की बात है, मैं बुरे दोस्तों की सोह़बत के बाइ़स **ग़ुन्डा गेंग** में शामिल हो गया। लोगों को मारना पीटना और गालियां बकना मेरा मा'मूल था, जानबूझ कर झगड़े मोल लेता, जो नया फ़ेशन आता सब से पहले मैं अपनाता, दिन में कई बार कपड़े तब्दील करता सिवाए जीन्ज़ (jeans) के दूसरी पेन्ट न पहनता, आवारा दोस्तों के साथ घूम फिर कर रात गए घर लौटता और दिन चढ़े तक सोता रहता। वालिद साह़िब का इन्तिक़ाल हो चुका था, बेवा मां समझाती तो (عَزَّوَجَلَّ) مَعَاذَاللّٰہ ज़बान दराज़ी करता था। एक मरतबा दा'वते इस्लामी के किसी बा इ़मामा इस्लामी भाई ने मुलाक़ात पर एक रिसाला **जिन्नात का बादशाह** (मत़बूआ़ मक्तबतुल मदीना) तोह़फ़े में दिया, पढ़ा तो अच्छा लगा। रमज़ानुल मुबारक में एक दिन किसी मस्जिद में जाने की सआ़दत

मिली तो इत्तिफ़ाक़ से एक सब्ज़ सब्ज़ इमामे और सफ़ेद लिबास में मल्बूस सन्जीदा नौ जवान पर नज़र पड़ी मा'लूम हुवा येह यहां मो'तकिफ़ हैं। उन्हों ने **दर्से फ़ैज़ाने सुन्नत** दिया तो मैं बैठ गया। बा'दे दर्स उन्हों ने मुझ पर इन्फ़िरादी कोशिश करते हुए **दा'वते इस्लामी** के मदनी माहोल की बरकतें बताईं। उन इस्लामी भाई का लिबास इस क़दर सादा था कि बा'ज़ जगह पैवन्द तक लगे हुए थे, जब उन के लिये घर से खाना आया तो वोह भी बिल्कुल सादा था ! मैं उन की **सादगी** से बहुत ज़ियादा मुतअस्सिर हुवा, मुझे उन से महब्बत हो गई, मैं उन से मुलाक़ात के लिये आने जाने लगा। इत्तिफ़ाक़ से ईदुल फ़ित्र के बा'द उन इस्लामी भाई का निकाह था। येह बेचारे ग़रीब व तंगदस्त थे मगर हैरत की बात येह थी कि उन्हों ने इस बात का मुझे ज़रा भी एहसास नहीं होने दिया और न ही किसी क़िस्म की माली इमदाद के लिये सुवाल किया। मैं और ज़ियादा मुतअस्सिर हुवा कि مَاشَآءَاللّٰه عَزَّوَجَلَّ दा'वते इस्लामी का **मदनी माहोल** कितना प्यारा है और इस के वाबस्तगान किस क़दर सादा और ख़ुद्दार हैं। اَلْحَمْدُ لِلّٰه عَزَّوَجَلَّ दा'वते इस्लामी की महब्बत मेरे दिल में घर करती चली गई हत्ता कि मैं ने **आशिक़ाने रसूल** के हमराह 8 दिन के **मदनी क़ाफ़िले** में सफ़र किया। मेरे दिल की दुन्या ज़ेरो ज़बर हो गई, क़ल्ब में मदनी इन्क़िलाब बरपा हो गया और मैं ने गुनाहों से सच्ची तौबा कर के अपनी ज़ात को **दा'वते इस्लामी** के हवाले कर दिया। اَلْحَمْدُ لِلّٰه عَزَّوَجَلَّ मुझ

पर वोह मदनी रंग चढ़ा कि आजकल मैं अ़लाक़ाई मुशावरत के **ख़ादिम** (निगरान) की ह़ैसिय्यत से अपने अ़लाक़े में दा'वते इस्लामी के मदनी कामों की धूमें मचा रहा हूं।

सादगी चाहिये आ़जिज़ी चाहिये आप को गर चलें क़ाफ़िले में चलो
ख़ूब ख़ुद्दारियां और ख़ुश अख़्लाक़ियां आइये सीख लें क़ाफ़िलों में चलो
आ़शिक़ाने रसूल लाए सुन्नत के फूल आओ लेने चलें क़ाफ़िले में चलो

صَلُّوْا عَلَی الْحَبِیْب ! صَلَّی اللّٰهُ تَعَالٰی عَلٰی مُحَمَّد

प्यारे प्यारे इस्लामी भाइयो ! देखा आप ने, दीन की तब्लीग़ के लिये इस्त्री किया हुवा, भड़कीला लिबास और कलफ़ दार ख़ूब सूरत इमामा ही ज़रूरी नहीं, पैवन्द दार लिबास, सादा इमामा शरीफ़ से भी काम चलता है....चलता ही नहीं दौड़ता है....बल्कि दौड़ता ही नहीं इस को तो मदनी पर लग जाते हैं और सूए मदीनए मुनव्वरह उड़ने लगता है ! सादा लिबास के तो क्या कहने !

सादा लिबास की फ़ज़ीलत : कुफ़्फ़ार की नक़्क़ाली में फ़ेशन करने वाले, हर वक़्त बने संवरे रहने वाले, नित नए डीज़ाइन और त़रह़ त़रह़ की तराश ख़राश वाले लिबास पहनने वाले अगर **सादगी** अपना लें तो दोनों जहां में बेड़ा पार हो । चुनान्चे **सादा लिबास** पहनने की फ़ज़ीलत पढ़िये और झूमिये :

ताजदारे मदीना صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने इर्शाद फ़रमाया, जो बा वुजूदे कुदरत अच्छे कपड़े पहनना, तवाज़ोअ़ (आ़जिज़ी) के तौ़र पर छोड़ देगा **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ उस को करामत का हुल्ला (या'नी जन्नती लिबास) पहनाएगा। (ابو داوٗد ج٤ ص٣٢٦، حديث ٤٧٧٨)

फ़ेशन परस्तो ! ख़बरदार !! : प्यारे प्यारे इस्लामी भाइयो ! झूम जाओ ! पास दौलत है, उ़म्दा लिबास पहनने की ता़क़त है फिर भी **अल्लाह** रब्बुल इ़ज़्ज़त عَزَّوَجَلَّ की रिज़ा की ख़ातिर आ़जिज़ी इख़्तियार करते हुए सादा लिबास पहनने वाला जन्नती लिबास पाएगा और ज़ाहिर है जो जन्नती लिबास पाएगा वोह यक़ीनी तौ़र पर जन्नत में भी जाएगा। लोगों पर रो'ब डालने, अमीराना ठाठ पालने और मह्ज़ अपने नफ़्स के लिये लोगों को मुतअस्सिर करने की ख़ातिर नुमायां, फ़ेन्सी और भड़कीले लिबास पहनने वाले पढ़ें और कुढ़ें :

ह़ज़रते सय्यिदुना अ़ब्दुल्लाह इब्ने उ़मर رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْهُمَا से रिवायत है, ताजदारे मदीना صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने इर्शाद फ़रमाया, "दुन्या में जिस ने शोहरत का लिबास पहना, क़ियामत के दिन **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ उस को ज़िल्लत का लिबास पहनाएगा।" (سنن ابن ماجه ج٤ ص ١٦٣ حديث ٣٦٠٦)

लिबासे शोहरत किसे कहते हैं ? : मुफ़स्सिरे शहीर ह़कीमुल उम्मत ह़ज़रते मुफ़्ती अह़मद यार ख़ान عَلَيْهِ رَحْمَةُ الْمَنَّان इस ह़दीसे पाक के तह़्त फ़रमाते हैं, या'नी ऐसा लिबास पहने कि लोग अमीर (या'नी

मालदार) जानें या ऐसा लिबास पहने कि जिस से लोग नेक परहेज़ गार समझें येह दोनों[2] क़िस्म के लिबास, **शोहरत के लिबास हैं। अल ग़रज़ जिस लिबास में निय्यत येह हो कि लोग उस की इज़्ज़त करें येह उस का लिबासे शोहरत है।** साहिबे मिरक़ात رَحْمَةُ اللّٰهِ تَعَالٰى عَلَيْه ने फ़रमाया, मस्ख़रा पन का लिबास पहनना जिस से लोग हंसें येह भी लिबासे शोहरत है। (मुलख़्ख़स अज़ मिरआत, जि. 6, स. 109)

प्यारे प्यारे इस्लामी भाइयो ! वाक़ेई सख़्त इम्तिहान है, लिबास पहनने में बहुत ग़ौर करने और दिखावे से बचने की सख़्त ज़रूरत है नीज़ जो लोगों को अपनी सादगी का मो'तक़िद बनाने के लिये सादा लिबास व इमामा व चादर वग़ैरा अपनाता है वोह रियाकार और जहन्नम का हक़दार है। हम **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ से इख़्लास की भीक मांगते हैं।

मेरा हर अमल बस तेरे वासिते हो — कर इख़्लास ऐसा अता या इलाही
रियाकारियों से सियाहकारियों से — बचा या इलाही बचा या इलाही

टिपटॉप करने वालों के लिये लम्हए फ़िक्रिया : फ़ेशन की ख़ातिर रोज़ रोज़ नए लिबास पहनने वाले, ज़रा फ़ेशन तब्दील हुवा या लिबास थोड़ा पुराना हुवा या कहीं से मा'मूली सा फटा तो **पैवन्द कारी** कर के उस को पहनने में आर (या'नी ऐब) महसूस करने वाले इस रिवायत को बार बार पढ़ें :

अबू उमामा इयास बिन सा'लबा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْه से रिवायत है ताजदारे मदीना صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰی عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने इर्शाद फ़रमाया, क्या तुम सुनते नहीं ? क्या तुम सुनते नहीं ? कि कपड़े का पुराना होना ईमान से है, बेशक कपड़े का पुराना होना ईमान से है। (سنن ابی دائودحدیث ٤١٦١ ج٤ ص١٠٢)

इस रिवायत के तहत ह़ज़रते सय्यिदुना शाह अ़ब्दुल ह़क़ मुह़द्दिस देह्लवी عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللّٰهِ الْقَوِی फ़रमाते हैं : "**ज़ीनत** का तर्क करना अहले ईमान के अख़्लाक़ (या'नी उ़म्दा आ़दात) से है।" (اَشِعَّةُاللَّمعات ج٣ ص٥٨٥)

पैवन्द दार लिबास की फ़ज़ीलत : ह़ज़रते सय्यिदुना अ़म्र बिन कैस رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْه फ़रमाते हैं, अमीरुल मुअमिनीन ह़ज़रते मौलाए काएनात, अ़लिय्युल मुर्तज़ा शेरे ख़ुदा كَرَّمَ اللّٰهُ تَعَالٰی وَجْهَهُ الْكَرِيْم की ख़िदमते बा बरकत में अ़र्ज़ की गई, आप अपनी क़मीज़ में **पैवन्द** क्यूं लगाते हैं ? फ़रमाया, इस से दिल **नर्म** रहता है और मोमिन इस की पैरवी करता है। (यानी मोमिन का दिल नर्म ही होना चाहिये)

(حلية الاولياء ج١ ص١٢٤ حديث ٢٥٤)

खड़े हो कर खाना कैसा ? : ह़ज़रते सय्यिदुना अनस बिन मालिक رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْه फ़रमाते हैं, "नबिय्ये करीम, रऊफ़ुर्रह़ीम, عَلَيْهِ اَفْضَلُ الصَّلٰوةِ وَالتَّسْلِيْم ने **खड़े** हो कर पीने और **खड़े** हो कर खाने से मन्अ़ फ़रमाया है।" (مجمع الزوائد ج٥ص٢٣حديث ٧٩٢١)

खड़े हो कर खाने के तिब्बी नुक़्सानात : इटली के एक माहिरे अग़्ज़िया डॉक्टर का कहना है, "खड़े हो कर खाना खाने से **तिल्ली** और **दिल** की बीमारियां नीज़ **नफ़्सियाती अमराज़** पैदा होते हैं यहां तक कि बा'ज़ अवक़ात इन्सान ऐसा **पागल** हो जाता है कि अपनों तक को पहचान नहीं पाता।"

सीधे हाथ से खाएं पियें : सीधे हाथ से खाना पीना सुन्नत है। हज़रते सय्यिदुना अब्दुल्लाह इब्ने उमर رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْهُمَا फ़रमाते हैं कि **अल्लाह** के हबीब, हबीबे लबीब صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने इर्शाद फ़रमाया, "जब कोई खाना खाए तो सीधे हाथ से खाए और पानी पिये तो सीधे हाथ से पिये।" (صحیح مسلم ص١١١٧ حدیث ٢١٧٤)

शैतान का तरीक़ा : हज़रते सय्यिदुना अब्दुल्लाह इब्ने उमर رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْهُمَا फ़रमाते हैं कि सरकारे मदीना صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने इर्शाद फ़रमाया, "कोई शख़्स न **उल्टे हाथ** से खाना खाए न पिये कि **उल्टे हाथ** से खाना पीना शैतान का तरीक़ा है।" (ایضاً)

सीधे ही हाथ से लें और दें : हज़रते सय्यिदुना अबू हुरैरा رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْهُ से रिवायत है कि ताजदारे मदीना, क़रारे क़ल्बो सीना, साहिबे मुअत्तर पसीना صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने इर्शाद फ़रमाया, "तुम में से

हर एक **सीधे हाथ** से खाए और सीधे हाथ से पिये और सीधे हाथ से ले और सीधे हाथ से दे क्यूं कि शैत़ान उल्टे हाथ से खाता और उल्टे हाथ से पीता उल्टे हाथ से देता और उल्टे हाथ से लेता है।" (ابنِ ماجه شریف ج٤ ص١٢ حدیث ٣٢٦٦)

हर काम में उल्टा हाथ क्यूं ? : प्यारे प्यारे इस्लामी भाइयो ! अफ़्सोस ! आजकल हम दुन्या के चक्कर में इस क़दर घिर चुके हैं कि मह़बूबे बारी صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم की प्यारी प्यारी सुन्नतों की त़रफ़ हमारी तवज्जोह ही नहीं रहती। **याद रखिये** ! ह़दीसे मुबारक में है कि आदमी की रगों में शैत़ान ख़ून के साथ तैरता है। (صحیح مسلم ص ١١٩٧ حديث ٢١٧٤) ज़ाहिर है कि येह हमें सुन्नतों की त़रफ़ कहां जाने देगा ? अगर्चे सीधे हाथ से ही खाना खाते हैं लेकिन फिर भी **उल्टे हाथ** से कुछ दाने फांक ही लिये जाते हैं, खाते हुए चूंकि सीधा हाथ आलूदा होता है लिहाज़ा पानी **उल्टे** ही हाथ से पी डालते हैं, चाय पीते वक़्त कप सीधे हाथ में और रिकाबी **उल्टे** हाथ में लिये चाय पीते हैं, किसी को पानी पिलाते वक़्त जग सीधे हाथ में होता है जब कि गिलास **उल्टे** में और **उल्टे** हाथ से गिलास दूसरों को देते हैं। "ह़याते मुह़द्दिसे आ'ज़म" सफ़्ह़ा 374 पर है, ह़ज़रते मौलाना मुह़म्मद सरदार अह़मद क़ादिरी चिश्ती عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللّٰهِ الْقَوِی फ़रमाते हैं, "लेने और देने में दाएं (या'नी सीधे) हाथ को इस्ति'माल करो, येह आ़दत ऐसी पुख़्ता हो जाए कि कल क़ियामत में नामए आ'माल पेश

हो तो इसी आ़दत के मुवाफ़िक़ दायां (या'नी सीधा) हाथ आगे बढ़ जाए तब तो काम बन जाएगा।" **प्यारे इस्लामी भाइयो** ! होश कीजिये और देखिये हमारे मीठे मीठे आक़ा मक्के मदीने वाले मुस्त़फ़ा صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم को उल्टे हाथ से खाना पीना किस क़दर ना पसन्द है। चुनान्चे

तेरा सीधा हाथ कभी न उठे ! : **ह़ज़रते** सय्यिदुना सलमा बिन अक्वअ़ رَضِىَ اللّٰهُ تَعَالٰى عَنْهُ से मरवी है कि एक आदमी ने **अल्लाह** के मह़बूब, दानाए ग़ुयूब, मुनज़्ज़हुन अ़निल उ़यूब صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم के सामने उल्टे हाथ से खाना खाया तो आप صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया, "सीधे हाथ से खाओ।" उस ने कहा, मैं सीधे हाथ से नहीं खा सकता। (ग़ैब जानने वाले आक़ा صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم समझ गए कि येह तकब्बुर से बोल रहा है चुनान्चे) आप صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया, "لَا اسْتَطَعْتَ या'नी तुझे इस्तित़ाअ़त न हो !" (मत़लब येह कि तेरा सीधा हाथ कभी न उठे) उस (बद नसीब) ने तकब्बुर की वज्ह से सीधे हाथ से खाना खाने से इन्कार किया था लिहाज़ा फिर उस का सीधा हाथ कभी मुंह की त़रफ़ न उठ सका। (या'नी उस का सीधा हाथ बेकार हो गया)

(صحیح مسلم ص۱۱۱۸ حدیث ۲۰۲۱)

वोह ज़बां जिस को सब कुन की कुन्जी कहें

उस की नाफ़िज़ हुकूमत पे लाखों सलाम

तेरा चेहरा बिगड़ जाए : प्यारे प्यारे इस्लामी भाइयो ! सरकारे नामदार صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم की ज़बाने सदाक़त निशान की येह शान है कि जो कुछ फ़रमाते वोह हो जाता। आप صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم का रुत्बा तो बहुत अ़ज़ीम है, ग़ुलामों का ह़ाल मुलाह़ज़ा हो, चुनान्चे एक औ़रत मश्हूर सह़ाबी ह़ज़रते सय्यिदुना सा'द बिन अबी वक़्क़ास رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْهُ को झांका करती थी, आप رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْهُ ने बारहा उस को मन्अ़ किया मगर वोह बाज़ न आई। एक दिन उस ने जब ह़स्बे मा'मूल झांका तो आप رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْهُ की ज़बाने करामत निशान से येह अल्फ़ाज़ निकले شَاهَ وَجْهُكِ या'नी "**तेरा चेहरा बिगड़ जाए।**" पस उसी वक़्त उस का चेहरा गुद्दी की त़रफ़ फिर गया। (जामेए़ करामाते औलिया, जि. 1, स. 112)

मह़फ़ूज़ शहा रखना सदा बे अदबों से

और मुझ से भी सरज़द न कभी बे अदबी हो

ह़ज़रते सय्यिदुना सा'द बिन अबी वक़्क़ास رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْهُ की ज़बाने क़बूलिय्यत निशान की येह तासीर दर अस्ल महरे मुनीर, बशीरो नज़ीर, रसूले शहीर, मह़बूबे रब्बे क़दीर صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم की दुआ़ का समरा था। जैसा कि जामेए़ तिरमिज़ी वग़ैरा में है, मीठे मीठे मुस्त़फ़ा صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने बारगाहे रब्बुल ड़ला में दुआ़ की, اَللّٰھُمَّ اسْتَجِبْ لِسَعْدٍ اِذَا دَعَاكَ या'नी "**या अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ ! जब भी सा'द तुझ से दुआ़ करे तू क़बूल फ़रमा लिया कर।" (ترمذی شریف ج ٥ ص ٤١٨ حدیث ٣٧٧٢)

मुहद्दिसीने किराम رَحِمَهُمُ اللّٰهُ تَعَالٰی फ़रमाते हैं, "सय्यिदुना सा'द बिन अबी वक़्क़ास رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْه जब भी दुआ करते क़बूल हो जाती।"

(जामेए करामाते औलिया, जि. 1, स. 113)

इजाबत का सेहरा इनायत का जोड़ा दुल्हन बन के निकली दुआए मुहम्मद
इजाबत ने झुक कर गले से लगाया बढ़ी नाज़ से जब दुआए मुहम्मद

प्यारे प्यारे इस्लामी भाइयो ! सहाबए किराम عَلَيْهِمُ الرِّضْوَان की भी बड़ी शान है, गुलामाने सहाबा या'नी औलिया رَحِمَهُمُ اللّٰهُ تَعَالٰی भी बड़ी अज़्मतों के मालिक होते हैं चुनान्चे

या अल्लाह ! सबाही को अन्धा कर दे ! : ज़बर दस्त आलिम व मुहद्दिस हज़रते सय्यिदुना अ़ब्दुल्लाह बिन वहब رَحْمَةُ اللّٰهِ تَعَالٰی عَلَيْه एक लाख हदीसों के हाफ़िज़ थे, मिस्र के हाकिम उ़ब्बाद बिन मुहम्मद ने उन्हें क़ाज़ी बनाना चाहा तो ओ़हदए क़ज़ा से बचने के लिये कहीं रूपोश हो गए। एक हासिद "सबाही" ने झूटी चुग़ली खाते हुए हाकिम से कहा, "अ़ब्दुल्लाह बिन वहब ने खुद मुझ से क़ाज़ी बनने की हिर्स ज़ाहिर की थी मगर अब आप की क़स्दन ना फ़रमानी करते हुए ग़ाइब हो गए हैं।" हाकिम ने गुस्से में आ कर आप رَحْمَةُ اللّٰهِ تَعَالٰی عَلَيْه के मकाने आ़लीशान को मुन्हदिम करवा दिया। हज़रते सय्यिदुना अ़ब्दुल्लाह बिन वहब رَحْمَةُ اللّٰهِ تَعَالٰی عَلَيْه ने जलाल में आ कर बारगाहे रब्बे जुल जलाल عَزَّوَجَلَّ में

फ़रमाने मुस्त़फ़ा صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم : जो लोग अपनी मजलिस से अल्लाह के ज़िक्र और नबी पर दुरूद शरीफ़ पढ़े बिग़ैर उठ गए तो वोह बदबूदार मुर्दार से उठे। (شعب الايمان)

अ़र्ज़ कर दी, **या इलाही عَزَّوَجَلَّ ! "सबाह़ी" को अन्धा कर दे ।** चुनान्चे आठवें दिन वोह "सबाह़ी" अन्धा हो गया। ह़ज़रते सय्यिदुना अ़ब्दुल्लाह बिन वह्ब رَحْمَةُ اللّٰهِ تَعَالٰى عَلَيْه पर ख़ौफ़े खुदा عَزَّوَجَلَّ का ग़लबा रहता था। एक बार ज़िक्रे क़ियामत सुन कर दहशत त़ारी हो गई और बेहोश हो गए। होश में आने के बा'द सिर्फ़ चन्द रोज़ ज़िन्दा रहे और इस दौरान कुछ भी न बोले। 197 सि.हि. में वफ़ात पाई। (تذكرة الحفّاظ ج ١ ص٢٢٣)

अल्लाह عَزَّوَجَلَّ की उन पर रह़मत हो और उन के सदक़े हमारी मग़्फ़िरत हो।

औलिया का जो कोई हो बे अदब
नाज़िल उस पे होता है क़हरो ग़ज़ब

या रब्बे मुस्त़फ़ा عَزَّوَجَلَّ ! हमें अपने प्यारे ह़बीब शाहे ख़ैरुल अनाम صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم, सह़ाबए किराम عَلَيْهِمُ الرِّضْوَان और औलियाए इ़ज़ाम رَحِمَهُمُ اللّٰهُ تَعَالٰى का सच्चा अदब नसीब फ़रमा, इन की बे अदबी और इन के बे अदबों के शर से सदा मह़फ़ूज़ रख। और अपने प्यारे ह़बीब का सच्चा दीवाना बना। اٰمِين بِجاهِ النَّبِيِّ الْاَمين صلّى الله تعالٰى عليه واٰله وسلّم

या रब मैं तेरे ख़ौफ़ से रोता रहूं हर दम
दीवाना शहन्शाहे मदीना का बना दे

صَلُّوْا عَلَى الْحَبِيْب ! صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلٰى مُحَمَّد

साहि़बे मज़ार की इन्फ़िरादी कोशिश : प्यारे प्यारे इस्लामी भाइयो ! اَلْحَمْدُ لِلّٰهِ عَزَّوَجَلَّ दा'वते इस्लामी के मदनी माह़ोल में बुज़ुर्गों का बहुत अदब किया जाता है, बल्कि सच्ची बात येह है कि **अल्लाह** रब्बुल इ़ज़्ज़त عَزَّوَجَلَّ की इ़नायत से दा'वते इस्लामी **फ़ैज़ाने औलिया** ही की बदौलत चल रही है। चुनान्चे एक इस्लामी भाई का बयान कर्दा एक **साहि़बे मज़ार** वलिय्युल्लाह عَلَيْهِ رَحْمَةُ الله की मदनी क़ाफ़िले के लिये **इन्फ़िरादी कोशिश** का ईमान अफ़रोज़ वाक़िआ़ अपने अन्दाज़ में पेश करता हूं, اَلْحَمْدُ لِلّٰهِ عَزَّوَجَلَّ **आ़शिक़ाने रसूल** का एक मदनी क़ाफ़िला सुन्नतों की बहारें लुटाता हुवा एक मक़ाम "अन्वार शरीफ़" वारिद हुवा, वहां से **हाथों हाथ** चार[4] इस्लामी भाई तीन[3] दिन के लिये **मदनी क़ाफ़िले** में सफ़र के लिये आ़शिक़ाने रसूल के साथ शरीक हुए, इन चारों में "अन्वार शरीफ़" के **साहि़बे मज़ार** बुज़ुर्ग رَحْمَةُ اللّٰهِ تَعَالٰى عَلَيْه के ख़ानवादे के एक फ़रज़न्द भी थे। मदनी क़ाफ़िला नेकी की दा'वत की धूमें मचाता हुवा पहुंचा। जब अन्वार शरीफ़ वालों के तीन दिन मुकम्मल हो गए तो साहि़बे मज़ार رَحْمَةُ اللّٰهِ تَعَالٰى عَلَيْه के रिश्तेदार ने कहा, मैं तो वापस नहीं जाऊंगा क्यूं कि आज रात मैं ने अपने "ह़ज़रत" رَحْمَةُ اللّٰهِ تَعَالٰى عَلَيْه को ख़्वाब में देखा, फ़रमा रहे थे, "बेटा ! पलट कर घर न जाना मदनी क़ाफ़िले वालों के साथ मज़ीद आगे सफ़र जारी रखना।" **साहि़बे**

मज़ार رَحْمَةُ اللّٰهِ تَعَالٰى عَلَيْه **की इन्फ़िरादी कोशिश** का येह वाक़िआ़ सुन कर मदनी क़ाफ़िले में ख़ुशी की लहर दौड़ गई, सब के ह़ौसलों को मदीने के 12 चांद लग गए और **अन्वार शरीफ़** से आए हुए चारों इस्लामी भाई हाथों हाथ मदनी क़ाफ़िले में मज़ीद आगे सफ़र पर चल पड़े।

देते हैं फ़ैज़ आ़म औलियाए किराम — लूटने सब चलें क़ाफ़िले में चलो
औलिया का करम तुम पे हो ला जरम — मिल के सब चल पड़ें क़ाफ़िले में चलो

صَلُّوْا عَلَى الْحَبِيْب! صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلٰى مُحَمَّد

ख़्वाब के ज़रीए घोड़ी का तोह़फ़ा : प्यारे प्यारे इस्लामी भाइयो ! किसी वलिय्युल्लाह का बा'दे वफ़ात ख़्वाब में रहनुमाई करना कोई **अचम्बे** की बात नहीं, **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ के नेक बन्दे ब अ़ताए रब्बुल उ़ला عَزَّوَجَلَّ बहुत कुछ कर सकते हैं चुनान्चे ख़्वाजा अमीर ख़ुर्द किरमानी رَحْمَةُ اللّٰهِ تَعَالٰى عَلَيْه लिखते हैं, सुल्तानुल मशाइख़ ह़ज़रते सय्यिदुना मह़बूबे इलाही निज़ामुद्दीन औलिया رَحْمَةُ اللّٰهِ تَعَالٰى عَلَيْه फ़रमाते हैं, कि ग़ियास पूर के क़ियाम से पहले मैं एक कोस (या'नी तक़रीबन तीन किलो मीटर दूर) कीलूखरी की मस्जिद में नमाज़े जुमुआ़ पढ़ने जाया करता था। एक बार इसी त़रह़ नमाज़े जुमुआ़ के लिये पैदल जा रहा था गर्म हवाएं चल रही थीं और मैं रोज़े से था, मुझे चक्कर आने लगे और मैं एक दुकान पर बैठ गया। मेरे दिल में ख़याल गुज़रा कि अगर मेरे पास सुवारी होती तो सहूलत रहती। बा'द में शैख़ सा'दी का येह शे'र मेरी ज़बान पर आया,

مَا قَدَمْ اَزْسَرْ کُنِیْمْ دَرْ طَلَبِ دوسْتَاں

رَاہْ بَجَائے بُرَدْ ھَر کہ بَا قَدَامْ رَفْت

(हम दोस्तों की त़लब में सर को पाउं बना कर चलते हैं, क्यूं कि जो कोई इस राह में क़दमों से चलता है वोह आगे नहीं बढ़ पाता)

मैं ने दिल में आने वाले सुवारी के ख़याल से तौबा की। इस वाक़िए को तीन[3] रोज़ गुज़रे थे कि "ख़लीफ़ा मलिक यार परां" मेरे लिये एक **घोड़ी** ले कर आए और कहने लगे, मैं मुसल्सल तीन[3] रातों से ख़्वाब में देख रहा हूं कि मेरे शैख़ मुझ से फ़रमा रहे हैं, "फ़ुलां साहिब को **घोड़ी** दे आओ।" लिहाज़ा **घोड़ी** ह़ाज़िर है क़बूल फ़रमा लीजिये। मैं ने कहा, बेशक आप के शैख़ ने आप से फ़रमाया होगा लेकिन जब तक मेरे शैख़ मुझ से नहीं फ़रमाएंगे मैं येह **घोड़ी** नहीं लूंगा। उसी रात मैं ने ख़्वाब में देखा कि मेरे पीरो मुर्शिद ह़ज़रते सय्यिदुना शैख़ फ़रीदुद्दीन गन्जे शकर رَحْمَۃُ اللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہ मुझ से फ़रमाते हैं कि मलिक यार परां की दिलजूई के लिये वोह **घोड़ी** क़बूल कर लो। दूसरे रोज़ वोह **घोड़ी** ले कर आया तो मैं ने उसे अ़तिय्यए ख़ुदावन्दी समझते हुए क़बूल कर लिया।

(सियरुल औलिया, स. 246)

صَلُّوْا عَلَی الْحَبِیْب! صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلٰی مُحَمَّد

सिर्फ़ अपनी जानिब से खाइये : एक बरतन में जब एक ही त़रह़ का खाना हो, तो अपनी त़रफ़ से खाना सुन्नत है। चुनान्चे ह़ज़रते सय्यिदुना उ़मर बिन अबी सलमा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ फ़रमाते हैं कि मैं बच्चा

था और ताजदारे मदीना صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم की परवरिश में था। (येह उम्मुल मुअमिनीन सय्यिदतुना उम्मे सलमा رَضِىَ اللّٰهُ تَعَالٰى عَنْهَا के वोह फ़रज़न्द थे जो सरकारे मदीना صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم के निकाह़ में आने से पहले साबिक़ा शोहर से थे) खाते वक़्त बरतन में हर त़रफ़ हाथ डाल देता। ताजदारे मदीना صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने इर्शाद फ़रमाया, "**बिस्मिल्लाह** पढ़ो और सीधे हाथ से खाओ और बरतन की उस जानिब से खाओ जो तुम्हारे क़रीब है।"

(صحیح بُخاری ج۳ص۵۲۱حدیث ۵۳۷۶)

बीच में से मत खाइये : ह़ज़रते सय्यिदुना अ़ब्दुल्लाह इब्ने अ़ब्बास رَضِىَ اللّٰهُ تَعَالٰى عَنْهُمَا से रिवायत है, रसूले अ़ज़ीम, नबिय्ये करीम, रऊफ़ुर्रह़ीम عَلَيْهِ اَفْضَلُ الصَّلٰوةِ وَالتَّسْلِيْم ने इर्शाद फ़रमाया, "बेशक बरकत खाने के **दरमियानी** ह़िस्से में उतरती है पस तुम कनारों से खाना खाओ और दरमियान से न खाओ।" (ترمذی شریف ج۳ص۳۱٦حدیث ۱۸۱۲)

आप कहीं बीच से तो खाना नहीं खाते ! : प्यारे प्यारे इस्लामी भाइयो ! ग़ौर फ़रमाइये कि इस सुन्नत पर आप अ़मल करते हैं या नहीं ? मेरा बारहा का मुशाहदा है कि बा अ़मल नज़र आने वालों की भी अक्सरिय्यत इस सुन्नत पर अ़मल करने से मह़रूम है ! जिस को देखो वोह खाने की रिकाबी या सालन के बरतन वग़ैरा के बीच ही से आग़ाज़ करता है, न जाने क्यूं ? कहीं ऐसा तो नहीं कि बरकत से मह़रूम

करने के लिये शैतान हाथ पकड़ कर बीच में डाल देता हो ! ह़क़ीक़त येही है कि शैतान इस बात की कोशिश में लगा रहता है कि मुसल्मान भलाइयों से मह़रूम रहें। **मुफ़स्सिरे** शहीर ह़कीमुल उम्मत ह़ज़रते मुफ़्ती अह़मद यार ख़ान عَلَیْہِ رَحْمَۃُ الْمَنَّان फ़रमाते हैं, "खाने के बरतन के बीच में **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ की रह़मत नाज़िल होती है, बीच से खाना ह़िर्स की अ़लामत है, ह़रीस रह़मते इलाही عَزَّوَجَلَّ से मह़रूम है।" इस ह़दीसे मुबारक से मा'लूम होता है कि मुसल्मानों के खाने के वक़्त भी रह़मते बारी عَزَّوَجَلَّ का नुज़ूल होता है ख़ास कर जब कि सुन्नत की निय्यत से खाया जाए। (मिरआत शर्हे मिश्कात, जि. 6, स. 33, 34)

दूसरों को शरमिन्दगी से बचाइये : ह़ज़रते सय्यिदुना अ़ब्दुल्लाह इब्ने उ़मर رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُمَا से रिवायत है कि नबियों के सुल्त़ान, रह़मते आ़लमिय्यान, सरदारे दो[2] जहान, मह़बूबे रह़मान صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم का फ़रमाने बरकत निशान है, "जब दस्तर ख़्वान लगे तो हर शख़्स अपने क़रीब से खाए और अपने साथ खाने वालों के आगे से न खाए और रिकाबी के दरमियान से न खाए क्यूं कि बरकत उसी त़रफ़ से आती है और कोई भी दस्तर ख़्वान उठाए जाने से पहले न उठे और न ही अपना हाथ रोके जब तक सब लोग अपना हाथ न रोक लें अगर्चे सेर हो चुका हो और लोगों के साथ लगा रहे क्यूं कि इस का रुक जाना बाक़ी लोगों की शरमिन्दगी का बाइ़स होगा और वोह

अपना हाथ रोक लेंगे ह़ालां कि शायद उन्हें अभी और खाने की ह़ाजत हो।"

(شُعَب الایمان ج٥ص٨٣حدیث ٥٨٦٤)

बीच में बरकत की वज़ाह़त : मुफ़स्सिरे शहीर ह़कीमुल उम्मत ह़ज़रते मुफ़्ती अह़मद यार ख़ान عَلَيْهِ رَحْمَةُ الْمَنَّان फ़रमाते हैं, बरतन के कनारों से अपने अपने आगे से खाओ, बीच में से मत खाओ कि बरतन के बीच में **बरकत** उतरती है वहां से कनारों तक पहुंचती है। अगर तुम ने बीच में से खाना शुरूअ़ कर दिया तो कहीं ऐसा न हो कि वहां **बरकत** आना बन्द हो जाए। ग़रज़े कि बरकत उतरने की जगह और है और **बरकत** लेने की जगह कुछ और। (मिरआत, जि. 6, स. 63)

खाने की पांच सुन्नतें : प्यारे प्यारे इस्लामी भाइयो ! पेश कर्दा ह़दीसे मुबारक में खाने की पांच सुन्नतें बयान की गई हैं : ﴾1﴿ अपने आगे से खाए ﴾2﴿ कोई साथ खा रहा हो उस के आगे से न खाए ﴾3﴿ रिकाबी के दरमियान से न खाए ﴾4﴿ पहले दस्त रख़्वान उठाया जाए इस के बा'द खाने वाले उठें। (अफ़्सोस ! आजकल उ़मूमन उल्टा अन्दाज़ है या'नी पहले खाने वाले उठते हैं इस के बा'द दस्तर ख़्वान उठाया जाता है) ﴾5﴿ दूसरे भी खाने में शामिल हों तो उस वक़्त तक हाथ न रोके जब तक सारे फ़ारिग़ न हो जाएं। अफ़्सोस ! कि खाने की बयान कर्दा इन सुन्नतों पर अ़मल करने वाले अब नज़र ही नहीं आते। सुन्नतें सीखने और अ़वामुन्नास की मौजूदगी में सुन्नतों पर अ़मल की झिजक उड़ाने के

लिये दा'वते इस्लामी के सुन्नतों की तरबियत के मदनी क़ाफ़िलों में सफ़र कीजिये और वहां इन सुन्नतों की बा क़ाइदा मश्क़ कीजिये। اِنْ شَآءَاللّٰه عَزَّوَجَلَّ मदनी क़ाफ़िलों में सफ़र की बरकत से सुन्नतों पर अ़मल करना बहुत आसान हो जाएगा।

डरावने ख़्वाबों से नजात : मदनी क़ाफ़िलों की बरकतों के तो क्या कहने ! एक इस्लामी भाई के बयान का ख़ुलासा है कि मुझे बेह़द **डरावने ख़्वाब** आया करते थे। मैं ने आ़शिक़ाने रसूल के साथ दा'वते इस्लामी के सुन्नतों की तरबियत के 30 दिन के **मदनी क़ाफ़िले** में सफ़र की सआ़दत ह़ासिल की। اَلْحَمْدُ لِلّٰه عَزَّوَجَلَّ मदनी क़ाफ़िले की बरकत से **डरावने ख़्वाब** आने बन्द हो गए, मुझे ख़्वाब में मीठे मदीने की ज़ियारत हुई और अब ख़्वाबों में कभी अपने आप को नमाज़ में मश्ग़ूल पाता हूं तो कभी तिलावत में।

ख़्वाब में डर लगे बोझ दिल पर लगे ख़ूब जल्वे मिलें क़ाफ़िले में चलो
होंगी ह़ल मुश्किलें क़ाफ़िले में चलो पाओगे राह़तें क़ाफ़िले में चलो

صَلُّوْا عَلَی الْحَبِیْب ! صَلَّی اللّٰهُ تَعَالٰی عَلٰی مُحَمَّد

प्यारे प्यारे इस्लामी भाइयो ! يَامُتَكَبِّرُ 21 बार अव्वल आख़िर एक बार दरूद शरीफ़ सोते वक़्त पढ़ लेंगे तो اِنْ شَآءَاللّٰه عَزَّوَجَلَّ डरावने ख़्वाब नहीं आएंगे।

अगर मुख़्तलिफ़ क़िस्म के खाने मसलन ज़र्दा, पुलाव और आचार वग़ैरा एक ही थाल में हों तो इस सूरत में दूसरी जानिब से लेने की भी इजाज़त है चुनान्चे,

मुख़्तलिफ़ खजूरों का थाल : हज़रते सय्यिदुना इक्राश رَضِىَ اللهُ تَعَالٰى عَنْهُ रिवायत करते हैं कि **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ के प्यारे रसूल, रसूले मक्बूल, सय्यिदह आमिना के गुलशन के महकते फूल صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم की बारगाह में एक बरतन पेश किया गया जिस में बहुत सा **सरीद** था। हम उस में से खाने लगे पस मैं अपना हाथ उस के कनारों में इधर उधर चलाने लगा तो सरकारे आ़ली वक़ार صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया, "ऐ इक्राश ! एक ही जगह से खाओ क्यूं कि येह एक ही (त़रह़ का) खाना है।" फिर हमारे पास एक त़बक़ लाया गया जिस में कई अक़्साम की ताज़ा खजूरें थीं। हुज़ूर सरापा नूर صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم का हाथ मुबारक बरतन में हर त़रफ़ तशरीफ़ ले जाने लगा और इर्शाद फ़रमाया, "ऐ इक्राश ! जहां से चाहो खाओ क्यूं कि येह (खजूरें) मुख़्तलिफ़ अक़्साम की हैं।"

(ابنِ ماجه شريف ج٤ ص١٥ حديث ٣٢٧٤)

पांच[5] उंग्लियों से खाना गंवारों का त़रीक़ा है : हज़रते सय्यिदुना अ़ब्दुल्लाह इब्ने अ़ब्बास رَضِىَ اللهُ تَعَالٰى عَنْهُمَا से रिवायत है कि नबिय्ये आख़िरुज़्ज़मां, सरवरे ज़ीशां, दो[2] जहां के सुल्त़ां صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने अंगूठे और शहादत की उंगली की त़रफ़ इशारा करते हुए फ़रमाया,

"इन दो[2] उंग्लियों से मत खाओ (बल्कि इन के साथ बीच वाली मिला कर) तीन[3] उंग्लियों से खाओ कि येह सुन्नत है और पांच से मत खाओ कि येह गंवारों का तृरीक़ा है।" (كنزالعمّال ج ٥ ص١١٥ حديث ٤٠٨٧٢)

शैतान के खाने का तृरीक़ा : **हज़रते** सय्यिदुना अबू हुरैरा رَضِىَ اللّٰهُ تَعَالٰى عَنْهُ से रिवायत है कि सरकारे दो[2] आलम, नूरे मुजस्सम, शाहे बनी आदम, **रसूले** मोह्तशम صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم का फ़रमाने मुअ़ज़्ज़म है, "एक उंगली से खाना शैतान का और दो[2] उंग्लियों से खाना मुतकब्बिरीन (या'नी मग़रूर लोगों) का और तीन[3] उंग्लियों से खाना अम्बिया (عَلَيْهِمُ السَّلَام) का तृरीक़ा है।" (جامعِ صغير ص١٨٤ حديث ٣٠٧٤)

सरकारे मदीना, राहते क़ल्बो सीना, फ़ैज़ गन्जीना, साहिबे मुअ़त्तर पसीना صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم बा'ज़ अवक़ात चार मुबारक उंग्लियों से भी खाना तनावुल फ़रमाते थे। (مُلخّصاً الجامعِ الصَّغير ص٢٥٠ حديث ٦٩٤٢)

तीन[3] उंग्लियों से खाने का तृरीक़ा : प्यारे प्यारे इस्लामी भाइयो ! तीन[3] उंग्लियों से खाने से निवाला छोटा बनेगा, छोटा निवाला चबाना आसान रहेगा। जितना बेहतर तृरीक़े पर चबाएंगे उतना ही मुंह से निकलने वाला हाज़िम लुआ़ब उस में शामिल होगा और इस तृरह खाना जल्दी हज़्म होगा। हज़रते सय्यिदुना मुल्ला अ़ली क़ारी عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللّٰهِ الْبَارِى

फ़रमाते हैं, ''पांच उंग्लियों से खाना ह़रीसों की अ़लामत है।'' (مرقاۃ ج ۸ ص ۹) रोटी तीन[3] उंग्लियों से खाना ज़ियादा दुश्वार भी नहीं फ़क़त़ थोड़ी तवज्जोह की ज़रूरत है। अलबत्ता चावल तीन[3] उंग्लियों से खाना थोड़ा सा दुश्वार होता है मगर मदनी ज़ेहन रखने वाले **आ़शिक़ाने सुन्नत** के लिये येह भी कोई मुश्किल बात नहीं यक़ीनन सुन्नत ही में अ़ज़मत है। बड़े निवालों की ह़िर्स में पांच उंग्लियों से खाने के बजाए तरबियत की ख़ात़िर सीधे हाथ की बिन्सर (छुंग्लिया के बराबर वाली उंगली) को ख़म कर के इस में रबड़ बेंड पहन लीजिये या रोटी का एक टुकड़ा छोटी उंगली और बिन्सर से हथेली की त़रफ़ दबाए रखिये। अगर जज़्बा सादिक़ हुवा तो اِنْ شَآءَاللّٰہ عَزَّوَجَلَّ तीन[3] उंग्लियों से खाने की आ़दत बन जाएगी। जब तीन[3] उंग्लियों से खाने की आ़दत हो जाए तो अब रबड़ बेंड और रोटी का टुकड़ा हथेली की त़रफ़ दबाने की ह़ाजत नहीं। अगर चावल के दाने जुदा जुदा हों और तीन[3] उंग्लियों में उन का निवाला बन ही न पाता हो तो अब चार[4] या पांच[5] उंग्लियों से खा लीजिये। मगर येह एह़तियात़ ज़रूरी है कि हथेलियां आलूदा न हों बल्कि उंग्लियां भी जड़ तक आलूदा न हों।

चमचे के साथ खाने की ह़िकायत : छुरी कांटों और चमचों के साथ खाना ख़िलाफ़े सुन्नत है। हमारे अस्लाफ़ चमचे के साथ खाने से परहेज़ करते थे क्यूं कि सरकारे मदीना صَلَّى اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم से तीन उंग्लियों

के साथ खाना साबित है। ह़ज़रते सय्यिदुना इमाम इब्राहीम बाजूरी عَلَیْہِ رَحمَۃُ اللہِ الْقَوِی फ़रमाते हैं, "एक बार अ़ब्बासी ख़लीफ़ा मामूनुर्रशीद के सामने चमचों के साथ खाना पेश किया गया, उस वक़्त के क़ाज़िय्युल कुज़ात ह़ज़रते सय्यिदुना इमाम अबू यूसुफ़ رَحْمَۃُ اللہِ تَعَالٰی عَلَیْہِ ने कहा, "**अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ पारह 15 सूरए **बनी इसराईल** की आयत नम्बर 70 में इर्शाद फ़रमाता है,

وَلَقَدْ كَرَّمْنَا بَنِیْۤ اٰدَمَ

(پ ۱۵ بنی اسرائیل ۷۰)

तरजमए कन्ज़ुल ईमान : और बेशक हम ने औलादे आदम को इ़ज़्ज़त दी।

ऐ ख़लीफ़ा ! इस आयते करीमा की तफ़्सीर में आप के दादा जान ह़ज़रते सय्यिदुना अ़ब्दुल्लाह इब्ने अ़ब्बास رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہُمَا फ़रमाते हैं, "हम ने उन के लिये उंग्लियां बनाईं जिन से वोह खाना खाते हैं" तो उस ने उन चमचों को तर्क कर के उंग्लियों से खाया।

(اَلْمَوَاهِبُ اللَّدُنِّيَّه لِلبَاجُورِی ص ۱۱٤)

चम्मच से कब खा सकते हैं : प्यारे प्यारे इस्लामी भाइयो ! अगर ग़िज़ा ही ऐसी है मसलन फ़िरनी या रक़ीक़ (या'नी पतली) दही वग़ैरा कि उंग्लियों से खाई नहीं जा सकती और पी भी नहीं सकते या हाथ में ज़ख़्म है या हाथ मैले हैं और धोने के लिये पानी मुयस्सर नहीं। तो फिर ज़रूरतन चमचे की इजाज़त है। इसी त़रह़ गोश्त का पका हुवा

बड़ा टुकड़ा या रान वग़ैरा को छुरी से काट कर खाने की भी इजाज़त है।

हाथ से खाने के त़िब्बी फ़वाइद : प्यारे प्यारे इस्लामी भाइयो ! डॉक्टरों ने ए'तिराफ़ किया है कि जो लोग हाथ से खाते हैं उन की उंग्लियों से एक ख़ास क़िस्म की "हाज़िम रत़ूबत" निकल कर खाने में शामिल हो जाती है जो जिस्म में इन्स्युलीन (INSULIN) कम नहीं होने देती और इस से शूगर के मरीज़ों को फ़ाएदा होता है, फिर खाने के बा'द उंग्लियां चाटने से मज़ीद हाज़िम रत़ूबत पेट में दाख़िल होती है जो आंखों, दिमाग़ और मे'दे के लिये बेह़द मुफ़ीद है और येह दिल, मे'दे और दिमाग़ी अमराज़ का ज़बर दस्त इलाज है।

APENDIX का इलाज हो गया : प्यारे प्यारे इस्लामी भाइयो ! खाने की सुन्नतें अपनी ज़िन्दगी में नाफ़िज़ करने के लिये मदनी क़ाफ़िले में सफ़र को अपना मा'मूल बना लीजिये। मुआ़शरे के कई बिगड़े हुए अफ़राद दा'वते इस्लामी के मदनी क़ाफ़िले में सफ़र की बरकत से اَلْحَمْدُ لِلّٰه عَزَّوَجَلَّ राहे रास्त पर आ चुके हैं। इस ज़िम्न में मथुरा (हिन्द) के एक इस्लामी भाई का कुछ यूं बयान है, मैं एक मॉडर्न नौ जवान था, फ़िल्में डिरामे देखना मेरा मश्ग़ला था, मक्तबतुल मदीना से जारी होने वाले बयान की केसीट "**T.V. की तबाह कारियां**" सुनने का शरफ़ ह़ासिल हुवा जिस ने मेरी काया पलट दी, मैं **दा'वते इस्लामी** के मदनी माह़ोल से मुन्सलिक हो गया। मुझे APENDIX की बीमारी हो गई और डॉक्टर ने

ऑपरेशन का मश्वरा दिया। मैं घबरा गया, ऐसे में दा'वते इस्लामी के एक मुबल्लिग़ की **इन्फ़िरादी कोशिश** के नतीजे में ज़िन्दगी में पहली बार आशिक़ाने रसूल के साथ दा'वते इस्लामी के सुन्नतों की तरबियत के तीन[3] दिन के **मदनी क़ाफ़िले** का मुसाफ़िर बन गया। اَلْحَمْدُ لِلّٰہ عَزَّوَجَلَّ मदनी क़ाफ़िले की बरकत से बिग़ैर ऑपरेशन के मेरा मरज़ जाता रहा। اَلْحَمْدُ لِلّٰہ عَزَّوَجَلَّ मेरे जज़्बे को मदीने के 12 चांद लग गए, अब हर माह तीन[3] दिन के मदनी क़ाफ़िले में सफ़र की सआदत हासिल करता हूं, हर माह **मदनी इन्आमात** का कार्ड जम्अ़ करवाता हूं और मुसल्मानों को नमाज़े फ़ज्र के लिये जगाने की ख़ातिर घूम फिर कर **सदाए मदीना** लगाता हूं।

तू भी ऐ भाई कर क़ाफ़िले में सफ़र — बे अ़मल बा अ़मल बनते हैं सर बसर
काश! कर ले अगर क़ाफ़िले में सफ़र — अच्छी सोहबत से ठन्डा हो तेरा जिगर

صَلُّوْا عَلَی الْحَبِیْب ! صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلٰی مُحَمَّد

बिग़ैर बेहोशी के ऑपरेशन : प्यारे प्यारे इस्लामी भाइयो ! देखा आप ने ! मदनी क़ाफ़िलों में सफ़र की कैसी बरकतें हैं। येह याद रखिये ! बीमारी और मुसीबत मुसल्मान के लिये आ़म तौर पर बाइसे रहमत होती है, अभी आप ने सुना कि इस्लामी भाई को **एपेन्डिक्स** की तक्लीफ़ हुई फिर शिफ़ा का सबब मदनी क़ाफ़िले का सफ़र बना इस तरह वोह **मदनी माहोल** में रच बस गए और उन का **मदनी माहोल** में ख़ूब पक्का हो जाना यक़ीनन बाइसे इस्तिहक़ाक़े रहमत है। तक्लीफ़ आए तो

फ़रमाने मुस्तफ़ा صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم: उस शख़्स की नाक ख़ाक आलूद हो जिस के पास मेरा ज़िक्र हो और वोह मुझ पर दुरूदे पाक न पढ़े। (ترمذی)

सब्र की कोशिश कर के ख़ूब अज्रो सवाब कमाना चाहिये। हमारे बुज़ुर्गाने दीन رَحِمَهُمُ اللّٰهُ الْمُبِيْن के सब्र फ़रमाने का अन्दाज़ और उस पर सवाब व अज्र कमाने का जज़्बा भी क्या ख़ूब था! चुनान्चे शारेहे बुख़ारी फ़क़ीहुल हिन्द हज़रते अ़ल्लामा मौलाना **मुफ़्ती मुहम्मद शरीफ़ुल हक़ अमजदी** عَلَيْهِ رَحمَةُ اللّٰهِ الْقَوِی **"नुज़्हतुल क़ारी शर्हे सहीहुल बुख़ारी"** जिल्द सानी सफ़हा 213 ता 215 पर नक़्ल करते हैं, हज़रते सय्यिदुना **उ़र्वह** رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْه जिन के वालिदे गिरामी मश्हूर सहाबी हवारिये रसूलुल्लाह صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم हज़रते सय्यिदुना ज़ुबैर बिन अ़व्वाम رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْه थे और वालिदए मोहतरमा हज़रते सय्यिदतुना अस्मा बिन्ते अबू बक्र सिद्दीक़ رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْهُمَا थीं। आप उम्मुल मुअमिनीन हज़रते सय्यिदतुना आ़इशा सिद्दीक़ा رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْهَا के भान्जे और हज़रते सय्यिदुना अ़ब्दुल्लाह बिन ज़ुबैर رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْهُمَا के सगे भाई और मदीनए मुनव्वरह زَادَهَا اللّٰهُ شَرَفًا وَّتَعْظِيْمًا के मश्हूर "फ़ुक़हाए सब्आ़" (या'नी सात जय्यिद उ़लमाए किराम) में से एक थे, आ़बिदो ज़ाहिद और शब ज़िन्दा दार बुज़ुर्ग थे रोज़ाना बिला नाग़ा **चौथाई क़ुरआने पाक** मुस्हफ़ शरीफ़ से देख कर तिलावत फ़रमाते और **चौथाई क़ुरआन शरीफ़** रात **तहज्जुद** में पढ़ते। ख़लीफ़ा वलीद बिन अ़ब्दुल मलिक कहा करता था कि जिसे **जन्नती** को देखना हो वोह हज़रते सय्यिदुना **उ़र्वह** رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْه को देखे। एक बार सफ़र कर के वलीद बिन अ़ब्दुल मलिक के यहां तशरीफ़ ले गए थे। आप رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْه

के क़दम मुबारक में **आकिला** हो गया, येह वोह बीमारी है जो उ़ज़्व को सड़ा देती है चुनान्चे वलीद ने मश्वरा दिया कि अ़मले जराह़त (ऑपरेशन) करवा लीजिये। आप رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہ राज़ी न हुए, मगर मरज़ पिंडली तक बढ़ गया। वलीद ने अ़र्ज़ की, आ़लीजाह ! अब तो पाउं कटवाना ज़रूरी है वरना येह मरज़ सारे जिस्म में सरायत कर जाएगा। आप رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہ राज़ी हो गए। चुनान्चे त़बीब आया, उस ने कहा, शराब पी लीजिये ता कि कटने में तक्लीफ़ का एह़सास न हो। फ़रमाया, **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ की ह़राम कर्दा चीज़ के ज़रीए़ मुझे आ़फ़िय्यत नहीं चाहिये। अ़र्ज़ की, इजाज़त हो तो कोई ख़्वाब आवर दवा दे दूं। फ़रमाया, मैं नहीं चाहता कि कोई उ़ज़्व काटा जाए और मुझे तक्लीफ़ का एह़सास न हो और तक्लीफ़ और **सब्र** के ज़रीए़ मिलने वाले अज्र से मैं मह़रूम रह जाऊं। अ़र्ज़ की गई, अच्छा, कुछ लोगों को इजाज़त दीजिये कि आप को पकड़े रहें। फ़रमाया, इस की भी ज़रूरत नहीं। बिल आख़िर **पहले पाउं का गोश्त छुरी से और फिर हड्डी आरी से काटी गई मगर आप का सब्रो तह़म्मुल मरह़बा ! ज़बान से आह ! तक न की, मुसल्सल ज़िक्रुल्लाह** عَزَّوَجَلَّ **में मसरूफ़ रहे, ह़त्ता कि जब लोहे के चमचों के ज़रीए़ ज़ैतून शरीफ़ के खौलते हुए तेल से ज़ख़्म को दाग़ा गया तो शिद्दते दर्द के सबब बेहोश हो गए,** जब होश में आए तो चेहरए मुबारका से पसीना पोंछने लगे और कटा हुवा पाउं मुबारक हाथ में ले कर उलट पलट करते

फ़रमाने मुस्त़फ़ा صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰی عَلَیْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم : जिस के पास मेरा ज़िक्र हुवा और उस ने मुझ पर दुरूदे पाक न पढ़ा तह़क़ीक़ वोह बद बख़्त हो गया । (ابن سنی)

हुए फ़रमाया, उस ज़ात की क़सम ! जिस ने मुझे तुझ पर सुवार फ़रमाया, मैं तेरे ज़रीए़ कभी किसी गुनाह की त़रफ़ नहीं गया । जराह़त (ऑपरेशन) की तमाम कारवाई इस त़रह़ हुई कि वलीद बातों में मसरूफ़ था उसे ख़बर तक न हुई जब दाग़ने की बू फैली तब मा'लूम हुवा ।

शहज़ादे की शहादत : इस सफ़र में ह़ज़रते सय्यिदुना उ़र्वह رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْه का दूसरा इम्तिह़ान येह हुवा कि आप رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْه के शहज़ादे ह़ज़रते सय्यिदुना मुह़म्मद बिन उ़र्वह رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْهُمَا वलीद के अस्त़बल में तशरीफ़ ले गए तो किसी चौपाए ने मार कर शहीद कर दिया । जब **मदीनए मुनव्वरह** زَادَهَا اللّٰهُ شَرَفًا وَّتَعْظِيمًا वापसी हुई तो पारह 15 **सूरतुल कह्फ़** की आयत नम्बर 62 का येह ह़िस्सा तिलावत किया,

لَقَدْ لَقِيْنَا مِنْ سَفَرِنَا هٰذَا نَصَبًا ﴿۶۲﴾

(پ ۱۵ الکھف ٦٢)

तरजमए कन्ज़ुल ईमान : बेशक हमें अपने इस सफ़र में बड़ी मशक़्क़त का सामना हुवा ।

ह़ज़रते उ़र्वह رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْه **की सख़ावत : ह़ज़रते** सय्यिदुना उ़रवा رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْه के जूदो सख़ावत का येह आ़लम था कि जब बाग़ में फल पक कर तय्यार हो जाते तो इह़ाते़ की दीवार में शिगाफ़ फ़रमा देते लोग आ कर खाते और बांध कर ले भी जाते । आप رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْه जब अपने बाग़ में तशरीफ़ ले जाते तो पारह 15 **सूरतुल कह्फ़** की आयत नम्बर 39 का येह ह़िस्सा विर्दे ज़बान होता :

وَلَوْلَآ اِذْ دَخَلْتَ جَنَّتَكَ قُلْتَ مَا شَآءَ اللّٰهُ لَا قُوَّةَ اِلَّا بِاللّٰهِ

(پ ۱۵ الکھف ۳۹)

तरजमए कन्ज़ुल ईमान : और क्यूं न हुवा कि जब तू अपने बाग़ में गया तो कहा होता जो चाहे **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ हमें कुछ ज़ोर नहीं मगर **अल्लाह** की मदद का।

صَلُّوا عَلَى الْحَبِيب! صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلٰى مُحَمَّد

टेक लगा कर खाना सुन्नत नहीं है : सरकारे नामदार, दो[2] आ़लम के मालिको मुख़्तार, शहन्शाहे अबरार صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم का फ़रमाने ख़ुश गवार है, "मैं तक्या (या'नी टेक) लगा कर नहीं खाता।"

(کنزالعُمّال ج ۱۵ ص ۱۰۲ حدیث ٤٠٧٠٤)

टेक लगा कर मत खाओ : ह़ज़रते सय्यिदुना अबुद्दर्दा رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْهُ से रिवायत है कि हुज़ूरे अकरम, नूरे मुजस्सम, शाहे बनी आदम صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने इर्शाद फ़रमाया, "तुम टेक लगा कर खाना मत खाओ।" (مجمع الزوائِد ج ٥ ص ٢٢ حديث ٧٩١٨)

टेक लगा कर खाने की चार सूरतें : खाते वक़्त तक्या (या'नी टेक) लगाने की चार[4] सूरतें हैं : ﴾1﴿ एक पहलू ज़मीन की त़रफ़ कर के (या'नी दाएं या बाएं झुके हुए) बैठना ﴾2﴿ चार ज़ानू (या'नी चोकड़ी मार कर) बैठना ﴾3﴿ एक हाथ ज़मीन पर रख कर (उस पर) टेक लगा कर बैठना ﴾4﴿ दीवार (या कुर्सी की पुश्त) वग़ैरा से टेक लगा कर बैठना। येह चारों सूरतें मुनासिब नहीं। दो[2] ज़ानू या

उकड़ूं (या'नी दोनों[2] घुटने खड़े कर के) बैठ कर खाना अच्छा है, तिब्बी लिहाज़ से भी मुफ़ीद है। खड़े हो कर खाना अच्छा नहीं।

(मिरआत शर्हे मिश्कात, जि. 6, स. 12)

टेक लगा कर खाने के तिब्बी नुक़्सानात : प्यारे प्यारे इस्लामी भाइयो ! टेक लगा कर खाना सुन्नत नहीं। इस सुन्नत पर अ़मल न करने में तीन तिब्बी नुक़्सानात भी हैं : ﴾1﴿ खाना अच्छी तृरह चबाया नहीं जा सकेगा और उस में लुआ़ब जिस मिक्दार में मिलना चाहिये उतना नहीं मिलेगा जो कि मे'दे में जा कर नशास्ता दार गिज़ाओं को हज़्म कर सके और यूं निज़ामे इन्हिज़ाम (या'नी हाज़िमा) मुतअस्सिर होगा ﴾2﴿ टेक लगा कर बैठने से मे'दा फैल जाता है लिहाज़ा इस तृरह गैर ज़रूरी खूराक मे'दे में चली जाएगी और हाज़िमा ख़राब होगा। ﴾3﴿ टेक लगा कर खाने से आंतों और जिगर को नुक़्सान पहुंचता है।

हुज्जतुल इस्लाम हज़रते सय्यिदुना इमाम मुहम्मद गज़ाली عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللّٰهِ الْوَالِى फ़रमाते हैं, "टेक लगा कर पानी पीना भी मे'दे के लिये नुक़्सान देह है।" (احياء العُلوم ج ٢ ص ٥)

रोटी का एह़तिराम करो : गिरी हुई रोटी उठा कर खा लेना सुन्नत है चुनान्चे उम्मुल मुअमिनीन सय्यिदतुना आइशा सिद्दीक़ा رَضِىَ اللّٰهُ تَعَالٰى عَنْهَا फ़रमाती हैं, "सुल्ताने दो[2] जहान, शहन्शाहे कौनो मकान,

रह़मते आ़लमिय्यान صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم मकाने आ़लीशान में तशरीफ़ लाए, रोटी का टुकड़ा पड़ा हुवा देखा तो उस को ले कर पोंछा फिर खा लिया और फ़रमाया, "आ़इशा ! (رَضِیَ اللهُ تَعَالٰى عَنْهَا) अच्छी चीज़ का एह़तिराम करो कि येह चीज़ (या'नी रोटी) जब किसी क़ौम से भागी है तो लौट कर नहीं आई।" (ابنِ ماجه ج٤ ص٥٠ حديث ٣٣٥٣)

खाने के इसराफ़ से तौबा कीजिये : प्यारे प्यारे इस्लामी भाइयो ! आजकल हर एक बे बरकती और तंगदस्ती का रोना रो रहा है। क्या बईद कि रोटी का एह़तिराम न करने की येह सज़ा हो। आज शायद ही कोई मुसल्मान ऐसा हो, जो रोटी ज़ाएअ़ न करता हो। हर त़रफ़ खाने की बे हुरमती के दिलसोज़ नज़्ज़ारे हैं, शादी की तक़्रीबात हों या बुज़ुर्गाने दीन رَحِمَهُمُ اللهُ تَعَالٰى की नियाज़ के तबर्रुकात। अफ़्सोस सद करोड़ अफ़्सोस ! दस्तर ख़्वानों और दरियों पर बे दर्दी के साथ खाना गिराया जाता है, खाने के दौरान हड्डियों के साथ बोटी और मसालह़ा बराबर साफ़ नहीं किया जाता, गर्म मसालहे़ के साथ भी खाने के कसीर अज्ज़ा ज़ाएअ़ कर दिये जाते हैं, थालों में बचा हुवा थोड़ा सा खाना और पियालों, पतीलियों में बचा हुवा शोरबा दोबारा इस्ति'माल करने का अक्सर लोगों का ज़ेहन नहीं, इस त़रह़ का बहुत सारा बचा हुवा खाना ड़मूमन कचरा कूंडी की नज़्र कर दिया जाता है। अब तक जितना भी इसराफ़ किया है

बराए मेहरबानी ! उस से तौबा कर लीजिये। आयिन्दा खाने के एक भी दाने और शोरबे के एक भी क़तरे का इसराफ़ न हो इस का अ़हद कर लीजिये। وَاللّٰهِ الْعَظِيْم ! क़ियामत में ज़र्रे ज़र्रे का ह़िसाब होना है, यक़ीनन कोई भी क़ियामत के ह़िसाब की ताब नहीं रखता, तौबा सच्ची तौबा कर लीजिये। दुरूदे पाक पढ़ कर अ़र्ज़ कीजिये : **या अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ ! आज तक मैं ने जितना भी इसराफ़ किया उस से और तमाम सग़ीरा व कबीरा गुनाहों से तौबा करता हूं और तेरी अ़ता कर्दा तौफ़ीक़ से आयिन्दा गुनाहों से बचने की भरपूर कोशिश करूंगा, या रब्बे मुस्त़फ़ा عَزَّوَجَلَّ मेरी तौबा क़बूल फ़रमा और मुझे बे ह़िसाब बख़्श दे। اٰمِين بِجَاهِ النَّبِيِّ الْاَمِين صَلَّى اللّٰهُ تعالٰی علیہ واٰلہٖ وسلَّم

सदक़ा प्यारे की ह़या का कि न ले मुझ से ह़िसाब
बख़्श बे पूछे लजाए को लजाना क्या है

(ह़दाइक़े बख़्शिश शरीफ़)

पारह 8 **सूरतुल आ'राफ़** आयत नम्बर 31 में **अल्लाह रब्बुल आ़लमीन** का फ़रमाने आ़लीशान है :

كُلُوْا وَاشْرَبُوْا وَلَا تُسْرِفُوْا ۚ اِنَّهٗ لَا يُحِبُّ الْمُسْرِفِيْنَ ﴿۳۱﴾

(پ ۸ الاعراف ۳۱)

तरजमए कन्ज़ुल ईमान : और खाओ और पियो और ह़द से न बढ़ो, बेशक ह़द से बढ़ने वाले उसे पसन्द नहीं।

फ़रमाने मुस्त़फ़ा صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰی عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم : मुझ पर दुरूदे पाक की कसरत करो बेशक तुम्हारा मुझ पर दुरूदे पाक पढ़ना तुम्हारे लिये पाकीज़गी का बाइ़स है। (ابو یعلی)

इसराफ़ किसे कहते हैं ? : मुफ़स्सिरे शहीर **ह़कीमुल उम्मत** ह़ज़रते मुफ़्ती अह़मद यार ख़ान عَلَيْهِ رَحْمَةُ الْحَنَّان तफ़्सीरे नईमी जिल्द 8 सफ़्ह़ा 390 पर फ़रमाते हैं, इसराफ़ की बहुत तफ़्सीरें हैं ﴾1﴿ ह़लाल चीज़ों को ह़राम जानना ﴾2﴿ ह़राम चीज़ों को इस्ति'माल करना ﴾3﴿ ज़रूरत से ज़ियादा खाना पीना या पहनना ﴾4﴿ जो दिल चाहे वोह खा पी लेना पहन लेना ﴾5﴿ दिन रात में बार बार खाते पीते रहना जिस से मे'दा ख़राब हो जाए, बीमार पड़ जाए ﴾6﴿ मुज़िर और नुक़्सान देह चीज़ें खाना पीना ﴾7﴿ हर वक़्त खाने पीने पहनने के ख़याल में रहना कि अब क्या खाऊंगा आयिन्दा क्या पियूंगा (رُوحُ البیان ج۳ص۱۰٤) ﴾8﴿ ग़फ़्लत के लिये खाना ﴾9﴿ गुनाह करने के लिये खाना ﴾10﴿ अच्छे खाने पीने, आ'ला पहनने का आ़दी बन जाना कि कभी मा'मूली चीज़ खा पी न सके ﴾11﴿ आ'ला ग़िज़ाओं को अपने कमाल का नतीजा जानना। ग़रज़े कि इस एक लफ़्ज़ में बहुत से अह़काम दाख़िल हैं। ह़ज़रते सय्यिदुना उ़मर फ़ारूके़ आ'ज़म رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْه फ़रमाते हैं कि "हर दम शिकम सेर रहने से बचो कि येह बदन को बीमार, मे'दे को ख़राब और नमाज़ से सुस्त करता है, खाने पीने में मियाना रवी इख़्तियार करो कि येह सदहा बीमारियों का इ़लाज है। **अल्लाह** तआ़ला मोटे[1] शख़्स को ना पसन्द करता है, (کشف الخفاء ج ۱ ص ۲۲۱ حدیث ۷٦۰) जो शख़्स शहवत (या'नी ख़्वाहिश) को अपने दीन पर ग़ालिब करे वोह हलाक हो जाएगा।

(رُوحُ الْمَعَانی ج٤ص۱٦۳ ملتان, तफ़्सीरे नईमी, जि. 8, स. 390)

1 : मोटापे की वज्ह से किसी मुसलमान पर हंस कर छेड़ कर दिल दुखाना गुनाहै।

फ़रमाने मुस्त़फ़ा صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم : जिस के पास मेरा ज़िक्र हो और वोह मुझ पर दुरूद शरीफ़ न पढ़े तो वोह लोगों में से कन्जूस तरीन शख़्स है। (مسند احمد)

दुबले आदमी की फ़ज़ीलत : प्यारे प्यारे इस्लामी भाइयो ! खाना कम खाने के साथ साथ बिल ख़ुसूस मैदा, मिठास व चिक्नाहट और इस की बनावटों के इस्ति'माल में (त़बीब के मश्वरे के मुत़ाबिक़) कमी रखने से बदन के वज़्न में कमी आती, उभरा हुवा पेट अस्ली ह़ालत पर आता और आदमी ख़ुश अन्दाम (या'नी SMART) रहता है।[1] कम खाने वाले हलके बदन वाले **मुसल्मान** को ख़ुदाए रह़मान عَزَّوَجَلَّ पसन्द फ़रमाता है चुनान्चे ह़ज़रते सय्यिदुना अ़ब्दुल्लाह इब्ने अ़ब्बास رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْهُمَا से रिवायत है, नबिय्ये करीम, रऊफ़ुर्रह़ीम عَلَيْهِ اَفْضَلُ الصَّلٰوةِ وَالتَّسْلِيْم ने इर्शाद फ़रमाया, ''**अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ **को तुम में सब से ज़ियादा वोह बन्दा पसन्द है जो कम खाने वाला और ख़फ़ीफ़ (या'नी हलके) बदन वाला है।**''

(الجامِعُ الصَّغیر ص ۲۰ حدیث ۲۲۱)

प्यारे प्यारे इस्लामी भाइयो ! अ़मल का जज़्बा बढ़ाने के लिये **मदनी माह़ोल** ज़रूरी है, वरना आ़रिज़ी त़ौर पर जज़्बा पैदा होता भी है तो अच्छी सोह़बत के फ़ुक़्दान (या'नी कमी) के सबब इस्तिक़ामत नहीं मिल पाती। लिहाज़ा **आ़शिक़ाने रसूल** की सोह़बत ह़ासिल करने के लिये **मदनी क़ाफ़िलों** में सफ़र को अपना मा'मूल बना लीजिये। اَلْحَمْدُ لِلّٰه عَزَّوَجَلَّ **दा'वते इस्लामी** की बरकत से हर त़रफ़ सुन्नतों की धूमधाम है।

---

1 : बदन का वज़्न कम करने का त़रीक़ा मा'लूम करने के लिये फ़ैज़ाने सुन्नत के बाब ''**पेट का क़ुफ़्ले मदीना**'' सफ़ह़ा 76 ता 79 मुलाह़ज़ा फ़रमा लीजिये।

फ़रमाने मुस्त़फ़ा صَلَّى اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم : तुम जहां भी हो मुझ पर दुरूद पढ़ो कि तुम्हारा दुरूद मुझ तक पहुंचता है। (طبرانی)

लोगों से शरमा कर सुन्नत तर्क नहीं की जाती ! : हमारे सह़ाबए किराम عَلَيْهِمُ الرِّضْوَان, आक़ाए नामदार, मदीने के ताजदार, रसूलों के सालार صَلَّى اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم की मह़ब्बत में गुम रहा करते थे। दुन्या की कोई कशिश और बे वफ़ा मुआ़शरे की कोई झूटी "मुरव्वत" उन से सुन्नत न छुड़ा सकती थी। चुनान्चे ह़ज़रते सय्यिदुना ह़सन बसरी رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ फ़रमाते हैं कि ह़ज़रते सय्यिदुना मा'क़िल बिन यसार رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ (जो कि वहां मुसल्मानों के सरदार थे) खाना खा रहे थे कि उन के हाथ से लुक़्मा गिर गया, उन्हों ने उठा लिया और साफ़ कर के खा लिया। येह देख कर गंवारों ने आंखों से एक दूसरे को इशारा किया (कि कितनी अ़जीब बात है, कि गिरे हुए लुक़्मे को उन्हों ने खा लिया) किसी ने आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ से कहा, "**अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ अमीर का भला करे, ऐ हमारे सरदार ! येह गंवार तिरछी निगाहों से इशारा करते हैं कि अमीर साह़िब رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ने गिरा हुवा लुक़्मा खा लिया ह़ालां कि इन के सामने येह खाना मौजूद है।" उन्हों ने फ़रमाया, "इन अ़जमिय्यों की वज्ह से मैं उस चीज़ को नहीं छोड़ सकता जिसे मैं ने, **सरकारे मदीना**, राह़ते क़ल्बो सीना, फ़ैज़ गन्जीना, साह़िबे मुअ़त्त़र पसीना صَلَّى اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم से सुना है। हम एक दूसरे को हुक्म देते थे कि

लुक़्मा गिर जाए तो उसे साफ़ कर के खा लिया जाए शैत़ान के लिये न छोड़ा जाए।" (ابنِ ماجه شریف ج٤ ص١٧ حدیث ٣٢٧٨)

रूहे ईमां मग़्ज़े क़ुरआं जाने दीं

हस्त हुब्बे रह़मतुल्लिल आ़लमीं

ख़ूब इन्फ़िरादी कोशिश कीजिये : प्यारे प्यारे इस्लामी भाइयो ! देखा आप ने ? जलीलुल क़द्र सह़ाबी और मुसल्मानों के सरदार सय्यिदुना मा'क़िल बिन यसार رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ सुन्नतों से किस क़दर प्यार करते थे। आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ने अ़जमिय्यों के इशारों की ज़र्रा बराबर परवाह न की और बे धड़क सुन्नतों पर अ़मल जारी रखा। और आज बा'ज़ नादान मुसल्मान ऐसे भी हैं कि "मॉडर्न माह़ोल" में दाढ़ी मुबारक जैसी अ़ज़ीमुश्शान सुन्नत के तर्क को مَعَاذَ اللّٰہ عَزَّوَجَلَّ "ह़िक्मते अ़मली" तसव्वुर करते हैं। ह़क़ीक़ी ह़िक्मते अ़मली येही है कि लाख बुरा माह़ोल हो, अग़्यार का ज़ोर हो, बद मज़्हबों का शोर हो, कुछ ही हो आप दाढ़ी शरीफ़, इमामए पाक और सुन्नतों भरे सादा लिबास में मल्बूस रहिये, खाने पीने और रोज़मर्रा के मा'मूलात में सुन्नतों का दामन थामे रहिये, लोगों की इस्लाह़ के लिये **इन्फ़िरादी कोशिश** जारी रखिये, اِنْ شَآءَ اللّٰہ عَزَّوَجَلَّ चराग़ से चराग़ जलता चला जाएगा, ह़क़ का बोलबाला होगा,

शैत़ान का मुंह काला होगा, हर त़रफ़ सुन्नतों का उजाला होगा। दौलते दुन्या का हर आ़शिक़, मीठे मुस्त़फ़ा صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم का मतवाला होगा। اِنْ شَآءَاللّٰه عَزَّوَجَلَّ घर घर नूरे ह़बीब صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم का उजाला होगा।

आप आएं तो मेरे घर में उजाला होगा — ख़ाक सूरज से अंधेरों का इज़ाला होगा

जिस के हाथों में मदीने का पियाला होगा — होगा सैराब सरे कौसरो तस्नीम वोही

صَلُّوْا عَلَى الْحَبِيْب! صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلٰى مُحَمَّد

औलाद को कम अ़क़्ली से बचाने का नुस्ख़ा : अल्लाह عَزَّوَجَلَّ के मह़बूब, दानाए ग़ुयूब, मुनज़्ज़हुन अ़निल उ़यूब صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم का फ़रमाने ख़ैरिय्यत निशान है, "जो शख़्स दस्तर ख़्वान से खाने के **गिरे हुए टुकड़ों** को उठा कर खाए वोह फ़राख़ी की ज़िन्दगी गुज़ारता है और उस की **औलाद** और **औलाद** की **औलाद** कम अ़क़्ली से मह़फ़ूज़ रहती है।"

(كنزالعُمّال ج ١٥ ص ١١١ حديث ٤٠٨١٥)

صَلُّوْا عَلَى الْحَبِيْب! صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلٰى مُحَمَّد

तंगदस्ती का इलाज : **ज़बर दस्त** मुह़द्दिस ह़ज़रते सय्यिदुना हुदबा बिन ख़ालिद عَلَيْهِ رَحْمَةُ الْمَاجِد को ख़लीफ़ए बग़दाद मामून रशीद ने अपने हां मद्ऊ़ किया, त़आ़म के आख़िर में खाने के जो दाने वग़ैरा गिर गए थे, मुह़द्दिसे मौसूफ़ चुन चुन कर तनावुल फ़रमाने लगे। मामून ने हैरान हो

कर कहा, ऐ शैख़ ! क्या आप का अभी तक पेट नहीं भरा ? फ़रमाया, क्यूं नहीं ! दर अस्ल बात येह है कि मुझ से ह़ज़रते सय्यिदुना ह़म्माद बिन सलमा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ ने एक ह़दीस बयान फ़रमाई है, "जो शख़्स दस्तर ख़्वान के नीचे गिरे हुए टुकड़ों को चुन चुन कर खाएगा वोह तंगदस्ती से बे ख़ौफ़ हो जाएगा।" मैं इसी ह़दीसे मुबारक पर अ़मल कर रहा हूं। येह सुन कर मामून बेहद मुतअस्सिर हुवा और अपने एक ख़ादिम की त़रफ़ इशारा किया तो वोह एक हज़ार दीनार रूमाल में बांध कर लाया। मामून ने उस को ह़ज़रते सय्यिदुना हुदबा बिन ख़ालिद की ख़िदमत में बत़ौरे नज़राना पेश कर दिया। ह़ज़रते सय्यिदुना हुदबा बिन ख़ालिद عَلَیْہِ رَحْمَۃُ الْمَاجِد ने फ़रमाया اَلْحَمْدُ لِلّٰہ ह़दीसे मुबारका पर अ़मल की हाथों हाथ बरकत ज़ाहिर हो गई। (ثَمراتُ الْاَوراق ج ۱ ص ۸)

शरमा कर सुन्नतें मत छोड़िये : प्यारे प्यारे इस्लामी भाइयो ! मा'लूम हुवा हमारे बुज़ुर्गाने दीन رَحِمَہُمُ اللّٰہُ تَعَالٰی सुन्नतों पर अ़मल के मुआ़मले में दुन्या के बड़े से बड़े रईस बल्कि बादशाह की भी परवाह नहीं करते। इस ह़िकायत से हमारे उन इस्लामी भाइयों को दर्स ह़ासिल करना चाहिये जो लोगों की मुरव्वत की वज्ह से खाने पीने की सुन्नतें तर्क कर दिया करते हैं, नीज़ दाढ़ी शरीफ़ और इमामए मुबारका के ताजे इ़ज़्ज़त

फ़रमाने मुस्त़फ़ा صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم : मुझ पर कसरत से दुरूदे पाक पढ़ो बेशक तुम्हारा मुझ पर दुरूदे पाक पढ़ना तुम्हारे गुनाहों के लिये मग्फ़िरत है। (ابن عساکر)

को सर पर सजाने से कतरा जाते हैं। यक़ीनन सुन्नत पर अ़मल करना दोनों[2] जहां में बाइ़से सआ़दत है, कभी कभी दुन्या में हाथों हाथ भी इस की बरकतें ज़ाहिर हो जाती हैं जैसा कि ह़ज़रते सय्यिदुना हुदबा बिन ख़ालिद عَلَيْهِ رَحْمَةُ الْمَاجِد को शाही दरबार में सुन्नत पर अ़मल करने की बरकत से एक हज़ार दीनार मिल गए और आप मालदार हो गए।

जो अपने दिल के गुलदस्ते में सुन्नत को सजाते हैं

वोह बेशक रह़मतें दोनों जहां में ह़क़ से पाते हैं

प्यारे प्यारे इस्लामी भाइयो ! जिस त़रह़ रोज़ी में बरकत की वुजूहात हैं इसी त़रह़ रोज़ी में तंगी के भी अस्बाब हैं अगर इन से बचा जाए तो اِنْ شَآءَاللّٰه عَزَّوَجَلَّ रोज़ी में बरकत ही बरकत देखेंगे। आप की मा'लूमात के लिये तंगदस्ती के 44 अस्बाब अ़र्ज़ करता हूं :

तंगदस्ती के 44 अस्बाब : ﴾1﴿ बिग़ैर हाथ धोए खाना ﴾2﴿ नंगे सर खाना ﴾3﴿ अंधेरे में खाना ﴾4﴿ दरवाज़े पर बैठ कर खाना पीना ﴾5﴿ मय्यित के क़रीब बैठ कर खाना ﴾6﴿ जनाबत (या'नी जिमाअ़ या एह़तिलाम के बा'द ग़ुस्ल से क़ब्ल) खाना खाना ﴾7﴿ निकला हुवा खाना खाने में देर करना ﴾8﴿ चारपाई पर बिग़ैर दस्तर ख़्वान बिछाए खाना ﴾9﴿ चारपाई पर ख़ुद सिरहाने बैठना और खाना पाइंती (या'नी जिस

फ़रमाने मुस्त़फ़ा صَلَّى اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم : जिस ने किताब में मुझ पर दुरूदे पाक लिखा तो जब तक मेरा नाम उस में रहेगा फ़िरिश्ते उस के लिये इस्तिग़्फ़ार (या'नी बख़्शिश की दुआ) करते रहेंगे। (طبرانی)

त़रफ़ पाउं किये जाते हैं उस ह़िस्से) की जानिब रखना ﴿10﴾ दांतों से रोटी कतरना (बर्गर वग़ैरा खाने वाले भी एह़तियात़ फ़रमाएं) ﴿11﴾ चीनी या मिट्टी के टूटे हुए बरतन इस्ति'माल में रखना ख़्वाह इस में पानी पीना (बरतन या कप के टूटे हुए ह़िस्से की त़रफ़ से पानी, चाय वग़ैरा पीना मक्रूह है, मिट्टी के दराड़ वाले या ऐसे बरतन जिन के अन्दरूनी ह़िस्से से थोड़ी सी भी मिट्टी उखड़ी हुई हो उस में खाना न खाइये कि मैल कुचैल और जरासीम पेट में जा कर बीमारियों का सबब बन सकते हैं) ﴿12﴾ खाए हुए बरतन साफ़ न करना ﴿13﴾ जिस बरतन में खाना खाया है उसी में हाथ धोना ﴿14﴾ ख़िलाल करते वक़्त जो रेशा निकले उसे फिर मुंह में रख लेना ﴿15﴾ खाने पीने के बरतन खुले छोड़ देना। खाने पीने के बरतन **बिस्मिल्लाह** कह कर ढांक देने चाहिएं कि बलाएं उतरती हैं और ख़राब कर देती हैं फिर वोह खाना और मशरूब बीमारियां लाता है ﴿16﴾ रोटी को ख़्वार रखना कि बे अदबी हो और पाउं में आए। (मुलख़्ख़सन सुन्नी बिहिश्ती ज़ेवर, स. 595 ता 601) ह़ज़रते सय्यिदुना इमाम बुरहानुद्दीन ज़रनूजी رَحْمَةُ اللّٰهِ تَعَالٰی عَلَیْه ने तंगदस्ती के जो अस्बाब बयान फ़रमाए हैं उन में येह भी हैं ﴿17﴾ ज़ियादा सोने की आ़दत (इस से जहालत भी पैदा होती है) ﴿18﴾ नंगे सोना ﴿19﴾ बे

मक्कतुल मुकर्रमा मदीनतुल मुनव्वरा जन्नतुल बक़ीअ़ मक्कतुल मुकर्रमा मदीनतुल मुनव्वरा जन्नतुल बक़ीअ़

ह़याई के साथ पेशाब करना (लोगों के सामने आ़म रास्तों पर बिला तकल्लुफ़ पेशाब करने वाले ग़ौर फ़रमाएं) ﴾20﴿ दस्तर ख़्वान पर गिरे हुए दाने और खाने के ज़र्रे वग़ैरा उठाने में सुस्ती करना ﴾21﴿ पियाज़ और लहसन के छिल्के जलाना ﴾22﴿ घर में कपड़े से झाड़ू निकालना ﴾23﴿ रात को झाड़ू देना ﴾24﴿ कूड़ा घर ही में छोड़ देना ﴾25﴿ मशाइख़ के आगे चलना ﴾26﴿ वालिदैन को उन के नाम से पुकारना ﴾27﴿ हाथों को गारे या मिट्टी से धोना ﴾28﴿ दरवाज़े के एक हिस्से से टेक लगा कर खड़े होना ﴾29﴿ बैतुल ख़ला में वुज़ू करना ﴾30﴿ बदन ही पर कपड़ा वग़ैरा सी लेना ﴾31﴿ चेहरा लिबास से ख़ुश्क कर लेना ﴾32﴿ घर में मकड़ी के जाले लगे रहने देना ﴾33﴿ नमाज़ में सुस्ती करना ﴾34﴿ नमाज़े फ़ज्र के बा'द मस्जिद से जल्दी निकल जाना ﴾35﴿ सुब्ह़ सवेरे बाज़ार जाना ﴾36﴿ देर गए बाज़ार से आना ﴾37﴿ अपनी औलाद को "कोसनें" (या'नी बद दुआ़एं) देना (अक्सर औ़रतें बात बात पर अपने बच्चों को बद दुआ़एं देती हैं और फिर तंगदस्ती के रोने भी रोती हैं !) ﴾38﴿ गुनाह करना ख़ुसूसन झूट बोलना ﴾39﴿ चराग़ फूंक मार कर बुझा देना ﴾40﴿ टूटी हुई कंघी इस्ति'माल करना ﴾41﴿ मां बाप के लिये दुआ़ए ख़ैर न करना ﴾42﴿ इमामा बैठ कर बांधना और ﴾43﴿ पाजामा या शलवार

खड़े खड़े पहनना ﴾44﴿ नेक आ'माल में टालम टोल करना।

(تَعلِيمُ الْمُتَعَلِّمِ طَرِيقُ التَّعلُّمِ ٧٣تا٧٦باب المدينه كراچی)

صَلُّوْا عَلَى الْحَبِيْب! صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلٰى مُحَمَّد

गिरी हुई रोटी खाने की फ़ज़ीलत : प्यारे प्यारे इस्लामी भाइयो ! अल्लाह عَزَّوَجَلَّ की रह़मत बहुत बड़ी है बा'ज़ अवक़ात ब ज़ाहिर अ़मल बहुत छोटा होता है मगर उस की फ़ज़ीलत बहुत ज़ियादा होती है। जैसा कि ह़ज़रते सय्यिदुना अ़ब्दुल्लाह बिन उम्मे ह़राम رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْهُ फ़रमाते हैं, दो[2] जहां के सुल्त़ान, सरवरे ज़ीशान, मह़बूबे रह़मान صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم का फ़रमाने मग़्फ़िरत निशान है, "रोटी का एह़तिराम करो कि वोह आस्मान व ज़मीन की बरकात से है। जो शख़्स दस्तर ख़्वान से गिरी हुई रोटी को खा लेगा उस की मग़्फ़िरत हो जाएगी।"

(الجامعُ الصَّغير ص٨٨ حديث ١٤٢٦)

سُبْحٰنَ اللّٰه عَزَّوَجَلَّ ! प्यारे इस्लामी भाइयो ! काश ! हम थोड़ी सी झिझक उड़ा दें और दस्तर ख़्वान पर गिरी हुई रोटी और चावल के दाने वग़ैरा उठा कर खा लिया करें और मग़्फ़िरत के ह़क़दार ठहरें।

त़ालिबे मग़्फ़िरत हूं या अल्लाह

बख़्श दे बहरे मुस्त़फ़ा या रब !

रोटी के टुकड़े की हिकायत : एक मरतबा सय्यिदुना अब्दुल्लाह बिन उमर رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْھُمَا ने ज़मीन पर रोटी का टुकड़ा पड़ा देखा तो गुलाम से फ़रमाया, "इसे साफ़ कर के रख दो।" जब गुलाम से शाम को इफ़्तार के वक़्त वोह टुकड़ा मांगा, उस ने अर्ज़ की, "वोह तो मैं ने खा लिया।" फ़रमाया, "जा तू आज़ाद है क्यूं कि मैं ने ताजदारे मदीना, राहते क़ल्बो सीना, फ़ैज़ गन्जीना, साहिबे मुअत्तर पसीना صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم से सुना है, **"जो रोटी का पड़ा हुवा टुकड़ा उठा कर खा लेता है तो उस के पेट में पहुंच ने से पहले ही अल्लाह عَزَّوَجَلَّ उस की मग़्फ़िरत फ़रमा देता है।"** अब जो मग़्फ़िरत का हक़दार हो गया मैं उस को गुलाम किस तरह बनाए रखूं ? (تنبیہ الغافلین ص ۳۴۸ حدیث ۵۱۴)

मदनी सोच : سُبْحٰنَ اللّٰہِ عَزَّوَجَلَّ ! हमारे बुज़ुर्गों की भी कैसी **मदनी सोच** हुवा करती थी कि गिरी हुई रोटी खा कर गुलाम मग़्फ़िरत का हक़दार हो गया तो आक़ा ने भी अपनी गुलामी से आज़ाद कर दिया। या रब्बे मुस्तफ़ा عَزَّوَجَلَّ ब तुफ़ैले मुस्तफ़ा صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم हमें भी मदनी सोच और सुन्नतों से हक़ीक़ी महब्बत अता फ़रमा और हमें भी तौफ़ीक़ दे कि जब ज़मीन पर रोटी का टुकड़ा पड़ा देखें, अदब से उठा कर चूम कर साफ़ कर के खा लेने की सआदत हासिल कर लिया करें। या इलाही عَزَّوَجَلَّ !

सुन्नतों पर अ़मल के मुआ़मले में हमारी झिझक उड़ जाए और हमारी मग़्फ़िरत फ़रमा। اٰمِين بِجاهِ النَّبِيِّ الْاَمين صَلَّى اللهُ تعالٰى عليه واٰلهٖ وسلَّم

सुन्नतों से मुझे मह़ब्बत दे
मेरे मुर्शिद का वासित़ा या रब !

दस्तर ख़्वान बढ़ाओ ! : बुज़ुर्गों का मा'मूल येह है कि खाने से फ़ारिग़ होने के बा'द येह नहीं कहते कि "दस्तर ख़्वान उठाओ" बल्कि कहते हैं, "दस्तर ख़्वान बढ़ाओ" या "खाना बढ़ाओ।" येह कहने में दस्तर ख़्वान बढ़ने और खाना बढ़ने और बरकत, फ़राख़ी और वुस्अ़त की ज़िम्नन दुआ़ होती है। (मुलख़्ख़स़न सुन्नी बिहिश्ती ज़ेवर, स. 566)

जब मैं ने रिसाला भयानक ऊंट पढ़ा....। : मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! दोनों[2] जहां की बरकतें पाने के लिये तब्लीग़े क़ुरआनो सुन्नत की आ़लमगीर ग़ैर सियासी तह़रीक **दा'वते इस्लामी** के मदनी माह़ोल से हर दम वाबस्ता रहिये। दा'वते इस्लामी की बरकतों के क्या कहने ! कलकत्ता (हिन्द) के एक इस्लामी भाई के बयान का ख़ुलासा अ़र्ज़ करता हूं, उन का कहना है, मैं सुन्नतों भरी ज़िन्दगी से बहुत दूर एक फ़ेश्नेबल नौ जवान था, एक रात घर की त़रफ़ आते हुए अस्नाए राह सब्ज़ सब्ज़ इमामों की बहारें नज़र आईं, क़रीब गया तो पता चला कि

बम्बई से दा'वते इस्लामी वाले आशिक़ाने रसूल का **मदनी क़ाफ़िला** आया हुवा है जिस के सबब यहां सुन्नतों भरा इज्तिमाअ़ हो रहा है। मेरे दिल में आया कि येह लोग त़वील सफ़र कर के हमारे शहर कलकत्ता आए हैं, इन को सुनना चाहिये लिहाज़ा मैं इज्तिमाअ़ में शरीक हो गया। इख़्तिताम पर इन ह़ज़रात ने मक्तबतुल मदीना के मत़्बूआ़ रिसाले बांटने शुरूअ़ किये, ख़ुश क़िस्मती से एक रिसाला मेरे हाथ में भी आ गया, उस पर लिखा था, **भयानक ऊंट**। मैं घर आ गया कल पढ़ूंगा येह ज़ेहन बना कर रिसाला रख दिया और सोने की तय्यारी करने लगा, सोने से क़ब्ल यूंही रिसाला भयानक ऊंट का जब वरक़ पलटा तो मेरी नज़र इस इबारत पर पड़ी, "**शैत़ान लाख सुस्ती दिलाए मगर येह रिसाला ज़रूर पढ़ लीजिये اِنْ شَآءَاللّٰه عَزَّوَجَلَّ आप के अन्दर मदनी इन्क़िलाब बरपा हो जाएगा।**" इस जुम्ले ने मेरी ज़बर दस्त रहनुमाई की मैं ने सोचा, वाक़ेई शैत़ान मुझे येह रिसाला कहां पढ़ने देगा, कल किस ने देखी है ! नेकी में देर नहीं करनी चाहिये, इस को अभी पढ़ लेना चाहिये, येह सोच कर मैं ने पढ़ना शुरूअ़ किया, उस पाक परवर्दगार عَزَّوَجَلَّ की क़सम जिस के दरबारे आ़ली में ह़ाज़िर हो कर बरोज़े क़ियामत ह़िसाब देना पड़ेगा ! **जब मैं ने रिसाला भयानक ऊंट पढ़ा** तो उस में कुफ़्फ़ारे ना बकार की

जानिब से सरकारे मदीना صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم पर तोड़े जाने वाले मज़ालिम का पुरसोज़ बयान पढ़ कर मैं अश्कबार हो गया, मेरी नींद उचट गई, काफ़ी देर तक मैं रोता रहा। रातों रात मैं ने अ़ज़्म किया कि सुब्ह़ हाथों हाथ मदनी क़ाफ़िले में सफ़र करूंगा। जब सुब्ह़ वालिदैन की ख़िदमत में अ़र्ज़ की तो उन्हों ने बखु़शी इजाज़त मर्ह़मत फ़रमा दी और मैं तीन[3] दिन के लिये **आ़शिक़ाने रसूल** के साथ मदनी क़ाफ़िले का मुसाफ़िर बन गया, क़ाफ़िले वालों ने मुझे बदल कर क्या से क्या बना दिया! اَلْحَمْدُ لِلّٰہ عَزَّوَجَلَّ मैं नमाज़ी बन कर पलटा, सब्ज़ इमामा शरीफ़ के ताज से सर सब्ज़ हो गया, तन मदनी लिबास से आरास्ता हो गया। मेरी मां ने जब मुझे तब्दील होता देखा तो बेह़द खु़श हुई और ख़ूब दुआ़ओं से नवाज़ा, अ़ज़ीज़ व रिश्तेदार सब मुझ से खु़श हो गए। اَلْحَمْدُ لِلّٰہ عَزَّوَجَلَّ आजकल **दा'वते इस्लामी** की एक तह़सील मुशावरत के ख़ादिम (निगरान) की ह़ैसिय्यत से ह़स्बे तौफ़ीक़ सुन्नतों की धूमें मचाने की सआ़दत पा रहा हूं।

आ़शिक़ाने रसूल लाए जन्नत के फूल — आओ लेने चलें क़ाफ़िले में चलो
भागते हैं कहां आ भी जाएं यहां — पाएंगे जन्नतें क़ाफ़िले में चलो

صَلُّوا عَلَی الْحَبِیْب ! صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلٰی مُحَمَّد

रिसाले तक़्सीम फ़रमाइये : प्यारे प्यारे इस्लामी भाइयो ! देखा आप ने ! दा'वते इस्लामी के **मदनी माह़ोल** ने एक बे नमाज़ी मॉडर्न नौ जवान को कहां से कहां पहुंचा दिया ! येह भी मा'लूम हुवा कि **मक्तबतुल मदीना** की जानिब से शाएअ़ होने वाले **सुन्नतों भरे रसाइल** बांटने के बहुत फ़वाइद हैं, उस मॉडर्न नौ जवान ने **भयानक ऊंट** नामी रिसाला पढ़ा तो तड़प कर हाथों हाथ **मदनी क़ाफ़िले** का मुसाफ़िर बना और सर सब्ज़ व हरा भरा हो गया । लिहाज़ा अपने अ़ज़ीज़ों के ईसाले सवाब के लिये, उ़र्सों और इज्तिमाआ़त, शादी ग़मी की तक़रीबात, जनाज़ा व बारात और जुलूसे मीलाद में सुन्नतों भरे रसाइल और रंग बिरंगे मदनी फूलों के जुदा जुदा पेम्फ़्लेट मक्तबतुल मदीना से हदिय्यतन ह़ासिल कर के ख़ूब ख़ूब तक़्सीम कीजिये, शादी कार्ड्ज़ में भी एक एक रिसाला निथी कर दीजिये । अगर आप का दिया हुवा रिसाला या पेम्फ़्लेट पढ़ कर किसी का दिल चोट खा गया और वोह नमाज़ी और सुन्नतों का आ़दी बन गया तो اِنْ شَآءَاللّٰہ عَزَّوَجَلَّ आप का भी दोनों[2] जहां में बेड़ा पार होगा ।

हर महीने जो कोई बारह रिसाले बांट दे

اِنْ شَآءَاللّٰہ दो जहां में उस का बेड़ा पार है

फ़रमाने मुस्त़फ़ा صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم : शबे जुमुआ़ और रोज़े जुमुआ़ मुझ पर कसरत से दुरूद पढ़ो क्यूं कि तुम्हारा दुरूद मुझ पर पेश किया जाता है। (طبرانی)

उंगलियां चाटना सुन्नत है : **ह़ज़रते** सय्यिदुना आ़मिर बिन रबीआ़ رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ से रिवायत है कि नबिय्ये पाक, साहि़बे लौलाक, सय्याहे़ अफ़्लाक صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم तीन[3] उंगलियों से खाना तनावुल फ़रमाते और जब फ़ारिग़ हो जाते तो उन्हें चाट लिया करते थे।

(مجمع الزوائد ج ٥ ص ٢٣ حديث ٧٩٢٣)

न मा'लूम खाने के किस हि़स्से में बरकत है : **ह़ज़रते** सय्यिदुना जाबिर رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ फ़रमाते हैं, "ताजदारे मदीना, क़रारे क़ल्बो सीना, फ़ैज़ गन्जीना, साहि़बे मुअ़त्त़र पसीना, बाइसे नुज़ूले सकीना, सुल्त़ाने बा क़रीना صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने उंगलियों और बरतन के चाटने का हुक्म दिया और फ़रमाया, "तुम्हें मा'लूम नहीं कि खाने के किस हि़स्से में बरकत है।"

(صحيح مسلم ص ١١٢٢ الحديث ٢٠٢٣)

खाने की बरकतें ह़ासिल करने का त़रीक़ा : **प्यारे प्यारे इस्लामी भाइयो !** अफ़्सोस सद करोड़ अफ़्सोस ! आजकल मुसल्मानों के खाने का अन्दाज़ देख कर ऐसा लगता है कि बहुत कम ही ख़ुश नसीब ऐसे होंगे जो सुन्नत के मुत़ाबिक़ खाना खाते और इस की बरकतें पाते हों। बयान कर्दा ह़दीसे मुबारक में फ़रमाया गया, "तुम्हें मा'लूम नहीं कि खाने के किस हि़स्से में बरकत है।" लिहाज़ा हमें कोशिश करनी चाहिये किखाने

का एक ज़र्रा भी ज़ाएअ़ न हो, हड्डी वग़ैरा को इस क़दर चूस चाट लेना चाहिये कि उस पर बोटी का कोई जुज़ और किसी क़िस्म के गि़ज़ाई असरात बाक़ी न रहें, ज़रूरतन रिकाबी में हड्डी को झाड़ लीजिये ता कि कोई दाना वग़ैरा अटका हो तो बाहर आ जाए और खाया जा सके, अगर हो सके तो खाने में पके हुए गर्म मसालहे़ मसलन इलायची, काली मिर्च, लोंग, दारचीनी, वग़ैरा भी खा लीजिये اِنْ شَآءَاللّٰه عَزَّوَجَلَّ फ़ाएदा ही होगा। अगर न खा सकें तब भी कोई गुनाह नहीं। बिरयानी वग़ैरा से साबित हरी मिर्चें निकाल कर फेंक देने के बजाए मुम्किन हो तो खाना शुरूअ़ करने से पहले ही उन्हें चुन कर मह़फ़ूज़ कर लीजिये और आयिन्दा किसी खाने में पीस कर डाल दीजिये। अक्सर लोग मछली की खाल भी फेंक देते हैं इस को भी खा लेना चाहिये। अल ग़रज़ खाने के तमाम अज्ज़ा पर ग़ौर कर लिया जाए और उस की हर बे ज़रर चीज़ खा ली जाए। नीज़ उंग्लियां और बरतन इस क़दर चाटें कि उन में खाने के अज्ज़ा बाक़ी न रहें।

उंग्लियां चाटने की तरतीब : ह़ज़रते सय्यिदुना कअ़ब बिन उ़ज्रह رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْهُ फ़रमाते हैं कि मैं ने सरवरे काएनात, शाहे मौजूदात صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰی عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم को अंगूठा, शहादत वाली और दरमियानी उंगली मिला कर तीन उंग्लियों से खाते देखा। फिर मैं ने देखा कि सरकारे

फ़रमाने मुस्तफ़ा صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم: उस शख़्स की नाक ख़ाक आलूद हो जिस के पास मेरा ज़िक्र हो और वोह मुझ पर दुरूदे पाक न पढ़े। (ترمذی)

मदीना صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने उन्हें पोंछने से पहले चाट लिया सब से पहले दरमियानी फिर शहादत वाली और फिर अंगूठा शरीफ़ चाटा।

(مجمع الزوائد ج٥ص٢٩حديث ٧٩٤١)

उंग्लियां तीन[3] मरतबा चाटना सुन्नत है : प्यारे प्यारे इस्लामी भाइयो ! उंग्लियां तीन[3] तीन[3] बार चाटना सुन्नत है अगर तीन[3] बार के बा वुजूद उंग्लियों पर गिज़ा चिपकी हुई नज़र आए तो ज़ियादा बार चाट लीजिये यहां तक कि गिज़ा का असर नज़र न आए। शमाइले तिरमिज़ी में है, "सुल्ताने दो[2] जहां, शहन्शाहे कौनो मकान صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم (खाने के बा'द) अपनी उंग्लियां तीन[3] तीन[3] मरतबा चाटते थे।" (شمائلِ ترمذی ص ٦١ حديث ١٣٨)

बरतन चाटना सुन्नत है : सरदारे मक्कए मुकर्रमा, सुल्ताने मदीनए मुनव्वरह صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم का फ़रमाने बरकत निशान है, "जो रिकाबी और अपनी उंगलियों को चाट लेता है **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ उस को दुन्या व आख़िरत में आसूदा (सेर) रखता है।"

(طبرانی كبير ج١٨ص٢٦١حديث ٦٥٣)

आख़िर में बरकत ज़ियादा होती है : सरकारे नामदार, मदीने के ताजदार صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया, "खाने के बरतन को न उठाया

जाए यहां तक कि खाने वाला उस को चाट ले या किसी और को चटवा दे कि, "खाने के आख़िर में बरकत (ज़ियादा) होती है।" (کنزالعمال ج١٥ ص١١١)

बरतन दुआ़ए मग़्फ़िरत करता है : ह़ज़रते नुबैशा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ फ़रमाते हैं कि बि इज़्ने परवर्दगार दो[2] आ़लम के मालिको मुख़्तार, मक्की मदनी सरकार, मह़बूबे ग़फ़्फ़ार صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने इर्शाद फ़रमाया, "जो खाने के बा'द बरतन को चाट लेगा वोह बरतन उस के लिये इस्तिग़फ़ार करेगा।" (ابن ماجہ ج٤ ص١٤ حديث ٣٢٧١) एक रिवायत में येह भी है कि वोह बरतन कहता है, "ऐ **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ ! इस को जहन्नम से आज़ाद कर जिस त़रह़ इस ने मुझे शैत़ान से नजात दी।"

(کنز العمال ج ١٥ ص ١١١ حديث ٤٠٨٢٢)

मुफ़स्सिरे शहीर ह़कीमुल उम्मत ह़ज़रते मुफ़्ती अह़मद यार ख़ान عَلَیْہِ رَحْمَۃُ الْحَنَّان फ़रमाते हैं, "सना हुवा (या'नी आलूदा) बरतन बिग़ैर साफ़ किये पड़ा रहे तो उस से शैत़ान चाटता है।" (मिरआत, जि. 6, स. 52)

बरतन चाटने की ह़िक्मतें : मुफ़स्सिरे शहीर ह़कीमुल उम्मत ह़ज़रते मुफ़्ती अह़मद यार ख़ान عَلَیْہِ رَحْمَۃُ الْحَنَّان फ़रमाते हैं, "बरतन चाटने में खाने का अदब है, इस को बरबादी से बचाना है, बरतन यूं ही छोड़ देने से इस पर मक्खियां **भिनभिनाती** हैं, बरतन में लगे हुए खाने के अज्ज़ा

مَعَاذَ اللّٰه عَزَّوَجَلَّ नालियों, गन्दगियों में फेंक दिये जाते हैं, जिस से उस की सख़्त बे अदबी होती है। अगर एक वक़्त में हर फ़र्द चन्द दाने भी बरतन में छोड़ कर ज़ाएअ़ कर दे तो रोज़ाना कई मन खाना बरबाद होगा। ग़रज़ येह कि बरतन चाटने में कई हिक्मतें हैं।"

(मुलख़्ख़स अज़ मिरआत, जि. 6, स. 38)

ईमान अफ़्रोज़ इर्शाद ! : सरकारे मदीना صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया, "पियाला चाट लेना मुझे इस से ज़ियादा महबूब है कि पियाला भर खाना तसद्दुक़ करूं।" (या'नी चाटने में चूंकि इन्किसारी है लिहाज़ा इस का सवाब उस सदक़े के सवाब से ज़ियादा है)

(كنز العُمّال ج ١٥ ص ١١١ حديث ٤٠٨٢١)

सुन्नत की बरकतें : मीठे मीठे मदनी आक़ा صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया, "जो रिकाबी और अपनी उंग्लियां चाटे **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ दुन्या व आख़िरत में उस का पेट भरे।" (या'नी दुन्या में फ़क्रो फ़ाक़ा से बचे, क़ियामत की भूक से महफ़ूज़ रहे, दोज़ख़ से पनाह दिया जाए कि दोज़ख़ में किसी का पेट न भरेगा) (طبرانی کبیر ج ١٨ ص ٢٦١ حديث ٦٥٣)

صَلُّوْا عَلَى الْحَبِيْب ! صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلٰى مُحَمَّد

एक ग़ुलाम आज़ाद करने का सवाब : ह़ुज्जतुल इस्लाम ह़ज़रते सय्यिदुना इमाम मुह़म्मद ग़ज़ाली عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللّٰهِ الْوَالِي फ़रमाते हैं, "जो खाने का बरतन चाटे और धो कर उस का पानी पी ले उस को एक ग़ुलाम आज़ाद करने का सवाब मिलता है।" (احياءُ عُلوم الدين ج٢ ص٧)

धो कर पीने का त़रीक़ा : प्यारे प्यारे इस्लामी भाइयो ! सिर्फ़ खाने की रिकाबी ही को चाटना काफ़ी नहीं, जब भी किसी पियाले या गिलास वग़ैरा में चाय, दूध, लस्सी, फलों का रस (JUICE) वग़ैरा इस्ति'माल फ़रमाएं उन को भी चाटिये और धो कर पी लीजिये। इसी त़रह़ सालन या किसी और ग़िज़ा का इज्तिमाई कटोरा, कड़ाही या पतीला ख़ाली हो चुका है या उस में मा'मूली सी ग़िज़ा बाक़ी रह गई है तो उस को और निकालने के चम्मच को भी मुम्किन हो तो साफ़ कर लीजिये उ़मूमन देगों, पतीलों और बड़े बरतनों के अन्दर कुछ न कुछ ग़िज़ा बाक़ी रह जाती है जो ज़ाएअ़ कर दी जाती है, ऐसा नहीं होना चाहिये जितना मुम्किन हो उस से ग़िज़ाई अज्ज़ा निकाल लीजिये एक दाना भी ज़ाएअ़ न होने दीजिये। येह भी हो सकता है कि उस को धो कर पानी जम्अ़ कर के फ़्रिज में रख लिया जाए और पकाने में इस्ति'माल कर लिया जाए, मगर

फ़रमाने मुस्त़फ़ा صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم : जिस के पास मेरा ज़िक्र हुवा और उस ने मुझ पर दुरूद शरीफ़ न पढ़ा उस ने जफ़ा की। (عبدالرزاق)

येह सब तौफ़ीक़े इलाही عَزَّوَجَلَّ से ही मुम्किन है। येह भी याद रहे कि बरतन या गिलास वग़ैरा को चाटने या धोने में येह एह़तियात़ ज़रूरी है कि उस से खाने के अज्ज़ा ख़त्म हो जाएं। अगर बरतन में खाने के अज्ज़ा लगे रहे तो येह धोना नहीं कहलाएगा। तजरिबा येह है कि एक बार धो कर पीने से उ़मूमन बरतन साफ़ नहीं होता लिहाज़ा दो या तीन बार पानी डाल कर अच्छी त़रह़ ऊपरी कनारों समेत हर त़रफ़ उंगली फिरा कर धो कर पियें तो बेहतर है।

धो कर पीने के बा'द बचे हुए क़त़रे : धो कर पीने के बा'द भी रिकाबी या पियाले वग़ैरा में चन्द क़त़रे बच जाते हैं लिहाज़ा उंगली से जम्अ़ कर के पी लीजिये, पानी या मश्रूब पी कर गिलास या बोतल ब ज़ाहिर ख़ाली हो जाने के बा वुजूद चन्द लम्ह़ों के बा'द देखेंगे तो उस की दीवारों से उतर कर पेंदे में चन्द क़त़रे जम्अ़ हो चुके होंगे, उन को भी पी लीजिये कि ह़दीसे पाक में है, "तुम नहीं जानते कि खाने के किस ह़िस्से में बरकत है" काश ! इस त़रह़ धो कर पीना नसीब हो कि खाने का वोह बरतन, लस्सी का गिलास या चाय का पियाला वग़ैरा ऐसा हो जाए कि शनाख़्त न हो सके कि इस में अभी कुछ खाया या शरबत वग़ैरा पिया गया है !

बरतन धो कर पीने के त़िब्बी फ़वाइद : اَلْحَمْدُ لِلّٰہ عَزَّوَجَلَّ कोई सुन्नत ख़ाली अज़ हिक्मत नहीं। जदीद साइन्स भी अब ए'तिराफ़ करती है कि ह़यातियात या'नी विटामिन्ज़ ख़ुसूसन "विटामिन बी कोम्पलेक्स" खाने के ऊपरी हि़स्से में कम और बरतन के पेंदे में ज़ियादा होते हैं नीज़ ग़िज़ा में मौजूद मा'दनी नमकियात सिर्फ़ पेंदे ही में होते हैं जो कि बरतन को चाटने या धो कर पी लेने से कई अमराज़ के इन्सिदाद या'नी रोकथाम का बाइ़स बनते हैं।

गुर्दे की पथरी कैसे निकली ? : दा'वते इस्लामी के मदनी क़ाफ़िलों में सफ़र की बरकत से कई मसाइल ह़ल हो जाते हैं और मुतअ़द्दद अमराज़ का इलाज हो जाता है चुनान्चे एक इस्लामी भाई का कुछ इस त़रह़ बयान है कि हमारा 12 दिन का **मदनी क़ाफ़िला** वापसी पर किसी स्टेशन पर उतरा, क़ाफ़िले वाले **इन्फ़िरादी कोशिश** में मश्ग़ूल हुए, इस दौरान वहां एक इस्लामी भाई से मुलाक़ात हुई, वोह मदनी क़ाफ़िलों की बरकतें लूटने का अपना ज़ाती तजरिबा बयान करते हुए फ़रमाने लगे, मैं **गुर्दे की पथरी** के सबब सख़्त अज़िय्यत में था, डॉक्टर ने ऑपरेशन का कहा था, दरीं अस्ना एक इस्लामी भाई ने मुझ पर **इन्फ़िरादी कोशिश** करते हुए दिलासा दिया

कि घबराइये नहीं मदनी क़ाफ़िले में सफ़र कर लीजिये, सफ़र में दुआ़ क़बूल होती है। **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ आप का मस्अला ह़ल फ़रमा देगा। उन के मह़ब्बत भरे अन्दाज़ ने दिल जीत लिया और मैं **तीन 3 दिन के मदनी क़ाफ़िले** का मुसाफ़िर बन गया। اَلْحَمْدُ لِلّٰه عَزَّوَجَلَّ तीन[3] रोज़ के अन्दर अन्दर मेरी पथरी निकल गई। मैं ने जब डॉक्टर को बताया तो वोह ह़ैरान रह गया क्यूं कि शायद मेरी पथरी इस क़िस्म की थी कि बिग़ैर ऑपरेशन के इस का डॉक्टरों के पास इलाज नहीं था।

गर्चे बीमारियां तंग करे पथरियां पाओगे सिह़ह़तें क़ाफ़िले में चलो
घर में ना चाक़ियां हों या तंगदस्तियां पाएंगे बरकतें क़ाफ़िले में चलो

صَلُّوْا عَلَى الْحَبِيْب ! صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلٰى مُحَمَّد

गर्म खाना मन्अ़ है : **ह़ज़रते** सय्यिदुना जाबिर رَضِیَ اللهُ تَعَالٰی عَنْهُ फ़रमाते हैं, "नबिय्ये करीम, रसूले अ़ज़ीम, रऊफ़ुर्रह़ीम عَلَيْهِ اَفْضَلُ الصَّلٰوةِ وَالتَّسْلِيْم ने इर्शाद फ़रमाया, "गर्म खाना ठन्डा कर लिया करो क्यूं कि गर्म खाने में बरकत नहीं होती।" (مستدرَک للحاكم ج٤ ص١٣٢ حديث ٧١٢٥)

खाना कितना ठन्डा किया जाए ! : **ह़ज़रते** सय्यिदतुना जुवैरिया رَضِیَ اللهُ تَعَالٰی عَنْهَا से रिवायत है कि नबिय्ये अकरम, नूरे मुजस्सम, सरवरे दो[2] आ़लम, रसूले मोह़्तशम صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم खाने की भाप ख़त्म

होने से पहले उसे खाने को ना पसन्द फ़रमाते।

(مجمع الزوائد ج٥ص١٣ حديث٧٨٨٣)

गर्म खाने के नुक़्सानात : प्यारे प्यारे इस्लामी भाइयो ! खाना ठन्डा कर के खाना चाहिये मगर येह ज़रूरी नहीं कि इतना ठन्डा कर दें कि जम कर बद मज़ा हो जाए बल्कि कुछ ठन्डा हो लेने दें कि भाप उठना बन्द हो जाए। **मुफ़स्सिरे** शहीर **ह़कीमुल उम्मत** ह़ज़रते मुफ़्ती अह़मद यार ख़ान عَلَيْهِ رَحْمَةُ الْمَنَّان फ़रमाते हैं, "खाने का क़दरे (या'नी कुछ) ठन्डा हो जाना और फूंकों से ठन्डा न करना बाइसे बरकत है और इस त़रह़ खाने में तक्लीफ़ भी नहीं होती।" (मिरआत, जि. 6, स. 52) तेज़ गर्म खाने या ख़ूब गर्मा गर्म चाय या कॉफ़ी वग़ैरा पीने से मुंह और गले के छाले, मे'दे में वरम वग़ैरा हो जाने का ख़त़रा है। नीज़ उस पर फ़ौरन ठन्डा पानी पीना मसूढ़ों और मे'दे को नुक़्सान पहुंचाता है।

खाने में मख्खी : खाने या पीने की किसी चीज़ में मख्खी गिर जाए तो उस ग़िज़ा को फेंक देना इसराफ़ व गुनाह है मख्खी को ग़ोत़ा दे कर निकाल दीजिये और वोह ग़िज़ा बिला तकल्लुफ़ इस्ति'माल कीजिये। चुनान्चे त़बीबों के त़बीब, **अल्लाह** के ह़बीब, ह़बीबे लबीब صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم फ़रमाते हैं, "जब खाने में मख्खी गिर जाए तो इसे ग़ोत़ा दे

फ़रमाने मुस्त़फ़ा صَلَّى اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم : जिस के पास मेरा ज़िक्र हो और वोह मुझ पर दुरूद शरीफ़ न पढ़े तो वोह लोगों में से कन्जूस तरीन शख़्स है। (مسند احمد)

दो (और फेंक दो) क्यूं कि इस के एक बाज़ू में शिफ़ा है और दूसरे में बीमारी, खाने में गिरते वक़्त पहले बीमारी वाला बाज़ू डालती है लिहाज़ा पूरी ही को ग़ोत़ा दे दो।" (ابوداوٗد شریف ج۳ص۵۱۱ حدیث ۳۸٤٤)

साइन्स का ए'तिराफ़ : प्यारे प्यारे इस्लामी भाइयो ! निगाहे मुस्त़फ़ा صَلَّى اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم पर क़ुरबान ! हमारे मीठे मीठे आक़ा صَلَّى اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने जो कुछ मुलाह़ज़ा फ़रमा लिया था अब साइन्स भी इस को तस्लीम करने पर मजबूर हो गई है। चुनान्चे साइन्स दान ए'तिराफ़ करते हैं कि मख्खी के एक पर में ख़त़रनाक वायरस (VIRUS) और दूसरे में दाफ़ेए़ वायरस (ANTI VIRUS) जरासीम होते हैं। मख्खी जब कभी किसी खाने या मश्रूब या'नी चाय, दूध या पानी वग़ैरा पर गिरती है तो वायरस वाला पर पहले डालती है जिस से ग़िज़ा में वायरस फैल जाते हैं और खाने वाला बीमारी का शिकार हो सकता है अब अगर मख्खी को ग़ोत़ा दे दें तो दूसरे पर के दाफ़ेए़ वायरस जरासीम इन ख़त़रनाक जरासीम को हलाक कर देते हैं और ग़िज़ा बे ज़रर हो जाती है।

गोश्त नोच कर खाओ : उम्मुल मुअमिनीन ह़ज़रते सय्यिदतुना आ़इशा सिद्दीक़ा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہَا रिवायत फ़रमाती हैं कि नबिय्ये रह़मत, शफ़ीए़ उम्मत, शहन्शाहे नुबुव्वत, ताजदारे रिसालत صَلَّى اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم का

फ़रमाने आ़लीशान है, "गोश्त को (खाते वक़्त) छुरी से मत काटो क्यूं कि येह अ़जमिय्यों का त़रीक़ा है और गोश्त दांतों से नोच कर खाओ क्यूं कि येह ज़ियादा लज़ीज़ और ख़ुश गवार है।" (ابوداؤد شریف ج۳ص ۵۱۱ حدیث ۳۸۴۴) अगर गोश्त का बड़ा टुकड़ा मसलन भूनी हुई रान वग़ैरा हो तो ह़स्बे ज़रूरत छुरी से काटने में मुज़ायक़ा नहीं।

मुर्ग़ी की टांग की काली डोरियां निकाल दीजिये :

सरकारे आ'ला ह़ज़रत رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہُ की तह़क़ीक़ के मुत़ाबिक़ ज़बीहे में 22 चीज़ें ऐसी हैं जिन का खाना ह़राम है उन्हीं में से **ह़राम मग़्ज़** है जो कि सफ़ेद डोरी की त़रह़ का होता है और वोह भेजे से शुरूअ़ हो कर गरदन से गुज़रता हुवा पूरी रीढ़ की हड्डी में आख़िर तक होता है नीज़ गरदन की दोनों त़रफ़ पीले रंग के दो मज़बूत़ **पट्ठे** कन्धे तक खिचे होते हैं येह काफ़ी सख़्त होते हैं आसानी से गलते नहीं इन का और **गुदूद** का खाना भी ह़राम है। ज़बीह़े के गोश्त के अन्दर जो **ख़ून** रह गया वोह अगर्चे पाक है मगर उस ख़ून का खाना ह़राम है। लिहाज़ा गोश्त के वोह ह़िस्से जिन में उ़मूमन ख़ून रह जाता है उन को अच्छी त़रह़ देख लीजिये। मसलन मुर्ग़ी के पके हुए गोश्त में से गरदन, पर और टांग वग़ैरा के अन्दर से **काली डोरियां** निकाल

लिया करें कि येह ख़ून की नसें होती हैं, ख़ून पकने के बा'द काला हो जाता है। मुर्ग़ी की गरदन के पठ्ठे और हराम मग़्ज़ भी न खाएं।

12 साल का गुमशुदा भाई मिल गया : प्यारे प्यारे इस्लामी भाइयो ! सुन्नतों की तरबियत के लिये **दा'वते इस्लामी** के मदनी क़ाफ़िलों में **आशिक़ाने रसूल** के साथ सफ़र फ़रमाते रहिये, इल्मे दीन हासिल होने के साथ साथ اِنْ شَآءَاللّٰہ عَزَّوَجَلَّ दुन्या के मसाइल भी हल होते रहेंगे जैसा कि दा'वते इस्लामी का एक **मदनी क़ाफ़िला** सुन्नतों भरे सफ़र पर था, उस में एक इस्लामी भाई ने बताया कि मेरे बड़े भाईजान रोज़गार के सिल्सिले में बैरूने मुल्क गए हुए थे, आज 12 बरस हो गए उन का कोई अता पता नहीं। उन के तीन[3] बच्चों और उन बच्चों की वालिदा के अख़राजात हमारे ज़िम्मे हैं और तंगदस्ती का आलम है, मैं **आशिक़ाने रसूल** के साथ सफ़र में दुआ की निय्यत से मदनी क़ाफ़िले का मुसाफ़िर बना हूं। **मदनी क़ाफ़िले** के इख़्तिताम के तक़रीबन एक हफ़्ते के बा'द एक **मदनी मश्वरे** में वोह इस्लामी भाई शरीक हुए उन के जज़्बात क़ाबिले दीद थे, रो रो कर फ़रमा रहे थे, اَلْحَمْدُ لِلّٰہ عَزَّوَجَلَّ **मदनी क़ाफ़िले में सफ़र की बरकत से करम हो गया, 12 साल से मफ़्क़ूदुल ख़बर (गुमशुदा) भाईजान का फ़ोन आ गया और उन्हों ने हमें एक लाख 25 हज़ार रुपै भी रवाना किये हैं।**

जो कि मफ़्क़ूद हो वोह भी मौजूद हो इन्शाअल्लाह اِنْ شَآءَاللّٰه *चलें क़ाफ़िले में चलो*

दूर हों सारे ग़म होगा रब का करम ग़म के मारे सुनें क़ाफ़िले में चलो

صَلُّوا عَلَی الْحَبِيب! صَلَّى اللهُ تَعَالٰی عَلٰی مُحَمَّد

दुआ़ क़बूल न होने में भी ह़िक्मतें......: اَلْحَمْدُ لِلّٰه عَزَّوَجَلَّ इस त़रह़ के कई वाक़िआ़त हैं जिन में क़ाफ़िलों में सफ़र कर के दुआ़ करने वालों की मुरादें पूरी हुई हैं, बहुत से ऐसे भी मिलेंगे जिन की मुरादें पूरी नहीं हुईं। अगर कभी आप की दुआ़ की क़बूलिय्यत के आसार नज़र न भी आएं तब भी **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ की रिज़ा पर राज़ी रहिये। कि बारहा ऐसा भी होता है कि हम जो कुछ मांग रहे हैं उस के न मिलने ही में हमारे लिये बेहतरी होती है जैसा कि मेरे आक़ा आ'ला ह़ज़रत के वालिदे गिरामी रईसुल मुतकल्लिमीन ह़ज़रते अ़ल्लामा मौलाना नक़ी अ़ली ख़ान عَلَيْهِ رَحْمَةُ الْمَنَّان **"अह़सनुल विआ़अ"** में फ़रमाते हैं, ह़िक्मते इलाही عَزَّوَجَلَّ है कि कभी तू बराहे नादानी कोई चीज़ उस से त़लब करता है और वोह बराहे मेहरबानी तेरी दुआ़ को इस सबब से कि तेरे ह़क़ में मुज़िर (नुक़्सान देह) है, रद फ़रमाता है। मसलन तू जूयाए सीमो ज़र (या'नी दौलत का त़लब गार) है और इस (के मिल जाने) में तेरे ईमान का ख़त़रा है या तू ख़्वाहाने तन्दुरुस्ती व आ़फ़िय्यत (या'नी सिह़्ह़त त़लब करता) है और वोह इल्मे ख़ुदा عَزَّوَجَلَّ में

(तेरे लिये) मूजिबे नुक़्साने आक़िबत (या'नी आख़िरत के नुक़्सान का सबब) है। ऐसा रद क़बूल से बेहतर (या'नी ऐसी दुआ क़बूल न होना ही तेरे लिये मुफ़ीद है, तू इस आयते मुबारका,) عَسٰۤى اَنْ تُحِبُّوْا شَيْـًٔا وَّهُوَ شَرٌّ لَّكُمْؕ **तरजमए कन्ज़ुल ईमान :** क़रीब है कि कोई बात तुम्हें पसन्द आए और वोह तुम्हारे हक़ में बुरी हो। (پ۲ البقرة ۲۱٦) पर नज़र कर और इस रद (या'नी दुआ क़बूल न होने) का शुक्र बजा ला। कभी दुआ के बदले सवाबे आख़िरत देना मन्ज़ूर होता है। तू हुतामे दुन्या (या'नी दुन्या की ज़लील दौलत) तलब करता है और परवर्दगार عَزَّوَجَلَّ नफ़ाइसे आख़िरत (या'नी आख़िरत की उम्दा ने'मतें) तेरे लिये ज़ख़ीरा फ़रमाता है। येह जाए शुक्र है न कि मक़ामे शिकायत।

ख़िलाल : खाना खाने के बा'द किसी लकड़ी या तिन्के से ख़िलाल करना सुन्नत है। बा'ज़ इस्लामी भाई ख़िलाल के लिये माचिस की तीली का बारूद उखेड़ कर फेंक देते हैं ऐसा नहीं करना चाहिये कि इस तरह बारूद ज़ाएअ़ होता है किसी और तिन्के से ख़िलाल कर लिया जाए, ख़िलाल की अहम्मिय्यत से अहादीसे करीमा मालामाल हैं। चुनान्चे

हज़रते सय्यिदुना अबू हुरैरा رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْهُ फ़रमाते हैं, सरकारे मदीना صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने इर्शाद फ़रमाया, “जो शख़्स खाना खाए (और दांतों में कुछ रह जाए) उसे अगर ख़िलाल से निकाले तो थूक दे और ज़बान से

फ़रमाने मुस्तफ़ा صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم : मुझ पर कसरत से दुरूदे पाक पढ़ो बेशक तुम्हारा मुझ पर दुरूदे पाक पढ़ना तुम्हारे गुनाहों के लिये मग्फ़िरत है। (ابن عساکر)

निकाले तो निगल जाए। जिस ने ऐसा किया अच्छा किया और न किया तो भी हरज नहीं।" (ابوداوٗد شریف ج۳ص٤٦ حدیث ٣٥)

किरामन कातिबीन और ख़िलाल न करने वाले : हज़रते सय्यिदुना अबू अय्यूब अन्सारी رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْهُ फ़रमाते हैं कि हुज़ूर सय्यिदे दो[2] आलम, नूरे मुजस्सम, शाहे बनी आदम صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم हमारे पास तशरीफ़ लाए और फ़रमाया, "ख़िलाल करने वाले कितने उम्दा हैं।" सहाबए किराम عَلَيْهِمُ الرِّضْوَان ने अर्ज़ की, "**या रसूलल्लाह** صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ! किस चीज़ से ख़िलाल करने वाले ?" फ़रमाया, "**वुज़ू** में ख़िलाल करने वाले और **खाने** के बा'द ख़िलाल करने वाले। वुज़ू का ख़िलाल कुल्ली करना, नाक में पानी चढ़ाना और उंगलियों के दरमियान (ख़िलाल करना) है जब कि खाने का ख़िलाल खाने के बा'द है और **किरामन कातिबीन** (या'नी आ'माल लिखने वाले दोनों[2] बुज़ुर्ग फ़िरिश्तों) पर इस से ज़ियादा कोई बात शदीद नहीं कि वोह जिस शख़्स पर मुक़र्रर हैं उसे इस हाल में नमाज़ पढ़ता देखें कि उस के दांतों के दरमियान कोई चीज़ हो।" (طبرانی کبیر ج٤ص١٧٧حدیث٤٠٦١)

पान खाने वाले मुतवज्जेह हों : मेरे आक़ा आ'ला हज़रत, इमामे अहले सुन्नत, वलिय्ये ने'मत, अ़ज़ीमुल बरकत, अ़ज़ीमुल मर्तबत, परवानए शम्ए रिसालत, मुजद्दिदे दीनो मिल्लत, हामिये सुन्नत, माहिये

बिद्अ़त, आ़लिमे शरीअ़त, पीरे त़रीक़त, बाइसे ख़ैरो बरकत, ह़ज़रते अ़ल्लामा मौलाना अलह़ाज अल ह़ाफ़िज़ अल क़ारी अश्शाह इमाम अह़मद रज़ा ख़ान عَلَيْهِ رَحْمَةُ الرَّحْمٰن फ़रमाते हैं, पानों के कसरत से आ़दी खु़सूसन जब कि दांतों में फ़ज़ा (गेप) हो तजरिबे से जानते हैं छालिया के बारीक रेज़े और पान के बहुत छोटे छोटे टुकड़े इस त़रह़ मुंह के अत़राफ़ व अक्नाफ़ में जा गीर होते हैं (या'नी मुंह के कोनों और दांतों के खांचों में घुस जाते हैं) कि तीन[3] बल्कि कभी दस[10] बारह[12] कुल्लियां भी उन के तस्फ़ियए ताम (या'नी मुकम्मल सफ़ाई) को काफ़ी नहीं होतीं, न ख़िलाल उन्हें निकाल सकता है न मिस्वाक, सिवा कुल्लियों के कि पानी मनाफ़िज़ (या'नी सूराख़ों) में दाख़िल होता और जुम्बिशें देने (या'नी हिलाने) से जमे हुए बारीक ज़र्रों को ब तदरीज छुड़ा छुड़ा कर लाता है, इस की भी कोई तह़दीद (ह़द बन्दी) नहीं हो सकती और येह कामिल तस्फ़िया (या'नी मुकम्मल सफ़ाई) भी बहुत मुअक्किद (या'नी इस की सख़्त ताकीद) है मुतअ़द्दद अह़ादीस में इर्शाद हुवा है कि जब बन्दा नमाज़ को खड़ा होता है फ़िरिश्ता उस के मुंह पर अपना मुंह रखता है येह जो पढ़ता है इस के मुंह से निकल कर फ़िरिश्ते के मुंह में जाता है उस वक़्त अगर खाने की कोई शै उस के दांतों में होती है मलाएका को उस से ऐसी सख़्त ईज़ा होती है कि और शै से नहीं होती।

हुज़ूरे अकरम, नूरे मुजस्सम, शाहे बनी आदम, रसूले मोहूतशम صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰی عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया, जब तुम में से कोई रात को नमाज़ के लिये खड़ा हो तो चाहिये कि मिस्वाक कर ले क्यूं कि जब वोह अपनी नमाज़ में क़िराअत करता है तो फ़िरिश्ता अपना मुंह इस के मुंह पर रख लेता है और जो चीज़ उस के मुंह से निकलती है वोह फ़िरिश्ते के मुंह में दाख़िल हो जाती है । (كنزُ العُمّال ج ٩ ص ٣١٩) और **तृबरानी** ने **कबीर** में हज़रते सय्यिदुना अबू अय्यूब अन्सारी رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْهُ से रिवायत की है कि दोनों[2] फ़िरिश्तों पर इस से ज़ियादा कोई चीज़ गिरां नहीं कि वोह अपने साथी को नमाज़ पढ़ता देखें और उस के दांतों में खाने के रेज़े फंसे हों ।

(مُعجم الكبير ج ٤ ص ١٧٧, फ़तावा रज़विय्या, जि. अव्वल, स. 624 ता 625 रज़ा फ़ाउन्डेशन)

दांतों में कमज़ोरी : हज़रते सय्यिदुना इब्ने उमर رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْهُمَا फ़रमाते हैं, "जो खाना (बोटी के रेशे वग़ैरा) दाढ़ों में रह जाता है वोह दाढ़ों को कमज़ोर कर देता है ।" (مجمع الزوائد ج ٥ ص ٣٢ حديث ٧٩٥٢)

ख़िलाल कैसा हो ? : प्यारे प्यारे इस्लामी भाइयो ! जब भी खाना या कोई ग़िज़ा खाएं **ख़िलाल** की आदत बनानी चाहिये । बेहतर येह है कि **ख़िलाल** नीम की लकड़ी का हो कि उस की तल्ख़ी से मुंह की सफ़ाई होती है और येह मसूढ़ों के लिये मुफ़ीद होती है । बाज़ारी TOOTH PICKS

फ़रमाने मुस्त़फ़ा صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم : बरोज़े क़ियामत लोगों में से मेरे क़रीब तर वोह होगा जिस ने दुन्या में मुझ पर ज़ियादा दुरूदे पाक पढ़े होंगे। (ترمذی)

उ़मूमन मोटी और कमज़ोर होती हैं। नारियल की तीलियों की ग़ैर मुस्ता'मल झाड़ू की एक तीली या खजूर की चटाई की एक पट्टी से ब्लेड के ज़रीए़ कई मज़बूत़ **ख़िलाल** तय्यार हो सकते हैं। बा'ज़ अवक़ात मुंह के कोने के दांतों में ख़ला होता है और उस में बोटी वग़ैरा का रेशा फंस जाता है जो कि तिन्के वग़ैरा से नहीं निकल पाता। इस त़रह़ के रेशे निकालने के लिये मेडीकल स्टोर पर मख़्सूस त़रह़ के धागे (Flossers) मिलते हैं नीज़ ऑपरेशन के आलात की दुकान पर दांतों की स्टील की कुरेदनी (curved sickle scaler) भी मिलती है मगर इन चीज़ों के इस्ति'माल का त़रीक़ा सीखना बहुत ज़रूरी है वरना मसूढ़े ज़ख़्मी हो सकते हैं।

ख़िलाल की सात निय्यात : **ह़दीसे** पाक में है, **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ के प्यारे मह़बूब صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم का फ़रमाने अ़ज़ीमुश्शान है, "**मुसल्मान की निय्यत उस के अ़मल से बेहतर है।**" (طبرانی معجم کبیر ج٦ص١٨٥ حدیث ٥٩٤٢)

ख़िलाल शुरूअ़ करने से क़ब्ल बल्कि खाना शुरूअ़ करने से पहले ही येह निय्यतें कर के सवाब का ख़ज़ाना ह़ासिल कर लीजिये। ﴾1﴿ खाने के बा'द **ख़िलाल** की सुन्नत अदा करूंगा ﴾2﴿ **ख़िलाल** शुरूअ़ करने से क़ब्ल **बिस्मिल्लाह** पढ़ूंगा ﴾3﴿ मिस्वाक करने के लिये मदद ह़ासिल करूंगा (क्यूं कि दांतों के ख़ला में अटके हुए ग़िज़ाई अज्ज़ा जब सड़ते हैं तो

मसूढ़े कमज़ोर और बीमार पड़ जाते और उन से ख़ून बहने लगता है लिहाज़ा मिस्वाक करना दुश्वार हो जाता है) ﴾4﴿ वुज़ू में कामिल तौर पर कुल्लियां करने पर मदद ह़ासिल करूंगा (अन्दरूने मुंह हर हर पुर्ज़े पर और दांतों की दरमियानी ख़लाओं में पानी बह जाए इस त़रह़ तीन बार कुल्लियां करना वुज़ू में सुन्नते मुअक्कदा है और मज़्कूरा त़रीक़े पर ग़ुस्ल में एक बार कुल्ली करना फ़र्ज़ और तीन बार सुन्नत है) ﴾5﴿ दांतों को अमराज़ से बचाने की कोशिश कर के इ़बादत पर क़ुव्वत ह़ासिल करूंगा (क्यूं कि ख़िलाल करने की वज्ह से गिज़ा के अज्ज़ा निकल जाएंगे और यूं मसूढ़ों की बीमारियों से तह़फ़्फ़ुज़ ह़ासिल होगा और अच्छी सिह़्ह़त से इ़बादत पर क़ुव्वत ह़ासिल होती है) ﴾6﴿ मुंह को बदबू से बचा कर मस्जिद के अन्दर दाख़िला बह़ाल रखने पर मदद ह़ासिल करूंगा (ज़ाहिर है खाने के अज्ज़ा दांतों में अटके रहेंगे तो सड़ कर बद बू का बाइ़स होंगे और जब मुंह में बद बू हो तो मस्जिद में दाख़िल होना ह़राम है) ﴾7﴿ फ़िरिश्तों को ईज़ा देने से बचूंगा (मुंह में गिज़ाई रेशे होते हुए नमाज़ में क़ुरआने पाक पढ़ने से फ़िरिश्तों को ईज़ा होती है)

कुल्ली का त़रीक़ा : वुज़ू में इस त़रह़ कुल्ली करनी ज़रूरी है कि मुंह के हर कलपुर्ज़े और दांतों की तमाम खिड़कियों वग़ैरा में पानी पहुंच जाए। वुज़ू में तीन[3] मरतबा इस त़रह़ कुल्लियां करना **सुन्नते मुअक्कदा** है और ग़ुस्ल में एक बार फ़र्ज़ और तीन[3] बार सुन्नत। अगर रोज़ा न हो तो ग़रग़रा भी कीजिये। गोश्त के रेशे वग़ैरा निकालने ज़रूरी हैं। हां

अगर कोई रेशा या छालिया वग़ैरा का ज़र्रा निकल ही नहीं रहा तो अब इतनी भी सख़्ती न फ़रमाएं कि मसूढ़े ज़ख़्मी हो जाएं कि जो मजबूर है वोह मा'ज़ूर है।

ख़िलाल की त़िब्बी ह़िक्मतें : हमारे मीठे मीठे आक़ा صَلَّى اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने आज से 1400 साल से भी ज़ाइद अ़र्से पहले ही कई अमराज़ से तह़फ़्फ़ुज़ के लिये ख़िलाल की अहम्मिय्यत समझा दी। अब सदिय्यों बा'द साइन्स दानों की समझ में भी आ गया। चुनान्चे ख़िलाल की ह़िक्मतें बयान करते हुए अत़िब्बा कहते हैं, "खाने के बा'द ग़िज़ाई अज्ज़ा दांतों और मसूढ़ों के दरमियान फंस जाते हैं, अगर उन को ख़िलाल के ज़रीए़ निकाला न जाए तो येह सड़ते हैं जिस से एक ख़ास क़िस्म का प्लास्मा (PLASMA) बन कर मसूढ़ों को मुतवर्रिम करता (या'नी सुजाता) और उस के बा'द दांतों और मसूढ़ों के तअ़ल्लुक़ को ख़त्म कर देता है, नतीजतन दांत आहिस्ता आहिस्ता गिर जाते हैं, ख़िलाल न करने से दांतों में पाएरिया (PHYORRHEA) की बीमारी भी होती है। जिस में मसूढ़ों में पीप हो जाती है जो खाने के साथ पेट में जाती और फिर मोहलिक अमराज़ जनम लेते हैं।"

दांतों का केन्सर : चाय पान के आ़दी ग़िज़ा की कमी के साथ साथ चाय और पान में भी कमी का ज़ेहन बनाएं येह न हो कि आप ग़िज़ा में कमी करने जाएं और नफ़्से मक्कार आप को भूक मिटाने का झांसा दे कर

चाय और पान की कसरत की आफ़त में फंसा दे। चाय गुर्दों के लिये मुज़िर (या'नी नुक़्सान देह) है। पान, गुटका, मेनपूड़ी और ख़ुश्बूदार सोंफ़ सुपारी वग़ैरा की आदत निकाल देने में ही आ़फ़िय्यत है। जो लोग इन का कसरत से इस्ति'माल करते हैं उन को **मसूढ़ों, मुंह और गले के केन्सर का अन्देशा रहता है।** ज़ियादा पान खाने वालों का मुंह अन्दर से लाल हो जाता है, अगर मसूढ़ों में ख़ून या पीप हो गया तो उन को नज़र नहीं आएगा और पेट में जाता रहेगा। चूंकि एक अ़र्से तक पीप निकलता रहता है मगर दर्द बिल्कुल नहीं होता लिहाज़ा उन को शायद मा'लूम भी उस वक़्त होगा जब ख़ुदा न ख़्वास्ता किसी **ख़त़रनाक बीमारी** ने जड़ पकड़ ली होगी !

नक़्ली कथ्थे की तबाह कारियां : हमारे यहां ग़ालिबन कथ्थे की पैदावार नहीं होती, लिहाज़ा दौलत के ह़रीस अफ़्राद जिन्हें किसी की दुन्या और अपनी आख़िरत के **बरबाद** होने की कोई फ़िक्र नहीं होती वोह **मिट्टी** में चमड़ा रंगने का **रंग** मिला कर उसी मिट्टी को **कथ्था** कह कर बेचते हैं ! और यूं बेचारे **पान ख़ोर** गन्दी मिट्टी खा कर त़रह़ त़रह़ के अमराज़ का शिकार और सख़्त बीमार हो कर तबाही के ग़ार में जा पड़ते हैं। जानबूझ कर **नक़्ली कथ्था** हरगिज़ इस्ति'माल न फ़रमाएं। नक़्ली कथ्थे के ताजिर और नक़्ली कथ्थे वाला पान

फ़रमाने मुस्त़फ़ा صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم : जब तुम रसूलों पर दुरूद पढ़ो तो मुझ पर भी पढ़ो, बेशक मैं तमाम जहानों के रब का रसूल हूं। (جمع الجوامع)

बेचने वाले इस फ़े'ल से सच्ची तौबा करें नीज़ जान बूझ कर मिट्टी खाने वाले भी बाज़ आएं। मिट्टी के बारे में शरई मस्अला येह है, **"मा'मूली मिक्दार में मिट्टी खाने में ह़रज नहीं मगर ह़द्दे ज़रर तक या'नी नुक़्सान देह मिक्दार में खाना ह़राम है।"**

(ردالمحتار ج١ ص٣٦٤, बहारे शरीअ़त, ह़िस्सा : 2, स. 63)

दांतों में ख़ून आने के अस्बाब : बा'ज़ लोगों को मिस्वाक करने से ख़ून आता है बल्कि ऐसों का ख़ून खाने के साथ पेट में भी जाता होगा। इस का एक सबब पेट की ख़राबी भी होता है। ऐसे मरीज़ को क़ब्ज़ वग़ैरा का इलाज करना ज़रूरी है। वज़्नी और बादी ग़िज़ाओं से परहेज़ करे और खाना भूक से कम खाए, बे वक़्त कोई चीज़ न खाए। दूसरा सबब येह है कि दांतों की सफ़ाई में ला परवाही की वज्ह से ग़िज़ाई अज्ज़ा दांतों और मसूढ़ों के दरमियान जम्अ़ हो कर चूने की त़रह़ सख़्त हो कर जम जाते हैं, डॉक्टरी ज़बान में इस को टाटर (TATAR) बोलते हैं, इस लिये दांतों के डॉक्टर से रुजूअ़ कीजिये अगर नेक त़बीअ़त डॉक्टर होगा और कोई मानेअ़ न हुवा तो एक ही वक़्त में तमाम दांतों की सफ़ाई (SCALING) कर देगा। वरना चन्द बार धक्के खिला कर थोड़ा थोड़ा काम कर के ज़ियादा पैसे निकलवाएगा !

صَلُّوا عَلَى الْحَبِيب ! صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلٰى مُحَمَّد

दांतों का बेहतरीन इलाज मिस्वाक : सहीह तरीके पर मिस्वाक की जाए तो اِنْ شَآءَاللّٰه عَزَّوَجَلَّ कभी भी दांतों की बीमारी न होगी। आप के दिल में हो सकता है येह ख़याल आए कि मैं तो बरसों से मिस्वाक इस्ति'माल करता हूं मगर मेरे तो दांत और पेट दोनों[2] ही ख़राब हैं ! मेरे भोलेभाले इस्लामी भाई ! इस में मिस्वाक का नहीं आप का अपना ही कुसूर है। मैं सगे मदीना عُفِيَ عَنْهُ इस नतीजे पर पहुंचा हूं कि आज शायद लाखों में से कोई एकआध ही ऐसा हो जो सहीह उसूलों के मुताबिक़ मिस्वाक इस्ति'माल करता हो, हम लोग अक्सर जल्दी जल्दी दांतों पर मिस्वाक मल कर वुज़ू कर के चल पड़ते हैं। या'नी यूं कहिये कि हम मिस्वाक नहीं बल्कि "रस्मे मिस्वाक" अदा करते हैं !

"मिस्वाक करना सुन्नत है" के 14 हुरूफ़ की निस्बत से मिस्वाक के 14 मदनी फूल

﴾1﴿ मिस्वाक की मोटाई छुंगलिया या'नी छोटी उंगली के बराबर हो ﴾2﴿ मिस्वाक एक बालिश्त से ज़ियादा लम्बी न हो वरना उस पर शैतान बैठता है ﴾3﴿ इस के रेशे नर्म हों कि सख़्त रेशे दांतों और मसूढ़ों के दरमियान ख़ला (GAP) का बाइस बनते हैं ﴾4﴿ मिस्वाक ताज़ा हो तो ख़ूब वरना कुछ देर पानी के गिलास में भिगो कर नर्म कर लीजिये ﴾5﴿ इस के रेशे रोज़ाना काटते रहिये कि रेशे उस वक़्त तक कारआमद रहते हैं जब तक उन में तल्ख़ी बाक़ी रहे ﴾6﴿ दांतों की चौड़ाई में मिस्वाक कीजिये ﴾7﴿ जब भी

फ़रमाने मुस्तफ़ा صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم : शबे जुमुआ और रोज़े जुमुआ मुझ पर कसरत से दुरूद पढ़ो क्यूं कि तुम्हारा दुरूद मुझ पर पेश किया जाता है। (طبرانی)

मिस्वाक करना हो कम अज़ कम तीन[3] बार कीजिये ﴾8﴿ हर बार धो लीजिये ﴾9﴿ मिस्वाक सीधे हाथ में इस तरह लीजिये कि छुंग्लिया इस के नीचे और बीच की तीन[3] उंग्लियां ऊपर और अंगूठा सिरे पर हो ﴾10﴿ पहले सीधी तरफ़ के ऊपर के दांतों पर फिर उल्टी तरफ़ के ऊपर के दांतों पर फिर सीधी तरफ़ नीचे फिर उल्टी तरफ़ नीचे मिस्वाक कीजिये ﴾11﴿ चित लैट कर मिस्वाक करने से तिल्ली बढ़ जाने और ﴾12﴿ मुठ्ठी बांध कर करने से बवासीर हो जाने का अन्देशा है ﴾13﴿ मिस्वाक वुज़ू की सुन्नते क़ब्लिया है अलबत्ता सुन्नते मुअक्कदा उसी वक़्त है जब कि मुंह में बदबू हो। (माख़ूज़ अज़ फ़तावा रज़विय्या, जि. 1, स. 223) ﴾14﴿ मुस्ता'मल (या'नी इस्ति'माल शुदा) मिस्वाक के रेशे नीज़ जब येह ना क़ाबिले इस्ति'माल हो जाए तो फेंक मत दीजिये कि येह आलए अदाए सुन्नत है, किसी जगह एहतियात से रख दीजिये या दफ़्न कर दीजिये या समुन्दर में डाल दीजिये।

(तफ़्सीली मा'लूमात के लिये बहारे शरीअत, हिस्सा : 2, स. 17 ता 18 का मुतालआ फ़रमा लीजिये)

दांतों की हिफ़ाज़त के लिये चार मदनी फूल : ﴾1﴿ कोई भी चीज़ खाने या चाय वग़ैरा पीने के बा'द तीन[3] बार इस तरह कुल्ली करें कि हर बार पानी को मुंह में एकआध मिनट तक अच्छी तरह जुम्बिशें देने या'नी हिलाने के बा'द उगलें ﴾2﴿ जब भी मौक़अ़ मिले मुंह में कुल्ली भर लें और चन्द मिनट तक हिलाते रहें फिर उगल दें। येह अ़मल रोज़ाना

मुख़्तलिफ़ अवक़ात में चन्द बार कीजिये। ﴾3﴿ अगर मज़्कूरा अन्दाज़ पर कुल्लियों के लिये सादे पानी के बजाए नमक वाला नीम गर्म पानी इस्ति'माल किया जाए तो मज़ीद मुफ़ीद है। अगर पाबन्दी से करेंगे तो اِنْ شَآءَاللّٰه عَزَّوَجَلَّ दांतों के दरमियान अटके हुए ग़िज़ा के अज्ज़ा धुल धुल कर निकलते रहेंगे, न वोह मसूढ़ों में ठहरेंगे कि सड़ें, اِنْ شَآءَاللّٰه عَزَّوَجَلَّ इस त़रह़ करने से **मसूढ़ों में ख़ून** की शिकायत भी न होगी। ﴾4﴿ ज़ैतून शरीफ़ का तेल दांतों पर मलने से मसूढ़े और हिलते हुए दांत मज़्बूत़ होते हैं।

मुंह की बदबू का इलाज : अगर मुंह में बदबू आती हो तो हरा धनिया चबा कर खाइये नीज़ गुलाब के ताज़ा या सूखे हुए फूलों से दांत मांजने से भी اِنْ شَآءَاللّٰه عَزَّوَجَلَّ दूर हो जाएगी। हां अगर पेट की ख़राबी की वज्ह से बदबू आती हो तो "कमख़ोरी" की सआ़दत ह़ासिल कर के भूक की बरकतें लूटने से اِنْ شَآءَاللّٰه عَزَّوَجَلَّ टांगों और बदन के मुख़्तलिफ़ ह़िस्सों के दर्द, क़ब्ज़, सीने की जलन, मुंह के छाले, बार बार होने वाले नज़्ले खांसी और गले के दर्द मसूढ़ों में ख़ून आना वग़ैरा बहुत सारे अमराज़ के साथ साथ **मुंह की बदबू** से भी जान छूट जाएगी। भूक से कम खाने में 80 फ़ीसद अमराज़ से बचत हो सकती है। (तफ़्सीली मा'लूमात के लिये फ़ैज़ाने सुन्नत के बाब "पेट का क़ुफ़्ले मदीना" का मुत़ालआ़ फ़रमाइये) अगर नफ़्स की ह़िर्स का इलाज हो जाए तो कई अमराज़ ख़ुद ही ख़त्म हो जाएं।

फ़रमाने मुस्तफ़ा صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم: उस शख़्स की नाक ख़ाक आलूद हो जिस के पास मेरा ज़िक्र हो और वोह मुझ पर दुरूदे पाक न पढ़े। (ترمذی)

रज़ा नफ़्स दुश्मन है दम में न आना

कहां तुम ने देखे हैं चंदराने वाले

(ह़दाइके़ बख़्शिश शरीफ़)

मुंह की बदबू का मदनी इलाज : येह दुरूद शरीफ़ मौक़अ़ ब मौक़अ़ एक ही सांस में ग्यारह मरतबा पढ़ लीजिये اِنْ شَآءَاللہ عَزَّوَجَلَّ मुंह की बदबू ज़ाइल हो जाएगी :

اَللّٰهُمَّ صَلِّ وَسَلِّمْ عَلَى النَّبِيِّ الطَّاهِرِ

एक सांस में पढ़ने का त़रीक़ा : एक ही सांस में पढ़ने का बेहतर त़रीक़ा येह है कि मुंह बन्द कर के आहिस्ता आहिस्ता नाक से सांस लेना शुरूअ़ कीजिये और जितना मुम्किन हो उतनी हवा फेफड़ों में भर लीजिये। अब दुरूद शरीफ़ पढ़ना शुरूअ़ कीजिये। चन्द बार इस त़रह़ मश्क करेंगे तो सांस टूटने से क़ब्ल اِنْ شَآءَاللہ عَزَّوَجَلَّ मुकम्मल ग्यारह बार दुरूद शरीफ़ पढ़ने की तरकीब बन जाएगी। मज़्कूरा त़रीक़े पर नाक से गहरा सांस ले कर मुम्किन ह़द तक रोक रखने के बा'द मुंह से ख़ारिज करना सिह़्ह़त के लिये इन्तिहाई मुफ़ीद है। दिन भर में जब मौक़अ़ मिले बिल ख़ुसूस खुली फ़ज़ा में रोज़ाना चन्द बार तो ऐसा कर ही लेना चाहिये। मुझे (सगे मदीना عُفِیَ عَنْهُ को) एक सिन रसीदा ह़कीम साह़िब ने बताया था कि मैं सांस लेने के बा'द (आधे घन्टे तक या कहा) दो घन्टे तक हवा को

अन्दर रोक लेता हूं और इस दौरान अपने विर्दो वज़ाइफ़ भी पढ़ सकता हूं। बक़ौल उन ह़कीम साह़िब के सांस रोकने के ऐसे ऐसे मश्शाक़ (या'नी मश्क़ कर के माहिर हो जाने वाले लोग) भी दुन्या में होते हैं कि सुब्ह़ सांस लेते हैं तो शाम को निकालते हैं !

पांच ख़ुश्बूदार मुंह : सरकारे मदीना صَلَّى اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم का एक अ़ज़ीम मो'जिज़ा मुलाह़ज़ा फ़रमाइये जिस की बरकत से पांच ख़ुश नसीब सह़ाबिय्यात رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْھُنَّ के मुंह हमेशा के लिये ख़ुश्बूदार हो गए। चुनान्चे ह़ज़रते सय्यिदतुना उ़मैरा बिन्ते मस्ऊ़द अन्सारिय्या رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْھَا फ़रमाती हैं कि हम पांच[5] बहनें हुज़ूरे अकरम, नूरे मुजस्सम, शाहे बनी आदम, रसूले मोह़्तशम صَلَّى اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم की ख़िदमते मुअ़ज़्ज़म में बैअ़त करने के लिये ह़ाज़िर हुईं। आप صَلَّى اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم उस वक़्त **क़दीद** (ख़ुश्क किया हुवा गोश्त) तनावुल फ़रमा रहे थे। आप صَلَّى اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने एक पारए क़दीद (या'नी क़दीद का टुकड़ा) **चबा** कर नर्म कर के हम को अ़त़ा फ़रमाया तो हम में से हर एक ने थोड़ा थोड़ा कर के खा लिया (इस की बरकत से) मरते दम तक हमारे मूंहों से हमेशा **ख़ुश्बू** ही आई।

(اَلخصَائِصُ الکُبرٰی ج ۱ ص ۱۰۵)

ह़ज़रते सय्यिदुना अबू उमामा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ फ़रमाते हैं कि मदीनए मुनव्वरह زَادَھَا اللّٰہُ شَرَفًاوَّتَعْظِیْمًا में एक बेशर्म और बद ज़बान औ़रत

थी । एक दफ़्अ़ वोह हु़ज़ूर सरापा नूर, फ़ैज़ गन्जूर, शाहे ग़यूर صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم के पास से गुज़री, आप صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم उस वक़्त **क़दीद** या'नी ख़ुश्क गोश्त के टुकड़े तनावुल फ़रमा रहे थे, उस ने भी इस में से मांगा। आप صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने उस को अपने आगे के ह़िस्से से कुछ दे दिया, वोह बोली, नहीं, अपन **मुंह शरीफ़** में जो है वोह अ़त़ा फ़रमाइये। आप صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने दहन मुबारक से निकाल कर इनायत फ़रमाया, तो उस ने अपने मुंह में डाला और खा लिया इस वाक़िए़ के बा'द उस औ़रत से कभी बद ज़बानी या फ़ोह़्श कलामी नहीं सुनी गई। (اَلخصَائِصُ الکُبریٰ ج۱ ص۱۰۵)

मूसला धार बारिश : प्यारे प्यारे इस्लामी भाइयो ! दा'वते इस्लामी के **मदनी माह़ोल** से हर दम वाबस्ता रहिये, सुन्नतों भरे इज्तिमाअ़ में शिर्कत फ़रमाया कीजिये। اِنْ شَآءَ اللّٰه عَزَّوَجَلَّ आख़िरत की बे शुमार भलाइयां हाथ आएंगी बल्कि दुन्यवी परेशानियां भी दूर होंगी, आ़शिक़ाने रसूल के क़ुर्ब में اِنْ شَآءَ اللّٰه عَزَّوَجَلَّ दुआ़एं भी क़बूल होंगी। अमीरुल मुअमिनीन ह़ज़रते मौलाए काएनात, अ़लिय्युल मुर्तज़ा, शेरे ख़ुदा كَرَّمَ اللّٰهُ تَعَالٰى وَجْهَهُ الْكَرِيْم से रिवायत है कि मक्की मदनी सरकार, दो[2] आ़लम के मालिको मुख़्तार صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने इर्शाद फ़रमाया :

اَلدُّعَاءُ سِلَاحُ الْمُؤْمِنِ، وَعِمَادُ الدِّيْنِ وَنُوْرُ السَّمٰوٰتِ وَالْاَرْضِ (مُسنَد اَبِی یَعلٰی ج۱ ص۲۱۵ حدیث۴۳۵)

या'नी "दुआ मोमिन का हथियार है और दीन का सुतून है और ज़मीनो आस्मान का नूर है।" बिल ख़ुसूस सफ़र में दुआ रद नहीं की जाती और अगर आशिक़ाने रसूल का **मदनी क़ाफ़िला** हो फिर तो क्या ही बात है! चुनान्चे दा'वते इस्लामी के **आशिक़ाने रसूल** का सुन्नतों की तरबियत का एक मदनी क़ाफ़िला सफ़र पर था। मक़ामी लोगों ने दुआ की दरख़्वास्त करते हुए बताया कि यहां के मुसल्मान अ़र्सए दराज़ से बरसात की ने'मत से महरूम हैं। चुनान्चे मदनी क़ाफ़िले वालों ने **इज्तिमाई दुआ** की तरकीब की। काफ़ी मुसल्मान शरीक हुए, दिन का वक़्त था, धूप निकली हुई थी, आशिक़ाने रसूल ने गिड़गिड़ा कर **रिक़्क़त अंगेज़ दुआ** शुरूअ़ कर दी, اَلْحَمْدُ لِلّٰه عَزَّوَجَلَّ **देखते ही देखते अब्रे रह़मत छा गया, घन्घोर घटाएं उमंड आईं और मूसलाधार बारिश बरसने लगी!** ख़ुशी के ना'रे बुलन्द होने लगे, लोग बारिश में शराबोर हो गए, **दा'वते इस्लामी** की महब्बत और मदनी क़ाफ़िले वाले **आशिक़ाने रसूल** की अ़क़ीदत से ह़ाज़िरीन के क़ुलूब मालामाल हो गए, दा'वते इस्लामी वालों पर **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ के इस अ़ज़ीम करम का खुली आंखों से मुशाहदा करने के सबब काफ़ी इस्लामी भाई **दा'वते इस्लामी** के मदनी माह़ोल से वाबस्ता हो गए और वहां दा'वते इस्लामी के मदनी काम की धूमधाम हो गई।

फ़रमाने मुस्तफ़ा صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم: उस शख़्स की नाक ख़ाक आलूद हो जिस के पास मेरा ज़िक्र हो और वोह मुझ पर दुरूदे पाक न पढ़े। (ترمذی)

क़ाफ़िले में ज़रा, मांगो आ कर दुआ — होंगी ख़ूब बारिशें क़ाफ़िले में चलो
आ़शिक़ाने रसूल ले लो जो कुछ भी फूल — तुम को सुन्नत के दें क़ाफ़िले में चलो

صَلُّوْا عَلَى الْحَبِيْب! صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلٰى مُحَمَّد

हाथों की चिक्नाई : हृज़रते सय्यिदुना अ़ब्दुल्लाह इब्ने अ़ब्बास رَضِىَ اللّٰهُ تَعَالٰى عَنْهُمَا से रिवायत है कि ख़ल्क़ के रहबर, शाफ़ेए़ महृशर, महृबूबे दावर صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم का फ़रमाने इब्रत निशान है, "जो इस हाल में रात गुज़ारे कि उस के हाथ पर (खाने की) चिक्नाई का असर हो और उसे कोई मुसीबत पहुंच जाए तो सिवाए अपनी जान के किसी और को मलामत न करे।" (مجمع الزوائد ج٥ص٣٣حديث ٧٩٥٤)

सांप का ख़त़रा : प्यारे प्यारे इस्लामी भाइयो ! खाने के बा'द हाथों को साबून वग़ैरा से अच्छी तरह़ धो कर तोलिये से पोंछ लेना चाहिये ता कि खाने की बू और चिक्नाहट जाती रहे, वरना आप किसी से मुसाफ़ह़ा करेंगे तो बू की वज्ह से उस को घिन आ सकती है। **मुफ़स्सिरे** शहीर **हृकीमुल उम्मत** हृज़रते मुफ़्ती अहृमद यार ख़ान عَلَيْهِ رَحْمَةُ الْحَنَّان फ़रमाते हैं, "इस ह़दीसे पाक में मुसीबत से मुराद **सांप** या चूहे का काट जाना है। येह दोनों[2] जानवर खाने की ख़ुश्बू पर दौड़ते हैं या इस से मुराद बरस की बीमारी है कि खाने से सने हुए हाथ जिस्म के पसीने से लग कर जहां छू जाएं वहां कोढ़ के सफ़ेद दाग पैदा होने का ख़त़रा होता है।"

(मिरआत शर्हे मिश्कात, जि. 6, स. 38)

ख़लीले मिल्लत मुफ़्ती मुह़म्मद ख़लील ख़ान बरकाती رَحْمَۃُ اللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہ फ़रमाते हैं, "खाने से फ़ारिग़ हो कर बिग़ैर हाथ धोए सो जाए तो शैत़ान हाथ चाटता है और مَعَاذَاللّٰہ عَزَّوَجَلَّ बरस का बाइ़स होता है।"

(सुन्नी बिहिश्ती ज़ेवर, स. 607)

दूसरों के बरतन इस्ति'माल करना कैसा ? : किसी के घर से हदिय्यतन खाना आए तो बरतन फ़ौरन ख़ाली कर के फ़ौरन लौटा दीजिये। अगर उस वक़्त न दे सके तो अमानतन रख लीजिये और बा'द में वापस कर दीजिये मगर याद रहे दूसरों के वोह बरतन अपने इस्ति'माल में लाना जाइज़ नहीं। (ऐज़न, स. 569) अगर ज़िन्दगी में कभी येह गुनाह सरज़द हुवा है तो बरतन के मालिक से मुआ़फ़ी मांग लीजिये और बारगाहे ख़ुदावन्दी عَزَّوَجَلَّ में भी तौबा कर लीजिये।

صَلُّوْا عَلَی الْحَبِیْب!   صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلٰی مُحَمَّد

"सरकार की सुन्नत में अ़ज़मत ही अ़ज़मत है"
के पच्चीस हु़रूफ़ की निस्बत से खाने की 25 सुन्नतें

﴾1﴿ सरकारे नामदार صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم तक्या (या'नी टेक) लगा कर नहीं खाते थे (مُلَخَّصاً سُنَن ابی داوٗد ج۳ص۴۸۸ حدیث۳۷۶۹) ﴾2﴿ मेज़ पर रख कर खाना तनावुल न फ़रमाते (مُلَخَّصاًصحیح بخاری ج۳ ص ۲۴ حدیث ۵۳۸۶) ﴾3﴿ जो कुछ

फ़रमाने मुस्त़फ़ा صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم : जिस के पास मेरा ज़िक्र हुवा और उस ने मुझ पर दुरूदे पाक न पढ़ा तह़क़ीक़ वोह बद बख़्त हो गया। (ابن سنی)

मिल जाता तनावुल फ़रमा लेते (مُلَخَّصاًصحیح مسلم ص ١١٣٤ حدیث ٢٠٥٢) ﴿4﴾ न तो घर वालों से खाना मांगते और न उन के सामने ख़्वाहिश (या'नी फ़रमाइश) ज़ाहिर करते, अगर वोह पेश करते तनावुल फ़रमा लेते और वोह जो कुछ सामने रखते वोह क़बूल फ़रमा लेते और जो कुछ पिलाते वोह नोश फ़रमा लेते (مُلَخَّصاً اتحاف السادۃالمتقین ج٨ص٢٤٨) ﴿5﴾ बा'ज़ अवक़ात ख़ुद उठ कर खाने पीने की चीज़ ले लेते (مُلَخَّصاًسنن ابی داوٗد ج ٤ ص٥حدیث٣٨٥٦) ﴿6﴾ आप صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم अपने सामने से (مُلَخَّصاً شُعَبُ الایمان ج٥ ص٧٩ حدیث ٥٨٤٦) ﴿7﴾ और तीन उंगलियों से तनावुल फ़रमाते थे (مُلَخَّصاًالمصنف ابی شیبۃ ج ٥ ص٥٥٩حدیث ٣) ﴿8﴾ और बा'ज़ अवक़ात चार उंगलियों से भी खा लेते (مُلَخَّصاً الجامع الصغیر ص٢٥٠حدیث ٦٩٤٢) मगर दो उंगलियों से तनावुल न करते थे, इर्शाद फ़रमाते हैं صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم येह शैत़ान के खाने का त़रीक़ा है (مُلَخَّصاً فیض القدیرمع جامع الصغیرج٥ص٢٤٩ حدیث ٦٩٤٠) ﴿9﴾ जव के बिग़ैर छने आटे की रोटी तनावुल फ़रमाते (مُلَخَّصاًصحیح بخاری ج٣ص٥٣١حدیث٥٤١٠) ﴿10﴾ आप صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم का खाना अक्सर खजूर और पानी पर मब्नी होता (مُلَخَّصاً صحیح بخاری ج ٣ ص٥٢٣حدیث٥٣٨٣) ﴿11﴾ आप صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم दूध और खजूर इकठ्ठे इस्ति'माल फ़रमाते और इन को दो[2] उ़म्दा खाने क़रार देते (مُلَخَّصاًمسند امام احمد ج ٥ ص ٣٨٥ حدیث ١٥٨٩٣) ﴿12﴾ सरकार صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم

का पसन्दीदा खाना गोश्त था (مُلَخَّصاًجامع ترمذی ج۵ص ۵۳۳ حدیث ۱۷۸) ﴾13﴿ आप صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم इर्शाद फ़रमाते, गोश्त कानों की **समाअ़त** बढ़ाता है और दुन्या व आख़िरत में खानों का सरदार है । अगर मैं **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ से सुवाल करता कि मुझे रोज़ाना गोश्त अ़त़ा करे तो इनायत फ़रमाता । (مُلَخَّصاً اتحاف السادۃالمتقین ج۸ص۲۳۸) ﴾14﴿ सरकार صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم गोश्त और कद्दू से सरीद बना कर खाते (या'नी गोश्त और कद्दू शरीफ़ के सालन में रोटी के टुकड़े अच्छी त़रह़ भिगो कर तनावुल फ़रमाते) (مُلَخَّصاً اتحاف السادۃالمتقین ج ۸ ص ۲۳۹) ﴾15﴿ सरकार صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم जब गोश्त तनावुल फ़रमाते तो उस की तरफ़ सरे अक़्दस को न झुकाते बल्कि उस को अपने दहन (मुंह) मुबारक की त़रफ़ उठाते और फिर दन्दाने मुबारक से काटते (مُلَخَّصاً اتحاف السادۃالمتقین ج ۸ ص ۲۳۹) ﴾16﴿ सरकार صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم को बकरी (और बकरे) के गोश्त में दस्त (या'नी बाज़ू) और शाना (या'नी कन्धा) पसन्द था (ملخصاًجامع ترمذی ج۳ص۳۲۹ حدیث ۱۸۴۲) ﴾17﴿ सरकार صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم गुर्दे (खाना) ना पसन्द फ़रमाते थे क्यूं कि वोह पेशाब के क़रीब होते हैं (مُلَخَّصاًجامع ترمذی ج۳ص۳۳۰حدیث۱۸۴۲،۱۸۴۴) ﴾18﴿ सरकार صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم को तिल्ली (खाने से) नफ़रत थी मगर इस को ह़राम क़रार नहीं दिया (مُلَخَّصاً کنزالعمال ج۷ ص ۴۱ حدیث ۱۸۲۱۲) ﴾19﴿ सरकार (مُلَخَّصاً اتحاف السادۃالمتقین ج ۸ ص ۲۴۳)

صَلَّى اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم अपनी मुबारक उंग्लियों से रिकाबी चाटते और फ़रमाते, खाने के आख़िर में बरकत ज़ियादा होती है (شُعَبُ الایمان ج ٥ ص ٨١ حدیث ٥٨٥٤) ﴾20﴿ सरकार صَلَّى اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم को ताज़ा फलों में ख़रबूज़ा और अंगूर ज़ियादा पसन्द थे (مُلَخَّصاً کنزالعمال ج٧ ص ٤١ حدیث ١٨٢٠٠) ﴾21﴿ ख़रबूज़ा रोटी और शकर के साथ तनावुल फ़रमाते थे (مُلَخَّصاًاتحاف السادۃالمتقین ج ٨ ص ٢٣٦) ﴾22﴿ बा'ज़ अवक़ात तर खजूर के साथ (ख़रबूज़ा) खाते । (مُلَخَّصاًجامع ترمذی ج ٣ ص ٣٣٢ حدیث ١٨٥٠) ﴾23﴿ दोनों हाथों से मदद लेते एक बार तर खजूरें दाएं हाथ से तनावुल फ़रमा रहे थे और गुठलियां बाएं हाथ में रख रहे थे एक बकरी गुज़री आप صَلَّى اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने उस को गुठली के साथ इशारा फ़रमाया वोह आप صَلَّى اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم के बाएं हाथ से (गुठलियां) खाने लगी और आप صَلَّى اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم दाएं हाथ से खा रहे थे ह़त्ता कि आप صَلَّى اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم फ़ारिग़ हुए तो वोह भी चली गई (مُلَخَّصاً اتحاف السادۃالمتقین ج٨ ص ٢٣٧) ﴾24﴿ सरकार صَلَّى اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم कच्चा लह्सन, कच्ची पियाज़ व गंदना (एक बदबूदार सब्ज़ी) नहीं खाते थे (مُلَخَّصاً تاریخ بغداد ج٢ ص ٢٦٢) ﴾25﴿ आप صَلَّى اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने कभी किसी खाने को बुरा नहीं कहा अगर अच्छा लगा तो तनावुल फ़रमाया और ना पसन्द हुवा तो हाथ मुबारक रोक लिया ।

(مُلَخَّصاًصحیح مسلم ص ١١٤١ حدیث ٢٠٦٤)

صَلُّوا عَلَی الْحَبِیْب ! صَلَّى اللّٰہُ تَعَالٰی عَلٰی مُحَمَّد

खाने के 92 मदनी फूल

खाने की निय्यत कर लीजिये

1 **खाने** से मक़्सूद ह़ुसूले लज़्ज़त और ख़्वाहिश की तक्मील न हो बल्कि खाते वक़्त येह निय्यत कर लीजिये, "मैं **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ की इबादत पर क़ुव्वत ह़ासिल करने के लिये खा रहा हूं" याद रहे ! खाने में इबादत पर क़ुव्वत ह़ासिल करने की निय्यत उसी सूरत में सच्ची होगी जब कि भूक से कम खाने का भी इरादा हो वरना सिरे से निय्यत ही झूटी हो जाएगी क्यूं कि ख़ूब डट कर खाने से इबादत के लिये क़ुव्वत ह़ासिल होने के बजाए मज़ीद सुस्ती पैदा होती है। खाने की अ़ज़ीम सुन्नत येह है कि भूक लगी हुई हो कि बिग़ैर भूक के खाने से त़ाक़त तो क्या आएगी उलटा सिह़ह़त ख़राब और दिल भी सख़्त हो जाता है। ह़ज़रते सय्यिदुना शैख़ अबू त़ालिब मक्की رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰی عَلَيْه फ़रमाते हैं, एक रिवायत में है, "सेर होने की ह़ालत में खाना बरस पैदा करता है।"

(قُوت القلوب ج ٢ ص ٣٢٦ مركز اهلسنت بركاتِ رضا هند)

2 **ऐसा** दस्तर ख़्वान बिछाइये जिस पर कोई ह़र्फ़, लफ़्ज़, इबारत, शे'र या कम्पनी वग़ैरा का नाम उर्दू, इंग्रेज़ी किसी भी ज़बान में न लिखा हुवा हो।

3 **खाना** खाने से पहले और बा'द दोनों[2] हाथ पहुंचों तक धोना सुन्नत है, कुल्लियां कर के मुंह का अगला ह़िस्सा भी धो लीजिये मगर खाने से क़ब्ल धोए हुए हाथ मत पोंछिये। सरकारे मदीना صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया, "खाने से पहले और बा'द में वुज़ू करना (या'नी हाथ मुंह धोना) रिज़्क़ में कुशादगी करता और शैत़ान को दूर करता है।"

(كنزالعُمّال ج١٥ص١٠٦حديث ٤٠٧٥٥)

4 **अगर** खाने के लिये किसी ने मुंह न धोया तो येह नहीं कहेंगे कि इस ने सुन्नत तर्क कर दी।

(मुलख़्ख़स अज़ बहारे शरीअ़त, ह़िस्सा : 16, स. 18, मदीनतुल मुर्शिद बरेली शरीफ़)

5 **खाते** वक़्त उलटा पाउं बिछा दीजिये और सीधा घुटना खड़ा रखिये या सुरीन पर बैठ जाइये और दोनों[2] घुटने खड़े रखिये या दो[2] ज़ानू बैठिये, तीनों में से जिस त़रह़ भी बैठेंगे सुन्नत अदा हो जाएगी।

पर्दे में पर्दा की आ़दत बनाइये

6 **इस्लामी** भाई हो या इस्लामी बहन सभी चादर या कुर्ते के दामन के ज़रीए **पर्दे में पर्दा** ज़रूर करें वरना कपड़े तंग हुए या कुरते का दामन उठा होगा तो घर के अफ़राद वग़ैरा बद निगाही के गुनाह में पड़ सकते हैं। **अगर** "पर्दे में पर्दा" मुम्किन न हो तो दो[2] ज़ानू बैठिये कि सुन्नत भी अदा हो जाएगी और खुद ब खुद **पर्दा** भी हो जाएगा। खाने के इलावा भी बैठने में पर्दे में पर्दा की आदत बनाइये।

7 **चार** ज़ानू या'नी चोकड़ी मार कर बैठे हुए खाना सुन्नत नहीं, इस से **पेट** बाहर निकलता है।

8 पहले लुक़्मे पर بِسْمِ اللّٰہ दूसरे से क़ब्ल بِسْمِ اللّٰہِ الرَّحْمٰن और तीसरे से पहले بِسْمِ اللّٰہِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِیْمِ पढ़िये।

(اِحیاء العُلوم ج٣ ص ٦)

9 **बिस्मिल्लाह** ज़ोर से पढ़िये ताकि दूसरों को भी याद आ जाए।

10 **शुरूअ़** करने से क़ब्ल येह दुआ़ पढ़ ली जाए, अगर खाने पीने में **ज़हर** भी होगा तो اِنْ شَآءَ اللّٰہ عَزَّوَجَلَّ असर नहीं करेगा। दुआ़ येह है :

بِسْمِ اللّٰهِ وَبِاللّٰهِ الَّذِىْ لَا يَضُرُّ مَعَ اسْمِهٖ شَيْءٌ فِى الْاَرْضِ وَلَا فِى السَّمَآءِ يَا حَيُّ يَا قَيُّوْمُ۔

(کنزالعمال ج ١٥ ص١٠٩ حدیث ٤٠٧٩٢)

तरजमा : अल्लाह तआ़ला के नाम से शुरूअ़ करता हूं जिस के नाम की बरकत से ज़मीनो आस्मान की कोई चीज़ नुक़्सान नहीं पहुंचा सकती, ऐ हमेशा ज़िन्दा व क़ाइम रहने वाले।

11 **अगर** शुरूअ़ में **बिस्मिल्लाह** पढ़ना भूल गए तो दौराने त़आ़म याद आने पर इस त़रह़ कह लीजिये:

بِسْمِ اللّٰهِ اَوَّلَهٗ وَاٰخِرَهٗ

तरजमा : अल्लाह عَزَّوَجَلَّ के नाम से खाने की इब्तिदा और इन्तिहा।

फ़रमाने मुस्त़फ़ा صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم : जिस के पास मेरा ज़िक्र हो और वोह मुझ पर दुरूद शरीफ़ न पढ़े तो वोह लोगों में से कन्जूस तरीन शख़्स है। (مسند احمد)

खाते हुए भी ज़िक्रुल्लाह जारी रखिये

12 **يا واجِدُ** जो कोई खाना खाते वक़्त हर निवाले पर पढ़ा करेगा اِنْ شَآءَاللّٰہ عَزَّوَجَلَّ वोह खाना उस के पेट में नूर होगा और बीमारी दूर होगी। या

13 हर लुक़्मे से क़ब्ल "**अल्लाह**" या "**बिस्मिल्लाह**" कहते जाइये ताकि खाने की ह़िर्स ज़िक्रुल्लाह عَزَّوَجَلَّ से ग़ाफ़िल न कर दे। हर दो[2] लुक़्मे के दरमियान اَلْحَمْدُ لِلّٰہ, **يا وَاجِدُ** और "بِسمِ اللّٰہ" कहते जाइये, इस त़रह़ हर लुक़्मे का आग़ाज़ "بِسمِ اللّٰہ" से, बीच में **يا وَاجِدُ** और ख़त्मे लुक़्मा पर ह़म्द की तरकीब हो जाएगी।

14 **मिट्टी** के बरतन में खाना अफ़्ज़ल है कि "जो अपने घर में मिट्टी के बरतन बनवाता है फ़िरिश्ते उस घर की **ज़ियारत** करने आते हैं।" (رَدُّالْمُحتار ج۹ص۴۹۵)

15 सालन या चटनी की पियाली रोटी पर मत रखिये। (ایضاً ص ۴۹۰)

16 **हाथ** या छुरी को रोटी से न पोंछिये। (ایضاً)

17 **ज़मीन** पर दस्तर ख़्वान बिछा कर खाना सुन्नत है। टेक लगा कर, नंगे सर या एक हाथ ज़मीन पर टेक कर, जूते पहन कर, लैटे लैटे या चार ज़ानू (या'नी चोकड़ी मार कर) मत खाइये।

18 **रोटी** अगर दस्तर ख़्वान पर आ गई तो सालन का इन्तिज़ार किये बिग़ैर खाना शुरूअ़ फ़रमा दीजिये। (رَدُّالْمُحتار ج ۹ ص ۴۹۰)

19 **अव्वल** आख़िर नमक या नमकीन खाइये कि इस से **सत्तर** बीमारियां दूर होती हैं। (ایضاً ص ۴۹۱)

20 **रोटी** एक हाथ से न तोड़िये कि मग़रूरों का त़रीक़ा है।

21 **रोटी** उलटे हाथ में पकड़ कर सीधे हाथ से तोड़िये। हाथ बढ़ा कर थाल या सालन के बरतन के ऐन बीच में ऊपर कर के रोटी और डबल रोटी वग़ैरा तोड़ने की आ़दत बनाइये। इस त़रह़ अज्ज़ा खाने ही में गिरेंगे वरना दस्तरख़्वान पर गिर कर **ज़ाएअ़** हो सकते हैं।

22 **सीधे** हाथ से खाइये, उलटे हाथ से खाना, पीना, लेना, देना, **शैत़ान** का त़रीक़ा है।

तीन उंग्लियों से खाने की आ़दत डालिये

23 **तीन** उंग्लियों या'नी बीच वाली, शहादत की और अंगूठे से खाना खाइये कि येह सुन्नते अम्बिया عَلَيۡهِمُ الصَّلٰوةُ وَالسَّلَام है। आ़दत बनाने के लिये अगर चाहें तो इब्तिदाअन सीधे हाथ की बिन्सर (छोटी उंगली के बराबर वाली को बिन्सर कहते हैं) को ख़म कर के इस में रबड़ बेन्ड पहन लीजिये या रोटी का टुकड़ा इन दोनों उंग्लियों से हथेली की त़रफ़ दबाए रखिये या दोनों अ़मल एक साथ कर लीजिये, जब आ़दत हो जाएगी तो اِنۡ شَآءَاللّٰه عَزَّوَجَلَّ रबड़ वग़ैरा की ह़ाजत न रहेगी। ह़ज़रते सय्यिदुना मुल्ला अ़ली क़ारी عَلَيۡهِ رَحۡمَةُ اللّٰهِ الۡبَارِى फ़रमाते हैं, "पांच[5] उंग्लियों से खाना ह़रीसों की निशानी है।" (مرقاة ج ٨ ص ٩) अगर चावल

के दाने जुदा जुदा हों और तीन उंग्लियों से निवाला बनना मुम्किन न हो तो चार[4] या पांच[5] उंग्लियों से खा सकते हैं ।

रोटी का कनारा तोड़ना

24 **रोटी** का कनारा तोड़ कर डाल देना और बीच का ह़िस्सा खा लेना इसराफ़ है । हां अगर कनारे कच्चे रह गए हैं, इस के खाने से नुक़्सान होगा तो तोड़ सकता है, इसी त़रह़ येह मा'लूम है कि रोटी के कनारे दूसरे लोग खा लेंगे ज़ाएअ़ न होंगे तो तोड़ने में ह़रज नहीं, येही हुक्म इस का भी है कि रोटी में जो ह़िस्सा फूला हुवा है उसे खा लेता है बाक़ी को छोड़ देता है । (मुलख़्ख़स अज़ बहारे शरीअ़त, ह़िस्सा : 16, स. 18, 19)

दांत का काम आंत से मत लीजिये

25 **लुक़्मा** छोटा लीजिये और इस एह़तियात़ के साथ कि चपड़ चपड़ की आवाज़ पैदा न हो और अच्छी त़रह़ चबा कर खाइये । अगर अच्छी त़रह़ चबाए बिग़ैर निगल जाएंगे तो हज़्म करने के लिये मे'दे को सख़्त ज़ह़मत करनी पड़ेगी लिहाज़ा दांतों का काम आंतों से मत लीजिये ।

26 **जब** तक ह़ल्क़ से नीचे न उतर जाए दूसरे लुक़्मे की त़रफ़ हाथ बढ़ाना या लुक़्मा उठा लेना खाने की **ह़िर्स** की अ़लामत है ।

27 मदीना **रोटी** को दांत से काट कर खाना हृद दरजा मा'यूब और बे बरकती का बाइस है, यूं ही खड़े खड़े खाना सुन्नते नसारा है। (सुन्नी बिहिश्ती ज़ेवर, स. 565)

खाना खाने में फल पहले खाने चाहिएं

28 मदीना **हमारे** यहां फल आखि़र में खाने का रवाज है जब कि **हुज्जतुल इस्लाम** हज़रते सय्यिदुना इमाम मुहम्मद ग़ज़ाली عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللهِ الْوَالِي फ़रमाते हैं, "अगर फल हों तो पहले वोह पेश किये जाएं कि तिब्बी लिहाज़ से उन का पहले खाना ज़ियादा मुवाफ़िक़ है, येह जल्द हज़्म होते हैं लिहाज़ा इन को मे'दे के निचले हिस्से में होना चाहिये और क़ुरआने पाक से भी फल के मुक़द्दम (या'नी पहले) होने पर आगाही हासिल होती है चुनान्चे पारह 27 **सूरतुल वाक़िअ़ह** की आयत नम्बर 20, 21 में इर्शाद होता है :

وَ فَاكِهَةٍ مِّمَّا يَتَخَيَّرُوْنَ ﴿۲۰﴾
وَ لَحْمِ طَيْرٍ مِّمَّا يَشْتَهُوْنَ ﴿۲۱﴾

(پ ۲۷ الواقعه ۲۰،۲۱)

तरजमए कन्ज़ुल ईमान : और मेवे जो पसन्द करें और परिन्दों का गोश्त जो चाहें।"

(إحياء العلوم ج ٢ ص ٢١)

मेरे आक़ा आ'ला हज़रत मौलाना शाह इमाम अहमद रज़ा ख़ान عَلَيْهِ رَحْمَةُ الرَّحْمٰن रिवायत नक़्ल करते हैं, "खाने से पहले **तरबूज़** खाना पेट को ख़ूब धो देता है और बीमारी को जड़ से ख़त्म कर देता है।" (फ़तावा रज़विय्या जदीद, जि. 5, स. 442)

खाने को ऐब मत लगाइये

29 **खाने** में किसी क़िस्म का ऐ़ब न लगाइये मसलन येह मत कहिये कि टेस्टी (लज़ीज़) नहीं, कच्चा रह गया है, नमक कम है, तीखा बहुत है या फीका फीका है वग़ैरा वग़ैरा। पसन्द है तो खा लीजिये, वरना हाथ रोक लीजिये। हां पकाने वाले को मिर्च मसालहे़ की कमी बेशी के लिये हिदायत देना मक़्सूद हो तो तन्हाई में रहनुमाई में मुज़ायक़ा नहीं।

फलों को ऐ़ब लगाना ज़ियादा बुरा है

30 **फलों** को ऐ़ब लगाना इन्सान के पकाए हुए खाने के मुक़ाबले में ज़ियादा बुरा है कि खाना पकाने में इन्सानी हाथों का ज़ियादा दख़्ल है जब कि फलों के मुआ़मले में ऐसा नहीं।

31 **खाने** या सालन वग़ैरा के बीच में से मत लीजिये कि बीच में **बरकत** नाज़िल होती है।

32 **अपनी** त़रफ़ के कनारे से खाइये, हर त़रफ़ हाथ मत मारिये।

33 **अगर** एक थाल में मुख़्तलिफ़ क़िस्म की चीज़ें हैं तो दूसरी त़रफ़ से भी उठा सकते हैं।

صَلُّوا عَلَی الْحَبِيْب ! صَلَّی اللهُ تَعَالٰی عَلٰی مُحَمَّد

खाने के दौरान अच्छी बातें कीजिये

34 **खाना** खाते हुए अच्छा समझ कर चुप रहना आतश परस्तों का त़रीक़ा है, हां बोलने को जी नहीं चाह रहा तो ह़रज नहीं, यूंही फ़ुज़ूल गोई हर ह़ाल में ना मुनासिब ही है, लिहाज़ा खाने के दौरान अच्छी अच्छी बातें करते जाइये मसलन जब भी घर में मिलजुल कर या मेहमानों वग़ैरा के साथ खा रहे हों तो खाने पीने की सुन्नतें बयान कीजिये। ज़हे नसीब ! खाने के इन मदनी फूलों की फ़ोटो कॉपियां फ़्रेम करवा कर या गत्ते पर चस्पां कर के खाने की जगह पर आवेज़ां कर दी जाएं और खाने के अवक़ात में वक़्तन फ़ वक़्तन पढ़ कर सुनाई जाएं।

35 **खाने** के दौरान इस क़िस्म की गुफ़्तगू न कीजिये, जिस से लोगों को घिन आए मसलन दस्त, पेचिश, क़ै वग़ैरा का तज़्किरा।

36 **खाना** खाने वाले के लुक़्मे मत ताड़िये।

अच्छी अच्छी बोटियां ईसार कीजिये

37 **खाने** में से अच्छी अच्छी बोटियां छांट लेना या मिल कर खा रहे हों तो इस लिये बड़े बड़े निवाले उठा कर जल्दी जल्दी निगलना कि कहीं मैं रह न जाऊं या अपनी त़रफ़ ज़ियादा खाना समेट लेना अल ग़रज़ किसी भी त़रीक़े से

दूसरों को मह़रूम कर देना देखने वालों को बदज़न करता है और येह बे मुरव्वतों और ह़रीसों का शेवा है। अच्छी अश्या अपने इस्लामी भाइयों या अहले ख़ाना के लिये ईसार की निय्यत से तर्क करेंगे तो إِنْ شَآءَ اللّٰه عَزَّوَجَلَّ सवाब पाएंगे। जैसा कि सुल्त़ाने दो[2] जहान صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم का फ़रमाने बख़्शिश निशान है, "जो शख़्स किसी चीज़ की ख़्वाहिश रखता हो, फिर उस ख़्वाहिश को रोक कर (दूसरों को) अपने ऊपर तरजीह़ दे तो **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ उसे बख़्श देता है।"

(اتحاف السادة المتقين ج۹ ص۷۷۹)

गिरे हुए दाने खा लेने के फ़ज़ाइल

38 मदीना **खाने** के दौरान अगर कोई दाना या लुक़्मा वग़ैरा गिर जाए तो उठा कर पोंछ कर खा लीजिये कि **मग़्फ़िरत** की बिशारत है।

39 मदीना **ह़दीसे** पाक में है, जो खाने के गिरे हुए टुकड़े उठा कर खाए वोह फ़राख़ी (या'नी ख़ुशह़ाली) की ज़िन्दगी गुज़ारता है और उस की औलाद और औलाद की औलाद में कम अ़क़्ली से ह़िफ़ाज़त रहती है। (كنزالعُمّال ج۱۵ ص ۱۱۱ حديث ۴۰۸۱۵)

40 मदीना **हुज्जतुल इस्लाम** ह़ज़रते सय्यिदुना इमाम मुह़म्मद ग़ज़ाली عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللّٰهِ الْوَالِى नक़्ल फ़रमाते हैं, "रोटी के टुकड़ों और रेज़ों को चुन लीजिये إِنْ شَآءَ اللّٰه عَزَّوَجَلَّ ख़ुशह़ाली नसीब होगी। बच्चे सह़ीह़ व सलामत और **बे ऐब** होंगे और वोह टुकड़े हूरों का महर बनेंगे।" (إحياءُ الْعُلوم ج۲ ص۷)

41 **गिरी** हुई रोटी को उठा कर चूमना जाइज़ है।

42 **दस्तर ख़्वान** पर जो दाने वग़ैरा गिर गए उन्हें मुर्ग़ियों, चिड़ियों, गाय या बकरी वग़ैरा को खिला देना जाइज़ है। या ऐसी जगह एह़तियात़ से रख दें कि च्यूंटियां खा लें।

खाने में फूंक मारना मन्अ़ है

43 **खाने** और चाय वग़ैरा को ठन्डा करने के लिये फूंक मत मारिये कि बे बरकती होगी। ज़ियादा गर्म खाना मत खाइये खाने के क़ाबिल हो जाने का इन्तिज़ार फ़रमा लीजिये।

(مُلَخَّصاً رَدُّالْمُحتَار ج۹ ص ٤٩١)

44 **खाने** के दौरान भी सीधे हाथ से पानी नोश कीजिये। येह न हो कि हाथ आलूद होने के सबब उलटे हाथ में गिलास थाम कर सीधे हाथ की उंगली मस कर के दिल को मना लिया कि सीधे हाथ से पी रहा हूं!

पानी चूस कर पीना सीखिये

45 **पानी** हो या कोई सा मश्रूब हमेशा بِسْمِ اللهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْم पढ़ कर छोटे छोटे घूंट पीना चाहिये मगर चूसने में आवाज़ पैदा न हो, पानी हो या कोई और मश्रूब, बड़े बड़े घूंट पीने से **जिगर की बीमारी** पैदा होती है। आख़िर में اَلْحَمْدُ لِلّٰه कहिये।

अफ़्सोस ! **चूस चूस** कर पीने वाली सुन्नत पर अब शायद ही कोई अ़मल करता हो, बराए करम ! इस के लिये मश्क़ फ़रमाइये और इस सुन्नत को अपनाइये।

46 **जब** कुछ भूक बाक़ी रह जाए खाना तर्क कर दीजिये।

लज़्ज़त सिर्फ़ ज़बान की जड़ तक है

47 **डट** कर खाना सुन्नत नहीं, ज़ियादा खाने को जी चाहे तो अपने आप को इस त़रह़ समझाइये कि सिर्फ़ ज़बान की नोक से जड़ तक लज़्ज़त रहती है ह़ल्क़ में पहुंचते ही लज़्ज़त ख़त्म हो जाती है तो लम्ह़ा भर के ज़ाएक़े की ख़ात़िर सुन्नत का सवाब छोड़ना दानिश मन्दी नहीं। नीज़ ज़ियादा खाने से त़बीअ़त बोझल हो जाती, इ़बादत में सुस्ती आती, मे'दा ख़राब होता और बा'ज़ों को मोटापा आता है। क़ब्ज़, गेस शूगर और दिल वग़ैरा की बीमारियों का इम्कान बढ़ता है।

48 **फ़राग़त** के बा'द पहले बीच की फिर शहादत की उंगली और आख़िर में अंगूठा तीन[3] तीन[3] बार चाटिये। "सरकारे मदीना صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم खाने के बा'द मुबारक उंगलियों को तीन मरतबा चाटते।" (شمائل ترمذی ص ٦١ حدیث ١٣٨)

बरतन चाट लीजिये

49 **बरतन** भी चाट लीजिये। ह़दीसे पाक में है, "खाने के बा'द जो शख़्स बरतन चाटता है तो वोह बरतन उस के लिये

दुआ़ करता है और कहता है, **अल्लाह** तआ़ला तुझे जहन्नम की आग से **आज़ाद** करे जिस त़रह़ तूने मुझे **शैत़ान** से आज़ाद किया।" (کنزالعُمّال ج۱۵ ص ۱۱۱ حدیث ۴۰۸۲۲) और एक रिवायत में है कि बरतन उस के लिये इस्तिग़्फ़ार करता है।

(اِبنِ ماجه ج۴ ص۱۴ حدیث ۳۲۷۱)

50 **जिस** बरतन में खाया उस को चाटने के बा'द धो कर पी लीजिये اِنْ شَآءَاللّٰه عَزَّوَجَلَّ एक ग़ुलाम आज़ाद करने का सवाब मिलेगा। (اِحیاءُ العُلُوم ج۲ ص ۷)

धो कर पीने का त़रीक़ा

51 **चाटना** और धोना उसी वक़्त कहलाएगा जब कि ग़िज़ा का कोई जुज़ और शोरबे का असर वग़ैरा बाक़ी न रहे। लिहाज़ा थोड़ा सा पानी डाल कर बरतन के ऊपरी कनारे से ले कर नीचे तक हर त़रफ़ उंगली वग़ैरा से अच्छी त़रह़ धो कर पीना चाहिये। दो या तीन बार इसी त़रह़ धो कर पी लेंगे तो اِنْ شَآءَاللّٰه عَزَّوَجَلَّ बरतन ख़ूब साफ़ हो जाएगा।

52 **पीने** के बा'द रिकाबी या थाल में मा'मूली सा बचा हुवा पानी भी उंगली से जम्अ़ कर के पी लेना चाहिये, ऐसा न हो कि मसालहे़ का कोई ज़र्रा ही कहीं चिपका रह जाए और उसी में बरकत भी चली जाए ! कि ह़दीसे पाक में येह भी है, "तुम नहीं जानते कि खाने के किस हिस्से में **बरकत** है।"

(صحیح مسلم ص۱۱۲۳ حدیث ۱۰۲۳)

53 **सालन** के शोरबे से आलूदा कटोरे, चम्मच नीज़ चाय, लस्सी फलों के रस (JUICES) शरबत और दीगर मश्रूबात के आलूदा पियाले, गिलास और जग वग़ैरा को धो पी कर इसी त़रह़ साफ़ कर लीजिये कि गिज़ा का कोई ज़र्रा या असर बाक़ी न रहे और यूं ख़ूब बरकतें लूटिये।

54 **गिलास** में बचे हुए मुसल्मान के साफ़ सुथरे झूटे पानी को क़ाबिले इस्ति'माल होने के बा वुजूद ख़्वाह म ख़्वाह फेंक कर ज़ाएअ़ कर देना इसराफ़ है और इसराफ़ ह़राम।

(मुलख़्ख़सन सुन्नी बिहिश्ती ज़ेवर, स. 567)

55 **आख़िर** में اَلْحَمْدُ لِلّٰه कहिये। अव्वल आख़िर मासूर (या'नी क़ुरआन व ह़दीस की) दुआ़एं भी याद हों तो पढ़िये।

56 **साबून** से अच्छी त़रह़ हाथ धो लीजिये ताकि बू और चिक्नाहट जाती रहे।

खाने के बा'द मस्ह़ करना सुन्नत है

57 **ह़दीसे** पाक में येह भी है, (खाने से फ़राग़त के बा'द) सरकारे मदीना صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰی عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने हाथ धोए और हाथों की तरी से मुंह और कलाइयों और सरे अक़्दस पर मस्ह़ कर लिया और अपने प्यारे सह़ाबी رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْه से फ़रमाया, "इकराश !

जिस चीज़ को आग ने छुवा (जो आग से पकाई गई हो) उस के खाने के बा'द येह वुज़ू है।"

(ترمذی شریف ج ۳ ص ۳۳۵ حدیث ۱۸۵۵)

58 **खाने** के बा'द दांतों का **ख़िलाल** कीजिये।

पिछले गुनाह मुआ़फ़

59 **हुज़ूर** صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने इर्शाद फ़रमाया, "जो शख़्स खाना खाए और येह कलिमात कहे तो उस के गुज़श्ता तमाम **गुनाह मुआ़फ़** कर दिये जाते हैं :

दुआ़ के वोह कलिमात येह हैं :

"اَلْحَمْدُ لِلّٰهِ الَّذِیْ اَطْعَمَنِیْ هٰذَا وَ رَزَقَنِیْهِ مِنْ غَیْرِ حَوْلٍ مِّنِّیْ وَلَا قُوَّةٍ."

तरजमा : तमाम ता'रीफ़ें **अल्लाह** तआ़ला के लिये हैं जिस ने मुझे येह खाना खिलाया और मेरी किसी महारत व कुव्वत के बिग़ैर मुझे येह रिज़्क़ अ़त़ा फ़रमाया।" (ترمذی شریف ج۵ ص ۲۸۴)

60 **खाने** के बा'द येह दुआ़ भी पढ़िये :

اَلْحَمْدُ لِلّٰهِ الَّذِیْ اَطْعَمَنَا وَ سَقَانَا وَ جَعَلَنَا مُسْلِمِیْنَ۔

तरजमा : अल्लाह عَزَّوَجَلَّ का शुक्र है जिस ने हमें खिलाया, पिलाया और हमें मुसल्मान बनाया। (ابوداوٗد شریف ج۳ ص ۵۱۳ حدیث ۳۸۵۰)

फ़रमाने मुस्तफ़ा صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم : जब तुम रसूलों पर दुरूद पढ़ो तो मुझ पर भी पढ़ो, बेशक मैं तमाम जहानों के रब का रसूल हूं। (جمع الجوامع)

61 **अगर** किसी ने **खिलाया** हो तो येह दुआ भी पढ़िये:

اَللّٰھُمَّ اَطْعِمْ مَنْ اَطْعَمَنِیْ وَ اسْقِ مَنْ سَقَانِیْ .

(صحيح مسلم ص ١٣٦ حديث ٢٠٥٥)

तरजमा : ऐ **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ उस को **खिला** जिस ने मुझे **खिलाया** और उस को पिला जिस ने मुझे पिलाया।

62 **खाना** खाने के बा'द येह दुआ भी पढ़िये :

اَللّٰھُمَّ بَارِکْ لَنَا فِيْهِ وَاَ طْعِمْنَا خَيْرًا مِّنْهُ۔

तरजमा : ऐ **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ ! हमारे लिये इस खाने में बरकत अ़ता फ़रमा और इस से बेहतर खाना हमें खिला। (ابوداوٗد شريف ج٣ ص ٤٧٥ حديث ٣٧٣٠)

63 **दूध** पीने के बा'द येह दुआ पढ़िये :

اَللّٰھُمَّ بَارِکْ لَنَا فِيْهِ وَزِدْنَا مِنْهُ۔

तरजमा : ऐ **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ ! हमारे लिये इस में बरकत दे और हमें इस से ज़ियादा इनायत फ़रमा। (ايضاً ص)

64 **सरकारे** मदीना صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم को ह़ल्वा, शहद, सिरका, खजूर, तरबूज़, ककड़ी और लौकी (कद्दू शरीफ़) बहुत पसन्द थे।

65 **गोश्त** में दस्त (बाज़ू) गरदन और कमर का गोश्त मरग़ूब था।

66 **आक़ाए** मदीना صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم कभी कभी खजूर और

फ़रमाने मुस्तफ़ा صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰی عَلَیْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم : मुझ पर दुरूद पढ़ कर अपनी मजालिस को आरास्ता करो कि तुम्हारा दुरूद पढ़ना बरोज़े क़ियामत तुम्हारे लिये नूर होगा। (فردوس الاخبار)

तरबूज़ या खजूर और ककड़ी या खजूर और रोटी मिला कर तनावुल फ़रमाते थे।

67 **खुरचन** सरकारे मदीना صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰی عَلَیْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم को पसन्द थी।

68 **सरीद** या'नी सालन के शोरबे में भिगोई हुई रोटी के टुकड़े सरकारे मदीना صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰی عَلَیْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم को बहुत पसन्द थे।

69 **एक** उंगली से खाना शैतान का और दो उंग्लियों से खाना मग़रूरों का तरीक़ा है और तीन उंग्लियों से खाना सुन्नते अम्बिया عَلَيْهِمُ السَّلَام है।

कितना खाएं ?

70 **भूक** के तीन[3] हिस्से करना बेहतर है। एक हिस्सा **खाना**, एक हिस्सा **पानी** और एक हिस्सा **हवा**। मसलन तीन[3] रोटी में सेर हो जाते हैं तो एक रोटी खाइये एक रोटी जितना पानी और बाक़ी हवा के लिये ख़ाली छोड़ दीजिये। अगर पेट भर कर भी खा लिया तो मुबाह़ है कोई गुनाह नहीं। मगर कम खाने की दीनी व दुन्यवी बरकतें मरह़बा ! तजरिबा कर के देख लीजिये। اِنْ شَآءَ اللّٰه عَزَّوَجَلَّ पेट ऐसा दुरुस्त हो जाएगा कि आप हैरान रह जाएंगे। **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ हम सब को **पेट का कुफ़्ले मदीना** नसीब फ़रमाए। या'नी ह़राम से बचने और ह़लाल खाना भी ज़रूरत से ज़ियादा खाने से बचाए। اٰمِين بِجَاهِ النَّبِيِّ الْاَمِين صَلَّى اللّٰه تعالٰی عليه واٰله وسلَّم

फ़रमाने मुस्त़फ़ा صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم : शबे जुमुआ़ और रोज़े जुमुआ़ मुझ पर कसरत से दुरूद पढ़ो क्यूं कि तुम्हारा दुरूद मुझ पर पेश किया जाता है। (طبرانی)

क़ैलूला सुन्नत है

71 **दोपहर** के खाने के बा'द क़ैलूला कीजिये कि दोपहर के वक़्त लैटने को **क़ैलूला** कहते हैं और येह खुसूसन रात को इबादत करने वालों के लिये सुन्नत है कि इस से रात की इबादत में आसानी हो जाती है। शाम को खाने के बा'द कम अज़् कम **150** क़दम चलिये। शाम के खाने के बा'द मुत़्लक़न टहलना बेहतर है और येह डेढ़ सौ क़दम चलने का क़ौल अत़िब्बा का है।

72 **खाने** के बा'द اَلْحَمْدُ لِله ज़रूर कहिये।

73 **दस्तर ख़्वान** उठाए जाने से पहले मत उठिये।

74 **खाने** के बा'द हाथ अच्छी त़रह़ धो कर पोंछ लीजिये। साबून भी इस्ति'माल कर सकते हैं।

75 **कागज़** से हाथ पोंछना मन्अ़ है।

76 **तोलिये** से हाथ पोंछ सकते हैं, पहने हुए कपड़े से हाथ मत पोंछिये।

बरकत उड़ाने वाले अफ़्आ़ल

77 **ख़लीलुल उ़लमा** मुफ़्ती मुह़म्मद ख़लील ख़ान बरकाती رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰى عَلَيْه फ़रमाते हैं, "जिस बरतन में खाना खाया है उस में हाथ धोना या हाथ धो कर कुरते या तहबन्द के दामन या आंचल से पोंछना **बरकत** को उड़ा देता है।"

(मुलख़्ख़सन सुन्नी बिहिश्ती ज़ेवर, स. 578)

फ़रमाने मुस्त़फ़ा صَلَّى اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم : जिस ने मुझ पर एक बार दुरूदे पाक पढ़ा अल्लाह عَزَّوَجَلَّ उस पर दस रह़मतें भेजता है। (مسلم)

78 **खाना** खाने के फ़ौरन बा'द सख़्त वरज़िश करना या ज़ियादा वज़्नी चीज़ उठाना, घसीटना वग़ैरा सख़्त मेह़नत के काम से आंत उतर जाने, एपेन्डिक्स हो जाने या पेट बढ़ने के अमराज़ पैदा हो सकते हैं।

79 **खाने** के बा'द اَلْحَمْدُ لِلّٰہ बुलन्द आवाज़ से उस वक़्त कहिये जब सब खाने से फ़ारिग़ हो चुके हों वरना आहिस्ता कहिये। (رَدُّالْمُحتار ج۹ ص٤٩٠) खाने के बा'द दुआएं भी उसी वक़्त पढ़ाई जाएं जब हर फ़र्द फ़ारिग़ हो चुका हो वरना जो खा रहा है वोह शर्मिन्दा होगा।

किसी के दरख़्त का फल खाना कैसा ?

80 **बाग़** में पहुंचा वहां फल गिरे हुए हैं तो जब तक मालिके बाग़ की इजाज़त न हो, फल नहीं खा सकता और इजाज़त दोनों[2] त़रह़ हो सकती है। या सराह़तन इजाज़त हो मसलन मालिक ने कह दिया कि गिरे हुए फलों को खा सकते हो या दलालतन इजाज़त हो या'नी वहां ऐसा उ़र्फ़ व आ़दत है कि बाग़ वाले गिरे हुए फलों से लोगों को मन्अ़ नहीं करते। दरख़्तों से फल तोड़ कर खाने की इजाज़त नहीं मगर जब कि फलों की कसरत हो और मा'लूम हो कि तोड़ कर खाने

फ़रमाने मुस्तफ़ा صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم: उस शख़्स की नाक ख़ाक आलूद हो जिस के पास मेरा ज़िक्र हो और वोह मुझ पर दुरूदे पाक न पढ़े। (ترمذی)

में मालिक को ना गवारी नहीं होगी तो तोड़ कर भी खा सकता है। मगर किसी सूरत में येह इजाज़त नहीं कि वहां से फल उठा लाए। (مُلَخَّصاً عالمگیری ج٥ ص٢٢٩) इन सब सूरतों में उ़र्फ़ व आ़दत का लिह़ाज़ है और अगर उ़र्फ़ व आ़दत न हो या मा'लूम हो कि मालिक को ना गवारी होगी तो गिरे हुए फल भी खाना जाइज़ नहीं।

बिग़ैर पूछे खाना कैसा ?

81 **दोस्त** के घर गया कोई चीज़ पकी हुई मिली खुद ले कर खा ली या उस के बाग़ में गया और फल तोड़ कर खा लिये अगर मा'लूम है कि उसे ना गवार न होगा तो खाना जाइज़ है मगर यहां अच्छी त़रह ग़ौर कर लेने की ज़रूरत है, बसा अवक़ात ऐसा भी होता है कि येह समझता है कि उसे ना गवार न होगा ह़ालां कि उसे ना गवार है।

(مُلَخَّصاً عالمگیری ج٥ ص٢٢٩)

82 **ज़बीह़े** का "**ह़राम मग़्ज़**" खाना मम्नूअ़ है लिहाज़ा पकाते वक़्त गरदन, चांप और पीठ की रीढ़ की हड्डी के गोश्त को अच्छी त़रह देख कर ह़राम मग़्ज़ अलग कर लीजिये।

83 **मुर्ग़ी** का ह़राम **मग़्ज़** बारीक होता है और उस के निकालने में ह़रज है लिहाज़ा पकाने में रह गया तो मुज़ायक़ा नहीं। मगर खाया न जाए, इसी त़रह मुर्ग़ी की गरदन के पट्ठे और काली डोरी नुमा ख़ून की रगें भी न खाएं।

84 **ज़बीहे** का "ग़ुदूद" (या'नी गांठ, गिल्टी) खाना मकरूहे तहरीमी है लिहाज़ा पकाने से क़ब्ल ही इस को निकाल दीजिये।

मुर्ग़ी का दिल

85 **मुर्ग़ी** का दिल फेंकना नहीं चाहिये। लम्बाई में चार चीरे डाल कर या जिस त़रह़ भी मुम्किन हो चीर कर उस में से ख़ून अच्छी त़रह़ साफ़ कर के फिर सालन में डाल दीजिये।

पकी हुई ख़ून की रगें मत खाइये

86 **ज़बीहे** के गोश्त के अन्दर जो ख़ून रह गया वोह पाक है मगर उस ख़ून का खाना मम्नूअ़ है। लिहाज़ा गोश्त के वोह हिस्से जिन में उ़मूमन ख़ून रह जाता है उन को अच्छी त़रह़ देख लीजिये। मसलन मुर्ग़ी की गरदन, पर और टांग वग़ैरा के अन्दर से काली डोरियां निकाल लिया करें कि येह ख़ून की नसें होती हैं, ख़ून पकने के बा'द काला हो जाता है।

"बिस्मिल्लाह करो" कहना सख़्त मम्नूअ़ है

87 **एक** खाना खा रहा है दूसरा आया पहले ने उस से कहा, "आओ खाना खा लो" दूसरे ने कहा, "**बिस्मिल्लाह करो !**" येह बहुत सख़्त मम्नूअ़ है ऐसे मौक़ए़ पर दुआइया अल्फ़ाज़ कहने चाहिएं मसलन कहे, "**अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ बरकत दे।" (मुलख़्ख़स अज़ बहारे शरीअ़त, हिस्सा : 16, स. 32)

सड़ा हुवा गोश्त खाना ह़राम है

88 **गोश्त** सड़ गया तो उस का खाना ह़राम है। इसी त़रह़ जो खाना ख़राब हो जाता है वोह भी नहीं खा सकते। ख़राब होने की अ़लामत येह है कि उस में फफूंदी, बदबू या खट्टी बू पैदा हो जाती है। अगर शोरबा हो तो उस पर झाग भी आ जाता है। दालें, खिचड़ा और खटाई वाला सालन जल्द ख़राब होता है।

साबित हरी मिर्चें

89 **खाने** के अन्दर पकी हुई साबित हरी या सुर्ख़ मिर्चें खाते वक़्त फेंक देने के बजाए मुम्किन हो तो पहले से चुन कर अलग कर लीजिये और पीस कर दोबारा काम में लाइये। इसी त़रह़ पके हुए गर्म मसाले भी अगर क़ाबिले इस्ति'माल हों तो ज़ाएअ़ न कीजिये।

बची हुई रोटियों का क्या करें?

90 **बची** हुई रोटी और शोरबा वग़ैरा फेंकना इसराफ़ है। मुर्ग़ी, बकरी या गाय वग़ैरा को खिला दें। चन्द रोज़ की बची हुई रोटियों के टुकड़े कर के शोरबे में पका लीजिये। اِنْ شَآءَ اللّٰه عَزَّوَجَلَّ बेहतरीन खाना बन जाएगा।

केकड़ा और झींगा खाना कैसा

मदीना 91 **मछली** के सिवा दरिया का हर जानवर ह़राम है। जो मछली बिग़ैर मारे ख़ुद ही मर कर पानी में उलटी तैर गई वोह ह़राम है, केकड़ा खाना भी ह़राम है, झींगे में इख़्तिलाफ़ है खाना जाइज़ है मगर बचना अफ़्ज़ल।

मदीना 92 **टिड्डी** मरी हुई भी ह़लाल है टिड्डी और मछली दोनों[2] बिग़ैर ज़ब्ह़ के ह़लाल हैं।

या रब्बे मुस्त़फ़ा عَزَّوَجَلَّ ! हमारी मग़्फ़िरत फ़रमा, हमें इतनी बार "आदाबे त़आ़म" का मुत़ालआ़ करने की तौफ़ीक़ अ़त़ा फ़रमा कि खाने की सुन्नतें और आदाब याद हो जाएं और हमें उन पर अ़मल करने की भी तौफ़ीक़ इनायत फ़रमा।

اٰمِين بِجاہِ النَّبِیِّ الْاَمین صَلَّی اللہ تعالیٰ علیہ واٰلہٖ وسلّم

صَلُّوا عَلَی الْحَبِیْب! صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلٰی مُحَمَّد

تُوبُوا اِلَی اللّٰہ! اَسْتَغْفِرُ اللّٰہ

صَلُّوا عَلَی الْحَبِیْب! صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلٰی مُحَمَّد

ख़ामोशी बिग़ैर सल्त़नत की हैबत है।

त़ालिबे ग़मे मदीना
व बक़ीअ़
व मग़्फ़िरत
17 मुहर्रमुल ह़राम 1427 हि.

اَلْحَمْدُ لِلّٰهِ رَبِّ الْعٰلَمِيْنَ وَ الصَّلٰوةُ وَ السَّلَامُ عَلٰى سَيِّدِ الْمُرْسَلِيْنَ

اَمَّا بَعْدُ فَاَعُوْذُ بِاللّٰهِ مِنَ الشَّيْطٰنِ الرَّجِيْمِ ط بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ ط

जिन्नात की ग़िज़ाओं का बयान

दुरूद शरीफ़ की फ़ज़ीलत

सुल्त़ाने दो[2] जहान, मदीने के सुल्त़ान, रह़मते आ़लमिय्यान, सरवरे ज़ीशान صلّی اللہ تعالٰی علیہ والہٖ وسلّم का फ़रमाने जन्नत निशान है, जो मुझ पर **जुमुआ़** के दिन और रात सो[100] मरतबा दुरूद शरीफ़ पढ़े **अल्लाह** तआ़ला उस की सो[100] ह़ाजतें पूरी फ़रमाएगा । सत्तर[70] आख़िरत की और तीस[30] दुन्या की । (کَنزُ العُمّال ج۱ ص۲۵٦ الحدیث۲۲۳۹)

صَلُّوْا عَلَى الْحَبِيْب ! صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلٰى مُحَمَّد

जिन्नात का वफ़्द बारगाहे रिसालत में : ह़ज़रते सय्यिदुना अ़ब्दुल्लाह बिन मस्ऊ़द رضی اللہ تعالٰی عنہ से रिवायत है, नबिय्ये रह़मत, शफ़ीए़ उम्मत, शहन्शाहे नुबुव्वत, ताजदारे रिसालत صلّی اللہ تعالٰی علیہ والہٖ وسلّم की ख़िदमते सरापा अ़ज़मत में जिन्नात का एक वफ़्द ह़ाज़िर हो कर अ़र्ज़ गुज़ार हुवा, "आप की उम्मत **हड्डी, गोबर और कोएले** से इस्तिन्जा न करे क्यूं कि **अल्लाह** तआ़ला ने इस में हमारा रिज़्क़ मुक़र्रर फ़रमा दिया है तो नबिय्ये करीम صلّی اللہ تعالٰی علیہ والہٖ وسلّم ने (उम्मत को) इस से मन्अ़ फ़रमा दिया ।" (ابوداوٗد ج۱ ص٤٨ حدیث٣٩)

फ़रमाने मुस्तफ़ा صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم : जो मुझ पर रोज़े जुमुआ दुरूद शरीफ़ पढ़ेगा मैं क़ियामत के दिन उस की शफ़ाअ़त करूंगा। (جمع الجوامع)

जिन्नात इन्सानों से नव गुना हैं : प्यारे प्यारे इस्लामी भाइयो ! जिन्नात भी **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ की एक मख़्लूक़ है जिसे आग से पैदा किया गया है, येह खाते पीते हैं और निकाह़ भी करते हैं। इन्सानों के मुक़ाबले में इन की ता'दाद **नव गुना** है। ह़ज़रते सय्यिदुना अ़म्र बिकाली رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ फ़रमाते हैं, **जब इन्सान का एक बच्चा पैदा होता है तो जिन्नात के यहां नव बच्चे पैदा होते हैं।** (جامع البیان ج۹ ص۸۵حدیث۲۴۸۰۳)

मुसल्मान के दस्तर ख़्वान पर जिन्नात : ह़ज़रते अ़ल्लामा जलालुद्दीन सुयूति़श्शाफ़ेई رَحْمَۃُ اللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہ एक ताबेई बुज़ुर्ग से नक़्ल फ़रमाते हैं, **तमाम मुसल्मानों के घरों की छतों पर मुसल्मान जिन्नात रहते हैं।** जब दोपहर और रात को दस्तर ख़्वान लगाया जाता है या'नी घर के अफ़राद खाना खाते हैं तो जिन्नात भी छतों से उतर आते और साथ ही बैठ कर खाने लग जाते हैं ! उन के ज़रीए़ **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ **शरीर जिन्नात** को भगा देता है। (لقط المرجان فی احکام الجان للسیوطی ص۴۴)

सरकार صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم **से सांप की सरगोशी : ह़ज़रते** सय्यिदुना जाबिर बिन अ़ब्दुल्लाह رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ फ़रमाते हैं, मैं **रसूलुल्लाह** صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم की ख़िदमते बा बरकत में ह़ाज़िर था कि अचानक एक **सांप** आया और आप صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم के पहलूए मुबारक में

खड़ा हो गया फिर उस ने अपना मुंह हुज़ूरे अकरम, नूरे मुजस्सम, शाहे बनी आदम, रसूले मोहूतशम صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰی عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم के कान मुबारक के क़रीब कर लिया गोया आप صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰی عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم से सरगोशी करने लगा तो नबिय्ये करीम, रऊफ़ुर्रहीम عَلَيْهِ اَفْضَلُ الصَّلٰوةِ وَالتَّسْلِيْم ने इर्शाद फ़रमाया, "हां ठीक है।" फिर वोह **सांप** वापस चला गया। मैं ने हुज़ूरे अक़्दस صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰی عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم से दरयाफ़्त किया तो सरवरे काएनात, शाहे मौजूदात صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰی عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने मुझे ख़बर दी कि वोह **जिन्नात** का एक फ़र्द था और वोह येह कह गया है कि आप صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰی عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم अपनी उम्मत को हुक्म फ़रमा दीजिये कि वोह **गोबर** और **बोसीदा हड्डी** से इस्तिन्जा न किया करें इस लिये कि **अल्लाह** तआला ने उस में हमारा रिज़्क़ बना दिया है। (لقط المرجان فی احکام الجان ص٤٦)

प्यारे प्यारे इस्लामी भाइयो ! मा'लूम हुवा हमारे मीठे मीठे आक़ा صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰی عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم की बारगाहे बेकस पनाह में जिन्नात भी फ़रियाद लाते हैं और येह भी पता चला कि हड्डी और गोबर जिन्नात की ग़िज़ा है। हमारे लिये हड्डी, गोबर और कोएले से इस्तिन्जा करना मक्रूह है। इस ज़िम्न में एक और **हिकायत** मुलाहज़ा हो चुनान्चे

काले आदमी : हज़रते सय्यिदुना अ़ब्दुल्लाह बिन मस्ऊ़द رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْهُ फ़रमाते हैं, हिजरत से पहले एक मरतबा सरकारे नामदार صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰی عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم

मक्कए मुकर्रमा زَادَهَا اللّٰهُ شَرَفًا وَّتَعْظِيْمًا के कुर्बो जवार में तशरीफ़ ले गए, वहां पर हुज़ूरे पुरनूर صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने मेरे लिये एक लकीर खींच दी और फ़रमाया, जब तक मैं तुम्हारे पास न आ जाऊं तुम किसी से कोई गुफ़्तगू न करना फिर फ़रमाया, कोई चीज़ देख कर घबराना भी मत। फिर थोड़ा सा आगे बढ़ कर बैठ गए। अचानक आप صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم के पास **काले आदमी** आ गए गोया वोह लोग ज़ंगी (ह़बशी) हैं और वोह लोग उस शक्ल के साथ जैसा कि **अल्लाह** तबारक व तआ़ला इर्शाद फ़रमाता है : (پ۲۹ جن ۱۹) كَادُوْا يَكُوْنُوْنَ عَلَيْهِ لِبَدًا ؕ "**तरजमए कन्ज़ुल ईमान :** तो क़रीब था कि वोह जिन्न उस पर ठठ के ठठ हो जाएं।" फिर वोह हुज़ूरे अकरम, नूरे मुजस्सम, शाहे बनी आदम, रसूले मोह़्तशम صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم के पास से जाने लगे तो मैं ने उन से सुना वोह अ़र्ज़ कर रहे थे, **या रसूलल्लाह** صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ! हमारा घर बहुत दूर है, अब हम जा रहे हैं, आप صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم हमें ज़ादे सफ़र इनायत फ़रमा दीजिये। सुल्ताने इन्सो जान, रह़मते आ़लमिय्यान, सरवरे ज़ीशान صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने इर्शाद फ़रमाया, "**गोबर** तुम्हारी गिज़ा है और तुम जिस **हड्डी** के पास जाओगे उस पर तुम्हारे लिये गोश्त होगा और जिस **गोबर** के पास जाओगे वोह तुम्हारे लिये खजूर बन जाएगी।" जब वोह लोग वापस चले गए तो मैं ने हुज़ूरे

अक़्दस صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم की ख़िदमत में अ़र्ज़ की, येह कौन लोग थे? हुज़ूर रह़्मतुल्लिल आ़लमीन صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने इर्शाद फ़रमाया, येह नसीबैन शह्‌र के **जिन्नात** थे। (لَقط المَرجان فی احکام الجان ص ٤٧)

शहन्शाहो गदा जिन्नो बशर और औलियाउल्लाह
है सब का तेरे टुकड़ों पर गुज़ारा या रसूलल्लाह

صَلُّوْا عَلَى الْحَبِيْب! صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلٰى مُحَمَّد

जिन्नात लीमूं से घबराते हैं : क़ाज़ी अ़ली बिन ह़सन ख़लई की "सवानेहे ह़यात" में है कि जिन्नात उन के पास आते रहते थे। एक मरतबा अ़र्सए दराज़ तक नहीं आए तो क़ाज़ी साह़िब ने उन से इस की वज्ह पूछी तो जिन्नों ने बताया कि **आप के घर में लीमूं था और हम ऐसे घर में नहीं आते जिस में लीमूं होता है।** (ایضاً، ص١٠٣)

जिन्नात सफ़ेद मुर्ग़ से डरते हैं : दो[2] फ़रामीने मुस्तफ़ा صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم : ﴾1﴿ **सफ़ेद मुर्ग़** रखा करो इस लिये कि जिस घर में **सफ़ेद मुर्ग़** होगा तो न शैत़ान उस घर के क़रीब होगा और न जादूगर उन घरों के क़रीब होगा जो उस घर के इर्द गिर्द हैं। (المعجم الاوسط ج ١ ص ٢٠١ حدیث ٦٧٧)

﴾2﴿ **सफ़ेद मुर्ग़** को बुरा भला मत कहो इस लिये कि येह मेरा दोस्त है और मैं इस का दोस्त हूं और इस का दुश्मन मेरा दुश्मन है जहां तक इस की आवाज़ पहुंचती है येह **जिन्नात** को दफ़्अ़ करता है। (لَقط المَرجان فی احکام الجان ص ١٦٥)

जिन्नात के जानवरों का चारा : क़ौमे जिन्न के वफ़्द जो हुज़ूरे अकरम, नूरे मुजस्सम, शाहे बनी आदम, रसूले मोह्तशम صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم की बारगाहे मोह्तरम में हाज़िर हुए और अपने लिये और अपने जानवरों के लिये ख़ूराक त़लब की। उन से इर्शाद हुवा, तुम्हारे लिये **हड्डी** है जिस पर **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ का नामे पाक लिया जाए या'नी ह़लाल मुज़क्का (पाक) जानवर की हड्डी हो वोह तुम्हारे हाथ में इस ह़ाल पर होगी जैसी उस वक़्त थी जब उस पर गोश्त पूरा और कामिल था (या'नी गोश्त छुड़ाई हुई हड्डी तुम्हें मअ़ गोश्त मिलेगी) और हर **मेंगनी** तुम्हारे चौपायों के लिये चारा है। और फिर इन्सानों से इर्शाद फ़रमाया, **हड्डी** और **मेंगनी** से इस्तिन्जा न करो कि वोह तुम्हारे भाइयों (मुसल्मान जिन्नात) की ख़ूराक है।

(صحیح مسلم ص۲۳۶ حدیث ۴۵۰)

जिन्नात इग़्वा भी करते हैं ! : एक अन्सारी رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْهُ इशा की नमाज़ के लिये घर से निकले तो उन को **जिन्नात** ने **इग़्वा** कर लिया और कई साल तक ग़ाइब रखा। फिर वोह मदीनए मुनव्वरह زَادَهَا اللّٰهُ شَرَفًا وَّتَعْظِيْمًا तशरीफ़ लाए तो अमीरुल मुअमिनीन ह़ज़रते सय्यिदुना उ़मर फ़ारूक़े आ'ज़म رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْهُ ने उन से इस सिल्सिले में दरयाफ़्त किया तो उन्हों ने बताया कि मुझे **जिन्नात** पकड़ कर ले गए थे और मैं एक ज़माने तक उन के पास रहा। इस के बा'द **मुसल्मान जिन्नात** ने (उन जिन्नात से) जिहाद किया और उन में से बहुत से अफ़्राद के साथ मुझे भी क़ैद कर लिया। **मुसल्मान जिन्नात** आपस में कहने लगे कि

येह इन्सान मुसल्मान है इस को क़ैद करना मुनासिब नहीं। फिर उन्हों ने मुझे इख़्तियार दिया कि चाहे मैं उन के पास क़ियाम करूं या अपने अहलो इयाल के पास चला जाऊं। मैं ने घर आने को इख़्तियार कर लिया तो वोह **जिन्नात** मुझे मदीनए मुनव्वरह زَادَهَا اللّٰهُ شَرَفًا وَّتَعْظِيْمًا ले आए। अमीरुल मुअमिनीन हज़रते सय्यिदुना उ़मर फ़ारूके़ आ'ज़म رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْه ने उन की गिज़ाओं के बारे में दरयाफ़्त किया तो उस अन्सारी رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْه ने अ़र्ज़ की, वोह **लोबिया** (नामी सब्ज़ी) खाते हैं और वोह चीज़ें जिन में **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ का नाम नहीं लिया जाता। (मसलन बिग़ैर **बिस्मिल्लाह** पढ़े खाने वाले की गिज़ा) फिर हज़रते सय्यिदुना उ़मर फ़ारूके़ आ'ज़म رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْه ने उन के पीने के बारे में पूछा तो बताया **जदफ़**। (حياة الحيوان الكبرى ج ١ ص ٢٩٥) **जदफ़** से मुराद या तो वोह यमनी घास है जिसे खाने वाले को पानी पीने की मोह़ताजी नहीं रहती। या इस से मुराद पानी वग़ैरा का वोह बरतन है जिसे ढांप कर न रखा जाए।

(النهاية فى غريب الحديث والاثر، ج ١ ص ٢٤٠)

صَلُّوْا عَلَى الْحَبِيْب! صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلٰى مُحَمَّد

जिन्नात और जादू से ह़िफ़ाज़त के लिये : प्यारे प्यारे इस्लामी भाइयो ! इस ह़िकायत से **काफ़िर जिन्नात** की मुख़्तलिफ़ गिज़ाएं सामने आईं या'नी वोह **लोबिया** भी खाते हैं और जिन खानों पर **बिस्मिल्लाह** नहीं पढ़ी जाती उन को भी इस्ति'माल करते हैं नीज़ खाने पीने की चीज़ मौजूद होने के बा वुजूद जो बरतन खुला छोड़ दिया जाता

फ़रमाने मुस्तफ़ा صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰی عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم : जिस ने मुझ पर रोज़े जुमुआ दो सो बार दुरूदे पाक पढ़ा उस के दो सो साल के गुनाह मुआफ़ होंगे। (جمع الجوامع)

है उस में से भी खाते हैं। नीज़ येह भी मा'लूम हुवा कि **जिन्नात** इन्सानों को **इग़वा** भी कर जाते हैं और येह इन्तिहाई तश्वीश की बात है उन से हिफ़ाज़त के लिये दुन्यवी **अस्लहा** बल्कि इन्सानी फ़ौज भी कारआमद नहीं। इस के लिये "मदनी हथियार" दरकार हैं। दा'वते इस्लामी के इदारे मक्तबतुल मदीना की त़रफ़ से शाएअ़ कर्दा 16 सफ़्हात पर मुश्तमिल जेबी साइज़ के रिसाले **40 रूहानी इलाज** में से चार "मदनी हथियार" हाज़िर हैं ﴾1﴿ **يَا مُهَيْمِنُ** 29 बार (दिन में किसी भी वक़्त) रोज़ाना पढ़ने वाला اِنْ شَآءَاللّٰه عَزَّوَجَلَّ हर आफ़तो बला से महफ़ूज़ रहेगा ﴾2﴿ **يَا وَكِيْلُ** सात बार जो रोज़ाना अ़स्र के वक़्त पढ़ लिया करे اِنْ شَآءَاللّٰه عَزَّوَجَلَّ हर आफ़त से पनाह पाए ﴾3﴿ **يَا مُحْيِىُ،يَا مُمِيْتُ** सात बार रोज़ाना पढ़ कर जो अपने ऊपर दम कर लिया करे اِنْ شَآءَاللّٰه عَزَّوَجَلَّ उस पर जादू असर नहीं करेगा ﴾4﴿ **يَا قَادِرُ** जो वुज़ू के दौरान हर उ़ज़्व धोते हुए पढ़ने का मा'मूल बना ले اِنْ شَآءَاللّٰه عَزَّوَجَلَّ दुश्मन (जिन्न और इन्सान) उस को **इग़वा** नहीं कर सकेगा। (वुज़ू में हर उ़ज़्व धोते वक़्त दुरूद शरीफ़ भी पढ़िये कि मुस्तह़ब है और **يَا قَادِرُ** भी पढ़ते रहिये) अपने अपने पीरो मुर्शिद की इजाज़त से हिफ़ाज़त के अवराद भी पढ़ते रहिये।[1]

मदीना

1 : अमीरे अहले सुन्नत مَدَّظِلُّهُ الْعَالِی ने उर्दू ज़बान में शजरए क़ादिरिय्या रज़विय्या अ़त्तारिय्या मुरत्तब किया है इस में हिफ़ाज़त के मुख़्तलिफ़ अवराद शामिल हैं इस शजरह का दुन्या की मुख़्तलिफ़ ज़बानों मसलन ता दमे तह़रीर **अ़रबी, सिन्धी, हिन्दी, गुजराती, इंग्लिश** और **ब्रूक्न फ्रेन्च** में तरजमा किया जा चुका है, अमीरे अहले सुन्नत مَدَّظِلُّهُ الْعَالِی ने अपने मुरीदीन व त़ालिबीन को इस के पढ़ने की आ़म इजाज़त दी हुई है। येह पोकिट साइज़ शजरह मक्तबतुल मदीना की हर शाख़ से हदिय्यतन त़लब किया जा सकता है।

जिन्नात क़त्ल भी करते हैं : बा'ज़ अवक़ात मुसल्मान जिन्नात बदकार इन्सानों को सज़ाएं भी देते हैं चुनान्चे इब्ने अ़क़ील "किताबुल फ़ुनून" में फ़रमाते हैं, हमारा एक मकान था जो भी उस में रहता और रात क़ियाम करता तो सुब्ह़ को उस की **लाश** ही मिलती ! एक मरतबा एक मग़रिबी मुसल्मान आया और उस ने इस मकान को पसन्द कर के ख़रीद लिया। वहां रात बसर की और सुब्ह़ को बिल्कुल सह़ीह़ो सलामत रहा। इस बात से पड़ोसियों को तअ़ज्जुब हुवा। वोह शख़्स उस घर में काफ़ी अ़र्से तक मुक़ीम रहा फिर कहीं चला गया। जब उस से (इस घर में सलामत रहने का सबब) पूछा गया तो उस ने जवाब दिया, जब मैं इस घर में रात गुज़ारता तो इ़शा की नमाज़ के बा'द क़ुरआने करीम की तिलावत किया करता। एक बार एक **पुर असरार नौ जवान** ने कूंएं से बाहर निकल कर मुझे सलाम किया। मैं डर गया। वोह कहने लगा, डरिये मत, मुझे भी कुछ क़ुरआने करीम सिखाइये। चुनान्चे मैं उसे क़ुरआने करीम सिखाने लगा। मैं ने उस से पूछा, इस घर का क्या क़िस्सा है ? उस ने बताया, हम **मुसल्मान जिन्नात** हैं हम क़ुरआने पाक की तिलावत भी करते हैं और नमाज़ भी पढ़ते हैं। **इस घर में अक्सरो बेश्तर शराबी और बदकार लोग रहने के लिये आए इस लिये हम ने गला घोंट कर उन को मार डाला।** मैं ने उस से कहा, रात में आप से डर लगता है, बराए करम ! दिन में तशरीफ़ लाया करें, उस ने कहा, ठीक है। चुनान्चे वोह दिन में कूंएं से बाहर आता और मैं उसे पढ़ाता। एक मरतबा ऐसा

हुवा कि वोह **जिन्न** मुझ से कुरआन सीख रहा था कि एक अ़मलिय्यात करने वाला महल्ले में आया और सदाएं लगाने लगा, "मैं सांप के डसने, नज़्रे बद और आसेब का दम करता हूं" उस जिन्न ने कहा, येह कौन है ? मैं ने कहा, येह झाड़ फूंक करने वाला है। जिन्न बोला, इसे मेरे पास बुलाओ, लिहाज़ा मैं गया और उसे बुला लाया। **यकायक वोह जिन्न छत पर एक बहुत बड़ा अज़्दहा बन गया !** उस आ़मिल ने दम किया तो वोह अज़्दहा तड़पने लगा यहां तक कि घर के दरमियानी हिस्से में गिर पड़ा। उस **आ़मिल** ने (सांप समझ कर) उसे पकड़ कर अपनी ज़म्बील (टोकरी) में बन्द कर दिया मैं ने उसे मन्अ़ किया तो कहने लगा, येह मेरा शिकार है मैं इस को ले जाऊंगा। मैं ने उसे एक अशरफ़ी दी तो वोह छोड़ कर चला गया। उस के जाने के बा'द उस अज़्दहे ने ह़रकत की और पहली वाली शक्ल में ज़ाहिर हुवा लेकिन वोह कमज़ोर हो कर पीला पड़ गया था ! मैं ने उस से पूछा, तुम्हें क्या हो गया ? **जिन्न** ने जवाब दिया, **आ़मिल** ने अस्माए मुबारका पढ़ कर **दम** किया जिस से मेरी येह ह़ालत हुई, मुझे ज़िन्दा बचने की उम्मीद न थी। जब तुम कूंएं में चीख़ की आवाज़ सुनो तो यहां से चले जाना। मग़्रिबी मुसल्मान का कहना है, मैं ने रात में **चीख़** की आवाज़ सुनी तो मैं घर छोड़ कर दूर चला गया।

(لقط المرجان فی احکام الجان ص ۱۰۵)

प्यारे प्यारे इस्लामी भाइयो ! इस सन्सनी ख़ेज़ ह़िकायत से येह सीखने को मिला कि बसा अवक़ात मज़ाक़ महंगा पड़ जाता है। ग़ालिबन उस जिन्न ने अज़्दहा बन कर उस आ़मिल को छेड़ने की

कोशिश की थी कि देखो येह क्या करता है मगर वोह आ़मिल अपने फ़न में कामिल निकला और उस ने अस्माए मुबारका पढ़ कर ऐसा दम किया कि उस बेचारे जिन्न को जान के लाले पड़ गए लिहाज़ा किसी को कमज़ोर समझ कर छेड़ना नहीं चाहिये नीज़ पता चला कि गुनाहों की नुहूसत के सबब दुन्या में भी बलाएं और आफ़तें आ सकती हैं जैसा कि उस आसेब ज़दा मकान में आने वाले शराबियों और बदकारों को जिन्नात गला घोंट कर मार देते थे इस से घरों में फ़िल्में डिरामे देखने वालों और त़रह़ त़रह़ के गुनाहों में मश्ग़ूल रहने वालों को इ़ब्रत ह़ासिल करनी चाहिये कि कहीं दुन्या में भी गुनाहों की पादाश में कोई जिन्न मुसल्लत़ न हो जाए ! नीज़ येह भी मा'लूम हुवा कि इ़बादत व तिलावत से बलाएं टलती हैं । जैसा कि उस पुर असरार मकान के जिन्न ने नमाज़ी व तिलावत करने वाले मुसल्मान की शागिर्दी इख़्तियार कर ली । लिहाज़ा अपने घर को नमाज़ों, तिलावतों, और ना'तों से आबाद रखिये और फ़िल्मों डिरामों, गाने बाजों की नुहूसतों से दूर रहिये । اِنْ شَآءَاللہ عزوجل बरकतें ही बरकतें होंगी । गुनाहों की आ़दतों से नजात और इ़बादत की तरबियत के लिये **दा'वते इस्लामी** के मदनी क़ाफ़िलों में **आ़शिक़ाने रसूल** के साथ सफ़र को अपना मा'मूल बना लीजिये । आख़िरत के अ़ज़ीम सवाबात के साथ साथ اِنْ شَآءَاللہ عزوجل दुन्यवी आफ़ातो बलिय्यात से नजात का भी सामान होगा चुनान्चे,

मेरे ह़राम मग़्ज़ का बल ख़त्म हो गया : एक इस्लामी भाई के बयान का खुलासा है, 2001 ई. में मेरे ह़राम मग़्ज़ में बल आ गया था जिस की वज्ह से मैं सख़्त अज़िय्यत में था, अ़र्से तक इलाज करवाया मगर फ़ाएदा न हुवा, डॉक्टर का कहना था कि ऑपरेशन के इलावा इस तक्लीफ़ का कोई ह़ल नहीं मगर येह भी इम्कान है कि ऑपरेशन नाकाम हो जाए। एक इस्लामी भाई की **इन्फ़िरादी कोशिश** के सबब हिम्मत कर के 30 दिन के **मदनी क़ाफ़िले** का मुसाफ़िर बन गया । اَلْحَمْدُ لِلّٰہ عَزَّوَجَلَّ **मदनी क़ाफ़िले की बरकत से बिग़ैर किसी ऑपरेशन के ह़राम मग़्ज़ का बल ख़त्म हो गया और मैं सिह़्ह़त मन्द हो गया ।**

गर कोई मर्ज़ है तो मेरी अ़र्ज़ है पाओगे राह़तें क़ाफ़िले में चलो
दर्दे सर हो अगर या हो दर्दे कमर पाओगे सिह़्ह़तें क़ाफ़िले में चलो

صَلُّوا عَلَی الْحَبِیْب! صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلٰی مُحَمَّد

प्यारे प्यारे इस्लामी भाइयो ! देखा आप ने ! मदनी क़ाफ़िलों में कितनी बरकतें हैं ! यहां येह अ़र्ज़ करता चलूं कि ज़रूरी नहीं कि **मदनी क़ाफ़िले के मुसाफ़िर** की बीमारियां और परेशानियां दूर हो ही जाएं। येह सब **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ की मरज़ी पर मौक़ूफ़ होता है, आप सभी जानते हैं कि सिह़्ह़त की ज़मानत न होने के बा वुजूद लोग इलाज पर लाखों रुपै ख़र्च करते हैं और शिफ़ा न मिलने के बा वुजूद कोई इलाज तर्क नहीं

करता है बल्कि बेहतर से बेहतरीन इलाज करवाने के बा वुजूद मरीज़ दम तोड़ देते हैं फिर भी इलाज मुआ़लजा की कोई मुख़ालफ़त नहीं करता है। तो अगर मदनी क़ाफ़िले में भी मरज़ दूर न हो तो शैत़ान के वस्वसों का शिकार नहीं होना चाहिये। सिर्फ़ दुन्यावी मसाइल के ह़ल की निय्यत करने के बजाए मदनी क़ाफ़िले में इल्मे दीन सीखने और सवाबे आख़िरत कमाने की निय्यतें भी करनी चाहिएं। और येह भी ज़ेह्न में रखिये कि शिफ़ा भी रह़मत है और मरज़ भी सबबे नुज़ूले रह़मत। हमें हर ह़ाल में **सब्रो** तह़म्मुल से काम लेना चाहिये। बीमारी और मुसीबत के बहुत फ़ज़ाइल हैं और ख़ुश नसीब मुसल्मान सब्र कर के ख़ूब अज्र कमाते हैं चुनान्चे

मुझे नाबीना रहना मन्ज़ूर है : ह़ज़रते सय्यिदुना अबू बसीर عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللهِ الْقَدِيْر नाबीना थे। फ़रमाते हैं, मैं एक बार ह़ज़रते सय्यिदुना इमाम बाक़िर عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللهِ الْقَادِر की ख़िदमते सरापा अ़ज़मत में ह़ाज़िर हुवा। आप رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰى عَلَيْه ने मेरे चेहरे पर हाथ फेरा तो **आंखें रोशन हो गईं**, जब दोबारा हाथ फेरा तो फिर नाबीना हो गया। आप رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰى عَلَيْه ने मुझ से फ़रमाया, आप इन दोनों[2] बातों में से कौन सी बात इख़्तियार करना चाहते हैं ? ﴾1﴿ आप की आंखें रोशन हो जाएं और क़ियामत के रोज़ आप से **बीनाई की ने'मत** का और दीगर आ'माल का ह़िसाब लिया जाए ﴾2﴿ आप नाबीना ही रहें और बिग़ैर ह़िसाबो किताब जन्नत का दाख़िला नसीब हो जाए। ह़ज़रते सय्यिदुना अबू बसीर

عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللّٰهِ الْقَدِير फ़रमाते हैं, मैं ने अ़र्ज़ की, "**जन्नत** में बे हि़साब दाखि़ला चाहिये, मुझे **नाबीना** रहना मन्ज़ूर है।"

(مُلَخَّصاً شواهِدُالنُّبُوَّة ص ٢٤١ مكتبةُ الحَقِيقةاِستنبُول تُركى)

صَلُّوا عَلَى الْحَبِيب ! صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلٰى مُحَمَّد

प्यारे प्यारे इस्लामी भाइयो ! देखा आप ने ! **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ ने अपने मक़्बूल बन्दों को किस क़दर उरूजो कमाल बख़्शा है कि अन्धों को आंखें भी दे सकते हैं और बे हि़साब जन्नत में दाखि़ले की बिशारत भी। और येह भी मा'लूम हुवा कि मुसीबत पर सब्र करने से ज़बर दस्त अज्र मिलता है। आंखें चली जाने पर सब्र करने वाले के लिये तो ख़ुद ह़दीसे क़ुदसी में जन्नत की बिशारत मौजूद है। चुनान्चे रह़मते आ़लम, नूरे मुजस्सम, शाहे बनी आदम, रसूले मोह़तशम صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم का फ़रमाने जन्नत निशान है, **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ फ़रमाता है, "जब मैं अपने बन्दे की आंखें ले लूं और वोह सब्र करे तो आंखों के बदले उसे जन्नत दूंगा।" (صحيح البخارى ج٤ ص٦ حديث٥٦٥٣)

टूटे गो सर पे कोहे बला सब्र कर, ऐ मुसल्मां ! न तू डगमगा सब्र कर
लब पे ह़र्फ़े शिकायत न ला सब्र कर कि येही सुन्नते शाहे अबरार صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم *है*

صَلُّوا عَلَى الْحَبِيب ! صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلٰى مُحَمَّد

تُوبُوا اِلَى الله ! اَسْتَغْفِرُ الله

18 मुह़र्रमुल ह़राम 1427 हि.

صَلُّوا عَلَى الْحَبِيب ! صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلٰى مُحَمَّد

اَلْحَمْدُ لِلّٰہِ رَبِّ الْعٰلَمِیْنَ وَ الصَّلٰوۃُ وَالسَّلَامُ عَلٰی سَیِّدِ الْمُرْسَلِیْنَ
اَمَّا بَعْدُ فَاَعُوْذُ بِاللّٰہِ مِنَ الشَّیْطٰنِ الرَّجِیْمِ ط بِسْمِ اللّٰہِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِیْمِ ط

95 हिकायात

दुरूद शरीफ़ की फ़ज़ीलत

ख़ातमुल मुरसलीन, रह़मतुल्लिल आ़लमीन, शफ़ीउ़ल मुज़्निबीन, अनीसुल ग़रीबीन, सिराजुस्सालिकीन, मह़बूबे रब्बुल आ़लमीन, जनाबे सादिक़ो अमीन صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم का फ़रमाने मग़्फ़िरत निशान है, जब जुमे'रात का दिन आता है **अल्लाह** तआ़ला फ़िरिश्तों को भेजता है जिन के पास **चांदी** के काग़ज़ और **सोने** के क़लम होते हैं, वोह लिखते हैं, कौन **यौमे जुमे'रात** और **शबे जुमुआ़** मुझ पर कसरत से दुरूदे पाक पढ़ता है।

(کنز العمال ج ۱ ص ۲۵۰ حدیث ۲۱۷٤)

صَلُّوْا عَلَی الْحَبِیْب ! صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلٰی مُحَمَّد

(1) तीन परिन्दे

ह़ज़रते सय्यिदुना अनस बिन मालिक رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ फ़रमाते हैं, इमामुल मुतवक्किलीन, सय्यिदुल क़ानिईन, रह़मतुल्लिल आ़लमीन صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم की बारगाह में तीन[3] परिन्दे हदिय्यतन पेश किये गए

तो आप صَلَّى اللهُ تَعَالٰی عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने एक परिन्दा अपनी कनीज़ को खाने के लिये अ़ता फ़रमा दिया, दूसरे रोज़ कनीज़ वोह परिन्दा ले आई तो रसूलुल्लाह صَلَّى اللهُ تَعَالٰی عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने उस से फ़रमाया कि मैं ने तुझे मन्अ़ न किया था कि कल के लिये कुछ बचा कर न रखा कर, बेशक **अल्लाह** तआ़ला हर दूसरे दिन का रिज़्क़ अ़ता फ़रमाता है। (شُعَبُ الایمان ج۲ص۱۱۸حدیث۱۳۴۷)

अल्लाह عَزَّوَجَلَّ की उन पर रह़मत हो और उन के सदक़े हमारी मग़्फ़िरत हो ।

صَلُّوا عَلَى الْحَبِيب ! صَلَّى اللهُ تَعَالٰی عَلٰی مُحَمَّد

दूसरे दिन के लिये जम्अ़ रखना : प्यारे प्यारे इस्लामी भाइयो ! हमारे मीठे मीठे आक़ा, मक्की मदनी मुस्त़फ़ा صَلَّى اللهُ تَعَالٰی عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم का मक़ामे तवक्कुल यक़ीनन सब से बुलन्द तर था, आप صَلَّى اللهُ تَعَالٰی عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم अपने वासित़े दूसरे दिन के लिये कभी भी खाना बचा कर नहीं रखते थे। आप صَلَّى اللهُ تَعَالٰی عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने अपने माल की कभी ज़कात नहीं दी, इस लिये कि कभी माल जम्अ़ ही नहीं फ़रमाया जो ज़कात फ़र्ज़ होती। मुफ़स्सिरे शहीर ह़कीमुल उम्मत ह़ज़रते मुफ़्ती अह़मद यार ख़ान عَلَيْهِ رَحْمَةُ الْحَنَّان फ़रमाते हैं, ह़ज़रते सय्यिदुना इब्राहीम ख़लीलुल्लाह عَلٰی نَبِیِّنَا وَعَلَیْہِ الصَّلٰوۃُ وَالسَّلَام ने फ़रज़न्द के गले पर छुरी चला दी, ह़ज़रते अद्हम (رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰی عَلَيْه) ने अपने बेटे इब्राहीम के लिये दुआ़ की, ख़ुदाया इस को मौत दे दे कि इसे चूमने की वज्ह से मैं एक आन तुझ से ग़ाफ़िल हो गया।

येह इन ह़ज़रात का जज़्बा था गोया "जो चीज़ यार से आड़ बने उस को फाड़ दो।" ह़ज़रते सय्यिदुना अबू ज़र गिफ़ारी رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ज़ाहिद तरीन सह़ाबी थे उन के जज़्बात इस शे'र के मिस्दाक़ थे,

कोड़ी न रख कफ़न को, तज डाल मालो धन को
जिस ने दिया है तन को, देगा वोही कफ़न को

येह याद रहे ! माले ह़लाल जम्अ़ करना ह़राम नहीं, चुनान्चे मुफ़्ती साहिब मजी़द फ़रमाते हैं, माल जम्अ़ रखना बा'दे वफ़ात छोड़ जाना ह़लाल है जब कि इस से ज़कात, फ़ित्रा, क़ुरबानी और हुक़ूक़ुल इ़बाद अदा किये जाते रहे हों। (मुलख़्ख़सन मिरआत, जि. 3, स. 88, 89)

﴾2﴿ मुर्दा बकरी कान झाड़ती उठ खड़ी हुई

ह़ज़रते सय्यिदुना कअ़ब बिन मालिक رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ फ़रमाते हैं, ह़ज़रते सय्यिदुना जाबिर बिन अ़ब्दुल्लाह رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ हुज़ूरे पुरनूर, शाफ़ेए़ यौमुन्नुशूर صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم की बारगाहे बेकस पनाह में ह़ाज़िर हुए तो आप صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم के चेहरए अन्वर को मुतग़य्यर पाया। येह देख कर उसी वक़्त वोह अपने घर पहुंचे और अपनी ज़ौजए मोह़तरमा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہَا से कहा, मैं ने **रसूलुल्लाह** صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم का चेहरए ज़ैबा बदला हुवा देखा है, मेरा गुमान है कि भूक के सबब से ऐसा है। क्या तेरे पास कुछ मौजूद है ? जवाब दिया, वल्लाह عَزَّوَجَلَّ इस **बकरी** और थोड़े से बचे खुचे आटे के सिवा और कुछ नहीं। उसी वक़्त बकरी

को ज़ब्ह़ कर दिया और फ़रमाया कि जल्दी जल्दी गोश्त और रोटियां तय्यार करो। जब खाना तय्यार हो गया तो एक बड़े पियाले में रख कर सरकारे नामदार صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰی عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم के दरबारे दुरबार में ह़ाज़िर हो गए और खाना पेश कर दिया। रह़मते आ़लम, नूरे मुजस्सम, शाहे बनी आदम, शाफ़ेए़ उमम रसूले मोह़्तशम صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰی عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने इर्शाद फ़रमाया, ऐ जाबिर ! अपनी क़ौम को जम्अ़ कर लो। मैं लोगों को ले कर ह़ाज़िरे ख़िदमते बा बरकत हुवा, फ़रमाया, इन को जुदा जुदा टोलियां बना कर मेरे पास भेजते रहो। इस त़रह़ वोह खाने लगे। जब एक टोली सेर हो जाती तो वोह निकल जाती और दूसरी आ जाती यहां तक कि सब खा चुके और बरतन में जितना खाना पहले था उतना ही सब के खाने के बा'द भी मौजूद था। सरकारे मदीना صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰی عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم फ़रमाते थे खाओ और हड्डी न तोड़ो। फिर आप صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰی عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने बरतन के बीच में हड्डियों को जम्अ़ किया और उन पर अपना हाथ मुबारक रखा और कुछ कलाम पढ़ा जिसे मैं ने नहीं सुना। **अभी जिस का गोश्त खाया था वोही बकरी यकायक कान झाड़ते हुए उठ खड़ी हुई !** आप صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰی عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने मुझ से फ़रमाया, अपनी बकरी ले जाओ ! मैं बकरी अपनी ज़ौजए मोह़्तरमा رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْهَا के पास ले आया। वोह (ह़ैरत से) बोलीं, येह क्या ? मैं ने कहा, वल्लाह ! عَزَّوَجَلَّ येह हमारी वोही **बकरी** है जिस को हम ने ज़ब्ह़ किया था। **दुआ़ए मुस्त़फ़ा** صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰی عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم से **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ ने इसे ज़िन्दा कर दिया है ! येह सुन कर उन की ज़ौजए

मोहतरमा رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْهَا बे साख़्ता पुकार उठीं, मैं गवाही देती हूं कि बेशक वोह **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ के रसूल صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم हैं।

(الخصائصُ الکبری ج۲ص ۱۱۲)

अल्लाह عَزَّوَجَلَّ **की उन पर रहमत हो और उन के सदक़े हमारी मग़्फ़िरत हो।**

صَلُّوا عَلَى الْحَبِيب ! صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلٰى مُحَمَّد

﴾3﴿ फ़ौत शुदा मदनी मुन्ने ज़िन्दा हो गए !

मश्हूर आ़शिक़े रसूल ह़ज़रते अ़ल्लामा अ़ब्दुर्रह़मान जामी رَحْمَةُ اللّٰهِ تَعَالٰی عَلَيْه रिवायत फ़रमाते हैं, ह़ज़रते सय्यिदुना जाबिर رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْه ने अपने ह़क़ीक़ी मदनी मुन्नों की मौजूदगी में बकरी ज़ब्ह़ की थी। जब फ़ारिग़ हो कर आप رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْه तशरीफ़ ले गए तो वोह दोनों[2] मदनी मुन्ने छुरी ले कर छत पर जा पहुंचे, बड़े ने अपने छोटे भाई से कहा, आओ मैं भी तुम्हारे साथ ऐसा ही करूं जैसा कि हमारे वालिद साहिब ने उस बकरी के साथ किया है। चुनान्चे बड़े ने छोटे को बांधा और ह़ल्क़ पर छुरी चला दी और सर जुदा कर के हाथों में उठा लिया ! जूंही उन की अम्मीजान رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْهَا ने येह मन्ज़र देखा तो उस के पीछे दौड़ीं वोह डर कर भागा और छत से गिरा और फ़ौत हो गया। उस साबिरा ख़ातून ने चीख़ो पुकार और किसी क़िस्म का वावेला न किया कि कहीं अ़ज़ीमुश्शान महमान सुल्ताने दो जहान, रह़मते आ़लमिय्यान صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم परेशान न हो जाएं, निहायत सब्रो इस्तिक़्लाल से दोनों[2] की नन्ही लाशों

फ़रमाने मुस्तफ़ा صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم : जिस ने मुझ पर एक बार दुरूदे पाक पढ़ा अल्लाह عَزَّوَجَلَّ उस पर दस रहमतें भेजता है। (مسلم)

को अन्दर ला कर उन पर कपड़ा उढ़ा दिया और किसी को ख़बर न दी यहां तक कि हज़रते जाबिर رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ को भी न बताया। दिल अगर्चे सदमे से ख़ून के आंसू रो रहा था मगर चेहरे को तरो ताज़ा व शिगुफ़्ता रखा और खाना वग़ैरा पकाया। सरकारे नामदार صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم तशरीफ़ लाए और खाना आप صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم के आगे रखा गया। उसी वक़्त जिब्रईले अमीन عَلَيْهِ الصَّلٰوةُ وَالسَّلَام ने हाज़िर हो कर अ़र्ज़ की, **या रसूलल्लाह!** صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم **अल्लाह** तआ़ला फ़रमाता है कि जाबिर से फ़रमाओ, अपने फ़रज़न्दों को लाए ताकि वोह आप صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم के साथ खाना खाने का शरफ़ हासिल कर लें। सरकारे आ़ली वक़ार صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने हज़रते सय्यिदुना जाबिर رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ से फ़रमाया, अपने फ़रज़न्दों को लाओ ! वोह फ़ौरन बाहर आए और ज़ौजा से पूछा, फ़रज़न्द कहां हैं ? उस ने कहा कि हुज़ूरे पुरनूर صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم की ख़िदमत में अ़र्ज़ कीजिये कि वोह मौजूद नहीं हैं। सरकारे नामदार صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया, **अल्लाह** तआ़ला का फ़रमान आया है कि उन को जल्दी बुलाओ ! ग़म की मारी ज़ौजा रो पड़ी और बोली, ऐ जाबिर ! अब मैं उन को नहीं ला सकती। हज़रते सय्यिदुना जाबिर رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ने फ़रमाया, आख़िर बात क्या है ? रोती क्यूं हो ? ज़ौजा ने अन्दर ले जा कर सारा माजरा सुनाया और कपड़ा उठा कर मदनी मुन्नों को दिखाया, तो वोह भी रोने लगे क्यूं कि वोह उन के हाल से बे ख़बर थे। पस हज़रते

फ़रमाने मुस्तफ़ा صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰی عَلَیْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم: उस शख़्स की नाक ख़ाक आलूद हो जिस के पास मेरा ज़िक्र हो और वोह मुझ पर दुरूदे पाक न पढ़े। (ترمذی)

सय्यिदुना जाबिर رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْه ने दोनों[2] की नन्ही नन्ही लाशों को ला कर हुज़ूरे अन्वर صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰی عَلَیْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم के क़दमों में रख दिया। उस वक़्त घर से रोने की आवाज़ें आने लगीं। **अल्लाह** तआ़ला ने जिब्राईले अमीन عَلَیْهِ الصَّلٰوۃُ وَالسَّلَام को भेजा और फ़रमाया, ऐ जिब्राईल ! मेरे महबूब عَلَیْهِ الصَّلٰوۃُ وَالسَّلَام से फ़रमाओ, **अल्लाह** रब्बुल इ़ज़्ज़त फ़रमाता है, ऐ प्यारे ह़बीब ! तुम दुआ़ करो हम उन को ज़िन्दा कर देंगे। **हुज़ूरे अकरम, नूरे मुजस्सम, शाहे बनी आदम, रसूले मोह़्तशम** صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰی عَلَیْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم **ने दुआ़ फ़रमाई और अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ **के हुक्म से दोनों[2] मदनी मुन्ने उसी वक़्त ज़िन्दा हो गए।** (شواھِدُالنُّبُوَّۃ ص ۱۰۵،مدارِجُ النّبوّت حصه ۱ ص۱۹۹)

अल्लाह عَزَّوَجَلَّ **की उन पर रह़मत हो और उन के सदक़े हमारी मग़्फ़िरत हो।**

क़ल्बे मुर्दा को मेरे अब तो जिला दो आक़ा
जाम उल्फ़त का मुझे अपनी पिला दो आक़ा

صَلُّوْا عَلَی الْحَبِیْب ! صَلَّی اللّٰهُ تَعَالٰی عَلٰی مُحَمَّد

प्यारे प्यारे इस्लामी भाइयो ! देखा आप ने ! मेरे प्यारे प्यारे आक़ा मदीने वाले मुस्तफ़ा صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰی عَلَیْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم की भी क्या ख़ूब शान है कि मुख़्तसर सा खाना बहुत सारे लोगों ने खा लिया फिर भी उस में किसी क़िस्म की कमी वाक़ेअ़ न हुई और फिर बकरी के गोश्त की बची हुई हड्डियों पर कलाम पढ़ा तो गोश्त पोस्त पहन कर बि ऐनिही वोही बकरी कान झाड़ती हुई उठ खड़ी हुई। नीज़ ह़ज़रते सय्यिदुना जाबिर

फ़रमाने मुस्त़फ़ा صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰی عَلَیْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم : जो मुझ पर दस मरतबा दुरूदे पाक पढ़े अल्लाह عَزَّوَجَلَّ उस पर सो रहमतें नाज़िल फ़रमाता है। (طبرانی)

رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْه के फ़ौत शुदा दोनों[2] हक़ीक़ी मदनी मुन्नों को बि इज़्निल्लाह عَزَّوَجَلَّ ज़िन्दा कर दिया।

मुर्दों को जिलाते हैं रोतों को हंसाते हैं — आलाम मिटाते हैं बिगड़ी को बनाते हैं

सरकार खिलाते हैं सरकार पिलाते हैं — सुल्ताने गदा सब को सरकार निभाते हैं

﴾4﴿ सात खजूरें

हज़रते सय्यिदुना इरबाज़ बिन सारिया رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْه फ़रमाते हैं ग़ज़्वए तबूक में एक रात **सरवरे काएनात**, शाहे मौजूदात, दाफ़ेए आफ़ातो बलिय्यात صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰی عَلَیْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने हज़रते सय्यिदुना बिलाल رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْه से फ़रमाया, **ऐ बिलाल** ! तुम्हारे पास कुछ खाने को है ? हज़रते सय्यिदुना बिलाल رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْه ने अ़र्ज़ की, **हुज़ूर** ! आप के रब عَزَّوَجَلَّ की क़सम ! हम तो अपने तोशादान ख़ाली किये बैठे हैं। रह़मते आ़लम, नूरे मुजस्सम, शाहे बनी आदम, रसूले मोह़्तशम صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰی عَلَیْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया, अच्छी त़रह़ देखो और अपने **तोशादान** झाड़ो शायद कुछ निकल आए। (उस वक़्त हम तीन अफ़राद थे) सब ने अपने अपने **तोशादान** झाड़े तो कुल **सात खजूरें** बरआमद हुईं। आप صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰی عَلَیْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने उन को एक सफ़्ह़ा पर रख कर उन पर अपना दस्ते मुबारक रख दिया, और फ़रमाया, **बिस्मिल्लाह** पढ़ कर खाओ। हम तीनों ने मह़बूबे दावर صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰی عَلَیْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم के **दस्ते अन्वर** के नीचे से उठा कर ख़ूब खाईं, हज़रते सय्यिदुना बिलाल رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْه

फ़रमाने मुस्तफ़ा صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم : जिस के पास मेरा ज़िक्र हुवा और उस ने मुझ पर दुरूदे पाक न पढ़ा तहक़ीक़ वोह बद बख़्त हो गया। (ابن سنی)

फ़रमाते हैं कि मैं गुठलियां उलटे हाथ में रखता जाता था, जब मैं ने सेर हो कर उन को शुमार किया तो 54 थीं ! इसी त़रह़ इन दोनों[2] सह़ाबा رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْهُمَا ने भी **सेर** हो कर खाईं। जब हम ने खाने से हाथ रोक लिया तो सरकारे नामदार صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने भी अपना दस्ते पुर अन्वार उठा लिया। **वोह सातों खजूरें इसी त़रह़ मौजूद थीं !** शहन्शाहे खुश ख़िसाल, सुल्त़ाने शीरीं मक़ाल, पैकरे हुस्नो जमाल, बे मिस्लो बे मिसाल, अपनी हर सिफ़त में बा कमाल, मह़बूबे रब्बे जुल जलाल صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया, **ऐ बिलाल !** इन को संभाल कर रखो और इन में से कोई न खाए, फिर काम आएंगी। ह़ज़रते सय्यिदुना बिलाल رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْهُ फ़रमाते हैं, हम ने उन को न खाया, जब दूसरा दिन आया और खाने का वक़्त हुवा तो सरकारे मदीना صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने वोही **सात खजूरें** लाने का हुक्म दिया, आप صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने फिर इसी त़रह़ उन पर अपना दस्ते मुबारक रखा और फ़रमाया, **बिस्मिल्लाह** पढ़ कर खाओ ! अब हम दस 10 आदमी थे सब सेर हो गए। हुज़ूर ताजदारे रिसालत صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने अपना दस्ते रह़मत उठाया तो **सात खजूरें** ब दस्तूर मौजूद थीं। आप صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया, **ऐ बिलाल !** अगर मुझे ह़क़ तआ़ला से ह़या न आ रही होती तो वापस मदीने पहुंचने तक इन ही सात खजूरों से खाते। फिर सरकार صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم

ने वोह खजूरें एक लड़के को अ़ता फ़रमा दीं। वोह उन्हें खा कर जाता रहा। (الخصائصُ الکُبری ج٢ ص ٤٠٥) **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ **की उन पर रहमत हो और उन के सदक़े हमारी मग़िफ़रत हो।**

प्यारे प्यारे इस्लामी भाइयो ! देखा आप ने ! रब्बे काएनात عَزَّوَجَلَّ ने, शहन्शाहे मौजूदात صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم को किस क़दर वसीअ़ इख़्तियारात से नवाज़ा था। सात खजूरों में किस क़दर बरकत हुई कि कई सहाबए किराम عَلَیْہِمُ الرِّضْوَان ने शिकम सेर हो कर तनावुल किया।

मालिके कौनैन हैं गो पास कुछ रखते नहीं
दो जहां की ने'मतें हैं इन के ख़ाली हाथ में

صَلُّوْا عَلَی الْحَبِیْب! صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلٰی مُحَمَّد

(5) मैं रोज़ाना दो फ़िल्में देखता था

प्यारे प्यारे इस्लामी भाइयो ! तब्लीग़े क़ुरआनो सुन्नत की आ़लमगीर ग़ैर सियासी तह़रीक, **दा'वते इस्लामी** के मदनी माहोल से हर दम वाबस्ता रहिये। اَلْحَمْدُ لِلّٰہ عَزَّوَجَلَّ **दा'वते इस्लामी** के मदनी माहोल ने बे शुमार अफ़राद की तक़्दीर में मदनी इन्क़िलाब बरपा कर दिया। चुनान्चे, एक इस्लामी भाई ने अपने **मदनी माहोल** में आने का वाक़िआ़ कुछ इस त़रह़ तह़रीर फ़रमाया है, मैं बहुत ज़ियादा गुनाहों में डूबा रहता, उ़मूमन रोज़ाना **दो[2] फ़िल्में देखता**, हर वक़्त अपने

साथ **रेडियो** रखता, एक बेचता और दूसरा ख़रीदता, रात को सोते वक़्त भी सिरहाने रेडियो चला कर रखता, रेडियो सुनते सुनते रात दो[2] बजे जब मुझे नींद घेर लेती तो उठ कर अम्मीजान रेडियो बन्द करतीं। ग़ालिबन 1416 सि.हि. के रमज़ानुल मुबारक की किसी जुमे'रात का वाक़िआ है कि मैं अपने एक दोस्त से मिलने गया, वोह मुझे दा'वते इस्लामी के हफ़्तावार सुन्नतों भरे इज्तिमाअ़ में **फ़ैज़ाने मदीना** ले गए। **आप** (या'नी सगे मदीना عُفِیَ عَنْہُ) का **टेलिफ़ोनिक बयान सुना,** सुनते ही मेरी ज़िन्दगी में **मदनी इन्क़िलाब** बरपा हो गया, ख़ौफ़े ख़ुदा عَزَّوَجَلَّ के सबब मैं ने रो रो कर गुनाहों से तौबा की और **दा'वते इस्लामी** के **मदनी माहोल** से मुन्सलिक हो गया। दा'वते इस्लामी के एक आ़शिक़े रसूल ने **इन्फ़िरादी कोशिश** के ज़रीए اَلْحَمْدُ لِلّٰه عَزَّوَجَلَّ मुझे **एक मुठ्ठी दा'ढ़ी** रखवाई।

मैं तो नादान था दानिस्ता भी क्या क्या न किया
लाज रख ली मेरे लजपाल ने रुस्वा न किया

صَلُّوْا عَلَى الْحَبِيْب ! صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلٰى مُحَمَّد

﴾6﴿ थोड़े खाने में बरकत

हज़रते सय्यिदुना सुहैब رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْہُ फ़रमाते हैं कि मैं ने ताजदारे मदीना صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم के लिये थोड़ा सा खाना पकाया और दा'वत

अ़र्ज़ करने के लिये ह़ाज़िर हुवा तो आप صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم सह़ाबए किराम عَلَيْهِمُ الرِّضْوَان के साथ तशरीफ़ फ़रमा थे। मारे शर्म के कुछ अ़र्ज़ न कर सका और ख़ामोश खड़ा रहा। **सरकारे नामदार** صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने मेरी त़रफ़ देखा मैं ने इशारे से खाने के लिये चलने की इल्तिजा की, फ़रमाया, और येह लोग ? मैं ने अ़र्ज़ की, नहीं। सरकार صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ख़ामोश हो गए और मैं उसी मक़ाम पर खड़ा रहा। हुज़ूरे अन्वर صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने फिर मेरी त़रफ़ नज़र फ़रमाई। मैं ने इसी त़रह़ फिर इशारतन अ़र्ज़ की। फ़रमाया, येह लोग ? मैं ने अ़र्ज़ की, नहीं। दूसरी[2] या तीसरी[3] मरतबा के जवाब में मैं ने अ़र्ज़ की, "बहुत अच्छा" या'नी इन को भी ले चलिये और साथ येह भी अ़र्ज़ कर दी कि सिर्फ़ थोड़ा सा खाना आप صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ही के लिये पकाया है। **शाहे ख़ैरुल अनाम** صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم उन तमाम सह़ाबए किराम عَلَيْهِمُ الرِّضْوَان के साथ तशरीफ़ लाए, सब ने अच्छी त़रह़ खाया और खाना फिर भी बच रहा।

(الخصائص الكبرى ج ٢ ص ٨٢)

अल्लाह عَزَّوَجَلَّ **की उन पर रह़मत हो और उन के सदक़े हमारी मग़्फ़िरत हो।**

صَلُّوْا عَلَى الْحَبِيْب ! صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلٰى مُحَمَّد

प्यारे प्यारे इस्लामी भाइयो ! सरवरे काएनात, शहन्शाहे मौजूदात صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم की ज़ाते सितूदा सिफ़ात यक़ीनन बाइसे नुज़ूले बरकात है। और आप صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم के सदक़े हम पर हर दम

रह़मत की बरसात है। खाने की क़िल्लत के सबब फ़क़त़ तन्हा जाने रह़मत صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم की दा'वत थी मगर मालिके जन्नत, क़ासिमे ने'मत, सरापा जूदो सखा़वत, मह़बूबे रब्बुल इ़ज़्ज़त صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم की बरकत से क़लील त़आ़म कसीर सह़ाबए किराम عَلَيْهِمُ الرِّضْوَان को न सिर्फ़ काफ़ी हो गया बल्कि बच रहा।

येह सुन कर सख़ी आप का आस्ताना, है दामन पसारे हुए सब ज़माना

नवासों का सदक़ा निगाहे करम हो, तेरे दर पे तेरे गदा आ गए हैं

اَلْحَمْدُ لِلّٰه عَزَّوَجَلَّ सरकारे मदीना صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم की शाने अ़ज़मत निशान और आप से ज़ाहिर होने वाले मो'जिज़ात की तो बात ही क्या है ! आप صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم के ग़ुलामों से भी अ़ज़ीमुश्शान करामात का ज़ुहूर होता है चुनान्चे,

(7) जश्ने विलादत के लड्डूओं में बरकत

मुरादआबाद (अल हिन्द) में एक आ़शिक़े रसूल हर साल रबीउ़न्नूर शरीफ़ में धूमधाम से मीठे मीठे आक़ा मक्की मदनी मुस्त़फ़ा صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم का **जश्ने विलादत** मनाते और ज़बर दस्त **मह़फ़िले मीलाद** मुन्अ़क़िद फ़रमाते, सरकारे आ'ला ह़ज़रत इमाम अह़मद रज़ा ख़ान عَلَيْهِ رَحْمَةُ الرَّحْمٰن के ख़लीफ़ा साह़िबे ख़ज़ाइनुल इरफ़ान ह़ज़रते **सदरुल** अफ़ाज़िल अ़ल्लामा **मौलाना सय्यिद मुह़म्मद नईमुद्दीन मुरादआबादी** عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللّٰهِ الْهَادِى उस में ख़ुसूसी शिर्कत फ़रमाते थे। एक बार मह़फ़िले

मीलाद में मा'मूल से बहुत ज़ियादा अफ़राद आ गए। इख़्तिताम पर हस्बे मा'मूल पाव पाव भर (तक़रीबन 250 ग्राम) के लड्डू की तक़्सीम शुरूअ़ हुई मगर वोह आधों आध कम पड़ने लगे। बानिये महफ़िल ने घबरा कर हज़रते **सदरुल अफ़ाज़िल** رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰى عَلَيْه की ख़िदमते बा करामत में माजरा अ़र्ज़ किया, आप رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰى عَلَيْه ने अपना रूमाल निकाल कर दिया और फ़रमाया, लड्डू के बरतन पर डाल दीजिये, और ताकीद फ़रमाई कि तबर्रुक रूमाल के नीचे से निकाल निकाल कर तक़्सीम किया जाए मगर बरतन खोल कर न देखा जाए। चुनान्चे ख़ूब लड्डू तक़्सीम हुए और हर हर फ़र्द को लड्डू मिल गया। **आख़िर में जब बरतन खोला गया तो रूमाल उठाते वक़्त बरतन में जितने लड्डू थे उतने ही अब भी मौजूद थे!** (मुलख़्ख़सन तारीख़े इस्लाम की अ़ज़ीम शख़्सिय्यत सदरुल अफ़ाज़िल, स. 343) **अल्लाह عَزَّوَجَلَّ की उन पर रहमत हो और उन के सदक़े हमारी मग़्फ़िरत हो।**

चाहें तो इशारों से अपने काया ही पलट दें दुन्या की
येह शान है ख़िदमत गारों की सरदार का आ़लम क्या होगा

صَلُّوا عَلَى الْحَبِيب! صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلٰى مُحَمَّد

﴾8﴿ वालिद साहिब से अ़ज़ाब उठ गया

प्यारे प्यारे इस्लामी भाइयो ! अच्छी अच्छी निय्यतों के साथ **दा'वते इस्लामी** के **मदनी माहोल** में शामिल होने वाले اَلْحَمْدُ لِلّٰه عَزَّوَجَلَّ

दोनों[2] जहां की भलाइयां पाने के ह़क़दार क़रार पाते हैं, **एक** इस्लामी भाई के बयान का ख़ुलासा है, मैं ने ईद के दूसरे रोज़ आ़शिक़ाने रसूल के साथ **मदनी क़ाफ़िले** में सफ़र की सआ़दत ह़ासिल की इसी दौरान **वालिदे मर्हूम** जिन को फ़ौत हुए दो बरस गुज़र चुके थे, मेरे **ख़्वाब** में बहुत अच्छी ह़ालत में तशरीफ़ लाए, मैं ने पूछा, अब्बू ! इन्तिक़ाल के बा'द क्या हुवा ? फ़रमाया, कुछ अ़र्से गुनाहों की सज़ा मिली मगर अब अ़ज़ाब उठ गया है, तुम **दा'वते इस्लामी** के **मदनी माह़ोल** को हरगिज़ मत छोड़ना कि इसी की बरकत से मुझ पर करम हुवा है।

अल्लाह عَزَّوَجَلَّ **की उन पर रह़मत हो और उन के सदक़े हमारी मग़्फ़िरत हो।**

صَلُّوا عَلَى الْحَبِيب! صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلٰى مُحَمَّد

प्यारे प्यारे इस्लामी भाइयो ! वाक़ेई **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ की रह़मत बहुत बड़ी है, नेक औलाद सदक़ए जारिय्या होती है और उन की दुआ़ओं के तुफ़ैल फ़ौत शुदा वालिदैन के लिये आसानियां हो जाती हैं। औलाद को नेक बनाने के लिये दा'वते इस्लामी का **मदनी माह़ोल** एक बेहतरीन ज़रीआ़ है।

हैं इस्लामी भाई सभी भाई भाई — है बेह़द मह़ब्बत भरा मदनी माह़ोल
यहां सुन्नतें सीखने को मिलेंगी — दिलाएगा ख़ौफ़े ख़ुदा मदनी माह़ोल
नबी की मह़ब्बत में रोने का अन्दाज़
तुम आ जाओ सिखलाएगा मदनी माह़ोल

﴾9﴿ 300 आदमी सुव्वर बन गए

हज़रते सय्यिदुना ईसा रूहुल्लाह عَلٰی نَبِیِّنَا وَعَلَیْہِ الصَّلٰوۃُ وَالسَّلَام की ख़िदमते सरापा अ़ज़मत में ह़वारिय्यों ने अ़र्ज़ की, कि (क्या) आप का रब عَزَّوَجَلَّ आप की दुआ़ से येह करम नवाज़ी फ़रमा देगा कि हम पर आस्मान से **ग़ैबी दस्तर ख़्वान** ने'मतों से भरा हुवा उतारे ? इस पर हज़रते सय्यिदुना ईसा रूहुल्लाह عَلٰی نَبِیِّنَا وَعَلَیْہِ الصَّلٰوۃُ وَالسَّلَام ने फ़रमाया, ऐसे सुवालात न करो, **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ से डरो, मुंह मांगे मो'जिज़ात न मांगो अगर तुम मोमिन हो तो इस से बाज़ आ जाओ। उन्हों ने जवाबन अ़र्ज़ की, हुज़ूरे वाला ! हमारा येह मा'रूज़ा आप عَلَیْہِ الصَّلٰوۃُ وَالسَّلَام की नुबुव्वत या रब तआ़ला की कुदरते कामिला में किसी शको शुबा की बिना पर नहीं बल्कि इस के चार[4] मक़्सद हैं : ﴾1﴿ **एक** येह कि हम वोह ग़ैबी खाना खाएं, बरकत हासिल करें, इस से हमारे दिल मुनव्वर हो जाएं, हम को कुर्बे खुदा عَزَّوَجَلَّ और ज़ियादा हासिल हो जाए ﴾2﴿ **दूसरे** येह कि आप عَلَیْہِ السَّلَام ने जो हम से वा'दा फ़रमाया है कि तुम लोग मक़्बूलुद्दुआ़ हो, रब तआ़ला तुम्हारी मानता है इस का हम को ऐनुल यक़ीन हासिल हो जाए दिल हमारे मुत्मइन हो जाएं हम को अपने कामिलुल ईमान होने पर इत़्मीनान हो जाए ﴾3﴿ **तीसरे** येह कि हम को आप عَلَیْہِ السَّلَام की सदाक़त ऐनुल यक़ीन से मा'लूम हो जाए ﴾4﴿ **चौथे** येह कि हम इस आस्मानी मो'जिज़े का मुशाहदा कर लें और दूसरों के लिये हम ऐनी गवाह बन जाएं नीज़ ता क़ियामत लोगों के लिये हमारा येह वाक़िआ़ कमाले ईमान का बाइस बने हम आप के ज़िन्दए जावेद गवाह बन जावें। **हज़रते** सय्यिदुना

सलमान फ़ारसी व अ़ब्दुल्लाह इब्ने अ़ब्बास व जम्हूर मुफ़स्सिरीन رِضْوَانُ اللّٰهِ تَعَالٰى عَلَيْهِمْ اَجْمَعِيْن का क़ौल येह है कि जब ह़वारिय्यों ने ह़ज़रते सय्यिदुना ईसा रूहुल्लाह عَلٰى نَبِيِّنَا وَعَلَيْهِ الصَّلٰوةُ وَالسَّلَام को हर त़रह़ का इत़्मीनान दिलाया कि हम येह ख़्वान मह़्ज़ शौक़ या तफ़्रीह़ के लिये नहीं मांगते बल्कि इस में हमारे दीनी मक़ासिद हैं। तब ह़ज़रते सय्यिदुना ईसा रूहुल्लाह عَلٰى نَبِيِّنَا وَعَلَيْهِ الصَّلٰوةُ وَالسَّلَام ने टाट का लिबास पहना और रो रो कर दुआ़ की :

اَللّٰهُمَّ رَبَّنَاۤ اَنْزِلْ عَلَيْنَا مَآىِٕدَةً مِّنَ السَّمَآءِ تَكُوْنُ لَنَا عِيْدًا لِّاَوَّلِنَا وَ اٰخِرِنَا وَ اٰيَةً مِّنْكَ ۚ وَ ارْزُقْنَا وَ اَنْتَ خَيْرُ الرّٰزِقِيْنَ ﴿۱۱۴﴾

(پ ۷ المائدہ ۱۱٤)

तरजमए कन्ज़ुल ईमान : ऐ **अल्लाह** ! ऐ रब हमारे ! हम पर आस्मान से एक ख़्वान उतार कि वोह हमारे लिये ईद हो हमारे अगले पिछलों की और तेरी त़रफ़ से निशानी और हमें रिज़्क़ दे और तू सब से बेहतर रोज़ी देने वाला है।

चुनान्चे सुर्ख़ रंग का दस्तर ख़्वान बादलों में ढका हुवा आया, येह तमाम लोग उसे उतरते हुए देख रहे थे। येह दस्तर ख़्वान मअ़ बादलों के आहिस्ता आहिस्ता नीचे उतरा यहां तक कि लोगों के दरमियान रख दिया गया। ह़ज़रते सय्यिदुना ईसा रूहुल्लाह عَلٰى نَبِيِّنَا وَعَلَيْهِ الصَّلٰوةُ وَالسَّلَام उस दस्तर ख़्वान को देख कर बहुत रोए और दुआ़ की, **मौला** ! मुझे शाकिरीन से बना, **इलाही** ! इसे इन ह़वारिय्यों के लिये रह़मत बना,

अ़ज़ाब न बना। ह़वारिय्यों ने उस से ऐसी ख़ुश्बू मह़सूस की जो इस से पहले कभी न की थी। ह़ज़रते सय्यिदुना ई़सा रूहुल्लाह عَلٰی نَبِیِّنَا وَعَلَیْہِ الصَّلٰوۃُ وَالسَّلَام और ह़वारी **सज्दए शुक्र** में गिर गए। ह़ज़रते सय्यिदुना ई़सा रूहुल्लाह عَلٰی نَبِیِّنَا وَعَلَیْہِ الصَّلٰوۃُ وَالسَّلَام ने फ़रमाया, कि इसे कौन खोलेगा ? येह ख़्वान सुर्ख़ ग़िलाफ़ से ढका हुवा था। तमाम ने अ़र्ज़ की, हुज़ूर ! आप ही खोलें। चुनान्चे ह़ज़रते सय्यिदुना ई़सा रूहुल्लाह عَلٰی نَبِیِّنَا وَعَلَیْہِ الصَّلٰوۃُ وَالسَّلَام ने ताज़ा वुज़ू किया नवाफ़िल पढ़े, देर तक दुआ़एं मांगीं, फिर दस्तर ख़्वान से ग़िलाफ़ हटाया, उस में येह चीज़ें थीं : **सात मछलियां, सात रोटियां**, उन मछलियों पर सिन्ने न थे, अन्दर कांटा न था। उस से रोग़न टपक रहा था उन के सरों के आगे सिर्का, दुम की त़रफ़ नमक, आसपास सब्ज़ियां। बा'ज़ रिवायत में है कि **पांच रोटियां** थीं। एक रोटी पर ज़ैतून दूसरी पर शहद तीसरी पर घी चौथी पर पनीर पांचवीं पर भुना हुवा गोश्त। **शम्ऊ़न** ह़वारी ने पूछा कि ऐ रूह़ल्लाह ! येह खाना जन्नत का है या ज़मीन का ? फ़रमाया, न ज़मीन का न जन्नत का, येह मह़्ज़ क़ुदरती है। अव्वलन बीमार व फ़ुक़रा, फ़ाक़ा मस्त, बरस व जुज़ाम वाले और अपाहज बुलाए गए। आप عَلَیْہِ الصَّلٰوۃُ وَالسَّلَام ने फ़रमाया, **बिस्मिल्लाह** पढ़ कर खाओ तुम्हारे लिये **मुबारक** है और मुन्किरीन के लिये **बला**। फिर दूसरे लोगों से भी येही फ़रमाया, चुनान्चे पहले दिन **सात हज़ार तीन सो आदमियों** ने खाया, फिर वोह ख़्वान उठा, लोग

देखते रहे, उड़ता हुवा उन की निगाहों से ग़ाइब हो गया। **तमाम बीमार मुसीबत ज़दा अच्छे तन्दुरुस्त हो गए फ़ुक़रा ग़नी** (या'नी ग़रीब मालदार) **हो गए** फिर येह ख़्वान चालीस[40] दिन मुसल्सल या एक दिन के बा'द एक दिन आता रहा, लोग खाते रहे। फिर ह़ज़रते सय्यिदुना ईसा रूहुल्लाह عَلٰی نَبِیِّنَا وَعَلَیْہِ الصَّلٰوۃُ وَالسَّلَام पर वह्य आई कि अब इस से सिर्फ़ **फ़ुक़रा** खाएं कोई ग़नी न खाए। जब येह ए'लान हुवा तो अग़्निया (या'नी मालदार लोग) नाराज़ हो गए और बोले कि येह मह़्ज़ जादू है ! **येह मुन्किरीन (या'नी इन्कार करने वाले) तीन सो आदमी थे येह लोग शब को अपने बाल बच्चों में ब ख़ैरिय्यत सोए मगर सुब्ह़ को उठे तो सुव्वर थे रास्तों में भागते फिरते थे गन्दगी पाख़ाना खाते थे।** जब लोगों ने उन का ह़ाल येह देखा तो ह़ज़रते सय्यिदुना ईसा रूहुल्लाह عَلٰی نَبِیِّنَا وَعَلَیْہِ الصَّلٰوۃُ وَالسَّلَام के पास भागे आए, बहुत रोए, येह सुव्वर भी आप के गिर्द जम्अ़ हो गए और रोते थे। ह़ज़रते सय्यिदुना ईसा रूहुल्लाह عَلٰی نَبِیِّنَا وَعَلَیْہِ الصَّلٰوۃُ وَالسَّلَام उन्हें नाम बनाम पुकारते थे येह जवाब में सर हिलाते थे मगर बोल न सकते थे। तीन[3] दिन निहायत ज़िल्लतो ख़्वारी से जिये, चौथे दिन सब के सब हलाक हो गए इन में कोई औ़रत या बच्चा न था सब मर्द थे। जितनी क़ौमें दुन्या में मस्ख़ की गईं वोह हलाक कर दी गईं उन की नस्ल न चली येह क़ानूने क़ुदरत है। (مُلَخَّصاً التفسیر الکبیر ج٤ ص٤٦٣ وغیرہ)

तिरमिज़ी शरीफ़ की ह़दीस में है, नबिय्ये करीम रऊफ़ुर्रह़ीम, मह़बूबे रब्बे अ़ज़ीम صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم का इर्शादे इब्रत बुन्याद है, आस्मान से रोटी

और गोश्त का ख़्वान नाज़िल किया गया और हुक्म दिया गया कि न ख़ियानत करें न दूसरे दिन के लिये बचा कर रखें, पस उन्हों ने ख़ियानत की और दूसरे दिन के लिये जम्अ़ भी किया तो उन्हें बन्दर और ख़िन्ज़ीर की शक्ल कर दिया गया। (جامعِ ترمذی ج ۵ص ۴۴ حدیث ۳۰۷۲) उन लोगों को ताकीद की गई थी कि इस ख़्वान में से कल के लिये बचा कर छुपा कर न रखें बा'ज़ लोगों ने कल के लिये बचाया वोह **सुव्वर** बना दिये गए। हज़रते सय्यिदुना अ़ब्दुल्लाह बिन अ़म्र رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہُمَا का फ़रमाने इ़ब्रत निशान है, क़ियामत में सख़्त अ़ज़ाब, दस्तर ख़्वान वाले ईसाइयों, फ़िरऔ़नी लोगों और मुनाफ़िक़ों को होगा। (الدرالمنثورج۳ص۲۳۷)

क्या सुव्वर का नाम लेने से वुज़ू टूट जाता है ? : प्यारे प्यारे इस्लामी भाइयो ! **हज़रते** सय्यिदुना ईसा रूहुल्लाह عَلٰی نَبِیِّنَا وَعَلَیْہِ الصَّلٰوۃُ وَالسَّلَام की शाने अ़ज़्मत निशान आप ने देखी ! आप की दुआ़ से **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ ने ने'मतों भरा माइदा (या'नी दस्तर ख़्वान) नाज़िल फ़रमा दिया। दुन्या में जो भी **ने'मत** मिलती है उ़मूमन उस में **ज़ह़मत** भी होती है। शुक्राने ने'मत करने वाले काम्याब और कुफ़्राने ने'मत करने वाले नाकाम हो जाते हैं। ने'मतों की फ़रावानियों को देख कर ना फ़रमानियों पर उतर आने वाले अन्जाम कार ज़लीलो ख़्वार होते हैं जैसा कि इस क़ुरआनी ह़िकायत से मा'लूम हुवा कि 300 ना फ़रमान **सुव्वर** (ख़िन्ज़ीर) की शक्ल में मुतशक्किल हो गए और तीन दिन तक दर ब दर की ठोकरें

खाते फिरे और चौथे दिन ज़िल्लत के साथ मौत के घाट उतर गए। हम **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ की उस के क़हरो ग़ज़ब से पनाह मांगते हैं। बा'ज़ लोगों को येह वह्म होता है कि "सुव्वर" या ख़िन्ज़ीर का नाम लेने से ज़बान नापाक हो जाती और वुज़ू टूट जाता है ! येह सरासर ग़लत़ फ़हमी है। ख़िन्ज़ीर का लफ़्ज़ क़ुरआने करीम में भी मौजूद है। लिहाज़ा येह लफ़्ज़ बोलने से न ज़बान नापाक होती है और न ही वुज़ू टूटता है।

﴾10﴿ तीसरी रोटी कहां गई ?

ह़ज़रते सय्यिदुना ईसा रूहुल्लाह عَلٰی نَبِیِّنَا وَعَلَیْہِ الصَّلٰوۃُ وَالسَّلَام की ख़िदमत में एक आदमी ने अ़र्ज़ की "या रूह़ल्लाह ! मैं आप की सोह़बते बा बरकत में रह कर ख़िदमत करना और इल्मे शरीअ़त ह़ासिल करना चाहता हूं।" आप عَلَیْہِ الصَّلٰوۃُ وَالسَّلَام ने उस को इजाज़त दे दी। चलते चलते जब दोनों[2] एक नहर के कनारे पहुंचे तो आप عَلَیْہِ الصَّلٰوۃُ وَالسَّلَام ने फ़रमाया, "आओ खाना खा लें।" आप عَلَیْہِ الصَّلٰوۃُ وَالسَّلَام के पास तीन[3] रोटियां थीं, जब एक एक रोटी दोनों[2] खा चुके तो ह़ज़रते सय्यिदुना ईसा रूहुल्लाह عَلٰی نَبِیِّنَا وَعَلَیْہِ الصَّلٰوۃُ وَالسَّلَام नहर से पानी नोश फ़रमाने लगे, उस शख़्स ने तीसरी रोटी छुपा ली। जब आप عَلَیْہِ الصَّلٰوۃُ وَالسَّلَام पानी पी कर वापस तशरीफ़ लाए तो रोटी मौजूद न पा कर इस्तिफ़्सार फ़रमाया, "**तीसरी रोटी कहां गई** ?" उस ने झूट बोलते हुए कहा, मुझे नहीं मा'लूम। आप عَلَیْہِ الصَّلٰوۃُ وَالسَّلَام ख़ामोश हो रहे। थोड़ी देर बा'द फ़रमाया, "आओ आगे चलें।" रास्ते में एक **हिरनी** मिली जिस के साथ दो बच्चे थे, आप

عَلَیْہِ الصَّلٰوۃُ وَالسَّلَام ने **हिरनी** के एक बच्चे को अपने पास बुलाया, वोह आ गया, आप عَلَیْہِ الصَّلٰوۃُ وَالسَّلَام ने उसे ज़ब्ह़ किया, भूना और दोनों[2] ने मिल कर खाया । गोश्त खा चुकने के बा'द आप عَلَیْہِ الصَّلٰوۃُ وَالسَّلَام ने हड्डियों को जम्अ़ किया, और फ़रमाया, "**قُمْ بِاِذْنِ اللہ** (**अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ के हुक्म से ज़िन्दा हो कर खड़ा हो जा)" हिरनी का बच्चा **ज़िन्दा** हो कर अपनी मां के साथ चला गया । आप عَلَیْہِ الصَّلٰوۃُ وَالسَّلَام ने उस शख़्स से फ़रमाया, "तुझे उस **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ की क़सम जिस ने मुझे येह मो'जिज़ा दिखाने की क़ुदरत अ़ता की । सच बता, **वोह तीसरी रोटी कहां गई** ?" वोह बोला, "मुझे नहीं मा'लूम ।" फ़रमाया, "आओ आगे चलें ।" चलते चलते एक **दरिया** पर पहुंचे, और बैठ गए, आप عَلَیْہِ الصَّلٰوۃُ وَالسَّلَام ने उस शख़्स का हाथ पकड़ा और पानी के ऊपर चलते हुए दरिया के दूसरे कनारे पहुंच गए । आप عَلَیْہِ الصَّلٰوۃُ وَالسَّلَام ने उस शख़्स से फ़रमाया, "तुझे उस ख़ुदा عَزَّوَجَلَّ की क़सम ! जिस ने मुझे येह मो'जिज़ा दिखाने की क़ुदरत अ़ता की, सच बता कि **वोह तीसरी रोटी कहां गई** ?" वोह बोला, "मुझे नहीं मा'लूम !" आप عَلَیْہِ الصَّلٰوۃُ وَالسَّلَام ने फ़रमाया, "आओ आगे चलें ।" चलते चलते एक रेगिस्तान में पहुंचे, आप عَلَیْہِ الصَّلٰوۃُ وَالسَّلَام ने रेत की एक ढेरी बनाई और फ़रमाया, "ऐ रेत की ढेरी ! **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ के हुक्म से **सोना** बन जा ।" वोह फ़ौरन **सोना** बन गई, आप عَلَیْہِ الصَّلٰوۃُ وَالسَّلَام ने उस के **तीन**[3] **हिस्से** किये फिर फ़रमाया, "येह एक हिस्सा मेरा है और एक हिस्सा तेरा और एक उस का जिस ने **वोह तीसरी रोटी ली** ।" येह सुनते ही वोह

शख़्स झट बोल उठा ! या रूहल्लाह ! वोह तीसरी रोटी मैं ने ही ली थी। आप عَلَيْهِ الصَّلٰوةُ وَالسَّلَام ने फ़रमाया, "येह सारा **सोना** तू ही ले ले।" फिर उस को छोड़ कर आगे तशरीफ़ ले गए। येह शख़्स **सोना** चादर में लपेट कर अकेला ही रवाना हुवा, रास्ते में उसे दो[2] शख़्स मिले, उन्हों ने जब देखा कि इस के पास **सोना** है तो उस को क़त्ल कर देने के लिये तय्यार हो गए ता कि **सोना** ले लें। वोह शख़्स जान बचाने की ख़ातिर बोला, "तुम मुझे क़त्ल क्यूं करते हो ! हम इस सोने के तीन[3] हिस्से कर लेते हैं और एक एक हिस्सा बांट लेते हैं। वोह दोनों[2] शख़्स इस पर राज़ी हो गए। वोह शख़्स बोला, "बेहतर येह है कि हम में से एक आदमी थोड़ा सा **सोना** ले कर क़रीब के शहर में जाए और **खाना** ख़रीद कर ले आए ता कि खा, पी कर **सोना** तक़्सीम कर लें।" चुनान्चे उन में से एक आदमी शहर पहुंचा, खाना ख़रीद कर वापस होने लगा तो उस ने सोचा, बेहतर येह है कि खाने में **ज़हर** मिला दूं ता कि वोह दोनों[2] खा कर मर जाएं और सारा **सोना** मैं ही ले लूं। येह सोच कर उस ने ज़हर ख़रीद कर खाने में मिला दिया। उधर उन दोनों[2] ने येह साज़िश की कि जैसे ही वोह खाना ले कर आएगा हम दोनों[2] मिल कर उस को मार डालेंगे और फिर **सारा सोना** आधा आधा बांट लेंगे। चुनान्चे जब वोह शख़्स खाना ले कर आया **तो दोनों[2] उस पर पिल पड़े और उस को क़त्ल कर दिया।** इस के बा'द ख़ुशी ख़ुशी खाना खाने के लिये बैठे तो **ज़हर** ने अपना काम कर दिखाया और **येह दोनों भी तड़प तड़प कर ठन्डे हो गए**

फ़रमाने मुस्तफ़ा صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم : जिस ने मुझ पर एक मर्तबा दुरूदे पाक पढ़ा अल्लाह उस पर दस रहमतें भेजता और उस के नामए आ'माल में दस नेकियां लिखता है। (ترمذی)

और सोना जूं का तूं पड़ा रहा। फिर ह़ज़रते सय्यिदुना ईसा रूहुल्लाह عَلٰی نَبِیِّنَا وَعَلَیْہِ الصَّلٰوۃُ وَالسَّلَام वापस लौटे तो चन्द आदमी आप عَلَیْہِ الصَّلٰوۃُ وَالسَّلَام के हमराह थे आप ने **सोने और तीनों लाशों** की त़रफ़ इशारा कर के हमराहियों से फ़रमाया, **"देख लो दुन्या का येह ह़ाल है पस तुम को लाज़िम है कि इस से बचते रहो।"** (اِتحافُ السّادةِ المُتّقِین ج۹ ص۸۳۰)

प्यारे प्यारे इस्लामी भाइयो ! देखा आप ने ! दौलत की मह़ब्बत कैसे कैसे गुल **खिलाती**, गुनाहों पर उक्साती, दर बदर फिराती, लूटमार करवाती ह़त्ता कि लाशें गिरवाती है मगर किसी के हाथ नहीं आती और अगर आती है तो बेह़द सताती और ख़ूब रुलाती है। लिहाज़ा हमारे बुज़ुर्गाने दीन رَحِمَهُمُ اللّٰهُ الْمُبِين मालो दौलत के मुआमले में निहायत ही मोह़तात़ थे चुनान्चे

माल की मज़म्मत में बुज़ुर्गों के इर्शादात : **हुज्जतुल इस्लाम** ह़ज़रते सय्यिदुना इमाम मुह़म्मद ग़ज़ाली عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللّٰهِ الْوَالِی फ़रमाते हैं, ﴾1﴿ ह़ज़रते सय्यिदुना **ह़सन बसरी** عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللّٰهِ الْقَوِی फ़रमाते हैं, ख़ुदा عَزَّوَجَلَّ की क़सम ! जो दिरहम (या'नी दौलत) की इ़ज़्ज़त करता है, **अल्लाह** रब्बुल इ़ज़्ज़त उसे ज़िल्लत देता है ﴾2﴿ मन्क़ूल है, सब से पहले दिरहमो दीनार बने तो शैत़ान ने उन को उठा कर अपनी पेशानी पर रखा फिर उन को चूमा और बोला, जिस ने इन से मह़ब्बत की वोह मेरा ग़ुलाम है। (اَلْعِیَاذُ بِاللّٰه) ﴾3﴿ ह़ज़रते सय्यिदुना **समीत़ बिन इ़जलान** عَلَيْهِ رَحْمَةُ الْمَنَّان

ने फ़रमाया, दिरहमो दीनार (मालो दौलत) मुनाफ़िक़ों की लगामें हैं वोह इन के ज़रीए दोज़ख़ की तरफ़ खींचे जाएंगे ﴾4﴿ ह़ज़रते सय्यिदुना **यह़्या बिन मुआ़ज़** رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ फ़रमाते हैं, दिरहम (या रुपै) **बिच्छू** हैं अगर तुम इस के ज़हर का उतार नहीं जानते तो इसे मत पकड़ो क्यूं कि अगर इस ने डस लिया तो इस का ज़हर तुम्हें हलाक कर देगा। अ़र्ज़ की, इस का उतार क्या है? फ़रमाया, ह़लाल त़रीक़े से ह़ासिल करना और इस के हुक़ूक़े वाजिबा अदा करना ﴾5﴿ ह़ज़रते सय्यिदुना **अ़ला बिन ज़ियाद** رَحْمَۃُ اللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہِ फ़रमाते हैं, दुन्या ख़ूब बनाव सिंघार कर के मेरे सामने मिसाली सूरत में आई। मैं ने कहा, मैं तेरे शर से **अल्लाह** तआ़ला की पनाह चाहता हूं। वोह बोली, अगर आप मुझ से मह़फ़ूज़ रहना चाहते हैं तो दिरहमो दीनार (रुपै पैसों) से नफ़रत कीजिये क्यूं कि दिरहमो दीनार वोह चीज़ें हैं जिन के ज़रीए आदमी हर क़िस्म की **दुन्या** ह़ासिल करता है लिहाज़ा जो इन दोनों (या'नी दिरहमो दीनार से) सब्र करेगा या'नी दूर रहेगा वोह **दुन्या** से भी सब्र कर लेगा। मज़ीद **सय्यिदुना इमाम मुह़म्मद ग़ज़ाली** عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللّٰهِ الْوَالِي ने **अ़रबी अश्आ़र** नक़्ल किये हैं, इन का तरजमा है : "मैं ने तो (येह राज़) पा लिया है पस तुम भी इस के इलावा कुछ और गुमान मत करो और येह न समझो कि तक़्वा इस दिरहम के पास है। तो जब तुम इस (माल) पर क़ादिर होने के बा वुजूद इसे तर्क कर दो तो जान लो कि तुम्हारा तक़्वा एक मुसल्मान का तक़्वा है। किसी आदमी की क़मीस पर लगे हुए पैवन्द या पिंडली से ऊपर की हुई

शलवार या उस की पेशानी जिस में (सज्दे के) निशानात हों, को देख कर धोका न खाना येह देखो कि वोह दिरहम (मालो दौलत) से **मह़ब्बत** करता है या इस से दूर रहता है।" (احیاءُ العُلوم ج۳ص۲۸۸)

हुब्बे दुन्या से तू बचा या रब !

अपना शैदा मुझे बना या रब !

﴿11﴾ मदनी मह़बूब की ज़ुल्फ़ों का असीर

प्यारे प्यारे इस्लामी भाइयो ! اَلْحَمْدُ لِلّٰہ عَزَّوَجَلَّ तब्लीग़े क़ुरआनो सुन्नत की आ़लमगीर ग़ैर सियासी तह़रीक दा'वते इस्लामी के मदनी माह़ोल की बरकत से बड़े बड़े चोर डाकूओं के राहे रास्त पर आ जाने के वाक़िआ़त सुनने को मिलते हैं। दा'वते इस्लामी के वसीअ़ दाइरए कार को ब ह़ुस्नो ख़ूबी चलाने के लिये मुख़्तलिफ़ मुल्कों और शहरों में मुतअ़द्दद मजालिस बनाई जाती हैं। मिन जुम्ला **मजलिसे राबित़ा बिल ड़लमाए वल मशाइख़** भी है जो कि अक्सर ड़लमाए किराम पर मुश्तमिल है। इस मजलिस के इस्लामी भाई मश्हूर दीनी दर्सगाह जामिआ़ राशिदिय्या तशरीफ़ ले गए। बर सबीले तज़्किरा जेलख़ानों में दा'वते इस्लामी के मदनी काम की बात चली तो वहां के **शैख़ुल ह़दीस साह़िब** कुछ इस त़रह़ फ़रमाने लगे, जेलख़ानों के मदनी काम की ताबनाक मदनी कारकर्दगी मैं ख़ुद आप को सुनाता हूं, **एक डाकू** ने तबाही मचा रखी थी, मैं उस को जानता था, आए दिन पोलीस के साथ उस की आंख मिचोली जारी रहती, कई बार गरिफ़्तार भी

हुवा मगर असरो रुसूख़ इस्ति'माल कर के छूट गया। आख़िरश किसी जुर्म की पादाश में पोलीस के हथ्थे चढ़ गया, सज़ा हुई और जेल में चला गया। सज़ा काट लेने के बा'द रिहाई मिलने पर मुझ से मिलने आया। मैं पहली नज़र में उस को पहचान न सका क्यूं कि मैं ने उस को दाढ़ी मुन्डा और सर बरह्ना देखा था मगर अब **उस के चेहरे** पर मीठे मीठे आक़ा मदीने वाले मुस्तफ़ा صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم की महब्बत की निशानी नूरानी दाढ़ी जगमगा रही थी, सर पर **सब्ज़ सब्ज़ इमामे शरीफ़** का ताज अपनी बहारें लुटा रहा था, पेशानी पर नमाज़ों का **नूर** नुमायां नज़र आ रहा था। मेरी हैरत का तिलिस्म तोड़ते हुए वोह बोला, क़ैद के दौरान जेल के अन्दर اَلْحَمْدُ لِلّٰه عَزَّوَجَلَّ मुझे **दा'वते इस्लामी** का मदनी माहोल मुयस्सर आ गया और आशिक़ाने रसूल की **इन्फ़िरादी कोशिश** की बरकत से मैं ने गुनाहों की बेड़ियां काट कर अपने आप को **मदनी महबूब** صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم की **ज़ुल्फ़ों का असीर** बना लिया।

रहमतों वाले नबी के गीत जब गाता हूं मैं *गुम्बदे ख़ज़रा के नज़्ज़ारों में खो जाता हूं मैं*
जाऊं तो जाऊं कहां मैं किस का ढूंडूं आसरा *लाज वाले लाज रखना तेरा कहलाता हूं मैं*

صَلُّوا عَلَى الْحَبِيب ! صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلٰى مُحَمَّد

﴾12﴿ हाथों में छाले पड़ गए

हज़रते सय्यिदुना सुवैद बिन ग़फ़ला رَضِيَ اللهُ تَعَالٰى عَنْه फ़रमाते हैं कि मैं अमीरुल मुअमिनीन हज़रते मौलाए काएनात, अ़लिय्युल मुर्तज़ा,

शेरे खुदा كَرَّمَ اللهُ تَعَالٰی وَجْهَهُ الْكَرِيْم की ख़िदमते सरापा अ़ज़्मत में दारुल इमारत कूफ़ा में ह़ाज़िर हुवा । आप كَرَّمَ اللهُ تَعَالٰی وَجْهَهُ الْكَرِيْم के सामने **जव शरीफ़** की रोटी और दूध का एक पियाला रखा हुवा था, रोटी ख़ुश्क और इस क़दर सख़्त थी कि कभी अपने हाथों से और कभी घुटने पर रख कर तोड़ते थे । येह देख कर मैं ने आप كَرَّمَ اللهُ تَعَالٰی وَجْهَهُ الْكَرِيْم की कनीज़ **फ़िज़्ज़ा** رَضِىَ اللهُ تَعَالٰی عَنْهَا से कहा, आप को इन पर तर्स नहीं आता ? देखिये तो सही रोटी पर भूसी लगी हुई है इन के लिये **जव शरीफ़** छान कर नर्म रोटी पकाया करें । ताकि तोड़ने में मशक़्क़त न हो । **फ़िज़्ज़ा** رَضِىَ اللهُ تَعَالٰی عَنْهَا ने जवाब दिया, अमीरुल मुअमिनीन كَرَّمَ اللهُ تَعَالٰی وَجْهَهُ الْكَرِيْم ने हम से अ़ह्द लिया है कि उन के लिये कभी भी **जव शरीफ़** छान कर न पकाया जाए । इतने में अमीरुल मुअमिनीन كَرَّمَ اللهُ تَعَالٰی وَجْهَهُ الْكَرِيْم मेरी त़रफ़ मुतवज्जेह हुए और फ़रमाया, ऐ इब्ने ग़फ़्ला ! आप इस कनीज़ से क्या फ़रमा रहे हैं ? मैं ने जो कुछ कहा था अ़र्ज़ कर दिया और इल्तिजा की, या अमीरल मुअमिनीन ! आप अपनी जान पर रह़्म फ़रमाइये और इतनी मशक़्क़त न उठाइये । तो आप كَرَّمَ اللهُ تَعَالٰی وَجْهَهُ الْكَرِيْم ने फ़रमाया, ऐ इब्ने ग़फ़्ला ! दो[2] आ़लम के मालिको मुख़्तार, मक्की मदनी सरकार, मह़बूबे परवर्दगार صَلَّى اللهُ تَعَالٰی عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم और आप के अहलो इ़याल ने कभी तीन[3] दिन बराबर गेहूं की रोटी शिकम सैर हो कर नहीं खाई और न ही कभी आप صَلَّى اللهُ تَعَالٰی عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم के लिये आटा छान कर पकाया गया । एक दफ़्आ़

फ़रमाने मुस्तफ़ा صَلَّى اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم : शबे जुमुआ और रोज़े जुमुआ मुझ पर कसरत से दुरूद पढ़ो क्यूं कि तुम्हारा दुरूद मुझ पर पेश किया जाता है। (طبرانی)

मदीनए मुनव्वरह زَادَهَا اللّٰهُ شَرَفًا وَّتَعْظِيْمًا में भूक ने बहुत सताया तो मैं मज़दूरी के लिये निकला, देखा कि एक औ़रत मिट्टी के ढेलों को जम्अ़ कर के इन को भिगोना चाहती थी मैं ने उस से फ़ी डोल एक खजूर उजरत तै की और सोलह डोल डाल कर उस मिट्टी को भिगो दिया यहां तक कि मेरे **हाथों में छाले पड़ गए** फिर वोह खजूरें ले कर मैं हुज़ूरे अकरम, नूरे मुजस्सम, शाहे बनी आदम, रसूले मोह़तशम शाफ़ेए़ उमम صَلَّى اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم के हुज़ूर ह़ाज़िर हुवा और सारा वाक़िआ़ बयान किया तो आप صَلَّى اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने भी उन में से कुछ खजूरें तनावुल फ़रमाईं।

(सफ़ीनए नूह़, ह़िस्सए अव्वल, स. 99)

अल्लाह عَزَّوَجَلَّ की उन पर रह़मत हो और उन के सदक़े हमारी मग़्फ़िरत हो।

صَلُّوْا عَلَى الْحَبِيْب! صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلٰى مُحَمَّد

﴾13﴿ दिल को नर्म करने का नुस्ख़ा

प्यारे प्यारे इस्लामी भाइयो ! अमीरुल मुअमिनीन ह़ज़रते मौलाए काएनात, अ़लिय्युल मुर्तज़ा शेरे ख़ुदा كَرَّمَ اللّٰهُ تَعَالٰى وَجْهَهُ الْكَرِيْم की सादगी पर हमारी जान क़ुरबान हो। इतनी इतनी मशक़्क़तें बरदाश्त करने के बा वुजूद ज़बान पर कभी ह़र्फ़े शिकायत न लाते। ग़िज़ा के साथ साथ आप का लिबास भी इन्तिहाई सादा हुवा करता था। एक बार आप كَرَّمَ اللّٰهُ تَعَالٰى وَجْهَهُ الْكَرِيْم की ख़िदमत में अ़र्ज़ की गई, आप अपनी क़मीज़ में

पैवन्द क्यूं लगाते हैं ? फ़रमाया, يَخْشَعُ القَلْبُ و يقتدى بِهِ الْمُؤمِنُ या'नी इस से दिल नर्म रहता है और मोमिन इस की पैरवी करता है। (या'नी मोमिन का दिल नर्म ही होना चाहिये) (حلية الاولياء ج١ص١٢٤)

صَلُّوا عَلَى الْحَبِيْب ! صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلٰى مُحَمَّد

﴾14﴿ जूती सी रहे थे

ह़ज़रते सय्यिदुना अ़ब्दुल्लाह बिन अ़ब्बास رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْهُمَا फ़रमाते हैं, मैं एक दिन अमीरुल मुअमिनीन ह़ज़रते मौलाए काएनात, अ़लिय्युल मुर्तज़ा शेरे ख़ुदा كَرَّمَ اللّٰهُ تَعَالٰى وَجْهَهُ الْكَرِيْم की ख़िदमते बा बरकत में ह़ाज़िर हुवा, देखा कि आप كَرَّمَ اللّٰهُ تَعَالٰى وَجْهَهُ الْكَرِيْم अपने मुबारक **जूते** को पैवन्द लगा रहे हैं। मैं ने तअ़ज्जुब किया तो फ़रमाया, **रसूलुल्लाह** صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰی عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم अपनी **ना'लैने शरीफ़ैन** और **लिबासे मुबारक** को पैवन्द लगा लिया करते और सुवारी पर अपने पीछे दूसरे को भी बिठा लिया करते थे। (सफ़ीनए नूह़, हि़स्सए अव्वल, स. 98)

अल्लाह عَزَّوَجَلَّ **की उन पर रह़मत हो और उन के सदक़े हमारी मग़्फ़िरत हो।**

कह दे कोई घेरा है बलाओं ने ह़सन को رَحْمَةُ اللّٰهِ تَعَالٰى عَلَيْه
ऐ शेरे ख़ुदा كَرَّمَ اللّٰهُ تَعَالٰى وَجْهَهُ الْكَرِيْم *बहरे मदद तैग़ बकफ़ जा*

﴾15﴿ ख़ुश ज़ाएक़ा फ़ालूदा

अमीरुल मुअमिनीन ह़ज़रते मौलाए काएनात, अ़लिय्युल मुर्तज़ा शेरे ख़ुदा كَرَّمَ اللّٰهُ تَعَالٰى وَجْهَهُ الْكَرِيْم की ख़िदमते बा बरकत में एक बार **ख़ुश**

ज़ाएक़ा फ़ालूदा पेश किया गया। फ़रमाया, इस की ख़ुश्बू, रंग और ज़ाएक़ा कितना अच्छा है ! मैं इस बात को पसन्द नहीं करता कि अपने नफ़्स को ऐसी चीज़ का आ़दी बनाऊं जिस की उसे आ़दत नहीं।

(حلية الاولياء ج ۱ ص ۱۲۳ حديث ۲٤۷)

अल्लाह عَزَّوَجَلَّ **की उन पर रह़मत हो और उन के सदक़े हमारी मग़्फ़िरत हो।**

जैसी ने'मत वैसा ह़िसाब : प्यारे प्यारे इस्लामी भाइयो ! अमीरुल मुअमिनीन ह़ज़रते मौलाए काएनात, अ़लिय्युल मुर्तज़ा शेरे ख़ुदा كَرَّمَ اللّٰهُ تَعَالٰى وَجْهَهُ الْكَرِيْم की नफ़्स कुशी मरह़बा ! काश ! हम भी सख़्त गरमी में नफ़्स के मुत़ालबे पर आइसक्रीम या फ़ालूदा खाते और ठन्डे मश्रूबात गट़गट़ाते वक़्त अमीरुल मुअमिनीन ह़ज़रते मौलाए काएनात, अ़लिय्युल मुर्तज़ा शेरे ख़ुदा كَرَّمَ اللّٰهُ تَعَالٰى وَجْهَهُ الْكَرِيْم की इस ईमान अफ़्रोज़ ह़िकायत को भी कभी कभी याद कर लिया करें। **याद रखिये !** नफ़्स को जिस क़दर आसाइशों की आ़दत डाली जाए वोह उसी क़दर ढीट और ऐ़श परस्त हो जाता है। देखिये ! जब पंखा ईजाद नहीं हुवा था उस वक़्त भी लोग गुज़ारा कर ही लेते थे और आज बहुत सों की एर कन्डीशन्ड रूम में सोने की आ़दत पड़ गई है उन को अब गर्मियों में A.C. के बिग़ैर नींद आना दुश्वार होता होगा। इसी त़रह़ जो उ़म्दा व लज़ीज़ और गर्मा गर्म खानों के आ़दी हैं, सादा खाना देख कर उन का "मूड ऑफ़" हो जाता होगा।

बल्कि कभी इत्तिफ़ाक़ से घर में उन की मरज़ी के ख़िलाफ़ खाना पेश किया जाता होगा तो बक बक करते, लड़ते झगड़ते, अपने बच्चों की अम्मीजान बल्कि ख़ुद अपनी मां से مَعَاذَاللّٰه उलझ पड़ते और दिल आज़ारियों वग़ैरा के कबीरा गुनाहों में जा पड़ते होंगे। अगर कभी आप ने इस तरह़ की ख़ता की है तो मेरा मश्वरा है कि तौबा भी कीजिये और जिस जिस की दिल आज़ारी की है उस से मुआफ़ी तलाफ़ी भी फ़रमा लीजिये। वरना **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ की नाराज़गी की सूरत में मरने के बा'द सख़्त पछतावा होगा। **याद रखिये !** दुन्या में ने'मत जितनी उ़म्दा होगी बरोज़े क़ियामत उस का ह़िसाब भी उतना ही ज़ियादा होगा। ह़िसाबे आख़िरत के मुआ़मले में उ़म्दगी का मे'यार अपनी अपनी पसन्द के ए'तिबार से होगा। मसलन जो चावल के बजाए रोटी ज़ियादा पसन्द करता है उस के लिये चावल के मुक़ाबले में रोटी बड़ी ने'मत है और इसी मुनासबत से उस से रोटी का ह़िसाब ज़ियादा और जो चावल का शौक़ीन होगा उस के लिये रोटी के मुक़ाबले में चावल का ह़िसाब ज़ियादा। وَعَلٰى هٰذَا الْقِيَاس (या'नी और इसी पर हर चीज़ को क़ियास कर लीजिये)

अल्लाह तबारक व तआ़ला पारह **30 सूरतुत्तकासुर** की आख़िरी आयते करीमा में इर्शाद फ़रमाता है :

ثُمَّ لَتُسْـَٔلُنَّ یَوْمَىٕذٍ عَنِ النَّعِیْمِ ﴿۸﴾

(پ ۳۰ التّکاثُر ۸)

तरजमए कन्ज़ुल ईमान : फिर बेशक ज़रूर उस दिन तुम से ने'मतों से पुरसिश होगी।

फ़रमाने मुस्तफ़ा صَلَّى اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم : जिस के पास मेरा ज़िक्र हुवा और उस ने मुझ पर दुरूदे पाक न पढ़ा तह़क़ीक़ वोह बद बख़्त हो गया। (ابن سنی)

ने'मत की अक़्साम और उन के बारे में क़ियामत के सुवालात :

मुफ़स्सिरे शहीर **ह़कीमुल उम्मत** ह़ज़रते मुफ़्ती अह़मद यार ख़ान عَلَيْهِ رَحْمَةُ الْحَنَّان इस आयते मुबारका के तह़्त येह भी फ़रमाते हैं, येह सुवाल हर ने'मत के मुतअ़ल्लिक़ होगा। जिस्मानी या रूह़ानी, ज़रूरत की हो या ऐ़शो राह़त की, ठन्डे पानी, दरख़्त के साए, राह़त की नींद का भी। जैसे कि ह़दीस शरीफ़ में है और "नई़म" के इत़्लाक़ से (भी) मा'लूम होता है। बिग़ैर इस्तिह़्क़ाक़ जो अ़त़ा हो वोह "ने'मत" है, रब عَزَّوَجَلَّ का हर अ़तिय्या ने'मत है ख़्वाह जिस्मानी हो या रूह़ानी। इस की दो[2] क़िस्में हैं : ﴾1﴿ **कस्बी** ﴾2﴿ **वह्बी**। जो ने'मतें हमारी कमाई से मिलें वोह कस्बी हैं, जैसे दौलत सल्त़नत वग़ैरा। जो मह़ज़ रब عَزَّوَجَلَّ की अ़त़ा से हों, वोह वह्बी जैसे हमारे आ'ज़ा, चांद सूरज, वग़ैरा। **कस्बी** ने'मत के मुतअ़ल्लिक़ तीन सुवाल होंगे ﴾1﴿ कहां से ह़ासिल कीं ? ﴾2﴿ कहां ख़र्च कीं ? ﴾3﴿ इन का शुक्रिय्या क्या अदा किया ? **वह्बी** ने'मतों के मुतअ़ल्लिक़ आख़िरी दो सुवाल होंगे। (नूरुल इरफ़ान, सफ़ह़ा : 956)

लाज रख ले गुनाहगारों की नाम रह़मान है तेरा या रब عَزَّوَجَلَّ
ऐ़ब मेरे न खोल मह़शर में नाम सत्तार है तेरा या रब عَزَّوَجَلَّ
बे सबब बख़्श दे, न पूछ अ़मल
नाम ग़फ़्फ़ार है तेरा या रब عَزَّوَجَلَّ

मुबाह़ कब इबादत बनता है ? : प्यारे प्यारे इस्लामी भाइयो ! मुबाह़ (या'नी ऐसा अ़मल जिस पर सवाब मिले न गुनाह) में अगर अच्छी निय्यत शामिल कर ली जाए तो वोह कारे सवाब बन जाता है अब जिस क़दर अच्छी निय्यतें ज़ियादा होंगी उसी क़दर सवाब में भी इज़ाफ़ा होता चला जाएगा मगर उस अच्छी निय्यत का तअ़ल्लुक़ अ़मले आख़िरत से होना ज़रूरी है। फ़िक़्ह की मश्हूर किताब **अल अश्बाहु वन्नज़ाइर** में है, "मुबाह़ात का मुआ़मला निय्यात के ए'तिबार से मुख़्तलिफ़ होता है अगर उन से ताआ़त पर तक़्व्वा (या'नी इबादात पर क़ुव्वत ह़ासिल करना) या उन तक पहुंचना मक़्सूद हो तो फिर येह (मुबाह़ भी) **इबादत** है।"

(اَلْاَشباہُ وَ النَّظائِر ج ۱ ص ۲۸ بابُ المدینه کراچی)

लुत्फ़ अन्दोज़ी के लिये मुबाह़ का इस्ति'माल : कोशिश करनी चाहिये कि जो भी मुबाह़ (या'नी जिस का करना सिर्फ़ जाइज़ हो, सवाब या गुनाह न हो) काम किया जाए या मुबाह़ ग़िज़ा इस्ति'माल की जाए उस में ज़ियादा से ज़ियादा अच्छी निय्यतें शामिल कर ली जाएं ताकि ख़ूब ख़ूब सवाब मिले। अगर्चे अच्छी निय्यत के बिग़ैर सिर्फ़ लुत्फ़ अन्दोज़ होने के लिये मुबाह़ चीज़ें इस्ति'माल करने वाला गुनहगार नहीं ताहम हुज्जतुल इस्लाम ह़ज़रते सय्यिदुना इमाम मुह़म्मद ग़ज़ाली عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللّٰهِ الْوَالِى का इर्शादे आ़ली है, "इस से सुवाल ज़रूर होगा और जिस से ह़िसाब में झगड़ा हुवा उसे अ़ज़ाब दिया गया और **जो आदमी**

दुन्या में मुबाह़ चीज़ों को इस्ति'माल करता है अगर्चे इसे क़ियामत में अ़ज़ाब नहीं होगा लेकिन इसी मिक़्दार में आख़िरत की ने'मतें कम हो जाएंगी, ग़ौर तो कीजिये ! कितने बड़े नुक़्सान की बात है कि इन्सान फ़ानी ने'मतों के हुसूल में बहुत जल्दी करे और इस के बदले उख़्रवी ने'मतों में कमी के ज़रीए नुक़्सान उठाए ।" (إحياءُ العُلوم ج ٥ ص ٩٨)

आख़िरत में सो100 हिस्से कमी : पिज़्ज़ों, पराठों, कबाबों, समोसों, गर्मा गर्म पकोड़ों, आइसक्रीमों, ठन्डी ठन्डी बोतलों, ख़ुश ज़ाएक़ा फ़ालूदों, मीठे मीठे मज़ेदार शरबतों वग़ैरा उ़म्दा ग़िज़ाओं के शौक़ीनों, नीज़ आ़लीशान कोठियों, वसीअ़ मकानों, नित नए बेश क़ीमत लिबासों, हर त़रह़ की आसाइशों और सहूलतों के त़लब गारों, मालदारों, सरमाया दारों, दुन्या में ख़ूब ख़ुशियां पाने वालों, अच्छी सिह़ह़त वालों, इक़्तिदार की हवस में बद मस्त रहने वालों के लिये बिल ख़ुसूस ग़ौरो फ़िक्र का मक़ाम है, आह ! आह ! आह ! "तज़्किरतुल औलिया" में है कि ह़ज़रते सय्यिदुना फ़ुज़ैल बिन इयाज़ رَحْمَةُ اللّٰهِ تَعَالٰى عَلَيْه फ़रमाते हैं, जब दुन्या में किसी को ने'मतों से नवाज़ा जाता है तो **आख़िरत में उस के सो100 हिस्से कम कर दिये जाते हैं,** क्यूं कि वहां तो सिर्फ़ वोही मिलेगा जो दुन्या में कमाया है, लिहाज़ा इन्सान के इख़्तियार में है कि वोह ह़िस्सए आख़िरत में कमी करे या ज़ियादती । मज़ीद फ़रमाया, **दुन्या में उ़म्दा लिबास** और **अच्छा खाने की आ़दत मत डालो कि मह़शर में इन चीज़ों से मह़रूम कर दिये जाओगे ।** (تذكرةُ الاولياء ج ١ ص ١٧٥)

सदक़ा प्यारे की हया का कि न ले मुझ से हिसाब

बख़्श बे पूछे लजाए को लजाना क्या है

प्यारे प्यारे इस्लामी भाइयो ! दुन्या की सारी लज़्ज़तें बिल आख़िर ख़त्म हो जाएंगी। काश ! मरने से पहले पहले हमारी हिर्स का ख़ातिमा हो जाए। हाए ! हाए ! दुन्या की नैरंगियां ! और इस बे वफ़ा दुन्या पर फ़रेफ़्ता होने वालों की बे नूर ज़िन्दगियां ! आइये ! मैं आप को एक इब्रत नाक वाक़िआ़ सुनाता हूं, है कोई इब्रत ह़ासिल करने वाला !

﴾16﴿ नाचरंग की मह़फ़िल जारी थी कि...

कहते हैं, 3 रमज़ानुल मुबारक 1426 सि.हि. (ब मुत़ाबिक़ 8-10-05) को पुर शिकोह इमारत "**मार्गला टावर**" में कुछ मग़रिबी तहज़ीब के दिलदादा मुसल्मानों ने यहूदो नसारा के साथ मिल कर مَعَاذَ الله عَزَّوَجَلَّ एह़तिरामे रमज़ानुल मुबारक को बालाए त़ाक़ रख कर शराब पी कर ख़ूब **नाचरंग** की मह़फ़िल बरपा की। येह लोग अपनी आ़क़िबत के अन्जाम से बिल्कुल बे ख़बर गुनाहों के इन घिनौने कामों में अभी मश्ग़ूल थे कि अचानक **ख़ौफ़नाक ज़ल्ज़ला** आया और उस ने ऐ़श परस्तों की तमाम तर शाद कामियों और ख़र मस्तियों को **ख़ाक** में मिला कर रख दिया !

याद रखो ! मौत अचानक आएगी

सारी मस्ती ख़ाक में मिल जाएगी

ज़ल्ज़ला गुनाहों की वज्ह से आता है : प्यारे प्यारे इस्लामी भाइयो ! सरकारे आ'ला हज़रत, इमामे अहले सुन्नत, वलिय्ये ने'मत, अ़ज़ीमुल बरकत, अ़ज़ीमुल मर्तबत, परवानए शम्ए़ रिसालत, मुजद्दिदे दीनो मिल्लत, ह़ामिये सुन्नत, माह़िये बिद्अ़त, आ़लिमे शरीअ़त, पीरे त़रीक़त, बाइ़से ख़ैरो बरकत, ह़ज़रते अ़ल्लामा मौलाना अलह़ाज अल ह़ाफ़िज़ अल क़ारी शाह इमाम अह़मद रज़ा ख़ान عَلَيْهِ رَحْمَةُ الرَّحْمٰن फ़रमाते हैं, "(ज़ल्ज़ले का) अस्ली बाइ़स आदमियों के गुनाह हैं ।" (फ़तावा रज़विय्या, जि. 27, स. 93) आह ! आजकल गुनाहों का ज़ोरदार **सैलाब** है, ख़ुद बुराइयों से बचना तो एक त़रफ़ रहा, नेकियां करने और सुन्नतों पर अ़मल करने वालों के लिये भी गोया ज़मीन तंग कर दी गई है ! आह ! आह ! आह ! बरोज़ हफ़्ता 3 रमज़ानुल मुबारक 1426 सि. हि. 8-10-05 को कुछ लोग त़रह़ त़रह़ के गुनाहों में मश्ग़ूल थे कि यकायक **ख़ौफ़नाक ज़ल्ज़ला** आया और उस ने हमारे वत़ने अ़ज़ीज़ के मशरिक़ी ह़िस्से को उजाड़ कर रख दिया ! ज़ल्ज़ले के ज़िम्न में **दा'वते इस्लामी** के **मदनी क़ाफ़िलों** के मुसाफ़िर आ़शिक़ाने रसूल के इ़ब्रत नाक तजरिबात व मुशाहदात पढ़िये और ख़ूब तौबा व इस्तिग़्फ़ार कीजिये ।

﴾17﴿ ज़िन्दा बच्ची प्रेशर कुक्कर में उबाल दी !

कहते हैं, किसी अ़लाक़े में एक शख़्स जिस की 5 बच्चियां थीं, **छटी** बार विलादत होने वाली थी । उस ने एक दिन अपनी **बीवी** से

कहा कि अगर अब की बार भी तूने **बच्ची को जना** तो मैं तुझे नौ मौलूद बच्ची समेत **क़त्ल** कर दूंगा। रमज़ानुल मुबारक की **तीसरी** शब एक बार फिर बच्ची ही की विलादत हुई। सुब्ह़ के वक़्त बच्ची की मां की चीख़ो पुकार की परवाह किये बिग़ैर उस **बे रह़्म** बाप ने مَعَاذَ اللّٰه عَزَّوَجَلَّ **अपनी फूल जैसी ज़िन्दा बच्ची को उठा कर प्रेशर कुकर में डाल कर चूल्हे पर चढ़ा दिया।** यकायक **प्रेशर कुकर** फटा और साथ ही **ख़ौफ़नाक ज़ल्ज़ला** आ गया ! देखते ही देखते वोह ज़ालिम शख़्स ज़मीन के अन्दर ज़िन्दा **धंस** गया। बच्ची की मां को ज़ख़्मी ह़ालत में बचा लिया गया और ग़ालिबन उसी के ज़रीए़ इस दर्दनाक क़िस्से का इन्किशाफ़ हुवा।

صَلُّوا عَلَى الْحَبِيب! صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلٰى مُحَمَّد

تُوبُوا اِلَى اللّٰه! اَسْتَغْفِرُ اللّٰه

صَلُّوا عَلَى الْحَبِيب! صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلٰى مُحَمَّد

﴾18﴿ कटा हुवा सर

ज़ल्ज़ला ज़दा मार्गला टावर के मल्बे में एक शख़्स का **कटा हुवा सर** मिला, धड़ न मिल सका बा'ज़ अफ़राद ने सर को पहचान कर बताया कि "येह बद नसीब शख़्स जब **अज़ान** शुरूअ़ होती तो गानों की आवाज़ मज़ीद ऊंची कर लेता था।"

प्यारे प्यारे इस्लामी भाइयो ! इस ख़ौफ़नाक ज़ल्ज़ले ने बेहद तबाही मचाई, लाखों अफ़राद मारे गए और ज़ख़्मियों का तो कोई शुमार ही नहीं। तब्लीग़े क़ुरआनो सुन्नत की आ़लमगीर ग़ैर सियासी तह़रीक **दा'वते इस्लामी** के आ़शिक़ाने रसूल के सुन्नतों की तरबियत के कुछ मदनी क़ाफ़िले भी ज़ल्ज़ला ज़दा अ़लाक़ों में ला पता हो गए मगर اَلْحَمْدُ لِلّٰه عَزَّوَجَلَّ वोह जल्द ही ज़िन्दा सलामत मिल गए उन में से एक मदनी क़ाफ़िले की मदनी बहार मुलाह़ज़ा हो चुनान्चे

(19) "या रसूलल्लाह" लिखने की बरकत

7 इस्लामी भाइयों पर मुश्तमिल एक 30 दिन के **मदनी क़ाफ़िले** का कुछ इस त़रह़ बयान है, हमारा मदनी क़ाफ़िला **जामेअ़ मस्जिद ग़ौसिया** में ठहरा हुवा था, 3, रमज़ानुल मुबारक 1426 सि.हि. (ब मुत़ाबिक़ 8-10-05) को नमाज़े फ़ज्र व इश्राक़ वग़ैरा के बा'द जद्वल के मुत़ाबिक़ आ़शिक़ाने रसूल आराम कर रहे थे कि यकायक ज़ोरदार झटके से सब हड़बड़ा कर जाग उठे, ह़वास क़ाइम हों इस से पहले ही मस्जिद के दरो दीवार कड़ाके धड़ाके के साथ टूटने लगे, मगर **या रसूलल्लाह** के ना'रे पर हमारी जान क़ुरबान ! मस्जिद की जनूबी दीवार का वोह ह़िस्सा जिस पर **या रसूलल्लाह** صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم **लिखा हुवा था वोह गिरने से बच गया और छत उस पर गिर कर तिरछी खड़ी हो गई।**

اَلْحَمْدُ لِلّٰه عَزَّوَجَلَّ हम यूं बाल बाल बच कर ज़िन्दा सलामत बाहर निकलने में काम्याब हो गए। चारों त़रफ़ मकानात मिस्मार हो चुके थे, ज़ख़्मियों की चीख़ो पुकार से फ़ज़ा का सीना दहल रहा था, जगह जगह लोग मल्बे तले दबे पड़े थे, कई दम तोड़ चुके थे और कुछ आख़िरी हिचकियां ले रहे थे। हम ने लोगों के साथ मिल कर इमदादी काम किया, मस्जिद के सामने वाक़ेअ़ एक मकान के मल्बे से **एक डेढ़ सालह बच्ची** को ज़िन्दा निकालने में कामियाबी मिली। जिस त़रह़ बन पड़ा कई **शुहदा** के जनाज़े पढ़े और उन की तदफ़ीन में हि़स्सा लिया। اَلْحَمْدُ لِلّٰه عَزَّوَجَلَّ हमारी इन कोशिशों के सबब तबाह ह़ाली के बा वुजूद वहां के मुसल्मानों की **दा'वते इस्लामी** से मह़ब्बत क़ाबिले दीद थी।

या रसूलल्लाह के ना'रे से हम को प्यार है
जिस ने येह ना'रा लगाया उस का बेड़ा पार है

صَلُّوا عَلَی الْحَبِیْب! صَلَّی اللّٰهُ تَعَالٰی عَلٰی مُحَمَّد

﴾20﴿ दुश्वार गुज़ार घाटी

ह़ज़रते सय्यिदुना अबुद्दरदा رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْه एक रोज़ अपने अह़बाब में तशरीफ़ फ़रमा थे, आप رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْه की ज़ौजए मोह़तरमा رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْهَا आईं और कहने लगीं, आप यहां इन लोगों में तशरीफ़ फ़रमा हैं और बख़ुदा घर में मुट्ठी भर भी आटा नहीं। उन्हों ने जवाब

दिया, येह क्यूं भूलती हो कि हमारे सामने एक निहायत **दुश्वार गुज़ार घाटी** है जिस से हलके सामान वालों के सिवा कोई नजात नहीं पाएगा। येह सुन कर वोह ख़ुशी के साथ वापस चली गईं।

(رَوضُ الرياحين ص ١٠ الميمنية مصر)

अल्लाह عَزَّوَجَلَّ की उन पर रहमत हो और उन के सदक़े हमारी मग़्फ़िरत हो।

शिक्वा नहीं करना चाहिये : प्यारे प्यारे इस्लामी भाइयो ! देखा आप ने ! सहाबिये रसूल **हज़रते** सय्यिदुना अबुद्दरदा رَضِىَ اللّٰهُ تَعَالٰى عَنْهُ किस क़दर क़नाअ़त पसन्द थे और आप की अहलियए मोह़तरमा رَضِىَ اللّٰهُ تَعَالٰى عَنْهَا भी कैसी इताअ़त गुज़ार थीं कि घर में खाने के लिये कुछ न होने के बा वुजूद हज़रत का ख़ौफ़े ख़ुदा से मम्लू जुम्ला सुन कर बत़ीबे ख़ातिर वापस लौट गईं। तंगदस्तियों और घरेलू परेशानियों से घबरा कर शिक्वा शिकायत करने के बजाए हमेशा **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ की बारगाह में रुजूअ़ करना चाहिये और उस की रिज़ा पर राज़ी रहना चाहिये।

ज़बां पर शिक्वए रन्जो अलम लाया नहीं करते
नबी के नाम लेवा ग़म से घबराया नहीं करते

صَلُّوا عَلَى الْحَبِيب! صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلٰى مُحَمَّد

﴾21﴿ परेशान ह़ाल की दुआ

एक बुज़ुर्ग رَحْمَةُ اللّٰهِ تَعَالٰى عَلَيْه की ख़िदमत में एक शख़्स ने अ़र्ज़ की, हुज़ूर ! अहलो इयाल की फ़िक्र ने मुझे परेशान कर रखा है। मेरे ह़क़

में दुआ फ़रमाइये। जवाब दिया, तेरे अहलो इयाल जब तुझ से आटा और रोटी न होने की शिकायत करें उस वक़्त **अल्लाह** तबारक व तआ़ला से दुआ किया कर कि तेरी उस वक़्त की दुआ क़बूलिय्यत के ज़ियादा क़रीब है। (مُلَخَّصاً رَوضُ الرياحين ص ١١)

प्यारे प्यारे इस्लामी भाइयो ! ज़ाहिर है कि जिस की तंगदस्ती उ़रूजे बाम पर होगी वोह शख़्स बेहद दुखी और ग़मगीन होगा और दुख्यारों की दुआ क़बूल होती है जैसा कि रईसुल मुतकल्लिमीन ह़ज़रते अ़ल्लामा मौलाना नक़ी अ़ली ख़ान عَلَيْهِ رَحْمَةُ الْمَنَّان ने अपनी किताबे मुस्तत़ाब "अह़सनुल विआ़इ लि आदाबिदुआ़अ" में सफ़ह़ा 111 पर जिन लोगों की दुआएं क़बूल होती हैं उन में सब से पहले नम्बर पर लिखा है, "अव्वल : **मुज़्त़र** (या'नी दुख्यारा)" इस के ह़ाशिये में सरकारे आ'ला ह़ज़रत, इमामे अहले सुन्नत, मौलाना शाह इमाम अह़मद रज़ा ख़ान عَلَيْهِ رَحْمَةُ الرَّحْمٰن फ़रमाते हैं, "इस की त़रफ़ या'नी दुख्यारे और लाचार व नाशाद की दुआ की क़बूलिय्यत की त़रफ़ तो ख़ुद क़ुरआने करीम में इर्शाद मौजूद है :

اَمَّنْ يُّجِيْبُ الْمُضْطَرَّ اِذَا دَعَاهُ وَيَكْشِفُ السُّوْٓءَ (پ٢٠ النمل ٦٢)

तरजमए कन्ज़ुल ईमान : या वोह जो लाचार की सुनता है, जब उसे पुकारे और दूर कर देता है बुराई।

﴾22﴿ मरहबा ! ऐ फ़ाक़ा मस्ती !

किसी मर्दे सालेह से जब उन के बाल बच्चों ने कहा, आज की रात खाने के लिये कुछ भी नहीं। फ़रमाया, हमारा ऐसा मक़ाम नहीं कि **अल्लाह** तआ़ला हमें भूका रखे ! येह दरजा तो वोह अपने वलियों को अ़ता फ़रमाता है। मशाइख़ में से बा'ज़ का येह ह़ाल था कि उन्हें जब तंगदस्ती पेश आती तो फ़रमाते, **मरहबा ! ऐ शआ़रे सालिह़ीन !** (या'नी ऐ गुरबतो फ़ाक़ा मस्ती ! तू तो अहलुल्लाह की निशानी है तुझे ख़ुश आमदीद कि हमारे पास तेरी तशरीफ़ आवरी हो गई) (رَوضُ الرِياحين ص ١١)

वोह इश्क़े ह़क़ीक़ी की लज़्ज़त नहीं पा सकता
जो रन्जो मुसीबत से दो चार नहीं होता

फ़ुज़ूल फ़िक्रें छोड़ दीजिये : प्यारे प्यारे इस्लामी भाइयो ! इस हिकायत में उन बे सब्रों के लिये काफ़ी दर्स है जो दुन्यवी मुस्तक़्बिल की बे जा फ़िक्रों में पड़ते, कुढ़ते और ख़्वाह म ख़्वाह दिल मसूसते रहते हैं, उन की बच्चियां अभी तो कमसिन होती हैं फिर भी उन की शादियों के लिये सोच सोच कर पागल हुए जाते हैं। फ़र्ज़ हो जाने के बा वुजूद ह़ज की सआ़दत से ख़ुद को मह़रूम रखते हैं और उ़ज़्र येही होता है कि पहले बच्चियों की शादी के "फ़र्ज़" से सुबुक दोश हो जाएं ! ह़ालां कि ज़िन्दगी का कोई भरोसा नहीं, बच्चियों की जवानी तक ख़ुद ज़िन्दा रहेंगे या नहीं इस की किसी के पास कोई गेरन्टी नहीं या बच्चियां जवानी की दहलीज़

पर क़दम रखने से क़ब्ल ही मौत के दरवाज़े से **क़ब्र** की सीढ़ियां उतर जाएंगी इस का किसी को भी पता नहीं। आह ! कई लोग हाए दुन्या ! हाए दुन्या ! करते हुए दुन्या से रुख़्सत हो जाते हैं, मगर जीते जी आख़िरत की त़रफ़ उन की कोई तवज्जोह नहीं होती। मुसल्मान को हिम्मत और ख़ुश अ़क़ीदगी से काम लेना चाहिये। हमें ख़्वाह म ख़्वाह "दो[2] जान" की फ़िक्र खाए जाती है ह़ालां कि दो[2] जहान को पालने वाला हमारा ह़ामी व नासिर है।

मसाइब में कभी ह़र्फ़े शिकायत लब पे मत लाना

मुसीबत में ख़ुदा बन्दों को अपने आज़्माता है

प्यारे प्यारे इस्लामी भाइयो ! अल्लाह عَزَّوَجَلَّ के ऐसे ऐसे साबिर बन्दे गुज़रे हैं जिन्हों ने मुसीबतों को इस त़रह़ गले लगाया कि **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ से उन के टलने की दुआ़ करने को भी मक़ामे तस्लीमो रिज़ा के मुनाफ़ी जाना चुनान्चे,

﴿23﴾ अ़जीबो ग़रीब मरीज़

ह़ज़रते सय्यिदुना यूनुस عَلٰی نَبِیِّنَا وَعَلَیْہِ الصَّلٰوۃُ وَالسَّلَام ने ह़ज़रते सय्यिदुना जिब्रईले अमीन عَلٰی نَبِیِّنَا وَعَلَیْہِ الصَّلٰوۃُ وَالسَّلَام से फ़रमाया, मैं रूए ज़मीन के सब से बड़े **आ़बिद** (इ़बादत गुज़ार) को देखना चाहता हूं। ह़ज़रते सय्यिदुना जिब्रईले अमीन عَلَیْہِ السَّلَام आप عَلَیْہِ الصَّلٰوۃُ وَالسَّلَام को एक ऐसे शख़्स के पास ले गए जिस के हाथ पाउं जुज़ाम की वज्ह से गल कट कर जुदा हो चुके थे और वोह ज़बान से कह रहा था, "**या अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ !

तूने जब तक चाहा इन आ'ज़ा से मुझे फ़ाएदा बख़्शा और जब चाहा ले लिया और मेरी उम्मीद सिर्फ़ अपनी ज़ात में बाक़ी रखी, ऐ मेरे पैदा करने वाले ! मेरा तो मक़्सूद बस तू ही तू है।" हज़रते सय्यिदुना यूनुस عَلٰی نَبِیِّنَا وَعَلَیْہِ الصَّلٰوۃُ وَالسَّلَام ने फ़रमाया, ऐ जिब्रईले अमीन ! मैं ने आप को नमाज़ी रोज़ादार शख़्स दिखाने का कहा था। हज़रते सय्यिदुना जिब्रईले अमीन عَلٰی نَبِیِّنَا وَعَلَیْہِ الصَّلٰوۃُ وَالسَّلَام ने जवाब दिया, इस मुसीबत में मुब्तला होने से क़ब्ल येह ऐसा ही था, अब मुझे येह हुक्म मिला है कि इस की **आंखें** भी ले लूं। चुनान्चे हज़रते सय्यिदुना जिब्रईले अमीन عَلٰی نَبِیِّنَا وَعَلَیْہِ الصَّلٰوۃُ وَالسَّلَام ने इशारा किया और उस की **आंखें** निकल पड़ीं ! मगर आ़बिद ने ज़बान से वोही बात कही, "**या अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ ! जब तक तूने चाहा इन आंखों से मुझे फ़ाएदा बख़्शा और जब चाहा इन्हें वापस ले लिया। ऐ ख़ालिक़ ! عَزَّوَجَلَّ मेरी उम्मीद गाह सिर्फ़ अपनी ज़ात को रखा, मेरा तो मक़्सूद बस तू ही तू है।" हज़रते सय्यिदुना जिब्रईले अमीन عَلٰی نَبِیِّنَا وَعَلَیْہِ الصَّلٰوۃُ وَالسَّلَام ने **आ़बिद** से फ़रमाया, आओ हम तुम बाहम मिल कर दुआ़ करें कि **अल्लाह** तआ़ला तुम को फिर आंखें और हाथ पाउं लौटा दे और तुम पहले ही की त़रह़ इबादत करने लगो। आ़बिद ने कहा, हरगिज़ नहीं। हज़रते सय्यिदुना जिब्रईले अमीन عَلٰی نَبِیِّنَا وَعَلَیْہِ الصَّلٰوۃُ وَالسَّلَام ने फ़रमाया, आख़िर क्यूं नहीं ? आ़बिद ने जवाब दिया, "जब मेरे रब عَزَّوَجَلَّ की रिज़ा इसी में है तो मुझे सिह़्ह़त नहीं चाहिये।" हज़रते सय्यिदुना

यूनुस عَلٰی نَبِیِّنَا وَعَلَیْهِ الصَّلٰوۃُ وَالسَّلَام ने फ़रमाया, वाक़ेई मैं ने किसी और को इस से बढ़ कर आ़बिद नहीं देखा। ह़ज़रते सय्यिदुना जिब्राईले अमीन عَلٰی نَبِیِّنَا وَعَلَیْهِ الصَّلٰوۃُ وَالسَّلَام ने कहा, येह वोह रास्ता है कि रिज़ाए इलाही عَزَّوَجَلَّ तक रसाई के लिये इस से बेहतर कोई राह नहीं।

(رَوضُ الریاحین ص ١٥٥)

अल्लाह عَزَّوَجَلَّ की उन पर रह़मत हो और उन के सदक़े हमारी मग़्फ़िरत हो।

जे सोहना मेरे दुख विच राज़ी

मैं सुख नूं चुल्लहे पावां

मुसीबत छुपाने की फ़ज़ीलत : प्यारे प्यारे इस्लामी भाइयो! देखा आप ने! साबिर हो तो ऐसा! आख़िर कौन सी मुसीबत ऐसी थी जो उन बुज़ुर्ग رَحْمَۃُ اللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہ के वुजूद में न थी ह़त्ता कि बिल आख़िर आंखों के चराग़ भी बुझा दिये गए मगर उन के सब्रो इस्तिक़्लाल में ज़र्रा बराबर फ़र्क़ न आया, वोह "राज़ी ब रिज़ाए इलाही عَزَّوَجَلَّ" की उस अ़ज़ीम मन्ज़िल पर फ़ाइज़ थे कि **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ से शिफ़ा त़लब करने के लिये भी तय्यार नहीं थे कि जब **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ ने बीमार करना मन्ज़ूर फ़रमाया है तो मैं तन्दुरुस्त होना नहीं चाहता। سُبْحٰنَ اللّٰہ عَزَّوَجَلَّ! येह उन्हीं का ह़िस्सा था। ऐसे ही अहलुल्लाह का मकूला है۔ نَحنُ نَفرَحُ بِالْبَلَاءِ کَمَا یَفرَحُ اَھلُ الدُّنیا بِالنِّعَمِ या'नी "हम बलाओं और मुसीबतों के मिलने पर ऐसे ही ख़ुश होते हैं जैसे अहले दुन्या दुन्यवी ने'मतें हाथ आने पर ख़ुश होते हैं।" याद रहे! मुसीबत बसा अवक़ात मोमिन के ह़क़ में रह़मत हुवा करती है और सब्र कर के

अ़ज़ीम अज्र कमाने और बे हिसाब जन्नत में जाने का मौक़अ़ फ़राहम करती है। चुनान्चे हज़रते सय्यिदुना इब्ने अ़ब्बास رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ फ़रमाते हैं कि रसूले अकरम, नूरे मुजस्सम, शाहे बनी आदम, रसूले मोहतशम, शाफ़ेए उमम صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने इर्शाद फ़रमाया, **"जिस के माल या जान में मुसीबत आई फिर उस ने उसे पोशीदा रखा और लोगों पर ज़ाहिर न किया तो अल्लाह عَزَّوَجَلَّ पर हक़ है कि उस की मग़्फ़िरत फ़रमा दे।"** (مجمع الزوائد ج ١٠ ص ٤٥٠ حديث ١٧٨٧٢) एक और रिवायत में है, "मुसल्मान को मरज़, परेशानी, रन्ज, अज़िय्यत और ग़म में से जो मुसीबत पहुंचती है यहां तक कि कांटा भी चुभता है तो **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ उसे उस के गुनाहों का कफ़्फ़ारा बना देता है।" (صحيح البخاری ج ٤ ص ٣ حديث ٥٦٤١)

चुप कर सीं तां मोती मिल्सन, सब्र करे तां हीरे
पागलां वांगों रोला पावें नां मोती नां हीरे

صَلُّوْا عَلَى الْحَبِيْب ! صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلٰى مُحَمَّد

﴾24﴿ बीबी आ़इशा के ईसाले सवाब की हिकायत

इमामे रब्बानी हज़रत मुजद्दिदे अल्फ़े सानी قُدِّسَ سِرُّهُ الرَّبَّانِی फ़रमाते हैं, पहले अगर मैं कभी खाना पकाता तो उस का सवाब हुज़ूर सरवरे आ़लम صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم व हज़रते अमीरुल मुअमिनीन हज़रते मौलाए काएनात, अ़लिय्युल मुर्तज़ा शेरे ख़ुदा كَرَّمَ اللّٰهُ تَعَالٰى وَجْهَهُ الْكَرِيْم व हज़रत ख़ातूने जन्नत फ़ातिमतुज़्ज़हरा व हज़राते हसनैने करीमैन رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْھُمْ की अरवाहे मुक़द्दसा के लिये ही ख़ास ईसाले सवाब करता था और उम्महातुल

फ़रमाने मुस्तफ़ा صَلَّى اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم : जिस ने मुझ पर एक मर्तबा दुरूदे पाक पढ़ा अल्लाह उस पर दस रहमतें भेजता और उस के नामए आ'माल में दस नेकियां लिखता है। (ترمذی)

मुअमिनीन رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُنَّ का नाम शामिल न करता था। एक रात ख़्वाब में देखा कि जनाबे रिसालत मआब, महबूबे ख़ुदाए तव्वाब صَلَّى اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم तशरीफ़ फ़रमा हैं। मैं ने आप صَلَّى اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم की ख़िदमते बा बरकत में सलाम अ़र्ज़ किया तो आप صَلَّى اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم मेरी जानिब मुतवज्जेह न हुए और चेहरए अन्वर दूसरी जानिब फेर लिया और मुझ से फ़रमाया, "मैं **आ़इशा** (सिद्दीक़ा) के घर खाना खाता हूं, जिस किसी ने मुझे खाना भेजना हो वोह (हज़रत) आ़इशा के घर भेजा करे।" उस वक़्त मुझे मा'लूम हुवा कि आप صَلَّى اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم के तवज्जोह न फ़रमाने का सबब येह था कि मैं उम्मुल मुअमिनीन हज़रते सय्यिदतुना आ़इशा सिद्दीक़ा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہَا को शरीके तआ़म (या'नी ईसाले सवाब) न करता था। इस के बा'द से मैं हज़रते सय्यिदतुना **आ़इशा सिद्दीक़ा** رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہَا बल्कि तमाम उम्महातुल मुअमिनीन رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُنَّ को बल्कि सब अहले बैत को शरीक किया करता हूं और तमाम अहले बैत को अपने लिये वसीला बनाता हूं।

(मक्तूबाते इमाम रब्बानी, जि. 2, स. 85)

अल्लाह عَزَّوَجَلَّ की उन पर रहमत हो और उन के सदक़े हमारी मग़्फ़िरत हो।

सभी को ईसाले सवाब करना चाहिये : प्यारे प्यारे इस्लामी भाइयो! इस हिकायत से मा'लूम हुवा कि जिन को ईसाले सवाब किया जाता है उन को पहुंच जाता है येह भी पता चला कि ईसाले सवाब महदूद बुज़ुर्गों को करने के बजाए सभी को कर देना चाहिये। हम जितनों

को भी ईसाले सवाब करेंगे सभी को बराबर बराबर ही पहुंचेगा और हमारे सवाब में भी कोई कमी न होगी।[1] येह भी पता चला कि हमारे मीठे मीठे आक़ा صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰی عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم उम्मुल मुअमिनीन ह़ज़रते सय्यिदतुना आ़इशा सिद्दीक़ा رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْهَا से बेहद उन्सिय्यत रखते हैं। ह़ज़रते सय्यिदुना अ़म्रिब्नुल आ़स رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْهُ जब "ग़ज़्वए सलासिल" से वापस लौटे तो उन्हों ने अ़र्ज़ की, **या रसूलल्लाह** صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰی عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ! आप को तमाम लोगों में सब से ज़ियादा मह़बूब कौन है ? फ़रमाया, आ़इशा। उन्हों ने फिर अ़र्ज़ की, मर्दों में ? फ़रमाया, उन के वालिद (या'नी ह़ज़रते सय्यिदुना अबू बक्र सिद्दीक़ رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْهُ)।

(صحیح البخاری ج۲ ص۵۱۹ حدیث ۳۶۶۲)

बिन्ते सिद्दीक़ आरामे जाने नबी उस ह़रीमे बराअत पे लाखों सलाम
या'नी है सूरए नूर जिन की गवाह उन की पुरनूर सूरत पे लाखों सलाम

صَلُّوا عَلَى الْحَبِيب ! صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰی عَلٰی مُحَمَّد

﴾25﴿ बड़ी बी का ईमान अफ़रोज़ ख़्वाब

اَلْحَمْدُ لِلّٰه عَزَّوَجَلَّ **दा'वते इस्लामी** वालों पर झूम झूम कर बाराने रह़मत बरसती है, अ़लाक़ाई दौरा बराए **नेकी की दा'वत** की भी क्या ख़ूब बहारें हैं। चुनान्चे बरमिंगहम (U.K.) के एक इस्लामी भाई का बयान अपने अन्दाज़ व अल्फ़ाज़ में पेशे ख़िदमत है, "हम एक बार

1 : मज़ीद मा'लूमात के लिये मक्तबतुल मदीना से रिसाला **फ़ातिह़ा और ईसाले सवाब का त़रीक़ा** हदिय्यतन ह़ासिल कर के पढ़िये।

मुसल्मानों की गुन्जान आबादी वाले अ़लाके़ small health जिस को हम अपने **मदनी माहोल** में "मक्की ह़ल्क़ा" कहते हैं में अ़लाक़ाई दौरा करते हुए **नेकी की दा'वत** देने के लिये घर घर जा रहे थे। इस दौरान एक घर पर दस्तक दी तो एक उ़म्र रसीदा ख़ातून निकलीं जो उर्दू और इंग्लिश से ना बलद थीं। हम ने सर झुका कर पंजाबी में **नेकी की दा'वत** पेश की और अ़र्ज़ की, कि घर के मर्दों को फुलां वक़्त मस्जिद में भेज दीजिये। हम जब जाने लगे तो वोह कहने लगीं, अब मेरी भी सुनो, हमारे पास वक़्त कम था इस लिये आगे बढ़ गए मगर हमारे एक इस्लामी भाई ठहर गए। बड़ी बी फ़रमाने लगीं اَلْحَمْدُ لِلّٰه عَزَّوَجَلَّ मैं ने चन्द ही रोज़ पहले येह मुबारक ख़्वाब देखा था कि **सरकारे मदीना** صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم **सब्ज़ सब्ज़ इमामे शरीफ़ वालों के झुरमट में मस्जिदुन्नबविय्यिश्शरीफ़** عَلٰى صَاحِبِهَا الصَّلٰوةُ وَالسَّلَام **से बाहर की त़रफ़ तशरीफ़ ला रहे हैं।" अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ की कुदरत कि आज वोही सब्ज़ इमामे वाले मेरे घर नेकी की दा'वत देने आ गए ! उन को इस्लामी बहनों के हफ़्तावार इज्तिमाअ़ की दा'वत दी गई। अब वोह अपने ख़ानदान की इस्लामी बहनों समेत बा क़ाइदगी के साथ हफ़्तावार सुन्नतों भरे इज्तिमाअ़ में शिर्कत फ़रमाती हैं।

हैं ग़ुलामों के झुरमट में बदरुद्दुजा

नूर ही नूर हर सू मदीने में है

صَلُّوْا عَلَى الْحَبِيْب ! صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلٰى مُحَمَّد

इस्लामी बहनों में मदनी इन्क़िलाब : प्यारे प्यारे इस्लामी भाइयो ! देखा आप ने ! दा'वते इस्लामी वालों पर सरकारे नामदार, दो[2] आ़लम के मालिको मुख़्तार, शहन्शाहे अबरार صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰی عَلَیْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم का कितना बड़ा करम है ! اَلْحَمْدُ لِلّٰه عَزَّوَجَلَّ इस्लामी भाइयों के साथ साथ इस्लामी बहनों में भी दा'वते इस्लामी के मदनी कामों की धूमें हैं। اَلْحَمْدُ لِلّٰه عَزَّوَجَلَّ लाखों लाख इस्लामी बहनों ने भी **दा'वते इस्लामी** के मदनी पैग़ाम को क़बूल किया, फ़ेशन परस्ती से सरशार मुआ़शरे में परवान चढ़ने वाली बे शुमार इस्लामी बहनें गुनाहों के दलदल से निकल कर उम्महातुल मुअमिनीन और शहज़ादिये कोनैन बीबी फ़ातिमा رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْهُنَّ की दीवानियां बन गईं। गले में दूपट्टा लटका कर शोपिंग सेन्टरों और मख़्लूत़ तफ़्रीह़ गाहों में भटक्ने वालियों, नाइट क्लबों और सिनेमा घरों की ज़ीनत बनने वालियों को करबला वाली इ़फ़्फ़त मआब शहज़ादियों رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْهُنَّ की शर्मो ह़या की वोह बरकतें नसीब हुईं कि **मदनी बुरक़अ़** उन के लिबास का جُزْوِ لَا یَنْفَك[1] बन गया। اَلْحَمْدُ لِلّٰه عَزَّوَجَلَّ मदनी मुन्नियों और इस्लामी बहनों को क़ुरआने करीम ह़िफ़्ज़ो नाज़िरा की मुफ़्त ता'लीम देने के लिये कई मदारिसुल मदीना और आ़लिमा बनाने के लिये मुतअ़द्दद **जामिअ़ातुल मदीना** क़ाइम हैं। اَلْحَمْدُ لِلّٰه عَزَّوَجَلَّ **दा'वते इस्लामी** में "ह़ाफ़िज़ात" और "**मदनिय्या आ़लिमात**" की ता'दाद बढ़ती जा रही है।

मेरी जिस क़दर है बहनें, सभी मदनी बुरक़अ़ पहनें
उन्हें नेक तुम बनाना मदनी मदीने वाले

صَلُّوْا عَلَی الْحَبِیْب ! صَلَّی اللّٰهُ تَعَالٰی عَلٰی مُحَمَّد

---

1 : या'नी वोह ह़िस्सा जो जुदा न हो सके।

﴾26﴿ बा कमाल रूमाल

हज़रते सय्यिदुना उ़ब्बाद बिन अ़ब्दुस्समद رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْه फ़रमाते हैं, हम एक रोज़ हज़रते सय्यिदुना अनस बिन मालिक رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْه के दौलत ख़ाने पर ह़ाज़िर हुए। आप رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْه का हुक्म पा कर कनीज़ ने दस्तर ख़्वान बिछाया। फ़रमाया, रूमाल भी लाओ। वोह एक रूमाल ले आई जिसे धोने की ज़रूरत थी। हुक्म दिया, इस को **तन्नूर** में डाल दो ! उस ने भड़क्ते **तन्नूर** में डाल दिया ! थोड़ी देर के बा'द जब उसे आग से निकाला गया तो वोह ऐसा **सफ़ेद** था जैसा कि **दूध**। हम ने हैरान हो कर अ़र्ज़ की, इस में क्या राज़ है ? हज़रते सय्यिदुना अनस رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْه ने फ़रमाया, येह वोह रूमाल है जिस से हुज़ूर सरापा नूर, फ़ैज़ गन्जूर, शाहे ग़यूर صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰی عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم अपना **रुख़े पुरनूर** साफ़ फ़रमाया करते थे। जब धोने की ज़रूरत पड़ती है हम इस को इसी त़रह आग में धो लेते हैं ! क्यूं कि जो चीज़ अम्बियाए किराम عَلَيْهِمُ الصَّلٰوةُ وَالسَّلَام के मुबारक चेहरों पर गुज़रे आग उसे नहीं जलाती।

(الخصائصُ الكُبرى ج٢ ص ١٣٤)

अल्लाह عَزَّوَجَلَّ की उन पर रह़मत हो और उन के सदक़े हमारी मग़्फ़िरत हो।

صَلُّوْا عَلَى الْحَبِيْب ! صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلٰى مُحَمَّد

प्यारे प्यारे इस्लामी भाइयो ! आ़रिफ़े कामिल हज़रते सय्यिदुना मौलाना रूम عَلَيْهِ رَحْمَةُ الْقَيُّوْم "मस्नवी शरीफ़" में इस वाक़िअ़ए मुबारक को लिखने के बा'द फ़रमाते हैं,

फ़रमाने मुस्तफ़ा صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰی عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم : शबे जुमुआ और रोज़े जुमुआ मुझ पर कसरत से दुरूद पढ़ो क्यूं कि तुम्हारा दुरूद मुझ पर पेश किया जाता है। (طبرانی)

اے دلِ ترسندہ از نارو عذاب باپُناں دست ولبے کُن اقتراب

چُوں جمادے راپُناں تشریف داد جانِ عاشق را چِہا خواہد گشاد

(या'नी ऐ वोह दिल जिस को अज़ाबे नार का डर है, उन प्यारे प्यारे होंटों और मुक़द्दस हाथों से नज़्दीकी क्यूं नहीं हासिल कर लेता जिन्हों ने बेजान चीज़ रूमाल तक को ऐसी फ़ज़ीलत व बुज़ुर्गी अ़ता फ़रमाई कि वोह आग में न जले, तो उन के जो आ़शिक़े ज़ार हैं उन पर अ़ज़ाबे नार क्यूं न ह़राम हो !)

आक़ा صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰی عَلَيْهِ وَسَلَّم का गदा हूं ऐ जहन्नम ! तू भी सुन ले !

वोह कैसे जले जो कि ग़ुलामे मदनी हो

﴾27﴿ अबू हुरैरा का तोशादान

ह़ज़रते सय्यिदुना अबू हुरैरा رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْه फ़रमाते हैं, एक ग़ज़्वे में लश्करे इस्लाम के पास खाने को कुछ न रहा। **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ के प्यारे रसूल, रसूले मक़्बूल, सय्यिदह आमिना के गुलशन के महक्ते फूल صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰی عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने मुझ से फ़रमाया, तुम्हारे पास कुछ है ? मैं ने अ़र्ज़ की, **तोशादान** में थोड़ी सी खजूरें हैं। फ़रमाया, ले आओ। मैं ने ह़ाज़िर कर दीं जो कुल 21 थीं। सरकार صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰی عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने उन पर **दस्ते मुबारक** रख कर दुआ़ मांगी फिर फ़रमाया, **दस**10 **अफ़्राद** को बुलाओ ! मैं ने बुलाया, वोह आए और सेर हो कर खाया और चले गए। फिर **दस**10 **अफ़्राद** को बुलाने का हुक्म दिया, वोह भी खा कर चले गए। इसी त़रह़ दस10 दस10 आदमी आते और सेर हो कर खाते और तशरीफ़ ले जाते,

यहां तक कि तमाम लश्कर ने खाईं और जो बाक़ी रह गईं उन के बारे में फ़रमाया, ऐ अबू हुरैरा ! इन को **अपने तोशादान में रख लो और जब चाहो हाथ डाल कर इन में से निकाल लिया करो लेकिन तोशादान न उंडेलना !** ह़ज़रते सय्यिदुना अबू हुरैरा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ फ़रमाते हैं कि मैं हुज़ूर सरवरे काएनात, शाहे मौजूदात صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰی عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم की ज़ाहिरी ह़याते मुबारका के ज़माने में और ह़ज़रते सय्यिदुना अबू बक्र सिद्दीक़ और ह़ज़रते सय्यिदुना उ़मर फ़ारूक़े आ'ज़म और ह़ज़रते सय्यिदुना उ़स्माने ग़नी عَلَيْهِمُ الرِّضْوَان के अ़हदे ख़िलाफ़त तक उन ही खजूरों से खाता रहा। और ख़र्च करता रहा तख़्मीनन (या'नी अन्दाज़न) पचास[50] वस्क़ तो फ़ी सबीलिल्लाह दीं और दो सो[200] वस्क़ से ज़ियादा मैं ने खाईं। जब ह़ज़रते सय्यिदुना उ़स्माने ग़नी رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ शहीद हो गए तो वोह **तोशादान** मेरे घर से चोरी हो गया। (الخصائص الکبری ج ۲ ص ۸۵)

अल्लाह عَزَّوَجَلَّ की उन पर रह़मत हो और उन के सदक़े हमारी मग़्फ़िरत हो।

कौन देता है देने को मुंह चाहिये

देने वाला है सच्चा हमारा नबी (ह़दाइक़े बख़्शिश शरीफ़)

صَلُّوا عَلَی الْحَبِیْب ! صَلَّی اللّٰهُ تَعَالٰی عَلٰی مُحَمَّد

प्यारे प्यारे इस्लामी भाइयो ! वस्क़ साठ साअ़ का और एक साअ़ 270 तोला (या'नी तीन सेर छ[6] छटांक) का होता है। इस ह़िसाब से उन 21 खजूरों में से हज़ार मन से ज़ाइद खजूरें खाई गईं। येह सब **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ की शाने करम है कि उस ने अपने प्यारे ह़बीबे मुकर्रम

صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم को बे शुमार इख़्तियारात और अ़ज़ीमुश्शान मो'जिज़ात से नवाज़ा। यक़ीनन सरकारे दो[2] जहान صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم की शाने अ़ज़्मत निशान तो बहुत बड़ी है। आप صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم के सदक़े में आप صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم के गुलामों को भी बड़े बड़े कमालात अ़ता हुए हैं। चुनान्चे मेरे आक़ा आ'ला ह़ज़रत, इमामे अहले सुन्नत, मौलाना शाह इमाम अह़मद रज़ा ख़ान عَلَیْہِ رَحمَۃُ الرَّحْمٰن के ख़लीफ़ए मजाज़ ह़ज़रते **सदरुल अफ़ाज़िल** رَحْمَۃُ اللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہ की करामत मुलाह़ज़ा फ़रमाइये :

﴾28﴿ सदरुल अफ़ाज़िल की करामत

ह़ज़रते मौलाना मन्ज़ूर अह़मद साह़िब घोसवी عَلَیْہِ رَحمَۃُ اللّٰہِ الْقَوِی अपना मुशाहदा बयान फ़रमाते हैं कि साह़िबे ख़ज़ाइनुल इरफ़ान **सदरुल** अफ़ाज़िल अ़ल्लामा मौलाना सय्यिद मुह़म्मद नईमुद्दीन मुरादआबादी عَلَیْہِ رَحمَۃُ اللّٰہِ الْھَادِی का रोज़ाना का मा'मूल था कि नमाज़े सुब्ह़ मह़ल्ले की मस्जिद में बा जमाअ़त अदा फ़रमाते, आप رَحْمَۃُ اللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہ के मस्जिद जाने से क़ब्ल ही एक चार फ़िट के **समावर** (समावर तांबे या पीतल के उस दोहरे बरतन को बोलते हैं जिस के अन्दर आग जलती है और बाहर पानी गर्म होता या चाय पकती है) में चाय का सामान डाल दिया जाता और आग जला दी जाती। आप رَحْمَۃُ اللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہ जब नमाज़ पढ़ कर वापस तशरीफ़ लाते, चाय तय्यार हो जाती। आप رَحْمَۃُ اللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہ बैठक में तशरीफ़ फ़रमा हो जाते और देखते ही देखते अ़क़ीदत मन्दों की अच्छी ख़ासी भीड़

जम्अ़ हो जाती। आ़म तौ़र से पचास[50] से दो सो[200] आदमियों तक का हुजूम होता और कभी कभी तो आने वालों की इतनी कसरत होती कि बैठक और बाहरी दालान दोनों[2] में बिल्कुल जगह न रहती। **आप** رَحْمَۃُ اللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہ के तशरीफ़ रखते ही ख़ुद्दाम चाय से भरा हुवा एक कप, पिरच (या'नी छोटी तश्तरी) में लगा कर चाय की पियाली पर एक पाउ (या'नी बिस्कुट) रख कर आप رَحْمَۃُ اللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہ की ख़िदमत में पेश करते। आप رَحْمَۃُ اللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہ वोह पियाली अपने दस्ते मुबारक से उठा कर अपने दाएं बैठने वाले को दे देते, इसी त़रह़ चार[4] छ[6] पियालियां ख़ुद तक़्सीम फ़रमाते, बक़िय्या पूरे मज्मअ़ को ख़ुद्दाम इसी त़रह़ एक एक पाउ (या'नी बिस्कुट) और एक एक पियाली चाय तक़्सीम करते एक पियाली चाय और एक पाउ (या'नी बिस्कुट) के साथ आप رَحْمَۃُ اللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہ भी तनावुल फ़रमाते। गोया येह सुब्ह़ का नाश्ता होता था।

ह़ज़रते मौलाना सय्यिद मन्ज़ूर अह़मद साहि़ब رَحْمَۃُ اللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہ वुसूक़ के साथ फ़रमाते हैं कि ह़ाज़िरीन कम हों या ज़ियादा मैं ने येह बात ख़ास तौ़र से नोट की वोही एक **समावर** की चाय रोज़ाना आने वाले तमाम आदमियों के लिये काफ़ी होती कभी ऐसा नहीं हुवा कि ह़ाज़िरीन की ता'दाद ज़ियादा हो गई तो मज़ीद इन्तिज़ाम करने की ज़रूरत मह़सूस की हो। ह़ज़रत मौलाना सय्यिद मन्ज़ूर अह़मद साहि़ब رَحْمَۃُ اللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہ का मज़्कूरा बाला बयान इस बात की त़रफ़ वाज़ेह़ इशारा दे रहा है कि येह **ह़ज़रते सदरुल अफ़ाज़िल** رَحْمَۃُ اللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہ के मा'मूलाते यौमिय्या की करामतों में से एक इन्तिहाई करीमाना करामत है। (मुलख़्ख़सन तारीख़े

फ़रमाने मुस्तफ़ा صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم **:** जिस के पास मेरा ज़िक्र हुवा और उस ने मुझ पर दुरूदे पाक न पढ़ा तहक़ीक़ वोह बद बख़्त हो गया। (ابن سنی)

इस्लाम की अ़ज़ीम शख़्सिय्यत सदरुल अफ़ाज़िल, स. 333 ता 334, तन्ज़ीम अफ़्कारे सदरुल अफ़ाज़िल, बम्बई)

अल्लाह عَزَّوَجَلَّ **की उन पर रह़मत हो और उन के सदक़े हमारी मग़्फ़िरत हो।**

हम को ऐ अ़त्तार सुन्नी आ़लिमों से प्यार है
اِنْ شَآءَاللّٰه *दो जहां में अपना बेड़ा पार है*

صَلُّوْا عَلَى الْحَبِيْب ! صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلٰى مُحَمَّد

(29) लंगड़े लूलों को भी ह़िस्सा मिले

ह़कीम मुह़म्मद अशरफ़ क़ादिरी चिश्ती अनार कली सरदाराबाद (फ़ैसलाबाद) लिखते हैं, "मेरी शादी होने के त़वील अ़र्से बा'द तक औलाद न हुई। **हुसूले औलाद** के लिये दवाएं इस्ति'माल कीं, दुआ़एं मांगीं और वज़ाइफ़ पढ़े मगर गौहरे मुराद हाथ न आया। बिल आख़िर **ह़ज़रते मुह़द्दिसे आ'ज़म** ह़ज़रते मौलाना सरदार अह़मद قُدِّسَ سِرُّهُ الْعَزِيْز की ख़िदमते बा बरकत में मह़रूमिये औलाद का तज़्किरा कर के दुआ़ का त़ालिब हुवा। उन्हीं दिनों मेरे हमसाए चौधरी अ़ब्दुल ग़फ़ूर ने मुझे बताया, तीन[3] दिन से मुझे ख़्वाब में एक बुज़ुर्ग नज़र आते हैं, उन के सामने आप खड़े हैं और आप की गोद में चांद सा ख़ूब सूरत **बेटा** है। उन बुज़ुर्ग ने फ़रमाया, "ह़कीम साह़िब ! एक बकरा सदक़ा दें जिस में से **लंगड़े लूलों को भी ह़िस्सा मिले**" चुनान्चे मैं ने ह़ज़रते **मुह़द्दिसे आ'ज़म** عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللّٰهِ الْاَكْرَم की जनाब में इस ख़्वाब का ज़िक्र किया और अ़र्ज़ की, मेरा ख़याल है कि एक बकरा ज़ब्ह़ कर के जामिआ़ रज़विय्या

के लंगर में पेश कर दूं। आप رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰى عَلَيْه ने फ़रमाया, “हकीम साहिब ! यहां तो **अल्लाह** तआ़ला का करम है, बकरे आते ही रहते हैं, बेहतर येह है कि जुमुआ़ को घर में गोश्त और रोटियां पकाईं जाएं और जुमुआ़ की नमाज़ के बा'द ख़त्म शरीफ़ पढ़ा जाए, पका हुवा गोश्त रोटियों समेत वहीं ग़ुरबा में तक़्सीम किया जाए। तुम मियां बीवी भी खाओ और उस में से वहां के **लंगड़े लूलों को भी हिस्सा मिले।**” येह याद रहे कि ख़्वाब का ज़िक्र करते वक़्त मैं ने लंगड़े लूलों के मुतअ़ल्लिक़ बुज़ुर्ग का इर्शाद क़िब्ला मुहद्दिसे आ'ज़म عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللهِ الْاَكْرَم से अ़र्ज़ नहीं किया था। आप رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰى عَلَيْه ने ख़ुद ही इर्शाद फ़रमाया और येह आप رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰى عَلَيْه की ज़िन्दा करामत थी कि ग़ैब की बात बता दी ! आप رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰى عَلَيْه के इर्शाद के मुताबिक़ अ़मल किया गया। इस के बा'द **अल्लाह** तआ़ला ने अपने फ़ज़्लो करम और **हज़रते मुहद्दिसे आ'ज़म** رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰى عَلَيْه **की दुआ़ओं के सदक़े बेटा इनायत फ़रमाया।**

(मुलख़्ख़सन हयाते मुहद्दिसे आ'ज़म, स. 260)

صَلُّوْا عَلَى الْحَبِيْب ! صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلٰى مُحَمَّد

﴾30﴿ अ़क़ीदत हो तो नाम भी काम कर जाता है

प्यारे प्यारे इस्लामी भाइयो ! उस्ताज़ुल उ़लमा, सनदुल उ़रफ़ा, नाइबे आ'ला हज़रत, पीरे त़रीक़त, हज़रते मुहद्दिसे आ'ज़म मौलाना मुहम्मद सरदार अह़मद क़ादिरी चिश्ती عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللهِ الْقَوِى बहुत बड़े आ़लिमे दीन थे, आप के शागिर्दों में बड़े बड़े उ़लमाए किराम

के नाम हैं, आप एक बा करामत बुज़ुर्ग थे चुनान्चे मौलाना करम दीन (ख़तीब जामेअ़ मस्जिद चक नम्बर 356) बयान करते हैं कि एक मरतबा मैं ढाना खोखरान वाला नज्द शरक़ पूर शरीफ़ भेंस लेने गया। लेकिन इस सफ़र में मुझे **दर्दे शक़ीक़ा** (या'नी आधे सर के दर्द) ने बहुत परेशान किया। शरक़ पूर शरीफ़ क़रीब ही था, वहां हाज़िर हुवा मगर पता चला कि दोनों[2] साहिब ज़ादगान हज के लिये गए थे। वापस जाते हुए रास्ते में दर्द ने बहुत परेशान किया, कोई तदबीर समझ में न आ रही थी, नहर के कनारे चलते चलते सामने काग़ज़ का एक सादा टुकड़ा नज़र आया, मैं ने उसे उठाया और उस पर वलिय्ये कामिल **हज़रते मुहद्दिसे आ'ज़म عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللّٰهِ الْاَكْرَم का मुबारक नाम लिख कर दर्द की जगह बांधा, आप के नाम का ता'वीज़ बांधना था कि اَلْحَمْدُ لِلّٰه عَزَّوَجَلَّ दर्द फ़ौरन जाता रहा और तबीअ़त बिल्कुल दुरुस्त हो गई।** (ऐज़न, 261)

﴾31﴿ ट्यूब लाइट ने इताअ़त की

प्यारे प्यारे इस्लामी भाइयो ! जिस के "नाम" की येह शान है उस के "कलाम" का आ़लम क्या होगा ! लिहाज़ा कलाम से मुतअ़ल्लिक़ भी एक करामत मुलाहज़ा हो चुनान्चे हज़रते मुहद्दिसे

आ'ज़म عَلَیْهِ رَحْمَةُ اللّٰهِ الْاَکْرَم झंग बाज़ार घन्टा घर में मुन्अ़क़िद होने वाली **मह़फ़िले मीलाद** में बयान फ़रमा रहे थे। बयान का मौज़ूअ़ **नूरानिय्यते मुस्त़फ़ा** صَلَّى اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم था। बयान जारी था कि तक़रीबन आध घन्टे बा'द आप رَحْمَةُ اللّٰهِ تَعَالٰی عَلَیْه की तवज्जोह दाईं त़रफ़ लगी हुई एक **ट्यूब लाइट** की त़रफ़ गई, येह ट्यूब किसी फ़न्नी ख़राबी की वज्ह से कभी जलती थी, कभी बुझती थी, आप رَحْمَةُ اللّٰهِ تَعَالٰی عَلَیْه ने **ट्यूब** से मुख़ात़िब हो कर फ़रमाया, "अरी **ट्यूब**! तू कभी जलती है, कभी बुझती है, **हुज़ूरे अकरम, नूरे मुजस्सम** صَلَّى اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم **के नूरे मुबारक से तमाम जहान रोशन हो गया** और तू क्यूं नाशुक्री बनती है। ख़बरदार! ख़बरदार! तू बुझी तो.... आप رَحْمَةُ اللّٰهِ تَعَالٰی عَلَیْه के इस इर्शाद से ना'रए रिसालत की गूंज पड़ गई, तमाम ह़ाज़िरीन ने मुलाह़ज़ा फ़रमाया कि वोह **ट्यूब लाइट** इख़्तितामे जल्सा तक मुतवातिर रोशन रही।" (ऐज़न, 263)

صَلُّوْا عَلَی الْحَبِیْب! صَلَّی اللّٰهُ تَعَالٰی عَلٰی مُحَمَّد

गेहूं घुन से बचें, सरों के दर्द मिटें : प्यारे प्यारे इस्लामी भाइयो! देखा आप ने! बा अ़मल उ़लमा की भी क्या शान होती है! हमें हर दम उ़लमाए अहले सुन्नत के दामन से वाबस्ता रहना

चाहिये। उ़लमाए हक़ की रिफ़्अ़तों का इस से अन्दाज़ा लगाइये जैसा कि **ह़ज़रते** सय्यिदुना कमालुद्दीन अद्दमीरी رَحْمَةُ اللّٰهِ تَعَالٰى عَلَيْه फ़रमाते हैं, बा'ज़ अहले इल्म ह़ज़रात के ज़रीए़ मुझे मा'लूम हुवा है, अगर **मदीनए मुनव्वरह** زَادَهَا اللّٰهُ شَرَفًا وَّتَعْظِيْمًا के मश्हूर "फ़ुक़हाए सब्आ़" या'नी सात उ़लमाए किराम رَحِمَهُمُ اللّٰهُ تَعَالٰى के अस्माए गिरामी किसी परचे में लिख कर गेहूं में रख दिये जाएं तो اِنْ شَآءَاللّٰه عَزَّوَجَلَّ घुन (या'नी अनाज का कीड़ा) नहीं लगेगा, अगर दर्दे सर वाले के सर पर लटकाएं (या बांधें) या येही सात नाम पढ़ कर सर पर दम करें तो اِنْ شَآءَاللّٰه عَزَّوَجَلَّ दर्दे सर जाता रहेगा। वोह सात अस्माए मुबारका येह हैं : **उ़बैदुल्लाह, उ़र्वह, क़ासिम, सई़द, अबू बक्र, सुलैमान, ख़ारिजा** رَحِمَهُمُ اللّٰهُ تَعَالٰى

(حیاۃُ الْحیوانُ الْکُبریٰ ج۲ ص ۵۳)

प्यारे प्यारे इस्लामी भाइयो ! मा'लूम हुवा, उ़लमाए हक़ और **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ के नेक बन्दों के नामों में भी अ़जीब बरकतें होती हैं, जिन के नामों की येह शान है, उन की किताबों, बयानों, सोहबतों और ऐसों के मज़ारों की ह़ाज़िरियों और उन के ईसाले सवाब के लंगरों की अ़ज़मतों का क्या पूछना !

صَلُّوْا عَلَى الْحَبِيْب ! صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلٰى مُحَمَّد

﴾32﴿ गुंधा हुवा आटा दे दिया

हज़रते सय्यिदुना हबीब **अ़जमी** عَلَیْہِ رَحمَۃُ اللّٰہِ الْقَوِی के दरवाज़े पर एक साइल ने सदा लगाई । आप رَحْمَۃُ اللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہ की ज़ौजए मोह़तरमा رَحْمَۃُاللّٰہِ تعالٰی عَلَیْھَا **गुंधा हुवा आटा** रख कर पड़ोस से आग लेने गई थीं ताकि रोटी पकाएं । आप رَحْمَۃُ اللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہ ने वोही आटा उठा कर साइल को दे दिया । जब वोह आग ले कर आईं तो आटा नदारद (या'नी ग़ाइब) । आप رَحْمَۃُ اللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہ ने फ़रमाया, उसे रोटी पकाने के लिये ले गए हैं । बहुत पूछा तो आप رَحْمَۃُ اللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہ ने ख़ैरात कर देने का वाक़िआ़ बताया । वोह बोलीं, سُبْحٰنَ اللّٰہِ عَزَّوَجَلَّ ! येह तो अच्छी बात है मगर हमें भी तो कुछ खाने के लिये दरकार है ! इतने में एक शख़्स एक बड़ी लगन में भर कर गोश्त और रोटी ले आया । आप رَحْمَۃُ اللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہ ने फ़रमाया, देखो तुम्हें किस क़दर जल्द लौटा दिया गया, गोया रोटी भी पका दी और गोश्त का सालन मज़ीद भेज दिया ! (روض الریاحین ص ۱۵۲)

अल्लाह عَزَّوَجَلَّ **की उन पर रह़मत हो और उन के सदक़े हमारी मग़्फ़िरत हो ।**

सदक़ा करने से माल कम नहीं होगा : प्यारे प्यारे इस्लामी भाइयो ! देखा आप ने ! राहे ख़ुदा عَزَّوَجَلَّ में दी जाने वाली चीज़ हरगिज़ ज़ाएअ़ नहीं होती आख़िरत में अज्रो सवाब की ह़क़दारी तो है ही, बा'ज़

अवक़ात दुन्या में भी इज़ाफ़े के साथ हाथों हाथ इस का ने'मल बदल अ़ता किया जाता है। और येह यक़ीनी बात है कि राहे ख़ुदा عَزَّوَجَلَّ में देने से बढ़ता है घटता नहीं जैसा कि **हज़रते** सय्यिदुना अबू हुरैरा رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْهُ फ़रमाते हैं, दो[2] आलम के मालिको मुख़्तार, मक्की मदनी सरकार, मह़बूबे परवर्दगार صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने इर्शाद फ़रमाया, सदक़ा माल में कमी नहीं करता और **अल्लाह** तआला मुआफ़ करने की वज्ह से बन्दे की इ़ज़्ज़त ही बढ़ाता है और जो **अल्लाह** तआला की रिज़ा की ख़ातिर इन्किसारी करता है तो **अल्लाह** तआला उसे बुलन्दी अ़ता फ़रमाता है। (صحیح مسلم ص ١٣٩٧ حدیث ٢٥٨٨)

कूंएं से भरने से पानी बढ़ता है : मुफ़स्सिरे शहीर **हकीमुल उम्मत** हज़रते मुफ़्ती अहमद यार ख़ान عَلَيْهِ رَحْمَةُ الْحَنَّان फ़रमाते हैं, ज़कात देने वाले की ज़कात हर साल बढ़ती ही रहती है येह तजरिबा है। जो किसान खेत में बीज फेंक आता है वोह ब ज़ाहिर बोरियां ख़ाली कर लेता है लेकिन ह़क़ीक़त में मअ़ इज़ाफ़े के भर लेता है। घर की बोरियां चूहे, सुरसुरी वग़ैरा की आफ़ात से हलाक हो जाती हैं या येह मत़लब है कि जिस माल में से सदक़ा निकलता रहे उस में से ख़र्च करते रहो, اِنْ شَآءَاللّٰه عَزَّوَجَلَّ बढ़ता ही रहेगा, कूंएं का पानी भरे जाओ, तो बढ़े ही जाएगा।

(मिरआतुल मनाजीह़ शर्हे मिश्कातुल मसाबीह़, जि. 3, स. 93)

ज़कात न देने के अ़ज़ाबात : प्यारे प्यारे इस्लामी भाइयो ! याद रखिये ! ज़कात अदा करने के जहां बे शुमार सवाबात हैं न देने वाले के लिये वहां ख़ौफ़नाक अ़ज़ाबात भी हैं, चुनान्चे मेरे आक़ा आ'ला ह़ज़रत, इमामे अहले सुन्नत, मौलाना शाह इमाम अह़मद रज़ा ख़ान عَلَيْهِ رَحمَةُ الرَّحْمٰن क़ुरआनो ह़दीस में बयान कर्दा अ़ज़ाबात का नक़्शा खींचते हुए फ़रमाते हैं, "ख़ुलासा येह है कि जिस **सोने चांदी** की ज़कात न दी जाए, रोज़े क़ियामत जहन्नम की आग में तपा कर उस से उन की पेशानियां, करवटें, पीठें दाग़ी जाएंगी। उन के सर, पिस्तान पर जहन्नम का गर्म पथ्थर रखेंगे कि छाती तोड़ कर शाने से निकल जाएगा और शाने की हड्डी पर रखेंगे कि हड्डियां तोड़ता सीने से निकल आएगा, पीठ तोड़ कर करवट से निकलेगा, गुद्दी तोड़ कर पेशानी से उभरेगा। जिस **माल** की ज़कात न दी जाएगी रोज़े क़ियामत पुराना ख़बीस **ख़ूंख़ार अज़्दहा** बन कर उस के पीछे दौड़ेगा, येह हाथ से रोकेगा, वोह हाथ चबा लेगा, फिर गले में तौक़ बन कर पड़ेगा, इस का मुंह अपने मुंह में ले कर चबाएगा कि मैं हूं तेरा माल, मैं हूं तेरा ख़ज़ाना। फिर उस का सारा बदन चबा डालेगा।" وَالْعِيَاذُ بِاللّٰهِ رَبِّ الْعَالَمِيْن (फ़तावा रज़विय्या जदीद, जि. 10, स. 153) मेरे आक़ा आ'ला ह़ज़रत رَحْمَةُ اللّٰهِ تَعَالٰى عَلَيْه ज़कात न देने वाले को क़ियामत के अ़ज़ाब

से डरा कर समझाते हुए फ़रमाते हैं, **ऐ अज़ीज़ !** क्या ख़ुदा عَزَّوَجَلَّ व रसूल صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰی عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم के फ़रमान को यूंही हंसी ठठ्ठा समझता है या (क़ियामत के एक दिन या'नी) पचास हज़ार बरस की मुद्दत में येह जान्काह मुसीबतें झेलनी सहल जानता है, ज़रा यहीं की आग में एकआध रुपिया (छोटा सा सिक्का) गर्म कर के बदन पर रख कर देख, फिर कहां येह ख़फ़ीफ़ (हलकी सी) गरमी, कहां वोह क़हर आग, कहां **येह एक ही रुपिया** कहां वोह सारी उ़म्र का जोड़ा हुवा माल, कहां येह मिनट भर की देर कहां वोह हज़ार दिन बरस की आफ़त, कहां येह हलका सा चहका (या'नी मा'मूली सा दाग़) कहां वोह हड्डियां तोड़ कर पार होने वाला ग़ज़ब। **अल्लाह** तआ़ला मुसल्मान को हिदायत बख़्शे। (ऐज़न, स. 175)

प्यारे प्यारे इस्लामी भाइयो ! दा'वते इस्लामी के मदनी माहोल से हर दम वाबस्ता रहिये اِنْ شَآءَ اللّٰه عَزَّوَجَلَّ ज़कातो ख़ैरात के ज़रूरी अह़कामात की मा'लूमात होती रहेंगी और अ़मल के जज़्बे में भी इज़ाफ़ा होता चला जाएगा।

उन का दीवाना इमामा और ज़ुल्फ़ो रीश में

वाह ! देखो तो सही लगता है कितना शानदार

صَلُّوْا عَلَی الْحَبِيْب ! صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰی عَلٰی مُحَمَّد

प्यारे प्यारे इस्लामी भाइयो ! مَعَاذَ اللّٰه عَزَّوَجَلَّ आज मुसल्मान के जीने का अन्दाज़ बेहद ख़राब होता जा रहा है। अफ़्सोस सद करोड़ अफ़्सोस ! अक्सर मुसल्मानों के लिबास की तराश ख़राश, सर और चेहरे का अन्दाज़ वग़ैरा सब काफ़िरों की सड़ी हुई तहज़ीब का अ़क्कास है। शैत़ान के इस वस्वसे में नहीं आना चाहिये कि हम अगर दाढ़ी और इमामा शरीफ़ में रहेंगे तो लोग हम से दूर भागेंगे। हरगिज़ ऐसा नहीं, लोग मदनी हुल्यों से नहीं बुरी ह़रकतों, चर्ब ज़बानियों और बद अख़्लाक़ियों से दूर भागते हैं। आप बसद इख़्लास सुन्नतों की चलती फिरती तस्वीर बन जाइये, अपने अख़्लाक़ संवार लीजिये, ज़बान को क़ाबू में रखने की मश्क़ कीजिये, मीठे बोल बोलिये फिर देखिये किस त़रह़ लोगों के दिल आप की त़रफ़ माइल होते हैं ! अभी आप ने **आ़शिक़ाने रसूल** के बारे में सुना कि किस त़रह़ सुन्नतों भरे हुल्यों और मुस्कुराते फूल बरसाते मीठे मीठे बोलों ने शैत़ान के पुजारी को मदनी मुस्त़फ़ा صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم का भिकारी बना दिया !

तू दाढ़ी बढ़ा ले इमामा सजा ले है अच्छा, नहीं है बुरा मदनी माह़ोल
यक़ीनन मुक़द्दर का वोह है सिकन्दर जिसे ख़ैर से मिल गया मदनी माह़ोल

صَلُّوا عَلَى الْحَبِيب ! صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلٰى مُحَمَّد

फ़रमाने मुस्तफ़ा صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم : जिस के पास मेरा ज़िक्र हो और वोह मुझ पर दुरूद शरीफ़ न पढ़े तो वोह लोगों में से कन्जूस तरीन शख़्स है। (مسند احمد)

﴾33﴿ क़ाज़ी साहिब का ख़मीर

करोड़ों हम्बलियों के अ़ज़ीमुल मर्तबत पेशवा हज़रते सय्यिदुना इमाम अहमद बिन हम्बल رَحْمَۃُ اللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہ के शहज़ादे हज़रते सालेह رَحْمَۃُ اللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہ इस्फ़हान के क़ाज़ी थे। एक मरतबा हज़रते सय्यिदुना इमाम अहमद बिन हम्बल رَحْمَۃُ اللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہ के ख़ादिम ने हज़रते सालेह के मत्बख़ (या'नी बावर्ची ख़ाना) से **ख़मीर** ले कर रोटी तय्यार कर के इमाम साहिब رَحْمَۃُ اللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہ की ख़िदमत में पेश की, आप رَحْمَۃُ اللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہ ने इस्तिफ़्सार फ़रमाया, येह इस क़दर नर्म क्यूं है? ख़ादिम ने ख़मीर लेने की कैफ़िय्यत बता दी। आप رَحْمَۃُ اللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہ ने फ़रमाया, मेरा बेटा जो कि इस्फ़हान का क़ाज़ी है उस के यहां से **ख़मीर** क्यूं लिया! अब येह रोटी मैं नहीं खाऊंगा येह किसी साइल को दे दो मगर उस को बता देना कि इस रोटी में **क़ाज़ी का ख़मीर** शामिल है। इत्तिफ़ाक़ से चालीस[40] रोज़ तक कोई साइल नहीं आया यहां तक कि रोटी में बू पैदा हो गई। ख़ादिम ने वोह रोटी दरियाए दिज्ला में डाल दी। हज़रते सय्यिदुना इमाम अहमद बिन हम्बल رَحْمَۃُ اللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہ का तक़्वा मरहबा! आप رَحْمَۃُ اللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہ ने उस दिन के बा'द दरियाए दिज्ला की मछली कभी नहीं खाई। (تذکرۃ الاولیاء ص ۱۹۷)

अल्लाह عَزَّوَجَلَّ की उन पर रहमत हो और उन के सदक़े हमारी मग़्फ़िरत हो।

प्यारे प्यारे इस्लामी भाइयो ! देखा आप ने ! हज़रते सय्यिदुना इमाम अह़मद बिन ह़म्बल رَحْمَةُ اللّٰهِ تَعَالٰی عَلَيْه किस क़दर मुत्तक़ी और परहेज़ गार थे कि अपने क़ाज़ी बेटे के माल से भी परहेज़ करते थे। क़ाज़ी (या'नी जज) की आमदनी अगर्चे ह़राम की नहीं होती ताहम उन का मुकम्मल तौर पर इन्साफ़ करना दुश्वार होता है अगर वोह इन्साफ़ से काम लें तब भी चूंकि वोह गवर्नमेन्ट के मुलाज़िम होते हैं और उन की तनख़्वाह हुकूमत अदा करती है और हुक्मरान उ़मूमन ज़ुल्मो उ़दवान से बच नहीं पाते नीज़ उन के ख़ज़ाने में रक़म का सुथरा होना भी मुश्किल होता है कि येह लोग अक्सर ज़ुल्म के ज़रीए़ माल ह़ासिल करते हैं, लिहाज़ा मह़्ज़ तक़्वा और एह़तियात़ के सबब **ह़ज़रते** सय्यिदुना इमाम अह़मद बिन ह़म्बल رَحْمَةُ اللّٰهِ تَعَالٰی عَلَيْه ने क़ाज़ी के ख़मीर वाली रोटी नहीं खाई और जब वोही रोटी दरियाए दिज्ला में डाली गई तो वहां की मछली खानी भी तर्क फ़रमा दी कि कहीं ऐसी मछली पेट में न चली जाए जिस ने वोह रोटी खाई हो !

صَلُّوا عَلَى الْحَبِيب ! صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰی عَلٰی مُحَمَّد

﴾34﴿ इमाम अह़मद बिन ह़म्बल رَحْمَةُ اللّٰهِ تَعَالٰی عَلَيْه की करामत

ह़ज़रते सय्यिदुना इमाम अह़मद बिन ह़म्बल رَحْمَةُ اللّٰهِ تَعَالٰی عَلَيْه बड़ी शान के मालिक थे मन्क़ूल है कि किसी ख़ातून के हाथ पाउं शल हो

गए, उस ने अपने बेटे को दुआ के लिये आप رَحْمَةُ اللّٰهِ تَعَالٰی عَلَيْه के पास भेजा। आप رَحْمَةُ اللّٰهِ تَعَالٰی عَلَيْه ने अह़वाल सुनने के बा'द वुज़ू कर के नमाज़ शुरूअ़ कर दी, जब वोह नौ जवान घर पहुंचा तो मां सिह़्ह़त याब हो चुकी थी और उस ने खुद आ कर दरवाज़ा खोला। (تذکرۃ الاولیاء ص ۱۹۶)

अल्लाह عَزَّوَجَلَّ के नेक बन्दों की ता'ज़ीम करना बड़े सवाब का काम है चुनान्चे,

﴾35﴿ ता'ज़ीम का सिला

एक शख़्स को इन्तिक़ाल के बा'द किसी ने ख़्वाब में देख कर पूछा, مَا فَعَلَ اللّٰهُ بِکَ؟ या'नी **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ ने आप के साथ क्या सुलूक फ़रमाया? जवाब दिया, **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ ने मेरी मग़्फ़िरत फ़रमा दी। पूछा, कौन सा अ़मल काम आ गया? जवाब दिया, एक बार ह़ज़रते सय्यिदुना इमाम अह़मद बिन ह़म्बल رَحْمَةُ اللّٰهِ تَعَالٰی عَلَيْه दरिया के कनारे वुज़ू फ़रमा रहे थे और वहीं मैं बुलन्दी की त़रफ़ वुज़ू करने बैठ गया, जब मेरी नज़र इमाम साह़िब رَحْمَةُ اللّٰهِ تَعَالٰی عَلَيْه पर पड़ी तो ता'ज़ीमन नीचे की जानिब आ गया। बस येही "ता'ज़ीमे वली" वाला अ़मल काम आ गया और मैं बख़्शा गया। (تذکرۃ الاولیاء ص ۱۹۶)

अल्लाह عَزَّوَجَلَّ की उन पर रह़मत हो और उन के सदक़े हमारी मग़्फ़िरत हो।

صَلُّوْا عَلَى الْحَبِيْب! صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلٰى مُحَمَّد

﴾36﴿ सोने की जूतियां

मश्हूर मुह़द्दिस ह़ज़रते सय्यिदुना मुह़म्मद बिन खुज़ैमा رَحْمَةُ اللّٰهِ تَعَالٰی عَلَیْه फ़रमाते हैं, जब ह़ज़रते सय्यिदुना इमाम अबू अ़ब्दुल्लाह **अह़मद बिन ह़म्बल** رَحْمَةُ اللّٰهِ تَعَالٰی عَلَیْه की वफ़ात हुई मैं सख़्त ग़मगीन हुवा। एक रात ख़्वाब में देखा कि आप رَحْمَةُ اللّٰهِ تَعَالٰی عَلَیْه नाज़ो अदा से चल रहे हैं। मैं ने अ़र्ज़ की, ऐ अबू अ़ब्दुल्लाह ! येह कैसी चाल है ? फ़रमाया, येह जन्नत में खुद्दाम की चाल है। अ़र्ज़ की, مَا فَعَلَ اللّٰهُ بِکَ ؟ या'नी **अल्लाह** तआ़ला ने आप के साथ क्या सुलूक फ़रमाया ? जवाब दिया, **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ ने मेरी मग़्फ़िरत फ़रमा दी, मेरे सर पर ताज सजाया और पाउं में **सोने की जूतियां** पहनाईं और फ़रमाया, **ऐ अह़मद** ! येह सब कुछ इस वज्ह से है कि तू ने क़ुरआन को मेरा (या'नी **अल्लाह** का) कलाम कहा। **अल्लाह** तबारक व तआ़ला ने मज़ीद फ़रमाया, **ऐ अह़मद** ! मुझ से वोह दुआ़ कर जो तू दुन्या में किया करता था। मैं ने अ़र्ज़ की, "ऐ मेरे रब عَزَّوَجَلَّ ! हर चीज़....." मैं अभी इतना ही कहने पाया था कि इर्शाद हुवा, हर चीज़ तेरे लिये मौजूद है। इस पर मैं ने अ़र्ज़ की, हर चीज़ पर तेरी क़ुदरत के सबब। फ़रमाया, तू ने सच कहा। मैं ने अ़र्ज़

की, **या अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ ! मुझ से हिसाब न ले बस मेरी मग़्फ़िरत फ़रमा दे । फ़रमाया, जा ऐसा ही कर दिया । फिर इर्शाद हुवा, **ऐ अहमद** ! येह जन्नत है इस में दाख़िल हो जा। जब मैं दाख़िल हुवा तो **हज़रते सय्यिदुना सुफ़्यान सौरी** رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰى عَلَيْه वहां पहले से मौजूद थे, उन के दो[2] पर थे जिन से वहां एक खजूर के दरख़्त से दूसरे दरख़्त पर उड़ते फिर रहे थे और उन की ज़बान पर जारी था, "सब ख़ूबियां उस **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ के लिये हैं जिस ने हम से किये हुए वा'दे को सच कर दिखाया और सर ज़मीने जन्नत का हम को वारिस बनाया, जन्नत में हम जहां चाहते हैं ठिकाना बनाते हैं तो अ़मल करने वालों का अज्र बहुत ही बेहतर है ।" मैं ने पूछा, **हज़रते सय्यिदुना अ़ब्दुल वह्हाब वर्राक़** عَلَيْهِ رَحْمَةُ الرَّزَّاق का क्या हाल है ? तो कहा, मैं उन को **नूर के समुन्दर** में छोड़ आया हूं। मैं ने हज़रते **सय्यिदुना बिश्र हाफ़ी** عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللهِ الْكَافِى का हाल दरयाफ़्त किया तो फ़रमाया, वोह **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ की बारगाह में हाज़िर हैं, उन के सामने एक ख़्वान है और रब्बे करीम جَلَّ جَلَالُهٗ उन पर मुतवज्जेह है, फ़रमा रहा है कि **ऐ दुन्या में न खाने और न पीने वाले ! इस जहान में खा और लुत्फ़ उठा ।** (شرحُ الصدور ص ٢٨٩)

अल्लाह عَزَّوَجَلَّ **की उन पर रहमत हो और उन के सदक़े हमारी मग़्फ़िरत हो ।**

﴾37﴿ कोड़े की हर ज़र्ब पर मुआफ़ी का ए'लान

प्यारे प्यारे इस्लामी भाइयो ! देखा आप ने ? **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ के नेक बन्दे दीन की ख़ातिर तकालीफ़ उठा कर दुन्या से जब रुख़्सत हो जाते हैं तो **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ उन का किस क़दर ए'ज़ाज़ फ़रमाता है। जी हां करोड़ों हम्बलियों के अ़ज़ीम पेश्वा ह़ज़रते सय्यिदुना अबू अ़ब्दुल्लाह **इमाम अह़मद बिन ह़म्बल** رَحْمَۃُ اللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہ ने ह़क़ की ख़ातिर बहुत ज़ियादा मशक़्क़तें झेली हैं चुनान्चे एक मौक़अ़ पर अ़ब्बासी ख़लीफ़ा मो'तसिम बिल्लाह के हुक्म पर जल्लाद सय्यिदुना **इमाम अह़मद बिन ह़म्बल** رَحْمَۃُ اللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہ की बरहना पीठ पर बारी बारी **कोड़े** बरसाने लगे जिस से मुक़द्दस पुश्त लहू लुहान हो गई और खाल मुबारक उधड़ गई, इसी दौरान आप का पाजामा शरीफ़ सरक्ने लगा तो बारगाहे ख़ुदावन्दी عَزَّوَجَلَّ में दुआ़ की, "**या अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ ! तू जानता है कि मैं ह़क़ पर हूं, मुझे बे पर्दगी से बचा ले।" اَلْحَمْدُ لِلّٰہ عَزَّوَجَلَّ पाजामा शरीफ़ मज़ीद सरक्ने से रुक गया और फिर आप رَحْمَۃُ اللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہ बेहोश हो गए। जब तक होश क़ाइम था **कोड़े** की हर ज़र्ब पर फ़रमाते, "मैं ने मो'तसिम का क़ुसूर मुआ़फ़ किया।" बा'द में लोगों ने जब आप رَحْمَۃُ اللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہ से इस की वज्ह दरयाफ़्त की तो फ़रमाया, मो'तसिम बिल्लाह, सुल्ताने दो[2] जहान صَلَّى اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم के चचाजान ह़ज़रते सय्यिदुना अ़ब्बास رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ

की औलाद में से है। मुझे इस बात से शर्म आती है कि बरोज़े क़ियामत कहीं येह न कह दिया जाए कि **अह़मद बिन ह़म्बल** ने सुल्ताने दो[2] जहान صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم के चचाजान की आल को मुआ़फ़ नहीं किया !

(مُلَخَّصاً مَعدنِ اَخلاق حصہ ۳ ص ۳۷ تا ۳۹، دارالکتب حنفیہ باب المدینہ کراچی)

ह़ज़रते सय्यिदुना **फ़ुज़ैल बिन इयाज़** رَحْمَۃُ اللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہ फ़रमाते हैं, ह़ज़रते सय्यिदुना इमाम **अह़मद बिन ह़म्बल** رَحْمَۃُ اللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہ को मुसल्सल अठ्ठाईस माह (सवा दो साल से ज़ाइद) क़ैद में रखा गया, इस दौरान आप رَحْمَۃُ اللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہ पर हर रात कोड़े बरसाए जाते यहां तक कि आप पर ग़शी त़ारी हो जाती, तलवार के चरके (ज़ख़्म) लगाए गए, पाउं तले रौंदा गया। मगर मरह़बा ! इस्तिक़ामत ! इतनी इतनी मुसीबतें टूटने के बा वुजूद आप साबित क़दम रहे। (الطبقات الکبریٰ ج۱ ص۷۹) ह़ज़रते सय्यिदुना अ़ल्लामा ह़ाफ़िज़ इब्ने जौज़ी رَحْمَۃُ اللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہ मुह़म्मद बिन इस्माईल رَحْمَۃُ اللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہ से नक़्ल करते हैं, ह़ज़रते सय्यिदुना **इमाम अह़मद बिन ह़म्बल** رَحْمَۃُ اللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہ को **80 कोड़े** ऐसे मारे गए कि अगर हाथी को मारे जाते तो वोह भी चीख़ उठता ! मगर वाह रे सब्रे इमाम !

(مُلَخَّصاً مَعدنِ اَخلاق حصہ ۳ ص ۱۰۶، دارالکتب حنفیہ باب المدینہ کراچی)

तड़पना इस त़रह़ बुलबुल कि बालो पर न हिलें
अदब है लाज़िमी शाहों के आस्ताने का

صَلُّوا عَلَی الْحَبِیْب ! صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلٰی مُحَمَّد

﴾38﴿ चोर ने सब्र की तल्क़ीन की

जब मुसीबत के अय्याम में आप رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰی عَلَیْه को कोड़े मारने वाले के रू ब रू पेश किया गया तो **अल्लाह** तआ़ला ने "अबुल हैसम अ़य्यार" नामी एक शख़्स के ज़रीए आप رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰی عَلَیْه की मदद फ़रमाई वोह आप رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰی عَلَیْه के पास आया और कहने लगा, "ऐ अह़मद ! मैं फ़ुलां चोर हूं मुझे **अठ्ठारह हज़ार कोड़े** मारे गए ताकि चोरी का इक़रार कर लूं मगर मैं ने इक़रार न किया ह़ालां कि जानता था कि झूटा हूं। आप कहीं कोड़े की मार से घबरा न जाएं, आप तो ह़क़ पर हैं। पस जब आप رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰی عَلَیْه को कोड़े मारने से दर्द होता तो चोर की बात जे़हन में ले आते बा'द अज़ां आप رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰی عَلَیْه हमेशा उस के लिये दुआ़ए रह़मत फ़रमाते।" (الطبقات الکبریٰ ج۱ص۷۸،۷۹)

ह़ज़रते सय्यिदुना बिश्र बिन अल ह़ारिस رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰی عَلَیْه फ़रमाते हैं : "आप को (आग की) भट्टी (या'नी जेल) में डाल कर आज़्माया गया और आप (इस्तिक़ामत की वज्ह से) सुर्ख़ सोना बन कर निकले।"

(ایضاً ج۱ ص۸۰)

वलियों पर अल्लाह جَلَّ جَلَالُهٗ **की करम नवाज़ियां : प्यारे प्यारे इस्लामी भाइयो !** देखा आप ने ! राहे ख़ुदा عَزَّوَجَلَّ में पेश आने वाली तकालीफ़ को ख़न्दा पेशानी से बरदाश्त करने वालों का बारगाहे ख़ुदावन्दी عَزَّوَجَلَّ में किस क़दर ए'ज़ाज़ किया जाता है। नीज़ आप ने

येह भी मुलाह़ज़ा फ़रमाया कि ह़ज़रते सय्यिदुना बिश्रे ह़ाफ़ी عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللّٰهِ الْكَافِى को भी दुन्या में रिज़ाए इलाही عَزَّوَجَلَّ की ख़ात़िर भूक व प्यास की सख़्तियां बरदाश्त करने और नफ़्स को मारने के बाइस **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ किस क़दर लुत़्फ़ो करम से नवाज़ रहा था। नीज़ हमारे ग़ौसे आ'ज़म عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللّٰهِ الْاَكْرَم भी दुन्या में नफ़्स कुशी फ़रमाते और खाने पीने से बे रग़बत रहते थे। सरकारे बग़दाद ह़ुज़ूरे ग़ौसे पाक رَحْمَةُ اللّٰهِ تَعَالٰی عَلَيْه पर **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ की रह़मतों का तज़्किरा करते हुए आ़शिक़े रसूल और वलिय्ये कामिल, इमामे अहले सुन्नत मौलाना शाह अह़मद रज़ा ख़ान عَلَيْهِ رَحْمَةُ الرَّحْمٰن बारगाहे ग़ौसिय्यत मआब में अ़र्ज़ करते हैं,

क़समें दे दे के खिलाता है पिलाता है तुझे
प्यारा अल्लाह तेरा चाहने वाला तेरा

صَلُّوا عَلَى الْحَبِيْب ! صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلٰى مُحَمَّد

प्यारे प्यारे इस्लामी भाइयो ! ऐसी प्यारी प्यारी मा'लूमात ह़ासिल करने के लिये दा'वते इस्लामी के मदनी माह़ोल से हर दम वाबस्ता रहिये। اِنْ شَآءَاللّٰه عَزَّوَجَلَّ दीनो दुन्या की बे शुमार बरकतें ह़ासिल होंगी। दा'वते इस्लामी के मदनी माह़ोल की बरकतों से मालामाल एक ईमान अफ़रोज़ वाक़िआ़ सुनिये और झूमिये :

﴾39﴿ दिमाग़ की रसौली ग़ाइब हो गई

बलहार ज़िलअ़ चन्दरपूर महाराष्ट्र (हिन्द) के एक इस्लामी भाई ने **दा'वते इस्लामी** के मदनी माह़ोल में अपनी शुमूलिय्यत का वाक़िआ़ कुछ इस त़रह़ बयान किया, 7 साल की उ़म्र में पथ्थर लगने की वज्ह से मेरी

बाईं आंख ज़ख़्मी हो गई। इलाज करवाने पर काफ़ी आराम मिला लेकिन आंख की रोशनी कम हो गई। इस से दर्से इब्रत हासिल करने के बजाए मज़ीद ग़फ़्लत का शिकार हो कर मैं नाच गानों की महफ़िलों का रसिया हो गया, नाच क्लब की चकाचौंद रोशनियों के सबब मेरी उसी आंख में सख़्त दर्द शुरूअ़ हो गया। तश्ख़ीस करवाने पर पता चला कि **दिमाग़ में रसौली** (BRAIN TUMER) है। बड़े बड़े अस्पतालों में इलाज करवाया फ़ाएदा होना तो कुजा, "मरज़ बढ़ता गया जूं जूं दवा की" के मिस्दाक़ गरदन भी टेढ़ी हो गई और ग़िज़ा खाना भी मुश्किल हो गया ! मेरी तक्लीफ़ के सबब घर वाले बेह़द परेशान थे। उन्हीं दिनों **दा'वते इस्लामी** वाले **आशिक़ाने रसूल** का एक **मदनी क़ाफ़िला** हमारे गाउं में तशरीफ़ ले आया। उन्हों ने **नेकी की दा'वत** देते हुए घर के तमाम अफ़राद को बयान में शिर्कत की दा'वत दी लेकिन हम ने परेशानी का इज़्हार कर के मा'ज़िरत कर ली। मह़ल्ले की मस्जिद में से मुबल्लिग़ के बयान की आवाज़ हमारे घर में भी आ रही थी, उस बयान को सुन कर हमारे अहले ख़ाना बेह़द मुतअस्सिर हुए। और "दुरुग" में होने वाले **सुन्नतों भरे इज्तिमाअ़** में चलने को तय्यार हो गए। उस इज्तिमाअ़ में सुन्नतों भरे बयान के बा'द **रिक़्क़त अंगेज़ दुआ़** हुई। जब इज्तिमाअ़ से वापसी पर मैं ने C.T. scan करवाया तो येह देख कर डोक्टर्ज़ ह़ैरान रह गए कि पिछली सब रिपोर्ट्स में **दिमाग़ की रसौली**

(BRAIN TUMER) मौजूद थी **लेकिन अब की बार C.T. scan में रसौली ग़ाइब थी!** इस हैरत अंगेज़ वाक़िए से मुतअस्सिर हो कर खुद घर वालों ने मेरे सर पर **इमामे शरीफ़** का ताज सजा दिया।

अ़ताए ह़बीबे ख़ुदा मदनी माह़ोल है फ़ैज़ाने ग़ौसो रज़ा मदनी माह़ोल
ऐ बीमारे इ़स्यां तू आ जा यहां पर गुनाहों की देगा दवा मदनी माह़ोल
संवर जाएगी आख़िरत اِنْ شَآءَاللّٰه
तुम अपनाए रख्खो सदा मदनी माह़ोल

صَلُّوْا عَلَى الْحَبِيْب ! صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلٰى مُحَمَّد

﴾40﴿ दिलों की बात जान ली

हुज़ूर दाता गन्ज बख़्श ह़ज़रते सय्यिदुना अ़ली हिजवेरी رَحْمَةُ اللّٰهِ تَعَالٰی عَلَیْه फ़रमाते हैं, हम तीन[3] अह़बाब ह़ज़रते सय्यिदुना **शैख़ इब्ने अ़ला** رَحْمَةُ اللّٰهِ تَعَالٰی عَلَیْه की ज़ियारत के लिये "रमला" नामी गाउं की त़रफ़ चले। रास्ते में येह तै किया कि हम में से हर शख़्स कोई न कोई मुराद अपने दिल में रख ले। मैं ने येह मुराद रखी, मुझे ह़ज़रते सय्यिदुना शैख़ इब्ने अ़ला رَحْمَةُ اللّٰهِ تَعَالٰی عَلَیْه से हुसैन बिन मन्सूर ह़ल्लाज رَحْمَةُ اللّٰهِ تَعَالٰی عَلَیْه की मुनाजात और अश्आ़र दरकार हैं। दूसरे ने येह मुराद तै की कि मुझे तिल्ली की बीमारी से शिफ़ा ह़ासिल हो जाए। तीसरे ने कहा, मुझे ह़ल्वा साबूनी (या'नी बर्फ़ी) खाने की ख़्वाहिश है। जब हम लोग ह़ाज़िरे ख़िदमत हुए तो आप رَحْمَةُ اللّٰهِ تَعَالٰی عَلَیْه ने ह़ज़रते सय्यिदुना **हुसैन बिन मन्सूर ह़ल्लाज** رَحْمَةُ اللّٰهِ تَعَالٰی عَلَیْه के अश्आ़र और मुनाजात लिखवा कर

मेरे लिये तय्यार रखे थे जो मुझे अ़ता फ़रमा दिये। **दूसरे** दरवेश के पेट पर हाथ फेरा उस की **तिल्ली** की तक्लीफ़ दूर हो गई। **तीसरे** से फ़रमाया, **साबूनी ह़ल्वा** (बर्फ़ी) शाही दरबारों की ग़िज़ा है मगर आप ने लिबासे सूफ़िया पहन रखा है ! दो[2] में से एक चीज़ इख़्तियार कीजिये। (كشف المحجوب ص ٣٨٤) **अल्लाह عَزَّوَجَلَّ की उन पर रह़मत हो और उन के सदक़े हमारी मग़्फ़िरत हो।**

﴾41﴿ क्या हुसैन बिन मन्सूर رَحْمَةُ اللّٰهِ تَعَالٰی عَلَيْه ने اَنَاالْحَقّ कहा था

प्यारे प्यारे इस्लामी भाइयो ! देखा आप ने ! **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ की अ़ता से औलियाउल्लाह लोगों के **दिलों के अह़वाल** जान लेते हैं, जभी तो ह़ज़रते सय्यिदुना शैख़ इब्ने अ़ला رَحْمَةُ اللّٰهِ تَعَالٰی عَلَيْه ने बिग़ैर पूछे हुज़ूर दाता गन्ज बख़्श ह़ज़रते सय्यिदुना अ़ली हिजवेरी رَحْمَةُ اللّٰهِ تَعَالٰی عَلَيْه और उन के अह़बाब की **दिली मुरादें** बयान कर दीं और दो[2] की मुरादें पूरी फ़रमा कर तीसरे[3] को इस्लाह़ का **मदनी फूल** इनायत फ़रमाया। इस हिकायत में ह़ज़रते सय्यिदुना हुसैन बिन मन्सूर ह़ल्लाज رَحْمَةُ اللّٰهِ تَعَالٰی عَلَيْه का ज़िक्रे ख़ैर भी मौजूद है। इन के बारे में मश्हूर है कि इन्हों ने اَنَا الْحَقّ या'नी "मैं ह़क़ (ख़ुदा) हूं" कहा था। इस ग़लत़ फ़हमी का रद करते हुए मेरे आक़ा आ'ला ह़ज़रत, इमामे अहले सुन्नत, मौलाना शाह इमाम अह़मद रज़ा ख़ान عَلَيْهِ رَحْمَةُ الرَّحْمٰن फ़रमाते हैं, "ह़ज़रते सय्यिदुना हुसैन बिन मन्सूर ह़ल्लाज رَحْمَةُ اللّٰهِ تَعَالٰی عَلَيْه जिन को अ़वाम "मन्सूर" कहते हैं,

मन्सूर इन के वालिद का नाम था, और इन का इस्मे गिरामी **हुसैन**। (आप) अकाबिरे अहले हाल से थे। इन की एक बहन इन से ब दरजहा मर्तबए विलायत व मा'रिफ़त में ज़ाइद थीं। वोह आख़िरे शब को जंगल तशरीफ़ ले जातीं और यादे इलाही عَزَّوَجَلَّ में मसरूफ़ होतीं। एक दिन इन की आंख खुली बहन को न पाया, घर में हर जगह तलाश किया, पता न चला, इन को वस्वसा गुज़रा। दूसरी शब में क़स्दन सोते में जान डाल कर जागते रहे, वोह अपने वक़्त पर उठ कर चलीं, येह आहिस्ता आहिस्ता पीछे हो लिये, देखते रहे, **आस्मान से सोने की ज़न्जीर में याक़ूत का जाम उतरा और उन के दहने मुबारक (या'नी मुंह शरीफ़) के बराबर आ लगा, उन्हों ने पीना शुरूअ़ किया,** इन से सब्र न हो सका कि येह जन्नत की ने'मत (मुझे) न मिले, बे इख़्तियार कह उठे कि बहन ! तुम्हें **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ की क़सम कि थोड़ा मेरे लिये छोड़ दो, उन्हों ने एक जुर्आ़ (या'नी एक घूंट) छोड़ दिया, इन्हों ने पिया, उस के पीते ही हर जड़ी बूटी हर दरो दीवार से इन को येह आवाज़ आने लगी कि कौन इस का ज़ियादा मुस्तहिक़ है कि हमारी राह में क़त्ल किया जाए ? इन्हों ने कहना शुरूअ़ किया, اَنَا اَلاَحَق या'नी बेशक मैं सब से ज़ियादा इस का सज़ावार (या'नी हक़दार) हूं। लोगों के सुनने में आया, "اَنَا الْحَقّ" (या'नी मैं हक़ हूं) वोह (लोग) दा'वए ख़ुदाई समझे, और येह (या'नी ख़ुदाई का दा'वा) कुफ़्र है और मुसल्मान हो कर जो कुफ़्र करे मुरतद है और मुरतद की सज़ा क़त्ल

है। (صحيح البخارى ج٢ ص٣١٥ حديث ٣٠١٧ में है कि) नबियों के सुल्तान, रह़मते आ़लमिय्यान, सरदारे दो जहान, मह़बूबे रह़मान صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم का फ़रमाने आ़लीशान है, "जो अपना दीन बदल दे उसे क़त्ल करो।"

(फ़तावा रज़विय्या, जि. 26, स. 400)

اَلْحَمْدُ لِلّٰه عَزَّوَجَلَّ दा'वते इस्लामी के मदनी माह़ोल से वाबस्तगी और मदनी क़ाफ़िलों में सफ़र इस्लाहे़ अ़क़ाइदो आ'माल के बेहतरीन ज़राएअ़ हैं चुनान्चे

﴾42﴿ मैं शराबी और चोर था

बम्बई (अल हिन्द) के इस्लामी भाई का बयान कुछ इस त़रह़ है कि मुझे ग़लत़ सोह़बत के सबब कम उ़म्री ही में शराब और जूआ की लत पड़ गई थी, हीरे और सोने की स्मगलिंग में महारत के बाइ़स मैं इस मैदान में "किंग" मश्हूर था। हमारे घर के क़रीब **दा'वते इस्लामी** वाले हर जुमुआ़ को जम्अ़ हो कर दर्सो बयान का सिल्सिला किया करते थे, मेरी मां मुझ से शिर्कत का कहा करती मगर मैं टाल दिया करता। आख़िर कार मां की **इन्फ़िरादी कोशिश** की बरकत से एक बार शरीक हो ही गया, मुझे मुबल्लिग़ का अन्दाज़े बयान तो पसन्द आया मगर पल्ले कुछ न पड़ा, इख़्तिताम पर मुझ पर मुबल्लिग़ ने **इन्फ़िरादी कोशिश** करते हुए बम्बई के अ़लाक़े **गोवन्डी** में होने वाले हफ़्तावार सुन्नतों भरे इज्तिमाअ़ की दा'वत पेश की, मैं ने हामी भर ली।

इज्तिमाअ़ वाली शब दोस्तों के साथ शराब ख़ाने पहुंचा मगर आज दिल कुछ उचाट सा था, सब ने शराब मंगवाई मगर मैं ने कोल्ड्रिंक का ऑर्डर दिया। इस पर दोस्तों ने मेरी त़रफ़ मुतअ़ज्जिबाना अन्दाज़ में देखा। मैं ने कहा, मुझे किसी ने इज्तिमाअ़ की दा'वत दी है मुझे वहां वा'ज़ सुनने जाना है। येह सुनते ही दोस्तों में हंसी का फ़व्वारा उबल पड़ा और कहने लगे, यार ! क्या येह **मुह़र्रम** का महीना है ! वा'ज़ तो **मुह़र्रम** में होते हैं, तुम्हारे साथ किसी ने मज़ाक़ किया होगा। मैं भी सोच में पड़ गया कि वाक़ेई वा'ज़ तो मुह़र्रम शरीफ़ में होते हैं मगर फिर मैं ने दिल बांधा और येह कहते हुए उठा कि अगर वा'ज़ नहीं होगा तो वापस आ जाऊंगा। बाहर निकल कर रिक्शा पकड़ कर सीधा **इज्तिमाअ़ गाह** में जा पहुंचा। वहां मांगी जाने वाली रिक़्क़त अंगेज़ दुआ़ ने मुझे ख़ूब रुलाया, रो रो कर मैं ने अपने गुनाहों से तौबा की। इज्तिमाअ़ ख़त्म होने के बा'द मुबल्लिग़ ने **इन्फ़िरादी कोशिश** करते हुए मुझे मदनी क़ाफ़िले में सफ़र की दा'वत पेश की। اَلْحَمْدُ لِلّٰه عَزَّوَجَلَّ मैं **आ़शिक़ाने रसूल** के साथ **मदनी क़ाफ़िले** का मुसाफ़िर बना, वहीं मैं ने दाढ़ी शरीफ़ और इमामए मुबारका की निय्यत की। जुआरी और शराबी दोस्तों से पीछा छुड़ाया और **दा'वते इस्लामी** का मदनी माह़ोल अपनाया। मुझे "वात" नामी एक तश्वीश नाक बीमारी थी जिस के सबब ऐसा लगा करता था जैसे आंख में कंकरी सी पड़ी है। डॉक्टर भी उस के इलाज से आ़जिज़ थे।

اَلْحَمْدُ لِلّٰه عَزَّوَجَلَّ **दा'वते इस्लामी** के मदनी माहोल की बरकत से मुझे उस मूज़ी मरज़ से भी छुटकारा नसीब हो गया।

छोड़ो मै नोशियां, मत बको गालियां आओ तौबा करें क़ाफ़िले में चलो
ऐ शराबी तू आ, आ जुआरी तू आ छूटें बद आ़दतें क़ाफ़िले में चलो

صَلُّوْا عَلَى الْحَبِيْب ! صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلٰى مُحَمَّد

क़ाफ़िलों की दा'वत देते रहिये : प्यारे प्यारे इस्लामी भाइयो ! देखा आप ने ! मुबल्लिग़े दा'वते इस्लामी के सुन्नतों भरे बयान और **इन्फ़िरादी कोशिश** के नतीजे में एक जुआरी और शराबी ताइब हुवा और मदनी क़ाफ़िले का मुसाफ़िर बन कर दा'वते इस्लामी के **मदनी माहोल** से वाबस्ता हो गया। **आप भी लोगों को मदनी क़ाफ़िलों में सफ़र की दा'वत देते रहिये।** इस हिकायत में आप ने एक शराबी का तज़्किरा सुना। अफ़्सोस सद करोड़ अफ़्सोस ! आजकल मुसल्मानों की एक ता'दाद مَعَاذَ اللّٰه عَزَّوَجَلَّ शराब नोशी की नुहूसत में गिरिफ़्तार है लिहाज़ा ज़िम्नन शराब के बारे में कुछ अ़र्ज़ करता चलूं।

शराब के एक घूंट का अ़ज़ाब : ताजदारे नुबुव्वत, माहे रिसालत, दरियाए रह़मत, मह़बूबे रब्बुल इ़ज़्ज़त صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم का फ़रमाने इ़ब्रत निशान है, "**अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ ने मुझे तमाम जहान वालों के लिये रह़मत और हिदायत बना कर भेजा है, मुझे इस लिये मब्ऊ़स फ़रमाया है कि मैं **गाने**

बजाने के आलात और जाहिलिय्यत के कामों को मिटा दूं, मेरे परवर्दगार عَزَّوَجَلَّ ने अपनी इ़ज़्ज़त की क़सम याद कर के फ़रमाया है, "मेरा जो बन्दा **शराब** का एक घूंट भी पियेगा मैं उसे उस की मिस्ल **जहन्नम का खौलता हुवा पानी** पिलाऊंगा और मेरा जो बन्दा मेरे ख़ौफ़ से **शराब** पीना छोड़ देगा मैं उसे जन्नत में अच्छे रुफ़क़ा के साथ (पाकीज़ा शराब) पिलाऊंगा।"

(المعجم الکبیر للطبرانی ج ۸ ص ۱۹۷ حدیث ۷۸۰۳،۷۸۰٤)

कलिमा नसीब न हुवा : प्यारे प्यारे इस्लामी भाइयो ! अन्देशा है कि शराबियों और शत़रंज खेलने वालों वग़ैरा को मरते वक़्त कलिमा नसीब न हो। इस ज़िम्न में **दो**[2] **हिकायात** मुलाहज़ा हों :

ह़ज़रते अ़ल्लामा मुह़म्मद बिन अह़मद ज़हबी عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللهِ الْقَوِى फ़रमाते हैं, ﴾43﴿ एक शख़्स शराबियों की सोह़बत में बैठता था जब उस की मौत का वक़्त क़रीब आया तो किसी ने कलिमा शरीफ़ की तल्क़ीन की तो कहने लगा, "तुम भी पियो और मुझे भी पिलाओ।" مَعَاذَ اللهِ عَزَّوَجَلَّ बिग़ैर कलिमा पढ़े मर गया (जब शराबियों की सोह़बत का येह ह़ाल है तो शराब पीने का क्या वबाल होगा !) ﴾44﴿ एक शत़रंज खेलने वाले को मरते वक़्त कलिमा शरीफ़ की तल्क़ीन की गई तो कहने लगा, "شاهَكَ" (या'नी तेरा बादशाह) येह कहने के बा'द उस का दम निकल गया।

(مُلَخَّصاً کتابُ الکبائر ص ۱۰۳)

शराब के तिब्बी नुक़्सानात : प्यारे प्यारे इस्लामी भाइयो ! इस्लाम ने शराब नोशी को जो ह़राम क़रार दिया है इस में बे शुमार ह़िक्मतें हैं, अब कुफ़्फ़ार भी इस के नुक़्सानात को तस्लीम करने लगे हैं, चुनान्चे एक ग़ैर मुस्लिम मुह़क़्क़िक़ के तअस्सुरात के मुताबिक़ शुरूअ़ शुरूअ़ में तो बदने इन्सानी शराब के नुक़्सानात का मुक़ाबला कर लेता है और शराबी को ख़ुश गवार कैफ़िय्यत मिल जाती है मगर जल्द ही दाख़िली (या'नी जिस्म की अन्दरूनी) क़ुव्वते बरदाश्त ख़त्म हो जाती और मुस्तक़िल मुज़िर असरात मुरत्तब होने लगते हैं। शराब का सब से ज़ियादा असर **जिगर** (कलेजी) पर पड़ता है और वोह सुकड़ने लगता है, **गुर्दों** पर इज़ाफ़ी बोझ पड़ता है जो बिल आख़िर निढाल हो कर अन्जामे कार नाकारा (FAIL) हो जाते हैं, इलावा अज़ीं शराब के इस्ति'माल की कसरत **दिमाग़** को मुतवर्रिम (या'नी सूजन में मुब्तला) करती है, **आ'साब** में सोज़िश हो जाती है नतीजतन आ'साब कमज़ोर और फिर तबाह हो जाते हैं, शराबी के मे'दे में सूजन हो जाती है **हड्डियां** नर्म और ख़स्ता (या'नी बहुत ही कमज़ोर) हो जाती हैं, शराब जिस्म में मौजूद **विटामिन्ज़** के ज़ख़ाइर को तबाह करती है विटामिन B और C इस की ग़ारत गरी का बिल ख़ुसूस निशाना बनते हैं। शराब के साथ साथ तम्बाकू नोशी की जाए तो इस के नुक़्सान देह असरात कई गुनाह बढ़ जाते हैं और **हाई ब्लड प्रेशर, स्ट्रोक और हार्ट अटेक** का शदीद ख़त़रा रहता है। ब कसरत शराब पीने वाला **थकन, सर दर्द,** मतली और **शिद्दते प्यास** में

मुब्तला रहता है। बे तहाशा शराब पी जाने से दिल और अ़मले तनफ़्फ़ुस (सांस लेने का अ़मल) रुक जाता और शराबी फ़ौरी तौर पर मौत के घाट उतर जाता है।

गर आए शराबी मिटे हर ख़राबी चढ़ाएगा ऐसा नशा मदनी माह़ोल
अगर चोर डाकू भी आ जाएंगे तो सुधर जाएंगे गर मिला मदनी माह़ोल
नमाज़ें जो पढ़ते नहीं उन को ला रैब
नमाज़ी है देता बना मदनी माह़ोल

(45) अन्धा शराबी

मुझे (सगे मदीना عُفِیَ عَنْہُ को) अच्छी त़रह़ याद है कि एक शौख़ मिज़ाज तनो मन्द नौ जवान मज़दूरी किया करता था वोह ख़ूब जानदार होने और तड़ाक पड़ाक बोलने के सबब काफ़ी नुमायां था। फिर उस का एक दौर आया कि वोह **अन्धा** हो गया और निहायत ही अफ़्सुर्दगी के साथ भीक मांगता फिरता था। मा'लूम करने पर पता चला कि येह **शराबी** था और एक बार **नाक़िस शराब** पी लेने के सबब इस की आंखों के दिये (या'नी चराग़) बुझ गए!

कर ले तौबा और तू मत पी शराब होंगे वरना दो[2] जहां तेरे ख़राब
जो जूआ खेले, पिये नादां शराब क़ब्रो ह़श्रो नार में पाए अ़ज़ाब

صَلُّوا عَلَی الْحَبِیْب! صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلٰی مُحَمَّد

﴾46﴿ कपड़ा ख़ुद ब ख़ुद बुनता रहा

हज़रते सय्यिदुना शैख़ अह़मद नहरवानी قُدِّسَ سِرُّهُ الرَّبَّانِی हज़रते सय्यिदुना क़ाज़ी ह़मीदुद्दीन नागोरी رَحْمَۃُ اللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہ के मुरीद थे। बहुत ही बा कमाल और साहिबे ह़ाल बुज़ुर्ग थे। ह़ज़रते सय्यिदुना शैख़ बहाऊद्दीन ज़करिय्या मुलतानी قُدِّسَ سِرُّهُ الرَّبَّانِی बहुत कम किसी को पसन्द फ़रमाते थे लेकिन ह़ज़रते सय्यिदुना शैख़ अह़मद नहरवानी قُدِّسَ سِرُّهُ الرَّبَّانِی के बारे में फ़रमाया करते थे अगर शैख़ अह़मद नहरवानी قُدِّسَ سِرُّهُ الرَّبَّانِی की अपने रब عَزَّوَجَلَّ के साथ मश्ग़ूलिय्यत को वज़्न किया जाए तो दस[10] सूफ़ियों की मश्ग़ूलिय्यत के बराबर होगी। आप رَحْمَۃُ اللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہ का पेशा कपड़े की बुनाई थी। ह़ज़रते सय्यिदुना शैख़ नसीरुद्दीन मह़मूद عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللّٰهِ الْمَعْبُوْد फ़रमाते हैं कि घर पर कपड़े की बुनाई करते हुए कभी कभी **शैख़ अह़मद नहरवानी** قُدِّسَ سِرُّهُ الرَّبَّانِی पर ऐसा ह़ाल त़ारी हो जाता कि आपे से बहार हो जाते मगर **कपड़ा ख़ुद ब ख़ुद बुनता चला जाता।** एक दिन आप के **पीरो मुर्शिद** ह़ज़रते सय्यिदुना क़ाज़ी ह़मीदुद्दीन नागोरी رَحْمَۃُ اللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہ मुलाक़ात के लिये तशरीफ़ लाए। ब वक़्ते रुख़्सत **मुर्शिद** ने फ़रमाया, **ऐ अह़मद !** आख़िर कब तक येह काम करते रहोगे ? येह कह कर वोह तशरीफ़ ले गए। शैख़ अह़मद नहरवानी قُدِّسَ سِرُّهُ الرَّبَّانِی उसी वक़्त (चर्ख़े की) मेख़ कसने के लिये उठे कि यकायक आप رَحْمَۃُ اللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہ का हाथ मुबारक चर्ख़े में उलझ कर टूट गया। इस वाक़िए के बा'द शैख़ अह़मद

नहरवानी قُدِّسَ سِرُّهُ الرَّبَّانِی ने "बाफ़िन्दगी" (कपड़े की बुनाई) का पेशा बिल्कुल तर्क कर दिया और हमातन **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ से लौ लगा ली। आप رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰی عَلَيْه का मज़ारे फ़ाइज़ुल अन्वार बदायूं शरीफ़ (हिन्द) में है। (اخبار الاخیار مع مکتوبات ص ٤٧)

अल्लाह عَزَّوَجَلَّ की उन पर रहमत हो और उन के सदक़े हमारी मग़्फ़िरत हो।

صَلُّوا عَلَى الْحَبِيب! صَلَّى اللهُ تَعَالٰی عَلٰی مُحَمَّد

﴾47﴿ ख़रबूज़े वाला

प्यारे प्यारे इस्लामी भाइयो ! उ़लमा और औलिया मुसल्मानों की हर क़ौम और हर पेशा करने वालों में होते रहे और क़ियामत तक होते रहेंगे। फ़ज़्ले ख़ुदावन्दी किसी नस्ल या क़ौम ही के साथ मख़्सूस नहीं। **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ जिस को चाहता है अपनी रहमत से नवाज़ देता है। रूए ज़मीन पर मुतअ़द्दद औलियाउल्लाह رَحِمَهُمُ اللهُ تَعَالٰی हर वक़्त मौजूद रहते हैं और उन्हीं की बरकत से दुन्या का निज़ाम चलता है। चुनान्चे

हज़रते सय्यिदुना शाह अ़ब्दुल अ़ज़ीज़ मुहद्दिस देहलवी عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللهِ الْقَوِی से किसी शख़्स ने शिकायत की, कि हुज़ूर ! क्या वज्ह है कि आजकल देहली का इन्तिज़ाम "बहुत सुस्त" है ? फ़रमाया, आजकल यहां के साहिबे ख़िदमत (या'नी अ़ब्दाले देहली) सुस्त हैं। पूछा, कौन साहिब हैं ? फ़रमाया, फ़ुलां फल फ़रोश जो फ़ुलां बाज़ार में **ख़रबूज़े** फ़रोख़्त करते हैं। पूछने वाले साहिब उन के पास पहुंचे और **ख़रबूज़े** काट काट कर और चख चख कर सब ना पसन्द कर के टोकरे में रख दिये। इस

क़दर नुक़्सान कर देने वाले को भी वोह कुछ नहीं बोले। कुछ अ़र्से के बा'द देखा कि इन्तिज़ाम बिल्कुल दुरुस्त है और ह़ालात बदल गए हैं तो उसी शख़्स ने फिर पूछा, कि आजकल कौन हैं ? शाह साह़िब ने फ़रमाया, एक **सक़्क़ा** हैं जो चांदनी चौक में पानी पिलाते हैं। मगर एक गिलास की एक छदाम (छदाम उन दिनों सब से छोटा सिक्का था या'नी एक पैसे का चौथाई ह़िस्सा) लेते हैं। येह एक छदाम ले गए और उन को दे कर उन से पानी मांगा। उन्हों ने पानी दिया, इन्हों ने पानी गिरा दिया और दूसरा[2] गिलास मांगा। उन्हों ने पूछा, और छदाम है ? कहा नहीं। उन्हों ने एक धोल (चांटा) रसीद किया और कहा, **ख़रबूज़े वाला समझा है ?**

(सच्ची ह़िकायात, ह़िस्सए, सिवुम, स. 97, मक्तबए जामे नूर, देहली)

अल्लाह عَزَّوَجَلَّ की उन पर रह़मत हो और उन के सदक़े हमारी मग़्फ़िरत हो।

रूह़ानी ह़ाकिम : प्यारे प्यारे इस्लामी भाइयो ! अल्लाह वाले रूह़ानी ह़ाकिम होते हैं और येह भी मा'लूम हुवा कि **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ की अ़ता से ग़ैब की बातें इन **अल्लाह** वालों के इ़ल्म में होती हैं। हर वली की विलायत का शोहरा और धूमधाम होना कोई ज़रूरी नहीं। येह ह़ज़रात मुआ़शरे के हर त़बक़े में होते हैं। कभी मज़्दूर के भेस में, कभी सब्ज़ी और फल फ़रोश की सूरत में, कभी ताजिर या मुलाज़िम की शक्ल में, कभी चोकीदार या मे'मार के रूप में बड़े बड़े औलिया होते हैं। हर कोई उन की शनाख़्त नहीं कर सकता। हमें किसी भी मुसल्मान को ह़क़ीर

नहीं जानना चाहिये। बा'ज़ औलियाए किराम बा क़ाइदा "रूहानी निज़ाम" से मरबूत़ (या'नी जुड़े हुए) होते हैं चुनान्चे

356 औलियाए किराम : **हज़रते** सय्यिदुना इब्ने मस्ऊद رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْهُ से रिवायत है, सरकारे मदीनए मुनव्वरह, सरदारे मक्कए मुकर्रमा صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया, "**अल्लाह** तआला के **तीन सो**300 बन्दे रूए ज़मीन पर ऐसे हैं कि उन के दिल हज़रते सय्यिदुना आदम सफ़िय्युल्लाह عَلٰی نَبِیِّنَا وَعَلَیْهِ الصَّلٰوۃُ وَالسَّلَام के क़ल्बे अत़्हर पर हैं। और **चालीस**40 के दिल हज़रते सय्यिदुना मूसा कलीमुल्लाह عَلٰی نَبِیِّنَا وَعَلَیْهِ الصَّلٰوۃُ وَالسَّلَام के क़ल्बे अत़्हर पर हैं। और **सात**7 के दिल हज़रते सय्यिदुना इब्राहीम ख़लीलुल्लाह عَلٰی نَبِیِّنَا وَعَلَیْهِ الصَّلٰوۃُ وَالسَّلَام के क़ल्बे अत़्हर पर हैं। और **पांच**5 के दिल हज़रते सय्यिदुना जिब्राईल عَلٰی نَبِیِّنَا وَعَلَیْهِ الصَّلٰوۃُ وَالسَّلَام के क़ल्बे अत़्हर पर हैं। और **तीन**3 के दिल हज़रते सय्यिदुना मीकाईल عَلٰی نَبِیِّنَا وَعَلَیْهِ الصَّلٰوۃُ وَالسَّلَام के क़ल्बे अत़्हर पर है। **एक**1 उन में ऐसा है जिस का दिल हज़रते सय्यिदुना इसराफ़ील عَلٰی نَبِیِّنَا وَعَلَیْهِ الصَّلٰوۃُ وَالسَّلَام के क़ल्बे अत़्हर पर है। जब इन में "एक1" वफ़ात पाता है तो **अल्लाह** तआला उस की जगह "तीन3" में से एक को मुक़र्रर फ़रमाता है और अगर "तीन3" में से कोई एक वफ़ात पाता है तो **अल्लाह** तआला उस की जगह "पांच5" में से एक को और अगर "पांच5" में से कोई एक वफ़ात पाता है तो **अल्लाह** तआला उस की जगह सात7 में से एक को और अगर उन सात7 में का कोई एक वफ़ात पाता है तो **अल्लाह** तआला उस की जगह "चालीस40" में से

एक को और अगर उन "चालीस[40]" हज़रात में से कोई एक वफ़ात पाता है तो **अल्लाह** तआ़ला उन की जगह "तीन सो[300]" में से एक को और अगर उन "तीन सो[300]" में कोई एक वफ़ात पाता है तो **अल्लाह** तआ़ला उस की जगह आ़म लोगों में से किसी को मुक़र्रर फ़रमाता है। उन के ज़रीए़ (वसीले) से ज़िन्दगी और मौत मिलती, बारिश बरस्ती, खेती उगती और बलाएं दूर होती हैं हज़रते सय्यिदुना इब्ने मस्ऊ़द رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ से इस्तिफ़्सार किया गया, "उन के ज़रीए़ कैसे ज़िन्दगी और मौत मिलती है ?" फ़रमाया, "वोह **अल्लाह** तआ़ला से उम्मत की कसरत का सुवाल करते हैं तो उम्मत कसीर हो जाती है और ज़ालिमों के लिये बद दुआ़ करते हैं तो उन की ताक़त तोड़ दी जाती है, वोह दुआ़ करते हैं तो बारिश बरसाई जाती, ज़मीन लोगों के लिये खेती उगाती है, लोगों से मुख़्तलिफ़ क़िस्म की बलाएं टाल दी जाती हैं।"

(حلیۃالاولیاء ج۱ ص ۴۰ حدیث ۱۶)

अल्लाह عَزَّوَجَلَّ की उन पर रह़मत हो और उन के सदक़े हमारी मग़्फ़िरत हो।

अब्दाल : हज़रते सय्यिदुना इमाम मुह़म्मद बिन अ़ली ह़कीम तिरमिज़ी رَحْمَۃُ اللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہ फ़रमाते हैं, हज़रते सय्यिदुना अबू दरदा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ से मरवी है, बेशक अम्बिया عَلَیْہِمُ الصَّلٰوۃُ وَالسَّلَام ज़मीन के अवताद थे जब सिलिसलए नुबुव्वत ख़त्म हुवा तो **अल्लाह** तआ़ला ने उम्मते अह़मद صَلَّى اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم में से एक क़ौम को उन का नाइब बनाया जिन्हें **अब्दाल** कहते हैं, वोह ह़ज़रात (फ़क़त्) रोज़ा व नमाज़ और तस्बीह़

तक़्दीस में कसरत की वज्ह से लोगों से अफ़्ज़ल नहीं हुए बल्कि अपने हुस्ने अख़्लाक़, वरअ़ व तक़्वा की सच्चाई, निय्यत की अच्छाई, तमाम मुसल्मानों से अपने सीने की सलामती, **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ की रिज़ा के लिये हिल्म, सब्र और दानिशमन्दी, बिग़ैर कमज़ोरी के आ़जिज़ी और तमाम मुसल्मानों की ख़ैर ख़्वाही की वज्ह से अफ़्ज़ल हुए हैं। पस वोह अम्बिया عَلَیْہِمُ الصَّلٰوۃُ وَالسَّلَام के नाइब हैं। वोह ऐसी क़ौम हैं कि **अल्लाह** तआ़ला ने उन्हें अपनी ज़ाते पाक के लिये मुन्तख़ब और अपने इ़ल्म और रिज़ा के लिये ख़ास कर लिया है। वोह **40 सिद्दीक़** हैं, जिन में से **30** **रह़मान** عَزَّوَجَلَّ के ख़लील ह़ज़रते सय्यिदुना इब्राहीम عَلٰی نَبِیِّنَا وَعَلَیْہِ الصَّلٰوۃُ وَالسَّلَام के यक़ीन की मिस्ल हैं। उन के ज़रीए़ (वसीले) से अहले ज़मीन से बलाएं और लोगों से मुसीबतें दूर होती हैं उन के ज़रीए़ से ही बारिश होती और रिज़्क़ दिया जाता है उन में से कोई उसी वक़्त फ़ौत होता है जब **अल्लाह** तआ़ला उस की जा नशीनी के लिये किसी को परवाना दे चुका होता है। वोह किसी पर ला'नत नहीं भेजते, अपने मा तह़तों को अज़िय्यत नहीं देते, उन पर दस्त दराज़ी नहीं करते, उन्हें ह़क़ीर नहीं जानते, ख़ुद पर फ़ौक़िय्यत रखने वालों से ह़सद नहीं करते, दुन्या की ह़िर्स नहीं करते, दिखावे की ख़ामोशी इख़्तियार नहीं करते, तकब्बुर नहीं करते और दिखावे की आ़जिज़ी भी नहीं करते।

वोह बात करने में तमाम लोगों से अच्छे और नफ़्स के ए'तिबार से ज़ियादा परहेज़ गार हैं, सख़ावत उन की फ़ित़रत में शामिल है, अस्लाफ़ ने जिन (ना मुनासिब) चीज़ों को छोड़ा उन से मह़फ़ूज़ रहना

उन की सिफ़त है उन की येह सिफ़त जुदा नहीं होती कि आज ख़शिय्यत की हालत में हों और कल ग़फ़्लत में पड़े हों बल्कि वोह अपने हाल पर हमेशगी इख़्तियार करते हैं, वोह अपने और अपने रब عَزَّوَجَلَّ के दरमियान एक ख़ास तअ़ल्लुक़ रखते हैं, उन्हें आंधी वाली हवा और बेबाक घोड़े नहीं पहुंच सकते, उन के दिल **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ की ख़ुशी (रिज़ा) और शौक़ में आस्मान की त़रफ़ बुलन्द होते हैं फिर (पारह अट्ठाईसवां **सूरतुल मुजादलह** की) येह आयत (नम्बर : 22) तिलावत फ़रमाई اُولٰٓئِكَ حِزْبُ اللّٰهِ ؕ اَلَاۤ اِنَّ حِزْبَ اللّٰهِ هُمُ الْمُفْلِحُوْنَ **तरजमए कन्ज़ुल ईमान :** "येह **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ की जमाअ़त है, सुनता है **अल्लाह** ही की जमाअ़त काम्याब है" रावी कहते हैं कि मैं ने अ़र्ज़ की : "**ऐ अबू दरदा** رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ! जो कुछ आप ने बयान फ़रमाया उस में कौन सी बात मुझ पर भारी है ? मुझे कैसे मा'लूम होगा कि मैं ने उसे पा लिया ?" फ़रमाया : "आप इस के दरमियानी दरजे में उस वक़्त पहुंचेंगे जब दुन्या से बुग़्ज़ रखेंगे और जब दुन्या से बुग़्ज़ रखेंगे तो आख़िरत की मह़ब्बत अपने क़रीब पाएंगे और आप जितना दुन्या से ज़ोहद (बे रग़बती) इख़्तियार करेंगे उतना ही आप को आख़िरत से मह़ब्बत होगी और जितना आप आख़िरत से मह़ब्बत करेंगे उतना ही अपने नफ़्अ़ और नुक़्सान वाली चीज़ों को देखेंगे। (मज़ीद फ़रमाया) जिस बन्दे की सच्ची त़लब इल्मे इलाही عَزَّوَجَلَّ में होती है उस को क़ौलो फ़े'ल की दुरुस्ती अ़त़ा फ़रमा देता और अपनी ह़िफ़ाज़त में ले लेता है। इस की तस्दीक़

फ़रमाने मुस्तफ़ा صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم : जो लोग अपनी मजलिस से अल्लाह के ज़िक्र और नबी पर दुरूद शरीफ़ पढ़े बिग़ैर उठ गए तो वोह बदबूदार मुर्दार से उठे। (شعب الايمان)

अल्लाह عَزَّوَجَلَّ की किताब (कुरआने मजीद) में मौजूद है फिर (पारह चौदहवां **सूरतुन्नहूल** की) येह आयत (नम्बर : 128) तिलावत फ़रमाई : إِنَّ اللّٰهَ مَعَ الَّذِيْنَ اتَّقَوْا وَّالَّذِيْنَ هُمْ مُّحْسِنُوْنَ ﴿١٢٨﴾ तरजमए कन्ज़ुल ईमान : "बेशक **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ उन के साथ है जो डरते हैं और जो नेकियां करते हैं।" (پ ١٤ النحل ١٢٨) (मज़ीद फ़रमाया) जब हम ने इस (कुरआने मजीद) में देखा तो येह पाया कि **अल्लाह** तआला की महब्बत और उस की रिज़ा की तलब से ज़ियादा लज़्ज़त किसी शै में हासिल नहीं होती।

(نَوادِرُالاصول لِلحكيم الترمذى ص ١٦٨)

अल्लाह عَزَّوَجَلَّ की उन पर रहमत हो और उन के सदके हमारी मग़फ़िरत हो।

न पूछ इन ख़िर्क़ा पोशों की अ़क़ीदत है तो देख इन को
यदे बैज़ा लिये हैं अपनी अपनी आस्तीनों में

صَلُّوا عَلَى الْحَبِيْب ! صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلٰى مُحَمَّد

﴾48﴿ भूके तलबा की फ़रियाद

मश्हूर मुहद्दिसीने किराम हज़रते सय्यिदुना इमाम तबरानी, हज़रते सय्यिदुना अ़ल्लामा इब्नुल मुक़री और हज़रते सय्यिदुना अबुश्शैख़ رَحِمَهُمُ اللّٰهُ تَعَالٰى तीनों[3] मदीनए मुनव्वरह زَادَهَا اللّٰهُ شَرَفًا وَّتَعْظِيْمًا में इल्मे दीन हासिल करते थे। एक मरतबा उन पर फ़ाक़ा मस्ती का दौर आया। रोज़े पर रोज़ा रखते रहे मगर जब **भूक की शिद्दत** ने बिल्कुल ही निढाल कर दिया तो तीनों ने रहमते आ़लम, नूरे मुजस्सम,

शाहे बनी आदम صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم के **रौज़ए अन्वर** पर हाज़िर हो कर फ़रियाद की, **या रसूलल्लाह!** صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم "अल जूअ़ !" आक़ा ! भूक ! येह अ़र्ज़ कर के सय्यिदुना इमाम त़बरानी رَحْمَةُ اللّٰهِ تَعَالٰى عَلَيْه तो आस्तानए मुबारका ही पर बैठे रहे और कहा कि इस दर पर या **मौत** आएगी या रोज़ी, अब यहां से नहीं उठूंगा।

मैं इन के दर पर पड़ा रहूंगा   पड़े ही रहने से काम होगा

निगाहे रह़मत ज़रूर होगी   त़आम का इन्तिज़ाम होगा

ह़ज़रते सय्यिदुना इब्नुल मुक़री और ह़ज़रते सय्यिदुना अबुश्शैख़ رَحِمَهُمُ اللّٰهُ تَعَالٰى अपनी क़ियाम गाह पर तशरीफ़ ले आए। थोड़ी देर के बा'द किसी ने दरवाज़ा खटखटाया, दरवाज़ा खोला तो क्या देखते हैं कि **एक अ़लवी बुज़ुर्ग** दो[2] गुलामों के साथ खाना लिये खड़े हैं और फ़रमा रहे हैं कि आप ह़ज़रात ने दरबारे रसूल में **भूक** की शिकायत की तो اَلْحَمْدُ لِلّٰه عَزَّوَجَلَّ अभी अभी **ख़्वाब** में नबिय्ये रह़मत, क़ासिमे ने'मत صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने अपनी ज़ियारत से मुशर्रफ़ फ़रमा कर मुझे हुक्म फ़रमाया कि मैं आप लोगों के पास खाना पहुंचा दूं। चुनान्चे जो कुछ बर वक़्त मुझ से हो सका ह़ाज़िर कर दिया है आप ह़ज़रात क़बूल फ़रमा लीजिये। (تذکرۃ الحُفَّاظ ج ۳ ص ۱۲۱)

अल्लाह عَزَّوَجَلَّ **की उन पर रह़मत हो और उन के सदक़े हमारी मग़्फ़िरत हो।**

हर त़रफ़ मदीने में भीड़ है फ़क़ीरों की

एक देने वाला है कुल जहां सुवाली है

صَلُّوْا عَلَى الْحَبِيْب ! صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلٰى مُحَمَّد

बारगाहे रिसालत ﷺ में फ़रियाद सुनी जाती है : प्यारे प्यारे इस्लामी भाइयो ! देखा आप ने ! हमारे अस्लाफ़ رَحِمَهُمُ اللّٰهُ تَعَالٰى हुसूले इल्म की ख़ातिर किस क़दर तक्लीफ़ें बरदाश्त करते थे। फ़ाक़ों पर फ़ाक़े कर के उन्हों ने इल्मे दीन ह़ासिल किया, इन्तिहाई जां फ़िशानी और ख़ूब अ़रक़ रेज़ी के साथ तस्नीफ़ात व तालीफ़ात के मुश्कबार मदनी गुलदस्ते तय्यार कर के हमारी त़रफ़ बढ़ाए। मगर अफ़्सोस ! अब अक्सर मुसल्मान उन की त़रफ़ बिल्कुल भी इल्तिफ़ात नहीं करते। उन बुज़ुर्गों को सरमायए आख़िरत की त़लब और लगन थी और आज के मुसल्मानों की अक्सरिय्यत को सिर्फ़ दुन्या का धन कमाने की धुन है। इस हिकायत से येह भी मा'लूम हुवा कि हमारे बुज़ुर्गाने दीन رَحِمَهُمُ اللّٰهُ الْمُبِين पर जब कड़ा वक़्त आता तो निहायत ही दिल जम्ई के साथ बारगाहे रिसालत صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم में ह़ाजत रवाई के लिये फ़रियाद करते। सरकारे नामदार صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم के दरबार में दिल की गहराइयों से निकली हुई सदा ज़रूर मस्मूअ़ होती (या'नी सुनी जाती) है। मेरे आक़ा आ'ला ह़ज़रत, आ़शिक़े माहे रिसालत मौलाना शाह अह़मद रज़ा ख़ान عَلَيْهِ رَحْمَةُ الرَّحْمٰن ह़दाइक़े बख़्शिश शरीफ़ में फ़रमाते हैं :

वल्लाह वोह सुन लेंगे फ़रियाद को पहुंचेंगे

इतना भी तो हो कोई जो "आह" करे दिल से

اَلْحَمْدُ لِلّٰه عَزَّوَجَلَّ बारगाहे रिसालत में की हुई फ़रियाद फ़ौरन सुनी गई और सरकारे नामदार, मदीने के ताजदार, शहन्शाहे अबरार, जनाबे अहमदे मुख़्तार صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰی عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने फ़ौरन हाजत रवाई फ़रमाई और अपने भूके दीवानों के लिये खाना भेज दिया।

दरे रसूल صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰی عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم से ऐ राज़ क्या नहीं मिलता ?

कोई पलट के न ख़ाली गया मदीने से

प्यारे प्यारे इस्लामी भाइयो ! इल्मे दीन हासिल करने का एक ज़रीआ **दा'वते इस्लामी** के सुन्नतों की तरबियत के **मदनी क़ाफ़िलों** में **आशिक़ाने रसूल** के साथ सफ़र भी है। इस से इल्म हासिल होने के साथ साथ बारहा दुन्यवी तकालीफ़ भी दूर हो जाती हैं चुनान्चे,

﴾49﴿ हिपेटाइटिस C से नजात

एक साहिब को हिपेटाइटिस C का मरज़ बिगड़ चुका था, साहिबे फ़िराश थे, चल फिर भी नहीं सकते थे, डॉक्टरों ने ला इलाज क़रार दे दिया था। उन के साहिब ज़ादे ने **दा'वते इस्लामी** के **मदनी क़ाफ़िले** में सुन्नतों की तरबियत के लिये **आशिक़ाने रसूल** के साथ सफ़र किया और दौराने सफ़र ख़ूब गिड़गिड़ा कर अपने **वालिद साहिब** की सिह्हत याबी के लिये दुआ मांगी। जब मदनी क़ाफ़िले के सफ़र से

वापस आए तो उन की ख़ुशी की इन्तिहा न रही कि उन के **वालिद साहिब** रू ब सिह्हत हो कर ख़ुश ख़िरामी के साथ टहल रहे थे ।

बाप बीमार हो, सख़्त बेज़ार हो पाएगा सिह्हतें, क़ाफ़िले में चलो
वा हो बाबे करम, दूर हों सारे ग़म फिर से ख़ुशियां मिलें क़ाफ़िले में चलो

صَلُّوا عَلَى الْحَبِيب! صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلٰى مُحَمَّد

﴾50﴿ रोशन ज़मीर नानबाई

हज़रते सय्यिदुना सह्ल बिन अ़ब्दुल्लाह तुस्तरी عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللّٰهِ الْقَوِی ने एक मौक़अ़ पर फ़रमाया कि बसरा का फ़ुलां नानबाई (या'नी रोटियां पकाने वाला) वलिय्युल्लाह है । आप رَحْمَةُ اللّٰهِ تَعَالٰى عَلَيْه का एक मुरीद शौक़े दीदार में बसरा पहुंचा और ढूंडता हुवा उस **नानबाई** की ख़िदमत में हाज़िर हो गया, वोह उस वक़्त रोटियां पका रहे थे (पहले उ़मूमन सभी मुसल्मान दाढ़ी रखते थे लिहाज़ा उस दौर के नानबाइयों के दस्तूर के मुताबिक़) दाढ़ी के बालों की जलने से हिफ़ाज़त की ख़ातिर मुंह के निचले हिस्से पर निक़ाब पहन रखा था । उस मुरीद ने दिल में कहा, अगर येह वली होता तो निक़ाब न भी पहनता तो उस के बाल न जलते । इस के बा'द उस ने नानबाई को सलाम किया और **गुफ़्त्गू** करना चाही तो उस **रोशन ज़मीर नानबाई** ने सलाम का जवाब दे कर फ़रमाया, "तू ने मुझे हक़ीर तसव्वुर किया इस लिये मेरी बातों से नफ़्अ़ नहीं उठा सकता ।"

येह कहने के बा'द उन्हों ने गुफ़्तगू करने से इन्कार फ़रमा दिया ।

(الرِّسالة القُشيريّه ص ٣٦٣)

अल्लाह عَزَّوَجَلَّ की उन पर रहमत हो और उन के सदक़े हमारी मग़्फ़िरत हो ।

صَلُّوْا عَلَى الْحَبِيْب ! صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلٰى مُحَمَّد

﴾51﴿ गुदड़ी का ला'ल

प्यारे प्यारे इस्लामी भाइयो ! मा'लूम हुवा कि वली होने के लिये तश्हीर व इश्तिहार, नुमायां जुब्बा व दस्तार और अ़क़ीदत मन्दों की लम्बी क़ितार होना ज़रूरी नहीं, **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ जिसे चाहे नवाज़ दे । **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ ने अपने औलिया رَحِمَهُمُ اللّٰهُ تَعَالٰى को बन्दों के अन्दर पोशीदा रखा है लिहाज़ा हमें हर नेक बन्दे का एह़तिराम करना चाहिये, हमें क्या मा'लूम कि कौन **गुदड़ी का ला'ल** (या'नी छुपा वली) है ! एक बार मैं (सगे मदीना عُفِىَ عَنْهُ) **दा'वते इस्लामी** के **मदनी क़ाफ़िले** में **आ़शिक़ाने रसूल** के साथ सफ़र पर था, हमारे डिब्बे में एक दुबला पतला बे रीश व बे कशिश लड़का इन्तिहाई सादा लिबास में मल्बूस सब से जुदा खोया खोया सा बैठा था । किसी स्टेशन पर ट्रेन रुकी, सिर्फ़ दो[2] मिनट का वक़्फ़ा था, वोह **लड़का** प्लेटफ़ॉर्म पर उतर कर एक **बेन्च** पर बैठ गया । हम सब ने नमाज़े अ़स्र की जमाअ़त क़ाइम कर ली, अभी ब मुश्किल एक रक्अ़त हुई थी कि सीटी बज गई लोगों ने शोर मचाया कि गाड़ी जा रही है । सब नमाज़ तोड़ कर ट्रेन की त़रफ़ लपके तो वोह **लड़का** खड़ा हो गया और उस ने मुझे इशारे से डांटते हुए नमाज़ क़ाइम करने का हुक्म सादिर किया ! हम ने फिर

जमाअ़त क़ाइम कर ली, हैरत अंगेज़ तौर पर ट्रेन ठहरी रही, नमाज़ से फ़ारिग़ हो कर हम जूं ही सुवार हुए, ट्रेन चल पड़ी और वोह लड़का उसी बेन्च पर बैठा ला परवाही से इधर उधर देखता रहा। इस से मुझे अन्दाज़ा हुवा कि वोह कोई "**मजज़ूब**" होगा जिस ने हमें नमाज़ पढ़ाने के लिये अपनी रूहानी ताक़त से ट्रेन को रोके रखा था !

अल्लाह عَزَّوَجَلَّ की उन पर रह़मत हो और उन के सदक़े हमारी मग़्फ़िरत हो।

صَلُّوا عَلَى الْحَبِيب ! صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلٰى مُحَمَّد

तीन चीज़ें तीन चीज़ों में पोशीदा हैं : ख़लीफ़ए आ'ला ह़ज़रत, फ़क़ीहे आ'ज़म, मौलाना अबू यूसुफ़ मुह़म्मद शरीफ़ कोट्लवी عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللهِ الْقَوِى नक़्ल फ़रमाते हैं, "**अल्लाह** तआ़ला ने तीन[3] चीज़ों को **तीन**[3] चीज़ों में पोशीदा रखा है ﴿1﴾ अपनी **रिज़ा** को अपनी **इत़ाअ़त** में और ﴿2﴾ अपनी **नाराज़गी** को ना फ़रमानी में और ﴿3﴾ अपने **औलिया** को अपने बन्दों में पोशीदा रखा है।" लिहाज़ा हर इत़ाअ़त और हर नेकी को अ़मल में लाना चाहिये कि मा'लूम नहीं किस नेकी पर वोह राज़ी हो जाए और हर छोटी से छोटी बदी से बचना चाहिये, क्यूं कि पता नहीं कि वोह किस बदी पर नाराज़ हो जाए मसलन किसी की लकड़ी का ख़िलाल करना एक मा'मूली सी बात है या किसी हमसाए की मिट्टी से उस की इजाज़त के बिग़ैर हाथ धोना गोया एक छोटी सी बात है मगर चूंकि हमें मा'लूम नहीं। इस लिये मुम्किन है कि इस बुराई में ह़क़ तआ़ला की नाराज़गी मख़्फ़ी हो तो ऐसी छोटी छोटी बातों से भी बचना चाहिये।

(अख़्लाक़ुस्सालिह़ीन, स. 56, मक्तबतुल मदीना)

प्यारे प्यारे इस्लामी भाइयो ! अपने दिल में औलियाए किराम رَحِمَهُمُ اللّٰهُ تَعَالٰی का एहतिराम पैदा करने के लिये फ़ैज़ाने औलिया से मालामाल **दा'वते इस्लामी** के मदनी माहोल से हर दम वाबस्ता रहिये। अपने शहर में होने वाले दा'वते इस्लामी के हफ़्तावार सुन्नतों भरे इज्तिमाअ़ में पाबन्दी से शिर्कत फ़रमाइये फिर देखिये आप पर कैसा मदनी रंग आता है ! तरग़ीब के लिये दा'वते इस्लामी की एक "बहार" पेशे ख़िदमत है, चुनान्चे

﴾52﴿ मेरी बद मआ़शी की आ़दत कैसे ख़त्म हुई ?

एक इस्लामी भाई के बयान का ख़ुलासा है, उठती जवानी और अच्छी सिह्हत ने मुझे मग़रूर बना दिया था, नित नए फ़ेन्सी मल्बूसात सिलवाना, कॉलेज आते जाते बस का टिकट भुलाना, कन्डेक्टर मांगे तो बद मआ़शी पर उतर आना, रात गए तक आवारा गर्दी में वक़्त गंवाना, जूआ में पैसा लुटाना वग़ैरा हर त़रह़ की मा'सियत मुझ में सरायत किये हुए थी। वालिदैन समझा समझा कर थक चुके थे, मुझ बदकार की इस्लाह़ के लिये दुआ़ करते करते अम्मीजान की पलकें भीग जातीं। हमारे अ़लाक़े के एक इस्लामी भाई कभी कभी सरसरी त़ौर पर **दा'वते इस्लामी** के हफ़्तावार सुन्नतों भरे इज्तिमाअ़ की दा'वत पेश कर देते, मैं भी सुनी अनसुनी कर देता। एक बार इज्तिमाअ़ वाली शाम वोही इस्लामी भाई मह़ब्बत भरे अन्दाज़ में एक दम इसरार पर उतर आए कि आज तो तुम को चलना ही पड़ेगा, मैं

टालता रहा मगर वोह न माने और देखते ही देखते उन्हों ने रिक्शा रोक लिया और बड़ी मिन्नत के साथ कुछ इस अन्दाज़ में बैठने के लिये दरख़्वास्त की, कि अब मुझ से इन्कार न हो सका, मैं बैठ गया और हम **दा'वते इस्लामी** के अव्वलीन मदनी मर्कज़ जामेअ़ मस्जिद **गुलज़ारे ह़बीब** आ पहुंचे। जब दुआ़ के लिये बत्तियां बुझाई गईं तो येह समझ कर कि इज्तिमाअ़ ख़त्म हो गया, मैं उठ गया, मुझे क्या मा'लूम कि अब आने वाले लम्ह़ात में मेरी तक़्दीर में मदनी इन्क़िलाब बरपा होने वाला है। ख़ैर मेरे उस मोह़सिन इस्लामी भाई ने मह़ब्बत भरे अन्दाज़ में समझा बुझा कर मुझे जाने से रोका, मैं दोबारा बैठ गया। अंधेरे में ब आवाज़े बुलन्द ज़िक्रुल्लाह عَزَّوَجَلَّ की धूम ने मेरा दिल हिला दिया ! ख़ुदा की क़सम ! मैं ने ज़िन्दगी में कभी ऐसी रूह़ानिय्यत देखी थी न सुनी थी। फिर जब **रिक़्क़त अंगेज़ दुआ़** शुरूअ़ हुई तो शुरकाए इज्तिमाअ़ की हिचकियों की आवाज़ बुलन्द होने लगी ह़त्ता कि मेरे जैसा पथ्थर दिल आदमी भी फूट फूट कर रोने लगा, मैं ने अपने गुनाहों से तौबा की और **दा'वते इस्लामी** के मदनी माह़ोल का हो कर रह गया।

तुम्हें लुत़्फ़ आ जाएगा ज़िन्दगी का क़रीब आ के देखो ज़रा मदनी माह़ोल
तनज़्ज़ुल के गहरे गढ़े में थे उन की तरक़्क़ी का बाइ़स बना मदनी माह़ोल

यक़ीनन मुक़द्दर का वोह है सिकन्दर
जिसे ख़ैर से मिल गया मदनी माह़ोल

दा'वते इस्लामी का अव्वलीन मदनी मर्कज़ : प्यारे प्यारे इस्लामी भाइयो ! बयान कर्दा वाक़िआ़ **दा'वते इस्लामी** के अवाइल (या'नी शुरूअ़ के दिनों) का है। जब 1401 सि.हि. में **दा'वते इस्लामी** के नाम से मदनी काम का आग़ाज़ किया, उस वक़्त मौज़ूं जगह पर किसी बड़ी मस्जिद की तरकीब नहीं थी जहां हफ़्तावार सुन्नतों भरा इज्तिमाअ़ किया जा सके। उन दिनों मैं (सगे मदीना عُفِىَ عَنْهُ) उ़लमा व मशाइख़े अहले सुन्नत की ख़िदमत में ह़ाज़िर हो कर **दा'वते इस्लामी** के साथ तआ़वुन की दरख़्वास्तें पेश किया करता था। क्यूं कि मेरा दर्द था और मुझ पर एक धुन सुवार थी कि मुसल्मानों के अ़क़ाइद के तह़फ़्फ़ुज़ और इस्लाहे़ अह़वाल व आ'माल का वसीअ़ पैमाने पर मदनी काम किया जाए। मेरे दर्द को अल्फ़ाज़ के क़ालिब में कुछ इस त़रह़ ढाला जा सकता है,

मुझे अपनी और सारी दुन्या के लोगों की इस्लाह़ की कोशिश करनी है (اِنْ شَآءَاللّٰه عَزَّوَجَلَّ)

बहर ह़ाल इसी ज़िम्न में **दा'वते इस्लामी** के लिये तआ़वुन की मदनी इल्तिजा लिये वाइज़े शीरीं बयान, आ़शिक़े सुल्त़ाने दो[2] जहान, मुहि़ब्बे अहले बैत व सह़ाबए ज़ीशान, जां निसारे औलियाउर्रह़मान ह़ज़रते अ़ल्लामा मौलाना अल ह़ाफ़िज़ अश्शाह **मुह़म्मद शफ़ीअ़ ओकाड़वी** عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللّٰهِ الْقَوِى के मकाने आ़लीशान पर ह़ाज़िर हुवा, मैं ने उन की ख़िदमत में **दा'वते इस्लामी** के बारे में अ़र्ज़ की तो बहुत ख़ुश हुए और अपने दस्तख़त़ के साथ दा'वते इस्लामी के लिये ताईदी मक्तूब

मर्हमत फ़रमाया। आप की मस्लके अहले सुन्नत से महब्बत सद करोड़ मरहबा ! बे मांगे अपने शहर में वाक़ेअ़ अपनी ज़ेरे तौलियत **जामेअ़ मस्जिद गुलज़ारे हबीब** में हफ़्तावार सुन्नतों भरे इज्तिमाअ़ की इजाज़त की सआदत इनायत फ़रमाई। चुनान्चे **दा'वते इस्लामी का अव्वलीन मदनी मर्कज़ जामेअ़ मस्जिद गुलज़ारे हबीब बना**। उन की **हीने हयात** और बा'दे वफ़ात हम ने बरसों तक वहां हफ़्तावार सुन्नतों भरा इज्तिमाअ़ किया। आशिक़ाने रसूल की ता'दाद में रोज़ अफ़्ज़ूं इज़ाफ़ा होता रहा यहां तक कि जामेअ़ मस्जिद गुलज़ारे हबीब इज्तिमाअ़ के लिये नाकाफ़ी हो गई, **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ ने अस्बाब मुहय्या किये, सब इस्लामी भाइयों ने मिल कर खूब भागदौड़ की, कमो बेश सवा दो करोड़ रुपै का चन्दा इकठ्ठा किया और (पुरानी) सब्ज़ी मन्डी के पास तक़रीबन **10** हज़ार गज़ का प्लॉट ख़रीदा और फिर मज़ीद करोड़ों रुपिये के चन्दे से अ़ज़ीमुश्शान **आलमी मदनी मर्कज़ फ़ैज़ाने मदीना** क़ाइम किया गया जिस में शानदार मस्जिद, मदनी कामों के लिये मुतअ़द्दद मकातिब और **जामिअ़तुल मदीना** की आलीशान इमारत के ज़रीए लाखों मुसल्मान फ़ैज़ाने मदीना लूट रहे हैं।

सुन्नत की बहार आई फ़ैज़ाने मदीना में

रहमत की घटा छाई फ़ैज़ाने मदीना में

صَلُّوْا عَلَى الْحَبِيْب! صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلٰى مُحَمَّد

﴿53﴾ एक हिकायत

हज़रत मौलाना **मुहम्मद शफ़ीअ़ ओकाड़वी** عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللهِ الْقَوِى ज़बर दस्त आ़शिक़े रसूल थे। मदीनए मुनव्वरह में सगे मदीना عُفِیَ عَنْهُ को 1417 सि.हि. में साकिने मदीनए मुनव्वरह हाजी ग़ुलाम शब्बीर साहिब ने येह ईमान अफ़्रोज़ वाक़िआ़ सुनाया, "एक बार हज़रते क़िब्ला सय्यिद ख़ुरशीद अहमद शाह साहिब ने मुझ से फ़रमाया, एक दिन मदीनए मुनव्वरह में हज़रत मौलाना **मुहम्मद शफ़ीअ़ ओकाड़वी** عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللهِ الْقَوِى मेरे पास रोते हुए तशरीफ़ लाए और कहने लगे, "आप मेरे साथ मुवाजहा शरीफ़ पर चलिये मैं ने सरकारे नामदार صَلَّى اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم से मुआ़फ़ी मांगनी है।" इस्तिफ़्सार पर बताया, कल मस्जिदुन्नबविय्यिश्शरीफ़ عَلٰی صَاحِبِهَا الصَّلٰوةُ وَالسَّلَام में एक बे अदब मुक़र्रिर ने **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ के महबूब, दानाए ग़ुयूब, मुनज़्ज़हुन अ़निल उ़यूब صَلَّى اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم की शाने अ़ज़मत निशान में तौहीन की, तो मैं ने उस को टोका, इस पर बात बढ़ गई और उस के हिमायती आ गए, उन लोगों ने मुझ पर सख़्तियां कीं जिस से मैं बहुत दिल बरदाश्ता हुवा। रात ख़्वाब में जनाबे **रिसालत मआब** صَلَّى اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم तशरीफ़ लाए और फ़रमाया, "बस मेरी ख़ातिर थोड़ी सी सख़्ती भी बरदाश्त न कर सके !" हज़रते क़िब्ला ओकाड़वी साहिब का कहना था, बात दर अस्ल येह है कि दिल में ज़रा बड़ाई आ गई और तज़्लील को मैं ने अपनी कस्रे शान तसव्वुर किया, इसी लिये हुज़ूरे पाक صَلَّى اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने मुझे तम्बीह फ़रमाई। लिहाज़ा मैं सरकारे मदीना

صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰی عَلَیْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم के दरबार शरीफ़ में ह़ाज़िर हो कर अपने ख़त़रए दिली की मुआ़फ़ी मांगना चाहता हूं।

अल्लाह عَزَّوَجَلَّ की उन पर रह़मत हो और उन के सदक़े हमारी मग़्फ़िरत हो।

ख़ाक हो कर इ़श्क़ में आराम से सोना मिला
जान की इक्सीर है उल्फ़त रसूलुल्लाह صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰی عَلَیْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم की

(ह़दाइक़े बख़्शिश शरीफ़)

صَلُّوْا عَلَی الْحَبِیْب ! صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰی عَلٰی مُحَمَّد

﴾54﴿ इमदादे मुस्त़फ़ा की ईमान अफ़रोज़ ह़िकायत

سُبْحَانَ اللّٰه عَزَّوَجَلَّ आ़शिक़ों की भी क्या ख़ूब नाज़ बरदारियां की जाती हैं ! मा'लूम हुवा सरकारे नामदार, मदीने के ताजदार صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰی عَلَیْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم बि इज़्ने परवर्दगार عَزَّوَجَلَّ अपने ग़ुलामों के अह़वाल व अफ़्कार से हर वक़्त ख़बरदार रहते हैं और बसा अवक़ात ख़्वाब में दीदार से मुशर्रफ़ फ़रमा कर उन की इमदाद और इस्लाह़ करते हैं इस ज़िम्न में एक और ईमान अफ़रोज़ ह़िकायत मुलाह़ज़ा हो। चुनान्चे

ह़ज़रते सय्यिदुना शैख़ यूसुफ़ बिन इस्माईल नबहानी قُدِّسَ سِرُّهُ الرَّبَّانِی ने एक ह़िकायत नक़्ल की है, एक ख़ुरासानी ह़ाजी साहिब हर साल ह़ज की सआ़दत पाते और जब मदीनए मुनव्वरह زَادَهَا اللّٰهُ شَرَفًاوَّتَعْظِیْمًا ह़ाज़िर होते तो वहां एक अ़लवी बुज़ुर्ग ह़ज़रते सय्यिदुना त़ाहिर बिन यह़्या رَحْمَةُ اللّٰهِ تَعَالٰی عَلَیْه की ख़िदमत में नज़राना पेश करते।

एक बार मदीने शरीफ़ में किसी ह़ासिद ने कह दिया कि तुम बिला वज्ह अपना माल ज़ाएअ़ करते हो ! त़ाहिर साहि़ब ग़लत़ जगह पर तुम्हारा नज़राना ख़र्च करते हैं। चुनान्चे मुसल्सल **दो**[2] **साल** उन्हों ने ह़ज़रते सय्यिदुना शैख़ त़ाहिर عَلَیْہِ رَحْمَۃُ النَّاصِر की ख़िदमत न की। **तीसरे**[3] **साल सफ़रे** ह़ज की तय्यारी के मौक़अ़ पर ह़ुज़ूरे अन्वर, शाफ़ेए़ मह़शर, मदीने के ताजवर, बि इज़्ने रब्बे अक्बर ग़ैबों से बा ख़बर, मह़बूबे दावर صَلَّى اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने ख़ुरासानी ह़ाजी के ख़्वाब में जल्वा गर हो कर कुछ इस त़रह़ तम्बीह फ़रमाई, "तुम पर अफ़्सोस ! बद ख़्वाहों की बात सुन कर तुम ने **त़ाहिर** से ह़ुस्ने सुलूक का रिश्ता ख़त्म कर दिया ! इस की तलाफ़ी करो और आयिन्दा क़त्ए़ तअ़ल्लुक़ से बचो" चुनान्चे वोह एक फ़रीक़ की सुन कर **बद गुमानी** कर बैठने पर सख़्त शर्मिन्दा हुए और जब मदीनए मुनव्वरह زَادَھَا اللّٰہُ شَرَفًاوَّتَعْظِیْمًا ह़ाज़िर हुए तो सब से पहले उस अ़लवी बुज़ुर्ग ह़ज़रते सय्यिदुना शैख़ त़ाहिर बिन यह़्या رَحْمَۃُ اللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہ की बारगाह में ह़ाज़िरी दी। उन्हों ने देखते ही फ़रमाया, "अगर तुम्हें प्यारे आक़ा मदीने वाले मुस्त़फ़ा صَلَّى اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم न भेजते तो तुम आने के लिये तय्यार ही न थे ! तुम ने मुख़ालिफ़ की **यक त़रफ़ा बात** सुन कर मेरे बारे में ग़लत़ राय क़ाइम कर के अपनी आ़दते करीमाना तर्क कर दी यहां तक कि **अल्लाह** के मह़बूब, दानाए ग़ुयूब, मुनज़्ज़हुन अ़निल उ़यूब صَلَّى اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने ख़्वाब में तुम्हें तम्बीह फ़रमाई !" येह सुन कर ख़ुरासानी ह़ाजी साहि़ब पर रिक़्क़त त़ारी हो गई। अ़र्ज़ की, ह़ुज़ूर ! आप को येह सब कैसे मा'लूम हुवा ?

फ़रमाया, मुझे पहले ही साल पता चल गया था, दूसरे साल भी तुम ने बे तवज्जोही से काम लिया तो मेरा दिल सदमे से चूर चूर हो गया। इस पर **जनाबे रिसालत मआब** صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने ख़्वाब में करम फ़रमा कर मुझे दिलासा दिया और तुम्हारे ख़्वाब में तशरीफ़ ला कर जो कुछ इर्शाद फ़रमाया था वोह मुझे बताया। ख़ुरासानी हाजी ने ख़ूब नज़राना पेश किया, दस्त बोसी की और पेशानी चूमने के बा'द यक तरफ़ा बात सुन कर राय क़ाइम कर के दिल आज़ारी का बाइस बनने पर **अ़लवी बुज़ुर्ग** رَحْمَةُ اللّٰهِ تَعَالٰى عَلَيْه से मुआफ़ी मांगी।

(مُلَخَّصاً حُجَّةُ اللّٰه عَلَى العالمين ص ۵۷۱)

अल्लाह عَزَّوَجَلَّ **की उन पर रह़मत हो और उन के सदक़े हमारी मग़्फ़िरत हो।**

न क्यूंकर कहूं या ह़बीबी अग़िस्नी[1] *इसी नाम से हर मुसीबत टली है*
ख़ुदा ने किया तुझ को आगाह सब से *दो आ़लम में जो कुछ ख़फ़ी व जली है*[2]

(ह़दाइक़े बख़्शिश शरीफ़)

यक त़रफ़ा सुन कर फ़ैसला नहीं करना चाहिये : प्यारे प्यारे इस्लामी भाइयो ! इस हिकायत से मा'लूम हुवा कि हमारे मीठे मीठे आक़ा मक्की मदनी मुस्त़फ़ा صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم अपने ग़ुलामों के ह़ालात से बा ख़बर रहते, ग़मज़दों के सिरहाने तशरीफ़ ले जा कर दिलासे देते, ख़त़ा करने वालों के ख़्वाब में जा कर इस्लाह़ फ़रमाते, नेकी की दा'वत

1 : ऐ मेरे प्यारे मेरी फ़रियाद को पहुंचिये ! 2 : ख़फ़ी व जली या'नी छुपा और ज़ाहिर

पहुंचाते, गुनाहों पर तौबा का हुक्म फ़रमाते, फ़ासिले मिटाते और बिछड़ों को मिलाते हैं। ख़ुरासानी ह़ाजी साह़िब ने चुग़ल ख़ोर की बातों में आ कर बद गुमानी का शिकार हो कर यक त़रफ़ा ज़ेह्न बना लिया इस पर सय्यिदुल मुबल्लिग़ीन, रह़मतुल्लिल आ़लमीन صَلَّى اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने ख़्वाब में तम्बीह फ़रमाई। इस से हमें भी दर्स मिला कि न ख़ुद चुग़ली खाएं न यक त़रफ़ा सुन कर दूसरे फ़रीक़ के बारे में कोई राय क़ाइम करें। ज़हे नसीब ! बिला इजाज़ते शरई मुसल्मान के ख़िलाफ़ सुनने की आ़दत ही तर्क कर दें कि इस त़रह़ اِنْ شَآءَاللّٰہ عَزَّوَجَلَّ ग़ीबतों, चुग़लियों, बद गुमानियों, ऐब दरियों और दिल आज़ारियों जैसे मुतअ़द्दद कबीरा गुनाहों के अफ़्आ़ले ह़राम और जहन्नम में ले जाने वाले काम से नजात मिल जाएगी।

चुग़ल ख़ोर जन्नत में नहीं जाएगा : सरकारे मदीना صَلَّى اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم का फ़रमाने इ़ब्रत निशान है, चुग़ल ख़ोर जन्नत में नहीं जाएगा। (صحیح البخاری ج٤ ص١١٥ حدیث٦٠٥٦) एक और मक़ाम पर फ़रमाने मुस्त़फ़ा صَلَّى اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم है, बेशक चुग़ल ख़ोरी और कीना परवरी दोज़ख़ में ले जाएंगे। (اَلتَّرْغِیب وَالتَّرْھِیب ج٣ ص٣٢٤ الحدیث٥)

इ़ज़्ज़त घटाने वाली चीज़ें : ह़ज़रते सय्यिदुना मुह़म्मद बिन कुरज़ी رَحْمَۃُ اللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہ से अ़र्ज़ की गई, या सय्यिदी ! इ़ज़्ज़त घटाने वाली कौन कौन सी आ़दतें हैं ? फ़रमाया, ﴾1﴿ ज़ियादा बोलना ﴾2﴿ राज़ खोलना ﴾3﴿ हर किसी की बात (जो दूसरे के ख़िलाफ़ हो) मान लेना। (اتحاف السادۃ المتقین ج٩ ص٣٥٢) ह़ज़रते सय्यिदुना ह़सन बसरी رَحْمَۃُ اللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہ

फ़रमाते हैं, "जो शख़्स तेरे पास किसी की चुग़ली खाता है वोह तेरे ख़िलाफ़ भी चुग़ल ख़ोरी करता है।" **हुज्जतुल इस्लाम** हज़रते सय्यिदुना इमाम मुहम्मद ग़ज़ाली عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللهِ الْوَالِي फ़रमाते हैं, येह इस बात की तरफ़ इशारा है कि चुग़ल ख़ोर ना पसन्द किया जाए और उस की बात का ए'तिबार न किया जाए और न ही उसे सच्चा माना जाए। और उस को ना पसन्द क्यूं न किया जाए जब कि वोह झूट, ग़ीबत, धोके, ख़ियानत, कीना, हसद, मुनाफ़क़त और लोगों के दरमियान फ़साद बपा करने और धोका देही को नहीं छोड़ता और येह उन लोगों में से है जो **अल्लाह** तआला के हुक्म की ख़िलाफ़ वर्ज़ी करते हुए लोगों को मिलाने के बजाए उन में इफ़्तिराक़ व इन्तिशार पैदा करते और ज़मीन में फ़साद बरपा करते हैं। (إحياء العلوم ج ٣ ص ١٩٣) चुनान्चे पारह 25 **सूरतुश्शूरा** की आयत नम्बर 42 में इर्शादे ख़ुदावन्दी है,

إِنَّمَا السَّبِيلُ عَلَى الَّذِينَ يَظْلِمُونَ النَّاسَ وَيَبْغُونَ فِي الْأَرْضِ بِغَيْرِ الْحَقِّ

(پ ٢٥ الشورىٰ ٤٢)

तरजमए कन्ज़ुल ईमान : मुआख़ज़ा तो उन्हीं पर है जो लोगों पर ज़ुल्म करते हैं और ज़मीन में नाहक़ सरकशी फैलाते हैं।

चुग़ल ख़ोर भी इस आयते करीमा में दिये गए हुक्म में दाख़िल है और इस की अहादीसे मुबारका से भी ताईद हुई है चुनान्चे

नेक बन्दे की पहचान क्या है? : सरकारे नामदार, दो आ़लम के मालिको मुख़्तार, शहन्शाहे अबरार صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم का इर्शादे ह़क़ीक़त बुन्याद है, बेशक लोगों में से वोह लोग बुरे हैं जिन से लोग मह़ज़ उन के शर की वज्ह से बचते हों। (مُؤَطّا امام مالک ج۲ ص۴۰۳ حدیث ۱۷۱۹) मज़ीद सुल्त़ाने दो जहान, शहन्शाहे कौनो मकान, रह़मते आ़लमिय्यान صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم का फ़रमाने आ़लीशान है, **अल्लाह** तआ़ला के नेक बन्दे वोह हैं जिन्हें देखें तो **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ याद आ जाए और **अल्लाह** तआ़ला के बुरे बन्दे वोह हैं जो चुग़ल ख़ोरी करते, दोस्तों में जुदाई डालते और नेक लोगों के ऐ़ब तलाश करते हैं। (مسند امام احمد ج۶ ص ۲۹۱ حدیث ۱۸۰۲۰) एक और जगह सरकारे मदीनए मुनव्वरह, सरदारे मक्कए मुकर्रमा صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم का फ़रमाने इब्रत निशान है, ख़बरदार! झूट चेहरे को सियाह कर देता है और चुग़ल ख़ोरी अ़ज़ाबे क़ब्र (का बाइ़स) है। (مسند ابی یعلٰی ج۶ ص ۲۷۲ حدیث ۷۴۰۴) हुज़ूरे अन्वर, शाफ़ेए़ मह़शर, मदीने के ताजवर, बि इज़्ने रब्बे अक्बर ग़ैबों से बा ख़बर, मह़बूबे दावर صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया, ग़ीबत, त़ा'ना ज़नी, चुग़ल ख़ोरी और बे गुनाह लोगों के ऐ़ब तलाश करने वालों को **अल्लाह** तआ़ला (क़ियामत के दिन) **कुत्तों** की शक्ल में उठाएगा।

(الترغیب والترھیب ج۳ ص ۳۲۵)

या रब्बे मुहम्मद तू मुझे नेक बना दे अमराज़ गुनाहों के मेरे सारे मिटा दे

मैं ग़ीबतो चुग़ली से रहूं दूर हमेशा हर ख़स्लते बद से मेरा पीछा तू छुड़ा दे

मैं फ़ालतू बातों से रहूं दूर हमेशा

चुप रहने का अल्लाह عَزَّوَجَلَّ ! सलीक़ा तू सिखा दे

صَلُّوا عَلَى الْحَبِيْب ! صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلٰى مُحَمَّد

﴾55﴿ साहिबे मज़ार ने इमदाद फ़रमाई

तक़रीबन सात सो साल पहले का वाक़िआ है, सुल्तानुल मशाइख़ हज़रते सय्यिदुना महबूबे इलाही निज़ामुद्दीन औलिया عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللّٰهِ الْوَلِى फ़रमाते हैं, हज़रते मौलाना कथीली عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللّٰهِ الْوَلِى ने मुझ से बयान किया कि देहली में एक साल क़ह्त पड़ा । एक मौक़अ़ पर भूक से बेताब हो कर मैं ने खाना हासिल किया और मुसल्मानों की ख़ैर ख़्वाही के जज़्बे के तहत अपने आप से कहा, इस खाने को तन्हा नहीं खाना चाहिये किसी और को भी शरीक कर लेना चाहिये । इतने में एक गुदड़ी पोश बुज़ुर्ग मेरे सामने से गुज़रे, मैं ने उन को दा'वत दी, उन्हों ने क़बूल कर ली और हम दोनों[2] खाने के लिये बैठ गए । मैं ने दौराने गुफ़्तगू बुज़ुर्ग पर इज़्हार किया कि मैं बीस रुपै का मक़रूज़ हूं । उन्हों ने फ़रमाया, मैं आप को पेश करता हूं । मैं ने दिल में सोचा येह बहुत ग़रीब मा'लूम हो रहे हैं न जाने किस तरह देंगे ! खाने से फ़राग़त के बा'द वोह मुझे अपने साथ एक मस्जिद में ले गए वहां एक मज़ार भी था, हम ने वहां हाज़िरी दी, सिरहाने खड़े हो

कर उन्हों ने इस्तिग़ासा किया और दो मरतबा आहिस्ता से अपनी छड़ी क़ब्र शरीफ़ पर लगाते हुए कहा, "मेरे रफ़ीक़ को बीस रुपै की ज़रूरत है, आप इनायत फ़रमा दीजिये।" फिर मेरी तरफ़ रुख़ कर के फ़रमाया, भाई साहिब ! तशरीफ़ ले जाइये اِنْ شَآءَاللّٰہ عَزَّوَجَلَّ आप को बीस रुपै मिल जाएंगे। मौलाना कथीली عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللهِ الْوَلِى कहते हैं, मैं ने उन बुज़ुर्ग का हाथ चूमा फिर उन से रुख़्सत हो कर शहर की तरफ़ चल पड़ा। मैं उस वक़्त हैरत में था कि न जाने वोह बीस रुपै मुझे कहां से मिल जाएंगे ! मेरे पास अमानतन एक ख़त़ था कि जो किसी के घर पर देना था। चुनान्चे मैं वोह ख़त़ ले कर "दरवाज़ए कमाल" पहुंचा। एक तुर्क अपने घर के छज्जे पर बैठा था, उस ने मुझे आवाज़ दी और अपने ग़ुलामों को दौड़ाया वोह बड़े एह़तिराम से मुझे ऊपर ले गए। तुर्क इन्तिहाई मह़ब्बत के साथ मुझ से मिला, मैं ने हर चन्द कोशिश की मगर उस को पहचान न सका। वोह तुर्क येही कहता रहा क्या आप वोही नहीं हैं जिन्हों ने फ़ुलां जगह मेरे साथ बहुत अच्छा सुलूक किया था ? मैं ने उस से कहा, मैं आप को नहीं पहचानता। उस ने कहा, आप ख़ुद को क्यूं छुपाते हैं ! कोई बात नहीं, मैं तो आप को पहचानता हूं। इस के बा'द बीस रुपै लाया और बड़ी मह़ब्बत के साथ मेरे हाथ में रख दिये।

(فوائد الفُواد مجلس بَست ويكم يعنى ٢١ ويں مجلس ص ١٢٤)

अल्लाह عَزَّوَجَلَّ की उन पर रह़मत हो और उन के सदक़े हमारी मग़्फ़िरत हो।

मौत कौन देता है ? : प्यारे प्यारे इस्लामी भाइयो ! इस हिकायत के रावी हज़रते महबूबे इलाही निज़ामुद्दीन औलिया عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللّٰهِ الْوَلِى ने इस वाक़िए को बिला तरदीद बयान कर के हमारा ईमान ताज़ा फ़रमा दिया कि जिस तरह ज़ाहिरी ज़िन्दगी में औलियाउल्लाह رَحِمَهُمُ اللّٰهُ تَعَالٰى से कोई चीज़ मांगी जा सकती है ऐसे ही बा'दे विसाल उन के मज़ारे फ़ाइज़ुल अनवार पर हाज़िर हो कर किसी चीज़ का मुतालबा करना भी जाइज़ है। येह याद रहे कि ह़क़ीक़तन देने वाला **अल्लाह** तआला है, औलियाउल्लाह رَحِمَهُمُ اللّٰهُ تَعَالٰى की तरफ़ निस्बत मजाज़न है। जैसा ह़क़ीक़तन बीमार को अच्छा करने वाला **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ है लेकिन मरीज़ कहता है, डॉक्टर साहिब हम को अच्छा कर दीजिये। इसी तरह ह़क़ीक़तन मौत देने वाला **अल्लाह** तबारक व तआला है मगर उस के हुक्म से इस काम की ज़िम्मादारी मलकुल मौत हज़रते सय्यिदुना इज़राईल عَلَيْهِ الصَّلٰوةُ وَالسَّلَام की है जैसा कि कुरआने पाक के पारह 21 **सूरतुस्सज्दह** की ग्यारहवीं आयते करीमा में इर्शादे ख़ुदावन्दी है :

قُلْ يَتَوَفّٰىكُمْ مَّلَكُ الْمَوْتِ الَّذِىْ وُكِّلَ بِكُمْ (پ ۲۱ السجدہ ۱۱)

तरजमए कन्ज़ुल ईमान : तुम फ़रमाओ तुम्हें वफ़ात देता है मौत का फ़िरिश्ता जो तुम पर मुक़र्रर है।

प्यारे प्यारे इस्लामी भाइयो ! औलियाउल्लाह رَحِمَهُمُ اللّٰهُ تَعَالٰى बा'दे वफ़ात ऐन बेदारी में ज़ियारत से नवाज़ कर गुफ़्तगू भी फ़रमाते हैं चुनान्चे

﴾56﴿ हयातुल औलिया

हज़रते सय्यिदुना शाह वलिय्युल्लाह मुहद्दिस देहलवी عَلَيْهِ رَحمَةُ اللّٰهِ الْقَوِى फ़रमाते हैं कि मेरे वालिदे माजिद हज़रते सय्यिदुना शाह अ़ब्दुर्रहीम عَلَيْهِ رَحمَةُ اللّٰهِ الْكَرِيم फ़रमाते थे कि मैं हज़रते सय्यिदुना ख़्वाजा कुत़्बुद्दीन बख़्तियार काकी عَلَيْهِ رَحمَةُ اللّٰهِ الْبَاقِى के मज़ारे पुर अन्वार पर बराए ज़ियारत हाज़िर हुवा। येह ख़याल कर के कि मैं गुनहगार इस क़ाबिल नहीं कि अपने वुजूद से इस पाक मक़ाम को मुलव्वस करूं दूर ही खड़ा रहा। उस वक़्त उन की रूहे मुबारक ज़ाहिर हुई और फ़रमाया, आगे आ जाओ ! मैं दो[2] तीन[3] क़दम आगे बढ़ा। उस वक़्त मैं ने देखा कि चार[4] फ़िरिश्ते आस्मान की त़रफ़ से एक तख़्त उन की **क़ब्र** शरीफ़ के पास लाए। उस तख़्त पर हज़रते सय्यिदुना ख़्वाजा बहाउद्दीन नक़्शबन्द رَحمَةُ اللّٰهِ تَعَالٰى عَلَيْه जल्वा फ़रमा थे। दोनों बुज़ुर्ग आपस में राज़ो नियाज़ की बातें करते रहे जो मैं सुन न पाया। फिर तख़्त को फ़िरिश्तों ने उठाया और ले गए। हज़रते सय्यिदुना ख़्वाजा कुत़्बुद्दीन बख़्तियार काकी عَلَيْهِ رَحمَةُ اللّٰهِ الْبَاقِى फिर मेरी त़रफ़ मुतवज्जेह हुए और फ़रमाया, "आगे आ जाओ !" मैं दो[2] तीन[3] क़दम मज़ीद आगे बढ़ा। इसी त़रह़ वोह फ़रमाते रहे और मैं थोड़ा थोड़ा आगे बढ़ता गया यहां तक कि बिल्कुल उन के क़रीब हो गया। उस वक़्त उन्हों ने फ़रमाया, शे'र के बारे में तुम क्या कहते हो ? मैं ने अ़र्ज़ की, "शे'र एक कलाम है जो अच्छा है वोह अच्छा है और जो बुरा है वोह बुरा है।" फ़रमाया, بَارَكَ اللّٰهُ عَزَّوَجَلَّ (या'नी

अल्लाह عَزَّوَجَلَّ बरकत दे) अच्छी आवाज़ के मुतअ़ल्लिक़ तुम क्या कहते हो ? मैं ने अ़र्ज़ की, "येह **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ का फ़ज़्ल है जिस को चाहता है अ़ता फ़रमाता है।" फ़रमाया, بَارَكَ اللّٰهُ عَزَّ وَجَلَّ । फिर पूछा, जहां येह दोनों[2] जम्अ़ हो जाएं या'नी शे'र भी अच्छा और आवाज़ भी अच्छी हो फिर क्या कहते हो ? मैं ने अ़र्ज़ की, "येह तो नूरुन अ़ला नूर है, **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ जिस को चाहे अ़ता फ़रमा दे।" फ़रमाया, بَارَكَ اللّٰهُ عَزَّ وَجَلَّ । येह जो कुछ हम करते हैं इस से पहले न था, तुम भी गाहे गाहे (या'नी कभी कभी) एक दो[2] बैत (या'नी शे'र) सुन लिया करो ? मैं ने अ़र्ज़ की, हुज़ूर ! आप ने येह बात ह़ज़रते सय्यिदुना ख़्वाजा बहाउद्दीन नक़्शबन्द رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰى عَلَيْه की हुज़ूरी में क्यूं न फ़रमाई ? आप رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰى عَلَيْه ने इन दो[2] में से एक बात फ़रमाई कि अदब नहीं था या मस्लह़त न थी।

(انفاس العارفین ص ٤٤)

अल्लाह عَزَّوَجَلَّ **की उन पर रह़मत हो और उन के सदक़े हमारी मग़्फ़िरत हो।**

दरे वाला पे इक मेला लगा है *अ़जब इस दर के टुकड़ों में मज़ा है*
यहां से कब कोई ख़ाली फिरा है *सख़ी दाता की येह दौलत सरा है*

صَلُّوْا عَلَى الْحَبِيْب ! صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلٰى مُحَمَّد

﴾57﴿ आ'ला ह़ज़रत और ककड़ी

मेरे आक़ा आ'ला ह़ज़रत, इमामे अहले सुन्नत, वलिय्ये ने'मत, अ़ज़ीमुल बरकत, अ़ज़ीमुल मर्तबत, परवानए शम्ए़ रिसालत, मुजद्दिदे

दीनो मिल्लत, हामिये सुन्नत, माहिये बिद्अत, आ़लिमे शरीअ़त, पीरे त़रीक़त, बाइसे ख़ैरो बरकत, ह़ज़रते अ़ल्लामा मौलाना अलह़ाज अल ह़ाफ़िज़ अल क़ारी शाह इमाम अह़मद रज़ा ख़ान عَلَيْهِ رَحْمَةُ الرَّحْمٰن एक बार कहीं मद्ऊ़ थे, खाना लगा दिया गया, सब को सरकारे आ'ला ह़ज़रत رَحْمَةُ اللّٰهِ تَعَالٰى عَلَيْه के खाना शुरूअ़ फ़रमाने का इन्तिज़ार था, आ'ला ह़ज़रत رَحْمَةُ اللّٰهِ تَعَالٰى عَلَيْه ने **ककड़ियों** के थाल में से एक क़ाश उठाई और तनावुल फ़रमाई, फिर दूसरी.....फिर तीसरी.....अब देखा देखी लोगों ने भी ककड़ी के थाल की त़रफ़ हाथ बढ़ा दिये मगर आप رَحْمَةُ اللّٰهِ تَعَالٰى عَلَيْه ने सब को रोक दिया और फ़रमाया, सारी **ककड़ियां** मैं खाऊंगा। चुनान्चे आप رَحْمَةُ اللّٰهِ تَعَالٰى عَلَيْه ने सब ख़त्म कर दीं, ह़ाज़िरीन मुतअ़ज्जिब थे कि आ'ला ह़ज़रत رَحْمَةُ اللّٰهِ تَعَالٰى عَلَيْه तो बहुत क़लीलुल ग़िज़ा या'नी कम ग़िज़ा इस्ति'माल फ़रमाने वाले हैं, आज इतनी सारी **ककड़ियां** कैसे तनावुल फ़रमा गए ! लोगों के इस्तिफ़्सार पर फ़रमाया, मैं ने जब पहली क़ाश खाई तो वोह **कड़वी** थी इस के बा'द दूसरी और तीसरी भी। लिहाज़ा मैं ने दूसरों को रोक दिया कि हो सकता है कोई साहिब ककड़ी मुंह में डाल कर कड़वी पा कर थू थू करना शुरूअ़ कर दें चूंकि **ककड़ी खाना मेरे मीठे मीठे आक़ा मदीने वाले मुस्तफ़ा** صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم **की सुन्नते मुबारका है** इस लिये मुझे गवारा न हुवा कि इस को खा कर कोई **थू थू** करे।

अल्लाह عَزَّوَجَلَّ **की उन पर रह़मत हो और उन के सदक़े हमारी मग़्फ़िरत हो।**

मुझ को मीठे मुस्त़फ़ा की सुन्नतों से प्यार है

اِنْ شَآءَاللّٰہ दो² जहां में अपना बेड़ा पार है

صَلُّوْا عَلَى الْحَبِيْب ! صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلٰى مُحَمَّد

खजूर और ककड़ी खाना सुन्नत है : मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! देखा आप ने ! आ'ला ह़ज़रत कितने ज़बर दस्त आ़शिक़े रसूल थे, वाक़ेई आ़शिक़ की शान येही होती है कि वोह अपने मह़बूब से निस्बत रखने वाली हर शै को दिलो जान से पसन्द करे और उस का अदब बजा लाए जभी तो सरकारे आ'ला ह़ज़रत ने आक़ा की पसन्द ककड़ी का ऐसा अदब किया कि कड़वी ककड़ी भी तनावुल फ़रमा ली। **ह़ज़रते** सय्यिदुना अ़ब्दुल्लाह इब्ने जा'फ़र رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ फ़रमाते हैं, कि मैं ने सरकारे मदीनए मुनव्वरह, सरदारे मक्कए मुकर्रमा صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم को ककड़ी को खजूर के साथ खाते देखा। (صحیح مسلم ص ۱۳۰ حدیث ۲۰۴۳)

मुफ़स्सिरे शहीर **ह़कीमुल उम्मत** ह़ज़रते मुफ़्ती अह़मद यार ख़ान عَلَيْهِ رَحْمَةُ الْحَنَّان फ़रमाते हैं, खजूर त़ब्अ़न गर्म व ख़ुश्क है और ककड़ी सर्द व तर। इन दोनों के मिलने से ए'तिदाल हो कर फ़ाएदा बढ़ जाता है। हुज़ूरे अन्वर صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने ककड़ी और खजूर को कभी तो मे'दे में जम्अ़ फ़रमाया कि ब यक वक़्त कभी खजूर खाई कभी ककड़ी। और कभी चबाने में जम्अ़ फ़रमाया कि खजूर मुंह शरीफ़ में रख ली और ककड़ी भी कतर ली और दोनों मिला कर चबाईं। कभी खजूर और

फ़रमाने मुस्तफ़ा صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰی عَلَیْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم : जिस ने मुझ पर रोज़े जुमुआ़ दो सो बार दुरूदे पाक पढ़ा उस के दो सो साल के गुनाह मुआ़फ़ होंगे। (جمع الجوامع)

तरबूज़ भी मिला कर खाए हैं। खजूर ककड़ी मिला कर खाना सिह्ह़त के लिये बहुत मुफ़ीद है। उम्मुल मुअमिनीन ह़ज़रते सय्यिदतुना आ़इशा सिद्दीक़ा رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْهَا रिवायत फ़रमाती हैं, (रुख़्सती से क़ब्ल मैं बहुत कमज़ोर थी) मेरी अम्मीजान رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْهَا मुझे फ़रबा करने की कोशिश करतीं ताकि हुज़ूर صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰی عَلَیْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم के पास भेज सकें जब कोई तदबीर कारगर न हुई तो उन्हों ने मुझे खजूर और ककड़ी मिला कर खिलाना शुरूअ़ कर दी जिस से मैं (चन्द रोज़ में ही) फ़रबा हो गई। (سنن ابن ماجه ج ٤ ص ٣٧ حديث ٣٣٢٤) हुज़ूर صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰی عَلَیْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم को खजूर तो मरग़ूब थी ही ककड़ी भी बहुत मरग़ूब थी। बा'ज़ बुज़ुर्गाने दीन رَحِمَهُمُ اللّٰهُ الْمُبِين हुज़ूर صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰی عَلَیْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم के फ़ातिह़ा में दूसरे खानों के साथ खजूरें और ककड़ियां और तरबूज़ भी रखते हैं। उन के इस अ़मल का माख़ज़ मज़्कूरा (येह) ह़दीस है।

(मुलख़्ख़सन मिरआत, जि. 6, स. 20, 21)

صَلُّوا عَلَى الْحَبِيب ! صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلٰى مُحَمَّد

(58) 15 दिन तक खाना नहीं खाऊंगा !

ह़ज़रते सय्यिदुना अबू अ़ब्दुल्लाह बिन ख़फ़ीफ़ رَحْمَةُ اللّٰهِ تَعَالٰی عَلَیْه एक जगह दा'वत में थे। एक फ़ाक़ा मस्त मुरीद ने आप رَحْمَةُ اللّٰهِ تَعَالٰی عَلَیْه के शुरूअ़ करने से पहले ही खाने की त़रफ़ हाथ बढ़ाया ! इस पर एक

पीरभाई ने नाराज़गी के अन्दाज़ में उन के सामने खाने की कोई चीज़ रख दी जिस से वोह समझ गए कि मैं ने पीरो मुर्शिद से पहले हाथ बढ़ा कर खाने के आदाब की ख़िलाफ़ वर्ज़ी की है लिहाज़ा अपने नफ़्स को सज़ा देने के लिये उन्हों ने अ़ह्द किया कि **पन्दरह[15] दिन तक कुछ नहीं खाऊंगा** इस त़रह़ उन्हों ने अपनी बे अदबी से तौबा करने की ज़ाहिरी सूरत निकाली ह़ालां कि वोह पहले ही से फ़ाक़े में मुब्तला थे। (الرّسالةُ القُشَیرِیّه ص ۱۷۹)

अल्लाह عَزَّوَجَلَّ की उन पर रह़मत हो और उन के सदक़े हमारी मग़फ़िरत हो।

صَلُّوا عَلَی الْحَبِیْب! صَلَّی اللّٰهُ تَعَالٰی عَلٰی مُحَمَّد

पहले बुज़ुर्ग खाना शुरूअ़ करें :

प्यारे प्यारे इस्लामी भाइयो ! मिल कर खाने में अगर कोई बुज़ुर्ग भी शामिल हों तो अदब येह है कि जब तक वोह शुरूअ़ न करें और कोई न खाए। याद रहे ! बुज़ुर्गी के लिये उ़म्र रसीदा होना शर्त़ नहीं, इल्मो अ़मल दरकार है। लिहाज़ा बूढ़े ह़ज़रात की मौजूदगी में भी अगर कोई नौ जवान आ़लिम हैं तो वोही पहले खाना शुरूअ़ करें। **अल्लाह** वालों के अन्दाज़ भी निराले होते हैं **ह़ज़रते** सय्यिदुना अबू अ़ब्दुल्लाह बिन ख़फ़ीफ़ رَحْمَةُ اللّٰهِ تَعَالٰی عَلَیْه के मुरीद जो कि ख़ुद एक फ़ाक़ा मस्त बुज़ुर्ग थे और बे ख़याली में हाथ बढ़ा देते हैं मगर अपने पीरभाई के इशारे पर संभल जाते हैं ह़ालां कि अभी खाना शुरूअ़ नहीं किया था फ़क़त़ हाथ ही बढ़ाया था फिर भी ना दानिस्ता सरज़द होने

वाली बे अदबी की अपने लिये अनोखी सज़ा तज्वीज़ की और सख़्त भूके होने के बा वुजूद अ़ह्द किया कि मज़ीद **15** रोज़ तक कुछ नहीं खाऊंगा। **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ के नेक बन्दे अपने आप को आदाब सिखाने के लिये त़रह़ त़रह़ की अनोखी सज़ाएं तज्वीज़ करते आ रहे हैं, चुनान्चे

पहनने में उलटी जूती से पहल करने का कफ़्फ़ारा :

"**कीमियाए सआ़दत**" में है, एक बुज़ुर्ग رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰى عَلَيْه ने एक बार सुन्नत के मुत़ाबिक़ सीधी जूती से पहनने का आग़ाज़ करने के बजाए बे ख़याली में उलटी जूती पहले पहन ली इस सुन्नत के रह जाने पर उन्हें सख़्त सदमा हुवा और इस के इवज़ उन्हों ने गेहूं की दो[2] बोरियां ख़ैरात कीं। **प्यारे प्यारे इस्लामी भाइयो !** येह इन्हीं ह़ज़रात का ह़िस्सा था। काश ! हमें भी अपने बुज़ुर्गों के त़रीक़ों पर चलना नसीब हो जाए। इस त़रह़ की सुन्नतें और आदाब सीखने के लिये इस्लामी भाइयों को चाहिये कि मदनी क़ाफ़िलों में **आ़शिक़ाने रसूल** के साथ सफ़र को अपना मा'मूल बनाएं मदनी क़ाफ़िलों की भी क्या ख़ूब बहारें हैं चुनान्चे

﴾59﴿ सफ़रे मदीना की सआ़दत मिल गई !

दा'वते इस्लामी की तन्ज़ीमी तरकीब के मुत़ाबिक़ तरतीब दी हुई ज़िलअ़ शैख़ूपूरा की एक तह़सील के **मदनी इन्आ़मात** के ज़िम्मादार ने मुझे (सगे मदीना عُفِيَ عَنْهُ को) जो कुछ लिखा उस का ख़ुलासा है,

اَلْحَمْدُ لِلّٰه عَزَّوَجَلَّ 1424 सि.हि. में मुझे उ़मरह शरीफ़ और मदीनए मुनव्वरह زَادَهَا اللّٰهُ شَرَفًاوَّتَعْظِيمًا की हाज़िरी का शरफ़ मिला, वहां के एक क़ारी साहिब से मुलाक़ात हुई, उन्हों ने बताया कि मैं इसी शा'बानुल मुअ़ज़्ज़म 1424 सि.हि. में **दा'वते इस्लामी** के तीन[3] रोज़ा बैनल अक़्वामी सुन्नतों भरे इज्तिमाअ़ में शरीक हुवा, वहां दौराने बयान **मदनी क़ाफ़िलों** में सफ़र की तरग़ीब दिलाते हुए कहा गया, "मदनी क़ाफ़िलों में सफ़र कर के दुआ़एं कीजिये, आप की जो भी **ख़्वाहिश** होगी اِنْ شَآءَاللّٰه عَزَّوَجَلَّ पूरी होगी।" येह सुन कर मुझे जज़्बा मिला और मैं ने हाथों हाथ **आ़शिक़ाने रसूल** के साथ तीन[3] दिन की तरबियत के मदनी क़ाफ़िले में सफ़र की सआ़दत हासिल की और वहां ख़ूब रो रो कर **मदीनए मुनव्वरह** زَادَهَا اللّٰهُ شَرَفًاوَّتَعْظِيمًا की हाज़िरी के लिये दुआ़ मांगी। दुआ़ की क़बूलिय्यत के आसार यूं ज़ाहिर हुए कि मैं जब मदनी क़ाफ़िले के सफ़र से लौटा और ह़स्बे मा'मूल बच्चों को क़ुरआने पाक पढ़ाने के लिये किसी के घर पहुंचा। तो **साहिबे ख़ाना** ने काफ़ी मेहरबानी से पेश आते हुए कहा, क़ारी साहिब مَاشَآءَاللّٰه عَزَّوَجَلَّ ! आप हमारे बच्चों को क़ुरआने पाक की ता'लीम देते हैं, अगर आप की कोई **ख़्वाहिश** हो तो बता दीजिये हम आप को **ख़ुश** करना चाहते हैं। इब्तिदाअन मैं ने टालम टोल से काम लिया मगर उन के इसरार पर कह दिया कि **दीदारे मदीना** की आरज़ू है। उन्हों ने मुझे फ़ौरी तौर पर अख़्राजात पेश कर दिये और यूं اَلْحَمْدُ لِلّٰه عَزَّوَجَلَّ **हाथों हाथ मदनी**

क़ाफ़िले में सफ़र कर के दुआ़ करने की बरकत से मुझ जैसे गुनहगार और ग़रीब आदमी को हाथों हाथ मदीनए मुनव्वरह زَادَهَا اللّٰهُ شَرَفًا وَّتَعْظِيْمًا की ह़ाज़िरी का शरफ़ नसीब हो गया ।

मुझ गुनहगार सा इन्सान मदीने में रहे बन के सरकार का मेहमान मदीने में रहे
याद आती है मुझे अहले मदीना की वोह बात ज़िन्दा रहना है तो इन्सान मदीने में रहे
जानो दिल छोड़ कर येह कह के चला हूं आ'ज़म
आ रहा हूं मेरा सामान मदीने में रहे

صَلُّوْا عَلَى الْحَبِيْب ! صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلٰى مُحَمَّد

﴾60﴿ जव शरीफ़ का दलिया

ह़ज़रते सय्यिदुना उ़मर बिन अ़ब्दुल अ़ज़ीज़ رَحْمَةُ اللّٰهِ تَعَالٰى عَلَيْه को एक रोज़ इत्तिलाअ़ मिली कि सिपह सालार के बावर्ची ख़ाने का यौमिय्या ख़र्च एक हज़ार दिरहम है। इस ख़बरे वह़शत असर से आप رَحْمَةُ اللّٰهِ تَعَالٰى عَلَيْه को सख़्त अफ़्सोस हुवा । उस की इस्लाह़ के लिये इन्फ़िरादी कोशिश का ज़ेहन बनाया और उस को अपने यहां मद्ऊ़ फ़रमाया। आप رَحْمَةُ اللّٰهِ تَعَالٰى عَلَيْه ने बावर्चियों को हुक्म दिया कि पुर तकल्लुफ़ खाने के साथ ही **जव शरीफ़ का दलिया** भी तय्यार किया जाए। सिपह सालार जब दा'वत पर ह़ाज़िर हुवा तो ख़लीफ़ा رَحْمَةُ اللّٰهِ تَعَالٰى عَلَيْه ने क़स्दन खाना मंगवाने में इस क़दर ताख़ीर फ़रमा दी कि सिपह सालार भूक से बेताब हो गया। बिल आख़िर अमीरुल मुअमिनीन رَحْمَةُ اللّٰهِ تَعَالٰى عَلَيْه ने पहले **जव शरीफ़ का दलिया**

मंगवाया। सिपह सालार चूंकि बहुत भूका था इस लिये उस ने **जव शरीफ़ का दलिया** खाना शुरूअ़ कर दिया और जब पुर तकल्लुफ़ खाने आए उस वक़्त उस का पेट भर चुका था। दाना ख़लीफ़ा رَحْمَۃُ اللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہ ने पुर तकल्लुफ़ खानों की त़रफ़ इशारा कर के फ़रमाया, आप का खाना तो अब आया है खाइये ! सिपह सालार ने इन्कार किया और कहा कि हुज़ूर ! मेरा पेट तो दलिया ही से भर चुका है। अमीरुल मुअमिनीन رَحْمَۃُ اللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہ ने फ़रमाया, سُبْحٰنَ اللّٰہ ! दलिया भी कितना उ़म्दा खाना है कि पेट भी भर देता है और है भी इतना सस्ता कि एक दिरहम में दस 10 आदमियों को सेर कर दे ! येह कह कर नसीह़त के मदनी फूल लुटाते हुए फ़रमाया, जब आप दलिया से भी गुज़ारा कर सकते हैं तो आख़िर रोज़ाना एक हज़ार दिरहम अपने खाने पर क्यूं ख़र्च करते हैं ? सिपह सालार साहिब ! ख़ुदा عَزَّوَجَلَّ से डरिये और अपने आप को ज़ियादा ख़र्च करने वालों में दाख़िल न कीजिये। अपने बावर्ची ख़ाने में जो रक़म बे तह़ाशा सर्फ़ करते हैं वोह रिज़ाए इलाही عَزَّوَجَلَّ के लिये भूकों, ह़ाजत मन्दों और ग़रीबों को दे दीजिये। मुत्तक़ी ख़लीफ़ा رَحْمَۃُ اللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہ की **इन्फ़िरादी कोशिश** ने सिपह सालारे लश्कर के दिल पर गहरा असर डाला और उस ने अ़हद कर लिया कि आयिन्दा खाने में सादगी अपनाऊंगा और कम ख़र्च से काम चलाऊंगा।

(مغنی الواعظین ص ٤٩١)

अल्लाह عَزَّوَجَلَّ की उन पर रह़मत हो और उन के सदक़े हमारी मग़्फ़िरत हो।

صَلُّوْا عَلَی الْحَبِیْب ! صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلٰی مُحَمَّد

बे बरकती का सबब फ़ुज़ूल ख़र्चियां : प्यारे प्यारे इस्लामी भाइयो ! हम नफ़्स को जिस क़दर लज़ीज़ गिज़ाएं खिलाएंगे उसी क़दर वोह बेहतर से बेहतर त़लब करता रहेगा। आज हमारी अक्सरिय्यत बे बरकती की शाकी है नीज़ तंगदस्ती और फिर ऊपर से कमर तोड़ महंगाई का रोना रोती है और आज तक़रीबन हर एक कहता सुनाई देता है "पूरा नहीं होता !" यक़ीन मानिये, महंगाई, बे बरकती और तंगदस्ती का फ़ी ज़माना एक बहुत बड़ा सबब ग़ैर ज़रूरी अख़्राजात भी हैं। ज़ाहिर हैं जब फ़ुज़ूल ख़र्चियों का सिल्सिला जारी रखेंगे नीज़ आ'ला खानों, उ़म्दा मकानों, फिर उन के अन्दर सजावटों के बेश क़ीमत सामानों, महंगे महंगे फ़ेन्सी लिबासों से दिल लगाए रहेंगे, तो इन कामों के लिये ख़त़ीर रक़मों की ज़रूरत रहेगी और फिर "बे बरकती" और "पूरा नहीं होता" की रागनियां भी जारी ही रहेंगी। ह़ज़रते सय्यिदुना इमाम जा'फ़रे सादिक़ عَلَيْهِ رَحْمَةُ الرَّازِق का फ़रमाने हिदायत निशान है, जिस ने अपना माल फ़ुज़ूल ख़र्चियों में खो दिया, अब कहता है ऐ रब ! عَزَّوَجَلَّ मुझे और दे। **अल्लाह** तआ़ला (ऐसे शख़्स से) फ़रमाता है, क्या मैं ने तुझे मियाना रवी का हुक्म न दिया था ? क्या तूने मेरा (येह) इर्शाद न सुना था ?

وَالَّذِيْنَ اِذَآ اَنْفَقُوْا لَمْ يُسْرِفُوْا وَلَمْ يَقْتُرُوْا وَكَانَ بَيْنَ ذٰلِكَ قَوَامًا

(پ۱۹ فرقان ٦٧) **तरजमए कन्ज़ुल ईमान :** और वोह कि जब ख़र्च करते हैं, न ह़द से बढ़ें और न तंगी करें और इन दोनों[2] के बीच ए'तिदाल पर रहें। (मुलख़्ख़सन अह़सनुल विआ़अ लि आदाबिदुआ़अ, स. 75) बहर ह़ाल अगर क़नाअ़त और

सादगी के साथ सस्ते खानों और सादा लिबासों को अपना लिया जाए। फ़क़त ह़स्बे ज़रूरत मकानात रखे जाएं, बे जा सजावटों और नुमाइशी दा'वतों के मुआ़मले में खुद पर पाबन्दी डाली जाए तो खुद बखुद महंगाई का ख़ातिमा हो और गुरबत रुख़्सत हो जाए। मगर नफ़्से अम्मारा की गुलामी का क्या इलाज ?

तीन[3] अफ़राद की दुआ़ क़बूल नहीं : **हुज़ूरे** अन्वर, शाफ़ेए़ महशर, मदीने के ताजवर, बि इज़्ने रब्बे अक्बर, गै़बों से बा ख़बर, मह़बूबे दावर صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم फ़रमाते हैं, तीन[3] शख़्स हैं कि तेरा रब (عَزَّوَجَلَّ) उन की दुआ़ क़बूल नहीं करता ﴾1﴿ एक वोह कि वीराने मकान में उतरे ﴾2﴿ दूसरा वोह मुसाफ़िर कि सरे राह मक़ाम (या'नी पड़ाव) करे, या'नी सड़क से बच कर न ठहरे बल्कि ख़ास रास्ते ही पर नुज़ूल करे ﴾3﴿ तीसरा वोह जिस ने खुद अपना जानवर छोड़ दिया, अब खुदा से दुआ़ करता है कि उसे रोक दे। (अह़सनुल विआ़अ लि आदाबिद्दुआ़अ, स. 73)

इस ह़दीसे पाक के तह़त मेरे आक़ा आ'ला ह़ज़रत, इमामे अहले सुन्नत, वलिय्ये ने'मत, अ़ज़ीमुल बरकत, अ़ज़ीमुल मर्तबत, परवानए शम्ए़ रिसालत, मुजद्दिदे दीनो मिल्लत, ह़ामिये सुन्नत, माह़िये बिद्अ़त, आ़लिमे शरीअ़त, पीरे त़रीक़त, बाइसे ख़ैरो बरकत ह़ज़रते अ़ल्लामा मौलाना अलह़ाज अल ह़ाफ़िज़ अल क़ारी शाह इमाम अह़मद रज़ा ख़ान عَلَيْهِ رَحْمَةُ الرَّحْمٰن बयान कर्दा ह़दीसे पाक की शर्ह़ करते हुए फ़रमाते हैं, اَقُوْلُ وَ بِاللّٰهِ التَّوفِيق (या'नी **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ की दी हुई तौफ़ीक़ से मैं कहता हूं)

ज़ाहिर इस से मुराद येही है कि उस ख़ास मादे में उन की दुआ़ न सुनी जाएगी न येह कि जो ऐसा करे मुत्लक़न उस की कोई दुआ़ किसी अम्र (या'नी मुआ़मले) में क़बूल न हो और इन उमूर में अ़दमे क़बूल (या'नी क़बूल न होने) का सबब ज़ाहिर कि येह काम ख़ुद अपने हाथों के किये हैं । लिहाज़ा वीराने मकान में उतरने वाला इस की मुज़र्रतों (या'नी नुक़्सानात) से आगाह है, फिर अगर वहां चोरी हो या कोई लूट ले या जिन्न ईज़ा पहुंचाएं, तो येह बातें ख़ुद उस की क़बूल की हुई हैं, अब क्यूं उन के रफ़्अ़ (या'नी दूर होने) की दुआ़ करता है । यूंही जब रास्ते पर क़ियाम किया, तो हर क़िस्म के लोग गुज़रेंगे, अब अगर चोरी हो जाए या हाथी घोड़े के पाउं से कुछ नुक़्सान, रात को सांप वग़ैरा से ईज़ा पहुंचे, इस का अपना किया हुवा है । नबिय्ये करीम, रऊफ़ुर्रहीम عَلَيْهِ اَفْضَلُ الصَّلٰوةِ وَالتَّسْلِيْم इर्शाद फ़रमाते हैं, "शब को सरे राह (या'नी रास्ते में) न उतरो कि **अल्लाह** तआ़ला अपनी मख़्लूक़ से जिसे चाहे राह पर चलने की इजाज़त देता है।" यूंही जानवर को ख़ुद छोड़ कर उस के ह़बस (या'नी क़ाबू में आने) की दुआ़ तो ज़ाहिरन ह़माक़त है, क्या वाह़िदे क़ह्हार جَلَّ جَلَالُهٗ को आज़्माता या مَعَاذَ اللّٰه उसे अपना मह़कूम ठहराता है ! **ह़ज़रते सय्यिदुना ईसा रूहुल्लाह** عَلٰى نَبِيِّنَا وَعَلَيْهِ الصَّلٰوةُ وَالسَّلَام से किसी ने कहा, अगर ख़ुदा عَزَّوَجَلَّ की क़ुदरत पर भरोसा है, अपने आप को इस पहाड़ से नीचे गिरा दो । फ़रमाया, "मैं अपने रब عَزَّوَجَلَّ को आज़्माता नहीं ।"

(अह़्सनुल विआ़अ लि आदाबिद्दुआ़अ, स. 73, 74)

हाथों से किये का कोई इलाज नहीं : प्यारे प्यारे इस्लामी भाइयो ! फ़ारसी मक़ूला है, "ख़ुद कर्दा रा इलाजे नेस्त" या'नी अपने हाथों से मुसीबत ओढ़ लेने वालों का कोई इलाज नहीं। मसलन कोई अपना सर दीवार में मारता जाए और रोता चिल्लाता जाए कि हाए ! मेरा सर फट गया ! मुझे बचाओ !! तो ज़ाहिर है उस अह़मक़ से येही कहा जाएगा कि अपना सर दीवार में मारना तर्क कर दे तो नहीं फटेगा। इसी त़रह़ बहुत सारे नादान इन्सान जो कुछ हाथ में आता है हड़प कर जाते, ख़ूब ठांस ठांस कर खाते और फिर मोटापे, निकले हुए पेट, क़ब्ज़ और बद हज़्मी की दवाएं ढूंडते फिरते और डॉक्टर ह़कीमों पर ख़ूब रक़में ख़र्च करते हैं ! मगर दवाओं से इलाज नहीं हो पाता, क्यूं ? इस लिये कि इन अमराज़ का इलाज उन के अपने हाथ में है। डट कर खाना छोड़ दें, जब तक ख़ूब भूक न लगे उस वक़्त तक न खाएं, ह़दीसे पाक में बताए हुए त़रीक़े के मुत़ाबिक़ भूक से कम खाएं, पिज़्ज़ों पराठों, दूध की बालाई, और मख्खनों, केक, पेस्ट्रियों, बन कबाबों, बर्गरों, सीख़ कबाबों, समोसों, पकोड़ों और दीगर तली हुई चीज़ों नीज़ चिक्नाहट, मेदा और मिठास वाली चीज़ों को कम से कम इस्ति'माल में लाएं। आइस्क्रीमों ठन्डे शरबतों और ठन्डी बोतलों से ख़ुद को बचाएं नीज़ चाय नोशी भी ज़ियादा न फ़रमाएं (ज़रूरतन दिन रात में दो या तीन मरतबा आधे आधे कप

चाय से काम चलाएं) अगर पान सिगरेटों, ख़ुश्बूदार छालियों, गुटकों, मेन पूड़ियों, और पान परागों वग़ैरा की लत है तो इन से पीछा छुड़ाएं। إِنْ شَآءَاللّٰه عَزَّوَجَلَّ वज़्न कम, पेट अन्दर और हाज़िमा दुरुस्त नीज़ बहुत सारी बीमारियों से बिग़ैर डॉक्टरी इलाज के नजात मिल जाएगी।

मोटापे का एक सबब : मेरे इन **मदनी मश्वरों** पर ज़ियादा नहीं तो फ़क़त् **40** दिन सख़्ती से अ़मल कर के देख लीजिये إِنْ شَآءَاللّٰه عَزَّوَجَلَّ अपनी सिह़्ह़त में ह़ैरत अंगेज़ तब्दीली मह़सूस फ़रमाएंगे। पहले किसी लेबॉरेटरी में "लिपिड प्रोफ़ाइल और शूगर" टेस्ट करवा कर अपने डॉक्टर से मश्वरा करने के बा'द इस निय्यत के साथ कि "अच्छी सिह़्ह़त के ज़रीए़ इबादत पर कुव्वत ह़ासिल करूंगा।" परहेज़ी शुरूअ़ कर दीजिये और इस की बरकतें लूटिये। याद रखिये ! खाने के बा'द पानी पीने से भी बदन फूलता, वज़्न बढ़ता और मोटापा आता है। लिहाज़ा खाने के बा'द कम से कम पानी पियें। हां खाने के दौरान थोड़ा थोड़ा पानी पीते रहना मुफ़ीद है। बहर ह़ाल खाने के बा'द ख़ूब पानी ग़टग़टाने के आ़दी का बदन अगर फूल जाए तो इस का इलाज वोह दवा से करने के बजाए अपनी आ़दत की इस्लाह़ से करेगा तो ही हो सकेगा।

ना समझ बीमार को अमृत भी ज़हर आमेज़ है

सच येही है सो दवा की इक दवा परहेज़ है

ख़त़रे में डालने वाली 15 बातों की मिसालें : अप ने हाथों ख़ुद को ख़त़रात में डाल कर फिर उन्हीं ख़त़रात से अपनी हिफ़ाज़त के लिये की जाने वाली दुआएं क़बूल नहीं होती। **अह़सनुल विआ़अ लि आदाबिद्दुआ़अ** में ख़ुद को अपने हाथों से मुसीबत में डालने के ज़िम्न में बहुत प्यारी मिसालें दी गई हैं। मसलन ﴾1﴿ जो बिग़ैर किसी सख़्त मजबूरी के रात को ऐसे वक़्त घर से बाहर निकले कि लोग सो गए हों, पाउं की पहचल रास्तों से मौक़ूफ़ हो गई हो। सह़ीह़ ह़दीस में इस से मुमानअ़त फ़रमाई कि इस वक़्त बलाएं मुन्तशिर होती हैं (तो गोया रात ताख़ीर से सुनसान रास्ते से गुज़रे और उस को डाकू लिपट जाए या भूत चिमट जाए तो अब अपने आप ही को मलामत करे कि ख़ुद को क्यूं ख़त़रे में डाला !) या ﴾2﴿ रात को दरवाज़ा खुला छोड़ दे या बिग़ैर **बिस्मिल्लाह** कहे बन्द करे कि शैत़ान उसे खोल सकता है और जब **बिस्मिल्लाह** कह कर दहना (या'नी सीधा) पाउं मकान में रखे तो शैत़ान कि साथ आया था बाहर रह जाता है और जब **बिस्मिल्लाह** कह कर दरवाज़ा बन्द करे तो उस के खोलने पर क़ुदरत नहीं पाता (यहां भी अगर बे एह़तियात़ी की गई और शैत़ान ने घर में घुस कर नुक़्सान पहुंचाया तो ख़ुद अपने ही क़ुसूर की वज्ह से ऐसा हुवा है अब इस मुआ़मले में दुआ़ कैसे क़बूल हो ?) या ﴾3﴿ खाने, पानी के बरतन **बिस्मिल्लाह** कह कर न ढांके कि बलाएं उतरती और ख़राब कर देती हैं फिर वोह त़आ़म व मश्रूबात बीमारियां लाते हैं (खाना

वग़ैरा मौजूद होते हुए बरतन खुला हो तो नापाक जिन्नात इस्ति'माल करते हैं लिहाज़ा बे एह़तियाति़यां करने वाले की यहां भी दुआ क़बूल नहीं होगी कि आसेब और अमराज़ से ह़िफ़ाज़त का बेहतरीन नुस्ख़ा बता दिया गया है) या ﴾4﴿ बच्चे को मग़रिब के वक़्त घर से बाहर निकाले कि इस वक़्त शयात़ीन मुन्तशिर होते हैं (अगर मग़रिब व इशा के दरमियान बच्चे को बाहर निकाला और किसी जिन्न ने पकड़ लिया तो आप का अपना क़ुसूर है कि क्यूं निकाला ?) या ﴾5﴿ खाने के बा'द बे हाथ धोए सो रहे कि शैत़ान चाटता और مَعَاذَاللّٰه बरस (कोढ़) का बाइस होता है या ﴾6﴿ ग़ुस्ल ख़ाने में पेशाब करे कि इस से वस्वसा पैदा होता है या ﴾7﴿ छज्जे के क़रीब सोए और छत पर रोक (या'नी मुंढेर) न हो कि गिर पड़ने का एह़तिमाल (इम्कान) है या ﴾8﴿ खाना बिग़ैर **बिस्मिल्लाह** पढ़े खाए कि शैत़ान साथ खाता और जो त़आ़म चन्द मुसल्मानों को बस करता (या'नी काफ़ी होता वोह) एक ही के खाने में फ़ना (ख़त्म) हो जाता है या ﴾9﴿ ज़मीन के सूराख़ों में पेशाब करे कि कभी सांप वग़ैरा जानवरों का घर या जिन्न का मकान होता और इन्सान ईज़ा पाता है या ﴾10﴿ अपनी, ख़्वाह अपने दोस्त की कोई चीज़ पसन्द आए तो उस पर दफ़्ए़ नज़र की दुआ اَللّٰھُمَّ بَارِکْ عَلَیْہِ وَلَا تَضُرَّہٗ مَاشَآءَ اللّٰہُ لَا قُوَّۃَ اِلَّا بِاللّٰہ (या'नी ऐ **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ ! इस पर बरकत नाज़िल फ़रमा और इसे नुक़्सान न पहुंचे, जो कुछ **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ ने चाहा वोही तो हुवा, **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ की ताईद के बिग़ैर नेकी पर कुछ क़ुदरत

नहीं) न पढ़े कि नज़र हक़ है, मर्द को क़ब्र और ऊंट को देग में दाख़िल कर देती है (दुआ याद न हो तो مَاشَآءَاللّٰه या بَارَکَ اللّٰه भी कह सकते हैं। मुफ़्ती अहमद यार ख़ान عَلَيْهِ رَحْمَةُ الْحَنَّان फ़रमाते हैं, अगर किसी पसन्दीदा चीज़ को देख कर مَاشَآءَاللّٰه या بَارَکَ اللّٰه कह दे तो नज़र नहीं लगती अगर इन कलिमात (या'नी مَاشَآءَاللّٰه या بَارَکَ اللّٰه) के बिग़ैर ही तअ़ज्जुब से देखे और तअ़ज्जुब के अल्फ़ाज़ बोले तो नज़र लग जाती है। (मिरआत, जि. 6, स. 244) या ﴾11﴿ तन्हा सफ़र करे कि फ़ुस्साक़ इन्सो जिन्न से मुज़र्रत पहुंचती (या'नी नुक़्सान पहुंचता) है और हर काम में दिक़्क़त पड़ती है या ﴾12﴿ खड़े खड़े पानी पिया करे कि दर्दे जिगर का मूरिस (व बाइस) है (आबे ज़मज़म शरीफ़ और वुज़ू का बचा हुवा पानी खड़े खड़े पीना मुस्तहब है) या ﴾13﴿ बैतुल ख़ला में बिग़ैर **बिस्मिल्लाह** कहे (या बिग़ैर दुआ पढ़े) जाए कि ख़बाइस (या'नी नापाक जिन्नात) से मुज़र्रत (नुक़्सान पहुंचने) का अन्देशा है या ﴾14﴿ फ़ासिक़ों, फ़ाजिरों, बद वज़्ओं, बद मज़्हबों के पास निशस्तो बरख़ास्त करे कि अगर बिलफ़र्ज़ सोहबते बद के असर से बचा तो मुत्तहम (व बदनाम) ज़रूर हो जाएगा या ﴾15﴿ लोगों के रास्तों में ख़्वाह इन की निशस्तो बरख़ास्त की जगह पेशाब करे कि आप ही गालियां खाएगा। (मुलख़्ख़सन अह्सनुल विआ़अ लि आदाबिद्दुआ़अ, स. 76, 77)

صَلُّوْا عَلَى الْحَبِيْب ! صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلٰى مُحَمَّد

﴾61﴿ आप कहां से खाते हैं ?

ह़ज़रते सय्यिदुना बा यज़ीद बिस्त़ामी رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰى عَلَيْه एक मस्जिद में नमाज़ पढ़ने तशरीफ़ ले गए, नमाज़ पूरी होने के बा'द इमाम साहिब ने पूछा, ऐ बा यज़ीद ! **आप कहां से खाते हैं ?** फ़रमाया, ज़रा रुकिये ! पहले आप के पीछे पढ़ी हुई नमाज़ को दोहरा लूं, आप को जब मख़्लूक़ को रोज़ी देने वाले ही के बारे में शक है, तो फिर आप के पीछे नमाज़ कैसे जाइज़ है ? (روض الرياحين ص ١٥٥)

अल्लाह عَزَّوَجَلَّ **की उन पर रह़मत हो और उन के सदक़े हमारी मग़्फ़िरत हो ।**

प्यारे प्यारे इस्लामी भाइयो ! ह़ज़रते सय्यिदुना बा यज़ीद बिस्त़ामी رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰى عَلَيْه बहुत बड़े वलिय्युल्लाह थे। यक़ीनन **अल्लाह** रब्बुल आ़लमीन عَزَّوَجَلَّ सब की रोज़ी का कफ़ील है, वोही **खिलाता** पिलाता है। इमाम साहिब ने येह सुवाल पूछ कर कि "**आप कहां से खाते हैं ?**" ह़ज़रत के नज़्दीक अपने ज़ईफ़ुल ए'तिक़ाद होने का सुबूत दिया और आप رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰى عَلَيْه ने नमाज़ दोहराई येह आप رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰى عَلَيْه का तक़्वा था। उ़र्फ़न इस त़रह़ के सुवाल व जवाब लोग आपस में करते हैं शरअ़न इस में कोई गुनाह नहीं।

صَلُّوا عَلَى الْحَبِيب ! صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلٰى مُحَمَّد

﴾62﴿ भुना हुवा परिन्दा

अबुल ह़ुसैन अ़लवी का बयान है, मैं ने एक बार घर में फ़रमाइश की, कि फ़ुलां ह़लाल परिन्दा भूनने के लिये तन्दूर में लटका दो, मैं वक़्ते मुनासिब पर आ कर खा लूंगा। फिर मैं ह़ज़रते सय्यिदुना

जा'फ़र ख़ुल्दी رَحْمَةُ اللّٰهِ تَعَالٰی عَلَيۡه की ख़िदमत में ज़ियारत के लिये ह़ाज़िर हुवा, उन्हों ने फ़रमाया, रात यहीं क़ियाम कर लीजिये। मेरा दिल चूंकि परिन्दा खाने में फंसा हुवा था मैं कोई बहाना कर के घर पहुंच गया। गर्मा गर्म **भुना हुवा परिन्दा** दस्तर ख़्वान पर रख दिया गया। यकायक घर में कुत्ता घुस आया और झपट कर **भुना हुवा परिन्दा** ले भागा। उस परिन्दे का बचा हुवा शोरबा ख़ादिमा ला रही थी कि उस के कपड़े के दामन का झटका लगने से वोह शोरबा भी सारे का सारा गिर गया। फिर सुब्ह़ जब मैं ह़ज़रते सय्यिदुना शैख़ जा'फ़र ख़ुल्दी رَحْمَةُ اللّٰهِ تَعَالٰی عَلَيۡه की ख़िदमते बा बरकत में ह़ाज़िर हुवा तो मुझे देखते ही फ़रमाने लगे, "जो शख़्स मशाइख़ के दिलों का लिह़ाज़ नहीं रखता उस के दिल को ईज़ा पहुंचाने के लिये कुत्ता मुसल्लत़ कर दिया जाता है।" (الرِّسالةُ القُشَيرِيّه ٣٦٢)

अल्लाह عَزَّوَجَلَّ की उन पर रह़मत हो और उन के सदक़े हमारी मग़्फ़िरत हो।

प्यारे प्यारे इस्लामी भाइयो ! मा'लूम हुवा, बुज़ुर्गों की बात निभाने और वोह जो हुक्म दें उस को बजा लाने ही में आ़फ़िय्यत है। **अल्लाह** वालों के साथ चालाकी और बहाने बाज़ी कारआमद नहीं होती। इस ह़िकायत से येह भी मा'लूम हुवा कि औलियाउल्लाह رَحِمَهُمُ اللّٰهُ تَعَالٰی को **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ की अ़त़ा से ग़ैब की बातें भी मा'लूम हो जाया करती हैं। जब औलियाए किराम رَحِمَهُمُ اللّٰهُ تَعَالٰی की येह शान है तो सह़ाबए किराम عَلَيۡهِمُ الرِّضۡوَان का क्या मक़ाम होगा ! नीज़ अम्बियाए किराम عَلَيۡهِمُ الصَّلٰوةُ وَالسَّلَام और ख़ुद ताजदारे अम्बिया, ह़बीबे किब्रिया, अह़मदे मुज्तबा, मुह़म्मदे मुस्त़फ़ा صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰی عَلَيۡهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم की अ़ज़मतो शान का कौन

अन्दाज़ा कर सकता है ! मेरे आक़ा आ'ला ह़ज़रत बारगाहे रिसालत में अ़र्ज़ करते हैं,

सरे अ़र्श पर है तेरी गुज़र दिले फ़र्श पर है तेरी नज़र

मलकूतो मुल्क में कोई शै नहीं वोह जो तुझ पे इ़यां नहीं

(ह़दाइक़े बख़्शिश शरीफ़)

صَلُّوْا عَلَی الْحَبِیْب ! صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلٰی مُحَمَّد

﴾63﴿ बेटी पैदा होने की बिशारत

अल्लाह रब्बुल इ़ज़्ज़त عَزَّوَجَلَّ की इ़नायत से स़ह़ाबए किराम عَلَیْہِمُ الرِّضْوَان के भी ग़ैब की ख़बरें बताने के वाक़िआ़त किताबों में मिलते हैं चुनान्चे **करोड़ों** मालिकिय्यों के अ़ज़ीमुल मर्तबत पेश्वा ह़ज़रते सय्यिदुना इमाम मालिक बिन अनस رَحْمَۃُ اللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہ अपने मश्हूरे ज़माना मज्मूअ़ए अह़ादीस "मुअत्त़ा इमामे मालिक" में फ़रमाते हैं, ह़ज़रते सय्यिदुना उ़र्वह बिन ज़ुबैर رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُمَا से रिवायत है कि उम्मुल मुअमिनीन ह़ज़रते सय्यिदतुना आ़इशा सिद्दीक़ा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہَا ने फ़रमाया, ख़लीफ़तुर्रसूल ह़ज़रते सय्यिदुना अबू बक्र सिद्दीक़ رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ने अपने मरज़े वफ़ात में इन्हें **वसिय्यत** करते हुए इर्शाद फ़रमाया, मेरी प्यारी बेटी ! आज तक मेरे पास जो मेरा माल था, वोह आज मीरास का माल है तुम्हारे दो[2] भाई (अ़ब्दुर्रह़मान और मुह़म्मद رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُمَا) और तुम्हारी **दो[2] बहनें** (رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُمَا) हैं लिहाज़ा तुम लोग मेरे माल को क़ुरआने मजीद के हुक्म के मुत़ाबिक़ तक़्सीम कर लेना। येह सुन कर ह़ज़रते सय्यिदतुना आ़इशा

सिद्दीक़ा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْھَا ने अ़र्ज़ की, अब्बाजान ! मेरी तो एक ही बहन "बीबी अस्मा" हैं, **येह मेरी दूसरी बहन कौन है ?** आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ ने इर्शाद फ़रमाया, वोह (तुम्हारी सौतेली वालिदा) "ह़बीबा बिन्ते ख़ारिजा" (رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْھَا) **के पेट में है, मेरे ख़याल में वोह लड़की है ।** (المُوَطّالِلامام مالك ج ٢ ص ٢٧٠ حديث ١٥٠٣) इस ह़दीस के तह़्त ह़ज़रते सय्यिदुना अ़ल्लामा मुह़म्मद बिन अ़ब्दुल बाक़ी ज़ुर्क़ानी قُدِّسَ سِرُّهُ الرَّبَّانِی तह़रीर फ़रमाते हैं, चुनान्चे ऐसा ही हुवा कि **लड़की** पैदा हुई जिन का नाम "**उम्मे कुल्सूम**" रखा गया। (شرحُ الزُّرقانی علی المُوَطّا ج ٤ ص ٦١)

अल्लाह عَزَّوَجَلَّ की उन पर रह़मत हो और उन के सदक़े हमारी मग़्फ़िरत हो ।

صَلُّوا عَلَی الْحَبِیب ! صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلٰی مُحَمَّد

दो² करामतें साबित हुईं : प्यारे प्यारे इस्लामी भाइयो ! इस ह़दीसे मुबारक के बारे में ह़ज़रते अ़ल्लामा ताजुद्दीन सुबकी عَلَیْہِ رَحمَۃُ اللّٰہِ الْقَوِی ने तह़रीर फ़रमाया कि इस ह़दीस से ख़लीफ़तुर्रसूल ह़ज़रते सय्यिदुना अबू बक्र सिद्दीक़ رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ की **दो² करामतें** साबित होती हैं ﴾1﴿ आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ को क़ब्ल अज़् वफ़ात ही येह इ़ल्म हो गया था कि मैं इस मरज़ में दुन्या से रिह़लत (या'नी कूच) कर जाऊंगा, इसी लिये तो ब वक़्ते वसिय्यत फ़रमाया, "मेरे पास जो मेरा माल था, वोह आज मीरास का माल है" ﴾2﴿ जो बच्चा पैदा होगा **वोह लड़की है ।** (حُجَّۃُاللّٰہِ علَی العالَمین ص ٦١٢ مرکز اھلسنّت برکاتِ رضا گجرات ھند)

फ़रमाने मुस्तफ़ा صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰی عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم : जो मुझ पर रोज़े जुमुआ दुरूद शरीफ़ पढ़ेगा मैं क़ियामत के दिन उस की शफ़ाअ़त करूंगा। (جمع الجوامع)

सिद्दीक़े अक्बर رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْهُ को इल्मे ग़ैब था : इस हिकायत से येह भी मा'लूम हुवा, مَافِی الْاَرْحَام (या'नी जो कुछ मां के पेट में है उस) का इल्म **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ की अ़ता से ह़ज़रते सय्यिदुना अबू बक्र सिद्दीक़ رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْهُ को ह़ासिल हो गया था। इस मस्अले को समझने के लिये आयते कुरआनी और उस की तफ़्सीर ग़ौर से समाअ़त फ़रमाइये चुनान्चे **अल्लाह** तबारक व तआ़ला पारह 21 **सूरए लुक़्मान** की आख़िरी आयते करीमा में इर्शाद फ़रमाता है :

وَ یَعْلَمُ مَا فِی الْاَرْحَامِؕ

(پ ۲۱ لقمان ۳٤)

तरजमए कन्ज़ुल ईमान : और (**अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ) जानता है जो कुछ मांओं के पेट में है।

ख़लीफ़ए आ'ला ह़ज़रत, मुफ़स्सिरे कुरआन, ह़ज़रते सदरुल अफ़ाज़िल अ़ल्लामा मौलाना सय्यिद मुह़म्मद नईमुद्दीन मुरादआबादी عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللّٰهِ الْهَادِی **ख़ज़ाइनुल इरफ़ान** (मत़्बूआ़ बम्बई) सफ़्ह़ा 661 पर इस आयते मुबारका के तह़्त फ़रमाते हैं, "इल्मे ग़ैब **अल्लाह** तआ़ला के साथ ख़ास है और अम्बिया व औलिया को ग़ैब का इल्म **अल्लाह** तआ़ला की ता'लीम से ब त़रीक़े मो'जिज़ा व करामत अ़त़ा होता है। येह इस इख़्तिसास (या'नी मख़्सूस होने) के मुनाफ़ी (ख़िलाफ़) नहीं और कसीर आयतें और ह़दीसें इस पर दलालत करती हैं। "बारिश का वक़्त और ह़म्ल में क्या है और कल कोई क्या करेगा और कहां मरेगा।" इन उमूर की ख़बरें ब कसरत औलिया व अम्बिया ने ही दी हैं और कुरआन व ह़दीस से साबित हैं। ह़ज़रते सय्यिदुना इब्राहीम ख़लीलुल्लाह

عَلٰی نَبِیِّنَا وَعَلَیْہِ الصَّلٰوۃُ وَالسَّلَام को फ़िरिश्तों ने हज़रते सय्यिदुना इस्हाक़ عَلٰی نَبِیِّنَا وَعَلَیْہِ الصَّلٰوۃُ وَالسَّلَام के पैदा होने की और हज़रते सय्यिदुना ज़करिय्या عَلٰی نَبِیِّنَا وَعَلَیْہِ الصَّلٰوۃُ وَالسَّلَام को हज़रते सय्यिदुना यह्या عَلٰی نَبِیِّنَا وَعَلَیْہِ الصَّلٰوۃُ وَالسَّلَام के पैदा होने की और हज़रते मरयम को हज़रते सय्यिदुना ईसा रूहुल्लाह عَلٰی نَبِیِّنَا وَعَلَیْہِ الصَّلٰوۃُ وَالسَّلَام के पैदा होने की ख़बरें दीं तो इन फ़िरिश्तों को भी पहले से मा'लूम था कि इन हम्लों में क्या है और उन हज़रात को भी जिन्हें फ़िरिश्तों ने इत्तिलाएं दी थीं और इन सब का जानना कुरआने करीम से साबित है तो आयत के मा'ना क़त्अन येही हैं कि बिग़ैर **अल्लाह** तआला के बताए कोई नहीं जानता। इस के येह मा'ना लेना कि **अल्लाह** तआला के बताने से भी कोई नहीं जानता महूज़ बातिल और सदहा आयात व अहादीस के ख़िलाफ़ है।

प्यारे प्यारे इस्लामी भाइयो ! बेशक औलियाए किराम رَحِمَهُمُ اللّٰهُ تَعَالٰی भी **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ की अ़ता से आयिन्दा होने वाली औलाद का पता दे सकते हैं चुनान्चे

﴾64﴿ बेटा पैदा होने की बिशारत

हज़रते शाह वलिय्युल्लाह मुहद्दिस देहलवी عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللّٰهِ الْقَوِی फ़रमाते हैं कि मेरे वालिदे माजिद हज़रते शाह अ़ब्दुर्रहीम عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللّٰهِ الْكَرِيْم फ़रमाते हैं, मैं एक बार हज़रते सय्यिदुना ख़्वाजा कुत़्बुद्दीन बख़्तियार काकी عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللّٰهِ الْبَاقِی के मज़ारे मुनव्वर की ज़ियारत के लिये गया। उन की रूहे मुबारक ज़ाहिर हुई और फ़रमाया, **"तुम्हारे यहां फ़रज़न्द पैदा होगा उस का नाम कुत़्बुद्दीन अह़मद रखना।"** चूंकि ज़ौजा बुढ़ापे को पहुंच गई थीं इस लिये मैं ने ख़याल किया शायद इस इर्शाद से मुराद बेटे

का बेटा या'नी पोता होगा। हज़रते सय्यिदुना ख़्वाजा कुत़्बुद्दीन बख़्तियार काकी عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللهِ الْبَاقِي मेरे इस दिली ख़याल पर फ़ौरन मुत़्तलअ़ हो गए और फ़रमाया, "मेरी येह मुराद नहीं है बल्कि वोह फ़रज़न्द तुम्हारी सुल्ब से होगा।" शाह वलिय्युल्लाह साहिब رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰی عَلَیْه मज़ीद फ़रमाते हैं, वालिदे माजिद رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰی عَلَیْه ने एक मुद्दत के बा'द दूसरी ख़ातून से अ़क्द (या'नी निकाह़) फ़रमाया तो येह कातिबुल हुरूफ़ फ़क़ीर वलिय्युल्लाह पैदा हुवा। शुरूअ़ में येह वाक़िआ़ याद न रहा तो वलिय्युल्लाह नाम रख दिया और कुछ अ़र्से के बा'द याद आया तो दूसरा नाम (हज़रते सय्यिदुना ख़्वाजा कुत़्बुद्दीन बख़्तियार काकी عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللهِ الْبَاقِي के फ़रमाने के मुत़ाबिक़) कुत़्बुद्दीन अह़मद रखा। (انفاس العارفين ص ٤٤)

प्यारे प्यारे इस्लामी भाइयो ! देखा आप ने ! औलियाए किराम رَحِمَهُمُ اللهُ الْمُبِين के मज़ाराते त़य्यिबात पर ह़ाज़िरी देने और उन से फ़ैज़ लेने का बुज़ुर्गों का मा'मूल रहा है। नीज़ येह भी मा'लूम हुवा कि वफ़ात याफ़्ता औलियाए किराम رَحِمَهُمُ اللهُ الْمُبِين भी **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ की अ़त़ा से दिलों का ह़ाल जानते और आयिन्दा की ख़बरें भी इर्शाद फ़रमा देते हैं जैसा कि हज़रते सय्यिदुना ख़्वाजा कुत़्बुद्दीन बख़्तियार काकी عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللهِ الْبَاقِي ने **हज़रते शाह अ़ब्दुर्रहीम** عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللهِ الْكَرِيْم **को बेटे की विलादत की बिशारत इनायत फ़रमाई।**

यहीं पाते हैं सारे अपना मत़लब — हर इक के वासित़े येह दर खुला है
मैं दर दर क्यूं फिरूं दुर दुर सुनूं क्यूं — मेरे आक़ा ! मेरा क्या सर फिरा है !

صَلُّوْا عَلَى الْحَبِيْب ! صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلٰى مُحَمَّد

फ़रमाने मुस्तफ़ा صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم : जिस के पास मेरा ज़िक्र हो और वोह मुझ पर दुरूद शरीफ़ न पढ़े तो वोह लोगों में से कन्जूस तरीन शख़्स है। (مسند احمد)

﴾65﴿ मजे़दार शरबत

हज़रते सय्यिदुना सालेह मुर्री عَلَیْہِ رَحمَۃُ اللّٰہِ الْقَوِی फ़रमाते हैं, मैं ने हज़रते सय्यिदुना अ़ता सुलमी عَلَیْہِ رَحمَۃُ اللّٰہِ الْغَنِی की ख़िदमत में दो[2] दिन मुतवातर घी और शहद मिला कर सत्तू का **मजे़दार शरबत** भिजवाया, मगर दूसरे दिन का उन्हों ने वापस लौटा दिया। इस पर ख़फ़्गी का इज़्हार करते हुए मैं ने कहा, आप ने मेरा तोह़फ़ा क्यूं लौटा दिया ? फ़रमाया, बुरा मत मानिये पहले दिन तो मैं पी गया मगर दूसरे दिन पीने में नाकामी हो गई, क्यूं कि जब पीने की निय्यत की तो पारह 13 **सूरए इब्राहीम** की आयत नम्बर 17 याद आ गई :

يَّتَجَرَّعُهٗ وَلَا يَكَادُ يُسِيْغُهٗ وَيَاْتِيْهِ الْمَوْتُ مِنْ كُلِّ مَكَانٍ وَّمَا هُوَ بِمَيِّتٍؕ وَمِنْ وَّرَآىٕهٖ عَذَابٌ غَلِيْظٌ ﴿۱۷﴾

(پ۱۳ ابراھیم ۱۷)

तरजमए कन्ज़ुल ईमान : ब मुश्किल इस का थोड़ा थोड़ा घूंट लेगा और गले से नीचे उतारने की उम्मीद न होगी और उसे हर त़रफ़ से मौत आएगी और मरेगा नहीं और उस के पीछे एक गाढ़ा अ़ज़ाब।

हज़रते सय्यिदुना सालेह मुर्री رَحْمَۃُ اللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہِ फ़रमाते हैं, येह सुन कर मैं रो पड़ा और मैं ने दिल में कहा, मैं किसी और वादी में हूं और आप किसी और वादी में। (مُلَخَّصاً اِحیاء ُالعُلوم ج۳ ص۱۱٦)

12 माह की इबादत से बढ़ कर नफ़्अ़ बख़्श : प्यारे प्यारे इस्लामी भाइयो ! हमारे बुज़ुर्गाने दीन رَحِمَهُمُ اللّٰهُ الْمُبِيْن अपने नफ़्स की जाइज़ ख़्वाहिशात को पूरा करने से भी बचते थे। ज़हे नसीब ! हमें जब अच्छी चीज़ खाने या उ़म्दा लिबास पहनने को जी चाहे तो रिज़ाए इलाही عَزَّوَجَلَّ पाने की निय्यत से कभी कभी उसे तर्क कर देने की सआ़दत भी मिल जाए मसलन सख़्त गर्मी है और ठन्डे मश्रूब या ठन्डी ठन्डी लस्सी पीने को जी चाह रहा है या शदीद भूक में "कड़ाही गोश्त खाने" की त़लब है और अस्बाब भी हैं मगर रिज़ाए इलाही عَزَّوَجَلَّ की ख़ात़िर उसे तर्क कर देने की काश ! तौफ़ीक़ मिल जाए। ख़्वाहिशे नफ़्स को तर्क करने का फ़ाएदा तो देखिये ! ह़ज़रते सय्यिदुना अबू सुलैमान عَلَيْهِ رَحْمَةُ الْحَنَّان फ़रमाते हैं, **नफ़्स की किसी ख़्वाहिश को छोड़ देना 12 माह के रोज़ों और रात की इबादतों से भी बढ़ कर दिल के लिये नफ़्अ़ बख़्श है।"**

(اِحیاءُ العُلُوم ج ٣ ص ١١٨)

हुज्जतुल इस्लाम ह़ज़रते सय्यिदुना इमाम मुह़म्मद ग़ज़ाली عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللّٰهِ الْوَالِي फ़रमाते हैं, नफ़्स को जाइज़ ख़्वाहिशात के लिये भी खुली छूट नहीं देनी चाहिये और न ही हर ह़ाल में इस की पैरवी करनी चाहिये। बन्दा जिस क़दर ख़्वाहिश को पूरा करता है और नफ़्स के मुत़ालबे पर उ़म्दा ग़िज़ाएं खाता है उस को उसी क़दर डरना भी चाहिये कि क़ियामत के रोज़ कुफ़्फ़ार से कहा जाएगा :

اَذْهَبْتُمْ طَيِّبٰتِكُمْ فِيْ حَيَاتِكُمُ الدُّنْيَا وَاسْتَمْتَعْتُمْ بِهَا (پ ٢٦ الاحقاف ٢٠)

तरजमए कन्ज़ुल ईमान : तुम अपने हिस्से की पाक चीज़ें अपनी दुन्या ही की ज़िन्दगी में फ़ना कर चुके और इन्हें बरत चुके।

सरकार صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم की भूक शरीफ़ :

ख़लीफ़ए आ'ला ह़ज़रत, मुफ़स्सिरे क़ुरआन, ह़ज़रते सदरुल अफ़ाज़िल अ़ल्लामा मौलाना सय्यिद मुह़म्मद नईमुद्दीन मुरादआबादी عَلَيْهِ رَحمَةُ اللهِ الْهَادِى **ख़ज़ाइनुल इरफ़ान** में इस आयते मुबारका के तह़्त फ़रमाते हैं, इस आयत में **अल्लाह** तआ़ला ने दुन्यवी लज़्ज़ात इख़्तियार करने पर कुफ़्फ़ार को तौबीख़ (या'नी मलामत) फ़रमाई तो रसूले करीम صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم और हु़ज़ूर के अस्ह़ाब عَلَيْهِمُ الرِّضْوَان ने लज़्ज़ाते दुन्यविय्या से कनारा कशी इख़्तियार फ़रमाई। बुख़ारी व मुस्लिम की ह़दीसे पाक में है, हु़ज़ूर सय्यिदे आ़लम صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم की वफ़ाते ज़ाहिरी तक हु़ज़ूर के अहले बैते अत़्हार ने कभी जव की रोटी भी दो[2] रोज़ बराबर न खाई। येह भी ह़दीस में है कि पूरा पूरा महीना गुज़र जाता था दौलत सराए अक़्दस (या'नी मकाने आ़लीशान) में (चूल्हे में) आग न जलती थी, चन्द खजूरों और पानी पर गुज़र की जाती थी। ह़ज़रते सय्यिदुना उ़मर फ़ारूक़े आ'ज़म رَضِىَ اللّٰهُ تَعَالٰى عَنْهُ से मरवी है, आप फ़रमाते हैं कि (ऐ लोगो !) मैं चाहता तो तुम से अच्छा खाना खाता और तुम से बेहतर लिबास पहनता लेकिन मैं अपना ऐ़शो राह़त अपनी आख़िरत के लिये बाक़ी रखना चाहता हूं। (ख़ज़ाइनुल इरफ़ान, स. 802)

खाना तो देखो जव की रोटी, बे छना आटा रोटी भी मोटी
वोह भी शिकम भर रोज़ न खाना صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَسَلَّم
कौनो मकां के आक़ा हो कर, दोनों जहां के दाता हो कर
फ़ाक़े से हैं शाहे दो आलम صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَسَلَّم

صَلُّوا عَلَى الْحَبِيب ! صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلٰى مُحَمَّد

﴾66﴿ आ़शूरा की ख़ैरात की बरकात

आ़शूरा के रोज़ **मुल्क** "रै" में क़ाज़ी साहि़ब के पास एक साइल आ कर अ़र्ज़ गुज़ार हुवा, मैं एक बहुत नादार व इ़याल दार आदमी हूं, आप को **यौमे आ़शूरा** का वासित़ा ! मेरे लिये रोटी, गोश्त और दो दिरहम का इन्तिज़ाम फ़रमा दीजिये। **अल्लाह** तआ़ला आप की इ़ज़्ज़त में बरकत दे। क़ाज़ी साहि़ब ने कहा, ज़ोहर के बा'द आना। फ़क़ीर ज़ोहर के बा'द आया तो कहा, अ़स्र बा'द आना। वोह अ़स्र बा'द पहुंचा तब भी कुछ नहीं दिया ख़ाली हाथ ही टरख़ा दिया। फ़क़ीर का दिल टूट गया, वोह रन्जीदा रन्जीदा एक नसरानी के पास पहुंचा और उस से कहा, आज के मुक़द्दस दिन के सदक़े मुझे कुछ दे दो। उस ने पूछा, आज कौन सा दिन है ? जवाब दिया, आज **यौमे आ़शूरा** है येह कहने के बा'द आ़शूरा के कुछ फ़ज़ाइल बयान किये। उस ने सुन कर कहा, आप ने बहुत ही अ़ज़मत वाले दिन का वासित़ा दिया, अपनी ज़रूरत बयान कीजिये ! साइल ने उस से भी वोही ज़रूरत बयान कर दी। उस आदमी ने वाफ़िर मिक़्दार में गेहूं, गोश्त और बीस दिरहम पेश करते हुए कहा, येह आप के अहलो इ़याल के लिये ज़िन्दगी भर

हर माह इस दिन की फ़ज़ीलत व हुरमत के सदक़े मुक़र्रर है। रात को क़ाज़ी साहिब ने ख़्वाब देखा कि कोई कह रहा है, नज़र उठा कर देख ! **जब नज़र उठाई तो दो[2] आलीशान महल नज़र आए, एक चांदी और सोने की ईंटों का और दूसरा सुर्ख़ याक़ूत का था** । क़ाज़ी ने पूछा, येह दोनों[2] महल किस के हैं ? जवाब मिला, अगर तुम साइल की ज़रूरत पूरी कर देते तो येह तुम्हें मिलते, मगर चूंकि तुम ने उसे धक्के खिलाने के बा वुजूद भी कुछ न दिया इस लिये अब येह दोनों महल फ़ुलां नसरानी के लिये हैं। क़ाज़ी साहिब बेदार हुए तो बहुत परेशान थे। सुब्ह हुई तो नसरानी के पास गए और उस से दरयाफ़्त किया कि कल तुम ने कौन सी "नेकी" की है ? उस ने पूछा, आप को कैसे इल्म हुवा ? क़ाज़ी साहिब ने अपना ख़्वाब सुनाया, और पेशकश की, कि मुझ से एक लाख दिरहम ले लो और कल की "नेकी" मुझे बेच दो ! नसरानी ने कहा, मैं रूए ज़मीन की सारी दौलत ले कर भी इसे फ़रोख़्त नहीं करूंगा, रब्बुल इ़ज़्ज़त جَلَّ جَلَالُهٗ की रहमत व इनायत बहुत ख़ूब है। "**लीजिये ! मैं मुसल्मान होता हूं**" येह कह कर उस ने पढ़ा :

اَشْهَدُ اَنْ لَّآ اِلٰهَ اِلَّا اللّٰهُ وَاَشْهَدُ اَنَّ مُحَمَّدًا عَبْدُهٗ وَرَسُوْلُهٗ (صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰی عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم)

मैं गवाही देता हूं **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ के सिवा कोई इबादत के लाइक़ नहीं और गवाही देता हूं मुहम्मद उस के बन्दए ख़ास और उस के रसूल हैं (صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰی عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم)

(روض الریاحین ص ۱۵۲)

आ़शूरा के फ़ज़ाइल : प्यारे प्यारे इस्लामी भाइयो ! आ़शूरा या'नी **मुह़र्रमुल ह़राम** की दस[10] तारीख़ को नवासए रसूल, जिगर गोशए बतूल, इमामे आ़ली मक़ाम ह़ज़रते सय्यिदुना इमामे हु़सैन رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ और आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ के रुफ़क़ा को दश्ते करबला में इन्तिहाई बे रह़मी के साथ भूका और प्यासा शहीद किया गया। आ़शूरा के दिन इस के इ़लावा काफ़ी अहम वाक़िआ़त रूनुमा हुए। यौमे आ़शूरा और **मुह़र्रमुल ह़राम** के सारे ही महीने को इस्लाम में बड़ी अहम्मिय्यत ह़ासिल है। रमज़ानुल मुबारक के बा'द मुह़र्रमुल ह़राम के रोज़े अफ़्ज़ल तरीन हैं, चुनान्चे

"पन्ज तन" के पांच हु़रूफ़ की निस्बत से 5 अह़ादीसे मुबारका

﴾1﴿ सुल्ताने दो[2] जहान, शहन्शाहे कौनो मकान, रह़मते आ़लमिय्यान صَلَّى اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم का फ़रमाने आ़लीशान है, रमज़ान के बा'द मुह़र्रम का रोज़ा अफ़्ज़ल है और फ़र्ज़ के बा'द अफ़्ज़ल नमाज़ सलातुल्लैल (या'नी रात की नफ़्ल नमाज़) है। (صحیح مسلم ص ٥٩١ حدیث ١١٦٣) ﴾2﴿ नबिय्ये रह़मत शफ़ीए़ उम्मत, शहन्शाहे नुबुव्वत, ताजदारे रिसालत صَلَّى اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم फ़रमाते हैं, मुह़र्रमुल ह़राम के हर दिन का रोज़ा एक माह के रोज़ों के बराबर है। (المعجم الصغیر للطبرانی ج٢ ص ٧١) ﴾3﴿ रह़मते आ़लम, नूरे मुजस्सम, शाहे बनी आदम, रसूले मोह़्तशम صَلَّى اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم

फ़रमाने मुस्तफ़ा صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم : जिस ने किताब में मुझ पर दुरूदे पाक लिखा तो जब तक मेरा नाम उस में रहेगा फ़िरिश्ते उस के लिये इस्तिग़्फ़ार (या'नी बख़्शिश की दुआ) करते रहेंगे। (طبرانی)

ने इर्शाद फ़रमाया, जिस ने मुहर्रमुल हराम में तीन[3] दिन जुमे'रात, जुमुआ और सनीचर का रोज़ा रखा उस के लिये दो[2] साल की इबादत का सवाब लिखा जाएगा। (مُجمع الزوائد ج ٣ ص ٤٣٨ حديث ٥١٥١) ﴿4﴾ सरवरे काएनात, शाहे मौजूदात صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने इर्शाद फ़रमाया, यौमे आ़शूरा का रोज़ा रखो और इस में यहूदियों की मुख़ालफ़त करो इस के पहले या बा'द में भी एक दिन का रोज़ा रखो। (مسند امام احمد ج ١ ص ٥١٨ حديث ٢١٥٤) लिहाज़ा जो 10 **मुहर्रमुल हराम** का रोज़ा रखे उस को चाहिये कि 9 या 11 तारीख़ का रोज़ा भी रख ले। ﴿5﴾ सुल्ताने दो[2] जहान, मदीने के सुल्तान, रह़मते आ़लमिय्यान, सरवरे ज़ीशान صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم का फ़रमाने जन्नत निशान है, जिस ने आ़शूरा के रोज़ अपने घर में रिज़्क़ की फ़राख़ी की **अल्लाह** तआ़ला उस पर सारा साल फ़राख़ी फ़रमाएगा। (معجم اوسط ج ٦ ص ٤٣١ حديث ٩٣٠٢)

सारा साल अमराज़ से हिफ़ाज़त : मुफ़स्सिरे शहीर **हकीमुल उम्मत** हज़रते मुफ़्ती अहमद यार ख़ान عَلَيْهِ رَحْمَةُ الْحَنَّان फ़रमाते हैं, मुहर्रमुल हराम की नवीं[9] और **दसवीं**[10] को **रोज़ा** रखे तो बहुत सवाब पाएगा। बाल बच्चों के लिये **दसवीं**[10] **मुहर्रम शरीफ़** को ख़ूब अच्छे अच्छे खाने पकाए तो اِنْ شَآءَ اللّٰه عَزَّوَجَلَّ साल भर तक घर में बरकत रहेगी। बेहतर है कि **खिचड़ा** पका कर हज़रते शहीदे करबला सय्यिदुना इमामे हुसैन رَضِىَ اللّٰهُ تَعَالٰى عَنْهُ की फ़ातिहा करे बहुत मुजर्रब (या'नी मुअस्सिर, आज़मूदा) है। इसी तारीख़ को **ग़ुस्ल** करे तो तमाम साल اِنْ شَآءَ اللّٰه عَزَّوَجَلَّ **बीमारियों से**

फ़रमाने मुस्तफ़ा صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰی عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم : जो मुझ पर एक दिन में 50 बार दुरूदे पाक पढ़े क़ियामत के दिन मैं उस से मुसाफ़हा करूं (या'नी हाथ मिलाऊं)गा ।(ابن بشکوال)

अम्न में रहेगा क्यूं कि इस दिन **आबे ज़म ज़म** तमाम पानियों में पहुंचता है । (تفسیر روح البیان ج٤ص١٤٢، इस्लामी ज़िन्दगी, स. 102) सरवरे काएनात, शाहे मौजूदात صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰی عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने इर्शाद फ़रमाया जो शख़्स यौमे आ़शूरा **इस्मिद सुरमा आंखों में लगाए तो उस की आंखें कभी भी न दुखेंगी ।** (شُعَبُ الایمان ج٣ ص٣٦٧ حدیث ٣٧٩٧)

صَلُّوا عَلَی الْحَبِيب! صَلَّی اللّٰهُ تَعَالٰی عَلٰی مُحَمَّد

ख़ौफ़नाक ज़ल्ज़ला : प्यारे प्यारे इस्लामी भाइयो ! اَلْحَمْدُ لِلّٰه عَزَّوَجَلَّ तब्लीग़े कुरआनो सुन्नत की आ़लमगीर ग़ैर सियासी तह़रीक **दा'वते इस्लामी** के मदनी माह़ोल में मुसीबत ज़दों से हमदर्दी का ज़ेह्न मिलता है । तादमे तह़रीर इस मुल्क की तारीख़ में आने वाले सब से बड़े **ख़ौफ़नाक ज़ल्ज़ले** के बारे में कुछ अ़र्ज़ करता हूं, बरोज़ हफ़्ता तीन रमज़ानुल मुबारक 1426 हि. (8-10-2005) सुब्ह़ तक़्रीबन 8:45 बजे ख़ौफ़नाक ज़ल्ज़ला आया । **एक इत्तिलाअ़ के मुताबिक़ दो[2] लाख से ज़ाइद अफ़राद इस में फ़ौत हुए** और सह़ीह़ बात येह है कि मरने वालों की ता'दाद किस को पता है ! पूरे पूरे गाउं, मुकम्मल बस्तियां और कई शहर तहस नहस हो कर मल्बे का ढेर बन गए, पहाड़ के पहाड़ ज़मीन से उखड़ कर आबादियों पर उलट गए, न जाने कितने हंसते बोलते इन्सान यकायक ज़िन्दा दफ़्न हो गए । इन सब की गिनती कौन और किस त़रह़ कर सकता है ! गुनाह करते हुए काश !

इसी ज़ल्ज़ले को पेशे नज़र रखने का हमारा ज़ेह्न बन जाए कि कहीं ऐसा न हो कि गुनाह के दौरान ही अचानक **ज़ल्ज़ला** आ जाए और चश्म ज़दन में हमारा "कचूमर" बन जाए ! (हम **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ से आफ़िय्यत के त़लब गार हैं)

619 ट्रकों का सामान : दा'वते इस्लामी के इस्लामी भाइयों ने ज़ल्ज़ला ज़दगान की इमदाद में बढ़ चढ़ कर हिस्सा लिया, तक़रीबन 619 ट्रकों का सामाने ज़रूरिय्याते ज़िन्दगी उन में तक़्सीम किया, इमदादी कामों पर लगभग 12 करोड़ रुपै ख़र्च किये। **दा'वते इस्लामी** के आ़शिक़ाने रसूल के सुन्नतों की तरबियत के कुछ मदनी क़ाफ़िले भी ज़ल्ज़ला ज़दा अ़लाक़ों में ला पता हो गए मगर اَلْحَمْدُ لِلّٰہ عَزَّوَجَلَّ वोह जल्द ही ज़िन्दा सलामत मिल गए उन में से एक मदनी क़ाफ़िले की मदनी बहार मुलाह़ज़ा हो चुनान्चे

﴾67﴿ दो² बार मौत के मुंह में

9 इस्लामी भाइयों पर मुश्तमिल **दा'वते इस्लामी** का सुन्नतों की तरबियत का मदनी क़ाफ़िला सुन्नतों भरे सफ़र पर था और एक मस्जिद में ठहरा हुवा था। **आ़शिक़ाने रसूल** का कुछ इस त़रह़ बयान है, "वक़्फ़ए इस्तिराह़त में पांच[5] इस्लामी भाई आराम कर रहे थे जब कि चार[4] इस्लामी भाई मस्जिद से बाहर गए हुए थे। 3 रमज़ानुल

मुबारक 1426 हि. दिन के तक़रीबन पोने नव बजे यकायक **ज़ल्ज़ले** के ज़ोरदार झटके आए, इस्लामी भाई घबरा कर तक़रीबन पांच[5] फुट ऊंची दीवार से बाहर की जानिब कूद कर सड़क की सम्त सरपट दौड़ पड़े, हर त़रफ़ धमाकों की **ख़ौफ़नाक** आवाजें आ रही थीं। पीछे मुड़ कर जो देखा तो एक ना क़ाबिले यक़ीन मन्ज़र निगाहों के सामने था और वोह येह कि दोनों[2] त़रफ़ से **पहाड़ आबादी** पर आ गिरा था, जब गर्द के बादल कुछ छटे तो वहां न हमारी वोह मस्जिद थी न ही मकानात। तमाम आ़लीशान इमारात ज़मीन बोस हो चुकी थीं, हर त़रफ़ **क़ियामते सुग़रा** क़ाइम थी, ग़ालिबन इस आबादी का कोई फ़र्दे बशर ज़िन्दा न बचा था। **आ़शिक़ाने रसूल** गिरते पड़ते क़रीबी अ़लाक़े में पहुंचे, वहां भी **ज़ल्ज़ले** ने तबाही मचा रखी थी, जब ह़वास कुछ बह़ाल हुए तो इमदादी कामों में ह़िस्सा लिया, वहीं रोज़ा इफ़्त़ार किया, एक ज़ल्ज़ला ज़दा मस्जिद के बाक़ीमांदा ह़िस्से में नमाज़े मग़रिब बा जमाअ़त अदा की फिर जूं ही उस मस्जिद से निकले कि फिर एक दिल हिला देने वाला झटका आया और मस्जिद का बक़िय्या ह़िस्सा भी एक **धड़ाके** के साथ ज़मीन पर तशरीफ़ ले आया और اَلْحَمْدُ لِلّٰه عَزَّوَجَلَّ यूं दूसरी बार **आ़शिक़ाने रसूल** की जान मह़फ़ूज़ रही। "क़ौमी अख़्बार" के एक कॉलम निगार ने येह वाक़िआ़ बयान करने के बा'द लिखा था,

"येह क़ाफ़िला अच्छी निय्यत से (या'नी नेकी की दा'वत की धूमें मचाने के लिये) **गया था** (शायद) **इसी लिये अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ **ने इन्हें बचा लिया ।"**

ज़ल्ज़ला आए गर, आ के छा जाए गर सिर्फ़ हक़ से डरें क़ाफ़िले में चलो
ज़ल्ज़ला आम था हर सू कोहराम था इस से लो इब्रतें क़ाफ़िले में चलो

صَلُّوْا عَلَی الْحَبِیْب ! صَلَّی اللّٰهُ تَعَالٰی عَلٰی مُحَمَّد

﴾68﴿ सूखी रोटी का टुकड़ा

अपने दौर के जय्यिद आ़लिम ह़ज़रते सय्यिदुना **ख़लील बसरी** عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللّٰهِ الْقَوِی की ख़िदमत में "अहवाज़" से अमीर (ह़ाकिम) सुलैमान बिन अ़ली का नुमायन्दए ख़ुसूसी ह़ाज़िर हो कर अ़र्ज़ गुज़ार हुवा, शहज़ादों की ता'लीमो तरबियत के लिये ह़ाकिम ने आप को शाही दरबार में त़लब फ़रमाया है । ह़ज़रते सय्यिदुना **ख़लील बसरी** عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللّٰهِ الْقَوِی ने सूखी रोटी का टुकड़ा दिखाते हुए जवाब इर्शाद फ़रमाया, "मेरे पास जब तक येह सूखी रोटी का टुकड़ा मौजूद है मुझे दरबारे शाही की चाकरी की कोई ह़ाजत नहीं ।" (रूह़ानी हिकायात, हिस्सए अव्वल, स. 106, रूमी पब्लीकेशन्ज़)

अल्लाह عَزَّوَجَلَّ **की उन पर रह़मत हो और उन के सदक़े हमारी मग़्फ़िरत हो ।**

जुस्त्जू में क्यूं फिरें माल की मारे मारे
हम तो सरकार صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم *के टुकड़ों पे पला करते हैं*

صَلُّوْا عَلَی الْحَبِیْب ! صَلَّی اللّٰهُ تَعَالٰی عَلٰی مُحَمَّد

वज़ीरे आ'ज़म का दा'वत नामा : प्यारे प्यारे इस्लामी भाइयो ! देखा आप ने **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ के नेक बन्दे अरबाबे इक्तिदार से किस क़दर दूर रहते हैं जब कि आज हम जैसों को बिलफ़र्ज़ सद्र या **वज़ीरे आ'ज़म का दा'वत नामा** मिल जाए तो हज़ार मस्रूफ़ियात और हज़ार ज़रूरी मुआमलात छोड़ दें और ख़्वाह हज़ार किलो मीटर का सफ़र तै करना पड़े, वोह भी कर के ख़ूब उ़म्दा लिबास पहने कशां कशां एसेम्बली हॉल के रू बरू पहुंच कर सब से पहले लाइन में खड़े हो जाएं ! हाए नफ़्स परवरी !!! बिला सख़्त मजबूरी के मह़ज़ दुन्यवी मफ़ादात और हुब्बे जाह की ख़ातिर अरबाबे इक्तिदार व अफ़्सरान वग़ैरा के पीछे फिरना, इन की दा'वतों में शरीक होना, इन से तमग़ा जात ह़ासिल करना, مَعَاذَ اللّٰه عَزَّوَجَلَّ इन के साथ तसावीर बनवाना फिर इन तस्वीरों को संभाल कर रखना, लोगों को दिखाते फिरना उन की फ्रेम बनवाना और उस को घर या दफ़्तर में लटकाना वग़ैरा वग़ैरा ह़रकतें अपने अन्दर हलाकतें तो रखती हैं मगर इन में बरकतें नज़र नहीं आतीं। हां अहम दीनी मफ़ाद के लिये या उन के शर से बचने के लिये अगर उन के पास जाना पड़ जाए तो और बात है कि जो मजबूर है वोह मा'ज़ूर है। मन्क़ूल है,

بِئْسَ الْفَقِيْرُ عَلٰى بَابِ الْاَ مِيْرِ

(या'नी फ़ुक़रा में वोह शख़्स बहुत बुरा है जो अमीरों के दरवाज़े पर जाए) और

نِعمَ الْاَ مِيْرُ عَلٰى بَابِ الْفَقِيْرِ

(या'नी उमरा में से वोह शख़्स बड़ा अच्छा है जो फ़क़ीरों के दर पर ह़ाज़िर हो)

(शैत़ान की हिकायात, स. 71 ता 72, फ़रीद बुक स्टॉल)

दोनों जहां में काम्याबी : बहर हाल शैतान की चाल बहुत ख़तरनाक होती है। बसा अवक़ात वोह नफ़्सानी ख़्वाहिशात को दीनी मफ़ादात बावर करवा कर भी अरबाबे इक्तिदार के क़दमों में डाल देता है। इसी सबब से **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ के नेक और मोहतात बन्दे उन से दूर रहने में ही आफ़िय्यत समझते हैं। दूसरों के माल पर नज़र रखने के बजाए जो क़नाअत इख़्तियार करे वोह दोनों[2] जहां में काम्याब है। अरबाबे इक्तिदार नीज़ ज़ालिमों और क़ाज़ियों से अहलुल्लाह किस क़दर बेज़ार रहते थे इस का अन्दाज़ा इस हिकायत से लगाया जा सकता है चुनान्चे,

﴾69﴿ सरकार का बेदारी में 75 बार दीदार

हज़रते अ़ल्लामा अ़ब्दुल वह्हाब शा'रानी قُدِّسَ سِرُّہُ الرَّبَّانِی फ़रमाते हैं, **हज़रते** अ़ल्लामा जलालुद्दीन सुयूतिश्शाफ़ेई رَحْمَۃُ اللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہ का एक मक्तूब आप के एक रफ़ीक़ शैख़ अ़ब्दुल क़ादिर शाज़ली के पास हज़रते सय्यिदुना अ़ली ख़वास رَحْمَۃُ اللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہ ने देखा। जो उस शख़्स के जवाब में लिखा था जिस ने बादशाह के पास सिफ़ारिश के लिये चलने की दरख़्वास्त लिखी थी। उस मक्तूब के जवाब में **हज़रते** अ़ल्लामा जलालुद्दीन सुयूतिश्शाफ़ेई رَحْمَۃُ اللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہ ने तहरीर फ़रमाया था, "मेरे भाई ! اَلْحَمْدُ لِلّٰہ عَزَّوَجَلَّ मैं इस वक़्त तक हुज़ूरे अक़्दस صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم की ख़िदमते बा बरकत में 75 मरतबा बेदारी की हालत में बिल मुशाफ़ा

हाज़िर हो चुका हूं। अगर मुझे बादशाह व उमरा के पास जाने में नबिय्ये करीम, रऊफ़ुर्रहीम عَلَيْهِ اَفْضَلُ الصَّلٰوةِ وَالتَّسْلِيْم की ज़ियारत से महरूमी का ख़ौफ़ न होता तो ज़रूर क़ल्ए में जाता और बादशाह से तुम्हारी सिफ़ारिश करता। मैं एक ख़ादिमे हदीस हूं, जिन हदीसों को मुहद्दिसीने किराम ने अपनी तहक़ीक़ में ज़ईफ़ कहा है उन की तस्हीह के लिये हुज़ूरे अकरम صَلَّى اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم की तरफ़ मोहताज हूं और बिला शुबा इस का नफ़्अ़ तुम्हारे ज़ाती नफ़्अ़ पर तरजीह रखता है।" (مِيزَانُ الشَّرِيعَةِ الْكُبرى ص ٤٨)

प्यारे प्यारे इस्लामी भाइयो ! देखा आप ने हुक्काम के पास आने जाने में रूहानिय्यत का कितना अ़ज़ीम नुक़्सान हो सकता है ! इस ज़िम्न में एक और **हिकायत** मुलाहज़ा फ़रमाइये जिस में हाकिम (गवर्नर) के पास जाने के सबब रूहानिय्यत को सख़्त नुक़्सान पहुंचने का वाज़ेह बयान है चुनान्चे

﴾70﴿ ना'त ख़्वान को क्यूं नुक़्सान पहुंचा

हज़रते अ़ल्लामा अ़ब्दुल वह्हाब शा'रानी قُدِّسَ سِرُّهُ الرَّبَّانِي फ़रमाते हैं, हज़रते सय्यिदुना **मुहम्मद बिन तरीन** मद्दाहे रसूल صَلَّى اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم (या'नी ना'त ख़्वान) के मुतअ़ल्लिक़ मश्हूर है कि उन्हें जागते में **हुज़ूर** ताजदारे रिसालत صَلَّى اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم की आमने सामने ज़ियारत होती थी। जब वोह सुब्ह के वक़्त रौज़ए अत़्हर पर हाज़िर हुए तो **हुज़ूरे अन्वर** صَلَّى اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने उन से अपनी क़ब्रे मुनव्वर में से कलाम फ़रमाया। येह ना'त ख़्वान अपने इसी मक़ाम पर फ़ाइज़ रहे ह़त्ता

कि एक शख़्स ने इन से दरख़्वास्त की, कि शहर के हाकिम के पास उस की सिफ़ारिश करें। आप رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰى عَلَيْه हाकिम के पास पहुंचे और सिफ़ारिश की। उस हाकिम ने आप رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰى عَلَيْه को अपनी मस्नद पर बिठाया। तब से आप رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰى عَلَيْه की ज़ियारत का सिल्सिला ख़त्म हो गया। फिर येह हमेशा **हुज़ूरे अक्दस** صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم की बारगाह में ज़ियारत की तमन्ना पेश करते रहे मगर ज़ियारत न हुई। एक मरतबा एक शे'र अ़र्ज़ किया तो दूर से ज़ियारत हुई, **हुज़ूरे अकरम** صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने इर्शाद फ़रमाया, **"ज़ालिमों की मस्नद पर बैठने के साथ मेरी ज़ियारत चाहता है इस का कोई रास्ता नहीं।"** ह़ज़रते सय्यिदुना अ़ली ख़व्वास رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰى عَلَيْه फ़रमाते हैं कि फिर हमें उन बुज़ुर्ग के मुतअ़ल्लिक़ ख़बर न मिली कि उन को शहन्शाहे नुबुव्वत صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم की ज़ियारत हुई या नहीं, ह़त्ता कि उन का विसाल हो गया। (مِيزَانُ الشَّرِيْعَةِ الكُبرىٰ ص ٤٨)

अल्लाह عَزَّوَجَلَّ **की उन पर रह़मत हो और उन के सदक़े हमारी मग़फ़िरत हो।**

प्यारे प्यारे इस्लामी भाइयो! जो लोग ज़ाती मफ़ाद की ख़ातिर अरबाबे इक़्तिदार के पीछे फिरते, कभी किसी वज़ीर या सद्र वग़ैरा के यहां मौक़अ़ मिले तो उड़ते हुए ह़ाज़िर हो जाते, सद्र तमग़ा पहना दे या हाथ मिला ले तो उस की तस्वीर आवेज़ां करते, दूसरों को दिखाते और उस को बहुत बड़ा ए'ज़ाज़ तसव्वुर करते हैं उन के लिये गुज़श्ता हिकायत में बहुत कुछ दर्से इब्रत है।

اَلْعَاقِلُ تَكْفِيْهِ الْإِشَارَةُ या'नी अ़क़्ल मन्द के लिये इशारा काफ़ी है,

फ़रमाने मुस्त़फ़ा صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم : जिस ने मुझ पर एक बार दुरूदे पाक पढ़ा अल्लाह عَزَّوَجَلَّ उस पर दस रह़मतें भेजता है। (مسلم)

किस चीज़ की कमी है मौला तेरी गली में
दुन्या तेरी गली में उ़क़्बा तेरी गली में
तख़्ते सिकन्दरी पर वोह थूकते नहीं हैं
बिस्तर लगा हुवा है जिन का तेरी गली में

صَلُّوْا عَلَی الْحَبِیْب ! صَلَّی اللهُ تَعَالٰی عَلٰی مُحَمَّد

﴾71﴿ शाही दस्तर ख़्वान का वबाल

ह़ज़रते सय्यिदुना क़ाज़ी शरीक رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰی عَلَيْه बहुत बड़े आ़लिम व मुह़द्दिस गुज़रे हैं। आप رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰی عَلَيْه अरबाबे इक़्तिदार से मेलजोल रखने से काफ़ी कतराते थे। एक बार ख़लीफ़ए बग़दाद महदी अ़ब्बासी ने आप رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰی عَلَيْه को दरबार में त़लब किया और ख़ूब इसरार किया कि मेरी तीन[3] बातों में से एक को इख़्तियार करना ही पड़ेगा। ﴾1﴿ क़ाज़ी (या'नी जज) का ओ़ह्दा क़बूल कर लीजिये या ﴾2﴿ मेरे शहज़ादों को ता'लीम दीजिये या ﴾3﴿ कम अज़् कम मेरे साथ खाना ही तनावुल फ़रमा लीजिये। थोड़ी देर ग़ौरो फ़िक्र के बा'द फ़रमाया, आप के साथ खाना खा लेना बाक़ी कामों से निस्बतन आसान है। चुनान्चे दा'वत क़बूल फ़रमा ली। ख़लीफ़ा ने बावर्ची को उ़म्दा से उ़म्दा खाने तय्यार करने का हुक्म दिया। ह़ज़रते सय्यिदुना क़ाज़ी शरीक رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰی عَلَيْه ने बादशाह के साथ **शाही दस्तर ख़्वान** पर खाना तनावुल फ़रमाया। शाही बावर्ची ने आप رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰی عَلَيْه की ख़िदमत में अ़र्ज़ की, हुज़ूर ! अब आप की ख़ैर नहीं ! या'नी आप अब शाही जाल में फंस चुके हैं इस से कभी भी रिहाई नहीं पा सकते।" चुनान्चे ऐसा ही हुवा,

फ़रमाने मुस्तफ़ा صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰی عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم: उस शख़्स की नाक ख़ाक आलूद हो जिस के पास मेरा ज़िक्र हो और वोह मुझ पर दुरूदे पाक न पढ़े। (ترمذی)

बादशाह के साथ "खाना" खाने के बा'द शहज़ादों के उस्ताज़ भी बन गए और ओ़ह्दए क़ज़ा भी क़बूल फ़रमा लिया। (تاریخ الخلفاء ص ۲۲۱)

अल्लाह عَزَّوَجَلَّ की उन पर रह़मत हो और उन के सदक़े हमारी मग़्फ़िरत हो।

दो तिहाई दीन चला जाता है : प्यारे प्यारे इस्लामी भाइयो ! अरबाबे इक़्तिदार और सरमाया दार लोगों से दूर रहने ही में आ़फ़िय्यत है। उन की दा'वतें खाने और उन के तह़ाइफ़ क़बूल करने में आख़िरत के लिये शदीद ख़त़रात हैं, कि उन की दा'वतें खाने और तोह़फ़े क़बूल करने वाले का उन की ख़ुशामद करने और ख़्वाह म ख़्वाह हां में हां मिलाने से बचना बहुत ही मुश्किल होता है। ह़दीस शरीफ़ में इर्शाद हुवा, "जो किसी ग़नी (या'नी मालदार) की इस के ग़ना (या'नी मालदारी) के सबब तवाज़ोअ़ करे उस का दो तिहाई दीन जाता रहा।" (کشف الخفاء ج۲ص۲۱۵ حدیث ۲۴۴۲)

आ'ला ह़ज़रत मौलाना अह़मद रज़ा ख़ान عَلَيْهِ رَحْمَةُ الرَّحْمٰن इस ह़दीसे पाक के तह़त फ़रमाते हैं, "माले दुन्या के लिये तवाज़ोअ़ रू बख़ुदा (या'नी **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ की ख़ात़िर तवाज़ोअ़ करना) नहीं (लिहाज़ा) येह ह़राम हुई।" (ज़ैलुल मुद्दआ़अ लि अह़सनिल विआ़अ, स. 12)

ख़ुशामद की मज़म्मत : मत़लब येह है कि किसी दुन्यादार मालदार आदमी की बिला इजाज़ते शरई मह़ज़ उस की दौलत के सबब तवाज़ोअ़ करना ह़राम है। अफ़्सोस सद करोड़ अफ़्सोस ! येह गुनाह आजकल बहुत ही ज़ियादा आ़म है। "मालदार आदमी" आ़म लोगों के लिये

फ़रमाने मुस्त़फ़ा صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم : जो मुझ पर दस मरतबा दुरूदे पाक पढ़े अल्लाह عَزَّوَجَلَّ उस पर सो रह़मतें नाज़िल फ़रमाता है। (طبرانی)

बाइसे इम्तिह़ान होता है क्यूं कि दौलत की कसरत के सबब उस का एक ख़ास रो'ब होता है अगर्चे वोह एक "फूटी बादाम" तक न दे फिर भी नफ़्सियाती असर से मग़लूब हो कर ख़्वाह म ख़्वाह उस के साथ ख़ाज़िआना व ख़ुशामदाना अन्दाज़ से लोग पेश आते हैं। सरकारे आ'ला ह़ज़रत के वालिदे गिरामी रईसुल मुतकल्लिमीन ह़ज़रते अ़ल्लामा मौलाना नक़ी ख़ान عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللهِ الْمَنَّان नक़्ल करते हैं, ह़दीस शरीफ़ में आया है, "मुसल्मान ख़ुशामदी नहीं होता।" और झूटी झूटी ता'रीफ़ें इस से भी बदतर, कि एक तो तमल्लुक़ (या'नी ख़ुशामद) दूसरे किज़्ब (या'नी झूट) तीसरे उस शख़्स का नुक़्सान कि मुंह पर ता'रीफ़ करने को ह़दीस में गरदन का काटना फ़रमाया और इर्शाद हुवा, "मद्दाह़ों (या'नी मुंह पर ता'रीफ़ करने वालों) के मुंह में ख़ाक झोंक दो" ख़ुसूसन अगर मम्दूह़ (या'नी जिस की ता'रीफ़ की गई) फ़ासिक़ हो, कि ह़दीस में फ़रमाया, "जब फ़ासिक़ की मद्ह़ (या'नी ता'रीफ़) की जाती है, रब तबारक व तआ़ला ग़ज़ब फ़रमाता है और अ़र्शुर्रह़मान हिल जाता है।"

(अह़सनुल विआ़अ लि आदाबिदुआ़अ, स. 154)

صَلُّوا عَلَى الْحَبِيْب ! صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلٰى مُحَمَّد

﴾72﴿ मालीदे का सवाब भी मिला

एक बुज़ुर्ग رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰی عَلَيْه फ़रमाते हैं मैं ने अपनी मर्हूमा फूफीजान को ख़्वाब में देख कर ह़ाल दरयाफ़्त किया तो कहा, "ख़ैरिय्यत से हूं अपने आ'माल का पूरा पूरा बदला मिला ह़त्ता कि उस **मालीदे का सवाब**

भी मिला जो मैं ने एक दिन ग़रीब को **खिलाया** था।" (شرحُ الصدورص ۲۷۸)

अल्लाह عَزَّوَجَلَّ की उन पर रहमत हो और उन के सदक़े हमारी मग़्फ़िरत हो।

صَلُّوْا عَلَى الْحَبِيْب ! صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلٰى مُحَمَّد

﴾73﴿ अंगूर का दाना

प्यारे प्यारे इस्लामी भाइयो ! देखा आप ने ! **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ किसी की ज़र्रा बराबर नेकी को भी ज़ाएअ़ नहीं फ़रमाता ब ज़ाहिर कैसी ही मा'मूली चीज़ हो उसे राहे ख़ुदा عَزَّوَجَلَّ में पेश करने में शरमाना नहीं चाहिये। उम्मुल मुअमिनीन हज़रते सय्यिदतुना आइशा सिद्दीक़ा رَضِىَ اللّٰهُ تَعَالٰى عَنْهَا ने एक बार साइल को एक अंगूर का दाना अ़ता फ़रमाया। किसी देखने वाले ने तअ़ज्जुब का इज़्हार किया तो फ़रमाया, इस (अंगूर) में से तो कई ज़र्रे निकल सकते हैं जब कि **अल्लाह** तबारक व तआ़ला पारह 30 **सूरतुज़्ज़िलज़ाल** की सातवीं आयत में फ़रमाता है : فَمَنْ يَّعْمَلْ مِثْقَالَ ذَرَّةٍ خَيْرًا يَّرَهٗ ؕ **तरजमए कन्ज़ुल ईमान :** तो जो एक ज़र्रा भर भलाई करे उसे देखेगा।" (پ ۳۰ الزلزال ۷) **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ की रिज़ा के लिये भूके को मालीदा या कोई सा हलाल व तय्यिब खाना खिलाना बहुत बड़े सवाब का काम है। जैसा कि सरदारे मक्कए मुकर्रमा, सुल्ताने मदीनए मुनव्वरह صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم का फ़रमाने अ़ज़मत निशान है, जिस ने भूके को खाना **खिलाया** यहां तक कि सेर हो गया, उसे (या'नी खिलाने वाले को) **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ अ़र्श के साए में जगह अ़ता फ़रमाएगा। (مکارم الاخلاق للطبرانی ص ۲۷۲)

صَلُّوْا عَلَى الْحَبِيْب ! صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلٰى مُحَمَّد

﴾74﴿ ख़्वाब में दम की बरकत

प्यारे प्यारे इस्लामी भाइयो ! भूकों को खिलाने का जज़्बा पाने और सुन्नतों भरी ज़िन्दगी अपनाने के लिये **आ़शिक़ाने रसूल** के साथ **दा'वते इस्लामी** के सुन्नतों भरे **मदनी क़ाफ़िलों** में सफ़र को अपना मा'मूल बना लीजिये। रूह़ानी बरकतों के साथ साथ जिस्मानी फ़ाएदों से भी اِنْ شَآءَاللّٰه عَزَّوَجَلَّ मालामाल होंगे। चुनान्चे एक इस्लामी भाई का कुछ इस त़रह़ बयान है, कि मेरा भान्जा अल्सर की वज्ह से सख़्त तक्लीफ़ में था, डोक्टर्ज़ भी इलाज से आ़जिज़ आ चुके थे। उस ने सुन्नतों की तरबियत के लिये **आ़शिक़ाने रसूल** के साथ **मदनी क़ाफ़िले** में सफ़र किया, वापसी पर त़बीअ़त मज़ीद बिगड़ चुकी थी, उस की तक्लीफ़ देखी न जाती थी, उस ने बताया कि मैं ने येह ज़ेहन बनाया था कि **मदनी क़ाफ़िले** में न ख़ुसूसी आराम का मुत़ालबा करूंगा न ही परहेज़ी खाना मांगूंगा लिहाज़ा जो भी तीखा फीका मिल जाता वोह खा लेता था। उस इस्लामी भाई का कहना है कि जब मेरा भान्जा रात सोया तो उस ने ख़्वाब में एक उ़म्र रसीदा **मुबल्लिग़े दा'वते इस्लामी** की ज़ियारत की, उस मुबल्लिग़ ने कहा, मैं तुम से बहुत ख़ुश हूं। फिर शफ़्क़त के साथ त़बीअ़त पूछी, तो मेरे भान्जे ने अपनी शदीद बीमारी की शिकायत

फ़रमाने मुस्तफ़ा صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم : उस शख़्स की नाक ख़ाक आलूद हो जिस के पास मेरा ज़िक्र हो और वोह मुझ पर दुरूदे पाक न पढ़े। (ترمذی)

की। येह **सुन कर उस मुबल्लिग़ ने सीने पर उंगली रख कर दम कर दिया।** जब मेरा भान्जा सुब्ह बेदार हुवा तो اَلْحَمْدُلِلّٰه عَزَّوَجَلَّ मुकम्मल तौर पर सिह्हतयाब हो चुका था।

है शिफ़ा ही शिफ़ा मरह़बा ! मरह़बा !
आ के ख़ुद देख लें क़ाफ़िले में चलो
लूट लें रह़मतें, ख़ूब लें बरकतें
ख़्वाब अच्छे दिखें क़ाफ़िले में चलो

صَلُّوْا عَلَى الْحَبِيْب ! صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلٰى مُحَمَّد

﴾75﴿ अनोखी शहज़ादी

ह़ज़रते सय्यिदुना शैख़ शाह किरमानी قُدِّسَ سِرُّهُ النُّوْرَانِی की शहज़ादी जब शादी के लाइक़ हो गई और पड़ोसी मुल्क के बादशाह के यहां से रिश्ता आया तब भी आप ने ठुकरा दिया और मस्जिद मस्जिद घूम कर किसी पारसा नौ जवान को तलाशने लगे। एक नौ जवान पर उन की निगाह पड़ी जिस ने अच्छी त़रह़ नमाज़ अदा की और गिड़गिड़ा कर दुआ मांगी। शैख़ ने उस से पूछा, तुम्हारी शादी हो चुकी है ? उस ने नफ़ी में जवाब दिया। फिर पूछा, क्या निकाह़ करना चाहते हो ? लड़की क़ुरआने मजीद पढ़ती है, नमाज़ रोज़े की पाबन्द है और ख़ूब सीरत है। उस ने कहा, भला मेरे साथ कौन रिश्ता करेगा ! शैख़ ने फ़रमाया, मैं करता हूं लो येह कुछ दिरहम, एक दिरहम की **रोटी,** एक दिरहम का **सालन** और एक

दिरहम की **ख़ुश्बू** ख़रीद लाओ। इस त़रह़ शाह किरमानी قُدِّسَ سِرُّہُ النُّوْرَانِی ने अपनी दुख़्तरे नेक अख़्तर का निकाह़ उस से पढ़ा दिया। **दुल्हन** जब **दूल्हा** के घर आई तो उस ने देखा पानी की सुराह़ी पर एक **रोटी** रखी हुई है। उस ने पूछा, येह रोटी कैसी है? **दूल्हा** ने कहा, येह कल की बासी रोटी है मैं ने इफ़्त़ार के लिये रखी है। येह सुन कर वोह वापस होने लगी। येह देख कर **दूल्हा** बोला, मुझे मा'लूम था कि शैख़ शाह किरमानी قُدِّسَ سِرُّہُ النُّوْرَانِی की शहज़ादी मुझ ग़रीब इन्सान के घर नहीं रुक सकती। **दुल्हन** बोली, मैं आप की मुफ़्लिसी के बाइ़स नहीं, इस लिये लौट कर जा रही हूं कि रब्बुल आ़लमीन عَزَّوَجَلَّ पर आप का यक़ीन बहुत कमज़ोर नज़र आ रहा है जभी तो कल के लिये रोटी बचा कर रखते हैं, मुझे तो अपने बाप पर ह़ैरत है कि उन्हों ने आप को पाकीज़ा ख़स्लत और सालेह़ कैसे कह दिया! **दूल्हा** येह सुन कर बहुत शरमिन्दा हुवा और उस ने कहा, इस कमज़ोरी से मा'ज़िरत ख़्वाह हूं। **दुल्हन** ने कहा, अपना उ़ज़्र आप जानें अलबत्ता मैं ऐसे घर में नहीं रुक सकती, जहां एक वक़्त की ख़ूराक जम्अ़ रखी हो, अब या तो मैं रहूंगी या रोटी। **दूल्हा** ने फ़ौरन जा कर रोटी ख़ैरात कर दी और ऐसी दरवेश ख़स्लत **अनोखी शहज़ादी** का शोहर बनने पर **अल्लाह** तआ़ला का शुक्र अदा किया।

(روض الریاحین ص ۱۰۳)

अल्लाह عَزَّوَجَلَّ की उन पर रह़मत हो और उन के सदके़ हमारी मग़्फ़िरत हो।

प्यारे प्यारे इस्लामी भाइयो ! देखा आप ने ! मुतवक्किलीन की भी क्या ख़ूब अदाएं होती हैं। शहज़ादी होने के बा वुजूद ऐसा ज़बर दस्त **तवक्कुल** कि कल के लिये खाना बचाना गवारा ही नहीं ! येह सब यक़ीने कामिल की बहारें हैं कि जिस ख़ुदा عَزَّوَجَلَّ ने आज **खिलाया** है वोह आयिन्दा कल भी खिलाने पर यक़ीनन क़ादिर है। चरिन्दे परिन्दे वग़ैरा कौन सा बचा कर रखते हैं ! एक वक़्त का खा लेने के बा'द दूसरे वक़्त के लिये बचा कर रखना उन की फ़ित्रत में ही नहीं। मुर्ग़ी का तवक्कुल मुलाहज़ा हो, उस को पानी दीजिये। हस्बे ज़रूरत पी चुकने के बा'द पियाले पर पाउं रख कर पानी बहा देगी। गोया येह **ख़ामोश मुबल्लिग़ा** है ! और हमें नसीहत कर रही है कि ऐ लोगो ! बरसों का जम्अ कर लेने के बा वुजूद भी तुम्हें क़रार नहीं आता ! जब कि मैं एक बार पी लेने के बा'द दोबारा के लिये बे फ़िक्र हो जाती हूं कि जिस ने अभी पानी पिलाया है वोह बा'द में भी पिला देगा।

﴾76﴿ इमाम बुख़ारी के उस्ताज़

हज़रते सय्यिदुना इमाम बुख़ारी عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللّٰهِ الْبَارِی के उस्ताज़े गिरामी हज़रते सय्यिदुना **क़ुबैसा** बिन उक़्बा رَحْمَةُ اللّٰهِ تَعَالٰى عَلَيْه से मिलने के लिये एक रोज़ कोहिस्तानी अ़लाक़े का शहज़ादा अपने ख़ुद्दाम के साथ हाज़िर हुवा। आप رَحْمَةُ اللّٰهِ تَعَالٰى عَلَيْه ने मकान से निकलने में काफ़ी देर लगाई। इस पर उस के ख़ादिमों ने पुकार कर कहा, हुज़ूर ! आप رَحْمَةُ اللّٰهِ تَعَالٰى عَلَيْه के दरवाज़े पर

मलिकुल जबल (या'नी पहाड़ के बादशाह) का शहज़ादा खड़ा है और आप हैं कि घर से निकलते नहीं ! येह सुन कर ह़ज़रते सय्यिदुना क़ुबैसा رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰى عَلَيْه **चन्द रोटी के सूखे टुकड़े** लिये बाहर तशरीफ़ लाए और दिखाते हुए फ़रमाया, जो शख़्स दुन्या में इतने ही पर क़नाअ़त कर के राज़ी हो चुका हो उस को **मलिकुल जबल** से क्या काम ? ख़ुदा عَزَّوَجَلَّ की क़सम ! मैं इस से बात भी नहीं करूंगा। येह फ़रमा कर दरवाज़ा बन्द कर लिया।

(تذكِرةُ الحُفّاظ ج ٣ ص ٢٧٤)

अल्लाह عَزَّوَجَلَّ की उन पर रह़मत हो और उन के सदक़े हमारी मग़्फ़िरत हो।

صَلُّوْا عَلَى الْحَبِيْب! صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلٰى مُحَمَّد

क़नाअ़त में इ़ज़्ज़त है : प्यारे प्यारे इस्लामी भाइयो ! जो सादगी अपनाए और सादा ग़िज़ा व लिबास पर क़नाअ़त करे, उस को न दौलत की ह़ाजत होती है न दौलत मन्द की। माल का लालच अच्छा नहीं होता, जो इस में मुब्तला हो जाता है वोह नुक़्सान में रहता है, जो लालची होता है वोह कभी भी सेर नहीं होता, हर वक़्त उस पर धन कमाने की धुन सुवार रहती है यहां तक कि मौत आ पहुंचती है। चुनान्चे ह़ज़रते मौलाए काएनात, अ़लिय्युल मुर्तज़ा शेरे ख़ुदा كَرَّمَ اللّٰهُ تَعَالٰى وَجْهَهُ الْكَرِيْم फ़रमाते हैं, عَزَّ مَنْ قَنَعَ وَ ذَلَّ مَنْ طَمَع या'नी जिस ने क़नाअ़त की उस ने इ़ज़्ज़त पाई और जिस ने लालच किया ज़लील हुवा।"

(रूह़ानी हिकायात, हिस्सए अव्वल, स. 106, रूमी पब्लीकेशन्ज़)

दुन्या को छोड़ दो : **हज़रते** सय्यिदुना अबू हुरैरा رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْهُ का बयान है, नबिय्ये रहमत, शफ़ीए उम्मत, शहन्शाहे नुबुव्वत, ताजदारे रिसालत صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने मुझ से फ़रमाया, ऐ अबू हुरैरा (رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْهُ) जब तुम्हें सख़्त भूक लगे तो एक रोटी और पानी के एक पियाले पर गुज़ारा करो और कह दो कि मैं दुन्या और अहले **दुन्या को छोड़ता हूं।**

(الکامل فی ضعفاء الرجال ج۸ص ۱۸۳)

दूसरों के माल से मायूस हो जाओ : **हज़रते** सय्यिदुना अबू अय्यूब अन्सारी رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْهُ से मरवी है कि एक दीहाती ने सरकारे मदीना صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم की ख़िदमत में हाज़िर हो कर अ़र्ज़ की, **या रसूलल्लाह** صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ! मुझे एक मुख़्तसर वसिय्यत फ़रमाइये ! फ़रमाया, "जब नमाज़ पढ़ो तो ज़िन्दगी की आख़िरी नमाज़ (समझ कर) पढ़ो और हरगिज़ ऐसी बात न करो जिस से तुम्हें कल मा'ज़िरत करना पड़े और लोगों के पास जो कुछ है उस से ना उम्मीद हो जाओ।"

(سنن ابن ماجه ج٤ص ٤٥٥ حديث ٤١٧١)

किसी का माल न ही लेना भला है : **प्यारे प्यारे इस्लामी भाइयो** ! दूसरे के माल के आसरे पर रहना कि वोह मुझ से बहुत महब्बत करता है कि ख़ुद ही मुझे ऑफ़र भी करता रहता है कि जब भी ज़रूरत हो, कह दिया करो। इस लिये कभी ज़रूरत पड़ी तो उस से मांग लूंगा, मन्अ़ नहीं करेगा वग़ैरा उम्मीदें बहुत ही खोखली हैं कि आदमी का

दिल बदलता रहता है। याद रखिये ! "देने वाला इन्सान" "लेने वाले" से मुतअस्सिर नहीं हो सकता अलबत्ता अगर कोई देने आए और आप क़बूल नहीं करेंगे तो ज़रूर मुतअस्सिर होगा। हुज्जतुल इस्लाम ह़ज़रते सय्यिदुना इमाम मुह़म्मद ग़ज़ाली عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللّٰهِ الْوَالِى नक़्ल करते हैं, **ऐश** चन्द घड़ियों का है जो गुज़र जाएगा और चन्द दिनों में ह़ालत बदल जाएगी। अपनी ज़िन्दगी में क़नाअ़त इख़्तियार कर, राज़ी रहेगा। और अपनी ख़्वाहिश तर्क कर दे, आज़ादी के साथ ज़िन्दगी गुज़ारेगा। कई मरतबा मौत सोने, याक़ूत और मोतियों के सबब (डाकूओं के ज़रीए) आती है। (اِحیاءُ العُلوم ج ٣ ص ٢٩٨)

अल्लाह عَزَّوَجَلَّ की उन पर रह़मत हो और उन के सदक़े हमारी मग़्फ़िरत हो।

किसी का मोह़ताज न हो : ह़ज़रते सय्यिदुना मुह़म्मद बिन वासेअ़ رَحْمَةُ اللّٰهِ تَعَالٰی عَلَيْه ख़ुश्क रोटी को पानी के साथ तर कर के खाते थे और फ़रमाते, जो शख़्स इस पर क़नाअ़त करता है वोह किसी का मोह़ताज नहीं होता। (ایضاً ص ٢٩٥)

अल्लाह عَزَّوَجَلَّ की उन पर रह़मत हो और उन के सदक़े हमारी मग़्फ़िरत हो।

पेट बालिश्त भर ही तो है : ह़ज़रते सय्यिदुना समीत बिन इजलान رَحْمَةُ اللّٰهِ تَعَالٰی عَلَيْه फ़रमाते हैं, ऐ इन्सान ! तेरा पेट बहुत मुख़्तसर या'नी फ़क़त़ एक बालिश्त मुकअ़्अ़ब (या'नी एक बालिश्त चोरस, चोकोर) ही तो है फिर वोह तुझे दोज़ख़ में क्यूं ले जाए ? किसी दाना से पूछा गया, आप

का माल क्या है ? उन्हों ने जवाब दिया, **ज़ाहिर** में अच्छी हालत में रहना, बातिन में मियाना रवी इख़्तियार करना और जो कुछ लोगों के पास है उस से मायूस होना। (ایضاً ص ۲۹۸)

अल्लाह عَزَّوَجَلَّ की उन पर रहमत हो और उन के सदक़े हमारी मग़्फ़िरत हो।

सरकारे वाला तबार, हम बे कसों के मददगार, शफ़ीए रोज़े शुमार, दो आलम के मालिको मुख़्तार, हबीबे परवर दगार صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم का फ़रमाने आलीशान है : आदमी बूढ़ा हो जाता है और उस की दो ख़स्लतें जवान हो जाती हैं माल की हिर्स और उम्र की हिर्स।" (صحیح مسلم ص ۵۲۱ حدیث ۱۰۴۷)

सिर्फ़ क़ब्र की मिट्टी ही से पेट भरेगा : सरकारे मदीनए मुनव्वरह, सरदारे मक्कए मुकर्रमा صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم का फ़रमाने आलीशान है, अगर इन्सान के लिये माल की दो[2] वादियां हों तो वोह तीसरी[3] वादी की तमन्ना करेगा और इन्सान के पेट को तो सिर्फ़ मिट्टी ही भर सकती है और जो शख़्स तौबा करता है **अल्लाह** तआला उस की तौबा क़बूल फ़रमाता है।" (صحیح مسلم ص ۵۲۲ حدیث ۱۰۵۰)

सेठ जी को फ़िक्र थी इक इक के दस[10] दस[10] कीजिये

मौत आ पहुंची कि मिस्टर जान वापस कीजिये

صَلُّوا عَلَى الْحَبِيْب ! صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلٰى مُحَمَّد

फ़रमाने मुस्तफ़ा صَلَّى اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم : मुझ पर दुरूदे पाक की कसरत करो बेशक तुम्हारा मुझ पर दुरूदे पाक पढ़ना तुम्हारे लिये पाकीज़गी का बाइस है। (ابو یعلی)

﴾77﴿ सो100 रोटियां

हाफ़िज़ुल हदीस हज़रते सय्यिदुना हज्जाज बग़दादी عَلَیْہِ رَحمَۃُ اللّٰہِ الْہَادِی जब तहसीले इल्मे दीन के लिये सफ़र पर रवाना हुए तो वालिदए मोहतरमा رَحْمَۃُ اللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہَا ने सो100 अदद कुलचे (या'नी ख़मीरी रोटियां) एक मिट्टी के घड़े में भर कर साथ कर दिये। आप अज़ीम मुहद्दिस हज़रते सय्यिदुना शबाबा رَحْمَۃُ اللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہ की ख़िदमते बा बरकत में हाज़िर हो कर इल्मे हदीस पढ़ने में मश्ग़ूल हुए। रोटियां तो अम्मीजान ने इनायत कर ही दी थीं। आप رَحْمَۃُ اللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہ ने सालन का ख़ुद ही बन्दोबस्त किया और वोह सालन भी ऐसा जो सदहा बरस गुज़र जाने के बा'द भी सदा ताज़ा ही ताज़ा और बरकत ऐसी कि कभी उस में कोई कमी ही न हुई। वोह **अनोखा सालन** कौन सा ? दरियाए दिज्ला का पानी। रोज़ाना एक कुलचा दरियाए दिज्ला के पानी में भिगो कर तनावुल फ़रमा लेते और दिन रात ख़ूब जां फ़िशानी के साथ सबक़ पढ़ते रहते। जब वोह सो100 कुलचे ख़त्म हो गए तो मजबूरन उस्ताज़े मोहतरम से रुख़्सत लेनी पड़ी। (تذکِرۃُ الحُفَّاظ ج ۲ ص ۱۰۰)

अल्लाह عَزَّوَجَلَّ **की उन पर रह़मत हो और उन के सदक़े हमारी मग़्फ़िरत हो।**

प्यारे प्यारे इस्लामी भाइयो ! देखा आप ने ! पहले के दौर में हमारे उ़लमाए किराम رَحِمَہُمُ اللّٰہُ تَعَالٰی ने इल्मे दीन हासिल करने के लिये कैसी कैसी कुरबानियां दी हैं। आह ! एक आज का दौर है कि क़ियाम व

त़आ़म की सहूलतों समेत इल्मे दीन पढ़ाया जाता है फिर भी लोग पढ़ने के लिये तय्यार नहीं होते। इल्मे दीन ह़ासिल करने में यक़ीनन दोनों[2] जहां की बेहतरियां हैं। बिलफ़र्ज़ किसी मद्रसे से या जामिआ़ में मुस्तक़िल दाख़िला लेने की तरकीब नहीं बन पाती तो दा'वते इस्लामी की किसी **दारुस्सुन्नह** में कम अज़ कम 63 दिन का मदनी तरबियती कोर्स ही कर लीजिये। मदनी तरबियती कोर्स की भी क्या ख़ूब बहारें हैं चुनान्चे

﴾78﴿ इलर्जी का मरज़ ठीक हो गया

एक इस्लामी भाई का कुछ इस त़रह़ बयान है, "मुझे **इलर्जी** की बीमारी थी धूप और सर्दी में काफ़ी तक्लीफ़ होती नीज़ जब बारिश होती उस वक़्त मैं शिद्दते दर्द से माहिये बे आब (या'नी बे पानी की मछली) की त़रह़ तड़पता। मुझे एक आ़शिक़े रसूल ने **दा'वते इस्लामी** के मदनी माह़ोल में रह कर **तरबियती कोर्स** करने का मश्वरा दिया। लिहाज़ा **आ़लमी मदनी मर्कज़ फ़ैज़ाने मदीना** में 19 नवम्बर 2004 को शुरूअ़ होने वाले **63 रोज़ा तरबियती कोर्स** में दाख़िला ले लिया। **मैं ह़ैरान हूं कि कई डॉक्टरों से इलाज करवाने और ख़ूब रक़म ख़र्च करने के बा वुजूद इलर्जी की जो मूज़ी बीमारी**

अ़र्सए दराज़ से ख़त्म होने का नाम नहीं लेती थी वोह आशिक़ाने रसूल की सोहबत में रह कर 63 दिन का तरबियती कोर्स करने की बरकत से जाती रही ।''

दा'वते इस्लामी की क़य्यूम, عَزَّوَجَلَّ   दोनों[2] जहां में मच जाए धूम

इस पे फ़िदा हो बच्चा बच्चा   या अल्लाह عَزَّوَجَلَّ मेरी झोली भर दे

صَلُّوْا عَلَى الْحَبِيْب !   صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلٰى مُحَمَّد

तरबियती कोर्स क्या है ? : اَلْحَمْدُ لِلّٰه عَزَّوَجَلَّ **आ़शिक़ाने रसूल** की सोहबतों से मालामाल **63 रोज़ा तरबियती कोर्स** आख़िरत के लिये इस क़दर नफ़्अ़ बख़्श है कि इस में जो कुछ सीखने को मिलता है उस की तफ़्सीलात मा'लूम हो जाने के बा'द शायद दीन का दर्द रखने वाला हर मुसल्मान येह हसरत करेगा कि काश ! मुझे भी **63 रोज़ा तरबियती कोर्स** करने की सआ़दत हासिल हो जाए ! اَلْحَمْدُ لِلّٰه عَزَّوَجَلَّ दीगर शहरों में भी तरबियती कोर्स का सिल्सिला किया जाता है। **इस में बा'ज़ वोह उ़लूम हासिल होते हैं जिन का सीखना हर आ़क़िल बालिग़ मुसल्मान पर फ़र्ज़ है।** इल्मे दीन हासिल करने के बे शुमार फ़ज़ाइल हैं, चुनान्चे सुरूरे क़ल्बे महज़ून, आ़लिमे मा कान वमा यकून صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم का फ़रमाने मग़्फ़िरत निशान है, ''जिस ने (दीन का) इल्म हासिल किया तो येह उस के साबिक़ा गुनाहों का कफ़्फ़ारा हो गया।'' (جامع ترمذی ج ٤ ص ٢٩٥ حديث ٢٦٥٧)

اَلْحَمْدُ لِلّٰه عَزَّوَجَلَّ तरबियती कोर्स में वुज़ू व ग़ुस्ल के इलावा **नमाज़ का अ़मली त़रीक़ा** सिखाया जाता, ग़ुस्ले मय्यित, तज्हीज़ो तक्फ़ीन, नमाज़े जनाज़ा व नमाज़े ईद की तरबियत होती है। रह़मानी क़ाइदा के ज़रीए़ दुरुस्त मख़ारिज के साथ क़ुरआनी हुरूफ़ की अदाएगी की ता'लीम दी जाती है और क़ुरआने करीम की आख़िरी **20 सूरतें** ज़बानी हिफ़्ज़ और सूरतुल मुल्क की मश्क़ करवाई जाती है। और क़ुरआने करीम सीखने के फ़ज़ाइल के तो क्या कहने ! चुनान्चे

बच्चे को नाज़िरा क़ुरआन पढ़ाने की फ़ज़ीलत :

दो[2] **जहां के सुल्तान,** सरवरे ज़ीशान, साहिबे क़ुरआन, मह़बूबे रह़मान, صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم का फ़रमाने मग़्फ़िरत निशान है, जो शख़्स अपने बेटे को नाज़िरा क़ुरआने करीम सिखाए उस के सब अगले पिछले गुनाह बख़्श दिये जाते हैं। (مجمع الزّوائد ج٧ ص ٣٤٤ حديث ١١٢٧١) शहन्शाहे मदीना صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم का फ़रमाने बा क़रीना है, जो शख़्स जवानी में क़ुरआन सीखे, क़ुरआन उस के गोश्त और ख़ून में पैवस्त हो जाता है और जो इसे बुढ़ापे में सीखे और इसे क़ुरआन बार बार भूल जाता हो और इस के बा वुजूद वोह इसे न छोड़ता हो तो इस के लिये दो[2] अज्र हैं।

(كنز العمال ج١ ص ٢٦٧ حديث ٢٣٧٨)

तरबियती कोर्स में अख़्लाक़ी तरबियत

तरबियती कोर्स में **अख़्लाक़ी** तरबियत के हवाले से इन मौज़ूआत पर ख़ास तवज्जोह दी जाती है : ﴾1﴿ सच्चाई ﴾2﴿ नरमी ﴾3﴿ सब्र ﴾4﴿ आजिज़ी ﴾5﴿ अफ़्वो दर गुज़र ﴾6﴿ अन्दाज़े गुफ़्तगू ﴾7﴿ ग़ीबत की तबाह कारियां और ﴾8﴿ घर में मदनी माहोल बनाने का तरीक़ा वग़ैरा। **मदनी क़ाफ़िले** के जद्वल पर अ़मल करवाते हुए मदनी क़ाफ़िला तय्यार करने का तरीक़ा, दर्स, बयान, अ़लाक़ाई दौरा बराए **नेकी की दा'वत** नीज़ बिल ख़ुसूस दा'वते इस्लामी के मदनी काम की जान "इन्फ़िरादी कोशिश" का अन्दाज़, **मदनी इन्आमात** का अ़मली तरीक़ा ता'लीम दिया जाता है। तरबियती कोर्स के दौरान वक़्फ़े वक़्फ़े से तीन3 बार तीन3 तीन3 दिन के और इख़्तिताम से क़ब्ल 12 दिन के **आशिक़ाने रसूल के मदनी क़ाफ़िले** में सफ़र की सआदत भी मिलती है। 12 दिन के मदनी क़ाफ़िले से वापसी के बा'द एक दिन **इम्तिहान की तय्यारी,** दूसरे2 दिन **इम्तिहान** और तीसरे3 दिन **अल वदाई दुआ** और सलातो सलाम पर 63 दिन के तरबियती कोर्स का इख़्तिताम हो जाता है। तरबियती कोर्स की जो कैफ़िय्यत बयान की इस के इ़लावा भी बहुत कुछ सीखने को मिलता है, और اَلْحَمْدُ لِلّٰه عَزَّوَجَلَّ **आशिक़ाने रसूल**

की सोह़बत की ने'मत मुयस्सर आती है। اَلْحَمْدُلِلّٰہ عَزَّوَجَلَّ तरबियती कोर्स की बरकत से कई बिगड़े हुए अफ़राद नमाज़ी और अच्छे मुसल्मान बन कर रुख़्सत होते और मुआ़शरे में इ़ज़्ज़त का मक़ाम पाते हैं। लिहाज़ा जिस को मौक़अ़ मिले उसे ज़रूर तरबियती कोर्स के ज़रीए़ इ़ल्मे दीन ह़ासिल करना चाहिये। **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ के प्यारे नबी मक्की मदनी मुस्त़फ़ा صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم का इर्शादे इ़ब्रत बुन्याद है, बरोज़े क़ियामत सब से ज़ियादा ह़सरत उस को होगी जिस को दुन्या में (दीनी) इ़ल्म ह़ासिल करने का मौक़अ़ मिला मगर उस ने ह़ासिल न किया और उस शख़्स को होगी जिस ने इ़ल्म ह़ासिल किया और इस से सुन कर दूसरों ने तो नफ़्अ़ उठाया मगर ख़ुद इस ने (अपने इ़ल्म पर अ़मल करते हुए) नफ़्अ़ न उठाया। (الجامع الصغیر ص ٦٩ حدیث ١٠٥٨)

जो मुकम्मल 63 दिन नहीं दे सकते वोह मदनी मर्कज़ से रुजूअ़ करें तो उन की कम दिनों के लिये भी तरकीब बन सकती है।

صَلُّوْا عَلَی الْحَبِیْب! صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلٰی مُحَمَّد

﴾79﴿ एक के बदले दस10

अपने दौर के अब्दाल, ह़ज़रते सय्यिदुना अबू जा'फ़र बिन ख़त़्त़ाब عَلَیْہِ رَحْمَۃُ اللّٰہِ التَّوَّاب फ़रमाते हैं, मेरे दरवाज़े पर एक साइल ने सदा

लगाई, मैं ने ज़ौजए मोहतरमा से पूछा, तुम्हारे पास कुछ है ? जवाब मिला, चार[4] अन्डे हैं। मैं ने कहा, मंगता को दे दो। उन्हों ने ता'मील की। साइल अन्डे पा कर चला गया। अभी थोड़ी देर गुज़री थी कि मेरे पास एक दोस्त ने अन्डों से भरी हुई टोकरी भेजी। मैं ने घर में पूछा, इस में कुल कितने अन्डे हैं ? उन्हों ने कहा, तीस[30]। मैं ने कहा, तुम ने तो फ़क़ीर को चार[4] अन्डे दिये थे येह 30 किस हिसाब से आए ! कहने लगीं, तीस[30] अन्डे सालिम हैं और दस[10] टूटे हुए। **हज़रते** सय्यिदुना शैख़ अ़ल्लामा याफ़ेई यमनी رَحْمَةُ اللّٰهِ تَعَالٰی عَلَیْه फ़रमाते हैं, बा'ज़ हज़रात इस हिकायत के मुतअ़ल्लिक़ येह बयान करते हैं कि साइल को जो अन्डे दिये गए थे उन में तीन[3] सालिम और एक टूटा हुवा था। रब तआ़ला ने **हर एक के बदले दस[10] दस[10] अ़ता फ़रमाए**। सालिम के इवज़ सालिम, और टूटे हुए के बदले टूटा हुवा। (رَوضُ الریاحین ص ۱۵۱)

अल्लाह عَزَّوَجَلَّ की उन पर रह़मत हो और उन के सदक़े हमारी मग़्फ़िरत हो।

प्यारे प्यारे इस्लामी भाइयो ! अल्लाह عَزَّوَجَلَّ की रह़मत के क़ुरबान ! वोह मुसल्मानों को आख़िरत में तो अज्र देता ही है कभी दुन्या में भी इनायत फ़रमाता और बा'ज़ अवक़ात किसी को खुली आंखों से दिखाता और यूं उस का हौसला बढ़ाता है। जैसा कि अभी

हिकायत में आप ने मुलाहज़ा फ़रमाया कि हाथों हाथ एक के दस[10] गुना अन्डे मिल गए। **अल्लाह** तबारक व तआला पारह 8 सूरतुल **अन्आम** की आयत नम्बर 160 में इर्शाद फ़रमाता है :

مَنْ جَآءَ بِالْحَسَنَةِ فَلَهٗ عَشْرُ اَمْثَالِهَا ۚ (پ۸،الانعام:۱۶۰)

तरजमए कन्ज़ुल ईमान : जो एक नेकी लाए तो उस के लिये उस जैसी दस हैं।

इस आयते मुबारका के तह़्त **सदरुल** अफ़ाज़िल ह़ज़रते अ़ल्लामा मौलाना सय्यिद मुह़म्मद नईमुद्दीन मुरादआबादी عَلَیْهِ رَحمَةُ اللّٰهِ الْهَادِی फ़रमाते हैं, या'नी एक नेकी करने वाले को दस[10] नेकियों की जज़ा और येह भी ह़द्दो निहायत के त़रीक़े पर नहीं बल्कि **अल्लाह** तआ़ला जिस के लिये जितना चाहे उस की नेकियों को बढ़ाए एक के सात सो[700] करे या बे ह़िसाब अ़त़ा फ़रमाए अस्ल येह है कि नेकियों का सवाब मह़्ज़ फ़ज़्ल पर है। (ख़ज़ाइनुल इरफ़ान, स. : 241)

صَلُّوْا عَلَی الْحَبِیْب ! صَلَّی اللّٰهُ تَعَالٰی عَلٰی مُحَمَّد

﴾80﴿ एह़सान का बदला

ह़ज़रते सय्यिदुना शैख़ अबू बक्र शिबली عَلَیْهِ رَحْمَةُ اللّٰهِ الْوَلِی एक रोज़ अपने चालीस मुरीदों के क़ाफ़िले के हमराह शहरे बग़दाद से

बाहर तशरीफ़ ले गए, एक मक़ाम पर पहुंच कर आप رَحْمَۃُ اللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہ ने फ़रमाया, ऐ लोगो ! **अल्लाह** तआला अपने बन्दों के रिज़्क़ का कफ़ील है, फिर आप ने पारह **28 सूरतुत्तलाक़** की दूसरी और तीसरी आयते करीमा का येह हिस्सा तिलावत फ़रमाया,

وَمَنْ يَّتَّقِ اللّٰهَ يَجْعَلْ لَّهٗ مَخْرَجًاۙ﴿۲﴾ وَّيَرْزُقْهُ مِنْ حَيْثُ لَا يَحْتَسِبُؕ وَمَنْ يَّتَوَكَّلْ عَلَى اللّٰهِ فَهُوَ حَسْبُهٗؕ

(پ ۲۸ الطلاق ۲،۳)

तरजमए कन्ज़ुल ईमान : और जो **अल्लाह** से डरे, **अल्लाह** उस के लिये नजात की राह निकाल देगा और उसे वहां से रोज़ी देगा जहां उस का गुमान न हो और जो **अल्लाह** पर भरोसा करे तो वोह उसे काफ़ी है।

येह फ़रमाने के बा'द मुरीदों को वहीं छोड़ कर आप رَحْمَۃُ اللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہ कहीं तशरीफ़ ले गए। तमाम मुरीदीन तीन रोज़ तक वहीं भूके पड़े रहे। चौथे दिन हज़रते सय्यिदुना शैख़ अबू बक्र शिबली عَلَیْہِ رَحْمَۃُ اللّٰہِ الْوَلِی वापस तशरीफ़ लाए और फ़रमाया, ऐ लोगो ! **अल्लाह** तआला ने बन्दों के लिये रिज़्क़ तलाश करने की इजाज़त दी है। चुनान्चे पारह **29 सूरतुल मुल्क** की आयत नम्बर 15 में इर्शाद होता है :

फ़रमाने मुस्तफ़ा صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰی عَلَیْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم : बरोज़े क़ियामत लोगों में से मेरे क़रीब तर वोह होगा जिस ने दुन्या में मुझ पर ज़ियादा दुरूदे पाक पढ़े होंगे। (ترمذی)

هُوَالَّذِیْ جَعَلَ لَكُمُ الْاَرْضَ ذَلُوْلًا فَامْشُوْا فِیْ مَنَاكِبِهَا وَكُلُوْا مِنْ رِّزْقِهٖ (پ ٢٩ الملك ١٥)

तरजमए कन्ज़ुल ईमान : वोही है जिस ने तुम्हारे लिये ज़मीन राम (या'नी ताबेअ़) कर दी तो उस के रस्तों में चलो और **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ की रोज़ी में से खाओ।

इस लिये तुम अपने में से किसी को भेज दो, उम्मीद है कि वोह कुछ न कुछ खाना ले कर आएगा। मुरीदों ने एक ग़रीब शख़्स को बग़दाद शहर में भेजा, गली गली फिरता रहा, मगर रोज़ी मिलने की कोई राह पैदा न हुई, थक हार कर एक जगह बैठ गया, क़रीब ही **एक नसरानी त़बीब** का मत़ब था, वोह त़बीब बड़ा माहिर **नब्बाज़** था, सिर्फ़ नब्ज़ देख कर मरीज़ का ह़ाल ख़ुद ही बता देता था। सब चले गए तो उस ने इस **दरवेश** को भी मरीज़ समझ कर बुलाया और नब्ज़ देखी फिर रोटियां सालन और ह़ल्वा मंगवाया और पेश करते हुए कहा, तुम्हारे मरज़ की येही दवाएं हैं। **दरवेश** ने त़बीब से कहा, इसी त़रह़ के **40** मरीज़ और भी हैं। त़बीब ने ग़ुलामों के ज़रीए़ चालीस अफ़राद के लिये ऐसा ही खाना मंगवा कर दरवेश के हमराह रवाना कर दिया और ख़ुद भी छुप कर पीछे पीछे चल दिया। खाना जब सय्यिदुना शैख़ अबू बक्र शिबली عَلَیْهِ رَحْمَةُ اللّٰهِ الْوَلِی की ख़िदमत में ह़ाज़िर किया गया तो आप رَحْمَةُ اللّٰهِ تَعَالٰی عَلَیْه

ने **खाने को हाथ नहीं लगाया** और फ़रमाया, दरवेशो ! इस खाने में तो अ़जीब राज़ मुज़्मिर है। खाना लाने वाले **दरवेश** ने सारा वाक़िआ़ सुनाया। शैख़ ने फ़रमाया, **एक नसरानी** ने हमारे साथ इस क़दर हुस्ने सुलूक किया है, क्या हम इस का कोई बदला दिये बिग़ैर यूंही खाना खा लें ? मुरीदों ने अ़र्ज़ की, आ़लीजाह ! हम ग़रीब लोग उस को क्या दे सकते हैं ! ह़ज़रते सय्यिदुना शैख़ अबू बक्र शिबली عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللهِ الْوَلِى ने फ़रमाया, खाने से पहले उस के ह़क़ में दुआ़ तो कर सकते हैं ! चुनान्चे दुआ़ की गई। हाथों हाथ **दुआ़ की बरकत** का ज़ुहूर हुवा और वोह यूं कि **नसरानी** त़बीब जो कि सारी बातें छुप कर सुन रहा था उस के दिल में मदनी इन्क़िलाब बरपा हो गया ! उस ने फ़ौरन अपने आप को **सय्यिदुना शैख़ शिबली** عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللهِ الْوَلِى की बारगाह में पेश कर दिया **और तौबा कर के कलिमए शहादत पढ़ कर मुसल्मान हो गया** और शैख़ के मुरीदों में शामिल हो कर बुलन्द दरजा पाया। (روض الرّیاحین ص ۸۱)

अल्लाह عَزَّوَجَلَّ की उन पर रह़मत हो और उन के सदक़े हमारी मग़्फ़िरत हो।

صَلُّوْا عَلَى الْحَبِيْب ! صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلٰى مُحَمَّد

वली की ख़िदमत रंग लाती है : **प्यारे प्यारे इस्लामी भाइयो !**

देखा आप ने ! औलियाए किराम رَحِمَهُمُ اللهُ تَعَالٰى का नेकी की दा'वत का

अन्दाज़ किस क़दर निराला होता है ! उन की ख़िदमत करने वाला कभी ख़ाली नहीं लौटता। येह भी मा'लूम हुवा कि जब कोई हुस्ने सुलूक करे तो उस को दुआओं से नवाज़ना चाहिये। नीज़ अगर कोई काफ़िर भी एह्सान कर दे तो उस के हक़ में दुआए हिदायत करनी चाहिये। हज़रते सय्यिदुना शैख़ अबू बक्र शिबली عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللّٰهِ الْوَلِی और आप के मुरीदीन की दुआए हिदायत रंग लाई और اَلْحَمْدُ لِلّٰه عَزَّوَجَلَّ उन की ख़िदमत करने वाला नसरानी तबीब ईमान की दौलत से मालामाल हो गया।

दुआए वली में वोह तासीर देखी
बदलती हज़ारों की तक़्दीर देखी

एक लुक़्मे के सबब तीन अफ़राद जन्नती : उस नसरानी तबीब ने मिस्कीन समझ कर खाना पेश किया और ने'मते ईमान से सरफ़राज़ हुवा, तो अगर कोई मुसल्मान भी मिस्कीन को खाना खिलाए तो वोह भी जन्नत का हक़दार क़रार पाए। चुनान्चे सुल्ताने दो जहान, मदीने के सुल्तान, रहमते आलमिय्यान, सरवरे ज़ीशान صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰی عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم का फ़रमाने जन्नत निशान है, **एक लुक़्मा** रोटी और एक मुठ्ठी ख़ुरमा (या'नी खजूर, छूहारा) और इस की मिस्ल कोई और चीज़ जिस से मिस्कीन को नफ़्अ पहुंचे उन की वज्ह से **अल्लाह** तआला **तीन**[3] शख़्सों को जन्नत में दाख़िल फ़रमाता है, **एक** साहिबे ख़ाना जिस ने हुक्म दिया, **दूसरी** ज़ौजा कि उसे तय्यार करती है, **तीसरे** ख़ादिम जो मिस्कीन को

दे आता है फिर हुज़ूर सरापा नूर صَلَّى اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया, ह़म्द है **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ के लिये जिस ने हमारे ख़ादिमों को भी न छोड़ा।

(المعجم الاوسط للطبرانی ج٤ ص٨٩ حدیث٥٣٠٩)

صَلُّوا عَلَی الْحَبِیْب! صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلٰی مُحَمَّد

दूसरों को खाना खिलाने के फ़ज़ाइल पर मब्नी **मज़ीद 5 फ़रामीने मुस्त़फ़ा** صَلَّى اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم मुलाह़ज़ा हों :

﴾1﴿ तुम में से बेहतर वोह है जो खाना खिलाता है।

(مسند امام احمد ج٩ ص٢٤١ حدیث٢٣٩٨٤)

﴾2﴿ मग़्फ़िरत को वाजिब करने वाले उमूर में से खाना खिलाना और सलाम को आ़म करना है। (مکارم الاخلاق للطبرانی ص ٣٧١ حدیث ١٥٨)

﴾3﴿ जब तक बन्दे का दस्तर ख़्वान बिछा रहता है, फ़िरिश्ते उस पर रह़मतें नाज़िल करते रहते हैं। (شُعَبُ الایمان ج ٧ ص ٩٩ حدیث ٩٦٢٦)

﴾4﴿ जो अपने मुसल्मान भाई की भूक को मिटाने का एहतिमाम करे और उसे खाना खिलाए यहां तक कि वोह सेर हो जाए तो **अल्लाह** तआ़ला उस की मग़्फ़िरत फ़रमा देगा। (مجمع الزوائد ج٣ ص٣١٩ حدیث٤٧١٩)

﴾5﴿ जिस ने भूके को खाना खिलाया **अल्लाह** तआ़ला उसे सायए अ़र्श तले जगह अ़त़ा फ़रमाएगा। (مکارم الاخلاق للطبرانی ص٣٧٣)

اَلْحَمْدُ لِلّٰہ عَزَّوَجَلَّ तब्लीग़े कुरआनो सुन्नत की आ़लमगीर ग़ैर सियासी तह़रीक, **दा'वते इस्लामी** के मदनी माह़ोल में खाने और खिलाने की सुन्नतें सीखने का जज़्बा मिलता और ख़ूब इ़ल्मे दीन ह़ासिल होता है।

सुन्नतें आ़म हों, आ़म नेक काम हों   सब करें कोशिशें, क़ाफ़िले में चलो

صَلُّوا عَلَی الْحَبِیْب! صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلٰی مُحَمَّد

﴾81﴿ बग़दाद का ताजिर

बग़दाद शरीफ़ का एक ताजिर औलियाए किराम رَحِمَہُمُ اللّٰہُ تَعَالٰی से बहुत बुग़्ज़ रखता था। एक रोज़ ह़ज़रते सय्यिदुना बिश्रे ह़ाफ़ी عَلَیْہِ رَحْمَۃُ اللّٰہِ الْکَافِی को नमाज़े जुमुआ़ पढ़ कर फ़ौरन मस्जिद से बाहर निकलते देख कर दिल में कहने लगा कि देखो तो सही ! येह वली बना फिरता है ! ह़ालां कि मस्जिद में इस का दिल नहीं लगता जभी तो नमाज़ पढ़ते ही फ़ौरन बाहर निकल गया है। वोह **ताजिर** येही कुछ सोचता और कहता हुवा उन के पीछे पीछे चलने लगा। ह़ज़रते सय्यिदुना बिश्रे ह़ाफ़ी عَلَیْہِ رَحْمَۃُ اللّٰہِ الْکَافِی ने एक **नानबाई** की दुकान से रोटी ख़रीदी और शहर से बाहर की जानिब चल पड़े। **ताजिर** को येह देख कर और भी गुस्सा आया और बोला, येह शख़्स मह़्ज़ रोटी के लिये मस्जिद से जल्दी निकल आया है और अब शहर के बाहर किसी सब्ज़ा ज़ार में बैठ कर

खाएगा। **ताजिर** ने तआ़क़ुब जारी रखते हुए येह ज़ेहन बनाया कि जूं ही बैठ कर येह रोटी खाने लगेगा, मैं पूछूंगा कि क्या वली ऐसे ही होते हैं जो रोटी की ख़ातिर मस्जिद से फ़ौरन निकल आएं ! चुनान्चे **ताजिर** पीछे पीछे हो लिया ह़त्ता कि ह़ज़रते सय्यिदुना बिश्रे ह़ाफ़ी عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللّٰهِ الْكَافِي किसी गाउं में दाख़िल हो कर एक मस्जिद में तशरीफ़ ले गए। वहां एक **बीमार आदमी** लैटा हुवा था, ह़ज़रते सय्यिदुना बिश्रे ह़ाफ़ी عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللّٰهِ الْكَافِي ने उस बीमार के सिरहाने बैठ कर उसे अपने मुबारक हाथ से रोटी **खिलाई। ताजिर** येह मुआ़मला देख कर हैरान हुवा। फिर गाउं देखने के लिये बाहर निकला। थोड़ी देर के बा'द जब दोबारा मस्जिद में आया तो देखा कि मरीज़ वहीं लैटा है मगर ह़ज़रते सय्यिदुना बिश्रे ह़ाफ़ी عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللّٰهِ الْكَافِي वहां मौजूद नहीं। उस ने मरीज़ से पूछा कि कहां गए ? उस ने बताया कि वोह तो **बग़दाद** शरीफ़ तशरीफ़ ले गए। ताजिर ने पूछा, **बग़दाद** यहां से कितनी दूर है ? वोह बोला चालीस40 मील। ताजिर सोचने लगा कि मैं तो बड़ी मुश्किल में फंस गया कि उन के पीछे इतनी दूर निकल आया और तअ़ज्जुब है कि आते हुए कुछ पता ही नहीं चला मगर अब किस त़रह़ वापसी होगी ? फिर उस ने पूछा कि अब दोबारा वोह यहां कब आएंगे ? बोला, अगले जुमुआ़ को। नाचार ताजिर

वहीं रुका रहा जब जुमुआ आया तो हज़रते सय्यिदुना बिश्रे हाफ़ी عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللّٰهِ الْكَافِى अपने वक़्त पर तशरीफ़ लाए और मरीज़ को रोटी खिलाई। आप رَحْمَةُ اللّٰهِ تَعَالٰی عَلَيْه ने उस **ताजिर** से फ़रमाया, आप क्यूं मेरे पीछे आए थे ? **ताजिर** ने आ़जिज़ी के साथ अ़र्ज़ की, हुज़ूर ! मेरी ग़लती थी ! फ़रमाया, उठिये और मेरे पीछे पीछे चले आइये। चुनान्चे वोह हज़रत رَحْمَةُ اللّٰهِ تَعَالٰی عَلَيْه के पीछे पीछे चलने लगा और थोड़ी ही देर में **बग़दाद शरीफ़** पहुंच गए। **हज़रते सय्यिदुना बिश्रे हाफ़ी عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللّٰهِ الْكَافِى की ज़िन्दा करामत देख कर बग़दाद के ताजिर ने औलियाए किराम के बुग़्ज़ से तौबा की और आयिन्दा इन पाक लोगों का दिल से मो'तक़िद हो गया।** (روض الرياحين ص ١١٨)

अल्लाह عَزَّوَجَلَّ की उन पर रह़मत हो और उन के सदक़े हमारी मग़्फ़िरत हो।

ख़बीस गुमान ख़बीस दिल से : प्यारे प्यारे इस्लामी भाइयो ! मुसल्मान के बारे में बद गुमानी ह़राम है। सरकारे आ'ला ह़ज़रत, इमामे अहले सुन्नत, मौलाना शाह इमाम अह़मद रज़ा ख़ान عَلَيْهِ رَحْمَةُ الرَّحْمٰن नक़्ल फ़रमाते हैं, "ख़बीस गुमान ख़बीस दिल ही से पैदा होता है।" (फ़तावा रज़विय्या, जि. 22, स. 400) ख़ुसूसन **अल्लाह** वालों को कभी भी ह़क़ारत की नज़र से नहीं देखना चाहिये। इन पाक लोगों की अदाओं में

लिल्लाहिय्यत व ख़ुलूस और इन के दिलों में मख़्लूक़े ख़ुदा का दर्द होता है और येह पाक लोग दिनों का सफ़र पल भर में तै कर लेते हैं। बा'ज़ अवक़ात **बद गुमानी** की सज़ा दुन्या में हाथों हाथ भी मिलती है चुनान्चे

﴾82﴿ बद गुमानी की सज़ा

एक बार कड़कड़ाती सर्दी में ह़ज़रते सय्यिदुना शैख़ अबुल हुसैन नूरी رَحْمَةُ اللّٰهِ تَعَالٰی عَلَیْه की ख़ादिमा ज़ैतूना दूध रोटी ले कर ह़ाज़िर हुई। उस वक़्त हाथ सेंकने के लिये पास ही कोएले रखे हुए थे जिन्हें आप رَحْمَةُ اللّٰهِ تَعَالٰی عَلَیْه उलट पलट रहे थे, कोएले की सियाही हाथ में लगी हुई थी और आप رَحْمَةُ اللّٰهِ تَعَالٰی عَلَیْه ने खाना शुरूअ़ कर दिया दर ईं अस्ना कोएलों में आग भड़क उठी, दूध आप رَحْمَةُ اللّٰهِ تَعَالٰی عَلَیْه के हाथ पर बहने लगा। उस ने जी में ख़याल किया, येह कैसे वली हैं कि इन में सफ़ाई नहीं ! फिर किसी काम से ह़ज़रत के घर से जब वोह निकली तो यकायक एक औ़रत उस से लिपट गई और कहने लगी, तूने ही मेरे **कपड़ों की गठड़ी** चुराई है और उसे कोतवाल के पास घसीट कर ले गई। ह़ज़रते सय्यिदुना **शैख़ नूरी** رَحْمَةُ اللّٰهِ تَعَالٰی عَلَیْه को इत्तिलाअ़ हुई तो कोतवाली में सिफ़ारिश के लिये तशरीफ़ ले गए। कोतवाल ने कहा, मैं इसे कैसे छोड़ूं इस पर चोरी का इल्ज़ाम है ! इतने में एक कनीज़ वोही **कपड़ों की**

फ़रमाने मुस्तफ़ा صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰی عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم : उस शख़्स की नाक ख़ाक आलूद हो जिस के पास मेरा ज़िक्र हो और वोह मुझ पर दुरूदे पाक न पढ़े। (ترمذی)

गठड़ी ले कर आई और ह़ज़रत ने कपड़े उस की मालिका के ह़वाले कर के ज़ैतूना से फ़रमाया, आयिन्दा **बद गुमानी** करोगी कि वलिय्युल्लाह कैसे नासाफ़ होते हैं ! ज़ैतूना ने कहा, मुझे **बद गुमानी की सज़ा** मिल गई है आयिन्दा के लिये मैं तौबा करती हूं। (رَوضُ الریاحین ص ۱۳٦)

अल्लाह عَزَّوَجَلَّ की उन पर रह़मत हो और उन के सदक़े हमारी मग़्फ़िरत हो।

बद गुमानी ह़राम है : प्यारे प्यारे इस्लामी भाइयो ! देखा आप ने ! बद गुमानी की हाथों हाथ सज़ा मिल गई अगर दुन्या में सज़ा न भी मिले तब भी हमें **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ का ख़ौफ़ करना चाहिये कि **मुसल्मान पर बद गुमानी ह़राम है**। मेरे आक़ा आ'ला ह़ज़रत, इमामे अहले सुन्नत, मौलाना शाह इमाम अह़मद रज़ा ख़ान عَلَيْهِ رَحمَةُ الرَّحْمٰن नक़्ल फ़रमाते हैं, "ख़बीस गुमान ख़बीस दिल में ही पैदा होता है।"

(फ़तावा रज़विय्या, जि. 22, स. 400, रज़ा फ़ाउन्डेशन)

पारह 15 **सूरए बनी इसराईल** की आयत नम्बर 36 में **अल्लाह** तबारक व तआ़ला का फ़रमाने इब्रत निशान है,

وَلَا تَقْفُ مَا لَيْسَ لَكَ بِهٖ عِلْمٌ ؕ اِنَّ السَّمْعَ وَ الْبَصَرَ وَ الْفُؤَادَ كُلُّ اُولٰٓئِكَ كَانَ عَنْهُ مَسْـُٔوْلًا ﴿۳۶﴾

(پ ۱۵ بنی اسرائیل ۳٦)

तरजमए कन्ज़ुल ईमान : और उस बात के पीछे न पड़ जिस का तुझे इल्म नहीं बेशक कान और आंख और दिल इन सब से सुवाल होना है।

पारह 26 **सूरतुल हुजुरात** में **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ का फ़रमाने आलीशान है,

يٰۤاَيُّهَا الَّذِيْنَ اٰمَنُوا اجْتَنِبُوْا كَثِيْرًا مِّنَ الظَّنِّ اِنَّ بَعْضَ الظَّنِّ اِثْمٌ

(پ ٢٦ الحُجرات ١٢)

तरजमए कन्ज़ुल ईमान : ऐ ईमान वालो बहुत गुमानों से बचो बेशक कोई गुमान गुनाह हो जाता है।

एक मौक़अ़ पर सरकारे नामदार, बि इज़्ने परवर्दगार दो[2] आलम के मालिको मुख़्तार, शहन्शाहे अबरार صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने किसी बात पर इर्शाद फ़रमाया, "क्या तूने उस के दिल को चीर कर देखा कि तुझे इल्म हो जाता।" (ابو داوٗد ج٣ ص٦٣ حدیث٢٦٤٣)

मज़ीद फ़रमाते हैं, صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم बद गुमानी से बचो क्यूं कि गुमान करना सब से झूटी बात है। (صحیح البخاری ج٣ص٤٤٦ حدیث٥١٤٣)

﴾83﴿ रोने वाले को देख कर तुम भी रो पड़ो

हज़रते सय्यिदुना मक्हूल दिमश्क़ी رَحْمَةُ اللّٰهِ تَعَالٰى عَلَيْه फ़रमाते हैं, जब किसी को रोता देखो तो उस के साथ तुम भी रोने लग जाओ, बद गुमानी मत करो कि येह रियाकारी कर रहा है। एक मरतबा एक रोने वाले मुसल्मान के बारे में मैं ने बद गुमानी कर ली थी तो उस की सज़ा में **साल भर तक मैं रोने से महरूम रहा।** (تنبیهُ المغترین ص١٢٢)

﴾84﴿ सरीद और लज़ीज़ गोश्त

हज़रते सय्यिदुना शैख़ अ़ल्लामा याफ़ेई यमनी عَلَيْهِ رَحمَةُ اللهِ القَوِى फ़रमाते हैं, दौराने सफ़र एक रोज़ हमारा क़ाफ़िला किसी गाउं में पहुंचा, एक शख़्स गाउं वालों से मांग कर एक देगची लाया और उस में हल्वा पकाया और सब ने मिल कर खाया। क़ाफ़िले का एक आदमी ग़ैर मौजूद होने के सबब न खा पाया। उस के पास थोड़ा सा आटा था, आटा ले कर वोह पूरे गाउं में फिरा मगर पकाने वाला कोई न मिला, इसी दौरान रास्ते में उसे एक नाबीना ज़ईफ़ मिला, उस ने ब निय्यते सवाब वोह आटा उसे दे दिया (इस हालत को लुत्फ़े ख़फ़ी पर महमूल करना चाहिये कि गोया हिक्मते इलाही عَزَّوَجَلَّ ने उसे ज़बाने हाल से मुख़ातब किया कि येह आटा उस मर्दे ज़ईफ़ का रिज़्क़ है। जब कि तेरा रिज़्क़ हम अपने ख़्वाने करम से देंगे) **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ की रहमत के क़ुरबान ! कुछ ही देर बा'द एक शख़्स आया और उस ने तमाम क़ाफ़िले वालों में से सिर्फ़ उसी आदमी को बुलाया और अपने घर ले जा कर सरीद और लज़ीज़ गोश्त खिलाया।

(مُلَخَّصاً روضُ الرياحين ص ١٥٣)

अल्लाह عَزَّوَجَلَّ की उन पर रहमत हो और उन के सदक़े हमारी मग़्फ़िरत हो।

صَلُّوا عَلَى الْحَبِيب ! صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلٰى مُحَمَّد

اَلْحَمْدُ لِلّٰه عَزَّوَجَلَّ मा'लूम हुवा राहे ख़ुदा عَزَّوَجَلَّ में खाना **खिलाना** कभी भी राएगां नहीं जाता बसा अवक़ात दुन्या में भी हाथों हाथ अज्र मिल जाता है और आख़िरत के सवाब का इस्तिह़क़ाक़ भी बाक़ी रहता है।

صَلُّوا عَلَى الْحَبِيب ! صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلٰى مُحَمَّد

﴾85﴿ गोश्त और ह़ल्वा

एक बुज़ुर्ग رَحْمَةُ اللّٰهِ تَعَالٰى عَلَيْه फ़रमाते हैं, मैं ने एक मस्जिद में देखा कि वहां एक मालदार ताजिर बैठा है और क़रीब ही एक फ़क़ीर हाथ उठा कर दुआ़ मांग रहा है, इलाही عَزَّوَجَلَّ ! **गोश्त और ह़ल्वा खिला दे** ! उस ताजिर ने सुना तो कहने लगा, "येह फ़क़ीर दर अस्ल मुझे सुना रहा है, ख़ुदा عَزَّوَجَلَّ की क़सम ! अगर मुझ से मांग लेता तो मैं इसे खिला देता मगर अब नहीं खिलाऊंगा।" थोड़ी देर के बा'द वोह फ़क़ीर सो गया। इतने में कोई शख़्स एक ढका हुवा त़बाक़ ले कर आया और हम सब की त़रफ़ नज़र दौड़ाने के बा'द उस सोए हुए फ़क़ीर को देख कर त़बाक़ नीचे रख कर उस के पास बैठ गया और उसे जगा कर बसद आ़जिज़ी अ़र्ज़ करने लगा, **गोश्त और ह़ल्वा** ह़ाज़िर है तनावुल फ़रमा लीजिये ! फ़क़ीर ने उस में से कुछ खा कर त़बाक़ वापस कर दिया। उस ताजिर ने मुतअ़ज्जिब हो कर खाना लाने वाले से पूछा, येह क्या क़िस्सा

है ? वोह बोला, मैं एक मज़्दूर हूं, एक अ़र्से से घर वालों के **गोश्त और हल्वा** खाने के अरमान थे मगर ग़ुरबत की वज्ह से नहीं खा पाते थे। आज बड़े दिनों के बा'द मज़्दूरी में एक मिस्क़ाल (या'नी साढ़े चार4½ माशा) सोना मिला इस लिये **गोश्त और हल्वा** तय्यार किया गया, मैं थोड़ी देर के लिये सो गया, आंखें तो क्या सोईं, सोई हुई क़िस्मत अंगड़ाई ले कर जाग उठी ! मुझे ख़्वाब में **जनाबे रिसालत मआब** صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم का जल्वए ज़ैबा नज़र आ गया, मैं नज़्ज़ारए महबूब में गुम था कि लबहाए मुबारका को जुम्बिश हुई, रहमत के फूल झड़ने लगे और अल्फ़ाज़ कुछ यूं तरतीब पाए, "**तुम्हारी मस्जिद में एक वली मौजूद है जो गोश्त और हल्वा चाहता है, तुम येह गोश्त और हल्वा पहले उसे खिलाओ वोह अपनी ख़्वाहिश के मुताबिक़ खा कर वापस कर देगा और बक़िय्या में अल्लाह तआ़ला बरकत अ़ता फ़रमाएगा इस के इवज़ मैं तुम्हें जन्नत में ले चलूंगा।**" चुनान्चे मैं फ़ौरन येह खाना ले कर यहां हाज़िर हो गया। येह सुन कर ताजिर कहने लगा, इस खाने पर तुम्हारा क्या ख़र्च आया है ? कहा, एक मिस्क़ाल सोना। ताजिर ने कहा, मुझ से दस10 मिस्क़ाल सोना ले लो और अपने इस अ़मले ख़ैर से मुझे एक क़ीरात़ का हिस्सा दार बना

लो। वोह बोला, हरगिज़ नहीं। ताजिर ने कहा, बीस[20] मिस्क़ाल सोना ले लो। वोह बोला, नहीं। ताजिर ने कहा, पचास[50] मिस्क़ाल सोना ले लो। उस ने कहा, सारी दुन्या के ख़ज़ाने भी दे दो तो **रसूलुल्लाह** صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم से किये हुए सौदे में तुम्हें शरीक नहीं करूंगा, तुम्हारी क़िस्मत में येह चीज़ होती तो तुम मुझ से पहल कर सकते थे, लेकिन **अल्लाह** तआ़ला अपनी रह़मत के साथ ख़ास करता है जिसे चाहे। (روضُ الرياحين ص ١٥٣)

अल्लाह عَزَّوَجَلَّ **की उन पर रह़मत हो और उन के सदक़े हमारी मग़्फ़िरत हो।**

صَلُّوا عَلَى الْحَبِيب ! صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلٰى مُحَمَّد

प्यारे प्यारे इस्लामी भाइयो ! देखा आप ने ! **अल्लाह** वालों की येह शान है कि वोह अपने **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ की मरज़ी पर चलते हैं और **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ उन की अ़र्ज़ पूरी फ़रमा देता है। और येह भी मा'लूम हुवा कि अपनी फ़ानी दौलत के नशे में मस्त रह कर **अल्लाह** रब्बुल इ़ज़्ज़त के नेक बन्दों को नज़्रे ह़क़ारत से देखने वाले **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ के फ़ज़्ल और रसूलुल्लाह صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم के करम से मह़रूम रह जाते हैं। नीज़ येह भी जानने को मिला कि सरकारे नामदार صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم अपने परवर्दगार عَزَّوَجَلَّ की अ़त़ा से दानाए ग़ुयूब

(या'नी ग़ैबों पर ख़बरदार) हैं जभी तो फ़क़ीर को जान लिया और अपने एक ग़ुलाम की क़िस्मत जगा कर उसे जन्नत की बिशारत सुना कर ख़िदमत के लिये भेज दिया ।

सरे अ़र्श पर है तेरी गुज़र दिले फ़र्श पर है तेरी नज़र
मलकूतो मुल्क में कोई शै नहीं वोह जो तुझ पे इयां नहीं

प्यारे प्यारे इस्लामी भाइयो ! येह भी जानने को मिला कि किसी मुसल्मान पर **बद गुमानी** बसा अवक़ात दुन्या में भी पशेमानी का बाइ़स बनती है और शरअ़न भी मुसल्मान पर बद गुमानी करना ह़राम है ।

﴾86﴿ मा'ज़ूर बच्चा चलने फिरने लगा !

डाकूओं की एक जमाअ़त लूटमार के लिये निकली, दर ईं अस्ना रात एक मुसाफ़िर ख़ाने में क़ियाम किया और वहां येह ज़ाहिर किया कि हम लोग राहे ख़ुदा عَزَّوَجَلَّ के मुसाफ़िर हैं और जिहाद के लिये निकले हैं । मुसाफ़िर ख़ाने का मालिक नेक आदमी था उस ने रिज़ाए इलाही عَزَّوَجَلَّ पाने की निय्यत से उन की ख़ूब ख़िदमत की । सुब्ह़ वोह डाकू किसी त़रफ़ रवाना हो गए और लूटमार कर के शाम को वापस वहीं आ गए । गुज़श्ता शब मुसाफ़िर ख़ाने वाले के जिस लड़के को चलने

फिरने से मा'ज़ूर देखा था वोह आज बिला तकल्लुफ़ चल फिर रहा था ! उन्हों ने तअ़ज्जुब के साथ मुसाफ़िर ख़ाने वाले से इस्तिफ़्सार किया, क्या येह वोही कल वाला मा'ज़ूर लड़का नहीं ? उस ने बड़े एहतिराम से जवाब दिया, जी हां, येह वोही है। पूछा येह कैसे सिह्हत याब हो गया ? जवाब दिया, येह सब आप जैसे राहे ख़ुदा عَزَّوَجَلَّ के मुसाफ़िरों की बरकत है, बात येह है कि आप लोगों ने जो खाया था उस में से कुछ बच रहा था, हम ने आप ह़ज़रात का झूटा खाना ब निय्यते शिफ़ा अपने मा'ज़ूर बच्चे को खिलाया और झूटे पानी से उस के बदन पर मालिश की, **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ ने आप जैसे नेक बन्दों के झूटे खाने और पानी की बरकत से हमारे मा'ज़ूर बच्चे को शिफ़ा अ़ता फ़रमाई। जब डाकूओं ने येह सुना तो उन की आंखों से आंसू जारी हो गए, रोते हुए उन्हों ने कहा, येह सब आप के हुस्ने ज़न का नतीजा है वरना हम तो सख़्त गुनहगार लोग हैं, सुनो हम राहे ख़ुदा عَزَّوَجَلَّ के मुसाफ़िर नहीं डाकू हैं, **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ की इस करम नवाज़ी ने हमारे दिलों की दुन्या ज़ेरो ज़बर कर दी, हम आप को गवाह रख कर तौबा करते हैं। चुनान्चे ताइब हो कर उन लोगों ने नेकी का रास्ता लिया और मरते दम तक तौबा पर साबित क़दम रहे। (کتابُ الْقَلْیُوبِی ص ٢٠)

अल्लाह عَزَّوَجَلَّ की उन पर रह़मत हो और उन के सदक़े हमारी मग़्फ़िरत हो।

صَلُّوا عَلَى الْحَبِيب ! صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلٰى مُحَمَّد

मुसल्मान के जूठे में शिफ़ा है : प्यारे प्यारे इस्लामी भाइयो ! देखा आप ने ! **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ की रह़मत की कैसी बहारें हैं ! येह भी मा'लूम हुवा कि मुसल्मान पर हुस्ने ज़न की भी बरकतें हैं। येह भी मा'लूम हुवा कि **मुसल्मान के जूठे में शिफ़ा है।** येह भी पता चला फ़ैज़ पाने के लिये ए'तिक़ाद पक्का होना चाहिये, ढिलमिल यक़ीन (या'नी कच्चा यक़ीन) वाला न हो, मसलन सोचता हो कि फ़ुलां बुज़ुर्ग से या फ़ुलां वलिय्युल्लाह के मज़ार पर ह़ाज़िरी देने से न जाने फ़ाएदा होगा या नहीं होगा वग़ैरा। ऐसा शख़्स फ़ैज़ नहीं पा सकता। नीज़ फ़ैज़ मिलने में वक़्त की कोई क़ैद नहीं होगी अपना अपना मुक़द्दर होता है किसी को फ़ौरन फ़ैज़ मिल जाता है किसी का बरसों तक काम नहीं होता। काम हो या न हो "यक दर गीर व मोह़कम गीर" या'नी एक दरवाज़ा पकड़ और मज़बूती के साथ पकड़" के मिस्दाक़ पड़े रहना चाहिये।

कोई आया पा के चला गया कोई उ़म्र भर भी न पा सका

मेरे मौला तुझ से गिला नहीं येह तो अपना अपना नसीब है

صَلُّوْا عَلَى الْحَبِيْب ! صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلٰى مُحَمَّد

﴾87﴿ मफ़्लूज की हाथों हाथ शिफ़ायाबी

اَلْحَمْدُ لِلّٰه عَزَّوَجَلَّ सलातो सुन्नत की आ़लमगीर ग़ैर सियासी तह़रीक, **दा'वते इस्लामी** के मदनी माह़ोल में रमज़ानुल मुबारक के आख़िरी

अ़शरे में मसाजिद में **इज्तिमाई ए'तिकाफ़** का सिलसिला होता है जिस में मो'तकिफ़ीन की सुन्नतों भरी तरबियत की जाती है। मुआ़शरे के कई बिगड़े हुए अफ़राद दौराने ए'तिकाफ़ गुनाहों से ताइब हो कर ज़िन्दगी के नए दौर का आग़ाज़ करते हैं। बा'ज़ अवक़ात रब्बे काएनात عَزَّوَجَلَّ की इनायात से ईमान अफ़रोज़ करिश्मात का भी ज़ुहूर होता है चुनान्चे रमज़ानुल मुबारक 1425 हि. के इजतिमाई ए'तिकाफ़ में **दा'वते इस्लामी के आ़लमी मदनी मर्कज़ फ़ैज़ाने मदीना** में जहां कमो बेश 2000 मो'तकिफ़ीन थे, उन में 77 सालह मुअ़म्मर बुज़ुर्ग हाफ़िज़ मुह़म्मद अशरफ़ साहिब भी मो'तकिफ़ हो गए। **क़िब्ला ह़ाफ़िज़ साहिब का हाथ और ज़बान मफ़्लूज थे और क़ुव्वते समाअ़त भी जवाब दे चुकी थी।** वोह बड़े ख़ुश अ़क़ीदा थे। उन्हों ने एक बार **इफ़्त़ार** के खाने में बसद हुस्ने ज़न **एक मुबल्लिग़ से झूटा खाना ले कर खाया,** उसी से दम भी करवाया, बस उन के हुस्ने ज़न ने काम कर दिखाया, रह़मते इलाही عَزَّوَجَلَّ को जोश आया, **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ ने उन को शिफ़ायाब फ़रमाया। اَلْحَمْدُ لِلّٰه عَزَّوَجَلَّ उन का फ़ालिज का मरज़ जाता रहा। उन्हों ने हज़ारों इस्लामी भाइयों की मौजूदगी में **फ़ैज़ाने मदीना** के मन्च पर चढ़ कर बसद अ़क़ीदत अपने रू ब सिह़ह़त होने की **बिशारत** सुनाई, येह नवीदे जां फ़िज़ा सुन कर फ़ज़ा "**अल्लाह अल्लाह, अल्लाह अल्लाह**"

की पुरकैफ़ सदाओं से गूंज उठी। उन दिनों कई मक़ामी अख़्बारात ने इस ख़बरे फ़रहत असर को शाएअ़ किया।

दा'वते इस्लामी की क़य्यूम दोनों जहां में मच जाए धूम عَزَّوَجَلَّ 2

इस पे फ़िदा हो बच्चा बच्चा या अल्लाह मेरी झोली भर दे عَزَّوَجَلَّ

صَلُّوا عَلَى الْحَبِيب ! صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلٰى مُحَمَّد

सय्यिद को नोकर रखना कैसा ? : प्यारे प्यारे इस्लामी भाइयो ! मा'लूम हुवा कि **आशिक़ाने रसूल** की सोहबत भी बा बरकत और उन का पसखुर्दा या'नी **झूटा खाना** भी बाइसे शिफ़ा व सिह्हत। मेरे आक़ा आ'ला ह़ज़रत, इमामे अहले सुन्नत मौलाना शाह इमाम अहमद रज़ा ख़ान عَلَيْهِ رَحْمَةُ الرَّحْمٰن सय्यिद ज़ादों की अ़ज़मत और मुसल्मान का झूटा खाने की बरकत से मुतअ़ल्लिक़ फ़रमाते हैं, "**सय्यिद ज़ादे** से ज़लील ख़िदमत लेना जाइज़ नहीं और ऐसी ख़िदमत पर उस को **मुलाज़िम** रखना भी **ना जाइज़**।" जिस ख़िदमत में ज़िल्लत नहीं उस पर मुलाज़िम रख सकता है। सय्यिद ज़ादे को मारने से उस्ताज़ मुत्लक़ एह़तिराज़ (या'नी मुकम्मल परहेज़) करे। बाक़ी रहा मुसल्मान का **झूटा**, वोह खाना कोई ज़िल्लत नहीं। ह़दीसे पाक में उसे **शिफ़ा** फ़रमाया। (كشف الخفاء ج١ ص٣٨٤ حديث ١٤٠٣) वोह अगर **सय्यिद ज़ादा** मांगे तो उसे उसी (या'नी मुसल्मान के झूटे में शिफ़ा है इस) निय्यत से दिया जाए, अपना उलुश (या'नी झूटा) दे रहा हूं इस निय्यत से न दे।

(अज़ इफ़ादात : फ़तावा रज़विय्या, जि. 22, स. 568)

﴾88﴿ जिसे ख़ुदा रख्खे उसे कौन चख्खे

हज़रते सय्यिदुना अ़ली बिन ह़र्ब عَلَيْهِ رَحْمَةُ الرَّبّ ने बयान फ़रमाया कि मैं और कुछ नौ जवान मौसिल के कनारे एक किश्ती में बैठे, किश्ती जब दरमियान में पहुंची तो एक मछली दरिया से कूद कर किश्ती पर आ गई। बाहम मश्वरा कर के भून कर खाने के लिये नाव जब एक कनारे पर लगाई और आग जलाने के लिये लकड़ियां जम्अ़ की जाने लगीं, इसी दौरान हम ने वीराने में एक **लरज़ा ख़ेज़ मन्ज़र** देखा, क्या देखते हैं कि पुराने खन्डरात और क़दीम मकानात के निशानात हैं और एक शख़्स लैटा है जिस के दोनों हाथ पीठ के पीछे बंधे हुए हैं और वहीं पर एक दूसरा शख़्स **ज़ब्ह़ शुदा** पड़ा है। नीज़ नज़्दीक ही सामान से लदा हुवा एक **ख़च्चर** खड़ा है। हम लोगों ने बंधे हुए शख़्स से माजरा दरयाफ़्त किया। उस ने कहा, मैं ने इस ज़ब्ह़ शुदा शख़्स का ख़च्चर किराए पर लिया था, येह मुझे रास्ते से यहां भटका लाया और मेरी मुश्कें कस दीं (बाज़ू बांध दिये) और कहा कि मैं तुझे क़त्ल कर दूंगा। मैं ने इस को ख़ुदा عَزَّوَجَلَّ का वासित़ा दिया और कहा, "मेरे क़त्ल का गुनाह अपनी गरदन पर न ले, बेशक येह सारा सामान तू ले ले मैं ने येह तेरे लिये मुबाह़ किया, मैं इस की किसी से भी शिकायत नहीं करूंगा।" मगर वोह अपने इरादे पर अड़ा रहा। और मुझे मारने के लिये उस ने अपनी कमर में ठूंसा हुवा **छुरा** खींचा मगर वोह न निकला इस पर उस ने जब ख़ूब ज़ोर लगाया तो **वोह छुरा निकल कर एक दम झटके के साथ उस के ह़ल्क़ पर आ लगा और यूं वोह ख़ुद बख़ुद ज़ब्ह़ हो गया और तड़प तड़प**

कर मर गया। येह सुनने के बा'द हम ने उस के बन्धन खोल दिये और वोह शख़्स ख़च्चर और अपना सामान ले कर अपने घर की त़रफ़ रवाना हो गया। फिर हम लोग किश्ती में आए ताकि भूनने के लिये मछली निकालें तो वोह कूद कर दरिया में जा चुकी थी।

(رَوضُ الرِّیاحین ص۱۳۹)

प्यारे प्यारे इस्लामी भाइयो ! यक़ीनन जिसे ख़ुदा عَزَّوَجَلَّ **रखवे उसे कौन चखवे ! अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ की शाने बे नियाज़ी और करम नवाज़ी भी क्या ख़ूब है ! **ज़ालिम लुटेरा** ख़ुद अपने ही हाथों ज़ब्ह़ हो कर कैफ़रे किरदार (या'नी अपनी सज़ा) को पहुंचा और बंधे हुए शख़्स को छुड़ाने के लिये दरिया से कूद कर **मछली** किश्ती में पहुंची और भून कर खाने की ख़्वाहिश के सबब क़ाफ़िला कनारे पर उतरा मगर मछली खाना उन के मुक़द्दर में कहां ! वोह तो बंधे हुए मज़्लूम बन्दे की इमदाद को आने, उस के बन्धन छुड़ाने का सवाब कमाने और करिश्मए क़ुदरत के डंके बजाने के बहाने थे।

जल्वे तेरे गुलशन गुलशन, सत्वत तेरी सह़रा सह़रा
रह़मत तेरी दरिया दरिया, سُبْحَانَ اللّٰه سُبْحَانَ اللّٰه

صَلُّوا عَلَى الْحَبِيب ! صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلٰى مُحَمَّد

﴾89﴿ रोज़ी का वसीला

मस्जिदुल ह़राम शरीफ़ (मक्कए मुकर्रमा) में एक आ़बिद (या'नी इबादत गुज़ार शख़्स) रात भर इबादत में मश्ग़ूल रहा करता, दिन को

रोज़ा रखता, रोज़ाना शाम को एक शख़्स उसे दो[2] रोटियां दे जाता, उस से इफ़्त़ार कर लेता और फिर दूसरे[2] दिन तक के लिये इबादत में लग जाता। एक रोज़ उस के दिल में ख़याल आया कि येह कैसा **तवक्कुल** है कि मैं तो एक इन्सान की दी हुई रोटी पर तक्या (या'नी भरोसा) कर के बैठा हूं ! और मख़्लूक़ के रज़्ज़ाक़ عَزَّوَجَلَّ पर भरोसा नहीं किया, शाम को जब रोटियां ले कर आने वाला आया तो **आ़बिद** ने वापस कर दीं। इसी त़रह़ तीन[3] रोज़ गुज़ार दिये। जब भूक का ग़लबा हुवा तो अपने रब عَزَّوَجَلَّ से फ़रियाद की। शब को ख़्वाब में देखा, कि वोह **अल्लाह** तआ़ला की बारगाह में ह़ाज़िर है और **अल्लाह** तआ़ला फ़रमाता है, मैं अपने बन्दे के ज़रीए़ जो कुछ भेजता था तू ने उसे क्यूं लौटा दिया ? **आ़बिद** ने अ़र्ज़ की, मौला ! मेरे दिल में ख़याल आया कि तेरे सिवा दूसरे पर तक्या (या'नी भरोसा) कर बैठा हूं। रब तआ़ला ने फ़रमाया, वोह रोटियां कौन भेजा करता था ? **आ़बिद** ने अ़र्ज़ की, **या अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ ! तू ही भेजने वाला है। हुक्म हुवा ! अब मैं भेजूं तो वापस न लौटाना। उसी ख़्वाब के दौरान येह भी देखा कि रोटियां लाने वाला शख़्स रब्बुल आ़लमीन جَلَّ جَلَالُهٗ के दरबार में ह़ाज़िर है। **अल्लाह** तआ़ला ने उस से पूछा, तू ने इस आ़बिद को रोटियां देनी क्यूं बन्द कर दीं ? उस ने अ़र्ज़ की, ऐ मालिको मौला عَزَّوَجَلَّ ! तुझे ख़ूब मा'लूम है। फिर पूछा, ऐ बन्दे ! वोह रोटियां तू किसे देता था ? अ़र्ज़ की, मैं तो तुझे (या'नी तेरी ही राह में देता था) इर्शाद हुवा, **तू अपना अ़मल जारी रख, मेरी त़रफ़ से तेरे लिये इस के इवज़ में जन्नत है।** (رَوضُ الرياحين ص ٣٧)

बे मांगे मिले तो...: प्यारे प्यारे इस्लामी भाइयो ! **अल्लाह** वालों का अन्दाज़ भी ख़ूब होता है ! **अल्लाह** रब्बुल आ़लमीन جَلَّ جَلَالُہٗ इ़बादत गुज़ार बन्दों पर ख़ूब नवाज़िशात फ़रमाता है और उन के लिये आ़लमे ग़ैब से अस्बाब मुहय्या फ़रमाता है। जब दूसरों के माल की ह़िर्स व त़मअ़ न हो, देने वाला एह़सान जताने वाला न हो, जिस से लिया उस का दिल ख़ुश होने की उम्मीद हो, जिस ने दिया उस के दिल में लेने वाले की इ़ज़्ज़त में कमी आने का इम्कान न हो। लेने की सूरत में देने वाले या देखने वाले की नज़र में किसी क़िस्म की तज़्लील का शाएबा न हो। अल ग़रज़ कोई मानेए़ शरई न हो तो बिग़ैर मांगे जो मिले उस को क़बूल कर लेना चाहिये। चुनान्चे ह़ज़रते सय्यिदुना ख़ालिद बिन अ़दी जुहन्नी رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْهُ से रिवायत है, मैं ने ताजदारे रिसालत, माहे नुबुव्वत صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰی عَلَیْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم को फ़रमाते सुना, जिसे उस के भाई के ज़रीए़ कोई चीज़ बिग़ैर मांगे और बिग़ैर ह़िर्स के पहुंचे तो उसे क़बूल कर लेना चाहिये और लौटाना नहीं चाहिये कि वोह तो रिज़्क़ है जो उस को **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ ने (ब ज़रीअ़ए ग़ैर) भेजा। (مسند امام احمد ج٦ص٢٧٦حدیث ١٧٩٥٨) मा'लूम हुवा बिग़ैर सुवाल के मिलने वाली चीज़ के लेने में कोई ह़रज नहीं जब कि उस चीज़ की त़रफ़ उसे ह़िर्स व त़मअ़ न हो अलबत्ता अगर ग़नी है कि देने वाले की दिलजूई के लिये ले तो लिया लेकिन लेने के बा'द अगर उस चीज़ की उसे ज़रूरत न हो तो किसी को तोह़फ़तन दे दे

या सदक़ा कर दे, चुनान्चे हज़रते सय्यिदुना आइद बिन अम्र رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْه से मरवी है, नबिय्ये करीम, रऊफ़ुर्रहीम, महबूबे रब्बे अज़ीम صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰی عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم का फ़रमाने अज़ीमुश्शान है, जिसे इस रिज़्क़ से बिग़ैर मांगे या बिग़ैर हिर्स के कुछ मिले तो उसे तहे दिल से क़बूल करना चाहिये और अगर ग़नी हो तो (क़बूल कर के) अपने से ज़ियादा हाजत मन्द को भेज दे।

(مسند امام احمد ج۷ص ۳۶۲ حديث ۲۶۷۳)

तोहफ़ा या रिश्वत : प्यारे प्यारे इस्लामी भाइयो ! इस में कोई शक नहीं कि तोहफ़ा क़बूल करना सुन्नत है मगर याद रहे कि तोहफ़ा लेने देने की मुख़्तलिफ़ सूरतें हैं, हर तोहफ़ा क़बूल करना हरगिज़ सुन्नत नहीं। हज़रते सय्यिदुना इमाम बुख़ारी عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللّٰهِ الْبَارِی ने अपनी "सहीह बुख़ारी" में बा क़ाइदा एक बाब बांधा है जिस का नाम है, "بَابُ مَنْ لَّمْ يَقْبَلِ الْهَدِيَّةَ لِعِلَّةٍ" या'नी "उस शख़्स के बारे में बाब, जिस ने किसी वज्ह से तोहफ़ा क़बूल न किया" इस बाब में सय्यिदुना इमाम बुख़ारी عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللّٰهِ الْبَارِی ने ता'लीक़[1] की हज़रते सय्यिदुना उ़मर बिन अ़ब्दुल अ़ज़ीज़ رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْه ने फ़रमाया, **"सरकारे दो[2] आलम صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰی عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم की ज़ाहिरी हयाते तय्यिबा में तो तोहफ़ा, तोहफ़ा ही था मगर आज कल रिश्वत है।"**

(صحيح البخاری ج۲ ص ۱۷٤)

صَلُّوْا عَلَى الْحَبِيْب ! صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰی عَلٰی مُحَمَّد

مدينه

1 : या'नी इब्तिदाए सनद से रावी को साक़ित कर के हदीस बयान करना।

﴾90﴿ सेबों के तबाक़

इस रिवायत की शर्ह करते हुए ह़ज़रते अ़ल्लामा बदरुद्दीन ऐनी ह़नफ़ी رَحْمَةُ اللّٰهِ تَعَالٰى عَلَيْه ह़ज़रते सय्यिदुना फ़ुरात बिन मुस्लिम رَحْمَةُ اللّٰهِ تَعَالٰى عَلَيْه की सनद से रिवायत बयान फ़रमाते हैं कि एक मरतबा ह़ज़रते **सय्यिदुना उ़मर बिन अ़ब्दुल अ़ज़ीज़** رَضِيَ اللّٰهُ تَعَالٰى عَنْهُ को सेब खाने की ख़्वाहिश हुई मगर घर में कोई ऐसी चीज़ न मिली जिस के बदले **सेब** ख़रीद सकें। चुनान्चे हम उन के साथ सुवार हो कर निकले। दीहात की जानिब कुछ लड़के मिले जिन्हों ने सेबों के तबाक़ (तोह़फ़तन पेश करने के लिये) उठाए हुए थे। सय्यिदुना उ़मर बिन अ़ब्दुल अ़ज़ीज़ رَضِيَ اللّٰهُ تَعَالٰى عَنْهُ ने एक तबाक़ उठा कर सूंघा और फिर वापस कर दिया। मैं ने उन से इस बारे में अ़र्ज़ की तो फ़रमाया, मुझे इस की ह़ाजत नहीं। मैं ने अ़र्ज़ की, क्या सय्यिदुना रसूलुल्लाह صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم, सय्यिदुना अबू बक्र सिद्दीक़े अक्बर और सय्यिदुना उ़मर फ़ारूक़े आ'ज़म رَضِيَ اللّٰهُ تَعَالٰى عَنْهُمَا तोह़फ़ा क़बूल नहीं फ़रमाया करते थे ? इर्शाद फ़रमाया, बिला शुबा येह उन के लिये **तहाइफ़** ही थे मगर उन के बा'द के उ़म्माल (या'नी हुक्काम या उन के नुमायन्दों) के लिये **रिश्वत** हैं।

(عمدۃ القاری ج ۹ ص ۴۱۸)

कौन किस का तोह़फ़ा न ले : प्यारे प्यारे इस्लामी भाइयो ! देखा आप ने ! **ह़ज़रते सय्यिदुना उ़मर बिन अ़ब्दुल अ़ज़ीज़** رَضِيَ اللّٰهُ تَعَالٰى عَنْهُ **ने तोह़फ़े के सेब क़बूल फ़रमाने से इन्कार कर दिया।** क्यूं कि आप

رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْهُ जानते थे कि येह तोह़फ़ा ब हैसिय्यते ख़लीफ़ए वक़्त दिया जा रहा है अगर मैं ख़लीफ़ा न होता तो कोई क्यूं देता ? और येह बात तो हर ज़ी शुऊ़र आदमी समझ सकता है कि **वुज़रा, क़ौमी व सूबाई एसेम्बली के मिम्बरान या दीगर हुकूमती अफ़्सरान व मुन्तख़ब नुमायन्दगान नीज़ जज साह़िबान ह़त्ता कि पोलीस वग़ैरा** को लोग क्यूं तोह़फ़ा देते हैं और उन की किस सबब से ख़ुसूसी दा'वतें करते हैं। ज़ाहिर है या "तो काम" निकलवाना मक़्सूद होता है या येह ज़ेहन होता है कि आयिन्दा इस की ज़रूरत पड़ने की सूरत में आसानी से तरकीब बन जाएगी। इन दोनों[2] वुजूहात की बिना पर ऐसे लोगों को तोह़फ़ा देना और उन की ख़ुसूसी दा'वत करना **रिश्वत** के हुक्म में है और रिश्वत देने और लेने वाला जहन्नम का ह़क़दार है। ऐसे मौक़अ़ पर ईदी, मिठाई, चाय पानी या ख़ुशी से पेश कर रहा हूं, मह़ब्बत में दे रहा हूं वग़ैरा ख़ूब सूरत अल्फ़ाज़ **रिश्वत** के गुनाह से नहीं बचा सकते। अगर्चे वाक़ेई इख़्लास के साथ पेश किया गया हो और रिश्वत की कोई सूरत न बनती हो तब भी ऐसों का अपने मा तह़तों से तोह़फ़ा या ख़ुसूसी दा'वत क़बूल करना "मज़िन्नए तोहमत" या'नी तोहमत की जगह खड़ा होना है, जब कि सरदारे मक्कए मुकर्रमा, सुल्ताने मदीनए मुनव्वरह صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰی عَلَیْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم का फ़रमाने हिफ़ाज़त निशान है, जो **अल्लाह** तआ़ला और आख़िरत पर ईमान रखता हो वोह तोहमत की जगह खड़ा न हो। (کشف الخفاء ج۲ص۲۲۷ حدیث۲٤۹۹) इस लिये यहां मज़िन्नए तोहमत से बचना वाजिब है लिहाज़ा देना भी ना जाइज़ और लेना भी

ना जाइज़। हां अगर ओ़हदा मिलने से क़ब्ल ही आपस में तोह़फ़ों के लैन दैन और **ख़ुसूसी दा'वत** की तरकीब थी तो अब ह़रज नहीं मगर पहले कम था और अब मिक़्दार बढ़ा दी तो ज़ाइद ह़िस्सा ना जाइज़ हो जाएगा। अगर देने वाला पहले की निस्बत मालदार हो गया है और उस ने इस वज्ह से बढ़ाया है तो लेने में ह़रज नहीं। इसी त़रह़ पहले के मुक़ाबले में अब जल्दी जल्दी ख़ुसूसी दा'वत होने लगी है तब भी ना जाइज़ है। अगर देने वाला ज़विल अरह़ाम या'नी ख़ूनी रिश्ते वालों में से है तो देने लेने में ह़रज नहीं। (वालिदैन, भाई, बहन, नाना, नानी, दादा, दादी, बेटा, बेटी, चचा, मामूं, ख़ाला, फूफी, वग़ैरा मह़रम रिश्तेदार हैं जब कि फूफा, बहनोई, चची, ताई, मुमानी, भाभी, चचाज़ाद, फूफीज़ाद, ख़ालाज़ाद, मामूंज़ाद वग़ैरा ज़ी रेह़्म या'नी मह़रम रिश्तेदारों से ख़ारिज हैं) मसलन बेटा या भतीजा जज है उस को वालिद या चचा ने तोह़फ़ा दिया या ख़ुसूसी दा'वत दी तो क़बूल करना जाइज़ है। हां बिलफ़र्ज़ बाप का मुक़द्दमा जज बेटे के यहां चल रहा हो तो अब मज़िन्नए तोहमत की वज्ह से ना जाइज़ है। बयान कर्दा अह़काम सिर्फ़ हुकूमती अफ़राद के लिये ही नहीं हर समाजी, सियासी और मज़हबी लीडर व क़ाइद के लिये भी हैं। ह़त्ता कि **दा'वते इस्लामी की तमाम तन्ज़ीमी मजालिस के जुम्ला निगरान व ज़िम्मादारान भी अपने अपने मा तह़्तों से तोह़फ़ा या ख़ुसूसी दा'वत क़बूल नहीं कर सकते**। छोटा ज़िम्मादार अपने से बड़े ज़िम्मादार से क़बूल कर सकता है। मसलन दा'वते इस्लामी की मर्कज़ी मजलिसे शूरा का रुक्न,

निगराने शूरा से क़बूल कर सकता है मगर दीगर दा'वते इस्लामी वालों से क़बूल नहीं कर सकता और निगराने शूरा अपने किसी भी मा तह्त दा'वते इस्लामी वाले का तोह़फ़ा नहीं ले सकता। मुदर्रिस अपने शागिर्दों या उस के सरपरस्त का बिला इजाज़ते शरई तोह़फ़ा नहीं ले सकता। हां ता'लीम से फ़रागत के बा'द अगर शागिर्द तोह़फ़ा या ख़ुसूसी दा'वत दे तो क़बूल कर सकता है। वोह उ़लमा व मशाइख़ जिन को लोग इल्मो फ़ज़्ल की ता'ज़ीम के सबब नज़राने पेश करते हैं और वोह क़बूल भी करते हैं और लोग उन पर रिश्वत की तोहमत भी नहीं लगाते चुनान्चे ऐसे ह़ज़रात का तोह़फ़ा क़बूल करना मज़िन्नए तोहमत से ख़ारिज होने की वज्ह से जाइज़ है।

प्यारे प्यारे इस्लामी भाइयो ! तोह़फ़े और रिश्वत के मुतअ़ल्लिक़ अहम सुवालात व जवाबात ह़ाज़िर हैं। हो सके तो इन को कम अज़ कम तीन[3] मरतबा ग़ौर से पढ़ या सुन लीजिये।

सुवाल : क्या तोह़फ़ा क़बूल करना सुन्नत नहीं ?

जवाब : बेशक तोह़फ़ा क़बूल करना सुन्नत है मगर इस की सूरतें हैं चुनान्चे ह़ज़रते अ़ल्लामा बदरुद्दीन ऐनी ह़नफ़ी رَحْمَةُ اللّٰهِ تَعَالٰى عَلَيْه फ़रमाते हैं, "नबिय्ये रह़मत, शफ़ीए उम्मत, मालिके जन्नत, क़ासिमे ने'मत, मुस्त़फ़ा जाने रह़मत صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم का येह फ़रमाने उल्फ़त निशान, "तोह़फ़े का आपस में तबादुला करो मह़ब्बत बढ़ेगी" (مجمع الزوائد ج ٤ ص ٢٦٠ حديث ٦٧١٦) **उस के ह़क़ में है जिसे मुसल्मानों पर ओ़हदे दार न बना दिया गया हो**

और जिसे मुसल्मानों पर ओ़हदा दे दिया गया हो जैसे क़ाज़ी या वाली तो अब उसे तोह़फ़ा क़बूल करने से बचना ज़रूरी है खु़सूसन उसे जिसे पहले तोह़फ़े न पेश किये जाते हों क्यूं कि उस के लिये अब येह तोह़फ़ा रिश्वत व नापाकी की क़िस्म से है। (اَلْبِنَایَۃ شَرحُ الْھِدَایَۃ ج٨ ص ٢٤٤)

आ़रिज़ी तौ़र पर स्कूटर लेना

सुवाल : ओ़हदे दार अपने मा तह़्त से बतौ़रे क़र्ज़ कोई रक़म या आ़रिज़ी तौ़र पर इस्ति'माल के लिये कार, स्कूटर या साईकिल वग़ैरा ले सकता है या नहीं ? नीज़ येह भी इर्शाद फ़रमाइये कि अपने मा तह़्त से कोई चीज़ किसी ह़ीले से सस्ती ख़रीद सकता है या नहीं ?

जवाब : ओ़हदे दार अपने मा तह़्त से न क़र्ज़ ले सकता है, न उ़र्फ़ व आ़दत से हट कर ख़रीदो फ़रोख़्त कर सकता है, न ही आ़रिज़ी तौ़र पर इस्ति'माल के लिये चीज़ें ले सकता है, मा तह़्त खु़द ऑफ़र करे तब भी नहीं ले सकता। चुनान्चे ह़ज़रते अ़ल्लामा शामी رَحْمَۃُ اللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہِ फ़रमाते हैं, "**ओ़हदे दार को जिस जिस का तोह़फ़ा क़बूल करना ह़राम है उस से क़र्ज़ और कोई चीज़ आ़रिय्यतन त़लब करना** (या'नी कुछ मुद्दत के लिये कोई चीज़ मांगना) **भी ह़राम है।**" (ردُّ المحتار علی الدُّرِّالمختارج٨ص٤٨)

सुवाल : क्या तोहफ़ों के बारे में आ'ला हज़रत رَحْمَةُ اللّٰهِ تَعَالٰی عَلَيْه ने भी कुछ रहनुमाई फ़रमाई है ?

जवाब : मेरे आक़ा आ'ला हज़रत, इमामे अहले सुन्नत, वलिय्ये ने'मत, अ़ज़ीमुल बरकत, अ़ज़ीमुल मर्तबत, परवानए शम्ए़ रिसालत, मुजद्दिदे दीनो मिल्लत, ह़ामिये सुन्नत, माह़िये बिद्अ़त, आ़लिमे शरीअ़त, पीरे त़रीक़त, बाइसे ख़ैरो बरकत, ह़ज़रते अ़ल्लामा मौलाना अलह़ाज अल ह़ाफ़िज़ अल क़ारी शाह इमाम अह़मद रज़ा ख़ान عَلَيْهِ رَحْمَةُ الرَّحْمٰن फ़रमाते हैं, "मैं कहता हूं उन की मिसाल दीहातों और अहले ह़िरफ़त वग़ैरहुम के चौधरियों की सी है जिन को अपने मा तह़तों पर तसल्लुत़ और ग़लबा होता है क्यूं कि उन चौधरियों के शर के ख़ौफ़ या रवाज की वज्ह से उन को हदिय्ये (या'नी तह़ाइफ़) मिलते हैं।" (फ़तावा रज़विय्या, जि. 19, स. 446)

मा'लूम हुवा तह़ाइफ़ कबूल करने की मुमानअ़त सिर्फ़ हुकूमती ओ़हदेदारों के लिये ही नहीं हर उस शख़्स के लिये भी है जो अपने ओ़हदे या दबदबे की वज्ह से लोगों को नफ़्अ़ या नुक़्सान पहुंचाने पर क़ुदरत रखता हो।

दा'वतों की दो क़िस्में

सुवाल : "ख़ुसूसी दा'वत" किसे कहते हैं ?

जवाब : ख़ुसूसी दा'वत या'नी वोह दा'वत जो किसी ख़ास फ़र्द के लिये रखी जाए कि अगर वोह आने से इन्कार कर दे तो वोह दा'वत मुन्अ़क़िद ही न हो।

सुवाल : और "उ़मूमी दा'वत" का मत़लब भी इर्शाद फ़रमा दीजिये !

जवाब : उ़मूमी दा'वत या'नी वोह दा'वत जो किसी ख़ास फ़र्द के लिये न हो कि फ़ुलां न आता हो तो वोह दा'वत ही न रखी जाती।

सुवाल : अगर मा तह़्त ने ओ़हदे दार को ख़ुसूसी दा'वत दी और ग्यारहवीं शरीफ़ की निय्यत कर ली तो क्या अब भी ना जाइज़ है ?

जवाब : जी हां। क्यूं कि येह तै है कि ओ़हदे दार शिर्कत की हामी न भरे तो ग्यारहवीं शरीफ़ की नियाज़ नहीं की जाएगी। हां अगर नियाज़ रखी है और उस में ओ़हदे दार को भी दा'वत दी है और येह तै है कि वोह आए या न आए नियाज़ का सिल्सिला रहेगा तो ऐसी दा'वत जाइज़ है क्यूं कि येह "उ़मूमी दा'वत" कहलाती है। अलबत्ता उ़मूमी दा'वत में भी ओ़हदे दार को अगर दूसरों के मुक़ाबले में उ़म्दा ग़िज़ाएं दें तो ना जाइज़ है मसलन आ़म मेहमानों को तन्दूरी रोटी और गाय का सालन दिया जाए मगर ओ़हदे दार की ख़िदमत में शीरमाल और बकरे का क़ोरमा ह़ाज़िर किया जाए तो ऐसा करना ना जाइज़ है।

सुवाल : अफ़्सर से उस का मा तह़्त तोह़फ़ा क़बूल कर सकता है या नहीं ?

जवाब : क़बूल कर सकता है।

मेरे आक़ा आ'ला ह़ज़रत, इमामे अहले सुन्नत, वलिय्ये ने'मत, अ़ज़ीमुल बरकत, अ़ज़ीमुल मर्तबत, परवानए शम्ए़ रिसालत, मुजद्दिदे दीनो मिल्लत, ह़ामिये सुन्नत, माह़िये बिद्अ़त, आ़लिमे शरीअ़त, पीरे त़रीक़त, बाइ़से ख़ैरो बरकत, ह़ज़रते अ़ल्लामा मौलाना अलह़ाज अल ह़ाफ़िज़ अल क़ारी शाह इमाम अह़मद रज़ा ख़ान عَلَيْهِ رَحْمَةُ الرَّحْمٰن के जारी कर्दा इस मुबारक फ़तवे को अगर कम अज़ कम तीन[3] बार ग़ौर से पढ़ या सुन लेंगे तो اِنْ شَآءَالله عَزَّوَجَلَّ तोह़फ़े और रिश्वत का फ़र्क़ समझ में आ जाएगा कि कौन किस किस से तोह़फ़ा क़बूल कर सकता है और किस किस से नहीं। चुनान्चे मेरे आक़ा आ'ला ह़ज़रत رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰى عَلَيْه फ़रमाते हैं "जो शख़्स बज़ाते ख़ुद ख़्वाह अज़ जानिबे ह़ाकिम किसी त़रह़ का क़ह्‌रो तसल्लुत़ (या'नी ग़लबा) रखता हो जिस के सबब लोगों पर इस का कुछ दबाव हो अगर्चे वोह फ़ी नफ़्सिही (या'नी ज़ाती त़ौर पर) उन पर जब्रो तअ़द्दी (या'नी ज़ियादती) न करे, दबाव न डाले अगर्चे वोह किसी फ़ैसलए क़त़ई बल्कि ग़ैरे क़त़ई का भी मजाज़ (या'नी बा इख़्तियार) न हो जैसे कोतवाल, थानेदार, जमा'दार या दहक़ानों के लिये ज़मीनदार, मुक़द्दम या'नी (गाउं का नम्बर दार) पटवारी यहां तक कि पन्चायती क़ौमों या पेशों के लिये उन के चौधरी, इन सब को किसी क़िस्म के तोह़फ़े लेने या दा'वते ख़ास्सा (या'नी ख़ुसूसी दा'वत जो कि इसी के लिये रखी गई हो और अगर येह शरीक न हो तो दा'वत ही न हो) क़बूल करने की अस्लन

(या'नी बिल्कुल) इजाज़त नहीं मगर तीन सूरतों में, **अव्वल** अफ़्सर (या'नी अपने से बड़े ओ़हदे दार) से जिस पर इस का दबाव नहीं, न वहां येह ख़याल किया जाता है कि इस की त़रफ़ से येह हदिय्या व दा'वत अपने मुआ़मलात में रिआ़यत कराने के लिये है। **दुवुम** ऐसे शख़्स से जो इस के मन्सब (ओ़हदे) से पहले भी उसे हदिय्या (या'नी तोह़फ़ा) देता हो या दा'वत करता था बशर्ते़ कि अब से उसी मिक़्दार पर है, वरना ज़ियादत (या'नी इज़ाफ़ा) रवा (जाइज़) न होगी मसलन पहले हदिय्या व दा'वत में जिस क़ीमत की चीज़ होती थी अब उस से गिरां (क़ीमती) पुर तकल्लुफ़ होती है या ता'दाद में बढ़ गई या जल्द जल्द होने लगी कि इन सब सूरतों में ज़ियादत (इज़ाफ़ा) मौजूद और जवाज़ मफ़्क़ूद (या'नी जाइज़ होने की सूरत नहीं) मगर जब कि इस शख़्स का माल पहले से इस ज़ियादत के मुनासिब ज़ाइद हो गया हो (या'नी देने वाला अब मज़ीद मालदार हो गया हो) जिस से समझा जाए कि येह ज़ियादत उस शख़्स के मन्सब (या'नी ओ़हदे) के सबब नहीं बल्कि अपनी सरवत (दौलत) बढ़ने के बाइस है। **सिवुम** अपने क़रीबी मह़ारिम से, जैसे मां बाप, औलाद, बहन भाई (मगर) न चचा मामूं ख़ाला फूफी के बेटे कि येह मह़ारिम नहीं अगर्चे उ़र्फ़न इन्हें भी भाई कहें।" मज़ीद फ़रमाते हैं "फिर जहां जहां मुमानअ़त है उस की बिना (बुन्याद) सिर्फ़ तोहमत व **अन्देशए रिआ़यत** पर है, ह़क़ीक़तन **वुजूदे रिआ़यत** ज़रूर (या'नी लाज़िमी)

नहीं कि उस का अपने अ़मल में कुछ तग़य्युर (रद्दो बदल) न करना या इस का आ़दते बे लौसी (या'नी मुख़्लिसाना आ़दतों) से आगाह होना मुफ़ीदे जवाज़ हो सके। दुन्या के काम उम्मीद ही पर चलते हैं, जब येह दा'वत व हदाया क़बूल किया करेगा तो ज़रूर ख़याल जाएगा कि शायद अब की बार कुछ असर पड़े कि मुफ़्त माल देने की तासीर मुजर्रब व मुशाहद (या'नी देखीभाली) है उस बार न हुई इस बार होगी, इस बार न हुई फिर कभी होगी। और येह ह़ीला कि इस का हदिय्या व दा'वत बर बिनाए अख़्लाक़े इन्सानिय्यत है न ब लिह़ाज़े मन्सब, इस का रद ख़ुद हुज़ूरे अक़्दस सय्यिदुल मुर्सलीन صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم फ़रमा चुके हैं, जब एक साह़िब को तह़सीले ज़कात (ज़कात वुसूल करने) पर मुक़र्रर फ़रमा कर भेजा था, उन्हों ने अम्वाले ज़कात ह़ाज़िर किये और कुछ माल जुदा रखे कि येह मुझे मिले हैं। फ़रमाया, अपनी मां के घर बैठ कर देखा होता कि अब कितने तोह़फ़े मिलते हैं ! या'नी येह हदाया सिर्फ़ इसी मन्सब की बिना पर हैं अगर घर बैठा होता तो कौन आ कर दे जाता ?"

(صحيح مسلم ص١٠١٩ حديث ١٨٣٢, फ़तावा रज़विय्या, जि. 18, स. 170, 171)

सुवाल : अगर शागिर्द अपने उस्ताद को तोह़फ़ा पेश करे तो क़बूल करे या नहीं ?

जवाब : क़ुरआने पाक या दर्से निज़ामी या दीगर उ़लूम पढ़ाने वालों को भी त़ालिबे इ़ल्म की त़रफ़ से दिये जाने वाले तह़ाइफ़ क़बूल

करने में निहायत एह़तियात़ की ज़रूरत है क्यूं कि मुदर्रिस भी बा'ज़ मुसल्मानों (मसलन तुलबा) के उमूर पर "वाली" (या'नी हुक्मरान) होते हैं। ओ़हदे दार की वज़ाह़त करते हुए ह़ज़रते अ़ल्लामा शामी رَحْمَةُ اللّٰهِ تَعَالٰى عَلَيْه फ़रमाते हैं, "और ओ़हदे दारों में बाज़ारों और शहरों के ओ़हदे दार, अवक़ाफ़ के मुआ़मलात चलाने वाले और हर वोह शख़्स शामिल है जो किसी ऐसे मुआ़मले में ओ़हदे दार हो जो मुसल्मानों से मुतअ़ल्लिक़ हो।" (رَدُّالْمُحتار ج۸ ص ۵۰)

मज़्कूरा इ़बारत की रोशनी में उस्ताज़ भी एक त़रह़ से ओ़हदेदार है क्यूं कि तुलबा का मद्रसे में दाख़िला बर क़रार रहना अक्सर उस्ताज़ ही के रह़्मो करम पर होता है, उस्ताज़ उस की बे क़ाइदगियों पर दरजे से निकाल सकता है, बल्कि बा'ज़ अवक़ात दाख़िला भी मन्सूख़ करवा सकता है या मन्सूख़ कर देने की सिफ़ारिश कर सकता है। यूंही इम्तिह़ानात में किये जाने वाले सुवालात के परचों को क़ब्ल अज़ वक़्त ज़ाहिर करना, इम्तिह़ानात के नताइज में अच्छे नम्बर देना या नाकाम (FAIL) कर देना भी उस्ताज़ के हाथ में होता है। कई तुलबा ऐसे भी होते हैं जिन में ह़ुसूले इ़ल्म का शौक़ कम होता है जब कि वोह बद अख़्लाक़ियों और बे क़ाइदगियों में पेश पेश होते हैं, चूंकि अपनी ता'लीमी सलाहिय्यतों से उस्ताज़ को ख़ुश नहीं कर पाते लिहाज़ा वक़्तन फ़ वक़्तन

तोहफ़े पेश करते और दा'वतें खिलाते हैं ताकि न उन्हें मद्रसे से निकाला जाए और न ही नाकाम (FAIL) किया जाए। लिहाज़ा असातिज़ा को चाहिये कि इस क़िस्म के तुलबा के तहाइफ़ और दा'वतें क़बूल न करें और अगर मा'लूम हो जाए कि येह तोहफ़ा या दा'वत ख़ास इसी लिये की गई है कि मज़्कूरा क़िस्म के तुलबा का काम बने और येह वाक़ेई इस का काम बना सकते हैं या काम बनाने का ज़रीआ बन सकते हैं तो अब क़बूल करना हराम और जहन्नम में ले जाने वाला काम है। "शामी" में है "इसी तरह आ़लिम को जब सिफ़ारिश या ज़ुल्म को दूर करने के लिये हदिय्या दिया जाए तो वोह रिश्वत है। जो हुक्म मुदर्रिस का बयान हुवा वोही हर मुन्तज़िम का है ख़्वाह किसी इदारे का हो या जमाअ़त का, ख़्वाह ख़ालिसतन मज़्हबी जमाअ़त हो या सियासी कि किसी न किसी ए'तिबार से येह भी मुसल्मानों के कई उमूर पर ओहदे दार होते हैं और इन की जुम्बिशे क़लम या ज़बान चला देने से बहुतेरे लोगों को फ़ाएदा व नुक़्सान पहुंचता है लिहाज़ा इन लोगों को भी क़बूले हदिय्या व दा'वत में निहायत एहतियात की ज़रूरत है।" (رَدُّالْمُحتار ج۹ ص ۶۰۷)

तोहफ़ा लौटाने की दो[2] हिकायात

﴾1﴿ हुज्जतुल इस्लाम हज़रते सय्यिदुना इमाम मुहम्मद ग़ज़ाली عَلَیْہِ رَحمَۃُ اللّٰہِ الْوَالِی से मन्क़ूल है, हज़रते सय्यिदुना शक़ीक़ बल्ख़ी رَحْمَۃُ اللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہ फ़रमाते हैं, मैं ने हज़रते सय्यिदुना सफ़्यान सौरी

رَحْمَةُ اللّٰهِ تَعَالٰى عَلَيْه को बतौरे तोहफ़ा कपड़ा पेश किया तो उन्हों ने मुझे वापस लौटा दिया, मैं ने अ़र्ज़ की, या सय्यिदी ! मैं आप का शागिर्द नहीं हूं, फ़रमाया, मुझे मा'लूम है मगर आप के भाई ने तो मुझ से ह़दीसे पाक सुनी है, मुझे ख़ौफ़ है कहीं मेरा दिल तुम्हारे भाई के लिये दूसरों की निस्बत ज़ियादा नर्म न हो जाए।

(حلية الاولياء ج٧ ص ٣ حديث ٩٣٠٢)

﴾2﴿ एक बार ह़ज़रते सय्यिदुना सुफ़्यान सौरी رَحْمَةُ اللّٰهِ تَعَالٰى عَلَيْه के दोस्त के फ़रज़न्द ने ह़ाज़िर हो कर कुछ नज़राना पेश किया, क़बूल कर लिया। मगर कुछ ही देर के बा'द उस को बुला भेजा और ब इसरार उस का वोह तोह़फ़ा लौटा दिया। येह इस लिये किया कि आप की दोस्ती **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ के लिये थी लिहाज़ा आप رَحْمَةُ اللّٰهِ تَعَالٰى عَلَيْه को ख़ौफ़ लाह़िक़ हुवा कि येह तोह़फ़ा कहीं फ़ी सबीलिल्लाह عَزَّوَجَلَّ दोस्ती का मुआवज़ा न हो जाए ! आप رَحْمَةُ اللّٰهِ تَعَالٰى عَلَيْه के शहज़ादे सय्यिदुना मुबारक رَحْمَةُ اللّٰهِ تَعَالٰى عَلَيْه फ़रमाते हैं, मैं ने अ़र्ज़ की, बाबाजान ! आप को क्या हो गया है ! आप ने जब ले ही लिया था तो हमारी ख़ातिर रख भी लेते ! फ़रमाया, ऐ मुबारक ! तुम तो ख़ुशी ख़ुशी इस को इस्ति'माल करोगे मगर क़ियामत के रोज़ सुवाल मुझ से होगा।

(إحياءُ العُلُوم ج ٣ ص ٤٠٨)

सुवाल : ओ़हदे दार को अगर किसी मा तह़्त ने मदीने शरीफ़ की खजूरें या आबे ज़मज़म शरीफ़ पेश किया तो ले या न ले ?

जवाब : क़बूल कर ले कि इस में रिश्वत की तोहमत का इम्कान नहीं नीज़ रसाइल, बयानात की केसेटें वग़ैरा तब्लीग़ी मवाद या ना'ले पाक के कार्ड्ज़, बहुत ही कम क़ीमत तस्बीह़ या सस्ते दाम वाला मसलन दो[2] या तीन[3] रुपै वाला क़लम वग़ैरा क़बूल करने में ह़रज नहीं कि येह इस त़रह़ के तह़ाइफ़ नहीं जो मज़िन्नए तोहमत बनें। नीज़ ह़ज या सफ़रे मदीना या शादी या बच्चे की विलादत के मवाक़ेअ़ पर तह़ाइफ़ देने का रवाज है, ऐसे तह़ाइफ़ भी ओ़हदे दार अपने मा तह़्तों से ले सकता है। हां अगर उ़र्फ़ से ज़ाइद का तोह़्फ़ा दिया तो नहीं ले सकता मसलन 100 रुपै देने का उ़र्फ़ है और 500 या 1200 रुपै का तोह़्फ़ा दे दिया या इसी क़दर नोटों का हार पहनाया तो मज़िन्नए तोहमत के बाइ़स ना जाइज़ हो जाएगा।[1]

प्यारे प्यारे इस्लामी भाइयो ! तब्लीग़े क़ुरआनो सुन्नत की आ़लमगीर ग़ैर सियासी तह़रीक, **दा'वते इस्लामी** के **मदनी माह़ोल** से वाबस्ता रहेंगे और सुन्नतों की तरबियत के मदनी क़ाफ़िलों में **आ़शिक़ाने रसूल** के हमराह सफ़र की सआ़दत ह़ासिल करते रहेंगे तो اِنْ شَآءَ اللّٰه عَزَّوَجَلَّ बहुत सारे अह़कामे शरीअ़त सीखने को मिलते रहेंगे। **मदनी क़ाफ़िले** में सफ़र की जज़्बा अफ़्ज़ाई के लिये एक मदनी क़ाफ़िले की **मदनी बहार** मुलाह़ज़ा हो चुनान्चे

1 : इन अह़कामात की तफ़्सीली मा'लूमात के लिये मक्तबतुल मदीना की त़रफ़ से जारी कर्दा मदनी मुज़ाकरा नम्बर 71 ता 74 की केसेटें समाअ़त फ़रमाइये। **मजलिसे मक्तबतुल मदीना**

﴾91﴿ ज़िन्दा दरगोर हो गए

एक इस्लामी भाई का कुछ इस त़रह़ बयान है, **दा'वते इस्लामी** के 12 **आ़शिक़ाने रसूल** का सुन्नतों की तरबियत का **मदनी क़ाफ़िला** जामेअ़ मस्जिद निंदराई में मुक़ीम था। 3 रमज़ानुल मुबारक 1426 हि. को जद्वल के मुत़ाबिक़ सुब्ह़ के मुख़्तसर वक़्फ़ए आराम के बा'द "मदनी मश्वरे" का वक़्त हो गया था, अमीरे क़ाफ़िला के हुक्म पर आठ इस्लामी भाई उठ कर तय्यारी कर रहे थे जब कि मुझ समेत चार इस्लामी भाई सुस्ती की वज्ह से मस्जिद से मुल्ह़िक़ा मद्रसे में अभी अपने सोने की जगह पर ही थे कि अचानक ऐसा मह़सूस हुवा जैसे हम रेलगाड़ी में सो रहे हैं और हमें झटके लग रहे हैं, हम हड़बड़ा कर यकदम उठ बैठे, सब दरो दीवार ज़ोर ज़ोर से हिल रहे थे, हम बे साख़्ता दौड़ पड़े मगर आह ! यकायक फ़र्श फटा और हम धम से मुंह के बल गिर पड़े, अभी संभलने भी न पाए थे कि एक **धमाके** के साथ छत और दीवारें हम पर आ गिरीं, हर त़रफ़ घुप अंधेरा छा गया, रहे सहे औसान भी ख़त़ा हो गए, आह ! आह ! आह ! हम चारों इकठ्ठे **ज़िन्दा दरगोर** हो चुके थे ! हम बे ताबाना बुलन्द आवाज़ से कलिमा शरीफ़ पढ़ने और चीख़ चीख़ कर रोने लगे, ब ज़ाहिर **ज़िन्दा** बचने की कोई उम्मीद न रही, तड़पते फड़क्ते हाथ पैर मारते हुए एक इस्लामी भाई के पाउं के धक्के से

दफ़्अ़तन एक पथ्थर सरक गया और रोशनी हो गई, اَلْحَمْدُ لِلّٰه عَزَّوَجَلَّ उसी सूराख़ से एक एक कर के हम बाहर निकलने में काम्याब हो गए। **अमीरे क़ाफ़िला** की फ़ौरी इताअ़त की बरकत से **मदनी क़ाफ़िले** के आठ **आ़शिक़ाने रसूल** हम से पहले ब आसानी सहीह़ सलामत मस्जिद से बाहर निकल चुके थे।

ज़ल्ज़ले से अमां, देगा रब्बे عَزَّوَجَلَّ *जहां*   *सब दुआ़एं करें, क़ाफ़िले में चलो*

हों बपा ज़ल्ज़ले, गर्चे आंधी चले   *सब्र करते रहें, क़ाफ़िले में चलो*

अ़दमे इताअ़त का नतीजा : इस से येह भी पता चला कि **मदनी क़ाफ़िले के जद्वल पर अ़मल करने की बरकत से उन आठ इस्लामी भाइयों को कोई तक्लीफ़ नहीं हुई** वोह आसानी से निकल गए और वोह चार[4] इस्लामी भाई जो कि सुस्ती के बाइस "ऊंह ऊंह" कर के पड़े थे वोह कुछ देर के लिये, इज्तिमाई क़ब्र में ज़िन्दा दफ़्न हो गए मगर बिल आख़िर वोह भी मदनी क़ाफ़िले की बरकत से बाहर निकलने में काम्याब हो गए।

अल्लाह तबारक व तआ़ला इस त़रह़ निशानियां दिखाता है कि कोई तो मौत के मुंह में पहुंच कर भी साफ़ बच निकलता है जब कि कोई हज़ार क़ल्ओं में छुप जाए मगर मौत उसे आ दबोचती है, मौत से कोई राहे फ़िरार इख़्तियार कर ही नहीं सकता। चुनान्चे **अल्लाह**

तबारक व तआ़ला पारह **28 सूरतुल जुमुअ़ह** की आयत नम्बर **8** में इर्शाद फ़रमाता है :

قُلْ اِنَّ الْمَوْتَ الَّذِیْ تَفِرُّوْنَ مِنْهُ فَاِنَّهٗ مُلٰقِیْكُمْ

तरजमए कन्ज़ुल ईमान : तुम फ़रमाओ वोह मौत जिस से तुम भागते हो वोह तो ज़रूर तुम्हें मिलनी है।

صَلُّوْا عَلَى الْحَبِيْب! صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلٰى مُحَمَّد

﴾92﴿ अ़क्ल मन्द बादशाह

मिस्र का अ़क्ल मन्द बादशाह अह़मद इब्ने तूलून एक दिन किसी वीराने में अपने मुसाहिबीन के हमराह खाना खा रहा था कि उस की नज़र फटे पुराने कपड़ों में मल्बूस एक फ़क़ीर पर पड़ी, बादशाह ने एक रोटी, एक तली हुई मुर्ग़ी, एक गोश्त का टुकड़ा और फ़ालूदा गुलाम की मा'रिफ़त उस को भिजवाया। ग़ुलाम ने वापस आ कर बताया, आ़लीजाह ! खाना पा कर वोह ख़ुश नहीं हुवा। येह सुन कर बादशाह ने उस को अपने पास त़लब किया। जब वोह आ गया तो उस से कुछ सुवालात किये जिस के उस ने ख़ुश उस्लूबी के साथ जवाबात दिये और उस पर शाही दबदबे का कोई असर न हुवा। **अ़क्ल मन्द बादशाह** ने अचानक कहा, तुम **मुख़्बिर** मा'लूम होते हो ! येह कह कर बादशाह ने सियात़ या'नी कोड़े मारने वाले को त़लब किया, उस को देखते ही उस फ़क़ीर ने फ़ौरन ए'तिराफ़ कर लिया कि मैं वाक़ेई **मुख़्बिर** (या'नी जासूस) हूं। येह माजरा देख कर किसी ने बादशाह से कहा, आ़लीजाह ! आप ने तो गोया

जादू कर दिया ! अ़क्ल मन्द बादशाह बोला, कोई जादू नहीं किया, मैं ने उसे अपने क़ियाफ़े से पकड़ा है क्यूं कि खाना इस क़दर उ़म्दा था कि जो डट कर खा चुका हो उस के मुंह में भी देख कर पानी भर आए और वोह उस की त़रफ़ राग़िब हो जाए मगर ज़ाहिरी बदह़ाली के बा वुजूद इस ने उस खाने की जानिब कोई तवज्जोह न दी। मज़ीद आ़म आदमी शाही रो'बदाब देख कर थर्रा जाता है मगर येह बेबाकी के साथ गुफ़्तगू कर रहा था इस लिये अन्दाज़ा हुवा कि येह जासूस है (क्यूं कि जासूस की मख़्सूस खु़त़ूत़ पर तरबियत की जाती है) (حیاۃ الحیوان الکبریٰ ج ۱ ص ۴۰۹)

صَلُّوا عَلَی الْحَبِیْب ! صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلٰی مُحَمَّد

﴾93﴿ इब्ने तूलून का क़ब्र में ह़ाल

प्यारे प्यारे इस्लामी भाइयो ! अह़मद इब्ने तूलून इन्तिहाई अ़क्ल मन्द, इन्साफ़ पसन्द, शुजाअ़, मुतवाज़ेअ़, खु़श अख़्लाक़, इ़ल्म दोस्त और सख़ी बादशाह गुज़रा है। येह ह़ाफ़िज़े कुरआन था और निहायत खु़श इल्ह़ानी के साथ तिलावत किया करता था मगर ज़ालिम भी अव्वल दरजे का था, इस की तलवार ख़ून रेज़ी के लिये हर वक़्त नियाम से बाहर रहती थी। कहा जाता है इस ने जिन लोगों को क़त्ल किया और जो इस की क़ैद में मरे उन की ता'दाद **अठ्ठारह हज़ार** के लगभग थी ! इस के इन्तिक़ाल के बा'द एक शख़्स रोज़ाना इस की क़ब्र

पर तिलावत किया करता था। एक रोज़ बादशाह अहमद इब्ने तूलून उस को ख़्वाब में नज़र आया और कहने लगा, मेरी क़ब्र पर कुरआन मत पढ़ा करो ! उस ने पूछा, क्यूं ? इब्ने तूलून ने जवाब दिया, जब भी कोई आयत मेरी त़रफ़ से गुज़रती है, मेरे सर पर ज़र्ब लगा कर पूछा जाता है, क्या तूने येह आयत नहीं सुनी थी ? (حیاۃ الحیوان الکبری ج۱ ص ٤٦٠)

आह ! आह ! आह ! ज़ुल्म का अन्जाम कितना भयानक है ! त़ब्क़ए हुक्मरान का ज़ुल्मो उ़दवान से बचना इन्तिहाई दुश्वार होता है लिहाज़ा हुकूमतों और वज़ारतों के ख़ुशनुमा नज़र आने वाले ओ़हदों वग़ैरा से बिल ख़ुसूस फ़ी ज़माना दूर रहने ही में आ़फ़िय्यत है। येह भी मा'लूम हुवा कि ह़ाफ़िज़े कुरआन को कुरआने पाक के अह़काम पर अ़मल भी करना चाहिये। **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ हमारी, अ़ज़ाबे क़ब्र में मुब्तला गुनहगार मुसल्मानों की और तमाम उम्मत की मग़्फ़िरत फ़रमाए। اٰمین بِجاہِ النَّبِیِّ الْاَمین صَلَّی اللہ تعالٰی علیہ واٰلہٖ وسلَّم

﴾94﴿ दुआ़ए मग़्फ़िरत करने वाले की मग़्फ़िरत हो गई

प्यारे प्यारे इस्लामी भाइयो ! हमें सब मुसल्मानों के लिये दुआ़ए मग़्फ़िरत करते रहना चाहिये, इस में ख़ुद हमारी अपनी भी भलाई है कि जितने मुसल्मानों की मग़्फ़िरत के लिये दुआ़ करेंगे उतनी ता'दाद में हमें नेकियां मिलेंगी, जैसा कि **हुज़ूरे** अन्वर, शाफ़ेए़ मह़शर, मदीने के

ताजवर, बि इज़्ने रब्बे अक्बर ग़ैबों से बा ख़बर, महबूबे दावर صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰی عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم फ़रमाते हैं, "जो कोई तमाम मोमिन मर्द और औरतों के लिये मग़्फ़िरत त़लब करता है, **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ उस के लिये हर मोमिन मर्द और मोमिना औरत के इवज़ एक नेकी लिख देता है।" (الجامع الصغير ص ٥١٣ حديث ٨٤١٩) बहर हाल हम दूसरों की भलाई चाहेंगे तो اِنْ شَآءَ اللّٰه عَزَّوَجَلَّ हमारे साथ भी भलाई की जाएगी। चुनान्चे हज़रते अ़ल्लामा अ़ब्दुर्रह़मान सफ़्फ़ौरी رَحْمَةُ اللّٰهِ تَعَالٰی عَلَيْه नक़्ल करते हैं, कि एक बुज़ुर्ग رَحْمَةُ اللّٰهِ تَعَالٰی عَلَيْه को इन्तिक़ाल के बा'द ख़्वाब में देख कर किसी ने पूछा, مَا فَعَلَ اللّٰهُ بِكَ ؟ या'नी **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ ने आप के साथ क्या मुआ़मला फ़रमाया ? उन्हों ने बताया, **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ ने मेरी मग़्फ़िरत फ़रमा दी और फ़ुलां साहिब के महल के बराबर में मुझे महल अ़ता फ़रमाया है हालां कि मैं उन के मुक़ाबले में ज़ियादा इबादत गुज़ार था ताहम वोह मुझ से सब्क़त ले गए क्यूं कि उन में एक ख़ास आदत थी जो मुझ में न थी और वोह येह कि वोह दुआ़ मांगा करते थे, "ऐ **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ गुज़श्ता, मौजूदा और आयिन्दा के सब मुसल्मानों की मग़्फ़िरत फ़रमा।" (نزهةُ المجالس ج٢ ص٣)

इलाही वासित़ा प्यारे का सब की मग़्फ़िरत फ़रमा عَزَّوَجَلَّ
अ़ज़ाबे नार से हम को ख़ुदाया عَزَّوَجَلَّ *ख़ौफ़ आता है*

صَلُّوْا عَلَى الْحَبِيْب ! صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰی عَلٰی مُحَمَّد

﴾95﴿ 70 दिन पुरानी लाश

اَلْحَمْدُ لِلّٰه عَزَّوَجَلَّ तब्लीग़े कुरआनो सुन्नत की आ़लमगीर ग़ैर सियासी तह़रीक, **दा'वते इस्लामी** के मदनी माह़ोल में मुसल्मानों की ग़म ख़्वारी का जज़्बा और दुन्या व आख़िरत की बरकतें समेटने का मौक़अ़ मिलता है। दा'वते इस्लामी के मदनी माह़ोल में लाखों की बिगड़ियां बन रही हैं, दा'वते इस्लामी अहले ह़क़ की अछूती मदनी तह़रीक है, आइये ईमान ताज़ा करने के लिये आप को दा'वते इस्लामी के **मदनी माह़ोल** की बरकत की अ़ज़ीमुश्शान बहार सुनाऊं, 3 रमज़ानुल मुबारक 1426 हि. (8-10-05) बरोज़ सनीचर **ख़ौफ़नाक ज़ल्ज़ला** आया जिस में लाखों अफ़राद फ़ौत हुए उन्हीं में 19 सालह **नसरीन अ़त्तारिय्या** बिन्ते गुलाम मुर्सलीन जो कि **दा'वते इस्लामी** के हफ़्तावार सुन्नतों भरे इज्तिमाअ़ में शिर्कत फ़रमाती थीं, **शहीद** हो गईं। मर्ह़ूमा के वालिद और दीगर घर वालों ने 8 ज़ुल क़ा'दतुल ह़राम 1426 हि. (10-12-05) **शबे पीर रात तक़रीबन 10 बजे किसी वज्ह से क़ब्र को खोल दिया, यकबारगी आने वाली ख़ुश्बूओं की लपटों से मशामे दिमाग़ मुअ़त्तर हो गए ! शहादत को 70 अय्याम गुज़र जाने के बा वुजूद नसरीन अ़त्तारिय्या का कफ़न सलामत और बदन बिल्कुल तरो ताज़ा था !**

अल्लाह عَزَّوَجَلَّ की उन पर रह़मत हो और उन के सदक़े हमारी मग़्फ़िरत हो।

फ़रमाने मुस्त़फ़ा صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم : मुझ पर कसरत से दुरूदे पाक पढ़ो बेशक तुम्हारा मुझ पर दुरूदे पाक पढ़ना तुम्हारे गुनाहों के लिये मग़्फ़िरत है। (ابن عساکر)

अ़ताए ह़बीबे ख़ुदा عَزَّوَجَلَّ *मदनी माह़ोल* *है फ़ैज़ाने ग़ौसो रज़ा* رَحِمَهُمَا اللّٰهُ تَعَالٰی *मदनी माह़ोल*
सलामत रहे या ख़ुदा عَزَّوَجَلَّ *मदनी माह़ोल* *बचे नज़्रे बद से सदा मदनी माह़ोल*
ऐ इस्लामी बहनो ! तुम्हारे लिये भी *सुनो ! है बहुत काम का मदनी माह़ोल*
तुम्हें सुन्नतों और पर्दे के अह़काम *येह ता'लीम फ़रमाएगा मदनी माह़ोल*
संवर जाएगी आख़िरत اِنْ شَآءَاللّٰه
तुम अपनाए रख्खो सदा मदनी माह़ोल

या रब्बे मुस्त़फ़ा عَزَّوَجَلَّ **! हमें मीठे मुस्त़फ़ा** صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم**, अम्बियाए किराम, सह़ाबए किराम, अहले बैते अत़्हार और औलियाए इ़ज़ाम की सच्ची मह़ब्बत नसीब फ़रमा, इन के नक़्शे क़दम पर चला और इन के फ़ैज़ान से हमें सलामतिये ईमान और दोनों[2] जहांन में अम्नो अमान इनायत फ़रमा, हमारी मग़्फ़िरत फ़रमा कर हमें जन्नतुल फ़िरदौस में बे ह़िसाब दाख़िला और वहां अपने मदनी ह़बीब** صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم **का पड़ोस अ़त़ा फ़रमा।** اٰمِين بِجَاهِ النَّبِيِّ الْاَمين صَلَّى اللّٰه تعالٰی علیه واٰله وسلّم

صَلُّوا عَلَى الْحَبِيب ! صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلٰى مُحَمَّد
تُوبُوا اِلَى اللّٰه ! اَسْتَغْفِرُ اللّٰه
صَلُّوا عَلَى الْحَبِيب ! صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلٰى مُحَمَّد

त़ालिबे ग़मे मदीना
व बक़ीअ़
व मग़्फ़िरत

22 मुह़र्रमुल ह़राम 1427 हि.

اَلْحَمْدُ لِلّٰہِ رَبِّ الْعٰلَمِیْنَ وَ الصَّلٰوۃُ وَالسَّلَامُ عَلٰی سَیِّدِ الْمُرْسَلِیْنَ
اَمَّا بَعْدُ فَاَعُوْذُ بِاللّٰہِ مِنَ الشَّیْطٰنِ الرَّجِیْمِ ط بِسْمِ اللّٰہِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِیْمِ ط

ख़ौफ़नाक ज़ल्ज़ला

शैख़े त़रीक़त, अमीरे अहले सुन्नत, बानिये दा'वते इस्लामी ह़ज़रत अ़ल्लामा मौलाना अबू बिलाल मुह़म्मद इल्यास अ़त्तार क़ादिरी रज़वी ज़ियाई دامت برکاتہم العالیہ

3 रमज़ानुल मुबारक 1426 सि.हि. तक़रीबन दिन के 8:45 पर ख़ौफ़नाक ज़ल्ज़ला आया जिस के नतीजे में कहा जाता है कि तक़रीबन दो लाख अम्वात हुईं और ज़ख़्मियों और माली नुक़्सान का तो अन्दाज़ा ही नहीं हो सकता। इस में तब्लीग़े क़ुरआनो सुन्नत की आ़लमगीर ग़ैर सियासी तह़रीक, दा'वते इस्लामी के आ़शिक़ाने रसूल के सुन्नतों की तरबियत के कुछ मदनी क़ाफ़िले भी ला पता हो गए मगर اَلْحَمْدُ لِلّٰہ عَزَّوَجَلَّ वोह जल्द ही ज़िन्दा सलामत मिल गए उन में तीन मदनी क़ाफ़िलों के साथ होने वाले रह़मत भरे मुआ़मलात की मदनी बहारें मुलाह़ज़ा हों :

(1) "या रसूलल्लाह" लिखने की बरकत

7 इस्लामी भाइयों पर मुश्तमिल एक 30 दिन के मदनी क़ाफ़िले का कुछ इस त़रह़ बयान है, हमारा मदनी क़ाफ़िला जामेअ़ मस्जिद ग़ौसिया में ठहरा हुवा था, 3, रमज़ानुल मुबारक 1426 सि.हि. को नमाज़े फ़ज्र व इश्राक़ वग़ैरा के बा'द जद्वल के मुत़ाबिक़ आ़शिक़ाने रसूल आराम कर रहे थे कि यकायक ज़ोरदार झटके से सब हड़बड़ा कर जाग उठे, ह़वास क़ाइम हों इस से पहले ही मस्जिद के दरो दीवार कड़ाके के साथ टूटने लगे और देखते देखते मस्जिद की छत गिरी, मगर या रसूलल्लाह के ना'रे पर हमारी जान क़ुरबान ! मस्जिद की जनूबी दीवार का वोह ह़िस्सा जिस पर या रसूलल्लाह صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم लिखा हुवा था वोह गिरने से बच गया और छत उस पर गिर कर तिरछी खड़ी हो गई। اَلْحَمْدُ لِلّٰہ عَزَّوَجَلَّ हम ज़िन्दा सलामत बाहर निकलने में काम्याब हो गए। चारों त़रफ़ मकानात मिस्मार हो चुके थे, ज़ख़्मियों की चीख़ो पुकार से फ़ज़ा का सीना दहल रहा था, जगह जगह लोग मल्बे तले दबे पड़े थे। कई दम तोड़ चुके थे और कई आख़िरी हिचकियां ले रहे थे। हम ने लोगों के साथ मिल कर इमदादी काम किया, मस्जिद के सामने वाक़ेअ़ एक मकान के मल्बे से एक डेढ़ सालह बच्ची को ज़िन्दा निकालने में काम्याबी मिली। जिस त़रह़ बन पड़ा कई शुहदा के जनाज़े पढ़े और उन की तदफ़ीन में ह़िस्सा लिया। اَلْحَمْدُ لِلّٰہ عَزَّوَجَلَّ हमारी इन कोशिशों के सबब तबाह ह़ाली के बा वुजूद वहां के मुसल्मानों की दा'वते इस्लामी से मह़ब्बत क़ाबिले दीद थी।

(2) दो बार मौत के मुंह में

9 इस्लामी भाइयों पर मुश्तमिल दा'वते इस्लामी का सुन्नतों की तरबियत का मदनी क़ाफ़िला सुन्नतों भरे सफ़र पर था और एक मस्जिद में ठहरा हुवा था। आ़शिक़ाने रसूल का कुछ इस त़रह़ बयान है, "वक़्फ़ए इस्तिराह़त में पांच इस्लामी भाई आराम कर रहे थे जब कि चार इस्लामी भाई मस्जिद से बाहर गए हुए थे। 3, रमज़ानुल मुबारक 1426 सि.हि. दिन के तक़रीबन पौने नव बजे यकायक ज़ल्ज़ले के ज़ोरदार झटके आए, इस्लामी भाई घबरा कर

तक़्रीबन पांच फ़ुट ऊंची दीवार से कूद कर बाहर निकल आए और सड़क की त़रफ़ सरपट दौड़ पड़े, हर त़रफ़ धमाकों की ख़ौफ़नाक आवाज़ें आ रही थीं। पीछे मुड़ कर जो देखा तो एक ना क़ाबिले यक़ीन मन्ज़र निगाहों के सामने था और वोह येह कि दोनों त़रफ़ से पहाड़ आबादी पर आ गिरा था, जब गर्द के बादल कुछ छटे तो वहां मस्जिद थी न मकानात। तमाम आ़लीशान इमारात ज़मीन बोस हो चुकी थीं, हर त़रफ़ क़ियामते सुग़रा क़ाइम थी, ग़ालिबन इस आबादी का कोई फ़र्द ज़िन्दा न बचा था। आ़शिक़ाने रसूल गिरते पड़ते क़रीबी अ़लाक़े में पहुंचे, वहां भी ज़ल्ज़ले ने तबाही मचा रखी थी, जब ह़वास कुछ बह़ाल हुए तो इमदादी कामों में ह़िस्सा लिया, वहीं रोज़ा इफ़्त़ार किया, ज़ल्ज़ला ज़दा एक मस्जिद के बाक़ी मांदा ह़िस्से में नमाज़े मग़रिब बा जमाअ़त अदा करने के बा'द ज्यूं ही निकले कि फिर एक दिल हिला देने वाला झटका आया और मस्जिद का बक़िय्या ह़िस्सा भी एक धमाके के साथ ज़मीन पर तशरीफ़ ले आया और यूं दूसरी बार आ़शिक़ाने रसूल की जान मह़फ़ूज़ रही। "क़ौमी अख़्बार" के एक कॉलम निगार ने येह वाक़िआ़ बयान करने के बा'द लिखा था, "येह क़ाफ़िला अच्छी निय्यत से (या'नी नेकी की दा'वत की धूमें मचाने के लिये) गया था (शायद) इसी लिये अल्लाह عَزَّوَجَلَّ ने इन्हें बचा लिया।"

(3) ज़िन्दा दरगोर हो गए

एक इस्लामी भाई का कुछ इस त़रह़ बयान है, दा'वते इस्लामी के 12 आ़शिक़ाने रसूल का सुन्नतों की तरबियत का मदनी क़ाफ़िला जामेअ़ मस्जिद निंदराई में मुक़ीम था। 3 रमज़ानुल मुबारक 1426 सि.हि. को जद्वल के मुत़ाबिक़ वक़्फ़ए आराम के बा'द "मदनी मश्वरे" का वक़्त हो गया था, अमीरे क़ाफ़िला के हुक्म पर आठ इस्लामी भाई उठ कर तय्यारी कर रहे थे जब कि मुझ समेत चार इस्लामी भाई सुस्ती की वज्ह से अभी मद्रसे में अपने सोने की जगह ही पर थे कि अचानक ऐसा मह़सूस हुवा जैसे रेलगाड़ी में सो रहे हैं और हमें झटके लग रहे हैं, हम घबरा कर उठ बैठे, और देखा तो ज़ल्ज़ले के सबब सब दरो दीवार ज़ोर ज़ोर से हिल रहे थे, हम बे साख़्ता दौड़ पड़े मगर आह! सामने की ज़मीन एक दम फट गई और हम मुंह के बल गिर पड़े, हम पर छत और दीवारें गिर गईं, हर त़रफ़ घुप अंधेरा छा गया, और हम चारों गोया ज़िन्दा दरगोर हो गए! हम बुलन्द आवाज़ से कलिमा पढ़ने और फूट फूट कर रोने लग गए, ब ज़ाहिर ज़िन्दा बचने की कोई उम्मीद न रही, तड़पते और फड़क्ते एक इस्लामी भाई के पाउं की चोट से एक पथ्थर सरक गया और रोशनी हो गई, اَلْحَمْدُ لِلّٰه عَزَّوَجَلَّ उसी सूराख़ से एक एक कर के हम बाहर निकलने में काम्याब हो गए। अमीरे क़ाफ़िला की फ़ौरी इत़ाअ़त की बरकत से मदनी क़ाफ़िले के आठ आ़शिक़ाने रसूल हम से पहले ब आसानी सह़ीह़ सलामत मस्जिद से बाहर निकल चुके थे।

ज़ल्ज़ले से अमां, पाएंगे बे गुमां
चल पड़ें मत डरें, क़ाफ़िले में चलो

(दा'वते इस्लामी के इदारे मक्तबतुल मदीना और इस की तमाम शाख़ों से हदिय्यतन त़लब कीजिये।)

اَلْحَمْدُ لِلّٰهِ رَبِّ الْعٰلَمِيْنَ وَ الصَّلٰوةُ وَالسَّلَامُ عَلٰى سَيِّدِ الْمُرْسَلِيْنَ
اَمَّا بَعْدُ فَاَعُوْذُ بِاللّٰهِ مِنَ الشَّيْطٰنِ الرَّجِيْمِ بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ

मदनी मुज़ाकरा

त़आ़म के मुतअ़ल्लिक़ अहम तरीन

मा 'लूमात व हिदायात पर मुश्तमिल

दिलचस्प सुवालात व जवाबात

पढ़ने के लिये...

वरक़ उलटिये.....

पेशकश : मजलिसे मदनी मुज़ाकरा

صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم
फ़रमाने मुस्त़फ़ा : जिस ने मुझ पर एक बार दुरूदे पाक पढ़ा अल्लाह तआ़ला उस पर दस रह़मतें भेजता है।

اَلْحَمْدُ لِلّٰهِ رَبِّ الْعٰلَمِيْنَ وَالصَّلٰوةُ وَالسَّلَامُ عَلٰى سَيِّدِ الْمُرْسَلِيْنَ
اَمَّا بَعْدُ فَاَعُوْذُ بِاللّٰهِ مِنَ الشَّيْطٰنِ الرَّجِيْمِ ؕ بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ ؕ

सुवालात व जवाबात

येह सफ़ह़ात खाने और पकाने वालों या'नी सभी के लिये यक्सां मुफ़ीद हैं। लिहाज़ा शैत़ान लाख सुस्ती दिलाए इन को मुकम्मल पढ़ लीजिये। मस्जिद और घर वग़ैरा में इस का दर्स भी जारी फ़रमा कर सवाब का ख़ज़ाना लूटिये।

दुरूद शरीफ़ की फ़ज़ीलत

ख़ल्क़ के रहबर, शाफ़ेए़ मह़शर, मह़बूबे दावर صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم का फ़रमाने मग़्फ़िरत निशान है, जिस ने किताब में मुझ पर दुरूदे पाक लिखा तो जब तक मेरा नाम उस में रहेगा फ़िरिश्ते उस के लिये **इस्तिग़्फ़ार** करते रहेंगे। (اَلْمُعْجَمُ الْاَوْسَط ج ١ ص٤٩٧ حديث ١٨٣٥)

صَلُّوْا عَلَى الْحَبِيْب ! صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلٰى مُحَمَّد

19 रबीउ़न्नूर, शरीफ़ 1423 सि.हि. जुमुआ़ और हफ़्ते की दरमियानी शब **दा'वते इस्लामी** के मदारिस व जामिआ़त (बाबुल मदीना कराची) के बावर्चियों और उन के नाज़िमीन का **मदनी मश्वरा** हुवा।[1] काफ़ी तुलबा ने भी शिर्कत की। ह़स्बे मा'मूल तिलावत व ना'त शरीफ़

1 : मदनी मश्वरे की गुफ़्तगू में ह़स्बे ज़रूरत तरमीम और दीगर मल्फ़ूज़ात का इज़ाफ़ा कर के इस रिसाले को काफ़ी जामेअ़ और दिलचस्प बना दिया गया है।

फ़रमाने मुस्तफ़ा صَلَّى اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم : जो मुझ पर एक बार दुरूद पढ़ता है अल्लाह उस के लिये एक क़ीरात् अज्र लिखता है और क़ीरात् उहुद पहाड़ जितना है। (عبدالرزاق)

के बा'द अमीरे अहले सुन्नत ह़ज़रते अ़ल्लामा मौलाना अबू बिलाल मुह़म्मद इल्यास अ़त्तार क़ादिरी रज़वी دَامَتْ بَرَكَاتُهُمُ الْعَالِيَه ने कसीर **मदनी फूलों** से नवाज़ा और ह़स्बे आ़दत वक़्तन फ़ वक़्तन ! صَلُّوا عَلَى الْحَبِيب की दिल नवाज़ सदा लगा कर ह़ाज़िरीन को दुरूद शरीफ़ पढ़ने की सआ़दत भी इनायत फ़रमाते रहे। आप ने सब को मस्जिद की पहली सफ़ में तक्बीरे ऊला के साथ हर **नमाज़** की बा जमाअ़त अदाएगी, **हफ़्तावार सुन्नतों भरे इज्तिमाअ़** में अज़ इब्तिदा ता इन्तिहा शिर्कत, हर माह **मदनी क़ाफ़िले** में तीन[3] दिन सफ़र और हर माह **मदनी इन्आ़मात** के कार्ड जम्अ़ करवाने की ताकीद फ़रमाई।

खाना नाप कर लीजिये

सुवाल : खाने को ज़ाएअ़ होने से बचाने का क्या त़रीक़ा है ?

जवाब : खाना नाप कर पकाइये और नाप कर ही तक़्सीम फ़रमाइये। मसलन 92 तुलबा के लिये बिरयानी बनानी है, चूंकि एक किलो चावल में उ़मूमन 8 अफ़राद खा लेते हैं तो 12 किलो चावल की बिरयानी बना लीजिये। सब को थाल में इतना इतना खाना दीजिये कि सेरी भी हो जाए और बच भी न रहे। यूं اِنْ شَآءَ اللّٰه عَزَّوَجَلَّ काफ़ी सहूलत रहेगी और खाने का ज़ियाअ़ भी कम होगा। सह़ीह़ अन्दाज़ा लगाए बिग़ैर पकाने से या तो कम पड़ जाता है या बहुत सारा बच जाता है। बची हुई बिरयानी दोबारा गर्म कर के खाई जाए तो उस में लज़्ज़त कम हो जाती है।

फ़रमाने मुस्तफ़ा صَلَّى اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم : जब तुम रसूलों पर दुरूद पढ़ो तो मुझ पर भी पढ़ो, बेशक मैं तमाम जहानों के रब का रसूल हूं। (جمع الجوامع)

छ6 लाख क़ैदी !

सुवाल : खाना कब से ख़राब होना शुरूअ़ हुवा ?

जवाब : बनी इसराईल के दौर से। इस का तफ़्सीली वाक़िआ़ अ़र्ज़ करता हूं। **फ़िरऔ़न** के दरियाए नील में ग़र्क़ होने के बा'द ब हुक्मे ख़ुदावन्दी عَزَّوَجَلَّ हज़रते सय्यिदुना मूसा कलीमुल्लाह عَلٰی نَبِیِّنَا وَعَلَیْہِ الصَّلٰوۃُ وَالسَّلَام **छ6 लाख** बनी इसराईल को ले कर क़ौमे अ़मालक़ा से जिहाद करने बैतुल मुक़द्दस की त़रफ़ रवाना हुए। जब क़रीब पहुंचे तो आप की क़ौम ने ना फ़रमानी की और जंग से इन्कार करते हुए यहां तक कह दिया कि आप और आप का ख़ुदा عَزَّوَجَلَّ इस ज़बर दस्त क़ौम से जंग कर लें। हज़रते सय्यिदुना मूसा कलीमुल्लाह عَلٰی نَبِیِّنَا وَعَلَیْہِ الصَّلٰوۃُ وَالسَّلَام इस से रन्जीदा हो गए। वोह छ6 लाख अफ़राद नव कोस (या'नी 27 हज़ार गज़) चौड़े और तीस30 मील लम्बे मैदान में **चालीस40 साल** के लिये क़ैद कर लिये गए। दिन भर चलते शाम को वहीं होते जहां से चले थे। इस जंगल का नाम तीह हुवा। तीह या'नी "भटक्ते फिरने की जगह।" (माख़ूज़ अज़ तफ़्सीरे नईमी, जि. 6, स. 336 ता 351)

मन्न व सल्वा

रूहुल बयान में है, जब हज़रते सय्यिदुना मूसा कलीमुल्लाह عَلٰی نَبِیِّنَا وَعَلَیْہِ الصَّلٰوۃُ وَالسَّلَام बनी इसराईल के **छ6 लाख** अफ़राद के साथ मैदाने **तीह** में मुक़ीम थे तो **अल्लाह** तआ़ला ने इन लोगों के खाने के

लिये आस्मान से दो[2] खाने उतारे। एक का नाम "मन्न" और दूसरे का नाम "सल्वा" था। मन्न बिल्कुल सफ़ेद शहद की त़रह़ एक ह़ल्वा था या सफ़ेद रंग का शहद ही था जो रोज़ाना आस्मान से बारिश की त़रह़ बरसता था और सल्वा पकी हुई बटेरें थीं जो जनूबी हवा के साथ आस्मान से नाज़िल हुवा करती थीं।

खाना ख़राब हो जाने की वज्ह

मन्न व सल्वा के बारे में ह़ज़रते सय्यिदुना मूसा कलीमुल्लाह عَلٰى نَبِيِّنَا وَعَلَيْهِ الصَّلٰوةُ وَالسَّلَام को हुक्म था कि तुम लोग इस को रोज़ाना खा लिया करो कल के लिये हरगिज़ हरगिज़ बचा कर न रखना। मगर ज़ईफ़ुल ए'तिक़ाद लोगों को येह ख़ौफ़ लाह़िक़ हुवा कि अगर किसी दिन मन्न व सल्वा न उतरा तो हम इस बे आबो गियाह चट्यल मैदान में भूके मर जाएंगे। "चुनान्चे उन लोगों ने कुछ छुपा कर कल के लिये रख लिया तो नबी की ना फ़रमानी से ऐसी नुहूसत फैल गई कि जो कुछ कल के लिये जम्अ़ किया था वोह सब सड़ गया और आयिन्दा के लिये इस का उतरना बन्द हो गया।" (تفسیر روح البیان ج۱ ص۱٤۲) इसी लिये **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ के प्यारे मह़बूब, दानाए ग़ुयूब मुनज़्ज़हुन अ़निल उ़यूब صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने इर्शाद फ़रमाया, **बनी इसराईल न होते तो न खाना कभी ख़राब होता और न गोश्त सड़ता।** (صحیح مسلم ص ۷۷۵ الحدیث ۱٤۷۰) मा'लूम हुवा ! खाने का

ख़राब होना और गोश्त का सड़ना उसी तारीख़ से शुरूअ़ हुवा। वरना इस से पहले न खाना बिगड़ता था न गोश्त सड़ता था।

12 चश्मे बह निकले

देखा आप ने ! नबी عَلَيْهِ السَّلَام की ना फ़रमानी ने बनी इसराईल को किस क़दर हलाकत में डाला ! मैदाने **तीह** में क़ैद होते वक़्त जिन की उ़म्र बीस20 साल से ज़ाइद थी वोह सब इस मुद्दत में यहीं फ़ौत हो गए। ह़ज़रते सय्यिदुना मूसा कलीमुल्लाह عَلٰى نَبِيِّنَا وَعَلَيْهِ الصَّلٰوةُ وَالسَّلَام भी वहीं मुक़ीम थे लिहाज़ा आप عَلَيْهِ السَّلَام की बरकत से मन्न व सल्वा नाज़िल हुवा। आप عَلَيْهِ الصَّلٰوةُ وَالسَّلَام ने पथ्थर पर अपना अ़सा शरीफ़ मारा तो उस से **12 चश्मे** बह निकले जिस से बनी इसराईल पानी पीते और नहाते, **इस क़ैद के दौरान जो लिबास उन लोगों के बदन पर थे वोह न मैले होते, न गलते न फटते, उन के नाख़ुन व बाल बढ़ते न थे लिहाज़ा ह़जामत की ज़रूरत न पड़ती, रात को एक सुतून नुमूदार होता जिस से रोशनी फूटती यूं समझें वोह "ट्यूब लाइट" का काम देता था। दिन को हलका बादल उन पर साया करता, उन के यहां जो बच्चा पैदा होता उस पर क़ुदरती नाख़ुन का लिबास होता जो उस के बढ़ने के साथ बढ़ता जाता।** इस क़ैद में येह सारी ने'मतें उन्हें **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ के रसूल ह़ज़रते सय्यिदुना मूसा कलीमुल्लाह عَلٰى نَبِيِّنَا وَعَلَيْهِ الصَّلٰوةُ وَالسَّلَام की बरकत से ह़ासिल हुई।

(ماخوذ از روح المعانی فی تفسیر القرآن والسبع المثانی حصہ٦ ص٣٨٣)

नोकर का नवाफ़िल पढ़ना कैसा?

इस कुरआनी वाक़िए से येह भी मा'लूम हुवा कि गुनाहों और ना फ़रमानियों के बाइस दुन्या में भी तकालीफ़ आती हैं। बराए करम ! **बावर्ची** इस्लामी भाई भी अपनी ज़िम्मादारी मुकम्मल तौर पर निभाया करें। आजकल बा'ज़ मुलाज़िमीन मदनी ज़ेहन न होने की वज्ह से ड्यूटी पूरी नहीं देते, तै शुदा काम जानबूझ कर ना मुकम्मल रखते मगर उजरत पूरी लेते हैं और यूं अपनी रोज़ी ख़राब करते हैं। **याद रखिये ! मुलाज़िम ड्यूटी के अवक़ात में सेठ की इजाज़त के बिग़ैर नवाफ़िल नहीं पढ़ सकता।** अगर कमज़ोरी के बाइस काम में कोताही होती हो तो बिग़ैर इजाज़त नफ़्ल रोज़ा भी नहीं रख सकता। (رَدُّالْمُحتار ج٩ ص٩٧) हां बा जमाअत फ़र्ज़ नमाज़ों और रमज़ानुल मुबारक के रोज़ों से सेठ रोकने का मजाज़ (या'नी बा इख़्तियार) नहीं, वोह रोके जब भी न रुके।

आप दाने दाने के अमीन हैं

सुवाल : क्या जामिअ़तुल मदीना के मत्बख़ (या'नी किचन) का बावर्ची अमीन होता है?

जवाब : जी हां। अगर जानबूझ कर अनाज का एक दाना भी बेजा सर्फ़ किया तो आख़िरत में जवाब देना होगा। **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ हमें हर तरह की **अमानत** की हिफ़ाज़त नसीब करे और **ख़ियानत** से

महफ़ूज़ फ़रमाए । ख़ियानत का अ़ज़ाब निहायत ही दर्दनाक है । चुनान्चे हुज्जतुल इस्लाम ह़ज़रते सय्यिदुना इमाम मुह़म्मद ग़ज़ाली عَلَیْہِ رَحْمَۃُ اللّٰہِ الْوَالِی "मुकाशफ़तुल कुलूब" में नक़्ल करते हैं,

ख़ियानत का भयानक अ़ज़ाब

बरोज़े क़ियामत एक शख़्स को बारगाहे ख़ुदावन्दी عَزَّوَجَلَّ में पेश किया जाएगा । इर्शाद होगा, तूने फ़ुलां शख़्स की अमानत वापस की थी ? अ़र्ज़ करेगा, "नहीं ।" हुक्म पा कर फ़िरिश्ता जहन्नम को ले चलेगा । वहां जहन्नम की गहराई में उस "अमानत" को रखा हुवा देखेगा और वोह शख़्स उस अमानत की त़रफ़ गिरना शुरूअ़ होगा यहां तक कि सत्तर साल के बा'द वहां पहुंचेगा और उस अमानत को उठा कर ऊपर की त़रफ़ चढ़ेगा जब जहन्नम के कनारे पर पहुंचेगा तो पाउं फिसल जाएगा और फिर जहन्नम की गहराई में जा पड़ेगा, इसी त़रह़ वोह गिरता और चढ़ता रहेगा यहां तक सरकारे मदीना صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم की शफ़ाअ़त से उसे रब्बुल आ़लमीन جَلَّ جَلَالُہٗ की रह़मत ह़ासिल हो जाएगी और अमानत का मालिक उस से राज़ी हो जाएगा । (مکاشفۃ القلوب ص ٤٤،٤٥)

मदारिस में खाना ज़ाएअ़ होने की वज्ह

आप ने (या'नी अमीरे अहले सुन्नत دَامَتْ بَرَکَاتُہُمُ الْعَالِیَہ ने) **बावर्ची** इस्लामी भाइयों से इस्तिफ़्सार फ़रमाया, बताइये ! होटलों में खाना ज़ियादा ज़ाएअ़ होता है या मदारिस में ? जवाब मिला, मदारिस में । इस

पर फ़रमाया, दर अस्ल बात येह है कि होटल वाले की अपनी जेब से रक़म ख़र्च होती है, उस को कमाई भी करनी होती है लिहाज़ा वोह खाने पकाने की सख़्त निगरानी करता और किफ़ायत शिआ़री से काम लेता है। रहे मदारिस, तो येह चूंकि लोगों के चन्दों से चलते हैं, न मुन्तज़िमीन की जेब से पैसा जाता है न ही बावर्ची की। लिहाज़ा सख़्त बे एह़तियातियां बरती जाती हैं, बा'ज़ अवक़ात तो सदक़े का आया हुवा ज़ब्ह़ शुदा पूरे का पूरा बकरा ला परवाही से इधर उधर रखा रह जाता, ख़राब हो जाता और बिल आख़िर फिंकवा दिया जाता है ! आह ! आह ! आह ! मुसल्मानों के चन्दे का इस क़दर बे दर्दी के साथ ज़ियाअ़ कहीं आख़िरत में फंसा कर न रख दे। मदारिस व जामिआ़त और तमाम मज़्हबी व समाजी इदारों के ज़िम्मादारान याद रखें ! बरोज़े क़ियामत एक एक ज़र्रे का ह़िसाब होना है। **अल्लाह** तबारक व तआ़ला पारह **30 सूरतुज़्ज़िलज़ाल** आयत नम्बर **7** और **8** में इर्शाद फ़रमाता है :

فَمَنْ يَّعْمَلْ مِثْقَالَ ذَرَّةٍ خَيْرًا يَّرَهٗ ۝۷ وَمَنْ يَّعْمَلْ مِثْقَالَ ذَرَّةٍ شَرًّا يَّرَهٗ ۝۸

तरजमए कन्ज़ुल ईमान : तो जो एक ज़र्रा भर भलाई करे उसे देखेगा और जो एक ज़र्रा भर बुराई करे उसे देखेगा।

फ़्रीज़र में खाना रखने का त़रीक़ा

सुवाल : गोश्त और खाने की ह़िफ़ाज़त के कुछ मदनी फूल इनायत फ़रमा दीजिये।

जवाब : इस बात का भी ख़याल रखिये कि "डीप फ़्रीज़र" बराबर काम कर रहा है या नहीं, गर्मियों में बा'ज़ अवक़ात वोल्टेज कम हो जाने की सूरत में ठन्डक (COOLING) कम हो जाती और गिज़ा ख़राब हो जाने का अन्देशा होता है, ऐसे मवाक़ेअ़ पर खाने पीने की अश्या को फैला कर खुली हवा में भी रखा जा सकता है, गोश्त को दीवार वग़ैरा की टेक के बिग़ैर खुली हवा में लटका देने से देर तक ताज़ा रह सकता है । जब भी पका हुवा खाना या सालन फ़्रीज़र में रखें तो बरतन का ढक्कन ज़रूर खोल दिया करें ताकि ठन्डक अन्दर पहुंच सके । छोटे बरतनों, थालों या प्लास्टिक की छोटी थेलियों में रखना मुनासिब होता है, खाने से पुर बड़े पतीले के अन्दरूनी हिस्से में ठन्डक न पहुंचने के सबब खाना ख़राब हो जाने का अन्देशा रहता है । ख़ुसूसन खिचड़े और पकी हुई दाल में ज़ियादा एह़तियात़ की ज़रूरत है वरना येह जल्द ख़राब हो जाते हैं । इसी त़रह़ ऐसी गिज़ाएं जिन में टमाटर या खटाई ज़ियादा मिक़्दार में हो उन के भी जल्द ख़राब हो जाने का इम्कान रहता है ।

कच्चा गोश्त काफ़ी दिनों तक ख़राब न हो

सुवाल : कच्चा गोश्त ज़ियादा दिनों तक ख़राब न हो इस का कोई त़रीक़ा बता दीजिये ।

जवाब : कच्चा गोश्त अगर बड़े पतीले या टोकरे में भर कर डीप फ़्रीज़र में रखेंगे तो अन्दरूनी ह़िस्से में ठन्डक कम पहुंचने के बाइ़स ख़राब हो जाने का क़वी अन्देशा है लिहाज़ा इस की ह़िफ़ाज़त का त़रीक़ा अच्छी त़रह़ समझ लीजिये। पहले टोकरी की तह में बर्फ़ बिछाइये अब इस पर गोश्त की तह जमा दीजिये फिर इस पर बर्फ़ की तह बिछाइये, फिर ऊपर गोश्त की और अब डीप फ़्रीज़र में रख दीजिये। इस त़रह़ करने से नीचे ऊपर और अन्दर हर त़रफ़ ठन्डक ही ठन्डक रहेगी और اِنْ شَآءَاللّٰه عَزَّوَجَلَّ काफ़ी दिनों तक गोश्त ख़राब नहीं होगा।

बिरयानी ख़राब हो जाए तो क्या करें

सुवाल : खाना ख़राब होने की क्या अ़लामात हैं ?

जवाब : खाना और सालन के ख़राब होने की अ़लामत येह है कि खट्टी बदबू आएगी और अगर शोरबे दार ग़िज़ा है तो ऊपर झाग भी आ जाएगा। अगर पुलाव बिरयानी या क़ोरमा ख़राब होना शुरूअ़ हो जाए तो चूंकि इब्तिदाअन इस में खट्टी और नर्म चीज़ें सड़ना शुरूअ़ होती हैं लिहाज़ा बोटियां छांट कर धो कर इस्ति'माल कर लीजिये। जिस का गोश्त अभी नहीं सड़ा ऐसा सालन और पुलाव वग़ैरा जानबूझ कर मत फेंकिये।

सड़ा हुवा गोश्त खाना ह़राम है

सुवाल : गोश्त सड़ जाए तो क्या करे ?

जवाब : उसे फेंक दें कि सदरुश्शरीअ़ह मुफ़्ती मुह़म्मद अमजद अ़ली आ'ज़मी رَحْمَةُ اللّٰهِ تَعَالٰى عَلَيْه फ़रमाते हैं : "जो गोश्त सड़ गया बदबू ले आया उस का खाना ह़राम है अगर्चे नजिस नहीं।"

(बहारे शरीअ़त, ह़िस्सा : 2, स. 101)

फटे हुए दूध का इस्ति'माल

सुवाल : फटा हुवा दूध किस त़रह़ इस्ति'माल किया जाए ?

जवाब : फटे हुए दूध का इस्ति'माल तो बहुत ही आसान है, शह्द या चीनी डाल कर चूल्हे पर चढ़ा दीजिये इस का पानी जल जाएगा और खोया रह जाएगा जो इन्तिहाई लज़ीज़ होता है।

वेजीटेबल घी

सुवाल : क्या वेजीटेबल घी खा सकते हैं ?

जवाब : इस का खाना जाइज़ है मगर अक्सर मिलावट वाला होने के बाइ़स मुज़िर्रे सिह़ह़त है। आजकल ज़ुमूमन लोगों के पेट ख़राब रहते हैं इस की एक वज्ह ग़ैर मे'यारी वेजीटेबल घी भी है। अगर अस्ली घी मुयस्सर न हो तो कूकिंग ऑइल इस्ति'माल कीजिये।

कोर्न ऑइल इस से बेहतर और "ज़ैत" या'नी ज़ैतून शरीफ़ का तेल बेहतरीन।

बुढ़ापे की आसानी के लिये

सुवाल : घी तेल के इस्ति'माल से सिह्हत को नुक़्सान न हो इस सिल्सिले में कोई मुफ़ीद एह्तियात इर्शाद हो।

जवाब : घी, तेल और हर त़रह की चिक्नाई को हज़्म होने में देर लगती और ज़ियादा इस्ति'माल बीमारियों और मोटापे का बाइ़स होता है। लिहाज़ा **जवानी ही से घी, तेल, मेदा और चीनी के इस्ति'माल में कमी शुरूअ़ कर दी जाए तो ज़िन्दा रह जाने की सूरत में बुढ़ापे में** اِنْ شَآءَاللّٰه عَزَّوَجَلَّ **सिह्हत अच्छी रहेगी।** मेरा मदनी मश्वरा है कि आप खाना पकाने में जितना तेल मसालह़ा नमक मिर्च वग़ैरा डालते हैं बिला झिझक इन सब की मिक़्दार आधी कर दीजिये اِنْ شَآءَاللّٰه عَزَّوَجَلَّ इस के फ़वाइद ख़ुद ही देख लेंगे। अलबत्ता मरीज़ को चाहिये कि वोह डॉक्टर के मश्वरे पर अ़मल करे।

बिग़ैर तेल के पकाने का त़रीक़ा

सुवाल : क्या बिग़ैर घी तेल के भी खाना बनाया जा सकता है ?

जवाब : क्यूं नहीं। बा'ज़ खाने बिग़ैर तेल घी के भी पकाए जा सकते हैं मसलन सादा चावल, खिचड़ी, कढ़ी, दाल वग़ैरा। फ़रबा बकरे और गाय के पाए में तेल डालने की ज़रूरत ही नहीं होती क्यूं कि इस में मौजूद चिक्नाई पिघल कर ख़ुद ही तेल का काम दे देती है ! बल्कि हर तरह़ का सालन बिग़ैर तेल, घी के बनाया जा सकता है, इस का त़रीक़ा येह है कि बहुत सारा हरा मसालह़ा पीस लीजिये बेशक अपनी पसन्द की सब्ज़ियां भी साथ ही पीस डालिये, अब उसी के गाढ़े सय्याल में सालन पका लीजिये, ह़स्बे ज़रूरत पानी, दही, मिर्च और गर्म मसालहे़ भी डाल दीजिये। चन्द बार पकाने के बा'द ख़ुद ही हाथ बैठ जाएगा। اِنْ شَآءَ اللّٰه عَزَّوَجَلَّ

गटर की नाली का तह़फ़्फ़ुज़

सुवाल : मत़बख़ की सफ़ाई के बारे में कुछ मदनी फूल इनायत हों।

जवाब : मत़बख़ (या'नी बावर्ची ख़ाने) की सफ़ाई रखना बहुत ज़रूरी है। फ़र्श और दीवारों के धब्बे साफ़ कर दिया करें। ग़िज़ाओं के अज्ज़ा इधर उधर मुन्तशिर रहते हैं, पड़े पड़े सड़ते और जरासीम की अफ़्ज़ाइश का बाइस बनते हैं लिहाज़ा पाबन्दी से जरासीम कुश दवाएं छिड़क्ना ज़रूरी है। इस बात का हमेशा ख़याल रखिये कि शोरबा, हड्डियां, और किसी क़िस्म की चिक्नाहट नाली

में न जाने पाए वरना गटर भर सकता है। लिहाज़ा बरतन धोने से क़ब्ल उस में मौजूद मसालहे और चिक्नाहट भूसे वग़ैरा से पोंछ कर अ़लाहृदा डब्बे में डाल दीजिये।

कंकरियां और सुरसुरियां

सुवाल : चावल में बा'ज़ अवक़ात सुरसुरियां और कंकरियां भी साथ ही पक जाती हैं अगर येह भूल कर खा ली जाएं तो ?

जवाब : पकाने से क़ब्ल चावल और दालों वग़ैरा में से मिट्टी, कंकरियां और सुरसुरियां (लाल रंग के बारीक कीड़े) साफ़ कर लीजिये। याद रहे ! मिट्टी ह़द्दे ज़रर तक खाना ह़राम और अगर जानबूझ कर एक भी सुरसुरी खा ली तो ह़राम व गुनाह। अगर सुरसुरियां खाने के साथ पक गईं तो उन को निकाल दीजिये और खाना खा लीजिये। अगर पकाने में सुस्ती के सबब क़स्दन कंकरियां वग़ैरा रहने देंगे जिस की वज्ह से खाने वालों को तक्लीफ़ हो तो सफ़ाई करना जिन की ज़िम्मादारियों में शामिल है वोह बावर्ची गुनहगार होंगे।

साबित गुर्दा सालन में मत डालिये

सुवाल : जानवर कटते वक़्त निकले हुए ख़ून का क्या हुक्म है ? नीज़ क्या साबित गुर्दा सालन में पका लेना चाहिये ?

जवाब : गोश्त पकाने में बहुत एहतियात की ज़रूरत है। "दमे मस्फ़ूह़" या'नी ब वक़्ते ज़ब्ह़ निकला हुवा ख़ून नापाक और उस का खाना ह़राम है। लिहाज़ा गोश्त को अच्छी त़रह़ धो लीजिये ताकि अगर ऐसा ख़ून हो तो धुल जाए और उस का असर ज़ाइल हो जाए। **सालिम गुर्दे** सालन में न डाला करें उन को **चीर** कर अच्छी त़रह़ धो लिया करें।

सुवाल : तिल्ली और गुर्दे खाना कैसा ?

जवाब : जाइज़ है। मगर हमारे मीठे मीठे आक़ा صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم इन दोनों[2] चीज़ों को खाना पसन्द नहीं फ़रमाते थे। चुनान्चे दो[2] अह़ादीसे मुबारका मुलाह़ज़ा फ़रमाइये ﴾1﴿ सरकार صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم गुर्दे (खाना) ना पसन्द फ़रमाते क्यूं कि वोह पेशाब के क़रीब होते हैं। (مُلَخَّصاً كنزالعمال ج ٧ ص ٤١ حديث ١٨٢١٢) ﴾2﴿ सरकार صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم को तिल्ली (खाने से) नफ़रत थी मगर इस को ह़राम क़रार नहीं दिया। (مُلَخَّصاً اتحاف السادة المتقين ج ٨ ص ٢٤٣)

सुवाल : तो क्या हमें तिल्ली और गुर्दे नहीं खाने चाहिएं ?

जवाब : इश्क़ तो येही है कि न खाए। मगर जो खाए उस को हरगिज़ बुरा भी न कहे क्यूं कि इन का खाना ह़लाल है जैसा कि **ह़ज़रते** सय्यिदुना अ़ब्दुल्लाह इब्ने उ़मर رَضِىَ اللّٰهُ تَعَالٰى عَنْهُمَا से रिवायत है, ताजदारे रिसालत, शहन्शाहे नुबुव्वत, पैकरे जूदो सख़ावत, सरापा

रह़मत, मह़बूबे रब्बुल इ़ज़्ज़त صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیۡہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने इर्शाद फ़रमाया, हमारे लिये दो2 मरे हुए जानवर और दो2 ख़ून ह़लाल हैं। दो2 मुर्दे मछली और टिड्डी और दो2 ख़ून कलेजी और तिल्ली हैं।

(مسند امام احمد ج ۲ ص ٤١٥ حديث ٥٧٢٧)

सुवाल : क्या कोई सी भी मछली ह़राम नहीं ?

जवाब : मछली बिग़ैर मारे अपने आप मर कर पानी की सत़्ह़ पर उलट गई वोह ह़राम है। मछली को मारा और वोह मर कर उलटी तैरने लगी येह ह़राम नहीं। (درمختار مع رد المحتار ج ۹ ص٤٤٥)

फ़ज़ाई मछली

मछली के बारे में एक **दिलचस्प ह़िकायत** समाअ़त फ़रमाइये اِنۡ شَآءَاللہ عَزَّوَجَلَّ आप की मा'लूमात में इज़ाफ़ा होगा, चुनान्चे **एक** बार ख़लीफ़ा हारूनुर्रशीद ने अपना शिकारी बाज़ फ़ज़ा में उड़ाया उड़ते उड़ते वोह नज़रों से ओझल हो गया और कुछ देर बा'द अपने पन्जे में एक (फ़ज़ाई) **मछली** दबोचे उतर आया। ख़लीफ़ा को बड़ी ह़ैरत हुई, उस ने ज़बर दस्त आ़लिम ह़ज़रते सय्यिदुना मुक़ातिल رَحۡمَۃُ اللہِ تَعَالٰی عَلَیۡہ की ख़िदमत में फ़तवा पूछा, फ़रमाया, आप के जद्दे अमजद ह़ज़रते सय्यिदुना अ़ब्दुल्लाह बिन अ़ब्बास رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنۡہُمَا फ़रमाते हैं, "फ़ज़ाओं में त़रह़ त़रह़ की मख़्लूक़ रहती है जिन में बा'ज़ सफ़ेद रंग के जानवर भी होते हैं जो

मछली जैसे बच्चे जनते हैं, उन के बाज़ू तो होते हैं मगर पर नहीं होते।" इस के बा'द हज़रते सय्यिदुना मुक़ातिल رَحْمَةُ اللّٰهِ تَعَالٰى عَلَيْه ने उस को खाने की इजाज़त दी तो उस जानवर का एहतिराम किया गया।

(حياتُ الحيوان الكبرى ج ۱ ص ۱۵۷)

मछली थोड़ी मिक़्दार में खानी चाहिये

हज़रते इमाम बुरहानुद्दीन इब्राहीम ज़रनूजी رَحْمَةُ اللّٰهِ تَعَالٰى عَلَيْه फ़रमाते हैं, हकीम जालीनूस का क़ौल है कि अनार में कसीर मनाफ़ेअ़ हैं जब कि मछली में बहुत ज़ियादा नुक़्सानात। मगर थोड़ी सी मछली खाना ढेरों अनार से बेहतर है। (تَعلِيمُ الْمُتعلِّم طريق التعَلُّم ص ٤٢)

जालीनूस कौन था ?

सुवाल : जालीनूस कौन था ?

जवाब : जालीनूस का अस्ली नाम "क्लाडीसन गेलन" था। येह हमारे प्यारे आक़ा صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم की बि'सत से भी पहले गुज़रा है। 131 सि.ई. में पैदा हुवा 201 सि.ई. में फ़ौत हुवा। क़दीम **यूनान** का निहायत ही माहिर त़बीब था और फ़न्ने तिब में तमाम अतिब्बाए यूनान को इस ने पीछे छोड़ दिया। यूनान की तिबाबत शोहरए आफ़ाक़ है येह शख़्स इतना माहिर त़बीब माना जाता था कि आज अठ्ठारह सो[1800] साल के बा'द भी इस का दुन्या में नाम है।

फ़रमाने मुस्तफ़ा صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم : जिस ने मुझ पर रोज़े जुमुआ दो सो बार दुरूदे पाक पढ़ा उस के दो सो साल के गुनाह मुआफ़ होंगे। (جمع الجوامع)

ज़बीहे के 22 मम्नूआ अज्ज़ा

सुवाल : **ज़बीहा** के वोह कौन से अज्ज़ा हैं जो नहीं खाने चाहिएं।

जवाब : इसी त़रह़ के एक सुवाल का जवाब देते हुए मेरे आक़ा **आ'ला ह़ज़रत** इमाम अह़मद रज़ा ख़ान عَلَيْهِ رَحمَةُ الرَّحْمٰن फ़रमाते हैं : ह़लाल जानवर के सब अज्ज़ा ह़लाल हैं मगर बा'ज़ कि ह़राम या मम्नूअ़ मकरूह हैं ﴾1﴿ रगों का ख़ून ﴾2﴿ पित्ता ﴾3﴿ फुक्ना (या'नी मसाना) ﴾4,5﴿ अ़लामाते मादा व नर ﴾6﴿ बैज़े (या'नी कपूरे) ﴾7﴿ ग़ुदूद ﴾8﴿ ह़राम मग़्ज़ ﴾9﴿ गरदन के दो पठ्ठे कि शानों तक खिंचे होते हैं ﴾10﴿ जिगर (या'नी कलेजी) का ख़ून ﴾11﴿ तिल्ली का ख़ून ﴾12﴿ गोश्त का ख़ून कि बा'दे ज़ब्ह़ गोश्त में से निकलता है ﴾13﴿ दिल का ख़ून ﴾14﴿ पित यानी वोह ज़र्द पानी कि पित्ते में होता है ﴾15﴿ नाक की रतूबत कि भेड़ में अक्सर होती है ﴾16﴿ पाख़ाने का मक़ाम ﴾17﴿ ओझड़ी ﴾18﴿ आंतें ﴾19﴿ नुत़्फ़ा ﴾20﴿ वोह नुत़्फ़ा कि ख़ून हो गया ﴾21﴿ वोह कि गोश्त का लोथड़ा हो गया ﴾22﴿ वोह कि पूरा जानवर बन गया और मुर्दा निकला या बे ज़ब्ह़ मर गया। (फ़तावा रज़विय्या, जि. 20, स. 240, 241) **समझदार** क़स्साब बा'ज़ मम्नूआ चीज़ें निकाल दिया करते हैं मगर बा'ज़ में उन को भी मा'लूमात नहीं होती या बे एह़तियाती बरतते हैं। लिहाज़ा आज कल उ़मूमन ला इल्मी की वज्ह से जो चीज़ें सालन में पकाई और खाई जाती हैं उन में से चन्द की निशान देही करने की कोशिश करता हूं।

ख़ून

ज़ब्ह के वक़्त जो ख़ून निकलता है उस को "दमे मस्फ़ूह़" कहते हैं। येह नापाक होता है इस का खाना **ह़राम** है। बा'दे ज़ब्ह़ जो ख़ून गोश्त में रह जाता है मसलन गरदन के कटे हुए ह़िस्से पर, दिल के अन्दर, कलेजी और तिल्ली में और गोश्त के अन्दर की छोटी छोटी रगों में येह अगर्चे नापाक नहीं मगर इस ख़ून का भी खाना **मम्नूअ़** है। लिहाज़ा पकाने से पहले सफ़ाई कर लीजिये। गोश्त में कई जगह छोटी छोटी रगों में ख़ून होता है इन की निगहदाश्त काफ़ी मुश्किल है, पकने के बा'द वोह रगें काली डोरी की त़रह़ हो जाती हैं। ख़ास कर भेजे, सिरी पाए और मुर्ग़ी की रान और पर के गोश्त वग़ैरा में बारीक काली डोरियां देखी जाती हैं खाते वक़्त उन को निकाल दिया करें। **मुर्ग़ी का दिल भी साबित न पकाइये, लम्बाई में चार 4 चीरे कर के इस का ख़ून पहले अच्छी त़रह़ साफ़ कर लीजिये।**

ह़राम मग़्ज़

येह सफ़ेद डोरे की त़रह़ होता है। जो कि भेजे से शुरूअ़ हो कर गरदन के अन्दर से गुज़रता हुवा पूरी रीढ़ की हड्डी में आख़िर तक जाता है। माहिर क़स्साब गरदन और रीढ़ की हड्डी के बीच से दो[2] परकाले यानी दो टुकड़े कर के **ह़राम मग़्ज़** निकाल कर फेंक देते हैं। मगर बारहा बे एह़तियात़ी की वज्ह से थोड़ा बहुत रह जाता है और सालन या बिरयानी वग़ैरा में पक भी जाता है। चुनान्चे गरदन, चांप और कमर का गोश्त धोते

वक़्त **ह़राम मग़्ज़** तलाश कर के निकाल दिया करें। येह मुर्ग़ी और दीगर परिन्दों की गरदन और रीढ़ की हड्डी में भी होता है पकाने से क़ब्ल उस को निकालना बहुत मुश्किल है लिहाज़ा खाते वक़्त निकाल देना चाहिये।

पट्ठे

गरदन की मज़्बूती के लिये इस की दोनों[2] त़रफ़ पीले रंग के दो[2] लम्बे लम्बे **पट्ठे** होते हैं जो कि कन्धों तक खिचे हुए होते हैं। इन **पट्ठों** का खाना मम्नूअ़ है। गाय और बकरी के तो आसानी से नज़र आ जाते हैं मगर मुर्ग़ी और परिन्दों की गरदन के पट्ठे ब आसानी नज़र नहीं आते, खाते वक़्त ढूंड कर या किसी जानने वाले से पूछ कर निकाल दीजिये।

ग़ुदूद

गरदन पर, ह़ल्क़ में और बा'ज़ जगह चरबी वग़ैरा में छोटी बड़ी कहीं सुर्ख़ और कहीं मिटयाले रंग की गोल गोल गांठें होती हैं इन को अ़रबी में ग़ुद्दह और उर्दू में **ग़ुदूद** कहते हैं। येह भी मत खाइये, पकाने से पहले ढूंड कर निकाल दीजिये। अगर पके हुए गोश्त में भी नज़र आ जाए तो निकाल दीजिये।

कपूरा

कपूरे को ख़ुसया फ़ोत़ा या बैज़ा भी कहते हैं। इन का खाना मक्रूहे तह़रीमी है। येह बेल, बकरा वग़ैरा (नर या'नी मुज़क्कर) में नुमायां होते हैं। मुर्ग़े (नर) का पेट खोल कर आंतें हटाएंगे तो पीठ की

अन्दरूनी सत्ह़ पर अन्डे की त़रह सफ़ेद दो छोटे छोटे बीज नुमा नज़र आएंगे येही **कपूरे** हैं। इन को निकाल दीजिये। **अफ़्सोस** ! मुसल्मानों की बा'ज़ होटलों में दिल, कलेजी के इ़लावा बेल, बकरे के कपूरे भी तवे पर भून कर पेश किये जाते हैं ग़ालिबन होटल की ज़बान में इस डिश को "कटाकट" कहा जाता है। (शायद इस को "कटाकट" इस लिये कहते हैं कि गाहक के सामने ही दिल या कपूरे वग़ैरा डाल कर तेज़ आवाज़ से तवे पर काटते और भूनते हैं इस से "कटाकट" की आवाज़ गूंजती है)

ओझड़ी

ओझड़ी के अन्दर ग़लाज़त भरी होती है इस का खाना **मक्रूहे तह़रीमी** है मगर मुसल्मानों की एक ता'दाद है जो आजकल इस को शौक़ से खाती है।

मम्नूआ़ चीज़ों की पहचान किस त़रह ह़ासिल हो ?

सुवाल : बयान कर्दा मम्नूआ़ अज्ज़ा की तफ़्सीलात कैसे मा'लूम हों ?

जवाब : तमाम बावर्चियों बल्कि सब इस्लामी भाइयों को चाहिये कि वोह ज़बीह़ा की मम्नूआ़ चीज़ों की मा'लूमात ह़ासिल करने के लिये **फ़तावा रज़विय्या** की जिल्द 20 सफ़ह़ा 234 ता 241 का ज़रूर मुत़ालआ़ करें, समझ में न आए तो उ़लमाए किराम से पूछ लें। इस के बा'द किसी गोश्त बेचने वाले से मिल कर उन चीज़ों की पहचान ह़ासिल करें। यक़ीनन पढ़ना मुफ़ीद होता है मगर साथ में **तजरिबा** भी हो तो सोने पर सुहागा।

बे नमाज़ी के हाथ की रोटी खाना कैसा?

सुवाल : बा'ज़ लोग बे नमाज़ी के हाथ की रोटी नहीं खाते हमारे बा'ज़ बावर्ची कभी कभी नमाज़ में सुस्ती कर जाते हैं इन को नसीहत फ़रमाइये।

जवाब : बे नमाज़ी के हाथ की रोटी खाना जाइज़ है। ताहम अगर परहेज़ गार लोग बे नमाज़ी की इस्लाह के लिये ज़जरन उस के हाथ की रोटी न खाएं तो हरज नहीं। बाक़ी इस वक़्त जो **बावर्ची** इस्लामी भाई जम्अ़ हुए हैं उन का तअ़ल्लुक़ तो मदारिसे इस्लामिय्या से है, अक्सर मद्रसे भी मसाजिद से मुत्तसिल हैं। इन बावर्चियों को तो फ़राइज़ के साथ साथ अव्वाबीन, तहज्जुद, इश्राक़ और चाश्त के नवाफ़िल भी तर्क नहीं करने चाहिएं क्यूं कि हमारे यहां दौराने ड्यूटी इन नवाफ़िल पर कोई पाबन्दी नहीं। याद रखिये ! नमाज़े फ़र्ज़ न **बावर्ची** को मुआ़फ़ है न उस के **मुआ़विन** को न ही **रोटी लगाने वाले को**। जूंही अज़ान से क़ब्ल दुरूद शरीफ़ की आवाज़ सुनें। ताकीद है कि फ़ौरन चूल्हा बन्द कर दीजिये और तक्बीरे ऊला के साथ बा जमाअ़त नमाज़ अदा करने के लिये मस्जिद की पहली सफ़ का रुख़ कीजिये। **ख़ैर ख़्वाह**[1] इस्लामी भाइयों की ख़िदमात में अ़र्ज़ है कि वोह

1 : नमाज़ों के लिये तुलबा को मस्जिद की सफ़ों में पहुंचाने और दौराने दर्सो बयान लोगों को मुबल्लिग़ के क़रीब बिठाने की ख़िदमात पर मामूर इस्लामी भाइयों को दा'वते इस्लामी के मदनी माहोल में ख़ैर ख़्वाह कहते हैं।

जिस त़रह़ दूसरे त़ुलबा को नमाज़ के लिये जगाते और मस्जिद में पहुंचाते हैं इसी त़रह़ मत़्बख़ (या'नी बावर्ची ख़ाना) का भी रुख़ कर लिया करें और चूल्हा बन्द करवा कर उन को नमाज़ के लिये रवाना फ़रमा दिया करें।

त़ुलबाए इल्मे दीन की ख़िदमत सआदत है

सुवाल : क्या बावर्ची ह़ज़रात ख़ुश नसीब नहीं हैं कि इन्हें त़ुलबाए इल्मे दीन की ख़िदमत की सआदत मुयस्सर है ?

जवाब : क्यूं नहीं, वाक़ेई **प्यारे बावर्चियो !** आप ह़ज़रात बहुत ही ख़ुश नसीब हैं कि हिफ़्ज़े क़ुरआन और त़लबे इल्मे दीन में मश्ग़ूल रहने वाले वोह त़ुलबा आप के हाथ का खाना तनावुल फ़रमाते हैं जिन पर रह़मतें झूम झूम कर बरसती हैं। त़ालिबे इल्मे दीन का मक़ाम बहुत बुलन्दो बाला और अ़ज़मत वाला होता है। ह़ज़रते सय्यिदुना अबू दरदा رَضِیَ اللهُ تَعَالٰی عَنْهُ जब किसी त़ालिबे इल्मे दीन को देखते तो "मरह़बा ख़ुश आमदीद" कहा करते और फ़रमाते, **रसूलुल्लाह** صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने तुम्हारे बारे में (नेक सुलूक करने की) ख़ास वसिय्यत फ़रमाई है। (سنن دارمی حدیث ۳۴۸ ج ۱ ص ۱۱۱)

यक़ीनन बिल ख़ुसूस नौ जवान त़ुलबा क़ाबिले रश्क हैं कि इस उ़म्र में आ़म त़ौर पर खेलकूद का मश्ग़ला होता है मगर इन्हों ने अपनी जवानी की बहारें इल्मे दीन के लिये वक़्फ़ कर दी हैं।

या अल्लाह तुलबा के सदके़ मुझे बख़्श दे

सुवाल : जामिअ़ातुल मदीना के तुलबा के बारे में आप के क्या जज़्बात हैं ?

जवाब : मैं दा'वते इस्लामी के जामिअ़ात व मदारिस के तुलबा से बहुत मह़ब्बत करता हूं और इन के सदके़ से अपने लिये दुआ़ए मग़्फ़िरत किया करता हूं। अगर्चे इन में बा'ज़ शरारती भी होते हैं मगर बच्चे जो ठहरे ! बच्चे कैसे ही शरारती हों मगर मां बाप को प्यारे होते हैं। कुछ तुलबा के शरारत कर लेने से हर त़ालिबुल इल्म बुरा भी नहीं हो जाता। اَلْحَمْدُ لِلّٰه عَزَّوَجَلَّ हमारे तुलबा नमाज़े पन्जगाना के इलावा दीगर नवाफ़िल भी पढ़ते हैं, اَلْحَمْدُ لِلّٰه عَزَّوَجَلَّ हमारे मुतअ़द्दद तुलबा मिल कर सलातुत्तौबा, तहज्जुद, इश्राक़ और चाश्त की नमाज़ों का एहतिमाम करते हैं। हज़ारों तुलबा **मदनी इन्आ़मात** के कार्ड भर कर जम्अ़ करवाते हैं, बे शुमार तुलबा **मदनी क़ाफ़िलों** में सफ़र करते हैं, कई ऐसे हैं जिन की मदारिस व जामिअ़ात के अत़राफ़ में **दा'वते इस्लामी** का मदनी काम करने की ज़िम्मादारियां हैं और اَلْحَمْدُ لِلّٰه عَزَّوَجَلَّ उन्हों ने बे शुमार मसाजिद को संभाला और आबाद किया हुवा है। اَللّٰهُمَّ زِدْ فَزِدْ ثُمَّ زِدْ या'नी ऐ **अल्लाह** बढ़ा और बढ़ा फिर बढ़ा।

शिकायत करने का त़रीक़ा

सुवाल : बावर्ची इस्लामी भाई तुलबा की शिकायात को अहम्मिय्यत नहीं देते।

जवाब : देखिये! बावर्ची की भी इ़ज़्ज़ते नफ़्स है, जिस के जी में आया वोह वक़्त बे वक़्त अगर बावर्ची की सम्अ़ ख़राशी करता रहेगा तो उन को भी ना गवार गुज़र सकता है, ज़ाहिर है एक या दो बावर्ची एक जामिआ़ या मद्रसे के तमाम तुलबा को मुत़्मइन कर भी नहीं सकते। अ़ज़ीज़ तुलबा ! आप भी याद रखिये कि बार बार शिकायत करते रहने से शाकी का वक़ार जाता रहता और असर ख़त्म हो जाता है। लिहाज़ा शिकायत एक ही बार हो मगर नरमी के साथ और भरपूर अन्दाज़ में होनी चाहिये बल्कि तह़रीरी हो तो ख़ूब, तजरिबा येही है कि इस त़रह़ के मुआ़मलात में "तक़्रीर" के मुक़ाबले में "तह़रीर" ज़ियादा मुअस्सिर होती है। चूंकि तुलबा की अक्सरिय्यत ना पुख़्ता ज़ेह्न होती है और येह उ़मूमन बात बनाने के बजाए बिगाड़ बैठते होंगे ! लिहाज़ा कोई त़ालिबे इ़ल्म किसी भी बावर्ची के पास शिकायत ले कर न जाए। जिस को शिकायत हो वोह तह़रीरी त़ौर पर अपने जामिअ़तुल मदीना या मद्रसतुल मदीना के मत़्बख़ ज़िम्मादार इस्लामी भाई को पेश कर दे। (अमीरे अहले सुन्नत دَامَتْ بَرَكَاتُهُمُ الْعَالِيَه के इस इर्शाद पर बावर्चियों ने बहुत इत़्मीनान का इज़्हार किया)

अगर पकते हुए खाना जल जाए तो इस का ज़िम्मादार कौन ?

सुवाल : अगर बावर्ची खाना जला दे तो क्या इस को मुआ़फ़ है ?

जवाब : नहीं। **बावर्ची** कि उजरत ले कर पका रहा है वोह इस का ज़िम्मादार है। फ़ुक़हाए किराम رَحِمَهُمُ اللّٰهُ تَعَالٰى फ़रमाते हैं, "बावर्ची ने खाना ख़राब कर दिया या जला दिया या कच्चा ही उतार दिया तो उसे खाने का ज़मान (या'नी जो कुछ नुक़्सान हुवा वोह) अदा करना होगा।" (درِّمختارمع ردالمحتار ج ۹ ص ۲۲) यहां ज़िम्मादारान ग़ौर फ़रमा लें कि अगर बावर्ची ने ज़मान अदा न किया तो क़ौम के चन्दे के मुआमले में आप "आंख आड़े कान" नहीं कर सकते। अगर आप की ज़ाती रक़म होती तो शायद एक एक पाई वुसूल करते। लिहाज़ा इस वक़्फ़ की रक़म के नुक़्सान का ज़मान बहर हाल देना होगा। या'नी खाना ख़राब होने के सबब जितनी रक़म का नुक़्सान हुवा वोह अदा करना होगा। "चलिये आयिन्दा ख़याल रखेंगे" येह कह देने से छुटकारा नहीं हो सकता पिछला सारा हिसाब भी चुकाना होगा।

तन्दूरी रोटी और खाने का सोडा

सुवाल : **तन्दूरी** रोटी में बा'ज़ अवक़ात खाने का सोडा ज़ियादा हो जाता है, क्या येह नुक़्सान देह नहीं ?

जवाब : हर चीज़ में ए'तिदाल ज़रूरी है। ज़ाहिर है अगर रोटी में ज़ियादा

सोडा होगा तो रोटी बद मज़ा हो जाएगी और सोडा का ज़ियादा इस्ति'माल जिस्म को गलाता है।

सुवाल : चने उबालने का क्या त़रीक़ा है ?

जवाब : चने उबालने हों तो बेहतर येही है कि तक़रीबन 8 घन्टे के लिये पानी में भिगो कर रख दिये जाएं मगर इन को नर्म करने और जल्द पकाने के लिये खाने का सोडा भी डाला जा सकता है।

सख़्त गोश्त गलाने का त़रीक़ा

सुवाल : बूढ़ा गोश्त गलाने का क्या त़रीक़ा है ?

जवाब : बूढ़े और सख़्त गोश्त में पकाते वक़्त अगर कच्चा पपीता डाल दिया जाए तो वोह जल्द गल जाता है। सीख़ पर सेंकी जाने वाली बोटियों के मसालहे में भी कच्चा पपीता डाला जाता है। होटलों में लोग जो मज़े ले ले कर नहारी खाते हैं, उस में उ़मूमन ऊंट या बूढ़ी गाय या बाखड़ी भेंस (या'नी वोह भेंस जो दूध देना बन्द कर दे) या कोल्हू या खेत के फ़ारिग़ शुदा (RETIRED) ढांडे या'नी बूढ़े बेल का गोश्त होता है। येह पपीते का कमाल है कि उस को मोम की त़रह़ मुलायम कर के खाने के क़ाबिल बना देता है। नीज़ चीनी, पोदीना के डन्ठल और छालिया भी गोश्त को गलाने के काम आते हैं। ज़ियादा देर तक चूल्हे पर चढ़ाए

रखने से भी गोश्त गल जाता है। जब सालन या पुलाव वग़ैरा पकाएं तो मुर्ग़ी वग़ैरा के गोश्त के छोटे टुकड़ें डालें ताकि अन्दर तक पक जाएं। हां बड़ी कड़ाही या देग में बड़े टुकड़े डालें जाएं तो ह़स्बे ज़रूरत तपिश मिल जाने की सूरत में पक जाते हैं। मेरा मदनी मश्वरा है कि हर सालन में तबर्रुकन थोड़ा सा कद्दू शरीफ़ डालने का मा'मूल बना लिया जाए। गोश्त में सब्ज़ी डालने का एक फ़ाएदा येह भी है कि इस से गोश्त के बा'ज़ मन्फ़ी असरात दूर हो जाते हैं।

न गलने वाला गोश्त

सुवाल : जो गोश्त किसी सूरत से भी न गलता हो उस का क्या इलाज ?

जवाब : उस का कोई इलाज नहीं। मेरे आक़ा आ'ला ह़ज़रत इमाम अह़मद रज़ा ख़ान عَلَيْهِ رَحْمَةُ الرَّحْمٰن फ़रमाते हैं, ख़ुन्सा कि नरो मादा दोनों[2] की अ़लामतें रखता हो, दोनों[2] (जगहों) से यक्सां पेशाब आता हो, कोई वज्हे तरजीह़ न रखता हो, इस का गोश्त किसी त़रह़ पकाए नहीं पकता। वैसे ज़ब्हे शरई से ह़लाल हो जाएगा, अगर कोई कच्चा गोश्त खाए, खाए। उस की क़ुरबानी जाइज़ नहीं।

(मुलख़्ख़सन फ़तावा रज़विय्या जदीद, जि. 20, स. 255)

उ़म्दा गोश्त की पहचान

सुवाल : उ़म्दा गोश्त की पहचान क्या है ?

जवाब : **बूढ़ा** गोश्त लाल होता है, जब कि जवान गोश्त मिटयाले (भूरे) रंग का और इस में उ़मूमन चरबी कम होती है। भूरा गोश्त ज़ियादा अच्छा होता है। घर के लिये आख़िरी बचा हुवा गोश्त ख़रीदना मुफ़ीद हो सकता है क्यूं कि बेचने वाले जल्दी जल्दी चरबी और हड्डियां तोल में चला देते हैं और यूं आख़िर के बचे हुए गोश्त में बोटी ज़ियादा होती है ! सब्ज़ियों और फलों का मुआ़मला इस से उलट है कि ताज़ा और उ़म्दा जल्दी जल्दी बिक जाते और आख़िर में गले सड़े बच रहते हैं। इन मा'नों कर येह मक़ूला दुरुस्त है कि "सब्ज़ी और फल शुरूअ़ में और गोश्त आख़िर में ख़रीदो।"

जानवरों की मज़्लूमिय्यत

सुवाल : क्या कोई सहा़बी भी गोश्त का काम करते थे ?

जवाब : जी हां, ह़ज़रते सय्यिदुना अ़म्र बिन आ़स और ह़ज़रते सय्यिदुना ज़ुबैर رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنۡہُمَا गोश्त का काम करते थे। **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ हर गोश्त फ़रोश को इन सहा़बए किराम رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنۡہُمَا के नक़्शे क़दम पर चलाए। आजकल इस कारोबार में बहुत सारे गुनाहों का इरतिकाब किया जाता है। ह़ुसूले गोश्त के लिये परवरिश पाने

वाला बे ज़बान जानवर उ़मूमन शुरूअ़ ही से ज़ुल्म सहता हुवा "मज़्बह़" तक पहुंचता है। बेशक ज़ब्ह़ करना जाइज़ है मगर आजकल इस जाइज़ काम के दौरान बेचारे जानवरों को इस क़दर बेजा तकालीफ़ पहुंचाई जाती हैं कि देखें तो कलेजा मुंह को आता है।

सुवाल : जानवर ज़ब्ह़ करने की वोह एह़तियातें इर्शाद हों जिस से उस को कम से कम तक्लीफ़ हो।

जवाब : गाय वग़ैरा को गिराने से पहले ही क़िब्ला रुख़ का तअ़य्युन कर लिया जाए, लिटाने के बा'द बिल ख़ुसूस पथरीली ज़मीन पर घसीट कर क़िब्ला रुख़ करना बे ज़बान जानवर के लिये अज़िय्यत का बाइ़स है। ज़ब्ह़ करने में चार[4] रगें कट जाएं या कम से कम तीन[3] रगें कट जाएं। इस से ज़ियादा न काटें कि छुरी गरदन के मोहरे तक पहुंच जाए कि येह बे वज्ह की तक्लीफ़ है फिर जब तक जानवर मुकम्मल त़ौर पर ठन्डा न हो जाए न उस के पाउं काटें न खाल उतारें, बहर ह़ाल ज़ब्ह़ कर लेने के बा'द जब तक रूह़ न निकल जाए छुरी बल्कि कटी हुई गरदन पर हाथ भी बिल्कुल मस न करें, ग़ौर फ़रमाइये आप के ज़ख़्म पर कोई हाथ या उंगिलयां डाले तो तक्लीफ़ होगी या नहीं ! बा'ज़ लोग गाय को जल्द "ठन्डी" करने के लिये ज़ब्ह़ के बा'द गरदन की खाल उधेड़ कर छुरी घोंप कर दिल की रगें काटते हैं, इसी त़रह़ बकरे को ज़ब्ह़ करने के फ़ौरन बा'द बेचारे की गरदन चटख़ा देते

हैं, बे ज़बानों पर इस त़रह़ के मज़ालिम न किये जाएं। जिस से बन पड़े उस के लिये ज़रूरी है कि जानवर को बिला वज्ह ईज़ा पहुंचाने वाले को रोके। बहारे शरीअ़त ह़िस्सा 16 सफ़ह़ा 259 पर है, "जानवर पर ज़ुल्म करना ज़िम्मी काफ़िर पर (अब दुन्या में सब काफ़िर ह़रबी हैं) ज़ुल्म करने से बुरा है और ज़िम्मी पर ज़ुल्म करना मुस्लिम पर ज़ुल्म करने से भी बुरा है क्यूं कि जानवर का कोई मुईनो मददगार **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ के सिवा नहीं उस ग़रीब को इस ज़ुल्म से कौन बचाए !"

सुवाल : ज़ब्ह़ होने वाले जानवर का तमाशा देखना कैसा ?

जवाब : बे ज़बान जानवर के ज़ब्ह़ को तमाशा बनाने के बजाए उस पर रह़्म खाना चाहिये। और ग़ौर करना चाहिये कि अगर इस की जगह **मुझे ज़ब्ह़** किया जा रहा होता तो मेरी क्या कैफ़िय्यत होती ! ब वक़्ते ज़ब्ह़ जानवर पर रह़्म खाना **कारे सवाब** है जैसा कि एक सह़ाबी رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْهُ ने बारगाहे रह़्मतुल्लिल आ़लमीन صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم में अ़र्ज़ की, **या रसूलल्लाह** صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ! "मुझे बकरी ज़ब्ह़ करने पर रह़्म आता है।" फ़रमाया, "अगर इस पर रह़्म करोगे तो **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ भी तुम पर रह़्म फ़रमाएगा।" (مستدرك للحاكم ج٥ ص٣٢٧ حديث ٧٦٣٦) इस ह़दीसे पाक में तो जाइज़ त़रीक़े पर ज़ब्ह़ पर रह़्म खाने का

तज़्किरा है तो जब बे ज़बान जानवर पर ज़ुल्म हो रहा हो जैसा कि अ़र्ज़ की गई उस को तमाशा बनाना कैसा ? ज़ाहिर है अगर मुम्किन हो तो ज़ालिम को समझाए और ज़ुल्म से बाज़ रखे अगर येह नहीं कर सकता तो दिल में बुरा जानते हुए वहां से हट जाए। बल्कि जब जानवर ज़ब्ह़ हो रहा हो तो बिला ज़रूरत उस की त़रफ़ देखने ही से कतराए। उस की त़रफ़ घेरा डालना, उस के चिल्लाने और तड़पने फड़क्ने से लुत़्फ़ अन्दोज़ होना, हंसना क़ह्क़हे बुलन्द करना और उस का तमाशा बनाना सरासर **ग़फ़्लत** की अ़लामत है। **बकरी का एह़तिराम करना चाहिये कि ह़दीसे पाक में है, बकरी की इ़ज़्ज़त करो, और इस से मिट्टी झाड़ो क्यूं कि वोह जन्नती जानवर है।**

(الجامعُ الصَّغیر ج۱ ص۸۸ حدیث ۱۴۲۱)

ऊंट को तीन[3] जगह से ज़ब्ह़ करना कैसा ?

सुवाल : आजकल ऊंट को तीन[3] जगह से ज़ब्ह़ किया जाता है येह कहां तक दुरुस्त है ?

जवाब : ऊंट को तीन[3] जगह से ज़ब्ह़ करना ज़ियादती है एक ही जगह काफ़ी है बल्कि ऊंट को **नह़्र** करना सुन्नत है। ह़ल्क़ के आख़िरी हिस्से में नेज़ा (या नोकदार छुरी वग़ैरा) घोंप कर रगें काट देने को **नह़्र** कहते हैं। (बहारे शरीअ़त, हिस्सा : 15, स. 115, मदीनतुल मुर्शिद बरेली शरीफ़) **नह़्र** करने के बा'द अब एक बार भी गले पर छुरी फेरने या'नी ज़ब्ह़ करने की ज़रूरत नहीं।

ऊंट के सर पर लोहे के डन्डे की ज़र्ब !

अल्लाह عَزَّوَجَلَّ बार बार हम सब को **ह़ज** और **दीदारे मदीना** नसीब फ़रमाए । और मिना शरीफ़[1] में क़ुरबानी की सआदत बख़्शे । आह ! ह़ज (1422 सि.हि.) के दिनों में वहां इस क़दर लरज़ा ख़ैज़ मनाज़िर देखे गए कि रह़्म दिल आदमी को ग़श आ जाए ! आह ! बेचारे ग़रीब ऊंट की मज़्लूमिय्यत ! **एक क़दआवर काला ह़बशी लोहे का वज़्न दार डन्डा दोनों[2] हाथों से थाम कर बड़ी फुरती के साथ बे ख़बर खड़े हुए ऊंट के सर पर ज़ोर से दे मारता था जिस से वोह ग़रीब चीख़ता हुवा चकरा कर गिर जाता,** फिर चन्द क़स्साब ह़ावी हो कर उस को तीन[3] जगह से ज़ब्ह़ कर देते । कहीं कहीं येह भी देखा कि पहले खड़े हुए ऊंट को **नह़्र** कर देते, ख़ून का फ़व्वारा उबलता और वोह घबरा कर भागने की कोशिश करता तो उस के सर पर लोहे के डन्डे का ज़ोरदार वार किया जाता जिस से वोह बेचारा बिलबिलाता हुवा ज़मीन पर ढेर हो जाता, फिर तीन[3] जगह से ज़ब्ह़ कर देते । येह दर्दनाक मनाज़िर मैं ने ख़ुद नहीं देखे, 1422 सि.हि. के क़ाफ़िलए चल मदीना की त़रफ़ से क़ुरबानी करने के लिये "मज़्बह़" जाने वाले इस्लामी भाइयों ने मुझे आंखों देखा ह़ाल सुनाया था ।

1 : ह़ज की क़ुरबानी मिना शरीफ़ में करना सुन्नत है मगर आजकल "मज़्बह़" मुज़्दलिफ़ा में है ।

गोश्त फ़रोशों के लिये एह़तियातें

सुवाल : गोश्त बेचने वालों के लिये कुछ मदनी फूल दे दीजिये।

जवाब : अक्सर गोश्त बेचने वाले आजकल बहुत सारी ग़लतियां कर के गुनाह कमाते और अपनी रोज़ी ख़राब कर डालते हैं। मिन जुम्ला बर्फ़ख़ाने के निकाले हुए बासी गोश्त को ताज़ा कह कर फ़रोख़्त करना, ढांडे (बूढ़े बेल) या बूढ़ी भेंस या बूढ़े भेंसे के गोश्त को बछिया (या'नी नौ उ़म्र गाय) का गोश्त कह कर बेचना या बूढ़ी गाय या बछड़े की रान पर किसी और बछिया के छोटे छोटे थन लगा कर धोका दे कर फ़रोख़्त करना, जिन हड्डियों और छीछड़ों को फेंक देने का उ़र्फ़ (रवाज) है उन को धोके से वज़्न में चला देना, गोश्त या क़ीमे को बिग़ैर तोले सिर्फ़ अन्दाज़े से तोल के नाम पर देना, (मसलन किसी ने आध पाव क़ीमा मांगा तो मुठ्ठी में ले कर वज़्न किये बिग़ैर ही बत़ौरे आध पाव दे दिया) वग़ैरा गुनाह व ह़राम और जहन्नम में ले जाने वाले काम हैं।

अन्दाज़े से तोलने की मुमानअ़त

सुवाल : अभी आप ने क़ीमा अन्दाज़े से तोलने की मुमानअ़त फ़रमाई। इस में तो आज़्माइश है क्यूं कि कई चीज़ें आजकल अन्दाज़े से ही तोल कर देने का उ़र्फ़ (या'नी रवाज) है। तो क्या लेने वाला भी गुनहगार है?

जवाब : जी हां । अगर तोल के नाम पर अन्दाज़े से ख़रीदा तो लेने वाला भी गुनहगार है। इस से बचने का एक त़रीक़ा येह भी है कि जो चीज़ें तोल के नाम पर बिग़ैर तोले आजकल दी जाती हैं वोह आप तोल के नाम पर न मांगें बल्कि उस की क़ीमत कह दें मसलन कहें, मुझे 5 रुपै की दही दे दो या 12 रुपै का क़ीमा दे दो । अब वोह जिस त़रह़ भी दे, दोनों[2] गुनाह से बच गए ।

क़ीमे के बाज़ारी समोसे

सुवाल : क्या बिग़ैर धोए क़ीमा खाया जा सकता है ?

जवाब : जब तक नजासत का इल्म न हो बिग़ैर धोए खाने में ह़रज नहीं मगर एह़तियात़ इसी में है कि धो लिया जाए । **बाज़ार** और दा'वतों के चटपटे समोसे खाने वाले तवज्जोह से सुनें । आ़म तौ़र पर समोसे बनाने वाले क़ीमा धोते नहीं हैं। उन के बक़ौल क़ीमा धो कर डालें तो कबाब समोसे का ज़ाएक़ा मुतअस्सिर होता है ! क़ीमे में बा'ज़ अवक़ात क्या क्या होता है येह भी सुन लीजिये ! गाय की **ओझड़ी** का छिल्का उतार कर उस की "बट" में तिल्ली बल्कि مَعَاذَاللهُ عَزَّوَجَلَّ कभी तो जमा हुवा ख़ून डाल कर मशीन में पीसते हैं इस त़रह़ सफ़ेद बट के क़ीमे का रंग गोश्त की मानिन्द गुलाबी हो जाता है। कभी कभी कबाब समोसे वाले उस में ह़स्बे ज़रूरत अदरक लहसन वग़ैरा भी साथ ही पिसवा लेते

हैं अब उस क़ीमे के धोने का सुवाल ही पैदा नहीं होता, उसी क़ीमे में मिर्च मसालहा डाल कर भून कर उस के समोसे बना कर फ़रोख़्त करते हैं। होटलों में भी इसी त़रह के क़ीमे के सालन का अन्देशा रहता है। गन्दे कबाब समोसे वालों से पकोड़े वग़ैरा भी न लिये जाएं कि कड़ाही एक और तेल भी वोही गन्दे क़ीमे वाला। ख़ैर मैं येह नहीं कहता कि مَعَاذَ اللّٰه عَزَّوَجَلَّ हर गोश्त बेचने वाला इस त़रह करता है या ख़ुदा न ख़्वास्ता हर कबाब, समोसे वाला नापाक क़ीमा ही इस्ति'माल करता है। यक़ीनन ख़ालिस गोश्त का क़ीमा भी मिल सकता है। अ़र्ज़ करने का मन्शा येह है कि क़ीमा या कबाब समोसे क़ाबिले इत़्मीनान मुसल्मान से लेने चाहिएं और जो मुसल्मान ऐसी ओछी ह़रकतें करते हैं उन को तौबा कर लेनी चाहिये।

मरी हुई मुर्ग़ियां

आज कल बद दियानती का दौर है। कहते हैं जब मुर्ग़ियों में वबा फैलती है तो मुजरिमाना ज़ेह्न रखने वाले लोग मरी हुई मुर्ग़ियों का गोश्त भी सीख़ कबाब वालों और होटलों को धोके से सप्लाय कर देते हैं!

क़रीबुल मौत बकरी के ज़ब्ह़ के अह़काम

सुवाल : अगर बीमार बकरी मरने के क़रीब हो गई तो क्या उस को ज़ब्ह़ किया जा सकता है?

जवाब : हां। मगर इस सिलिसले में चन्द बातें ख़याल में रखें, बीमार बकरी जब ज़ब्ह़ की और सिर्फ़ उस के मुंह को ह़रकत हुई और वोह ह़रकत येह है कि मुंह खोल दिया तो ह़राम है और बन्द कर लिया तो ह़लाल, आंखें खोल दीं तो ह़राम और बन्द कर लीं तो ह़लाल, पाउं फैला लिये तो ह़राम और समेट लिये तो ह़लाल, बाल खड़े न हुए तो ह़राम और खड़े हुए तो ह़लाल। या'नी अगर सह़ीह़ तौ़र पर उस के ज़िन्दा होने का इ़ल्म न हो तो इन अ़लामात से काम लिया जाए और अगर यक़ीनी तौ़र पर ज़िन्दा होना मा'लूम है तो इन चीज़ों का ख़याल नहीं किया जाएगा। बहर ह़ाल जानवर ह़लाल समझा जाएगा। (فتاوٰی عالمگیری ج٥ص٢٨٦)

ब वक़्ते ज़ब्ह़ अल्लाह عَزَّوَجَلَّ का नाम लेना भूल गया तो ?

सुवाल : मुसल्मान ने بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ कह कर ज़ब्ह़ किया तो क्या जानवर ह़लाल हो गया ? अगर **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ **का नाम लेना ही भूल गया तो क्या हुक्म है ?**

जवाब : जी हां ह़लाल हो गया। ज़ब्ह़ करते वक़्त **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ का नाम लेना ज़रूरी है। मगर बेहतर येह है कि بِسْمِ اللّٰهِ اَللّٰهُ اَكْبَر कहे। "अ़रबी के इ़लावा किसी और ज़बान में भी **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ का नाम लिया जब भी जानवर ह़लाल हो जाएगा।" (فتاوٰی عالمگیری ج٥ص٢٨٦)

अगर ज़ब्ह़ के वक़्त **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ का नाम लेना भूल गया तब भी जानवर ह़लाल है। हां अगर जानबूझ कर न लिया तो

ह़राम हो जाएगा। तफ़्सीली अह़काम बहारे शरीअ़त ह़िस्सा 15 में मुलाह़ज़ा फ़रमा लीजिये।

हड्डी खा सक्ते हैं या नहीं ?

सुवाल : क्या ज़बीह़ा की हड्डी भी खा सकते हैं ?

जवाब : जी हां। सय्यिदी आ'ला ह़ज़रत इमाम अह़मद रज़ा ख़ान عَلَيْهِ رَحْمَةُ الرَّحْمٰن फ़रमाते हैं : "जानवर ह़लाल मज़्बूह़ (ज़ब्ह़ शुदा) की हड्डी किसी क़िस्म की मन्अ़ नहीं जब तक उस के खाने में मुज़र्रत (नुक़्सान) न हो।" (फ़तावा रज़विय्या जदीद, जि. 20, स. 340) बिल खुसूस सफ़ेद हड्डी जो कि प्लास्टिक की त़रह़ लचक दार होती है वोह अक्सर नर्म व लज़ीज़ होती है। चौपायों के पेट के पर्दे के क़रीब की नर्म हड्डी की पस्लियां, हाथ की चपटी हड्डी से मुत्तसिल सफ़ेद चौड़ी हड्डी भी नर्म होती है, सांस की नली जिसे अ़रबी में "हुल्क़ूम" और उर्दू में "नर्ख़रा" कहते हैं और येह फेफड़े के साथ मिली हुई होती है इस को लम्बाई में चीर कर साफ़ कर लेना चाहिये। सीने का गोश्त पकने के बा'द उस में जो सफ़ेद हड्डी होती है वोह भी खाई जाती है। साथ ही काली हड्डी होती है जो कुरकुरी, लज़ीज़ और गिज़ाइय्यत से भरपूर होती है। तक़रीबन तमाम जवान जानवरों की काली हड्डी कुरकुरी होती है उस को खूब अच्छी त़रह़ चबाइये आख़िर में मुंह के अन्दर जो खुश्क चूरा रह जाए वोह फेंक दें। जो हड्डियां खाई या चबाई नहीं जातीं उन के टूटे हुए ह़िस्से को चूसने से लज़्ज़त भी मिलती है

और गिज़ाइय्यत भी। लिहाज़ा जब तक लज़्ज़त आती रहे **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ की ने'मत से तमत्तोअ़ करें या'नी नफ़्अ़ उठाएं इस के बा'द दस्तर ख़्वान पर डाल दें।

सुवाल : कच्चे गोश्त में काली हड्डी तो कभी नहीं देखी ?

जवाब : कच्चे गोश्त में जो हड्डी एक दम सुर्ख़ होती है वोही पक कर काली हो जाती है बल्कि ख़ून भी जब अच्छी त़रह़ पक जाए तो काला हो जाता है !

हड्डियों से इलाज के मदनी फूल

सुवाल : हड्डियों के कुछ फ़वाइद भी बयान कर दीजिये।

जवाब : हड्डियां भी **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ की ने'मत हैं और इन में भी गिज़ाइय्यत रखी गई है जो लोग घर में पकाने के लिये बिग़ैर हड्डी का गोश्त ख़रीदते हैं वोह अपने साथ साथ अहले ख़ाना को भी **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ की एक ने'मत से मह़रूम करते हैं। यक़ीनन **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ ने कोई चीज़ बेकार नहीं बनाई। हड्डियां गिज़ा के साथ साथ दवा का काम भी देती हैं। अत़िब्बा बा'ज़ मरीज़ों को **हड्डियों की यख़्नी** पीने का मश्वरा देते हैं। बल्कि आप में से शायद अक्सरिय्यत ने पिया भी होगा। अलबत्ता ख़ालिस बोटी का सूप किसी ने भी नहीं पिया होगा ! हड्डियां बहुत अहम हैं, त़िब्बी त़रीक़े पर हड्डियों से ह़ासिल शुदा अ़रक़ के इन्जेक्शन भी

मरीज़ों को लगाए जाते हैं। **गाय** के **सींग** पीस कर खाने में मिला कर चौथिया वाले (या'नी जिस को हर चौथे दिन बुख़ार आता हो) को खिलाने से बि इज़्निल्लाह عَزَّوَجَلَّ शिफ़ा हासिल हो जाती है, गाय के बाल जला कर पानी में घोल कर पी लेने से दांतों का दर्द जाता रहता है। (حیٰوۃ حیوان الکبریٰ ج۱ص۲۱۹) कबूतर जो कि ह़लाल परिन्दा है उस की हड्डी जला कर ज़ख़्म पर लगाने से **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ के फ़ज़्ल से ज़ख़्म ठीक हो जाता है। (عجائب الحیوانات ص۱٤٧)

मुर्ग़ी के गोश्त के फ़वाइद

सुवाल : मुर्ग़ी के गोश्त के भी कुछ फ़वाइद बयान कर दीजिये।

जवाब : मुर्ग़ी का गोश्त खाने से **हाफ़िज़ा** मज़बूत होता है। नीज़ येह पेट के दर्द के लिये भी मुफ़ीद है। बेहतर येह है कि देसी मुर्ग़ी खाई जाए। देसी मुर्ग़ी अब ख़रीदना आसान नहीं क्यूं कि पोल्ट्री फ़ोर्म ही की छोटी साइज़ की मुर्ग़ी और छोटे अन्डों को रंग लगा कर आज कल "देसी" में खपा दिया जाता है। **देसी मुर्ग़ी** की शनाख़्त येह है कि दुबली पतली होती और उस का पेट छोटा होता है। जब कि पोल्ट्री फ़ोर्म वाली मोटी ताज़ी और पुर गोश्त होती हैं।

मुर्ग़ी की हड्डियां खाना कैसा ?

सुवाल : क्या मुर्ग़ी की हड्डियां खाना जाइज़ है ?

जवाब : जी हां। मेरा क़रीबन बचपन से मा'मूल है कि जब भी मुर्ग़ी खाता हूं तो उस की सफ़ेद नर्म हड्डी भी खा लेता हूं। अलबत्ता अ़वाम में मशहूर है कि मुर्ग़ी की हड्डी खाने से नुक़्सान होता है। मैं ने एक ग़िज़ाइय्यात के माहिर त़बीब से जिन्हों ने ग़िज़ाओं के ख़वास से मुतअ़ल्लिक़ किताब भी तालीफ़ की है मुर्ग़ी की हड्डियों के नुक़्सानात दरयाफ़्त किये तो उन्हों ने येही जवाब दिया कि इन के खाने से किसी क़िस्म का नुक़्सान नहीं होता।

وَاللّٰهُ وَرَسُوْلُهٗ اَعْلَم عَزَّوَجَلَّ وَ صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم

मछली की हड्डियां खा सकते हैं या नहीं ?

सुवाल : मछली की हड्डियां खा सकते हैं या नहीं ?

जवाब : खा सकते हैं। मछली की हड्डियां उ़मूमन सख़्त होती हैं और खाई नहीं जातीं। मगर बा'ज़ की कुरकुरी और मुलायम होती हैं। मसलन समुन्दर के पापलेट और सुर्मई मछली वग़ैरा की हड्डियां नर्म और लज़ीज़ होती हैं इन को ख़ूब चबाइये अगर निगलना न चाहें तो अच्छी त़रह़ चूस कर बचा हुवा चूरा फेंक दीजिये।

मछली की खाल खाना कैसा ?

सुवाल : मछली की खाल खा सकते हैं या नहीं ?

जवाब : खा सकते हैं। उ़मूमन लोग मछली की खाल पहले ही से या पकने के बा'द निकाल कर फेंक देते हैं। ऐसा न किया जाए अगर

कोई मजबूरी न हो तो मछली की खाल भी खा लेनी चाहिये, बा'ज़ मछलियों की तो बहुत लज़ीज़ होती है।

केकड़ा खाना और बेचना

सुवाल : केकड़ा खाना कैसा है ?

जवाब : ह़राम है। मछली के सिवा दरिया का हर जानवर खाना ह़राम है। केकड़ा बेचना भी ना जाइज़ है। फ़ुक़हाए किराम رَحِمَهُمُ اللّٰهُ تَعَالٰى फ़रमाते हैं, मछली के सिवा पानी के तमाम जानवर मेंडक, केकड़ा वग़ैरा और ह़शरातुल अर्द़ (या'नी ज़मीन से उठने वाले कीड़े मकोड़े मसलन मख्खी, च्यूंटी) चूहा, छछूंदर, घोंस, छिपकली, गिरगिट, गोह, सांप, बिच्छू की बैअ़ (या'नी बेचना) ना जाइज़ है।

(فتح القدیر ج٦ ص ٥٨)

अगर सालन जल जाए तो क्या करें ?

सुवाल : अगर सालन जल जाए तो इस का कोई ह़ल ?

जवाब : ऊपर ऊपर से बोटियां और मसालह़ा निकाल लीजिये, दूसरी पतीली में तेल डाल कर पियाज़ सुर्ख़ करने के बा'द येह बोटियां और मसालह़ा वग़ैरा डाल कर आधा कप दूध डाल दीजिये। दूध से اِنْ شَآءَ اللّٰه عَزَّوَجَلَّ जलने की बू ख़त्म हो जाएगी।

हाज़िमा कैसे दुरुस्त हो ?

सुवाल : हाज़िमे की दुरुस्ती का क्या त़रीक़ा है ?

जवाब : खाने पीने में एह़तियात़। हर वक़्त खाते पीते रहने से मे'दा ख़राब और हाज़िमा तबाह हो जाता है। जब तक भूक न लगे उस वक़्त तक खाना सुन्नत नहीं। जब भी खाए तो भूक के तीन[3] हिस्से कर ले, एक हिस्सा खाना, एक हिस्सा पानी और एक हिस्सा हवा। खाने के बा'द डेढ़ दो[2] घन्टे तक न सोए, गोश्त कम और सब्ज़ी और फलों का इस्ति'माल ज़ियादा करे, ह़त्तल इम्कान रोज़ाना एक घन्टा वरना कम अज़ कम आधा घन्टा पैदल चले। रात का खाना खा कर कम अज़ कम 150 क़दम चले। बद हज़्मी की वोह बीमारियां जो किसी दवा को जवाब नहीं देतीं اِنْ شَآءَاللّٰه عَزَّوَجَلَّ दुरुस्त हो जाएंगी। اِنْ شَآءَاللّٰه عَزَّوَجَلَّ आप को 80% (अस्सी फ़ीसद) अमराज़ से तह़फ़्फ़ुज़ ह़ासिल होगा जिन में हार्ट अटेक, फ़ालिज और लक़्वा, दिमाग़ी अमराज़, हाथ पाउं और बदन का दर्द, ज़बान और गले की बीमारियां, मुंह के छाले, सीने और फेफड़े के अमराज़, सीने की जलन, शूगर, हाई ब्लड प्रेशर, जिगर और पित्ते के अमराज़ वग़ैरा शामिल हैं।

बद हज़्मी के दो[2] मदनी इलाज

(1) **जिस** शख़्स को बद हज़्मी की शिकायत हो और वोह इस आयते करीमा को पढ़ कर अपने हाथ पर दम कर के उसे अपने पेट पर फेरे और खाने वग़ैरा पर दम कर के खाना खाया करे اِنْ شَآءَاللّٰه عَزَّوَجَلَّ बद हज़्मी की शिकायत दूर हो जाएगी। **अल्लाह** तबारक व तआ़ला पारह 29 **सूरतुल मुर्सलात** की 43 और 44 वीं आयते मुबारका में इर्शाद फ़रमाता है :

كُلُوْا وَاشْرَبُوْا هَنِيْٓــًٔا بِمَا كُنْتُمْ تَعْمَلُوْنَ ﴿۴۳﴾ اِنَّا كَذٰلِكَ نَجْزِى الْمُحْسِنِيْنَ ﴿۴۴﴾

(پ۲۹ سورۃ المُرسَلٰت ۴۳،۴۴)

तरजमए कन्ज़ुल ईमान : खाओ और पियो रचता हुवा अपने आ'माल का सिला बेशक नेकों को हम ऐसा ही बदला देते हैं।

(2) इमाम कमालुद्दीन दमैरी رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْهُ बा'ज़ उ़लमाए किराम से नक़्ल फ़रमाते हैं, जिस ने खाना ज़ियादा खा लिया और बद हज़्मी का ख़ौफ़ हो वोह अपने पेट पर हाथ फेरता हुवा तीन[3] मरतबा येह कहे :

اَللَّيْلَةُ لَيْلَةُ عِيْدِى يَا كَرِشِىْ وَرَضِىَ اللّٰهُ عَنْ سَيِّدِى اَبِىْ عَبْدِاللّٰهِ الْقَرَشِىْ۔

तरजमा : ऐ मेरे मे'दे आज की रात मेरी ईद की रात है और **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ राज़ी हो हमारे सरदार ह़ज़रते अबू अ़ब्दुल्लाह क़ुरशी[1] से।

---

1 : सय्यिदी अबू अ़ब्दुल्लाह क़ुरशी हाशिमी अकाबिर औलियाए मिस्र से हैं सय्यिदुना ग़ौसे आ'ज़म رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْهُ के ज़माने में सोलह सतरह बरस (साल) के थे। 6 ज़ुल हिज्जा 599 सि.हि. में बैतुल मुक़द्दस में इन्तिक़ाल फ़रमाया। (फ़तावा अफ़्रीक़ा, स. 177)

(और अगर दिन का वक़्त हो तो اَللَّيْلَةُ لَيْلَةُ عِيْدِى की जगह اَلْيَوْمُ يَوْمُ عِيْدِى कहे।) (حیاةُ الحیوان الکبری ج ۱ ص ٤٦٠)

क़ब्ज़ के तिब्बी इलाज

बद हज़्मी के कई इलाज हैं मिन जुम्ला येह कि ﴾1﴿ क़ब्ज़ हो तो दो[2] एक[1] वक़्त का **फ़ाक़ा** कर ले اِنْ شَآءَاللّٰه عَزَّوَجَلَّ पेट का बोझ कम हो जाएगा और मे'दे को आराम भी मिलेगा। ﴾2﴿ मुनासिब मिक़्दार में पपीता खा ले। ﴾3﴿ **अस्पग़ोल** का छिल्का एक या तीन[3] चम्मच पानी से फांक ले अगर इस से काम न चले तो ह़स्बे ज़रूरत इस की मिक़्दार बढ़ा ले। अगर अक्सर क़ब्ज़ रहती हो तो हफ़्ते में दो[2] एक बार इसी त़रह़ करे। ﴾4﴿ पिसी हुई हड़ चाय का आधा चम्मच सोते वक़्त पानी से लीजिये हो सके तो कम अज़ कम चार[4] माह तक रोज़ाना इस्ति'माल कीजिये اِنْ شَآءَاللّٰه عَزَّوَجَلَّ क़ब्ज़ के साथ साथ बहुत सारी बीमारियों बल्कि ह़ाफ़िज़े के लिये भी मुफ़ीद पाएंगे।

तुलबा खाना न गिराएं इस का ह़ल

सुवाल : तुलबा अक्सर खाते हुए खाने के अज्ज़ा काफ़ी गिरा देते हैं इस का ह़ल इर्शाद फ़रमाइये।

जवाब : सिर्फ़ तुलबा ही नहीं येह बला आजकल आ़म है। हज़ारों लाखों में कोई खुश नसीब मुसल्मान ऐसा होगा जो खाने के

अज्ज़ा ज़ाएअ़ करने से बचता होगा ! तुलबा को खाने में येह एह़तियात़ करनी चाहिये कि कोई भी ज़र्रा ज़ाएअ़ न हो, मुन्तज़िमीन भी इस बात को ज़ेहन में रखें कि मदारिस वक़्फ़ की रक़म से चलते हैं, ग़िज़ा का एक एक ज़र्रा तुलबा के शिकम में जाए इस का ख़याल फ़रमाएं। खाने के अवक़ात में कुछ तुलबा चल फिर कर बा क़ाइदा "ख़ैर ख़्वाही" फ़रमाते रहें,[1] तुलबा को खाने के दौरान खाने पीने की सुन्नतें बताते रहें, खाने की निय्यतें भी करवाएं, खाने की दुआ़एं भी पढ़ाएं, चावल और रोटी के जो अज्ज़ा दस्तर ख़्वान पर गिरे हों वोह नरमी के साथ उन्हीं से उठवा कर उन्हें खिलवाएं।

रोटी तोड़ने का त़रीक़ा

सुवाल : रोटी तोड़ने का त़रीक़ा बता दीजिये।

जवाब : रोटी उलटे हाथ में पकड़ कर सीधे हाथ से तोड़िये। रोटी के अज्ज़ा दस्तर ख़्वान पर न गिरें इस का त़रीक़ा येह है कि रिकाबी या सालन के बरतन के ऊपर वस्त़ तक हाथ बढ़ा कर रोटी और डबल रोटी तोड़ने की आ़दत बनाइये इस त़रह़ तमाम अज्ज़ा बरतन ही में गिरेंगे। येही एह़तियात़ समोसे, पेटिस, बिस्कुट,

1 : दा'वते इस्लामी के जामिआ़त व मदारिस में इन कामों के लिये मजालिस की तरकीब है।

फ़रमाने मुस्तफ़ा صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم : जिस ने मुझ पर रोज़े जुमुआ दो सो बार दुरूदे पाक पढ़ा उस के दो सो साल के गुनाह मुआफ़ होंगे। (جمع الجوامع)

नान ख़ताई और हर उस गिज़ा में कीजिये जिन के ज़र्रात तोड़ने से गिरते हैं। मुनासिब येह है कि जब तक एक रोटी के टुकड़े खा न लिये जाएं उस वक़्त तक दूसरी न तोड़ी जाए।

बची हुई रोटियों के इस्ति'माल का त़रीक़ा

सुवाल : जो रोटियां या उन के टुकड़े बच जाते हैं उन का क्या करें ?

जवाब : मदारिस के चन्दे के पैसे मद्रसों की मसारिफ़ ही में ख़र्च होने चाहिएं लिहाज़ा बची हुई रोटियां और उन के टुकड़े बिला इजाज़ते शरई किसी और मसरफ़ में इस्ति'माल न किये जाएं इन को फ़्रीज़र में रख दीजिये या खुली हवा में फैला दीजिये और दूसरे[2] या तीसरे[3] दिन सालन के साथ पका लीजिये। اِنْ شَآءَاللّٰه عَزَّوَجَلَّ काफ़ी लज़ीज़ खाना बन जाएगा, खाने के वक़्त थोड़ा थोड़ा तक़्सीम कर दीजिये, اِنْ شَآءَاللّٰه عَزَّوَجَلَّ तुलबा शौक़ से खा लेंगे।

दस्तर ख़्वान पर गिरे हुए दाने

सुवाल : दस्तर ख़्वान पर गिरे हुए दाने वग़ैरा का क्या करें ?

जवाब : इन को चुन कर खा लीजिये। घरों में बचे हुए गिज़ाई अज्ज़ा फेंकने के बजाए गायों, बकरियों, चिड़ियों, मुर्ग़ियों या बिल्लियों को खिला कर बे अदबी और इसराफ़ के जुर्म से बचा जा सकता है।

खाने की निय्यत कैसे करें ?

सुवाल : आप ने खाने की निय्यत के बारे में बताया तो खाने की निय्यत किस त़रह़ की जाती है ?

जवाब : मुसल्मान को हर मुबाह़ काम में अच्छी अच्छी निय्यतें कर लेनी चाहिएं। اِنْ شَآءَاللّٰه عَزَّوَجَلَّ हर हर निय्यते ख़ैर पर सवाब मिलेगा। इसी त़रह़ खाने के लिये येह निय्यत दिल में ह़ाज़िर हो कि मैं इबादत पर क़ुव्वत ह़ासिल करने के लिये खाना खा रहा हूं। मगर येह निय्यत उसी सूरत में दुरुस्त होगी जब कि भूक से कम खाए। डट कर खाने से इबादत पर क़ुव्वत ह़ासिल होना कुजा मज़ीद सुस्ती आती है। (खाने की दीगर निय्यतों की फ़ेहरिस आदाबे त़आ़म सफ़ह़ा 6 पर मुलाह़ज़ा फ़रमाइये)

चाय की एह़तियातें

सुवाल : चाय की एह़तियातें इर्शाद फ़रमा दीजिये।

जवाब : चाय गुर्दों और पेशाब के मरीज़ के लिये मुज़िर है। इस का इस्ति'माल कम ही होना चाहिये। चाय के चाव चोचले बहुत हैं वरना येह दुरुस्त नहीं बनती। इस के लिये उ़म्दा दूध और बेहतरीन चायपत्ती चाहिये। पत्ती, चीनी, उस के बरतन पियाले, छलनी वग़ैरा सब ''मत़्बख़ (या'नी बावर्ची ख़ाने) से इतनी दूर रखें जाएं कि खाने का धूआं भी उन को न पहुंचे, एक बार जिस

बरतन में चाय पका ली दोबारा उसी में अगर फ़ौरन भी पकानी हो तो धो कर पकाई जाए, चाय के बरतन भी सब से अलग थलग धोए जाएं, चायपत्ती का डिब्बा अच्छी त़रह़ बन्द रखा जाए वरना उस की ख़ुश्बू ज़ाएअ़ होती रहेगी, पकने के बा'द जल्दी पी ली जाए, दोबारा गर्म करने से उस का ज़ाएक़ा बदल जाता है। चाय के ऊपर जो बालाई जमती है वोह निकाल देनी चाहिये। कहते हैं, "अगर चाय के 100 कप की बालाई बिल्ली को खिला दी जाए तो वोह उस के ज़हर से मर जाए।"

चाय पकाने का त़रीक़ा

सुवाल : चाय पकाने का त़रीक़ा भी बता दीजिये।

जवाब : "दूध पत्ती" चाय पीनी हो तो दूध को ख़ूब गर्म कीजिये इसी दौरान **चीनी** भी डाल दीजिये। अब खौलते हुए दूध में इतनी पत्ती डालिये कि **ज़ा'फ़रानी रंग** आ जाए। दो[2] तीन[3] उबाल आने तक चम्मच से हिलाइये इस के बा'द उतार लीजिये और छान कर इस्ति'माल कीजिये। अगर **पानी** की चाय बनानी हो तब भी पानी में ह़स्बे ज़रूरत दूध और चीनी पहले ही से डाल कर ख़ूब पका लीजिये इस के बा'द पत्ती डाल कर मज़्कूरा त़रीक़े पर अ़मल कीजिये। त़बीअ़त पसन्द करती हो तो **छोटी इलायची** भी डाली जा सकती है।

चाय में शहद डाल सकते हैं या नहीं ?

सुवाल : क्या चाय में शहद डाल सकते हैं ?

जवाब : डाल सकते हैं बल्कि जिस को वुस्अ़त हो वोह चीनी के बजाए शहद ही डाले। आ़म तौ़र पर लोग बहुत ज़ियादा चीनी डाल कर ख़ूब मीठी चाय पीते हैं, ऐसी चाय ज़ियादा मिक़्दार में पीना सख़्त नुक़्सान देह है और इस से ख़ून में **शूगर** की मिक़्दार बढ़ने के मरज़ का इम्कान रहता है। ठन्डी बोतलों और आईस्क्रीम के शाइक़ीन भी आ़म तौ़र पर शूगर के मरीज़ बन जाते हैं। एक ठन्डी बोतल में तक़्रीबन सात चम्मच चीनी होती है जब कि आईस्क्रीम तो अच्छा ख़ासा "शूगर बम" है ! وَاللّٰهُ وَرَسُوْلُهٗ اَعْلَم عَزَّوَجَلَّ وَصَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم आप चाय में अगर शहद नहीं डाल सकते तो मा'मूल से आधी मिक़्दार में चीनी डालिये।

दांतों की सफ़ाई का अ़मल

सुवाल : चाय पीने से दांत पीले पड़ जाते हैं, इस का कोई ह़ल ?

जवाब : चाय पीने के चन्द मिनट बा'द कप में थोड़ा सा पानी डाल कर अच्छी त़रह़ हिला कर उस की कुल्ली भर लीजिये, मुंह में थोड़ी देर फिरा कर पी जाइये। इसी त़रह़ दो[2] तीन[3] बार कीजिये। यहां तक कि कप में चाय का असर जाता रहे। येह इस लिये

फ़रमाने मुस्तफ़ा صلی اللہ تعالٰی علیہ واٰلہٖ وسلم : जो मुझ पर एक दिन में 50 बार दुरूदे पाक पढ़े क़ियामत के दिन मैं उस से मुसाफ़हा करूं (या'नी हाथ मिलाऊं)गा ।(ابن بشکوال)

करना है कि चाय का कोई क़तरा ज़ाएअ़ भी न हो, कप भी धुल जाए और दांत भी पीले न हों। अगर कुल्ली का पानी पीना न चाहें तो उगल दीजिये।

चन्द मिनट के बा'द की इस लिये अ़र्ज़ की है कि गर्म चाय के फ़ौरन बा'द ठन्डे पानी का इस्ति'माल दांतों के लिये नुक़्सान देह है। चाय के फ़ौरन बा'द कप धो कर जो पानी पियें उस की मिक़्दार क़लील होनी चाहिये। अगर हर ग़िज़ा खाने के बा'द येह अ़मल करें तो اِنْ شَآءَاللہ عَزَّوَجَلَّ सफ़ाई भी रहेगी और मसूढ़ों के अमराज़ से हिफ़ाज़त भी। आजकल दांतों में ख़ून आने की शिकायत आ़म है इस की एक वज्ह येह भी है कि ग़िज़ा के अज्ज़ा मसूढ़ों के अन्दर जम्अ़ हो कर पथ्थर की त़रह़ सख़्त हो जाते हैं और इस त़रह़ मिस्वाक करने, खाने, चबाने वग़ैरा से ख़ून निकलता रहता है। अगर हर ग़िज़ा खाने के बा'द मुंह में पानी फिराने वाला अ़मल कर लिया करेंगे तो اِنْ شَآءَاللہ عَزَّوَجَلَّ दांतों की सफ़ाई के साथ साथ दांतों में ख़ून की शिकायत वग़ैरा अमराज़ से भी हिफ़ाज़त होगी। ख़ूब पेट भर कर खाने से आ़म तौ़र पर पेट ख़राब होता है और मुख़्तलिफ़ अमराज़ के साथ साथ बा'ज़ लोगों को मसूढ़ों में ख़ून आने की शिकायत भी हो जाती है। अगर

आप अपनी ग़िज़ा ए'तिदाल पर ले आएंगे तो اِنْ شَآءَاللّٰه عَزَّوَجَلَّ हैरत अंगेज़ तौर पर बरसों पुरानी बीमारियां दूर होने के साथ साथ मसूढ़ों में आने वाला ख़ून भी बन्द हो जाएगा। वरना तजरिबा येही है कि दवाओं से सिर्फ़ आ़रिज़ी तौर पर फ़ाएदा हो जाता है और फिर मरज़ औ़द कर आता है !

पीले दांतों की सफ़ाई

सुवाल : जिस के दांत पीले पड़ चुके हों वोह क्या करे ?

जवाब : ख़ूब अच्छी त़रह़ मिस्वाक किया करे। नमक और खाने का सोडा हम वज़्न ले कर मिला लीजिये और दांतों पर इस एह़तियात़ के साथ मलिये कि मसूढ़ों पर न लगे। اِنْ شَآءَاللّٰه عَزَّوَجَلَّ दांत हैरत अंगेज़ तौर पर साफ़ हो जाएंगे। मगर येह अ़मल ज़ियादा दिन लगातार मत कीजिये। जिन के मसूढ़े कमज़ोर हों, उन में ख़ून आता हो वोह येह अ़मल न करें।

صَلُّوْا عَلَى الْحَبِيْب ! صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلٰى مُحَمَّد

تُوْبُوْا اِلَى الله ! اَسْتَغْفِرُ الله

صَلُّوْا عَلَى الْحَبِيْب ! صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلٰى مُحَمَّد

अगर आप सिह़्ह़त मन्द रहना चाहते हैं तो

हर खाने, सालन में तेल मसालह़ा मा'मूल से आधा और चाय में चीनी भी आधी डालने की ताकीद है। اِنْ شَآءَاللّٰه عَزَّوَجَلَّ इस से सिह़्ह़त बेहतर और इस्लामी ता'लीम के मदनी मक़्सद के हुसूल में सहूलत रहेगी। घरों में भी त़आ़म के लिये इस जद्वल से फ़ाएदा उठाया जा सकता है।

दा'वते इस्लामी के जामिअ़तुल मदीना के लिये जद्वल बराए त़आ़म

यौम	सुब्ह़	दोपहर	शाम
जुमुआ़	चाय पापे	दाल गोश्त और रोटी	दाल पालक, रोटी और चाय
हफ़्ता	काबुली चने, चाय और रोटी	सफ़ेद चावल/गोश्त पुलाव	मख़्लूत़ सब्ज़ी (आलू, लौकी और मीठा कद्दू, शल्जम)
इतवार	काबुली चने, चाय और रोटी	लौकी शरीफ़, दाल और रोटी	सब्ज़ी, रोटी और चाय
पीर शरीफ़	काबुली चने, चाय और रोटी	दाल और रोटी	बिरयानी और चाय
मंगल	चाय पापे/चाय और रोटी	मख़्लूत़ सब्ज़ी और रोटी	लौकी शरीफ़, दाल और चाय
बुध	काबुली चने चाय, और रोटी	कढ़ी चावल/दाल चावल	कद्दू शरीफ़ आलू, रोटी और चाय
जुमे'रात	आलू की तरकारी, रोटी	जव शरीफ़ का दलिया / आलू गोश्त	लोबिया के बीज रोटी और चाय

صَلُّوْا عَلَى الْحَبِيْب ! صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلٰى مُحَمَّد

मक्तूबे अ़त्तार دامت برکاتھم العالیہ

बनाम

शहज़ादए अ़त्तार دامت برکاتھم العالیہ

येह ह़िफ़्ज़ाने सिह़्ह़त के मदनी फूल का वोह ह़सीन गुलदस्ता है कि इस के मुत़ाबिक़ अ़मल करने वाला اِنْ شَآءَاللہ عزوجل त़बीबों का मोह़ताज नहीं रहेगा...

वरक़ उलटिये...

दिल बाग़ बाग़ हो जाता है

हज़रते सय्यिदुना अबू हुरैरा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ फ़रमाते हैं : मैं ने अ़र्ज़ की, **या रसूलल्लाह** صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ! जब मैं आप को देखता हूं तो मेरा दिल बाग़ बाग़ हो जाता है और आंखें ठन्डी होती हैं। (आक़ा صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم) मुझे हर चीज़ की मा'लूमात अ़ता फ़रमा दीजिये ! इर्शाद हुवा : "हर शै पानी से बनी है।" मैं ने अ़र्ज़ की : उस चीज़ पर मुत्तलअ़ फ़रमा दीजिये जिसे अपना कर मैं जन्नत को पा सकूं। फ़रमाया : "खाना खिलाओ और सलाम को फैलाओ और सिलए रेहमी करो और रात में (नफ़्ली) नमाज़ पढ़ो जब लोग सोए हों, तुम सलामती से दाख़िले जन्नत हो जाओगे।" (مُسنَدِامام احمد ج ۳ ص ۱۷۴ حدیث ۷۹۱۹)

بِسۡمِ اللّٰہِ الرَّحۡمٰنِ الرَّحِیۡمِ ط

सगे मदीना मुह़म्मद इल्यास अ़त्तार क़ादिरी रज़वी عُفِیَ عَنۡہُ की जानिब से **मुबल्लिग़े दा'वते इस्लामी मेरे मीठे मीठे बेटे अलह़ाज अबू उसैद उ़बैद रज़ा अ़त्तारी मदनी** سَلَّمَہُ الۡغَنِی की ख़िदमते आ़ली में करबलाए मुअ़ल्ला की गलियों से घूमता हुवा, मज़ारे इमामे आ़ली मक़ाम رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنۡہُ के गुम्बदो मीनार को चूमता हुवा, झूमता हुवा, माहे मुह़र्रमुल ह़राम की बरकतों से मालामाल खुश गवार खुश्बूदार सलाम,

اَلسَّلَامُ عَلَیۡکُمۡ وَ رَحۡمَةُ اللّٰہِ وَ بَرَکَاتُه اَلۡحَمۡدُ لِلّٰہِ رَبِّ الۡعَالَمِیۡنَ عَلٰی کُلِّ حَال

ह़दीसे पाक में है, ह़ज़रते सय्यिदुना जरीर बिन अ़ब्दुल्लाह رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنۡہُ फ़रमाते हैं, "मैं ने हुज़ूर ताजदारे रिसालत صَلَّى اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیۡہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم से इस बात पर बैअ़त की, कि नमाज़ क़ाइम करूंगा और ज़कात अदा करूंगा और आ़म मुसल्मानों की **ख़ैर ख़्वाही** करूंगा (या'नी भलाई चाहूंगा) (صحیح مسلم ص ۴۸ حدیث ۹۷) اَلۡحَمۡدُ لِلّٰہِ عَزَّوَجَلَّ खुद को मुसल्मानों के ख़ैर ख़्वाहों में खपाने और सवाब कमाने के मुक़द्दस जज़्बे के तह़त दुआ़ के साथ साथ सिह़्ह़त मन्द रहने के लिये चन्द **मदनी फूल** नज़्रे ह़ाज़िर किये हैं। अगर मह़्ज़ दुन्या की रंगीनियों से लुत़्फ़ अन्दोज़ होने के लिये तन्दुरुस्त रहने की आरज़ू है तो मक्तूब पढ़ना यहीं मौक़ूफ़ कर दीजिये और अगर उ़म्दा सिह़्ह़त के ज़रीए़ इबादत और सुन्नतों की ख़िदमत पर कुव्वत ह़ासिल करने का ज़ेह्न है तो सवाब कमाने की ग़रज़ से अच्छी

अच्छी निय्यतें करते हुए दुरूद शरीफ़ पढ़ कर आगे बढ़िये और मक्तूब मुकम्मल पढ़िये :

صَلُّوْا عَلَى الْحَبِيْب !   صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلٰى مُحَمَّد

अल्लाह रब्बुल इ़ज़्ज़त عَزَّوَجَلَّ मेरी, आप की, जुम्ला अहले ख़ानदान और सारी उम्मत की मग़्फ़िरत फ़रमाए। हमें सिह़्ह़तो आ़फ़िय्यत के साथ और दा'वते इस्लामी के **मदनी माह़ोल** में रहते हुए इस्लाम की ख़िदमत पर इस्तिक़ामत इनायत फ़रमाए। **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ हमारी जिस्मानी बीमारियां दूर कर के हमें बीमारे मदीना बनाए।

اٰمِين بِجَاهِ النَّبِيِّ الْاَمِين صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم

दा'वते इस्लामी के मदनी कामों के लिये मुझे आप की ज़रूरत है। बराए करम ! सिह़्ह़त के मुआमले में ग़फ़्लत न फ़रमाइये कि बसा अवक़ात मा'मूली सी ख़राश भी बढ़ते बढ़ते गहरे ज़ख़्म फिर नासूर और बिल आख़िर मौत का सबब बन सकती है।

मुशाहदा है कि जहां दवाएं काम नहीं करतीं वहां परहेज़ करने से ह़ैरत अंगेज़ नताइज बरआमद हो जाते हैं ! नया कपड़ा अगर एक बार भी धुल जाए तो फिर उस की पहले जैसी चमक दमक बाक़ी रहती है न ही क़ीमत। दवाओं के ज़रीए़ इलाज से सिह़्ह़त पाने के बा'द बदने इन्सानी भी गोया "धुले हुए कपड़े" की मानिन्द हो जाता है। लिहाज़ा

मुम्किना सूरत में अदविया के बजाए इलाज बिल गिज़ा नीज़ परहेज़ के ज़रीए काम चलाना ही दानिश मन्दी है कि दवाओं के **मन्फ़ी असरात** भी होते हैं।

ना समझ बीमार को अमृत भी ज़हर आमेज़ है

सच येही है सो[100] दवा की इक दवा परहेज़ है

खाने के बारे में सभी के लिये मश्वरा

हर खाने में तेल, नमक, मिर्च और गर्म मसालहे की मिक़्दार अन्दाज़े से नहीं बल्कि माप कर अपने घर के मा'मूल से आधी कर लीजिये, गिज़ा में सब्ज़ियों का इस्ति'माल बढ़ा दीजिये, गोश्त का सालन हफ़्ते में सिर्फ़ दो[2] बार हो और वोह भी कम मिक़्दार में खाइये, अगर घर में अक्सर दिन गोश्त पकता हो तो ह़त्तल इम्कान सिर्फ़ **एक बोटी** खाने की आ़दत बनाइये, जब तक ख़ूब भूक न लगे उस वक़्त तक मत खाइये, ख़ूब चबा कर खाइये दांतों का काम आंतों से मत लीजिये, और कुछ भूक बाक़ी होने की सूरत में हाथ खींच लीजिये, पेट भर कर खाने की आ़दत निकाल दीजिये, चीनी वाले फ़्रूट ज्यूसिज़ मत इस्ति'माल फ़रमाइये, मैदा, चिक्नाहट, और चीनी वाली गिज़ाएं कम से कम खाइये, आइसक्रीमों, ठन्डी बोतलों, तली हुई गिज़ाओं, देगों और बाज़ारी किचन में पके हुए खानों, टॉफ़ियों, कोको चॉकलेट, सिगरेट नोशी, पान, छालिया, गुटका,

खुश्बूदार सुपारी, तम्बाकू, मेनपूड़ी, पान पराग वग़ैरा से बचिये। चाय पीना चाहें तो दिन रात में दो[2] या तीन[3] बार आधा कप और इस में चीनी की जगह शहद डालिये, ब अम्रे मजबूरी चीनी ज़रूरत से आधी मिक्दार में डालिये। मीठी गिज़ाएं शहद में बनाएं अगर इस की हैसिय्यत न हो तो चीनी घर के मा'मूल से फ़क़त चौथाई हिस्सा डालिये। खूब मीठी चाय, मीठे में मीठी डिशें और कोलड्रिंक्स के शाइक़ीन का शूगर की बीमारी से महफ़ूज़ रहना इन्तिहाई दुश्वार होता है। (शूगर और B.P. की कमी बेशी या दीगर अमराज़ वाले डॉक्टर की हिदायात पर अ़मल करें) रोज़ाना एक घन्टा और न हो सके तो कम अज़ कम आधा घन्टा पैदल चलिये। اِنْ شَآءَاللّٰه عَزَّوَجَلَّ आप का lipid profile नॉर्मल होने के साथ साथ बदन का वज़्न भी मो'तदिल रहेगा, तोंद नहीं निकलेगी, मे'दा दुरुस्त होगा, कई अमराज़ दूर रहेंगे और जो मौजूद होंगे उन में से अक्सर اِنْ شَآءَاللّٰه عَزَّوَجَلَّ खुद ही ठीक हो जाएंगे اِنْ شَآءَاللّٰه عَزَّوَجَلَّ आप इबादत और दीन की खिदमत के मदनी कामों में चुस्ती महसूस फ़रमाएंगे। अगर्चे येह बातें नफ़्स पर गिरां बार हैं मगर आ़दत बन जाने की सूरत में اِنْ شَآءَاللّٰه عَزَّوَجَلَّ आसानी हो जाएगी। येह याद रहे ! कि गिज़ा की लज़्ज़त फ़क़त ह़ल्क़ की जड़ तक होती है जूं ही लुक़्मा नीचे उतरा जव शरीफ़ की सूखी रोटी और घी से तर बतर बिरयानी सब एक हो गए अब जव शरीफ़ की सूखी रोटी ज़िन्दगी खुश गवार बनाएगी और घी वाली बिरयानी डॉक्टरों के पास धक्के

खिलाएगी ! (मोटापा होने की सूरत में जब वज़्न घटने का अ़मल शुरूअ़ होता है तो बा'ज़ों का आ़रिज़ी त़ौर पर uric acid बढ़ने लगता है। आख़िरे कार खुद ही नॉर्मल हो जाता है फिर भी एह़तियात़न उन दिनों में हर डेढ़ माह बा'द इस का टेस्ट करवाते रहिये। पानी ब कसरत पीने से ग़ैर ज़रूरी uric acid ख़ारिज होता रहता है)

दिन में दो[2] बार खाइये

मुम्किन हो तो दिन में तीन[3] बार के बजाए दो[2] बार खाना खाइये, ब निय्यते सवाब **पेट का क़ुफ़्ले मदीना** लगाते हुए दोनों[2] बार खूब भूक लगने की सूरत ही में खाइये, और अभी भूक बाक़ी हो कि हाथ खींच लीजिये। बीच में किसी क़िस्म की बाज़ारी चीज़ न खाइये, भूक लगे तो एक सेब या थोड़े से फल खा लीजिये अगर्चे उ़मूमन फल बदन का वज़्न बढ़ाते हैं मगर इस के फ़वाइद बे शुमार हैं। हां जिस के ख़ून में शूगर या ट्राईग्लेसराइड्ज़ की मिक़्दार ज़ियादा है वोह मीठे फल, खुश्क मेवे और बादी सब्ज़ियां या'नी वोह सब्ज़ियां जो ज़मीन के अन्दर पैदा होती हैं मसलन गाजर, मूली, आलू, शकर क़न्द, चुक़न्दर वग़ैरा से परहेज़ करे और डॉक्टर की हिदायात पर अ़मल करे। ज़हे नसीब ! **सौमे दावूदी** (या'नी एक दिन छोड़ कर एक दिन रोज़ा) की रिज़ाए इलाही عَزَّوَجَلَّ के लिये आ़दत बन जाए तो ज़िम्नन खाने पीने के कई मसाइल भी ह़ल हो जाएं।

ख़ून TEST करवा लीजिये

अगर्चे एक हद तक इन चीज़ों की जिस्मे इन्सानी को ज़रूरत होती है ताहम इन की ज़ियादत नुक़्सान देह है लिहाज़ा तमाम इस्लामी भाई और इस्लामी बहनों के लिये ख़ून के येह टेस्ट करवाने मुनासिब हैं :

1) LIPID PROFILE (इस में CHOLESTROL भी शामिल है इस के टेस्ट के लिये 12 ता 14 घन्टे ख़ाली पेट होना ज़रूरी है)

2) GLUCOSE (ख़ाली पेट में नॉर्मल से ज़ियादा हो तो भरे पेट में भी करवाइये)

3) URIC ACID

4) Serum Creatinine (इस से गुर्दे में अगर किसी क़िस्म की ख़राबी या फेल होने का ख़त्रा शुरूअ़ हुवा हो तो मा'लूम हो सकता है और बर वक़्त इलाज की तरकीब बन सकती है इस पर नज़र रखना बहुत ज़रूरी है क्यूं कि आजकल हमारे यहां गुर्दे फेल होने के वाक़िआ़त बढ़ते चले जा रहे हैं)

अल्लाह عَزَّوَجَلَّ की रिज़ा के लिये रोज़ा रख कर नमाज़े अ़स्र के बा'द मज़्कूरा बाला तमाम test करवाए जा सकते हैं। वरना रात जल्दी खाना खा लीजिये और सुब्ह नाश्ते से क़ब्ल करवा लीजिये।

नोट : रिपोर्ट डॉक्टर को दिखा दीजिये। सिह्हत मन्द को हर 6 माह बा'द और मरीज़ को डॉक्टर की हिदायात के मुताबिक़ येह टेस्ट और इन

के इलावा जिन का वोह मश्वरा दें ज़रूर ज़रूर ज़रूर करवाते रहना चाहिएं। येह सोच कर टेस्ट न करवाना कि अगर "कुछ निकला" तो इलाज व परहेज़ी की परेशानियां होंगी दानिश मन्दी नहीं कि बीमारी की तरफ़ से ला परवाही मस्अले का ह़ल नहीं। याद रखिये ! ब ज़ाहिर सिह़्ह़त मन्द नज़र आने वाले नौ जवानों वग़ैरा का जो हार्ट फेल के सबब इन्तिक़ाल हो जाता है इस का एक बड़ा सबब "लिपिड प्रोफ़ाइल" बढ़ जाना भी होता है।

कोलेस्ट्रोल का मरीज़ इन ग़िज़ाओं से परहेज़ करे

﴾1﴿ हर त़रह़ की चिक्नाहट ﴾2﴿ घी और कूकिंग ऑइल की बनावटें ﴾3﴿ अन्डे की ज़र्दी ﴾4﴿ निमको और ﴾5﴿ बेकरी की अक्सर चीज़ें ﴾6﴿ गाय का गोश्त ﴾7﴿ पिज़्ज़ा ﴾8﴿ पराठा ﴾9﴿ तली हुई ग़िज़ाएं मसलन अन्डा आमलेट, कबाब, समोसे, पकोड़े वग़ैरा ﴾10﴿ मलाई ﴾11﴿ मख्खन ﴾12﴿ आइस्क्रीम वग़ैरा। (ज़ाइद कोलेस्ट्रोल बराहे रास्त दिल को नुक़्सान पहुंचाता है लिहाज़ा मज़ीद डोक्टर से मश्वरा कर लीजिये)

मुर्ग़ी या मछली नीज़ कम मिक़्दार में कोर्न ऑइल खाने में मुज़ायक़ा नहीं, डोक्टर मश्वरा दे तो चरबी निकाल कर बकरे का गोश्त भी खा सकते हैं। एक तिब्बी तह़क़ीक़ के मुत़ाबिक़ "ज़ैत" या'नी ज़ैतून शरीफ़ का तेल कोलेस्ट्रोल के मरीज़ के लिये मुफ़ीद है क्यूं कि वोह ज़ाइद गन्दे कोलेस्ट्रोल को ख़ून से ख़ारिज करता है।

खू़न में ट्राईग्लेसराइड्ज़ (TRIGLYCERIDES) ज़ियादा होने की सूरत में मज़्कूरा परहेज़ियों के इलावा मिठास और झींगे खाने से भी इज्तिनाब करना होगा।

यूरिक एसिड

Uric acid ए'तिदाल से ज़ियादा हो तो जिल्दी अमराज़ और जोड़ों के दर्द के इलावा गुर्दे और दिमाग़ को नुक़्सान पहुंच सकता है ह़त्ता कि बहुत आगे चल कर مَعَاذَ اللّٰہ عَزَّوَجَلَّ जिगर का केन्सर भी हो सकता है।

एक तिब्बी तह़क़ीक़ के मुत़ाबिक़ खू़न में यूरिक एसिड उन गिज़ाओं से बढ़ता है जिन में Purine की मिक़्दार ज़ियादा हो। आल्कोहल (वाली दवाओं) और पेशाब आवर अदविया का इस्ति'माल नीज़ मोटापा भी Uric acid बढ़ने के अस्बाब हैं।

यूरिक एसिड के मरीज़ के लिये परहेज़ : तमाम अक़्साम का गोश्त और उन से बनी हुई चीज़ें, गोश्त की यख़्नी, मछली, झींगा, मसूर और उस की दाल, फली, मटर, पालक, गोभी वग़ैरा से परहेज़ करे कि इन में प्यूरीन (purine) की मिक़्दार ज़ियादा होती है।

कम प्यूरीन वाली गिज़ाएं : दूध और इस की बनावटें, अन्डा, चीनी, गन्दुम और इस की मस्नूआत, अरारोट, सागूदाना, घी, मारजिरीन (मखबन

जैसी चीज़ें), फल और उन का ज्यूस, सलाद बा'ज़ के इलावा तमाम सब्ज़ियां, टमाटर, ठन्डी बोतलें वग़ैरा।

बा'ज़ डोक्टरों के बक़ौल uric acid के मरीज़ के लिये गाय का गोश्त ज़ियादा नुक़्सान देह होता है, फिर इस से कम बकरा, फिर मुर्ग़ी व मछली।

यूरिक एसिड का पानी से इलाज

एक दिन रात में 40 गिलास पानी पी लीजिये। बेशक पानी गले तक आ जाए और पेट ख़ूब भर जाए घबराएं नहीं जल्द ही पेशाब के ज़रीए ख़ारिज हो जाएगा और اِنْ شَآءَاللّٰه عَزَّوَجَلَّ एक ही दिन में फ़ाएदा हो जाएगा। मसलन uric acid की नोर्मल रेन्ज 3 ता 7 हो और आप का बढ़ कर 8 तक पहुंच जाए तो पूरे एक दिन रात में 40 गिलास पानी पीने से اِنْ شَآءَاللّٰه عَزَّوَجَلَّ 7 हो जाएगा। मज़ीद एक या दो[2] दिन तक पियेंगे तो यौमिय्या "1" के ह़िसाब से اِنْ شَآءَاللّٰه عَزَّوَجَلَّ कमी आती रहेगी। ज़ियादा पानी पीने से आ़रिज़ी त़ौर पर पेशाब ज़ियादा आएगा। इस से मे'दे, आंतों और गुर्दे, मसाने वग़ैरा की ख़ूब सफ़ाई हो जाएगी और اِنْ شَآءَاللّٰه عَزَّوَجَلَّ ज़िम्नन कई फ़ासिद मादे ख़ारिज हो जाएंगे। पानी के इलाज वाले दिन खाना वग़ैरा खाने में कोई ह़रज नहीं। मगर येह त़िब्बी उसूल याद रखिये

कि खाने के फ़ौरन बा'द पानी पीने से बदन फूलता (या'नी मोटापा) आता है ! लिहाज़ा खाने के एक या दो[2] घन्टे के बा'द पानी पीना चाहिये। (किसी माहिर डॉक्टर से मश्वरा कर लीजिये)

मदनी मश्वरा : अपनी डाएरी में चस्पां कर लीजिये, अपने अहले ख़ाना और दीगर इस्लामी भाइयों को जम्अ़ कर के येह मक्तूब पढ़ कर सुनाइये, मज़्कूरा टेस्ट करवाने का मश्वरा दीजिये नीज़ ह़स्बे ज़रूरत इस मक्तूब की copy पेश कर के सवाब कमाइये। अगर पढ़ लिया हो तब भी तमाम इस्लामी भाई और इस्लामी बहनें एक बार फिर फ़ैज़ाने सुन्नत का बाब "पेट का कुफ़्ले मदीना" सफ़ह़ा 68 ता 116 का मुत़ालआ़ फ़रमा लें। وَالسَّلَامُ مَعَ الْاِكْرَام

त़ालिबे ग़मे मदीना व
बक़ीअ़ व मग़्फ़िरत व
बे हिसाब जन्नतुल फ़िरदौस
में आक़ा का पड़ोस

22 मुह़र्रमुल ह़राम 1427 हि.

صَلُّوْا عَلَى الْحَبِيْب ! صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلٰى مُحَمَّد

تُوْبُوْا اِلَى الله ! اَسْتَغْفِرُ الله

صَلُّوْا عَلَى الْحَبِيْب ! صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلٰى مُحَمَّد

फ़रमाने मुस्तफ़ा صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم : जिस के पास मेरा ज़िक्र हुवा और उस ने मुझ पर दुरूद शरीफ़ न पढ़ा उस ने जफ़ा की। (عبدالرزاق)

اَلْحَمْدُ لِلّٰهِ رَبِّ الْعٰلَمِيْنَ وَالصَّلٰوةُ وَالسَّلَامُ عَلٰى سَيِّدِ الْمُرْسَلِيْنَ
اَمَّا بَعْدُ فَاَعُوْذُ بِاللّٰهِ مِنَ الشَّيْطٰنِ الرَّجِيْمِ ط بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ ط

हाजी मुश्ताक़ अ़त्तारी

दुरूद शरीफ़ की फ़ज़ीलत

हुज़ूरे अकरम, नूरे मुजस्सम, शाहे बनी आदम, रसूले मोह़तशम, शाफ़ेए उमम صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने इर्शाद फ़रमाया, जो शख़्स बरोज़े जुमुआ़ मुझ पर सो बार दुरूदे पाक पढ़े, जब वोह क़ियामत के रोज़ आएगा तो उस के साथ एक ऐसा नूर होगा कि अगर वोह सारी मख़्लूक़ में तक़्सीम कर दिया जाए तो सब को किफ़ायत करे। (حِلیۃ الاولیاء ج۸ ص۴۹ حدیث ۱۱۳٤۱)

صَلُّوْا عَلَى الْحَبِيْب ! صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلٰى مُحَمَّد

सना ख़्वाने रसूले मक़्बूल, बुलबुले रौज़ए रसूल, मद्दाहे सह़ाबा व आले बतूल, गुलज़ारे अ़त्तार के मुश्कबार फूल, मुबल्लिगे़ दा'वते इस्लामी अलह़ाज अबू उ़बैद क़ारी **मुह़म्मद मुश्ताक़ अह़मद अ़त्तारी** عَلَيْهِ رَحْمَةُ الْبَارِی बिन मौलाना अख़्लाक़ अह़मद की विलादत ग़ालिबन बरोज़ इतवार 18 रमज़ानुल मुबारक 1386 हि. (ब मुत़ाबिक़ 1-1-67) को हुई। ❁ मदीना मस्जिद में कई साल तक इमामत

फ़रमाते रहे। ❁ 1995 ता वफ़ात जामेअ़ मस्जिद **कन्ज़ुल ईमान** में इमामत व ख़िता़बत के मन्सब पर फ़ाइज़ रहे। ❁ कु़रआने पाक के 8 पारे हि़फ़्ज़ थे। ❁ बहुत अच्छे क़ारी थे। ❁ दर्से निज़ामी के चार दरजे पढ़े थे मगर दीनी मा'लूमात किसी अच्छे ख़ासे आ़लिम से कम नहीं थी ❁ एकाउन्ट डिपार्टमेन्ट में सीनियर ऑडिटर की हैसिय्यत से सालहा साल गवर्नमेन्ट जॉब रही। ❁ जामिअ़तुल मदीना में इंग्लिश का दरजा भी पढ़ाते रहे। ❁ اَلْحَمْدُ لِلّٰه عَزَّوَجَلَّ उन्हें चार मरतबा ह़ज व ज़ियारते मदीनए मुनव्वरह की सआ़दतें नसीब हुईं।

अगर्चे दौलते दुन्या मेरी सब छीन ली जाए
मेरे दिल से न हरगिज़ या नबी صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰی عَلَيْهِ وَسَلَّم *तेरी विला निकले*

हा़जी मुश्ताक़ अ़त्तारी मदनी माहो़ल में : दा'वते इस्लामी के **मदनी माहो़ल** में तशरीफ़ लाने से क़ब्ल भी **हा़जी मुश्ताक़** عَلَيْهِ رَحْمَةُ الرَّزَّاق का اَلْحَمْدُ لِلّٰه عَزَّوَجَلَّ मज़्हबी ज़ेहन था, बा रीश नौ जवान और ख़ुश इल्हा़न ना'त ख़्वान थे। **दा'वते इस्लामी** में अपनी शुमूलिय्यत का वाक़िआ़ उन्हों ने मुझे (या'नी सगे मदीना عُفِیَ عَنْهُ को) कुछ इस त़रह़ बताया था कि "मैं जब पहली बार हफ़्तावार **सुन्नतों भरे इज्तिमाअ़** में हा़ज़िरी के लिये **दा'वते इस्लामी के अव्वलीन मर्कज़ जामेअ़ मस्जिद गुलज़ारे ह़बीब** आया, इज्तिमाअ़ के

बा'द सब लोग मुन्तशिर होने लगे तो मैं भी चल पड़ा, इतने में एक बा रीश बा इमामा इस्लामी भाई ने खुद आगे बढ़ कर मुझ से मुसाफ़हा किया, उन के मिलने का अन्दाज़ मुझे बहुत भला लगा। बड़ी महब्बत के साथ **इन्फ़िरादी कोशिश** करते हुए उन्हों ने **आप** (सगे मदीना عُفِیَ عَنْهُ) से मेरी मुलाक़ात करवाई। मैं बहुत मुतअस्सिर हुवा और اَلْحَمْدُ لِلّٰه عَزَّوَجَلَّ **दा'वते इस्लामी** के **मदनी माहोल** से वाबस्ता हो गया।"

صَلُّوا عَلَى الْحَبِيب! صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلٰى مُحَمَّد

हाजी मुश्ताक़ निगराने शूरा बन गए : اَلْحَمْدُ لِلّٰه عَزَّوَجَلَّ हाजी **मुहम्मद मुश्ताक़** عَلَيْهِ رَحْمَةُ الرَّزَّاق को **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ ने आवाज़ बहुत ही सुरीली बख़्शी थी, बड़े बड़े इज्तिमाआते ज़िक्रो ना'त में आक़ा صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم की ना'तें सुनाने और **आशिक़ाने रसूल** को तड़पाने लगे, मुबल्लिग़ भी बहुत अच्छे थे, मदनी काम का जज़्बा भी ख़ूब था। **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ ने उन को बहुत तरक़्क़ी अ़ता फ़रमाई, जनवरी 2000 में शहर भर के निगरानों की मन्ज़ूरी से एक शहर के निगरान बने और उसी बरस अक्तूबर में दा'वते इस्लामी की मर्कज़ी मजलिसे शूरा के निगरान के मन्सब पर मुतमक्किन हो गए।

रिज़ा पर रब की राज़ी हैं عَزَّوَجَلَّ *तुम्हारे हम भिकारी हैं*

हमारी आख़िरत बेहतर बना दो या रसूलल्लाह صَلَّى اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَسَلَّم

صَلُّوا عَلَی الْحَبِیْب ! صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلٰی مُحَمَّد

आक़ा صَلَّى اللّٰہُ عَلَیْہِ وَسَلَّم ने अपने मुश्ताक़ को सीने से लगा लिया :

हाजी मुहम्मद मुश्ताक़ अ़त्तारी عَلَیْہِ رَحْمَۃُ الْبَارِی की वफ़ात से चन्द माह क़ब्ल मुझे (सगे मदीना عُفِیَ عَنْہُ को) किसी इस्लामी भाई ने एक मक्तूब इरसाल किया था, उस में उन्हों ने ब क़सम अपना वाक़िआ कुछ यूं तह़रीर किया था, "मैं ने ख़्वाब में अपने आप को **सुनहरी जालियों के रू बरू** पाया। जाली मुबारक में बने हुए तीन[3] सूराख़ में से एक सूराख़ में जब झांका तो एक दिलरुबा मन्ज़र नज़र आया। क्या देखता हूं कि **सरकारे मदीना**, राह़ते क़ल्बो सीना, फ़ैज़ गन्जीना, साहिबे मुअ़त्तर पसीना صَلَّى اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم तशरीफ़ फ़रमा हैं और साथ ही शैख़ैने करीमैन या'नी ह़ज़रते सय्यिदुना अबू बक्र सिद्दीक़ और ह़ज़रते सय्यिदुना उ़मर फ़ारूक़े आ'ज़म رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُمَا भी ह़ाज़िरे ख़िदमत हैं। इतने में **ह़ाजी मुह़म्मद मुश्ताक़ अ़त्तारी** عَلَیْہِ رَحْمَۃُ الْبَارِی **बारगाहे मह़बूब** صَلَّى اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم **में ह़ाज़िर हुए सरकारे आ़ली वक़ार** صَلَّى اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم **ने ह़ाजी मुश्ताक़ अ़त्तारी को सीने से लगा लिया और फिर कुछ इर्शाद फ़रमाया** मगर वोह मुझे याद नहीं। फिर आंख खुल गई।"

आप के क़दमों से लग कर मौत की या मुस्तफ़ा
आरज़ू कब आएगी बर बे कसो मजबूर की

صَلُّوا عَلَى الْحَبِيْب! صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلٰى مُحَمَّد

हाजी मुश्ताक़ का सरकार صَلَّى اللّٰه عَلَيْهِ وَسَلَّم **के दरबार में इन्तिज़ार :** **हाजी मुश्ताक़** عَلَيْهِ رَحْمَةُ الرَّزَّاق चूंकि उन दिनों सख़्त अ़लील थे, मैं ने उन के बारे में देखे जाने वाले ईमान अफ़रोज़ ख़्वाब वाला मक्तूब उन की दिलजूई की ख़ातिर उन्हीं को पेश कर दिया। मेरा हुस्ने ज़न है कि **हाजी मुश्ताक़ अ़त्तारी** عَلَيْهِ رَحْمَةُ الْبَارِى पर रहमते आलम, नूरे मुजस्सम, शाहे बनी आदम, रसूले मोहृतशम صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم की ख़ुसूसी नज़रे करम थी चुनान्चे एक इस्लामी भाई ने मुझे कुछ इस त़रह़ लिखा, اَلْحَمْدُ لِلّٰه عَزَّوَجَلَّ पीर और मंगल की दरमियानी शब मैं ने येह ईमान अफ़रोज़ ख़्वाब देखा कि **मस्जिदुन्नबविय्यिश्शरीफ़** عَلٰى صَاحِبِهَا الصَّلٰوةُ وَالسَّلَام में सरकारे मदीना, सुल्त़ाने बा क़रीना, क़रारे क़ल्बो सीना, फ़ैज़ गन्जीना, साहि़बे मुअ़त्त़र पसीना صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم रौनक़ अफ़रोज़ हैं और इर्द गिर्द अम्बियाए किराम عَلَيْهِمُ السَّلَام, ख़ुलफ़ाए राशिदीन, ह़सनैने करीमैन और बे शुमार औलियाए किराम رِضْوَانُ اللّٰهِ تَعَالٰى عَلَيْهِمْ اَجْمَعِيْن हाज़िर हैं। हर त़रफ़ सुकूत (या'नी ख़ामोशी) त़ारी है, इतने में मीठे मीठे आक़ा मक्की मदनी मुस्त़फ़ा صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم हज़रते सय्यिदुना **अबू बक्र सिद्दीक़** رَضِىَ اللّٰهُ تَعَالٰى عَنْهُ की त़रफ़ मुतवज्जेह हुए, लबहाए मुबारका को जुम्बिश हुई, रह़मत के फूल

झड़ने लगे और अल्फ़ाज़ कुछ यूं तरतीब पाए, (ऐ अबू बक्र !) "**मुह़म्मद मुश्ताक़ अ़त्तारी आने वाले हैं मैं उन से मुसाफ़ह़ा करूंगा, तुम भी मुसाफ़ह़ा करना, वोह यहां आ कर हमें ना'तें सुनाएंगे ।**" फिर मेरी आंख खुल गई। जब दिन निकला तो ख़बर आई कि आज 29 शा'बानुल मुअ़ज़्ज़म 1423 सि.हि. (ब मुताबिक़ 5-11-2002) सुब्ह़ सवा आठ और साढ़े आठ बजे के दरमियान **ह़ाजी मुश्ताक़ अ़त्तारी** عَلَيْهِ رَحْمَةُ الْبَارِى की वफ़ात हो गई है। اِنَّا لِلّٰهِ وَاِنَّآ اِلَيْهِ رٰجِعُوْن 0

صَلُّوا عَلَى الْحَبِيب ! صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلٰى مُحَمَّد

लब पर ना'ते नबी صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَسَلَّم *का नग़्मा कल भी था और आज भी है*
प्यारे नबी صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَسَلَّم *से मेरा रिश्ता कल भी था और आज भी है*

प्यारे प्यारे इस्लामी भाइयो ! इस ईमान अफ़्रोज़ ख़्वाब से येह हुस्ने ज़न क़ाइम हो रहा है कि मर्ह़ूम ह़ाजी मुश्ताक़ عَلَيْهِ رَحْمَةُ الرَّزَّاق बारगाहे रिसालत صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم के मक़्बूल सना ख़्वान थे। जभी तो वफ़ात से कुछ घन्टे पहले आमद का इन्तिज़ार करने और ना'तें सुनने की बिशारत सुनाई गई।

येही आरज़ू हो जो सुर्ख़ रू, मिले दो 2 जहान की आबरू
मैं कहूं ग़ुलाम हूं आप का, वोह कहें कि हम को क़बूल है

صَلُّوا عَلَى الْحَبِيب ! صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلٰى مُحَمَّد

हाजी मुश्ताक़ का जनाज़ा : निश्तर पार्क में मर्हूम की नमाज़े जनाज़ा अदा की गई ।

आशिक़ का जनाज़ा है ज़रा धूम से निकले

महबूब की गलियों से ज़रा घूम के निकले

मैं (सगे मदीना عُفِیَ عَنۡهُ) ने बड़े बड़े हज़रात के जनाज़ों में हाज़िरी दी है लेकिन इस से पहले कभी किसी के जनाज़े में लोगों का इतना इज़्दिहाम नहीं देखा था जितना **हाजी मुहम्मद मुश्ताक़** عَلَيْهِ رَحْمَةُ الرَّزَّاق **के जनाज़े** में था । बहुत रिक़्क़त अंगेज़ मनाज़िर देखने में आ रहे थे, **ग़मे मुश्ताक़ में दीवाने बिलक बिलक कर रो रहे थे । आहों और हिचकियों की जिगर पाश सदाओं और नमनाक आंखों के साथ इन्तिहाई पुरसोज़ माहोल में मर्हूम को सिपुर्दे ख़ाक किया गया ।**

शहा अ़त्तार का प्यारा है येह मुश्ताक़ अ़त्तारी

येही मुज़्दा इसे तुम भी सुना दो या रसूलल्लाह

صَلُّوْا عَلَى الْحَبِيْب ! صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلٰى مُحَمَّد

फ़रमाने मुस्तफ़ा صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم : जिस ने मुझ पर रोज़े जुमुआ़ दो सो बार दुरूदे पाक पढ़ा उस के दो सो साल के गुनाह मुआ़फ़ होंगे। (جمع الجوامع)

ईसाले सवाब का अम्बार : **दा'वते इस्लामी के आ़लमी मदनी मर्कज़ फ़ैज़ाने मदीना** में मर्हूम का **तीजा** हुवा जिस में कसीर इस्लामी भाइयों ने शिर्कत फ़रमाई। **हाजी मुश्ताक़ अ़त्तारी** عَلَيْهِ رَحْمَةُ الْبَارِى के तीजे में मुख़्तलिफ़ शहरों से **ईसाले सवाब** की जो सौग़ातें आईं उन की इज्माली फ़ेहरिस येह है : **﴾1﴿ क़ुरआने पाक 13919 ﴾2﴿ मुतफ़र्रिक़ पारे 5613 ﴾3﴿ सूरए यासीन 1038 ﴾4﴿ सूरए मुल्क 1140 ﴾5﴿ सूरए रह़मान 165 ﴾6﴿ सूरए मुज़्ज़म्मिल 10 ﴾7﴿ आयतुल कुर्सी 33592 ﴾8﴿ अलग अलग सूरतें 93186 ﴾9﴿ दुरूद शरीफ़ 13888087 ﴾10﴿ कलिमए त़य्यिबा 348400 ﴾11﴿ मुख़्तलिफ़ तस्बीह़ात 357200**

इलाही ! मौत आए गुम्बदे ख़ज़रा के साए में
मदीने में जनाज़ा धूम से अ़त्तार का निकले

صَلُّوْا عَلَى الْحَبِيْب !　　صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلٰى مُحَمَّد

हाजी मुश्ताक़ के किरदार की झल्कियां : **एक** इस्लामी भाई ने तजरिबात व मुशाहदात की रोशनी में अलह़ाज क़ारी अबू उ़बैद **मुह़म्मद मुश्ताक़ अ़त्तारी** عَلَيْهِ رَحْمَةُ الْبَارِى के बारे में तअस्सुरात लिख कर दिये थे जो कुछ यूं हैं : जिन दिनों **हाजी मुश्ताक़** عَلَيْهِ رَحْمَةُ الرَّزَّاق दा'वते इस्लामी के अ़लाक़ाई निगरान थे, मेरा भी तक़रीबन 6 बरस

वहीं क़ियाम रहा ❁ मैं ने उन्हें **ग़ीबत** करते या **ग़ुस्से** में आ कर किसी को झाड़ते लिताड़ते कभी नहीं देखा ❁ बड़े से बड़ा आपसी तनाज़ुआ़ या तन्ज़ीमी मस्अला दरपेश आता **हिक्मते अ़मली** के साथ हंस बोल कर हल फ़रमा देते ❁ कोई कितनी ही दिल आज़ार बात कह गुज़रता सुन कर ग़ज़ब नाक होना तो एक त़रफ़ कभी उन के माथे पर शिकनें तक नहीं देखीं ❁ जब किसी को वक़्त देते तो ह़त्तल इम्कान उस की पाबन्दी फ़रमाते ❁ बारहा देखा कि जब **इज्तिमाए ज़िक्रो ना'त** में ना'त शरीफ़ पढ़ने के लिये शिर्कत के लिये या निकाह़ पढ़ाने के लिये सुवारी की ऑफ़र की जाती तो येह कह कर इन्कार फ़रमा देते कि मेरे पास बाइक (bike) मौजूद है اِنْ شَآءَاللہ عَزَّوَجَلَّ इसी पर ह़ाज़िर हो जाऊंगा बस मुझे पता बता दीजिये ❁ **आने जाने का किराया** वग़ैरा मांगना तो एक त़रफ़ रहा कोई अज़ ख़ुद पेश करता तब भी अक्सर मुस्कुरा कर टाल देते ❁ 19-12-1996 को मेरा **निकाह़** था मेरी दरख़्वास्त पर **बारात** के साथ तशरीफ़ ले आए, **निकाह़** भी पढ़ाया और **सेहरा** भी पढ़ा। वापसी पर घर वालों ने काफ़ी इसरार किया कि आप को **दूल्हा की गाड़ी** में घर पहुंचा देते हैं या टेक्सी करवा देते हैं मगर न माने और ब कमाले इन्किसार त़वील सफ़र आ़म रूट की बस में इख़्तियार फ़रमाया।

हज़रते मुश्ताक़ अ़त्तारी से हम को प्यार है

اِنْ شَآءَاللّٰه दो [2] जहां में अपना बेड़ा पार है

صَلُّوْا عَلَی الْحَبِیْب ! صَلَّی اللّٰهُ تَعَالٰی عَلٰی مُحَمَّد

दरबारे मुश्ताक़ में मुराद पूरी हुई : اَلْحَمْدُ لِلّٰه عَزَّوَجَلَّ दरबारे मुश्ताक़ मर्जए ख़लाइक़ है, इस्लामी भाई दूर दूर से आते और फ़ैज़ पाते हैं। चुनान्चे एक इस्लामी भाई ने कुछ इस तरह तहरीर पेश की, मेरे घर में "उम्मीद" से थीं। मेडीकल रिपोर्ट के मुताबिक़ बेटी की आमद होने वाली थी मगर मुझे "बेटे" की आरज़ू थी क्यूं कि एक बेटी पहले ही घर में मौजूद थी। मैं ने **दरबारे मुश्ताक़** عَلَيْهِ رَحْمَةُ الرَّزَّاق में हाज़िरी दी और बारगाहे इलाही عَزَّوَجَلَّ में दुआ मांगी। मेडीकल रिपोर्ट ग़लत साबित हो गई और اَلْحَمْدُ لِلّٰه عَزَّوَجَلَّ हमारे घर में चांद सा चेहरा चमकाता खुशियों के फूल लुटाता **मदनी मुन्ना** तशरीफ़ ले आया।

मुस्तफ़ा صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم *का है जो भी दीवाना*

उस पे रहमत मुदाम होती है

صَلُّوْا عَلَی الْحَبِیْب ! صَلَّی اللّٰهُ تَعَالٰی عَلٰی مُحَمَّد

फ़रमाने मुस्तफ़ा صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم : जिस ने किताब में मुझ पर दुरूदे पाक लिखा तो जब तक मेरा नाम उस में रहेगा फ़िरिश्ते उस के लिये इस्तिग़फ़ार (या'नी बख़्शिश की दुआ) करते रहेंगे। (طبرانی)

गन्दे असरात दूर हो गए : एक इस्लामी भाई का बयान है, मुझ पर गन्दे असरात थे। अपने ह़ल्क़े के इस्लामी भाइयों के साथ **दरबारे मुश्ताक़** पर मैं ने ह़ाज़िरी दी और दुआ़ मांगी, ऐसा मह़सूस हुवा जैसे मुझे किसी ने पकड़ लिया है कुछ देर के बा'द वोह कैफ़िय्यत जाती रही और اَلْحَمْدُ لِلّٰہ عَزَّوَجَلَّ मेरी त़बीअ़त बेहतर हो गई।

सुन लो हर एक नेक शख़्सिय्यत

क़ाबिले एह़तिराम होती है

या रब्बे मुस्त़फ़ा عَزَّوَجَلَّ ! मेरी, ह़ाजी मुश्ताक़ अ़त्तारी عَلَیْہِ رَحْمَۃُ الْبَارِی, हर दा'वते इस्लामी वाले और वाली और तमाम उम्मते मुस्लिमा की मग़्फ़िरत फ़रमा। اٰمِین بِجَاہِ النَّبِیِّ الْاَمِین صَلَّی اللّٰہ تعالٰی علیہ واٰلہٖ وسلّم

त़ालिबे ग़मे मदीना व
बक़ीअ़ व मग़्फ़िरत व
बे ह़िसाब जन्नतुल
फ़िरदौस में
आक़ा का पड़ोस

23 मुह़र्रमुल ह़राम 1427 हि.

صَلُّوْا عَلَی الْحَبِیْب! صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلٰی مُحَمَّد

تُوْبُوْا اِلَی اللّٰہ! اَسْتَغْفِرُ اللّٰہ

صَلُّوْا عَلَی الْحَبِیْب! صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلٰی مُحَمَّد

इलाज बिल ग़िज़ा के मन्ज़ूम मदनी फूल

जहां तक काम चलता हो ग़िज़ा से
वहां तक चाहिये बचना दवा से

अगर तुझ को लगे जाड़ों में सर्दी
तो इस्ति'माल कर अन्डे की ज़र्दी

जो हो महसूस मे'दे में गिरानी
तो चख ले सोंफ़ या अदरक का पानी

अगर ख़ूं कम बने बल्ग़म ज़ियादा
तो खा गाजर, चने, शलग़म ज़ियादा

जो बद हज़्मी में तू चाहे इफ़ाक़ा
तो कर ले एक या दो वक़्त फ़ाक़ा

जो पेचिश है तो पेच इस त़रह़ कस ले
मिला कर दूध में लीमूं का रस ले

जिगर के बल पे है इन्सान जीता
अगर ज़ो'फ़े जिगर है, खा पपीता

जिगर में हो अगर गरमी, दही खा
अगर आंतों में ख़ुश्की है, तो घी खा

थकन से हों अगर अ़ज़्लात ढीले
तो फ़ौरन दूध गर्मा गर्म पी ले

जो त़ाक़त में कमी होती है महसूस
तो फिर मुल्तानी मिस्री की डली चूस

ज़ियादा गर दिमाग़ी है तेरा काम
तो खाया कर मिला कर शहद बादाम

अगर हो दिल की कमज़ोरी का एह़सास
मुरब्बा आमला खा, और अनन्नास

जो दुखता है गला, नज़्ले के मारे
तो कर नमकीन पानी से ग़रारे

अगर है दर्द से दांतों के बेकल
तो उंगली से मसूढ़ों पर नमक मल

शिफ़ा चाहे अगर खांसी से जल्दी जो
तो पी ले दूध में थोड़ी सी हल्दी

कानों में अगर तक्लीफ़ होवे
तो सरसों तेल फाहे से निचोड़े

जो टाईफ़ॉइड से चाहे रिहाई
बदल पानी के गन्ना चूस भाई

ज़ियाबत़ुस अगर तुझ को जो मारे
तो जामुन ताज़ा खा, और ले नज़ारे

तू चिश्ती, नक़्शबन्दी, क़ादिरी है
तू ह़नफ़ी, शाफ़ेई या मालिकी है

तो आ जा सुन्नतों के इज्तिमाअ़ में
हो नफ़्अ़ दीनो दुन्या की मताअ़ में

अगर हो तेरे दिल पे ग़म की यलग़ार
तो मदनी क़ाफ़िलों में कर सफ़र यार

जो है दिल फ़िक्रे दुन्या से परेशां
तो कर यादे ख़ुदा से दिल को शादां

अगर आफ़त कोई आ जाए तुझ पर
तो दिल से या रसूलल्लाह कहा कर

दुरूदे पाक तू हर दम पढ़ा कर
सभी अमराज़ की इस से दवा कर

तू हुब्बे आलो अस्ह़ाबे नबी से
दिल आबाद कर मत डर किसी से

(येह कलाम सगे मदीना का नहीं अलबत्ता आख़िरी सात अश्आ़र में तसर्रुफ़ व इज़ाफ़ा किया है)

اَلْحَمْدُ لِلّٰهِ رَبِّ الْعٰلَمِيْنَ وَ الصَّلٰوةُ وَالسَّلَامُ عَلٰى سَيِّدِ الْمُرْسَلِيْنَ
اَمَّا بَعْدُ فَاَعُوْذُ بِاللّٰهِ مِنَ الشَّيْطٰنِ الرَّجِيْمِ ط بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ ط

अज़ : शैखे़ त़रीक़त अमीरे अहले सुन्नत ह़ज़रते अ़ल्लामा मौलाना

अबू बिलाल मुह़म्मद इल्यास अ़त़्त़ार क़ादिरी रज़वी دَامَتْ بَرَكَاتُهُمُ الْعَالِيَه

बैतुल ख़ला जाने की 41 निय्यतें

फ़रमाने मुस्त़फ़ा صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم : "मुसल्मान की निय्यत उस के अ़मल से बेहतर है" (طبرانی معجم کبیر حدیث ٥٩٤٢ ج٦ ص١٨٥ دار احیاء التراث العربی بیروت)

(1) जाने में उलटे पाउं से और (2) बाहर निकलने में सीधे पाउं से पहल कर के इत्तिबाए़ सुन्नत करूंगा (3,4) दोनों बार या'नी दाख़िले से क़ब्ल और निकलने के बा'द मस्नून दुआ़एं पढ़ूंगा। (5) सिर्फ़ अंधेरे की सूरत में येह निय्यत कीजिये, त़हारत पर मदद ह़ासिल करने के लिये बत्ती जलाऊंगा (6) फ़राग़त के फ़ौरन बा'द इसराफ़ से बचने की निय्यत से बत्ती बुझा दूंगा। (7) ह़दीसे पाक "اَلطُّهُوْرُ شَطْرُ الْاِيْمَان" (مسلم ج١ ص١١٨) तरजमा : "पाकी ईमान से है" पर अ़मल करते हुए पाउं को गन्दगी से बचाने के लिये चप्पल पहनूंगा। (8) पहनते हुए सीधे क़दम से और (9) उतारते हुए उलटे से पहल कर के इत्तिबाए़ सुन्नत करूंगा। (10) इस्तिक़्बाले क़िब्ला (क़िब्ले की त़रफ़ मुंह करना) और (11) इस्तिद्बारे क़िब्ला (क़िब्ले की त़रफ़ पीठ करना) से बचूंगा। (12) ज़मीन से क़रीब हो कर फ़क़त़ (13) ह़स्बे ज़रूरत सित्र खोलूंगा। इसी त़रह़ फ़राग़त के बा'द (14) उठने से क़ब्ल ही सित्र छुपा लूंगा (15) जो कुछ ख़ारिज होगा उस की त़रफ़ नहीं देखूंगा (16) पेशाब के छींटों से बचूंगा (17) ह़या से सर झुकाए रहूंगा (18) ज़रूरतन आंखें बन्द कर लूंगा और (19) बिला ज़रूरत शर्मगाह को देखने और (20) छूने से बचूंगा। (21) उलटे हाथ से ढेला पकड़ कर उलटे ही हाथ से ख़ुश्क करूंगा और (22) पानी से त़हारत करते वक़्त भी सिर्फ़ उलटा हाथ शर्मगाह को लगाऊंगा (23) शरई मसाइल पर ग़ौर नहीं करूंगा। (कि महरूमी है) (24) सित्र खुला होने की सूरत में बातचीत नहीं करूंगा (25) पेशाब वग़ैरा में न थूकूंगा (26) न ही उस में नाक सिनकूंगा (27) अगर फ़ौरन ह़म्माम ही में वुज़ू करना न हुवा तो त़हारत वाली ह़दीस पर अ़मल करते हुए दोनों हाथ धोऊंगा नीज़ (28) जो कुछ निकला उस को बहा दूंगा। (पेशाब करने के बा'द अगर हर फ़र्द एक लोटा पानी बहा दिया करे तो اِنْ شَآءَ اللّٰه عَزَّوَجَلَّ बदबू और जरासीम की अफ़्ज़ाइश में कमी होगी, बड़ा पेशाब करने के बा'द भी जहां एकआध लोटा पानी काफ़ी हो वहां फ़्लश टेंक से पानी न बहाया जाए क्यूं कि वोह कई लोटे पर मुश्तमिल होता है) (29) पानी से इस्तिन्जा करने के बा'द पाउं के टख़्नों वाले ह़िस्से एह़तियात़ के साथ धो लूंगा (क्यूं कि इस मौक़अ़ पर उ़मूमन टख़्नों की त़रफ़ गन्दे पानी के छींटे आ जाते हैं।) (30) फ़ारिग़ हो कर जल्दी निकलूंगा (31) अज़ान के दौरान इस्तिन्जा ख़ाने नहीं जाऊंगा।

अ़वामी इस्तिन्जा ख़ाने में जाते हुए येह निय्यतें भी कीजिये

(32) अगर लाइन लम्बी हुई तो सब्र करूंगा (33) अपनी बारी का इन्तिज़ार करूंगा (34) किसी की ह़क़ तलफ़ी नहीं करूंगा (35) अगर किसी को मुझ से ज़ियादा ह़ाजत हुई और जमाअ़त या नमाज़ फ़ौत होने का अन्देशा न हुवा तो ईसार करूंगा (36) ह़त्तल इम्कान भीड़ के वक़्त इस्तिन्जा ख़ाने जा कर भीड़ में मज़ीद इज़ाफ़ा कर के मुसल्मानों पर बोझ नहीं बनूंगा। (37) दरो दीवार पर कुछ नहीं लिखूंगा। (38) वहां बनी हुई फ़ोह़्श तस्वीरें देख कर और (39) ह़यासोज़ तह़रीरें पढ़ कर अपनी आंखों को बरोज़े क़ियामत अपने ख़िलाफ़ गवाह नहीं बनाऊंगा।(40) कोई पहले से अन्दर मौजूद होगा तो बार बार दरवाज़ा बजा कर उस को ईज़ा नहीं दूंगा। (41) अगर मेरे अन्दर होते हुए किसी ने बार बार दरवाज़ा बजाया तो सब्र करूंगा।

वुज़ू की 17 निय्यतें

(1) बे वुज़ूई दूर करूंगा (अह़नाफ़ के नज़्दीक बिग़ैर निय्यत भी वुज़ू हो जाएगा मगर सवाब नहीं मिलेगा) (2) जो बा वुज़ू हो वोह दोबारा वुज़ू करते वक़्त यूं निय्यत करे : सवाब के लिये वुज़ू पर वुज़ू करूंगा। (3) بِسْمِ اللّٰهِ وَالْحَمْدُ لِلّٰه कहूंगा (4) मिस्वाक करूंगा (5) हर उ़ज़्व धोते वक़्त दुरूद शरीफ़ पढ़ूंगा (6) पानी का इसराफ़ नहीं करूंगा (7) फ़राइज़ व (8) सुनन और (9) मुस्तह़ब्बात का ख़याल रखूंगा (10) मकरूहात से बचूंगा (11) आ'ज़ाए वुज़ू पर तरी बाक़ी रहने दूंगा (12) वुज़ू के टपक्ते क़त़रों से फ़र्शे मस्जिद को बचाऊंगा (13) वुज़ू के बा'द दुआ़ पढ़ूंगा। दुआ़ येह है : اَللّٰهُمَّ اجْعَلْنِیْ مِنَ التَّوَّابِیْنَ وَ اجْعَلْنِیْ مِنَ الْمُتَطَهِّرِیْنَ۔ **तरजमा : ऐ अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ ! मुझे कसरत से तौबा करने वालों में बना दे और मुझे पाकीज़ा लोगों में शामिल कर दे। (14) आस्मान की त़रफ़ देख कर कलिमए शहादत और (15) सूरतुल क़द्र पढ़ूंगा (16) (मकरूह वक़्त न हुवा तो) तह़िय्यतुल वुज़ू अदा करूंगा (17) बात़िनी वुज़ू भी करूंगा (या'नी जिस त़रह़ पानी से ज़ाहिरी आ'ज़ा का मैल कुचैल दूर किया है, इसी त़रह़ तौबा के पानी से गुनाहों की गन्दगी धो कर आयिन्दा गुनाहों से बचने का अ़ह्द करूंगा)

मदनी मश्वरा : अपनी डायरी में चस्पा कर लीजिये।

पेट का कुफ़्ले मदीना

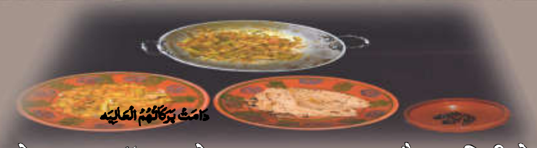

अमीरे अहले सुन्नत دامت برکاتہم العالیہ के दस्तर ख़्वान पर मौजूद मिट्टी के बरतन, जव शरीफ़ की रोटी और सब्ज़ी का सालन

इस बाब में......

पेट का कुफ़्ले मदीना क्या है ?	643
दिन में तीन बार खाना कैसा ?	656
सोने का दस्तर ख़्वान	660
लुक़्मए हराम की सज़ा	666
दिल की सख़्ती के अस्बाब	678
अल्लाह की ख़ुफ़्या तदबीर से बे ख़ौफ़ होना गुनाहे कबीरा है	682
गुनाहों को अच्छा समझना कुफ़्र है	684
एक हज़ार साल जीने वाला परिन्दा	706
मोटापे के अस्बाब	711
मोटापे का इलाज	719
तन्दुरुस्त रहने का नुस्ख़ा	724
क्या आप कम खाने की आ़दत बनाना चाहते हैं ?	742

वरक़ उलटिये......

اَلْحَمْدُ لِلّٰہِ رَبِّ الْعٰلَمِیْنَ وَ الصَّلٰوۃُ وَالسَّلَامُ عَلٰی سَیِّدِ الْمُرْسَلِیْنَ

اَمَّا بَعْدُ فَاَعُوْذُ بِاللّٰہِ مِنَ الشَّیْطٰنِ الرَّجِیْمِ ط بِسْمِ اللّٰہِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِیْمِ ط

पेट का कुफ़्ले मदीना

(भूक के फ़ज़ाइल)

शैत़ान रोकने के लिये पूरा ज़ोर लगाएगा मगर आप अव्वल ता आख़िर पढ़ कर ह़स्बे तौफ़ीक़ अ़मल कर के शैत़ान को नाकाम बनाइये।

दुरूद शरीफ़ की फ़ज़ीलत

फ़रमाने मुस्त़फ़ा صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم : बेशक तुम्हारे नाम मअ़ शनाख़्त मुझ पर पेश किये जाते हैं लिहाज़ा मुझ पर अह़सन (या'नी ख़ूब सूरत अल्फ़ाज़ में) दुरूदे पाक पढ़ो। (مصنّف عبدالرزاق ج۲ص۲۱۴رقم الحدیث۳۱۱۱)

صَلُّوْا عَلَی الْحَبِیْب ! صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلٰی مُحَمَّد

पेट का कुफ़्ले मदीना क्या है ?

अपने पेट को ह़राम ग़िज़ा से बचाना और ह़लाल ख़ूराक भी भूक से कम खाना "पेट का कुफ़्ले मदीना" लगाना है। पेट का कुफ़्ले मदीना लगाने की तड़प रखने वालों के लिये **हुज्जतुल इस्लाम** ह़ज़रते सय्यिदुना इमाम मुह़म्मद ग़ज़ाली عَلَیْہِ رَحْمَۃُ اللّٰہِ الْوَالِی का येह इर्शादे सिह़्ह़त बुन्याद बेहतरीन रहनुमा उसूल है चुनान्चे फ़रमाते हैं : "खाने से पहले भूक लगी होना ज़रूरी है, जो कोई खाना शुरूअ़ करते वक़्त भी भूका हो और अभी

फ़रमाने मुस्तफ़ा صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم : जो मुझ पर एक बार दुरूद पढ़ता है अल्लाह उस के लिये एक क़ीरात् अज्र लिखता है और क़ीरात् उहुद पहाड़ जितना है। (عبدالرزاق)

भूक बाक़ी हो और हाथ खींच ले वोह हरगिज़ त़बीब का मोहताज न होगा।" (اِحیاءُ العُلوم ج ۲ ص ۵)

या इलाही عَزَّ وَجَلَّ *! पेट का कुफ़्ले मदीना कर अ़ता*
अज़ पए ग़ौसो रज़ा رَحِمَهُمَا الله *कर भूक का गौहर अ़ता*

इख़्तियारी भूक : प्यारे प्यारे इस्लामी भाइयो ! पेट भर कर खाना मुबाह़ या'नी जाइज़ है मगर "पेट का कुफ़्ले मदीना" लगाते हुए या'नी अपने पेट को ह़राम और शुबुहात से बचाते हुए ह़लाल ग़िज़ा भी भूक से कम खाने में दीनो दुन्या के बे शुमार फ़वाइद हैं। खाना मुयस्सर न होने की सूरत में मजबूरन भूका रहना कोई कमाल नहीं, वाफ़िर मिक़्दार में खाना मौजूद होने के बा वुजूद मह़ज़ रिज़ाए इलाही عَزَّوَجَلَّ की ख़ात़िर भूक बरदाश्त करना येह ह़क़ीक़त में कमाल है। चुनान्चे रिवायत है, "सरकारे नामदार, मदीने के ताजदार दो जहां के मालिको मुख़्तार صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم इख़्तियारी त़ौर पर भूक बरदाश्त फ़रमाते थे।" (شُعَبُ الایمان ج ۵ ص ۲۶ حدیث ۵۶۴۰)

लूट ले रह़मत, लगा कुफ़्ले मदीना पेट का
पाएगा जन्नत, लगा कुफ़्ले मदीना पेट का

जन्नत में आक़ा صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَسَلَّم **का पड़ोस : मा'लूम** हुवा इख़्तियारी त़ौर पर भूक बरदाश्त करना हमारे मक्की मदनी आक़ा, **मीठे मीठे मुस्त़फ़ा** صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم की मीठी मीठी सुन्नत है। और सुन्नत की अ़ज़मत

फ़रमाने मुस्तफ़ा صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم : जब तुम रसूलों पर दुरूद पढ़ो तो मुझ पर भी पढ़ो, बेशक मैं तमाम जहानों के रब का रसूल हूं। (جمع الجوامع)

के तो क्या कहने ! ख़ुद साहिबे सुन्नत, सरापा रहमत, बि इज़्ने रब्बुल इ़ज़्ज़त मालिके जन्नत صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم का फ़रमाने जन्नत निशान है : "जिस ने मेरी सुन्नत से महृब्बत की उस ने मुझ से महृब्बत की और जिस ने मुझ से महृब्बत की वोह जन्नत में मेरे साथ होगा।" (مشكوٰة شريف ص٣٠) पारह 26 **सूरतुल अह़क़ाफ़** की आयत नम्बर 20 में **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ का फ़रमाने इ़ब्रत निशान है :

اَذْهَبْتُمْ طَيِّبٰتِكُمْ فِىْ حَيَاتِكُمُ الدُّنْيَا وَاسْتَمْتَعْتُمْ بِهَا فَالْيَوْمَ تُجْزَوْنَ عَذَابَ الْهُوْنِ (پ٢٦ الاحقاف٢٠)

तरजमए कन्ज़ुल ईमान : तुम अपने हिस्से की पाक चीज़ें अपनी दुन्या ही की ज़िन्दगी में फ़ना कर चुके और उन्हें बरत चुके तो आज तुम्हें ज़िल्लत का अ़ज़ाब बदला दिया जाएगा।

सरकार صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَسَلَّم **की भूक शरीफ़ : ख़लीफ़ए आ'ला हज़रत**, मुफ़स्सिरे कुरआन, हज़रते सदरुल अफ़ाज़िल अ़ल्लामा मौलाना मुफ़्ती सय्यिद मुहम्मद नईमुद्दीन मुरादआबादी عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللهِ الْهَادِى **ख़ज़ाइनुल इरफ़ान** में इस आयते मुबारका के तहृत फ़रमाते हैं : "इस आयत में **अल्लाह** तआ़ला ने दुन्यवी लज़्ज़ात इख़्तियार करने पर कुफ़्फ़ार को तौबीख़ (या'नी मलामत) फ़रमाई तो रसूले करीम صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم और हुज़ूर के अस्ह़ाब عَلَيْهِمُ الرِّضْوَان ने लज़्ज़ाते दुन्यविय्या से कनारा कशी इख़्तियार फ़रमाई। बुख़ारी व मुस्लिम की ह़दीसे पाक में है, हुज़ूर सय्यिदे आ़लम

صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم की वफ़ाते ज़ाहिरी तक हुज़ूर के अहले बैते अत़्हार عَلَيْهِمُ الرِّضْوَان ने कभी जव की रोटी भी दो रोज़ बराबर न खाई। येह भी ह़दीस में है कि पूरा पूरा महीना गुज़र जाता था। दौलत सराए अक़्दस (या'नी मकाने आ़लीशान) में (चूल्हे में) आग न जलती थी, चन्द खजूरों और पानी पर गुज़र की जाती थी। ह़ज़रते सय्यिदुना उ़मर फ़ारूक़े आ'ज़म رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰى عَنْه से मरवी है, आप फ़रमाते हैं कि (ऐ लोगो !) मैं चाहता तो तुम से अच्छा खाना खाता और तुम से बेहतर लिबास पहनता लेकिन मैं अपना ऐ़शो राह़त अपनी आख़िरत के लिये बाक़ी रखना चाहता हूं।

(ख़ज़ाइनुल इरफ़ान, स. 907)

खाना तो देखो जव की रोटी, बे छना आटा रोटी भी मोटी
वोह भी शिकम भर रोज़ न खाना صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَسَلَّم
कौनो मकां के आक़ा हो कर, दोनों जहां के दाता हो कर
फ़ाक़े से हैं सरकारे दो² आ़लम صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَسَلَّم

कई कई रातें फ़ाक़ा : ह़ज़रते सय्यिदुना इब्ने अ़ब्बास رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰى عَنْهُمَا फ़रमाते हैं, "शहन्शाहे मदीना صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم कई रातें मुसल्सल फ़ाक़ा फ़रमाते। आप صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم के अहले ख़ाना को नाने शबीना (या'नी रात की रोटी) मुयस्सर न आती और अक्सर जव की रोटी खाते।" (جامع ترمذی ج ۴ ص ۱۶۰ رقم الحدیث ۲۳۶۷)

अहले बैत رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰى عَنْهُم **का खाना : ह़ज़रते** सय्यिदुना अनस رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰى عَنْه फ़रमाते हैं, "सरकारे मदीनए मुनव्वरह, सरदारे मक्कए

मुकर्रमा صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने जव के इवज़ अपनी ज़िरह रहन (या'नी गिरवी) रखी। और मैं **जव** की रोटी और पिघली हुई मुतग़य्यर शुदा चरबी ले कर नबिय्ये रह़मत, शफ़ीए उम्मत, शहन्शाहे नुबुव्वत, ताजदारे रिसालत صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم की ख़िदमते सरापा अ़ज़मत में ह़ाज़िर हुवा और मैं ने आप صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم को येह फ़रमाते सुना, "**मुह़म्मद** (صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم) की आल को न कभी सुब्ह़ को साअ़ भर (या'नी तक़रीबन पौने तीन[3] किलो) खाना मुयस्सर आया और न शाम को।" और मुह़म्मदे मदनी, रसूले अ़रबी, शहन्शाहे ज़मनी صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم की आल नव[9] घरों पर मुश्तमिल थी। (صحیح بخاری ج۳ ص۱۵۸رقم الحدیث ۲۵۰۸)

मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! येह उस शाहे ख़ुश ख़िसाल, मह़बूबे रब्बे ज़ुल जलाल صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم का मुबारक ह़ाल है जिस के हाथों में दोनों जहां के ख़ज़ानों की चाबियां दे दी गईं। मेरे मक्की मदनी आक़ा, मीठे मीठे मुस्तफ़ा صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم का फ़क्र इख़्तियारी था। वरना ख़ुदा عَزَّوَجَلَّ की क़सम ! जिस को जो कुछ मिलता है वोह सरकारे मदीना صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم के सदक़े ही में मिलता है और काएनात की हर हर शै को नूरे मुस्तफ़ा صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم का फ़ैज़ पहुंचता है। चुनान्चे,

एक साह़िबे नज़र की ह़िकायत : एक वलिय्युल्लाह ने रोटी का एक टुकड़ा खाने के लिये पकड़ा फिर उस में रूह़ानिय्यत की नज़र से ग़ौर किया तो उस टुकड़े में एक नूर का तार नज़र आया फिर उस नूरी तार

के ज़रीए़ नज़र जो ऊपर को दौड़ाई तो देखा कि वोह नूरी तार बाइ़से ईजादे आ़लम, नूरे मुजस्सम, शाहे बनी आदम, रसूले मोह़्तशम صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم के नूर की एक शुआ़अ़ से वाबस्ता है। शुरूअ़ में वोह शुआ़अ़ एक नज़र आई। फिर ग़ौर करने पर मा'लूम हुवा कि हुज़ूर सरापा नूर, फ़ैज़ गन्जूर, शाहे ग़यूर, صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم के नूर की शुआ़एं दुन्या की हर ने'मत तक पहुंच रही हैं। (اَلْاِبریز،ص۲۲۹)

क्या नूरे अह़मदी صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَسَلَّم का चमन में ज़ुहूर है
हर गुल में हर शजर में मुह़म्मद صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَسَلَّم का नूर है

पेट पर दो² पथ्थर : ह़ज़रते सय्यिदुना अबू त़ल्ह़ा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ फ़रमाते हैं, "हम ने मक्के मदीने के शहन्शाह صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم की बारगाहे बेकस पनाह में भूक की शिकायत की और अपने पेटों पर एक एक पथ्थर बंधा हुवा दिखाया। सुल्त़ाने बह़रो बर, मदीने के ताजवर, मह़बूबे रब्बे अक्बर صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने अपने शिकमे अत़्हर से कपड़ा उठाया तो उस पर दो² पथ्थर बंधे हुए थे। ह़ज़रते सय्यिदुना इमाम तिरमिज़ी رَحْمَۃُ اللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہ फ़रमाते हैं कि येह पथ्थर भूक की सख़्ती और कमज़ोरी की वज्ह से पेट पर बांधे जाते थे। (شمائل ترمذی ص۱۲۹،رقم الحدیث۳۷۲)

आप صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَسَلَّم भूके रहें और पेट पे पथ्थर बांधें
हम गुलामों को मिलें ख़्वान मदीने वाले صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَسَلَّم

सामाने इ़ज़्ज़त : अबू बुजैर رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ से रिवायत है कि एक दिन ताजदारे रिसालत, शहन्शाहे नुबुव्वत, मह़बूबे रब्बुल इ़ज़्ज़त صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم को भूक की शिद्दत दरपेश हुई तो एक पथ्थर ले कर शिकमे अन्वर पर बांध लिया और फ़रमाया, "ख़बरदार ! कई लोग ऐसे हैं जो दुन्या में उ़म्दा ख़ूराक खाने वाले और आसूदा ज़िन्दगी गुज़ारने वाले हैं मगर क़ियामत के रोज़ भूके नंगे होंगे। ख़बरदार ! कई लोग ऐसे हैं जो अपने आप को मुअ़ज़्ज़ज़ (या'नी इ़ज़्ज़त वाला) बनाने की कोशिश में हैं ह़ालां कि वोह ज़िल्लत का सामान कर रहे हैं। ख़बरदार ! कई लोग ऐसे हैं जो अपने आप को ज़लील करते नज़र आते हैं मगर येह उन के लिये सामाने इ़ज़्ज़त है।"

(المَواهِبُ اللّدُنيه ج ٢ ص ١٢٣)

दीवानगी भरे जज़्बात : प्यारे प्यारे इस्लामी भाइयो ! नबिय्ये रह़मत, ताजदारे रिसालत, صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم की शानो अ़ज़मत पर हमारी जान क़ुरबान ! आप صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم को भूक से वालिहाना मह़ब्बत थी और आह ! एक हम जैसे इ़श्क़े रसूल صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم का दा'वा करने वाले भी हैं कि अगर खाना तय्यार होने में ज़रा ताख़ीर हो जाए या खाना हमारे नफ़्से लज़्ज़त शनास को न भाए तो घर वालों पर बिगड़ जाएं। **काश ! हमें भी क़स्दन भूका रहने और भूक की शिद्दत के बाइस ब निय्यते सुन्नत कभी कभी अपने पेट पर पथ्थर बांधने की**

सआ़दत भी नसीब हो जाती । आह ! काश ! सद हज़ार काश ! सगे मदीना इन्सान के बजाए कूचए जानां صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم का कोई पथ्थर होता और जाने जानां, सुल्ताने कौनो मकां, रह़मते आ़लमिय्यां صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم वहां गुज़र फ़रमाते और...... और...... ज़हे क़िस्मत ! कभी कभी मुबारक क़दमों के मुक़द्दस तल्वों को चूमने की सआ़दत पाता। मुझ में इतनी जुर्अत तो नहीं कि शिकमे अत़्हर पर बांधे जाने की तमन्ना को परवान चढ़ाऊं। मगर काश ! काश ! सद करोड़ काश ! कभी ऐसा भी हो जाता कि "बेताब भूक" को ह़ाज़िरी की इजाज़त दे कर मुझ ग़रीब से मुत्तसिल किसी बा मुक़द्दर पथ्थर को शिकमे अत़्हर की ख़ास कुर्बत इनायत फ़रमाने के क़स्द से मेरे मदनी मह़बूब صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم उस की जानिब अपना दस्ते अन्वर बढ़ाते और ज़िम्नन मुझे **दस्त बोसी** की ख़ैरात से नवाज़ देते...... आह ! आह ! आह !

मैं कहां और कहां उन का वुजूदे मस्ऊ़द

मेरी औक़ात ही क्या उन पे हों सो लाख दुरूद

ह़ज़रते मूसा عَلَيْهِ السَّلَام की भूक शरीफ़ : **ह़ज़रते** सय्यिदुना मूसा कलीमुल्लाह عَلٰى نَبِيِّنَا وَعَلَيْهِ الصَّلٰوةُ وَالسَّلَام जब मद्यन के कूंएं पर तशरीफ़ लाए तो कमज़ोरी के बाइस तरकारी की सब्ज़ी आप عَلَيْهِ السَّلَام के पेट मुबारक

फ़रमाने मुस्तफ़ा صَلَّى اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم : जिस के पास मेरा ज़िक्र हुवा और उस ने मुझ पर दुरूदे पाक न पढ़ा तहक़ीक़ वोह बद बख़्त हो गया। (ابن سنی)

के बाहर से नज़र आती थी। (शमाइले रसूल मुतर्जम, स. 121) और जिन चालीस[40] दिनों में रब्बुल अनाम عَزَّوَجَلَّ से हम कलाम होने का शरफ़ पाया, आप عَلٰی نَبِیِّنَا وَعَلَیْہِ الصَّلٰوۃُ وَالسَّلَام ने कुछ नहीं खाया। (اِحیاءُ العُلوم ج۳ ص۹۱)

हज़रते दावूद عَلَیْہِ السَّلَام की भूक शरीफ़ : हज़रते सय्यिदुना क़ाज़ी इयाज़ رَحْمَۃُ اللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہ फ़रमाते हैं, "हज़रते सय्यिदुना दावूद عَلٰی نَبِیِّنَا وَعَلَیْہِ الصَّلٰوۃُ وَالسَّلَام का लिबास ऊनी और बिछोना बालों से बुना हुवा था। जव शरीफ़ की रोटी नमक के साथ तनावुल फ़रमाते।"

(शमाइले रसूल मुतर्जम, स. 121)

हज़रते ईसा عَلَیْہِ السَّلَام की भूक शरीफ़ : हज़रते सय्यिदुना ईसा रूहुल्लाह عَلٰی نَبِیِّنَا وَعَلَیْہِ الصَّلٰوۃُ وَالسَّلَام ने अपने लिये कोई घर नहीं बनाया, जहां नींद क़दम बोसी करती आराम फ़रमा लेते। बालों का लिबास ज़ैबे बदन करते और **दरख़्त के पत्ते** तनावुल फ़रमाते।" (ऐज़न)

हज़रते यह्या عَلَیْہِ السَّلَام की भूक शरीफ़ : हज़रते सय्यिदुना यह्या عَلٰی نَبِیِّنَا وَعَلَیْہِ الصَّلٰوۃُ وَالسَّلَام का खाना तर घास था। ख़ौफ़े ख़ुदा عَزَّوَجَلَّ से इस क़दर रोते कि मुबारक रुख़्सारों पर निशान पड़ गए थे।

(ऐज़न)

फ़ाक़ए अम्बिया के सदक़े में
लज़्ज़ते नफ़्स से बचा या रब عَزَّوَجَلَّ

आक़ा صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَسَلَّم की भूक याद कर के बीबी आ़इशा رَضِىَ اللّٰهُ تَعَالٰى عَنْهَا का रोना : ह़ज़रते सय्यिदुना मसरूक़ رَضِىَ اللّٰهُ تَعَالٰى عَنْهُ फ़रमाते हैं, "मैं उम्मुल मुअमिनीन ह़ज़रते सय्यिदतुना आ़इशा सिद्दीक़ा رَضِىَ اللّٰهُ تَعَالٰى عَنْهَا की ख़िदमत में ह़ाज़िर हुवा, तो उन्हों ने मेरे लिये खाना मंगवाया और फ़रमाने लगीं, "मैं जब कभी पेट भर कर खा लेती हूं तो मेरा जी रोने को चाहता है। **फिर मैं रोने लगती हूं।**" मैं ने अ़र्ज़ किया, "क्यूं ?" फ़रमाया, "मुझे मेरे सरताज, साह़िबे मे'राज صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم की वोह ह़ालत याद आती है, जिस पर हम से मुफ़ारक़त (या'नी जुदाई) फ़रमाई कि कभी भी दिन में दो[2] मर्तबा रोटी या गोश्त से पेट भरने की नौबत न आई।" (جامِع تِرمِذی ج٤ ص١٥٩ رقم الحديث٢٣٦٣)

आ़इशा सिद्दीक़ा رَضِىَ اللّٰهُ تَعَالٰى عَنْهَا रोती थीं नबी صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَسَلَّم की भूक पर

हाए ! भरते हैं ग़िज़ाएं हम शिकम में ठूंस कर

उ़श्शाक़ ग़ौर करें : प्यारे प्यारे इस्लामी भाइयो ! एक त़रफ़ उम्मुल मुअमिनीन ह़ज़रते सय्यिदतुना आ़इशा सिद्दीक़ा رَضِىَ اللّٰهُ تَعَالٰى عَنْهَا का इ़श्क़े रसूल صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم है कि अगर कभी पेट भर कर खा भी लें तो ग़मे मुस्त़फ़ा صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم में रोएं और आह ! दूसरी त़रफ़ हम गुनहगारों का ह़ाल है कि गले तक ख़ूब डट कर खा लें और पेट मुकम्मल भर जाए मगर दिल न भरे। याद रहे ! जब भी रिवायात में

अहलुल्लाह के पेट भर कर खाने का तज़्किरा पाएं तो इस से एक तिहाई पेट का खाना ही मुराद लें, हमारे पेट भर कर खाने और उन के पेट भर कर खाने में फ़र्क़ होता है।

کارِ پاکاں را قِیاس از خود مگیر

(या'नी पाक हस्तियों के कामों को अपने जैसे काम मत समझो)

हमारी **इस्लामी बहनों** को भी उम्मुल मुअमिनीन ह़ज़रते सय्यिदतुना आ़इशा सिद्दीक़ा رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْهَا के ग़मे मुस्तफ़ा صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم से दर्स ह़ासिल करना चाहिये। इस्लामी बहनें दा'वते इस्लामी के मदनी माह़ोल से वाबस्ता हो जाएंगी और अपने यहां होने वाले हफ़्तावार **दा'वते इस्लामी** के इज्तिमाअ़ में शिर्कत फ़रमाती रहेंगी और **मदनी इन्आ़मात** पर अ़मल कर के **फ़िक्रे मदीना** करते हुए रोज़ाना कार्ड पुर कर के अपनी ज़िम्मेदार इस्लामी बहन को जम्अ़ करवाती रहेंगी तो اِنْ شَآءَاللّٰه عَزَّوَجَلَّ बेड़ा पार होगा। एक दा'वते इस्लामी वाली इस्लामी बहन की रिक़्क़त अंगेज़ ह़िकायत मुलाह़ज़ा फ़रमाएं। चुनान्चे

इस्लामी बहन की ह़िकायत : एक इस्लामी भाई का ह़ल्फ़िय्या बयान है कि मेरी बहन **बिन्ते अ़ब्दुल ग़फ़्फ़ार अ़त्तारिय्या** को केन्सर के मूज़ी मरज़ ने आ लिया। आहिस्ता आहिस्ता ह़ालत बिगड़ती गई।

डॉकटरों के मश्वरे पर ऑपरेशन करवाया, तबीअत कुछ संभली मगर कमो बेश एक साल बा'द मरज़ ने दोबारा ज़ोर पकड़ा तो अस्पताल में दाख़िल कर दिया गया। एक हफ़्ता अस्पताल में रहीं मगर हालत मज़ीद अब्तर होती चली गई। अचानक उन्हों ने बा आवाज़ कलिमए तय्यिबा का विर्द शुरूअ कर दिया। कभी कभी दरमियान में اَلصَّلٰوۃُ وَالسَّلَامُ عَلَيْكَ يَا رَسُوْلَ الله وَعَلٰى اٰلِكَ وَاَصْحٰبِكَ يَا حَبِيْبَ الله भी पढ़तीं। बुलन्द आवाज़ से لَآ اِلٰهَ اِلَّا اللهُ مُحَمَّدٌ رَّسُوْلُ الله صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم का विर्द करने से पूरा कमरा गूंज उठता था, अजीब ईमान अफ़रोज़ मन्ज़र था, जो आता मिज़ाज पुर्सी करने के बजाए उन के साथ **ज़िक्रुल्लाह** शुरूअ कर देता। डॉकटर्ज़ और अस्पताल का अमला हैरत ज़दा था कि येह **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ की कोई मक़्बूल बन्दी मा'लूम होती है वरना हम ने तो आज तक मरीज़ की चीख़ें ही सुनी हैं और येह मरीज़ा शिक्वा करने के बजाए मुसल्सल **ज़िक्रुल्लाह** में मसरूफ़ है। तक़रीबन 12 घन्टे तक येही कैफ़िय्यत रही, अज़ाने मग़रिब के वक़्त इसी तरह बुलन्द आवाज़ से कलिमए तय्यिबा का विर्द करते करते उन की रूह क़फ़से उन्सुरी से परवाज़ कर गई। **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ **की उन पर रहमत हो और उन के सदक़े हमारी मग़्फ़िरत हो।** اٰمِين بِجاهِ النَّبِيِّ الْاَمين صَلَّى اللهُ تعالٰى عليه واٰله وسلَّم

फ़रमाने मुस्तफ़ा صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم : जिस के पास मेरा ज़िक्र हुवा और उस ने मुझ पर दुरूदे पाक न पढ़ा उस ने जन्नत का रास्ता छोड़ दिया। (طبرانی)

اَلْحَمْدُ لِلّٰه عَزَّوَجَلَّ दा'वते इस्लामी का मदनी माहोल मर्हूमा को रास आ गया उन का اِنْ شَآءَاللّٰه عَزَّوَجَلَّ काम बन गया। खुदा की क़सम वोह खुश नसीब है जो इस दुन्या से कलिमा पढ़ते हुए रुख़्सत हो। नबिय्ये रहमत, शफ़ीए उम्मत, मालिके जन्नत, महबूबे रब्बुल इज़्ज़त صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم का फ़रमाने जन्नत निशान है, "जिस का आख़िरी कलाम, لَآ اِلٰهَ اِلَّا اللّٰه (या'नी कलिमए तृय्यिबा) हो वोह दाख़िले जन्नत होगा।"

(ابوداؤد ج۳ص۱۳۲رقم الحدیث۳۱۱۶)

दो[2] दिन में एक बार खाने की पसन्द का इज़्हार : हमारे मीठे मीठे आक़ा, मदीने वाले मुस्तफ़ा صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم की **भूक शरीफ़ इख़्तियारी** थी, चुनान्चे हुज़ूरे अकरम, नूरे मुजस्सम, शाहे बनी आदम صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने इर्शाद फ़रमाया, "मेरे रब عَزَّوَجَلَّ ने मेरे लिये येह पेश फ़रमाया कि मेरे वासिते मक्कए मुकर्रमा के पहाड़ों को सोने का बना दिया जाए, मगर मैं ने अ़र्ज़ किया, **या अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ ! मुझे तो येह पसन्द है कि अगर एक दिन खाऊं, तो दूसरे दिन भूका रहूं, ताकि जब भूका रहूं तो तेरी तरफ़ गिर्या व ज़ारी करूं और तुझे याद करूं और जब खाऊं तो तेरा शुक्र व ह़म्द करूं।

(جامع ترمذی ج۴ص۱۵۵رقم الحدیث۲۳۵۴)

सलाम उन पर शिकम भर कर कभी खाना न खाते थे
सलाम उन पर ग़मे उम्मत में जो आंसू बहाते थे

दिन में एक बार खाना : रोज़ाना एक मर्तबा **खाना सुन्नत** है, चुनान्चे **ह़ज़रते** सय्यिदुना अबू सईद खुदरी رَضِىَ اللهُ تَعَالٰى عَنْهُ से मरवी है कि

फ़रमाने मुस्तफ़ा صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم : मुझ पर दुरूदे पाक की कसरत करो बेशक तुम्हारा मुझ पर दुरूदे पाक पढ़ना तुम्हारे लिये पाकीज़गी का बाइस है। (ابو یعلی)

रह़मते आ़लम, नूरे मुजस्सम, शाहे बनी आदम صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم जब सुब्ह़ खाना खा लेते तो शाम को न खाते और अगर शाम को तनावुल फ़रमा लेते तो सुब्ह़ न खाते। (کنز العُمّال ج۷ص۳۹رقم الحدیث۱۸۱۷۳)

दिन में तीन[3] बार खाना कैसा ? : प्यारे प्यारे इस्लामी भाइयो ! हमारे यहां उ़मूमन दिन में तीन[3] बार खाने का मा'मूल है। अगर्चे येह गुनाह नहीं मगर सुन्नत भी नहीं, खाने पीने के शौक़ ने येह अन्दाज़ दिया है। येह बात ज़ेहन नशीन फ़रमा लीजिये कि जो जितना ज़ियादा खाएगा क़ियामत में हि़साब उस के ज़िम्मे उतना ही ज़ियादा आएगा। रोज़ाना एक बार खाना हमारे प्यारे आक़ा صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم की सुन्नते आ़दिय्या है। اَلْحَمْدُ لِلّٰہ عَزَّوَجَلَّ इस सुन्नत पर अ़मल करते हुए कई बुज़ुर्गाने दीन رَحِمَہُمُ اللّٰہُ تَعَالٰی का दिन में सिर्फ़ एक बार खाने का मा'मूल रहा है। ताहम अगर कोई शख़्स इस सुन्नत पर अ़मल न करे तो उस को मलामत नहीं की जाएगी। वोह **आ़शिक़ाने रसूल** जो सुन्नतों का बहुत दर्द रखते और क़दम क़दम पर सुन्नत की बात करते हैं उन के लिये लम्ह़ए फ़िक्रिय्या है। जो दिन में चार[4] या पांच[5] बार खाते हैं उन के लिये ज़रूर मक़ामे अफ़्सोस है। ऐसे लोगों का दुन्यवी तौ़र पर कम अज़ कम येह नुक़्सान तो ज़रूर होता है कि वोह अक्सर पेट की ख़राबी के शाकी रहते हैं, उम्मुल मुअमिनीन ह़ज़रते सय्यिदतुना आइशा सिद्दीक़ा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہَا फ़रमाती हैं, "सुल्ताने मदीना صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم के विसाले ज़ाहिरी के बा'द सब से पहली

बिद्अ़त, पेट भर कर खाने की पैदा हुई जब लोगों के पेट भर जाते हैं तो उन के नफ़्स दुन्या की त़रफ़ सरकश हो जाते हैं।" (इस क़ौल में बिद्अ़ते मुबाह़ा या'नी जाइज़ बिद्अ़त मुराद है) (قُوتُ القُلوب ج٢ص ٣٢٧)

वस्वसा : एक त़रफ़ तो एक बार खाना सुन्नत है और दूसरी त़रफ़ सह़री और इफ़्त़ार भी सुन्नत है जो कि दो[2] वक़्त के खाने पर मुश्तमिल है। इस का क्या ह़ल ?

वस्वसे का इलाज : बेशक सह़री और इफ़्त़ार सुन्नत है। "इफ़्त़ार" के लुग़वी मा'ना हैं : "रोज़ा खोलना" लिहाज़ा अगर एक चना भी निगल गया तो इफ़्त़ार हो गया, मगर इन दोनों अवक़ात में मुरव्वजा खाना या'नी पेट भर कर खाना ही सुन्नत नहीं एकआध खजूर या पानी के घूंट के ज़रीए़ भी सह़री और इफ़्त़ार कर सक्ते हैं जिस ग़िज़ा को उ़र्फ़न "खाना" कहते हैं या'नी रोटी सालन वग़ैरा, तो अगर इस खाने को कोई शख़्स दिन में एक बार खा ले और उसी रोज़ मज़ीद तीन[3] बार एक एक खजूर भी खाए या एक एक कप चाय पी ले उस के बारे में यक़ीनन कोई भी येह नहीं कहेगा कि इस ने चार बार खाना खाया बल्कि येही कहा जाएगा कि इस ने सिर्फ़ एक बार खाना खाया। लिहाज़ा इफ़्त़ार में एकआध खजूर या पानी पर गुज़ारा कर के और सह़री में मुरव्वजा खाना खा कर सह़री और इफ़्त़ारी की सुन्नतों की अदाएगी के साथ साथ दिन में एक बार खाने की सुन्नत को भी

निभाया जा सकता है "इफ़्तार" में लोग डट कर "फल पकोड़े" खा सकें इस के लिये आज कल माहे **रमज़ानुल मुबारक** में उ़मूमन मसाजिद में मग़रिब की जमाअ़त ताख़ीर से होती है तो अगर किसी ने इफ़्तार में कई खजूरें, फल, पकौड़े वग़ैरा खा लिये तो येह एक वक़्त का खाना हो गया कि खाना सिर्फ़ क़ोरमा रोटी और पुलाव बिरयानी को ही नहीं कहते ! अब अगर सह़री में भी खाना खाया तो येह दो[2] वक़्त खाना खाया कहलाएगा। मेरे आक़ा आ'ला ह़ज़रत, इमामे अहले सुन्नत رَحْمَۃُ اللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہ के सह़री व इफ़्तार का अन्दाज़ मुलाह़ज़ा हो। चुनान्चे

रोज़े में एक वक़्त खाना : ह़ज़रते मौलाना मुह़म्मद ह़ुसैन साह़िब मेरठी رَحْمَۃُ اللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہ का बयान है कि मैं ने **रमज़ानुल मुबारक** की 20 तारीख़ से ए'तिकाफ़ किया। आ'ला ह़ज़रत رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ मस्जिद में तशरीफ़ लाए तो फ़रमाया, "जी तो चाहता है कि मैं भी ए'तिकाफ़ करूं मगर (दीनी मशाग़िल के बाइ़स) फ़ुरसत नहीं मिलती" आख़िर **26 रमज़ानुल मुबारक** को फ़रमाया, "आज से मैं भी मो'तकिफ़ ही हो जाऊं।" मौलाना मुह़म्मद ह़ुसैन मेरठी رَحْمَۃُ اللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہ फ़रमाते हैं, "शाम को (खजूर वग़ैरा से रोज़ा तो इफ़्तार फ़रमा लेते मगर) आ'ला ह़ज़रत رَحْمَۃُ اللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہ को खाना खाते, मैं ने किसी दिन नहीं देखा। सह़र को सिर्फ़ एक छोटे से पियाले में फ़ीरीनी और एक पियाली में चटनी आया

करती थी, वोह नोश फ़रमाया करते।" एक दिन मैं ने दरयाफ़्त किया, "हुज़ूर ! फ़ीरीनी और चटनी का क्या जोड़ ?" फ़रमाया, "नमक से खाना शुरू करना और नमक ही पर ख़त्म करना सुन्नत है, इस लिये चटनी आती है।" (ह़याते आ'ला ह़ज़रत, जि. 1 स. 41)

سُبْحٰنَ اللّٰه عَزَّوَجَلَّ ! पैकरे सुन्नत, सय्यिदी आ'ला ह़ज़रत رَضِىَ اللّٰهُ تَعَالٰى عَنْهُ मीठी फ़ीरीनी से क़ब्ल और बा'द इस लिये नमकीन चटनी इस्ति'माल फ़रमाते थे कि खाने के अव्वल आख़िर नमक इस्ति'माल करने की सुन्नत अदा हो जाए। खाने के अव्वल आख़िर नमक (या नमकीन) खाने से اَلْحَمْدُ لِلّٰه عَزَّوَجَلَّ सत्तर[70] बीमारियां दूर होती हैं।

या इलाही عَزَّوَجَلَّ *! मुझ को भी कर भूक की ने'मत अ़ता*
अज़ तुफ़ैले सय्यिदी व मुर्शिदी अह़मद रज़ा رَحْمَةُ اللّٰهِ تَعَالٰى عَلَيْه

रोज़े में एक बार खाना : मुन्तख़ब अह़ादीस का मज्मूआ़ "**रियाज़ुस्सालिह़ीन**" के मुअल्लिफ़ ह़ज़रते सय्यिदुना इमाम मुह़िय्युद्दीन अबू ज़करिय्या यह़्या शरफ़ुन्नववी عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللّٰهِ الْقَوِى साइमुद्दहर (या'नी हमेशा रोज़ा रखने वाले थे) दिन में सिर्फ़ एक बार या'नी बा'द नमाज़े इशा खाना तनावुल फ़रमाते और सिर्फ़ पानी पी कर सह़री करते थे और रात को सिर्फ़ चन्द लम्ह़े आराम फ़रमाते।

(पेश लफ़्ज़ रियाज़ुस्सालिह़ीन मुतर्जम, स. 12)

ख़ूब रोज़े रखिये : प्यारे प्यारे इस्लामी भाइयो ! अगर दीनो दुन्या के कामों में रुकावट न पड़ती हो, वालिदैन वग़ैरा भी नाराज़ न

होते हों, तो खू़ब नफ़्ल रोज़े रखने चाहिएं कि अक्सर बुज़ुर्गाने दीन رَحِمَهُمُ اللّٰهُ تَعَالٰی ऐसा करते रहे हैं। एक एक लम्हा اِنْ شَآءَ اللّٰه عَزَّوَجَلَّ इबादत में गुज़रेगा और दिन भर खाने पीने से भी बचे रहेंगे और **पेट का कुफ़्ले मदीना** लगाने में भी सुहूलत रहेगी। हां ! मगर सह़री व इफ़्त़ार में कम खाने की तरकीब रखिये। अपने अन्दर नफ़्ल रोज़ों का शौक़ पैदा करने के लिये **फ़ैज़ाने रमज़ान** से "नफ़्ल रोज़ों का बयान" पढ़िये या सुनिये क्यूं कि गुनाहों से बचने के लिये उन के अ़ज़ाब और नेक आ'माल का ज़ेह्न बनाने के लिये उन के फ़ज़ाइल जानना इन्तिहाई मुफ़ीद होता है। सरे दस्त रोज़े की एक फ़ज़ीलत सुनिये और झूमिये, चुनान्चे

ज़मीन भर सोना : अल्लाह عَزَّوَجَلَّ के मह़बूब, दानाए गुयूब, मुनज़्ज़हुन अ़निल उ़यूब صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰی عَلَیْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم का फ़रमाने रग़बत निशान है, "अगर किसी ने एक दिन नफ़्ल रोज़ा रखा और ज़मीन भर सोना उसे दिया जाए जब भी उस का सवाब पूरा न होगा, उस का सवाब तो क़ियामत के दिन ही मिलेगा।" (مسند ابی یعلٰی ج۵ ص۳۵۳)

सोने का दस्तर ख़्वान : ह़ज़रते सय्यिदुना अबुद्दरदा رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْهُ का क़ौल है, "बरोज़े क़ियामत रोज़ादारों के लिये अ़र्श के नीचे **सोने के दस्तर ख़्वान**" बिछाए जाएंगे। जिन में मोती और जवाहिरात जड़े होंगे,

फ़रमाने मुस्तफ़ा صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم : मुझ पर दुरूद शरीफ़ पढ़ो, अल्लाह عَزَّوَجَلَّ तुम पर रहमत भेजेगा। (ابن عدی)

उन पर जन्नती फल, जन्नती मश्रूबात और अन्वाओ अक्साम के खाने चुने हुए होंगे, रोज़ादार खाएंगे और मज़े उड़ाएंगे जब कि दूसरे लोग सख़्त हिसाबो किताब से दो चार होंगे। (البدور السافرة ص ٢٦٠)

फ़ज़्ले रब से राहतों का हश्र में सामान है
रोज़ादारों के लिये सोने का दस्तर ख़्वान है

दा'वते इस्लामी के सुन्नतों की तरबियत के **मदनी क़ाफ़िलों** में सफ़र और रोज़ाना **फ़िक्रे मदीना** के ज़रीए मदनी इन्आमात[1] का रिसाला पुर कर के हर मदनी माह की पहली तारीख़ अपने यहां के ज़िम्मेदार को जम्अ करवाने का मा'मूल बना लीजिये। اِنْ شَآءَ اللہ عَزَّوَجَلَّ इस की बरकत से पाबन्दे सुन्नत बनने, गुनाहों से नफ़रत करने और **ईमान की हिफ़ाज़त** के लिये कुढ़ने का ज़ेहन बनेगा।

रोज़ाना तीन[3] बार खाने वाले की मज़म्मत : हज़रते सय्यिदुना सहल बिन अब्दुल्लाह तुस्तरी رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰى عَلَيْه से किसी ने इस्तिफ़्सार किया, "दिन में एक बार खाना कैसा है ?" फ़रमाया, "येह सिद्दीक़ीन رَحِمَهُمُ اللهُ تَعَالٰى (जो औलियाए किराम की सब से अफ़्ज़ल क़िस्म है उन) का खाना है।" अर्ज़ किया, "दिन में दो[2] बार खाना कैसा है ?" फ़रमाया, "येह मुअमिनीन का खाना है," अर्ज़ किया, "अगर कोई दिन में तीन[3]

1 : मदनी इन्आमात का रिसाला मक्तबतुल मदीना से मिलता है। इस में दिये हुए सुवालात के जवाबात लिखने की आदत बनाना इस्लाहे आ'माल का बेहतरीन ज़रीआ है।

बार खाए तो ?" फ़रमाया, "ऐसे शख़्स के घर वालों को चाहिये कि उस को थान (या'नी मवेशियों के त़वेले) में रखें।" (जहां जानवरों की त़रह़ हर वक़्त खाता पीता रहे !) (رسالۃ القشیریہ ص ۱۴۲)

प्यारे प्यारे इस्लामी भाइयो ! सय्यिदुना सह्ल बिन अ़ब्दुल्लाह तुस्तरी رَحْمَۃُ اللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہ औलियाए सिद्दीक़ीन में से थे। खुद बीस20 बीस20 दिन तक खाना नहीं खाते थे मगर आ़म मुसल्मानों के लिये दो2 वक़्त के खाने को उन्हों ने मा'यूब नहीं रखा क्यूं कि सिर्फ़ एक बार खा कर सारा दिन गुज़ारना, काम धन्दा और मेह़नतो मशक़्क़त करना हर एक के बस का रोग नहीं। अलबत्ता दिन में तीन3 बार खाना उन को सख़्त ना पसन्द था जैसा कि उन के इर्शाद से ज़ाहिर है।

मुझ को भूको प्यास सहने की ख़ुदा तौफ़ीक़ दे
ग़म तेरी यादों में रहने की सदा तौफ़ीक़ दे
عَزَّوَجَلَّ

खजूर और पानी पर गुज़ारा : ह़ज़रते सय्यिदुना उ़र्वह رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ उम्मुल मुअमिनीन ह़ज़रते सय्यिदतुना आ़इशा सिद्दीक़ा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہَا से रिवायत करते हैं कि वोह फ़रमाया करती थीं, "ऐ भान्जे ! हम एक चांद के बा'द दूसरा चांद देखते हैं, दो2 माह में तीन3 चांद देखते और हुज़ूर सरापा नूर, शाहे ग़यूर صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰی عَلَیْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم के घरों में आग नहीं जलती थी। उ़र्वह رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ फ़रमाते हैं, "मैं ने अ़र्ज़ की, "ऐ ख़ालाजान ! आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہَا की गुज़र अवक़ात कैसे

होती थी ?" फ़रमाया, "हमारी गुज़र अवक़ात दो[2] सियाह चीज़ों, या'नी खजूर और पानी पर होती थी। सिवाए इस के कि कुछ अन्सार عَلَيْهِمُ الرِّضْوَان सरकारे नामदार صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم के पडोसी थे। उन्हों ने कुछ दूध वाली ऊंटनियां (या बकरियां) सरकारे मदीना صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم के लिये मख़्सूस कर रखी थीं, और वोह उन का दूध सरकारे मदीना صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم की ख़िदमत में भिजवा दिया करते थे। और सरकारे दो[2] आ़लम صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم वोह दूध हमें पिला दिया करते थे।

(صحیح بخاری ج ۷ ص ۲۳۲ رقم الحدیث ۶۴۵۹)

सारी रात की इबादत से अफ़्ज़ल : हुज्जतुल इस्लाम ह़ज़रते सय्यिदुना इमाम मुह़म्मद ग़ज़ाली عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللهِ الْوَالِي नक़्ल करते हैं, "ह़ज़रते सय्यिदुना अबू सुलैमान عَلَيْهِ رَحْمَةُ الْمَنَّان फ़रमाते हैं, "मुझे रात के खाने में से एक लुक़्मा कम कर देना सारी रात की इबादत से ज़ियादा अ़ज़ीज़ है।" मज़ीद फ़रमाते हैं, "भूक **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ के ख़ज़ानों में से एक ख़ज़ाना है और येह सिर्फ़ अपने पसन्दीदा बन्दों ही को अ़ता फ़रमाता है।"

(اِحیاءُ العُلُوم ج ۳ ص ۹۰)

दुआ़ है कुछ न कुछ लुक़्मे ख़ुदा عَزَّوَجَلَّ *के वासित़े छोड़ूं*

रिज़ाए ह़क़ की ख़ात़िर लज़्ज़ते दुन्या से मुंह मोड़ूं

प्यारे प्यारे इस्लामी भाइयो ! काश ! हमें भी इख़्तियारी भूक या'नी क़स्दन कम खाने का मदनी ख़ज़ीना और **पेट का क़ुफ़्ले मदीना** नसीब हो जाता ! سُبْحٰنَ اللّٰه ! **अल्लाह** वालों के नज़्दीक भूक रह़मत का ख़ज़ाना है और येह ख़ज़ाना सिर्फ़ नेक बन्दों को नसीब होता है और जिस को नसीब होता है वोह इस ख़ज़ाने के शुक्राने में क्या करता है। वोह इस ह़िकायत से समझिये, चुनान्चे,

भूक का ख़ज़ाना और उस का शुक्राना : ह़ज़रते सय्यिदुना इब्राहीम बिन अद्हम عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللّٰهِ الْمُعَظَّم बल्ख़ के बादशाह थे, मगर आप رَحْمَةُ اللّٰهِ تَعَالٰى عَلَيْه ने बादशाही तर्क कर के फ़क़ीरी इख़्तियार कर ली थी। एक रोज़ आप رَحْمَةُ اللّٰهِ تَعَالٰى عَلَيْه को खाने के लिये कुछ न मिला, आप رَحْمَةُ اللّٰهِ تَعَالٰى عَلَيْه ने इस के शुक्राने में चार सो रक्अ़त नफ़्ल अदा किये दूसरे रोज़ भी खाना न पाया तो इसी त़रह़ चार सो रक्अ़त नमाज़े शुक्राना अदा की, सात रोज़ तक येही हुवा, कमज़ोरी बढ़ी तो बारगाहे ख़ुदावन्दी عَزَّوَجَلَّ में अ़र्ज़ किया, "**या रब्बल इ़ज़्ज़त** ! तेरी इ़बादत पर क़ुव्वत ह़ासिल करने के लिये कुछ खाने के लिये इनायत हो जाए तो करम होगा।" उसी वक़्त एक नौ जवान ने ह़ाज़िर हो कर अ़र्ज़ किया, "हुज़ूर ! हमारे घर आप की दा'वत है, क़दम रन्जा फ़रमा दीजिये।" आप رَحْمَةُ اللّٰهِ تَعَالٰى عَلَيْه उस के हमराह तशरीफ़ ले गए। जब उस नौ जवान ने आप رَحْمَةُ اللّٰهِ تَعَالٰى عَلَيْه को बग़ौर देखा तो बे साख़्ता पुकार उठा, "हुज़ूर ! मैं आप رَحْمَةُ اللّٰهِ تَعَالٰى عَلَيْه का भागा हुवा ग़ुलाम हूं

फ़रमाने मुस्तफ़ा صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم : बरोज़े क़ियामत लोगों में से मेरे क़रीब तर वोह होगा जिस ने दुन्या में मुझ पर ज़ियादा दुरूदे पाक पढ़े होंगे। (ترمذی)

और जो कुछ मेरे पास है वोह सब आप رَحْمَةُ اللّٰهِ تَعَالٰى عَلَيْه ही का है।" आप رَحْمَةُ اللّٰهِ تَعَالٰى عَلَيْه ने फ़रमाया, "मैं ने तुम को आज़ाद किया और जो कुछ तुम्हारे पास है वोह सब तुम को बख़्शा। उस की इजाज़त ले कर आप رَحْمَةُ اللّٰهِ تَعَالٰى عَلَيْه वहां से रुख़्सत हुए और बारगाहे इलाही عَزَّوَجَلَّ में अ़र्ज़ की, "**या अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ ! मैं अब तेरे सिवा किसी को न चाहूंगा कि मैं ने तो तुझ से सिर्फ़ रोटी का टुकड़ा मांगा था मगर तूने इतनी सारी दुन्या मेरे सामने कर दी ! (تذکرۃ الاولیاء ص ۹۶)

कस्रते दौलत की आफ़त से बचाना या ख़ुदा عَزَّوَجَلَّ
दे मुझे इ़श्क़े मुह़म्मद صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَسَلَّم *का ख़ज़ाना या ख़ुदा* عَزَّوَجَلَّ

एक ख़राब लुक़्मे की तबाह कारियां : जो हाथ में आया बे सोचे समझे पेट में उंडेलते, धकेलते रहना तश्वीश नाक है। चुनान्चे ह़ज़रते सय्यिदुना मा'रूफ़ करख़ी رَحْمَةُ اللّٰهِ تَعَالٰى عَلَيْه फ़रमाते हैं, "सिर्फ़ **एक ख़राब लुक़्मा** बा'ज़ अवक़ात दिल की कैफ़िय्यत को इस क़दर तबाह कर देता है कि फिर उ़म्र भर दिल राहे रास्त पर नहीं आता और बा'ज़ अवक़ात यूं भी होता है कि वोही ख़राब लुक़्मा साल भर तक तहज्जुद की ने'मत से आदमी को मह़रूम कर देता है। नीज़ बा'ज़ अवक़ात एक बार बद निगाही करने वाला अ़र्से तक तिलावते कुरआन की सआ़दत से मह़रूम कर दिया जाता है। (منہاج العابدین ص ۱۵۷)

صَلُّوا عَلَى الْحَبِيب! صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلٰى مُحَمَّد

चालीस[40] दिन की नमाज़ें ना मक़्बूल : प्यारे प्यारे इस्लामी भाइयो ! जिन को इबादतो तिलावत में दिल न लगने, ना'त शरीफ़ व दुआ़ में सोज़ो रिक़्क़त न मिलने और हज़ार जतन के बा वुजूद तहज्जुद में आंख न खुलने जैसी शिकायात हैं उन के लिये ह़ज़रते सय्यिदुना मा'रूफ़ करख़ी رَحْمَۃُ اللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہ के बयान में इब्रत का बहुत कुछ सामान है। **रिज़्क़े ह़राम** से हर एक को बचना लाज़िम है वरना तबाही व बरबादी के सिवा कुछ हाथ न आएगा। **अल्लाह** के प्यारे रसूल, रसूले मक़्बूल, सय्यिदह आमिना के गुलशन के महक्ते फूल صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم का इर्शादे इब्रत बुन्याद है, "जिस ने ह़राम का एक लुक़्मा खाया उस की चालीस दिन की नमाज़ें क़बूल नहीं की जाएंगी और उस की दुआ़ चालीस दिन तक ना मक़्बूल होगी।"

(فردوس الاخبار ج۴ ص۲۴۳ رقم الحدیث ۶۲۶۳)

लुक़्मए ह़राम की सज़ा : मन्क़ूल है, "इन्सान के पेट में जब **ह़राम का लुक़्मा** पड़ता है, ज़मीनो आस्मान का हर फ़िरिश्ता उस पर उस वक़्त तक ला'नत करता है जब तक कि वोह ह़राम लुक़्मा उस के पेट में रहे और अगर इसी ह़ालत में मर गया तो उस का ठिकाना जहन्नम होगा। (مُکاشَفَۃُ الْقُلُوب ص ۱۰)

नूर से भरपूर सीना : सरकारे मदीना, सुल्ताने बा क़रीना, क़रारे क़ल्बो सीना, फ़ैज़ गन्जीना صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم का फ़रमाने रग़बत निशान

है, "जब बन्दा अपने खाने में कमी करता है तो उस का जौफ़ (या'नी सीना) नूर से मा'मूर कर दिया जाता है ।" (الجامع الصغیر ص ۳۵ رقم الحدیث ۴۶۹)

चार[4] नसीहतें : हज़रते सय्यिदुना इब्राहीम बिन अद्हम عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللّٰهِ الْاَعْظَم फ़रमाते हैं, "मैं कोहे लुबनान में कई औलियाए किराम رَحِمَهُمُ اللّٰهُ تَعَالٰی की सोह्बत में रहा । उन में से हर एक ने मुझे येही वसिय्यत की, कि जब लोगों में जाओ तो इन चार बातों की नसीहत करना : (1) जो **पेट भर** कर खाएगा उसे इबादत की लज़्ज़त नसीब नहीं होगी । (2) जो **ज़ियादा सोएगा** उस की उम्र में बरकत न होगी । (3) जो सिर्फ़ लोगों की ख़ुश्नूदी चाहे वोह रिज़ाए इलाही عَزَّوَجَلَّ से मायूस हो जाएगा । (4) जो **ग़ीबत** और **फ़ुज़ूल गोई** ज़ियादा करेगा वोह दीने इस्लाम पर नहीं मरेगा । (منہاج العابدین ص ۱۰۷)

बुरे ख़ातिमे का ख़ौफ़ : प्यारे प्यारे इस्लामी भाइयो ! येह ह़क़ीक़त है कि डट कर खाने से पेट भारी हो जाता, आ'ज़ा ढीले पड़ जाते और बदन सुस्त हो जाता है । और इबादात में दिल जम्ई नसीब नहीं होती, इस का तजरिबा रमज़ानुल मुबारक की **तरावीह़** में बहुत सों को होता होगा । क्यूं कि "फ़ूड कल्चर" का दौर है । दसियों क़िस्म की गिज़ाएं ठूंस ठूंस कर पेट में भर दी जाती हैं नतीजतन फिर कबाब समोसे और पकोड़े वग़ैरा पेट में "ग़टर गूं" करते, ठन्डे में ठन्डा पानी, मज़ेदार शरबत और

खट्टी चीज़ों के बे तहाशा इस्ति'माल के सबब खांसने, खन्कारने और डकारने से आज कल मस्जिदें गूंज रही होती हैं! नीज़ अगर किसी एक को खांसी आती है तो ग़ालिबन नफ़्सियाती तौर पर दूसरे को भी आने लगती है और यूं खांसी के शोर में इज़ाफ़ा होता चला जाता है। ह़ज़रते सय्यिदुना इब्राहीम अद्हम عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللهِ الْاَعْظَم का चौथा इर्शाद भी इन्तिहाई तशवीश नाक है कि जो ग़ीबत और फ़ुज़ूल गोई ज़ियादा करेगा वोह दीने इस्लाम पर नहीं मरेगा। आह ! शायद लाखों मुसल्मानों में कोई होगा जो आज ग़ीबत व फ़ुज़ूल गोई से बचने का ज़ेह्न रखता हो। **या अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ ! हमारा ईमान सलामत रख। اٰمِين بِجَاهِ النَّبِيِّ الْاَمين صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عليه واٰله وسلَّم

मुसल्मां है अ़त्तार तेरी अ़त़ा से

हो ईमान पर ख़ातिमा या इलाही

दीन का ग़िलाफ़ : ह़ज़रते सय्यिदुना ह़ामिद लफ़्फ़ाफ़ رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰى عَلَيْه की ख़िदमत में एक शख़्स नसीह़त का त़ालिब हुवा, फ़रमाया, "दीन की हिफ़ाज़त के लिये क़ुरआने पाक की त़रह़ ग़िलाफ़ बनाओ अ़र्ज़ किया, "दीन का ग़िलाफ़ क्या है?" फ़रमाया, "ज़रूरत से ज़ियादा बातें करने से बचना, लोगों से बे ज़रूरत मेलजोल न रखना और ज़रूरत से **ज़ियादा न खाना**।" मज़ीद फ़रमाया, "अगर तुम लोगों को मा'लूम हो जाए कि

फ़रमाने मुस्तफ़ा صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم : जब तुम रसूलों पर दुरूद पढ़ो तो मुझ पर भी पढ़ो, बेशक मैं तमाम जहानों के रब का रसूल हूं। (جمع الجوامع)

अल्लाह عَزَّوَجَلَّ के हां शाहे ख़ैरुल अनाम صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم और सहाबए किराम عَلَیْہِمُ الرِّضْوَان के साथ अहले ईमान की जन्नत में कैसी मेहमानी होगी तो इस दुन्या की चन्द रोज़ा ज़िन्दगी में कभी पेट भर कर खाना न खाते।

(تذکرۃ الواعظین ص ۲۳۴)

इबादत की मिठास : हुज्जतुल इस्लाम, हज़रते सय्यिदुना इमाम मुहम्मद ग़ज़ाली عَلَیْہِ رَحْمَۃُ اللّٰہِ الْوَالِی फ़रमाते हैं, "पेट भर कर खाने से इबादत की ह़लावत मफ़्क़ूद (या'नी मिठास ग़ाइब) हो जाती है। अमीरुल मुअमिनीन सय्यिदुना सिद्दीक़े अक्बर رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہ ने फ़रमाया, "जब से मुसल्मान हुवा हूं कभी **पेट भर कर** नहीं खाया, ताकि इबादत की ह़लावत (मिठास) नसीब हो और जब से मैं मुसल्मान हुवा हूं दीदारे इलाही عَزَّوَجَلَّ के जाम पीने के शौक़ में कभी **सेर हो कर नहीं पिया।** (منہاج العابدین ص ۱۹۳)

भूक की और प्यास की मौला मुझे सौग़ात दे عَزَّوَجَلَّ
या इलाही ! ह़श्र में दीदार की ख़ैरात दे عَزَّوَجَلَّ

हज़रते सय्यिदुना सुफ़्यान सौरी رَحْمَۃُ اللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہ का इर्शाद है, "इबादत एक फ़न है जिस के सीखने की जगह ख़ल्वत (या'नी तन्हाई) है और इस का औज़ार **भूक** है। (ایضاً)

صَلُّوا عَلَی الْحَبِیْب ! صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلٰی مُحَمَّد

क़ियामत में कौन भूका होगा : **ह़ज़रते** सय्यिदुना अबू बुजैर رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْهُ से मरवी है, मीठे मीठे मुस्त़फ़ा, सुल्त़ाने अम्बिया, सरवरे हर दो सरा ह़बीबे किब्रिया صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰی عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم का फ़रमाने इ़ब्रत निशान है, "बहुत से लोग दुन्या में उ़म्दा ख़ुराक खाने वाले और आसूदा ज़िन्दगी गुज़ारने वाले हैं मगर क़ियामत के दिन वोह भूके नंगे होंगे।

(شُعَبُ الایمان ج۲ ص۱۷۰ رقم الحدیث ۱٤٦١)

भूक की ने'मत भी दे और सब्र की तौफ़ीक़ दे
या ख़ुदा عَزَّ وَجَلَّ हर ह़ाल में तू शुक्र की तौफ़ीक़ दे

ह़ज़रते सय्यिदुना अ़ब्दुल्लाह बिन उ़मर رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْهُمَا से रिवायत है, **अल्लाह** के मह़बूब, दानाए ग़ुयूब, मुनज़्ज़हुन अ़निल उ़यूब صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰی عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने एक शख़्स की डकार सुनी तो फ़रमाया, "अपनी डकार कम कर, इस लिये कि क़ियामत के दिन सब से ज़ियादा भूका वोह होगा जो दुन्या में ज़ियादा पेट भरता है। (ترمذی ج٤ ص٢١٧ رقم الحدیث ٢٤٨٦)

ह़ज़रते सय्यिदुना अबू त़ालिबुल मक्की رَحْمَةُ اللّٰهِ تَعَالٰی عَلَيْه फ़रमाते हैं कि जिन्हों ने डकार ली थी वोह सह़ाबी (या'नी अबू जुहैफ़ा) رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْهُ फ़रमाते हैं, "**अल्लाह** की क़सम ! जिस दिन सरकारे काएनात صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰی عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने मुझ से येह बात इर्शाद फ़रमाई उस रोज़ से ले कर आज तक मैं ने कभी पेट भर कर नहीं खाया और मुझे

अल्लाह عَزَّوَجَلَّ से उम्मीद है कि आयिन्दा भी मेरी (पेट भर कर खाने से) हिफ़ाज़त फ़रमाएगा। (قوت القلوب ج۲ص۳۲۵)

मुझे भूक की दे सआदत इलाही عَزَّوَجَلَّ
पए ग़ौस رَحْمَةُ اللّٰهِ تَعَالٰى عَلَيْه *दे इस्तिक़ामत इलाही* عَزَّوَجَلَّ

सब्ज़ खाल वाले बुज़ुर्ग : हज़रते सय्यिदुना अबू ताृलिबुल मक्की رَحْمَةُ اللّٰهِ تَعَالٰى عَلَيْه पाए के आलिम, मुहद्दिसो मुफ़क्किर, बहुत बड़े वलिय्युल्लाह और तसव्वुफ़ के ज़बर दस्त इमाम गुज़रे हैं। हज़रते सय्यिदुना इमाम मुहम्मद ग़ज़ाली عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللّٰهِ الْوَالِى ने तसव्वुफ़ में इन की किताब "**क़ूतुल क़ुलूब**" से ख़ूब इस्तिफ़ादा फ़रमाया है आप رَحْمَةُ اللّٰهِ تَعَالٰى عَلَيْه के तक़्वे का आलम येह था कि एक मुद्दत तक खाना ही छोड़ दिया था फ़क़त मुबाह ख़ुदरौ घास (या'नी क़ुदरती तौर पर उग जाने वाली घास) खा कर गुज़ारा फ़रमाते रहे, **सिर्फ़ सब्ज़ सब्ज़ घास खाते थे इस लिये आप की खाल सब्ज़ हो गई थी !**

जनाज़े पर शकर व बादाम लुटाए गए : ब वक़्ते वफ़ात किसी ने हज़रते सय्यिदुना अबू ताृलिबुल मक्की رَحْمَةُ اللّٰهِ تَعَالٰى عَلَيْه की ख़िदमते सरापा अ़ज़मत में अ़र्ज़ किया, "हुज़ूर मुझे कुछ वसिय्यत फ़रमाइये," फ़रमाया, "अगर मेरा ख़ातिमा बिलख़ैर हो जाए तो मेरे जनाज़े पर बादाम

व शकर लुटाना, अ़र्ज़ किया, "मुझे कैसे पता चलेगा ?" फ़रमाया, "मेरे पास बैठे रहो और अपना हाथ मेरे हाथ में दे दो अगर मैं ने तुम्हारा हाथ ब कुव्वत दबा लिया तो समझ लेना मेरा ख़ातिमा ईमान पर हुवा है।" चुनान्चे हाथ में हाथ दे दिया। जब वक़्ते रुख़्सत क़रीब आया तो आप رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰى عَلَيْه ने उस का हाथ ज़ोर से दबा लिया और रूह़ क़फ़से उ़न्सुरी से परवाज़ कर गई। **जब जनाज़ए मुबारका उठाया गया तो उस पर शकर व बादाम लुटाए गए।** आप رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰى عَلَيْه का यौमे उ़र्स 6 **जुमादिल आख़िरा** 386 सि.हि. है। बग़दादे मुअ़ल्ला में "मक़्बरए मालिकिय्या" में आप رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰى عَلَيْه का मज़ारे फ़ाइज़ुल अन्वार ज़ियारत गाहे ख़वासो अ़वाम है। (المنتظم فی تاریخ الملوک و الامم ج ١٤ ص ٣٨٥)

आ़शिक़ का जनाज़ा है ज़रा धूम से निकले
मह़बूब صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَسَلَّم की गलियों से ज़रा घूम के निकले

दा'वते इस्लामी के सुन्नतों की तरबियत के **मदनी क़ाफ़िलों** में सफ़र और रोज़ाना **फ़िक्रे मदीना** के ज़रीए **मदनी इन्आ़मात** का रिसाला पुर कर के हर मदनी माह की पहली तारीख़ अपने यहां के ज़िम्मेदार को जम्अ़ करवाने का मा'मूल बना लीजिये। اِنْ شَآءَاللّٰه عَزَّوَجَلَّ इस की बरकत से पाबन्दे सुन्नत बनने, गुनाहों से नफ़रत करने और **ईमान की ह़िफ़ाज़त** के लिये कुढ़ने का ज़ेहन बनेगा।

दुन्या की कुन्जी : हज़रते सय्यिदुना अबू सुलैमान दारानी قُدِّسَ سِرُّہُ الرَّبَّانِی फ़रमाते हैं, "दुन्या की कुन्जी शिकम सेरी और आख़िरत की कुन्जी भूक है।" (نُزھۃُ المجالس ج اول ص ۱۷۷)

क़ियामत में कौन शिकम सेर होगा ? : प्यारे प्यारे इस्लामी भाइयो ! हर वक़्त लज़ीज़ अश्या निगल्ते रहने वालों और ज़रा **भूक** लगी न लगी कि झटपट डट कर खा डालने वालों के लिये लम्हए फ़िक्रिय्या है। ख़ुदा की क़सम ! क़ियामत की भूक बरदाश्त न हो सकेगी। क़ियामत की सेरी के लिये बेहतरीन अ़मल दुन्या में भूका रहना है। चुनान्चे सुल्ताने करीमो जवाद, राहते हर क़ल्बे नाशाद, ह़बीबे रब्बुल इ़बाद صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم का इर्शादे ह़क़ीक़त बुन्याद है, जो दुन्या में भूक अपनाते हैं वोह क़ियामत के रोज़ सेर होंगे।" (اتحاف السادۃ المتقین ج ۹ ص ۱۷)

हज़रते सय्यिदुना अबू हुरैरा رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْهُ से मरवी है, ताजदारे रिसालत, शफ़ीए़ उम्मत, मालिके कौसरो जन्नत, सरापा रह़मत صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم का फ़रमाने ढारस निशान है, "(बरोज़े क़ियामत) ह़िसाब की शिद्दत उस भूके पर न होगी जिस ने (दुन्या में) फ़ाक़ा और भूक पर सब्र किया होगा।" (البدور السافرۃ ص ۲۱۲)

या इलाही عَزَّوَجَلَّ *! जब ज़बानें बाहर आएं प्यास से*

साक़िये कौसर शहे जूदो अ़ता का साथ हो

क़ियामत की चिलचिलाती धूप : प्यारे प्यारे इस्लामी भाइयो ! ग़ौर तो फ़रमाइये ! क़ियामत का मुआमला किस क़दर संगीन है, दुन्या में सिर्फ़ चन्द मिनट की लज़्ज़ते नफ़्स की ख़ातिर डट कर खाने पीने वालों के लिये किस क़दर कड़ी आज़्माइश है। आह ! आह ! आह ! एक तो क़ियामत की चिलचिलाती धूप, ऊपर से ज़मीन भी तांबे की, फिर पाउं भी नंगे, मज़ीद भूक और प्यास की शिद्दत अल अमान वल हफ़ीज़। नफ़्स की इताअत में हलाकत ही हलाकत है। चुनान्चे

नफ़्स ने जहन्नम में पहुंचा दिया : हज़रते सय्यिदुना अबुल हसन राज़ी رَحْمَۃُ اللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہ ने अपने वालिद को फ़ौत होने के दो[2] साल के बा'द ख़्वाब में क़ीर (या'नी डामर) के लिबास में देख कर पूछा, "येह क्या ? आप को जहन्नमियों के लिबास में देख रहा हूं।" वालिद ने जवाब दिया, "प्यारे बेटे ! मेरा नफ़्स मुझे जहन्नम में ले गया, तुम नफ़्स के धोके से बच कर रहना।" (مُکاشَفَۃُ الْقُلُوب ص ٢٠)

सरवरे दीं صَلَّى اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم *लीजे अपने ना तुवानों की ख़बर*
नफ़्सो शैतां सय्यिदा ! कब तक दबाते जाएंगे

(हदाइक़े बख़्शिश शरीफ़)

या अल्लाह عَزَّوَجَلَّ ! हमें नफ़्स की शरारतों से बचा और फ़क़त तेरी रिज़ा के लिये "पेट का कुफ़्ले मदीना" लगाते हुए भूक व प्यास

फ़रमाने मुस्त़फ़ा صَلَّى اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم : जिस के पास मेरा ज़िक्र हुवा और उस ने मुझ पर दुरूदे पाक न पढ़ा तह़क़ीक़ वोह बद बख़्त हो गया। (ابن سنی)

बरदाशत करने का जज़्बा नसीब फ़रमा और हमें क़ियामत की शदीद भूक व प्यास और हर होलनाकी और जहन्नम के अ़ज़ाब से अमान दे।

اٰمِين بِجاهِ النَّبِيِّ الْاَمين صَلَّى اللهُ تعالٰی علیه واٰله وسلَّم

या इलाही عَزَّ وَجَلَّ *! ख़ूब डट कर खाना पीना छोड़ दूं*

कर करम कि नफ़्से अम्मारा से रिश्ता तोड़ दूं

भूक के दस[10] फ़वाइद : (1) दिल की सफ़ाई (2) रिक़्क़ते क़ल्बी (3) मसाकीन की भूक का एह़सास (4) आख़िरत की भूक व प्यास की याद (5) गुनाहों की रग़बत में कमी (6) नींद में कमी (7) इबादत में आसानी (8) थोड़ी रोज़ी में किफ़ायत (9) तन्दुरुस्ती (10) बचा हुवा ख़ैरात करने का जज़्बा। (اِحیاءُالعُلوم ج۳ص۹۱تا۹۶ से मुख़्तसर कर के)

हुज्जतुल इस्लाम ह़ज़रते सय्यिदुना इमाम मुह़म्मद ग़ज़ाली عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللّٰهِ الْوَالِی फ़रमाते हैं, बुज़ुर्गाने दीन رَحِمَهُمُ اللّٰهُ الْمُبِيْن फ़रमाते हैं, اَلْجُوْعُ رَأْسُ مَالِنَا या'नी भूक हमारा बेहतरीन सरमाया है। इस से मुराद येह है कि हमें जो वुस्अ़त, सलामती, इबादत, ह़लावत और इल्मे नाफ़ेअ़ ह़ासिल होता है। येह **अल्लाह** तबारक व तआ़ला के लिये भूक और उस पर सब्र करने के सबब ह़ासिल होता है। (منہاج العابدین ص۱۰۸)

भूक सरमाया बने मेरा ख़ुदाए عَزَّ وَجَلَّ *ज़ुल जलाल*

अज़ तुफ़ैले मुस्त़फ़ा صَلَّى اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم *कर भूक से मुझ को निहाल*

बरोज़े क़ियामत ज़ियाफ़त : मशहूर ताबेई ह़ज़रते सय्यिदुना **का'बुल अह़बार** رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ फ़रमाते हैं, "बरोज़े क़ियामत मुनादी निदा देगा, "ऐ **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ की रिज़ा के लिये भूके प्यासे रहने वालो ! उठो ! येह सुन कर भूक सहने वाले आ कर दस्तर ख़्वान पर बैठ जाएंगे जब कि दूसरे लोगों का अभी ह़िसाब किताब जारी होगा। (نزھۃ المجالس ج اول ص ۱۷۸)

गदा भी मुन्तज़िर है ख़ुल्द में नेकों की दा'वत का
ख़ुदा عَزَّوَجَلَّ *दिन ख़ैर से लाए सख़ी के घर ज़ियाफ़त का*

(ह़दाइक़े बख़्शिश शरीफ़)

जन्नत व दोज़ख़ के दरवाज़े : हुज्जतुल इस्लाम ह़ज़रते सय्यिदुना इमाम मुह़म्मद ग़ज़ाली عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللّٰهِ الْوَالِى फ़रमाते हैं, "**पेट** और **शर्मगाह** जहन्नम के दरवाज़ों में से एक दरवाज़ा है। और इस की अस्ल पेट भर कर खाना है। और **आ़जिज़ी** व इन्किसारी जन्नत के दरवाज़ों में से एक दरवाज़ा है और इस की जड़ (या'नी बुन्याद) **भूक** है। अपने ऊपर जहन्नम का दरवाज़ा बन्द करने वाला यक़ीनन अपने लिये जन्नत का दरवाज़ा खोलता है क्यूं कि इन दोनों मुआ़मलात के अन्दर एक दूसरे में मशरिक़ो मग़रिब की त़रह़ फ़र्क़ है, लिहाज़ा इन में से एक दरवाज़े के क़रीब होना यक़ीनन दूसरे से दूर होना है। (या'नी जो भूक के ज़रीए आ़जिज़ी अपना कर जन्नत के क़रीब हुवा वोह जहन्नम से दूर हुवा और जो डट कर खाने के ज़रीए पेट और शर्मगाह की आफ़तों में मुब्तला हुवा वोह जहन्नम से क़रीब हो कर जन्नत से दूर जा पड़ा) (اِحیاءُ الْعُلوم ج ۳ ص ۹۲)

दूर आफ़त हो डट के खाने की

काश ! सूरत हो, ख़ुल्द पाने की

बदन की इस्लाह़ : अमीरुल मुअमिनीन ह़ज़रते सय्यिदुना उ़मर फ़ारूक़े आ'ज़म رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ फ़रमाते हैं, "तुम पेट भर कर खाने पीने से बचो क्यूं कि येह जिस्म को ख़राब करता, बीमारियां पैदा करता और नमाज़ में सुस्ती लाता है और तुम पर खाने पीने में मियाना रवी लाज़िम है क्यूं कि इस से जिस्म की इस्लाह़ होती और फ़ुज़ूल ख़र्ची से नजात मिलती है। (کنزُ العُمّال ج۱۵ص۱۸۳رقم الحدیث ۴۱۷۰۶)

शिकम सेरी की छ[6] आफ़तें : ह़ज़रते सय्यिदुना अबू सुलैमान दारानी قُدِّسَ سِرُّہُ الرَّبَّانِی फ़रमाते हैं, "पेट भर कर खाने में छ[6] आफ़तें हैं : (1) मुनाजाते ख़ुदावन्दी عَزَّوَجَلَّ से मह़रूमी (2) इल्मो ह़िक्मत की ह़िफ़ाज़त में मुश्किलात (3) मख़्लूक़ पर शफ़्क़त से दूरी। क्यूं कि शिकम सेर समझता है सभी का पेट भरा हुवा है। यूं मिस्कीनों और भूकों की हमदर्दी कम हो जाती है। (4) इ़बादत बोझ मह़सूस होने लगती है। (5) ख़्वाहिशात का हुजूम होता है। (6) नमाज़ी मसाजिद की त़रफ़ जा रहे होते हैं और ज़ियादा खाने वाले बैतुल ख़ला के चक्कर लगा रहे होते हैं। (اِحیاءُ العُلوم ج۳ص۹۲)

ख़ुश्क रोटी और नमक : हज़रते सय्यिदुना मुहम्मद बिन वासेअ़ عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللّٰهِ النَّافِع ख़ुश्क रोटी नमक से खा लेते और फ़रमाते, "जो दुन्या में इतनी मिक़्दार में राज़ी हो जाता है वोह किसी का मोह़ताज नहीं रेहता।" (مُكاشَفَةُ الْقُلُوب ص ١٢٢)

खाना अ़क़्ल को खा जाता है : इब्ने नजीह़ رَحْمَةُ اللّٰهِ تَعَالٰى عَلَيْه कहते हैं, "इमामे आ'ज़म अबू ह़नीफ़ा رَضِىَ اللّٰهُ تَعَالٰى عَنْه ने मुझ से फ़रमाया, "जब दुन्या का कोई अहम काम आ जाए तो उसे पूरा करने से पहले खाना मत खाओ क्यूं कि فَإِنَّ الاَ كل يُغَيِّرُ العَقلَ या'नी खाना अ़क़्ल को खा जाता है।

(مناقِبِ ابی حنیفه لِلْکُردی ص ٣٥١)

दिल की सख़्ती के अस्बाब : हज़रते सय्यिदुना सुफ़्यान सौरी رَحْمَةُ اللّٰهِ تَعَالٰى عَلَيْه फ़रमाते हैं, दिल की सख़्ती के दो अस्बाब हैं : (1) पेट भर कर खाना (2) ज़ियादा बोलना।

यावह गोई की, डट के खाने की

दूर आ़दत हो या ख़ुदा या रब

सात[7] लुक़्मे : अमीरुल मुअमिनीन हज़रते सय्यिदुना उ़मर फ़ारूक़े आ'ज़म رَضِىَ اللّٰهُ تَعَالٰى عَنْه सात[7] या नव[9] लुक़्मों से ज़ियादा खाना नहीं खाते थे। (اِحْیاءُ الْعُلُوم ج٣ ص٩٧)

पेट भरने की परेशानियां : पेट भर कर खाने की आफ़तें बयान करते हुए हुज्जतुल इस्लाम हज़रते सय्यिदुना इमाम मुहम्मद ग़ज़ाली عَلَيْهِ رَحْمَةُ الْوَالِى फ़रमाते हैं, (पेट भर कर खाने वाले की आंखों में) अक्सर अवक़ात नींद भरी रहती है फिर इस हालत में अगर तहज्जुद पढ़े भी तो इबादत की हलावत (या'नी मिठास) नहीं पाता। फिर मुजर्रद शख़्स जब पेट भर कर सोता है तो उसे एह्तिलाम हो जाता है अब अगर ठन्डे पानी से ग़ुस्ल करे तो येह भी तक्लीफ़ देह अम्र है। अगर वित्र को तहज्जुद तक मुअख़्ख़र कर रखा हो तो तहज्जुद तो गई, वित्र पढ़ने से भी महरूम हो जाता है येह सब पेट भरने का वबाल है। (اِحیاءُ الْعُلُوم ج۳ ص۹۴)

एह्तिलाम का एक सबब : हज़रते सय्यिदुना अबू सुलैमान दारानी قُدِّسَ سِرُّهُ الرَّبَّانِى फ़रमाते हैं, "एह्तिलाम एक उक़ूबत (मुसीबत) है। और आप رَحْمَةُ اللّٰهِ تَعَالٰى عَلَيْه ने येह इस वज्ह से इर्शाद फ़रमाया कि बे मौक़अ़ ग़ुस्ल की मुश्किलात की वज्ह से इस त़रह़ बहुत सी इबादात छूट जाती हैं। पस नींद मम्बए़ आफ़ात, पेट भरना इस का सबब और भूका रहना इन (आफ़ात) को क़त्अ़ करना (या'नी काटना) है। (اِیضاً)

शैत़ान ख़ून में गर्दिश करता है : सरकारे वाला तबार, हम बे कसों के मददगार, शफ़ीए़ रोज़े शुमार, दो आ़लम के मालिको मुख़्तार, ह़बीबे परवर्दगार صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم का फ़रमाने आ़लीशान है : "बेशक शैत़ान इन्सान (के बदन) में ख़ून की त़रह़ गर्दिश करता है।"

(بُخاری ج ۱ ص ٦٦٩ حدیث ۲۰۳۸)

फ़रमाने मुस्तफ़ा صَلَّى اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم : मुझ पर दुरूदे पाक की कसरत करो बेशक तुम्हारा मुझ पर दुरूदे पाक पढ़ना तुम्हारे लिये पाकीज़गी का बाइस है। (ابو یعلی)

सूफ़ियाए किराम رَحِمَهُمُ اللّٰهُ السَّلَام फ़रमाते हैं : पस उस के रास्तों को भूक के ज़रीए़ तंग करो। (کشف الخفاء ج ١ ص ١٩٨)

दो[2] नहरें : सलफ़ सालिहीन رَحِمَهُمُ اللّٰهُ الْمُبِيْن फ़रमाते हैं, "**शिकम सेरी**, नफ़्स में एक नहर है जिधर शैतान पहुंच जाता है और **भूक** रूह में एक नहर है जो फ़िरिश्तों की गुज़र गाह है।"

(सब्ए़ सनाबिल मुतर्जम, स. 241)

हमें बारे ख़ुदाया عَزَّ وَجَلَّ *पेट का क़ुफ़्ले मदीना दे*
वसीला मुस्तफ़ा صَلَّى اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم *का पेट का क़ुफ़्ले मदीना दे*

चालीस[40] दिन का फ़ाक़ा : प्यारे प्यारे इस्लामी भाइयो ! बुज़ुर्गाने दीन رَحِمَهُمُ اللّٰهُ الْمُبِيْن **भूक** और **प्यास** के ज़रीए़ शैतान का रास्ता तंग किया करते थे। ह़ज़रते सय्यिदुना सह्ल बिन अ़ब्दुल्लाह तुस्तरी رَحْمَةُ اللّٰهِ تَعَالٰی عَلَيْه चालीस दिन भूके रहते फिर कुछ खाते (اِحیاءُ العُلوم ج٣ ص٩٨) उन्हें साल भर के खाने के लिये सिर्फ़ एक दिरहम काफ़ी हो जाता। (الرِّسالۃُ القُشیریۃ ص ١٤١)

छ[6] मदनी फूल : ह़ज़रते सय्यिदुना सह्ल बिन अ़ब्दुल्लाह तुस्तरी رَحْمَةُ اللّٰهِ تَعَالٰی عَلَيْه के छे[6] फ़रामीन मुलाह़ज़ा हों, (1) बरोज़े क़ियामत कोई

अ़मल ज़रूरत से ज़ियादा खाने को तर्क करने से अफ़्ज़ल न होगा क्यूं कि येह सुन्नते नबवी है (2) समझदार लोग दीन व दुन्या में भूक को बहुत ज़ियादा नफ़्अ़ बख़्श क़रार देते हैं (3) आख़िरत के त़लब गारों के लिये खाने से ज़ियादा किसी चीज़ को मैं नुक़्सान देह नहीं समझता (4) इल्मो हिक्मत को भूक में और गुनाह व जहालत को शिकम सेरी में रखा गया है (5) जो अपने नफ़्स को भूका रखता है उस से वस्वसे ख़त्म हो जाते हैं (6) बन्दा जब भूका, बीमार और इम्तिह़ान में मुब्तला होता है उस वक़्त **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ की रह़मत उस की त़रफ़ मुतवज्जेह होती है मगर जिसे **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ चाहे। (احیاء العلوم ج۳ ص۹۱)

या इलाही عَزَّوَجَلَّ *! भूक की दौलत से मालामाल कर*

दो 2 जहां में अपनी रह़मत से मुझे ख़ुशह़ाल कर

صَلُّوا عَلَى الْحَبِيب! صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلٰى مُحَمَّد

दा'वते इस्लामी के सुन्नतों की तरबियत के **मदनी क़ाफ़िलों** में सफ़र और रोज़ाना **फ़िक्रे मदीना** के ज़रीए **मदनी इन्आ़मात** का रिसाला पुर कर के हर मदनी माह की पहली तारीख़ अपने यहां के ज़िम्मेदार को जम्अ़ करवाने का मा'मूल बना लीजिये। اِنْ شَآءَاللّٰه عَزَّوَجَلَّ इस की बरकत से पाबन्दे सुन्नत बनने, गुनाहों से नफ़रत करने और **ईमान की ह़िफ़ाज़त** के लिये कुढ़ने का ज़ेह्न बनेगा।

पेटू ज़लील है : क़ूतुल क़ुलूब में है, "भूक बादशाह और शिकम सेरी गुलाम है, भूका इ़ज़्ज़त वाला और (ज़ियादा) पेट भरा ज़लील है।" और येह भी कहा गया, "भूक सब की सब इ़ज़्ज़त है जब कि पेट भरना सरासर ज़िल्लत है।" और बा'ज़ अस्लाफ़ رَحِمَهُمُ اللّٰهُ تَعَالٰى से मन्क़ूल है, फ़रमाया, "भूक आख़िरत की कुन्जी और ज़ोहद (या'नी दुन्या से बे रग़बती) का दरवाज़ा है जब कि पेट भरना दुन्या की कुन्जी और (दुन्या की त़रफ़) रग़बत का दरवाज़ा है। (قُوتُ الْقُلُوب ج۲ص۳۳۲)

भूका रहने की ताकीद क्यूं ? : ह़ज़रते सय्यिदुना बा यज़ीद عَلَيْهِ رَحْمَةُ الْمَجِيْد की ख़िदमत में अ़र्ज़ किया गया, "आप भूका रहने पर इतना ज़ोर क्यूं देते हैं ?" फ़रमाया, "अगर **फ़िरऔन** भूका होता तो कभी ख़ुदाई का दा'वा न करता और अगर **क़ारून** भूका होता तो कभी बग़ावत न करता (मत़लब कि इन लोगों पर माल की फ़रावानी हुई तो सरकश हो गए।) (कश्फ़ुल मह़जूब मुतर्जम, स. 647)

अल्लाह की ख़ुफ़्या तदबीर से बे ख़ौफ़ होना गुनाहे कबीरा है

प्यारे प्यारे इस्लामी भाइयो ! वाक़ेई सिह़्ह़त की ने'मत और दौलत की कसरत अक्सर मुब्तलाए मा'सियत कर देती है। लिहाज़ा जो ख़ूब जानदार या मालदार या साह़िबे इक़्तिदार हो उस को ख़ुदाए अ़लीमो ख़बीर عَزَّوَجَلَّ की **ख़ुफ़्या तदबीर** से बहुत ज़ियादा डरने की ज़रूरत है। जैसा कि ह़ज़रते सय्यिदुना ह़सन बसरी رَحْمَةُ اللّٰهِ تَعَالٰى عَلَيْه फ़रमाते हैं, "जिस शख़्स पर **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ दुन्या में (रोज़ी में ख़ूब कसरत, फ़रमां बरदार

औलाद की ने'मत, मालो दौलत, अच्छी सिह्हत, मन्सबे वजाहत, ओ़ह्दए वज़ारत या सदारत या हुकूमत वग़ैरा के ज़रीए) फ़राख़ी करे मगर उसे येह अन्देशा न हो कि कहीं येह (आसाइशें) **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ की ख़ुफ़्या तदबीर तो नहीं ऐसा शख़्स **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ की **ख़ुफ़्या तदबीर** से ग़ाफ़िल है । (تنبیہ المغترین ص ۵۴)

हज़रते सय्यिदुना इमाम मुहम्मद बिन अहमद ज़हबी رَحْمَۃُ اللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہ ने अपनी तस्नीफ़ "किताबुल कबाइर" में **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ की ख़ुफ़्या तदबीर से न डरने को कबीरा गुनाहों की फ़ेहरिस में शामिल किया है । लिहाज़ा सरमाया दारों वग़ैरा के साथ साथ नादारों, बीमारों और मुसीबत के मारों को भी **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ की **ख़ुफ़्या तदबीर** से डरना लाज़िमी है कि हो सकता है इन आफ़तों के ज़रीए आज़्माइश में डाला गया हो और ना जाइज़ गिला शिक्वा, ग़ैर शरई बे सब्री और ग़ुर्बतो मुसीबत को हराम ज़राए के ज़रीएअ़ ख़त्म करने की कोशिशें आख़िरत की तबाही का सबब बन जाएं । राह़तों में ज़िन्दगी बसर करने वालों को भी रब्बे अ़ज़ीज़ो क़दीर عَزَّوَجَلَّ की **ख़ुफ़्या तदबीर** से डरना वाजिब है कि कहीं ऐसा न हो मिली हुई दुन्यवी ने'मतों के ज़रीए तकब्बुर, सरकशी और त़रह़ त़रह़ के गुनाहों का सिल्सिला बढ़ता रहे और कसा कसाया सुडोल बदन और मालो धन जहन्नम का ईंधन बनने का सबब बन जाए । इस ज़िम्न में ह़दीसे नबवी और फ़रमाने ख़ुदावन्दी सुनिये और **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ की **ख़ुफ़्या तदबीर** से थर्राइये :

फ़रमाने मुस्तफ़ा صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰی عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم : जिस ने मुझ पर रोज़े जुमुआ दो सो बार दुरूदे पाक पढ़ा उस के दो सो साल के गुनाह मुआफ़ होंगे। (جمع الجوامع)

अल्लाह عَزَّوَجَلَّ की तरफ़ से ढील : **हज़रते** सय्यिदुना उ़क़्बा बिन आ़मिर رَضِىَ اللّٰهُ تَعَالٰى عَنْه से रिवायत है, नबिय्ये अकरम, नूरे मुजस्सम, रसूले मोह़्तशम, शाहे बनी आदम صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم का फ़रमाने इ़ब्रत निशान है, "जब तुम किसी बन्दे को देखो कि **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ उस को अ़ता फ़रमाता है और वोह अपने गुनाह पर क़ाइम है तो येह उस की तरफ़ से **ढील** है।" फिर येह आयते करीमा तिलावत फ़रमाई :

فَلَمَّا نَسُوْا مَا ذُكِّرُوْا بِهٖ فَتَحْنَا عَلَيْهِمْ اَبْوَابَ كُلِّ شَیْءٍ ؕ حَتّٰۤى اِذَا فَرِحُوْا بِمَاۤ اُوْتُوْۤا اَخَذْنٰهُمْ بَغْتَةً فَاِذَا هُمْ مُّبْلِسُوْنَ ﴿۴۴﴾ (پ ۷ الانعام آیت ۴۴)

तरजमए कन्ज़ुल ईमान : फिर जब उन्हों ने भुला दिया जो नसीह़तें उन को की गई थीं हम ने उन पर हर चीज़ के दरवाज़े खोल दिये यहां तक कि जब खुश हुए उस पर जो उन्हें मिला तो हम ने अचानक उन्हें पकड़ लिया अब वोह आस टूटे रह गए।

(مُسندِ امام احمد ج۶ ص۱۲۲ رقم الحدیث ۱۷۳۱۳)

गुनाहों को अच्छा समझना कुफ़्र है : **मुफ़स्सिरे** शहीर मुफ़्ती अह़मद यार ख़ान عَلَيْهِ رَحْمَةُ الْمَنَّان इस आयते करीमा के तह़त फ़रमाते हैं, "मा'लूम हुवा कि तमाम अ़ज़ाबों में सख़्त तर अ़ज़ाब दिल की सख़्ती है कि जिस के सबब ता'लीमे नबी असर न करे। इस आयते करीमा से

मा'लूम हुवा कि गुनाहो मआसी के बा वुजूद दुन्यावी राहतें मिलना अल्लाह عَزَّوَجَلَّ का ग़ज़ब और अ़ज़ाब है कि इस से इन्सान और ज़ियादा ग़ाफ़िल हो कर गुनाह पर दिलेर हो जाता है बल्कि कभी ख़याल करता है कि गुनाह अच्छी चीज़ है वरना मुझे येह ने'मतें न मिलतीं येह कुफ़्र है। (या'नी गुनाह को गुनाह तस्लीम करना फ़र्ज़ है। इस को जानबूझ कर अच्छा कहना या अच्छा समझना कुफ़्र है।) येह भी मा'लूम हुवा कि निकोकार (या'नी नेक बन्दों) पर तकालीफ़ आना रहमते इलाही عَزَّوَجَلَّ का ज़रीआ़ है कि इस से उस सालेह़ (या'नी नेक बन्दे) के दरजात बुलन्द होते हैं।" (नूरुल इरफ़ान, स. 210)

दुआ़ए मुस्तफ़ा صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَسَلَّم : अल्लाह عَزَّوَجَلَّ के प्यारे मह़बूब صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰی عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم अक्सर येह दुआ़ मांगा करते थे।

يَا مُقَلِّبَ الْقُلُوْبِ ثَبِّتْ قَلْبِیْ عَلٰی دِیْنِكَ ؃

या'नी ऐ दिलों के फेरने वाले मेरे दिल को अपने दीन पर क़ाइम रख।

(مُسندِ امام احمد ج ۹ ص ۵۱۵ رقم الحدیث ۲۶۷۹۷)

या ख़ुदा عَزَّ وَجَلَّ *तू मेरा ईमान सलामत रखना*
अज़ पए ग़ौसो रज़ा رَحِمَهُمَا اللّٰهُ تَعَالٰی *सायए रह़मत रखना*

चालीस40 हज़ार में से चार : ह़ज़रते सय्यिदुना अ़ब्दुल्लाह बिन मुबारक رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْهُ फ़रमाते हैं, "एक ह़कीम (या'नी दाना) ने चालीस40 हज़ार बातों में से इन चार बातों का इन्तिख़ाब किया :

(1) हर औरत पर हर मुआमले में ए'तिमाद मत रखो। (2) कभी अपनी दौलत पर भरोसा मत करो। (3) अपने मे'दे पर उस की ताक़त से ज़ियादा बोझ मत डालो। (या'नी ख़ूब डट कर मत खाया करो) (4) ऐसे इल्म (या'नी मा'लूमात और ख़बरों वग़ैरा) के पीछे मत लगो जिस से तुम नफ़्अ़ न उठा सको। (المنبّهات للعسقلانی ص ٤٧)

सात[7] आंत : अल्लाह عَزَّوَجَلَّ के ह़बीब, ह़बीबे लबीब صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم का फ़रमाने इ़ब्रत निशान है, "**मोमिन** एक आंत में खाता है और काफ़िर या **मुनाफ़िक़** सात आंतों में खाता है।"

(صحیح بخاری ج ٦ ص ٢٤٦ رقم الحدیث ٥٣٩٤)

सात[7] आंत का मत़लब : प्यारे प्यारे इस्लामी भाइयो ! इस ह़दीसे पाक से येह मुराद नहीं कि मुसल्मान की एक और काफ़िर की सात आंत हों, हर शख़्स की सात ही आंत होती हैं। यहां इस बात की त़रफ़ इशारा है कि बहुत ज़ियादा खाना येह काफ़िर का मश्ग़ला है। हुज्जतुल इस्लाम इमाम मुह़म्मद ग़ज़ाली عَلَيْهِ رَحْمَةُ الْوَالِي इस ह़दीसे मुबारक की शर्ह़ बयान करते हुए फ़रमाते हैं, या'नी **मोमिन** के मुक़ाबले में **मुनाफ़िक़** सात गुना ज़ियादा खाता है या मुनाफ़िक़ की शह्वत मोमिन की ख़्वाहिश से सात[7] गुना ज़ाइद होती है, आंत का ज़िक्र ख़्वाहिश से किनाया है

क्यूं कि ख़्वाहिश खाने को इस त़रह़ क़बूल करती है जिस त़रह़ आंत। येह मत़लब नहीं कि मुनाफ़िक़ की आंतें मोमिन की आंतों से ज़ियादा होती हैं। (اِحیاءُ العُلوم ج۳ص۸۹)

मोमिन और मुनाफ़िक़ की ख़ूराक में फ़र्क़ : **ह़ज़रते** सय्यिदुना ह़सन बसरी رَحْمَةُ اللّٰهِ تَعَالٰى عَلَيْه फ़रमाते हैं, "मोमिन एक नन्ही सी बकरी की त़रह़ है जिस को मुठ्ठी भर ख़ुश्क खजूर एक मुठ्ठी जव और एक घूंट पानी काफ़ी है और मुनाफ़िक़ एक दरिन्दे की त़रह़ हड़प हड़प खाता और निगलता है। उस का पेट अपने पड़ोसी की ख़ात़िर नहीं सुकड़ता और वोह अपने भाई पर अपनी किसी चीज़ का ईसार नहीं करता।"

(قُوتُ القُلوب ج۲ص۳۲۴)

आ'ला ह़ज़रत رَحْمَةُ اللّٰهِ تَعَالٰى عَلَيْه **की ग़िज़ा :** **मेरे** आक़ाए ने'मत, सरकारे आ'ला ह़ज़रत, इमामे अहले सुन्नत, मौलाना शाह अह़मद रज़ा ख़ान عَلَيْهِ رَحْمَةُ الرَّحْمٰن बहुत कम ग़िज़ा इस्ति'माल फ़रमाया करते चुनान्चे ह़ज़रते सय्यिद अय्यूब अ़ली शाह साहिब رَحْمَةُ اللّٰهِ تَعَالٰى عَلَيْه फ़रमाते हैं, "आ'ला ह़ज़रत رَحْمَةُ اللّٰهِ تَعَالٰى عَلَيْه की ग़िज़ा ज़ियादा से ज़ियादा **एक पियाली बकरी का शोरबा** बिग़ैर मिर्च का और **एक या डेढ़ अ़दद सूजी का बिस्कुट** और वोह भी रोज़ाना नहीं, बसा अवक़ात नाग़ा भी हो जाता।

(ह़याते आ'ला ह़ज़रत, जि. 1 स. 27)

कर अ़ता अह़मद रज़ाए अह़मदे मुरसल हमें

मेरे मौला ह़ज़रते अह़मद रज़ा के वासिते़

सात[7] मदनी फूल : ह़ज़रते सय्यिदुना अ़ब्दुल्लाह बिन अ़ब्बास رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُمَا फ़रमाते हैं, **अ़क़्ल मन्द** को चाहिये कि सात बातों को सात बातों पर फ़ौक़िय्यत दे : (1) ग़ुर्बत को मालदारी पर (2) ज़िल्लत को इ़ज़्ज़त पर (3) आ़जिज़ी को ख़ुद पसन्दी पर (4) **भूक** को शिकम सेरी पर (5) ग़म को ख़ुशी पर (6) ख़स्ता ह़ाल निकोकारों को बुलन्द पाया दुन्यादारों पर और (7) मौत को ज़िन्दगी पर । (اَلْمُنَبِّہَات لِلعَسقَلانی ص ۸۵)

बारह[12] दिन में एक बार वुज़ू : ह़ज़रते सय्यिदुना अ़ब्दुल वहहाब शा'रानी قُدِّسَ سِرُّہُ الرَّبَّانِی फ़रमाते हैं, ''मैं ने काफ़ी अह्लुल्लाह رَحِمَہُمُ اللّٰہُ تَعَالٰی को भूक में साबित क़दम देखा यहां तक कि उन में बा'ज़ तो हफ़्ते भर में सिर्फ़ एक बार रफ़्ए़ ह़ाजत के लिये जाते क्यूं कि वोह बार बार बैतुल ख़ला में जा कर बरह्ना होने में **अल्लाह** तबारक व तआ़ला से शरमाते थे । सय्यिदी शैख़ ताजुद्दीन ज़ाकिर عَلَیْہِ رَحْمَۃُ الْقَادِر तो इस मुआ़मले में यहां तक पहुंच गए थे कि उन को बारह[12] दिन में सिर्फ़ एक बार वुज़ू की ह़ाजत पेश आती ।'' (تَنبِیہُ الْمُغتَرِّین ص ۳۶)

صَلُّوْا عَلَی الْحَبِیْب ! صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلٰی مُحَمَّد

फ़रमाने मुस्तफ़ा صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم : बरोज़े क़ियामत लोगों में से मेरे क़रीब तर वोह होगा जिस ने दुन्या में मुझ पर ज़ियादा दुरूदे पाक पढ़े होंगे। (ترمذی)

मदनी क़ाफ़िले का एक मुसाफ़िर : प्यारे प्यारे इस्लामी भाइयो ! पेट का कुफ़्ले मदीना लगाते हुए कम खाने से प्यास भी कम लगती है और पानी कम पीने से नींद भी कम आती है या'नी कम नींद से गुज़ारा हो जाता और आदमी ताज़ा दम हो जाता है। **दा'वते इस्लामी** के अवाइल में एक बार हमारा **मदनी क़ाफ़िला** सफ़र पर था। क़ाफ़िले में शामिल एक सफ़ेद रीश बुज़ुर्ग ने दौराने सफ़र मुझे (या'नी राक़िमुल हुरूफ़ को) बताया कि اَلْحَمْدُ لِلّٰه عَزَّوَجَلَّ दो[2] दिन हो चुके हैं मेरा वुज़ू अभी तक सलामत है। और अपने मर्हूम पीरो मुर्शिद के बारे में बताया कि उन का **पन्द्रह[15] दिन तक वुज़ू** बाक़ी रहता था ! येह सब **पेट का कुफ़्ले मदीना** लगाने या'नी कम खाने की बरकतें हैं कि इस से नींद और रफ़्ए़ हाजत की ज़रूरत में कमी आ जाती है और यूं इबादत व दीन के मदनी काम करने के लिये ख़ूब वक़्त मिल जाता है।

मैं कम बोलूं, कम सोऊं, कम खाऊं, या रब عَزَّوَجَلَّ
तेरी बन्दगी का मज़ा पाऊं, या रब عَزَّوَجَلَّ

तीन[3] दिन का फ़ाक़ा : हज़रते सय्यिदुना अनस رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْهُ से मरवी है, ख़ातूने जन्नत, सय्यिदतुन्निसा, फ़ातिमतुज़्ज़हरा رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْهَا रोटी का एक टुकड़ा ले कर एक बार सरकारे नामदार के दरबारे दुरबार में हाज़िर हुईं, मदीने के ताजदार صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने पूछा, "येह टुकड़ा

कैसा है?" अ़र्ज़ किया, "मैं ने रोटी पकाई थी तो आप صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم के बिग़ैर खाना पसन्द न किया इस लिये येह टुकड़ा हाज़िर किया है।" **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ के प्यारे ह़बीब صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया, **"तीन दिन के बा'द येह पहला खाना है जो तुम्हारे वालिद के** (मुबारक) **मुंह में दाख़िल हुवा है।** (اَلْمُعْجَمُ الْکَبِیر لِلطَّبَرَانِی ج۱ ص۲۵۹ رقم الحدیث ۷۵۰)

दोनों जहां के दाता हो कर, कौनो मकां के आक़ा हो कर

फ़ाक़े से हैं सरकारे दो आ़लम, صَلَّی اللّٰہ عَلَیْہِ وَسَلَّم

اَللّٰہُ اَکْبَر ! दोनों जहां के ख़ज़ाने जिन के हाथों में हैं उन की दुन्या से इस क़दर बे रग़बती ! येह मह़बूबे रब्बे बारी صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم की इख़्तियारी भूक शरीफ़ थी वरना दूसरों को झोलियां भर भर कर नवाज़ते थे। चुनान्चे

दूध का एक पियाला और सत्तर70 सह़ाबा عَلَیْہِمُ الرِّضْوَان :

हज़रते सय्यिदुना अबू हुरैरा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ फ़रमाते हैं, "उस ख़ुदा عَزَّوَجَلَّ की क़सम जिस के सिवा कोई मा'बूद नहीं, मैं भूक की वज्ह से अपना पेट ज़मीन पर रखता और भूक के सबब पेट पर पथ्थर बांधा करता था एक दिन मैं उस रास्ते पर बैठ गया जिस से लोग बाहर जाते थे। जाने दो आ़लम صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم मेरे पास से गुज़रे तो मुझे देख कर मुस्कुराए और मेरा चेहरा देख कर मेरी ह़ालत समझ गए। फ़रमाया, ऐ अबू हुरैरा ! मैं ने अ़र्ज़ की

फ़रमाने मुस्तफ़ा صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم : शबे जुमुआ और रोज़े जुमुआ मुझ पर दुरूद की कसरत कर लिया करो जो ऐसा करेगा क़ियामत के दिन मैं उस का शफ़ीअ़ व गवाह बनूंगा। (شعب الایمان)

: लब्बैक **या रसूलल्लाह** (صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم) ! फ़रमाया, "मेरे साथ आ जाओ।" मैं पीछे पीछे चल दिया, जब शहन्शाहे बह़रो बर, मदीने के ताजवर, साक़िये हौज़े कौसर, ह़बीबे दावर صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم अपने मुबारक घर पर जल्वा गर हुए तो इजाज़त ले कर मैं भी अन्दर दाख़िल हो गया। सरवरे काएनात, शाहे मौजूदात صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने एक पियाले में दूध देखा तो फ़रमाया, "येह दूध कहां से आया है ?" अहले ख़ाना ने अ़र्ज़ की, "फ़ुलां सह़ाबी या सह़ाबिया ने आप صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم के लिये हदिय्यतन भेजा है। फ़रमाया, अबू हुरैरा ! मैं ने अ़र्ज़ की : लब्बैक **या रसूलल्लाह** (صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم) ! फ़रमाया, "जा कर अहले सुफ़्फ़ा को बुला लाओ।

ह़ज़रते सय्यिदुना, अबू हुरैरा رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰى عَنْهُ फ़रमाते हैं कि अहले सुफ़्फ़ा عَلَيْهِمُ الرِّضْوَان इस्लाम के मेहमान हैं, न उन को घरबार से रग़बत है न मालो दौलत से और न वोह किसी शख़्स का सहारा लेते हैं। जब मह़बूबे रब्बे ज़ुल जलाल صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم के पास सदक़े का माल आता तो आप صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم वोह माल उन (अस्ह़ाबे सुफ़्फ़ा عَلَيْهِمُ الرِّضْوَان) की त़रफ़ भेज देते, और ख़ुद उस में से कुछ नहीं लेते थे। और जब आप صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم के पास कोई हदिय्या आता तो आप صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم उन के पास भेजते उस में से ख़ुद भी इस्ति'माल करते और उन को भी शरीक फ़रमाते मुझे येह बात गिरां सी गुज़री और दिल में ख़याल आया, अहले सुफ़्फ़ा عَلَيْهِمُ الرِّضْوَان का इस दूध से क्या बनेगा ? मैं इस

फ़रमाने मुस्तफ़ा صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم : जो मुझ पर एक बार दुरूद पढ़ता है अल्लाह उस के लिये एक क़ीरात् अज्र लिखता है और क़ीरात् उहुद पहाड़ जितना है। (عبدالرزاق)

का ज़ियादा मुस्तहिक़ था कि इस दूध से चन्द घूंट पीता और कुछ कुव्वत ह़ासिल करता। जब अस्ह़ाबे सुफ़्फ़ा عَلَیْہِمُ الرِّضْوَان आ जाएंगे तो सरकारे नामदार صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم मुझे ही इर्शाद फ़रमाएंगे कि इन को दूध पेश करो। इस सूरत में बहुत मुश्किल है कि दूध के चन्द घूंट मुझे मुयस्सर हों। लेकिन **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ और उस के रसूल صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم की इत़ाअ़त के बिग़ैर चारा न था, मैं अस्ह़ाबे सुफ़्फ़ा عَلَیْہِمُ الرِّضْوَان के पास गया और उन को बुलाया। वोह आए, उन्हों ने शहन्शाहे अ़रब, मह़बूबे रब صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم से इजाज़त त़लब की। आप صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने इजाज़त अ़त़ा फ़रमाई और वोह घर में ह़ाज़िर हो कर बैठ गए। मीठे मीठे आक़ा मदीने वाले मुस्त़फ़ा صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया, "अबू हुरैरा !" मैं ने अ़र्ज़ की, लब्बैक **या रसूलल्लाह** (صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم) ! फ़रमाया, "पियाला पकड़ो और इन को दूध पिलाओ।" ह़ज़रते सय्यिदुना अबू हुरैरा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ फ़रमाते हैं, "मैं ने पियाला पकड़ा। मैं वोह पियाला एक शख़्स को देता वोह सेर हो कर दूध पीता और फिर पियाला मुझे लौटा देता। ह़त्ता कि मैं पिलाता पिलाता आक़ाए मदीना صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم तक पहुंचा और तमाम लोग सेर हो चुके थे। सरकार صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने पियाला ले कर अपने **दस्ते अक़्दस** पर रखा। फिर मेरी त़रफ़ देख कर तबस्सुम फ़रमाया, और फ़रमाया, **अबू हुरैरा !** मैं ने अ़र्ज़ की, लब्बैक **या रसूलल्लाह** (صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم) ! फ़रमाया, "अब मैं और तुम बाक़ी रह

गए हैं" । अ़र्ज़ की, "**या रसूलल्लाह** صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ! आप صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने सच फ़रमाया। "फ़रमाया, "बैठो और पियो।" मैं बैठ गया और दूध पीने लगा। आप صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया, "पियो।" मैं ने पिया। आप صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم मुसल्सल फ़रमाते रहे, "पियो !" ह़त्ता कि मैं ने अ़र्ज़ की, "नहीं, क़सम उस ज़ात की जिस ने आप صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم को ह़क़ के साथ मब्ऊ़स फ़रमाया अब मज़ीद गुन्जाइश नहीं।" फ़रमाया, "मुझे दिखाओ।" मैं ने पियाला पेश कर दिया। आप صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने **अल्लाह** तआ़ला की ह़म्द बयान की, बिस्मिल्लाह पढ़ी और बाक़ी दूध नोश फ़रमा लिया।

(صحیح بخاری ج ۷ ص ۲۳۰ رقم الحدیث ۶۴۵۲)

اَلْحَمْدُ لِلّٰه عَزَّوَجَلَّ येह सरकारे मक्कए मुकर्रमा, ताजदारे मदीनए मुनव्वरह صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم का अ़ज़ीम मो'जिज़ा है कि तमाम या'नी सत्तर70 अहले सुफ़्फ़ा عَلَيْهِمُ الرِّضْوَان मिल कर भी दूध का एक पियाला पूरा न पी सके। मेरे आक़ा आ'ला ह़ज़रत رَحْمَةُ اللّٰهِ تَعَالٰى عَلَيْه इसी ईमान अफ़रोज़ वाक़िए की जानिब इशारा करते हुए अ़र्ज़ गुज़ार हैं :

क्यूं जनाबे बू हुरैरा رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْهُ *! था वोह कैसा जामे शीर*
जिस से सत्तर70 साहि़बों عَلَيْهِمُ الرِّضْوَان *का दूध से मुंह फिर गया*

लोगों से बे नियाज़ी : ह़ज़रते सय्यिदुना अबू यह़्या मालिक बिन दीनार عَلَيْهِ رَحْمَةُ الْغَفَّار फ़रमाते हैं, "मैं ने ह़ज़रते सय्यिदुना अबू

अ़ब्दुल्लाह मुह़म्मद बिन वासेअ़ عَلَيْهِ رَحْمَةُ النَّافِع से कहा, "ऐ अबू अ़ब्दुल्लाह ! ख़ुश नसीब है वोह शख़्स जिस के पास थोड़ा सा ग़ल्ला हो और वोह उस को किफ़ायत करे और यूं वोह लोगों से बे नियाज़ रहे। येह सुन कर उन्हों ने मुझ से फ़रमाया, "ऐ **अबू यह़्या** ! उस शख़्स के लिये ख़ुश ख़बरी है जो सुब्ह़ो शाम **भूका** हो और **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ उस से राज़ी हो। (اِحیاءُ العُلوم ج٣ص٩٠)

नसीह़त बे असर : मन्क़ूल है, "शिकम सेर की नसीह़त बे असर होती है और जब उस को नसीह़त की जाती है तो उस का ज़ेह्न क़बूल नहीं करता।" (نُزھۃُ المَجالس ج اول ص ١٧٨)

मौत के वक़्त बदबू : अमीरुल मुअमिनीन ह़ज़रते सय्यिदुना उ़मर फ़ारूके़ आ'ज़म رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْهُ ने फ़रमाया, "अपने आप को पेट भर कर खाने से बचाओ कि येह ज़िन्दगी में **बोझ** और मौत के वक़्त **बदबू** है।" (اِحیاءُ العُلوم ج٣ص٩٠)

ख़ाना ज़ियादा तो कमाना भी ज़ियादा : प्यारे प्यारे इस्लामी भाइयो ! सच फ़रमाया, "सय्यिदुना फ़ारूके़ आ'ज़म رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْهُ ने वाक़ेई **पेट का कुफ़्ले मदीना** न लगाना और ख़ूब शिकम सेर हो कर खाना ज़िन्दगी में बोझ बना रहता है कि ज़ियादा खाना हो तो उस के लिये ज़ियादा कमाना पड़ता है, ख़ूब

मेहनत से पकाना पड़ता है, फिर पेट में देर तक उस का बोझ उठाना पड़ता है, ज़ियादा खाना निज़ामे इन्हिज़ाम को मुतअस्सिर करता है। लिहाज़ा क़ब्ज़, गेस और न जाने पेट की कितनी तक्लीफ़ें उठानी पड़ती हैं। अल ग़रज़ ज़ियादा खाने में ख़रीदारी पर भी ख़र्च ज़ियादा, लम्हा भर ज़बान के ज़ाएक़े के बा'द हल्क़ से नीचे उतरते ही लज़्ज़त का ख़ातिमा और देर तक पेट में "गड़बड़" का बोझ, मज़ीद बोझ बढ़ने पर डॉक्टरों और दवाओं वग़ैरा के अख़्राजात का बोझ। तो यूं सब बोझ, बोझ और बोझ ही है। काश ! चन्द लम्हात की लज़्ज़ात की ख़ातिर ता हयात बोझ और मौत के अवक़ात की बदबू जैसे ख़तरात से बचने का ज़ेहन बनाने में हम काम्याब हो जाते !

इबादत की लज़्ज़त से महरूमी : मन्क़ूल है, "अगर तू पेट भर कर खाने का आदी है तो लज़्ज़ते इबादत की उम्मीद न रख, और इबादत के बिग़ैर दिल में नूर कैसे पैदा हो सकता है ? और अगर इबादत ही बे लज़्ज़त हो तो ऐसी इबादत से दिल में नूर किस तरह आ सकता है ?

(منہاجُ العابدین ص ۱۰۷)

भूक से बेहोशी : हज़रते सय्यिदुना अबू हुरैरा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ फ़रमाते हैं, "मैं ने (भूक के सबब) अपनी येह हालत भी देखी कि मदीने के

ताजवर, महबूबे रब्बे अक्बर صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰی عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم के मिम्बरे मुनव्वर और उम्मुल मुअमिनीन हज़रते सय्यिदतुना आइशा सिद्दीक़ा رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْهَا के हुज्रए मुत़ह्हरा के दरम्यान बेहोश हो कर गिर पड़ता। कोई आदमी आता और मेरी गरदन पर पाउं रख देता। वोह समझता कि मुझ पर जुनून की कैफ़िय्यत त़ारी है हालां कि मुझे जुनून वग़ैरा कुछ न होता येह हालत भूक की वज्ह से होती थी।" (صحیح بخاری ج۸ص۱۹۳،رقم الحدیث ۷۳۲۴)

बख़्श दे मेरी हर ख़त़ा या रब عَزَّوَجَلَّ

फ़ाक़ा मस्तों का वासित़ा या रब

प्यारे प्यारे इस्लामी भाइयो ! हज़रते सय्यिदुना अबू हुरैरा رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْهُ का इल्मी ज़ौक़ था कि सब कुछ छोड़ कर सरवरे कौनैन, रह़मते दारैन, राहते क़ल्बे बेचैन, नानाए ह़सनैन, صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰی عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم के क़दमैन शरीफ़ैन में पड़े रहते थे। फ़ाक़ों पर फ़ाक़े सहते और इल्म ह़ासिल करते थे और आप رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْهُ ही को येह ए'ज़ाज़ ह़ासिल है कि सब से ज़ियादा अह़ादीसे मुबारका आप رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْهُ से मरवी हैं। ख़ूब शिकम सेरी, ख़्वाहिशे नामवरी, ह़िर्सो त़मअ़ और हुब्बे जाह की नुहूसतों की आलूदगियों के साथ ता'लीमो तअ़ल्लुम में रूहानिय्यत के मुतलाशियों को मन्ज़िल मिलना एक अम्रे दुश्वार है। तह़सीले इल्मे दीन में सरापा इख़्लास बन जाइये और **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ की ख़ूब रह़मतें लूटिये। اَلْحَمْدُ لِلّٰهِ عَزَّوَجَلَّ

फ़रमाने मुस्त़फ़ा صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم: उस शख़्स की नाक ख़ाक आलूद हो जिस के पास मेरा ज़िक्र हो और वोह मुझ पर दुरूदे पाक न पढ़े। (ترمذی)

तब्लीग़े क़ुरआनो सुन्नत की आ़लमगीर ग़ैर सियासी तह़रीक **दा'वते इस्लामी** के सुन्नतों की तरबियत के मदनी क़ाफ़िलों के ज़रीए़ भी इ़ल्म ह़ासिल होता और बे शुमार बरकतें नसीब होती हैं। दा'वते इस्लामी के **मदनी क़ाफ़िले की बहार** मुलाह़ज़ा फ़रमाइये।

ना मा'लूम दर्द : एक इस्लामी भाई का बयान है, "मैं दा'वते इस्लामी के आ़लमी मदनी मर्कज़ फ़ैज़ाने मदीना में तरबियती कोर्स के लिये आया हुवा था। इस दौरान एक दिन जुमे'रात को सुब्ह़ तक़रीबन चार बजे पेट की बाईं जानिब अचानक **दर्द** उठा। दर्द इस क़दर शदीद था कि **सात**[7] **इन्जेक्शन** लगे तब आराम आया, ह़स्बे मा'मूल जुमे'रात को होने वाले सुन्नतों भरे इज्तिमाअ़ के लिये (मदनी मर्कज़ फ़ैज़ाने मदीना) में शाम को ह़ाज़िर हुवा। रात दस बजे फिर **दर्द** शुरूअ़ हुवा। मगर इज्तिमाअ़ में मांगी जाने वाली इज्तिमाई दुआ़ के वक़्त ठीक हो गया। एक घन्टे के बा'द फिर बहुत **शदीद दर्द** उठा। डॉक्टर ने **तीन**[3] **इन्जेक्शन** लगाए फिर कुछ इफ़ाक़ा हुवा। अब ह़ालत येह हो गई कि जब भी खाना खाता **दर्द** शुरूअ़ हो जाता। रोज़ाना तीन[3] चार[4] टीके लगते। ड्रिप चढ़ती, अल्ट्रा साउन्ड भी करवाया, मगर डॉक्टरों को दर्द का सबब समझ में न आया। मैं अस्पताल में पड़ा था वहां मुझे मा'लूम हुवा कि मेरे साथ वाले इस्लामी भाई सुन्नतों की तरबियत के मदनी क़ाफ़िले में 12 दिन के लिये सफ़र की तय्यारी कर

रहे हैं, डॉक्टर ने सफ़र से बहुतेरा रोका मगर मुझ से न रहा गया मैं मदनी क़ाफ़िले का मुसाफ़िर बन गया। रास्ते में थोड़ा सा दर्द हुवा, फिर वहां से हम ने जुमे'रात के सुन्नतों भरे इज्तिमाअ़ में शिर्कत की और वापस आ गए। **اَلْحَمْدُ لِلّٰه عَزَّوَجَلَّ मदनी क़ाफ़िले की बरकत से दर्द ऐसा दूर हुवा गोया कभी था ही नहीं।** और اَلْحَمْدُ لِلّٰه عَزَّوَجَلَّ ता हाल मुझे दोबारा वोह तक्लीफ़ नहीं हुई। **और सब से बड़ी सआदत येह मिली कि मुझे मदनी क़ाफ़िले में ख़्वाब के अन्दर मदीने के ताजदार صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم का दीदार हो गया।**

लूटने रहमतें क़ाफ़िले में चलो सीखने सुन्नतें क़ाफ़िले में चलो
दर्दे सर हो अगर दुख रही हो कमर पाओगे सिह़्ह़तें क़ाफ़िले में चलो
है तलब दीद की, दीद की ईद की क्या अ़जब वोह दिखें क़ाफ़िले में चलो

दा'वते इस्लामी के सुन्नतों की तरबियत के **मदनी क़ाफ़िलों** में सफ़र और रोज़ाना **फ़िक्रे मदीना** के ज़रीए **मदनी इन्आ़मात** का रिसाला पुर कर के हर मदनी माह की पहली तारीख़ अपने यहां के ज़िम्मेदार को जम्अ़ करवाने का मा'मूल बना लीजिये। اِنْ شَآءَ اللّٰه عَزَّوَجَلَّ इस की बरकत से पाबन्दे सुन्नत बनने, गुनाहों से नफ़रत करने और **ईमान की हिफ़ाज़त** के लिये कुढ़ने का ज़ेहन बनेगा।

फ़रमाने मुस्तफ़ा صَلَّى اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم : जिस के पास मेरा ज़िक्र हुवा और उस ने मुझ पर दुरूदे पाक न पढ़ा तहक़ीक़ वोह बद बख़्त हो गया। (ابن سنی)

काश ! भूक ख़रीदी जा सकती : हज़रते सय्यिदुना यह्या बिन मुआज़ رَحْمَۃُ اللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہ फ़रमाते हैं, "अगर भूक बाज़ार में बिकती होती तो आख़िरत के त़लब गार ज़रूर उस की ख़रीदारी किया करते।" (رسالۃ القشیریہ ص ۱۴۱)

हर त़रफ़ खाना ख़रीदा जा रहा है : अल्लाह ! अल्लाह ! औलियाए किराम رَحِمَھُمُ اللّٰہُ تَعَالٰی के मदनी ज़ेहन की भी क्या बात है ! हज़रते सय्यिदुना यह्या बिन मुआज़ رَحْمَۃُ اللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہ "भूक" ख़रीदने की बात फ़रमा रहे हैं। जब कि नादान लोगों में ज़ियादा खाने के बा क़ाइदा मुक़ाबले किये जा रहे हैं, जो सब से ज़ियादा खाना खा लेता है वोह बहुत बड़ा बहादुर तसव्वुर किया जाता है ! अफ़्सोस ! सद करोड़ अफ़्सोस ! आजकल लोग पैसे दे दे कर खाने की बाज़ारी अश्या और उन के साथ साथ त़रह़ त़रह़ के "अमराज़" ख़रीदने में मसरूफ़ हैं। हर त़रफ़ खाने पीने की चीज़ों की ख़रीदारी की धूम है। **फ़ूड कल्चर** का दौर दौरा है। एक एक मह़ल्ले में कई कई रेस्तोरान खुले हुए हैं। हर सू होटलें जगमगा रही हैं, चहार जानिब कबाब समोसे के बस्ते, दही भल्ले और आलू छोले के ख़्वान्चे मुस्कुराते नज़र आ रहे हैं। चारों त़रफ़ सीख़ कबाब और चिकन तिक्कों की ख़ुश्बूएं फैली हुई हैं। आइसक्रीम और सोडा लेमन की बोतलों की दुकानों की ख़ूब बहारें हैं। ज़रूरत मन्द ख़रीदारों के साथ साथ कई लोग फ़क़त़ नफ़्स की लज़्ज़त की ख़ातिर खाने पीने की चीज़ों पर बे ताबाना मंडला रहे हैं। जो हाथ में आया फांक रहे हैं। जो मिला हड़प कर

रहे हैं। न किसी को दुन्यवी नुक़्सान की फ़िक्र, न बीमारी की परवा और न ही आख़िरत के ह़िसाब की पड़ी है, हर एक की आरज़ू है खाऊं, खाऊं और बस खाऊं और खाता ही चला जाऊं गोया हर त़रफ़ से सदाएं बुलन्द हो रही हैं :

खाओ पियो, जान बनाओ !

काश ! सरकारे नामदार صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم सह़ाबए किराम व शहीदाने करबला عَلَيْهِمُ الرِّضْوَان और औलियाए किराम رَحِمَهُمُ اللّٰهُ تَعَالٰى की मुबारक भूक हमें याद रहती। आह ! आह ! आह ! हम "खाऊं खाऊं" के ना'रे लगा रहे हैं और उन मुक़द्दस हस्तियों की त़रफ़ से "भूक भूक" के पैग़ामात मिल रहे हैं। हम अगर्चे हर दम खाने पीने में मश्ग़ूल हैं मगर कोई तो बात है कि तमाम अम्बिया, सह़ाबा और औलिया عَلَيْهِمُ الرِّضْوَان की जानिब से **कम खाने** का दर्स मिल रहा है।

शौक़ खाने का बढ़ चला या रब عَزَّوَجَلَّ *!*
नफ़्स का दाव चल गया या रब عَزَّوَجَلَّ *!*
ख़ूब खाने की ख़ू मिटा या रब عَزَّوَجَلَّ *!*
नेक बन्दा मुझे बना या रब عَزَّوَجَلَّ *!*

ज़ियादा खाना कुफ़्फ़ार की सिफ़त है : प्यारे प्यारे इस्लामी भाइयो ! सिर्फ़ लज़्ज़ते नफ़्स के लिये कोई चीज़ खाना अच्छा नहीं। सदरुश्शरीअ़ह, बदरुत्त़रीक़ह, ह़ज़रते अ़ल्लामा मौलाना मुफ़्ती मुह़म्मद अमजद अ़ली आ'ज़मी رَحْمَةُ اللّٰهِ تَعَالٰى عَلَيْه फ़रमाते

हैं : क़ुरआने करीम में **कुफ़्फ़ार की सिफ़त** येह बयान की गई है कि खाने से उन का मक़्सूद तलज़्ज़ुज़ो तनअ़ुम (या'नी सिर्फ़ लुत्फ़ो लज़्ज़त उठाना) होता है और ह़दीसे पाक में कस्रते ख़ोरी (या'नी ज़ियादा खाना) कुफ़्फ़ार की सिफ़त बताई गई है।

(माख़ूज़ अज़ बहारे शरीअ़त, हिस्सा : 16, स. 30)

"खाऊं खाऊं" की ख़ू निकल जाए
नक़्ले कुफ़्फ़ार से बचा या रब

भूक में त़ाक़त : ह़ज़रते सय्यिदुना सहल बिन अ़ब्दुल्लाह رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ की ह़ालत येह थी जब भूके होते तो **त़ाक़त वर** होते मगर जब कुछ खा लेते तो **कमज़ोर** हो जाते ! (رسالة القشيريّه ص١٤٢)

किसी फ़ारसी शाइ़र ने कितनी प्यारी बात कही है

اگر لذّتِ ترکِ لذّت بدانی
دِگر لذّتِ نفس، لذّت نخوانی

(या'नी अगर तू लज़्ज़तों को छोड़ने की लज़्ज़त जान ले तो फिर नफ़्स की लज़्ज़त को कभी लज़्ज़त न जाने)

ह़ुसूले तसव्वुफ़ : ह़ज़रते सय्यिदुना जुनैद बग़दादी عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللّٰهِ الْهَادِی फ़रमाते हैं, "हम ने तसव्वुफ़ को क़ीलो क़ाल (या'नी बह़्सो मुबाह़से) से नहीं बल्कि भूक, दुन्या से दूरी और लज़्ज़ते नफ़्सानी को तर्क कर के ह़ासिल किया है। (सब्ए़ सनाबिल मुतर्जम, स. 241)

मैं सब से बुरा हूं : ह़ज़रते सय्यिदुना उ़स्माने ग़नी رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ फ़रमाते हैं, नेक बन्दे की पांच[5] निशानियां हैं : (1) अच्छी सोह़बत में रहता है (2) ज़बान व शर्मगाह की ह़िफ़ाज़त करता है (3) दुन्या की ने'मत को वबाल और दीनी ने'मत को फ़ज़्ले रब्बे ज़ुल जलाल तसव्वुर करता है (4) ह़लाल खाना भी इस ख़ौफ़ से पेट भर कर नहीं खाता कि इस में कहीं ह़राम न मिला हुवा हो। (5) अपने इ़लावा सब मुसल्मानों को नजात याफ़्ता तसव्वुर करता और ख़ुद को गुनहगार समझते हुए अपनी हलाकत का ख़त़रा मह़सूस करता है।

(اَلْمُنَبِّھات لِلْعَسْقَلانی بابُ الخماسی ص٥٩)

हाए ! ह़ुस्ने अ़मल नहीं पल्ले   ह़श्र में होगा क्या मेरा या रब
ख़ौफ़ आता है नारे दोज़ख़ से   हो करम बह़रे मुस्त़फ़ा या रब

भूक से गिर पड़ते : ह़ज़रते सय्यिदुना फ़ज़ाला बिन उ़बैद رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ फ़रमाते हैं, "ह़बीबे किब्रिया, सरदारे हर दो सरा, इमामुल अम्बिया صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم जब लोगों को नमाज़ पढ़ाते तो कुछ सह़ाबा عَلَیْہِمُ الرِّضْوَان नमाज़ के अन्दर ह़ालते क़ियाम में भूक की शिद्दत के सबब गिर पड़ते, और येह अस्ह़ाबे सुफ़्फ़ा होते, ह़त्ता कि आ'राबी कहने लगते, "येह लोग दीवाने हैं," जब सरकारे मदीना صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم नमाज़ से फ़ारिग़ होते तो उन की त़रफ़ मुतवज्जेह हो कर फ़रमाते, "अगर तुम्हें

मा'लूम हो जाए कि तुम्हारे लिये **अल्लाह** तआ़ला के हां क्या (अज्रो सवाब) है तो तुम इस बात को पसन्द करो कि तुम्हारे फ़ाक़े और ह़ाजत मन्दी में मज़ीद इज़ाफ़ा हो। (جامع ترمذی ج ۴ ص ۱۶۲ رقم الحدیث ۲۳۷۵)

फ़ाक़ा मस्ती की धुन मिले या रब

दिल का मुरझाया गुल खिले या रब

कई कई रोज़ का फ़ाक़ा : सह़ाबए किराम عَلَيْهِمُ الرِّضْوَان और औलियाए इज़ाम رَحِمَهُمُ اللهُ تَعَالٰی में से बा'ज़ कई कई रोज़ तक नहीं खाते थे। चुनान्चे हुज्जतुल इस्लाम इमाम मुह़म्मद ग़ज़ाली عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللهِ الْوَالِی फ़रमाते हैं, ह़ज़रते सय्यिदुना सिद्दीक़े अक्बर رَضِیَ اللهُ تَعَالٰی عَنْهُ छ[6] दिन तक कुछ तनावुल न फ़रमाते, ह़ज़रते सय्यिदुना अ़ब्दुल्लाह बिन ज़ुबैर رَضِیَ اللهُ تَعَالٰی عَنْهُ सात[7] दिन तक न खाते, ह़ज़रते सय्यिदुना अ़ब्दुल्लाह इब्ने अ़ब्बास رَضِیَ اللهُ تَعَالٰی عَنْهُمَا के शागिर्दे रशीद ह़ज़रते अबुल जौज़ाअ رَضِیَ اللهُ تَعَالٰی عَنْهُ सात[7] दिन भूके रहते, ह़ज़रते सय्यिदुना इब्राहीम बिन अदहम और ह़ज़रते सय्यिदुना सुफ़्यान सौरी رَحِمَهُمُ اللهُ تَعَالٰی हर तीन[3] दिन के बा'द खाना तनावुल फ़रमाते। येह तमाम ह़ज़रात भूक के ज़रीए आख़िरत के रास्ते पर चलने में मदद ह़ासिल करते थे। (اِحیاءُ الْعُلُوم ج ۳ ص ۹۸)

फ़ाक़ा मस्तों का वासित़ा मौला عَزَّوَجَلَّ

बख़्श दे मेरी हर ख़त़ा मौला عَزَّوَجَلَّ

साल भर का फ़ाक़ा : प्यारे प्यारे इस्लामी भाइयो ! कई कई रोज़ तक भूका रहना हर एक के बस का रोग नहीं, येह उन्हीं ह़ज़रात का ह़िस्सा, और उन की **करामत** थी। ह़क़ीक़त येह है कि उन्हें **रूह़ानी ग़िज़ा** ह़ासिल थी। **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ की अ़त़ा से बा'ज़ औलियाए किराम رَحِمَهُمُ اللّٰهُ تَعَالٰی चालीस40 चालीस40 दिन तक नहीं खाते थे बल्कि हमारे ग़ौसुल आ'ज़म رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْه ने बा'ज़ अवक़ात एक **एक साल** बिग़ैर खाए पिये गुज़ारा है। शहन्शाहे बग़दाद हमारे ग़ौसे पाक رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْه को **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ ख़ुद खिलाता पिलाता था। चुनान्चे मेरे आक़ा आ'ला ह़ज़रत رَحْمَةُ اللّٰهِ تَعَالٰی عَلَیْه का एक मुबारक शे'र है :

क़समें दे दे के खिलाता है पिलाता है तुझे
प्यारा अल्लाह عَزَّوَجَلَّ ***तेरा चाहने वाला तेरा***

(ह़दाइक़े बख़्शिश)

बिग़ैर खाए पिये आदमी कितने दिन ज़िन्दा रहता है : त़वील अ़र्से तक न खाने पीने के बा वुजूद जीने और ज़िन्दगी के मा'मूलात में फ़र्क़ न आने के मुआ़मलात "ख़वास" के हैं, उन्हें रूह़ानी ग़िज़ाएं मिलती हैं। "अ़वाम" इन त़वील फ़ाक़ों के मुतह़म्मिल नहीं हो सकते। अगर कोई जज़्बात में आ कर फ़ाक़ा शुरूअ़ कर भी दे तो चन्द रोज़ के बा'द हौसला हार जाए और फिर शायद आयिन्दा हिम्मत भी न कर सके। एक डॉक्टर की तह़क़ीक़ के मुत़ाबिक़ बिग़ैर कुछ खाए 18 दिन और अगर बहुत त़ाक़त

वर हो तो ज़ियादा से ज़ियादा **25** दिन नीज़ बिग़ैर पानी पिये तीन[3] दिन और ऑक्सिजन के बिग़ैर एक मिनट से ले कर ज़ियादा से ज़ियादा पांच[5] मिनट तक इन्सान ज़िन्दा रह सकता है।

अ़वाम कितना खाए ? : आ़म आदमी के लिये इतना भी ख़ूब है कि वोह अगर ज़ियादा खाने का आ़दी है तो रिज़ाए इलाही عَزَّوَجَلَّ ह़ासिल करने के लिये "**पेट का क़ुफ़्ले मदीना**" लगाते हुए ब तदरीज कम करते करते एक तिहाई पेट भर जाए इतनी ख़ूराक पर किफ़ायत करना सीख ले। اِنْ شَآءَاللّٰه عَزَّوَجَلَّ भूक की बरकतें भी ह़ासिल होंगी, कमज़ोरी भी नहीं होगी और ह़ैरत अंगेज़ त़ौर पर सिह़्ह़त भी बेहतर हो जाएगी नीज़ डॉक्टरों की बड़ी बड़ी फ़ीसों और दवाओं के ख़र्चों से भी तक़रीबन जान छूट जाएगी। यक़ीन न आता हो तो तजरिबा कर के देख लीजिये।

मेरी डट के खाने की आ़दत मिटा दे

मुझे मुत्तक़ी तू बना या इलाही

बीमार दिल की दवाएं : ह़ज़रते सय्यिदुना अ़ब्दुल्लाह अन्त़ाकी رَحْمَةُ اللّٰهِ تَعَالٰی عَلَيْه फ़रमाते हैं, बीमार दिल की पांच[5] दवाएं है।" (1) नेकों की सोह़बत (2) तिलावते क़ुरआन (3) कम खाना (4) तहज्जुद की पाबन्दी (5) रात के आख़िरी ह़िस्से में गिर्या व ज़ारी।

(اَلْمُنَبِّهَات لِلْعَسْقَلَانِی بَابُ الْخَمَاسِی ص ٦٠)

एक हज़ार साल जीने वाला परिन्दा : मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! अफ़्सोस ! सद करोड़ अफ़्सोस ! बा'ज़ लोग इतना ज़ियादा खा डालते हैं कि पेट भी अल अमान अल अमान पुकार उठता है और हाथों हाथ सुस्ती आ जाती है। चलना तो एक त़रफ़ रहा उठना तक दुश्वार हो जाता है। यहां शायद **गिध** की मिसाल दी जा सकती है कि **गिध** जब किसी मुर्दार को खाने के लिये उतरता है तो उस की हैबत से दूसरा कोई परिन्दा क़रीब भी नहीं फटक्ता मगर इतना ज़ियादा खा लेता है कि उस के लिये उड़ना मुश्किल हो जाता है यहां तक कि अगर इस ह़ालत में उसे कोई कमज़ोर शख़्स (बल्कि बच्चा) भी पकड़ना चाहे तो पकड़ सकता है। देखा आप ने ! **पेट का क़ुफ़्ले मदीना** न लगाना या'नी बहुत ज़ियादा खा डालना मुर्दार ख़ोर गिध की सिफ़त है। **गिध एक हज़ार साल तक ज़िन्दा रह जाता है,** बदबू उसे बहुत पसन्द है। ख़ुश्बू से सख़्त नफ़रत करता है अगर ख़ुश्बू सूंघ ले तो मर जाता है। ह़ज़रते सय्यिदुना इमामे ह़सन رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْهُ का इर्शाद है, "गिध जब बोलता है तो कहता है, "ऐ आदमी ! जितना चाहे जी ले, आख़िर एक दिन मौत आ कर रहेगी।"

(حیاۃ الحیوان الکبرٰی ج۲ ص۴۷۴)

मौत आ कर ही रहेगी याद रख जान जा कर ही रहेगी याद रख

क़ब्र में मय्यित उतरनी है ज़रूर

जैसी करनी वैसी भरनी है ज़रूर

दा'वते इस्लामी के सुन्नतों की तरबियत के **मदनी क़ाफ़िलों** में सफ़र और रोज़ाना **फ़िक्रे मदीना** के ज़रीए **मदनी इन्आमात** का रिसाला पुर कर के हर मदनी माह की पहली तारीख़ अपने यहां के ज़िम्मेदार को जम्अ़ करवाने का मा'मूल बना लीजिये। اِنْ شَآءَاللّٰه عَزَّوَجَلَّ इस की बरकत से पाबन्दे सुन्नत बनने, गुनाहों से नफ़रत करने और **ईमान की हिफ़ाज़त** के लिये कुढ़ने का ज़ेहन बनेगा।

मच्छर ऊंट को क़त्ल कर देता है : प्यारे प्यारे इस्लामी भाइयो ! लज़्ज़त की हिर्स बाइसे हलाकत होती है, **मच्छर** इन्सानी ख़ून का ह़रीस होता है, येह ख़ून की रग की ऊपरी जिल्द पर जो कि निस्बतन नर्म होती है बैठ कर अपनी ख़ुरतूम (या'नी खोखली सूंड) गाड़ कर ख़ून चूसने में मश्ग़ूल हो जाता है, बा'ज़ अवक़ात इतना ज़ियादा पी लेता है कि उड़ने से मा'ज़ूर हो जाता है या उस का पेट ही फट जाता और मर जाता है ! **मच्छर** में **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ ने येह क़ुव्वत रखी है कि बसा अवक़ात **ऊंट** को क़त्ल कर देता है। बल्कि हर चौपाए को क़त्ल करने की सलाहिय्यत रखता है। **मच्छर** के डंक से हलाक शुदा जानवर को जो भी दरिन्दा या परिन्दा खा लेता है वोह भी फ़ौरन मर जाता है। क़दीम ज़माने में शाहाने इराक़ के यहां **सज़ाए मौत** का इन्तिहाई अज़िय्यत नाक त़रीक़ा था और वोह येह कि मुजरिम को बरहना बांध कर **मच्छर** की नालियों के पास डाल देते और

वोह मच्छरों के बार बार डसने के बाइस पछाड़ें खा खा कर बिल आख़िर दम तोड़ देता (नमरूद को भी मच्छर ही ने हलाक किया था।)

(حیاۃُ الحیوان الکبرٰی ج اول ص ۱۸۴)

मोटा मच्छर : हज़रते सय्यिदुना रबीअ़ बिन अनस رَحْمَةُ اللّٰهِ تَعَالٰى عَلَيْه फ़रमाते हैं, "मच्छर जब तक भूका रहे ज़िन्दा रहता है और जब खा पी कर सेर हो जाए तो **मोटा** हो जाता है और जब मोटा हो जाता है तो मर जाता है। येही ह़ाल आदमी का है कि जब वोह दुन्या की ने'मतों से मालामाल होता है तो उस का दिल मुर्दा हो जाता है। (تنبیہ المغترین ص ۵۴)

प्यारे प्यारे इस्लामी भाइयो ! मच्छर तो **मोटा** होते ही मौत के घाट उतर जाता और ख़ाक में मिल जाता है मगर आह ! इन्सान जब **जानदार** हो जाता है तो बा'ज़ अवक़ात त़रह़ त़रह़ की आफ़तों से दुन्या ही में दो चार होता और त़रह़ त़रह़ के गुनाहों में पड़ कर **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ व रसूल صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم की नाराज़गी की सूरत में नज़्अ़ व क़ब्र व ह़श्र की होलनाकियों और जहन्नम के दर्दनाक अ़ज़ाबों में गिरिफ़्तार हो जाता है। चुनान्चे

जानदार बदन की आफ़तें : हज़रते सय्यिदुना यह़्या मुआ़ज़ राज़ी رَحْمَةُ اللّٰهِ تَعَالٰى عَلَيْه फ़रमाते हैं, "जो **पेट भर कर खाने का आ़दी** हो जाता है उस के बदन पर **गोश्त** बढ़ जाता है और जिस के बदन पर **गोश्त** बढ़

जाता है वोह **शह्वत** परस्त हो जाता है और जो शह्वत परस्त हो जाता है उस के **गुनाह** बढ़ जाते हैं और जिस के गुनाह बढ़ जाते हैं उस का दिल सख़्त हो जाता है। और जिस का दिल सख़्त हो जाता है वोह दुन्या की आफ़तों और रंगीनियों में ग़र्क़ हो जाता है।

(اَلْمُنَبِّهات لِلْعَسْقَلانی بابُ الخماسی ص۵۹)

खाने की ह़िर्स से तू या रब عَزَّ وَجَلَّ *नजात दे दे*

अच्छा बना दे मुझ को अच्छी सिफ़ात दे दे

पेटू पर गुनाहों की यलग़ार : प्यारे प्यारे इस्लामी भाइयो ! वल्लाह عَزَّوَجَلَّ ! तश्वीश सख़्त तश्वीश की बात है कि पेट भर कर खाना गुनाहों में इन्सान को ग़र्क़ कर देता है। चुनान्चे ह़ज़रते सय्यिदुना इमाम मुह़म्मद ग़ज़ाली عَلَیْہِ رَحمَۃُ الْوَالِی इर्शाद फ़रमाते हैं, ज़ियादा खाने से आ'ज़ा में फ़ितना पैदा होता और फ़साद बरपा करने और बेहूदा काम कर गुज़रने की रग़बत जनम लेती है क्यूं कि जब इन्सान ख़ूब पेट भर कर खाता है तो उस के जिस्म में तकब्बुर और आंखों में **बद निगाही** की ख़्वाहिश पैदा होती है, कान बुरी बातें सुनने के मुश्ताक़ रहते हैं। ज़बान **फ़ोह़्श गोई** पर आमादा होती है। शर्मगाह शह्वत रानी का तक़ाज़ा करती है, पाउं ना जाइज़ मक़ामात की त़रफ़ चल पड़ने के लिये बे क़रार होते हैं। इस के बर अ़क्स अगर इन्सान भूका हो तो तमाम आ'ज़ाए बदन पुर सुकून रहेंगे। न तो किसी बुराई का लालच करेंगे और न बुराई को देख कर ख़ुश होंगे।

फ़रमाने मुस्तफ़ा صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم : तुम जहां भी हो मुझ पर दुरूद पढ़ो कि तुम्हारा दुरूद मुझ तक पहुंचता है। (طبرانی)

मक्कतुल मुकर्रमा मदीनतुल मुनव्वरा जन्नतुल बक़ीअ़

हज़रते उस्ताज़ अबू जा'फ़र عَلَیْہِ رَحْمَۃُ اللّٰہِ الْاَکْبَر का इर्शादे गिरामी है, "पेट अगर भूका हो तो जिस्म के बाक़ी आ'ज़ा सेर या'नी पुर सुकून होते हैं, किसी शै का मुतालबा नहीं करते। और अगर पेट भरा हुवा हो तो दूसरे आ'ज़ा भूके रह जाने के बाइस मुख़्तलिफ़ बुराइयों की त़रफ़ रुजूअ़ करते हैं।" (منہاجُ العابِدین ص ۹۲)

हलके बदन की फ़ज़ीलत : हज़रते सय्यिदुना अ़ब्दुल्लाह इब्ने अ़ब्बास رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُمَا से रिवायत है, नबिय्ये करीम, रऊफ़ुर्रह़ीम عَلَیْہِ اَفْضَلُ الصَّلٰوۃِ وَالتَّسْلِیْم ने इर्शाद फ़रमाया, "**अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ को तुम में सब से ज़ियादा वोह बन्दा पसन्द है जो कम खाने वाला और ख़फ़ीफ़ (या'नी हलके) बदन वाला है। (الجامِعُ الصَّغیر ص ۲۰ رقم الحدیث ۲۲۱)

मर्द व औ़रत का वज़्न कितना होना चाहिये ? : ज़ियादा खाने की एक आफ़त जिस्म का वज़्न बढ़ जाना और तोंद निकल आना भी है और आज एक ता'दाद इस मरज़ में मुब्तला है। वज़्न की मिक्दार अपने अपने क़द के लिहाज़ से होती है। औसत क़द (साढ़े पांच फ़ुट या'नी 66 इन्च) वाले मर्द का वज़्न 150 पाउन्ड (68 Kg.) और औसत औ़रत (सवा पांच फ़ुट या'नी 63 इन्च) का 130 पाउन्ड (या'नी 59 Kg.) से हरगिज़ बढ़ना नहीं चाहिये। अपना क़द नाप कर दिये हुए अन्दाज़े के मुत़ाबिक़ जो कोई चाहे अपने वज़्न का हि़साब लगा सकता है।

सय्यिदुना यूसुफ़ عَلَيْهِ السَّلَام का वज़्न : जो जितना दराज़ क़द हो उस हिसाब से उस का वज़्न भी ज़ियादा होना ज़रूरी है, पहले के दौर में क़द बहुत बड़ा हुवा करता था इसी हिसाब से वज़्न भी ज़ियादा होता था, चुनान्चे मुफ़स्सिरे शहीर मुफ़्ती अह़मद यार ख़ान عَلَيْهِ رَحْمَةُ الْمَنَّان फ़रमाते हैं, "अज़ीज़े मिस्र ने बाज़ारे मिस्र में ह़ज़रते सय्यिदुना यूसुफ़ عَلٰى نَبِيِّنَا وَعَلَيْهِ الصَّلٰوةُ وَالسَّلَام को इस त़रह़ ख़रीदा कि आप عَلَيْهِ السَّلَام के वज़्न के बराबर सोना, उतनी ही चांदी, उतना ही ततारी मुश्क, उतने ही मोती, और उतना ही रेशमी कपड़ा दिया। उस वक़्त आप عَلَيْهِ السَّلَام का वज़्न चार सो रत़ल" (एक रत़ल आधे सेर के बराबर होता है इस हिसाब से) पांच मन था और उ़म्र शरीफ़ **बारह बरस** थी। (नूरुल इरफ़ान, स. 378) आप عَلَيْهِ السَّلَام सुडोल और इन्तिहाई ह़सीन थे। और आप عَلَيْهِ السَّلَام अपने वज़्न के मुत़ाबिक़ यक़ीनन क़दआवर भी थे।

मोटापे के अस्बाब : याद रहे! जो बेचारा इस मरज़ में मुब्तला हो उस पर हंसना, त़न्ज़ करना या बिला इजाज़ते शरई किसी त़रह़ भी दिल आज़ारी का बाइस बनना ह़राम और जहन्नम में ले जाने वाला काम है। नीज़ येह ज़रूरी भी नहीं कि सिर्फ़ खाने पीने की कसरत के सबब पेट निकला हो। कई ठूंस कर खाने वाले भी दुबले पतले होते हैं ! बहर कैफ़ बैठ कर देर तक लिखने पढ़ने या दफ़्तरी कामकाज करने, पैदल चलने के

बजाए सिर्फ़ स्कूटर या कार वग़ैरा में सफ़र करने, चार ज़ानू या'नी चोकड़ी मार कर बैठ कर खाने, मेज़ कुरसी पर पाउं लटका कर खाने, ज़ियादा गर्म खाने, बदन का वज़्न अक्सर बाईं त़रफ़ डालने मसलन बैठे हुए या खाना खाते हुए बायां हाथ ज़मीन पर टेकने, दीवार वग़ैरा पर बाईं त़रफ़ सहारा लेने की आ़दत वग़ैरा से भी पेट और वज़्न बढ़ सकते हैं। जो **पेट का क़ुफ़्ले मदीना** नहीं लगाता या'नी ख़ूब पेट भर कर खाता है, पिज़्ज़ा (PIZZA) पराठा और हर त़रह़ की मुरग़्ग़िन (या'नी तेल घी से तर बतर) ग़िज़ाएं हड़प कर जाता है। आइसक्रीम और ठन्डे मश्रूबात भी पेट में उंडेलता रहता है और उस का वज़्न भी ज़ियादा और पेट भी निकला हुवा है तो उस को समझ लेना चाहिये कि मैं ने ख़ुद ही अपना वज़्न बढ़ा रखा है। लोग शायद ठन्डी बोतलों को बे ज़रर समझते होंगे ह़ालां कि 250 मिली लीटर की एक **ठन्डी बोतल में तक़रीबन सात[7] चम्मच चीनी होती है,** और आईसक्रीम तो अच्छा ख़ास्सा "**शूगर बम**" है। वज़्न दार आदमी को तो **ठन्डी बोतल** और **आइसक्रीम** की त़रफ़ देखना भी नहीं चाहिये कि येह उस के ह़क़ में मीठा ज़ह्र है ! ख़ुसूसन तीन[3] चीज़ें बदन का वज़्न बढ़ाती हैं : (1) मैदा (2) चिक्नाहट (3) मिठास। हमारी तक़रीबन हर ग़िज़ा में येह तीनों चीज़ें पाई जाती हैं। एक ह़द तक जिस्मे इन्सानी के लिये इन का होना भी ज़रूरी है जिस के ख़ून में शूगर बढ़ जाए वोह भी मरीज़, और जिस के ख़ून में शूगर ज़रूरत से कम हो जाए वोह भी

मरीज़ होता है। तो जो डट कर खाने वाला होगा उस के पेट में इन तीनों चीज़ों के अज्ज़ा ज़रूरत से ज़ियादा मिक़्दार में जाएंगे और हो सकता है यूं बदन का वज़्न भी बढ़ता चला जाए और इस वज्ह से कई बीमारियां भी दस्तक देती रहें। बा'ज़ लोगों की क़ुदरती तौर पर साख़्त इस त़रह़ होती है कि वोह जितना भी खाएं बदन नहीं बढ़ता दुबले पतले ही रहते हैं, इस का मत़लब हरगिज़ येह नहीं कि उन को ज़ियादा खाना नुक़्सान नहीं करता। उन को भी ज़ियादा खाने से पेट की ख़राबी और दिल की बीमारी वग़ैरा की शिकायत हो सकती है। दिल के अमराज़ का तअ़ल्लुक़ अगर्चे ज़ियादा खाने से है। मगर तफ़क्कुरात (TENSION) के सबब भी दिल का दौरा पड़ सकता और इन्सान का हार्ट फ़ेल हो सकता है। अगर **जवानी** ही से मैदा, चिक्नाहट और मिठास वाली चीज़ों का इस्ति'माल कम कर दिया जाए तो ज़िन्दा बच जाने की सूरत में **बुढ़ापे** में सहूलत हो सकती है।

जवानी की ता'रीफ़ : लुग़ात की कुतुब के मुत़ाबिक़ (बालिग़ होने से ले कर) 30 या 40 बरस तक आदमी जवान रहता है। 30 या 50 बरस जवानी और बुढ़ापे का दरम्यानी वक़्फ़ा या'नी **अधेड़** और इस के बा'द **बुढ़ापा** आ जाता है। बेहतर तो येही है कि एक दिन के बच्चे की ग़िज़ा में भी एह़तियात़ हो नीज़ बालिग़ होते ही परहेज़ी की त़रफ़ तवज्जोह बढ़ा दी जाए अगर 30 बरस का हो जाने के बा वुजूद जो हाथ में आया वोह खाता रहा तो उस का नुक़्सान ख़ुद ही देखना शुरूअ़ कर देगा। अब जूं जूं उ़म्र

बढ़ती जाएगी बीमारियां जड़ पकड़ना शुरूअ़ कर देंगी। अगर कोई 50 साल का हो जाए फिर भी हर चीज़ खाए तो वोह ऐसा है गोया कह रहा है, "आ बैल मुझे मार" ऐसों का शूगर, कोलेस्ट्रोल वग़ैरा से बचना बहुत मुश्किल होता है। 30 बरस की उ़म्र के बा'द उ़मूमन ख़ून में अमराज़ पैदा होने शुरूअ़ हो जाते हैं। लिहाज़ा हर 6 माह बा'द मुख़्तलिफ़ टेस्ट करवाते रहना मुफ़ीद है और अगर कुछ मरज़ निकल आए तो इलाज के साथ साथ हर डेढ़ माह बा'द उस का टेस्ट हो जाना चाहिये। येह सोच कर टेस्ट न करवाना बहुत बड़ी भूल है कि कुछ निकला तो टेन्शन होगा। येह ज़ेहन में रखिये कि मरज़ की त़रफ़ से ला परवाही बरत्ना मरज़ का इलाज नहीं। येह ला परवाही आगे चल कर सख़्त नुक़्सान का बाइ़स बन सकती है। बाक़ी बेचारे कई इस उ़म्र के लोगों का आए दिन अचानक हार्ट फ़ेल हो ही रहा है। लक़्वा और फ़ालिज की शिकायात भी आ़म हैं। **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ हम सब की ह़िफ़ाज़त फ़रमाए और हमें आज़्माइश में न डाले।

اٰمِين بِجاهِ النَّبِيِّ الْاَمين صَلَّى اللهُ تعالىٰ عليه واٰلهٖ وسلَّم

पिज़्ज़ा के नुक़्सानात : पिज़्ज़े और तेल घी वाले दीगर बाज़ारी खाने (FAST FOOD) तेज़ी से मोटापा लाते हैं। येह सिह़्ह़त के लिये इन्तिहाई मुज़िर हैं, बाज़ारी खानों में उ़मूमन घटिया और कई कई रोज़ की बासी अश्या भी इस्ति'माल कर ली जाती हैं। बिल ख़ुसूस मौसिमे गर्मा

में पकी पकाई बासी अश्या को जल्द फफूंदी या'नी (FUNGUS) नामी जरासीम की तह लग जाती है। जिस के सबब फ़ूड पोइज़न का शिकार हो कर बीमार या मौत से हम कनार होने का अन्देशा रहता है। अ़रब अमारात जहां होटलों के खानों का मे'यार काफ़ी बुलन्द माना जाता है वहीं के इंग्लिश अख़्बार "ख़लीज टाइम्ज़" के 4 अगस्त 2004 के शुमारे में एक तन्क़ीदी मज़्मून शाएअ़ हुवा जिस में मुत्तहिदा अ़रब अमारात के दारुल ख़िलाफ़ा अबू ज़हबी के होटलों के फ़ास्ट फ़ूड या'नी तेल घी वाले तय्यार खानों और बिल ख़ुसूस पिज़्ज़ा (PIZZA) की काफ़ी मज़म्मत की गई थी। अख़्बारी बयान का ख़ुलासा है : अबू ज़हबी के अक्सर अस्पताल और दवाख़ानों में हफ़्ते के तीन[3] या चार[4] मरीज़ ऐसे आ रहे हैं जिन को पिज़्ज़ा वग़ैरा खाने की वज्ह से फ़ूड पोइज़न हुवा होता है। उन के अमराज़ में **उल्टियां, दस्त, बद हज़्मी, बुख़ार, कमज़ोरी** और **बहुत ज़ियादा सुस्ती** वग़ैरा शामिल हैं। एक डॉक्टर का कहना है, "पिछले हफ़्ते मेरे पास तीन[3] मरीज़ आए तीनों ने पिज़्ज़ा खाया था, उन में से एक मरीज़ दो[2] दिन तक दाख़िल रहा। उस मज़्मून में और भी डॉक्टरों के बयानात शामिल थे। सभी की राय का ख़ुलासा येही सामने आया के **बाज़ारी ग़िज़ाएं और पिज़्ज़ा वग़ैरा खाना बीमारी को हाथों हाथ गले लगाना है।**

मीठे मीठे इस्लामी भाइयो! पिज़्ज़ा, फ़ास्ट फ़ूड और मुरग़्ग़न ग़िज़ाएं खाने से ख़ून में कोलेस्ट्रोल की मिक़्दार बढ़ती है। कोलेस्ट्रोल के

असरात शिरयानों (या'नी ख़ून की छोटी छोटी रगों) को सख़्त और तंग भी करते हैं, जिस से बराहे रास्त दिल को नुक़्सान पहुंचने का हर वक़्त इम्कान रहता है। अगर मरीज़ को साथ में शूगर भी हो और वोह सिगरेट का भी आ़दी हो तो **STROKE** या'नी चकरा कर गिरने या हार्ट अटेक का ख़त़रा मज़ीद बढ़ जाता है। जिस्मानी सिह़्ह़त के लिये सादा और ताज़ा ख़ूराक और वज़्न का तनासुब सह़ीह़ रखना बहुत ज़रूरी है कि इस से मोटापा और ग़ैर ज़रूरी कालेस्ट्रोल को रोकने में मदद मिलती है।

एक पिज़्ज़ा ख़ोर की ह़िकायत : एक इस्लामी भाई का बयान है कि मैं दुबला पतला था, **दा'वते इस्लामी** के मदनी माह़ोल की बरकतें ह़ासिल होने से क़ब्ल मॉडर्न दोस्तों की सोह़बत थी, हमारे फ्रेन्ड सर्कल में "खाने" के मुक़ाबले होते थे और मैं अक्सर सब से ज़ियादा मिक़्दार के अन्दर खाने में काम्याब हो जाता था मगर बदन फिर भी पतला ही था आख़िर कार किसी ने पिज़्ज़ा और पेप्सी कोला की आ़दत डलवा दी मैं ने पहली बार पिज़्ज़ा खाया उस वक़्त शायद मेरा वज़्न 60 ता 62 Kg था। इब्तिदाअन महीने दो[2] महीने में एक बार खाता। फिर चस्का बढ़ा तो हफ़्ते के अन्दर एक बार कभी दो[2] बार खा लेता, साथ पेप्सी (या कोई कोलाड्रिंक या'नी काला मश्रूब मसलन : कोका कोला वग़ैरा) और मायोनेज़ **(MAYONNAISE)** (एक त़रह की मख़्सूस चिक्नाहट) वाले सलाद का लुत्फ़ उठाता, ब तदरीज मेरा वज़्न बढ़ना शुरूअ़ हुवा, मैं ख़ुश फ़हमी में

पड़ा कि "वाह ! अपनी तो जान बन रही है !" मुझे क्या मा'लूम था कि जान बनने के बजाए बरबाद हो रही थी, मुझे क्या ख़बर थी कि येह बाज़ारी पिज़्ज़ा ख़ून के अन्दर कोलेस्ट्रोल **CHOLESTEROL** घोल घोल कर मेरे दिल को नुक़्सान पहुंचाने पर तुला हुवा है। आह ! **60 Kg** से बढ़ते बढ़ते मेरा वज़्न **95 Kg** हो गया ! मैं मोटा हो गया और मेरा पेट फूल कर ढोल बन गया, ख़ून में कोलेस्ट्रोल बढ़ गया और बा'ज़ अमराज़ मुस्तक़िलन गले पड़ गए। اَلْحَمْدُ لِلّٰہ عَزَّوَجَلَّ ख़ुश क़िस्मती से दा'वते इस्लामी के **मदनी माहोल** की बरकत से **पेट के क़ुफ़्ले मदीना** के फ़ज़ाइल सुन कर मेरा ज़ेहन बना और मैं ने कम खाना शुरूअ़ किया। اَلْحَمْدُ لِلّٰہ عَزَّوَجَلَّ थोड़े ही दिनों में (ता दमे बयान) मेरा **5 Kg** वज़्न कम हो गया। اَلْحَمْدُ لِلّٰہ عَزَّوَجَلَّ मैं अपने अन्दर चुस्ती और हलका पन मह़सूस कर रहा हूं मुझे सफ़र बहुत करने होते हैं। اَلْحَمْدُ لِلّٰہ عَزَّوَجَلَّ अब इस में भी काफ़ी आसानी हो गई है। चूंकि पेट का क़ुफ़्ले मदीना मे'दे को हैरत अंगेज़ तौर पर दुरुस्त कर के क़ब्ज़ वग़ैरा को जड़ से उखाड़ डालता है। लिहाज़ा सब से अ़ज़ीम फ़ाएदा येह हुवा है कि हर वक़्त बा वुज़ू रहने वाले "मदनी इन्आ़म" पर अ़मल होना शुरूअ़ हो चुका है। اَلْحَمْدُ لِلّٰہ عَزَّوَجَلَّ घर में **जव शरीफ़** की रोटी पकाने की भी तरकीब बन गई है। दुआ़ कीजिये कि मुझे इस्तिक़ामत मिल जाए और हर मुसल्मान को पेट के क़ुफ़्ले मदीना की मा'रिफ़त नसीब हो जाए। अब **पिज़्ज़ा** वग़ैरा के बारे में मेरे येह जज़्बात हैं कि "किसी को

पिज़्ज़ा, पेप्सी कोला और कोका कोला वग़ैरा ड्रिंक्स की आ़दत डलवाना दोस्ती के पर्दे में दुश्मनी है।"

मोटापे से बचने की तदबीर : रिज़ाए रब्बे ज़ुल जलाल عَزَّوَجَلَّ के लिये **पेट का क़ुफ़्ले मदीना** लगाते हुए खाना कम खाने की आ़दत डालने से ज़िम्नन वज़्न दारियों और कई बीमारियों से ह़िफ़ाज़त हो सकती है। अस्पताल के बिस्तर पर जा कर डॉक्टरों के मश्वरे पर परहेज़ करने के बजाए क्या ही अच्छा होता कि त़बीबों के त़बीब, **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ के ह़बीब, ह़बीबे लबीब صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم के इस हुक्म की रोशनी में हम अभी से परहेज़ शुरूअ़ कर दें। चुनान्चे आप صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم का फ़रमाने सिह़्ह़त निशान है, "आदमी अपने पेट से ज़ियादा बुरा बरतन नहीं भरता, इन्सान के लिये चन्द लुक़्मे काफ़ी हैं, जो उस की पीठ को सीधा रखें, अगर ऐसा न कर सके तो तिहाई(1/3) खाने के लिये, तिहाई पानी के लिये और एक तिहाई सांस के लिये हो।"

(سنن ابن ماجہ ج۴ص ۴۸، رقم الحدیث ۳۳۴۹)

दा'वते इस्लामी के सुन्नतों की तरबियत के **मदनी क़ाफ़िलों** में सफ़र और रोज़ाना **फ़िक्रे मदीना** के ज़रीए **मदनी इन्आ़मात** का रिसाला पुर कर के हर मदनी माह की पहली तारीख़ अपने यहां के ज़िम्मेदार को जम्अ़ करवाने का मा'मूल बना लीजिये। اِنْ شَآءَاللّٰه عَزَّوَجَلَّ इस की बरकत से पाबन्दे सुन्नत बनने, गुनाहों से नफ़रत करने और **ईमान की ह़िफ़ाज़त** के लिये कुढ़ने का ज़ेहन बनेगा।

पहले ख़ून टेस्ट करवा लीजिये : जिन का वज़्न ज़ियादा है उन की ख़िदमत में मश्वरतन अ़र्ज़ है कि किसी लेबॉरेटरी में जा कर अमराज़े क़ल्ब से मुतअ़ल्लिक़ ख़ून के चार टेस्ट जिन के मज्मूए़ को "लिपिड प्रोफ़ाइल" (LIPID PROFILE) कहते हैं वोह करवाइये। इस में **कोलेस्ट्रोल** का टेस्ट भी शामिल है। 14 घन्टे ख़ाली पेट हो तो कोलेस्ट्रोल के टेस्ट का नतीजा ज़ियादा दुरुस्त आता है। **शूगर** भी टेस्ट करवा लीजिये। ज़हे नसीब रिज़ाए इलाही عَزَّوَجَلَّ के लिये **रोज़ा** रख कर ग़ुरूबे आफ़्ताब से क़ब्ल येह सारे टेस्ट करवा लिये जाएं। फिर अपने डॉक्टर की हिदायत के मुताबिक़ अपना वज़्न कम करने की कोशिश कीजिये। हर सिह्हत मन्द को भी हर छ6 माह के बा'द येह टेस्ट करवाते रहना मुफ़ीद है ता कि बीमारी जड़ पकड़े इस से क़ब्ल ही रोकथाम की तरकीब की जा सके।

मोटापे का इलाज : वज़्न कम करने के लिये **सब्ज़ियां** (आलू वग़ैरा बादी अश्या के इलावा) बेहतरीन ने'मत हैं मगर सिर्फ़ पानी में उबली हुई हों या एक फ़र्द के लिये सिर्फ़ चाय की एक **चम्मच** "ज़ैत" या'नी **ज़ैतून शरीफ़** का तेल डाल कर पकाई गई हों। मिर्च, मसालहा, और हल्दी डालने में ह़रज नहीं रोज़ाना एक ग्राम (या'नी चुटकी भर) **हल्दी** सभी के पेट में जानी चाहिये। اِنْ شَآءَاللهُ عَزَّوَجَلَّ **केन्सर** से ह़िफ़ाज़त होगी। हर वक़्त के खाने में मज़्कूरा त़रीक़े पर बनी हुई सब्ज़ी की कम अज़ कम एक पूरी

रिकाबी खा लीजिये। अगर रोटी और चावल वग़ैरा खाना ज़रूरी हो तो सिर्फ़ आधी चपाती, पानी में उबले हुए चावल सिर्फ़ आधा कप, छोटी सी एक बोटी, आम खाना ज़रूरी हो तो दिन भर में सिर्फ़ आधा आम, चाय पीना चाहें तो "स्कीम्ड मिल्क" की फीकी ही पी लीजिये। अगर न पी सकें तो डोंक्टर के मश्वरे से चाय के कप में (CANDEREL) की एक गोली डाल लिया करें। अगर शूगर का मरज़ न हो तो चीनी की जगह चाय में शहद डाल लीजिये। सलाद ककड़ी, खीरा वग़ैरा भी ब कसरत इस्ति'माल कीजिये हर त़रह़ के खाने और सालन वग़ैरा में ज़ैतून शरीफ़ का तेल बेहतरीन रहेगा। वरना कोर्न ओंइल (CORN OIL) वोह भी कम से कम मिक़्दार में इस्ति'माल कीजिये। खाने से क़ब्ल सालन के पियाले के ऊपर से चम्मच के ज़रीए़ घी या तेल इस त़रह़ से निकाल दीजिये कि एक क़त़रा भी नज़र न आए। हां ! बे इजाज़ते शरई येह तेल फेंक देना इसराफ़ व गुनाह है। दोबारा पकाने में इस्ति'माल फ़रमा लीजिये। चावल, गाय और बकरे के गोश्त, घी, मख्खन अन्डे की ज़र्दी, केक पेस्ट्रियां, कोको, चोंक्लेट और टोंफ़ियों, निम्को वालों की तली हुई चीज़ों (CREAM) लगी हुई या मीठी ग़िज़ाओं, मिठाइयों, आइसक्रीम ठन्डे मश्रूबात, पकोड़े, कबाब, समोसे वग़ैरा हर वोह चीज़ जिस में मैदा, चिक्नाहट, या मिठास शामिल हो उन से बचिये। إِنْ شَآءَ اللّٰه عَزَّوَجَلَّ वज़्न में कमी आएगी और आप

اِنْ شَآءَاللّٰه عَزَّوَجَلَّ खुश अन्दाम (SMART) हो जाएंगे। डॉक्टरों के पास खाने का "चार्ट" मिलता है उन के ज़रीए भी वज़्न का तनासुब बर क़रार रखा जा सकता है। अपने डॉक्टर से मश्वरा कर के वज़्न कम करना ज़ियादा मुनासिब है। हत्तल इम्कान एक ही डॉक्टर से इलाज का सिल्सिला रखना चाहिये। इस से फ़ाएदा येह होगा कि वोह डॉक्टर आप की जिस्मानी कैफ़िय्यत से वाक़िफ़ हो जाएगा! लिहाज़ा इलाज बेहतर त़रीक़े पर हो सकेगा वरना डॉक्टर बदलते रहेंगे तो हर नया डॉक्टर "एक इकाई" से इलाज शुरूअ़ करेगा और आप हर एक का तख़्तए मश्क़ बनते रहेंगे।

क़ब्ज़ के चार इलाज : क़ूतुल क़ुलूब जिल्द 2 सफ़्हा 365 पर नक़्ल है कि "6 घन्टे से क़ब्ल अगर खाना निकल जाए तब भी **मे'दा** बीमार और अगर 24 घन्टे से ज़ियादा वक़्त तक ख़ारिज न हो तब भी समझ लीजिये के **मे'दा** बीमार है। जोड़ों का दर्द पेट की हवा रोकने का नतीजा है। जिस त़रह़ नहर का चलता पानी अगर रोक दिया जाए तो नहर के किनारों को नुक़्सान होता और किनारे टूट कर पानी बहने लगता है। इसी त़रह़ पेशाब रोकने से जिस्म को नुक़्सान होता है।" अपना हाज़िमा दुरुस्त रखिये, वरना मोटापे का इलाज मुश्किल है, **सब्ज़ियों** और **फलों** का इस्ति'माल कीजिये अगर क़ब्ज़ रहती हो तो (1) चार, पांच[5] अ़दद बीज समेत **पक्के अमरूद** या (2) मुनासिब मिक़्दार में **पपीता** खा लीजिये

फ़रमाने मुस्तफ़ा صَلَّى اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم : मुझ पर दुरूद पढ़ कर अपनी मजालिस को आरास्ता करो कि तुम्हारा दुरूद पढ़ना बरोज़े क़ियामत तुम्हारे लिये नूर होगा। (فردوس الاخبار)

اِنْ شَآءَاللّٰہ عَزَّوَجَلَّ **पेट** साफ़ हो जाएगा। (3) हर चौथे दिन तीन[3] चार[4] चम्मच असपग़ोल की भूसी या एक चम्मच कोई सा भी हाज़िम चूरन पानी के साथ निगल लीजिये। اِنْ شَآءَاللّٰہ عَزَّوَجَلَّ पेट की सफ़ाई होती रहेगी। रोज़ रोज़ अगर असपग़ोल या हाज़िम चूरन इस्ति'माल किया जाए तो अक्सर बे असर हो जाता है। नीज़ (4) अगर आप का **डोक्टर इजाज़त दे** तो हर दो या तीन माह बा'द पांच दिन तक सुब्हो शाम एक एक टिक्या ग्रामेक्स **400** मिली ग्राम. **(GRAMEX 400m.g. (Metronidazole)** इस्ति'माल कीजिये। इसे क़ब्ज़, बद हज़्मी वग़ैरा अमराज़ और पेट की इस्लाह के लिये اِنْ شَآءَاللّٰہ عَزَّوَجَلَّ बेहतरीन दवा पाएंगे। मगर जब भी येह टिक्या लेना शुरू करें तो मुसल्सल पांच दिन पूरे करना ज़रूरी है। ख़ाली पेट में भी ले सकते हैं, बद हज़्मी का सब से बेहतरीन इलाज **पेट का क़ुफ़्ले मदीना** है।

बे वक़्त नींद चढ़ने का इलाज : एक गिलास पानी (नीम गर्म हो तो ज़ियादा बेहतर) में एक चम्मच शह्द मिला कर नहार मुंह (या'नी सुब्ह कुछ खाने से क़ब्ल) और रोज़ा हो तो इफ़्तार के वक़्त बिला नाग़ा मुस्तक़िल इस्ति'माल कीजिये। मोटापा और बहुत सी बीमारियों बिल ख़ुसूस पेट के अमराज़ से اِنْ شَآءَاللّٰہ عَزَّوَجَلَّ हिफ़ाज़त होगी। बेहतर येह है कि इस में एक वरना आधा लीमूं भी निचोड़ लिया करें तो اِنْ شَآءَاللّٰہ عَزَّوَجَلَّ फ़वाइद ज़ाइद

हो जाएंगे। अगर मुत़ालआ करते करते या इज्तिमाअ़ वग़ैरा में बैठे बैठे बे वक़्त नींद चढ़ती होगी तो اِنْ شَآءَاللہ عَزَّوَجَلَّ इस से भी नजात मिलेगी।

मोटापे का सब से बेहतरीन इलाज : सब से बेहतरीन इलाज **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ के ह़बीब, ह़बीबे लबीब, त़बीबों के त़बीब صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم का तज्वीज़ फ़रमूदा है, "भूक के तीन ह़िस्से कर लिये जाएं एक ह़िस्सा ग़िज़ा, एक ह़िस्सा पानी और एक ह़िस्सा हवा।" अगर खाने में येह त़रीक़ा अपना लिया जाए तो اِنْ شَآءَاللہ عَزَّوَجَلَّ न कभी बदन मोटा होगा न कभी गेस, बादी, पेट में गड़बड़, क़ब्ज़ वग़ैरा का आ़रिज़ा, मगर हाए ! लज़्ज़त ख़ोर नफ़्स की ह़ीले बाज़ियां।

आईने नौ से डरना, त़र्ज़े कुहन पे अड़ना
मन्ज़िल येही कठिन है क़ौमों की ज़िन्दगी में

ज़ियादा खाने से होने वाले अमराज़ : मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! पेट का क़ुफ़्ले मदीना लगाने के बजाए ज़ियादा खाने से पेट ख़राब होता है, अक्सर क़ब्ज़ भी हो जाती है और मक़ूला है, اَلْقَبْضُ اُمُّ الْاَمْرَاض या'नी क़ब्ज़ बीमारियों की मां है। बक़ौले अत़िब्बा 80 फ़ीसद अमराज़ पेट की ख़राबी से पैदा होते हैं। इन में से अमराज़ की 12 क़िस्में येह हैं : (1) दिमाग़ी अमराज़ (2) आंखों की बीमारियां (3) ज़बान और गले की बीमारियां (4) सीने और फेफड़े के अमराज़ (5) फ़ालिज और

लक़्वा (6) जिस्म के निचले हिस्से का सुन हो जाना (7) शूगर (8) हाई ब्लड प्रेशर (9) दिमाग़ी शिरयान (या'नी मग़्ज़ की नस) फट जाना (10) नफ़्सियाती अमराज़ (या'नी पागल हो जाना वग़ैरा) (11) जिगर और पित्ते के अमराज़ और (12) डिप्रेशन।

तन्दुरुस्त रहने का नुस्ख़ा : ह़ज़रते सय्यिदुना इब्ने सालिम رَحْمَةُ اللّٰهِ تَعَالٰی عَلَیْه फ़रमाते हैं, "अगर कोई शख़्स गन्दुम की सूखी रोटी अदब के मुत़ाबिक़ खा ले उस को मौत के सिवा कोई बीमारी नहीं आ सकती या'नी वोह कभी बीमार न हो।" पूछा गया, "अदब क्या ?" फ़रमाया, **"भूक लगने पर खाए और सेर होने से पहले हाथ उठा ले।"**

(اِحیاءُ الْعُلُوم ج٣ص٩٥)

ना समझ बीमार को अमृत भी ज़हर आमेज़ है

सच येही है सो100 दवा की इक दवा परहेज़ है

भूक की पहचान : सुन्नत येही है कि जब तक भूक न लगे उस वक़्त तक न खाया जाए। सिर्फ़ खाने की ख़्वाहिश पर खा डालना या भूक न होने के बा वुजूद लगे बंधे वक़्त पर लाज़िमन खाना मुफ़ीद नहीं भूक की ता'रीफ़ बयान करते हुए **हुज्जतुल इस्लाम** इमाम मुह़म्मद ग़ज़ाली عَلَیْهِ رَحْمَةُ الْوَالِی फ़रमाते हैं, "**भूक** की अ़लामत येह है, ख़ाली रोटी हाथ में आ जाए तो बिग़ैर सालन के रग़बत के साथ खाने लग पड़े अल ग़रज़ जो

भी रोटी हाथ में लगे शौक़ से खा ले और अगर नफ़्स सिर्फ़ रोटी ही त़लब करे या रोटी के साथ सालन की ह़ाजत हो तो समझें कि अभी ख़ूब चमक कर भूक नहीं लगी। (اِحیاءُ العُلُوم ج٣ص٩٧)

भूक से ज़ियादा खाना : भूक से ज़ियादा खाना **ह़राम** है। ज़ियादा का मत़लब येह है कि इतना खा लिया कि **पेट ख़राब** होने का गुमान है मसलन दस्त आएंगे और त़बीअ़त बद मज़ा हो जाएगी।

(बहारे शरीअ़त, ह़िस्सा : 16, स. 30)

हर एक की ख़ूराक यक्सां नहीं होती : किसी को ज़ियादा खाता देख कर ह़क़ीर जानना या बद गुमानी करना जाइज़ नहीं क्यूं कि अव्वल तो पेट भर कर खाना गुनाह नहीं और दूसरे येह भी हो सकता है कि उस की ख़ूराक ही ज़ियादा हो। जी हां ! जिस त़रह़ हर एक की नींद यक्सां नहीं होती, या'नी कोई तो दो घन्टे आराम कर ले तो दिन भर चुस्त और अगर कोई दस घन्टे पड़ा सोता रहे तब भी सुस्त का सुस्त ही रहता है। इसी त़रह़ ख़ूराक में भी है। या'नी किसी का सिर्फ़ एक रोटी में पेट भर जाता है और कोई कोई तो चार[4] या पांच[5] रोटियां खा जाए तब भी सेर नहीं होता ! तो अब पांच[5] रोटियों वाला अगर तीन[3] रोटियां खाए तो यक़ीनन उस ने भूक से कम खाया और एक रोटी वाले के मुक़ाबले में क़ुरबानी देने में बढ़ गया बहर ह़ाल दूसरों की टोह में पड़ने के बजाए अपने आ'माल की जांच

फ़रमाने मुस्तफ़ा صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم : जो मुझ पर दस मरतबा दुरूदे पाक पढ़े अल्लाह عَزَّوَجَلَّ उस पर सो रहमतें नाज़िल फ़रमाता है। (طبرانی)

पड़ताल करने ही में दुन्या व आख़िरत का भला है कि जब किसी की त़रफ़ एक उंगली से इशारा करते हैं तो तीन[3] उंग्लियों का रुख़ ख़ुद ब ख़ुद अपनी त़रफ़ हो जाता है गोया इस में इशारा है कि दूसरे पर तन्क़ीद करने के बजाए अपने आप को देख।

क़ल्ब को नूर नूर कर या रब عَزَّوَجَلَّ *ह़िर्स खाने की दूर कर या रब* عَزَّوَجَلَّ
दूर दिल से ग़ुरूर कर या रब عَزَّوَجَلَّ *बद गुमानी की ख़ू निकल जाए*

ज़ियादा खाने वाले का दिल दुखाना ह़राम है : **बिस्यार ख़ोर** या'नी ज़ियादा खाने वाले मुअ़य्यन शख़्स पर बिला इजाज़ते शरई मलामत कर के उस का दिल दुखाना कबीरा गुनाह, ह़राम और जहन्नम में ले जाने वाला काम है, बा'ज़ अवक़ात ज़ियादा खाने में मजबूरी भी होती है मसलन **जूउ़ल बक़र** (या'नी गाय जैसी भूक) नामी बीमारी में मरीज़ को इतनी सख़्त भूक लगती है कि कितना ही खा ले मगर भूक का एह़सास जाता ही नहीं ! नफ़्स नहीं चाहता फिर भी बार बार खाना पड़ता है इसी त़रह़ मे'दे में अल्सर हो तो ख़ाली पेट में तक्लीफ़ बढ़ती है। लिहाज़ा कुछ न कुछ खाते रहना पड़ता है। बहर ह़ाल अगर कोई ज़ियादा खाता हो उस के बारे में भी अच्छा गुमान करना ज़रूरी है कि कम खाना मुस्तह़ब है जब कि मुसलमान पर बद गुमानी ह़राम।

फ़रमाने मुस्तफ़ा صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم : जिस के पास मेरा ज़िक्र हुवा और उस ने मुझ पर दुरूदे पाक न पढ़ा तह़क़ीक़ वोह बद बख़्त हो गया। (ابن سنی)

दा'वते इस्लामी के सुन्नतों की तरबियत के **मदनी क़ाफ़िलों** में सफ़र और रोज़ाना **फ़िक्रे मदीना** के ज़रीए **मदनी इन्आ़मात** का रिसाला पुर कर के हर मदनी माह की पहली तारीख़ अपने यहां के ज़िम्मेदार को जम्अ़ करवाने का मा'मूल बना लीजिये। اِنْ شَآءَاللّٰه عَزَّوَجَلَّ इस की बरकत से पाबन्दे सुन्नत बनने, गुनाहों से नफ़रत करने और **ईमान की ह़िफ़ाज़त** के लिये कुढ़ने का ज़ेहन बनेगा।

डट कर पानी पीना : सख़्त गरमी का मौसिम हो, रोज़ा हो, शिद्दत की प्यास लगी हो और इफ़्त़ार के वक़्त ठन्डा पानी और मीठा मीठा शरबत मौजूद हो ऐसे मौक़ेअ़ पर मह़ज़ रिज़ाए इलाही عَزَّوَجَلَّ के लिये शरबत को तर्क कर के पानी भी इतना कम पीना कि प्यास न बुझे येह अफ़्ज़ल अ़मल और अहले तक़्वा का त़रीक़ा है। और अगर कोई इतना पानी व शरबत पिये कि प्यास बुझ जाए तो इस में किसी क़िस्म का गुनाह नहीं। गुर्दे की पथरी वग़ैरा के इलाज के लिये मजबूरन पानी ब कसरत पीना पड़ता है। और यूं भी सैराबी (या'नी इतना पानी पी लेना कि प्यास बुझ जाए) के बा'द जब्रन मज़ीद पीना नफ़्स पर शाक़ होता है। **आबे ज़मज़म** की तो बात ही कुछ और है। "इस को ब निय्यते इ़बादत देखने से एक साल की इ़बादत का सवाब मिलता है, इस को पी कर जो भी दुआ़ मांगी जाए वोह क़बूल होती है।" (المسلک المتقسّط المعروف بمناسک المُلا علی قاری ص ۴۹۵) हुसूले सवाब की निय्यत से इस को पेट भर कर पीना चाहिये। मोह़सिने

अहले सुन्नत, सदरुश्शरीअ़ह, बदरुत्त़रीक़ह ह़ज़रते अ़ल्लामा मौलाना मुफ़्ती मुह़म्मद अमजद अ़ली आ'ज़मी رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰی عَلَيْه फ़रमाते हैं वहां जब पियो पेट भर कर पियो। ह़दीसे पाक में है : हम में और मुनाफ़िक़ों में येह फ़र्क़ है कि वोह ज़मज़म कूख (या'नी पेट) भर कर नहीं पीते।

(बहारे शरीअ़त, ह़िस्सा : 6, स. 47, المستدرک للحاکم ج۱ص ۶۴۶ رقم الحدیث ۱۷۳۸)

येह ज़मज़म उस लिये है जिस लिये इस को पिये कोई

इसी ज़मज़म में जन्नत है इसी ज़मज़म में कौसर है

पैदल चलिये : फ़िज़ियो थेरापिस्ट से मश्वरा कर के अपनी उ़म्र के ह़िसाब से रोज़ाना हलकी फुलकी वर्जिश करते रहना चाहिये नीज़ रात खाने के बा'द बक़ौले अत़िब्बा कम अज़ कम डेढ़ सो क़दम पैदल चलना चाहिये। मेरा मदनी मश्वरा है कि चलते चलते कम अज़ कम चालीस[40] बार येह दुरूद शरीफ़ : صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلٰى مُحَمَّد पढ़ने का मा'मूल बना लीजिये اِنْ شَآءَاللّٰه عَزَّوَجَلَّ 150 से ज़ाइद क़दम चलना हो जाएगा। हर एक को रोज़ाना एक घन्टा पैदल चलना चाहिये। जिस की बिल्कुल आ़दत नहीं है वोह इब्तिदाअन सिर्फ़ 12 मिनट चले या चलते चलते صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلٰى مُحَمَّد 313 बार पढ़े और आख़िर में एक बार وَعَلٰى اٰلِهٖ وَاَصْحٰبِهٖ وَبَارَكَ وَسَلَّم कह ले ज़रा इत़्मीनान से पढ़ने से اِنْ شَآءَاللّٰه عَزَّوَجَلَّ एक किलो मीटर हो जाएगा। यूं ब तदरीज बढ़ाते बढ़ाते तीस[30] दिन के अन्दर अन्दर रोज़ाना 5 किलो मीटर तक चलने की

तरकीब बना ले। इस्लामी बहनें घर की चार दीवारी में टहलें, अपने अवराद बैठ कर पढ़ने के बजाए चलते फिरते पढ़ने की आदत बनाएं। मेरी दरख़्वास्त क़बूल करते हुए पैदल चल लीजिये वरना ख़ुदा न ख़्वास्ता डॉक्टर के कहने पर कहीं नदामत व टेन्शन का बोझ उठाए "दौड़ना" न पड़े !

ताक़त से ज़ियादा बोझ : पारह तीसरा, **सूरतुल बक़रह** की आख़िरी आयते करीमा में ख़ुदाए रह़मान عَزَّوَجَلَّ का फ़रमाने रह़मत निशान है :

لَا يُكَلِّفُ اللّٰهُ نَفْسًا اِلَّا وُسْعَهَا ؕ

तरजमए कन्ज़ुल ईमान : अल्लाह عَزَّوَجَلَّ किसी जान पर बोझ नहीं डालता मगर उस की ताक़त भर।

मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! यक़ीनन ! **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ किसी पर उस की ताक़त से ज़ियादा बोझ नहीं डालता। मगर अफ़्सोस ! सद करोड़ अफ़्सोस ! उस ह़रीस बन्दे पर जो लज़्ज़ते नफ़्स के लिये एक तो खाना ख़ूब डट कर खाता है ऊपर से फ़क़त़ बराए लज़्ज़ात दिन रात के मुख़्तलिफ़ अवक़ात में भी कुछ न कुछ खा कर अपने **मे'दे** पर उस की ताक़त से ज़ियादा बोझ डालता चला जाता है। ज़ाहिर है जो शख़्स एक मन उठा सकता हो उस पर ढाई मन का वज़्न लाद दिया जाए तो लड़खड़ा कर गिर पड़ेगा। इसी त़रह़ **मे'दे** के काम करने की भी एक ह़द है तो अगर अच्छी त़रह़ चबाए बिग़ैर या ज़रूरत से ज़ियादा ग़िज़ाएं उस में डाली

जाएंगी तो बेचारा आख़िर किस किस चीज़ को किस त़रह़ हज़्म कर सकेगा ? नतीजतन निज़ामे इन्हिज़ाम दरहम बरहम हो जाएगा। **मे'दा** बीमार पड़ जाएगा और फिर सारे जिस्म को अमराज़ फ़राहम **(SUPPLY)** करने लगेगा। जैसा कि त़बीबों के त़बीब, महबूबे रब्बे मुजीब صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم का फ़रमाने ह़िक्मत निशान है, "मे'दा बदन में ह़ौज़ की मानिन्द है और (बदन की) नालियां (या'नी रगें) मे'दे की त़रफ़ आने वाली हैं अगर मे'दा सिह़ह़त मन्द हो तो रगें (मे'दे में से) सिह़ह़त ले कर पलटती हैं और अगर मे'दा ख़राब हो तो रगें बीमारी ले कर वापस जाती हैं।"

(شُعَبُ الایمان ج ٥ ص ٦٦ رقم الحديث ٥٧٩٦)

मरज़े इस्यां की तरक़्क़ी से हुवा हूं जां बलब

मुझ को अच्छा कीजिये ह़ालत मेरी अच्छी नहीं

मैं खाना बहुत कम खाता हूं : बा'ज़ ऐसे इस्लामी भाई जो कि या तो वज़्न दार होते हैं या पेट की बीमारियों का शिकार वोह कहते सुनाई देते हैं, "मैं खाना बहुत कम खाता हूं।" उन में बा'ज़ तो सख़्त दिली की वज्ह से झूट बोलने में बेबाक होते हैं और बा'ज़ अफ़राद ग़लत़ फ़हमी की वज्ह से ऐसा कह देते हैं। मगर उन के दिन भर के गिज़ाई मा'मूलात पर नज़र डालें तो पता चलता है कि येह जिस को "कम खाना" कह रहे हैं उस में नाश्ते में अन्डा पराठा, मस्का बन, मलाई, ह़ल्वा, छोले पूरी फिर दिन भर की इज़ाफ़ी गिज़ा दो एक ठन्डी बोतलें एकआध आइसक्रीम,

फ़रमाने मुस्तफ़ा صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم : जिस के पास मेरा ज़िक्र हुवा और उस ने मुझ पर दुरूदे पाक न पढ़ा उस ने जन्नत का रास्ता छोड़ दिया। (طبرانی)

तीन[3] चार[4] बार चाय बिस्कुट, बर्गर, आलू छोले, केक पीस, थोड़ी सी मिठाई वग़ैरा भी शामिल है और यूं मे'दे की तबाही, वज़्न दारी या बीमारी का राज़ फ़ाश हो जाता है ! अगर किसी का वाक़ेई थोड़ा सा खाने में पेट भर जाता है उस को भी चाहिये कि मज़ीद कम करे यहां तक कि भूक बाक़ी रहे। गोया च्यूंटी अपने "कन" में से कम करे और हाथी अपने "मन" में से।

ख़ुदा عَزَّوَجَلَّ *हम को सच बोलने की दे तौफ़ीक़*
तू मुंह सोच कर खोलने की दे तौफ़ीक़

कमख़ोरी की एह़तियातें

1. **वालिद** या वालिदा हुक्म दे कि पेट भर के खा लो तो उन की इताअ़त करे।
2. **अगर** मुलाज़िमत करते हैं और कम खाने से कमज़ोरी आती और काम में कोताही होती है तो कम खाने के लिये सेठ की इजाज़त ज़रूरी है।
3. **इसी** त़रह़ इस्लामी ता'लीमो तअ़ल्लुम में रुकावट होती है तो ह़स्बे ज़रूरत खा लीजिये।
4. **आप** का मेहमान साथ खा रहा हो और इम्कान है कि आप के कम खाने के बाइस वोह भी शरमिन्दा हो कर हाथ रोक लेगा तो उस का साथ दीजिये।

5 मदीना **अगर** मेज़बान इसरार करे और कोई मजबूरी न हो तो भूक बाक़ी होने की सूरत में थोड़ा मज़ीद खा लीजिये कि मुसल्मान का दिल ख़ुश करना सवाब है। **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ के महबूब, दानाए ग़ुयूब, मुनज़्ज़हुन अ़निल उ़यूब صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم का फ़रमाने मसर्रत निशान है, "जो शख़्स मुसल्मान के घर वालों में ख़ुशी दाख़िल करे **अल्लाह** तआ़ला उस के लिये जन्नत के इलावा किसी शै को पसन्द नहीं करता।" (طبرانی صغیر ج۲ ص ۵۱)

कम खाना अफ़्ज़ल मगर झूट बोलना ह़राम : दा'वत में जब **मेज़बान** कहे, और लीजिये ! तो अगर आप फ़ारिग़ हो चुके हैं और भूक बाक़ी होने के बा वुजूद मज़ीद खाना नहीं चाहते तो बहुत संभल कर जवाब दीजिये। मसलन कहिये, "**अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ बरकत दे, جَزَاکَ اللّٰهُ خَیْرًا। اَلْحَمْدُ لِلّٰه عَزَّوَجَلَّ मैं अपने हिसाब से खा चुका वग़ैरा। हरगिज़ हरगिज़ झूटे फ़िक़रे मत कहिये। कम खान के बा वुजूद बोले जाने वाले झूटे जुम्लों की मिसालें येह हैं "**मैं** ने पेट भर कर खा लिया है।" **मेरा** पेट फुल हो गया है, नहीं ! नहीं ! अब पेट में बिल्कुल गुन्जाइश नहीं, सच कहता हूं बिल्कुल भूक बाक़ी नहीं वग़ैरा वग़ैरा। **याद रखिये झूट बोलना गुनाहे कबीरा, ह़राम और जहन्नम में ले जाने वाला काम है।** राहे तक़्वा पर बहुत संभल कर चलना है, कहीं ऐसा न हो कि

भूक से कम खाने का मुस्तह़ब व अफ़्ज़ल काम करने जाएं और नफ़्स उठा कर रियाकारी, झूट, तकब्बुर, मां बाप की ना फ़रमानी और मुसल्मान की तह़्क़ीर व बद गुमानी वग़ैरा वग़ैरा ह़राम कामों में डाल कर जहन्नम का ह़क़दार बना दे। क्यूं कि **नफ़्स** का काम ही बुराइयों पर उभारना है। चुनान्चे क़ुरआने पाक में इर्शाद है :

إِنَّ النَّفْسَ لَأَمَّارَةٌ بِالسُّوٓءِ
(پ۱۳ یوسف آیت۵۳)

तरजमए कन्ज़ुल ईमान : बेशक नफ़्स तो बुराई का बड़ा हुक्म देने वाला है।

नफ़्स की चाल से बचा या रब عَزَّ وَجَلَّ
इस के जन्जाल से बचा या रब عَزَّ وَجَلَّ

नफ़्स को मारने की भरपूर कोशिश करनी चाहिये कि जो नफ़्स को मारने और उस को बुरी ख़्वाहिशात से रोकने में काम्याब हो जाता है उस के लिये जन्नत की बिशारत है। चुनान्चे ख़ुदाए रह़मान عَزَّوَجَلَّ का फ़रमाने जन्नत निशान है :

وَأَمَّا مَنْ خَافَ مَقَامَ رَبِّهٖ وَنَهَى النَّفْسَ عَنِ الْهَوٰى ﴿۴۰﴾ فَإِنَّ الْجَنَّةَ هِيَ الْمَأْوٰى ﴿۴۱﴾
(پ۳۰ النّٰزعٰت آیت۴۰، ۴۱)

तरजमए कन्ज़ुल ईमान : और वोह जो अपने रब (عَزَّوَجَلَّ) के हुज़ूर खड़े होने से डरा और नफ़्स को ख़्वाहिश से रोका तो बेशक जन्नत ही ठिकाना है।

صَلُّوا عَلَى الْحَبِيب ! صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلٰى مُحَمَّد

नफ़्स किसे कहते हैं ? : अगर रिज़ाए इलाही (عَزَّوَجَلَّ) की ख़ातिर "पेट का क़ुफ़्ले मदीना" लगा कर भूक की बरकतें लूटने का आप का ज़ेह्न बन गया है तो येह ध्यान में रखिये कि नफ़्स के साथ सख़्त मुक़ाबला रहेगा। नफ़्स आसानी से क़ाबू में आने वाला नहीं। ह़ज़रते सय्यिदुना बा यज़ीद عَلَيْهِ رَحْمَةُ الْمَجِيْد फ़रमाते हैं "**नफ़्स** एक ऐसी सिफ़त है जिस की बातिल के सिवा तस्कीन होती ही नहीं।" (या'नी नफ़्स बुराइयों ही से ख़ुश रहता है।) ह़ज़रते सय्यिदुना सुलैमान दारानी قُدِّسَ سِرُّهُ الرَّبَّانِي फ़रमाते हैं **नफ़्स की मुख़ालफ़त अफ़्ज़ल तरीन अ़मल है।**

(کشف المحجوب ص ۳۹۵،۳۹۶)

अल्लाह (عَزَّوَجَلَّ), अल्लाह के नबी (صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم) से फ़रियाद है नफ़्स की बदी से
ईमां पे बेहतर मौत ओ नफ़्स तेरी नापाक ज़िन्दगी से

दिल के लिये साल भर की इ़बादत से बेहतर

ह़ज़रते सय्यिदुना अबू सुलैमान दारानी قُدِّسَ سِرُّهُ الرَّبَّانِي फ़रमाते हैं, "नफ़्स की ख़्वाहिशों में से किसी एक ख़्वाहिश को तर्क कर देना दिल के लिये एक साल के रोज़ों और साल भर की रातों के क़ियाम से भी ज़ियादा फ़ाएदे मन्द है।" (جذب القلوب ج۲ ص۳۳۶)

صَلُّوْا عَلَى الْحَبِيْب ! صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلٰى مُحَمَّد

लोमड़ी का बच्चा : बुज़ुर्गाने दीन رَحِمَهُمُ اللّٰهُ الْمُبِيْن का बा'ज़ अवक़ात नफ़्स को मिसाली सूरत में देखना साबित है, चुनान्चे ह़ज़रते सय्यिदुना मुह़म्मद अ़लयान नसवी عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللّٰهِ الْقَوِى फ़रमाते हैं, ''इब्तिदाए ह़ाल में जब **नफ़्स** की हलाकत ख़ेज़ियों के बारे में मा'लूमात हुई तो मुझे इस से सख़्त दुश्मनी हो गई। एक दिन **लोमड़ी के बच्चे** की त़रह़ का कोई जानवर यकायक मेरे ह़ल्क़ से निकल पड़ा ! **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ ने मुझे उस की पहचान करवा दी और मैं समझ गया कि येह मेरा **नफ़्स** है मैं फ़ौरन उस पर पिल पड़ा और अपने पाउं से उसे कुचल्ने और रौंदने लगा मगर या लल अ़जब ! मैं जू जूं उस पर ज़र्ब लगाता वोह क़दआवर होता चला जाता ! मैं ने कहा, ऐ **नफ़्स** ! हर चीज़ तक्लीफ़ और ज़ख़्मों से हलाक होती है मगर तू है कि उलटा बढ़ता चला जा रहा है ! उस ने जवाब दिया मेरा मुआ़मला ही उलटा है जिन चीज़ों से औरों को तक्लीफ़ होती है मुझे उन से राह़त मिलती है और जिन चीज़ों से दूसरों को राह़त होती है मुझे उन से तक्लीफ़ पहुंचती है। (कश्फ़ुल मह़जूब मुतर्जम, बाब : मुजाहदाते नफ़्स, स. 407)

निहंगो [1] अज़्दहा मारा अगर्चे शेरे नर मारा

बड़े मूज़ी को मारा नफ़्से अम्मारा को गर मारा

مدینہ

1 : निहंग या'नी मगर मच्छ

फ़रमाने मुस्तफ़ा صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم : जिस ने मुझ पर रोज़े जुमुआ़ दो सो बार दुरूदे पाक पढ़ा उस के दो सो साल के गुनाह मुआ़फ़ होंगे। (جمع الجوامع)

खाने के लिये जीना : प्यारे प्यारे इस्लामी भाइयो! देखा आप ने ! **नफ़्स** को मारना बहुत ही मुश्किल अम्र है। बस किसी त़रह़ इस को क़ाबू करने की कोशिश करनी चाहिये और इस का एक त़रीक़ा येह भी है कि **नफ़्स** जो कहे उस का उलट किया जाए। मसलन वोह अच्छे अच्छे खानों, चटपटे चटख़ारों का मश्वरा दे या डट कर खाने की तरग़ीब दिलाए। उस वक़्त उस की न माने सिर्फ़ ह़स्बे ज़रूरत ही खाए। हुज़ूर दाता साहि़ब رَحْمَةُ اللّٰهِ تَعَالٰى عَلَيْه फ़रमाते हैं, "भूक सिद्दीक़ीन की ग़िज़ा और मुरीदों की राहे सुलूक है, पहले लोग ज़िन्दा रहने के लिये खाते थे मगर तुम खाने के लिये ज़िन्दा हो।" (कश्फ़ुल मह़जूब मुतर्जम, बाब : मुजाहदाते नफ़्स, स. 605)

दा'वते इस्लामी के सुन्नतों की तरबियत के **मदनी क़ाफ़िलों** में सफ़र और रोज़ाना **फ़िक्रे मदीना** के ज़रीए **मदनी इन्आ़मात** का रिसाला पुर कर के हर मदनी माह की पहली तारीख़ अपने यहां के ज़िम्मेदार को जम्अ़ करवाने का मा'मूल बना लीजिये। اِنْ شَآءَاللّٰه عَزَّوَجَلَّ इस की बरकत से पाबन्दे सुन्नत बनने, गुनाहों से नफ़रत करने और **ईमान की ह़िफ़ाज़त** के लिये कुढ़ने का ज़ेहन बनेगा।

मसूढ़ों का केन्सर : चाय पान के आदी गिज़ा के साथ साथ चाय और पान में भी कमी का ज़ेहन बनाएं येह न हो कि आप गिज़ा में कमी करने जाएं और नफ़्से मक्कार आप को भूक मिटाने का झांसा दे कर चाय और पान की कसरत की आफ़त में फंसा दे। चाय गुर्दों के लिये मुज़िर (या'नी नुक़्सान देह) है। पान, गुटका, मेनपूरी और ख़ुश्बूदार सौंफ़ सुपारी वगै़रा की आदत निकाल देने में ही आफ़िय्यत है। जो लोग इन का कसरत से इस्ति'माल करते हैं उन को **मसूढ़ों, मुंह और गले के केन्सर का अन्देशा रहता है।** ज़ियादा पान खाने वालों का मुंह अन्दर से लाल हो जाता है, अगर मसूढ़ों में ख़ून या पीप हो गया तो उन को नज़र नहीं आएगा और पेट में जाता रहेगा। शायद उन को मा'लूम भी उस वक़्त होगा जब ख़ुदा न ख़्वास्ता किसी **ख़त़रनाक बीमारी** ने जड़ पकड़ ली होगी !

नक़्ली कथ्थे की तबाह कारियां : हमारे यहां ग़ालिबन **कथ्थे** की पैदावार नहीं होती, लिहाज़ा दौलत के ह़रीस अफ़राद जिन्हें दुन्या व आख़िरत के **बरबाद** होने की कोई फ़िक्र नहीं होती वोह **मिट्टी** में चमड़ा रंगने का **रंग** मिला कर "**कथ्था नुमा बना**" कर बेचते हैं ! और यूं बेचारे **पानख़ोर** त़रह़ त़रह़ के अमराज़ का शिकार हो कर तबाहो बरबाद होते रहते हैं।

खाने का मज़ा सिर्फ़ ह़ल्क़ तक होता है : जव की सूखी रोटी हो या घी से तर बतर पराठा, पेट में जाने के बा'द दोनों एक हो जाते हैं। जूं ही निवाला **ह़ल्क़** से नीचे उतरा उस का ज़ाएक़ा ख़त्म। जो हाथ में आया वोह पेट में डालते चले जाने और डट कर खाने में ज़बान का मज़ा तो सिर्फ़ चन्द लम्हों के लिये ही होता है मगर इस के दीनी व दुन्यवी नुक़्सानात देर पा होते हैं। अगर कोई ठन्डे दिल से ग़ौर करे तो उस पर आश्कार हो जाएगा कि **दो[2] मिनट** की लज़्ज़त की ख़ातिर आख़िरत का त़वील ह़िसाब सर लेना नीज़ बरसों तक चलने वाली बल्कि क़ब्र तक पीछा करने वाली बीमारियों को गले लगा लेना हरगिज़ दानिश मन्दी नहीं। लिहाज़ा "पेट का कुफ़्ले मदीना" लगाते हुए कम खाने ही में आ़फ़िय्यत है। ह़ज़रते सय्यिदुना अबू दरदा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ फ़रमाते हैं, "**घड़ी** भर के लिये ख़्वाहिश की पैरवी त़वील ग़म का बाइ़स होती है।"

यावह गोई, डट के खाना, ख़ूब सोना छूट जाए

दुन्यवी लज़्ज़ात से दिल काश मेरा टूट जाए

लज़ीज़ लुक़्मे की अ़जीब ह़क़ीक़त : ग़ौर कीजिये ! मुंह में पानी लाने वाला, ख़ुश्बू से मुअ़त्तर, घी में तर बतर, लज़ीज़ तरीन,

फ़रमाने मुस्तफ़ा صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم : जिस ने किताब में मुझ पर दुरूदे पाक लिखा तो जब तक मेरा नाम उस में रहेगा फ़िरिश्ते उस के लिये इस्तिग़्फ़ार (या'नी बख़्शिश की दुआ) करते रहेंगे। (طبرانی)

चटपटा निवाला बड़े शौक़ से अगर कोई मुंह में डाले और चपड़ चपड़ कर के चबा कर जूं ही ह़ल्क़ से नीचे उतारे कि उछाला आए और क़ै बाहर निकल पड़े तो अब उस की त़रफ़ देखने को भी उस का जी नहीं चाहेगा। येह है उस **लुक़्मए तर की ह़क़ीक़त**। मज़ीद इस लज़ीज़ खाने की ह़ैसिय्यत को इस ह़िकायत से समझने की कोशिश कीजिये।

दिल जलाने वाली ह़िकायत : एक मह़ल्ले में बैतुल ख़ला की सफ़ाई की जा रही थी, और फ़ुज़्ला (या'नी पाख़ाना) बिखरा हुवा था, लोग नाक पर रूमाल रखे वहां से तेज़ी के साथ गुज़र रहे थे कि फ़ुज़्ले ने ब ज़बाने ह़ाल पुकार कर कहा, "**ऐ भागने वालो !**" ज़रा ठहरो ! मुझे पहचानो मैं कौन हूं ? मैं वोही हूं जिसे तुम ने ख़ूब मशक़्क़त से कमाया, बड़ी मेह़नत से पकाया और मज़े ले ले कर खाया, और अपने मे'दे में छुपाया। अफ़्सोस ! तुम्हारी थोड़ी देर की सोह़बत ने मेरा येह ह़ाल बनाया ! मुझ से क्यूं भागते हो ? मैं तो तुम्हारी लज़ीज़ **बिरयानी** हूं,...... मैं तो तुम्हारा घी से तर बतर **पराठा** हूं,...... मैं तो तुम्हारा चटपटा **क़ोरमा** हूं......

देखो मुझे जो दीदए इब्रत निगाह हो

अपनी औक़ात याद दिलाने वाले ताज़ियाने

प्यारे प्यारे इस्लामी भाइयो ! इब्रत ही इब्रत है खाना जितना **अच्छा** होता है उस का **अन्जाम** उतना ही बुरा होता है। इन्सान जितना ज़ियादा लज़ीज़ और चिक्ना पक्वान खाता है उस का बराज़ भी उतना ही ज़ियादा गन्दा और बदबूदार होता है। जब कि घास चारा खाने वाले जानवरों का गोबर इन्सान के बराज़ के मुक़ाबले में निहायत ही कम गन्दा होता है। हो सकता है इन बातों को पढ़ या सुन कर किसी का जी मतलाने लगे और नफ़्स गुस्सा दिलाने लगे तो ऐसों की ख़िदमत में अ़र्ज़ येह है कि आप का ख़फ़ा होना बेकार है। आप की येह ख़फ़गी भी सरासर इब्रत है। **ग़ौर कीजिये** कि हम जैसा गुनहगार इन्सान ख़ूब अकड़ता और ऐंठता है और इतना नहीं सोचता कि मेरी औक़ात ही क्या ! मैं तो वोह नाकारा हूं कि बेहतरीन ग़िज़ाएं भी मेरे साथ थोड़ी सी देर रहने के बा'द इस क़दर तबाह व मस्ख़ हो जाती हैं कि अब उन का तज़्किरा सुनना ख़ुद मुझे गवारा नहीं ! हज़रते सय्यिदुना ताऊस رَحْمَةُ اللّٰهِ تَعَالٰى عَلَيْه ने किसी को अकड़ कर चलते हुए देख कर फ़रमाया, "येह उस की चाल नहीं जिस के पेट में गन्दगी भरी हो।" हज़रते सय्यिदुना मुतर्रिफ़ رَحْمَةُ اللّٰهِ تَعَالٰى عَلَيْه ने हज्जाज बिन यूसुफ़ के लश्कर के सिपह सालार मुहल्लब को रेशमी लिबास पहने अकड़ते हुए चलते

फ़रमाने मुस्तफ़ा صَلَّى اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم : बरोजे़ क़ियामत लोगों में से मेरे क़रीब तर वोह होगा जिस ने दुन्या में मुझ पर ज़ियादा दुरूदे पाक पढ़े होंगे। (ترمذی)

देखा तो टोका। वोह कहने लगा, "मुझे जानते नहीं मैं कौन हूं?" फ़रमाया, "मैं तुझे अच्छी तरह़ जानता हूं कि शुरूअ़ में तू एक गन्दा क़त़रा था और आख़िर में सड़ा हुवा मुर्दा होगा और येह तो सभी जानते हैं कि तू पेट में नजासत उठाए फिरता है!" येह खरी खरी सुन कर वोह शरमा गया और अकड़ी वाली चाल से बाज़ आ गया। ह़ज़रते सय्यिदुना मुस्अ़ब बिन जु़बैर رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ फ़रमाते हैं, "तअ़ज्जुब है इन्सान तकब्बुर करता है हा़लां कि वोह दो बार पेशाब गाह से निकला है!"

क्या आप कम खाने की आ़दत बनाना चाहते हैं? अगर आप **पेट का कुफ़्ले मदीना** लगाने या'नी कम खाने की आ़दत बनाना और इस पर इस्तिक़ामत पाना चाहते हैं तो **मेरे** इन **मदनी** मश्वरों पर अ़मल कीजिये اِنْ شَآءَاللہ عَزَّوَجَلَّ बहुत फ़ाएदा होगा। अपना ज़ेहन इस तरह़ बनाइये जैसा कि हु़ज्जतुल इस्लाम इमाम मुह़म्मद ग़ज़ाली عَلَیْہِ رَحْمَۃُ الْوَالِی फ़रमाते हैं, "आख़िरत में हि़साबो किताब की होलनाकियों और सकराते मौत की शिद्दत का एक बाइ़स पेट भर कर खाना भी है।" हु़ज्जतुल इस्लाम इमाम मुह़म्मद ग़ज़ाली عَلَیْہِ رَحْمَۃُ الْوَالِی मज़ीद फ़रमाते हैं, "ज़ियादा खाने से आख़िरत के सवाब में कमी वाक़ेअ़ होती है। लिहाज़ा तुम जिस क़दर लज़्ज़तें

दुन्या के अन्दर ह़ासिल कर लोगे उतना ह़िस्सा आख़िरत में कम हो जाएगा।" (مِنہاجُ العابِدین،ص۹۴)

डट के खाने की मह़ब्बत क़ल्ब से मेरे निकाल

नज़्अ़ में दे मुझ को राह़त ऐ ख़ुदाए ज़ुल जलाल

जहन्नमियों का खाना पीना : प्यारे प्यारे इस्लामी भाइयो ! ज़बान के चन्द मिनट के लिये ज़ाएक़े की ख़ातिर इस क़दर ख़ौफ़नाक मुआ़मलात की परवाह न करना अ़क़्ल मन्दी नहीं **पेट का क़ुफ़्ले मदीना** लगाते हुए कम, कम और कम खाने ही में आ़फ़िय्यत है। शिकम सेरी या लज़ीज़ अश्या खाने और ठन्डे मश्रूबात पीने को जी ललचाए तो जहन्नमियों के दिल हिला देने वाले खाने पीने को याद कीजिये। जिन्हें कुफ़्फ़ार के लिये तय्यार किया गया है। चुनान्चे पारह 25 **सूरतुद्दुख़ान** की आयत नम्बर 43 ता 46 में दोज़ख़ियों के होशरुबा खाने का तज़्किरा करते हुए ख़ुदाए क़ह्हारो जब्बार جَلَّ جَلَالُهٗ इर्शाद फ़रमाता है :

اِنَّ شَجَرَتَ الزَّقُّوْمِ ﴿۴۳﴾ طَعَامُ الْاَثِیْمِ ﴿۴۴﴾ كَالْمُهْلِ یَغْلِیْ فِی الْبُطُوْنِ ﴿۴۵﴾ كَغَلْیِ الْحَمِیْمِ ﴿۴۶﴾

(پ۲۵ الدُّخان آیت ۴۳تا۴۶)

तरजमए कन्ज़ुल ईमान : बेशक थूहड़ का पेड़ गुनहगारों की ख़ूराक है। गले हुए तांबे की त़रह पेटों में जोश मारे जैसा खौलता पानी जोश मारे।

जहन्नमियों के तबाह कुन **मश्रूब** के बारे में पारह **26 सूरए मुह़म्मद** की 15वीं आयत में इर्शाद होता है :

وَسُقُوْا مَآءً حَمِيْمًا فَقَطَّعَ اَمْعَآءَهُمْ

तरजमए कन्ज़ुल ईमान : और उन्हें खौलता पानी पिलाया जाए कि आंतों के टुकड़े टुकड़े कर दे।

सांपों के ज़ह्‌र का पियाला : मुग़ीस बिन समी رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْهُ फ़रमाते हैं, "जब किसी को दोज़ख़ में लाया जाएगा तो उस से कहा जाएगा, "इन्तिज़ार करो हम तुम्हें एक तोह़फ़ा देते हैं। फिर **सांपों के ज़ह्‌र का पियाला** उस को दिया जाएगा, जब वोह उसे अपने मुंह के क़रीब करेगा तो उस के चेहरे का गोश्त और हड्डियां कट कर गिर पड़ेंगे।" (البدور السافرۃ ص ۴۴۲)

करम अज़्‌ पए मुस्तफ़ा صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم *या इलाही* عَزَّوَجَلَّ
जहन्नम से मुझ को बचा या इलाही عَزَّوَجَلَّ

दा'वते इस्लामी के सुन्नतों की तरबियत के **मदनी क़ाफ़िलों** में सफ़र और रोज़ाना **फ़िक्रे मदीना** के ज़रीए **मदनी इन्आ़मात** का रिसाला पुर कर के हर मदनी माह की पहली तारीख़ अपने यहां के ज़िम्मेदार को जम्अ़ करवाने का मा'मूल बना लीजिये। اِنْ شَآءَ اللّٰه عَزَّوَجَلَّ इस की बरकत से पाबन्दे सुन्नत बनने, गुनाहों से नफ़रत करने और **ईमान की ह़िफ़ाज़त** के लिये कुढ़ने का ज़ेहन बनेगा।

बड़ी ने'मत का हिसाब भी बड़ा : घर के तमाम अफ़राद मुत्तफ़िक़ हों तो खाने सालन वग़ैरा में जो तेल मसालहा डालते हैं उस की मिक़्दार आधी कर दीजिये। हो सकता है खाने की लज़्ज़त कम हो जाए, जब लज़्ज़त में कमी आएगी तो रग़्बत में भी कमी आएगी और اِنْ شَآءَاللّٰه عَزَّوَجَلَّ **पेट का कुफ़्ले मदीना** लगाने या'नी खाना कम खाने में आसानी हो जाएगी। **रोटी** का मा'मूली सा टुकड़ा जिस से पेट में बोझ डाला गया या'नी भूक मिटाई गई इस का क़ियामत में हिसाब न होगा। वरना याद रखिये ! दुन्या में ग़िज़ा जिस क़दर उ़म्दा और लज़ीज़ खाएंगे उतना ही क़ियामत में हिसाब भी सख़्त से सख़्त होगा, मसलन **खिचड़ी** का हिसाब निस्बतन हलका होगा जब कि **बिरयानी** का उस से सख़्त। इस में भी तरकीब येह होगी कि जिस शख़्स को जो चीज़ ज़ियादा पसन्द होगी वोह उस के लिये बड़ी ने'मत शुमार होगी। मसलन जिस को बिरयानी के मुक़ाबले में खिचड़ी ज़ियादा मरग़ूब हो उस के लिये खिचड़ी बड़ी ने'मत और अब बिरयानी के मुक़ाबले में खिचड़ी का हिसाब सख़्त। **सादा** पानी के मुक़ाबले में **ठन्डे** पानी का, सादा खानों के मुक़ाबले में लज़ीज़ खानों का हिसाब ज़ियादा सख़्त होगा। पुलाव या क़ोरमा रोटी वग़ैरा **गरमा गर्म** हों तो हिसाब ज़ियादा और अगर **बिल्कुल ठन्डे** और बे मज़ा हो गए हों, चूंकि

येह नफ़्स को मरग़ूब नहीं होते इस लिये हिसाब भी कम। आह ! आह ! आह ! हर ने'मत के बारे में क़ियामत के रोज़ पूछा जाएगा।

हर ने'मत के बारे में तीन[3] सुवाल : ह़ज़रते सय्यिदुना इमाम मुह़म्मद ग़ज़ाली عَلَيْهِ رَحْمَةُ الْوَالِي फ़रमाते हैं, "बरोज़े क़ियामत हर शै के बारे में येह तीन[3] सुवालात होंगे : (1) तुम ने येह चीज़ किस त़रह़ ह़ासिल की ? (2) इसे कहां ख़र्च किया ? और (3) किस निय्यत से ख़र्च किया ?" (مِنہاجُ العابِدین ص۱۰۰)

पारह **30 सूरतुत्तकासुर** की आख़िरी आयत में इर्शादे इलाही عَزَّوَجَلَّ है :

ثُمَّ لَتُسْـَٔلُنَّ يَوْمَىٕذٍ عَنِ النَّعِيْمِ ﴿٨﴾

तरजमए कन्ज़ुल ईमान : फिर बेशक ज़रूर उस दिन तुम से ने'मतों से पुरसिश होगी।

प्यारे प्यारे इस्लामी भाइयो ! ख़ुदा عَزَّوَجَلَّ की क़सम दुन्या की रंगीनियों में गुम मालदार व साह़िबे इक़्तिदार के मुक़ाबले में सुन्नतों का पाबन्द ग़रीबो नादार ख़ुश नसीब व बख़्त बेदार है, और वोह आख़िरत में काम्याब है जो ग़ुरबत, अमराज़ो आफ़ात में मुब्तला होने के बा वुजूद **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ और उस के प्यारे ह़बीब صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰی عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم का इत़ाअ़त गुज़ार है। एक **इब्रतनाक रिवायत** सुनिये और इब्रत से सर धुनिये। चुनान्चे

जहन्नम का ग़ोता : हज़रते सय्यिदुना अनस رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْه से मरवी है, फ़रमाते हैं कि हुज़ूर सरापा नूर, फ़ैज़ गन्जूर, शाहे ग़यूर صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰی عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया, "क़ियामत के दिन कुफ़्फ़ार में से उस शख़्स को लाया जाएगा जो दुन्या में बहुत ज़ियादा ने'मतों से मालामाल हुवा होगा। कहा जाएगा, इसे आग में ग़ोता दो। लिहाज़ा उसे आग में ग़ोता दिया जाएगा। फिर उस से कहा जाएगा, ऐ फ़ुलां ! क्या कभी तू ने'मत से मालामाल हुवा ? तो वोह कहेगा, "नहीं ! मैं ने कोई ने'मत नहीं पाई।" और मुसल्मानों में से उस शख़्स को लाया जाएगा जो दुन्या में सब से ज़ियादा मुसीबत ज़दा और बदहाल था, कहा जाएगा, इसे जन्नत में एक **ग़ोता** दो। लिहाज़ा उसे जन्नत में एक ग़ोता दिया जाएगा फिर उस से पूछा जाएगा, ऐ फ़ुलां ! क्या तूने कभी सख़्ती देखी, क्या तू कभी मुसीबत से दो चार हुवा ? तो वोह कहेगा, नहीं ! मैं ने कभी सख़्ती नहीं देखी और न ही मैं कभी मुसीबत में मुब्तला हुवा। (ابنِ ماجہ ج۴ ص۵۳۰ رقم الحدیث ۴۳۲۱)

मा'लूम हुवा जहन्नम इस क़दर होलनाक है कि उस का सिर्फ़ एक ग़ोता दुन्या की सारी रंगीनियां, ऐश कोशियां और राहत सामानियां भुला देगा और उस का येह ज़ेहन बन जाएगा कि मैं तो हमेशा परेशान ही रहा हूं नीज़ जन्नत का एक ग़ोता इस क़दर फ़रहत बख़्श है कि दुन्या में

कंगाल और त़रह़ त़रह़ की मुसीबतों के बाइस बदह़ाल रहने वाला सिर्फ़ एक ग़ोत़ए जन्नत के सबब सारे ग़म भूल जाएगा और उस का येह ज़ेह्न बन जाएगा कि मैं ने तो कभी तक्लीफ़ देखी भी नहीं कि कैसी होती है।

मीज़ां पे सब खड़े हैं आ'माल तुल रहे हैं

रख लो भरम ख़ुदारा अ़त्तारे क़ादिरी का

कम खाने की आ़दत बनाने का त़रीक़ा : ज़ियादा खाने की आ़दत वाला **पेट का क़ुफ़्ले मदीना** लगाते हुए अगर जज़्बात में आ कर एक दम खाना कम कर देगा तो क़वी इम्कान है कि कमज़ोर हो जाए और उस का ह़ौसला भी पस्त होने लगे, लिहाज़ा थोड़ा थोड़ा कम करे। मसलन एक दिन में 12 रोटियां खाता है और अपने आप को 6 रोटियों पर लाना चाहता है तो इन 12 रोटियों को 60 ह़िस्सों में तक़्सीम कर ले और रोज़ाना एक ह़िस्सा कम करता जाए या'नी पहले दिन 59 टुकड़े खाए, दूसरे दिन 58, इस त़रह़ एक माह में 30 टुकड़ों या'नी 6 रोटियों तक पहुंच जाएगा और اِنْ شَآءَ اللّٰه عَزَّوَجَلَّ कमज़ोरी वग़ैरा भी नहीं होगी। अगर सिर्फ़ चावल खाता है तो इस की भी इसी त़रह़ तरकीब की जा सकती है, मसलन रोज़ाना एक लुक़्मा कम करता रहे और इस त़रह़ मत़लूबा मिक़्दार पर पहुंचे और दिल मज़बूत़ रखे, येह न हो कि लज़ीज़ ग़िज़ा सामने आ गई या दा'वत में

पहुंचे और नफ़्स ने कहा कि आज ज़ियादा खा ले कल फिर अपने मा'मूल पर आ जाना तो अगर नफ़्स की बातों में आ गए फिर इस्तिक़ामत मुश्किल है। चाहे कितना ही लज़ीज़ तरीन खाना सामने आ जाए जो अपने मा'मूल पर डटा रहे वोही काम्याब है। हां ! जब कम खाने की आ़दत में पक्का हो गया अब अगर कभी दा'वत वग़ैरा में मा'मूल से हट कर कुछ ज़ाइद खा लिया तो اِنْ شَآءَ اللّٰه عَزَّوَجَلَّ रुकावट नहीं होगी।

भाइयो बहनो ! सभी आ़दत बनाओ भूक की

पाओगे रह़मत ज़रा ज़ह़मत उठाओ भूक की

खाने की मिक़्दार मुक़र्रर फ़रमा लीजिये : अपने लिये खाने की मिक़्दार (मसलन आधी रोटी, एक चम्मच चावल, सात क़त्ले कद्दू शरीफ़, बड़ी हो तो एक वरना दो[2] बोटियां, एक टुकड़ा आलू, तीन[3] चम्मच शोरबा वग़ैरा) मुक़र्रर फ़रमा लीजिये कि इतना खाने के बा'द चाहे कितनी ही भूक बाक़ी रह जाए मज़ीद नहीं खाऊंगा। चुनान्चे जब भी खाने बैठें तो मुम्किना सूरत में तै शुदा मिक़्दार में खाना पहले ही से अपनी रिकाबी में अलग कर लीजिये कि **पेट का क़ुफ़्ले मदीना** लगाने के ख़्वाहिश मन्द के लिये शायद इस से बेहतर कोई त़रीक़ा नहीं। हां ! अगर नफ़्स ने अपनी रिकाबी में ज़ियादा डलवा भी दिया तो कम कर

दीजिये। एक बार ले चुकें फिर चाहे लाख ख़्वाहिश हो मज़ीद खाना मत लीजिये वरना नफ़्स मुत़ालबात बढ़ाता चला जाएगा ! कभी कहेगा, एक बोटी और उठा लो, कभी कहेगा आलू ले लो, एक चम्मच दाल मज़ीद डाल लो वग़ैरा। दा'वतों में भी इस अन्दाज़ को मल्हूज़ रखिये। क्यूं कि "पेट का क़ुफ़्ले मदीना" लगाने या'नी भूक से कम खाने की अभी तक जिस की आ़दत नहीं बनी वोह अगर आम रवाज के मुत़ाबिक़ बड़े बरतन से बार बार थोड़ा थोड़ा निकालता रहेगा तो अन्देशा है कि नफ़्स उस को भुलावे में डाल कर ज़ियादा खिला दे। अगर थाल में सब मिल कर खा रहे हों और अपनाइयत की फ़ज़ा हो मसलन सुन्नतों की तरबियत का मदनी क़ाफ़िला हो या **दा'वते इस्लामी** के जामिअ़तुल मदीना का मदनी माहोल। तो जो इस्लामी भाई या त़ालिबे इ़ल्म पेट का क़ुफ़्ले मदीना लगाना चाहे वोह मदनी इन्आ़मात के मुत़ाबिक़ थाल में से अपने **मिट्टी के बरतन** में ज़रूरत का खाना निकाल ले। मगर थाल के क़रीब बैठ कर मिल कर ही खाए। ऐसे मौक़ेअ़ पर अगर साथ वालों को ना गवार हो तो सब के साथ मिल कर थाल ही में खाए। लिहाज़ा सब से मह़फ़ूज़ त़रीक़ा भी येही है कि खाने के निवाले मख़्सूस कर ले मसलन 12 निवालों की आ़दत बनाई है तो सब के साथ मिल कर खाने

में اِنْ شَآءَاللهعَزَّوَجَلَّ कोई दुश्वारी न होगी कि तसव्वुर में गिन कर निवाले पूरे किये जा सकते हैं।

भूक का या इलाही عَزَّوَجَلَّ क़रीना मिले पेट का मुझ को कुफ़्ले मदीना मिले

इस्तिक़ामत का मदनी ख़ज़ीना मिले हिर्स़े लज़्ज़ाते दुन्या कभी ना मिले

ख़ल्त़ (MIX) कर के भी खाना खा सकते हैं : अगर घर में कई क़िस्म के खाने हैं मसलन रोटी, चावल, सालन, समोसे, मिठाई वग़ैरा। तो यूं भी हो सकता है कि ह़स्बे ज़रूरत सब में से थोड़ा थोड़ा एक ही बरतन में निकाल लीजिये और इन सब को आपस में ख़ल्त़ मल्त़ कर लीजिये इस त़रह़ अगर लज़्ज़त कम भी हो जाए तो ह़रज नहीं कि اِنْ شَآءَاللهعَزَّوَجَلَّ इस से नफ़्स कुछ न कुछ दबेगा। मगर आ़म दा'वत में एह़तियात़ फ़रमाइये। हां ! अगर **मदनी माह़ोल** ही में दा'वत है और आप जानते हैं कि मेज़बान को बुरा मह़सूस नहीं होगा और रियाकारी में पड़ने का भी ख़त़रा नहीं तो मिला देने में मुज़ायक़ा नहीं। बेहतर है कि कोई एक इस्लामी भाई मेज़बान से येह कह दे, "**जो** जिस त़रह़ खाना चाहे उसे उस त़रह़ खाने की इजाज़त दे दीजिये।" अब अगर वोह हां कह दे तो सब के लिये इजाज़त हो गई। किसी ने सगे मदीना عُفِیَ عَنْهُ को बताया था कि मैं ने एक साह़िब को देखा कि जब दस्तर ख़्वान पर अन्वाओ़ अक़्साम के खाने आए तो उन्हों ने सब में से थोड़ा थोड़ा ले कर अपनी रिकाबी में डाल कर मिला दिया ! किसी ने इज़्हारे तअ़ज्जुब किया, तो कहने लगे,

फ़रमाने मुस्त़फ़ा صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم : जिस के पास मेरा ज़िक्र हुवा और उस ने मुझ पर दुरूदे पाक न पढ़ा तह़क़ीक़ वोह बद बख़्त हो गया। (ابن سنی)

"पेट में जा कर सारे खाने मिल ही जाते हैं मैं ने पहले ही से मिला लिये।"

नफ़्स की चाल में न आएं काश !

डट के खाना कभी न खाएं काश !

दूसरों की मौजूदगी में कम खाने का त़रीक़ा : दूसरों की मौजूदगी में रियाकारी या मेज़बान वग़ैरा के इसरार से बचने के लिये एक त़रीक़ा येह भी हो सकता है कि **तीन उंग्लियों** से छोटे छोटे निवाले ले कर ख़ूब चबा कर खाइये और हमेशा इन **सुन्नतों** का ख़याल रखिये बिल ख़ुसूस दा'वतों में अक्सर लोग जल्द जल्द खाते हैं लिहाज़ा हो सकता है खाने की मश्ग़ूलियत उन्हें आप से बे तवज्जोह रखे। अगर फिर भी आप ख़ुद को जल्द फ़ारिग़ होता मह़सूस फ़रमाएं तो इत़्मीनान से हड्डियां चूसते रहिये। उम्मीद है। इस त़रह़ आप सब के साथ फ़राग़त ह़ासिल करने में काम्याब हो जाएंगे। सब के सामने जल्दी जल्दी हाथ खींच लेना अगर **रिया** या'नी दिखावे की ख़ात़िर हो कि लोग समझें के नेक आदमी है और तक़्वे की वज्ह से कम खाता है तो ऐसा करना ह़राम और जहन्नम में ले जाने वाला काम है। रियाकारी से अपने आप को बचाना बहुत ज़रूरी है। **सरकारे मदीना** صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم का फ़रमाने इ़ब्रत निशान है, **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ उस अ़मल को क़बूल नहीं फ़रमाता जिस में एक ज़र्रे के बराबर भी रिया (या'नी दिखावा) हो। (اَلتَّرغیب وَالتَّرھیب ج۱ص۸۷) अगर कोई तह़्दीसे ने'मत के लिये या पेश्वा अपने मा तह़तों, उस्ताज़ अपने शागिर्दों और पीर अपने

मुरीदों की तरग़ीब के लिये अपना अ़मल ज़ाहिर करे तो मुज़ायक़ा नहीं। मगर यहां अच्छी त़रह़ ग़ौर करना होगा कि वाक़ेई तह़दीसे ने'मत या तरग़ीब मक़्सूद है या नहीं। **अगर दिल की गहराई में भी अपनी पारसाई का सिक्का बिठाने की निय्यत छुपी हुई हो तो फिर रियाकारी और जहन्नम की ह़क़दारी है।**

दा'वते इस्लामी के सुन्नतों की तरबियत के **मदनी क़ाफ़िलों** में सफ़र और रोज़ाना **फ़िक्रे मदीना** के ज़रीए **मदनी इन्आ़मात** का रिसाला पुर कर के हर मदनी माह की पहली तारीख़ अपने यहां के ज़िम्मेदार को जम्अ़ करवाने का मा'मूल बना लीजिये। اِنْ شَآءَاللّٰہ عَزَّوَجَلَّ इस की बरकत से पाबन्दे सुन्नत बनने, गुनाहों से नफ़रत करने और **ईमान की ह़िफ़ाज़त** के लिये कुढ़ने का ज़ेहन बनेगा।

इख़्लास क़बूलिय्यत की कुन्जी है : बेशक उ़म्र भर डट कर खाए तब भी गुनहगार नहीं और अगर ज़िन्दगी में एक बार भी रियाकार बना तो गुनहगार और अ़ज़ाबे नार का ह़क़दार है। इस्लामी भाइयों के सामने तो संभल कर थोड़ा सा खाए ताकि येह तअस्सुर क़ाइम हो कि वाह भई ! इस ने पेट का क़ुफ़्ले मदीना लगाया हुवा है और फिर "खाऊं खाऊं" करता हुवा घर पहुंचे और भूके शेर की त़रह़ ग़िज़ाओं पर टूट पड़े ऐसा शख़्स पक्का रियाकार और दोज़ख़ का ह़क़दार है। बेशक वोह

इस्लामी भाई बहुत अ़क़्ल मन्द है जो दूसरों के सामने इस त़रह़ खाए कि उस की कमज़ोरी का किसी को अन्दाज़ा न हो सके और घर वग़ैरा में खूब अच्छी त़रह़ **पेट का क़ुफ़्ले मदीना** लगाए रखे। अ़मल सिर्फ़ व सिर्फ़ **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ की रिज़ा के लिये होना चाहिये कि **इख़्लास क़बूलिय्यत की कुन्जी है।**

रियाकारियों से बचा या इलाही عَزَّوَجَلَّ *!*
कर इख़्लास मुझ को अ़त़ा या इलाही عَزَّوَجَلَّ *!*

कम खाने वाले का इम्तिह़ान : प्यारे प्यारे इस्लामी भाइयो ! जो पेट का क़ुफ़्ले मदीना लगाने या'नी कम खाने की आ़दत बनाने के लिये रियाज़त का आग़ाज़ करे उस का इम्तिह़ान यूं भी हो सकता है कि इब्तिदाअन नक़ाहत मह़सूस हो, मिज़ाज चिड़चिड़ा होने लगे, बा'ज़ हमदर्द भी समझाने लगें, कमज़ोरी से डराने लगें और इस त़रह़ नफ़्सियाती दबाव बढ़े। फिर कम खाने की बरकत से निज़ामे इन्हिज़ाम में बेहतरी आने के सबब हो सकता है खाना जल्द हज़्म हो और जल्दी जल्दी भूक लगने लगे और इस त़रह़ खाने की रग़बत मज़ीद बढ़ने लगे। नीज़ जब भी कहीं खाना पक रहा होगा तो उस की ख़ुश्बू से मशामे दिमाग़ मुअ़त्तर हो जाएंगे और मुंह से राल टपक पड़ेगी जी चाहेगा बस आज तो डट कर खा ही डालूं। इसी त़रह़ घर में अन्वाओ़ अक़्साम की ग़िज़ाएं, उन की ख़ुश्बूएं बिल ख़ुसूस

रमज़ानुल मुबारक में ब वक़्ते इफ़्तार शदीद भूक प्यास और सामने लज़ीज़ खानों का त़बाक़ और बक़रह ईद में गोश्त के अम्बार, सीख़ पर चढ़ी हुई बोटियों के भूनने की भूक भड़काने वाली ख़ुश्बू में बसे हुए धूएं और क़िस्म क़िस्म के पक्वान आप का इम्तिह़ान लेते रहेंगे। मगर आप हिम्मत न हारिये। इस फ़रमाने मुस्त़फ़ा صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم को याद करते रहिये। اَفْضَلُ الْعِبَادَاتِ اَحْمَزُھَا या'नी इबादतों में अफ़्ज़ल इबादत वोह है जिस में ज़ह़मत (या'नी तक्लीफ़) ज़ियादा है। (کشف الخفاء ج ۱ ص ۱۷۵)

मुसल्सल चालीस[40] दिन तक कम खा लीजिये : ऐसा भी हो सकता है कि चन्द रोज़ पेट का क़ुफ़्ले मदीना लगा रहे और फिर इस्तिक़ामत न रहे और ख़ूब खाने पीने का सिलसिला शुरूअ़ हो जाए मगर आप हिम्मत मत हारिये, जिद्दो जहद जारी रखिये। बार बार नए सिरे से तरकीब बनाते रहिये। मसलन कभी निय्यत कर लीजिये कि **बिस्मिल्लाह** के सात[7] हुरूफ़ की निस्बत से सात[7] दिन **पेट का क़ुफ़्ले मदीना** लगाऊंगा। इस त़रह़ रबीउ़न्नूर शरीफ़ के **12** दिन, शा'बानुल मुअ़ज़्ज़म के **15** दिन, रमज़ानुल मुबारक का आख़िरी अ़शरह **पेट का क़ुफ़्ले मदीना** लगा लीजिये। कोशिश कीजिये कि कभी मुसल्सल **40** दिन तक कम खाने की भी सआ़दत मिल जाए اِنْ شَآءَاللّٰہ عَزَّوَجَلَّ इस की बरकत से इस्तिक़ामत भी मिल जाएगी। जैसा कि ह़ज़रते सय्यिदुना वह्ब

बिन मुनब्बेह رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ फ़रमाते हैं, **"बन्दा जिस किसी चीज़ को चालीस[40] दिन तक अपनी आ़दत बना ले तो अल्लाह तबारक व तआ़ला उसे** (या'नी उस चीज़ को) **उस की त़बीअ़त बना देता है।**

(رسالۃ القُشیریہ ص ۲۴۳)

मैं कम खाना खाने की आ़दत बनाऊं
ख़ुदाया ! करम ! इस्तिक़ामत भी पाऊं عَزَّوَجَلَّ

कम खाने पर इस्तिक़ामत पाने के लिये : पेट का क़ुफ़्ले मदीना लग जाए और भूक से कम खाने की आ़दत पड़ जाए इस निय्यत से कभी कभी दो[2] रक्अ़त सलातुल ह़ाजत (आ़म नवाफ़िल की त़रह़) अदा कर के और कभी यूं ही पेट का क़ुफ़्ले मदीना पर इस्तिक़ामत और खाने की ह़िर्सो रग़्बत दूर होने के लिये दुआ़ कर लीजिये नीज़ **फ़ैज़ाने सुन्नत** का येही बाब या'नी **"पेट का क़ुफ़्ले मदीना"** हर माह या जब खाने की ह़िर्स फिर उभरने लगे तो कम अज़ कम एक बार पढ़ या सुन लीजिये नीज़ **एह़्याउल उ़लूम** जिल्द 3 से भी शिकम सेरी की आफ़तों वाला मज़्मून पढ़ लीजिये। तो اِنْ شَآءَاللّٰہ عَزَّوَجَلَّ बहुत फ़ाएदा होगा। और येह बात अच्छी त़रह़ ज़ेह्न नशीन कर लीजिये कि **पेट का क़ुफ़्ले मदीना** या'नी भूक से कम खाना आप को सिर्फ़ चन्द रोज़ दुश्वार मा'लूम होगा, वोह भी ज़ियादा

तर उस वक़्त जब तक कि दस्तर ख़्वान पर बैठे रहेंगे, दस्तर ख़्वान बढ़ा लेने के बा'द اِنْ شَآءَاللّٰه عَزَّوَجَلَّ तवज्जोह हट जाएगी। इस के बा'द जब **पेट के कुफ़्ले मदीना** की आ़दत पड़ जाएगी और इस की बरकतों का मुशाहदा फ़रमा लेंगे तो ज़ियादा खाने को اِنْ شَآءَاللّٰه عَزَّوَجَلَّ जी भी नहीं चाहेगा। आप हिम्मत कीजिये। اِنْ شَآءَاللّٰه عَزَّوَجَلَّ दुश्वारी के बा'द आसानी हो ही जाएगी। **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ इर्शाद फ़रमाता है :

فَاِنَّ مَعَ الْعُسْرِ يُسْرًاۙ﴿۵﴾
اِنَّ مَعَ الْعُسْرِ يُسْرًاؕ﴿۶﴾
(پ ۳۰ سورة اَلَمْ نَشْرَح آيت ۵، ۶)

तरजमए कन्ज़ुल ईमान : तो बेशक दुश्वारी के साथ आसानी है, बेशक दुश्वारी के साथ और आसानी है।

कड़वी नसीहत : अगर भूक से कम खाने की अभी तक तरकीब नहीं भी थी तो जिस का **मदनी ज़ेहन** होगा वोह ख़ुद ही اِنْ شَآءَاللّٰه عَزَّوَجَلَّ अपनी तरकीब बना लेगा और **पेट का कुफ़्ले मदीना** लगा लेगा और अगर अ़ज़्मे मुसम्मम हुवा तो इस का त़रीक़े कार भी ख़ुद ही वज़्अ़ कर लेगा। और जो बेचारा "**जूउ़ल कल्ब**" का मरीज़ और ज़ियादा खाने पर ह़रीस होगा उस के लिये ढेरों तह़रीरात और मुतअ़द्दद बयानात भी नाकाफ़ी हैं। शायद येह तह़रीर भी उस के सर के ऊपर से गुज़र जाएगी, सुनी अनसुनी कर देगा, ठन्डे दिल से ग़ौर करने की ज़ह़मत तक गवारा नहीं करेगा। बल्कि ऐन मुम्किन है कि مَعَاذَ اللّٰه عَزَّوَجَلَّ "पेट का कुफ़्ले मदीना" पर

तन्क़ीद पर उतर आए। ऐसे शख़्स के बारे में एक बुज़ुर्ग رَحْمَةُ اللّٰهِ تَعَالٰى عَلَيْه ने बिल्कुल सच फ़रमाया, "**शिकम सेर** को जब नसीहृत की जाती है तो उस का ज़ेहन क़बूल ही नहीं करता।" (نُزهَةُ المَجالس ج١ص١٧٨) तो ऐसा शख़्स नफ़्सो शैतान के मश्वरे के मुताबिक़ नित नई लज़्ज़तों के लिये राहें हमवार करता रहेगा और अन्वाओ अक़्साम के खाने बनाने के त़रीक़े मा'लूम करने के लिये बाज़ार से किताबें लाता और मुख़्तलिफ़ ह़ीले बहाने से लज़ीज़ ग़िज़ाएं मंगाता, बार बार खाता, बैतुल ख़ला के ख़ूब फेरे लगाता, जिस्म पर चरबी चढ़ाता, बदन बढ़ाता, डॉक्टरों को अपना बिगड़ा हुवा पेट दिखाता और इ़लाज पर पानी की त़रह़ पैसे बहाता रहेगा। ह़ालां कि इस की बीमारियों का इ़लाज ख़ुद इस के पास मौजूद है, अगर **पेट का क़ुफ़्ले मदीना** लगा ले तो अमराज़ व मुआ़लजात और डॉक्टरों के अख़्राजात से नजात पा सकता है। मगर जिस ने अपनी ज़िन्दगी का उसूल "ख़ुर्दन बराए ज़ीस्तन" या'नी जीने के लिये खाना के बजाए "ज़ीस्तन बराए ख़ुर्दन" या'नी खाने के लिये जीना को बनाया है वोह नादान सिह़्ह़त मन्द ज़िन्दगी गुज़ार ही नहीं सकता।

फूल की पत्ती से कट सकता है हीरे का जिगर

मर्दे नादां पर कलामे नर्मो नाज़ुक बे असर

फ़रमाने मुस्तफ़ा صَلَّى اللہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم : तुम जहां भी हो मुझ पर दुरूद पढ़ो कि तुम्हारा दुरूद मुझ तक पहुंचता है। (طبرانی)

या रब्बे मुस्त़फ़ा عَزَّوَجَلَّ ! तुझे हमारे मीठे मीठे आक़ा صَلَّى اللہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم की मुबारक भूक और उस की वज्ह से शिकमे अत़्हर पर बंधे हुए बा मुक़द्दर **पथ्थरे मुनव्वर** का वासित़ा हमें कम खाने, कम सोने और कम बोलने की ने'मतों से नवाज़ दे। सह़ाबए किराम عَلَیْہِمُ الرِّضْوَان और औलियाए इ़ज़ाम की भूक शरीफ़ का सदक़ा हम सब को भी आ़फ़िय्यत वाली भूक और **पेट का क़ुफ़्ले मदीना** लगाने की सआ़दत अ़त़ा फ़रमा।

इलाही عَزَّوَجَلَّ *! पेट का क़ुफ़्ले मदीना कर अ़त़ा हम को*
करम से इस्तिक़ामत का ख़ज़ीना कर अ़त़ा हम को

اٰمین بِجاہِ النَّبِیِّ الْاَمین صلَّی اللہ تعالٰی علیہ واٰلہٖ وسلَّم

दा'वते इस्लामी के सुन्नतों की तरबियत के **मदनी क़ाफ़िलों** में सफ़र और रोज़ाना **फ़िक्रे मदीना** के ज़रीए **मदनी इन्आ़मात** का रिसाला पुर कर के हर मदनी माह की पहली तारीख़ अपने यहां के ज़िम्मेदार को जम्अ़ करवाने का मा'मूल बना लीजिये। اِنْ شَآءَاللہ عَزَّوَجَلَّ इस की बरकत से पाबन्दे सुन्नत बनने, गुनाहों से नफ़रत करने और **ईमान की ह़िफ़ाज़त** के लिये कुढ़ने का ज़ेहन बनेगा।

صَلُّوْا عَلَی الْحَبِیْب ! صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلٰی مُحَمَّد
تُوْبُوْا اِلَی اللہِ ! اَسْتَغْفِرُ اللہ
صَلُّوْا عَلَی الْحَبِیْب ! صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلٰی مُحَمَّد

52 ह़िकायात

(1) सय्यिदुना जाबिर رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْهُ के घर दा'वत

मश्हूर सह़ाबी ह़ज़रते सय्यिदुना जाबिर رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْهُ फ़रमाते हैं, "**ग़ज़्वए ख़न्दक़**" के मौक़अ़ पर हम ख़न्दक़ खोद रहे थे कि एक सख़्त चट्टान सामने आ गई। सह़ाबए किराम عَلَيْهِمُ الرِّضْوَان ने बारगाहे ख़ैरुल अनाम صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم में ह़ाज़िर हो कर अ़र्ज़ की, "ख़न्दक़ में एक सख़्त चट्टान सामने आ गई है।" फ़रमाया, "मैं उतर कर आता हूं।" फिर आप صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم उठे और **आप** صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم **के शिकमे अत़्हर पर पथ्थर बंधे हुए थे और हम ने भी तीन[3] दिन से कुछ नहीं चखा** (खाया) **था**। मदनी लजपाल, सय्यिदह आमिना के लाल, मह़बूबे रब्बे ज़ुल जलाल صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने कुदाल ली और ज़र्ब लगाई तो चट्टान टूट फूट कर मिट्टी का ढेर बन गई। मैं ने अ़र्ज़ की, "**या रसूलल्लाह** صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ! मुझे घर जाने की इजाज़त मर्ह़मत फ़रमाइये।" (इजाज़त मिलने पर घर आ कर) मैं ने अपनी अहलिया رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْهَا से कहा, "मैं ने ताजदारे मदीना صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم को इस ह़ालत में देखा है कि सब्र नहीं कर सकता। क्या तुम्हारे पास कोई (खाने की) चीज़ है?" जवाब दिया, "**जव** और एक **बकरी** है।" मैं ने बकरी को ज़ब्ह़ किया और जव को पीसा ह़त्ता कि हम दोनों ने गोश्त हंडिया में डाल

फ़रमाने मुस्तफ़ा صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم : जिस ने मुझ पर रोज़े जुमुआ दो सो बार दुरूदे पाक पढ़ा उस के दो सो साल के गुनाह मुआफ़ होंगे। (جمع الجوامع)

दिया। मैं बारगाहे रिसालत صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم में हाज़िर हुवा। उस वक़्त आटा नर्म हो कर रोटी पकने के क़ाबिल हो गया था और हंडिया चूल्हे पर पकने के क़रीब थी। (मैं ने अ़र्ज़ की) "**या रसूलल्लाह** صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ! मेरे पास थोड़ा सा खाना है आप صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم तशरीफ़ ले चलिये और एक या दो[2] आदमियों को हमराह ले लीजिये।" फ़रमाया, "खाना कितना है?" मैं ने मिक्दार बताई तो फ़रमाया, "खाना बहुत है और उ़म्दा है।" (उन से) कहो कि मेरे आने से पहले न चूल्हे से हंडिया उतारें और न ही तन्नूर से रोटियां निकालें। (फिर) आप صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने (सहाबए किराम عَلَیْہِمُ الرِّضْوَان से फ़रमाया, "उठो!" तो मुहाजिरीन और अन्सार عَلَیْہِمُ الرِّضْوَان उठ खड़े हुए (सय्यिदुना जाबिर رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ फ़रमाते हैं) मैं "अपनी अहलिया رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہَا" के पास गया और कहा, "तुम्हारा भला हो, सरकारे नामदार صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم मुहाजिरीन, अन्सार عَلَیْہِمُ الرِّضْوَان और जो लोग आप صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم के साथ थे तशरीफ़ ला चुके हैं।" कहने लगीं, "क्या सरकारे आ़ली वक़ार صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने आप से पूछा था?" मैं ने कहा, "हां" (इतने में) रह़मते आ़लम, नूरे मुजस्सम, शाहे बनी आदम صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने (सहाबए किराम عَلَیْہِمُ الرِّضْوَان से) फ़रमाया, "अन्दर दाख़िल हो जाओ और भीड़ न करो।" हुज़ूरे अकरम, नूरे मुजस्सम, नय्यरे आ'ज़म, रसूले मोहूतशम, शाहे बनी आदम صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने (अपने दस्ते मुबारक से) **रोटी**

तोड़ना और उस पर गोश्त रखना शुरूअ़ किया जब आप صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم रोटी और गोश्त निकाल लेते तो हंडिया और तन्नूर को ढांप देते । और खाना सहाबए किराम عَلَيْهِمُ الرِّضْوَان को अ़ता फ़रमाते और फिर ढकना उतारते। आप صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم इसी त़रह़ रोटी तोड़ते और हंडिया से गोश्त निकालते रहे यहां तक कि तमाम सहाबए किराम عَلَيْهِمُ الرِّضْوَان सेर हो गए और खाना बच गया। तो आप صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने (उन से) फ़रमाया, "तुम ख़ुद भी खाओ और लोगों को तोह़फ़तन दो, क्यूं कि लोग भूक में मुब्तला हैं।"

(صحیح بخاری ج۵ ص۵۵ رقم الحدیث ۴۱۰۱)

अल्लाह عَزَّوَجَلَّ की उन पर रह़मत हो और उन के सदक़े हमारी मग़्फ़िरत हो ।

صَلُّوا عَلَی الْحَبِیْب ! صَلَّی اللهُ تَعَالٰی عَلٰی مُحَمَّد

प्यारे प्यारे इस्लामी भाइयो ! इस **मदनी ह़िकायत** से दर्स मिला कि हमारे मीठे मीठे आक़ा, मदीने वाले मुस्त़फ़ा صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم की भूक इख़्तियारी थी जभी तो एक त़रफ़ भूक से शिकमे अत़्हर पर पथ्थर बांध रखा है और दूसरी त़रफ़ एक ही हंडिया से ढेरों ढेर सह़ाबए किराम عَلَيْهِمُ الرِّضْوَان को शिकम सेर फ़रमा रहे हैं इस मो'जिज़े में ह़िक्मत के हज़ारहा मदनी फूल हैं इन में एक येह भी **मदनी फूल** है कि हमारे मदनी हुज़ूर صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم लाचारो मजबूर नहीं हैं, अपने परवर्दगार عَزَّوَجَلَّ की रह़मत से दोनों जहां के ख़ज़ानों के मालिको मुख़्तार हैं, इस मदनी

मक्कतुल मुकर्रमा मदीनतुल मुनव्वरा जन्नतुल बक़ीअ़

हिकायत से येह भी **दर्स** मिला कि शाहे ख़ैरुल अनाम صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم और सहाबए किराम عَلَیْہِمُ الرِّضْوَان ने ख़ूब तकालीफ़ बरदाश्त कर के भूके रह कर और अपने मुबारक पेट पर पथ्थर बांध कर नेकी की दा'वत आ़म फ़रमाई, और आह ! एक हम लोग भी हैं कि हर त़रह़ की आसाइशें मौजूद होने के बा वुजूद राहे ख़ुदा عَزَّوَجَلَّ में मा'मूली सी तक्लीफ़ उठाने के लिये भी तय्यार नहीं होते यक़ीनन अब कोई नबी नहीं आएगा, मुसल्मानों ही को **नेकी की दा'वत** का अ़ज़ीम फ़रीज़ा अन्जाम देना है। ख़ुदा عَزَّوَجَلَّ की क़सम ! आज मुसल्मानों की ह़ालत बहुत ख़स्ता हो चुकी है, मस्जिदों की वीरानी देख कर कलेजा मुंह को आता है, एक इ़ब्रत अंगेज़ वाक़िआ़ समाअ़त फ़रमाइये :

(2) मदनी क़ाफ़िले ने मस्जिद आबाद की

एक इस्लामी भाई का बयान है, सुन्नतों की तरबियत के लिये दा'वते इस्लामी वाले आ़शिक़ाने रसूल का 12 दिन का **मदनी क़ाफ़िला** एक मस्जिद पर पहुंचा। दरवाज़े पर ताला था, जूं तूं चाबी ह़ासिल की, दरवाज़ा खोला तो हर चीज़ मिट्टी से अटी हुई थी, ऐसा मा'लूम होता था कि काफ़ी अ़र्से से मस्जिद बन्द पड़ी है। اَلْحَمْدُ لِلّٰہ عَزَّوَجَلَّ हम ने मिलजुल कर सफ़ाई की, **मदनी दौरा** कर के शह्र के लोगों को "**नेकी की दा'वत**" पेश कर के मस्जिद में आने की इल्तिजा की। अफ़्सोस ! हमारे इख़्लास की कमी के बाइ़स एक शख़्स भी साथ न आया, मगर हम ने हिम्मत न

हारी, **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ का नाम ले कर क़रीबी खेल के मैदान में दाख़िल हो गए और डरते डरते खेलने में मश्ग़ूल नौ जवानों की ख़िदमत में **नेकी की दा'वत** पेश की, اَلْحَمْدُ لِلّٰه عَزَّوَجَلَّ उन के दिल पसीज गए, कई नौ जवान **हाथों हाथ,** हमारे साथ चल पड़े, मस्जिद में आ कर हमारे साथ नमाज़ें पढ़ने और सुन्नतों भरे बयानात सुनने की सआदत हासिल की, हमारी दरख़्वास्त पर उन्हों ने इस मस्जिद को आबाद करने की निय्यत की। येह मन्ज़र देख कर वहां मौजूद तक़रीबन 70 सालह एक बुज़ुर्ग आबदीदा हो कर फ़रमाने लगे, "मैं तो लोगों से मस्जिद आबाद करने के लिये कहता रहता था मगर मेरी सुने कौन ? اَلْحَمْدُ لِلّٰه عَزَّوَجَلَّ **आज आशिक़ाने रसूल के मदनी क़ाफ़िले की बरकत से हमारी मस्जिद आबाद हो गई है।**

صَلُّوا عَلَی الْحَبِیْب! صَلَّی اللّٰهُ تَعَالٰی عَلٰی مُحَمَّد

تُوبُوا اِلَی اللّٰه! اَسْتَغْفِرُ اللّٰه

صَلُّوا عَلَی الْحَبِیْب! صَلَّی اللّٰهُ تَعَالٰی عَلٰی مُحَمَّد

दा'वते इस्लामी के सुन्नतों की तरबियत के **मदनी क़ाफ़िलों** में सफ़र और रोज़ाना **फ़िक्रे मदीना** के ज़रीए **मदनी इन्आमात** का रिसाला पुर कर के हर मदनी माह की पहली तारीख़ अपने यहां के ज़िम्मेदार को जम्अ करवाने का मा'मूल बना लीजिये। اِنْ شَآءَ اللّٰه عَزَّوَجَلَّ इस की बरकत से पाबन्दे सुन्नत बनने, गुनाहों से नफ़रत करने और **ईमान की हिफ़ाज़त** के लिये कुढ़ने का ज़ेहन बनेगा।

फ़रमाने मुस्तफ़ा صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم : जो मुझ पर एक दिन में 50 बार दुरूदे पाक पढ़े क़ियामत के दिन मैं उस से मुसाफ़हा करूं (या'नी हाथ मिलाऊं)गा। (ابن بشکوال)

(3) 80 सहाबा और थोड़ा सा खाना

हज़रते सय्यिदुना अनस رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ फ़रमाते हैं, "हज़रते सय्यिदुना **अबू त़ल्हा** رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ ने (घर तशरीफ़ ला कर) हज़रते सय्यिदतुना उम्मे सुलैम رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہَا से फ़रमाया, "मैं ने हुज़ूरे पुरनूर, शाफ़ेए यौमुन्नुशूर صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم की कमज़ोर आवाज़ को सुना जिस से मुझे आप صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم की भूक का इल्म हुवा। क्या तुम्हारे पास कोई (खाने की) चीज़ है?" उम्मे सुलैम رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہَا ने अ़र्ज़ की, "जी हां!" फिर उन्हों ने जव की रोटी के कुछ टुकड़े निकाले, अपना दुपट्टा लिया, उस के एक हिस्से में रोटी को लपेटा और उसे मेरे कपड़ों के नीचे छुपा दिया और दुपट्टे का बाक़ी हिस्सा मेरे (या'नी सय्यिदुना अनस رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ के) ऊपर उढ़ा दिया और फिर मुझे ताजदारे रिसालत, माहे नुबुव्वत صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم की ख़िदमते सरापा अ़ज़मत में भेजा। मैं वोह रोटी ले कर हाज़िर हुवा। तो देखा कि राहते हर क़ल्बे नाशाद, महबूबे रब्बुल इबाद صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم बमअ़ कसीर अफ़राद मस्जिद में तशरीफ़ फ़रमा हैं। मैं वहां खड़ा हो गया तो **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ के महबूब, दानाए ग़ुयूब, मुनज़्ज़हुन अ़निल उ़यूब صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने (ग़ैब की ख़बर देते हुए) फ़रमाया, "क्या तुम्हें **अबू त़ल्हा** ने भेजा है?" मैं ने अ़र्ज़ की, "जी हां **या रसूलल्लाह** صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم!" फ़रमाया, "आया खाने के लिये?" मैं ने अ़र्ज़ की, जी सरकार। शाहे ख़ैरुल अनाम صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने सहाबए किराम عَلَيْهِمُ الرِّضْوَان से फ़रमाया, "चलो!"

फ़रमाने मुस्तफ़ा صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم : बरोज़े क़ियामत लोगों में से मेरे क़रीब तर वोह होगा जिस ने दुन्या में मुझ पर ज़ियादा दुरूदे पाक पढ़े होंगे। (ترمذی)

सब हज़रात चल पड़े और मैं उन के आगे आगे चल दिया। हत्ता कि मैं हज़रते सय्यिदुना अबू तल्हा رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْهُ के पास आया और उन्हें सूरते हाल से आगाह किया। हज़रते सय्यिदुना अबू तल्हा رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْهُ ने फ़रमाया, "ऐ उम्मे सुलैम (رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْهَا) ! मदीने के शहन्शाह صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم लोगों के हमराह तशरीफ़ ला रहे हैं और हमारे पास कुछ नहीं जो उन सब को खिलाएं। हज़रते सय्यिदतुना उम्मे सुलैम رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْهَا ने कहा, اَللّٰهُ وَرَسُوْلُهٗ اَعْلَم या'नी **अल्लाह** तआला और उस का रसूल صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ही बेहतर जानते हैं। हज़रते सय्यिदुना अबू तल्हा رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْهُ चल दिये यहां तक कि सरकारे मदीना صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم की ख़िदमत में हाज़िर हो गए। शहन्शाहे कौनैन, रहमते दारैन, दुखी दिलों के चैन, नानाए हसनैन صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم उन के साथ घर में तशरीफ़ लाए। सरकारे नामदार صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया, "ऐ उम्मे सुलैम (رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْهَا) ! जो कुछ तुम्हारे पास है ले आओ। आप رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْهَا वोही रोटी (के टुकड़े) ले आईं। मदीने वाले आक़ा, मीठे मीठे मुस्तफ़ा صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم के हुक्म से रोटी को तोड़ा गया। फिर हज़रते सय्यिदतुना उम्मे सुलैम رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْهَا ने उस पर घी का बरतन निचोड़ा, और उसे बतौरे सालन इस्ति'माल किया, फिर सरकारे नामदार, बि इज़्ने परवर्दगार दो[2] आलम के मालिको मुख़्तार, शहन्शाहे अबरार صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने जो कुछ **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ को मन्ज़ूर था वोह उस पर पढ़ा। फिर फ़रमाया,

"दस 10 को अन्दर आने की इजाज़त दो।" उन्हों ने **दस**10 आदमियों को बुलाया। उन्हों ने खाया ह़त्ता कि सेर हो गए फिर बाहर निकल गए। फिर फ़रमाया, मज़ीद **दस**10 को बुलाओ।" उन्हों ने दस10 को बुलाया। उन्हों ने खाना खाया और बाहर चले गए। फिर फ़रमाया, "मज़ीद **दस**10 को बुलाओ।" यहां तक कि सारी क़ौम ने खाना खाया और सब आसूदा (या'नी सेर) हो गए। वोह क़ौम **सत्तर**70 या **अस्सी**80 सह़ाबा عَلَيْهِمُ الرِّضْوَان पर मुश्तमिल थी। (مسلم ج۲ص۱۷۸رقم الحدیث۲۰۴۰) **एक** रिवायत में है, कि मुसल्सल दस10 दस10 आदमी अन्दर दाख़िल होते रहे और दस10 आदमी बाहर निकलते रहे यहां तक कि उन में से कोई भी ऐसा न रहा जिस ने अन्दर जा कर खाना न खाया हो और सब सेर हो गए। सरकारे मदीना صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰی عَلَیْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने उस खाने को इकठ्ठा किया तो वोह उतना ही था जितना खाने से पहले था। एक और रिवायत में है, दस10, दस10 सह़ाबए किराम عَلَيْهِمُ الرِّضْوَان खाना तनावुल फ़रमाते रहे, यहां तक कि **अस्सी**80 सह़ाबा عَلَيْهِمُ الرِّضْوَان ने खाना खाया। इस के बा'द शहन्शाहे ज़माना صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰی عَلَیْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم और अहले ख़ाना ने खाना खाया और फिर भी खाना बाक़ी बच गया। मज़ीद एक रिवायत में येह भी है, "जो खाना बच गया वोह उन्हों ने पड़ोसियों को दिया। (مسلم ج۲ص۱۷۸رقم الحدیث۲۰۴۰)

अल्लाह عَزَّوَجَلَّ की उन पर रह़मत हो और उन के सदक़े हमारी मग़्फ़िरत हो।

صَلُّوا عَلَى الْحَبِيب ! صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلٰى مُحَمَّد

प्यारे प्यारे इस्लामी भाइयो ! येह सरकारे मदीना صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰی عَلَیْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم का **मो'जिज़ा** था कि ब ज़ाहिर मुख़्तसर सा खाना 80 सहाबए किराम عَلَيْهِمُ الرِّضْوَان के खाने के बा वुजूद उतने का उतना ही रहा। سُبْحٰنَ اللّٰه عَزَّوَجَلَّ ताजदारे रिसालत, क़ासिमे ने'मत, सरापा रह़मत, मालिके जन्नत صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰی عَلَیْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم की भी क्या शानो अ़ज़मत है कि ख़ुद भूके रहें और अपने ग़ुलामों को ख़ूब ख़ूब ने'मतें खिलाएं आप صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰی عَلَیْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم का फ़रमान बाइ़से ताज़गिये ईमान है : اِنَّمَا اَنَا قَاسِمٌ وَّاللّٰهُ يُعْطِی या'नी **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ अ़त़ा करता है और मैं तक़्सीम करता हूं। (صحیح مسلم ج ۲ ص ۸۷۱ رقم الحدیث ۲۰۴۰)

रब है मुअ़्त़ी عَزَّ وَجَلَّ*, येह हैं क़ासिम* صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰی عَلَیْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم *रिज़्क़ उस का है, खिलाते येह हैं*
ठन्डा ठन्डा मीठा मीठा पीते हम हैं, पिलाते येह हैं
उस की बख़्शिश इन का सदक़ा देता वोह है, दिलाते येह हैं
اِنَّآ اَعْطَيْنٰكَ الْكَوْثَر *सारी कसरत पाते येह हैं*
कह दो रज़ा से ख़ुश हो ख़ुश रह
मुज़्दा रिज़ा का सुनाते येह हैं

(4) क़द्आवर मछली

ह़ज़रते सय्यिदुना अबू अ़ब्दुल्लाह जाबिर बिन अ़ब्दुल्लाह رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْهُمَا फ़रमाते हैं, "इमामुल मुबल्लिग़ीन, सरवरे दुन्या व दीन, मह़बूबे रब्बुल आ़लमीन صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰی عَلَیْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने हम (तीन सो300 अफ़राद) को क़ुरैश के मुक़ाबले पर भेजा और ह़ज़रते सय्यिदुना **अबू**

फ़रमाने मुस्त़फ़ा صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم : जो मुझ पर एक बार दुरूद पढ़ता है अल्लाह उस के लिये एक क़ीरात़ अज्र लिखता है और क़ीरात़ उहुद पहाड़ जितना है। (عبدالرزاق)

उ़बैदा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ को हमारा सिपह सालार मुक़र्रर फ़रमाया और हमें खजूरों की एक बोरी बत़ौरे ज़ादे राह इनायत फ़रमाई। ह़ज़रते सय्यिदुना अबू उ़बैदा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ हमें (रोज़ाना) एक एक खजूर अ़त़ा फ़रमाते। पूछा गया, आप ह़ज़रात رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُم एक खजूर से कैसे गुज़ारा करते थे ? तो फ़रमाया, "हम उस को चूसते जिस त़रह़ बच्चा चूसता है और ऊपर से पानी पी लेते। तो वोह उस रोज़ रात तक हमें काफ़ी हो जाती। हम अपने नेज़ों से दरख़्त के पत्ते (जिन्हें ऊंट खाया करते हैं) गिराते और उन्हें पानी में भिगो कर खा लेते। फ़रमाते हैं, हम **साह़िले समुन्दर** से गुज़र रहे थे कि (दूर से) साह़िल पर रेत के बड़े टीले की त़रह़ की कोई चीज़ नज़र आई। हम क़रीब पहुंचे तो देखा कि वोह जानदार (का मुर्दा) है जिसे अ़म्बर (मछली) कहा जाता है। ह़ज़रते सय्यिदुना अबू उ़बैदा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ ने फ़रमाया, "येह मुर्दार है।" फिर ख़ुद ही फ़रमाया, "नहीं बल्कि हम **रसूलुल्लाह** صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم के भेजे हुए हैं और हम राहे ख़ुदा عَزَّوَجَلَّ में (घरों से निकले) हैं और आप ह़ज़रात عَلَیْہِمُ الرِّضْوَان इज़्त़िरारी ह़ालत में हैं इस लिये (इसे) खा लीजिये। हम ने एक महीने इस पर गुज़ारा किया और हम तीन सो300 (आदमी) थे ह़त्ता कि हम फ़रबा हो गए। मुझे याद है कि हम उस की आंख के गढ़े से मटके भर भर कर चरबी निकालते। और हम उस (मछली) से बैल जितने बड़े बड़े टुकड़े काटते (उस मछली की आंख का ह़ल्क़ा इतना बड़ा था कि) ह़ज़रते सय्यिदुना अबू उ़बैदा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ ने हम में से तेरह13 आदमियों को उस की आंख के गढ़े में बिठा दिया (तो

सब समा गए)। उस की एक **पस्ली** को पकड़ कर (कमान की त़रह़) खड़ा किया फिर एक बड़े **ऊंट** पर कजावा कसा और वोह उस (पस्ली की कमान) के नीचे से गुज़र गया। और हम ने उस के ख़ुश्क गोश्त के टुकड़े बत़ौरे ज़ादे राह साथ रख लिये। जब हम मदीनए मुनव्वरह पहुंचे तो सरकारे मदीना صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم की ख़िदमत में ह़ाज़िर हुए और आप صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم से इस का ज़िक्र किया। तो आप صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया, "वोह रिज़्क़ था जो **अल्लाह** तआ़ला ने तुम्हारे लिये पैदा फ़रमाया, क्या तुम्हारे पास उस गोश्त में से कुछ है ? (अगर हो तो) हमें भी खिलाओ। हम ने हुज़ूरे पाक صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم की ख़िदमत में उस (मछली) का **गोश्त** भेजा तो आप صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने तनावुल फ़रमाया। (صحیح مسلم ج۲ص۱۴۷۱رقم الحدیث۱۹۳۵)

अल्लाह عَزَّوَجَلَّ की उन पर रह़मत हो और उन के सदक़े हमारी मग़्फ़िरत हो।

صَلُّوْا عَلَی الْحَبِیْب! صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلٰی مُحَمَّد

(5) अमीनुल उम्मह

प्यारे प्यारे इस्लामी भाइयो ! सह़ाबए किराम عَلَیْہِمُ الرِّضْوَان के जज़्बे और वल्वले के क़ुरबान ! ऐसी तंगी और उ़सरत कि रोज़ाना सिर्फ़ एक खजूर और दरख़्तों के पत्ते खा कर भी राहे ख़ुदा عَزَّوَجَلَّ में दुश्मनों से लड़ते और अपनी जानें क़ुरबान करते थे। अभी जो ह़िकायत आप ने मुलाह़ज़ा फ़रमाई इस मुहिम का नाम **सैफ़ुल बह़्र** है, इस को "जैशुल

उ़सरह" भी कहते हैं। तीन सो300 जांबाज़ों की फ़ौज के सिपह सालार ह़ज़रते सय्यिदुना अबू उ़बैदा बिन अल जर्राह़ رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ अ़शरए मुबश्शरा से थे। बारगाहे रिसालत صَلَّى اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم से इन को "अमीनुल उम्मह" (या'नी उम्मत का अमानत दार) का प्यारा लक़ब अ़ता हुवा था। इब्तिदाए इस्लाम में ह़ज़रते सय्यिदुना अबू बक्र सिद्दीक़ رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ की **इन्फ़िरादी कोशिश** के नतीजे में मुसल्मान हुए थे। निहायत ही दिलेर, शेरदिल, बुलन्द क़ामत थे और चेह्‌रए मुबारका पर गोश्त कम था, ग़ज़्वए उहुद के मौक़अ़ पर मदीने के ताजदार शहन्शाहे अबरार صَلَّى اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم के रुख़्सारे पुर अन्वार में लोहे के ख़ोद की दो कड़ियां पैवस्त हो गई थीं। इन्हों ने अप ने दांतों से उन को खींच कर निकाला इस वज्ह से आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ के दो अगले दांत शहीद हो गए थे। (الاصابہ ج۳ ص۴۷۶)

अल्लाह عَزَّوَجَلَّ की उन पर रह़मत हो और उन के सदक़े हमारी मग़्फ़िरत हो।

صَلُّوا عَلَی الْحَبِیْب ! صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلٰی مُحَمَّد

प्यारे प्यारे इस्लामी भाइयो ! जैशुल उ़सरह के मौक़अ़ पर **क़दआवर मछली** का मिल जाना, एक माह तक सह़ाबए किराम عَلَیْہِمُ الرِّضْوَان का उस को तनावुल फ़रमाना, ऊंटों पर लाद कर साथ लाना, मदीनए मुनव्वरह भी साथ ले आना। **मछली के गोश्त** के ज़ाएक़े में तग़य्युर न आना येह सब **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ की रह़मत से सय्यिदुना अबू

उ़बैदा बिन जर्राह़ رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْه और सह़ाबए किराम عَلَيْهِمُ الرِّضْوَان की बरकतें और करामतें थीं। राहे ख़ुदा عَزَّوَجَلَّ में जो भी सफ़र करता है। **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ की उस पर ख़ूब रह़मतें होती हैं, मुसीबतों में भी अ़ज़्मतें ह़ासिल होती हैं, और राह़तें तो फिर हैं ही राह़तें। हर मुसल्मान को सह़ाबए किराम عَلَيْهِمُ الرِّضْوَان की इन अ़ज़ीम क़ुरबानियों से **दर्स** ह़ासिल करते हुए इस्लाम की ख़िदमत के लिये कमर बस्ता रहना चाहिये।

اَلْحَمْدُ لِلّٰه عَزَّوَجَلَّ तब्लीग़े क़ुरआनो सुन्नत की आ़लमगीर ग़ैर सियासी तह़रीक, **दा'वते इस्लामी** के हर फ़र्द का येह मदनी मक़्सद है, "**मुझे अपनी और सारी दुन्या के लोगों की इस्लाह़ की कोशिश करनी है**" इस मदनी मक़्सद के ह़ुसूल के लिये आ़शिक़ाने रसूल के **मदनी क़ाफ़िले सुन्नतों** की तरबियत के लिये शहर ब शहर और गाउं ब गाउं सफ़र करते रहते हैं। हर मुसल्मान को मदनी क़ाफ़िले का मुसाफ़िर बन कर इस की बरकतें लूटना चाहिये। राहे ख़ुदा عَزَّوَجَلَّ में सफ़र पर निकले हुए मुक़द्दस अफ़राद की **क़दआवर मछली** के ज़रीए ग़ैबी इमदाद की ह़िकायत आप ने अभी मुलाह़ज़ा फ़रमाई। اَلْحَمْدُ لِلّٰه عَزَّوَجَلَّ आज भी जो इख़्लास के साथ इस्लाम की ख़िदमत की तड़प ले कर घरों से निकलते हैं वोह मह़रूम नहीं रहते चुनान्चे दा'वते इस्लामी के **मदनी क़ाफ़िले की बहार** मुलाह़ज़ा फ़रमाइये।

تُوْبُوْا اِلَی اللّٰه! اَسْتَغْفِرُ اللّٰه

(6) दिल का मरीज़ ठीक हो गया

एक इस्लामी भाई को दिल की तक्लीफ़ हुई डॉक्टर ने बताया कि आप के दिल की दो[2] नालियां बन्द हैं, एन्जियोग्राफ़ी (ANGIOGRAPHY) करवा लीजिये। इलाज पर हज़ारहा रुपै का ख़र्च आता था। येह बेचारे ग़रीब घबराए हुए थे। एक इस्लामी भाई ने उन पर **इन्फ़िरादी कोशिश** करते हुए **दा'वते इस्लामी** के सुन्नतों की तरबियत के मदनी क़ाफ़िले में सफ़र कर के वहां दुआ़ मांगने की तरग़ीब दिलाई, चुनान्चे वोह तीन[3] दिन के लिये मदनी क़ाफ़िले के मुसाफ़िर बने। वापसी पर तबीअ़त को बेहतर पाया जब टेस्ट करवाए तो तमाम रिपोर्टें दुरुस्त थीं। डॉक्टर ने हैरत से पूछा कि तुम्हारे दिल की दोनों बन्द नालियां खुल चुकी हैं। आख़िर येह कैसे हुवा ? जवाब दिया, اَلْحَمْدُ لِلّٰه عَزَّوَجَلَّ **दा'वते इस्लामी के मदनी क़ाफ़िले में सफ़र कर के दुआ़ करने की बरकत से मुझे दिल के मोहलिक मरज़ से नजात मिल गई है।**

लूटने रहमतें क़ाफ़िले में चलो सीखने सुन्नतें क़ाफ़िले में चलो

दिल में गर दर्द हो डर से रुख़ ज़र्द हो

पाओगे राहतें क़ाफ़िले में चलो

صَلُّوْا عَلَى الْحَبِيْب ! صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلٰى مُحَمَّد

फ़रमाने मुस्तफ़ा صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم : उस शख़्स की नाक ख़ाक आलूद हो जिस के पास मेरा ज़िक्र हो और वोह मुझ पर दुरूदे पाक न पढ़े। (ترمذی)

(7) यह्या عَلَيْهِ السَّلَام और शैतान

मन्क़ूल है, हज़रते सय्यिदुना यह्या عَلٰی نَبِیِّنَا وَعَلَیْہِ الصَّلٰوۃُ وَالسَّلَام ने एक बार शैतान के पास बहुत से जाल देख कर इस्तिफ़्सार फ़रमाया, "येह क्या है ? उस ने जवाब दिया, येह **शहवात के जाल** हैं जिन से मैं आदमियों का शिकार करता हूं। आप عَلَيْهِ السَّلَام ने पूछा, क्या मुझे फांसने के लिये भी इन में से कोई जाल है ? उस ने कहा, "नहीं, मगर सिर्फ़ एक रात आप عَلَيْهِ السَّلَام ने पेट भर कर खाना खाया, तो मैं ने उस रात आप عَلَيْهِ السَّلَام पर नमाज़ को भारी कर दिया।" हज़रते सय्यिदुना यह्या عَلٰی نَبِیِّنَا وَعَلَیْہِ الصَّلٰوۃُ وَالسَّلَام ने येह सुन कर फ़रमाया, "**ख़ुदा** عَزَّوَجَلَّ **की क़सम !** आयिन्दा मैं कभी पेट भर कर नहीं खाऊंगा।" शैतान बोला, "मैं भी आयिन्दा कभी किसी को ऐसी (फ़ाएदे वाली) बात नहीं बताऊंगा।" (مِنْہاجُ العابِدین ص۹۳)

अल्लाह عَزَّوَجَلَّ **की उन पर रह़मत हो और उन के सदक़े हमारी मग़्फ़िरत हो।**

صَلُّوْا عَلَی الْحَبِیْب ! صَلَّی اللّٰهُ تَعَالٰی عَلٰی مُحَمَّد

इबादत में कब लज़्ज़त आती है : प्यारे प्यारे इस्लामी भाइयो ! येह हिकायत नक़्ल करने के बा'द हुज्जतुल इस्लाम हज़रते सय्यिदुना इमाम मुहम्मद ग़ज़ाली عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللّٰهِ الْوَالِى फ़रमाते हैं, "येह उस मा'सूम हस्ती का ह़ाल है जिस ने सारी उम्र में एक बार सेर हो कर खाया, तो उस का क्या ह़ाल होगा जिस ने सारी उम्र में सिर्फ़ एक बार (वोह भी

किसी मजबूरी के तहूत) पेट को भूका रखा हो ? क्या ऐसा शख़्स लज़्ज़ते इबादत की उम्मीद कर सकता है ? **पेट** भर कर खाने से इबादत में कमी वाक़ेअ़ होती है। क्यूं कि इन्सान जब ख़ूब सेर हो कर खा लेता है तो उस का बदन बोझल हो जाता, आंखों में नींद भर जाती, और आ'ज़ा सुस्त पड़ जाते हैं। कोशिश के बा वुजूद कोई काम नहीं कर सकता, हर वक़्त ज़मीन पर मुर्दे की तरह पड़ा रहता है, कहा गया है, "जब तू **पेटू** बन जाए तो फिर अपने आप को ज़न्जीर में जकड़ा हुवा समझ।" ह़ज़रते सय्यिदुना **अबू सुलैमान** दारानी قُدِّسَ سِرُّہُ النُّوْرَانِی फ़रमाते हैं "मैं इबादत में सब से ज़ियादा हलावत (या'नी मिठास) उस वक़्त मह़सूस करता हूं जब भूक की वज्ह से मेरा पेट पीठ से लगा हुवा हो। (ازمنہاجُ العابدین ص ۹۳)

अल्लाह عَزَّوَجَلَّ की उन पर रह़मत हो और उन के सदक़े हमारी मग़्फ़िरत हो।

صَلُّوا عَلَى الْحَبِيب ! صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلٰى مُحَمَّد

(8) दूध उगल दिया !

एक बार अमीरुल मुअमिनीन ह़ज़रते सय्यिदुना अबू बक्र सिद्दीक़ رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ का ग़ुलाम आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ की ख़िदमत में **दूध** लाया। आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ ने उसे पी लिया। ग़ुलाम ने अ़र्ज़ की, "मैं पहले जब भी कोई चीज़ पेश करता तो आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ उस के मुतअ़ल्लिक़ दरयाफ़्त फ़रमाते थे लेकिन इस **दूध** के मुतअ़ल्लिक़

कोई इस्तिफ़्सार नहीं फ़रमाया ?" येह सुन कर आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ ने पूछा, "येह दूध कैसा है ?" ग़ुलाम ने जवाब दिया कि मैं ने ज़मानए जाहिलिय्यत में एक बीमार पर **मन्तर** फूंका था जिस के मुआवज़े में आज उस ने येह **दूध** दिया है। हज़रते सय्यिदुना सिद्दीक़े अक्बर رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ ने येह सुन कर अपने ह़ल्क़ में उंगली डाली और **दूध उगल दिया**। इस के बा'द निहायत आ़जिज़ी से दरबारे इलाही عَزَّوَجَلَّ में अ़र्ज़ किया, " **या अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ ! जिस पर मैं क़ादिर था वोह मैं ने कर दिया। इस का थोड़ा बहुत हिस्सा जो रगों में रह गया है वोह मुआ़फ़ फ़रमा दे। (مِنہاجُ العابِدین ص ۹۷)

अल्लाह عَزَّوَجَلَّ की उन पर रह़मत हो और उन के सदक़े हमारी मग़्फ़िरत हो।

صَلُّوا عَلَی الْحَبِیْب ! صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلٰی مُحَمَّد

प्यारे प्यारे इस्लामी भाइयो ! देखा आप ने ! ह़ज़रते सय्यिदुना सिद्दीक़े अक्बर رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ कितने ज़बर दस्त मुत्तक़ी थे। कुफ़्फ़ार अक्सर कुफ़्रिय्या कलिमात पढ़ कर मरीज़ों पर झाड़ फूंक करते हैं। दौरे जाहिलिय्यत में भी इसी त़रह़ होता था। उस ग़ुलाम ने चूंकि ज़मानए जाहिलिय्यत में दम किया था, लिहाज़ा इस ख़ौफ़ के सबब कि उस ने कुफ़्रिय्या मन्तर पढ़ कर दम किया होगा, उस की उजरत का **दूध** सय्यिदुना सिद्दीक़े अक्बर رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ ने क़ै कर के निकाल दिया।

यक़ीनन मम्बए ख़ौफ़े ख़ुदा عَزَّ وَجَلَّ सिद्दीक़े अक्बर رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ हैं
हक़ीक़ी आ़शिक़े ख़ैरुल वरा صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم सिद्दीक़े अक्बर رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ हैं
निहायत मुत्तक़ियो पारसा सिद्दीक़े अक्बर رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ हैं
तक़ी हैं बल्कि शाहे अत्क़िया सिद्दीक़े अक्बर رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ हैं

(9) भुनी हुई बकरी

हज़रते सय्यिदुना अबू हुरैरा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ कुछ लोगों के पास से गुज़रे जिन के सामने **भुनी हुई बकरी** रखी थी, उन्हों ने आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ को खाने में शामिल होने की दरख़्वास्त की तो आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ ने येह फ़रमाते हुए खाने से इन्कार कर दिया कि शहन्शाहे ख़ुश ख़िसाल, सुल्ताने शीरीं मक़ाल, महबूबे रब्बे ज़ुल जलाल صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم इस हाल में दुन्या से रुख़्सत हुए कि आप صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने कभी जव की रोटी भी पेट भर कर नहीं खाई। (صحیح بخاری ج۶ص۲۵۲رقم الحدیث۵۴۱۴)

अल्लाह عَزَّوَجَلَّ की उन पर रह़मत हो और उन के सदक़े हमारी मग़्फ़िरत हो।

صَلُّوا عَلَى الْحَبِيب! صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلٰى مُحَمَّد

ख़ुदाया عَزَّ وَجَلَّ मैं उ़म्दा ग़िज़ाएं न खाऊं ग़मे मुस्तफ़ा صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم में बस आंसू बहाऊं

तन्दूरी रान : प्यारे प्यारे इस्लामी भाइयो ! एक त़रफ़ ह़ज़रते सय्यिदुना अबू हुरैरा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ का ग़मे मुस्त़फ़ा (صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم) था कि प्यारे आक़ा صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم की भूक शरीफ़ को याद कर के

भुनी हुई बकरी खाने से इन्कार फ़रमा दिया और आह ! दूसरी त़रफ़ हम जैसे नाम के "उ़श्शाक़" हैं कि अगर तन्दूरी बकरा बल्कि **तन्दूरी रान** ही सामने आ जाए तो इ़श्क़ो मस्ती सब भूल कर भूके शेर की त़रह़ उस पर टूट पड़ें और दोनों हाथ से नोच नोच कर खाने में ऐसे मश्ग़ूल हो जाएं कि शायद नमाज़े बा जमाअ़त का भी होश न रहे आह ! आजकल अक्सर दा'वतों में ऐसा ही होता है । यहां तक कि बुज़ुर्गों की नियाज़ की दा'वत जैसा नफ़्ली काम भी करते हैं तो مَعَاذَ اللّٰہ عَزَّوَجَلَّ अक्सर नमाज़ी खाने की ह़िर्स के बाइ़स जमाअ़त तर्क कर देते हैं मदनी इल्तिजा है कि जब भी दा'वत करें तो इस बात का ख़याल रखें कि कोई नमाज़ बीच में न आए, अगर आ जाए तो फिर लाख मसरूफ़िय्यत हो फ़ौरन मेज़बान व मेहमान सब के सब मस्जिद का रुख़ करें जब तक शरई मजबूरी न हो उस वक़्त तक मस्जिद की जमाअ़ते ऊला लेना वाजिब है । अगर घर में जमाअ़त कर भी ली तो तर्के वाजिब का गुनाह सर पर आएगा । बल्कि बा'ज़ फ़ुक़हाए किराम رَحِمَهُمُ اللّٰہُ تَعَالٰی के नज़्दीक इक़ामत से पहले मस्जिद में न आने वाला गुनहगार है ।

कुफ़्र पर ख़ातिमे का ख़ौफ़ : इफ़्त़ार पार्टियों, दा'वतों, नियाज़ों और ना'त ख़्वानियों वग़ैरा की वज्ह से फ़र्ज़ नमाज़ों की मस्जिद की जमाअ़ते ऊला (या'नी पहली जमाअ़त) तर्क करने की हरगिज़ इजाज़त

नहीं, यहां तक कि जो लोग घर या हॉल या बंगले के कम्पाउन्ड वग़ैरा में तरावीह़ की जमाअ़त क़ाइम करते हैं और क़रीब मस्जिद मौजूद है तो उन पर भी वाजिब है कि पहले फ़र्ज़ रक्अ़तें जमाअ़ते ऊला के साथ मस्जिद में अदा करें जो लोग बिला उ़ज़्रे शरई बा वुजूदे क़ुदरत फ़र्ज़ नमाज़ मस्जिद में जमाअ़ते ऊला के साथ अदा नहीं करते उन को डर जाना चाहिये कि सरकारे मदीना, राह़ते क़ल्बो सीना, फ़ैज़ गन्जीना, साह़िबे मुअ़त्त़र पसीना صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم का फ़रमाने इ़ब्रत निशान है, "जिस को येह पसन्द हो कि कल **अल्लाह** तआ़ला से मुसल्मान हो कर मिले तो वोह इन पांच नमाज़ों (की जमाअ़त) पर वहां पाबन्दी करे जहां अज़ान दी जाती है क्यूं कि **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ ने तुम्हारे नबी صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم के लिये सुनने हुदा मश्रूअ़ की और येह बा जमाअ़त नमाज़ें भी सुनने हुदा से हैं और अगर तुम अपने घरों में नमाज़ पढ़ लिया करो जैसा कि येह पीछे रहने वाला घर में पढ़ लेता है तो तुम अपने नबी की सुन्नत छोड़ दोगे और अगर अपने नबी की सुन्नत छोड़ोगे तो गुमराह हो जाओगे।" (مسلم شریف ج۱ص۲۳۲رقم الحدیث۲۵۷) इस ह़दीसे मुबारक से इशारा मिलता है कि जमाअ़ते ऊला की पाबन्दी करने वाले का ख़ातिमा बिलख़ैर होगा और जो

बिला शरई मजबूरी के मस्जिद की जमाअ़ते ऊला तर्क करता है उस के लिये مَعَاذَ اللّٰہ عَزَّوَجَلَّ **कुफ़्र पर ख़ातिमे का ख़ौफ़ है।**

या रब्बे मुस्त़फ़ा عَزَّوَجَلَّ ! हमें पांचों नमाज़ें मस्जिद की जमाअ़ते ऊला में पहली सफ़ के अन्दर तक्बीरे ऊला के साथ अदा करने की हमेशा सआ़दत नसीब फ़रमा।

اٰمین بِجاہِ النَّبِیِّ الْاَمین صَلَّی اللّٰہ تعالٰی علیہ واٰلہٖ وسلَّم

मैं पांचों नमाज़ें पढ़ूं बा जमाअ़त

हो तौफ़ीक़ ऐसी अ़त़ा या इलाही

(10) रिक़्क़त अंगेज़ ख़ुत़्बा

ह़ज़रते सय्यिदुना ख़ालिद बिन उ़मैर अ़दवी رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ फ़रमाते हैं, "बसरा के हाकिम ह़ज़रते सय्यिदुना उ़त्बा बिन ग़ज़्वान رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ ने एक मौक़अ़ पर हमें इस त़रह़ **ख़ुत़्बा** दिया। **अल्लाह** तआ़ला की ह़म्दो सना के बा'द फ़रमाया, "अम्मा बा'द ! (या'नी इस के बा'द) बेशक **दुन्या** ने अपने ख़ातिमे का ए'लान कर दिया है और वोह इन्तिहाई तेज़ी के साथ रुख़्सत हो रही है। और (अब) इस दुन्या में से इसी क़दर बाक़ी रह गया है जितना कि बरतन का तिल्छट (जो थोड़ा सा तह में रह जाए उस को तिल्छट कहते हैं) और उस (बरतन) का मालिक

फ़रमाने मुस्त़फ़ा صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰی عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم : मुझ पर दुरूदे पाक की कसरत करो बेशक तुम्हारा मुझ पर दुरूदे पाक पढ़ना तुम्हारे लिये पाकीज़गी का बाइस है। (ابو یعلی)

उस (तिल्छट) से फ़ाएदा ह़ासिल कर रहा है। तुम इस दुन्या से उस घर की त़रफ़ मुन्तक़िल होने वाले हो जिस को फ़ना नहीं इस लिये तुम्हारे पास जो सब से बेहतर चीज़ है उस को ले कर उस (उख़रवी) घर की त़रफ़ इन्तिक़ाल करो। हमें येह बताया गया है, "**जहन्नम** के कनारे से एक पथ्थर फेंका जाएगा जो कि **सत्तर**[70] **साल** तक नीचे की त़रफ़ गिरता चला जाएगा लेकिन इस के बा वुजूद वोह जहन्नम की तह तक नहीं पहुंचेगा और ख़ुदा عَزَّوَجَلَّ की क़सम ! उस जहन्नम को ज़रूर पुर किया जाएगा। क्या तुम्हें इस पर तअ़ज्जुब है ? और हम से येह भी बयान किया गया है कि "**जन्नत** के दरवाज़ों के दो[2] किवाड़ों के दरमियान **चालीस**[40] **साल** की मसाफ़त होगी। उस पर एक दिन ज़रूर ऐसा आएगा कि जब वोह हुजूम से भर जाएंगे।" मैं ने अपने आप को देखा कि मैं सरवरे काएनात, शाहे मौजूदात صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰی عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم के साथ सात[7] आदमियों में से सातवां था। हमारे पास दरख़्त के **पत्तों** के इ़लावा खाने को कुछ न था। यहां तक कि (पत्ते खाने के सबब) हमारे होंटों के कोने ज़ख़्मी हो गए। मैं ने एक चादर ह़ासिल की और उसे बीच में से फाड़ कर अपने और **सा'द** बिन मालिक (رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْه) के दरमियान तक़्सीम कर दिया,

आधी चादर बत़ौरे तहबन्द मैं ने इस्ति'माल की और आधी सा'द बिन मालिक (رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ) ने। (एक तो वोह ग़ुरबत का दौर था) और आज हम में से हर एक किसी न किसी शहर का ह़ाकिम है। मैं इस बात से **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ की पनाह मांगता हूं कि मैं तो (ख़ुश फ़हमी के बाइ़स) अपने आप को अ़ज़ीम समझ बैठूं लेकिन ख़ुदा عَزَّوَجَلَّ के नज़्दीक मैं बहुत ह़क़ीर समझा जाऊं। (مسلم شریف ج۲ ص۴۰۸ رقم الحدیث ۲۹۶۷)

अल्लाह عَزَّوَجَلَّ की उन पर रह़मत हो और उन के सदक़े हमारी मग़्फ़िरत हो।

صَلُّوْا عَلَی الْحَبِیْب! صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلٰی مُحَمَّد

प्यारे प्यारे इस्लामी भाइयो! आप ने देखा! सह़ाबए किराम عَلَیْہِمُ الرِّضْوَان ने नेकी की दा'वत आ़म करने के लिये ख़ूब भूक बरदाश्त की यहां तक कि **दरख़्तों** के पत्ते खा कर और ख़ूब सख़्तियां बरदाश्त कर के शजरे इस्लाम की आबयारी फ़रमाई। वाक़ेई़ उस वक़्त ह़ालात इन्तिहाई ना गुफ़्ता बेह थे। जैसा कि एक और रिवायत से भी ज़ाहिर है चुनान्चे,

(11) राहे ख़ुदा में सब से पहला तीर चलाया

अ़शरए मुबश्शरा में से एक जन्नती सह़ाबी ह़ज़रते सय्यिदुना **सा'द** बिन अबी वक़्क़ास رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ फ़रमाते हैं, मैं वोह पहला अ़रब हूं जिस ने राहे ख़ुदा عَزَّوَجَلَّ में सब से पहला तीर चलाया। हम ताजदारे

रिसालत, शहन्शाहे नुबुव्वत, मह़बूबे रब्बुल इ़ज़्ज़त صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم की मइय्यत (साथ) में जिहाद करते थे। और हमारे पास कीकर के (या'नी कांटे दार) दरख़्त के पत्तों के सिवा खाने को कुछ न होता था क़ज़ाए ह़ाजत के वक़्त हमारी इजाबत बकरी की मेंग्नियों की मिस्ल होती, जिस पर लेसदार माद्दे का नामो निशान तक न होता। (صحیح بخاری ج۷ ص۲۳۱ رقم الحدیث۶۴۵۳)

अल्लाह عَزَّوَجَلَّ **की उन पर रह़मत हो और उन के सदक़े हमारी मग़्फ़िरत हो।**

صَلُّوْا عَلَی الْحَبِیْب! صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلٰی مُحَمَّد

प्यारे प्यारे इस्लामी भाइयो ! फिर आसानियां मिल जाने के बा'द भी उन सह़ाबए किराम عَلَیْہِمُ الرِّضْوَان का जज़्बा ख़त्म तो कुजा कम भी न हुवा बल्कि ख़ौफ़े ख़ुदा عَزَّوَجَلَّ मज़ीद बढ़ गया कि कहीं ऐसा न हो हम अपने आप को बुज़ुर्ग तसव्वुर कर बैठें और **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ हम से नाराज़ हो जाए। **अल्लाह** रब्बुल इ़ज़्ज़त عَزَّوَجَلَّ हमें भी इन सह़ाबए किराम عَلَیْہِمُ الرِّضْوَان के सदक़े **नेकी की दा'वत** आ़म करने की तड़प और इस की ख़ात़िर क़ुरबानियां पेश करने का जज़्बा अ़त़ा फ़रमाए। आमीन। हर इस्लामी भाई को चाहिये कि वोह अपना येह ज़ेहन बना ले कि **मुझे अपनी और सारी दुन्या के लोगों की इस्लाह़ की कोशिश करनी है।** और सह़ाबए किराम عَلَیْہِمُ الرِّضْوَان की राहे ख़ुदा عَزَّوَجَلَّ में क़ुरबानियों को

ख़िराजे तह्सीन पेश करने के लिये **दा'वते इस्लामी** के सुन्नतों की तरबियत के मदनी क़ाफ़िलों में सफ़र की सआ़दत ह़ासिल कर के दीनो दुन्या की बरकतें ह़ासिल करे। मदनी क़ाफ़िले की एक बहार पेशे ख़िदमत है :

(12) हाथ के मस्से

एक इस्लामी भाई का बयान है, मैं तक़रीबन दो[2] साल से बाज़ू के मस्सों की वज्ह से परेशान था। इलाज पर काफ़ी रक़म ख़र्च की, एक बार ऑपरेशन भी करवाया मगर "मरज़ बढ़ता गया जूं जूं दवा की" के मिस्दाक़ मस्सों की ता'दाद में बराबर इज़ाफ़ा होता जा रहा था, दिल में एक ख़ौफ़ सा बैठ गया था कि इन मस्सों में शायद **केन्सर** हो जाएगा और मेरा बाज़ू काट दिया जाएगा। **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ तब्लीग़े क़ुरआनो सुन्नत की आ़लमगीर ग़ैर सियासी तह़रीक **दा'वते इस्लामी** की सूबाई मजलिसे मुशावरत को हर आन सलामत रखे। आमीन। उन्हों ने सूबाई सत़ह़ पर दो[2] रोज़ा सुन्नतों भरा इज्तिमाअ़ (27, 28 जुमादिल ऊला 1425 सि.हि.) रखा, क़िस्मत ने यावरी की और मैं भी सुन्नतों भरे **इज्तिमाअ़** में शरीक हुवा, **दा'वते इस्लामी** के बे शुमार **मदनी क़ाफ़िले** दुन्या के मुख़्तलिफ़ ममालिक में हर वक़्त सफ़र पर रहते हैं और गाउं गाउं क़र्या क़र्या नेकी की दा'वत की धूमें मचाते फिरते हैं, मैं ने सुन रखा था कि मदनी क़ाफ़िलों में सफ़र करने वालों की दुआ़एं क़बूल होती हैं, मैं ने भी हिम्मत की और

दा'वते इस्लामी के सुन्नतों की तरबियत के **12 रोज़ा मदनी क़ाफ़िले** का मुसाफ़िर बन गया। बारगाहे ख़ुदावन्दी عَزَّوَجَلَّ में मीठे मीठे मुस्त़फ़ा صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم का वासित़ा पेश कर के गिड़गिड़ा कर दुआ़ की। मुझ गुनाहगार पर करम हो गया, اَلْحَمْدُ لِلّٰه عَزَّوَجَلَّ **मेरे सारे मस्से झड़ गए। हैरत अंगेज़ बात येह है कि जिन मस्सों का ऑपरेशन करवाया था उन के निशानात बाक़ी हैं मगर 12 रोज़ा मदनी क़ाफ़िले में झड़ने वाले मस्सों के तो निशानात तक ग़ाइब हो गए।**

اَلْحَمْدُ لِلّٰهِ عَلٰى اِحْسَانِهٖ وَكَرَمِهٖ

सीखने सुन्नतें क़ाफ़िले में चलो लूटने रहमतें क़ाफ़िले में चलो

गर हों मस्से झड़ें, क़ाफ़िले में चलो ज़ख़्म बिगड़े भरें, फोड़े फुन्सी मिटें

صَلُّوْا عَلَى الْحَبِيْب ! صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلٰى مُحَمَّد

दा'वते इस्लामी के सुन्नतों की तरबियत के **मदनी क़ाफ़िलों** में सफ़र और रोज़ाना **फ़िक्रे मदीना** के ज़रीए **मदनी इन्आ़मात** का रिसाला पुर कर के हर मदनी माह की पहली तारीख़ अपने यहां के ज़िम्मेदार को जम्अ़ करवाने का मा'मूल बना लीजिये। اِنْ شَآءَاللّٰه عَزَّوَجَلَّ इस की बरकत से पाबन्दे सुन्नत बनने, गुनाहों से नफ़रत करने और **ईमान की हिफ़ाज़त** के लिये कुढ़ने का ज़ेहन बनेगा।

प्यारे प्यारे इस्लामी भाइयो ! सरकारे बग़दाद हुज़ूरे ग़ौसे पाक رَحْمَۃُ اللہِ تَعَالٰی عَلَیْہ ने नफ़्सो शैत़ान से जान छुड़ाने के लिये सालहा साल तक जिद्दो जुह्द फ़रमाई और **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ की रिज़ा ह़ासिल करने के लिये **पच्चीस25 साल** तक इराक़ शरीफ़ के जंगलों में तन्हा रियाज़तें करते रहे।

رَضِی اللّٰہ تعالٰی عنْہ

तू है वोह ग़ौस कि हर ग़ौस है शैदा तेरा

तू है वोह ग़ैस कि हर ग़ैस है प्यासा तेरा

(13) सर्द रात में चालीस40 बार ग़ुस्ल

बहजतुल असरार शरीफ़ में है, सरकारे बग़दाद हुज़ूरे ग़ौसे पाक رَحْمَۃُ اللہِ تَعَالٰی عَلَیْہ फ़रमाते हैं, اَلْحَمْدُ لِلّٰہ عَزَّوَجَلَّ मैं कर्ख़ के जंगलों में बरसों रहा, **दरख़्त के पत्तों और बूटियों पर मेरा गुज़ारा होता।** मुझे पहनने के लिये हर साल एक शख़्स सौफ़ (या'नी ऊन) का एक जुब्बा ला कर देता था। मैं ने दुन्या की मह़ब्बत से नजात ह़ासिल करने के लिये हज़ार जतन किये। मैं गुमनाम रहा। **मेरी ख़ामोशी** के सबब लोग मुझे गूंगा और दीवाना कहते, कांटों पर नंगे पाउं चलता, ख़ौफ़नाक ग़ारों और भयानक वादियों में बिला झिजक दाख़िल हो जाता, दुन्या बन संवर कर मेरे सामने ज़ाहिर होती मगर اَلْحَمْدُ لِلّٰہ عَزَّوَجَلَّ मैं उस की त़रफ़ इल्तिफ़ात (या'नी तवज्जोह) न करता। मेरा नफ़्स कभी तो मेरे आगे आ़जिज़ी करता कि आप की जो मरज़ी होगी वोही करूंगा और कभी मुझ से लड़ता। **अल्लाह**

عَزَّوَجَلَّ मुझे इस पर फ़त्ह़ नसीब करता। मैं मुद्दतों "मद्यन" के बयाबानों में रहा और अपने नफ़्स को मुजाहदात में लगाता रहा। **एक साल तक गिरी पड़ी चीज़ें खाता और बिल्कुल पानी न पीता फिर एक साल सिर्फ़ पानी पर गुज़ारा करता और गिरी पड़ी चीज़ या कोई और गिज़ा न खाता फिर एक साल बिग़ैर कुछ खाए पिये फ़ाक़े से गुज़ारता।** मुझ पर सख़्त आज़्माइशें आतीं। एक बार सख़्त सर्दी की रात में मेरा यूं इम्तिह़ान लिया गया कि बार बार आंख लग जाती और मुझ पर ग़ुस्ल फ़र्ज़ हो जाता। मैं फ़ौरन नह्र पर आता और ग़ुस्ल करता इस त़रह उस एक सर्द रात की कड़कड़ाती ठन्ड में चालीस40 बार मैं ने ठन्डे पानी से ग़ुस्ल किया। (بتغیّر از بہجۃ الاسرار ص۱۶۴،۱۶۵)

अल्लाह عَزَّوَجَلَّ की उन पर रह़मत हो और उन के सदक़े हमारी मग़्फ़िरत हो।

صَلُّوا عَلَى الْحَبِيب! صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلٰى مُحَمَّد

(14) ज़मीन से चुन चुन कर टुकड़े खाना

सरकारे बग़दाद हुज़ूरे ग़ौसे पाक رَحْمَۃُ اللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہ फ़रमाते हैं, मैं शहर में जब खाने के इरादे से गिरे पड़े टुकड़े या जंगल की कोई घास या पत्ती उठाना चाहता और देखता कि दूसरे फ़ुक़रा भी उस की तलाश में हैं तो अपने इस्लामी भाइयों पर ईसार करते हुए न उठाता बल्कि यूं ही छोड़ देता ता कि वोह उठा कर ले जाएं और ख़ुद भूका रहता। जब **भूक** के सबब

कमज़ोरी हृद से बढ़ी और मैं क़रीबुल मर्ग हो गया तो फूल वाले बाज़ार से एक खाने की चीज़ जो ज़मीन पर पड़ी थी वोह मैं ने उठाई और एक कोने में जा कर उसे खाने के लिये बैठ गया। इतने में एक अ़जमी नौ जवान आया उस के पास ताज़ा रोटियां और भुना हुवा गोश्त था वोह बैठ कर खाने लगा। उस को देख कर मेरी खाने की ख़्वाहिश एक दम शिद्दत इख़्तियार कर गई। जब वोह अपने खाने के लिये लुक़्मा उठाता तो भूक की बेताबी की वज्ह से बे इख़्तियार जी चाहता कि मुंह खोल दूं ता कि वोह मेरे मूंह में लुक़्मा डाल दे। आख़िर मैं ने अपने नफ़्स को डांटा कि "बे सब्री मत कर **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ मेरे साथ है। चाहे कुछ भी हो जाए मगर मैं उस नौ जवान से मांग कर हरगिज़ नहीं खाऊंगा"। यकायक वोह नौ जवान मेरी तरफ़ मुतवज्जेह हुवा और कहने लगा, भाई ! आ जाइये और आप رَحْمَةُ اللّٰهِ تَعَالٰى عَلَيْه भी खाने में शरीक हो जाइये, मैं ने इन्कार किया। उस ने इसरार किया। मेरे नफ़्स ने मुझे खाने के लिये बहुत उभारा लेकिन मैं ने फिर भी इन्कार किया। मगर उस नौ जवान के पैहम इसरार पर मैं ने थोड़ा सा खाना खा लिया। उस ने मुझ से पूछा, कहां के रहने वाले हो ? मैं ने कहा, **जीलान**। का वोह बोला, मैं भी जीलान ही का हूं। अच्छा ! येह बताओ तुम मशहूर आ़बिदो ज़ाहिद और वलिय्युल्लाह हज़रत सय्यिद **अ़ब्दुल्लाह सौमई** رَحْمَةُ اللّٰهِ تَعَالٰى عَلَيْه के नवासे **अ़ब्दुल क़ादिर** رَحْمَةُ اللّٰهِ تَعَالٰى عَلَيْه को जानते हो ? मैं ने कहा, वोह तो मैं ही हूं। येह सुन कर

वोह बे क़रार हो गया और कहने लगा कि मैं **बग़दाद** आने लगा तो आप رَحْمَۃُ اللہِ تَعَالٰی عَلَیْہ की अम्मीजान رَحْمَۃُ اللہِ تَعَالٰی عَلَیْہَا ने आप رَحْمَۃُ اللہِ تَعَالٰی عَلَیْہ को देने के लिये मुझे सोने की आठ[8] अशरफ़ियां दी थीं, मैं यहां बग़दाद आ कर आप رَحْمَۃُ اللہِ تَعَالٰی عَلَیْہ को तलाशता रहा मगर आप رَحْمَۃُ اللہِ تَعَالٰی عَلَیْہ का किसी ने पता न दिया यहां तक कि मेरी तमाम रक़म ख़र्च हो गई, मेरा तीन[3] दिन का फ़ाक़ा है। मैं जब भूक से निढाल हो गया और जान पर बन गई तो मैं ने आप رَحْمَۃُ اللہِ تَعَالٰی عَلَیْہ की अमानत में से येह रोटियां और भुना हुवा गोश्त ख़रीदा। हुज़ूर ! आप رَحْمَۃُ اللہِ تَعَالٰی عَلَیْہ भी बख़ुशी इसे तनावुल फ़रमाइये कि येह आप رَحْمَۃُ اللہِ تَعَالٰی عَلَیْہ ही का माल है। पहले आप رَحْمَۃُ اللہِ تَعَالٰی عَلَیْہ मेरे मेहमान थे और अब मैं आप رَحْمَۃُ اللہِ تَعَالٰی عَلَیْہ का मेहमान हूं। बक़िय्या रक़म पेश करते हुए बोला, "मैं मुआ़फ़ी का त़लब गार हूं। इज़्तिरारी ह़ालत में मैं ने आप رَحْمَۃُ اللہِ تَعَالٰی عَلَیْہ की रक़म ही से खाना ख़रीदा था।" मैं बहुत ख़ुश हुवा। मैं ने बचा हुवा खाना और मज़ीद कुछ रक़म उस को पेश की उस ने क़बूल की और चला गया। (الذیل علی طبقات الحنابلة ج۳ ص ۲۵۰)

अल्लाह عَزَّوَجَلَّ की उन पर रह़मत हो और उन के सदक़े हमारी मग़्फ़िरत हो।

त़लब का मुंह तो किस क़ाबिल है या ग़ौस !
मगर तेरा करम कामिल है या ग़ौस !

(ह़दाइक़े बख़्शिश)

صَلُّوا عَلَی الْحَبِیْب ! صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلٰی مُحَمَّد

प्यारे प्यारे इस्लामी भाइयो ! इस क़दर भूक बरदाश्त करने और जान पर बन जाने के बा'द अपनी ही रक़म मिल जाने के बा वुजूद उस को ईसार कर देना येह वाक़ेई बहुत बड़ी बात है और येह औलियाए किराम رَحِمَهُمُ اللّٰهُ تَعَالٰی का ही हिस्सा है। हमारे ग़ौसे आ'ज़म عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللّٰهِ الْاَكْرَم के फ़ाक़े सद मरहबा और आप का ईसार सद हज़ार मरहबा ! काश हमारे अन्दर भी जज़्बए ईसार पैदा हो जाए। हाए ! हाए ! हम तो ठूंस ठूंस कर पेट भर लेने के बा'द बचा हुवा खाना भी ईसार करने का हौसला नहीं रखते बल्कि आयिन्दा खाने के लिये उस को फ़्रिज में महफ़ूज़ कर लेते हैं। काश ! ईसार का अ़ज़ीमुश्शान सवाब हासिल करने का हमारा भी ज़ेह्न बन जाता।

दा'वते इस्लामी के सुन्नतों की तरबियत के **मदनी क़ाफ़िलों** में सफ़र और रोज़ाना **फ़िक्रे मदीना** के ज़रीए **मदनी इन्आ़मात** का रिसाला पुर कर के हर मदनी माह की पहली तारीख़ अपने यहां के ज़िम्मेदार को जम्अ़ करवाने का मा'मूल बना लीजिये। اِنْ شَآءَ اللّٰه عَزَّوَجَلَّ इस की बरकत से पाबन्दे सुन्नत बनने, गुनाहों से नफ़रत करने और **ईमान की हिफ़ाज़त** के लिये कुढ़ने का ज़ेह्न बनेगा।

(15) दुश्वारी के बा'द आसानी

हज़रते अ़ल्लामा इमाम शा'रानी قُدِّسَ سِرُّهُ الرَّبَّانِي "त़बक़ाते कुब्रा" में हुज़ूर ग़ौसुल आ'ज़म عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللّٰهِ الْاَكْرَم का येह इर्शाद नक़्ल करते हैं,

इब्तिदाअन मुझ पर बहुत सख़्तियां रखी गईं और जब सख़्तियां इन्तिहा को पहुंच गईं तो मैं आ़जिज़ आ कर ज़मीन पर लैट गया और मेरी ज़बान पर कुरआने पाक की येह दो[2] आयात जारी हो गईं।

فَاِنَّ مَعَ الْعُسْرِ یُسْرًاۙ﴿۵﴾
اِنَّ مَعَ الْعُسْرِ یُسْرًاؕ﴿۶﴾
(پ۳۰ سورۃ اَلَمْ نَشْرَحْ آیت۵، ۶)

तरजमए कन्ज़ुल ईमान : तो बेशक दुश्वारी के साथ आसानी है, बेशक दुश्वारी के साथ और आसानी है।

اَلْحَمْدُ لِلّٰهِ عَزَّوَجَلَّ इन आयात की बरकत से वोह तमाम सख़्तियां मुझ से दूर हो गईं।

वाह ! क्या मर्तबा ऐ ग़ौस ! है बाला तेरा
ऊंचे ऊंचों के सरों से क़दम आ'ला तेरा

अल्लाह عَزَّوَجَلَّ की उन पर रह़मत हो और उन के सदक़े हमारी मग़्फ़िरत हो।

प्यारे प्यारे इस्लामी भाइयो ! यक़ीनन कुछ पाने के लिये कुरबानियां देनी पड़ती हैं। हमारे ग़ौसुल आ'ज़म عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللّٰهِ الْاَكْرَم ने अपने रब्बे रह़मान और ख़ुदाए ह़न्नानो मन्नान عَزَّوَجَلَّ का कुर्ब और अपने नानाजान रह़मते आ़लमिय्यान صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰی عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم की ख़ुशी पाने, नफ़्सो शैत़ान पर ग़ालिब आने दुन्या की मह़ब्बत से पीछा छुड़ाने, गुनाहों के अमराज़ से ख़ुद को बचाने, मख़्लूक़े ख़ुदा عَزَّوَجَلَّ को राहे रास्त पर लाने, मुबल्लिग़ का अ़ज़ीम शरफ़ पा कर कसीर सवाब कमाने, नेकी की दा'वत की दुन्या में धूम मचाने और बे शुमार कुफ़्फ़ार को दामने इस्लाम में दाख़िल फ़रमाने

के लिये सालहा साल तक जिद्दो जुहद फ़रमाई। ख़ैर हम हुज़ूरे ग़ौसे पाक رَحْمَةُ اللّٰهِ تَعَالٰى عَلَيْه की त़रह़ रियाज़तें तो करने से रहे। मगर हिम्मत हारे बिग़ैर थोड़ी बहुत कोशिश तो करें।

सच है इन्सान को कुछ खो के मिला करता है
आप को खो के तुझे पाएगा जोया तेरा

(ज़ौक़े ना'त)

सरकारे बग़दाद رَحْمَةُ اللّٰهِ تَعَالٰى عَلَيْه की मह़ब्बत का दम भरने वाले इस्लामी भाइयो ! सरकारे ग़ौसे आ'ज़म رَحْمَةُ اللّٰهِ تَعَالٰى عَلَيْه ने पच्चीस[25] बरस **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ की रिज़ा के लिये इराक़ के जंगलों में गुज़ार दिये। और बे मिसाल भूक व प्यास बरदाश्त की। काश ! हमें भी तब्लीग़े क़ुरआनो सुन्नत की आ़लमगीर ग़ैर सियासी तह़रीक दा'वते इस्लामी के सुन्नतों की तरबियत की ख़ात़िर गाउं ब गाउं, शह्‌र ब शह्‌र, मुल्क ब मुल्क सफ़र करने वाले मदनी क़ाफ़िलों का मुसाफ़िर बनना नसीब हो जाए।

صَلُّوْا عَلَى الْحَبِيْب ! صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلٰى مُحَمَّد

(16) रोज़ की ग़िज़ा दस[10] मुनक़्क़े

ह़ज़रते अबू अह़मद सग़ीर عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللّٰهِ الْكَبِيْر फ़रमाते हैं, मुझे ह़ज़रते सय्यिदुना **अबू अ़ब्दुल्लाह बिन ख़फ़ीफ़** رَحْمَةُ اللّٰهِ تَعَالٰى عَلَيْه ने हुक्म दिया कि हर रात उन की इफ़्त़ारी के लिये **मुनक़्क़े** के दस[10] दाने पेश किया करूं। एक रात तर्स खा कर मैं ने दस[10] की बजाए पन्दरह[15] दाने ह़ाज़िर

किये। आप رَحْمَةُ اللّٰهِ تَعَالٰى عَلَيْه ने मेरी त़रफ़ देखा और फ़रमाया, "तुम्हें (पन्दरह15 दाने) लाने का किस ने हुक्म दिया ? आप رَحْمَةُ اللّٰهِ تَعَالٰى عَلَيْه ने सिर्फ़ दस10 खाए और बाक़ी (पांच) को छोड़ दिया। (رسالۃ القشیریہ ص ۱۴۳)

अल्लाह عَزَّوَجَلَّ की उन पर रह़मत हो और उन के सदक़े हमारी मग़्फ़िरत हो।

मुनक़्क़े के ह़ैरत अंगेज़ फ़वाइद

प्यारे प्यारे इस्लामी भाइयो ! देखा आप ने ! ह़ज़रते सय्यिदुना अबू अ़ब्दुल्लाह رَحْمَةُ اللّٰهِ تَعَالٰى عَلَيْه रोज़ाना सिर्फ़ **दस10 अ़दद मुनक़्क़ों** पर गुज़ारा फ़रमाते थे। औलियाए किराम رَحِمَهُمُ اللّٰهُ تَعَالٰى की नफ़्स मारने की अदाएं मरह़बा उन्हों ने मुनक़्क़े का ख़ूब इन्तिख़ाब फ़रमाया। सूखे हुए छोटे अंगूर **किशमिश** और सूखे हुए बड़े अंगूर **मुनक़्क़ा** कहलाते हैं। **अल्लाह** के मह़बूब, दानाए ग़ुयूब, मुनज़्ज़हुन अ़निल उ़यूब صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم का फ़रमाने ह़िक्मत निशान है : "इसे खाओ येह (मुनक़्क़ा) बेहतरीन खाना है, (मुनक़्क़ा) आ'साब (या'नी नसों और पट्ठों) को मज़्बूत़ करता, कमज़ोरी को दूर करता, ग़ुस्से को ठन्डा करता, बल्ग़म को दूर करता, चेहरे की रंगत निखारता और मुंह को ख़ुश्बूदार करता है।" (کشف الخفاء ج۲ ص۳۱۴ رقم الحدیث ۲۸۴) ह़ज़रते मौला अ़ली كَرَّمَ اللّٰهُ تَعَالٰى وَجْهَهُ الْكَرِيْم की रिवायत कर्दा ह़दीस में येह भी है कि (मुनक़्क़ा) कमज़ोरी दूर करता, मिज़ाज को ख़ुश गवार बनाता, सांस को ख़ुश्बूदार करता और ग़म को दूर करता है। (کنز العمال ج۱۰ ص۱۸ رقم الحدیث ۲۸۲۶۱)

किशमिश का पानी पीना सुन्नत है : सरकारे मदीना صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰی عَلَیْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم के लिये किशमिश भिगोई जाती थी। आप صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰی عَلَیْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم उस का पानी उस रोज़, दूसरे रोज़ और बा'ज़ अवक़ात उस के बा'द वाले दिन शाम तक भी नोशे जान फ़रमाते। इस के बा'द उस के बारे में हुक्म फ़रमाते तो ख़ादिमीन उसे पी लेते या उसे बहा दिया जाता। (क्यूं कि बा'द में उस में तग़य्युर आ जाता इस लिये बहा दिया जाता।) (ابوداؤد شریف ج ۳ص ۳۳۷ رقم الحدیث ۳۷۱۳) मुनक़्क़ा दवा भी है और ग़िज़ा भी, उस को चाहें तो यूंही या चाहें तो छिलका उतार कर मुनासिब मिक़्दार में खा लीजिये। मश्हूर मुहद्दिस हज़रते सय्यिदुना इमाम ज़ुहरी رَحْمَةُ اللّٰهِ تَعَالٰی عَلَیْه फ़रमाते हैं, "जिस को अहादीसे मुबारका हिफ़्ज़ करने का शौक़ हो वोह (मुनासिब मिक़्दार में) **मुनक़्क़ा** खाए, मुनक़्क़े बीज समेत भी खा सकते हैं। बल्कि इमाम ज़ुहरी رَحْمَةُ اللّٰهِ تَعَالٰی عَلَیْه फ़रमाते हैं, "मुनक़्क़े के बीज मे'दे की इस्लाह करते हैं।" मुनक़्क़े चन्द घन्टे पानी में भिगो कर रख दीजिये फिर उस का छिलका उतार कर गूदा निकाल लीजिये। **मुनक़्क़े का गूदा** फेफड़ों के लिये इक्सीर और पुरानी खांसी के लिये मुफ़ीद है। गुर्दे और मसाने के दर्द को मिटाता, जिगर और तिल्ली को ताक़त देता, पेट को नर्म करता, मे'दा मज़्बूत करता और हाज़िमा दुरुस्त करता है।

खांसी का इलाज : रोज़ाना किशमिश के 40 दाने (अगर मुवाफ़िक़ आते हों तो दुगने करने में भी हरज नहीं) और तीन[3] अ़दद बादाम ले कर उस

पर **11** बार दुरूद शरीफ़ पढ़ कर दम कर के खा लीजिये इस के ऊपर दो घन्टे तक पानी न पियें। اِنْ شَآءَاللّٰه عَزَّوَجَلَّ खांसी में बहुत फ़ाएदा होगा। बल्ग़म निकलेगा और मज़ीद नहीं बनेगा। (ज़रूरतन किशमिश की ता'दाद बढ़ा दीजिये) बहुत छोटे बच्चों के लिये हस्बे ज़रूरत मिक़्दार कुछ कम कर दीजिये। ता हुसूले शिफ़ा इलाज जारी रखिये।

सुर्ख़ मुनक़्क़े : हज़रते मौलाए काएनात, अ़लिय्युल मुर्तज़ा शेरे ख़ुदा كَرَّمَ اللّٰهُ تَعَالٰى وَجْهَهُ الْكَرِيْم से मरवी है, जो रोज़ाना सुर्ख़ मुनक़्क़े **21** अ़दद खा लिया करे वोह उन तमाम अमराज़ से महफ़ूज़ रहेगा जिन से ख़ौफ़ज़दा है। (ابو نُعیم)

صَلُّوْا عَلَى الْحَبِيْب! صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلٰى مُحَمَّد

(17) बैंगन की ख़्वाहिश

हज़रते सय्यिदुना अबू नस्र तम्मार عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللّٰهِ الْغَفَّار फ़रमाते हैं : "اَلْحَمْدُ لِلّٰه عَزَّوَجَلَّ एक बार रात के वक़्त हज़रते सय्यिदुना **बिश्र हाफ़ी** عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللّٰهِ الْكَافِی हमारे घर तशरीफ़ ले आए। मैं ने वलिय्ये कामिल की आमद पर **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ का शुक्र अदा किया फिर अ़र्ज़ किया, "**या सय्यिदी** رَحْمَةُ اللّٰهِ تَعَالٰى عَلَيْه! हमारे हां ख़ुरासान से रूई आई थी उस से मेरी बच्ची ने जो सूत काता उस को बेच कर गोश्त ख़रीदा है, बराए करम हमारे यहां इफ़्तार फ़रमा लीजिये।" फ़रमाया, "अगर मैं ने किसी के यहां खाने का इरादा किया तो फिर اِنْ شَآءَاللّٰه عَزَّوَجَلَّ आप رَحْمَةُ اللّٰهِ تَعَالٰى عَلَيْه के

यहां खाऊंगा।" फिर फ़रमाने लगे, "कई साल से **बैंगन की ख़्वाहिश** कर रहा हूं मगर अभी तक खा नहीं पाया।" मैं ने अ़र्ज़ किया, "**या सय्यिदी** رَحْمَۃُ اللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہ ! हुस्ने इत्तिफ़ाक़ से इस गोश्त में ह़लाल कमाई के बैंगन भी डाले हैं।" फ़रमाया, "मैं तो उस वक़्त बैंगन खाऊंगा जब कि इस की मह़ब्बत मेरे दिल से निकल जाए।" (رسالۃ القشیریہ ص۱۴۳)

अल्लाह عَزَّوَجَلَّ की उन पर रह़मत हो और उन के सदक़े हमारी मग़्फ़िरत हो।

صَلُّوْا عَلَی الْحَبِیْب ! صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلٰی مُحَمَّد

प्यारे प्यारे इस्लामी भाइयो ! देखा आप ने ! औलिया **अल्लाह** رَحِمَہُمُ اللّٰہُ تَعَالٰی ख़्वाहिशाते नफ़्सानी की पैरवी से किस क़दर परहेज़ करते हैं। **नफ़्स के मुत़ालबे** की वज्ह से ह़ज़रते सय्यिदुना बिश्र ह़ाफ़ी عَلَیْہِ رَحْمَۃُ اللّٰہِ الْکَافِی बरसों हुए **बैंगन** नहीं खा रहे थे। उन ह़ज़रात का भी ख़ूब **मदनी अन्दाज़** होता है कि नफ़्स कहे खाओ, तो नहीं खाना और अगर कहे मत खाओ, तो खा लेना। अल ग़रज़ नफ़्स की ख़्वाहिश का उलट करते।

صَلُّوْا عَلَی الْحَبِیْب ! صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلٰی مُحَمَّد

(18) ख़ूब खाओ और पियो !

मन्क़ूल है कई सालों तक ह़ज़रते सय्यिदुना बिश्र ह़ाफ़ी عَلَیْہِ رَحْمَۃُ اللّٰہِ الْکَافِی का **बाक़िला** (या'नी सब्ज़ी की बीज वाली फलियां जो पका कर खाई जाती हैं, मसलन : मटर, लोबिया वग़ैरा) खाने को जी चाहता

रहा मगर आप رَحْمَةُ اللّٰهِ تَعَالٰى عَلَيْه अपने नफ़्स को मारते रहे और फलियां न खाईं। बा'दे वफ़ात किसी ने ख़्वाब में देख कर पूछा, "مَافَعَلَ اللّٰهُ بِکَ؟ या'नी **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ ने आप के साथ क्या सुलूक फ़रमाया?" जवाब दिया, "**अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ ने मग़्फ़िरत की बिशारत सुना कर फ़रमाया, "अरे वोह इन्सान! जिस ने दुन्या में न खाया न पिया अब **ख़ूब खाओ और पियो**।" (رسالۃ القُشیریہ مترجم ص۴۰۶)

अल्लाह عَزَّوَجَلَّ की उन पर रह़मत हो और उन के सदक़े हमारी मग़्फ़िरत हो।

गदा भी मुन्तज़िर है ख़ुल्द में नेकों की दा'वत का
ख़ुदा عزَّوجلَّ *दिन ख़ैर से लाए सख़ी के घर ज़ियाफ़त का*

(ह़दाइक़े बख़्शिश शरीफ़)

صَلُّوْا عَلَى الْحَبِيْب! صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلٰى مُحَمَّد

(19) खाने का मक़्सद

ह़ज़रते सय्यिदुना अबू सईद ख़ज़्ज़ार عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللّٰهِ الْغَفَّار का बयान है, "मेरा मा'मूल था कि **तीसरे रोज़** खाना खाता था, एक दफ़्आ़ दौराने सफ़र जंगल से गुज़र रहा था और खाए बिग़ैर दूसरे तीन[3] रोज़ शुरूअ़ हो चुके थे। कड़ाके की भूक लगी थी। कमज़ोरी के सबब निढाल हो कर एक जगह बैठ गया, इतने में ग़ैब से आवाज़ आई, "**अबू सईद**! नफ़्स को ख़ुश करने के लिये त़आ़म के ख़्वाहिश मन्द हो या बिग़ैर

कुछ खाए पिये कमज़ोरी दूर करना चाहते हो ?" मैं ने अ़र्ज़ की, "**या अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ ! मैं तो सिर्फ़ कुव्वत चाहता हूं।" आप رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰى عَلَيْه का बयान है कि मेरे अन्दर ऐसी कुव्वत पैदा हो गई कि उठा और कुछ खाए पिये बिग़ैर मज़ीद **बारह मन्ज़िल** सफ़र तै कर लिया।"

(कश्फुल मह़्जूब मुतर्जम, स. 453)

अल्लाह عَزَّوَجَلَّ **की उन पर रह़मत हो और उन के सदक़े हमारी मग़्फ़िरत हो।**

صَلُّوا عَلَى الْحَبِيب ! صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلٰى مُحَمَّد

प्यारे प्यारे इस्लामी भाइयो ! देखा आप ने **अल्लाह** वाले लज़्ज़त के लिये नहीं बल्कि इबादत पर कुव्वत ह़ासिल करने के लिये खाते हैं। और **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ का उन पर बहुत करम होता है कि बिग़ैर खाए पिये उन को रूह़ानी कुव्वत ह़ासिल हो जाया करती है। चुनान्चे ह़ज़रते सय्यिदुना अबू सईद ख़ज़्ज़ार عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللهِ الْغَفَّار ने बिग़ैर खाए सिर्फ़ **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ की अ़त़ा कर्दा कुव्वत से मज़ीद बारह मन्ज़िल सफ़र तै कर लिया। एक दिन में जितना सफ़र तै होता है उस को **मन्ज़िल** कहते हैं। इस का मत़लब येह हुवा कि आप ने बिग़ैर खाए पिये मज़ीद 12 दिन का सफ़र फ़रमा लिया !

न हो कारगर नफ़्स का मुझ पे ह़ीला
करम या इलाही عَزَّوَجَلَّ *! नबी* صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم *का वसीला*

صَلُّوا عَلَى الْحَبِيب ! صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلٰى مُحَمَّد

फ़रमाने मुस्तफ़ा صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم : जो मुझ पर दस मरतबा दुरूदे पाक पढ़े **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ उस पर सो रहमतें नाज़िल फ़रमाता है। (طبرانی)

(20) खाने से बचने के लिये छुप गए

हज़रते सय्यिदुना अबू सईद ख़ज़्ज़ार عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللهِ الْغَفَّار फ़रमाते हैं, "एक बार क़ाफ़िले के हमराह सफ़र में **फ़ाक़ा मस्ती** का आलम था कि खजूरों का बाग़ नज़र आया, **नफ़्स** को कुछ ढारस बंधी कि अब खजूरें खाऊंगा। मगर मैं नफ़्स की बात कैसे मानूं ! अहले क़ाफ़िला ने तो वहीं पड़ाव कर दिया मगर मैं दूर जा कर जंगल (की रेत) में छुप गया ताकि नफ़्स खजूरें दिखा दिखा कर खाने का मुतालबा न करता रहे। थोड़ी ही देर में एक हम सफ़र ढूंढता हुवा आ पहुंचा और इसरार कर के अपने हमराह बाग़ की तरफ़ ले चला, मैं ने पूछा, "मैं यहां पर हूं येह तुम्हें कैसे मा'लूम हुवा ?" कहने लगा, "मैं ने ग़ैब से येह आवाज़ सुनी, "हमारा एक वली फ़ुलां जगह रेत में छुपा हुवा है उस को अपने साथ ले आओ।" (تذکرۃ الاولیاء، ج۲ص۳۶)

अल्लाह عَزَّوَجَلَّ की उन पर रहमत हो और उन के सदक़े हमारी मग़फ़िरत हो।

صَلُّوا عَلَى الْحَبِيب ! صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلٰى مُحَمَّد

اَلْحَمْدُ لِلّٰه عَزَّوَجَلَّ तब्लीग़े कुरआनो सुन्नत की आलमगीर ग़ैर सियासी तहरीक दा'वते इस्लामी दुन्या के बे शुमार ममालिक में सुन्नतों की बहारें लुटा रही है। हर मुसल्मान को चाहिये कि दुन्या व आख़िरत की बेहतरी की ख़ातिर **दा'वते इस्लामी** के मदनी माहोल से वाबस्ता हो कर अपना येह ज़ेहन बना ले कि **मुझे अपनी और सारी दुन्या के लोगों की इस्लाह़ की कोशिश करनी है।**

फ़रमाने मुस्तफ़ा صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم : जिस के पास मेरा ज़िक्र हुवा और उस ने मुझ पर दुरूदे पाक न पढ़ा तह़क़ीक़ वोह बद बख़्त हो गया। (ابن سنی)

दा'वते इस्लामी के सुन्नतों की तरबियत के **मदनी क़ाफ़िलों** में सफ़र और रोज़ाना **फ़िक्रे मदीना** के ज़रीए **मदनी इन्आ़मात** का रिसाला पुर कर के हर मदनी माह की पहली तारीख़ अपने यहां के ज़िम्मेदार को जम्अ़ करवाने का मा'मूल बना लीजिये। اِنْ شَآءَاللّٰہ عَزَّوَجَلَّ इस की बरकत से पाबन्दे सुन्नत बनने, गुनाहों से नफ़रत करने और **ईमान की ह़िफ़ाज़त** के लिये कुढ़ने का ज़ेहन बनेगा।

(21) वली की सोह़बत का फ़ैज़

ह़ज़रते सय्यिदुना इब्राहीम ख़वास رَحْمَۃُ اللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہ एक बार जंगल में थे। अचानक एक शख़्स आ निकला और कहने लगा, "मैं आप की सोह़बत में रहना चाहता हूं।" "आप رَحْمَۃُ اللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہ ने जब उस पर नज़र की तो दिल में उस से नफ़रत पैदा हो गई। इतने में वोह कहने लगा, "मैं **नसरानी** राहिब हूं। और **रूम** से आप رَحْمَۃُ اللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہ की सोह़बत में रहने के लिये ह़ाज़िर हुवा हूं।" आप رَحْمَۃُ اللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہ के दिल में पैदा होने वाली नफ़रत का राज़ ज़ाहिर हो गया। या'नी उस शख़्स के काफ़िर होने की वज्ह से ऐसा हुवा था। आप رَحْمَۃُ اللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہ ने राहिब से फ़रमाया, "मेरे पास खाने पीने की कोई चीज़ नहीं, कहीं ऐसा न हो तुम तक्लीफ़ में आ जाओ।" वोह कहने लगा, "**या सय्यिदी !** दुन्या में आप رَحْمَۃُ اللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہ

फ़रमाने मुस्तफ़ा صَلَّى اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم : जिस के पास मेरा ज़िक्र हुवा और उस ने मुझ पर दुरूदे पाक न पढ़ा तहक़ीक़ वोह बद बख़्त हो गया। (ابن سنی)

के नाम का डंका बज रहा है और आप अभी तक खाने पीने की फ़िक्र में लगे हुए हैं !" उस की बात से आप رَحْمَۃُ اللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہ को तअ़ज्जुब हुवा और उस को सोहबत में रहने की इजाज़त दे दी। सात[7] दिन रात बिग़ैर खाए पिये गुज़र गए। वोह घबरा गया और कहने लगा, "**या सय्यिदी** ! अब मुआ़मला मेरी बरदाश्त से बाहर हो चुका है, खाने पीने का कोई इन्तिज़ाम फ़रमा दीजिये।" चुनान्चे आप رَحْمَۃُ اللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہ सज्दे में चले गए और बारगाहे ख़ुदावन्दी عَزَّوَجَلَّ में अ़र्ज़ किया, "**या अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ ! इस काफ़िर ने मेरे बारे में **हुस्ने ज़न** क़ाइम किया है। मेरी लाज तेरे हाथ में है। मुझे इस काफ़िर के सामने रुस्वा न करना।" दुआ़ मांग कर **जब सज्दे से सर उठाया तो एक ख़्वान्चा मौजूद था जिस में दो[2] रोटियां और दो[2] गिलास पानी के रखे हुए थे।** खा पी कर दोनों वहां से चल पड़े। मज़ीद सात[7] रोज़ गुज़रने के बा'द कहीं रुके तो उस राहिब ने सज्दे में जा कर दुआ़ मांगी। **देखते ही देखते एक त़श्त नुमूदार हुवा जिस पर चार[4] रोटियां और चार[4] गिलास पानी मौजूद था** ! आप رَحْمَۃُ اللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہ हैरत में पड़ गए, अपना येह ज़ेहन बनाया कि इस में से कुछ नहीं खाऊंगा क्यूं कि येह खाना एक काफ़िर के लिये आया है। वोह कहने लगा, "**या सय्यिदी** ! खाइये ! और दो[2] बातों की ख़ुश ख़बरी भी समाअ़त फ़रमाइये, "एक तो मैं

इस्लाम क़बूल करता हूं येह कह कर उस ने कलिमए शहादत पढ़ा। दूसरी येह कि **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ के यहां आप رَحْمَةُ اللّٰهِ تَعَالٰى عَلَيْه का बहुत बड़ा मक़ाम है।" मैं ने सज्दे में सर रख कर येह दुआ मांगी थी, "या **अल्लाह** ! मुहम्मदे मुस्तफ़ा صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم अगर रसूले बरहक़ हैं तो मुझे दो[2] रोटियां और दो[2] गिलास पानी अता फ़रमा और अगर इब्राहीम ख़वास رَحْمَةُ اللّٰهِ تَعَالٰى عَلَيْه तेरे वली हैं तो मज़ीद दो[2] रोटियां और दो[2] गिलास पानी अता फ़रमा।" दुआ मांग कर मैं ने जूं ही सर उठाया तो खाने का येह **तश्त** मौजूद था। चुनान्चे हज़रते सय्यिदुना इब्राहीम ख़वास رَحْمَةُ اللّٰهِ تَعَالٰى عَلَيْه ने येह सुनने के बा'द खाना तनावुल फ़रमा लिया और اَلْحَمْدُ لِلّٰه عَزَّوَجَلَّ वोह नौ मुस्लिम विलायत के आ'ला दरजे पर फ़ाइज़ हुवा।

(مُلَخَّص از کشف المحجوب ص ۴۳۳تا۴۳۵)

अल्लाह عَزَّوَجَلَّ **की उन पर रहमत हो और उन के सदक़े हमारी मग़्फ़िरत हो।**

صَلُّوْا عَلَى الْحَبِيْب ! صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلٰى مُحَمَّد

प्यारे प्यारे इस्लामी भाइयो ! औलियाउल्लाह رَحِمَهُمُ اللّٰهُ تَعَالٰى कई कई दिन तक फ़ाक़े बरदाश्त करते हैं, उन की इमदाद की जाती है। और उन के लिये ग़ैब से दस्तर ख़्वान ज़ाहिर होते हैं, सय्यिदुना इब्राहीम ख़वास رَحْمَةُ اللّٰهِ تَعَالٰى عَلَيْه की सोहबत में रह कर काफ़िर ने भी **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ की इनायत से मुसल्मान हो कर विलायत का दरजा पा लिया। हर

एक को चाहिये कि बुरी सोहबत से दूर रहे और नेकों की सोहबत इख़्तियार करे **हदीसे** मुबारक में है, "अच्छा हम नशीं वोह है कि उस के देखने से तुम्हें **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ याद आ जाए और उस की बातों से तुम्हारे (नेक) आ'माल में इज़ाफ़ा हो और उस का अमल तुम्हें आख़िरत की याद दिलाए।" (جامع صغیر جزء ثانی ص ۲۴۷ رقم الحدیث ۴۰۶۳)

رَحِمَهُمُ اللّٰهُ تَعَالٰی

यक ज़माना सोहबते बा औलिया

बेहतर अज़् सद सालह ताअत बेरिया

(या'नी औलियाए किराम رَحِمَهُمُ اللّٰهُ تَعَالٰی की लम्हा भर की सोहबत सो 100 साल की ख़ालिस इबादत से बेहतर है)

صَلُّوا عَلَى الْحَبِيب! صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلٰى مُحَمَّد

(22) अच्छी सोहबत अच्छी मौत

ख़रबूज़े को देख कर ख़रबूज़ा रंग पकड़ता है, तिल को गुलाब के फूल में रख दो तो उस की सोहबत में रह कर गुलाबी हो जाता है। इसी तरह तब्लीग़े कुरआनो सुन्नत की आलमगीर ग़ैर सियासी तहरीक **दा'वते इस्लामी** के मदनी माहोल से वाबस्ता हो कर **आशिक़ाने रसूल** की सोहबत में रहने वाला, **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ और उस के रसूल صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم की मेहरबानी से बे वक़्अत पथ्थर भी अनमोल हीरा बन जाता, ख़ूब जगमगाता और ऐसी शान से पैके अजल को लब्बैक कहता है कि देखने सुनने वाला रश्क की आग में जल उठता और जीने

के बजाए ऐसी मौत की आरज़ू करने लगता है। चुनान्चे एक शख़्स ने **दा'वते इस्लामी** के मदनी माहोल से मुतअस्सिर हो कर आशिक़ाने रसूल की सोहबत की बरकत से पांचों वक़्त की नमाज़ की पाबन्दी शुरूअ़ कर दी और रमज़ानुल मुबारक के आख़िरी अ़शरे में **दा'वते इस्लामी** के तहत होने वाले **सुन्नतों भरे ए'तिकाफ़** में आशिक़ाने रसूल के साथ बैठ गए दस[10] दिन में क़ुरआने पाक की चन्द सूरतें, दुआएं और सुन्नतें याद कर लीं चेहरे पर एक मुश्त दाढ़ी और सर पर सब्ज़ सब्ज़ इमामे का ताज सजाने की निय्यत के साथ साथ हफ़्तावार सुन्नतों भरे इज्तिमाअ़ में शिर्कत और मदनी क़ाफ़िलों में सफ़र के लिये भी नाम लिखवाया, अल ग़रज़ ज़िन्दगी में **मदनी इन्क़िलाब** बरपा हो गया। आशिक़ाने रसूल की सोहबत रंग लाई, गुनाहों से तौबा कर के सुन्नतों भरी ज़िन्दगी गुज़ारने लगे। एक दिन कपड़ों में आग लगने के सबब बेचारे बुरी तरह झुलस गए। अस्पताल ले जाया गया, डॉक्टरों ने बताया कि इन का जिस्म 80% फ़ीसद जल चुका है। मगर देखने वाले हैरत ज़दा थे कि तक्लीफ़ का इज़्हार करने के बजाए वोह **ज़िक्रो दुरूद** में मश्ग़ूल थे ए'तिकाफ़ के दौरान आशिक़ाने रसूल की सोहबत में रह कर जो सूरतें और दुआएं याद की थीं उन्हें वोह पढ़े जा रहे थे। कमो बेश 48 घन्टे तक वक़्तन फ़ वक़्तन क़ुरआने पाक की सूरतें और दुआएं वग़ैरा पढ़ते रहे। और सुब्ह **अज़ाने फ़ज्र** के वक़्त

बुलन्द आवाज़ से لَآ اِلٰهَ اِلَّا اللّٰهُ مُحَمَّدٌ رَّسُوْلُ اللّٰهِ صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰی عَلَیْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم पढ़ा और उन की रूह क़फ़से उन्सुरी से परवाज़ कर गई।

अल्लाह عَزَّوَجَلَّ **की उन पर रहमत हो और उन के सदक़े हमारी मग़्फ़िरत हो।**

صَلُّوْا عَلَى الْحَبِيْب ! صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰی عَلٰی مُحَمَّد

(23) बुरी सोहबत बुरी मौत

प्यारे प्यारे इस्लामी भाइयो ! हमारा हुस्ने ज़न है कि मर्हूम ज़िन्दगी की बाज़ी जीत गए। आजकल की बुरी सोहबत और घरों का फ़ेन्सी माहोल, (T.V.) और (INTERNET) के ज़रीए फ़िल्में, डिरामे देखने और गाने बाजे सुनने की मन्हूस आदतों की तबाह कारियों से डराती, ख़बरदार करती मौत की एक लरज़ा खेज़ और **इब्रत अंगेज़** हिकायत भी मुलाहज़ा फ़रमा लीजिये। चुनान्चे अभी जो हिकायत आप ने सुनी उस मर्हूम का इलाज करने वाले डॉक्टरों का कहना है, अजीब इत्तिफ़ाक़ है कि इस दा'वते इस्लामी वाले नौ जवान ने مَاشَآءَ اللّٰه عَزَّوَجَلَّ **कुरआने पाक** की तिलावत करते और कलिमए तृय्यिबा पढ़ते पढ़ते जिस वॉर्ड में जान दी चन्द दिन पहले एक नौ जवान (मॉडर्न) लड़की भी आग में झुलस कर इसी वॉर्ड में पहुंची मगर मौत के वक़्त उस लड़की की ज़बान पर عَزَّوَجَلَّ مَعَاذَ اللّٰه येह था, **गाना सुनाओ ! गाना सुनाओ ! नाच दिखाओ ! नाच दिखाओ !** इस तरह कहते कहते उस बद नसीब लड़की का

इन्तिक़ाल हो गया । **अगर वोह लड़की मुसल्मान थी तो अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ **बेचारी की मग़्फ़िरत फ़रमाए ।**

اٰمِين بِجاہِ النَّبِیِّ الْاَمین صَلَّی اللہ تعالٰی علیہ واٰلہٖ وسلَّم

تُوبُوْا اِلَى الله! اَسْتَغْفِرُ الله

प्यारे प्यारे इस्लामी भाइयो ! यक़ीनन एक न एक दिन हमें मरना है। ऐ काश ! आख़िरी वक़्त कलिमए त़य्यिबा पढ़ते हुए, दुरूदो सलाम पेश करते हुए, मीठे मीठे आक़ा मदीने वाले मुस्त़फ़ा صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم के जल्वों में हमारी रूह़ क़ब्ज़ हो । اَلْحَمْدُ لِلّٰه عَزَّوَجَلَّ तब्लीग़े क़ुरआनो सुन्नत की आ़लमगीर ग़ैर सियासी तह़रीक दा'वते इस्लामी दुन्या के बे शुमार ममालिक में सुन्नतों की बहारें लुटा रही है । हर मुसल्मान को चाहिये कि दुन्या व आख़िरत की बेहतरी की ख़ात़िर दा'वते इस्लामी के मदनी माह़ोल से वाबस्ता हो कर अपना येह ज़ेह्न बना ले कि **मुझे अपनी और सारी दुन्या के लोगों की इस्लाह़ की कोशिश करनी है ।** اِنْ شَآءَاللہ عَزَّوَجَلَّ

दा'वते इस्लामी के सुन्नतों की तरबियत के **मदनी क़ाफ़िलों** में सफ़र और रोज़ाना **फ़िक्रे मदीना** के ज़रीए **मदनी इन्आ़मात** का रिसाला पुर कर के हर मदनी माह की पहली तारीख़ अपने यहां के ज़िम्मेदार को जम्अ़ करवाने का मा'मूल बना लीजिये। اِنْ شَآءَاللہ عَزَّوَجَلَّ इस की बरकत से पाबन्दे सुन्नत बनने, गुनाहों से नफ़रत करने और **ईमान की ह़िफ़ाज़त** के लिये कुढ़ने का ज़ेह्न बनेगा।

(24) भूका शेर

हज़रते सय्यिदुना दाता गन्ज बख़्श अ़ली हिजवेरी رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰى عَلَيْه फ़रमाते हैं, "मैं ने शैख़ अह़मद ह़म्मादी सरख़सी عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللهِ الْقَوِى से उन की **तौबा** का सबब पूछा, तो कहने लगे, "एक बार मैं अपने ऊंटों को ले कर "सरख़स" से रवाना हुवा। दौराने सफ़र जंगल में एक **भूके शेर** ने मेरा एक ऊंट ज़ख़्मी कर के गिरा दिया और फिर बुलन्द टीले पर चढ़ कर डकारने लगा, उस की आवाज़ सुनते ही बहुत सारे दरिन्दे इकठ्ठे हो गए शेर नीचे उतरा और उस ने उसी **ज़ख़्मी ऊंट** को चीरा फाड़ा मगर ख़ुद कुछ न खाया बल्कि दोबारा टीले पर जा बैठा, जम्अ़ शुदा दरिन्दे ऊंट पर टूट पड़े और खा कर चलते बने। बाक़ी मांदा गोश्त खाने के लिये शेर क़रीब आया कि एक **लंगड़ी लोमड़ी** दूर से आती दिखाई दी, शेर वापस अपनी जगह चला गया। लोमड़ी ह़स्बे ज़रूरत खा कर जब जा चुकी तब शेर ने उस गोश्त में से थोड़ा सा खाया। मैं दूर से येह सब देख रहा था, **अचानक शेर ने मेरा रुख़ किया और ब ज़बाने फ़सीह़ बोला, "अह़मद ! एक लुक़्मे का ईसार तो कुत्तों का काम है मर्दाने राहे ह़क़ तो अपनी जान भी क़ुरबान कर दिया करते हैं।**" मैं ने इस अनोखे वाक़िए़ से मुतअस्सिर हो कर अपने तमाम गुनाहों से तौबा की और दुन्या से कनारा कश हो कर अपने **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ से लौ लगा ली।

(कश्फ़ुल मह़जूब तब्ख़ीर मुतर्जम, स. 383)

अल्लाह عَزَّوَجَلَّ की उन पर रह़मत हो और उन के सदक़े हमारी मग़्फ़िरत हो।

फ़रमाने मुस्तफ़ा صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم : जिस के पास मेरा ज़िक्र हुवा और उस ने मुझ पर दुरूदे पाक न पढ़ा उस ने जन्नत का रास्ता छोड़ दिया। (طبراني)

मुर्ग़ी का तवक्कुल : **प्यारे प्यारे इस्लामी भाइयो !** देखा आप ने ! **भूके शेर** ने अपना शिकार दूसरे जानवरों पर ईसार कर के भूक बरदाश्त करने की बेहतरीन मिसाल क़ाइम की और फिर **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ की अ़ता से उस ने कितनी ज़बर दस्त नसीहत की, कि "एक लुक़्मे का ईसार तो कुत्तों का काम है, मर्द को चाहिये कि अपनी जान क़ुरबान कर दे।" मगर आह ! आज के हम जैसे बे अ़मल मुसल्मान एक लुक़्मे का ईसार तो क्या करेंगे, जिन से बन पड़ता है वोह दूसरों के मुंह से भी लुक़्मा छीन लेते हैं। बल्कि एक लुक़्मे की ख़ातिर बा'ज़ अवक़ात क़त्लो ग़ारत गरी तक से नहीं चूकते। ढेरों ढेर ग़िज़ाएं मौजूद होने के बा वुजूद "एक एक टुकड़े" की ख़ातिर फ़साद बरपा करते फिरते हैं। कहा जाता है, "सिर्फ़ तीन ज़ी रूह ऐसे हैं जो ग़िज़ाओं का ज़ख़ीरा करते हैं : (1) (हम जैसे गुनहगार) इन्सान (2) चूहा और (3) च्यूंटी।" इन के इलावा कोई भी हैवान दूसरे वक़्त के लिये बचा कर नहीं रखता आप ने **मुर्ग़ी का तवक्कुल** देखा होगा, उस को पानी का पियाला पेश किया जाता है तो पी चुकने के बा'द पियाले के कनारे पर पाउं रख कर उस को उलट देती है। उसे अपने **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ पर कामिल भरोसा होता है कि अभी पिलाया है तो पियास लगने पर दोबारा भी पिलाएगा और लुत्फ़ की बात येह है कि उस को पिलाने की ख़िदमत भी इन्सान से ली जाती है। हां **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ के नेक बन्दों का

तवक्कुल बे मिसाल होता है। तवक्कुल की एक ता'रीफ़ येह भी है कि "सिर्फ़ **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ की इनायत पर भरोसा करे और जो कुछ लोगों के पास है उस से मायूस हो जाए।" (ملخص از رسالۃ القشیریہ ص۱۲۹ باب توکل) **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ पर कामिल तवक्कुल करने वालों की भी क्या शान होती है, चुनान्चे

(25) मुतवक्किल नौ जवान

हज़रते सय्यिदुना इब्राहीम ख़वास رَحْمَةُ اللّٰهِ تَعَالٰى عَلَيْه फ़रमाते हैं, "मुल्के शाम के रास्ते में एक **अल्लाह** वाले नौ जवान رَحْمَةُ اللّٰهِ تَعَالٰى عَلَيْه से मुलाक़ात हुई। उन्हों ने मुझ से कहा, "क्या आप رَحْمَةُ اللّٰهِ تَعَالٰى عَلَيْه मेरी सोहबत में रहना पसन्द फ़रमाएंगे ?" मैं ने कहा, "मैं तो **भूका** रहता हूं।" कहने लगे, "اِنْ شَآءَاللّٰه عَزَّوَجَلَّ मैं भी भूका रह लूंगा।" चार[4] दिन इसी त़रह फ़ाक़े में गुज़र गए। इस के बा'द कहीं से कोई गिज़ा आ गई, मैं ने उन से कहा, "आइये खा लीजिये।" जवाब दिया, "मैं ने अ़हद किया है किसी के ज़रीए़ कोई चीज़ नहीं लूंगा।" मैं ने खुश हो कर कहा, "मरहबा आपने बहुत बारीक नुक्ता बयान फ़रमाया।" येह सुन कर वोह कहने लगे, "ऐ इब्राहीम رَحْمَةُ اللّٰهِ تَعَالٰى عَلَيْه ! मेरी झूटी ता'रीफ़ मत कीजिये। क्यूं कि परखने वाला परवर्दगार عَزَّوَجَلَّ आप رَحْمَةُ اللّٰهِ تَعَالٰى عَلَيْه के ह़ाल और तवक्कुल को ख़ूब जानता है।" फिर फ़रमाने लगे, "**तवक्कुल** का कम तरीन दरजा येह है कि फ़ाक़े पर फ़ाक़ा आने के बा वुजूद दिल **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ के

सिवा किसी और की त़रफ़ मुतवज्जेह न हो (رسالۃ القشیریہ ص ۱۶۸ باب توکل)

अल्लाह عَزَّوَجَلَّ की उन पर रह़मत हो और उन के सदक़े हमारी मग़्फ़िरत हो।

सच है इन्सान को कुछ खो के मिला करता है

आप को खो के तुझे पाएगा जोया तेरा

(ज़ौक़े ना'त)

صَلُّوْا عَلَى الْحَبِيْب! صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلٰى مُحَمَّد

या रब्बे मुस्त़फ़ा عَزَّوَجَلَّ ! हमें नफ़्सो शैत़ान की शरारतों से मह़फ़ूज़ फ़रमा और भूक की अ़ज़ीम ने'मत से नवाज़ कर अपना साबिरो शाकिर बन्दा बना।

भूक की ने'मत से तू नवाज़ मौला عَزَّوَجَلَّ

सब्र की दौलत से तू नवाज़ मौला عَزَّوَجَلَّ

اٰمِين بِجاہِ النَّبِیِّ الْاَمین صَلَّی اللہ تعالیٰ علیہ واٰلہٖ وسلَّم

(26) रिज़्क़ ख़ुद ढूंढ रहा था

ह़ज़रते सय्यिदुना अबू या'क़ूब अक़्त़ाअ़ बसरी رَحْمَةُ اللّٰهِ تَعَالٰى عَلَيْه फ़रमाते हैं, एक बार मैं ह़रमे मक्कए मुकर्रमा में दस[10] दिन तक भूका रहा, जिस से मुझे कमज़ोरी आ गई और जंगल की त़रफ़ चल पड़ा कि शायद कुछ ग़िज़ा मिल जाए जो मेरी कमज़ोरी को रोके, रास्ते में एक गिरा पड़ा **शल्जम** नज़र आया, उठाया तो "पुराना" हो चुका था मुझे मह़सूस हुवा

गोया, कोई कह रहा है, "तुम दस[10] दिन भूके रहे क्या इस के बा'द येही एक शल्जम तुम्हारे लिये रह गया था !" मैं ने उसे वापस रख दिया और **मस्जिदुल ह़राम शरीफ़** में ह़ाज़िर हो गया। इतने में एक **अ़जमी** (हर ग़ैरे अ़रबी को अ़जमी कहते हैं) मेरे पास आया और एक सन्दूक़्चा पेश करते हुए कहने लगा, "येह आप का है ?" मैं ने कहा, "मेरा कैसे हो गया ?" बोला, हम दस[10] दिन से समुन्दर में सफ़र कर रहे थे। **तूफ़ान** आ गया और हमारी कश्ती डूबने के क़रीब हो गई थी तो हम सब ने निय्यतें की थीं कि अगर **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ हमें नजात बख़्शेगा तो हम ख़ैरात करेंगे। मैं ने भी येह निय्यत की थी कि मस्जिदुल ह़राम शरीफ़ में मुझे जो पहला आदमी नज़र आएगा उस को येह पेश करूंगा तो आप ही वोह पहले शख़्स हैं जो मुझे मिले हैं।" **मैं ने जब सन्दूक़्चा खोला तो उस में मिस्री मैदे का केक, छिले हुए बादाम और क़न्द सफ़ेद** (एक त़रह़ की मिठाई) **की डलियां थीं।** मैं ने दिल ही दिल में अपने आप से कहा कि तेरा रिज़्क़ दस[10] दिन से तेरी त़रफ़ आ रहा था मगर तू उस को जंगल में तलाश करने के लिये निकल पड़ा था ! मैं ने उस में से थोड़ी थोड़ी चीज़ें अपने लिये निकाल कर बक़िय्या उसी को लौटाते हुए कहा, "मैं क़बूल कर चुका हूं। अब येह आप ले जाइये और मेरी त़रफ़ से अपने बच्चों को तोह़फ़ा दे दीजिये।"

(رسالۃ القشیریہ ص ۱۶۹،۱۷۰ باب: توکّل)

फ़रमाने मुस्तफ़ा صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم : जो लोग अपनी मजलिस से अल्लाह के ज़िक्र और नबी पर दुरूद शरीफ़ पढ़े बिग़ैर उठ गए तो वोह बदबूदार मुर्दार से उठे। (شعب الایمان)

अल्लाह عَزَّوَجَلَّ की उन पर रहमत हो और उन के सदक़े हमारी मग़्फ़िरत हो।

صَلُّوا عَلَى الْحَبِيب! صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلٰى مُحَمَّد

प्यारे प्यारे इस्लामी भाइयो ! **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ के औलिया के तवक्कुल की भी क्या निराली शान होती है। दस10 दिन का फ़ाक़ा होने के बा वुजूद जब खाने की चीज़ें मिलीं तब भी थोड़ी सी क़बूल कर के बक़िय्या वापस दे दीं एक वक़्त खा लेने के बा'द इस बात की उन्हें परवाह ही नहीं होती थी कि बा'द में क्या खाएंगे ! उन ह़ज़रात का ज़ेह्न बना हुवा था कि **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ ने जब तक ज़िन्दा रखना मन्ज़ूर फ़रमाया है उस वक़्त के लिये रिज़्क़ ख़ुद ही फ़राहम कर देगा। जैसा कि बारहवें पारे की इब्तिदा में है :

وَمَا مِنْ دَآبَّةٍ فِي الْاَرْضِ اِلَّا عَلَى اللّٰهِ رِزْقُهَا

(پ ۱۲ ھود آیت ٦)

तरजमए कन्ज़ुल ईमान : और ज़मीन पर चलने वाला कोई ऐसा नहीं जिस का रिज़्क़ **अल्लाह** के ज़िम्मए करम पर न हो।

प्यारे प्यारे इस्लामी भाइयो ! यहां एक मदनी नुक्ता क़ाबिले ग़ौर है और वोह येह कि **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ ने हर एक की रोज़ी अपने ज़िम्मे ली है मगर हर एक की मग़्फ़िरत का ज़िम्मा नहीं लिया। तो वोह मुसल्मान किस क़दर नादान है जो रिज़्क़ के लिये मारा मारा फिरे मगर मग़्फ़िरत की त़लब में दिल न जलाए।

اَلْحَمْدُ لِلّٰه عَزَّوَجَلَّ **दा'वते इस्लामी** के मदनी माहोल में आ़शिक़ाने रसूल की तरबियत के लिये सफ़र करने वाले मदनी क़ाफ़िलों में त़लबे आख़िरतो मग़्फ़िरत का ज़ेह्न दिया जाता है, चुनान्चे

(27) जोशीला मुबल्लिग़

आ़शिक़ाने रसूल का एक **मदनी क़ाफ़िला** एक गाउं में 12 दिन के लिये सुन्नतों की तरबियत की ख़ात़िर पहुंचा। जिस मस्जिद में क़ियाम था, उस के सामने वाले घर में रहने वाले एक नौ जवान पर एक आ़शिक़े रसूल ने इन्फ़िरादी कोशिश करते हुए मदनी क़ाफ़िले में सफ़र की तरग़ीब दिलाई। वोह नौ जवान सिर्फ़ 2 दिन साथ रहने के लिये तय्यार हुए और मदनी क़ाफ़िले वालों के साथ सुन्नतें सीखने सिखाने में मसरूफ़ हो गए। सिर्फ़ दो[2] दिन मदनी क़ाफ़िले में गुज़ारने की बरकत से अपने घर में नमाज़ों की तल्क़ीन की। चूं कि घर के बा असर फ़र्द थे। اَلْحَمْدُ لِلّٰه عَزَّوَجَلَّ तक़रीबन सभी ने नमाज़ पढ़ना शुरूअ़ कर दी। बराबर में मामूं के घर जा कर भी **नेकी की दा'वत** पेश की। घर वालों को (T.V.) की तबाह कारियां बता कर उसे घर से निकाला देने का ज़ेह्न दिया। اَلْحَمْدُ لِلّٰه عَزَّوَجَلَّ बाहमी रिज़ा मन्दी से घर से (T.V.) निकाल दिया गया। दूसरे दिन सुब्ह कपड़ों पर इस्त्री करते हुए अचानक उन्हें करन्ट लगा और उसी

वक़्त उन्हों ने दम तोड़ दिया। घर वालों का कहना है कि हम ने वाज़ेह तौर पर सुना कि ब वक़्ते वफ़ात उन की ज़बान पर कलिमए तय्यिबा لَآ اِلٰهَ اِلَّا اللّٰهُ مُحَمَّدٌ رَّسُوْلُ اللّٰهِ صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم जारी था।

कोई आया पा के चला गया कोई उम्र भर भी न पा सका
मेरे मौला عَزَّ وَجَلَّ तुझ से गिला नहीं येह तो अपना अपना नसीब है

दा'वते इस्लामी के सुन्नतों की तरबियत के **मदनी क़ाफ़िलों** में सफ़र और रोज़ाना **फ़िक्रे मदीना** के ज़रीए **मदनी इन्आमात** का रिसाला पुर कर के हर मदनी माह की पहली तारीख़ अपने यहां के ज़िम्मेदार को जम्अ़ करवाने का मा'मूल बना लीजिये। اِنْ شَآءَاللّٰه عَزَّوَجَلَّ इस की बरकत से पाबन्दे सुन्नत बनने, गुनाहों से नफ़रत करने और **ईमान की हिफ़ाज़त** के लिये कुढ़ने का ज़ेहन बनेगा।

(28) अन्डा रोटी

हज़रते सय्यिदुना अबू तुराब नख़्शबी رَحْمَةُ اللّٰهِ تَعَالٰى عَلَيْه फ़रमाते हैं, "दौराने सफ़र मेरे नफ़्स ने सिर्फ़ एक बार **अन्डा रोटी** खाने की ख़्वाहिश की। चुनान्चे मैं एक बस्ती में पहुंचा। वहां एक शख़्स यकायक मुझ से चिमट गया। और चीख़ चीख़ कर कहने लगा, "येह भी चोरों के साथ था।" भीड़ हो गई और चोरों का साथी समझ कर लोगों ने मुझे सत्तर[70] दुर्रे

मारे। इस के बा'द उन में से एक आदमी ने मुझे पहचान लिया और कहा, "येह चोर नहीं हो सकते। येह तो **अबू तुराब नख़्शबी** رَحْمَۃُ اللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہ हैं।" इस पर लोगों ने बसद नदामत मुझ से मा'ज़िरत चाही उन में से एक साहिब मुझे अपने घर ले गए और ख़ैर ख़्वाही करते हुए हुस्ने इत्तिफ़ाक़ से अन्डा रोटी खाने के लिये पेश किया। मैं ने नफ़्स से कहा, "सत्तर दुर्रे खाने के बा'द तेरा मुतालबा पूरा हुवा अब **अन्डा रोटी** खा ले।"

(رسالۃ القشیریہ ص ۱۴۴)

अल्लाह عَزَّوَجَلَّ **की उन पर रह़मत हो और उन के सदक़े हमारी मग़्फ़िरत हो।**

صَلُّوا عَلَی الْحَبِیْب! صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلٰی مُحَمَّد

(29) सफ़ेद पियाला

प्यारे प्यारे इस्लामी भाइयो! वाक़ेई **अल्लाह** वालों का निज़ाम भी ख़ूब होता है, इन को नफ़्स की पैरवी से बचाया जाता है। जिन का अभी वाक़िआ बयान किया गया वोह ह़ज़रते सय्यिदुना अबू तुराब नख़्शबी رَحْمَۃُ اللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہ बा करामत वलिय्युल्लाह थे। चुनान्चे एक बार **सफ़रे मदीना** के दौरान लक़ो दक़ सहरा में किसी मुरीद ने प्यास की शिकायत की आप رَحْمَۃُ اللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہ ने ज़मीन पर पाउं मुबारक मारा तो **मीठे पानी का चश्मा** उबल पड़ा। येह देख कर दूसरे मुरीद ने अ़र्ज़ किया, "मैं तो आबख़ोरे (या'नी पियाले) में पानी पियूंगा।" आप رَحْمَۃُ اللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہ ने ज़मीन

पर हाथ मुबारक मारा तो एक **सफ़ेद पियाला** नुमूदार हो गया। इस वाक़िए के रावी हज़रते शैख़ अबुल अ़ब्बास رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰى عَلَيْه फ़रमाते हैं, "वोह सफ़ेद पियाला मक्कए मुकर्रमा तक हमारे साथ रहा।"

(تذکرۃ الاولیاء ج اول ص۲۶۴)

अल्लाह عَزَّوَجَلَّ की उन पर रह़मत हो और उन के सदक़े हमारी मग़्फ़िरत हो।

होगा सैराब सरे कौसरो तस्नीम वोही

जिस के हाथों में मदीने का पियाला होगा

صَلُّوا عَلَى الْحَبِيب! صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلٰى مُحَمَّد

वस्वसा : अन्डा रोटी खाना कोई गुनाह तो नहीं, फिर आख़िर एक वलिय्युल्लाह को इस की ख़्वाहिश पर इतनी ज़बर दस्त सज़ा क्यूं मिली ?

इलाजे वस्वसा : अहलुल्लाह رَحِمَهُمُ اللهُ تَعَالٰى की इस त़रह़ तरबियत भी होती है और आज़्माइश भी और यूं उन के दरजात बुलन्द किये जाते हैं। आ़म मुसल्मान भी तो बसा अवक़ात ब ज़ाहिर बे क़ुसूर होने के बा वुजूद आफ़ातो बलिय्यात का शिकार और बीमार हो जाता है। इस की हिक्मतों में से येह भी है कि इस त़रह़ उस के गुनाह मिटाए और दरजात बढ़ाए जाते हैं। अम्बिया व सह़ाबा और शुहदाए करबला عَلَيْهِمُ الصَّلٰوةُ وَالسَّلَام व رَضِىَ اللهُ تَعَالٰى عَنْهُم पर भी तो इम्तिह़ानात आए। ख़ुद हमारे मीठे मीठे आक़ा मदीने वाले मुस्त़फ़ा صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم को भी कुफ़्फ़ारे ना हन्जार ने त़रह़ त़रह़ से सताया।

फ़रमाने मुस्तफ़ा صَلَّى اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم : जो मुझ पर एक दिन में 50 बार दुरूदे पाक पढ़े क़ियामत के दिन मैं उस से मुसाफ़ह़ा करूं (या'नी हाथ मिलाऊं)गा। (ابن بشکوال)

शान के मुताबिक़ इम्तिह़ान : ह़ज़रते सय्यिदुना सा'द رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ ने फ़रमाया, कि नबिय्ये करीम, रऊफ़ुर्रह़ीम عَلَیْہِ اَفْضَلُ الصَّلٰوۃِ وَالتَّسْلِیْم से दरयाफ़्त किया गया कि कौन लोग सख़्त आज़्माइशों में मुब्तला होते हैं ? ह़ुज़ूरे अकरम, नूरे मुजस्सम, शाहे बनी आदम صَلَّى اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने इर्शाद फ़रमाया, (सब से पहले) अम्बियाए किराम (عَلَیْہِمُ السَّلَام) फिर उन के बा'द जो अफ़्ज़ल हैं फिर उन के बा'द जो अफ़्ज़ल हैं। या'नी ह़स्बे मरातिब (या'नी रुत्बों के ह़िसाब से) आदमी का दीन के साथ जैसा तअ़ल्लुक़ होता है उसी ए'तिबार से (आफ़त व) बला में मुब्तला किया जाता है। अगर दीन में सख़्त है तो बला भी उस पर सख़्त होगी। और अगर दीन में कमज़ोर है तो उस पर आसानी की जाती है। येही सिल्सिला हमेशा रहता है। यहां तक कि ज़मीन पर वोह यूं चलता है कि उस पर कोई गुनाह नहीं रहता। (جامع ترمذی ج۴ص۱۷۰رقم الحدیث۲۴۰۶)

बहर ह़ाल येह सब **अल्लाह** रब्बुल इ़ज़्ज़त عَزَّوَجَلَّ की मशिय्यत से होता है और नेक बन्दे सब्र कर के अज्र के ख़ज़ाने समेटते हुए ज़बाने ह़ाल से कहते हैं :

जे सोहणा मेरे दुख विच राज़ी
ते मैं सुख नूं चुल्हे पावां

(या'नी मेरा मह़बूब जब कि मेरे दुखी होने पर ख़ुश
है तो फिर मैं सुख चैन को भाड़ (चूल्हे) में झोंकता हूं)

परेशानियों और बीमारियों पर ख़ुश रहने के ज़िम्न में एक ईमान अफ़्रोज़ हिकायत मुलाहज़ा फ़रमाइये, चुनान्चे

(30) बुख़ार में सदा बहार

एक दिन हुज़ूर सय्यिदे आ़लम नूरे मुजस्सम, शाहे बनी आदम, रसूले मोह़तशम صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰی عَلَیْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने इर्शाद फ़रमाया, "मुसल्मान के बदन पर जो भी मुसीबत आती है तो **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ उस के सबब उस के गुनाह मिटा देता है।" येह सुन कर ह़ज़रते सय्यिदुना उबय बिन का'ब رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْهُ ने दुआ़ मांगी, "**या अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ ! मैं तुझ से अपनी मौत तक ऐसा बुख़ार त़लब करता हूं जो मुझे नमाज़, रोज़ा, ह़ज्जो उ़मरह और तेरी राह में जिहाद से न रोके।" आप رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْهُ की दुआ़ मक़्बूल हुई। चुनान्चे रावी का बयान है कि ह़ज़रते सय्यिदुना उबय बिन का'ब رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْهُ को हर वक़्त बुख़ार रहता यहां तक कि आप رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْهُ की वफ़ात हो गई। आप رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْهُ इस ह़ालत में भी मस्जिद में नमाज़ के लिये ह़ाज़िरी देते, रोज़ा रखते, ह़ज्जो उ़मरह करते और जिहाद करते थे। (کنزالعمّال ج۳ص۲۹۹رقم الحدیث۸۶۳۳)

अल्लाह عَزَّوَجَلَّ **की उन पर रह़मत हो और उन के सदक़े हमारी मग़्फ़िरत हो।**

صَلُّوْا عَلَی الْحَبِیْب! صَلَّی اللّٰهُ تَعَالٰی عَلٰی مُحَمَّد

बुख़ार की फ़ज़ीलत : प्यारे प्यारे इस्लामी भाइयो ! बुख़ार की फ़ज़ीलत के भी क्या कहने ! ह़ज़रते सय्यिदुना अबू हुरैरा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ ने फ़रमाया कि नबिय्ये करीम, रऊफ़ुर्रह़ीम عَلَیْہِ اَفْضَلُ الصَّلٰوۃِ وَالتَّسْلِیْم के हुज़ूर में बुख़ार का ज़िक्र किया गया तो एक शख़्स ने बुख़ार को बुरा कहा। ताजदारे रिसालत, माहे नुबुव्वत, मह़बूबे रब्बुल इ़ज़्ज़त صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया, ''बुख़ार को बुरा न कहो, इस लिये कि वोह (मोमिन को) गुनाहों से इस तरह़ पाक कर देता है जैसे आग लोहे की मैल (ज़ंग) को साफ़ कर देती है।'' (سنن ابن ماجہ ج۴ص۱۰۴،رقم الحدیث ۳۴۶۹)

फूंक दे जो मेरी ख़ुशियों के चमन को आक़ा صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم

चाक दिल, चाक जिगर, सोज़िशे सीना दे दो

صَلُّوْا عَلَی الْحَبِیْب ! صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلٰی مُحَمَّد

(31) मसूर की दाल की फ़ीस

ह़ज़रते सय्यिदुना इब्राहीम बिन शैबान عَلَیْہِ رَحْمَۃُ الْحَنَّان फ़रमाते हैं, ''मैं ने चालीस[40] साल तक कभी छत के नीचे कोई रात नहीं गुज़ारी, मुझे पेट भर कर मसूर की दाल खाने का बहुत दिल करता था, एक बार मुल्के शाम में पकी हुई **मसूर की दाल** का पियाला किसी ने दिया, मैं ने उस में से खाया, जब बाहर निकला तो एक दुकान पर बोतलें लटकी हुई नज़र आईं, मैं समझा येह सिर्का है और ग़ौर से देखने लगा, किसी ने कहा,

"आप क्या देख रहे हैं येह शराब है" और मटकों की त़रफ़ इशारा कर के कहा, "इन में भी शराब है।" मुझे जोश आ गया और मैं ने दुकान के अन्दर से शराब के मटके बाहर ला कर ज़मीन पर उंडेलने शुरूअ़ कर दिये, मेरी बेबाकी के बाइ़स दुकानदार पर मेरा रो'ब छा गया। और वोह मुझे गवर्नमेन्ट का आदमी समझ बैठा लिहाज़ा चुपचाप देखता रहा, जब ह़क़ीक़ते ह़ाल का इन्किशाफ़ हुवा तो दुकानदार ने मुझे ह़ाकिमे मिस्र व शाम इब्ने तूलून के ह़वाले कर दिया, मुझे दो सो200 बेद मारे गए और त़वील मुद्दत के लिये जेल में बन्द कर दिया गया। रिहाई की सूरत यूं बनी कि मेरे उस्ताज़े मोह़तरम ह़ज़रते सय्यिदुना अबू अ़ब्दुल्लाह मग़रिबी عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللّٰهِ الْقَوِى उस शहर में तशरीफ़ ले आए। मुझ से पूछा, "तुम ने क्या जुर्म किया था ?" अ़र्ज़ किया, **"पेट भर कर मसूर की दाल खाई और उस की फ़ीस में क़ैद के इलावा दो सो200 बेद** (डन्डे) **भी खाए।" फ़रमाया, सस्ते छूटे।** और शराब के मटकों वाला क़िस्सा भी बयान किया। उन्हों ने सिफ़ारिश कर के मुझे आज़ाद करवाया।"

(رسالۃ القشیریۃ ص۱۵۳ باب نفس کی مخالفت)

अल्लाह عَزَّوَجَلَّ की उन पर रह़मत हो और उन के सदक़े हमारी मग़्फ़िरत हो।

صَلُّوا عَلَى الْحَبِيب ! صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلٰى مُحَمَّد

प्यारे प्यारे इस्लामी भाइयो ! अल्लाह वाले नफ़्स की पैरवी से हर दम इज्तिनाब (या'नी परहेज़) फ़रमाते हैं। अगर कभी नफ़्स का मुतालबा पूरा कर बैठते हैं तो बा'ज़ अवक़ात सख़्त आज़्माइशों का सामना करना पड़ता है। और इस से उन के दरजात मज़ीद बुलन्द होते हैं। येह सब मुहिब्बो महबूब के राज़ो नियाज़ हैं।

मक्तबे इश्क़ का दस्तूर निराला देखा
उस को छुट्टी न मिली जिस को सबक़ याद रहा

(32) मछली का कांटा

हज़रते सय्यिदुना अबुल ख़ैर अ़स्क़लानी قُدِّسَ سِرُّهُ الرَّبَّانِي कई साल तक मछली खाने की ख़्वाहिश करते रहे। बिल आख़िर हलाल त़रीक़े से येह बात मुयस्सर आ गई मगर जूं ही खाने के लिये हाथ बढ़ाया तो **मछली का कांटा** उंगली में चुभ गया। ज़ख़्म इस क़दर बिगड़ा कि बिल आख़िर आप رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰى عَلَيْه का हाथ ज़ाएअ़ हो गया। इस पर बारगाहे ख़ुदावन्दी عَزَّوَجَلَّ में अ़र्ज़ की, "**या अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ ! येह तो उस शख़्स का ह़ाल है जिस ने एक हलाल चीज़ की ख़्वाहिश की और उस की त़रफ़ हाथ बढ़ाया, उस शख़्स का क्या बनेगा जो ह़राम चीज़ की ख़्वाहिश के साथ उस की जानिब हाथ बढ़ाएगा।" (رسالۃ القشیریہ ص ۱۴۲)

अल्लाह عَزَّوَجَلَّ की उन पर रह़मत हो और उन के सदक़े हमारी मग़्फ़िरत हो।

صَلُّوا عَلَى الْحَبِيب ! صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلٰى مُحَمَّد

प्यारे प्यारे इस्लामी भाइयो ! **अल्लाह** वालों के अन्दाज़ निराले होते हैं, येह तक्लीफ़ पहुंचने पर उस के मुस्बत पहलू निकालते हैं और ख़ूब आ़जिज़ी फ़रमाते हैं, हमारा हुस्ने ज़न है कि ह़ज़रते सय्यिदुना अबुल ख़ैर अ़स्क़लानी قُدِّسَ سِرُّہُ الرَّبَّانِی को **मछली का कांटा** बुलन्दिये दरजात के लिये लगा था, आ़म आदमी को भी मछली खाते वक़्त बा'ज़ अवक़ात गले में कांटा अटक जाता है। अगर कभी ऐसा हो तो सब्रो तह़म्मुल से काम लेना चाहिये कि मुसल्मान को जो भी तक्लीफ़ पहुंचती है इस से या तो उस के गुनाह मुआ़फ़ होते हैं या उस के दरजात बुलन्द किये जाते हैं। चुनान्चे।

कांटा चुभने की फ़ज़ीलत : ह़ज़रते सय्यिदुना अबू सईद ख़ुदरी رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہ और सय्यिदुना अबू हुरैरा رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہ से रिवायत है कि नबिय्ये करीम, रऊफ़ुर्रह़ीम عَلَیْہِ اَفْضَلُ الصَّلٰوۃِ وَالتَّسْلِیْم ने फ़रमाया कि "मुसल्मान को कोई रन्ज, कोई दुख, कोई फ़िक्र, कोई तक्लीफ़ कोई अज़िय्यत और कोई ग़म नहीं पहुंचता यहां तक कि **कांटा** जो उसे चुभे मगर **अल्लाह** तआ़ला उन के सबब उस के गुनाहों को मिटा देता है।"

(بخاری شریف ج۷ ص۳ رقم الحدیث ۵۶۴۱،۵۶۴۲)

मुसीबत की ह़िक्मत : ह़ुज़ूरे अकरम, नूरे मुजस्सम, शाहे बनी आदम صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया कि बन्दे के लिये इल्मे इलाही

عَزَّوَجَلَّ में जब कोई मर्तबए कमाल मुक़द्दर होता है और अपने अ़मल से उस मर्तबे को नहीं पहुंचता तो **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ उस के जिस्म या माल या औलाद पर मुसीबत डालता है फिर इस पर सब्र अ़ता फ़रमाता यहां तक कि उसे उस मर्तबे तक पहुंचा देता है जो उस के लिये इ़ल्मे इलाही عَزَّوَجَلَّ में मुक़द्दर हो चुका है। (سنن ابوداؤد ص۱۲۳، رقم الحدیث۳۰۹۰)

वोह इ़श्क़े ह़क़ीक़ी की लज़्ज़त नहीं पा सकता
जो रन्जो मुसीबत से दो चार नहीं होता

(33) गाजर और शहद

बुज़ुर्गाने दीन رَحِمَهُمُ اللهُ الْمُبِيْن नफ़्स की सख़्त मुख़ालफ़त फ़रमाते थे। चुनान्चे ह़ज़रते सय्यिदुना शैख़ सिर्री सक़ती رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰى عَلَيْه फ़रमाते हैं, मेरा नफ़्स तीस30 या चालीस40 साल से मुत़ालबा कर रहा है कि सिर्फ़ एक गाजर शहद में तर कर के खा लूं मगर اَلْحَمْدُ لِلّٰه عَزَّوَجَلَّ मैं ने नफ़्स की बात नहीं मानी। (رسالۃ القشیریہ ص۱۵۳)

अल्लाह عَزَّوَجَلَّ की उन पर रह़मत हो और उन के सदक़े हमारी मग़्फ़िरत हो।

(34) अन्जीर उगल दिया

ह़ज़रते सय्यिदुना जा'फ़र बिन नसीर عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللهِ الْقَدِيْر फ़रमाते हैं, ह़ज़रते सय्यिदुना शैख़ जुनैद رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰى عَلَيْه ने मुझे एक दिरहम दे कर **वज़ीरी अन्जीर** लाने का हुक्म फ़रमाया, मैं ने ह़ाज़िर कर दिये। आप

फ़रमाने मुस्तफ़ा صَلَّى اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم : शबे जुमुआ और रोज़े जुमुआ मुझ पर कसरत से दुरूद पढ़ो क्यूं कि तुम्हारा दुरूद मुझ पर पेश किया जाता है। (طبرانی)

رَحْمَۃُ اللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہ ने इफ़्तार के वक़्त मुंह में **अन्जीर** रखा तो फ़ौरन उगल दिया और रो पड़े और फ़रमाया, **अन्जीर** यहां से उठा लो। मैं ने सबब पूछा तो फ़रमाया, मेरे ज़मीर से आवाज़ आई, "तुझे शर्म नहीं आती कि **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ के लिये एक ख़्वाहिश को तर्क कर देने के बा'द फिर उस की तक्मील करने लगा है।" (ایضاً ص ۱۵۴)

अल्लाह عَزَّوَجَلَّ **की उन पर रह़मत हो और उन के सदक़े हमारी मग़्फ़िरत हो।**

صَلُّوا عَلَی الْحَبِیْب! صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلٰی مُحَمَّد

किसी ने बिल्कुल सच कहा है, "अपनी लगाम "ख़्वाहिश" के हाथ में मत दो येह तुम्हें अंधेरे की त़रफ़ ले जाएगी।" (ایضاً ص ۱۵۴)

(35) ह़ल्वाई ने लुक़्मे खिलाए

शैख़ुल मुह़क़्क़िक़ीन, ख़ातमुल मुह़द्दिसीन, ह़ज़रते शैख़ अ़ब्दुल ह़क़ मुह़द्दिस देहलवी عَلَیْہِ رَحْمَۃُ اللّٰہِ الْقَوِی फ़रमाते हैं, "मेरे पीरो मुर्शिद सय्यिदी **शैख़ अ़ब्दुल वह्हाब मुत्तक़ी** رَحْمَۃُ اللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہ और उन का एक दोस्त एक बार क़ह़त़ के ज़माने में मस्जिद के अलग अलग कोने में मह़्वे इ़बादत थे। दोनों ने पहले ही से बाहम तै कर लिया था कि न आपस में बातचीत करेंगे, न किसी से खाना मांगेंगे और न अपने हाथ से कुछ खाएंगे। मुतवातर **बीस**[20] **रोज़** इसी त़रह़ गुज़र गए। **इक्कीसवें दिन** एक **ह़ल्वाई** ने मस्जिद में आ कर दोनों के दरमियान खाना रखा और चला गया। (चूं

कि येह तै़ हुवा था कि अपने हाथ से कुछ नहीं खाएंगे लिहाज़ा) उन दोनों ने उस में से कुछ न खाया, **बाईसवें दिन** वोह फिर आया और खाना रख गया, इस मरतबा भी दोनों ने खाने को हाथ न लगाया, **तेईसवें दिन उस ह़ल्वाई ने आ कर ख़ुद अपने हाथों से निवाले बना बना कर उन दोनों को खाना खिलाया ।"**

(اَخبارالاخیار ص ۲۷۸ مطبوعہ مکتبہ نوریہ رضویہ سکھر)

अल्लाह عَزَّوَجَلَّ की उन पर रह़मत हो और उन के सदके़ हमारी मग़्फ़िरत हो ।

صَلُّوا عَلَی الْحَبِیْب !　　صَلَّی اللّٰهُ تَعَالٰی عَلٰی مُحَمَّد

(36) गोश्त की नाकारा हड्डियां

प्यारे प्यारे इस्लामी भाइयो ! ह़ज़रते सय्यिदुना शैख़ अ़ब्दुल वह्हाब मुत्तक़ी क़ादिरी शाज़िली عَلَیْهِ رَحْمَةُ اللّٰهِ الْوَلِی बहुत बड़े फ़ाक़ा मस्त वलिय्युल्लाह थे, एक बार रियाज़तों, तर्के सुवाल और भूक का तज़्किरा निकला तो फ़रमाया, "एक दौर वोह था कि मैं क़स्साब के पास से फेंकने वाली **नाकारा हड्डियां** और गेहूं के तिन्के जो खेतों में फेंक दिये जाते हैं उठा लाता, धो कर देगची में उबाल कर उस के शोरबे का एक पियाला पी कर गुज़ारा करता, लोगों को जब इस की इत्तिलाअ़ हुई तो वोह त़रह़ त़रह़ के खाने लाने लगे। येह ह़ाल देख कर मैं वहां से रवाना हो गया और फिर किसी जगह तीन[3] दिन से ज़ियादा क़ियाम न करने का मा'मूल बना लिया।" (اَیضاً)

अल्लाह عَزَّوَجَلَّ **की उन पर रह़मत हो और उन के सदक़े हमारी मग़्फ़िरत हो।**

भूक की आ़दत बने और इस्तिक़ामत भी मिले

ख़ातिमा बिलख़ैर हो अल्लाह ! जन्नत भी मिले

صَلُّوْا عَلَى الْحَبِيْب ! صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلٰى مُحَمَّد

दा'वते इस्लामी के सुन्नतों की तरबियत के **मदनी क़ाफ़िलों** में सफ़र और रोज़ाना **फ़िक्रे मदीना** के ज़रीए **मदनी इन्आ़मात** का रिसाला पुर कर के हर मदनी माह की पहली तारीख़ अपने यहां के ज़िम्मेदार को जम्अ़ करवाने का मा'मूल बना लीजिये। اِنْ شَاءَ اللّٰه عَزَّوَجَلَّ इस की बरकत से पाबन्दे सुन्नत बनने, गुनाहों से नफ़रत करने और **ईमान की ह़िफ़ाज़त** के लिये कुढ़ने का ज़ेहन बनेगा।

(37) खाने से क़ब्ल ख़ौफ़

ह़ज़रते सय्यिदुना वह्ब बिन वर्द رَحْمَةُ اللّٰهِ تَعَالٰى عَلَيْه एक एक या दो[2] दो[2] या तीन[3] तीन[3] दिन भूके रहने के बा'द एक रोटी लेते और यूं दुआ़ करते, "**या अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ ! तू जानता है कि मैं बिग़ैर इसे खाए तेरी इ़बादत की त़ाक़त नहीं रखता और मुझे कमज़ोरी और अलम (ग़म) का डर है। **या अल्लाह** ! अगर इस रोटी में कोई ख़राबी या ह़राम हो तो ला इ़ल्मी में मेरे पेट में जाने पर मुझे इस खाने पर न पकड़ना।" येह

दुआ़ करने के बा'द आप رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰى عَلَيْه **रोटी** को पानी में भिगोते और तनावुल फ़रमा लेते। (منہاج العابدین ص ۹۸)

अल्लाह عَزَّوَجَلَّ की उन पर रह़मत हो और उन के सदक़े हमारी मग़्फ़िरत हो।

صَلُّوا عَلَى الْحَبِيب! صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلٰى مُحَمَّد

खा कर रोना चाहिये : प्यारे प्यारे इस्लामी भाइयो ! बे फ़िक्री के साथ हर चीज़ खाए चले जाना बाइसे तश्वीश है। आख़िरत के ह़िसाब से हमें डरना चाहिये। हुज्जतुल इस्लाम ह़ज़रते सय्यिदुना इमाम मुह़म्मद ग़ज़ाली عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللهِ الْوَالِي **एह़याउल उ़लूम** में फ़रमाते हैं, खा कर रोने वाला और खा कर लह्वो लइ़ब (या'नी खेलकूद या हंसी मज़ाक़) में पड़ जाने वाला दोनों बराबर नहीं हो सकते। (اِحیاءُ العُلوم ج۲ ص۸) मज़ीद फ़रमाते हैं, मुश्तबा खाने पर इस्तिग़्फ़ार और ग़म का इज़्हार करे ता कि उस के आंसूओं और ग़म के सबब उस के ह़क़ में जहन्नम की आग बुझ जाए जो कि ऐसे खाने की वज्ह से अगर पेश होने वाली हो। क्यूं कि हुज़ूरे अकरम, नूरे मुजस्सम, शाहे बनी आदम صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने इर्शाद फ़रमाया, "जो गोश्त ह़राम से परवान चढ़ा आग उस की ज़ियादा मुस्तह़िक़ है।"

(شُعَبُ الایمان ج۵ ص۵٦ حدیث ۵۷٦۱)

صَلُّوا عَلَى الْحَبِيب! صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلٰى مُحَمَّد

(38) सूखी रोटी का टुकड़ा

हज़रते सय्यिदुना जुनैद बग़दादी عَلَیْہِ رَحْمَۃُ الْھَادِی फ़रमाते हैं, "एक रोज़ हज़रते सय्यिदुना हारिस बिन असद मुहासिबी عَلَیْہِ رَحْمَۃُ الرَّبِّی मेरे घर के क़रीब से गुज़रे, मैं ने उन में **भूक** के आसार पाए तो अ़र्ज़ किया "चचाजान ! तशरीफ़ लाइये और कुछ खा लीजिये।" **आप** رَحْمَۃُ اللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہ तशरीफ़ ले आए। घर में और कुछ तो नहीं था, पड़ोस में से **शादी का खाना** आया हुवा था वोही हाज़िर कर दिया। उन्हों ने एक लुक़्मा लिया और मुंह में कई बार घुमाया फिर देहलीज़ में जा कर बाहर निकाल दिया और तशरीफ़ ले गए। फिर कुछ अ़र्से बा'द जब उन्हें दोबारा देखा तो मैं ने उस दिन न खाने का सबब दरयाफ़्त किया तो फ़रमाया, "मुझे भूक लग रही थी लिहाज़ा मैं ने चाहा कि तुम्हारा खाना खा लूं और तुम्हें ख़ुश कर दूं मगर मेरे और **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ के दरमियान येह अ़ह्द है कि जिस खाने में शुबा हो वोह मेरे ह़ल्क़ से नीचे नहीं उतारेगा, येही वज्ह थी कि मैं उस को निगल न सका।" मैं ने अ़र्ज़ किया, "वोह खाना मेरे पड़ोस के हां से शादी का आया था, आज फिर घर पर क़दम रन्जा फ़रमाइये।" आप رَحْمَۃُ اللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہ तशरीफ़ ले आए। मैं ने **सूखी रोटी का टुकड़ा** पेश किया। आप رَحْمَۃُ اللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہ ने वोह तनावुल फ़रमा लिया, और फ़रमाया, "दरवेशों को ऐसा ही खाना पेश किया करो।" (اَیضاً ص ۳۲۹)

अल्लाह عَزَّوَجَلَّ **की उन पर रह़मत हो और उन के सदक़े हमारी मग़्फ़िरत हो।**

صَلُّوا عَلَی الْحَبِیْب ! صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلٰی مُحَمَّد

(39) उंगली की रग फड़क उठती

प्यारे प्यारे इस्लामी भाइयो ! देखा आप ने लाख भूक लगी हो मगर औलियाउल्लाह رَحِمَہُمُ اللّٰہُ تَعَالٰی मुश्तबा (या'नी मश्कूक) खाने को तनावुल नहीं फ़रमाते थे। हज़रते सय्यिदुना हारिस मुहासिबी رَحْمَۃُ اللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہ पर **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ का ख़ास करम था। हज़रते सय्यिदुना अबू अ़ली दक़्क़ाक़ عَلَیْہِ رَحمۃُ الرَّزَّاق से मन्क़ूल है : "जब भी हज़रते सय्यिदुना हारिस मुहासिबी عَلَیْہِ رَحْمَۃُ الرَّبِّی किसी मुश्तबा खाने की त़रफ़ हाथ बढ़ाते तो आप رَحْمَۃُ اللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہ की एक उंगली की **रग** फड़क उठती और आप رَحْمَۃُ اللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہ वोह खाना न खाते।" (اَیضاً ص۴۲۹) कई औलियाए किराम رَحِمَہُمُ اللّٰہُ تَعَالٰی से इस त़रह़ की करामात मन्सूब हैं कि उन को ह़राम व मश्कूक खाने का इ़ल्म हो जाया करता था।

अल्लाह عَزَّوَجَلَّ **की उन पर रह़मत हो और उन के सदक़े हमारी मग़्फ़िरत हो।**

صَلُّوا عَلَی الْحَبِیْب ! صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلٰی مُحَمَّد

(40) आ़बिद और अनार का दरख़्त

नक़्ल है, एक आ़बिद किसी पहाड़ में रहता था। वहां **अनार का दरख़्त** था, हर रोज़ **तीन**[3] **अनार** उस में आते, उन्हें खाता और इ़बादत करता। ह़क़ عَزَّوَجَلَّ को **इम्तिह़ान** मन्ज़ूर हुवा। एक रोज़ अनार न लगे। सब्र किया दो[2] रोज़ और येही माजरा गुज़रा। तीसरे दिन (भूक से) घबरा कर

पहाड़ से नीचे उतरा। उस के नीचे एक नसरानी (या'नी ईसाई) रहा करता था। उस से सुवाल किया, नसरानी ने **चार[4] रोटियां** दीं। उस (नसरानी) का कुत्ता भोंकने लगा, आ़बिद ने एक रोटी डाल दी। कुत्ते ने खा कर फिर पीछा किया, दूसरी रोटी डाल दी, कुत्ते ने वोह भी खा ली मगर पीछा न छोड़ा। जब चारों[4] खा लीं और भोंकने से बाज़ न आया, आ़बिद ने कहा, "ऐ ह़रीसे नाह़क़ कोश ! (या'नी नाह़क़ कोशिश करने वाले लालची !) तुझे शर्म नहीं आती कि मैं तेरे घर से भीक मांग कर रोटियां लाया और तूने मुझ से सब छीन लीं, अब भी पीछा नहीं छोड़ता" **कुत्ते** ने कहा, "मैं तुझ से ज़ियादा बेशर्म नहीं कि जिस मालिक ने बरसों बे मेह़नतो मशक़्क़त ऐसा नफ़ीस रिज़्क़ तुझे खिलाया, (ज़रा सा इम्तिह़ान लेने और) तीन[3] रोज़ न देने पर (भूक से) इतना घबरा गया कि उस के दुश्मन (नसरानी) के घर भीक मांगने आया।" (अह़्सनुल विआ़, स. 144, मक्तबतुल मदीना)

صَلُّوْا عَلَى الْحَبِيْب ! صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلٰى مُحَمَّد

प्यारे प्यारे इस्लामी भाइयो ! इस ह़िकायत से येह दर्स मिला कि जो **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ हमें इस क़दर ने'मतों से नवाज़ता है अगर कभी उसी की त़रफ़ से इम्तिह़ान की सूरत बन जाए तो बे सब्री का मुज़ाहरा और शिक्वा करने के बजाए सब्रो इस्तिक़्लाल से काम लेना चाहिये। इस बात को इस ह़िकायत से समझिये :

(41) मह़मूद व अयाज़ और ककड़ी की क़ाश

मन्क़ूल है, मश्हूर आ़शिक़े रसूल बादशाह, सुल्त़ान महमूद ग़ज़्नवी عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللّٰهِ الْقَوِى के पास कोई शख़्स ककड़ी ले कर ह़ाज़िर हुवा। सुल्त़ान ने **ककड़ी** क़बूल फ़रमा ली और पेश करने वाले को इन्आ़म दिया। फिर अपने हाथ से ककड़ी की एक **क़ाश** तराश कर अपने मन्ज़ूरे नज़र ग़ुलाम **अयाज़** को अ़त़ा फ़रमाई। अयाज़ मज़े ले ले कर खा गया। फिर सुल्त़ान ने दूसरी फांक काटी और ख़ुद खाने लगे तो वोह इस क़दर कड़वी थी कि ज़बान पर रखना मुश्किल था। सुल्त़ान ने ह़ैरत से अयाज़ की त़रफ़ देखा और फ़रमाया, "**अयाज़** ! इतनी कड़वी फांक तू कैसे खा गया ? वाह तेरे चेहरे पर तो ज़र्रा बराबर ना गवारी के असरात भी नुमूदार न हुए ?" अयाज़ ने अ़र्ज़ किया, "आ़लीजाह ! ककड़ी वाक़ेई बहुत कड़वी थी। मुंह में डाली तो **अ़क़्ल** ने कहा, "थूक दे।" मगर **इ़श्क़** बोल उठा, "अयाज़ ! ख़बरदार ! येह वोही हाथ हैं जिन से रोज़ाना मीठी अश्या खाता रहा है, अगर एक दिन कड़वी चीज़ मिल गई तो क्या हुवा ! इस को थूक देना आदाबे मह़ब्बत के ख़िलाफ़ है।" लिहाज़ा इ़श्क़ की रहनुमाई पर मैं ककड़ी की कड़वी क़ाश खा गया।" (रहबरे ज़िन्दगी, स. 168)

अल्लाह عَزَّوَجَلَّ की उन पर रह़मत हो और उन के सदक़े हमारी मग़्फ़िरत हो।

صَلُّوا عَلَى الْحَبِيب ! صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلٰى مُحَمَّد

प्यारे प्यारे इस्लामी भाइयो ! येही शान ब हैसिय्यते मुसल्मान हमारी भी होनी चाहिये कि जिस रब्बुल इबाद جَلَّ جَلَالُہٗ ने हम पर ला ता'दाद एह़सानात फ़रमाए हैं, अगर कभी उस की त़रफ़ से कोई मुसीबतो उफ़्ताद भी आ जाए तो उसे ख़न्दा पेशानी से क़बूल कर लें। बा कमाल वोह नहीं जो मह़बूब की त़रफ़ से मह़ब्बतो प्यार मिलने के सबब वफ़ादार रहे। बा कमाल तो वोह है कि मह़बूब की त़रफ़ से धुत्कार मिलने के बा वुजूद भी उस का वफ़ादार व जां निसार रहे।

वोह इश्क़े ह़क़ीक़ी की लज़्ज़त नहीं पा सकता
जो रन्जो मुसीबत से दो चार नहीं होता

(42) ईसाई राहिब का क़बूले इस्लाम

एक बुज़ुर्ग رَحْمَۃُ اللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہ ने एक **ईसाई राहिब** पर इन्फ़िरादी कोशिश फ़रमाते हुए उस को इस्लाम की दा'वत दी, बहुत बह़सो मुबाह़से के बा'द उस ने कहा, "ह़ज़रते सय्यिदुना ईसा रूहुल्लाह عَلٰی نَبِیِّنَا وَعَلَیْہِ الصَّلٰوۃُ وَالسَّلَام का मो'जिज़ा था के **40** दिन तक कुछ नहीं खाते थे। और येह कमाल सिर्फ़ नबी عَلَیْہِ السَّلَام या सिद्दीक़ ही को ह़ासिल हो सकता है। उस बुज़ुर्ग رَحْمَۃُ اللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہ ने फ़रमाया, "अगर मैं **50** दिन तक भूका रह जाऊं तो क्या तुम कुफ़्र छोड़ कर मुसल्मान हो जाओगे ? और इस बात को जान लोगे कि इस्लाम ही ह़क़ है और तुम बात़िल के पैरव कार हो

फ़रमाने मुस्तफ़ा صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم : मुझ पर दुरूदे पाक की कसरत करो बेशक तुम्हारा मुझ पर दुरूदे पाक पढ़ना तुम्हारे लिये पाकीज़गी का बाइस है। (ابو یعلی)

?" उस ने जवाब दिया, "हां।" चुनान्चे वोह बुज़ुर्ग رَحْمَۃُ اللہِ تَعَالٰی عَلَیْہ उसी के यहां ठहर गए और **50** दिन तक कुछ न खाया, फिर मज़ीद **10** दिन बढ़ा कर **60** दिन तक का फ़ाक़ा किया। वोह राहिब येह **करामत** देख कर मुसल्मान हो गया। (اِحیاءُ الْعُلوم ج ۳ ص ۹۸)

अल्लाह عَزَّوَجَلَّ की उन पर रह़मत हो और उन के सदक़े हमारी मग़्फ़िरत हो।

صَلُّوا عَلَی الْحَبِیْب! صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلٰی مُحَمَّد

प्यारे प्यारे इस्लामी भाइयो! इस ह़िकायत से हरगिज़ कोई येह न समझे कि वोह बुज़ुर्ग رَحْمَۃُ اللہِ تَعَالٰی عَلَیْہ مَعَاذَ اللہ عَزَّوَجَلَّ ह़ज़रते सय्यिदुना ईसा रूहुल्लाह عَلٰی نَبِیِّنَا وَعَلَیْہِ الصَّلٰوۃُ وَالسَّلَام से बढ़ गए। इस्लाम का येह मुसल्लमा **अ़क़ीदा** है कि किसी भी नबी عَلَیْہِ السَّلَام से कोई ग़ैरे नबी अफ़्ज़ल हो ही नहीं सकता। और जो ग़ैरे नबी को नबी عَلَیْہِ السَّلَام से अफ़्ज़ल माने वोह **काफ़िर** है। बात दर अस्ल येह है कि इस्लाम आवरी से क़ब्ल वोह राहिब येह समझता था कि ह़ज़रते सय्यिदुना ईसा रूहुल्लाह عَلٰی نَبِیِّنَا وَعَلَیْہِ الصَّلٰوۃُ وَالسَّلَام के बा'द अब कोई ग़ुलामे मुस्तफ़ा صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم **40** दिन का फ़ाक़ा कर ही नहीं सकता। इस लिये उस बुज़ुर्ग رَحْمَۃُ اللہِ تَعَالٰی عَلَیْہ ने करामत दिखा कर उस की ग़लत़ फ़हमी दूर कर दी कि **40** दिन का फ़ाक़ा ह़ज़रते सय्यिदुना ईसा عَلَیْہِ السَّلَام का ख़ास्सा नहीं, ग़ुलामाने मुस्तफ़ा صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم **40** दिन कुजा **60** दिन भी भूके रहने के बा वुजूद जी सकते हैं।

चाहें तो इशारों से अपने काया ही पलट दें दुन्या की
صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰی عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم
येह शान है ख़िदमत गारों की सरकार का आ़लम क्या होगा

صَلُّوْا عَلَى الْحَبِيْب! صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلٰى مُحَمَّد

(43) मछली चावल

एक बसरी बुज़ुर्ग رَحْمَةُ اللّٰهِ تَعَالٰى عَلَيْه के बारे में मन्क़ूल है, बीस[20] बरस तक उन का नफ़्स **मछली चावल** और रोटी का मुत़ालबा करता रहा मगर वोह अपने नफ़्स को मारते रहे और येह चीज़ें नहीं खाईं। वफ़ात के बा'द किसी ने ख़्वाब में देखा तो पूछा, ''مَافَعَلَ اللّٰهُ بِكَ؟'' या'नी **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ ने आप के साथ क्या मुआ़मला फ़रमाया ?'' जवाब दिया, ''**अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ के फ़ज़्लो करम से मुझे जो कुछ ने'मतें मर्हमत की गईं वोह बयान से बाहर हैं। सब से पहले **मछली चावल** और रोटी दे कर कहा गया, ''आज जिस क़दर दिल चाहे खाओ।'' (احیاءُ العُلوم ج۳ ص۱۰۳)

अल्लाह عَزَّوَجَلَّ **की उन पर रह़मत हो और उन के सदक़े हमारी मग़्फ़िरत हो।**

صَلُّوْا عَلَى الْحَبِيْب! صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلٰى مُحَمَّد

प्यारे प्यारे इस्लामी भाइयो! देखा आप ने ! नफ़्स की पैरवी न करने वालों का किस क़दर आ'ला मक़ाम होता है। जो ख़ुश नसीब लोग **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ की रिज़ा की ख़ात़िर नफ़्स को मारते हुए दुन्या की ने'मतों से परहेज़ करते हुए भूक बरदाश्त करने में काम्याब हो जाते हैं उन को

फ़रमाने मुस्तफ़ा صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم : तुम जहां भी हो मुझ पर दुरूद पढ़ो कि तुम्हारा दुरूद मुझ तक पहुंचता है। (طبرانی)

मुबारक हो कि मरने के बा'द उन को जन्नत की आ'ला ने'मतें इनायत होंगी। चुनान्चे **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ **सूरतुल हाक़्क़ह** की आयत नम्बर **24** में इर्शाद फ़रमाता है :

كُلُوْا وَاشْرَبُوْا هَنِيْٓـًٔا بِمَآ اَسْلَفْتُمْ فِي الْاَيَّامِ الْخَالِيَةِ

(پ۲۹ الحآقّة آیت ۲٤)

तरजमए कन्ज़ुल ईमान : खाओ और पियो रचता हुवा सिला उस का जो तुम ने गुज़रे दिनों में आगे भेजा।

(44) दिल के लिये नफ़्अ़ बख़्श

हज़रते सय्यिदुना शैख़ अबू सुलैमान दारानी قُدِّسَ سِرُّہُ النُّورانی फ़रमाते हैं, "नफ़्स की किसी ख़्वाहिश को तर्क कर देना दिल के लिये एक साल के रोज़े और शब बेदारी से भी ज़ियादा नफ़्अ़ बख़्श है।" (ایضاً ج۳ص۱۰۳)

अल्लाह عَزَّوَجَلَّ **की उन पर रह़मत हो और उन के सदक़े हमारी मग़्फ़िरत हो।**

صَلُّوْا عَلَی الْحَبِیْب ! صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلٰی مُحَمَّد

(45) जन्नत का वलीमा

हुज्जतुल इस्लाम हज़रते सय्यिदुना इमाम मुहम्मद ग़ज़ाली عَلَیْہِ رَحْمَةُ اللّٰہِ الْوَالِی फ़रमाते हैं, "राहे आख़िरत पर गामज़न बुज़ुर्गाने दीन عَلَیْہِ رَحْمَةُ اللّٰہِ الْمُبِیْن ख़्वाहिशाते नफ़्स की तक्मील से बचते थे क्यूं कि इन्सान अगर ह़स्बे ख़्वाहिश लज़ीज़ चीज़ें खाता रहे तो इस से उस के **नफ़्स** में

फ़रमाने मुस्तफ़ा صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم : जो लोग अपनी मजलिस से अल्लाह के ज़िक्र और नबी पर दुरूद शरीफ़ पढ़े बिग़ैर उठ गए तो वोह बदबूदार मुर्दार से उठे। (شعب الایمان)

अकड़ (या'नी मग़रूरी) पैदा हो जाती और उस का **दिल** सख़्त हो जाता है, नीज़ वोह दुन्या की लज़ीज़ चीज़ों से इस क़दर मानूस हो जाता है कि लज़ाइज़े दुन्या की महब्बत उस के दिल में घर कर जाती है और वोह **रब्बे काएनात** جَلَّ جَلَالُہٗ की मुलाक़ात और उस की बारगाहे आ़ली में हाज़िरी को भूल जाता है। उस के ह़क़ में दुन्या जन्नत और मौत क़ैदख़ाना बन जाती है। जो अपने नफ़्स पर सख़्ती डाले और उस को लज़्ज़तों से महरूम रखे तो दुन्या उस के लिये क़ैदख़ाना बन जाती है और इस में वोह घुटन महसूस करता है, अब उस का **नफ़्स** दुन्या से कूच करना और मौत के ज़रीए ज़िन्दगी की क़ैद से आज़ाद हो जाना पसन्द करता है। इसी बात की तरफ़ इशारा करते हुए ह़ज़रते सय्यिदुना **यह्या मुआ़ज़** राज़ी رَحْمَۃُ اللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہ फ़रमाते हैं, **ऐ** सिद्दीक़ीन के गुरौह ! **जन्नत का वलीमा** खाने के लिये अपने आप को भूका रखो क्यूं कि नफ़्स को जिस क़दर भूका रखा जाए उसी क़दर खाने की ख़्वाहिश बढ़ती है। (या'नी जब शिद्दत से भूक लगी होती है उस वक़्त खाना खाने में ज़ियादा लुत्फ़ आता है इस का तजरिबा उ़मूमन हर रोज़ादार को होता है लिहाज़ा दुन्या में ख़ूब भूके रहो ता कि जन्नत की आ'ला ने'मतों से ख़ूब लज़्ज़त याब हो सको) (ایضاً ص۹۹)

अल्लाह عَزَّوَجَلَّ **की उन पर रह़मत हो और उन के सदक़े हमारी मग़्फ़िरत हो।**

صَلُّوْا عَلَی الْحَبِیْب! صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلٰی مُحَمَّد

(46) धूप का सूखा हुवा आटा

हज़रते सय्यिदुना उ़त्बतुल गुलाम عَلَيْهِ رَحْمَةُ رَبِّ الْاَنَام आटा गूंध कर धूप में सुखा कर तनावुल फ़रमा लेते और फ़रमाया करते, "एक रोटी के टुकड़े और नमक पर गुज़ारा कर लेना चाहिये ता कि बरोज़े क़ियामत भुना हुवा गोश्त और अच्छा अच्छा खाना मिले ।" (احیاءُ العُلوم ج٣ص١٠٠)

अल्लाह عَزَّوَجَلَّ की उन पर रह़मत हो और उन के सदक़े हमारी मग़्फ़िरत हो ।

صَلُّوْا عَلَى الْحَبِيْب ! صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلٰى مُحَمَّد

(47) 40 साल तक दूध न पिया

हज़रते सय्यिदुना मालिक बिन दीनार عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللهِ الْجَبَّار के बारे में मन्क़ूल है, आप رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰى عَلَيْه का नफ़्स **40** बरस तक दूध की ख़्वाहिश करता रहा मगर आप رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰى عَلَيْه ने न पिया । एक दिन नज़राने में किसी ने खजूरें दीं तो आप رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰى عَلَيْه ने शागिर्दों को इनायत करते हुए फ़रमाया, "आप लोग खा लीजिये मैं ने **40** साल से खजूर (खाना तो दूर की बात है) चखी तक नहीं । (اَیضاً ص١٠١)

अल्लाह عَزَّوَجَلَّ की उन पर रह़मत हो और उन के सदक़े हमारी मग़्फ़िरत हो ।

صَلُّوْا عَلَى الْحَبِيْب ! صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلٰى مُحَمَّد

(48) गोश्त रोटी

हज़रते सय्यिदुना उ़त्बतुल गुलाम عَلَيْهِ رَحْمَةُ رَبِّ الْاَنَام सात बरस तक **गोश्त** की ख़्वाहिश को टालते रहे फिर एक दिन रोटी और गोश्त की

एक बोटी ख़रीद फ़रमाई। बोटी भून कर रोटी पर रखी, इतने में एक **यतीम** बच्चा आ गया, आप رَحْمَةُ اللّٰهِ تَعَالٰى عَلَيْه ने उस को रोटी और बोटी इनायत फ़रमा दी। फिर रो पड़े और पारह **29 सूरतुद्दह्‌र** की आठवीं आयते करीमा तिलावत करने लगे।

وَيُطْعِمُوْنَ الطَّعَامَ عَلٰى حُبِّهٖ مِسْكِيْنًا وَّيَتِيْمًا وَّاَسِيْرًا ۝

(پ ۲۹ الدّھر آیت ۸)

तरजमए कन्ज़ुल ईमान : और खाना खिलाते हैं उस की महब्बत पर मिस्कीन और यतीम और असीर (या'नी क़ैदी) को।

हज़रते सय्यिदुना उ़त्बतुल ग़ुलाम عَلَيْهِ رَحْمَةُ رَبِّ الْاَنَام ने इस के बा'द कभी भी रोटी और भुना हुवा गोश्त न चखा। (ایضاً ص ۲۱۱)

अल्लाह عَزَّوَجَلَّ **की उन पर रह़मत हो और उन के सदक़े हमारी मग़्फ़िरत हो।**

صَلُّوْا عَلَى الْحَبِيْب ! صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلٰى مُحَمَّد

(49) ख़ौफ़नाक आंधी

हज़रते सय्यिदुना उ़त्बतुल ग़ुलाम عَلَيْهِ رَحْمَةُ رَبِّ الْاَنَام फ़रमाते हैं, "कई बरस तक नफ़्स खजूर की ख़्वाहिश करता रहा, मैं ने एक दिन कुछ खजूरें ख़रीद कर इफ़्त़ारी के लिये रखीं, इतने में इस क़दर **ख़ौफ़नाक आंधी** चली कि हर त़रफ़ तारीकी छा गई और लोगों में ख़ौफ़ो हिरास फैल गया। येह देख कर मैं ने अपने आप से कहा, "येह तेरी जुरअत

और (नफ़्स की पैरवी के लिये) खजूरें ख़रीदने के सबब हुवा और तेरे गुनाहों के बाइस लोग इस आंधी में मुब्तला हुए। फिर अ़ह्द किया, अब इसे नहीं चखूंगा। (اَیضاً ص۲۱۰)

अल्लाह عَزَّوَجَلَّ की उन पर रह़मत हो और उन के सदक़े हमारी मग़्फ़िरत हो।

صَلُّوا عَلَى الْحَبِيْب ! صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلٰى مُحَمَّد

प्यारे प्यारे इस्लामी भाइयो ! हज़रते सय्यिदुना उ़त्बतुल ग़ुलाम عَلَيْهِ رَحْمَةُ رَبِّ الْاَنَام की आ़जिज़ी थी कि आंधी आई तो इस पर अपने आप को मूरिदे इल्ज़ाम ठहराया ! बुज़ुर्गों की बरकत से मुसीबतें आती नहीं टल जाती हैं, क्या बई़द कि **ज़ल्ज़ला** आने वाला हो और वोह उन की बरकत से **आंधी** से बदल गया हो ! मन्क़ूल है "नेक लोगों के तज़्किरे के वक़्त रह़मत नाज़िल होती है।" (کشف الخفاء ج۲ص۹۱رقم الحدیث۱۷۷۲) जब सिर्फ़ तज़्किरे पर नुज़ूले रह़मत की बिशारत है तो जहां वलिय्युल्लाह का वुजूदे मस्ऊ़द मौजूद हो वहां रह़मतों का क्या आ़लम होता होगा।

जो वलियों के मज़ारों पर मुसल्मां आते जाते हैं
ख़ुदा عَزَّوَجَلَّ की रह़मतों से हिस्सए वाफ़िर वोह पाते हैं

(50) सब्ज़ पियाला

हज़रते सय्यिदुना शफ़ीक़ बिन इब्राहीम عَلَيْهِ رَحْمَةُ الْكَرِيْم फ़रमाते हैं, "मैं मक्कए मुकर्रमा زَادَهَا اللّٰهُ شَرَفًا وَّتَعْظِيْمًا में सरकारे मक्कए मुकर्रमा,

सरदारे मदीनए मुनव्वरह صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم की **विलादत गाह शरीफ़** के क़रीब ह़ज़रते सय्यिदुना इब्राहीम बिन अद्हम عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللهِ رَبِّ الْاَعْظَم से मिला कि आप رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰى عَلَيْه रास्ते के कनारे पर बैठे रो रहे हैं। मैं आप رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰى عَلَيْه के पास जा कर बैठ गया और पूछा, "ऐ अबू इस्ह़ाक़ ! (येह आप رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰى عَلَيْه की कुन्यत थी) येह रोना कैसा ?" इर्शाद फ़रमाया, "ख़ैर है।" मैं ने अपनी बात को दो[2] तीन[3] मरतबा इसरार के साथ कहा तो इर्शाद फ़रमाया "ऐ शफ़ीक़ (رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰى عَلَيْه) ! मेरा पर्दा रखना" मैं ने कहा, "जो जी में आए फ़रमा दीजिये।" फ़रमाया, "मेरा नफ़्स तीस[30] साल से सिक्बाज (सिर्का, गोश्त और ख़ुश्बूदार मसालहे से तय्यार कर्दा सालन) की ख़्वाहिश में बेचैन था मगर मैं उसे मन्अ़ करता रहा। गुज़श्ता रात जब कि मैं बैठा हुवा था मुझे नींद ने आ घेरा। एक नौ जवान को हाथ में **सब्ज़ पियाला** लिये देखा जिस से **सिक्बाज** की ख़ुश्बूदार भाप उठ रही थी। मैं हिम्मत जम्अ़ कर के उस से दूर हटा तो उस (नौ जवान) ने वोह प्याला मेरी त़रफ़ बढ़ा कर कहा, "ऐ इब्राहीम (رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰى عَلَيْه) ! खाइये ! मैं ने जवाब दिया, "मैं नहीं खाता, मैं इसे **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ के लिये छोड़ चुका हूं" कहा, "**अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ ने ही आप को नवाज़ा है, खाइये !" मेरे पास कोई जवाब न बचा मैं रो दिया। तो कहा "खाइये, **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ आप पर रह़्म फ़रमाए।" मैं ने कहा, "हमें हुक्म दिया गया है कि जब तक यक़ीन न हो कहां से आया है अपने पेटों में न डालें।" कहने लगा, "खाइये **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ आप को आ़फ़िय्यत बख़्शे, मुझे येह

खाना दे कर कहा गया कि ऐ ख़िज़्र (عَلَیْهِ السَّلَام) ! इसे ले जाओ और इब्राहीम बिन अद्हम عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللّٰهِ رَبِّ الْاَعْظَم के नफ़्स को खिलाओ कि **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ ने उस को (सिक्बाज से) रोके रखने पर इस त़वील सब्र के सबब इस पर रह़्म फ़रमा दिया, ऐ इब्राहीम رَحْمَةُ اللّٰهِ تَعَالٰى عَلَيْه ! मैं ने फ़िरिश्तों को कहते हुए सुना, "जिसे अ़त़ा किया जाए और वोह न ले तो फिर त़लब करने पर उसे न दिया जाएगा।" मैं ने कहा, "अगर ऐसा मुआ़मला है तो मैं **अल्लाह** तआ़ला के साथ किये हुए वा'दे के सबब आप के सामने ऐसा ही हूं (या'नी न खाऊंगा)।" फिर मैं पलटा तो एक नौ जवान ने उन्हें कोई चीज़ देते हुए कहा, "**ऐ ख़िज़्र** (عَلَيْهِ السَّلَام) ! इन्हें ख़ुद खिलाइये।" चुनान्चे आप عَلَيْهِ السَّلَام मुझे लुक़्मे देते रहे यहां तक कि मेरी आंख खुल गई। मैं उठा तो मुंह में उस का ज़ाएक़ा मौजूद था।" सय्यिदुना शफ़ीक़ رَحْمَةُ اللّٰهِ تَعَالٰى عَلَيْه फ़रमाते हैं, "मैं ने अ़र्ज़ किया, "अपना हाथ दिखाइये !" मैं ने आप رَحْمَةُ اللّٰهِ تَعَالٰى عَلَيْه का हाथ थामा और उसे चूम लिया। (اِحیاءُ الْعُلُوم ج۳ ص۱۰۰،۱۰۱)

अल्लाह عَزَّوَجَلَّ **की उन पर रह़मत हो और उन के सदक़े हमारी मग़्फ़िरत हो।**

صَلُّوا عَلَى الْحَبِيب ! صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلٰى مُحَمَّد

ईमान पर ख़ातिमे का अ़मल : प्यारे प्यारे इस्लामी भाइयो ! देखा आप ने ! ह़ज़रते सय्यिदुना इब्राहीम बिन अद्हम عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللّٰهِ رَبِّ الْاَعْظَم

ख़्वाहिशाते नफ़्सानी को किस त़रह़ कुचल्ते थे। **तीस[30] बरस से सिक्बाज** खाने की ख़्वाहिश को मार रखा था। **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ की रह़मत से ह़ज़रते सय्यिदुना ख़िज़्र عَلٰی نَبِیِّنَا وَعَلَیْہِ الصَّلٰوۃُ وَالسَّلَام ने तशरीफ़ ला कर उन्हें अपने प्यारे प्यारे हाथों से सिक्बाज खिलाया। ह़ज़रते सय्यिदुना ख़िज़्र عَلٰی نَبِیِّنَا وَعَلَیْہِ الصَّلٰوۃُ وَالسَّلَام **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ के नबी हैं जो कि अभी तक ज़ाहिरी ह़यात से मुत्तसिफ़ हैं। आप عَلَیْہِ السَّلَام की बरकत का एक मदनी फूल पेश करता हूं इस को अपने दिल के मदनी गुलदस्ते में ज़रूर सजा लीजिये। चुनान्चे **तफ़्सीरे सावी** शरीफ़ में है, जो कोई ह़ज़रते **सय्यिदुना ख़िज़्र** عَلٰی نَبِیِّنَا وَعَلَیْہِ الصَّلٰوۃُ وَالسَّلَام का नाम बमअ़ **कुन्यत** व वलदिय्यत व लक़ब याद रखेगा, اِنْ شَآءَاللہ عَزَّوَجَلَّ उस का **ईमान पर ख़ातिमा** होगा। आप का नाम बमअ़ कुन्यत व वलदिय्यत व लक़ब इस त़रह़ है : **अबुल अ़ब्बास बल्या बिन मल्कान अल ख़िज़्र।** (تفسیرِ صاوی ج۴ ص۱۲۰۷)

अल्लाह عَزَّوَجَلَّ **की उन पर रह़मत हो और उन के सदक़े हमारी मग़्फ़िरत हो।**

صَلُّوْا عَلَی الْحَبِیْب! صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلٰی مُحَمَّد

(51) नफ़्स के साथ गुफ़्तगू

ह़ज़रते सय्यिदुना इमामे आ'ज़म अबू ह़नीफ़ा رَحْمَۃُ اللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہ के शहज़ादे ह़ज़रते सय्यिदुना ह़म्माद عَلَیْہِ رَحْمَۃُ الْجَوَاد फ़रमाते हैं, "मैं ह़ज़रते सय्यिदुना दावूद त़ाई رَحْمَۃُ اللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہ की ख़िदमत में ह़ाज़िर हुवा, घर के अन्दर से आवाज़ आ रही थी "ऐ नफ़्स! तूने **गाजर** की ख़्वाहिश की, मैं

ने खिला दिया फिर तूने **खजूर** का मुत़ालबा शुरूअ़ कर दिया ! ख़ुदा عَزَّوَجَلَّ की क़सम ! तुझे कभी भी खजूर नहीं खिलाऊंगा।" मैं सलाम कर के अन्दर दाख़िल हुवा तो आप رَحْمَةُ اللّٰهِ تَعَالٰى عَلَيْه तन्हा थे। (या'नी आप येह बातें अपने नफ़्स के साथ कर रहे थे।) (ایضاً ص۱۰۱)

अल्लाह عَزَّوَجَلَّ की उन पर रह़मत हो और उन के सदक़े हमारी मग़्फ़िरत हो।

صَلُّوْا عَلَى الْحَبِيْب ! صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلٰى مُحَمَّد

(52) सब्ज़ी नहीं खाऊंगा

ह़ज़रते सय्यिदुना मालिक बिन ज़ैग़म عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللّٰهِ الْاَكْرَم फ़रमाते हैं, "एक बार मैं बसरे के बाज़ार से गुज़रा तो एक तरकारी पर नज़र पड़ी नफ़्स ने मुत़ालबा किया कि आज रात येह सब्ज़ी खिला दो। मैं ने क़सम खाई कि "चालीस40 रातों तक येह **सब्ज़ी** नहीं खाऊंगा।" (ایضاً ص۱۰۱)

अल्लाह عَزَّوَجَلَّ की उन पर रह़मत हो और उन के सदक़े हमारी मग़्फ़िरत हो।

दा'वते इस्लामी के सुन्नतों की तरबियत के **मदनी क़ाफ़िलों** में सफ़र और रोज़ाना **फ़िक्रे मदीना** के ज़रीए **मदनी इन्आ़मात** का रिसाला पुर कर के हर मदनी माह की पहली तारीख़ अपने यहां के ज़िम्मेदार को जम्अ़ करवाने का मा'मूल बना लीजिये। اِنْ شَآءَ اللّٰه عَزَّوَجَلَّ इस की बरकत से पाबन्दे सुन्नत बनने, गुनाहों से नफ़रत करने और **ईमान की ह़िफ़ाज़त** के लिये कुढ़ने का ज़ेह्न बनेगा।

(मुरम्मम)

फ़ैज़ाने रमज़ान

फ़ज़ाइले रमज़ान शरीफ़
843

अह़कामे रोज़ा
917

फ़ैज़ाने तरावीह़
1053

फ़ैज़ाने लयलतुल क़द्र
1087

अल वदाअ़ माहे रमज़ान
1123

फ़ैज़ाने ए'तिकाफ़
1153

फ़ैज़ाने ईदुल फ़ित्र
1259

नफ़्ल रोज़ों के फ़ज़ाइल
1305

रोज़ादारों की 12 ह़िकायात
1395

मो'तकिफ़ीन की 40 मदनी बहारें
1431

SINGLE 842 A

फ़ज़ाइले रमज़ान शरीफ़

SINGLE 842 B

मरह़बा सद मरह़बा ! फिर आमदे रमज़ान है

मरह़बा सद मरह़बा ! फिर आमदे रमज़ान है
खिल उठे मुरझाए दिल ताज़ा हुवा ईमान है

या ख़ुदा हम आ़सियों पर येह बड़ा एह़सान है
ज़िन्दगी में फिर अ़ता हम को किया रमज़ान है

तुझ पे सदक़े जाऊं रमज़ां ! तू अ़ज़ीमुश्शान है
तुझ में नाज़िल ह़क़ तआ़ला ने किया क़ुरआन है

अब्रे रह़मत छा गया है और समां है नूर नूर
फ़ज़्ले रब से मग़्फ़िरत का हो गया सामान है

हर घड़ी रह़मत भरी है हर त़रफ़ हैं बरकतें
माहे रमज़ां रह़मतों और बरकतों की कान है

आ गया रमज़ां इ़बादत पर कमर अब बांध लो
फ़ैज़ ले लो जल्द येह दिन तीस[30] का मेहमान है

आ़सियों की मग़्फ़िरत का ले कर आया है पयाम
झूम जाओ मुजरिमो ! रमज़ां महे ग़ुफ़रान[1] है

भाइयो बहनो ! करो सब नेकियों पर नेकियां
पड़ गए दोज़ख़ पे ताले क़ैद में शैत़ान है

भाइयो बहनो ! गुनाहों से सभी तौबा करो
ख़ुल्द के दर खुल गए हैं दाख़िला आसान है

कम हुवा ज़ोरे गुनह और मस्जिदें आबाद हैं
माहे रमज़ानुल मुबारक का येह सब फ़ैज़ान है

रोज़ादारो ! झूम जाओ क्यूं कि दीदारे ख़ुदा
ख़ुल्द में होगा तुम्हें येह वा'दए रह़मान है

दो[2] जहां की ने'मतें मिलती हैं रोज़ादार को
जो नहीं रखता है रोज़ा वोह बड़ा नादान है

या इलाही ! तू मदीने में कभी रमज़ां दिखा
मुद्दतों से दिल में येह अ़त्तार के अरमान है (वसाइले बख़्शिश, स. 705)

मदीना

1 : मग़्फ़िरत, बख़्शिश, मग़्फ़िरत करना

वक़्त सहरी का हो गया जागो

वक़्त सहरी का हो गया जागो
नूर हर सम्त छा गया जागो
उठो सहरी की कर लो तय्यारी
रोज़ा रखना है आज का जागो
माहे रमज़ां के फ़र्ज़ हैं रोज़े
एक भी तुम न छोड़ना जागो
उठो उठो वुज़ू भी कर लो और
तुम तहज्जुद करो अदा जागो
चुस्कियां गर्म चाय की भर लो
खा लो हलकी सी कुछ गिज़ा जागो
होगी मक़्बूल फ़ज़्ले मौला से
खा के सहरी करो दुआ जागो
माहे रमज़ां की बरकतें लूटो
लूट लो रहमते ख़ुदा जागो
खा के सहरी उठो अदा कर लो
सुन्नते शाहे अम्बिया जागो
तुम को मौला मदीना दिखलाए
और हज भी करो अदा जागो
तुम को रमज़ां के सदक़े मौला दे
उल्फ़ते इश्क़े मुस्त़फ़ा जागो
तुम को रमज़ान का मदीने में
दे शरफ़ रब्बे मुस्त़फ़ा जागो
कैसी प्यारी फ़ज़ा है रमज़ां की
देख लो कर के आंख वा जागो
रहमतों की झड़ी बरसती है
जल्द उठ कर के लो नहा जागो

तुम को दीदारे मुस्त़फ़ा हो जाए
है येह अत्त़ार की दुआ जागो

(वसाइले बख़्शिश, स. 668)

फ़रमाने मुस्त़फ़ा صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم : शबे जुमुआ़ और रोज़े जुमुआ़ मुझ पर दुरूद की कसरत कर लिया करो जो ऐसा करेगा क़ियामत के दिन मैं उस का शफ़ीअ़ व गवाह बनूंगा। (شعب الایمان)

اَلْحَمْدُ لِلّٰهِ رَبِّ الْعٰلَمِيْنَ وَالصَّلٰوةُ وَالسَّلَامُ عَلٰى سَيِّدِ الْمُرْسَلِيْنَ
اَمَّا بَعْدُ فَاَعُوْذُ بِاللّٰهِ مِنَ الشَّيْطٰنِ الرَّجِيْمِ ؕ بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ ؕ

फ़ज़ाइले र-मज़ान शरीफ़

शैतान लाख सुस्ती दिलाए मगर आप हिम्मत कर के फ़ैज़ाने रमज़ान (हर साल शा'बानुल मुअ़ज़्ज़म में) मुकम्मल पढ़ लीजिये اِنْ شَآءَ اللّٰه عَزَّوَجَلَّ इस की बरकतें ख़ुद ही देख लेंगे।

दुरूद शरीफ़ की फ़ज़ीलत : अल्लाह عَزَّوَجَلَّ के मह़बूब, दानाए ग़ुयूब, صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم का फ़रमाने तक़र्रुब निशान है : बेशक बरोज़े क़ियामत लोगों में से मेरे क़रीब तर वोह होगा जो मुझ पर सब से ज़ियादा दुरूद भेजे। (ترمذی ج۲ ص۲۷ حدیث ٤٨٤)

صَلُّوْا عَلَى الْحَبِيْب ! صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلٰى مُحَمَّد

प्यारे प्यारे इस्लामी भाइयो ! ख़ुदाए रह़मान عَزَّوَجَلَّ के करोड़हा करोड़ एह़सान कि उस ने हमें **माहे रमज़ान** जैसी अ़ज़ीमुश्शान ने'मत से सरफ़राज़ फ़रमाया। माहे रमज़ान के फ़ैज़ान के क्या कहने ! इस की तो हर घड़ी रह़मत भरी है, **रमज़ानुल मुबारक** में हर नेकी का सवाब 70 गुना या इस से भी ज़ियादा है। (मिरआत, जि. 3, स. 137) नफ़्ल का सवाब फ़र्ज़ के बराबर और फ़र्ज़ का सवाब 70 गुना कर दिया जाता है, अ़र्श उठाने वाले फ़िरिश्ते रोज़ादारों की दुआ़ पर आमीन कहते हैं और

फ़रमाने मुस्त़फ़ा صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم के मुत़ाबिक़ : **"रमज़ान के रोज़ादार के लिये मछलियां इफ़्त़ार तक दुआए मग़्फ़िरत करती रहती हैं।"**

(اَلتَّرغیب والتَّرھیب ج ۲ ص ۵۵ حدیث ٦)

इबादत का दरवाज़ा : अल्लाह عَزَّوَجَلَّ के मह़बूब, दानाए ग़ुयूब, मुनज़्ज़हुन अ़निल उ़यूब صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم का फ़रमाने आ़लीशान है : "रोज़ा इबादत का दरवाज़ा है।" (اَلْجامِعُ الصَّغِیر ص۱٤٦ حدیث۲٤۱۵)

नुज़ूले क़ुरआन : इस माहे मुबारक की एक ख़ुसूसिय्यत येह भी है कि **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ ने इस में क़ुरआने पाक नाज़िल फ़रमाया है। चुनान्चे पारह 2 **सूरतुल बक़रह** आयत 185 में मुक़द्दस क़ुरआन में ख़ुदाए रह़मान عَزَّوَجَلَّ का फ़रमाने आ़लीशान है :

شَهْرُ رَمَضَانَ الَّذِیْۤ اُنْزِلَ فِیْهِ الْقُرْاٰنُ هُدًى لِّلنَّاسِ وَ بَیِّنٰتٍ مِّنَ الْهُدٰى وَ الْفُرْقَانِۚ فَمَنْ شَهِدَ مِنْكُمُ الشَّهْرَ فَلْیَصُمْهُؕ وَ مَنْ كَانَ مَرِیْضًا اَوْ عَلٰى سَفَرٍ فَعِدَّةٌ مِّنْ اَیَّامٍ اُخَرَؕ یُرِیْدُ اللّٰهُ بِكُمُ الْیُسْرَ وَ لَا یُرِیْدُ بِكُمُ الْعُسْرَ٘ وَ لِتُكْمِلُوا الْعِدَّةَ وَ لِتُكَبِّرُوا اللّٰهَ عَلٰى مَا هَدٰىكُمْ وَ لَعَلَّكُمْ تَشْكُرُوْنَ ﴿۱۸۵﴾

तरजमए कन्ज़ुल ईमान : रमज़ान का महीना, जिस में क़ुरआन उतरा, लोगों के लिये हिदायत और रहनुमाई और फ़ैसले की रोशन बातें, तो तुम में जो कोई येह महीना पाए ज़रूर इस के रोज़े रखे और जो बीमार या सफ़र में हो, तो उतने रोज़े और दिनों में। **अल्लाह** (عَزَّوَجَلَّ) तुम पर आसानी चाहता है और तुम पर दुश्वारी नहीं चाहता और इस लिये कि तुम गिनती पूरी करो और **अल्लाह** (عَزَّوَجَلَّ) की बड़ाई बोलो इस पर कि उस ने तुम्हें

हिदायत की और कहीं तुम हक़ गुज़ार हो।

महीनों के नाम की वज्ह : रमज़ान, येह "रम्ज़ुन" से बना जिस के मा'ना हैं : "गरमी से जलना।" क्यूं कि जब महीनों के नाम क़दीम अ़रबों की ज़बान से नक़्ल किये गए तो उस वक़्त जिस क़िस्म का मौसिम था उस के मुताबिक़ महीनों के नाम रख दिये गए इत्तिफ़ाक़ से उस वक़्त रमज़ान सख़्त गर्मियों में आया था इसी लिये येह नाम रख दिया गया। (اَلنِّهَايَة لِابْنِ الْاَثِير ج۲ ص۲٤٠) **हज़रते** मुफ़्ती अह़मद यार ख़ान عَلَيْهِ رَحْمَةُ الْحَنَّان फ़रमाते हैं : बा'ज़ मुफ़स्सिरीन رَحِمَهُمُ اللّٰهُ الْمُبِين ने फ़रमाया कि जब महीनों के नाम रखे गए तो जिस मौसिम में जो महीना था उसी से उस का नाम हुवा। जो महीना गरमी में था उसे **रमज़ान** कह दिया गया और जो मौसिमे बहार में था उसे **रबीउ़ल अव्वल** और जो सर्दी में था जब पानी जम रहा था उसे **जुमादल ऊला** कहा गया।

(तफ़्सीरे नईमी, जि. 2, स. 205)

صَلُّوا عَلَى الْحَبِيب ! صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلٰى مُحَمَّد

सुर्ख़ याक़ूत का घर : हज़रते सय्यिदुना अबू सई़द ख़ुदरी رَضِىَ اللّٰهُ تَعَالٰى عَنْهُ से रिवायत है : मक्की मदनी सुल्तान, रह़मते आ़लमिय्यान صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم का फ़रमाने रह़मत निशान है : "जब माहे रमज़ान की

पहली रात आती है तो आस्मानों के दरवाज़े खोल दिये जाते हैं और आख़िरी रात तक बन्द नहीं होते। जो कोई बन्दा इस माहे मुबारक की किसी भी रात में नमाज़ पढ़ता है तो **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ उस के हर सज्दे के इवज़ (या'नी बदले में) उस के लिये पन्दरह सो नेकियां लिखता है और उस के लिये जन्नत में **सुर्ख़ याक़ूत का घर** बनाता है। पस जो कोई माहे रमज़ान का **पहला रोज़ा** रखता है तो उस के साबिक़ा गुनाह मुआ़फ़ कर दिये जाते हैं, और उस के लिये सुब्ह से शाम तक 70 **हज़ार फ़िरिश्ते** दुआ़ए मग़्फ़िरत करते रहते हैं। रात और दिन में जब भी वोह **सज्दा** करता है उस के हर सज्दे के बदले उसे (जन्नत में) एक एक ऐसा दरख़्त अ़ता किया जाता है कि उस के साए में (घोड़े) सुवार **पांच सो बरस** तक चलता रहे।"

(شُعَبُ الایمان ج۳ ص ۳۱۴ حدیث ۳۶۳۵ مُلَخَّصاً)

صَلُّوْا عَلَی الْحَبِیْب! صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلٰی مُحَمَّد

नाबीना भान्जी बीना हो गई (मदनी बहार) : प्यारे प्यारे इस्लामी भाइयो ! اَلْحَمْدُ لِلّٰہ عَزَّوَجَلَّ तब्लीग़े क़ुरआनो सुन्नत की आ़लमगीर ग़ैर सियासी तह़रीक "दा'वते इस्लामी" के मदनी माह़ोल से वाबस्ता **आ़शिक़ाने रसूल** की सोहबत ह़ासिल होने की सूरत में **माहे रमज़ानुल मुबारक** की बरकतें लूटने का बहुत ज़ेहन बनता है वरना बुरी सोहबतों में रह कर इस मुबारक महीने में भी अक्सर लोग गुनाहों में पड़े रहते हैं। आइये ! गुनाहों की दलदल में धंसे हुए एक **फ़नकार** की "मदनी

बहार'' सुनिये जिसे दा'वते इस्लामी के **मदनी माह़ोल** ने रह़मते इलाही से मदनी रंग चढ़ा दिया और उस की नाबीना भान्जी को बीना बना दिया ! चुनान्चे एक इस्लामी भाई **फ़नकार** थे, म्यूज़ीकल प्रोग्राम्ज़ और फ़न्कशन्ज़ के अन्दर ज़िन्दगी के अनमोल अवक़ात बरबाद हुए जा रहे थे, क़ल्बो दिमाग़ पर ग़फ़्लत के कुछ ऐसे पर्दे पड़े थे कि न नमाज़ की तौफ़ीक़ थी न गुनाहों का एह़सास। **तीन रोज़ा सुन्नतों भरे इज्तिमाअ़** (1424 सि.हि. 2003 सि.ई.) में हाज़िरी के लिये एक ज़िम्मेदार इस्लामी भाई ने **इन्फ़िरादी कोशिश** कर के तरग़ीब दिलाई। ज़हे नसीब ! उन्हें उस में शिर्कत की सआ़दत मिल गई। तीन रोज़ा इज्तिमाअ़ के इख़्तिताम पर **रिक़्क़त अंगेज़ दुआ़** में उन्हें अपने गुनाहों पर बहुत ज़ियादा नदामत हुई, वोह अपने जज़्बात पर क़ाबू न पा सके और फूट फूट कर रोने लगे, बस रोने ने काम दिखा दिया ! اَلْحَمْدُ لِلّٰه عَزَّوَجَلَّ उन्हें **दा'वते इस्लामी** का मदनी माह़ोल मिल गया और उन्हों ने रक़्सो सुरूद की मह़फ़िलों से **तौबा** कर ली और **मदनी क़ाफ़िलों** में सफ़र को अपना मा'मूल बना लिया। ब तारीख़ 25 दिसम्बर 2004 सि.ई. **मदनी क़ाफ़िले** में सफ़र पर रवानगी के वक़्त उन्हें छोटी बहन का फ़ोन आया, उन्हों ने भर्राई हुई आवाज़ में अपने यहां होने वाली **नाबीना बच्ची** की विलादत की ख़बर सुनाई और साथ ही कहा :

डॉक्टरों ने कह दिया है कि इस की आंखें रोशन नहीं हो सकतीं। इतना कहने के बा'द बन्द टूटा और छोटी बहन सदमे से बिलक बिलक कर रोने लगी। उन इस्लामी भाई ने येह कह कर ढारस बंधाई कि اِنْ شَآءَاللّٰہ عَزَّوَجَلَّ **मदनी क़ाफ़िले** में दुआ करूंगा। उन्हों ने मदनी क़ाफ़िले में ख़ुद भी दुआएं कीं और मदनी क़ाफ़िले वाले **आ़शिक़ाने रसूल** से भी दुआएं करवाईं। जब मदनी क़ाफ़िले से पलटे तो दूसरे ही दिन छोटी बहन ने फ़ोन पर ख़ुशी ख़ुशी येह ख़बरे फ़रहृत असर सुनाई कि اَلْحَمْدُ لِلّٰہ عَزَّوَجَلَّ **मेरी नाबीना बेटी महक की आंखें रोशन हो गई हैं और डॉक्टर्ज़ तअ़ज्जुब कर रहे हैं कि येह कैसे हो गया ! क्यूं कि हमारी डॉक्टरी में इस का कोई इलाज ही नहीं था !** اَلْحَمْدُ لِلّٰہ उन्हें अ़लाक़ाई मुशावरत के एक रुक्न की हैसिय्यत से **दा'वते इस्लामी** के मदनी कामों के लिये कोशिशें करने की सआ़दतें भी हासिल हुई।

आफ़तों से न डर, रख करम पर नज़र
रोशन आंखें मिलें, क़ाफ़िले में चलो
आप को चारागर, ने गो मायूस कर
भी दिया मत डरें, क़ाफ़िले में चलो

صَلُّوا عَلَی الْحَبِیْب ! صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلٰی مُحَمَّد

प्यारे प्यारे इस्लामी भाइयो ! देखा आप ने ! दा'वते इस्लामी का मदनी माहोल कितना प्यारा प्यारा है। इस के दामन में आ कर

मुआ़शरे के न जाने कितने ही बिगड़े हुए अफ़राद बा किरदार बन कर सुन्नतों भरी बा इ़ज़्ज़त ज़िन्दगी गुज़ारने लगे नीज़ मदनी क़ाफ़िलों की मदनी बहारें भी आप के सामने हैं। जिस त़रह़ मदनी क़ाफ़िलों में सफ़र की बरकत से बा'ज़ों की दुन्यवी मुसीबत रुख़्सत हो जाती है, اِنۡ شَآءَاللّٰه عَزَّوَجَلَّ इसी त़रह़ ताजदारे रिसालत, शहन्शाहे नुबुव्वत, सरापा रह़मत, शफ़ीए़ उम्मत صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيۡهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم की शफ़ाअ़त से आख़िरत की मशक़्क़त भी राह़त में ढल जाएगी।

टूट जाएंगे गुनहगारों के फ़ौरन क़ैदो बन्द
ह़श्र को खुल जाएगी त़ाक़त रसूलुल्लाह की

(ह़दाइके़ बख़्शिश, स. 153)

पांच ख़ुसूसी करम : ह़ज़रते सय्यिदुना जाबिर बिन **अ़ब्दुल्लाह** رَضِىَ اللّٰهُ تَعَالٰى عَنۡهُ से रिवायत है कि रह़मते आ़लमिय्यान, सुल्त़ाने दो जहान, शहन्शाहे कौनो मकान صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيۡهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم का फ़रमाने ज़ीशान है : "मेरी उम्मत को माहे रमज़ान में **पांच चीज़ें** ऐसी अ़त़ा की गईं जो मुझ से पहले किसी नबी को न मिलीं : ﴾1﴿ जब **रमज़ानुल मुबारक** की पहली रात होती है तो **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ इन की त़रफ़ रह़मत की नज़र फ़रमाता है और जिस की त़रफ़ **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ नज़रे रह़मत फ़रमाए उसे कभी भी अ़ज़ाब न देगा ﴾2﴿ शाम के वक़्त इन के मुंह की बू (जो भूक की वज्ह से होती है) **अल्लाह तआ़ला** के नज़्दीक मुश्क की ख़ुश्बू से भी बेहतर है ﴾3﴿ फ़िरिश्ते हर रात और दिन इन के

लिये मग़्फ़िरत की दुआएं करते रहते हैं ﴾4﴿ **अल्लाह तआला** जन्नत को हुक्म फ़रमाता है : "मेरे (नेक) बन्दों के लिये मुज़य्यन (या'नी आरास्ता) हो जा अ़न्क़रीब वोह दुन्या की मशक़्क़त से मेरे घर और करम में राहत पाएंगे" ﴾5﴿ जब माहे रमज़ान की आख़िरी रात आती है तो **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ सब की मग़्फ़िरत फ़रमा देता है। क़ौम में से एक शख़्स ने खड़े हो कर अ़र्ज़ की : **या रसूलल्लाह** صَلَّى اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ! क्या वोह **लयलतुल क़द्र** है ?" इर्शाद फ़रमाया : नहीं, क्या तुम नहीं देखते कि मज़दूर जब अपने कामों से फ़ारिग़ हो जाते हैं तो उन्हें उजरत दी जाती है।" (شُعَبُ الایمان ج۳ص۳۰۳حدیث۳۶۰۳)

सग़ीरा गुनाहों का कफ़्फ़ारा : ह़ज़रते सय्यिदुना अबू हुरैरा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ से मरवी है : हुज़ूरे पुरनूर, शाफ़ेए यौमुन्नुशूर صَلَّى اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم का फ़रमाने पुर सुरूर है : "पांचों नमाज़ें और जुमुआ अगले जुमुआ तक और माहे रमज़ान अगले माहे रमज़ान तक गुनाहों का कफ़्फ़ारा हैं जब तक कि कबीरा गुनाहों से बचा जाए।" (مسلم ص ۱۴۴حدیث۲۳۳)

काश ! पूरा साल रमज़ान ही हो ! : प्यारे प्यारे इस्लामी भाइयो ! हमारे प्यारे प्यारे आक़ा, मक्के मदीने वाले मुस्त़फ़ा صَلَّى اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم का फ़रमाने आ़लीशान है : "अगर बन्दों को मा'लूम होता कि रमज़ान क्या है तो मेरी उम्मत तमन्ना करती कि काश ! पूरा साल रमज़ान ही हो।" (ابنِ خُزَیمہ ج۳ص۱۹۰حدیث۱۸۸۶)

आक़ा صَلَّى اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم **का बयाने जन्नत निशान :**

हज़रते सय्यिदुना सलमान फ़ारसी رَضِىَ اللّٰهُ تَعَالٰى عَنْهُ फ़रमाते हैं कि "महबूबे रहमान, सरवरे ज़ीशान, रहमते आलमिय्यान, मक्की मदनी सुल्तान صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने माहे शा'बान के आख़िरी दिन बयान फ़रमाया : "ऐ लोगो ! तुम्हारे पास अज़मत वाला बरकत वाला महीना आया, वोह महीना जिस में एक रात (ऐसी भी है जो) हज़ार महीनों से बेहतर है, इस (माहे मुबारक) के रोज़े **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ ने फ़र्ज़ किये और इस की रात में क़ियाम[1] ततव्वोअ़ (या'नी सुन्नत) है, जो इस में नेकी का काम करे तो ऐसा है जैसे और किसी महीने में फ़र्ज़ अदा किया और इस में जिस ने **फ़र्ज़** अदा किया तो ऐसा है जैसे और दिनों में **70 फ़र्ज़** अदा किये। येह महीना **सब्र** का है और **सब्र** का सवाब जन्नत है और येह महीना मुआसात (या'नी ग़म ख़्वारी और भलाई) का है और इस महीने में मोमिन का **रिज़्क़** बढ़ाया जाता है। जो इस में रोज़ादार को **इफ़्तार** कराए उस के गुनाहों के लिये **मग़्फ़िरत** है और उस की गरदन आग से आज़ाद कर दी जाएगी और इस इफ़्तार कराने वाले को वैसा ही सवाब मिलेगा जैसा रोज़ा रखने वाले को मिलेगा, बिग़ैर इस के कि उस के अज्र में कुछ कमी हो।" हम ने अ़र्ज़ की : **या रसूलल्लाह** صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ! हम में से हर शख़्स वोह चीज़ नहीं पाता जिस से रोज़ा इफ़्तार करवाए। आप صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने इर्शाद फ़रमाया : "**अल्लाह तआला** येह सवाब तो उस शख़्स को देगा जो एक घूंट दूध या एक खजूर या एक घूंट पानी से रोज़ा

1 : यहां क़ियाम से मुराद तरावीह है।

इफ़्तार करवाए और जिस ने रोज़ादार को पेट भर कर खिलाया, उस को **अल्लाह तआला** मेरे हौज़ से पिलाएगा कि कभी प्यासा न होगा, यहां तक कि जन्नत में दाखिल हो जाए। येह वोह महीना है कि इस का **अव्वल** (या'नी इब्तिदाई दस दिन) **रहमत** है और इस का **औसत** (या'नी दरमियानी दस दिन) **मग़्फ़िरत** है और **आख़िर** (या'नी आख़िरी दस दिन) **जहन्नम से आज़ादी** है। जो अपने ग़ुलाम पर इस महीने में तख़्फ़ीफ़ करे (या'नी काम कम ले) **अल्लाह तआला** उसे बख़्श देगा और जहन्नम से आज़ाद फ़रमा देगा। इस महीने में चार बातों की कसरत करो, उन में से दो ऐसी हैं जिन के ज़रीए तुम अपने रब عَزَّوَجَلَّ को राज़ी करोगे और बक़िय्या दो से तुम्हें बे नियाज़ी नहीं। पस वोह दो बातें जिन के ज़रीए तुम अपने रब عَزَّوَجَلَّ को राज़ी करोगे वोह येह हैं : ﴾1﴿ لَآ اِلٰهَ اِلَّا اللّٰه की गवाही देना ﴾2﴿ इस्तिग़्फ़ार करना। जब कि वोह दो बातें जिन से तुम्हें ग़ना (या'नी बे नियाज़ी) नहीं वोह येह हैं : ﴾1﴿ **अल्लाह तआला** से जन्नत त़लब करना ﴾2﴿ जहन्नम से **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ की पनाह त़लब करना।"

(شُعَبُ الْاِيمان ج٣ ص٣٠٥ حديث٣٦٠٨، ابنِ خُزَيمه ج ٣ ص ١٩٢ حديث١٨٨٧)

प्यारे प्यारे इस्लामी भाइयो ! अभी जो ह़दीसे पाक बयान की गई उस में माहे **रमज़ानुल मुबारक** की रह़मतों, बरकतों और अ़ज़्मतों का ख़ूब ख़ूब तज़्किरा है। इस माहे मुबारक में **कलिमा** शरीफ़ ज़ियादा ता'दाद में पढ़ कर और बार बार **इस्तिग़्फ़ार** या'नी ख़ूब तौबा के ज़रीए **अल्लाह तआला** को राज़ी करने की सई (कोशिश) करनी है

और **अल्लाह तआला** से जन्नत में दाख़िले और जहन्नम से पनाह की बहुत ज़ियादा इल्तिजाएं करनी हैं।

रमज़ानुल मुबारक के चार नाम : अल्लाहु अक्बर عَزَّوَجَلَّ ! माहे रमज़ान का भी क्या ख़ूब फ़ैज़ान है ! **मुफ़स्सिरे** शहीर **हकीमुल उम्मत** हज़रते मुफ़्ती अहमद यार ख़ान عَلَيْهِ رَحْمَةُ الْحَنَّان **तफ़्सीरे नईमी** में फ़रमाते हैं : "इस माहे मुबारक के कुल चार नाम हैं ﴾1﴿ **माहे रमज़ान** ﴾2﴿ **माहे सब्र** ﴾3﴿ **माहे मुआसात और** ﴾4﴿ **माहे वुस्अ़ते रिज़्क़**।" **मजीद** फ़रमाते हैं : "रोज़ा **सब्र** है जिस की जज़ा रब عَزَّوَجَلَّ है और वोह इसी महीने में रखा जाता है। इस लिये इसे **माहे सब्र** कहते हैं। **मुआसात** के मा'ना हैं भलाई करना। चूंकि इस महीने में सारे मुसल्मानों से ख़ास कर अहले क़राबत (या'नी रिश्तेदारों) से भलाई करना ज़ियादा सवाब है इस लिये इसे **माहे मुआसात** कहते हैं इस में रिज़्क़ की फ़राख़ी (या'नी ज़ियादती) भी होती है कि ग़रीब भी ने'मतें खा लेते हैं, इसी लिये इस का नाम माहे वुस्अ़ते रिज़्क़ भी है।" (तफ़्सीरे नईमी, जि. 2, स. 208)

"माहे रमज़ान मुबारक" के तेरह हुरूफ़ की निस्बत से 13 मदनी फूल

(येह तमाम मदनी फूल तफ़्सीरे नईमी जिल्द 2 से लिये गए हैं)

﴾1﴿ **का'बए** मुअ़ज़्ज़मा मुसल्मानों को बुला कर देता है और येह आ कर **रहमतें** बांटता है। गोया वोह (या'नी का'बा) कूंवां है और येह

(या'नी रमज़ान शरीफ़) दरिया, या वोह (या'नी का'बा) दरिया है और येह (या'नी रमज़ान) बारिश।

2 **हर** महीने में ख़ास तारीख़ें और तारीख़ों में भी ख़ास वक़्त में इबादत होती है, मसलन बक़र ईद की चन्द (मख़्सूस) तारीख़ों में **हज**, मुहर्रम की दसवीं तारीख़ अफ़्ज़ल, मगर **माहे रमज़ान** में हर दिन और हर वक़्त इबादत होती है। रोज़ा इबादत, इफ़्तार इबादत, इफ़्तार के बा'द तरावीह़ का इन्तिज़ार इबादत, तरावीह़ पढ़ कर सह़री के इन्तिज़ार में सोना इबादत, फिर सह़री खाना भी इबादत, अल ग़रज़ हर आन में ख़ुदा (عَزَّوَجَلَّ) की शान नज़र आती है।

3 **रमज़ान** एक भट्टी है जैसे कि भट्टी गन्दे लोहे को साफ़ और साफ़ लोहे को मशीन का पुर्ज़ा बना कर क़ीमती कर देती है और सोने को ज़ेवर बना कर इस्ति'माल के लाइक़ कर देती है, ऐसे ही **माहे रमज़ान** गुनहगारों को पाक करता और नेक लोगों के दरजे बढ़ाता है।

4 **रमज़ान** में नफ़्ल का सवाब फ़र्ज़ के बराबर और फ़र्ज़ का सवाब 70 गुना मिलता है।

5 **बा'ज़** उलमा फ़रमाते हैं कि जो रमज़ान में मर जाए उस से सुवालाते क़ब्र भी नहीं होते।

6 **इस** महीने में शबे क़द्र है, गुज़श्ता आयत (या'नी पारह 2 सूरतुल बक़रह आयत 185) से मा'लूम हुवा कि क़ुरआन रमज़ान में आया और दूसरी जगह फ़रमाया :

तरजमए कन्ज़ुल ईमान : बेशक हम ने इसे शबे क़द्र में उतारा।

اِنَّاۤ اَنۡزَلۡنٰهُ فِیۡ لَیۡلَةِ الۡقَدۡرِ ۚ﴿۱﴾

(پ۳۰، القدر:۱)

दोनों आयतों के मिलाने से मा'लूम हुवा कि शबे क़द्र रमज़ान में ही है और वोह ग़ालिबन सत्ताईसवीं शब है, क्यूं कि **लयलतुल क़द्र** (لَیۡلَۃُ الۡقَدۡرِ) में नव हुरूफ़ हैं और येह लफ़्ज़ सूरए क़द्र में तीन बार आया। जिस से **सत्ताईस** हासिल हुए मा'लूम हुवा कि वोह सत्ताईसवीं शब है।

7 **रमज़ान** में दोज़ख़ के दरवाज़े बन्द हो जाते हैं जन्नत आरास्ता की जाती है, इस के दरवाज़े खोल दिये जाते हैं। इसी लिये इन दिनों में नेकियों की ज़ियादती और गुनाहों की कमी होती है जो लोग गुनाह करते भी हैं वोह नफ़्से अम्मारा या अपने साथी शैतान (हमज़ाद) के बहकाने से करते हैं।

8 **रमज़ान** के खाने पीने का हिसाब नहीं। (या'नी सहरी इफ़्तार के खाने पीने का)

9 **क़ियामत** में रमज़ान व क़ुरआन रोज़ादार की शफ़ाअत करेंगे कि **रमज़ान** तो कहेगा : मौला (عَزَّوَجَلَّ) ! मैं ने इसे दिन में खाने पीने से रोका था और **क़ुरआन** अर्ज़ करेगा कि या रब (عَزَّوَجَلَّ) ! मैं ने इसे रात में तिलावत व तरावीह़ के ज़रीए सोने से रोका।

﴾10﴿ **हुज़ूर** (صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم) **रमज़ानुल मुबारक** में हर क़ैदी को छोड़ देते थे और हर साइल को अ़त़ा फ़रमाते थे, रब عَزَّوَجَلَّ भी रमज़ान में जहन्नमियों को छोड़ता है, लिहाज़ा चाहिये कि रमज़ान में नेक काम किये जाएं और गुनाहों से बचा जाए।

﴾11﴿ **क़ुरआने** करीम में सिर्फ़ रमज़ान शरीफ़ ही का नाम लिया गया और इसी के फ़ज़ाइल बयान हुए, किसी दूसरे महीने का न सराह़तन नाम है न ऐसे फ़ज़ाइल। महीनों में सिर्फ़ **माहे रमज़ान** का नाम क़ुरआन शरीफ़ में लिया गया। औ़रतों में सिर्फ़ **बीबी मरयम** رَضِىَ اللّٰهُ تَعَالٰى عَنْهَا का नाम क़ुरआन में आया। सह़ाबा में सिर्फ़ ह़ज़रते (सय्यिदुना) **ज़ैद इब्ने ह़ारिसा** (رَضِىَ اللّٰهُ تَعَالٰى عَنْهُ) का नाम क़ुरआन में लिया गया जिस से इन तीनों की अ़ज़मत मा'लूम हुई।

﴾12﴿ **रमज़ान** शरीफ़ में इफ़्त़ार और सह़री के वक़्त दुआ़ क़बूल होती है या'नी इफ़्त़ार करते वक़्त और सह़री खा कर। येह मर्तबा किसी और महीने को ह़ासिल नहीं।

﴾13﴿ **रमज़ान** में पांच ह़ुरूफ़ हैं : ر،م،ض،ا،ن। ر से मुराद रह़मते इलाही, میم से मुराद मह़ब्बते इलाही, ض से मुराद ज़माने इलाही, اَلِف से अमाने इलाही, ن से नूरे इलाही। और **रमज़ान** में पांच इ़बादात ख़ुसूसी होती हैं : रोज़ा, तरावीह़, तिलावते क़ुरआन,

ए'तिकाफ़, शबे क़द्र में इबादात। तो जो कोई सिद्क़े दिल से येह **पांच इबादात** करे वोह उन **पांच इन्आमों** का मुस्तह़िक़ है।

(तफ़्सीरे नईमी, जि. 2, स. 208)

صَلُّوا عَلَی الْحَبِیْب! صَلَّی اللهُ تَعَالٰی عَلٰی مُحَمَّد

जन्नत सजाई जाती है : **ह़ज़रते** सय्यिदुना **अ़ब्दुल्लाह** इब्ने उ़मर رَضِیَ اللهُ تَعَالٰی عَنْهُمَا से रिवायत है कि ताजदारे मदीना, सुरूरे क़ल्बो सीना, फ़ैज़ गन्जीना, साह़िबे मुअ़त्त़र पसीना صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم का फ़रमाने बा क़रीना है : बेशक **जन्नत** साल के शुरूअ़ से अगले साल तक **रमज़ानुल मुबारक** के लिये सजाई जाती है। और फ़रमाया : रमज़ान शरीफ़ के पहले दिन जन्नत के दरख़्तों के पत्तों से बड़ी बड़ी आंखों वाली हूरों पर हवा चलती है और वोह अ़र्ज़ करती हैं : "ऐ परवर दगार عَزَّوَجَلَّ ! अपने बन्दों में से ऐसे बन्दों को हमारा शोहर बना जिन को देख कर हमारी आंखें ठन्डी हों और जब वोह हमें देखें तो उन की आंखें भी ठन्डी हों।" (شُعَبُ الایمان ج۳ص۳۱۲حدیث۳۶۳۳)

जन्नत कौन सजाता है ? : मुफ़स्सिरे शहीर **ह़कीमुल उम्मत** ह़ज़रते मुफ़्ती अह़मद यार ख़ान عَلَيْهِ رَحْمَةُ الْحَنَّان ह़दीसे पाक के इस ह़िस्से : "बेशक जन्नत साल के शुरूअ़ से अगले साल तक रमज़ान के लिये सजाई जाती है" के तह़्त मिरआत जिल्द 3 सफ़ह़ा 142 ता 143 पर फ़रमाते हैं : या'नी ईदुल फ़ित़्र का चांद नज़र आते ही, अगले रमज़ान के लिये जन्नत की आरास्तगी (या'नी सजावट) शुरूअ़ हो जाती है और साल भर

तक फ़िरिश्ते इसे सजाते रहते हैं जन्नत ख़ुद सजी सजाई फिर और भी ज़ियादा सजाई जाए, फिर सजाने वाले फ़िरिश्ते हों, तो कैसी सजाई जाती होगी, इस की सजावट हमारे वह्मो गुमान से वरा है, बा'ज़ मुसल्मान रमज़ान में मस्जिदें सजाते हैं, वहां क़लई चूना करते हैं, झन्डियां लगाते, रोशनी करते हैं इन की अस्ल येह ही ह़दीस है।

صَلُّوْا عَلَى الْحَبِيْب ! صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلٰى مُحَمَّد

اَلْحَمْدُ لِلّٰه عَزَّوَجَلَّ ! जन्नत की अ़ज़मत की तो क्या ही बात है! काश ! हमें बे ह़िसाब बख़्श दिया जाए और जन्नतुल फ़िरदौस में मदीने वाले आक़ा मक्की मदनी मुस्त़फ़ा صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم का पड़ोस नसीब हो जाए। اَلْحَمْدُ لِلّٰه عَزَّوَجَلَّ तब्लीग़े क़ुरआनो सुन्नत की आ़लमगीर ग़ैर सियासी तह़रीक, **दा'वते इस्लामी** अहले ह़क़ की मदनी तह़रीक है, इस से हर दम वाबस्ता रहिये, **दा'वते इस्लामी** वालों पर कैसी कैसी करम नवाज़िशें होती हैं इस की एक मदनी बहार मुलाह़ज़ा फ़रमाइये :

जन्नत में आक़ा صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم के पड़ोस की बिशारत : इस्लामी भाइयों और इस्लामी बहनों को मुफ़्त दर्से निज़ामी करवाने के लिये اَلْحَمْدُ لِلّٰه عَزَّوَجَلَّ दा'वते इस्लामी के ज़ेरे एहतिमाम मुतअ़द्दिद जामिआ़त बनाम **जामिअ़तुल मदीना** क़ाइम हैं। اَلْحَمْدُ لِلّٰه عَزَّوَجَلَّ 1427 सि.हि. में दा'वते इस्लामी के इन जामिआ़तुल

मदीना के तक़रीबन 160 त़लबए किराम ने हाथों हाथ 12 माह के लिये **राहे ख़ुदा** عَزَّوَجَلَّ में सफ़र इख़्तियार किया। इब्तिदाअन **मदनी क़ाफ़िला कोर्स** करवाने की तरकीब बनी, इस दौरान त़लबा के जज़्बए ख़िदमते इस्लाम को मज़ीद **मदीने के 12 चांद** लग गए और उन में से तक़रीबन 77 त़लबए किराम ने उ़म्र भर के लिये अपने आप को मदनी क़ाफ़िलों के लिये पेश कर दिया! इस अ़ज़ीम क़ुरबानी पर हौसला अफ़्ज़ाई की बड़ी ज़बर दस्त सूरत बनी और वोह येह कि ख़्वाब में **सरकारे नामदार**, मदीने के ताजदार, बि इज़्ने परवर दगार दो आ़लम के मालिको मुख़्तार, शहन्शाहे अबरार صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم के दीदार से एक **आ़शिक़े रसूल** की आंखें ठन्डी हुईं, लबहाए मुबारका को जुम्बिश हुई, रहमत के फूल झड़ने लगे और अल्फ़ाज़ कुछ यूं तरतीब पाए : **"जिस जिस ने अपने आप को उ़म्र भर के लिये पेश कर दिया है मैं उन को जन्नत के अन्दर अपने साथ रखूंगा।"** ख़्वाब देखने वाले आ़शिक़े रसूल के दिल में ह़सरत हुई कि काश! सद करोड़ काश! मुझे भी इन ख़ुश नसीबों में शामिल कर लिया जाता। **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ के मह़बूब, दानाए ग़ुयूब, मुनज़्ज़हुन अ़निल उ़यूब صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने मेरे दिल की बात जान ली और फ़रमाया : "अगर तुम भी इन में शामिल होना चाहते हो तो अपने आप को उ़म्र भर के लिये पेश कर दो।"

सरे अ़र्श पर है तेरी गुज़र, दिले फ़र्श पर है तेरी नज़र

मलकूतो मुल्क में कोई शै, नहीं वोह जो तुझ पे इयां नहीं

(ह़दाइके़ बख़्शिश, स. 109)

صَلُّوا عَلَی الْحَبِیْب ! صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلٰی مُحَمَّد

खुश नसीब आ़शिक़ाने रसूल को बिशारते उ़ज़्मा मुबारक हो ! **अल्लाहु रब्बुल इ़ज़्ज़त** عَزَّوَجَلَّ की रह़मत पर नज़र रखते हुए क़वी उम्मीद है कि जिन बख़्त वरों के लिये येह **मदनी ख़्वाब** देखा गया है اِنْ شَآءَاللّٰہ عَزَّوَجَلَّ उन का ख़ातिमा ईमान पर होगा और वोह मदनी आक़ा صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم के तुफ़ैल जन्नतुल फ़िरदौस में आप صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم का पड़ोस पाएंगे। ताहम येह याद रहे ! कि ग़ैरे नबी जो ख़्वाब देखे वोह शरअ़न हुज्जत (या'नी दलील) नहीं होता, ख़्वाब की बिशारत की बुन्याद पर किसी को यक़ीनी तौर पर जन्नती नहीं कहा जा सकता।

इज़्न से तेरे सरे ह़श्र कहें काश ! हुज़ूर

साथ अ़त्तार को जन्नत में रखूंगा या रब

(वसाइले बख़्शिश, स. 86)

हर शब साठ हज़ार की बख़्शिश : **ह़ज़रते** सय्यिदुना **अ़ब्दुल्लाह** इब्ने मस्ऊ़द رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ से रिवायत है कि शहन्शाहे ज़ीशान, मक्की मदनी सुल्त़ान, रह़मते आ़लमिय्यान, मह़बूबे रह़मान صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم

का फ़रमाने रहमत निशान है : "**रमज़ान शरीफ़** की हर शब आस्मानों में सुब्हे सादिक़ तक एक मुनादी (या'नी ए'लान करने वाला फ़िरिश्ता) येह निदा (ए'लान) करता है : **ऐ भलाई तलब करने वाले !** इरादा पुख़्ता कर ले और खुश हो जा, और **ऐ बुराई का इरादा रखने वाले !** बुराई से बाज़ आ जा। **है कोई मग़्फ़िरत का तलब गार !** कि उस की तलब पूरी की जाए। **है कोई तौबा करने वाला !** कि उस की तौबा क़बूल की जाए। **है कोई दुआ मांगने वाला !** कि उस की दुआ क़बूल की जाए। **है कोई साइल !** कि उस का सुवाल पूरा किया जाए। **अल्लाह तआला रमज़ानुल मुबारक की हर शब में इफ़्तार के वक़्त साठ हज़ार गुनाहगारों को दोज़ख़ से आज़ाद फ़रमा देता है, और ईद के दिन सारे महीने के बराबर गुनाहगारों की बख़्शिश की जाती है।"** (شُعَبُ الْاِیمان ج٣ص٣٠٤حدیث٣٦٠٦)

मदीने के दीवानो ! रमज़ानुल मुबारक की जल्वा गरी तो क्या होती है, हम ग़रीबों के वारे न्यारे हो जाते हैं। **अल्लाह तआला** के फ़ज़्लो करम से **रहमत** के दरवाज़े खोल दिये जाते हैं और ख़ूब **मग़्फ़िरत** के परवाने तक़्सीम होते हैं। काश ! हम गुनहगारों को ब तुफ़ैले **माहे रमज़ान**, सरवरे कौनो मकान, मक्की मदनी सुल्तान, रहमते आलमिय्यान, महबूबे रहमान صَلَّى اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم के रहमत भरे हाथों जहन्नम से रिहाई का परवाना मिल जाए। इमामे अहले सुन्नत رَحْمَۃُ اللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہ बारगाहे रिसालत صَلَّى اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم में अ़र्ज़ करते हैं :

तमन्ना है फ़रमाइये रोज़े महशर   येह तेरी रिहाई की चिठ्ठी मिली है

(हदाइके़ बख़्शिश, स. 188)

रोज़ाना दस लाख की दोज़ख़ से रिहाई : सरकारे नामदार, मदीने के ताजदार صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने इर्शाद फ़रमाया : "जब रमज़ान की पहली रात होती है तो **अल्लाह तआला** अपनी मख़्लूक़ की त़रफ़ नज़र फ़रमाता है और जब **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ किसी बन्दे की त़रफ़ नज़र फ़रमाए तो उसे कभी अ़ज़ाब न देगा और **हर रोज़ दस लाख को जहन्नम से आज़ाद फ़रमाता है और जब उन्तीसवीं रात होती है तो महीने भर में जितने आज़ाद किये उन के मज्मूए़ के बराबर उस एक रात में आज़ाद फ़रमाता है।** फिर जब ईदुल फ़ित्र की रात आती है, मलाएका ख़ुशी करते हैं और **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ अपने नूर की ख़ास तजल्ली फ़रमाता है और फ़िरिश्तों से फ़रमाता है : "**ऐ गुरौहे मलाएका !** उस मज़दूर का क्या बदला है जिस ने काम पूरा कर लिया ?" फ़िरिश्ते अ़र्ज़ करते हैं : "उस को पूरा पूरा अज्र दिया जाए।" **अल्लाह तआला** फ़रमाता है : "मैं तुम्हें गवाह करता हूं कि मैं ने इन सब को बख़्श दिया।" (جَمْعُ الْجَوامِع ج۱ ص۳۴۵ حدیث۲۵۳۶)

जुमुआ़ की हर हर घड़ी में दस लाख की मग्फ़िरत :

हज़रते सय्यिदुना **अ़ब्दुल्लाह** इब्ने अ़ब्बास رَضِىَ اللّٰهُ تَعَالٰى عَنْهُمَا से रिवायत है कि मह़बूबे रब्बुल आ़लमीन, सय्यिदुल अम्बियाए वल मुरसलीन

صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم का फ़रमाने दिल नशीन है : "**अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ माहे रमज़ान में रोज़ाना इफ़्तार के वक़्त दस लाख ऐसे गुनहगारों को जहन्नम से आज़ाद फ़रमाता है जिन पर गुनाहों की वज्ह से जहन्नम वाजिब हो चुका था, नीज़ शबे जुमुआ़ और रोज़े जुमुआ़ (या'नी जुमे'रात को ग़ुरूबे आफ़्ताब से ले कर जुमुआ़ को ग़ुरूबे आफ़्ताब तक) की **हर हर घड़ी में ऐसे दस दस लाख गुनहगारों को जहन्नम से आज़ाद किया जाता है जो अ़ज़ाब के ह़क़दार क़रार दिये जा चुके होते हैं।**" **(اَلْفِردَوس بمأثور الْخِطاب ج ۳ ص ۳۲۰ حديث ۴۹۶۰)**

आ़शिक़ाने रमज़ान ! बयान कर्दा अह़ादीसे मुबारका में रब्बुल अनाम عَزَّوَجَلَّ के किस क़दर अ़ज़ीमुश्शान इन्आ़मो इक्राम का ज़िक्र है। ऐ काश ! **अल्लाह तआ़ला** हम गुनहगारों को भी मग़्फ़िरत याफ़्तगान में शामिल कर ले।

اٰمِين بِجَاهِ النَّبِيِّ الْاَمين صَلَّى اللّٰهُ تعالٰى عليه واٰله وسلَّم

इस्यां से कभी हम ने कनारा न किया पर तूने दिल आज़ुर्दा हमारा न किया
हम ने तो जहन्नम की बहुत की तज्वीज़ लेकिन तेरी रह़मत ने गवारा न किया

صَلُّوا عَلَى الْحَبِيب ! صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلٰى مُحَمَّد

ख़र्च में कुशादगी करो : ह़ज़रते सय्यिदुना ज़मुरा رَضِىَ اللّٰهُ تَعَالٰى عَنْهُ से मरवी है कि रह़मते आ़लमिय्यान, सरदारे दो जहान, मह़बूबे रह़मान صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم का फ़रमाने बरकत निशान है : "माहे रमज़ान में (घर

वालों के) ख़र्च में कुशादगी करो क्यूं कि माहे रमज़ान में ख़र्च करना **अल्लाह तआ़ला** की राह में ख़र्च करने की त़रह़ है।"

(فضائل شهر رمضان مع موسوعة ابن أبي الدُّنيا ج١ص٣٦٨حديث٢٤)

भलाई ही भलाई : अमीरुल मुअमिनीन ह़ज़रते सय्यिदुना उ़मर फ़ारूक़े आ'ज़म رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ फ़रमाया करते : "उस महीने को ख़ुश आमदीद जो हमें पाक करने वाला है। पूरा **रमज़ान** ख़ैर ही ख़ैर (या'नी भलाई ही भलाई) है दिन का रोज़ा हो या रात का क़ियाम, इस महीने में ख़र्च करना जिहाद में ख़र्च करने का दरजा रखता है।" (تَنبِيهُ الْغافِلين ص ١٧٧)

बड़ी बड़ी आंखों वाली हूरें : ह़ज़रते सय्यिदुना **अ़ब्दुल्लाह** इब्ने अ़ब्बास رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُمَا से मरवी है कि रह़मते आ़लम, नूरे मुजस्सम, शाहे आदम व बनी आदम صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم का फ़रमाने मुअ़ज़्ज़म है : "जब रमज़ान शरीफ़ की पहली रात आती है तो अ़र्शे अ़ज़ीम के नीचे से मसीरा नामी हवा चलती है जो जन्नत के दरख़्तों के पत्तों को हिलाती है, इस हवा के चलने से ऐसी दिलकश आवाज़ बुलन्द होती है कि इस से बेहतर आवाज़ आज तक किसी ने नहीं सुनी। इस आवाज़ को सुन कर **बड़ी बड़ी आंखों वाली हूरें** ज़ाहिर होती हैं यहां तक कि जन्नत के बुलन्द मह़ल्लात पर खड़ी हो जाती हैं और कहती हैं : "है कोई जो हम को **अल्लाह तआ़ला** से मांग ले कि हमारा निकाह़ उस से हो ?" फिर वोह हूरें दारोग़ए जन्नत (ह़ज़रते)

रिज़्वान (عَلَیْہِ الصَّلٰوۃُ وَالسَّلَام) से पूछती हैं : “आज येह कैसी रात है ?” (हज़रते) रिज़्वान (عَلَیْہِ الصَّلٰوۃُ وَالسَّلَام) जवाबन तल्बिया (या'नी लब्बैक) कहते हैं, फिर कहते हैं : “येह माहे रमज़ान की पहली रात है, जन्नत के दरवाज़े **उम्मते मुहम्मद** عَلٰی صَاحِبِہَا الصَّلٰوۃُ وَالسَّلَام के रोज़ेदारों के लिये खोल दिये गए हैं।”

(اَلتَّرغیب والتَّرھیب ج ۲ ص ۶۰ حدیث ۲۳)

दो अंधेरे दूर : मन्कूल है कि **अल्लाह तआला** ने हज़रते सय्यिदुना मूसा **कलीमुल्लाह** عَلٰی نَبِیِّنَا وَعَلَیْہِ الصَّلٰوۃُ وَالسَّلَام से फ़रमाया : मैं ने **उम्मते मुहम्मद** (عَلٰی صَاحِبِہَا الصَّلٰوۃُ وَالسَّلَام) को **दो नूर** अ़ता किये हैं ताकि वोह **दो अंधेरों** के ज़रर (या'नी नुक़्सान) से मह़फ़ूज़ रहें। हज़रते सय्यिदुना मूसा **कलीमुल्लाह** عَلٰی نَبِیِّنَا وَعَلَیْہِ الصَّلٰوۃُ وَالسَّلَام ने अ़र्ज़ की : **या अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ ! वोह **दो नूर** कौन कौन से हैं ? इर्शाद हुवा : “**नूरे रमज़ान** और **नूरे कुरआन**।” हज़रते सय्यिदुना मूसा **कलीमुल्लाह** عَلٰی نَبِیِّنَا وَعَلَیْہِ الصَّلٰوۃُ وَالسَّلَام ने अ़र्ज़ की : **दो अंधेरे** कौन कौन से हैं ? फ़रमाया : “**एक क़ब्र का और दूसरा क़ियामत का।**” **(دُرَّۃُ النّاصِحِین ص۹)**

صَلُّوا عَلَی الْحَبِیْب ! صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلٰی مُحَمَّد

रमज़ान व कुरआन शफ़ाअ़त करेंगे : मदीने के सुल्तान, सरदारे दो जहान صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم का फ़रमाने आ़लीशान है : रोज़ा और कुरआन बन्दे के लिये क़ियामत के दिन शफ़ाअ़त करेंगे। **रोज़ा** अ़र्ज़

करेगा : "**ऐ रब्बे करीम** عَزَّوَجَلَّ ! मैं ने खाने और ख़्वाहिशों से दिन में इसे रोक दिया, मेरी शफ़ाअ़त इस के ह़क़ में क़बूल फ़रमा।" **क़ुरआन** कहेगा : "मैं ने इसे रात में सोने से बाज़ रखा, मेरी शफ़ाअ़त इस के लिये क़बूल कर।" पस दोनों की शफ़ाअ़तें क़बूल होंगी। (مُسند امام احمد ج۲ص۵۸۶حدیث۶۶۳۷)

लाख रमज़ान का सवाब : ह़ज़रते सय्यिदुना **अ़ब्दुल्लाह** इब्ने अ़ब्बास رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْھُمَا से रिवायत है कि सरकारे नामदार صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم का फ़रमाने ख़ुश गवार है : "जिस ने मक्कए मुकर्रमा में माहे रमज़ान पाया और रोज़ा रखा और रात में जितना मुयस्सर आया क़ियाम किया तो **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ **उस के लिये और जगह के एक लाख रमज़ान का सवाब लिखेगा** और हर दिन एक ग़ुलाम आज़ाद करने का सवाब और हर रात एक ग़ुलाम आज़ाद करने का सवाब और हर रोज़ जिहाद में घोड़े पर सुवार कर देने का सवाब और हर दिन में नेकी और हर रात में नेकी लिखेगा।" (ابنِ ماجہ ج۳ص۵۲۳حدیث۳۱۱۷)

काश ! ईद मदीने में हो ! : प्यारे प्यारे इस्लामी भाइयो ! **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ के ह़बीब, ह़बीबे लबीब, हम गुनाहों के मरीज़ों के त़बीब صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم का दियारे विलादत **मक्कए मुकर्रमा** زَادَهَا اللّٰهُ شَرَفًاوَّتَعْظِيْمًا है। **अल्लाह तआ़ला** ने अपने ह़बीबे मुकर्रम صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم के सदक़े में ग़ुलामाने मुस्त़फ़ा पर किस क़दर लुत्फ़ो

करम फ़रमाया है ! ऐ काश ! हमें भी **मक्कए मुकर्रमा** زَادَهَا اللّٰهُ شَرَفًا وَّتَعْظِيْمًا में **माहे रमज़ान** गुज़ारने की अ़ज़ीम सआ़दत नसीब हो जाए और उस में ख़ूब इबादत की भी तौफ़ीक़ मिले और फिर **माहे रमज़ान** गुज़ार कर फ़ौरन ही **ईद** मनाने के लिये अपने मीठे मीठे आक़ा मक्की मदनी मुस्तफ़ा صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم के रौज़ए ज़ियाबार पर हाज़िर हो जाएं और वहां पर रो रो कर "ईदी" की भीक मांगें और सब्ज़ सब्ज़ गुम्बद के मकीन, रह़्मतुल्लिल आ़लमीन صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم की रह़मत जोश पर आ जाए और ऐ काश ! सरकार صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم के दरबारे गुहर बार से हम गुनहगार बत़ौरे "ईदी" बे ह़िसाब मग़्फ़िरत की बिशारत पाने की सआ़दत पा लें।

या नबी ! अ़त्तार को जन्नत में दे अपना जवार
वासित़ा सिद्दीक़ का जो तेरा यारे ग़ार है

(वसाइले बख़्शिश, स. 480)

صَلُّوْا عَلَی الْحَبِیْب ! صَلَّی اللّٰهُ تَعَالٰی عَلٰی مُحَمَّد

आक़ा صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم इबादत पर कमर बस्ता हो जाते : उम्मुल मुअमिनीन ह़ज़रते सय्यिदतुना आ़इशा सिद्दीक़ा رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْهَا फ़रमाती हैं : जब **माहे रमज़ान** आता तो शहन्शाहे नुबुव्वत, ताजदारे रिसालत صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم बीस दिन नमाज़ और नींद को मिलाते थे पस जब आख़िरी अ़शरह होता तो **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ की इबादत के लिये कमर बस्ता हो जाते। (مسند امام احمد ج۹ص۳۳۸حدیث۲٤٤٤٤)

आक़ा صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم रमज़ान में ख़ूब दुआएं मांगते थे : एक और रिवायत में फ़रमाती हैं : जब माहे रमज़ान तशरीफ़ लाता तो हुज़ूरे अकरम, नूरे मुजस्सम, शाहे आदम صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم का रंग मुबारक मुतग़य्यर (या'नी तब्दील) हो जाता और **नमाज़** की कसरत फ़रमाते और **ख़ूब दुआएं मांगते**। (شُعَبُ الْاِیمان ج۳ص ۳۱۰ حدیث ۳۶۲۵)

आक़ा صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم रमज़ान में ख़ूब ख़ैरात करते : **हज़रते** सय्यिदुना **अ़ब्दुल्लाह** इब्ने अ़ब्बास رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْهُمَا फ़रमाते हैं : "जब **माहे रमज़ान** आता तो सरकारे मदीना صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم हर क़ैदी को रिहा कर देते और **हर साइल को अ़ता फ़रमाते**।"

(شُعَبُ الْاِیمان ج۳ص ۳۱۱ حدیث۳۶۲۹)

क्या आक़ा की ह़याते ज़ाहिरी के दौर में क़ैदी होते थे ? : मुफ़स्सिरे शहीर **ह़कीमुल उम्मत** ह़ज़रते मुफ़्ती अह़मद यार ख़ान عَلَيْهِ رَحْمَةُ الْحَنَّان बयान कर्दा ह़दीसे पाक के हिस्से : "हर क़ैदी को रिहा कर देते" के तह़त मिरआत जिल्द 3 सफ़्ह़ा 142 पर फ़रमाते हैं : ह़क़ येह है कि यहां क़ैदी से मुराद वोह शख़्स है जो **ह़क़्क़ुल्लाह** या **ह़क़्क़ुल अ़ब्द** (या'नी बन्दे के ह़क़) में गिरिफ़्तार हो और आज़ाद फ़रमाने से उस के ह़क़ अदा कर देना या करा देना मुराद है।

सब से बढ़ कर सख़ी : **हज़रते** सय्यिदुना **अ़ब्दुल्लाह** इब्ने अ़ब्बास رَضِىَ اللّٰهُ تَعَالٰى عَنْهُمَا फ़रमाते हैं : "**रसूलुल्लाह** صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم लोगों में **सब से बढ़ कर सख़ी थे** और **रमज़ान शरीफ़** में आप صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم (ख़ुसूसन) बहुत ज़ियादा सख़ावत फ़रमाते थे। जिब्रईले अमीन عَلَيْهِ الصَّلٰوةُ وَالسَّلَام **रमज़ानुल मुबारक** की हर रात में मुलाक़ात के लिये ह़ाज़िर होते और रसूले करीम, रऊफ़ुर्रहीम عَلَيْهِ اَفْضَلُ الصَّلٰوةِ وَالتَّسْلِيْم उन के साथ क़ुरआने अ़ज़ीम का दौर फ़रमाते। जब भी ह़ज़रते जिब्रईले अमीन عَلَيْهِ الصَّلٰوةُ وَالسَّلَام आप صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم की ख़िदमत में आते तो आप صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم तेज़ चलने वाली हवा से भी ज़ियादा ख़ैर (या'नी भलाई) के मुआ़मले में **सख़ावत** फ़रमाते।" (بُخاری ج ۱ ص ۹ حدیث ٦)

हाथ उठा कर एक टुकड़ा ऐ करीम !   हैं सख़ी के माल में ह़क़दार हम

(ह़दाइके़ बख़्शिश शरीफ़, स. 83)

صَلُّوا عَلَى الْحَبِيْب !   صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلٰى مُحَمَّد

हज़ार गुना सवाब : **ह़ज़रते** सय्यिदुना इब्राहीम नख़ई عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللّٰهِ الْقَوِى फ़रमाते हैं : "**माहे रमज़ान** में एक दिन का **रोज़ा** रखना एक हज़ार दिन के रोज़ों से अफ़्ज़ल है और **माहे रमज़ान** में एक मर्तबा तस्बीह़ करना (سُبْحٰنَ اللّٰه कहना) इस माह के इ़लावा एक हज़ार मर्तबा तस्बीह़ करने (سُبْحٰنَ اللّٰه कहने) से अफ़्ज़ल है और **माहे रमज़ान** में एक **रक्अ़त** पढ़ना ग़ैरे रमज़ान की एक हज़ार **रक्अ़तों** से अफ़्ज़ल है।" (تفسیر دُرِّ مَنْثُور ج۱ ص٤٥٤)

रमज़ान में ज़िक्र की फ़ज़ीलत : अमीरुल मुअमिनीन ह़ज़रते सय्यिदुना उ़मर फ़ारूक़े आ'ज़म رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ से रिवायत है कि रसूले अन्वर, मदीने के ताजवर صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰی عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم का फ़रमाने रूह़ परवर है : रमज़ान में **ज़िक्रुल्लाह** عَزَّوَجَلَّ करने वाले को बख़्श दिया जाता है और इस महीने में **अल्लाह तआ़ला** से मांगने वाला मह़रूम नहीं रहता।

(شُعَبُ الْایمان ج۳ص ۳۱۱ حدیث ۳٦۲۷)

सुन्नतों भरा इज्तिमाअ़ और ज़िक्रुल्लाह : प्यारे प्यारे इस्लामी भाइयो ! वोह लोग कितने खुश नसीब हैं जो इस माहे मुबारक में खुसूसिय्यत के साथ **सुन्नतों भरे इज्तिमाआ़त** में शिर्कत की सआ़दत ह़ासिल करते और **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ से अपनी दुन्या व आख़िरत की भलाई का सुवाल करते हैं। اَلْحَمْدُ لِلّٰہ عَزَّوَجَلَّ तब्लीग़े क़ुरआनो सुन्नत की आ़लमगीर ग़ैर सियासी तह़रीक, **दा'वते इस्लामी** का **सुन्नतों भरा इज्तिमाअ़** अज़ इब्तिदा ता इन्तिहा **ज़िक्रुल्लाह** عَزَّوَجَلَّ ही पर मुश्तमिल होता है क्यूं कि तिलावत, ना'त शरीफ़, सुन्नतों भरा बयान, दुआ़ और सलातो सलाम वग़ैरा सब **ज़िक्रुल्लाह** عَزَّوَجَلَّ में दाख़िल हैं। दा'वते इस्लामी के इज्तिमाअ़ की बरकात की एक "मदनी बहार" मुलाह़ज़ा हो, चुनान्चे

छ[6] बेटियों के बा'द औलादे नरीना : एक इस्लामी भाई की मदनी बहार अ़र्ज़ करता हूं : ग़ालिबन 2003 सि.ई. की बात है,

एक इस्लामी भाई ने उन्हें तब्लीग़े क़ुरआनो सुन्नत की आ़लमगीर ग़ैर सियासी तह़रीक **दा'वते इस्लामी के तीन रोज़ा बैनल अक़्वामी सुन्नतों भरे इज्तिमाअ़** में शिर्कत की दा'वत इनायत फ़रमाई। उन्हों ने अ़र्ज़ की : मैं छ6 बेटियों का बाप हूं, मेरे घर में फिर विलादत मुतवक़्क़अ़ है, दुआ़ फ़रमाइये कि अब की बार **नरीना औलाद** हो। उस इस्लामी भाई ने **इन्फ़िरादी कोशिश** करते हुए फ़रमाया : ह़ज के बा'द ता'दाद के लिह़ाज़ से **आ़शिक़ाने रसूल** के सब से बड़े इज्तिमाअ़ में आ कर दुआ़ मांगिये न जाने किस के सदक़े में बेड़ा पार हो जाए। उस की बात उन के दिल को लग गई और वोह **सुन्नतों भरे इज्तिमाअ़** में ह़ाज़िर हो गए। वहां के रूह़ परवर मनाज़िर का बयान करने के लिये उन के पास अल्फ़ाज़ नहीं थे, उन्हें ज़िन्दगी में पहली बार एक ज़बर दस्त रूह़ानी सुकून नसीब हुवा। اَلْحَمْدُ لِلّٰه عَزَّوَجَلَّ इज्तिमाअ़ के चन्द ही रोज़ के बा'द **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ ने उन्हें **चांद सा मदनी मुन्ना** अ़त़ा फ़रमाया, घर वालों की ख़ुशी बयान से बाहर थी। اَلْحَمْدُ لِلّٰه عَزَّوَجَلَّ वोह **दा'वते इस्लामी** के मदनी माह़ोल से वाबस्ता हो गए। **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ ने उन्हें मज़ीद एक और **मदनी मुन्ने** से भी नवाज़ दिया। اَلْحَمْدُ لِلّٰه عَزَّوَجَلَّ उन्हें दा'वते इस्लामी के मदनी माह़ोल में **क़ाफ़िला ज़िम्मादार** की ह़ैसिय्यत से ख़िदमत की सआ़दत भी मिली।

40 नेक मुसल्मानों के मज्मअ़ में एक वली होता है :

प्यारे प्यारे इस्लामी भाइयो ! दा'वते इस्लामी के **मदनी माहोल** और सुन्नतों भरे इज्तिमाआ़त में रहमतें क्यूं नाज़िल न होंगी कि इन **आ़शिक़ाने रसूल** में न जाने कितने औलियाए किराम رَحِمَهُمُ اللّٰهُ تَعَالٰى होते होंगे। मेरे आक़ा **आ'ला ह़ज़रत** رَحْمَةُ اللّٰهِ تَعَالٰى عَلَيْهِ फ़रमाते हैं : "जमाअ़त में बरकत है और दुआ़ए मज्मए़ मुस्लिमीन अक़्रब ब क़बूल। (या'नी मुसल्मानों के मज्मअ़ में दुआ़ मांगना क़बूलिय्यत के क़रीब तर है) उ़लमा फ़रमाते हैं : **जहां चालीस मुसल्मान सालेह़ (या'नी नेक मुसल्मान) जम्अ़ होते हैं उन में एक वलिय्युल्लाह ज़रूर होता है।"**

(फ़तावा रज़विय्या, जि. 24, स. 184, فيضُ القدير ج١ص٤٩٧زيرِ حديث٧١٤)

बेटा मिले, बेटी मिले, कुछ न मिले, हर ह़ाल में शुक्र कीजिये :

बिलफ़र्ज़ दुआ़ की क़बूलिय्यत का असर ज़ाहिर न हो तब भी ह़र्फ़े शिकायत ज़बान पर नहीं लाना चाहिये। हमारी भलाई किस बात में है इस को यक़ीनन **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ हम से ज़ियादा बेहतर जानता है। हमें हर ह़ाल में पाक परवर दगार عَزَّوَجَلَّ का शुक्र गुज़ार बन्दा बन कर रहना चाहिये। वोह **बेटा** दे तब भी उस का शुक्र, **बेटी** दे तब भी शुक्र, दोनों दे तब भी शुक्र और न दे तब भी शुक्र, हर ह़ाल में शुक्र शुक्र और शुक्र ही अदा करना चाहिये। पारह 25 **सूरतुश्शूरा** की आयत नम्बर 49 और 50 में इर्शादे बारी तआ़ला है :

لِلّٰهِ مُلْكُ السَّمٰوٰتِ وَالْاَرْضِ ۭ يَخْلُقُ مَا يَشَآءُ ۭ يَهَبُ لِمَنْ يَّشَآءُ اِنَاثًا وَّيَهَبُ لِمَنْ يَّشَآءُ الذُّكُوْرَ ۝ اَوْ يُزَوِّجُهُمْ ذُكْرَانًا وَّاِنَاثًا ۚ وَيَجْعَلُ مَنْ يَّشَآءُ عَقِيْمًا ۭ اِنَّهٗ عَلِيْمٌ قَدِيْرٌ ۝

तरजमए कन्ज़ुल ईमान : अल्लाह ही के लिये है आस्मानों और ज़मीन की सल्तनत, पैदा करता है जो चाहे, जिसे चाहे बेटियां अ़ता फ़रमाए और जिसे चाहे बेटे दे या दोनों मिला दे बेटे और बेटियां और जिसे चाहे बांझ कर दे बेशक वोह इ़ल्म व कुदरत वाला है।

"**ख़ज़ाइनुल इरफ़ान**" में आयत नम्बर 50 के इस हिस्से (जिसे चाहे बांझ कर दे) के तह़्त है : (या'नी) "कि उस के औलाद ही न हो, वोह (या'नी **अल्लाह तआ़ला**) मालिक है, अपनी ने'मत को जिस त़रह़ चाहे तक़्सीम करे, जिसे जो चाहे दे। अम्बिया عَلَيْهِمُ السَّلَام में भी येह सब सूरतें पाई जाती हैं, ह़ज़रते लूत़ व ह़ज़रते शुऐ़ब عَلَيْهِمَا السَّلَام के सिर्फ़ **बेटियां** थीं, कोई बेटा न था और ह़ज़रते इब्राहीम عَلَيْهِ الصَّلٰوةُ وَالسَّلَام के सिर्फ़ फ़रज़न्द (या'नी बेटे) थे, कोई दुख़्तर (या'नी बेटी) हुई ही नहीं और सय्यिदे अम्बिया ह़बीबे ख़ुदा मुह़म्मदे मुस्त़फ़ा صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم को **अल्लाह तआ़ला** ने चार फ़रज़न्द अ़ता फ़रमाए और चार साहि़ब ज़ादियां।" (ख़ज़ाइनुल इरफ़ान, स. 898)

हु़ज़ूर صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم की मुक़द्दस औलाद की ता'दाद

ता'दाद : **दा'वते इस्लामी** के इशाअ़ती इदारे **मकतबतुल मदीना** के

मत्बूआ 48 सफ़हात पर मुश्तमिल रिसाले, "**ज़िन्दा बेटी कूंएं में फेंक दी**" सफ़हा 7 ता 8 पर है : **सरकारे मदीना** صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم के चार फ़रज़न्द होने का अगर्चे "ख़ज़ाइनुल इरफ़ान" में ज़िक्र है मगर इस में इख़्तिलाफ़ है, तीन शहज़ादों का भी क़ौल है और दो का भी। चुनान्चे "तज़्किरतुल अम्बिया" सफ़हा 827 पर है : आप (صَلَّی اللّٰہُ عَلَیْہِ وَسَلَّم) के तीन बेटे थे : **क़ासिम, इब्राहीम, अ़ब्दुल्लाह**। ख़याल रहे कि त़य्यिब, मुत़य्यब, त़ाहिर और मुत़ह्हर इन्हीं (या'नी ह़ज़रते **अ़ब्दुल्लाह** رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ) के अल्क़ाब थे, येह कोई अ़लाह़िदा बेटे नहीं थे। (तज़्किरतुल अम्बिया, स. 827) ह़ज़रते अ़ल्लामा अ़ब्दुल मुस्त़फ़ा आ'ज़मी عَلَیْہِ رَحمَۃُ اللّٰہِ الْقَوِی "**सीरते मुस्त़फ़ा**" सफ़हा 687 पर लिखते हैं : इस बात पर तमाम मुअर्रिख़ीन का इत्तिफ़ाक़ है कि हुज़ूरे अक़्दस صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم की औलादे किराम की ता'दाद छ[6] (तो यक़ीनन) है। दो फ़रज़न्द ह़ज़रते **क़ासिम** व ह़ज़रते **इब्राहीम** (رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُمَا) और चार साहिब ज़ादियां ह़ज़रते **ज़ैनब** व ह़ज़रते **रुक़य्या** व ह़ज़रते **उम्मे कुल्सूम** व ह़ज़रते **फ़ात़िमा** (رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُنَّ) लेकिन बा'ज़ मुअर्रिख़ीन ने येह बयान फ़रमाया है कि आप صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَسَلَّم के एक साहिब ज़ादे **अ़ब्दुल्लाह** (رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ) भी हैं जिन का लक़ब त़य्यिब व त़ाहिर है। इस क़ौल की बिना पर हुज़ूर عَلَیْہِ الصَّلٰوۃُ وَالسَّلَام की मुक़द्दस औलाद की ता'दाद **सात** है या'नी तीन साहिब ज़ादगान और चार साहिब ज़ादियां। (सीरते मुस्त़फ़ा, स. 687)

रमज़ान का दीवाना : मुहम्मद नामी एक आदमी सारा साल नमाज़ न पढ़ता था । जब **रमज़ान शरीफ़** का मुतबर्रक महीना आता तो वोह पाक साफ़ कपड़े पहनता और पांचों वक़्त पाबन्दी के साथ नमाज़ पढ़ता और साले गुज़श्ता की क़ज़ा नमाज़ें भी अदा करता । लोगों ने उस से पूछा : तू ऐसा क्यूं करता है ? उस ने जवाब दिया : येह महीना रहमत बरकत, तौबा और मग़्फ़िरत का है, शायद **अल्लाह तआला** मुझे मेरे इसी अमल के सबब बख़्श दे । जब उस का इन्तिक़ाल हो गया तो किसी ने उसे ख़्वाब में देख कर पूछा : مَافَعَلَ اللّٰهُ بِکَ या'नी **अल्लाह तआला** ने तेरे साथ क्या मुआमला किया ? उस ने जवाब दिया : "**मेरे अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ **ने मुझे एहतिरामे रमज़ान शरीफ़ बजा लाने के सबब बख़्श दिया ।**" (دُرَّةُ النَّاصِحِين ص۸)

صَلُّوا عَلَى الْحَبِيب! صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلٰى مُحَمَّد

अल्लाह बे नियाज़ है : प्यारे प्यारे इस्लामी भाइयो ! देखा आप ने ? खुदाए रहमान عَزَّوَجَلَّ **माहे रमज़ान** के क़द्रदान पर किस दरजा मेहरबान है कि साल के बाक़ी महीने छोड़ कर सिर्फ़ **माहे रमज़ान** में इबादत करने वाले की मग़्फ़िरत फ़रमा दी । इस हिकायत से कहीं कोई येह न समझ बैठे कि अब तो (مَعَاذَاللّٰه عَزَّوَجَلَّ) सारा साल नमाज़ों की छुट्टी हो गई !! सिर्फ़ **रमज़ानुल मुबारक** में रोज़ा नमाज़ कर लिया करेंगे और सीधे जन्नत में चले जाएंगे । **प्यारे इस्लामी भाइयो !** दर

अस्ल बख़्शना या अ़ज़ाब करना येह सब कुछ **अल्लाह तआ़ला** की मशिय्यत पर मौक़ूफ़ है, वोह बे नियाज़ है, अगर चाहे तो किसी मुसल्मान को ब ज़ाहिर छोटे से नेक अ़मल पर ही अपने फ़ज़्ल से बख़्श दे और अगर चाहे तो बड़ी बड़ी नेकियों के बा वुजूद किसी को महूज़ एक छोटे से गुनाह पर अपने अ़द्ल से पकड़ ले। पारह 3 **सूरतुल बक़रह** की आयत नम्बर 284 में इर्शादे रब्बे बे नियाज़ है :

فَيَغْفِرُ لِمَنْ يَّشَآءُ وَيُعَذِّبُ مَنْ يَّشَآءُ ؕ
(پ۳،البقرة:۲۸۴)

तरजमए कन्ज़ुल ईमान : तो जिसे चाहेगा (अपने फ़ज़्ल से अहले ईमान को) बख़्शेगा और जिसे चाहेगा (अपने अ़द्ल से) सज़ा देगा।

तू बे हिसाब बख़्श कि हैं बे शुमार जुर्म
देता हूं वासिता तुझे शाहे हिजाज़ का

तीन के अन्दर तीन पोशीदा : प्यारे प्यारे इस्लामी भाइयो ! कोई नेकी छोड़नी नहीं चाहिये, न जाने **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ को कौन सी नेकी पसन्द आ जाए और कोई छोटे से छोटा गुनाह करना नहीं चाहिये कि न जाने किस गुनाह पर **अल्लाह तआ़ला** नाराज़ हो जाए और उस का दर्दनाक अ़ज़ाब घेर ले। ख़लीफ़ए आ'ला हज़रत, फ़क़ीहे आ'ज़म सय्यिदुना **अबू यूसुफ़ मुहम्मद शरीफ़** मुहद्दिस कोट्लवी عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللهِ الْقَوِى

मक्कतुल मुकर्रमा मदीनतुल मुनव्वरा जन्नतुल बक़ीअ़

नक़्ल फ़रमाते हैं : "**अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ ने तीन चीज़ों को तीन चीज़ों में मख़्फ़ी (या'नी पोशीदा) रखा है, ﴿1﴾ अपनी रिज़ा को अपनी इत़ाअ़त में और ﴿2﴾ अपनी नाराज़ी को अपनी ना फ़रमानी में और ﴿3﴾ अपने औलिया को अपने बन्दों में।" (تـنبيهُ الْمُغتَرِّين ص٥١) येह क़ौल नक़्ल करने के बा'द फ़क़ीहे आ'ज़म عَلَيْهِ رَحمَةُ اللهِ الْاَكْرَم फ़रमाते हैं : "लिहाज़ा हर त़ाअ़त और हर नेकी को अ़मल में लाना चाहिये कि मा'लूम नहीं किस नेकी पर वोह राज़ी हो जाए और हर बदी से बचना चाहिये क्यूं कि मा'लूम नहीं किस बदी पर वोह नाराज़ हो जाए। ख़्वाह वोह बदी कैसी ही सग़ीर (या'नी छोटी) हो। मसलन (बिला इजाज़त) किसी के तिन्के का ख़िलाल करना ब ज़ाहिर एक मा'मूली सी बात है या किसी हमसाए की मिट्टी से उस की इजाज़त के बिग़ैर हाथ धोना गोया एक छोटी सी बात है मगर मुम्किन है कि इस बुराई में ही ह़क़ तआ़ला की नाराज़ी मख़्फ़ी (या'नी छुपी हुई) हो तो ऐसी छोटी छोटी बातों से भी बचना चाहिये।"

(अख़्लाक़ुस्सालिह़ीन, स. 60)

कुत्ते को पानी पिलाने वाली बख़्शी गई : रह़मत के त़लब गारो ! जब **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ बख़्शने पर आता है तो ब ज़ाहिर नेकी कितनी ही छोटी हो वोह इसी के सबब करम फ़रमा देता है। जैसा कि **एक औ़रत को सिर्फ़ इस लिये बख़्श दिया गया कि उस ने एक प्यासे कुत्ते को पानी पिलाया था।** (بُخاری ج٢ ص ٤٠٩ حديث ٣٣٢١) एक

ह़दीस में सरकारे मदीना, सुल्त़ाने बा क़रीना, क़रारे क़ल्बो सीना, फ़ैज़ गन्जीना صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم का येह फ़रमाने आ़लीशान भी मिलता है कि एक शख़्स ने रास्ते में से एक **दरख़्त** को इस लिये हटा दिया ताकि लोगों को इस से ईज़ा न पहुंचे। **अल्लाह तआ़ला** ने ख़ुश हो कर उस की **मग़्फ़िरत** फ़रमा दी। (مُسلم ص ١٤١٠ حديث ١٩١٤) एक सह़ीह़ ह़दीस में **तक़ाज़े** (या'नी क़र्ज़ के मुत़ालबे) **में नरमी** करने वाले एक शख़्स की **नजात** हो जाने का वाक़िआ़ भी आया है। (بُخاری ج ٢ ص ١٢ حديث ٢٠٧٨) **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ की **रह़मत** के वाक़िआ़त जम्अ़ करने जाएं तो इतने हैं कि जम्अ़ करना मुश्किल हो जाए।

मुज़्दाबाद ऐ आ़सियो ! शाफ़ेअ़ शहे अबरार है
तहनियत ऐ मुजरिमो ! ज़ाते ख़ुदा ग़फ़्फ़ार है

(ह़दाइके़ बख़्शिश, स. 176)

صَلُّوا عَلَى الْحَبِيب ! صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلٰى مُحَمَّد
تُوبُوا اِلَى الله ! اَسْتَغْفِرُ الله
صَلُّوا عَلَى الْحَبِيب ! صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلٰى مُحَمَّد

अ़ज़ाब से छुटकारे के अस्बाब : प्यारे प्यारे इस्लामी भाइयो ! जब **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ रह़मत करने पर आता है तो यूं भी सबब बनाता है कि किसी एक अ़मल को अपनी बारगाह में शरफ़े क़बूलिय्यत अ़त़ा फ़रमा देता है और फिर उसी के बाइस उस पर रह़मतों की बारिश कर देता

है। लिहाज़ा अब एक ह़दीसे मुबारक पेश की जाती है जिस में मुतअ़द्दिद ऐसे लोगों का बयान किया गया है कि वोह किसी न किसी नेकी के सबब **अल्लाह तआ़ला** की गिरिफ़्त से बच गए और रह़मते ख़ुदावन्दी عَزَّوَجَلَّ ने उन्हें अपनी आग़ोश में ले लिया। चुनान्चे ह़ज़रते सय्यिदुना अ़ब्दुर्रह़मान बिन समुरा رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْهُ से रिवायत है : एक बार ह़ुज़ूरे अकरम, नूरे मुजस्सम, शाहे आदम व बनी आदम صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم तशरीफ़ लाए और इर्शाद फ़रमाया : "आज रात मैं ने एक अ़जीब ख़्वाब देखा कि

1. **एक** शख़्स की रूह़ क़ब्ज़ करने के लिये मलकुल मौत (عَلَيْهِ الصَّلٰوةُ وَالسَّلَام) तशरीफ़ लाए लेकिन उस का मां बाप की **इत़ाअ़त** करना सामने आ गया और वोह बच गया।
2. **एक** शख़्स पर अ़ज़ाबे क़ब्र छा गया लेकिन उस के **वुज़ू** (की नेकी) ने उसे बचा लिया।
3. **एक** शख़्स को शयात़ीन ने घेर लिया लेकिन **ज़िक्रुल्लाह** عَزَّوَجَلَّ (करने की नेकी) ने उसे बचा लिया।
4. **एक** शख़्स को अ़ज़ाब के फ़िरिश्तों ने घेर लिया लेकिन उसे (उस की) **नमाज़** ने बचा लिया।
5. **एक** शख़्स को देखा कि प्यास की शिद्दत से ज़बान निकाले हुए था और एक हौज़ पर पानी पीने जाता था मगर लौटा दिया जाता था कि इतने में उस के **रोज़े** आ गए (और इस नेकी ने) उस को सैराब कर दिया।

﴾6﴿ **एक** शख़्स को देखा कि जहां अम्बियाए किराम (عَلَيْهِمُ الصَّلٰوةُ وَالسَّلَام) हल्क़े बनाए हुए तशरीफ़ फ़रमा थे, वहां उन के पास जाना चाहता था लेकिन धुत्कार दिया जाता था कि इतने में उस का **ग़ुस्ले जनाबत** (करना) आया और (उस नेकी ने) उस को मेरे पास बिठा दिया।

﴾7﴿ **एक** शख़्स को देखा कि उस के आगे पीछे, दाएं बाएं, ऊपर नीचे अंधेरा ही अंधेरा है और वोह उस अंधेरे में हैरान व परेशान है तो उस के **हज व उ़म्रह** आ गए और (इन नेकियों ने) उस को अंधेरे से निकाल कर रोशनी में पहुंचा दिया।

﴾8﴿ **एक** शख़्स को देखा कि वोह मुसल्मानों से गुफ़्तगू करना चाहता है लेकिन कोई उस को मुंह नहीं लगाता तो **सिलए रेह़्मी** (या'नी रिश्तेदारों से हुस्ने सुलूक करने की नेकी) ने मुअमिनीन से कहा कि तुम इस से बातचीत करो। तो मुसल्मानों ने उस से बात करना शुरूअ़ की।

﴾9﴿ **एक** शख़्स के जिस्म और चेहरे की त़रफ़ आग बढ़ रही है और वोह अपने हाथ से बचा रहा है तो उस का **सदक़ा** आ गया और उस के आगे ढाल बन गया और उस के सर पर साया फ़िगन हो गया।

﴾10﴿ **एक** शख़्स को ज़बानिया (या'नी अ़ज़ाब के मख़्सूस फ़िरिश्तों) ने चारों त़रफ़ से घेर लिया लेकिन उस का अम्रुन बिल मा'रूफ़ व नह्युन अ़निल मुन्कर आया (या'नी नेकी का हुक्म करने और बुराई से मन्अ़ करने

की नेकी आई) और उस ने उसे बचा लिया और रह़मत के फ़िरिश्तों के ह़वाले कर दिया।

﴾11﴿ **एक** शख़्स को देखा जो घुटनों के बल बैठा है लेकिन उस के और **अल्लाह तआ़ला** के दरमियान ह़िजाब (या'नी पर्दा) है मगर उस का **ह़ुस्ने अख़्लाक़** आया इस (नेकी) ने उस को बचा लिया और **अल्लाह तआ़ला** से मिला दिया।

﴾12﴿ **एक** शख़्स को उस का आ'माल नामा उलटे हाथ में दिया जाने लगा तो उस का **ख़ौफ़े ख़ुदा** عَزَّوَجَلَّ आ गया और (इस अ़ज़ीम नेकी की बरकत से) उस का नामए आ'माल सीधे हाथ में दे दिया गया।

﴾13﴿ **एक** शख़्स की नेकियों का वज़्न हलका रहा मगर उस की **सख़ावत** आ गई और नेकियों का वज़्न बढ़ गया।

﴾14﴿ **एक** शख़्स जहन्नम के कनारे पर खड़ा था मगर उस का **ख़ौफ़े ख़ुदा** عَزَّوَجَلَّ आ गया और वोह बच गया।

﴾15﴿ **एक** शख़्स जहन्नम में गिर गया लेकिन उस के **ख़ौफ़े ख़ुदा** عَزَّوَجَلَّ में बहाए हुए **आंसू** आ गए और (इन आंसूओं की बरकत से) वोह बच गया।

﴾16﴿ **एक** शख़्स पुल सिरात़ पर खड़ा था और टहनी की त़रह़ लरज़ रहा था लेकिन उस का **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ के साथ ह़ुस्ने ज़न (या'नी **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ से अच्छा गुमान) आया (और इस नेकी) ने उसे बचा लिया और वोह पुल सिरात़ से गुज़र गया।

﴾17﴿ **एक** शख़्स पुल सिरात़ पर घिसट घिसट कर चल रहा था कि उस का **मुझ पर दुरूदे पाक** पढ़ना आ गया और (इस नेकी ने) उस को खड़ा कर के पुल सिरात़ पार करवा दिया।

﴾18﴿ **मेरी** उम्मत का एक शख़्स जन्नत के दरवाज़ों के पास पहुंचा तो वोह सब उस पर बन्द थे कि उस का لَآ اِلٰهَ اِلَّا اللّٰهُ की गवाही देना आया और उस के लिये जन्नती दरवाज़े खुल गए और वोह जन्नत में दाख़िल हो गया।

चुग़ली का दर्दनाक अ़ज़ाब

﴾19﴿ **कुछ** लोगों के होंट काटे जा रहे थे मैं ने जिब्रईल (عَلَيْهِ الصَّلٰوةُ وَالسَّلَام) से दरयाफ़्त किया, येह कौन हैं ? तो उन्हों ने बताया कि येह लोगों के दरमियान **चुग़ुल ख़ोरी** करने वाले हैं।

इल्ज़ामे गुनाह की ख़ौफ़नाक सज़ा

﴾20﴿ **कुछ** लोगों को ज़बानों से लटका दिया गया था। मैं ने जिब्रईल (عَلَيْهِ الصَّلٰوةُ وَالسَّلَام) से उन के बारे में पूछा तो उन्हों ने बताया कि येह लोगों पर **झूटी तोहमत** लगाने वाले हैं।" (شرحُ الصُّدور ص ۱۸۲ تا ۱۸۴، مُلَخَّصاً)

कोई भी नेकी नहीं छोड़नी चाहिये : प्यारे प्यारे इस्लामी भाइयो ! आप ने मुलाह़ज़ा फ़रमाया ! इत़ाअ़ते वालिदैन, वुज़ू, नमाज़, रोज़ा, **ज़िक्रुल्लाह** عَزَّوَجَلَّ, ह़ज व उ़म्रह, सिलए रेह़मी, अम्रुन बिल मा'रूफ़ व नह्युन अ़निल मुन्कर, सदक़ा, ह़ुस्ने अख़्लाक़, सख़ावत, ख़ौफ़े ख़ुदा عَزَّوَجَلَّ में रोना, नीज़ **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ के साथ ह़ुस्ने ज़न वग़ैरा वग़ैरा नेकियों

के सबब **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ ने अपने बन्दों पर करम फ़रमा दिया और उन्हें इताब व अ़ज़ाब से रिहाई मिल गई। बहर ह़ाल येह उस के फ़ज़्लो करम के मुआ़मलात हैं, वोह मालिको मुख़्तार عَزَّوَجَلَّ है, जिसे चाहे बख़्श दे, जिसे चाहे अ़ज़ाब करे, येह सब उस का अ़द्ल ही अ़द्ल है। जहां वोह किसी नेकी से ख़ुश हो कर अपनी रह़मत से बख़्श देता है वहीं किसी गुनाह पर जब वोह नाराज़ हो जाता है तो उस का क़हरो ग़ज़ब जोश पर आ जाता है और फिर उस की गिरिफ़्त निहायत ही सख़्त होती है। जैसा कि अभी गुज़श्ता त़वील ह़दीस के आख़िर में **चुग़ुल ख़ोरों** और दूसरों पर **गुनाह की तोहमत** बांधने वालों का अन्जाम गुज़रा। पस अ़क़्ल मन्द वोही है कि ब ज़ाहिर कोई छोटी सी भी नेकी हो उसे तर्क न करे कि हो सकता है येही नेकी नजात का ज़रीआ़ बन जाए और ब ज़ाहिर गुनाह कितना ही मा'मूली नज़र आता हो हरगिज़ हरगिज़ न करे।

صَلُّوا عَلَى الْحَبِيب ! صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلٰى مُحَمَّد

"क़ह्हार" के चार ह़ुरूफ़ की निस्बत से गुनाहगारों की 4 ह़िकायात

(1) क़ब्र आग से भर गई ! : बेचैन दिलों के चैन, रह़मते दारैन صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने इर्शाद फ़रमाया : **अल्लाह** के बन्दों में से एक बन्दे को क़ब्र में **सो कोड़े** मारने का हुक्म दिया गया, वोह **अल्लाह** से दुआ़ करता

रहा यहां तक कि एक कोड़ा रह गया जब एक कोड़ा मारा गया तो उस की **क़ब्र आग से भर गई** जब आग ख़त्म हुई और उस बन्दे को इफ़ाक़ा हुवा तो उस ने (फ़िरिश्तों से) पूछा : आख़िर मुझे येह कोड़ा क्यूं मारा गया ? तो उन्हों ने जवाब दिया : **एक रोज़ तूने बिग़ैर तहारत (या'नी बे वुज़ू) नमाज़ पढ़ ली थी और एक मज़्लूम के पास से तेरा गुज़र हुवा था मगर तूने उस की मदद न की ।** (شَرحُ مَشْكِلِ الآثار لِلطّحاوِی ج۸ص۲۱۲ حدیث۳۱۸۵، اَلزَّواجِر ج۲ص۲۳۶)

(2) मापने में बे एहतियाती के सबब इताब : हज़रते सय्यिदुना हारिस मुहासिबी عَلَيْهِ رَحمَةُ اللهِ القَوِی फ़रमाते हैं कि एक कय्याल (या'नी ग़ल्ला मापने वाले) ने येह काम छोड़ दिया और इबादते इलाही عَزَّوَجَلَّ में मश्ग़ूल हुवा। जब वोह मर गया तो उस के बा'ज़ अहबाब ने उस को ख़्वाब में देखा तो पूछा : مَافَعَلَ اللّٰهُ بِکَ؟ या'नी **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ ने तेरे साथ क्या मुआमला किया ? उस ने कहा : "मेरा वोह पैमाना जिस में ग़ल्ला वग़ैरा मापा करता था, उस में मेरी बे एहतियाती की वज्ह से कुछ मिट्टी सी बैठ गई थी, मैं ने उसे साफ़ करने में ग़फ़्लत बरती तो हर मर्तबा मापने के वक़्त ब क़दर उस मिट्टी के कम हो जाता था। मैं उस क़ुसूर के सबब इताब में गिरिफ़्तार हूं।" (تَنبِيهُ الْمُغتَرّين ص۵۱)

(3) क़ब्र से चिल्लाने की आवाज़ : इसी तरह एक और शख़्स भी अपनी तराज़ू से मिट्टी वग़ैरा साफ़ नहीं करता था और इसी तरह चीज़ तोल देता था। जब वोह मर गया तो उस को क़ब्र में अज़ाब शुरूअ़ हो

गया, यहां तक कि **लोगों ने उस की क़ब्र से चीख़ने चिल्लाने की आवाज़ सुनी।** बा'ज़ सालिह़ीन رَحِمَهُمُ اللّٰهُ الْمُبِين (या'नी नेक लोगों) को क़ब्र से चिल्लाने की आवाज़ सुन कर रह़्म आ गया और उन्हों ने उस के लिये दुआ़ए मग़्फ़िरत की तो इस की बरकत से **अल्लाह तआ़ला** ने उस का अ़ज़ाब दफ़्अ़ किया। (اَیضاً)

ह़राम की कमाई कहां जाती है ? : मज़्कूरा दोनों लरज़ा ख़ैज़ ह़िकायात से वोह लोग ज़रूर दर्से इ़ब्रत ह़ासिल करें जो डन्डी मारते और कम माप तोल करते हैं। मुसल्मानो ! डन्डी मार कर कम माप कर बा'ज़ अवक़ात ब ज़ाहिर माल में कुछ ज़ियादती नज़र आ भी जाती है मगर ऐसी आमदनी किस काम की ! बसा अवक़ात दुन्या में भी इस क़िस्म का माल वबाल बन जाता है। हो सकता है कि डॉक्टरों की फ़ीसों, बीमारियों की दवाओं, जेब कतरों, चोरों या रिश्वत ख़ोरों के हाथों में येह माल चला जाए और फिर साथ ही साथ مَعَاذَ اللّٰه عَزَّوَجَلَّ आख़िरत का अ़ज़ाबे शदीद भी भुगत्ना पड़ जाए।

कर ले तौबा रब की रह़मत है बड़ी
क़ब्र में वरना सज़ा होगी कड़ी

(वसाइले बख़्शिश, स. 712)

आग के दो पहाड़ : रूह़ुल बयान में है : "जो शख़्स नाप तोल में ख़ियानत करता है, क़ियामत के रोज़ उसे दोज़ख़ की गहराइयों में डाला

जाएगा और **आग के दो पहाड़ों** के दरमियान बिठा कर हुक्म दिया जाएगा : येह दोनों पहाड़ नापो और तोलो ! जब तोलने लगेगा तो आग उसे जला डालेगी।" (تفسیر روحُ البیان ج۱۰ ص۳٦٤)

प्यारे प्यारे इस्लामी भाइयो ! ख़ूब ग़ौर फ़रमाइये ! मुख़्तसर सी ज़िन्दगी में चन्द फ़ानी सिक्के हासिल करने के लिये अगर डन्डी मार ली तो किस क़दर शदीद अ़ज़ाब की वईद है। आज मा'मूली गरमी बरदाश्त नहीं होती तो जहन्नम में आग के पहाड़ों की तपिश किस त़रह सही जा सकेगी। ख़ुदारा ! अपने ह़ाल पर रह़्म करते हुए माल की हवस से दूर रहिये, वरना माले ग़ैरे ह़लाल दोनों जहानों में वबाल ही वबाल साबित होगा।

(4) तिन्के का बोझ : मश्हूर ताबेई बुज़ुर्ग ह़ज़रते सय्यिदुना वहब बिन मुनब्बेह رَحْمَةُ اللّٰهِ تَعَالٰى عَلَيْه फ़रमाते हैं : "बनी इसराईल के एक नौ जवान ने गुनाहों से तौबा की, फिर 70 साल मुसल्सल इ़बादत करता रहा, रात जागता और दिन में रोज़ा रखता, **न किसी साए के नीचे आराम करता और न कोई उ़म्दा ग़िज़ा खाता।** जब उस का इन्तिक़ाल हो गया तो उस के बा'ज़ दोस्तों ने उसे ख़्वाब में देख कर पूछा : مَا فَعَلَ اللّٰهُ بِکَ؟ या'नी **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ ने तेरे साथ क्या मुआ़मला किया ? उस ने बताया : **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ ने मेरा ह़िसाब लिया, फिर सारे गुनाह बख़्श दिये मगर **एक लकड़ी** जिस से मैं ने उस के मालिक की इजाज़त

के बिग़ैर **दांतों में ख़िलाल** कर लिया था (और येह मुआमला हुक़ूक़ुल इबाद का था) और वोह मुआफ़ करवाना रह गया था उस की वज्ह से मैं अब तक जन्नत से रोक दिया गया हूं।" (تَنبِيهُ الْمُغتَرِّين ص٥١)

गुनाह आख़िर गुनाह है : प्यारे प्यारे इस्लामी भाइयो ! लरज़ जाओ ! थर्रा उठो !! कि एक आ़बिदो ज़ाहिद और नेक बन्दा सिर्फ़ और सिर्फ़ इस वज्ह से जन्नत से रोक दिया गया कि उस ने एक **तिन्का** उस के मालिक की इजाज़त के बिग़ैर ले कर उस से दांतों में ख़िलाल कर लिया और फिर बे मुआफ़ करवाए इन्तिक़ाल कर गया। ज़रा सोचिये ! ग़ौर कीजिये !! अब एक तिन्के की कहां बात है ! आज कल तो लोग बड़ी बड़ी क़ीमती अमानतें हड़प कर जाते और डकार तक नहीं लेते।

تُوبُوا اِلَى اللهِ! أَسْتَغْفِرُ الله

अदाए क़र्ज़ में बिला मोहलत लिये ताख़ीर गुनाह है : मुसल्मानो ! डर जाओ !! हुक़ूक़ुल इबाद (या'नी बन्दों के हुक़ूक़) का मुआमला निहायत सख़्त है अगर किसी बन्दे का माल दबा लिया, या उस को गाली दे दी, आंखें दिखा कर डराया, धम्काया, डांट डपट की जिस से उस का दिल दुखा। अल ग़रज़ किसी त़रह भी बे इजाज़ते शरई उस की दिल आज़ारी की या क़र्ज़ा दबा लिया बल्कि बिला इजाज़ते क़र्ज़ ख़्वाह या बिग़ैर सह़ीह़ मजबूरी के क़र्ज़ की अदाएगी में ताख़ीर ही की,

येह सब बन्दों की हक़ तलफ़ियां हैं। **क़र्ज़** की बात चली है तो येह भी बताता चलूं कि **हुज्जतुल इस्लाम** हज़रते सय्यिदुना इमाम मुहम्मद बिन मुहम्मद बिन मुहम्मद ग़ज़ाली عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللهِ الْوَالِى **कीमियाए सआदत** में नक़्ल करते हैं : "जो शख़्स क़र्ज़ लेता है और येह निय्यत करता है कि मैं अच्छी तरह अदा कर दूंगा तो **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ उस की हिफ़ाज़त के लिये चन्द फ़िरिश्ते मुक़र्रर फ़रमा देता है और वोह दुआ करते हैं कि इस का क़र्ज़ अदा हो जाए।" (انظر:إتحاف السّادة ج ٦ ص ٤٠٩) और अगर क़र्ज़दार क़र्ज़ अदा कर सकता हो तो क़र्ज़ ख़्वाह की मरज़ी के बिग़ैर अगर एक घड़ी भर भी ताख़ीर करेगा तो गुनहगार होगा और ज़ालिम क़रार पाएगा। ख़्वाह रोज़े की हालत में हो या सो रहा हो और उस पर **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ की ला'नत उतरती है। येह गुनाह तो ऐसा है कि नींद की हालत में भी उस के साथ रहता है। अगर अपना सामान बेच कर क़र्ज़ अदा कर सकता है तब भी करना पड़ेगा, अगर ऐसा नहीं करेगा तो गुनाहगार है। उस का येह फ़े'ल कबीरा गुनाहों में से है मगर लोग इसे मा'मूली ख़याल करते हैं।"

(کیمیائے سعادت ج۱ ص۳۳۶)

صَلُّوا عَلَى الْحَبِيب! صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلٰى مُحَمَّد

तीन पैसे का वबाल : मेरे आक़ा **आ'ला हज़रत**, इमामे अहले सुन्नत, मौलाना शाह इमाम अहमद रज़ा ख़ान عَلَيْهِ رَحْمَةُ الرَّحْمٰن से क़र्ज़े की

अदाएगी में सुस्ती और झूटे हियलो हुज्जत करने वाले शख़्स ज़ैद के बारे में इस्तिफ़्सार हुवा तो आप رَحْمَةُ اللّٰهِ تَعَالٰی عَلَيْه ने इर्शाद फ़रमाया : "ज़ैद फ़ासिक़ो फ़ाजिर, मुरतकिबे कबाइर, ज़ालिम, कज़्ज़ाब, मुस्तहिक़्क़े अज़ाब है इस से ज़ियादा और क्या अल्क़ाब अपने लिये चाहता है ! अगर इस हालत में मर गया और दैन (क़र्ज़) लोगों का इस पर बाक़ी रहा, इस की नेकियां उन (क़र्ज़ ख़्वाहों) के मुतालबे में दी जाएंगी और क्यूंकर दी जाएंगी (या'नी किस तरह दी जाएंगी येह भी सुन लीजिये) तक़रीबन तीन पैसा दैन (क़र्ज़) के इवज़ (या'नी बदले) **सात सो नमाज़ें बा जमाअत** (देनी पड़ेंगी) । जब इस (क़र्ज़ा दबा लेने वाले) के पास नेकियां न रहेंगी उन (क़र्ज़ ख़्वाहों) के गुनाह इस (मक़रूज़) के सर पर रखे जाएंगे और आग में फेंक दिया जाएगा।" (फ़तावा रज़विय्या, जि. 25, स. 69 मुलख़्ख़सन)

मत दबा क़र्ज़ा किसी का ना बकार

रोएगा दोज़ख़ में वरना ज़ार ज़ार

تُوبُوا اِلَی اللّٰہ! اَسْتَغْفِرُ اللّٰہ

प्यारे प्यारे इस्लामी भाइयो ! दुन्या में किसी पर ज़र्रा बराबर ज़ुल्म करने वाला भी जब तक मज़्लूम को राज़ी नहीं कर लेगा उस वक़्त तक उस की ख़लासी (या'नी छुटकारा) ना मुम्किन है। हां, **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ अगर चाहेगा तो अपने फ़ज़्लो करम से क़ियामत के रोज़ ज़ालिम व मज़्लूम में सुल्ह करवा देगा, ब सूरते दीगर उस मज़्लूम को ज़ालिम की

नेकियां दे दी जाएंगी, अगर इस से भी मज़्लूम या मज़्लूमीन के हुक़ूक़ अदा न हुए तो मज़्लूमीन के गुनाह ज़ालिम के सर पर डाल दिये जाएंगे और वोह जहन्नम रसीद कर दिया जाएगा। وَالعِيَاذُ بِاللّٰهِ تَعَالٰى

क़ियामत में मुफ़्लिस कौन ? : ताजदारे मदीनए मुनव्वरह, सुल्ताने मक्कए मुकर्रमा صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने सहाबए किराम عَلَيْهِمُ الرِّضْوَان से इस्तिफ़्सार फ़रमाया : "क्या तुम जानते हो कि **मुफ़्लिस** कौन है ?" सहाबए किराम عَلَيْهِمُ الرِّضْوَان ने अ़र्ज़ की : **या रसूलल्लाह** صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ! हम में से **मुफ़्लिस** तो वोह है जिस के पास दिरहम व दुन्यावी साज़ो सामान न हो। तो आप صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने इर्शाद फ़रमाया : "मेरी उम्मत का **मुफ़्लिस तरीन** शख़्स वोह है जो क़ियामत के दिन नमाज़, रोज़ा, ज़कात तो ले कर आएगा मगर साथ ही किसी को गाली भी दी होगी, किसी को तोहमत लगाई होगी, उस का माले नाहक़ खाया होगा, उस का ख़ून बहाया होगा, उस को मारा होगा, पस इन सब गुनाहों के बदले में उस की नेकियां ली जाएंगी, पस अगर उस की नेकियां ख़त्म हो जाएं और मज़ीद हक़दार बाक़ी हों तो बदले में उन (या'नी मज़्लूमों) के गुनाह ले कर इस (या'नी ज़ालिम) पर डाले जाएंगे फिर उस (ज़ालिम) शख़्स को जहन्नम में डाल दिया जाएगा। (مسلم ص۱۳۹۴حدیث۲۵۸۱)

ज़ालिम से मुराद कौन है ? : याद रहे ! यहां ज़ालिम से मुराद सिर्फ़ क़ातिल, डाकू या मारधाड़ करने वाला ही नहीं बल्कि जिस ने ब

ज़ाहिर किसी की थोड़ी सी भी हक़ तलफ़ी की मसलन किसी का एकआध रुपिया ही दबा लिया हो, मज़ाक़ उड़ा कर या बिला इजाज़ते शरई डांट डपट कर के या गुस्से में घूर कर दिल दुखाया हो वोह भी ज़ालिम है। अब येह जुदा बात है कि जिस पर इस तरह के ज़ुल्म हुए इस "मज़्लूम" ने भी "उस ज़ालिम" की बा'ज़ हक़ तलफ़ियां की हों, इस सूरते हाल में दोनों एक दूसरे के हक़ में जुदा जुदा मुआमलात में "ज़ालिम" भी हैं और "मज़्लूम" भी।

हज़रते सय्यिदुना **अ़ब्दुल्लाह** उनैस رَحْمَةُ اللّٰهِ تَعَالٰى عَلَيْه फ़रमाते हैं : **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ क़ियामत के दिन इर्शाद फ़रमाएगा : "कोई दोज़ख़ी दोज़ख़ में और कोई जन्नती जन्नत में दाख़िल न हो, जब तक वोह **हुक़ूक़ुल इबाद** का बदला न अदा करे।" या'नी जिस किसी का हक़ जिस किसी ने दबाया हो उस का फ़ैसला होने तक दोज़ख़ या जन्नत में दाख़िल न होगा। (تَنبِيهُ الْمُغتَرِّين ص٥١) **हुक़ूक़ुल इबाद** की तफ़्सीली मा'लूमात के लिये **मक्तबतुल मदीना** का मत्बूआ तहरीरी बयान **ज़ुल्म का अन्जाम** ज़रूर मुलाहज़ा फ़रमाइये।

या अल्लाह عَزَّوَجَلَّ ! हम सब मुसल्मानों को एक दूसरे की हक़ तलफ़ी से बचा और इस सिल्सिले में जो कुछ कोताहियां हो चुकी हैं उन से सच्ची तौबा करने और इन्हें आपस में मुआफ़ करवा लेने की तौफ़ीक़ मर्हमत फ़रमा।

اٰمِين بِجاهِ النَّبِيِّ الْاَمين صَلَّى اللّٰهُ تعالٰى عليه واٰلهٖ وسلَّم

صَلُّوا عَلَى الْحَبِيب! صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلٰى مُحَمَّد

माहे रमज़ान में फ़ौत होने की फ़ज़ीलत : **ह़ज़रते** सय्यिदुना **अ़ब्दुल्लाह** इब्ने मस्ऊ़द رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ से रिवायत है : नबियों के सुल्त़ान, रह़मते आ़लमिय्यान صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم का फ़रमाने जन्नत निशान है : "जिस को **रमज़ान** के वक़्त मौत आई वोह **जन्नत** में दाख़िल होगा और जिस की मौत **यौमे अ़रफ़ा** (या'नी 9 ज़ुल ह़िज्जतिल ह़राम) के वक़्त आई वोह भी **जन्नत** में दाख़िल होगा और जिस की मौत **सदक़ा** देने की ह़ालत में आई वोह भी दाख़िले जन्नत होगा।" (حِلْيَةُ الْاَولِيَاء ج٥ص٢٦حديث٦١٨٧)

ह़ज़रते सय्यिदुना अनस बिन मालिक رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ से रिवायत है कि माहे रमज़ान में मुर्दों से अ़ज़ाबे क़ब्र उठा लिया जाता है।

(شَرحُ الصُّدُور ص١٨٧)

क़ियामत तक के रोज़ों का सवाब : उम्मुल मुअमिनीन सय्यिदतुना आ़इशा सिद्दीक़ा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہَا से रिवायत है : अम्बिया के सरताज, साह़िबे मे'राज صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم का इर्शादे बिशारत बुन्याद है : "**रोज़े** की ह़ालत में जिस का इन्तिक़ाल हुवा, **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ उस को क़ियामत तक के रोज़ों का सवाब अ़त़ा फ़रमाता है।"

(اَلْفِردَوس بمأثور الْخِطاب ج٣ص٥٠٤حديث٥٥٥٧)

صَلُّوا عَلَی الْحَبِيب ! صَلَّی اللّٰهُ تَعَالٰی عَلٰی مُحَمَّد

रमज़ान में मग़्फ़िरत न हुई तो फिर कब होगी ! : हज़रते सय्यिदुना अनस बिन मालिक رَضِىَ اللّٰهُ تَعَالٰى عَنْه फ़रमाते हैं कि मैं ने रसूले अकरम, नूरे मुजस्सम, शाहे आदम व बनी आदम صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم को फ़रमाते हुए सुना : "येह रमज़ान तुम्हारे पास आ गया है, इस में जन्नत के दरवाज़े खोल दिये जाते हैं और जहन्नम के दरवाज़े बन्द कर दिये जाते हैं और शयात़ीन को क़ैद कर दिया जाता है। मह़रूम है वोह शख़्स जिस ने **रमज़ान** को पाया और उस की **मग़्फ़िरत** न हुई कि **जब इस की रमज़ान में मग़्फ़िरत न हुई तो फिर कब होगी !"** (مُعجَم اَوسَط ج٥ص٣٦٦حديث٧٦٢٧)

जन्नत के दरवाज़े खुल जाते हैं : हज़रते सय्यिदुना अबू हुरैरा رَضِىَ اللّٰهُ تَعَالٰى عَنْه फ़रमाते हैं कि रसूले अकरम, रह़मते आ़लम, रसूले मोह़्तशम صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया : "**रमज़ान** आ गया बरकत वाला महीना है, **अल्लाह तआ़ला** ने इस के रोज़े तुम पर फ़र्ज़ किये, इस में आस्मान के दरवाज़े खोले जाते और **जहन्नम** के दरवाज़े बन्द किये जाते हैं, और इस में मरदूद शयात़ीन क़ैद कर दिये जाते हैं, इस में एक रात है, **हज़ार महीनों** से बेहतर, जो इस की भलाई से मह़रूम रहा वोह बिल्कुल ही मह़रूम रहा।"

(نَسائی ص٣٥٥حديث٢١٠٣)

शयात़ीन ज़न्जीरों में जकड़ दिये जाते हैं : हज़रते सय्यिदुना अबू हुरैरा رَضِىَ اللّٰهُ تَعَالٰى عَنْه फ़रमाते हैं : सुल्ताने दो जहान, रह़मते आ़लमिय्यान

صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم का फ़रमाने आलीशान है : जब रमज़ान आता है तो आस्मान के दरवाज़े खोल दिये जाते हैं। (بُخاری ج ١ ص ٦٢٦ حديث ١٨٩٩) और एक रिवायत में है कि जन्नत के दरवाज़े खोल दिये जाते हैं और दोज़ख़ के दरवाज़े बन्द कर दिये जाते हैं, शयातीन ज़न्जीरों में जकड़ दिये जाते हैं। (اَيضاً ص ٣٩٩ حديث ٣٢٧٧) एक रिवायत में है कि रह़मत के दरवाज़े खोले जाते हैं। (مسلم ص ٥٤٣ حديث ١٠٧٩)

गुनाहों में कमी तो आ ही जाती है : प्यारे प्यारे इस्लामी भाइयो ! बहर कैफ़ आम मुशाहदा येही है कि **रमज़ानुल मुबारक** में हमारी मसाजिद ग़ैरे रमज़ान के मुक़ाबले में ज़ियादा आबाद हो जाती हैं, नेकियां करने में आसानियां रहती हैं और इतना ज़रूर है कि माहे रमज़ान में गुनाहों का सिल्सिला कुछ न कुछ कम हो जाता है।

जूं ही सरकश शयातीन आज़ाद होते हैं ! : रमज़ानुल मुबारक के रुख़्सत होते ही, सरकश शयातीन आज़ाद हो जाते हैं और अफ़्सोस ! गुनाहों का ज़ोर बढ़ जाता है। ख़ुसूसन ईद के दिन गुनाहों की निहायत कसरत हो जाती है, गोया एक महीने की क़ैद के सबब सरकश शयातीन बेहद बिफर चुके हैं और माहे **रमज़ानुल मुबारक** की सारी कसर वोह ईद के रोज़ ही निकाल देना चाहते हैं, तफ़रीह गाहें बे पर्दा औरतों और मर्दों से भर जाती हैं, ईद के लिये नई नई फ़िल्में और जदीद डिरामे लगा दिये जाते हैं, आह ! **शैतान** के हाथों बे शुमार मुसल्मान

खिलौना बन कर रह जाते हैं, मगर ऐसे खुश नसीब भी होते हैं जो **अल्लाहु रब्बुल इज्ज़त** عَزَّوَجَلَّ की याद से ग़फ़्लत नहीं करते और **शैतान** के बहकाने से महफ़ूज़ रहते हैं।

आतश परस्त ने माहे रमज़ान का एह़तिराम किया तो......

(ह़िकायत) : **बुख़ारा** में एक मजूसी (आतश परस्त) रहता था एक मर्तबा **रमज़ान शरीफ़** में वोह अपने बेटे के साथ मुसल्मानों के बाज़ार से गुज़र रहा था, उस के बेटे ने अ़लल ए'लान कोई चीज़ खानी शुरूअ़ कर दी, मजूसी ने येह देखते ही अपने बेटे को एक **त़मांचा** रसीद कर दिया और डांटते हुए कहा : तुझे **रमज़ानुल मुबारक** के महीने में मुसल्मानों के बाज़ार में खाते हुए शर्म नहीं आती ! लड़के ने कहा : अब्बाजान ! आप भी तो रमज़ान शरीफ़ में खाते हैं। वालिद ने कहा : मैं मुसल्मानों के सामने नहीं अपने घर के अन्दर छुप कर खता हूं, इस माहे मुबारक की बे हुरमती नहीं करता। कुछ अ़र्से बा'द उस शख़्स का इन्तिक़ाल हो गया। किसी ने ख़्वाब में उस को जन्नत में टहलते हुए देखा तो ह़ैरत से पूछा : तू तो मजूसी (या'नी आग का पुजारी) था, जन्नत में कैसे आ गया ? कहने लगा : "वाक़ेई मैं मजूसी था, लेकिन जब मौत का वक़्त क़रीब आया तो **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ ने **एह़तिरामे रमज़ान की बरकत से मुझे ईमान की दौलत से और मरने के बा'द जन्नत से मुशर्रफ़ फ़रमाया।"** (نُزهَةُ المَجَالِس ج١ ص٢١٧)

रमज़ान में अ़लल ए'लान खाने की दुन्यवी सज़ा : **प्यारे प्यारे इस्लामी भाइयो !** देखा आप ने ? **रमज़ानुल मुबारक** की ता'ज़ीम के सबब एक आतश परस्त को **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ ने दौलते ईमान से नवाज़ कर जन्नत की ला ज़वाल ने'मतों से मालामाल फ़रमा दिया। इस ह़िकायत से ख़ुसूसन उन ग़ाफ़िलों को दर्से इब्रत ह़ासिल करना चाहिये जो मुसल्मान होने के बा वुजूद **रमज़ानुल मुबारक** में अव्वल तो वोह रोज़ा नहीं रखते, फिर चोरी और सीना ज़ोरी यूं कि रोज़ादारों के सामने ही सिगरेट के कश लगाते, पान चबाते, ह़त्ता कि बा'ज़ तो इतने बेबाक व बे मुरव्वत कि सरे आ़म पानी पीते बल्कि खाना खाते भी नहीं शरमाते। ऐसे लोगों के लिये फ़िक़्ही किताबों में सख़्त सज़ा का हुक्म है।

क्या आप को मरना नहीं ? : **प्यारे प्यारे इस्लामी भाइयो !** ग़ौर कीजिये ! ख़ूब सोचिये !! जब दुन्या में रोज़ाख़ोरों की सख़्त सज़ा तज्वीज़ की गई है (येह सज़ा सिर्फ़ ह़ाकिमे इस्लाम ही दे सकता है) तो आख़िरत की सज़ा किस क़दर होलनाक होगी ! मुसल्मानो ! होश में आइये ! कब तक इस दुन्या में गुलछर्रे उड़ाएंगे ? क्या आप को मरना नहीं ? क्या इस दुन्या में हमेशा इसी त़रह़ दन्दनाते फिरेंगे ? याद रखिये ! एक न एक दिन मौत ज़रूर आएगी और आप का रिश्तए ह़यात मुन्क़तेअ़ कर के (या'नी काट कर) नर्म व आराम देह गदेलों से उठा कर फ़र्शे ख़ाक

पर सुला देगी, हर त़रह़ के सामाने त़रब से आरास्ता व पैरास्ता कमरों से निकाल कर अंधेरी क़ब्रों में पहुंचा देगी, फिर पछताने से कुछ हाथ न आएगा, अभी मौक़अ़ है, गुनाहों से सच्ची तौबा कर लीजिये और रोज़ा व नमाज़ की पाबन्दी इख़्तियार कीजिये।

कर ले तौबा रब की रह़मत है बड़ी
क़ब्र में वरना सज़ा होगी कड़ी

(वसाइले बख़्शिश, स. 712)

सुन्नतों भरे बयानात की बरकात : प्यारे प्यारे इस्लामी भाइयो ! गुनाहों भरी ज़िन्दगी से छुटकारा पाने के लिये तब्लीग़े क़ुरआनो सुन्नत की आ़लमगीर ग़ैर सियासी तह़रीक, **दा'वते इस्लामी** के मदनी माह़ोल से हर दम वाबस्ता रहिये। اِنْ شَآءَاللّٰه عَزَّوَجَلَّ दुन्या व आख़िरत दोनों में सुर्ख़रूई नसीब होगी। आप की तरग़ीब के लिये एक ख़ुश गवार व ख़ुश्बूदार **मदनी बहार** आप के गोश गुज़ार की जाती है, चुनान्चे एक इस्लामी भाई 1987 सि.ई. ता 1990 सि.ई. एक सियासी पार्टी से वाबस्ता रहे। आए दिन के फ़सादात से बेज़ार हो कर घर वालों ने उन्हें मुल्क भेजने की ठानी। चुनान्चे 3.11.90 को वोह सल्त़नते उ़म्मान के दारुल इमारात **मस्क़त़** की एक गारमेन्ट फ़ेक्टरी में मुलाज़िम हो गए। 1992 सि.ई. में **दा'वते इस्लामी** के मदनी माह़ोल से वाबस्ता एक इस्लामी भाई काम के सिल्सिले में उन की फ़ेक्टरी में भरती हुए। उन की

इन्फ़िरादी कोशिश से اَلْحَمْدُ لِلّٰه عَزَّوَجَلَّ वोह नमाज़ी बने। फ़ेक्टरी का माहोल बहुत ही ख़राब था, सिर्फ़ उन के शो'बे ही को ले लीजिये उस में आठ या नव टेप रेकॉर्डर थे जिन के ज़रीए मुख़्तलिफ़ ज़बानों, मसलन उर्दू, पंजाबी, पश्तो, हिन्दी और बंगाली वग़ैरा में ऊंची आवाज़ के साथ गाने चलाने का सिल्सिला रहता। दा'वते इस्लामी वाले **आशिक़े रसूल** की सोहबत की बरकत से اَلْحَمْدُ لِلّٰه عَزَّوَجَلَّ वोह गाने बाजों से मुतनफ़्फ़िर हो गए। बाहमी मश्वरे से उन्हों ने **मक्तबतुल मदीना** से जारी होने वाली सुन्नतों भरे बयानात की केसिटें चलानी शुरूअ़ कर दीं। इब्तिदाअन बा'ज़ लोगों ने मुख़ालफ़त भी की मगर उन्हों ने हिम्मत नहीं हारी। اَلْحَمْدُ لِلّٰه عَزَّوَجَلَّ सुन्नतों भरे बयानात चलाने की बरकात का ख़ुद उन पर भी ज़ुहूर होने लगा। बिल ख़ुसूस **क़ब्र की पहली रात, नैरंगिये दुन्या, बद नसीब दूल्हा, क़ब्र की पुकार और तीन क़ब्रें** नामी बयानात ने उन्हें हिला कर रख दिया, आख़िरत की तय्यारी की **मदनी सोच** मिली और उन का दिल गुनाहों से नफ़्रत करने लगा। इस दौरान चन्द और अफ़राद भी सुन्नतों भरे बयानात से मुतअस्सिर हो कर क़रीब आ गए। जिन्हों ने उन को नेकी के कामों में लगाया था वोह **आशिक़े रसूल** मुलाज़मत छोड़ कर अपने मुल्क लौट गए। उन्हों ने सुन्नतों भरे बयानात की 90 केसिटें मंगवा लीं। **पहले उन की फ़ेक्टरी में सिर्फ़ 50 या 60 नमाज़ी थे बयानात सुन सुन कर नमाज़ियों की ता'दाद बढ़ते**

बढ़ते اَلْحَمْدُ لِلّٰه عَزَّوَجَلَّ **200 से 250 हो गई**। उन्हों ने मिल कर 400 वॉट का क़ीमती स्पीकर ख़रीद कर अपनी मन्ज़िल की दीवार पर नस्ब कर लिया और धूमधाम से केसिटें चलाने लगे रोज़ाना तिलावते कलामे पाक, ना'त शरीफ़ और सुन्नतों भरे बयान की केसिट चलाने का मा'मूल बना लिया। रफ़्ता रफ़्ता उन के पास 500 केसिटें जम्अ़ हो गईं। उन का कहना है कि मुझ समेत **पांच इस्लामी भाइयों** ने अपने आप को दा'वते इस्लामी के मदनी रंग में रंग लिया। اَلْحَمْدُ لِلّٰه عَزَّوَجَلَّ मस्जिद दर्स का आग़ाज़ हो गया। फिर कुछ अ़र्से बा'द रफ़्ता रफ़्ता उन की फ़ेक्टरी में **हफ़्तावार सुन्नतों भरा इज्तिमाअ़** शुरूअ़ हो गया, इज्तिमाअ़ में कमो बेश 250 इस्लामी भाई शिर्कत करते थे, **मद्रसतुल मदीना** (बराए बालिग़ान) भी क़ाइम हो गया। सुन्नतों की बहारें आने लगीं, मुतअ़द्दिद इस्लामी भाइयों ने अपने चेहरे पर **मदनी आक़ा** صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم की महब्बत की निशानी मुबारक दाढ़ी सजा ली, 20 से 25 इस्लामी भाइयों के सरों पर **इमामे के ताज** जगमगाने लगे। उन की फ़ेक्टरी के मेनेजर इब्तिदाअन केसिटें चलाने वग़ैरा से मन्अ़ करते रहे मगर बयानात की केसिटों की आवाज़ उन के कानों में भी रस घोलती रही और اَلْحَمْدُ لِلّٰه عَزَّوَجَلَّ बिल आख़िर वोह भी मुतअस्सिर हो ही गए न सिर्फ़ मुतअस्सिर हुए बल्कि नमाज़ी भी बन गए और एक मुठ्ठी दाढ़ी भी सजा ली।

वोह इस्लामी भाई वापस अपने मुल्क आ चुके हैं और उन्हें एक डिवीज़न की मुशावरत की ह़ैसिय्यत से सुन्नतों की ख़िदमत की सआ़दत भी मिली। اَلْحَمْدُ لِلّٰہ عَزَّوَجَلَّ **मक्तबतुल मदीना** से जारी होने वाले सुन्नतों भरे बयानात की केसिटों के ज़रीए़ इस्लाह़ का सामान हुवा। हर इस्लामी भाई और इस्लामी बहन को चाहिये कि वोह सुन्नतों भरे बयान या **मदनी मुज़ाकरे** की कम अज़ कम एक केसिट रोज़ाना सुनने का मा'मूल बना ले, اِنْ شَآءَاللّٰہ عَزَّوَجَلَّ ऐसी बरकतें मिलेंगी कि दोनों जहां में बेड़ा पार हो जाएगा।[1]

ग़फ़्लत से नेकी की दा'वत सुनना कुफ़्फ़ार की सिफ़त है : प्यारे प्यारे इस्लामी भाइयो ! देखा आप ने ! **मक्तबतुल मदीना** से जारी कर्दा बयानात की केसिटें सुनने की भी कैसी बरकात हैं ![2] येह सब मुक़द्दर वालों के सौदे हैं, वरना बे शुमार अफ़राद ऐसे भी देखे जाते हैं कि वोह बरसहा बरस से सुन्नतों भरे इज्तिमाअ़ में ह़ाज़िर होते हैं मगर उन पर मदनी रंग नहीं चढ़ पाता। शायद इस की एक वज्ह येह भी हो सकती है कि वोह बैठ कर तवज्जोह के साथ बयान न सुनते हों, बे परवाई के साथ इधर उधर देखते

---

1 : सुन्नतों भरे बयानात की केसिटों की बरकात की तफ़्सीलात जानने के लिये "बयानात की केसिटों के करिश्मात" नामी रिसाला "54 सफ़ह़ात" मक्तबतुल मदीना से हदिय्यतन ह़ासिल कीजिये। **मजलिसे मक्तबतुल मदीना** 2 : रिक़्क़त अंगेज़ बयानात की केसिटें और मेमोरी कार्ड मक्तबतुल मदीना से हदिय्यतन त़लब कीजिये।

हुए या मोबाइल फ़ोन पर बातें वग़ैरा करते हुए सुनने से बयानात की बरकात कहां से मिलेंगी ! याद रहे ! ग़फ़्लत के साथ नसीह़त सुनना कुफ़्फ़ार की सिफ़त है मुसल्मानों को इस ह़रकत से बचना ज़रूरी है चुनान्चे पारह 17 **सूरतुल अम्बियाअ** की आयत नम्बर 2 और 3 में इर्शादे रब्बुल इ़ज़्ज़त جَلَّ جَلَالُهٗ है :

مَا يَاْتِيْهِمْ مِّنْ ذِكْرٍ مِّنْ رَّبِّهِمْ مُّحْدَثٍ اِلَّا اسْتَمَعُوْهُ وَهُمْ يَلْعَبُوْنَ ۝٢ لَاهِيَةً قُلُوْبُهُمْ ؕ

तरजमए कन्ज़ुल ईमान : जब उन के रब के पास से उन्हें कोई नई नसीह़त आती है तो उसे नहीं सुनते मगर खेलते हुए, उन के दिल खेल में पड़े हैं।

साल भर की नेकियां बरबाद : ह़ज़रते सय्यिदुना **अ़ब्दुल्लाह** इब्ने अ़ब्बास رَضِىَ اللّٰهُ تَعَالٰى عَنْهُمَا से मरवी है कि नबियों के सुल्त़ान, रह़मते आ़लमिय्यान صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم का फ़रमाने आ़लीशान है : "बेशक जन्नत माहे रमज़ान के लिये एक साल से दूसरे साल तक सजाई जाती है, पस जब माहे रमज़ान आता है तो जन्नत कहती है : "ऐ **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ ! मुझे इस महीने में अपने बन्दों में से (मेरे अन्दर) रहने वाले अ़त़ा फ़रमा दे।" और हूरे ईन कहती हैं : "ऐ **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ ! इस महीने में हमें अपने बन्दों में से शोहर अ़त़ा फ़रमा।" फिर सरकारे मदीना صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने इर्शाद फ़रमाया : "जिस ने इस माह में अपने नफ़्स की ह़िफ़ाज़त की, कि न तो कोई नशा आवर

शै पी और न ही किसी मोमिन पर **बोहतान** लगाया और न ही इस माह में कोई **गुनाह** किया तो **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ हर रात के बदले उस का **सो हूरों** से निकाह़ फ़रमाएगा और उस के लिये **जन्नत** में सोने, चांदी, याक़ूत और ज़बर जद का ऐसा मह़ल बनाएगा कि अगर सारी दुन्या जम्अ़ हो जाए और इस मह़ल में आ जाए तो इस मह़ल की उतनी ही जगह घेरेगी जितना बकरियों का एक बाड़ा दुन्या की जगह घेरता है, और **जिस ने इस माह में कोई नशा आवर शै पी या किसी मोमिन पर बोहतान बांधा या इस माह में कोई गुनाह किया तो अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ **उस के एक साल के आ'माल बरबाद फ़रमा दे ।** पस तुम माहे रमज़ान (के ह़क़) में कोताही करने से डरो क्यूं कि येह **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ का महीना है। **अल्लाह तआ़ला** ने तुम्हारे लिये ग्यारह महीने कर दिये कि इन में ने'मतों से लुत़्फ़ अन्दोज़ हो और तलज़्ज़ुज़ (लज़्ज़त) ह़ासिल करो और अपने लिये एक महीना ख़ास कर लिया है। पस तुम माहे रमज़ान के मुआ़मले में डरो।" (مُعجَم اَوسَط ج۲ص۴۱۴ حدیث۳۶۸۸)

प्यारे प्यारे इस्लामी भाइयो ! मा'लूम हुवा जहां माहे **रमज़ानुल मुबारक** की ता'ज़ीम करने वालों के लिये उख़्रवी इन्आ़माते इक्रामात की बिशारात हैं वहां इस मुबारक महीने की ना क़द्री करते हुए इस में गुनाह करने वालों के लिये वईदात भी हैं। इस ह़दीसे पाक में नशा आवर चीज़ पीने और मोमिन पर बोहतान बांधने का ख़ुसूसिय्यत के

साथ तज़्किरा है याद रखिये ! शराब **उम्मुल ख़बाइस** (या'नी बुराइयों की मां) है इस का पीना ह़राम और जहन्नम में ले जाने वाला काम है । ह़ज़रते सय्यिदुना जाबिर رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ से रिवायत है : सरकारे मदीना صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया : "जो चीज़ ज़ियादा मिक़्दार में नशा लाए तो उस की थोड़ी सी मिक़्दार भी ह़राम है ।" (ابوداوٗد ج۳ص۴۵۹حدیث۳۶۸۱)

दोज़ख़ियों का ख़ून और पीप : मोमिन पर बोहतान बांधना भी ह़राम और जहन्नम में ले जाने वाला काम है, ह़दीसे पाक में है : "जो किसी मोमिन के बारे में ऐसी चीज़ कहे जो उस में न हो तो **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ उस (बोहतान तराश) को उस वक़्त तक **रद्ग़तुल ख़बाल** में रखेगा यहां तक कि वोह अपनी कही हुई बात से निकल जाए ।" (ابوداوٗد ج۳ص۴۲۷حدیث۳۵۹۷) रद्ग़तुल ख़बाल जहन्नम में वोह मक़ाम है जहां दोज़ख़ियों का ख़ून और पीप जम्अ़ होता है । (मिरआतुल मनाजीह़, जि. 5, स. 313) मुह़क़्क़िक़ अ़लल इत़्लाक़ ह़ज़रत शाह अ़ब्दुल ह़क़ मुह़द्दिस देहलवी عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللّٰهِ الْقَوِی ह़दीसे पाक के इस ह़िस्से : "यहां तक कि वोह अपनी कही हुई बात से निकल जाए" के तह़्त फ़रमाते हैं : "इस से मुराद येह है कि जिस अ़ज़ाब का वोह मुस्तह़िक़ हो चुका है उसे भुगत्ने के बा'द पाक हो जाए ।" (اَشِعَّةُ اللَّمعات ج۳ص۲۹۰مُلَخَّصاً)

रमज़ान में गुनाह करने वाला : सय्यिदतुना उम्मे हानी رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہَا से रिवायत है : दो जहां के सुल्त़ान, शहन्शाहे कौनो मकान

صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم का फ़रमाने इब्रत निशान है : "मेरी उम्मत ज़लीलो रुस्वा न होगी जब तक वोह माहे रमज़ान का ह़क़ अदा करती रहेगी।" अ़र्ज़ की गई : **या रसूलल्लाह** صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ! रमज़ान के ह़क़ को ज़ाएअ़ करने में इन का ज़लीलो रुस्वा होना क्या है ? फ़रमाया : "इस माह में इन का ह़राम कामों का करना।" फिर फ़रमाया : **"जिस ने इस माह में ज़िना किया या शराब पी तो अगले रमज़ान तक अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ **और जितने आस्मानी फ़िरिश्ते हैं सब उस पर ला'नत करते रहेंगे पस अगर येह शख़्स अगला माहे रमज़ान पाने से पहले ही मर गया तो उस के पास कोई ऐसी नेकी न होगी जो उसे जहन्नम की आग से बचा सके। पस तुम माहे रमज़ान के मुआ़मले में डरो क्यूं कि जिस त़रह़ इस माह में और महीनों के मुक़ाबले में नेकियां बढ़ा दी जाती हैं इसी त़रह़ गुनाहों का भी मुआ़मला है।"** (مُعجَم صغير ج١ ص٢٤٨)

تُوبُوْا اِلَى الله! اَسْتَغْفِرُ الله

दिल का सियाह नुक़्ता : प्यारे प्यारे इस्लामी भाइयो ! लरज़ उठिये ! **माहे रमज़ान** की ना क़द्री से बचने का ख़ुसूसिय्यत के साथ सामान कीजिये। इस माहे मुबारक में दूसरे महीनों के मुक़ाबले में जिस त़रह़ नेकियां बढ़ा दी जाती हैं इसी त़रह़ दीगर महीनों के मुक़ाबले में गुनाहों की हलाकत ख़ैज़ियां भी बढ़ जाती हैं। रमज़ान शरीफ़ के इ़लावा

फ़रमाने मुस्त़फ़ा صَلَّى اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم : जिस के पास मेरा ज़िक्र हुवा और उस ने मुझ पर दुरूद शरीफ़ न पढ़ा उस ने जफ़ा की। (عبدالرزاق)

भी गुनाहों से बचना ही चाहिये। ह़ज़रते सय्यिदुना अबू हुरैरा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ बयान करते हैं कि **रसूलुल्लाह** صَلَّى اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم का फ़रमाने आ़लीशान है : जब बन्दा कोई गुनाह करता है तो उस के दिल में एक सियाह नुक़्ता पैदा होता है, जब उस गुनाह से बाज़ आ जाता है और तौबा व इस्तिग़्फ़ार कर लेता है तो उस का दिल साफ़ हो जाता है और अगर फिर गुनाह करता है तो वोह नुक़्ता बढ़ता है यहां तक कि पूरा दिल सियाह हो जाता है। और येही वोह ज़ंग है जिस का ज़िक्र **अल्लाह तआ़ला** ने इस त़रह़ फ़रमाया है :

كَلَّا بَلْ ٜ رَانَ عَلٰى قُلُوْبِهِمْ مَّا كَانُوْا يَكْسِبُوْنَ ﴿۱۴﴾ (پ۳۰،المطففين:۱۴)

तरजमए कन्ज़ुल ईमान : कोई नहीं बल्कि उन के दिलों पर ज़ंग चढ़ा दिया है उन की कमाइयों ने।

(ترمذی ج۵،ص۲۲۰ حدیث۳۳۴۵)

दिल की सियाही का इ़लाज : इस सियाह क़ल्बी का इ़लाज ज़रूरी है और इस के इ़लाज का एक मुअस्सिर ज़रीआ़ किसी जामेए़ शराइत़ पीर साह़िब से निस्बत भी है, लिहाज़ा किसी ऐसे मुर्शिद का मुरीद बन जाए जो परहेज़ गार और मुत्तबेए़ सुन्नत हो, जिस की ज़ियारत खु़दा व मुस्त़फ़ा عَزَّوَجَلَّ و صَلَّى اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم की याद दिलाए, जिस की गुफ़्त्गू सलातो सुन्नत का शौक़ उभारे, जिस की सोह़बत क़ब्रो आख़िरत की तय्यारी का जज़्बा बढ़ाए। अगर ख़ुश क़िस्मती से ऐसा

पीरे कामिल मुयस्सर आ गया तो اِنْ شَآءَاللّٰه عَزَّوَجَلَّ सच्ची तौबा की सआ़दत नसीब होगी और **अल्लाहु रब्बुल इ़ज़्ज़त** की रह़मत से **दिल की सियाही का इलाज** हो जाएगा।

गुनाह की मुआ़फ़ी के लिये 8 आ'माल : दा'वते इस्लामी के इशाअ़ती इदारे **मक्तबतुल मदीना** की मत़्बूआ़ 911 सफ़ह़ात पर मुश्तमिल किताब, "**एह़्याउल उ़लूम** मुतर्जम जिल्द 4" सफ़ह़ा 141 पर है : रिवायात से मा'लूम होता है गुनाह के बा'द जब आठ आ'माले सालिह़ा (या'नी नेक अ़मल) किये जाएं तो उस (गुनाह) की बख़्शिश (या'नी मुआ़फ़ी) की उम्मीद होती है। चार आ'माल का तअ़ल्लुक़ दिल से है : ﴾1﴿ तौबा या तौबा का अ़ज़्म ﴾2﴿ गुनाह से बाज़ रहने की चाहत ﴾3﴿ अ़ज़ाब होने का ख़ौफ़ ﴾4﴿ मग़्फ़िरत की उम्मीद। चार आ'माल का तअ़ल्लुक़ आ'ज़ा से है : ﴾1﴿ दो रक्अ़त नमाज़े (तौबा) अदा करना ﴾2﴿ 70 मर्तबा इस्तिग़्फ़ार करना और 100 मर्तबा سُبْحٰنَ اللّٰهِ الْعَظِيْمِ وَبِحَمْدِهٖ पढ़ना ﴾3﴿ सदक़ा करना ﴾4﴿ रोज़ा रखना।

मुझे सच्ची तौबा की तौफ़ीक़ दे दे

पए ताजदारे ह़रम या इलाही

(वसाइले बख़्शिश, स. 110)

صَلُّوا عَلَى الْحَبِيْب ! صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلٰى مُحَمَّد

क़ब्र का भयानक मन्ज़र ! : मन्क़ूल है : अमीरुल मुअमिनीन ह़ज़रते मौलाए काएनात अ़लिय्युल मुर्तज़ा शेरे ख़ुदा كَرَّمَ اللّٰهُ تَعَالٰى وَجْهَهُ الْكَرِيْم एक बार ज़ियारते क़ुबूर के लिये कूफ़े के क़ब्रिस्तान तशरीफ़ ले गए, वहां एक ताज़ा क़ब्र पर नज़र पड़ी, तो दिल में उस के ह़ालात मा'लूम करने की ख़्वाहिश हुई, चुनान्चे बारगाहे ख़ुदावन्दी عَزَّوَجَلَّ में अ़र्ज़ गुज़ार हुए : "**या अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ ! इस मय्यित के ह़ालात मुझ पर मुन्कशिफ़ (या'नी ज़ाहिर) फ़रमा।" **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ की बारगाह में आप की इल्तिजा फ़ौरन मस्मूअ़ हुई (या'नी सुनी गई) और देखते ही देखते आप के और उस मुर्दे के दरमियान जितने पर्दे ह़ाइल थे तमाम उठा दिये गए ! अब एक क़ब्र का भयानक मन्ज़र आप के सामने था ! क्या देखते हैं कि मुर्दा आग की लपेट में है और रो रो कर आप كَرَّمَ اللّٰهُ تَعَالٰى وَجْهَهُ الْكَرِيْم से इस त़रह़ फ़रियाद कर रहा है :

يَاعَلِيُّ! اَنَا غَرِيْقٌ فِى النَّارِ وَحَرِيْقٌ فِى النَّار۔

या'नी या अ़ली ! मैं आग में डूबा हुवा हूं और आग में जल रहा हूं। क़ब्र के दह्शत नाक मन्ज़र और मुर्दे की दर्दनाक पुकार ने ह़ैदरे कर्रार كَرَّمَ اللّٰهُ تَعَالٰى وَجْهَهُ الْكَرِيْم को बे क़रार कर दिया। आप كَرَّمَ اللّٰهُ تَعَالٰى وَجْهَهُ الْكَرِيْم ने अपने रह़मत वाले परवर दगार عَزَّوَجَلَّ के दरबार में हाथ उठा दिये और निहायत आ़जिज़ी के साथ उस मय्यित की बख़्शिश के लिये दरख़्वास्त

पेश की। ग़ैब से आवाज़ आई : "ऐ अ़ली (کَرَّمَ اللّٰہُ تَعَالٰی وَجْہَہُ الْکَرِیْم) ! इस की सिफ़ारिश मत करो। क्यूं कि येह शख़्स **रमज़ानुल मुबारक** की बे हुरमती करता, **रमज़ानुल मुबारक** में भी गुनाहों से बाज़ न आता था, दिन को रोज़े तो रख लेता मगर रातों को गुनाहों में मुब्तला रहता था।" मौलाए काएनात अ़लिय्युल मुर्तज़ा शेरे ख़ुदा کَرَّمَ اللّٰہُ تَعَالٰی وَجْہَہُ الْکَرِیْم येह सुन कर और भी रन्जीदा हो गए और सज्दे में गिर कर रो रो कर अ़र्ज़ करने लगे : **या अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ ! मेरी लाज तेरे हाथ में है, इस बन्दे ने बड़ी उम्मीद के साथ मुझे पुकारा है, मेरे मालिक عَزَّوَجَلَّ ! तू मुझे इस के आगे रुस्वा न फ़रमा, इस की बे बसी पर रह़्म फ़रमा दे और इस बेचारे को बख़्श दे। ह़ज़रते अ़ली کَرَّمَ اللّٰہُ تَعَالٰی وَجْہَہُ الْکَرِیْم रो रो कर मुनाजात कर रहे थे। **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ की रह़मत का दरिया जोश में आ गया और निदा आई : "ऐ अ़ली (کَرَّمَ اللّٰہُ تَعَالٰی وَجْہَہُ الْکَرِیْم) ! हम ने तुम्हारी शिकस्ता दिली के सबब इसे बख़्श दिया।" चुनान्चे उस मुर्दे पर से अ़ज़ाब उठा लिया गया। (انیسُ الْواعِظِین ص ۲۶،۲۵)

क्यूं न मुश्किल कुशा कहूं तुम को — तुम ने बिगड़ी मेरी बनाई है

صَلُّوْا عَلَی الْحَبِیْب ! صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلٰی مُحَمَّد

मुर्दों से गुफ़्तगू : प्यारे प्यारे इस्लामी भाइयो ! अमीरुल मुअमिनीन ह़ज़रते मौलाए काएनात, अ़लिय्युल मुर्तज़ा शेरे ख़ुदा کَرَّمَ اللّٰہُ تَعَالٰی وَجْہَہُ الْکَرِیْم

की अ़ज़मतो शान के क्या कहने ! **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ की अ़ता से आप رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْه अहले क़ुबूर से गुफ़्तुगू फ़रमा लिया करते थे। एक और **हिकायत** पेशे ख़िदमत है : चुनान्चे, मश्हूर ताबेई बुज़ुर्ग ह़ज़रते सय्यिदुना सईद बिन मुसय्यब رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْه फ़रमाते हैं : एक बार हम अमीरुल मुअमिनीन ह़ज़रते मौलाए काएनात, अ़लिय्युल मुर्तज़ा शेरे ख़ुदा كَرَّمَ اللّٰهُ تَعَالٰی وَجْهَهُ الْكَرِيْم के हमराह मदीनए मुनव्वरह के क़ब्रिस्तान गए। ह़ज़रते मौला अ़ली كَرَّمَ اللّٰهُ تَعَالٰی وَجْهَهُ الْكَرِيْم ने क़ब्र वालों को सलाम किया और फ़रमाया : ऐ क़ब्र वालो ! तुम अपनी ख़बर बताओगे या हम तुम्हें बताएं ? सय्यिदुना सईद बिन मुसय्यब رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْه फ़रमाते हैं कि हम ने क़ब्र से "وَعَلَيْكَ السَّلَامُ وَرَحْمَةُ اللّٰهِ وَبَرَكَاتُهٗ" की आवाज़ सुनी और कोई कहने वाला कह रहा था : **या अमीरल मुअमिनीन** ! आप ही ख़बर दीजिये कि हमारे मरने के बा'द क्या हुवा ? ह़ज़रते मौला अ़ली كَرَّمَ اللّٰهُ تَعَالٰی وَجْهَهُ الْكَرِيْم ने फ़रमाया : सुन लो ! तुम्हारे माल तक़्सीम हो गए, तुम्हारी बीवियों ने दूसरे निकाह़ कर लिये, तुम्हारी औलाद यतीमों में शामिल हो गई, जिस मकान को तुम ने बहुत मज़बूत़ बनाया था उस में तुम्हारे दुश्मन आबाद हो गए। अब तुम अपना ह़ाल सुनाओ। येह सुन कर एक क़ब्र से आवाज़ आने लगी : **या अमीरल मुअमिनीन** ! हमारे कफ़न फट कर तार तार हो गए, हमारे बाल झड़ कर मुन्तशिर हो गए,

हमारी खालें टुकड़े टुकड़े हो गईं हमारी आंखें बह कर रुख़्सारों पर आ गईं और हमारे नथनों से पीप बह रही है और हम ने जो कुछ आगे भेजा (या'नी जैसे अ़मल किये) उसी को पाया, जो कुछ पीछे छोड़ा उस में नुक़्सान हुवा। (شَرْحُ الصُّدُورص۲۰۹، ابن عَساکِرج۲۷ ص۳۹۵)

रमज़ान की रातों में खेलकूद : प्यारे प्यारे इस्लामी भाइयो ! गुज़श्ता दोनों ह़िकायात में हमारे लिये इ़ब्रत के बे शुमार **मदनी फूल** हैं। ज़िन्दा इन्सान ख़ूब फुदक्ता है मगर जब मौत का शिकार हो कर क़ब्र में उतार दिया जाता है, उस वक़्त आंखें बन्द होने के बजाए ह़क़ीक़त में खुल चुकी होती हैं। अच्छे आ'माल और राहे ख़ुदाए ज़ुल जलाल عَزَّوَجَلَّ में दिया हुवा माल तो काम आता है मगर जो कुछ धन दौलत पीछे छोड़ आता है उस में भलाई का इम्कान न होने के बराबर होता है, वुरसा से येह उम्मीद कम ही होती है कि वोह अपने मर्ह़ूम अ़ज़ीज़ की आख़िरत की बेहतरी के लिये माले कसीर ख़र्च करें, बल्कि मरने वाला अगर ह़राम व ना जाइज़ माल मसलन गुनाहों के अस्बाब जैसा कि आलाते मूसीक़ी, विडियो गेम्ज़ की दुकान, म्यूज़िक सेन्टर, सिनेमा घर, शराब ख़ाना, जूए का अड्डा, मिलावट वाले माल का धोके भरा कारोबार वग़ैरा पीछे छोड़े तो उस मरने वाले के लिये मरने के बा'द सख़्त तरीन और ना क़ाबिले तसव्वुर नुक़्सान है। **क़ब्र का भयानक मन्ज़र** नामी ह़िकायत में

रमज़ानुल मुबारक की बे हुरमती करने वाले का ख़ौफ़नाक अन्जाम पेश किया गया है इस से दर्से इब्रत ह़ासिल कीजिये। आह ! सद आह ! **रमज़ानुल मुबारक** की पाकीज़ा रातों में कई नौ जवान मह़ल्ले में क्रिकेट, फुटबॉल वग़ैरा खेल खेलते, ख़ूब शोर मचाते हैं और इस त़रह़ येह बद नसीब ख़ुद तो इबादत से मह़रूम रहते ही हैं, दूसरों के लिये भी मुसीबत का बाइस बनते हैं, न तो ख़ुद इबादत करते हैं न दूसरों को करने देते हैं। इस क़िस्म के खेल **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ की याद से ग़ाफ़िल करने वाले हैं। नेक लोग तो इन खेलों से सदा दूर ही रहते हैं, ख़ुद खेलना तो दर कनार ऐसे खेल तमाशे देखते भी नहीं बल्कि इस क़िस्म के खेलों का आंखों देखा ह़ाल (Commentary) भी नहीं सुनते।

रोज़े में वक़्त पास करने के लिये......: **बा'ज़** नादान ऐसे भी होते हैं जो रोज़ा तो रख लेते हैं मगर उन बेचारों का वक़्त "पास" नहीं होता ! लिहाज़ा वोह भी एह़तिरामे रमज़ान शरीफ़ को एक त़रफ़ रख कर ना जाइज़ कामों का सहारा ले कर वक़्त "पास" करते हैं और यूं **रमज़ान शरीफ़** में शत़रन्ज, ताश, लुड्डो, गाने बाजे और सोश्यल मीडिया के ज़रीए़ तबाहकार प्रोग्रामों वग़ैरा में मश्ग़ूल हो जाते हैं। **याद रखिये !** शत़रन्ज और ताश वग़ैरा पर किसी क़िस्म की बाज़ी या शर्त़ न भी लगाई जाए तब भी येह खेल ना जाइज़ हैं। बल्कि ताश में चूंकि जानदारों की

तस्वीरों की ता'ज़ीम भी होती है इस लिये मेरे आक़ा **आ'ला हज़रत** رَحْمَةُ اللّٰهِ تَعَالٰى عَلَيْه ने ताश खेलने को मुत़्लक़न ह़राम लिखा है। चुनान्चे फ़रमाते हैं : गन्जिफ़ा (पत्तों के ज़रीए़ खेले जाने वाले एक खेल का नाम और) ताश ह़रामे मुत़्लक़ हैं कि इन में इ़लावा लह्वो लइ़ब के तस्वीरों की ता'ज़ीम है। (फ़तावा रज़विय्या, जि. 24, स. 141)

अफ़्ज़ल इ़बादत कौन सी है ? : ऐ जन्नत के त़लब गार रोज़ादार इस्लामी भाइयो ! रमज़ानुल मुबारक के मुक़द्दस लम्ह़ात को फ़ुज़ूलिय्यात व ख़ुराफ़ात में बरबाद होने से बचाइये ! ज़िन्दगी बेह़द मुख़्तसर है इस को ग़नीमत जानिये, ताश की गड्डियों और फ़िल्मी गानों के ज़रीए़ वक़्त "पास" (बल्कि बरबाद) करने के बजाए तिलावते क़ुरआन और ज़िक्रो दुरूद में वक़्त गुज़ारने की कोशिश फ़रमाइये। भूक प्यास की शिद्दत जिस क़दर ज़ियादा मह़सूस होगी सब्र करने पर اِنْ شَآءَاللّٰه عَزَّوَجَلَّ सवाब भी उसी क़दर ज़ाइद मिलेगा। जैसा कि मन्क़ूल है : "اَفْضَلُ الْعِبَادَةِ اَحْمَزُهَا۔ या'नी अफ़्ज़ल इ़बादत वोह है जिस में मशक़्क़त ज़ियादा है।" (شرح الطيبى على مشكاة المصابيح ج ٥ ص ١٧٢٩ تحت الحديث ٢٢٦٧)

इमाम शरफ़ुद्दीन नववी عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللّٰهِ الْقَوِى फ़रमाते हैं : "इ़बादात में मशक़्क़त और ख़र्च ज़ियादा होने से सवाब और फ़ज़ीलत ज़ियादा हो जाती है।" (شرح مسلم لِلنّوَوی ج ٤ ص ١٥٢) ह़ज़रते सय्यिदुना इब्राहीम बिन अदहम

رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰی عَلَيْه का फ़रमाने मुअ़ज़्ज़म है : "दुन्या में जो नेक अ़मल जितना दुश्वार होगा क़ियामत के रोज़ नेकियों के पलड़े में उतना ही वज़्न दार होगा।" (تذکرۃ الاولیاء ص ۹۵)

रोज़े में ज़ियादा सोना : **हुज्जतुल इस्लाम** ह़ज़रते सय्यिदुना इमाम मुह़म्मद बिन मुह़म्मद बिन मुह़म्मद ग़ज़ाली عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللهِ الْوَالِى "कीमियाए सआ़दत" में फ़रमाते हैं : "रोज़ादार के लिये सुन्नत येह है कि दिन के वक़्त ज़ियादा देर न सोए बल्कि जागता रहे ताकि भूक और ज़ो'फ़ (या'नी कमज़ोरी) का असर मह़सूस हो।" (کیمیائے سعادت ج ۱ ص ۲۱۶) (अगर्चे अफ़्ज़ल कम सोना ही है फिर भी अगर किसी की ह़क़ तलफ़ी न होती हो और कोई मानेए़ शरई न हो तो ज़रूरी इबादात के इ़लावा कोई शख़्स सारा वक़्त सोया रहे तो गुनाहगार न होगा)

प्यारे प्यारे इस्लामी भाइयो ! साफ़ ज़ाहिर है कि जो दिन भर **रोज़े** में सो कर वक़्त गुज़ार दे उस को रोज़े का पता ही क्या चलेगा ? ज़रा सोचो तो सही ! **हुज्जतुल इस्लाम** ह़ज़रते सय्यिदुना इमाम मुह़म्मद ग़ज़ाली عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللهِ الْوَالِى तो ज़ियादा सोने से भी मन्अ़ फ़रमाते हैं कि इस त़रह़ भी वक़्त फ़ालतू "पास" हो जाएगा। तो जो लोग खेल तमाशों और ह़राम कामों में वक़्त बरबाद करते हैं वोह किस क़दर मह़रूम व बद नसीब हैं। इस मुबारक महीने की क़द्र कीजिये, इस का एह़तिराम बजा

लाइये, इस में ख़ुशदिली के साथ रोज़े रखिये और **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ की रिज़ा हासिल कीजिये।

ऐ हमारे प्यारे प्यारे **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ फ़ैज़ाने रमज़ान से हर मुसल्मान को मालामाल फ़रमा। इस माहे मुबारक की हमें क़द्रो मन्ज़िलत नसीब कर और इस की बे अदबी से बचा।

اٰمِين بِجاهِ النَّبِيِّ الْاَمين صَلَّى اللهُ تعالٰى عليه واٰلهٖ وسلَّم

रोज़ाना फ़िक्रे मदीना करने का इन्आम : प्यारे प्यारे इस्लामी भाइयो ! एहतिरामे **माहे रमज़ानुल मुबारक** का दिल में जज़्बा बढ़ाने, इस की ख़ूब बरकतें पाने, ढेरों नेकियां कमाने और ख़ुद को गुनाहों से बचाने के लिये तब्लीग़े क़ुरआनो सुन्नत की आ़लमगीर ग़ैर सियासी तह़रीक, **दा'वते इस्लामी** के मदनी माह़ोल को अपनाने और **आ़शिक़ाने रसूल** के साथ सुन्नतों की तरबियत के **मदनी क़ाफ़िलों** के साथ सुन्नतों भरा सफ़र फ़रमाने की सआ़दत ह़ासिल कीजिये। اِنْ شَآءَاللّٰه عَزَّوَجَلَّ वोह फ़वाइद ह़ासिल होंगे कि आप की अ़क़्ल ह़ैरान रह जाएगी। एक आ़शिक़े रसूल की रूह़ परवर "मदनी बहार" सुनिये और झूमिये : चुनान्चे, एक इस्लामी भाई को **मदनी इन्आ़मात** से प्यार था और रोज़ाना **फ़िक्रे मदीना** करने का उन का मा'मूल भी था। एक बार वोह तब्लीग़े क़ुरआनो सुन्नत की आ़लमगीर ग़ैर सियासी तह़रीक, **दा'वते इस्लामी**

के सुन्नतों की तरबियत के मदनी क़ाफ़िले में **आशिक़ाने रसूल** के साथ सफ़र पर थे। इसी दौरान उन पर बाबे करम खुल गया ! हुवा यूं कि रात जब सोए तो क़िस्मत अंगड़ाई ले कर जाग उठी, **जनाबे रिसालत मआब** صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ख़्वाब में तशरीफ़ ले आए, अभी जल्वों में गुम थे कि लबहाए मुबारका को जुम्बिश हुई और रह़मत के फूल झड़ने लगे, अल्फ़ाज़ कुछ यूं तरतीब पाए : "जो मदनी क़ाफ़िले में **रोज़ाना फ़िक्रे मदीना करते हैं मैं उन्हें अपने साथ जन्नत में ले जाऊंगा।**"

शुक्रिया क्यूंकर अदा हो आप का या मुस्त़फ़ा
है पड़ोसी ख़ुल्द में अपना बनाया शुक्रिया

(वसाइले बख़्शिश, स. 373)

صَلُّوْا عَلَى الْحَبِيْب ! صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلٰى مُحَمَّد

फ़िक्रे मदीना क्या है ? : प्यारे प्यारे इस्लामी भाइयो ! मुसल्मानों की दुन्या व आख़िरत बेहतर बनाने के लिये सुवाल नामे की सूरत में इस्लामी भाइयों के लिये 72, इस्लामी बहनों के लिये 63, दीनी त़लबा के लिये 92 और दीनी त़ालिबात के लिये 83 जब कि मदनी मुन्नों के लिये 40 नीज़ ख़ुसूसी इस्लामी भाइयों या'नी गूंगे बहरों के लिये 25 **मदनी इन्आमात** पेश किये गए हैं। **मदनी इन्आमात** का रिसाला मक्तबतुल मदीना से हदिय्यतन मिल सकता है। रोज़ाना **फ़िक्रे मदीना**

के ज़रीए उस में दिये हुए ख़ाने पुर कर के हर मदनी माह की पहली तारीख़ को अपने यहां के **दा'वते इस्लामी** के ज़िम्मेदार को जम्अ़ करवाइये। अपने गुनाहों का एह़तिसाब करने, क़ब्रो ह़श्र के बारे में ग़ौरो फ़िक्र करने और अपने अच्छे बुरे कामों का जाएज़ा लेते हुए **मदनी इन्आ़मात** का रिसाला पुर करने को **दा'वते इस्लामी** के मदनी माह़ोल में **फ़िक्रे मदीना** करना कहते हैं। आप भी रिसाला ह़ासिल कर लीजिये, अगर फ़िलह़ाल पुर नहीं करना चाहते तो न सही, इतना तो कीजिये कि वलिय्ये कामिल, आ़शिक़े रसूल, **आ'ला ह़ज़रत** इमाम अह़मद रज़ा ख़ान عَلَيْهِ رَحمَةُ الرَّحْمٰن की पच्चीसवीं शरीफ़ की निस्बत से रोज़ाना कम अज़ कम 25 सेकन्ड के लिये उस की वरक़ गर्दानी कर लीजिये। اِنْ شَآءَاللّٰه عَزَّوَجَلَّ देखने से पढ़ने और पढ़ते रहने से **फ़िक्रे मदीना** करने और इस रिसाले के ख़ाने भरने का ज़ेहन बनेगा और अगर भरने का मा'मूल बन गया तो اِنْ شَآءَاللّٰه عَزَّوَجَلَّ इस की बरकतें आप ख़ुद ही देख लेंगे।

मदनी इन्आ़मात पर करता है जो कोई अ़मल
मग़्फ़िरत कर बे ह़िसाब उस की ख़ुदाए लम यज़ल

اٰمِين بِجاہِ النَّبِيِّ الْاَمين صَلَّی اللہ تعالٰی علیہ واٰلہٖ وسلَّم

صَلُّوا عَلَی الْحَبِيب! صَلَّی اللهُ تَعَالٰی عَلٰی مُحَمَّد

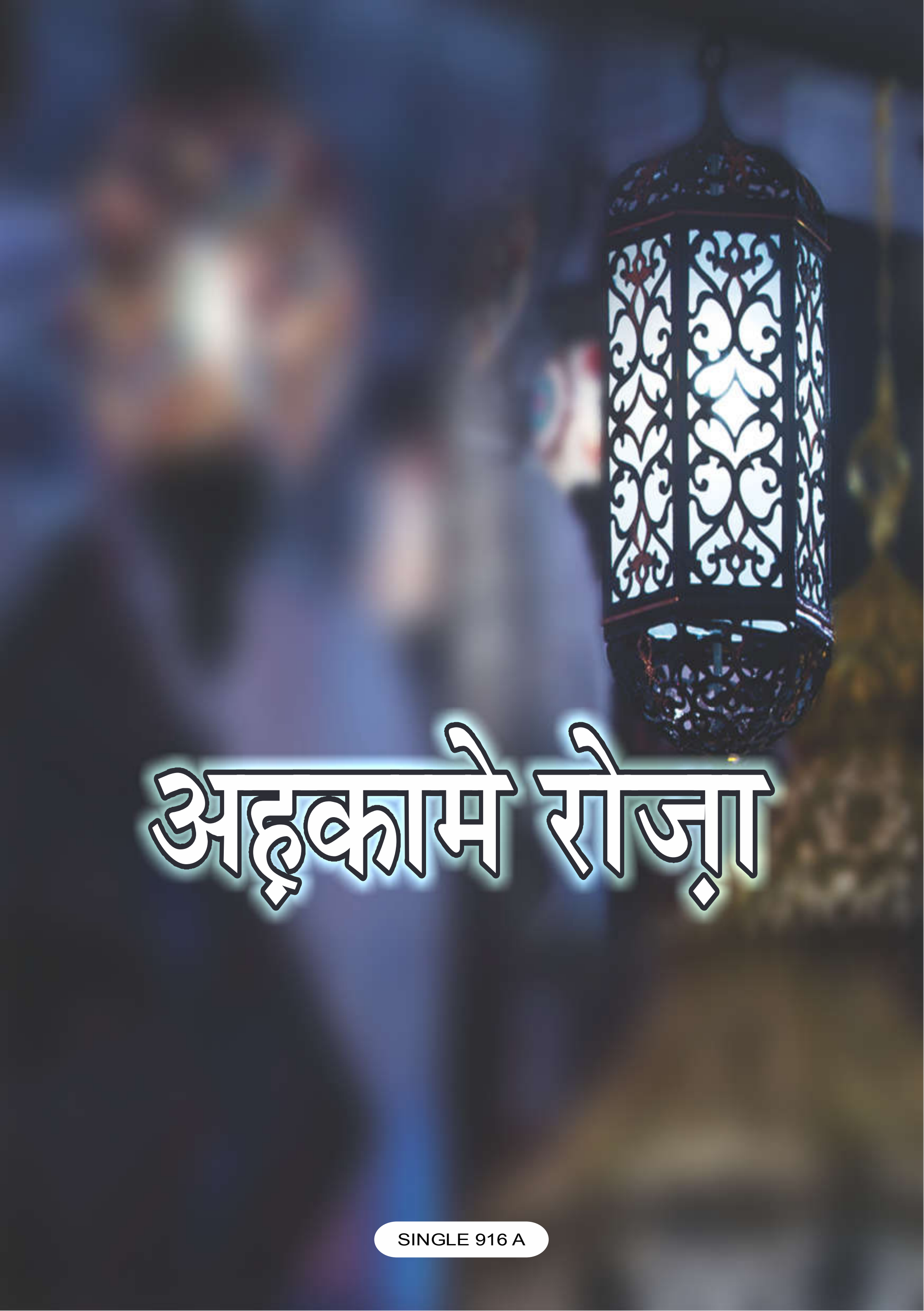

अह़कामे रोज़ा

SINGLE 916 A

फ़रमाने मुस्तफ़ा صَلَّی اللہُ تعالٰی علیہ والہٖ وسلَّم : बरोज़े क़ियामत लोगों में से मेरे क़रीब तर वोह होगा जिस ने दुन्या में मुझ पर ज़ियादा दुरूदे पाक पढ़े होंगे। (ترمذی)

मक्कतुल मुकर्रमा मदीनतुल मुनव्वरा जन्नतुल बक़ीअ़

اَلْحَمْدُ لِلّٰہِ رَبِّ الْعٰلَمِیْنَ وَالصَّلٰوۃُ وَالسَّلَامُ عَلٰی سَیِّدِ الْمُرْسَلِیْنَ
اَمَّا بَعْدُ فَاَعُوْذُ بِاللّٰہِ مِنَ الشَّیْطٰنِ الرَّجِیْمِ ؕ بِسْمِ اللّٰہِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِیْمِ ؕ

अह़कामे रोज़ा[1]

दुरूद शरीफ़ की फ़ज़ीलत : ह़ज़रते सय्यिदुना शैख़ अह़मद बिन मन्सूर عَلَیْہِ رَحْمَۃُ اللّٰہِ الْغَفُوْر जब फ़ौत हुए तो अहले शीराज़ में से किसी ने ख़्वाब में देखा कि सर पर मोतियों वाला ताज सजाए, बेहतरीन ह़ुल्ला (या'नी जन्नती जोड़ा) ज़ैबे तन किये वोह शीराज़ की जामेअ़ मस्जिद की मेह़राब में खड़े हैं। ख़्वाब देखने वाले ने ह़ाल दरयाफ़्त किया तो फ़रमाया : "**अल्लाह तआ़ला** ने मुझे बख़्शा, करम फ़रमाया और ताज पहना कर जन्नत में दाख़िल किया।" पूछा : किस सबब से ? फ़रमाया : "मैं ताजदारे मदीना صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم पर कसरत से दुरूदे पाक पढ़ा करता था येही अ़मल काम आ गया।"

(القولُ البَدِیع ص۲٥٤)

صَلُّوْا عَلَی الْحَبِیْب ! صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلٰی مُحَمَّد

1 : फ़ैज़ाने सुन्नत में हर जगह मसाइल फ़िक़्हे ह़नफ़ी के मुत़ाबिक़ दिये गए हैं। लिहाज़ा शाफ़ेई, मालिकी और ह़म्बली इस्लामी भाई फ़िक़्ही मसाइल के मुआ़मले में अपने अपने उ़लमाए किराम से रुजूअ़ करें।

अल्लाह तबारक व तआ़ला का कितना बड़ा करम है कि उस ने हम पर **माहे रमज़ानुल मुबारक** के रोज़े फ़र्ज़ कर के हमारे लिये सामाने तक़्वा फ़राहम किया। **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ पारह 2 **सूरतुल बक़रह** की आयत नम्बर 183 ता 184 में इर्शाद फ़रमाता है :

يٰۤاَيُّهَا الَّذِيْنَ اٰمَنُوْا كُتِبَ عَلَيْكُمُ الصِّيَامُ كَمَا كُتِبَ عَلَى الَّذِيْنَ مِنْ قَبْلِكُمْ لَعَلَّكُمْ تَتَّقُوْنَ ﴿۱۸۳﴾ اَيَّامًا مَّعْدُوْدٰتٍ ؕ فَمَنْ كَانَ مِنْكُمْ مَّرِيْضًا اَوْ عَلٰى سَفَرٍ فَعِدَّةٌ مِّنْ اَيَّامٍ اُخَرَ ؕ وَعَلَى الَّذِيْنَ يُطِيْقُوْنَهٗ فِدْيَةٌ طَعَامُ مِسْكِيْنٍ ؕ فَمَنْ تَطَوَّعَ خَيْرًا فَهُوَ خَيْرٌ لَّهٗ ؕ وَاَنْ تَصُوْمُوْا خَيْرٌ لَّكُمْ اِنْ كُنْتُمْ تَعْلَمُوْنَ ﴿۱۸۴﴾

तरजमए कन्ज़ुल ईमान : ऐ ईमान वालो ! तुम पर रोज़े फ़र्ज़ किये गए जैसे अगलों पर फ़र्ज़ हुए थे कि कहीं तुम्हें परहेज़ गारी मिले, गिनती के दिन हैं तो तुम में जो कोई बीमार या सफ़र में हो तो उतने रोज़े और दिनों में और जिन्हें इस की त़ाक़त न हो वोह बदले में एक मिस्कीन का खाना फिर जो अपनी त़रफ़ से नेकी ज़ियादा करे तो वोह उस के लिये बेहतर है और रोज़ा रखना तुम्हारे लिये ज़ियादा भला है अगर तुम जानो।

रोज़ा बड़ी पुरानी इबादत है : आयते करीमा के इब्तिदाई ह़िस्से के तह़्त **"तफ़्सीरे ख़ाज़िन"** में है : तुम से पहले लोगों से मुराद येह है : ह़ज़रते सय्यिदुना **आदम सफ़िय्युल्लाह** عَلٰى نَبِيِّنَا وَعَلَيْهِ الصَّلٰوةُ وَالسَّلَام से

ह़ज़रते सय्यिदुना ईसा **रूहुल्लाह** عَلٰی نَبِیِّنَا وَعَلَیْہِ الصَّلٰوۃُ وَالسَّلَام तक जितने अम्बियाए किराम عَلَيْهِمُ الصَّلٰوةُ وَالسَّلَام तशरीफ़ लाए और उन की उम्मतें आईं उन पर रोज़े फ़र्ज़ होते चले आए हैं (मगर उस की सूरत हमारे रोज़ों से मुख़्तलिफ़ थी)। मत़लब येह है कि रोज़ा बड़ी पुरानी इ़बादत है और गुज़श्ता उम्मतों में कोई उम्मत ऐसी नहीं गुज़री जिस पर **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ ने तुम्हारी त़रह़ रोज़े फ़र्ज़ न किये हों। (تفسیرِ خازن ج۱ ص۱۱۹ مُلَخَّصاً) और "तफ़्सीरे अ़ज़ीज़ी" में है : ह़ज़रते सय्यिदुना **आदम सफ़िय्युल्लाह** عَلٰی نَبِیِّنَا وَعَلَیْہِ الصَّلٰوۃُ وَالسَّلَام पर हर महीने के अय्यामे बीज़ (या'नी चांद की 13, 14, 15 तारीख़) के तीन रोज़े फ़र्ज़ थे। और यहूद (या'नी ह़ज़रते सय्यिदुना मूसा **कलीमुल्लाह** عَلٰی نَبِیِّنَا وَعَلَیْہِ الصَّلٰوۃُ وَالسَّلَام की क़ौम) पर यौमे आ़शूरा (या'नी **10** मुह़र्रमुल ह़राम के दिन) और हर हफ़्ते में सनीचर के दिन (Saturday) का और कुछ और दिनों के रोज़े फ़र्ज़ थे और नसारा पर माहे रमज़ान के रोज़े फ़र्ज़ थे। (تفسیرِ عزیزی ج۱ ص۷۷۱)

रोज़े का मक़्सद : मक्तबतुल मदीना की मत़्बूआ़ **"तफ़्सीरे सिरात़ुल जिनान"** जिल्द 1 सफ़ह़ा 290 पर है : "आयत के आख़िर में बताया गया कि रोज़े का मक़्सद तक़्वा व परहेज़ गारी का ह़ुसूल है। रोज़े में चूंकि नफ़्स पर सख़्ती की जाती है और खाने पीने की ह़लाल चीज़ों से भी रोक दिया जाता है तो इस से अपनी ख़्वाहिशात पर क़ाबू

पाने की मश्क़ (Practice) होती है जिस से ज़ब्ते नफ़्स (नफ़्स पर क़ाबू) और ह़राम से बचने पर क़ुव्वत ह़ासिल होती है और येही ज़ब्ते नफ़्स और ख़्वाहिशात पर क़ाबू वोह बुन्यादी चीज़ है जिस के ज़रीए आदमी गुनाहों से रुकता है।"

रोज़ा किस पर फ़र्ज़ है : तौह़ीद व रिसालत का इक़रार करने और तमाम ज़रूरिय्याते दीन पर ईमान लाने के बा'द जिस त़रह़ हर मुसल्मान पर नमाज़ फ़र्ज़ क़रार दी गई है इसी त़रह़ **रमज़ान शरीफ़ के रोज़े** भी हर मुसल्मान (मर्द व औ़रत) आ़क़िल व बालिग़ पर **फ़र्ज़** हैं। **"दुर्रे मुख़्तार"** में है : रोज़े 10 शा'बानुल मुअ़ज़्ज़म 2 सि.हि. को फ़र्ज़ हुए।

(دُرِّمُختار و رَدُّالْمُحتار ج۳ص۳۸۳)

रोज़ा फ़र्ज़ होने की वज्ह : इस्लाम में अक्सर आ'माल किसी न किसी रूह़ परवर वाक़िए की याद ताज़ा करने के लिये मुक़र्रर किये गए हैं। मसलन **सफ़ा व मर्वह** के दरमियान ह़ाजियों की सअ़्य ह़ज़रते सय्यिदतुना **हाजिरा** رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہَا की यादगार है। आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہَا अपने लख़्ते जिगर ह़ज़रते सय्यिदुना **इस्माईल ज़बीहुल्लाह** عَلٰی نَبِیِّنَا وَعَلَیْہِ الصَّلٰوۃُ وَالسَّلَام के लिये पानी तलाश करने के लिये इन दोनों पहाड़ों के दरमियान **सात बार** चली और दौड़ी थीं। **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ को ह़ज़रते सय्यिदतुना हाजिरा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہَا की येह अदा पसन्द आ गई,

लिहाज़ा इसी **अदाए हाजिरा** رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْھَا को **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ ने बाक़ी रखते हुए **ह़ाजियों** और **उ़म्रह** करने वालों के लिये **सफ़ा व मर्वह** की सअ्य वाजिब फ़रमा दी। इसी त़रह़ **माहे रमज़ानुल मुबारक** में से कुछ दिन हमारे प्यारे सरकार, मक्के मदीने के ताजदार صَلَّى اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने **ग़ारे ह़िरा** में गुज़ारे थे, इस दौरान आप صَلَّى اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم दिन को खाने से परहेज़ करते और रात को **ज़िक्रुल्लाह** عَزَّوَجَلَّ में मश्ग़ूल रहते थे तो **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ ने उन दिनों की याद ताज़ा करने के लिये रोज़े फ़र्ज़ किये ताकि उस के मह़बूब صَلَّى اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم की सुन्नत क़ाइम रहे।

"नबी" के तीन हुरूफ़ की निस्बत से अम्बियाए किराम عَلَیْھِمُ السَّلَام के रोज़ों से मुतअ़ल्लिक़ 3 फ़रामीने मुस्त़फ़ा صَلَّى اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم

﴾1﴿ (ह़ज़रते) **आदम सफ़िय्युल्लाह** (عَلٰی نَبِیِّنَا وَعَلَیْہِ الصَّلٰوۃُ وَالسَّلَام) ने (चांद की) 13, 14, 15 तारीख़ के रोज़े रखे। (کنز العُمّال ج۸ص۲۵۸ حدیث۲۴۱۸۸)

﴾2﴿ صَامَ نُوْحٌ الدَّھْرَ اِلَّا یَوْمَ الْفِطْرِ وَیَوْمَ الْاَضْحٰی۔ या'नी (ह़ज़रते) **नूह़ नजिय्युल्लाह** (عَلٰی نَبِیِّنَا وَعَلَیْہِ الصَّلٰوۃُ وَالسَّلَام) ईदुल फ़ित्र और ईदुल अज़्ह़ा के इलावा हमेशा रोज़ा रखते थे। (ابن ماجہ ج۲ ص ۳۳۳ حدیث ۱۷۱۴)

﴾3﴿ (ह़ज़रते) **दावूद** (عَلٰی نَبِیِّنَا وَعَلَیْہِ الصَّلٰوۃُ وَالسَّلَام) एक दिन छोड़ कर एक दिन रोज़ा रखते थे। (مسلم ص ۵۸۴ حدیث ۱۱۵۹) और (ह़ज़रते) **सुलैमान** (عَلٰی نَبِیِّنَا وَعَلَیْہِ الصَّلٰوۃُ وَالسَّلَام) तीन

दिन महीने के शुरूअ़ में, तीन दिन दरमियान में और तीन दिन आख़िर में (या'नी इस तरतीब से महीने में 9 दिन) **रोज़ा** रखा करते थे। और ह़ज़रते **ईसा रूहुल्लाह** عَلَيْهِ الصَّلٰوةُ وَالسَّلَام हमेशा रोज़ा रखते थे कभी न छोड़ते थे।

(ابنِ عَساکِر ج٢٤ ص٤٨)

रोज़ादार का ईमान कितना पुख़्ता है ! : प्यारे प्यारे इस्लामी भाइयो ! सख़्त गरमी है, प्यास से ह़ल्क़ सूख रहा है, होंट ख़ुश्क हो रहे हैं, पानी मौजूद है मगर रोज़ादार उस की त़रफ़ देखता तक नहीं, खाना मौजूद है भूक की शिद्दत से ह़ालत दिगर गूं है मगर वोह खाने की त़रफ़ हाथ तक नहीं बढ़ाता। आप अन्दाज़ा फ़रमाइये ! इस मुसल्मान का ख़ुदाए रह़मान عَزَّوَجَلَّ पर कितना **पुख़्ता ईमान** है क्यूं कि वोह जानता है कि इस की ह़रकत सारी दुन्या से तो छुप सकती है मगर **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ से पोशीदा नहीं रह सकती। **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ पर इस का येह यक़ीने कामिल रोज़े का अ़मली नतीजा है, क्यूं कि दूसरी इबादतें किसी न किसी ज़ाहिरी ह़रकत से अदा की जाती हैं मगर रोज़े का तअ़ल्लुक़ बात़िन से है, इस का ह़ाल **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ के सिवा कोई नहीं जानता अगर वोह छुप कर खा पी ले तब भी लोग तो येही समझते रहेंगे कि येह रोज़ादार है, मगर मह़्ज़ ख़ौफ़े ख़ुदा عَزَّوَجَلَّ के बाइस वोह खाने पीने से अपने आप को बचा रहा है।

बच्चे को कब रोज़ा रखवाया जाए ? : मेरे आक़ा आ'ला ह़ज़रत इमामे अहले सुन्नत मुजद्दिदे दीनो मिल्लत मौलाना शाह इमाम अह़मद रज़ा ख़ान عَلَيْهِ رَحمَةُ الرَّحْمٰن फ़रमाते हैं : "बच्चा जैसे ही आठवें साल में क़दम रखे (उस के) वली (या'नी सर परस्त) पर लाज़िम है कि उसे नमाज़ रोजे़ का हुक्म दे और जब ग्यारहवां साल शुरूअ़ हो तो वली (या'नी सर परस्त) पर वाजिब है कि सौमो सलात (नमाज़ न पढ़ने और रोज़ा न रखने) पर मारे बशर्ते़ कि रोजे़ की त़ाक़त हो और रोज़ा ज़रर (या'नी नुक़्सान) न करे।" (फ़तावा रज़विय्या, जि. 10, स. 345) फ़ुक़हाए किराम رَحِمَهُمُ اللّٰهُ تَعَالٰی फ़रमाते हैं : बच्चे की उ़म्र दस साल की हो जाए और (ग्यारहवें में क़दम रख दे और) उस में **रोज़ा** रखने की त़ाक़त हो तो उस से **रमज़ानुल मुबारक** में **रोज़ा** रखवाया जाए। अगर पूरी त़ाक़त होने के बा वुजूद न रखे तो मार कर रखवाइये अगर रख कर तोड़ दिया तो क़ज़ा का हुक्म न देंगे और नमाज़ तोड़ दे तो फिर पढ़वाइये।

(رَدُّالْمُحْتَار ج۳ ص٤٤٢)

आ'ला ह़ज़रत को वालिद साह़िब ने ख़्वाब में फ़रमाया

(ह़िकायत) : "**मल्फ़ूज़ाते आ'ला ह़ज़रत**" सफ़ह़ा **206** पर मेरे आक़ा **आ'ला ह़ज़रत** رَحْمَةُ اللّٰهِ تَعَالٰی عَلَيْه अपना ख़्वाब इर्शाद फ़रमाते हैं : अभी चन्द साल हुए माहे रजब में ह़ज़रत वालिदे माजिद رَحْمَةُ اللّٰهِ تَعَالٰی عَلَيْه

ख़्वाब में तशरीफ़ लाए और मुझ से फ़रमाया : "अब की रमज़ान में मरज़ शदीद होगा रोज़ा न छोड़ना।" वैसा ही हुवा और हर चन्द त़बीब वग़ैरा ने कहा (मगर) मैं ने بِحَمْدِاللّٰه تَعَالٰی रोज़ा न छोड़ा और इसी की बरकत ने بِفَضْلِهٖ تَعَالٰی शिफ़ा दी कि ह़दीस में इर्शाद हुवा है : **صُوْمُوْا تَصِحُّوْا** या'नी **रोज़ा** रखो तन्दुरुस्त हो जाओगे। **(مُعجَم اَوسط ج٦ ص١٤٧ حديث ٨٣١٢)**

रोज़े से सिह़्ह़त मिलती है : अमीरुल मुअमिनीन ह़ज़रते मौलाए काएनात, अ़लिय्युल मुर्तज़ा शेरे ख़ुदा كَرَّمَ اللّٰهُ تَعَالٰى وَجْهَهُ الْكَرِيْم से मरवी है, **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ के प्यारे रसूल, रसूले मक़्बूल, सय्यिदह आमिना رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْهَا के गुलशन के महक्ते फूल صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم का फ़रमाने सिह़्ह़त निशान है : "बेशक **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ ने बनी इसराईल के एक नबी عَلَيْهِ السَّلَام की त़रफ़ वह़्य फ़रमाई कि आप अपनी क़ौम को ख़बर दीजिये कि जो भी बन्दा मेरी रिज़ा के लिये **एक दिन का रोज़ा** रखता है तो मैं उस के **जिस्म को सिह़्ह़त** भी इनायत फ़रमाता हूं और उस को अ़ज़ीम अज्र भी दूंगा।" **(شُعَبُ الایمان ج٣ ص٤١٢ حديث٣٩٢٣)**

मे'दे का वरम : प्यारे प्यारे इस्लामी भाइयो ! اَلْحَمْدُ لِلّٰه عَزَّوَجَلَّ अह़ादीसे मुबारका से मुस्तफ़ाद हुवा कि **रोज़ा** अज्रो सवाब के साथ साथ ह़ुसूले **सिह़्ह़त** का भी ज़रीआ़ है। अब तो साइन्स दान भी अपनी तह़क़ीक़ात में इस ह़क़ीक़त को तस्लीम करने लगे हैं। जैसा कि ऑक्सफ़ोर्ड

यूनीवर्सिटी का प्रोफ़ेसर मूर पॉलिड (MOORE PALID) कहता है : "मैं इस्लामी उ़लूम पढ़ रहा था जब रोज़ों के बारे में पढ़ा तो उछल पड़ा कि इस्लाम ने अपने मानने वालों को कैसा अ़ज़ीमुश्शान नुस्ख़ा दिया है ! मुझे भी शौक़ हुवा, लिहाज़ा मैं ने मुसल्मानों की त़र्ज़ पर रोज़े रखने शुरूअ़ कर दिये। अ़र्सए दराज़ से मेरे **मे'दे पर वरम** था, कुछ ही दिनों के बा'द मुझे तक्लीफ़ में कमी मह़सूस हुई, मैं रोज़े रखता रहा यहां तक कि एक महीने में मेरा मरज़ बिल्कुल ख़त्म हो गया !"

ह़ैरत अंगेज़ इन्किशाफ़ात : **हॉलेन्ड** का पादरी एल्फ़ गाल (ALF GAAL) कहता है : मैं ने **शूगर, दिल** और **मे'दे** के मरीज़ों को मुसल्सल **30 दिन रोज़े** रखवाए, नतीजतन **शूगर** वालों की शूगर कन्ट्रोल हो गई, **दिल** के मरीज़ों की घबराहट और सांस का फूलना कम हुवा और **मे'दे** के मरीज़ों को सब से ज़ियादा फ़ाएदा हुवा। एक अंग्रेज़ माहिरे नफ़्सियात सिग्मन्ड फ़्राईड (Sigmund Freud) का बयान है, रोज़े से जिस्मानी खिचाव, ज़ेहनी डिप्रेशन और नफ़्सियाती अमराज़ का ख़ातिमा होता है।

डॉक्टरों की तह़क़ीक़ाती टीम : एक अख़्बारी रिपोर्ट के मुत़ाबिक़ जर्मनी, इंग्लेन्ड और अमरीका के माहिर डॉक्टरों की तह़क़ीक़ाती टीम **ने रमज़ानुल मुबारक** में जाएज़े (Survey) के बा'द येह रिपोर्ट पेश की :

चूंकि मुसल्मान नमाज़ पढ़ते और **रमज़ानुल मुबारक** में इस की ज़ियादा पाबन्दी करते हैं इस लिये वुज़ू करने से नाक, कान और गले के अमराज़ में कमी वाक़ेअ़ हो जाती है, नीज़ मुसल्मान रोज़े के बाइ़स कम खाते हैं लिहाज़ा मे'दे, जिगर, दिल और आ'साब (या'नी पठ्ठों) के अमराज़ में कम मुब्तला होते हैं।

ख़ूब डट कर खाने से बीमारियां पैदा होती हैं : प्यारे प्यारे इस्लामी भाइयो ! फ़ी नफ़्सिही **रोज़े** से कोई बीमार नहीं होता बल्कि सह़री व इफ़्त़ारी में बे एह़तियात़ियों और बद परहेज़ियों के सबब नीज़ दोनों वक़्त ख़ूब मुरग़्ग़न (या'नी तेल, घी वाली) और तली हुई ग़िज़ाओं के इस्ति'माल और रात भर वक़्तन फ़ वक़्तन खाते पीते रहने से रोज़ादार बीमार हो जाता है, लिहाज़ा सह़री और इफ़्त़ार के वक़्त खाने पीने में एह़तियात़ बरत़नी चाहिये, रात के दौरान पेट में ग़िज़ा का इतना ज़ियादा भी ज़ख़ीरा न कर लिया जाए कि दिन भर डकारें आती रहें और रोज़े में भूक प्यास का एह़सास ही न रहे, अगर भूक प्यास का एह़सास ही न रहा तो फिर रोज़े का लुत़्फ़ ही क्या है ! देखा जाए तो एक त़रह़ से **रोज़े** का मज़ा ही इस बात में है कि सख़्त गरमी हो, शिद्दते प्यास से लब सूख गए हों और भूक से ख़ूब निढाल हो चुके हों ऐसे में काश ! **मदीनए मुनव्वरह** زَادَهَا اللّٰهُ شَرَفًا وَّتَعْظِيْمًا की मीठी मीठी गरमी और ठन्डी ठन्डी

धूप की याद ताज़ा हो और ऐ काश ! करबला के तपते हुए सह़रा और गुलिस्ताने नुबुव्वत के महक्ते हुए नौ शिगुफ़्ता फूलों, तीन दिन की भूक प्यास से तड़पते बिलक्ते "ह़क़ीक़ी मदनी मुन्नों" और शहन्शाहे मदीना, सुरूरे क़ल्बो सीना صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰی عَلَیْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم के भूके प्यासे मज़्लूम शहज़ादों की याद तड़पाने लगे, और जिस वक़्त भूक प्यास कुछ ज़ियादा ही सताए उस वक़्त तस्लीमो रिज़ा के पैकर, मदीने के ताजवर, नबियों के सरवर, मह़बूबे दावर صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰی عَلَیْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم के शिकमे अत़्हर पर बंधे हुए बा मुक़द्दर पथ्थर भी याद आ जाएं तो क्या कहने ! लिहाज़ा **प्यारे प्यारे इस्लामी भाइयो !** वाक़ेई रोज़े तो ऐसे होने चाहिएं कि हम अपने आक़ाओं और सरकारों की ह़सीन यादों में गुम हो जाएं।

कैसे आक़ाओं का हूं बन्दा रज़ा

बोलबाले मेरी सरकारों के

(ह़दाइक़े बख़्शिश शरीफ़, स. 360)

बिग़ैर ऑपरेशन के विलादत हो गई : प्यारे प्यारे इस्लामी भाइयो ! रोज़े की नूरानिय्यत और रूह़ानिय्यत पाने और मदनी ज़ेहन बनाने के लिये तब्लीग़े क़ुरआनो सुन्नत की आ़लमगीर ग़ैर सियासी तह़रीक **दा'वते इस्लामी** के मदनी माह़ोल से वाबस्ता हो जाइये और सुन्नतों की तरबियत के मदनी क़ाफ़िलों में आ़शिक़ाने रसूल के साथ

सुन्नतों भरे सफ़र की सआ़दत ह़ासिल कीजिये। سُبْحٰنَ اللّٰه عَزَّوَجَلَّ ! दा'वते इस्लामी के मदनी माह़ोल, सुन्नतों भरे इज्तिमाअ़ात और मदनी क़ाफ़िलों की भी क्या ख़ूब मदनी बहारें और बरकतें हैं ! ग़ालिबन 1998 सि.ई. का वाक़िआ़ है, एक इस्लामी भाई की अहलिया उम्मीद से थीं, दिन भी "पूरे" हो गए थे, डोक्टर का कहना था कि शायद **ऑपरेशन** करना पड़ेगा। तब्लीग़े क़ुरआनो सुन्नत की आ़लमगीर ग़ैर सियासी तह़रीक, **दा'वते इस्लामी** का बैनल अक़्वामी **तीन रोज़ा सुन्नतों भरा इज्तिमाअ़** का वक़्त क़रीब था। इज्तिमाअ़ के बा'द सुन्नतों की तरबियत के एक माह के **मदनी क़ाफ़िले** में आ़शिक़ाने रसूल के हमराह सफ़र की उन इस्लामी भाई की निय्यत थी। इज्तिमाअ़ में ह़ाज़िरी के लिये रवानगी के वक़्त, सामाने क़ाफ़िला साथ ले कर अस्पताल पहुंचे, चूंकि ख़ानदान के दीगर अफ़राद तआ़वुन के लिये मौजूद थे, अहलियए मोह़तरमा ने अश्कबार आंखों से उन्हें सुन्नतों भरे इज्तिमाअ़ के लिये अल वदाअ़ किया। उन का ज़ेह्न येह बना हुवा था कि अब तो बैनल अक़्वामी सुन्नतों भरे इज्तिमाअ़ और फिर वहां से एक माह के **मदनी क़ाफ़िले** में ज़रूर सफ़र करना है कि काश ! इस की बरकत से आ़फ़िय्यत के साथ विलादत हो जाए। बेचारे ग़रीब थे, उन के

पास तो **ऑपरेशन** के अख़्राजात भी नहीं थे ! बहर ह़ाल वोह ह़ाज़िर हो गए। सुन्नतों भरे इज्तिमाअ़ में ख़ूब दुआ़एं मांगीं। इज्तिमाअ़ की इख़्तितामी **रिक़्क़त अंगेज़ दुआ़** के बा'द उन्हों ने घर पर फ़ोन किया तो उन की अम्मीजान ने फ़रमाया : **मुबारक हो ! गुज़श्ता रात रब्बे काएनात** عَزَّوَجَلَّ **ने बिग़ैर ऑपरेशन के तुम्हें चांद सी मदनी मुन्नी अ़त़ा फ़रमाई है।** उन्हों ने ख़ुशी से झूमते हुए अ़र्ज़ की : अम्मीजान ! मेरे लिये क्या हुक्म है ? आ जाऊं या एक माह के लिये मदनी क़ाफ़िले का मुसाफ़िर बनूं ? अम्मीजान ने फ़रमाया : "बेटा ! बे फ़िक्र हो कर **मदनी क़ाफ़िले** में सफ़र करो।" अपनी **मदनी मुन्नी** की ज़ियारत की ह़सरत दिल में दबाए اَلْحَمْدُ لِلّٰہ عَزَّوَجَلَّ वोह एक माह के मदनी क़ाफ़िले में **आ़शिक़ाने रसूल** के साथ रवाना हो गए। اَلْحَمْدُ لِلّٰہ عَزَّوَجَلَّ मदनी क़ाफ़िले में सफ़र की निय्यत की बरकत से उन की मुश्किल आसान हो गई थी। **मदनी क़ाफ़िलों की मदनी बहारों** की बरकत के सबब घर वालों का बहुत ज़बर दस्त मदनी ज़ेहन बन गया, उन इस्लामी भाई का बयान है कि मेरे बच्चों की अम्मी का कहना है : जब आप **मदनी क़ाफ़िले** के मुसाफ़िर होते हैं मैं बच्चों समेत अपने आप को मह़फ़ूज़ तसव्वुर करती हूं।

ज़च्चा की ख़ैर हो, बच्चा बिलख़ैर हो उठिये हिम्मत करें, क़ाफ़िले में चलो
बीवी बच्चे सभी, ख़ूब पाएं ख़ुशी ख़ैरियत से रहें, क़ाफ़िले में चलो

(वसाइले बख़्शिश, स. 674, 675)

صَلُّوْا عَلَی الْحَبِیْب! صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلٰی مُحَمَّد

रोज़े की जज़ा : ह़ज़रते सय्यिदुना अबू हुरैरा رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہُ से रिवायत है कि सुल्त़ाने दो जहान, शहन्शाहे कौनो मकान, रह़मते आ़लमिय्यान صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم फ़रमाते हैं : "आदमी के हर नेक काम का बदला दस से सात सो गुना तक दिया जाता है, **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ ने फ़रमाया : اِلَّا الصَّوْمَ فَاِنَّهٗ لِیْ وَاَنَا اَجْزِیْ بِهٖ۔ या'नी सिवाए रोज़े के कि रोज़ा मेरे लिये है और इस की जज़ा मैं ख़ुद दूंगा। **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ का मज़ीद इर्शाद है : बन्दा अपनी ख़्वाहिश और खाने को सिर्फ़ मेरी वज्ह से तर्क करता है। रोज़ादार के लिये **दो ख़ुशियां** हैं, एक **इफ़्त़ार** के वक़्त और एक अपने रब عَزَّوَجَلَّ से मुलाक़ात के वक़्त, रोज़ादार के मुंह की बू **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ के नज़्दीक मुश्क से ज़ियादा पाकीज़ा है।" (مسلِم ص۵۸۰حدیث۱۱۵۱)

मज़ीद इर्शाद है : **रोज़ा** सिपर (या'नी ढाल) है और जब किसी के **रोज़े** का दिन हो तो न बेहूदा बके और न ही चीख़े, फिर अगर कोई और शख़्स इस से गालम गलोच करे या लड़ने पर आमादा हो तो कह दे : "मैं रोज़ादार हूं।" (بُخاری ج۱ص۶۲۴حدیث۱۸۹۴)

रोजे़ का ख़ुसूसी इन्आ़म : प्यारे प्यारे इस्लामी भाइयो ! बयान कर्दा अहा़दीसे मुबारका में **रोजे़** की कई ख़ुसूसिय्यात इर्शाद फ़रमाई गई हैं। कितनी प्यारी बिशारत है उस रोज़ादार के लिये जिस ने इस त़रह़ **रोज़ा** रखा जिस त़रह़ **रोज़ा** रखने का ह़क़ है। या'नी खाने पीने और जिमाअ़ से बचने के साथ साथ अपने तमाम आ'ज़ा को भी गुनाहों से बाज़ रखा तो वोह रोज़ा **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ के फ़ज़्लो करम से उस के लिये तमाम पिछले गुनाहों का कफ़्फ़ारा हो गया। और ह़दीसे मुबारक का येह फ़रमाने आ़लीशान तो ख़ास त़ौर पर क़ाबिले तवज्जोह है जैसा कि सरकारे नामदार صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم अपने परवर दगार عَزَّوَجَلَّ का फ़रमाने ख़ुश गवार सुनाते हैं : "فَاِنَّہٗ لِیْ وَاَنَا اَجْزِیْ بِہٖ" या'नी रोज़ा मेरे लिये है और इस की जज़ा मैं ख़ुद ही दूंगा। ह़दीसे क़ुदसी के इस इर्शादे पाक को बा'ज़ उ़लमाए किराम رَحِمَہُمُ اللّٰہُ السَّلَام ने "اَنَا اُجْزٰی بِہٖ" भी पढ़ा है जैसा कि **मिरआतुल मनाजीह़** वग़ैरा में है तो फिर मा'ना येह होंगे : "**रोजे़** की जज़ा मैं ख़ुद ही हूं।" سُبْحٰنَ اللّٰہِ عَزَّوَجَلَّ ! या'नी **रोज़ा** रख कर रोज़ादार बज़ाते ख़ुद **अल्लाह तबारक व तआ़ला** ही को पा लेता है।

नेक आ'माल की जज़ा जन्नत है : प्यारे प्यारे इस्लामी भाइयो ! क़ुरआने करीम में मुख़्तलिफ़ मक़ामात पर बयान हुवा है कि जो अच्छे आ'माल करेगा उसे जन्नत मिलेगी। चुनान्चे **अल्लाह तबारक**

व तआ़ला पारह 30 **सूरतुल बय्यिनह** की आयत नम्बर 7 और 8 में इर्शाद फ़रमाता है :

اِنَّ الَّذِيْنَ اٰمَنُوْا وَعَمِلُوا الصّٰلِحٰتِ ۙ اُولٰٓئِكَ هُمْ خَيْرُ الْبَرِيَّةِ ۞ جَزَآؤُهُمْ عِنْدَ رَبِّهِمْ جَنّٰتُ عَدْنٍ تَجْرِيْ مِنْ تَحْتِهَا الْاَنْهٰرُ خٰلِدِيْنَ فِيْهَاۤ اَبَدًا ؕ رَضِيَ اللّٰهُ عَنْهُمْ وَرَضُوْا عَنْهُ ؕ ذٰلِكَ لِمَنْ خَشِيَ رَبَّهٗ ۞

तरजमए कन्ज़ुल ईमान : बेशक जो ईमान लाए और अच्छे काम किये वोही तमाम मख़्लूक़ में बेहतर हैं। उन का सिला उन के रब के पास बसने के बाग़ हैं, जिन के नीचे नहरें बहें, उन में हमेशा हमेशा रहें। **अल्लाह** उन से राज़ी और वोह उस से राज़ी। येह उस के लिये है जो अपने रब से डरे।

ग़ैरे सह़ाबी के लिये "رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْهُ" कहना कैसा ? :

प्यारे प्यारे इस्लामी भाइयो ! येह बात बिल्कुल ग़लत़ है कि "رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْهُ" कहना लिखना सिर्फ़ **सह़ाबी** के नाम के साथ मख़्सूस है। पेश कर्दा आयात के इस आख़िरी हिस्से رَضِيَ اللّٰهُ عَنْهُمْ وَرَضُوْا عَنْهُ ؕ ذٰلِكَ لِمَنْ خَشِيَ رَبَّهٗ ۞ (**तरजमए कन्ज़ुल ईमान : अल्लाह** (عَزَّوَجَلَّ) उन से राज़ी और वोह उस से राज़ी, येह उस के लिये है जो अपने रब (عَزَّوَجَلَّ) से डरे) ने इस अ़वामी ग़लत़ फ़हमी को जड़ से उखाड़ दिया ! ख़ौफ़े ख़ुदा عَزَّوَجَلَّ रखने वाले हर मोमिन ख़्वाह वोह सह़ाबी हो या

ग़ैरे सह़ाबी सब के लिये येह बिशारते उ़ज़्मा इर्शाद फ़रमाई गई है कि जो भी **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ से डरने वाला है वोह رَضِیَ اللّٰہُ عَنْہُمْ وَرَضُوْا عَنْہُ के ज़ुमरे में दाख़िल है, बेशक **हर सह़ाबी और वली के लिये "**رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ**" लिखना और बोलना बिल्कुल दुरुस्त व जाइज़ है।** जिस ने ईमान के साथ सरकार صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم की ह़याते ज़ाहिरी में सरकार صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم की एक लम्ह़ा भर भी सोह़बत पाई या देखा और उस का ईमान पर ख़ातिमा हुवा वोह **सह़ाबी** है। बड़े से बड़ा वली, **सह़ाबी** के मर्तबे को नहीं पा सकता, हर **सह़ाबी** आ़दिल और जन्नती है।

मुझे मोतियों वाला चाहिये : اَلْحَمْدُ لِلّٰہ عَزَّوَجَلَّ "رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ" की बात भी ज़िम्नन ज़ेरे बह़स आ गई, अब अस्ल मौज़ूअ़ पर आते हैं : नमाज़, ह़ज, ज़कात, ग़ुरबा की इमदाद, बीमारों की इ़यादत, मसाकीन की ख़बरगीरी वग़ैरा तमाम आ'माले ख़ैर से जन्नत मिलती है, मगर **रोज़ा** वोह इ़बादत है जिस से जन्नत वाला या'नी ख़ुद मालिके ह़क़ीक़ी عَزَّوَجَلَّ ही मिल जाता है। कहते हैं : **एक** मर्तबा मह़मूद ग़ज़्नवी عَلَیْہِ رَحْمَۃُ اللّٰہِ الْقَوِی के कुछ क़ीमती मोती अपने अफ़्सरान के सामने बिखर गए, फ़रमाया : "चुन लीजिये !" और ख़ुद आगे चल दिये। थोड़ी दूर जाने के बा'द मुड़ कर देखा तो अयाज़ घोड़े पर सुवार पीछे चला आ

रहा है। पूछा : **अयाज़** ! क्या तुझे मोती नहीं चाहिएं ? अयाज़ ने अ़र्ज़ की : "आ़लीजाह ! जो मोतियों के त़ालिब थे वोह मोती चुन रहे हैं, मुझे तो मोती नहीं बल्कि मोतियों वाला चाहिये।" (بوستانِ سعدی ص ١١٠ مُلَخَّصاً)

हम रसूलुल्लाह (صَلَّى اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم) के जन्नत रसूलुल्लाह (صَلَّى اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم) की

इस सिलसिले में एक ह़दीसे मुबारक भी मुलाह़ज़ा फ़रमाइये, ह़ज़रते सय्यिदुना रबीआ़ बिन का'ब अस्लमी رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ फ़रमाते हैं : मैं रात हु़ज़ूर, सरापा नूर, फ़ैज़ गन्जूर, शाहे ग़यूर صَلَّى اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم की ख़िदमत में गुज़ारता था तो मैं आप صَلَّى اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم के पास वुज़ू का पानी और आप की ज़रूरत की चीज़ें (जैसे मिस्वाक) ले कर ह़ाज़िर हुवा तो रह़्मतुल्लिल आ़लमीन صَلَّى اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने इर्शाद फ़रमाया : سَلْ ! या'नी मांग क्या मांगता है ? मैं ने अ़र्ज़ की : اَسْئَلُكَ مُرَافَقَتَكَ فِی الْجَنَّة या'नी सरकार صَلَّى اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ! जन्नत में आप की रफ़ाक़त (या'नी पड़ोस) चाहिये। (गोया अ़र्ज़ कर रहे हैं :)

तुझ से तुझी को मांग लूं तो सब कुछ मिल जाए
सो सुवालों से येही एक सुवाल अच्छा है

(दरियाए रह़मत मज़ीद जोश में आया) और फ़रमाया : "اَوَ غَيْرَ ذٰلِكَ؟ या'नी कुछ और मांगना है ?" मैं ने अ़र्ज़ की : "बस सिर्फ़ येही।"

तुझ से तुझी को मांग कर मांग ली सारी काएनात

मुझ सा कोई गदा नहीं, तुझ सा कोई सख़ी नहीं

(जब ह़ज़रते सय्यिदुना रबीआ़ बिन का'ब अस्लमी رَضِىَ اللّٰهُ تَعَالٰى عَنْهُ जन्नत की रफ़ाक़त (पड़ोस) त़लब कर चुके और मज़ीद किसी ह़ाजत के त़लब करने से इन्कार कर दिया) तो इस पर सरकारे नामदार, बि इज़्ने परवर दगार दो आ़लम के मालिको मुख़्तार, शहन्शाहे अबरार صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया : "فَاَعِنِّىْ عَلٰى نَفْسِكَ بِكَثْرَةِ السُّجُوْدِ" या'नी अपने नफ़्स पर कस्रते सुजूद (या'नी ज़ियादा नवाफ़िल) से मेरी मदद कर। (مسلم ص٢٥٣ حديث ٤٨٩)

صَلُّوْا عَلَى الْحَبِيْب ! صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلٰى مُحَمَّد

जो चाहो मांग लो ! : سُبْحٰنَ اللّٰه ! سُبْحٰنَ اللّٰه ! سُبْحٰنَ اللّٰه ! इस ह़दीसे मुबारक ने तो ईमान ही ताज़ा कर दिया। ह़ज़रते सय्यिदुना शैख़ अ़ब्दुल ह़क़ मुह़द्दिस देहलवी عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللّٰهِ الْقَوِى फ़रमाते हैं : सरकारे मदीना صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم का बिला किसी तक़्यीद व तख़्सीस मुत़्लक़न फ़रमाना : سَلْ ؟ या'नी मांग क्या मांगता है ? इस बात को ज़ाहिर करता है कि सारे ही मुआ़मलात सरवरे काएनात, शाहे मौजूदात صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم के मुबारक हाथ में हैं, जो चाहें जिस को चाहें अपने रब عَزَّوَجَلَّ के हुक्म से अ़त़ा कर दें। अ़ल्लामा बूसीरी رَحْمَةُ اللّٰهِ تَعَالٰى عَلَيْهِ **क़सीदए बुर्दा शरीफ़** में फ़रमाते हैं :

فَاِنَّ مِنْ جُوْدِكَ الدُّنْيَا وَضَرَّتَهَا وَمِنْ عُلُوْمِكَ عِلْمَ اللَّوْحِ وَالْقَلَمِ

या'नी **या रसूलल्लाह** صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ! दुन्या और आख़िरत आप صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ही के जूदो सख़ावत का हिस्सा है और लौहो क़लम का इल्म तो आप صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم के उ़लूमे मुबारका का एक हिस्सा है।

اگر خیریت دُنیا و عُقْبٰی آرزُو داری
بدَرگاہش بیادِ ہر چہ مَن خواہی تمنّا کُن

या'नी दुन्या व आख़िरत की ख़ैर चाहते हो तो इस आस्ताने अ़र्श निशान पर आओ और जो चाहो मांग लो ! (اَشِعَّةُ اللَّمعات ج ۱ ص ٤٢٤، ٤٢٥ وغیرہ)

ख़ालिक़े कुल ने आप को मालिके कुल बना दिया
दोनों जहान दे दिये क़ब्ज़ा व इख़्तियार में

"रमज़ानुल करीम" के ग्यारह हुरूफ़ की निस्बत से रोज़े के फ़ज़ाइल से मुतअ़ल्लिक़ 11 फ़रामीने मुस्तफ़ा صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم

जन्नती दरवाज़ा : ﴾1﴿ बेशक जन्नत में एक दरवाज़ा है जिस को **रय्यान** कहा जाता है, इस से क़ियामत के दिन रोज़ादार दाख़िल होंगे इन के इलावा कोई और दाख़िल न होगा। कहा जाएगा : रोज़ेदार कहां हैं ? पस यह लोग खड़े होंगे इन के इलावा कोई और इस दरवाज़े से दाख़िल न होगा। जब

येह दाख़िल हो जाएंगे तो दरवाज़ा बन्द कर दिया जाएगा पस फिर कोई इस दरवाज़े से दाख़िल न होगा। (بُخاری ج۱ ص۶۲۵ حدیث۱۸۹۶)

साबिक़ा गुनाहों का कफ़्फ़ारा : ﴾2﴿ जिस ने रमज़ान का **रोज़ा** रखा और उस की हुदूद को पहचाना और जिस चीज़ से बचना चाहिये उस से बचा तो जो (कुछ गुनाह) पहले कर चुका है उस का कफ़्फ़ारा हो गया।

(الاحسان بترتیب صحیح ابنِ حَبّان ج۵ ص۱۸۳ حدیث۳۴۲۴)

जहन्नम से 70 साल की मसाफ़त दूर : ﴾3﴿ जिस ने **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ की राह में एक दिन का **रोज़ा** रखा **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ उस के चेहरे को जहन्नम से सत्तर साल की मसाफ़त दूर कर देगा। (بُخاری ج۲ ص۲۶۵ حدیث۲۸۴۰)

एक रोज़े की फ़ज़ीलत : ﴾4﴿ जिस ने एक दिन का रोज़ा **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ की रिज़ा ह़ासिल करने के लिये रखा, **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ उसे जहन्नम से इतना दूर कर देगा जितना कि एक कव्वा जो अपने बचपन से उड़ना शुरूअ़ करे यहां तक कि बूढ़ा हो कर मर जाए। (ابو یعلٰی ج۱ ص۳۸۳ حدیث۹۱۷)

सुर्ख़ याक़ूत का मकान : ﴾5﴿ जिस ने माहे रमज़ान का एक रोज़ा भी ख़ामोशी और सुकून से रखा उस के लिये जन्नत में एक घर सब्ज़ ज़बर जद या सुर्ख़ याक़ूत का बनाया जाएगा। (مُعجَم اَوسَط ج ۱ ص ۳۷۹ حدیث ۱۷۶۸)

जिस्म की ज़कात : ﴾6﴿ हर शै के लिये ज़कात है और जिस्म की ज़कात **रोज़ा** है और **रोज़ा** आधा सब्र है। (ابنِ ماجہ ج ۲ ص۳۴۷ حدیث۱۷۴۵)

सोना भी इबादत है : ﴾7﴿ **रोज़ादार** का सोना इबादत और इस की ख़ामोशी तस्बीह़ करना और इस की दुआ़ क़बूल और इस का अ़मल मक़्बूल होता है। (شُعَبُ الْاِيمان ج۳ ص۴۱۵ حديث۳۹۳۸)

आ'ज़ा का तस्बीह़ करना : ﴾8﴿ जो बन्दा **रोज़े** की ह़ालत में सुब्ह़ करता है, उस के लिये आस्मान के दरवाज़े खोल दिये जाते हैं और उस के आ'ज़ा **तस्बीह़** करते हैं और आस्माने दुन्या पर रहने वाले (फ़िरिश्ते) उस के लिये सूरज डूबने तक **मग़्फ़िरत** की दुआ़ करते रहते हैं। अगर वोह एक या दो रक्अ़तें पढ़ता है तो येह आस्मानों में उस के लिये नूर बन जाती हैं और **हूरे ईन** (या'नी बड़ी आंखों वाली हूरों) में से उस की बीवियां कहती हैं : ऐ **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ ! तू इस को हमारे पास भेज दे हम इस के दीदार की बहुत ज़ियादा मुश्ताक़ हैं। और अगर वोह لَا اِلٰهَ اِلَّا اللّٰه या سُبْحٰنَ اللّٰه या اَللّٰهُ اَكْبَر पढ़ता है तो सत्तर हज़ार फ़िरिश्ते उस का सवाब सूरज डूबने तक लिखते रहते हैं। (ايضاً ص۲۹۹ حديث۳۵۹۱)

जन्नती फल : ﴾9﴿ जिस को रोज़े ने खाने या पीने से रोक दिया कि जिस की उसे ख़्वाहिश थी तो **अल्लाह तआ़ला उसे जन्नती फलों** में से खिलाएगा और जन्नती शराब से सैराब करेगा। (ايضاً ص۴۱۰ حديث۳۹۱۷)

सोने का दस्तर ख़्वान : ﴾10﴿ क़ियामत वाले दिन रोज़ादारों के लिये एक **सोने का दस्तर ख़्वान** रखा जाएगा, जिस से वोह खाएंगे ह़ालां कि लोग (ह़िसाब किताब के) मुन्तज़िर होंगे। (كَنْزُ الْعُمّال ج۸ص۲۱۴ حديث۲۳۶۴۰)

सात क़िस्म के आ'माल : ﴾11﴿ "**अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ के नज़्दीक आ'माल सात क़िस्म पर हैं, दो अ़मल वाजिब करने वाले, दो अ़मलों की जज़ा उन की मिस्ल, एक अ़मल की जज़ा अपने से दस गुना, एक अ़मल की सात सो गुना तक और एक अ़मल ऐसा है कि उस का सवाब **अल्लाह तआ़ला** के इलावा कोई नहीं जानता। पस जो दो वाजिब करने वाले हैं ﴾1﴿ वोह शख़्स जो **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ से इस ह़ाल में मिला कि **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ की इबादत इख़्लास के साथ इस त़रह़ की, कि किसी को उस का शरीक न ठहराया तो उस के लिये जन्नत वाजिब हो गई ﴾2﴿ और जो **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ से इस ह़ाल में मिला कि उस के साथ किसी को शरीक ठहराया तो उस के लिये दोज़ख़ वाजिब हो गई। और जिस ने एक गुनाह किया तो उस की मिस्ल (या'नी एक ही गुनाह की) जज़ा पाएगा और जिस ने सिर्फ़ नेकी का इरादा किया तो एक नेकी की जज़ा पाएगा। और जिस ने नेकी कर ली तो वोह दस (नेकियों का अज्र) पाएगा और जिस ने **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ की राह में अपना माल ख़र्च किया तो उस के ख़र्च किये हुए एक दिरहम को सात सो दिरहम और एक दीनार को सात सो दीनार में बढ़ा दिया जाएगा और **रोज़ा अल्लाह तआ़ला** के लिये है इस के रखने वाले का सवाब **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ के इलावा कोई नहीं जानता।"

(شُعَبُ الایمان ج۳ص۲۹۸حدیث۳۵۸۹)

प्यारे प्यारे इस्लामी भाइयो ! जिस का ईमान पर ख़ातिमा होगा वोह या तो **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ की रह़मत से बे ह़िसाब या مَعَاذَاللّٰہ عَزَّوَجَلَّ गुनाहों का अ़ज़ाब हुवा तब भी बिल आख़िर यक़ीनन दाख़िले जन्नत होगा। और जिस का (مَعَاذَاللّٰہ عَزَّوَجَلَّ) ख़ातिमा कुफ़्र पर हुवा वोह हमेशा हमेशा दोज़ख़ में रहेगा। जिस ने एक गुनाह किया उस को एक ही गुनाह का बदला मिलेगा। **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ की रह़मत के क़ुरबान ! सिर्फ़ **नेकी की निय्यत** करने पर एक नेकी का सवाब और अगर नेकी कर ली तो सवाब दस गुना, राहे ख़ुदा عَزَّوَجَلَّ में ख़र्च करने वाले को सात सो गुना और **रोज़ादार** की भी कितनी ज़बर दस्त अ़ज़मत है कि इस के सवाब को **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ के सिवा कोई नहीं जानता।

बे ह़िसाब अज्र : ह़ज़रते सय्यिदुना का'बुल अह़बार رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ फ़रमाते हैं : "बरोज़े क़ियामत एक मुनादी इस त़रह़ निदा करेगा, हर बोने वाले (या'नी अ़मल करने वाले) को उस की खेती (या'नी अ़मल) के बराबर अज्र दिया जाएगा सिवाए क़ुरआन वालों (या'नी आ़लिमे क़ुरआन) और रोज़ादारों के कि इन्हें बे ह़दो **बे ह़िसाब अज्र** दिया जाएगा।"

(شُعَبُ الْاِیمان ج۳ ص۴۱۳ حدیث۳۹۲۸)

यरक़ान से सिह़्ह़त मिल गई : रोज़ों की बरकतों को दोबाला करने और अपने बात़िन में इ़ल्मे दीन से उजाला करने के लिये तब्लीग़े क़ुरआनो

सुन्नत की आ़लमगीर ग़ैर सियासी तह़रीक, **दा'वते इस्लामी** के **मदनी माह़ोल** को अपना लीजिये। अपनी इस्लाह़ की ख़ात़िर **मक्तबतुल मदीना** से **मदनी इन्आ़मात** का रिसाला ले कर पुर कर के हर मदनी माह की पहली तारीख़ को अपने यहां के **दा'वते इस्लामी** के ज़िम्मेदार को जम्अ़ करवाइये और सुन्नतों की तरबियत के **मदनी क़ाफ़िलों** में आ़शिक़ाने रसूल के साथ सुन्नतों भरा सफ़र करना अपना मा'मूल बनाइये, **मदनी क़ाफ़िले** की भी क्या ख़ूब **मदनी बहारें** हैं! 1994 सि.ई. की बात है, ज़मज़म नगर के एक इस्लामी भाई के बच्चों की अम्मी का **यरक़ान** काफ़ी बढ़ चुका था और वोह अपने मयके में ज़ेरे इलाज थीं। उन इस्लामी भाई ने **63 दिन के लिये मदनी क़ाफ़िले** में सफ़र इख़्तियार किया और इस ज़िम्न में तशरीफ़ लाए, फ़ोन पर घर पर राबित़ा किया, त़बीअ़त काफ़ी तश्वीश नाक थी, बिलोरबिन (Bilirubin) तश्वीश नाक ह़द तक बढ़ चुका था तक़्रीबन 25 ग्लूकोज़ की ड्रिपें लगाने के बा वुजूद ख़ात़िर ख़्वाह फ़ाएदा न हुवा था। इन्हों ने उन को तसल्ली देते हुए कहा : اَلْحَمْدُ لِلّٰہ عَزَّوَجَلَّ मैं **मदनी क़ाफ़िले का मुसाफ़िर** हूं, आ़शिक़ाने रसूल की सोह़बतें मुयस्सर हैं, اِنْ شَآءَاللّٰہ عَزَّوَجَلَّ मदनी क़ाफ़िले की बरकत से सब बेहतर हो जाएगा। इस के बा'द भी उन्हों ने बराबर राबित़ा रखा, اَلْحَمْدُ لِلّٰہ عَزَّوَجَلَّ रोज़ बरोज़ सिह़्ह़त बेहतर होती जा रही थी। पांचवें दिन आगे सफ़र दरपेश था, उन्हों ने जब फ़ोन किया तो उन्हें

येह ख़बरे फ़रह़त असर सुनने को मिली : اَلْحَمْدُ لِلّٰه عَزَّوَجَلَّ **बिलोरबिन की रिपोर्ट नॉर्मल आ गई है और डॉक्टर ने इत़्मीनान का इज़्हार किया है। अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ का शुक्र अदा करते हुए वोह ख़ुशी ख़ुशी **आ़शिक़ाने रसूल** के हमराह मदनी क़ाफ़िले में मज़ीद आगे सफ़र पर रवाना हो गए।

صَلُّوْا عَلَى الْحَبِيْب! صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلٰى مُحَمَّد

प्यारे प्यारे इस्लामी भाइयो ! जहां रोज़ा रखने के बे शुमार फ़ज़ाइल हैं वहीं बिग़ैर किसी सह़ीह़ मजबूरी के **रमज़ानुल मुबारक** का **रोज़ा** तर्क करने पर सख़्त वई़दें भी हैं। **रमज़ान शरीफ़** का एक भी रोज़ा जो बिला किसी उ़ज़्रे शरई जान बूझ कर ज़ाएअ़ कर दे तो अब उ़म्र भर भी अगर रोज़े रखता रहे तब भी उस छोड़े हुए एक रोज़े की फ़ज़ीलत नहीं पा सकता। चुनान्चे

एक रोज़ा छोड़ने का नुक़्सान : ह़ज़रते सय्यिदुना अबू हुरैरा رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰى عَنْهُ से रिवायत है, सरकारे वाला तबार, बि इज़्ने परवर दगार दो जहां के मालिको मुख़्तार صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم का फ़रमान है : "जिस ने **रमज़ान** के एक दिन का **रोज़ा** बिग़ैर रुख़्सत व बिग़ैर मरज़ इफ़्त़ार किया (या'नी न रखा) तो ज़माने भर का **रोज़ा** भी उस की क़ज़ा नहीं हो सकता अगर्चे बा'द में रख भी ले।" (ترمذی ج۲ ص۱۷۵ حدیث۷۲۳) या'नी वोह फ़ज़ीलत जो

रमज़ानुल मुबारक में रोज़ा रखने की थी अब किसी त़रह़ नहीं पा सकता। (बहारे शरीअ़त, जि. 1, स. 985 मुलख़्ख़सन)

उलटे लटके हुए लोग : जो लोग **रोज़ा** रख कर बिग़ैर किसी सह़ीह़ मजबूरी के तोड़ डालते हैं वोह **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ के क़हरो ग़ज़ब से ख़ूब डरें। चुनान्चे ह़ज़रते सय्यिदुना अबू उमामा बाहली رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْه फ़रमाते हैं, मैं ने सरकारे मदीना, साहिबे मुअ़त्त़र पसीना صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم को येह फ़रमाते सुना : "मैं सोया हुवा था तो ख़्वाब में दो शख़्स मेरे पास आए और मुझे एक दुश्वार गुज़ार पहाड़ पर ले गए, जब मैं पहाड़ के दरमियानी ह़िस्से पर पहुंचा तो वहां बड़ी सख़्त आवाज़ें आ रही थीं, मैं ने कहा : "येह कैसी आवाज़ें हैं ?" तो मुझे बताया गया कि येह जहन्नमियों की आवाज़ें हैं। फिर मुझे और आगे ले जाया गया तो **मैं कुछ ऐसे लोगों के पास से गुज़रा कि उन को उन के टख़्नों की रगों में बांध कर (उलटा) लटकाया गया था और उन लोगों के जबड़े फाड़ दिये गए थे जिन से ख़ून बह रहा था,** तो मैं ने पूछा : "येह कौन लोग हैं ?" तो मुझे बताया गया कि "येह लोग **रोज़ा** इफ़्त़ार करते थे क़ब्ल इस के कि **रोज़ा** इफ़्त़ार करना ह़लाल हो।" (الاحسان بترتيب صحيح ابن حبان ج٩ص٢٨٦حديث٧٤٤٨)

प्यारे प्यारे इस्लामी भाइयो ! रमज़ान का **रोज़ा** बिला इजाज़ते शरई तोड़ देना बहुत बड़ा गुनाह है। वक़्त से पहले इफ़्त़ार करने से मुराद

येह है कि **रोज़ा** तो रख लिया मगर सूरज गुरूब होने से पहले पहले जान बूझ कर किसी सह़ीह़ मजबूरी के बिग़ैर तोड़ डाला। इस ह़दीसे पाक में जो अ़ज़ाब बयान किया गया है वोह **रोज़ा** रख कर तोड़ देने वाले के लिये है और जो बिला उ़ज़्रे शरई **रोज़ए रमज़ान** तर्क कर देता है वोह भी सख़्त गुनहगार और अ़ज़ाबे नार का ह़क़दार है। **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ अपने प्यारे ह़बीब صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم के तुफ़ैल हमें अपने क़हरो ग़ज़ब से बचाए। اٰمین بِجاہِ النَّبِیِّ الْاَمین صلَّی اللہ تعالٰی علیہ واٰلہٖ وسلَّم

तीन बद बख़्त : ह़ज़रते सय्यिदुना जाबिर बिन **अ़ब्दुल्लाह** رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْھُمَا से मरवी है, ताजदारे मदीनए मुनव्वरह, सुल्त़ाने मक्कए मुकर्रमा صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم का फ़रमाने बा क़रीना है : "जिस ने **माहे रमज़ान** को पाया और उस के रोज़े न रखे वोह शख़्स शक़ी (या'नी बद बख़्त) है, जिस ने अपने वालिदैन या किसी एक को पाया और उन के साथ अच्छा सुलूक न किया वोह भी शक़ी (या'नी बद बख़्त) है और जिस के पास मेरा ज़िक्र हुवा और उस ने मुझ पर दुरूद न पढ़ा वोह भी शक़ी (या'नी बद बख़्त) है।" (مُعجَم اَوسَط ج۲ ص۶۲ حدیث ۳۸۷۱)

صَلُّوا عَلَی الْحَبِیْب! صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلٰی مُحَمَّد

नाक मिट्टी में मिल जाए : ह़ज़रते सय्यिदुना अबू हुरैरा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ से मरवी है, **रसूलुल्लाह** صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया :

"उस शख़्स की नाक मिट्टी में मिल जाए कि जिस के पास मेरा ज़िक्र किया गया तो उस ने मेरे ऊपर दुरूद नहीं पढ़ा और उस शख़्स की नाक मिट्टी में मिल जाए जिस पर रमज़ान का महीना दाख़िल हुवा फिर उस की मग़्फ़िरत होने से क़ब्ल गुज़र गया और उस आदमी की नाक मिट्टी में मिल जाए कि जिस के पास उस के वालिदैन ने बुढ़ापे को पा लिया और उस के वालिदैन ने उस को जन्नत में दाख़िल नहीं किया।" (या'नी बूढ़े मां बाप की ख़िदमत कर के जन्नत ह़ासिल न कर सका)

(مسند احمد ج۳ ص۶۱ حدیث۷۴۵۵)

صَلُّوا عَلَى الْحَبِيْب! صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلٰى مُحَمَّد

रोज़े के तीन दरजे : प्यारे प्यारे इस्लामी भाइयो ! रोज़े की अगर्चे ज़ाहिरी शर्त़ येही है कि रोज़ादार क़स्दन खाने पीने और जिमाअ़ से बाज़ रहे। ताहम रोज़े के कुछ बात़िनी आदाब भी हैं जिन का जानना ज़रूरी है ताकि ह़क़ीक़ी मा'नों में हम **रोज़े** की बरकतें ह़ासिल कर सकें। चुनान्चे रोज़े के तीन दरजे हैं :

(1) अ़वाम का रोज़ा (2) ख़वास का रोज़ा (3) अख़स्सुल ख़वास का रोज़ा

(1) अ़वाम का रोज़ा : रोज़े के लुग़वी मा'ना हैं : "रुकना" लिहाज़ा शरीअ़त की इस्त़िलाह़ में सुब्ह़े सादिक़ से ले कर ग़ुरूबे आफ़्ताब

तक क़स्दन खाने पीने और जिमाअ़ से "रुके रहने" को **रोज़ा** कहते हैं और येही अ़वाम या'नी आ़म लोगों का **रोज़ा** है।

(2) ख़वास का रोज़ा : खाने पीने और जिमाअ़ से रुके रहने के साथ साथ जिस्म के तमाम आ'ज़ा को बुराइयों से "रोकना" **ख़वास** या'नी ख़ास लोगों का **रोज़ा** है।

(3) अख़स्सुल ख़वास का रोज़ा : अपने आप को तमाम तर उमूर से "रोक" कर सिर्फ़ और सिर्फ़ **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ की त़रफ़ मुतवज्जेह होना, येह **अख़स्सुल ख़वास** या'नी ख़ासुल ख़ास लोगों का **रोज़ा** है।

(बहारे शरीअ़त, जि. 1, स. 966 मुलख़्ख़सन)

प्यारे प्यारे इस्लामी भाइयो ! ज़रूरत इस अम्र की है कि खाने पीने वग़ैरा से "रुके रहने" के साथ साथ अपने तमाम तर आ'ज़ाए बदन को भी रोज़े का पाबन्द बनाया जाए।

दाता साहिब رَحْمَةُ اللّٰهِ تَعَالٰى عَلَيْه **का इर्शाद : ह़ज़रते** सय्यिदुना दाता गन्ज बख़्श अ़ली हिजवेरी عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللّٰهِ الْقَوِی फ़रमाते हैं : "रोज़े की ह़क़ीक़त "रुकना" है और रुके रहने की बहुत सी शराइत़ हैं मसलन **मे'दे** को खाने पीने से रोके रखना, **आंख** को बद निगाही से रोके रखना, **कान** को ग़ीबत सुनने, ज़बान को फ़ुज़ूल और फ़ितना अंगेज़ बातें करने और **जिस्म** को हुक्मे इलाही عَزَّوَجَلَّ की मुख़ालफ़त से रोके रखना **रोज़ा**

है। जब बन्दा इन तमाम शराइत़ की पैरवी करेगा तब वोह **ह़क़ीक़तन रोज़ादार** होगा।" (كَشْفُ الْمَحْجُوب ص٣٥٤،٣٥٣)

صَلُّوا عَلَى الْحَبِيب! صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰی عَلٰی مُحَمَّد

रोज़ा रख कर भी गुनाह तौबा ! तौबा ! : प्यारे प्यारे इस्लामी भाइयो ! खुदारा ! अपने ह़ाले ज़ार पर तर्स खाइये और ग़ौर फ़रमाइये ! कि रोज़ादार **माहे रमज़ानुल मुबारक** में दिन के वक़्त खाना पीना छोड़ देता है ह़ालां कि येह खाना पीना इस से पहले दिन में भी बिल्कुल जाइज़ था, अब खुद ही सोच लीजिये कि जो चीज़ें **रमज़ान शरीफ़** से पहले ह़लाल थीं वोह भी जब इस मुबारक महीने के मुक़द्दस दिनों में मन्अ़ कर दी गईं तो जो चीज़ें **रमज़ानुल मुबारक** से पहले भी ह़राम थीं, मसलन झूट, ग़ीबत, चुग़ली, बद गुमानी, गालम गलोच, फ़िल्में डिरामे, गाने बाजे, बद निगाही, दाढ़ी मुंडाना या एक मुठ्ठी से घटाना, वालिदैन को सताना, लोगों का दिल दुखाना वग़ैरा वोह **रमज़ानुल मुबारक** में क्यूं न और भी ज़ियादा ह़राम हो जाएंगी ! रोज़ादार जब **रमज़ानुल मुबारक** में ह़लाल व त़य्यिब खाना पीना छोड़ देता है, ह़राम काम क्यूं न छोड़े ? अब फ़रमाइये ! जो शख़्स पाक और ह़लाल खाना पीना तो छोड़ दे लेकिन ह़राम और जहन्नम में ले जाने वाले काम ब दस्तूर जारी रखे वोह किस क़िस्म का रोज़ादार है ?

फ़रमाने मुस्तफ़ा صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم : जिस ने मुझ पर एक बार दुरूदे पाक पढ़ा अल्लाह عَزَّوَجَلَّ उस पर दस रह़मतें भेजता है। (مسلم)

अल्लाह عَزَّوَجَلَّ को कुछ ह़ाजत नहीं : याद रखिये ! नबियों के सुल्त़ान, सरवरे ज़ीशान, मह़बूबे रह़मान صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم का फ़रमाने इ़ब्रत निशान : "जो बुरी बात कहना और उस पर अ़मल करना न छोड़े तो **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ को इस की कुछ ह़ाजत नहीं कि उस ने खाना पीना छोड़ दिया है।" (بُخاری ج ۱ ص ۶۲۸ حدیث ۱۹۰۳)

ह़ज़रते अ़ल्लामा अ़ली क़ारी عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللّٰهِ الْبَارِی इस ह़दीसे पाक के तह़त फ़रमाते हैं : बुरी बात से मुराद हर ना जाइज़ गुफ़्तगू है जैसे झूट, बोहतान, ग़ीबत, तोहमत, गाली, ला'न ता'न वग़ैरा जिन से बचना ज़रूरी है। (مِرقاۃ المفاتیح ج ٤ ص ٤٩١) एक और मक़ाम पर **फ़रमाने मुस्त़फ़ा** صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم है : "सिर्फ़ खाने और पीने से बाज़ रहने का नाम **रोज़ा** नहीं बल्कि **रोज़ा** तो येह है कि लग़्व और बेहूदा बातों (या'नी वोह बात जिस के करने में मआ़सी (या'नी ना फ़रमानी) है उस) से बचा जाए।"

(اَلْمُستَدرَک ج ۲ ص ٦٧ حدیث ۱٦۱۱)

मैं रोज़ादार हूं : हु़ज़ूर सरापा नूर صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم का फ़रमाने आ़लीशान है : तुम से अगर कोई लड़ाई करे, गाली दे तो तुम उस से कह दो कि **मैं रोज़े से हूं।** (اَلتَّرغِيب وَالتَّرهِيب ج ۱ ص ۸۷ حدیث ۱)

आ'ज़ा के रोज़ों की ता'रीफ़ : आ'ज़ा का रोज़ा या'नी "जिस्म के तमाम ह़िस्सों को गुनाहों से बचाना।" येह सिर्फ़ **रोज़ों** ही

के लिये मख़्सूस नहीं, बल्कि पूरी ज़िन्दगी इन आ'ज़ा को गुनाहों से बचाना ज़रूरी है और येह जभी मुम्किन है कि हमारे दिलों में ख़ूब **ख़ौफ़े ख़ुदा** عَزَّوَجَلَّ पैदा हो जाए। आह ! क़ियामत के उस होशरुबा मन्ज़र को याद कीजिये जब हर त़रफ़ "नफ़्सी नफ़्सी" का आ़लम होगा, सूरज आग बरसा रहा होगा, ज़बानें शिद्दते प्यास के सबब मुंह से बाहर निकल पड़ी होंगी, बीवी शोहर से, मां अपने लख़्ते जिगर से और बाप अपने नूरे नज़र से नज़र बचा रहा होगा, मुजरिमों को पकड़ पकड़ कर लाया जा रहा होगा, उन के मुंह पर मोहर मार दी जाएगी और उन के आ'ज़ा उन के गुनाहों की दास्तान सुना रहे होंगे जिस का "**सूरए यासीन**" की आयत नम्बर 65 में यूं तज़्किरा किया गया है :

اَلْيَوْمَ نَخْتِمُ عَلٰۤى اَفْوَاهِهِمْ وَ تُكَلِّمُنَاۤ اَيْدِيْهِمْ وَ تَشْهَدُ اَرْجُلُهُمْ بِمَا كَانُوْا يَكْسِبُوْنَ ﴿۶۵﴾

तरजमए कन्ज़ुल ईमान : आज हम इन के मूंहों पर मोहर कर देंगे और इन के हाथ हम से बात करेंगे और इन के पाउं इन के किये की गवाही देंगे।

आह ! ऐ कमज़ोर व ना तुवां इस्लामी भाइयो ! क़ियामत के उस कड़े वक़्त से अपने दिल को डराइये और हर वक़्त अपने आ'ज़ाए बदन को मा'सियत (या'नी ना फ़रमानी) से बाज़ रखिये। अब आ'ज़ा के रोज़े की तफ़्सीलात पेश की जाती हैं :

आंख का रोज़ा : प्यारे प्यारे इस्लामी भाइयो ! आंख का रोज़ा इस त़रह़ रखना चाहिये कि आंख जब भी उठे तो सिर्फ़ और सिर्फ़ जाइज़ उमूर ही की त़रफ़ उठे। आंख से मस्जिद देखिये, कुरआने करीम देखिये, मज़ाराते औलिया رَحِمَهُمُ اللّٰهُ تَعَالٰی की ज़ियारत कीजिये, उ़लमाए किराम, मशाइख़े इ़ज़ाम और **अल्लाह तबारक व तआ़ला** के नेक बन्दों का दीदार कीजिये, **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ दिखाए तो का'बए मुअ़ज़्ज़मा के अन्वार देखिये, मक्कए मुकर्रमा زَادَهَا اللّٰهُ شَرَفًاوَّتَعْظِيْمًا की महकी महकी गलियां और वहां के वादी व कोहसार देखिये, मदीनए मुनव्वरह زَادَهَا اللّٰهُ شَرَفًاوَّتَعْظِيْمًا के दरो दीवार देखिये, सब्ज़ सब्ज़ गुम्बदो मीनार देखिये, मीठे मीठे मदीने के सह़रा व गुलज़ार देखिये, सुनहरी जालियों के अन्वार देखिये, जन्नत की प्यारी प्यारी क्यारी की बहार देखिये। ताजदारे अहले सुन्नत हुज़ूर मुफ़्तिये आ'ज़मे हिन्द सय्यिदुना मुह़म्मद मुस्त़फ़ा रज़ा ख़ान عَلَيْهِ رَحمَۃُ الرَّحْمٰن ख़ुदाए ह़न्नानो मन्नान عَزَّوَجَلَّ की बारगाहे बेकस पनाह में अ़र्ज़ करते हैं :

कुछ ऐसा कर दे मेरे किर्दिगार आंखों में — हमेशा नक़्श रहे रूए यार आंखों में
उन्हें न देखा तो किस काम की हैं येह आंखें — कि देखने की हैं सारी बहार आंखों में

(सामाने बख़्शिश शरीफ़)

फ़रमाने मुस्तफ़ा صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم : जिस के पास मेरा ज़िक्र हुवा और उस ने मुझ पर दुरूदे पाक न पढ़ा तहक़ीक़ वोह बद बख़्त हो गया। (ابن سنی)

प्यारे रोज़ादारो ! आंख का रोज़ा रखिये और ज़रूर रखिये बल्कि **आंख का रोज़ा** तो डबल बारह घन्टे, तीसों दिन और बारह महीने होना चाहिये। **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ की अ़ता कर्दा **आंखों** से हरगिज़ हरगिज़ **फ़िल्में** न देखिये, **डिरामे** न देखिये, **ना महरम** औ़रतों को न देखिये, शह्वत के साथ **अम्रदों** को न देखिये, किसी का खुला हुवा सित्र न देखिये, बल्कि बेहतर येह है कि बिला ज़रूरत अपना खुला हुवा **सित्र** भी मत देखिये, **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ की याद से ग़ाफ़िल करने वाले **खेल तमाशे** मसलन रीछ और बन्दर का नाच वग़ैरा न देखिये (इन को नचाना और इन का नाच देखना दोनों काम ना जाइज़ हैं) क्रिकेट, कबड्डी, फ़ुटबॉल, हॉकी, ताश, शत्‌रन्ज, विडियो गेम्ज़, टेबल फ़ुटबॉल वग़ैरा वग़ैरा खेल न देखिये। (जब देखने की इजाज़त नहीं तो खेलने की इजाज़त किस त़रह़ हो सकती है ? और इन में बा'ज़ खेल तो ऐसे हैं जो नीकर या चड्डी पहन कर खेले जाते हैं जिस की वज्ह से घुटने बल्कि مَعَاذَاللهعَزَّوَجَلَّ रानें तक खुली रहती हैं और इस त़रह़ दूसरों के आगे रानें या घुटने खोले रहना गुनाह है और दूसरों को इस त़रफ़ नज़र करना भी गुनाह) किसी के घर में बे इजाज़त न झांकिये, किसी का ख़त़ या चिठ्ठी या डायरी की तह़रीर शरई इजाज़त के बिग़ैर न देखिये, **याद रखिये ! फ़रमाने मुस्तफ़ा** صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم है : "जो अपने भाई का ख़त़ बिग़ैर इजाज़त देखता है गोया वोह आग में देखता है।" (المُستَدرَك ج٥ص٣٨٤حديث٧٧٧٩)

उठे न आंख कभी भी गुनाह की जानिब — अ़त़ा करम से हो ऐसी हमें ह़या या रब !

किसी की ख़ामियां देखें न मेरी आंखें और — सुनें न कान भी ऐबों का तज़्किरा या रब !

दिखा दे एक झलक सब्ज़ सब्ज़ गुम्बद की

बस उन के जल्वों में आ जाए फिर क़ज़ा या रब !

(वसाइले बख़्शिश, स. 83, 87)

कान का रोज़ा : कानों का रोज़ा येह है कि सिर्फ़ सिर्फ़ जाइज़ बातें सुनें। मसलन **कानों** से तिलावत व ना'त सुनिये, सुन्नतों भरे बयानात सुनिये, अच्छी बात, अज़ान व इक़ामत सुनिये, सुन कर जवाब दीजिये, हरगिज़ हरगिज़ गाने बाजे और मूसीक़ी न सुनिये, झूटे चुटकुले न सुनिये, किसी की ग़ीबत न सुनिये, किसी की चुग़ली न सुनिये, किसी के ऐब न सुनिये और जब दो आदमी छुप कर बात करें तो कान लगा कर न सुनिये। **फ़रमाने मुस्त़फ़ा** صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم है : **जो शख़्स किसी क़ौम की बातें कान लगा कर सुने ह़ालां कि वोह इस बात को ना पसन्द करते हों या इस बात को छुपाना चाहते हों तो क़ियामत के दिन उस के कानों में पिघला हुवा सीसा डाला जाएगा।**

(بُخاری ج٤ ص ٤٢٣ حديث ٧٠٤٢)

सुनूं न फ़ोह़श कलामी न ग़ीबतो चुग़ली

तेरी पसन्द की बातें फ़क़त़ सुना या रब

(वसाइले बख़्शिश, स. 87)

صَلُّوْا عَلَى الْحَبِيْب ! صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلٰى مُحَمَّد

ज़बान का रोज़ा : **ज़बान** का रोज़ा येह है कि **ज़बान** सिर्फ़ो सिर्फ़ नेक व जाइज़ बातों के लिये ही ह़रकत में आए । मसलन **ज़बान** से तिलावते क़ुरआन कीजिये, ज़िक्रो दुरूद का विर्द कीजिये । ना'त शरीफ़ पढ़िये, दर्स दीजिये, सुन्नतों भरा बयान कीजिये, नेकी की दा'वत दीजिये, अच्छी और प्यारी प्यारी दीनदारी वाली बातें कीजिये । फ़ुज़ूल "बक बक" से बचते रहिये । ख़बरदार ! गाली गलोच, झूट, ग़ीबत, चुग़ली वग़ैरा से **ज़बान** नापाक न होने पाए कि "चमचा अगर नजासत से आलूदा हो गया तो दो एक गिलास पानी से पाक हो जाएगा मगर **ज़बान** बे ह़याई की बातों से नापाक हो गई तो इसे सात समुन्दर भी नहीं धो सकेंगे ।"

ज़बान की बे एह़तियाती की तबाह कारियां : ह़ज़रते सय्यिदुना अनस رَضِىَ اللّٰهُ تَعَالٰى عَنْه से रिवायत है, सुल्ताने दो जहान, शहन्शाहे कौनो मकान, रह़मते आ़लमिय्यान صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने सह़ाबए किराम عَلَيْهِمُ الرِّضْوَان को एक दिन **रोज़ा** रखने का हुक्म दिया और इर्शाद फ़रमाया : "जब तक मैं इजाज़त न दूं, तुम में से कोई भी इफ़्त़ार न करे ।" लोगों ने **रोज़ा** रखा । जब शाम हुई तो तमाम सह़ाबए किराम عَلَيْهِمُ الرِّضْوَان एक एक कर के ह़ाज़िरे ख़िदमते बा बरकत हो कर अ़र्ज़ करते रहे । **या रसूलल्लाह**

फ़रमाने मुस्तफ़ा صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم : जो मुझ पर रोज़े जुमुआ़ दुरूद शरीफ़ पढ़ेगा मैं क़ियामत के दिन उस की शफ़ाअ़त करूंगा। (جمع الجوامع)

صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ! मैं रोज़े से रहा, इजाज़त दीजिये ताकि **रोज़ा** खोल दूं। आप صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم उसे इजाज़त मर्हमत फ़रमा देते। एक सह़ाबी رَضِىَ اللّٰهُ تَعَالٰى عَنْه ने ह़ाज़िर हो कर अ़र्ज़ की : आक़ा صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ! दो औ़रतों ने **रोज़ा** रखा और वोह आप صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم की ख़िदमते बा बरकत में आने से ह़या मह़सूस करती हैं, उन्हें इजाज़त दीजिये ताकि वोह भी **रोज़ा** खोल लें। **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ के मह़बूब, दानाए गु़यूब, मुनज़्ज़हुन अ़निल उ़यूब صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने उन से रुख़े अन्वर फैर लिया, उन्हों ने फिर अ़र्ज़ की, आप صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने फिर चेह्‌रए अन्वर फैर लिया, उन्हों ने फिर येही बात दोहराई आप صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने फिर चेह्‌रए अन्वर फैर लिया वोह फिर येही बात दोहराने लगे आप صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने फिर रुख़े अन्वर फैर लिया, फिर **रसूलुल्लाह** صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने (ग़ैब की ख़बर देते हुए) इर्शाद फ़रमाया : “उन दोनों ने **रोज़ा** नहीं रखा वोह कैसी रोज़ादार हैं ? वोह तो सारा दिन लोगों का गोश्त खाती रहीं ! जाओ, उन दोनों को हुक्म दो कि वोह अगर रोज़ादार हैं तो क़ै कर दें।” वोह सह़ाबी رَضِىَ اللّٰهُ تَعَالٰى عَنْه उन के पास तशरीफ़ लाए और उन्हें **फ़रमाने शाही** सुनाया। उन दोनों ने क़ै की, तो क़ै से जमा हुवा ख़ून निकला। उन सह़ाबी رَضِىَ اللّٰهُ تَعَالٰى عَنْه ने आप صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم की ख़िदमते बा बरकत में वापस ह़ाज़िर हो कर

सूरते हाल अ़र्ज़ की। **मदनी आक़ा** صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने इर्शाद फ़रमाया : उस ज़ात की क़सम ! जिस के क़ब्ज़ए क़ुदरत में मेरी जान है, अगर येह उन के पेटों में बाक़ी रहता, तो उन दोनों को **आग** खाती। (क्यूं कि उन्हों ने ग़ीबत की थी) (ذَمُّ الْغِیبَۃِ لِابْنِ اَبِی الدُّنْیا ص۷۲ رقم۳۱)

एक और रिवायत में है कि जब सरकारे मदीना صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने उन सह़ाबी رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ से मुंह फेरा तो वोह सामने आए और अ़र्ज़ की : **या रसूलल्लाह** صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ! वोह दोनों प्यास की शिद्दत से मरने के क़रीब हैं। **सरकारे मदीना** صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने हुक्म फ़रमाया : ''उन दोनों को मेरे पास लाओ।'' वोह दोनों ह़ाज़िर हुईं। **सरकारे आ़ली वक़ार** صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने एक पियाला मंगवाया और उन में से एक को हुक्म फ़रमाया : ''इस में क़ै करो !'' उस ने ख़ून, पीप और गोश्त की क़ै की, ह़त्ता कि आधा पियाला भर गया। फिर आप صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने दूसरी को हुक्म दिया कि ''तुम भी इस में क़ै करो !'' उस ने भी इसी त़रह़ की क़ै की, यहां तक कि पियाला भर गया। **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ के प्यारे रसूल, रसूले मक़्बूल, सय्यिदह आमिना رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہَا के गुलशन के महकते फूल صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने इर्शाद फ़रमाया : **इन दोनों ने अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ **की ह़लाल कर्दा चीज़ों**

(या'नी खाने, पीने वग़ैरा) **से तो रोज़ा रखा मगर जिन चीज़ों को अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ **ने** (इलावा रोज़े के भी) **ह़राम रखा है उन** (ह़राम चीज़ों) **से रोज़ा इफ़्त़ार कर डाला !** हुवा यूं कि एक लड़की दूसरी लड़की के पास बैठ गई और दोनों मिल कर लोगों का गोश्त खाने (या'नी ग़ीबत करने) लगीं।[1]

(مُسندِ إمام احمد ج۹ص۱٦٥حديث۲۳۷۱٤)

इल्मे ग़ैबे मुस्त़फ़ा صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم **: प्यारे प्यारे इस्लामी भाइयो !** इस ह़िकायत से रोज़े रोशन की त़रह़ वाज़ेह़ हुवा कि **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ की अ़त़ा से हमारे मीठे मीठे आक़ा, मक्की मदनी मुस्त़फ़ा صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم को **इल्मे ग़ैब** ह़ासिल है और आप صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم को अपने ग़ुलामों के तमाम मुआ़मलात मा'लूम हो जाते हैं। जभी तो उन लड़कियों के बारे में मस्जिद शरीफ़ में बैठे बैठे **ग़ैब की ख़बर** इर्शाद फ़रमा दी। बहर ह़ाल **रोज़ा** हो या न हो, **ज़बान** का क़ुफ़्ले मदीना ही भला वरना येह ऐसे गुल खिलाती है कि तौबा ! अगर इन **तीन उसूलों** को पेशे नज़र रख लिया जाए तो اِنْ شَآءَاللّٰه عَزَّوَجَلَّ बड़ा नफ़्अ़ होगा : ﴾1﴿ बुरी बात कहना हर ह़ाल में बुरा है ﴾2﴿ फ़ुज़ूल बात से ख़ामोशी अफ़्ज़ल है ﴾3﴿ अच्छी बात करना ख़ामोशी से बेहतर है।

मेरी ज़बान पे क़ुफ़्ले मदीना लग जाए **फ़ुज़ूल गोई से *बचता रहूं सदा या रब !***

1 : मक्तबतुल मदीना की मत़्बूआ़ किताब, "ग़ीबत की तबाह कारियां" पढ़िये। اِنْ شَآءَاللّٰه عَزَّوَجَلَّ ग़ीबत जैसे गुनाहे कबीरा से बचने का ख़ूब ज़ेह्न बनेगा।

صَلُّوْا عَلَی الْحَبِیْب! صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلٰی مُحَمَّد

हाथों का रोज़ा : हाथों का रोज़ा येह है कि जब भी हाथ उठें, सिर्फ़ नेक कामों के लिये उठें। मसलन बा त़हारत क़ुरआने करीम को हाथ लगाइये, नेक लोगों से मुसाफ़ह़ा कीजिये। फ़रमाने मुस्त़फ़ा صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم : "**अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ की ख़ात़िर आपस में मह़ब्बत रखने वाले जब बाहम मिलें और मुसाफ़ह़ा करें और नबी (صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم) पर दुरूदे पाक भेजें तो उन के जुदा होने से पहले दोनों के अगले पिछले गुनाह बख़्श दिये जाते हैं।" (ابو یعلٰی ج ۳ ص ۹۰ حدیث ۲۹۰۱) हो सके तो किसी **यतीम** के सर पर शफ़्क़त से हाथ फैरिये कि हाथ के नीचे जितने बाल आएंगे हर बाल के इ़वज़ एक एक नेकी मिलेगी। (बच्चा या बच्ची उस वक़्त तक ही यतीम हैं जब तक ना बालिग़ हैं जूं ही बालिग़ हुए यतीम न रहे। लड़का 12 और 15 साल के दरमियान बालिग़ और लड़की 9 और 15 साल के दरमियान बालिग़ा होती है) ख़बरदार ! किसी पर **ज़ुल्मन** हाथ न उठें, **रिश्वत** लेने देने के लिये न उठें, न किसी का माल **चुराएं**, न **ताश** खेलें न पतंग उड़ाएं, न किसी **ना मह़रम औ़रत** से मुसाफ़ह़ा करें। (बल्कि शह्वत का अन्देशा हो तो **अम्रद** से भी हाथ न मिलाएं)

हमेशा हाथ भलाई के वासित़े उठें बचाना ज़ुल्मो सितम से मुझे सदा या रब !

(वसाइले बख़्शिश, स. 77)

صَلُّوْا عَلَی الْحَبِیْب ! صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلٰی مُحَمَّد

पाउं का रोज़ा : पाउं का रोज़ा येह है कि पाउं उठें तो सिर्फ़ो सिर्फ़ नेक कामों के लिये उठें। मसलन पाउं चलें तो मसाजिद की त़रफ़ चलें, मज़ाराते औलिया رَحِمَھُمُ اللّٰہُ تَعَالٰی की त़रफ़ चलें, उ़लमा व सुलहा़ की ज़ियारत के लिये चलें, सुन्नतों भरे इज्तिमाअ़ की त़रफ़ चलें, नेकी की दा'वत देने के लिये चलें, सुन्नतों की तरबियत के मदनी क़ाफ़िलों में सफ़र के लिये चलें, नेक सोहबतों की त़रफ़ चलें, किसी की मदद के लिये चलें, काश ! **मक्कए मुकर्रमा** زَادَھَا اللّٰہُ شَرَفًاوَّتَعْظِیْمًا व **मदीनए मुनव्वरह** زَادَھَا اللّٰہُ شَرَفًاوَّتَعْظِیْمًا की त़रफ़ चलें, सूए मिना व अ़रफ़ात व मुज़्दलिफ़ा चलें, त़वाफ़ व सअ़्य में चलें। हरगिज़ हरगिज़ सिनेमा घर की त़रफ़ न चलें, डिरामा गाह की त़रफ़ न चलें, बुरे दोस्तों की मजलिसों की त़रफ़ न चलें, शत़रन्ज, लुड्डो, ताश, क्रिकेट, फ़ुटबॉल, विडियो गेम्ज़, टेबल फ़ुटबॉल वग़ैरा वग़ैरा खेल खेलने या देखने की त़रफ़ न चलें, काश ! पाउं कभी तो ऐसे भी चलें कि बस मदीना ही मदीना लब पर हो और सफ़र भी मदीने का हो।

रहें भलाई की राहों में गामज़न हर दम

करें न रुख़ मेरे पाउं गुनाह का या रब !

صَلُّوْا عَلَی الْحَبِیْب ! صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلٰی مُحَمَّد

प्यारे प्यारे इस्लामी भाइयो ! ह़क़ीक़ी मा'नों में रोज़े की बरकतें तो उसी वक़्त नसीब होंगी, जब हम तमाम आ'ज़ा का भी **रोज़ा** रखेंगे, वरना भूक और प्यास के सिवा कुछ ह़ासिल न होगा जैसा कि ह़ज़रते सय्यिदुना अबू हुरैरा رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْه से मरवी है कि सरकारे आ़ली वक़ार صَلَّی اللّٰهُ تَعَالٰی عَلَیْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم का इर्शाद है : "बहुत से रोज़ादार ऐसे हैं कि उन को उन के रोज़े से भूक और प्यास के सिवा कुछ ह़ासिल नहीं होता, और बहुत से क़ियाम करने वाले ऐसे हैं कि उन को उन के क़ियाम से सिवाए जागने के कुछ ह़ासिल नहीं होता।" (ابنِ ماجه ج۲ ص۳۲۰ حدیث۱۶۹۰)

K इलेक्ट्रिक में नोकरी मिल गई : प्यारे प्यारे इस्लामी भाइयो ! रोज़े की नूरानिय्यत और रूह़ानिय्यत पाने और मदनी ज़ेह्‌न बनाने के लिये तब्लीग़े क़ुरआनो सुन्नत की आ़लमगीर ग़ैर सियासी तह़रीक **दा'वते इस्लामी** के मदनी माह़ोल से वाबस्ता हो जाइये और सुन्नतों की तरबियत के **मदनी क़ाफ़िलों** में आ़शिक़ाने रसूल के साथ सुन्नतों भरे सफ़र की सआ़दत ह़ासिल कीजिये। سُبْحٰنَ اللّٰه ! दा'वते इस्लामी के मदनी माह़ोल, सुन्नतों भरे इज्तिमाआ़त और मदनी क़ाफ़िलों की भी क्या ख़ूब मदनी बहारें और बरकतें हैं। चुनान्चे 19.6.2003 को एक इस्लामी भाई का मुबल्लिग़े दा'वते इस्लामी के दा'वत देने पर **दा'वते इस्लामी** के हफ़्तावार सुन्नतों भरे इज्तिमाअ़ की त़रफ़ रुख़ हुवा मगर पाबन्दी नहीं थी। बे रोज़गारी के सबब

परेशानी थी, उन्हों ने एक इस्लामी भाई की ''इन्फ़िरादी कोशिश'' के नतीजे में 41 रोज़ा **मदनी इन्आ़मात व मदनी क़ाफ़िला कोर्स** के लिये दा'वते इस्लामी के आ़लमी मदनी मर्कज़ **फ़ैज़ाने मदीना** में दाख़िला ले लिया। اَلْحَمْدُ لِلّٰهِ عَزَّوَجَلَّ **आ़शिक़ाने रसूल** की सोह़बतों और बरकतों ने उन पर मदनी रंग चढ़ा दिया, और जीने का ढंग सिखा दिया। **मदनी क़ाफ़िला कोर्स** पूरा करने के दूसरे या तीसरे दिन उन के बा'ज़ दोस्तों ने बताया : K इलेक्ट्रिक (K Electric) को मुलाज़िमों की ज़रूरत है, हम ने भी दरख़्वास्तें जम्अ़ करवा दी हैं आप भी करवा दीजिये। उन्हों ने कहा : आज कल सिर्फ़ दरख़्वास्तों पर कहां ! सिफ़ारिशों (बल्कि रिश्वतों) पर नोकरियों की तरकीब बनती है! अपने पास तो कुछ भी नहीं। बिल आख़िर उन के इसरार पर उन्हों ने ''दरख़्वास्त'' जम्अ़ करवा दी। इब्तिदाअन तह़रीरी टेस्ट हुए फिर इन्टरव्यू के बा'द मेडीकल टेस्ट की सूरत बनी। बे शुमार असरो रुसूख़ वाली दरख़्वास्तों के बा वुजूद वोह वाह़िद ऐसे थे कि हर जगह काम्याब रहे! फ़ाइनल इन्टरव्यू में उन के घर वालों ने ज़ोर दिया कि पेन्ट शर्ट पहन कर जाओ, मगर वोह तो आ़शिक़ाने रसूल की सोह़बत की बरकत से अंग्रेज़ी लिबास तर्क कर चुके थे लिहाज़ा सफ़ेद शलवार क़मीस में ही पहुंच गए। अफ़्सर ने उन का मज़्हबी ह़ुल्या देख कर बा'ज़ इस्लामी मा'लूमात के सुवालात किये। जिन के उन्हों ने जवाबात दे दिये क्यूं कि

اَلْحَمْدُلِلّٰہ عَزَّوَجَلَّ उन्हों ने येह सब "मदनी इन्आमात व मदनी क़ाफ़िला कोर्स" के अन्दर सीखे हुए थे। اَلْحَمْدُلِلّٰہ عَزَّوَجَلَّ बिग़ैर किसी सिफ़ारिश व रिश्वत के उन्हें मुलाज़मत मिल गई। उन के घर वाले **दा'वते इस्लामी** के "मदनी क़ाफ़िला कोर्स" और मदनी माह़ोल की बरकत देख कर दंग रह गए और اَلْحَمْدُلِلّٰہ عَزَّوَجَلَّ **दा'वते इस्लामी** के मुह़िब बन गए। اَلْحَمْدُلِلّٰہ عَزَّوَجَلَّ उन्हें दा'वते इस्लामी की **अ़लाक़ाई मुशावरत** के ज़िम्मेदार की ह़ैसिय्यत से अपने अ़लाक़े में **सुन्नतों** के डंके बजाने और **मदनी इन्आमात** व मदनी क़ाफ़िलों की धूमें मचाने की सआदत भी मिली।

नोकरी चाहिये, आइये आइये क़ाफ़िले में चलें, क़ाफ़िले में चलो
तंगदस्ती मिटे, दूर आफ़त हटे लेने को बरकतें, क़ाफ़िले में चलो

(वसाइले बख़्शिश, स. 672, 675)

صَلُّوْاعَلَی الْحَبِیْب! صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلٰی مُحَمَّد

रोज़े की निय्यत : प्यारे प्यारे इस्लामी भाइयो ! रोज़े के लिये **निय्यत** शर्त़ है। लिहाज़ा "बे निय्यते रोज़ा अगर कोई इस्लामी भाई या इस्लामी बहन सुब्ह़े सादिक़ के बा'द से ले कर ग़ुरूबे आफ़्ताब तक बिल्कुल न खाए पिये तब भी उस का **रोज़ा** न होगा" (ماخوذ از رَدُّالْمُحتَار ج۳ ص۳۹۳) रमज़ान शरीफ़ का **रोज़ा** हो या नफ़्ल या **नज़्रे मुअ़य्यन** का रोज़ा (या'नी **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ के लिये किसी मख़्सूस दिन के **रोज़े** की मन्नत मानी हो मसलन ख़ुद सुन सके इतनी आवाज़ से यूं कहा हो

कि "मुझ पर **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ के लिये इस साल रबीउ़ल अव्वल शरीफ़ की हर पीर शरीफ़ का रोज़ा है।" तो येह **नज़्रे मुअ़य्यन** है और इस मन्नत का पूरा करना वाजिब हो गया।) इन तीनों क़िस्म के रोज़ों के लिये ग़ुरूबे आफ़्ताब के बा'द से ले कर "निस्फ़ुन्नहारे शरई" (इसे ज़ह्‌वए कुब्रा भी कहते हैं) से पहले पहले तक जब भी **निय्यत** कर लें **रोज़ा** हो जाएगा।

(دُرِّمُختار ورَدُّالْمُحتَار ج٣ص٣٩٣)

निस्फ़ुन्नहारे शरई का वक़्त मा'लूम करने का त़रीक़ा

: जिस दिन का **निस्फ़ुन्नहारे शरई** मा'लूम करना हो उस दिन के सुब्हे सादिक़ से ले कर ग़ुरूबे आफ़्ताब तक का वक़्त शुमार कर लीजिये और उस सारे वक़्त के दो हिस्से कर लीजिये पहला आधा हिस्सा ख़त्म होते ही "निस्फ़ुन्नहारे शरई" का वक़्त शुरूअ़ हो गया। मसलन आज सुब्हे सादिक़ ठीक पांच बजे है और ग़ुरूबे आफ़्ताब ठीक छ6 बजे। तो दोनों के दरमियान का वक़्त कुल तेरह घन्टे हुवा, इन के दो हिस्से करें तो दोनों में का हर एक हिस्सा साढ़े छ6 घन्टे का हुवा। अब सुब्हे सादिक़ के पांच बजे के बा'द वाले इब्तिदाई साढ़े छ6 घन्टे साथ मिला लीजिये, तो इस त़रह़ दिन के साढ़े ग्यारह बजे के फ़ौरन बा'द "निस्फ़ुन्नहारे शरई" का वक़्त शुरूअ़ हो गया तो अब इन तीन त़रह़ के रोज़ों की **निय्यत** नहीं हो सकती।

(رَدُّالْمُحتَار ج٣ص٣٩٣ مُلَخَّصاً)

बयान कर्दा तीन क़िस्म के रोज़ों के इलावा दीगर जितनी भी अक़्सामे रोज़ा हैं उन सब के लिये येह लाज़िमी है कि रातों रात या'नी ग़ुरूबे आफ़्ताब के बा'द से ले कर सुब्हे सादिक़ तक **निय्यत** कर लीजिये, अगर सुब्हे सादिक़ हो गई तो अब **निय्यत** नहीं हो सकेगी। मसलन क़ज़ाए रोज़ए रमज़ान, कफ़्फ़ारे के रोज़े, क़ज़ाए रोज़ए नफ़्ल (रोज़ए नफ़्ल शुरूअ़ करने से वाजिब हो जाता है, अब बे उ़ज़्रे शरई तोड़ना गुनाह है। अगर किसी त़रह़ से भी टूट गया ख़्वाह उ़ज़्र से हो या बिला उ़ज़्र, इस की क़ज़ा बहर ह़ाल वाजिब है) "रोज़ए नज़्रे ग़ैरे मुअ़य्यन" (या'नी **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ के लिये रोज़े की मन्नत तो मानी हो मगर दिन मख़्सूस न किया हो इस मन्नत का भी पूरा करना वाजिब है और **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ के लिये मानी हुई हर शरई मन्नत का पूरा करना वाजिब है जब कि ज़बान से इस त़रह़ के अल्फ़ाज़ इतनी आवाज़ से कहे हों कि ख़ुद सुन सके, मसलन इस त़रह़ कहा : "मुझ पर **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ के लिये एक **रोज़ा** है" अब चूंकि इस में दिन मख़्सूस नहीं किया कि कौन सा **रोज़ा** रखूंगा लिहाज़ा ज़िन्दगी में जब भी मन्नत की निय्यत से **रोज़ा** रख लेंगे मन्नत अदा हो जाएगी। मन्नत के लिये ज़बान से कहना शर्त़ है और येह भी शर्त़ है कि कम अज़ कम इतनी आवाज़ से कहें कि ख़ुद सुन लें, मन्नत के अल्फ़ाज़ इतनी आवाज़ से अदा तो किये कि ख़ुद सुन लेता मगर बहरा पन या किसी क़िस्म के शोरो ग़ुल वग़ैरा की वज्ह से सुन न पाया जब भी मन्नत हो गई इस का पूरा करना वाजिब है) वग़ैरा वग़ैरा इन सब रोज़ों की **निय्यत** रात में ही कर लेनी ज़रूरी है। (ایضاً)

"मुझे माहे रमज़ान से प्यार है" के बीस हुरूफ़ की निस्बत से रोज़े की निय्यत के 20 मदनी फूल

﴾1﴿ **अदाए** रोज़ए रमज़ान और नज़्रे मुअ़य्यन (या'नी मुक़र्रर कर्दा मन्नत) और नफ़्ल के रोज़ों के लिये निय्यत का वक़्त ग़ुरूबे आफ़्ताब के बा'द से ज़ह़्वए कुब्रा या'नी निस्फ़ुन्नहारे शरई से पहले पहले तक है इस पूरे वक़्त के दौरान आप जब भी **निय्यत** कर लेंगे येह रोज़े हो जाएंगे। (دُرِّمُختار و رَدُّالْمحتار ج۳ص۳۹۳)

﴾2﴿ **निय्यत** दिल के इरादे का नाम है ज़बान से कहना शर्त़ नहीं, मगर ज़बान से कह लेना मुस्तह़ब है अगर रात में रोज़ए रमज़ान की निय्यत करें तो यूं कहें : نَوَيْتُ اَنْ اَصُوْمَ غَدًا لِلّٰهِ تَعَالٰی مِنْ فَرْضِ رَمَضَان۔ **तरजमा :** मैं ने निय्यत की, कि **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ के लिये कल इस रमज़ान का फ़र्ज़ रोज़ा रखूंगा।

﴾3﴿ **अगर** दिन में **निय्यत** करें तो यूं कहें : نَوَيْتُ اَنْ اَصُوْمَ هٰذَا الْيَوْمَ لِلّٰهِ تَعَالٰی مِنْ فَرْضِ رَمَضَان۔ **तरजमा :** मैं ने निय्यत की, कि **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ के लिये आज इस रमज़ान का फ़र्ज़ रोज़ा रखूंगा।

(جَوْهَره ج۱ص۱۷۵)

﴾4﴿ **अ़रबी** में निय्यत के कलिमात अदा करने उसी वक़्त **निय्यत** शुमार किये जाएंगे जब कि उन के मा'ना भी आते हों, और येह भी याद रहे कि ज़बान से **निय्यत** करना ख़्वाह किसी भी ज़बान में हो उसी

वक़्त कारआमद होगा जब कि उस वक़्त दिल में भी **निय्यत** मौजूद हो। (ایضاً)

5 **निय्यत** अपनी मादरी ज़बान में भी की जा सकती है, अ़रबी में करें ख़्वाह किसी और ज़बान में, **निय्यत** करते वक़्त दिल में इरादा मौजूद होना शर्त़ है, वरना बे ख़याली में सिर्फ़ ज़बान से रटे रटाए जुम्ले अदा कर लेने से **निय्यत** न होगी। हां ज़बान से रटी हुई **निय्यत** कह ली मगर बा'द में निय्यत के लिये मुक़र्ररा वक़्त के अन्दर दिल में भी निय्यत कर ली तो अब निय्यत सह़ीह़ है।

(رَدُّالْمحتار ج۳ص۳۳۲)

6 **अगर** दिन में **निय्यत** करें तो ज़रूरी है कि येह **निय्यत** करें कि मैं सुब्ह़े सादिक़ से रोज़ादार हूं। अगर इस त़रह़ **निय्यत** की, कि अब से रोज़ादार हूं सुब्ह़ से नहीं, तो रोज़ा न हुवा।

(جَوْھَرہ ج۱ص۱۷۵ و رَدُّالْمحتار ج۳ص۳۹٤)

7 **दिन** में वोह **निय्यत** काम की है कि सुब्ह़े सादिक़ से **निय्यत** करते वक़्त तक रोज़े के ख़िलाफ़ कोई अम्र (या'नी मुआ़मला) न पाया गया हो। अलबत्ता सुब्ह़े सादिक़ के बा'द भूल कर खा पी लिया या जिमाअ़ कर लिया तब भी **निय्यत** सह़ीह़ हो जाएगी।

(مُلَخَّص از رَدُّالْمحتارج۳ص۳٦۷)

8 **आप** ने अगर यूं **निय्यत** की, कि "कल कहीं दा'वत हुई तो **रोज़ा** नहीं और न हुई तो **रोज़ा** है।" येह **निय्यत** सह़ीह़ नहीं, आप रोज़ादार न हुए। (عالمگیری ج۱ ص۱۹۵)

9 **माहे रमज़ान** के दिन में न रोज़े की **निय्यत** की न येह कि "रोज़ा नहीं" अगर्चे मा'लूम है कि येह **रमज़ानुल मुबारक** का महीना है तो **रोज़ा** न होगा। (عالمگیری ج۱ ص۱۹۵)

10 **ग़ुरूबे** आफ़्ताब के बा'द से ले कर रात के किसी वक़्त में भी **निय्यत** की फिर इस के बा'द रात ही में खाया पिया तो **निय्यत** न टूटी, वोह पहली ही काफ़ी है फिर से **निय्यत** करना ज़रूरी नहीं। (جَوْہَرہ ج۱ ص۱۷۵)

11 **आप** ने अगर रात में रोज़े की **निय्यत** तो की मगर फिर रातों रात पक्का इरादा कर लिया कि "रोज़ा नहीं रखूंगा" तो अब वोह आप की, की हुई निय्यत जाती रही। अगर नई **निय्यत** न की और दिन भर रोज़ादारों की त़रह़ भूके प्यासे रहे तो रोज़ा न हुवा। (دُرِّمُختار ج۳ ص۳۹۸)

12 **दौराने** नमाज़ कलाम (बातचीत) की **निय्यत** तो की मगर बात नहीं की तो नमाज़ फ़ासिद न होगी। इसी त़रह़ रोज़े के दौरान तोड़ने की सिर्फ़ **निय्यत** कर लेने से **रोज़ा** नहीं टूटेगा जब तक तोड़ने वाली कोई चीज़ न करे। (جَوْہَرہ ج۱ ص۱۷۵)

《13》 **सह़री** खाना भी **निय्यत** ही है ख़्वाह माहे रमज़ान के रोज़े के लिये हो या किसी और रोज़े के लिये मगर जब सह़री खाते वक़्त येह इरादा है कि सुब्ह़ को **रोज़ा** न रखूंगा तो येह सह़री खाना **निय्यत** नहीं। (اَیضاً ص۱۷۶)

《14》 **रमज़ानुल मुबारक** के हर रोज़े के लिये नई **निय्यत** ज़रूरी है। पहली तारीख़ या किसी भी और तारीख़ में अगर पूरे **माहे रमज़ान** के रोज़े की **निय्यत** कर भी ली तो येह **निय्यत** सिर्फ़ उसी एक दिन के ह़क़ में है, बाक़ी दिनों के लिये नहीं। (ایضاً)

《15》 **अदाए** रमज़ान और नज़्रे मुअ़य्यन और नफ़्ल के इलावा बाक़ी रोज़े मसलन क़ज़ाए रमज़ान और नज़्रे ग़ैरे मुअ़य्यन और नफ़्ल की क़ज़ा और नज़्रे मुअ़य्यन की क़ज़ा और कफ़्फ़ारे का रोज़ा और तमत्तोअ़[1] का रोज़ा इन सब में ऐ़न सुब्ह़ चमकते (या'नी ठीक सुब्हे

1 : ह़ज की तीन क़िस्में हैं (1) क़िरान (2) तमत्तोअ़ (3) इफ़्राद। क़िरान और तमत्तोअ़ वाले पर ह़ज अदा करने के बा'द बतौ़रे शुक्राना ह़ज की क़ुरबानी करना वाजिब है जब कि इफ़्राद वाले के लिये मुस्तह़ब। अगर क़िरान और तमत्तोअ़ वाले बहुत ज़ियादा मिस्कीन और मोह़ताज हैं मगर क़िरान और तमत्तोअ़ की निय्यत कर ली है और अब इन के पास न कोई क़ुरबानी के लाइक़ जानवर है न रक़म न ही कोई ऐसा सामान वग़ैरा है जिसे फ़रोख़्त कर के क़ुरबानी का इन्तिज़ाम कर सकें तो अब क़ुरबानी के बदले इन पर दस रोज़े वाजिब होंगे। तीन रोज़े ह़ज के महीनों में या'नी यकुम शव्वालुल मुकर्रम से नवीं ज़ुल ह़िज्जतिल ह़राम तक एह़राम बांधने के बा'द इस बीच में जब चाहें रख लें। तरतीब वार रखना ज़रूरी नहीं, नाग़ा कर के भी रख सकते हैं। बेहतर येह है कि सात, आठ और नवीं ज़ुल ह़िज्जतिल ह़राम को रखें और फिर तेरह ज़ुल ह़िज्जतिल ह़राम के बा'द बक़िय्या सात रोज़े जब चाहें रख सकते हैं बेहतर येह है कि घर जा कर रखें।

सादिक़ के) वक़्त या रात में **निय्यत** करना ज़रूरी है और येह भी ज़रूरी है कि जो **रोज़ा** रखना है ख़ास उसी मख़्सूस रोज़े की **निय्यत** करें। अगर इन रोज़ों की **निय्यत** दिन में (या'नी सुब्हे सादिक़ से ले कर ज़ह़्वए कुब्रा से पहले पहले) की तो नफ़्ल हुए फिर भी इन का पूरा करना ज़रूरी है, तोड़ेंगे तो क़ज़ा वाजिब होगी, अगर्चे येह बात आप के इल्म में हो कि मैं जो **रोज़ा** रखना चाहता था येह वोह **रोज़ा** नहीं है बल्कि नफ़्ल ही है। (دُرِّمُختار ج۳ص۳۹۳)

﴾16﴿ **आप** ने येह गुमान कर के **रोज़ा** रखा कि मेरे ज़िम्मे रोज़े की क़ज़ा है, अब रखने के बा'द मा'लूम हुवा कि गुमान ग़लत़ था। अगर फ़ौरन तोड़ दें तो कोई ह़रज नहीं, अलबत्ता बेहतर येही है कि पूरा कर लें। अगर मा'लूम होने के फ़ौरन बा'द न तोड़ा तो अब लाज़िम हो गया इसे नहीं तोड़ सकते अगर तोड़ेंगे तो क़ज़ा वाजिब है। (رَدُّالْمُحتَار ج۳ص۳۹۹)

﴾17﴿ **रात** में आप ने क़ज़ा रोज़े की **निय्यत** की, अगर अब सुब्ह़ शुरूअ़ हो जाने के बा'द इसे नफ़्ल करना चाहते हैं तो नहीं कर सकते। (ایضاً ص۳۹۸) **हां रातों रात निय्यत तब्दील की जा सकती थी।**

﴾18﴿ **दौराने** नमाज़ भी अगर रोज़े की **निय्यत** की तो येह **निय्यत** सह़ीह़ है। (دُرِّمُختَارو رَدُّالْمُحتَار ج۳ص۳۹۸)

﴾19﴿ **कई** रोज़े क़ज़ा हों तो **निय्यत** में येह होना चाहिये कि उस **रमज़ान** के पहले रोज़े की क़ज़ा, दूसरे की क़ज़ा और अगर कुछ इस साल के क़ज़ा हो गए कुछ पिछले साल के बाक़ी हैं तो येह **निय्यत** होनी चाहिये कि इस **रमज़ान** की क़ज़ा और उस **रमज़ान** की क़ज़ा और अगर दिन और साल को **मुअ़य्यन** (या'नी Fix) न किया, जब भी हो जाएंगे। (عالمگیری ج۱ ص۱۹۶)

﴾20﴿ مَعَاذَ اللهِ عَزَّوَجَلَّ आप ने **रमज़ान** का रोज़ा रख लेने के बा'द क़स्दन (या'नी जान बूझ कर) तोड़ डाला था तो आप पर इस **रोज़े** की क़ज़ा भी है और (अगर कफ़्फ़ारे की शराइत़ पाई गईं तो) साठ रोज़े कफ़्फ़ारे के भी। अब आप ने **इक्सठ रोज़े** रख लिये क़ज़ा का दिन **मुअ़य्यन** (Fix) न किया तो इस में क़ज़ा और कफ़्फ़ारा दोनों अदा हो गए। (ایضاً)

दाढ़ी वाली बच्ची ! : रोज़ा और दीगर आ'माल की निय्यतें सीखने का जज़्बा बेदार करने के लिये तब्लीग़े क़ुरआनो सुन्नत की आ़लमगीर ग़ैर सियासी तह़रीक, **दा'वते इस्लामी** के सुन्नतों की तरबियत के मदनी क़ाफ़िलों में **आ़शिक़ाने रसूल** के साथ सुन्नतों भरा सफ़र कीजिये और दोनों जहानों की बरकतें ह़ासिल कीजिये। आप की तरग़ीब के लिये मदनी क़ाफ़िले की एक ख़ुश गवार व ख़ुश्बूदार "मदनी बहार"

आप के गोश गुज़ार करता हूं चुनान्चे एक इस्लामी भाई के बयान का खुलासा है कि एक बार **आ़शिक़ाने रसूल** के तीन दिन के **मदनी क़ाफ़िले** में एक तक़रीबन 26 सालह इस्लामी भाई भी शरीके सफ़र थे, वोह दुआ़ में बहुत गिर्या व ज़ारी करते थे। इस्तिफ़्सार (या'नी पूछने) पर बताया कि मेरी एक ही **मदनी मुन्नी** है और उस के चेहरे पर दाढ़ी के बाल उगने शुरूअ़ हो गए हैं ! इस की वज्ह से मुझे सख़्त तश्वीश है, एक्सरे और टेस्ट वग़ैरा से सबब सामने नहीं आ रहा और कोई भी इलाज कारगर नहीं हो पा रहा। उन की दरख़्वास्त पर शुरकाए मदनी क़ाफ़िला ने उन की मदनी मुन्नी के लिये दुआ़ की। सफ़र मुकम्मल हो जाने के बा'द जब दूसरे दिन उस दुख्यारे इस्लामी भाई से मुलाक़ात हुई तो उन्हों ने मसर्रत से झूमते हुए येह खुश ख़बरी सुनाई कि बच्ची की अम्मी ने बताया कि आप के **मदनी क़ाफ़िले** में सफ़र पर रवाना होने के दूसरे ही दिन اَلْحَمْدُ لِلّٰه عَزَّوَجَلَّ हैरत अंगेज़ त़ौर पर मदनी मुन्नी के चेहरे से बाल ऐसे ग़ाइब हुए हैं जैसे कभी थे ही नहीं !

सह़री करना सुन्नत है : अल्लाहु रब्बुल इ़ज़्ज़त عَزَّوَجَلَّ के करोड़हा करोड़ एह़सान कि उस ने हमें **रोज़े** जैसी अ़ज़ीमुश्शान ने'मत इनायत फ़रमाई और साथ ही कुव्वत के लिये **सह़री** की न सिर्फ़ इजाज़त मर्ह़मत फ़रमाई, बल्कि इस में हमारे लिये ढेरों सवाबे आख़िरत भी रख दिया।

फ़रमाने मुस्त़फ़ा صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰی عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم : शबे जुमुआ और रोज़े जुमुआ मुझ पर कसरत से दुरूद पढ़ो क्यूं कि तुम्हारा दुरूद मुझ पर पेश किया जाता है। (طبرانی)

बा'ज़ लोगों को देखा गया है कि कभी **सह़री** करने से रह जाते हैं तो फ़ख़्रिया यूं कहते सुनाई देते हैं : "हम ने तो आज बिग़ैर **सह़री** के रोज़ा रखा है !" **मक्की मदनी आक़ा** صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰی عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم **के दीवानो !** येह फ़ख़्र का मौक़अ़ हरगिज़ नहीं, **सह़री की सुन्नत** छूटने पर तो अफ़्सोस होना चाहिये कि अफ़्सोस ! ताजदारे रिसालत صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰی عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم की एक अ़ज़ीम सुन्नत छूट गई।

हज़ार साल की इबादत से बेहतर : हज़रते सय्यिदुना शैख़ शरफुद्दीन अल मा'रूफ़ बाबा बुलबुल शाह رَحْمَةُ اللّٰهِ تَعَالٰی عَلَيْه फ़रमाते हैं : "**अल्लाहु रब्बुल इ़ज़्ज़त** ने मुझे अपनी रह़मत से इतनी त़ाक़त बख़्शी है कि मैं बिग़ैर खाए पिये और बिग़ैर साज़ो सामान के भी अपनी ज़िन्दगी गुज़ार सकता हूं। मगर चूंकि येह उमूर हुज़ूरे पुरनूर صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰی عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم की सुन्नत नहीं हैं, इस लिये मैं इन से बचता हूं, **मेरे नज़्दीक सुन्नत की पैरवी हज़ार साल की** (नफ़्ल) **इबादत से बेहतर है।**" बहर ह़ाल तमाम तर आ'माल का हुस्नो जमाल इत्तिबाए़ सुन्नते मह़बूबे रब्बे ज़ुल जलाल صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰی عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم में पिन्हां है।

सोने के बा'द सह़री की इजाज़त न थी : इब्तिदाअन रोज़ा रखने वाले को ग़ुरूबे आफ़्ताब के बा'द सिर्फ़ उस वक़्त तक खाने पीने की इजाज़त थी जब तक वोह सो न जाए, अगर सो गया तो अब

बेदार हो कर खाना पीना मम्नूअ़ था। मगर रब्बे करीम عَزَّوَجَلَّ ने अपने प्यारे बन्दों पर एह़साने अ़ज़ीम फ़रमाते हुए **सह़री** की इजाज़त मर्ह़मत फ़रमा दी, इस का सबब बयान करते हुए **ख़ज़ाइनुल इरफ़ान** में सदरुल अफ़ाज़िल ह़ज़रते अ़ल्लामा मौलाना सय्यिद मुह़म्मद नईमुद्दीन मुरादआबादी عَلَیْہِ رَحمَۃُ اللّٰہِ الْھَادِی नक़्ल करते हैं :

सह़री की इजाज़त की ह़िकायत : ह़ज़रते सय्यिदुना सरमा बिन क़ैस رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْھُمَا मेह़नती शख़्स थे। एक दिन ब ह़ालते **रोज़ा** अपनी ज़मीन में दिन भर काम कर के शाम को घर आए। अपनी ज़ौजए मोह़तरमा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْھَا से खाना त़लब किया, वोह पकाने में मसरूफ़ हुई। आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ थके हुए थे, आंख लग गई। खाना तय्यार कर के जब आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ को जगाया गया तो आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ने खाने से इन्कार कर दिया। क्यूं कि उन दिनों (ग़ुरूबे आफ़्ताब के बा'द) सो जाने वाले के लिये खाना पीना मम्नूअ़ हो जाता था। चुनान्चे खाए पिये बिग़ैर आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ने दूसरे दिन भी **रोज़ा** रख लिया। आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ कमज़ोरी के सबब **बेहोश** हो गए। (تفسیرِ خازن ج۱ ص۱۲۶) तो उन के ह़क़ में येह आयते मुक़द्दसा नाज़िल हुई :

وَكُلُوْا وَاشْرَبُوْا حَتّٰى يَتَبَيَّنَ لَكُمُ الْخَيْطُ الْاَبْيَضُ مِنَ الْخَيْطِ الْاَسْوَدِ مِنَ الْفَجْرِ ۪ ثُمَّ اَتِمُّوا الصِّيَامَ اِلَى الَّيْلِ ۚ

(پ۲، البقرة:۱۸۷)

तरजमए कन्ज़ुल ईमान : और खाओ और पियो यहां तक कि तुम्हारे लिये ज़ाहिर हो जाए सफ़ेदी का डोरा सियाही के डोरे से पौ फट कर। फिर रात आने तक रोज़े पूरे करो।

इस आयते मुक़द्दसा में रात को सियाह डोरे से और सुब्ह़े सादिक़ को सफ़ेद डोरे से तश्बीह दी गई। मा'ना येह हैं कि तुम्हारे लिये **रमज़ानुल मुबारक** की रातों में खाना पीना मुबाह़ (या'नी जाइज़) क़रार दे दिया गया है। (ख़ज़ाइनुल इरफ़ान, स. 62 ब तसर्रुफ़)

प्यारे प्यारे इस्लामी भाइयो ! इस से येह भी मा'लूम हुवा कि रोज़े का **अज़ाने फ़ज्र** से कोई तअ़ल्लुक़ नहीं या'नी **फ़ज्र** की अज़ान के दौरान खाने पीने का कोई जवाज़ ही नहीं। अज़ान हो या न हो, आप तक आवाज़ पहुंचे या न पहुंचे सुब्ह़े सादिक़ से पहले पहले आप को खाना पीना बन्द करना होगा।

"सुन्नत" के तीन ह़ुरूफ़ की निस्बत से सह़री के मुतअ़ल्लिक़ 3 फ़रामीने मुस्त़फ़ा صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم

﴾1﴿ **रोज़ा** रखने के लिये **सह़री** खा कर क़ुव्वत ह़ासिल करो और दिन (या'नी दो पहर) के वक़्त आराम (या'नी क़ैलूला) कर के रात की इबादत के लिये त़ाक़त ह़ासिल करो। (ابنِ ماجه ج۲ص۳۲۱حديث۱۶۹۳)

﴾2﴿ **तीन** आदमी जितना भी खा लें उन से कोई हिसाब न होगा बशर्ते कि खाना हलाल हो (1) रोज़ादार इफ़्तार के वक़्त (2) **सहरी** खाने वाला (3) मुजाहिद, जो **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ के रास्ते में सरहदे इस्लाम की हिफ़ाज़त करे। (مُعجَم کبیر ج ۱۱ ص ۲۸۵ حدیث ۱۲۰۱۲)

﴾3﴿ **सहरी** पूरी की पूरी बरकत है पस तुम न छोड़ो चाहे येही हो कि तुम पानी का एक घूंट पी लो। बेशक **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ और उस के फ़िरिश्ते रहमत भेजते हैं **सहरी** करने वालों पर। (مُسند امام احمد ج ٤ ص ۸۸ حدیث ۱۱۳۹٦)

क्या रोज़े के लिये सहरी शर्त है ? : सहरी रोज़े के लिये शर्त नहीं, **सहरी** के बिग़ैर भी **रोज़ा** हो सकता है मगर जान बूझ कर **सहरी** न करना मुनासिब नहीं कि एक अ़ज़ीम सुन्नत से महरूमी है और **सहरी** में ख़ूब डट कर खाना ही ज़रूरी नहीं, चन्द खजूरें और पानी ही अगर ब निय्यते **सहरी** इस्ति'माल कर लें जब भी काफ़ी है।

खजूर और पानी से सहरी : हज़रते सय्यिदुना अनस बिन मालिक رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْهُ फ़रमाते हैं कि ताजदारे मदीना, सुरूरे क़ल्बो सीना صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰی عَلَیْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने **सहरी** के वक़्त मुझ से फ़रमाया : "मेरा रोज़ा रखने का इरादा है मुझे कुछ खिलाओ।" तो मैं ने कुछ खजूरें और एक बरतन में पानी पेश किया। (السُّنَنُ الکُبریٰ لِلنّسائی ج ۲ ص ۸۰ حدیث ۲٤۷۷)

खजूर से सहरी करना सुन्नत है : प्यारे प्यारे इस्लामी भाइयो ! اَلْحَمْدُ لِلّٰه عَزَّوَجَلَّ रोज़ादार के लिये एक तो **सहरी** करना बज़ाते ख़ुद **सुन्नत** और खजूर से **सहरी** करना दूसरी सुन्नत, क्यूं कि **अल्लाह तआला** के हबीब صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰی عَلَیْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने खजूर से **सहरी** करने की तरग़ीब दी है। चुनान्चे सय्यिदुना साइब बिन यज़ीद رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْهُ से मरवी है, **अल्लाह** के प्यारे हबीब, हबीबे लबीब صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰی عَلَیْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने इर्शाद फ़रमाया : "نِعْمَ السَّحُوْرُ التَّمْرُ۔ या'नी खजूर बेहतरीन **सहरी** है।"

(مُعجَم کبیر ج۷ ص۱۵۹ حدیث ۶۶۸۹)

एक और मक़ाम पर इर्शाद फ़रमाया : "نِعْمَ سَحُوْرُ الْمُؤْمِنِ التَّمْرُ۔ या'नी **खजूर** मोमिन की क्या ही अच्छी **सहरी** है।"

(ابوداوٗد ج ۲ ص۴۴۳ حدیث۲۳۴۵)

सहरी का वक़्त कब होता है ? : हनफ़िय्यों के बहुत बड़े आलिम हज़रते अ़ल्लामा मौलाना अ़ली क़ारी عَلَیْهِ رَحْمَةُ اللّٰهِ الْبَارِی फ़रमाते हैं : "बा'ज़ों के नज़्दीक **सहरी** का वक़्त **आधी रात** से शुरूअ़ हो जाता है।" (مِرقاۃُ المفاتیح ج ۴ ص۴۷۷)

सहरी में ताख़ीर अफ़्ज़ल है जैसा कि हज़रते सय्यिदुना या'ला बिन मुर्रह رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْهُ से रिवायत है कि प्यारे सरकार, मदीने के ताजदार صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰی عَلَیْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया : "तीन चीज़ों को **अल्लाह**

عَزَّوَجَلَّ मह़बूब रखता है (1) इफ़्त़ार में जल्दी और (2) **सह़री** में ताख़ीर और (3) नमाज़ (के क़ियाम) में हाथ पर हाथ रखना।"

(مُعجَم اَوسَط ج٥ص٣٢٠حديث٧٤٧٠)

सह़री में ताख़ीर से कौन सा वक़्त मुराद है ? : प्यारे प्यारे इस्लामी भाइयो ! **सह़री** में ताख़ीर करना मुस्तह़ब है मगर इतनी ताख़ीर भी न की जाए कि सुब्ह़े सादिक़ का शुबा होने लगे ! यहां ज़ेहन में येह सुवाल पैदा होता है कि "ताख़ीर" से मुराद कौन सा वक़्त है ? **मुफ़स्सिरे** शहीर **ह़कीमुल उम्मत** ह़ज़रते मुफ़्ती अह़मद यार ख़ान عَلَيْهِ رَحْمَةُ الْحَنَّان "तफ़्सीरे नईमी" में फ़रमाते हैं : "इस से मुराद **रात का छटा ह़िस्सा** है।" फिर सुवाल ज़ेहन में उभरा कि रात का छटा ह़िस्सा कैसे मा'लूम किया जाए ? इस का जवाब येह है कि **ग़ुरूबे आफ़्ताब से ले कर सुब्ह़े सादिक़ तक रात कहलाती है।** मसलन किसी दिन **सात** बजे शाम को सूरज ग़ुरूब हुवा और फिर **चार** बजे सुब्ह़े सादिक़ हुई। इस त़रह ग़ुरूबे आफ़्ताब से ले कर सुब्ह़े सादिक़ तक जो नव घन्टे का वक़्फ़ा गुज़रा वोह रात कहलाया। अब रात के इन नव घन्टों के बराबर बराबर छ6 ह़िस्से कर दीजिये। हर ह़िस्सा **डेढ़ घन्टे** का हुवा, अब रात के आख़िरी डेढ़ घन्टे (या'नी अढ़ाई बजे ता चार बजे) के दौरान सुब्ह़े सादिक़ से पहले पहले **सह़री** करना ताख़ीर से करना हुवा। **सह़री** व इफ़्त़ार का वक़्त रोज़ाना बदलता रहता है। बयान किये हुए त़रीक़े के मुत़ाबिक़ जब

चाहें रात का छटा हिस्सा निकाल सकते हैं। अगर रात **सह़री** कर ली और रोज़े की निय्यत भी कर ली। तब भी बक़िय्या रात के दौरान खा पी सकते हैं, नई निय्यत की ह़ाजत नहीं।

अज़ाने फ़ज्र नमाज़ के लिये है न कि रोज़ा बन्द करने के लिये ! : बा'ज़ लोग सुब्ह़े सादिक़ के बा'द फ़ज्र की अज़ान के दौरान खाते पीते रहते हैं, और बा'ज़ कान लगा कर सुनते हैं कि अभी फ़ुलां मस्जिद की अज़ान ख़त्म नहीं हुई या कहते हैं : वोह सुनो ! दूर से अज़ान की आवाज़ आ रही है ! और यूं कुछ न कुछ खा लेते हैं। अगर खाते नहीं तो पानी पी कर अपनी इस्त़िलाह़ में "रोज़ा बन्द" करते हैं। आह ! इस त़रह़ "रोज़ा बन्द" तो क्या करेंगे रोज़े को बिल्कुल ही "खुला" छोड़ देते हैं और यूं सुब्ह़े सादिक़ के बा'द खा या पी लेने के सबब उन का रोज़ा होता ही नहीं, और सारा दिन भूक प्यास के सिवा कुछ उन के हाथ आता ही नहीं। "रोज़ा बन्द" करने का तअ़ल्लुक़ अज़ाने फ़ज्र से नहीं सुब्ह़े सादिक़ से पहले पहले खाना पीना बन्द करना ज़रूरी है, जैसा कि आयते मुक़द्दसा के तह़्त गुज़रा। **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ हर मुसल्मान को अ़क़्ले सलीम अ़त़ा फ़रमाए और सह़ीह़ अवक़ात की मा'लूमात कर के रोज़ा नमाज़ वग़ैरा इबादात दुरुस्त बजा लाने की तौफ़ीक़ मर्ह़मत फ़रमाए। اٰمِين بِجَاہِ النَّبِیِّ الْاَمِین صَلَّی اللہ تعالٰی علیہ واٰلہٖ وسلّم

खाना पीना बन्द कर दीजिये : इ़ल्मे दीन से दूरी के सबब आज कल काफ़ी लोग अज़ान या साइरन ही पर **सह़री** व इफ़्त़ार का दारो मदार रखते हैं बल्कि बा'ज़ तो अज़ाने **फ़ज्र** के दौरान ही "रोज़ा बन्द" करते हैं। इस आ़म ग़लती को दूर करने के लिये क्या ही अच्छा हो कि **रमज़ानुल मुबारक** में रोज़ाना सुब्हे़ सादिक़ से तीन मिनट पहले हर मस्जिद में बुलन्द आवाज़ से صَلُّوْا عَلَی الْحَبِیْب ! صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلٰی مُحَمَّد कहने के बा'द इस त़रह़ तीन बार ए'लान कर दिया जाए : **"आ़शिक़ाने रसूल मुतवज्जेह हों, आज सह़री का आख़िरी वक़्त** (मसलन) **चार बज कर बारह मिनट है, वक़्त ख़त्म हो रहा है, फ़ौरन खाना पीना बन्द कर दीजिये, अज़ान का हरगिज़ इन्तिज़ार न फ़रमाइये, अज़ान सह़री का वक़्त ख़त्म हो जाने के बा'द नमाज़े फ़ज्र के लिये दी जाती है।"**

हर एक को येह बात ज़ेह्न नशीन करनी ज़रूरी है कि अज़ाने **फ़ज्र** सुब्हे़ सादिक़ के बा'द ही देनी होती है और वोह "रोज़ा बन्द" करने के लिये नहीं बल्कि सिर्फ़ **नमाज़े फ़ज्र** के लिये दी जाती है।

صَلُّوْا عَلَی الْحَبِیْب ! صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلٰی مُحَمَّد

मदनी क़ाफ़िले की निय्यत करते ही मुश्किल आसान हो गई ! : प्यारे प्यारे इस्लामी भाइयो ! तब्लीग़े क़ुरआनो सुन्नत की

आ़लमगीर ग़ैर सियासी तह़रीक, **दा'वते इस्लामी** के सुन्नतों की तरबियत के मदनी क़ाफ़िलों में **आ़शिक़ाने रसूल** के साथ सुन्नतों भरा सफ़र फ़रमाते रहिये اِنْ شَآءَاللّٰه عَزَّوَجَلَّ दुन्या व आख़िरत की बे शुमार भलाइयां हाथ आएंगी। आप की ज़ौक़ अफ़्ज़ाई के लिये मदनी क़ाफ़िले की एक "मदनी बहार" गोश गुज़ार करता हूं, चुनान्चे एक इस्लामी भाई के बड़े भाई की शादी के दिन क़रीब आ रहे थे, अख़राजात का इन्तिज़ाम नहीं था, उन्हें सख़्त तश्वीश थी, क़र्ज़ लेने का ज़ेहन भी नहीं बन रहा था कि अदा करने में ताख़ीर की सूरत में जान से प्यारी मदनी तह़रीक, "**दा'वते इस्लामी**" के नाम पर बट्टा लग सकता है। एक दिन इन्तिहाई परेशानी के आ़लम में उन्हों ने नमाज़े ज़ोह्र अदा की और दिल ही दिल में निय्यत की, कि अगर रक़म का इन्तिज़ाम हो गया तो **मदनी क़ाफ़िले** में सफ़र की सआ़दत ह़ासिल करूंगा। नमाज़ से फ़राग़त के बा'द अभी नमाज़ियों से मुलाक़ात और **इन्फ़िरादी कोशिश** में मसरूफ़ थे कि इमाम साह़िब जो रिश्ते में उन के तायाजान थे और उन की परेशानी से वाक़िफ़ भी। उन्हों ने इन्हें बुलाया और اَلْحَمْدُ لِلّٰه عَزَّوَجَلَّ बिग़ैर सुवाल के ख़ुद ही रक़म देने का वा'दा फ़रमा लिया। वोह इस्लामी भाई दूसरे ही दिन मदनी क़ाफ़िले के मुसाफ़िर बन गए। اَلْحَمْدُ لِلّٰه عَزَّوَجَلَّ **मदनी क़ाफ़िले** में सफ़र की निय्यत की बरकत से उन की उल्झन दूर हो गई। तारीख़ तै होते वक़्त बारे क़र्ज़ तले दबे हुए थे,

اَلْحَمْدُ لِلّٰہ عَزَّوَجَلَّ बड़े भाईजान की शादी भी हो गई और क़र्ज़ भी उतर गया।

क़ल्ब भी शाद हो, घर भी आबाद हो शादियां भी रचें, क़ाफ़िले में चलो
क़र्ज़ उतर जाएगा, ख़ूब रिज़्क़ आएगा सब बलाएं टलें, क़ाफ़िले में चलो

(वसाइले बख़्शिश, स. 675)

صَلُّوا عَلَی الْحَبِیْب ! صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلٰی مُحَمَّد

प्यारे प्यारे इस्लामी भाइयो ! देखा आप ने ! छोटे भाई की मदनी क़ाफ़िले में सफ़र की निय्यत की बरकत से अदाए क़र्ज़ का इन्तिज़ाम, रक़म का एहतिमाम और बड़े भाई की शादी वाला काम हो गया।

क़र्ज़ से नजात का अ़मल : हर नमाज़ के बा'द सात बार **सूरए क़ुरैश** (अव्वल आख़िर एक बार दुरूद शरीफ़) पढ़ कर दुआ मांगिये। पहाड़ जितना क़र्ज़ होगा तब भी اِنْ شَآءَ اللّٰہ عَزَّوَجَلَّ अदा हो जाएगा। अ़मल ता हुसूले मुराद जारी रखिये।

क़र्ज़ा उतारने का वज़ीफ़ा : اَللّٰھُمَّ اکْفِنِیْ بِحَلَالِکَ عَنْ حَرَامِکَ وَاَغْنِنِیْ بِفَضْلِکَ عَمَّنْ سِوَاکَ (**तरजमा : या अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ ! मुझे ह़लाल रिज़्क़ अ़ता फ़रमा कर ह़राम से बचा और अपने फ़ज़्लो करम से अपने सिवा ग़ैरों से बे नियाज़ कर दे) ता हुसूले मुराद हर नमाज़ के बा'द 11, 11 बार और सुब्ह़ो शाम 100, 100 बार रोज़ाना (अव्वल व

आख़िर एक एक बार दुरूद शरीफ़) पढ़िये। मरवी हुवा कि एक मुकातब[1] ने ह़ज़रते मौलाए काएनात, अ़लिय्युल मुर्तज़ा शेरे ख़ुदा كَرَّمَ اللّٰهُ تَعَالٰی وَجْهَهُ الْكَرِيْم की बारगाह में अ़र्ज़ की : "मैं अपनी किताबत (या'नी आज़ादी की क़ीमत) अदा करने से आ़जिज़ हूं मेरी मदद फ़रमाइये।" आप كَرَّمَ اللّٰهُ تَعَالٰی وَجْهَهُ الْكَرِيْم ने फ़रमाया : मैं तुम्हें चन्द कलिमात न सिखाऊं जो **रसूलुल्लाह** صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰی عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने मुझे सिखाए हैं, अगर तुम पर जबले सीर[2] जितना दैन (या'नी क़र्ज़) होगा तो **अल्लाह तआ़ला** तुम्हारी त़रफ़ से अदा कर देगा, तुम यूं कहा करो : اَللّٰهُمَّ اكْفِنِيْ بِحَلَالِكَ عَنْ حَرَامِكَ وَاَغْنِنِيْ بِفَضْلِكَ عَمَّنْ سِوَاكَ (**तरजमा : या अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ ! मुझे ह़लाल रिज़्क़ अ़त़ा फ़रमा कर ह़राम से बचा और अपने फ़ज़्लो करम से अपने सिवा ग़ैरों से बे नियाज़ कर दे) (ترمذی ج ٥ ص ٣٢٩ حديث ٣٥٧٤)

सुब्ह़ व शाम की ता'रीफ़ : आधी रात के बा'द से ले कर सूरज की पहली किरन चमक्ने तक **सुब्ह़** और इब्तिदाए वक़्ते ज़ोहर से ग़ुरूबे आफ़्ताब तक **शाम** कहलाती है।

मदनी मश्वरा : परेशान ह़ाल इस्लामी भाई को चाहिये कि **दा'वते इस्लामी** के सुन्नतों की तरबियत के मदनी क़ाफ़िले में **आ़शिक़ाने रसूल** के साथ सुन्नतों भरा सफ़र कर के वहां दुआ़ मांगे, अगर ख़ुद

---

1 : मुकातब : उस ग़ुलाम को कहते हैं जिस ने अपने आक़ा से माल की अदाएगी के बदले आज़ादी का मुआ़हदा किया हुवा हो। (جَوْهَره ج ٢ ص ١٤٢ مُلَخَّصاً)

2 : सीर एक पहाड़ का नाम है। (اَلنِّهَايَة ج ٣ ص ٦١)

मजबूर है मसलन इस्लामी बहन है तो अपने घर में से किसी और को सफ़र पर भिजवाए।

इफ़्त़ार का बयान : जब ग़ुरूबे आफ़्ताब का यक़ीन हो जाए, इफ़्त़ार करने में देर नहीं करनी चाहिये, न साइरन का इन्तिज़ार कीजिये न अज़ान का, फ़ौरन कोई चीज़ खा या पी लीजिये मगर खजूर या छुहारा या पानी से इफ़्त़ार करना सुन्नत है। "फ़तावा रज़विय्या" में है, **सुवाल :** रोज़ा इफ़्त़ार करना किस चीज़ से मस्नून (सुन्नत) है। **जवाब :** ख़ुरमाए तर (या'नी खजूर) और न हो तो ख़ुश्क (या'नी छुहारा) और न हो तो पानी। (फ़तावा रज़विय्या मुख़र्रजा, जि. 10, स. 628, 629)

इफ़्त़ार की दुआ़ : इफ़्त़ार कर लेने के बा'द मसलन खजूर खा कर या थोड़ा सा पानी पी लेने के बा'द सुन्नत पर अ़मल करने की निय्यत से नीचे दी हुई दुआ़ भी पढ़िये, कि मदीने के ताजदार, शहन्शाहे अबरार صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ब वक़्ते इफ़्त़ार येह दुआ़ पढ़ते : اَللّٰهُمَّ لَكَ صُمْتُ وَعَلٰى رِزْقِكَ اَفْطَرْتُ۔ (**तरजमा : ऐ अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ ! मैं ने तेरे लिये रोज़ा रखा और तेरे ही अ़त़ा कर्दा रिज़्क़ से इफ़्त़ार किया।) (ابو داؤد ج۲ ص٤٤٧ حديث ۲۳۵۸) दूसरी ह़दीसे पाक में **फ़रमाने मुस्त़फ़ा** صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم है : ऐ अ़ली ! जब तुम रमज़ान के महीने में रोज़ा रखो तो इफ़्त़ार के बा'द येह दुआ़ पढ़ो :

اَللّٰھُمَّ لَکَ صُمْتُ وَعَلَیْکَ تَوَکَّلْتُ وَعَلٰی رِزْقِکَ اَفْطَرْتُ۔

(**तरजमा :** ऐ **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ ! मैं ने तेरे लिये रोज़ा रखा और तुझी पर भरोसा किया और तेरे ही अ़त़ा कर्दा रिज़्क़ से इफ़्त़ार किया) तो तुम्हारे लिये तमाम रोज़ेदारों की मिस्ल अज्र लिखा जाएगा और उन के सवाब में भी कमी नहीं की जाएगी। (بُغْيَةُ الْبَاحِث عن زوائِدِ مسندِ الْحارث ج۱ ص۵۲۷ حديث۴۶۹) इस के बा'द हो सके तो मज़ीद दुआ़एं भी कीजिये कि वक़्ते क़ुबूल है।

इफ़्त़ार के लिये अज़ान शर्त़ नहीं : **इफ़्त़ार** की दुआ़ उ़मूमन क़ब्ल अज़ इफ़्त़ार पढ़ने का रवाज है मगर इमामे अहले सुन्नत मौलाना शाह अह़मद रज़ा ख़ान عَلَيْهِ رَحْمَةُ الرَّحْمٰن ने "फ़तावा रज़विय्या (मुख़र्रजा) जिल्द 10 सफ़्ह़ा 631" में अपनी तह़क़ीक़ येही पेश की है कि दुआ़ इफ़्त़ार के बा'द पढ़ी जाए। इफ़्त़ार के लिये अज़ान शर्त़ नहीं, वरना उन अ़लाक़ों या शहरों में रोज़ा कैसे खुलेगा जहां मसाजिद ही नहीं या अज़ान की आवाज़ नहीं आती। बहर ह़ाल अज़ान नमाज़े मग़रिब के लिये होती है। जहां मसाजिद हों ! ज़हे नसीब ! वहां येह त़रीक़ा राइज हो जाए कि जैसे ही आफ़्ताब ग़ुरूब होने का यक़ीन हो जाए, बुलन्द आवाज़ से "صَلُّوْا عَلَى الْحَبِيْب ! صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلٰى مُحَمَّد" कहने के बा'द इस त़रह़ तीन बार ए'लान कर दिया जाए : "**आ़शिक़ाने रसूल रोज़ा इफ़्त़ार कर लीजिये।**"

"मदीना" के पांच हुरूफ़ की निस्बत से इफ़्तार के फ़ज़ाइल के मुतअ़ल्लिक़

5 फ़रामीने मुस्त़फ़ा صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم

﴾1﴿ "**हमेशा** लोग ख़ैर के साथ रहेंगे जब तक इफ़्त़ार में जल्दी करेंगे।"

(بُخاری ج۱ ص۶۴۵ حدیث۱۹۵۷)

इफ़्त़ार करवाने की अ़ज़ीमुश्शान फ़ज़ीलत

﴾2﴿ "**जिस** ने ह़लाल खाने या पानी से (किसी मुसल्मान को) रोज़ा इफ़्त़ार करवाया, फ़िरिश्ते माहे रमज़ान के अवक़ात में उस के लिये **इस्तिग़्फ़ार** करते हैं और जिब्रील (عَلَيْهِ الصَّلٰوةُ وَالسَّلَام) शबे क़द्र में उस के लिये **इस्तिग़्फ़ार** करते हैं।" (مُعجَم کبیر ج۶ ص۲۶۲ حدیث۶۱۶۲)

जिब्रीले अमीन के मुसाफ़ह़ा करने की अ़लामत

﴾3﴿ "**जो** ह़लाल कमाई से रमज़ान में रोज़ा इफ़्त़ार करवाए रमज़ान की तमाम रातों में फ़िरिश्ते उस पर दुरूद भेजते हैं और शबे क़द्र में जिब्रील (عَلَيْهِ الصَّلٰوةُ وَالسَّلَام) उस से मुसाफ़ह़ा करते हैं और जिस से जिब्रील (عَلَيْهِ الصَّلٰوةُ وَالسَّلَام) मुसाफ़ह़ा कर लें उस की आंखें अश्कबार हो जाती हैं और उस का दिल नर्म हो जाता है।" (جَمْعُ الْجَوامِع ج۷ ص۲۱۷ حدیث۲۲۵۳۴)

﴾4﴿ "**जो** रोज़ादार को पानी पिलाएगा **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ उसे मेरे हौज़ से

पिलाएगा कि जन्नत में दाख़िल होने तक प्यासा न होगा।"

(ابن خُزَیمہ ج ۳ ص ۱۹۲ حدیث ۱۸۸۷)

﴿5﴾ "**जब** तुम में कोई रोज़ा इफ़्त़ार करे तो **खजूर** या छुहारे से इफ़्त़ार करे कि वोह बरकत है और अगर न मिले तो पानी से कि वोह पाक करने वाला है।" (تِرمذی ج ۲ ص ۱۶۲ حدیث ۶۹۵)

सरकार صَلَّى اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم का इफ़्त़ार : ह़ज़रते सय्यिदुना अनस رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ से रिवायत है : "**अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ के ह़बीब, ह़बीबे लबीब صَلَّى اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم नमाज़ से पहले तर **खजूरों** से रोज़ा इफ़्त़ार फ़रमाते, तर **खजूरें** न होतीं तो चन्द ख़ुश्क **खजूरें** या'नी छुहारों से और येह भी न होतीं तो चन्द चुल्लू पानी पीते।"

(ابوداؤد ج ۲ ص ۴۴۷ حدیث ۲۳۵۶)

प्यारे प्यारे इस्लामी भाइयो ! अह़ादीसे मुबारका में **सह़री** और इफ़्त़ार में **खजूर** के इस्ति'माल की तरग़ीब मौजूद है, बेशक **खजूर** में ला ता'दाद बरकतें और कई बीमारियों का इ़लाज है।

"सय्यिदी आ'ला ह़ज़रत की पच्चीसवीं शरीफ़"

के पच्चीस हुरूफ़ की निस्बत से खजूर के 25 मदनी फूल

﴿1﴾ **अल्लाह** के ह़बीब, ह़बीबे लबीब صَلَّى اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم का फ़रमाने सिह़्ह़त निशान है : "आ़लिया" (या'नी मदीनए मुनव्वरह

زَادَهَا اللّٰهُ شَرَفًاوَّتَعْظِيْمًا में मस्जिदे क़ुबा शरीफ़ की जानिब एक जगह का नाम) की **अ़ज्वा** (मदीनए मुनव्वरह زَادَهَا اللّٰهُ شَرَفًاوَّتَعْظِيْمًا की सब से अ़ज़ीम खजूर का नाम) में हर बीमारी से शिफ़ा है।" एक रिवायत के मुत़ाबिक़ "सात रोज़ तक रोज़ाना **सात अ़ज्वा खजूरें** खाना जुज़ाम (या'नी कोढ़) में नफ़्अ़ देता है।" (الکامل لابن عدی ج۷ ص ٤٠٧)

﴾2﴿ **मीठे मीठे आक़ा**, मक्की मदनी मुस्त़फ़ा صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم का फ़रमाने जन्नत निशान है : **अ़ज्वा** खजूर जन्नत से है, इस में **ज़हर** से शिफ़ा है। (تِرمذی ٤ ص١٧ حديث ٢٠٧٣) **बुख़ारी** शरीफ़ की रिवायत के मुत़ाबिक़ जिस ने नहार मुंह अ़ज्वा खजूर के सात दाने खा लिये उस दिन उसे **जादू** और **ज़हर** भी नुक़्सान न दे सकेंगे।

(بُخارِی ج٣ ص٠ ٥٤ حديث ٥٤٤٥)

﴾3﴿ **सय्यिदुना** अबू हुरैरा رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْهُ से रिवायत है, खजूर खाने से कूलन्ज (या'नी बड़ी अंतड़ी का दर्द) नहीं होता।

(كَنْزُ الْعُمَّال ج١٠ ص١٢ حديث ٢٨١٩١)

﴾4﴿ **त़बीबों** के त़बीब, **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ के ह़बीब, ह़बीबे लबीब صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم का फ़रमाने सिह़्ह़त निशान है : "नहार मुंह खजूर खाओ इस से पेट के कीड़े मर जाते हैं।"

(اَلْجَامِعُ الصَّغِيْر ص٣٩٨ حديث ٦٣٩٤)

﴿5﴾ **हज़रते** सय्यिदुना रबीअ़ बिन ख़ुसैम رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ फ़रमाते हैं : "मेरे नज़्दीक हामिला के लिये खजूर से और मरीज़ के लिये शहद से बेहतर किसी चीज़ में शिफ़ा नहीं।" (تفسیرِ دُرِّ مَنْثُور ج۰ ص۰۵۰)

﴿6﴾ **सय्यिदी** मुहम्मद अह्मद ज़हबी رَحْمَۃُ اللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہ फ़रमाते हैं : "हामिला को खजूरें खिलाने से اِنْ شَآءَاللّٰہ عَزَّوَجَلَّ लड़का पैदा होगा जो कि ख़ूब सूरत बुर्दबार और नर्म मिज़ाज होगा।"

﴿7﴾ **जो** फ़ाक़े (या'नी भूक) की वज्ह से कमज़ोर हो गया हो उस के लिये खजूर बहुत मुफ़ीद है क्यूं कि येह गिज़ाइयत से भरपूर है इस के खाने से जल्द तुवानाई बहाल हो जाती है, लिहाज़ा खजूर से **इफ़्तार** करने में येह हिक्मत भी है।

﴿8﴾ **रोज़े** में फ़ौरन बर्फ़ का ठन्डा पानी पी लेने से गेस, तबख़ीरे मे'दा और जिगर के वरम का सख़्त ख़तरा है, खजूर खा कर ठन्डा पानी पीने से नुक़्सान का ख़तरा टल जाता है, मगर सख़्त ठन्डा पानी हरगिज़ नहीं पीना चाहिये।

﴿9﴾ **खजूर** और ककड़ी[1], नीज़ खजूर और तरबूज़ एक साथ खाना नबिय्ये करीम صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم से साबित है।[2] इस में भी हिक्मतों के मदनी फूल हैं। तबीबों का कहना है कि इस से जिन्सी व जिस्मानी कमज़ोरी और **दुबला पन** दूर होता है। **मख्खन** के

---

۱ مسلم ص۱۱۳۰ حدیث۲۰۴۳ ۔ ۲ شمائلِ ترمذی ص۱۲۱ حدیث۱۹۰

साथ **खजूर** खाना भी नबिय्ये करीम صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم से साबित है। (ابن ماجہ ج٤ ص٤١ حدیث٣٣٣٤)

《10》 **खजूर** खाने से पुरानी क़ब्ज़ दूर होती है।

《11》 **दमे, दिल, गुर्दे, मसाने, पित्ते और आंतों** के अमराज़ में खजूर मुफ़ीद है। येह बल्ग़म ख़ारिज करती, मुंह की ख़ुश्की दूर करती और पेशाब आवर है।

《12》 **दिल** की बीमारी और काला मोतिया के लिये खजूर गुठली समेत कूट कर खाना मुफ़ीद है।

《13》 **खजूर** भिगो कर इस का पानी पी लेने से **जिगर** की बीमारियां दूर होती हैं। **दस्त** की बीमारी में भी येह पानी मुफ़ीद है। (रात को भिगो कर सुब्ह नहार मुंह इस का पानी पियें मगर भिगोने के लिये पानी डाल कर फ़्रीज़र में न रखें)

《14》 **खजूर** दूध में उबाल कर खाना बेहतरीन मुक़व्वी (या'नी ताक़त देने वाली) ग़िज़ा है, येह ग़िज़ा बीमारी के बा'द की कमज़ोरी दूर करने के लिये बेहद मुफ़ीद है।

《15》 **खजूर** खाने से ज़ख़्म जल्दी भरता है।

《16》 **यरक़ान** (या'नी पीलिया) के लिये खजूर बेहतरीन दवा है।

《17》 **ताज़ा** पक्की खजूरें सफ़रा (या'नी "**पित**" जिस से क़ै के ज़रीए

मक्कतुल मुकर्रमा मदीनतुल मुनव्वरा जन्नतुल बक़ीअ़

कड़वा पानी निकलता है) और तेज़ाबियत को ख़त्म करती हैं।

18 **खजूर** की गुठलियां आग में जला कर उस का मन्जन बना लीजिये, येह दांत चमक्दार और मुंह की बदबू दूर करता है।

19 **खजूर** की जली हुई गुठलियों की राख लगाने से ज़ख़्म का ख़ून बन्द होता और ज़ख़्म भर जाता है।

20 **खजूर** की गुठलियों को आग में डाल कर धूनी लेने से बवासीर के मस्से ख़ुश्क हो जाते हैं।

21 **खजूर** के दरख़्त की जड़ों या पत्तों की राख से मन्जन करना दांतों के दर्द के लिये मुफ़ीद है, जड़ों या पत्तों को पानी में उबाल कर उस से कुल्लियां करना भी **दांतों** के दर्द में फ़ाएदे मन्द है।

22 **जिसे** खजूर खाने से किसी क़िस्म का नुक़्सान (side effect) होता हो वोह अनार के रस या ख़श्ख़ाश या काली मिर्च के साथ इस्ति'माल करे اِنْ شَآءَاللّٰه عَزَّوَجَلَّ फ़ाएदा होगा।

23 **अध** पक्की और पुरानी खजूरें बयक वक़्त (या'नी एक ही वक़्त में) खाना नुक़्सान देह है। इसी त़रह़ खजूर के साथ अंगूर या किशमिश या मुनक़्क़ा मिला कर खाना, खजूर और इन्जीर बयक वक़्त खाना, बीमारी से उठते ही कमज़ोरी में ज़ियादा खजूरें खाना और आंखों की बीमारी में खजूरें खाना मुज़िर या'नी नुक़्सान देह है।

﴾24﴿ **एक** वक़्त में 5 तोला (या'नी 58.32 ग्राम) से ज़ियादा खजूरें न खाएं। पुरानी खजूर खाते वक़्त खोल कर अन्दर से देख लीजिये क्यूं कि उस में बा'ज़ अवक़ात सुरसुरियां (या'नी छोटे छोटे लाल कीड़े) होती हैं, लिहाज़ा साफ़ कर के खाइये। जिस खजूर में कीड़े होने का गुमान हो उसे साफ़ किये बिग़ैर खाना मक्रूह है। बेचने वाले चमकाने के लिये अक्सर सरसों का तेल लगा देते हैं लिहाज़ा बेहतर येह है कि खजूरें चन्द मिनट के लिये पानी में भिगो दीजिये ताकि मख्खियों की बीट और मैल कुचैल वग़ैरा छूट जाए फिर धो कर इस्ति'माल फ़रमाइये। दरख़्त की पकी हुई खजूरें **ज़ियादा मुफ़ीद** होती हैं। (मगर धोए बिग़ैर खजूरें बल्कि कोई सा फल और सब्ज़ी वग़ैरा इस्ति'माल न करें वरना गर्दो ग़ुबार, मख्खियों, कीड़े मकोड़ों की बीट और जरासीम कुश दवाओं के असरात पेट में जा कर बीमारियों का बाइस हो सकते हैं)

﴾25﴿ **मदीनए मुनव्वरह** زَادَهَا اللّٰهُ شَرَفًا وَّتَعْظِيمًا की खजूरों की गुठलियां मत फेंकिये, किसी अदब की जगह डाल दीजिये या दरिया बुर्द फ़रमा दीजिये, बल्कि हो सके तो सरोते से बारीक टुकड़ियां कर के या पीस कर डिबिया में डाल कर जेब में रख लीजिये और छालिया की जगह इस्ति'माल कर के इस की बरकतें लूटिये। कोई चीज़ ख़्वाह दुन्या के किसी भी ख़ित्ते की हो जब मदीनए मुनव्वरह

زَادَهَا اللّٰهُ شَرَفًاوَّتَعْظِيْمًا की फ़ज़ाओं में दाख़िल हुई तो मदीने की हो गई लिहाज़ा आ़शिक़ाने रसूल उस का अदब करते हैं।

क्या ह़दीस में बताया हुवा इलाज हर एक कर सकता है : प्यारे प्यारे इस्लामी भाइयो ! बयान कर्दा "खजूर के 25 मदनी फूल" में मुख़्तलिफ़ अमराज़ में "खजूर" के ज़रीए़ इलाज तज्वीज़ किया गया है, इस सिल्सिले में आयिन्दा सुत़ूर का बग़ौर मुत़ालआ़ اِنْ شَآءَاللّٰه عَزَّوَجَلَّ नफ़्अ़ बख़्श पाएंगे। चुनान्चे (ह़दीसे पाक : "فِى الْحَبَّةِ السَّوداءِ شِفاءٌ مِّن كُلِّ داءٍ اِلَّا السَّامَ" या'नी काला दाना (कलोंजी) में मौत के सिवा हर बीमारी से **शिफ़ा** है" के तह़्त) **मुफ़स्सिरे** शहीर **ह़कीमुल उम्मत** ह़ज़रते मुफ़्ती अह़मद यार ख़ान عَلَيْهِ رَحْمَةُ الْحَنَّان फ़रमाते हैं : हर मरज़ (में शिफ़ा) से मुराद हर बल्ग़मी और रत़ूबत के अमराज़ में (शिफ़ा है), क्यूं कि **कलोंजी** गर्म और ख़ुश्क होती है लिहाज़ा मरत़ूब (या'नी तरी वाली) और सरदी की बीमारियों में मुफ़ीद होगी। आगे चल कर मज़ीद फ़रमाते हैं : यहां मुराद **अ़रब की आ़म बीमारियां** हैं (مرقات) या'नी कलोंजी अ़रब की आ़म बीमारियों में मुफ़ीद है। ख़याल रहे कि अह़ादीसे शरीफ़ा की दवाएं किसी ह़ाज़िक़ त़बीब (या'नी माहिर त़बीब) की राय से इस्ति'माल करनी चाहिएं (अहले अ़रब को तज्वीज़ कर्दा दवाएं) सिर्फ़ (अपनी) राय से इस्ति'माल न करें कि हमारे (त़ब्ई) मिज़ाज अहले अ़रब के (त़ब्ई) मिज़ाज से जुदागाना हैं। (मिरआत, जि. 6,

स. 216, 217) साथ ही येह भी ख़ास ताकीद है कि **इस किताब में दिया हुवा कोई भी नुस्ख़ा अपने त़बीब से मश्वरा किये बिग़ैर इस्ति'माल न किया जाए अगर्चे येह नुस्ख़ा उसी बीमारी के लिये हो जिस से आप दोचार हों।** याद रहे ! लोगों की त़ब्ई कैफ़िय्यात जुदा जुदा होती हैं, बसा अवक़ात एक ही **दवा** किसी के लिये शिफ़ा व आराम का बाइ़स बनती है तो किसी के लिये **मौत का पयाम** लाती है। लिहाज़ा आप की जिस्मानी कैफ़िय्यात से वाक़िफ़ आप का मख़्सूस त़बीब ही येह तै कर सकता है कि आप को कौन सा नुस्ख़ा मुवाफ़िक़ आ सकता है और कौन सा नहीं।

इफ़्त़ार के वक़्त दुआ़ क़बूल होती है : दो फ़रामीने मुस्त़फ़ा

صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم : (1) "बेशक रोज़ादार के लिये इफ़्त़ार के वक़्त एक ऐसी दुआ़ होती है जो रद नहीं की जाती।" (ابنِ ماجہ ج۲ ص۳۵۰ حدیث ۱۷۵۳)

(2) "तीन शख़्सों की दुआ़ रद नहीं की जाती ﴾1﴿ बादशाहे आ़दिल की और ﴾2﴿ रोज़ादार की ब वक़्ते इफ़्त़ार और ﴾3﴿ मज़्लूम की। इन तीनों की दुआ़ **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ बादलों से भी ऊपर उठा लेता है और आस्मान के दरवाज़े उस के लिये खुल जाते हैं और **अल्लाह** (عَزَّوَجَلَّ) फ़रमाता है : "मुझे मेरी इ़ज़्ज़त की क़सम ! मैं तेरी ज़रूर मदद फ़रमाऊंगा अगर्चे कुछ देर बा'द।"

(اَیضاً ص ۳۴۹ حدیث ۱۷۵۲)

صَلُّوا عَلَی الْحَبِیْب ! صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلٰی مُحَمَّد

हम खाने पीने में रह जाते हैं : प्यारे रोज़ादारो ! اَلْحَمْدُ لِلّٰه इफ़्तार के वक़्त दुआ क़बूल होती है, आह ! इस क़बूलिय्यत की घड़ी में हमारा नफ़्स इस मौक़अ़ पर सख़्त आज़्माइश में पड़ जाता है। क्यूं कि इस वक़्त अक्सर हमारे आगे अन्वाओ़ अक़्साम के फलों, कबाब, समोसों, पकोड़ों के साथ साथ गरमी का मौसिम हो तो ठन्डे ठन्डे शरबत के जाम भी मौजूद होते हैं, इधर सूरज ग़ुरूब हुवा, उधर खानों और शरबतों पर हम ऐसे टूट पड़ते हैं कि दुआ याद ही नहीं रहती ! दुआ तो दुआ हमारे कुछ इस्लामी भाई इफ़्तार के दौरान खाने पीने में इस क़दर मश्ग़ूल हो जाते हैं कि उन को नमाज़े मग़रिब की पूरी जमाअ़त तक नहीं मिलती, बल्कि مَعَاذَ الله बा'ज़ तो इस क़दर सुस्ती करते हैं कि घर ही में इफ़्तार कर के वहीं पर बिग़ैर जमाअ़त नमाज़ पढ़ लेते हैं। तौबा ! तौबा !!

जन्नत के त़लब गारो ! इतनी भी ग़फ़्लत मत कीजिये !! नमाज़े बा जमाअ़त की शरीअ़त में निहायत सख़्त ताकीद आई है। याद रखिये ! बिला किसी सहीह़ शरई मजबूरी के मस्जिद की **पन्ज वक़्ता** नमाज़ की पहली जमाअ़त तर्क कर देना गुनाह है।

ग़िज़ा से इफ़्तार के बा'द नमाज़ के लिये मुंह साफ़ करना ज़रूरी है : बेहतर येह है कि एकआध खजूर से इफ़्तार कर के फ़ौरन अच्छी त़रह़ मुंह साफ़ कर ले और नमाज़े बा जमाअ़त में शरीक

फ़रमाने मुस्त़फ़ा صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم : मुझ पर दुरूद पढ़ कर अपनी मजालिस को आरास्ता करो कि तुम्हारा दुरूद पढ़ना बरोज़े क़ियामत तुम्हारे लिये नूर होगा। (فردوس الاخبار)

हो जाए। आज कल मस्जिद में लोग फल पकोड़े वग़ैरा खाने के बा'द अच्छी त़रह़ मुंह साफ़ नहीं करते यूं ही जमाअ़त में शरीक हो जाते हैं हालां कि ग़िज़ा का मा'मूली ज़र्रा या ज़ाएक़ा भी मुंह में नहीं होना चाहिये कि **मेरे** आक़ा आ'ला ह़ज़रत, इमाम अह़मद रज़ा ख़ान عَلَیْہِ رَحمَۃُ الرَّحْمٰن फ़रमाते हैं : मुतअ़द्दिद अह़ादीस में इर्शाद हुवा है कि "जब बन्दा नमाज़ को खड़ा होता है फ़िरिश्ता उस के मुंह पर अपना मुंह रखता है येह जो पढ़ता है इस के मुंह से निकल कर फ़िरिश्ते के मुंह में जाता है उस वक़्त अगर खाने की कोई शै उस के दांतों में होती है मलाएका को उस से ऐसी सख़्त ईज़ा होती है कि और शै से नहीं होती।" **हुज़ूरे** अकरम, नूरे मुजस्सम, शाहे बनी आदम, रसूले मोह़्तशम صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया : जब तुम में से कोई रात को नमाज़ के लिये खड़ा हो तो चाहिये कि मिस्वाक कर ले क्यूं कि जब वोह अपनी नमाज़ में क़िराअत करता है तो फ़िरिश्ता अपना मुंह इस के मुंह पर रख लेता है और जो चीज़ इस के मुंह से निकलती है वोह फ़िरिश्ते के मुंह में दाख़िल हो जाती है।[1] और "**त़बरानी** ने **कबीर**" में ह़ज़रते सय्यिदुना अबू अय्यूब अन्सारी رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ से रिवायत की है कि दोनों फ़िरिश्तों पर इस से ज़ियादा कोई चीज़ गिरां नहीं कि वोह अपने साथी को नमाज़ पढ़ता देखें और उस के दांतों में खाने के रेज़े फंसे हों।

(مُعْجَم کبیر ج٤ص١٧٧حدیث٤٠٦١/ फ़तावा रज़विय्या मुख़र्रजा, जि. 1, स. 624 ता 625)

---

[1] شُعَبُ الْاِیمان ج٢ص٣٨١ رقم٢١١٧۔

मस्जिद में इफ़्त़ार करने वालों के लिये अक्सर मुंह साफ़ करना दुश्वार होता है कि अच्छी त़रह़ सफ़ाई करने बैठें तो जमाअ़त निकल जाने का अन्देशा होता है लिहाज़ा मश्वरा है कि सिर्फ़ एकआध खजूर खा कर पानी पी लें पानी को मुंह के अन्दर ख़ूब जुम्बिश दें या'नी हिलाएं ताकि खजूर की मिठास और उस के अज्ज़ा छूट कर पानी के साथ पेट में चले जाएं ज़रूरतन दांतों में ख़िलाल भी करें। अगर मुंह साफ़ करने का मौक़अ़ न मिलता हो तो आसानी इसी में है कि सिर्फ़ पानी से इफ़्त़ार कर लीजिये। मुझे वोह रोज़ेदार बड़े प्यारे लगते हैं जो त़रह़ त़रह़ की ने'मतों के थालों से बे नियाज़ हो कर ग़ुरूबे आफ़्ताब से पहले पहले मस्जिद की पहली सफ़ में, पानी ले कर बैठ जाएं कि इस त़रह़ इफ़्त़ार से जल्दी फ़राग़त भी मिले, मुंह भी साफ़ रहे और पहली सफ़ में तक्बीरे ऊला के साथ बा जमाअ़त नमाज़ भी नसीब हो जाए।

प्यारे प्यारे इस्लामी भाइयो ! गुज़श्ता ह़दीसे मुबारक में फ़रमाया गया है कि "इफ़्त़ार के वक़्त दुआ़ रद नहीं की जाती।" बा'ज़ अवक़ात क़बूलिय्यते दुआ़ के इज़्हार में ताख़ीर हो जाती है तो ज़ेहन में येह बात आती है कि **दुआ़** आख़िर क़बूल क्यूं नहीं हुई ! जब कि ह़दीसे मुबारक में तो क़बूले दुआ़ की बिशारत आई है। **प्यारे इस्लामी भाइयो !** ब ज़ाहिर ताख़ीर से न घबराइये। सय्यिदी **आ'ला ह़ज़रत** رَحْمَةُ اللّٰهِ تَعَالٰى عَلَيْه के वालिदे गिरामी

ह़ज़रते रईसुल मुतकल्लिमीन सय्यिदुना नक़ी अ़ली ख़ान عَلَیْہِ رَحمَۃُ الرَّحْمٰن "**अह़सनुल विआ़इ लि आदाबिदुआ़अ**" सफ़ह़ा 55 पर नक़्ल करते हैं :

दुआ़ के तीन फ़वाइद : सरवरे मा'सूम صَلَّى اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم से रिवायत है : **दुआ़** बन्दे की, तीन बातों से ख़ाली नहीं होती : ﴿1﴾ या उस का गुनाह बख़्शा जाता है। या ﴿2﴾ दुन्या में उसे फ़ाएदा ह़ासिल होता है। या ﴿3﴾ उस के लिये आख़िरत में भलाई जम्अ़ की जाती है कि जब बन्दा आख़िरत में अपनी दुआ़ओं का सवाब देखेगा जो दुन्या में मुस्तजाब (या'नी मक़्बूल) न हुई थीं तमन्ना करेगा : काश ! दुन्या में मेरी कोई **दुआ़** क़बूल न होती और सब यहीं (या'नी आख़िरत) के वासिते़ जम्अ़ रहतीं।

(اَلْمُستَدرَك ج۲ص۱۶۵حدیث۱۸۶۲, अह़सनुल विआ़अ, स. 55)

दुआ़ में पांच सआ़दतें : प्यारे प्यारे इस्लामी भाइयो ! देखा आप ने ! दुआ़ राएगां तो जाती ही नहीं, इस का दुन्या में अगर असर ज़ाहिर न भी हो तब भी आख़िरत में अज्रो सवाब मिल ही जाएगा लिहाज़ा दुआ़ में सुस्ती करना मुनासिब नहीं।

"या अ़फ़ुव्व" के पांच ह़ुरूफ़ की निस्बत से 5 मदनी फूल

﴿1﴾ **पहला** फ़ाएदा येह है कि **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ के ह़ुक्म की पैरवी होती है कि उस का ह़ुक्म है मुझ से दुआ़ मांगा करो। चुनान्चे पारह 24 **सूरतुल मुअमिनून** आयत 60 में इर्शाद है :

اُدْعُوْنِیْۤ اَسْتَجِبْ لَكُمْؕ **तरजमए कन्ज़ुल ईमान :** मुझ से दुआ़ करो मैं क़बूल करूंगा।

﴾2﴿ **दुआ़** मांगना सुन्नत है कि हमारे प्यारे प्यारे आक़ा, मक्की मदनी मुस्त़फ़ा صَلَّى اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم अक्सर अवक़ात **दुआ़** मांगते। लिहाज़ा दुआ़ मांगने में **इत्तिबाए़ सुन्नत** का भी शरफ़ ह़ासिल होगा।

﴾3﴿ **दुआ़** मांगने में इत़ाअ़ते रसूल صَلَّى اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم भी है कि आप صَلَّى اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم **दुआ़** की अपने गुलामों को ताकीद फ़रमाते रहते।

﴾4﴿ **दुआ़** मांगने वाला आ़बिदों के ज़ुम्रे (या'नी गुरौह) में दाख़िल होता है कि दुआ़ बज़ाते ख़ुद एक इ़बादत बल्कि इ़बादत का भी मग़्ज़ है। जैसा कि हमारे प्यारे आक़ा صَلَّى اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم का फ़रमाने आ़लीशान है : اَلدُّعَاءُ مُخُّ الْعِبَادَةِ ـ या'नी दुआ़ इ़बादत का मग़्ज़ है।

(ترمذی ج۵ ص۲۴۳ حدیث۳۳۸۲)

﴾5﴿ **दुआ़** मांगने से या तो उस का गुनाह मुआ़फ़ किया जाता है या दुन्या ही में उस के मसाइल ह़ल होते हैं या फिर वोह **दुआ़** उस के लिये आख़िरत का ज़ख़ीरा बन जाती है।

न जाने कौन सा गुनाह हो गया है : प्यारे प्यारे इस्लामी भाइयो ! देखा आप ने ? दुआ़ मांगने में **अल्लाहु रब्बुल इ़ज़्ज़त** عَزَّوَجَلَّ और उस के प्यारे ह़बीब माहे नुबुव्वत صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم की इत़ाअ़त भी है, दुआ़ मांगना सुन्नत भी है, दुआ़ मांगने से इ़बादत का सवाब भी मिलता है नीज़ दुन्या व आख़िरत के मुतअ़द्दिद फ़वाइद ह़ासिल होते हैं। बा'ज़ लोगों को देखा गया है कि वोह दुआ़ की क़बूलिय्यत के लिये बहुत जल्दी मचाते बल्कि مَعَاذَاللّٰہ عَزَّوَجَلَّ ! बातें बनाते हैं कि हम तो इतने अ़र्से से दुआ़एं मांग रहे हैं, बुज़ुर्गों से भी दुआ़एं करवाते रहे हैं, कोई पीर फ़क़ीर नहीं छोड़ा, येह वज़ाइफ़ पढ़ते हैं, वोह अवराद पढ़ते हैं, फ़ुलां फ़ुलां मज़ार पर भी गए मगर हमारी ह़ाजत पूरी होती ही नहीं, बल्कि बा'ज़ येह भी कहते सुने जाते हैं :

"क्या ख़त़ा हम से ऐसी हुई है ! जिस की हम को सज़ा मिल रही है !!"

नमाज़ न पढ़ना तो गोया ख़त़ा ही नहीं !!! : ह़ैरत अंगेज़ तो येह है कि इस त़रह़ की "भड़ास" निकालने वाले बसा अवक़ात बे नमाज़ी होते हैं ! गोया नमाज़ न पढ़ना तो (مَعَاذَاللّٰہ عَزَّوَجَلَّ) कोई गुनाह ही नहीं है ! चेहरा देखो तो दुश्मनाने मुस्त़फ़ा आतश परस्तों जैसा या'नी ताजदारे रिसालत صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم की अ़ज़ीम सुन्नत दाढ़ी मुबारक चेहरे से ग़ाइब ! नीज़ झूट, ग़ीबत, चुग़ली, वा'दा ख़िलाफ़ी, बद गुमानी, बद निगाही, वालिदैन की ना फ़रमानी, फ़िल्में डिरामे, गाने बाजे वग़ैरा

वग़ैरा गुनाह आ़दत में शामिल होने के बा वुजूद ज़बान पर येह अल्फ़ाज़े शिक्वा खेल रहे होते हैं :

"क्या ख़त़ा हम से ऐसी हुई है ! जिस की हम को सज़ा मिल रही है !!"

जिस दोस्त की बात हम न मानें : ज़रा सोचिये तो सही ! कोई जिगरी दोस्त कई बार कुछ काम बताए मगर आप उस का काम न करें। इत्तिफ़ाक़ से कभी उसी दोस्त से काम पड़ जाए तो आप पहले ही सहमे रहेंगे कि मैं ने तो उस का एक भी काम नहीं किया, अब वोह भला मेरा काम कैसे करेगा ! अगर आप ने हिम्मत कर के बात की और उस ने काम न किया तब भी आप शिक्वा नहीं कर सकेंगे, क्यूं कि आप ने भी तो अपने उस दोस्त का काम नहीं किया था।

अब ज़रा ठन्डे दिल से ग़ौर कीजिये कि **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ ने कितने कितने काम बताए, कैसे कैसे अह़काम जारी फ़रमाए, मगर हम उस के कौन कौन से हुक्म पर अ़मल करते हैं ? ग़ौर करने पर मा'लूम होगा कि उस के कई अह़कामात की बजा आवरी में हम ने ग़फ़्लत से काम लिया है। **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ करे बात समझ में आ गई हो कि ख़ुद तो अपने परवर दगार عَزَّوَجَلَّ के हुक्मों पर अ़मल न करें, मगर वोह किसी बात (या'नी दुआ़) का असर ज़ाहिर न फ़रमाए तो शिक्वा व शिकायत ले कर बैठ जाएं। देखिये ना ! आप अगर अपने किसी जिगरी दोस्त की कोई बात बार बार टालते रहें तो हो सकता है कि वोह आप से दोस्ती ही ख़त्म कर

दे, लेकिन **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ बन्दों पर किस क़दर मेहरबान है कि लाख उस के फ़रमाने आ़ली की ख़िलाफ़ वर्ज़ी करें, फिर भी वोह अपने बन्दों की फ़ेहरिस से ख़ारिज नहीं करता, लुत़्फ़ो करम फ़रमाता ही रहता है। ज़रा ग़ौर तो फ़रमाइये ! जो बन्दे एह़सान फ़रामोशी का मुज़ाहरा कर रहे हैं अगर वोह भी बत़ौरे सज़ा अपने एह़सानात उन से रोक ले तो उन का क्या बने ? यक़ीनन उस की इ़नायत के बिग़ैर बन्दा एक क़दम भी नहीं उठा सकता, अरे ! वोह अपनी अ़ज़ीमुश्शान ने'मत हवा जो कि बिल्कुल मुफ़्त अ़त़ा फ़रमा रखी है अगर चन्द लम्हों के लिये रोक ले तो लाशों के अम्बार लग जाएं !!

क़बूलिय्यते दुआ़ में ताख़ीर का एक सबब : प्यारे प्यारे इस्लामी भाइयो ! बसा अवक़ात क़बूलिय्यते दुआ़ की ताख़ीर में काफ़ी **मस्लहतें** होती हैं जो हमारी समझ में नहीं आतीं। हु़ज़ूर, सरापा नूर, फ़ैज़ गन्जूर صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم का फ़रमाने पुर सुरूर है : जब **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ का कोई प्यारा **दुआ़** करता है तो **अल्लाह तआ़ला** जिब्रईल (عَلَيْهِ السَّلَام) से इर्शाद फ़रमाता है : "ठहरो ! अभी न दो ताकि फिर मांगे कि मुझ को इस की आवाज़ पसन्द है।" और जब कोई काफ़िर या फ़ासिक़ **दुआ़** करता है, फ़रमाता है : "ऐ जिब्रईल (عَلَيْهِ السَّلَام) ! इस का काम जल्दी कर दो, ताकि फिर न मांगे कि मुझ को इस की आवाज़ मक्रूह (या'नी ना पसन्द) है।"

(كَنْزُ الْعُمّال ج٢ ص٣٩ حديث٣٢٦١, अह़सनुल विआ़अ, स. 99)

नेक बन्दे की दुआ़ क़बूल होने में ताख़ीर की ह़िक्मत

(ह़िकायत) : **ह़ज़रते** सय्यिदुना यह़्या बिन सईद बिन क़त्त़ान (عَلَيْهِ رَحْمَةُ الْمَنَّان) ने **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ को ख़्वाब में देखा, अ़र्ज़ की : इलाही عَزَّوَجَلَّ ! मैं अक्सर **दुआ़** करता हूं और तू क़बूल नहीं फ़रमाता ? हुक्म हुवा : "ऐ यह़्या ! मैं तेरी आवाज़ को पसन्द करता हूं, इस वासित़े तेरी **दुआ़** की क़बूलिय्यत में ताख़ीर करता हूं।"

(رسالہ قُشيريه ص۲۹۷, अह़सनुल विआ़अ, स. 99)

"**फ़ज़ाइले दुआ़**" सफ़ह़ा 97 में **आदाबे दुआ़** बयान करते हुए ह़ज़रते रईसुल मुतकल्लिमीन मौलाना नक़ी अ़ली ख़ान عَلَيْهِ رَحْمَةُ الرَّحْمٰن फ़रमाते हैं :

जल्दी मचाने वाले की दुआ़ क़बूल नहीं होती ! : (दुआ़ के आदाब में से येह भी है कि) **दुआ़** के क़बूल में जल्दी न करे। ह़दीस शरीफ़ में है कि ख़ुदाए तआ़ला तीन आदमियों की **दुआ़** क़बूल नहीं करता। एक वोह कि गुनाह की **दुआ़** मांगे। दूसरा वोह कि ऐसी बात चाहे कि क़त़्ए रेह़्म हो। तीसरा वोह कि क़बूल में जल्दी करे कि मैं ने **दुआ़** मांगी अब तक क़बूल नहीं हुई। (مسلم ص۱٤٦۳حديث۲۷۳۵)

इस ह़दीस में फ़रमाया गया है कि ना जाइज़ काम की **दुआ़** न मांगी जाए कि वोह क़बूल नहीं होती। नीज़ किसी रिश्तेदार का ह़क़

ज़ाएअ़ होता हो ऐसी **दुआ़** भी न मांगें और **दुआ़** की क़बूलिय्यत के लिये जल्दी भी न करें वरना **दुआ़** क़बूल नहीं की जाएगी।

अह़सनुल विआ़इ लि आदाबिदुआ़इ पर आ'ला ह़ज़रत, इमामे अहले सुन्नत, मौलाना शाह अह़मद रज़ा ख़ान عَلَيْهِ رَحمَةُ الرَّحْمٰن ने ह़ाशिया तह़रीर फ़रमाया है और उस का नाम **ज़ैलुल मुद्दआ़इ लि अह़सनिल विआ़इ** रखा है। मक्तबतुल मदीना ने तख़्रीज व तस्हील के साथ इसे "फ़ज़ाइले दुआ़" के नाम से शाएअ़ किया है। इसी किताब के ह़ाशिये में एक मक़ाम पर **दुआ़** की क़बूलिय्यत में जल्दी मचाने वालों को अपने मख़्सूस और निहायत ही इल्मी अन्दाज़ में समझाते हुए फ़रमाते हैं :

अफ़्सरों के पास तो बार बार धक्के खाते हो मगर...... :

सगाने दुन्या (या'नी दुन्यवी अफ़्सरों) के उम्मीद वारों (या'नी उन से काम निकलवाने के आरज़ू मन्दों) को देखा जाता है कि तीन तीन बरस तक उम्मीद वारी (और इन्तिज़ार) में गुज़ारते हैं, सुब्ह़ व शाम उन के दरवाज़ों पर दौड़ते हैं, (धक्के खाते हैं) और वोह (अफ़्सरान) हैं कि रुख़ नहीं मिलाते, जवाब नहीं देते, झिड़क्ते, दिल तंग होते, नाक भौं चढ़ाते हैं, उम्मीद वारी में लगाया तो बेगार (बेकार मेह़नत) सर पर डाली, येह ह़ज़रत गिरह (या'नी उम्मीद वार जेब) से खाते, घर से मंगाते, बेकार

बेगार (फ़ुज़ूल मेह़नत) की बला उठाते हैं, और वहां (या'नी अफ़्सरों के पास धक्के खाने में) बरसों गुज़रें हुनूज़ (या'नी अभी तक गोया) रोज़े अव्वल (ही) है, मगर येह (दुन्यवी अफ़्सरों के पास धक्के खाने वाले) न उम्मीद तोड़ें, न (अफ़्सरों का) पीछा छोड़ें। और अह़कमुल ह़ाकिमीन, अकरमुल अकरमीन عَزَّجَلَالُهٗ के दरवाज़े पर अव्वल तो आता ही कौन है ! और आए भी तो उक्ताते, घबराते, कल का होता आज हो जाए, एक हफ़्ता कुछ पढ़ते गुज़रा और शिकायत होने लगी, साह़िब ! पढ़ा तो था, कुछ असर न हुवा ! येह अह़मक़ अपने लिये इजाबत (या'नी क़बूलिय्यत) का दरवाज़ा ख़ुद बन्द कर लेते हैं। मुह़म्मदुर्रसूलुल्लाह صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم फ़रमाते हैं : يُسْتَجَابُ لِاَحَدِكُمْ مَا لَمْ يَعْجَلْ، يَقُوْلُ: دَعَوْتُ فَلَمْ يُسْتَجَبْ لِيْ۔ **तरजमा :** "तुम्हारी दुआ क़बूल होती है जब तक जल्दी न करो येह मत कहो कि मैं ने दुआ की थी क़बूल न हुई।" (بُخاری ج ٤ ص ٢٠٠ حدیث ٦٣٤٠)

बा'ज़ तो इस पर ऐसे जामे से बाहर (या'नी बे क़ाबू) हो जाते हैं कि आ'माल व अद्इय्या (या'नी अवराद व दुआओं) के असर से बे ए'तिक़ाद, बल्कि **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ के वा'दए करम से बे ए'तिमाद, وَالْعِيَاذُ بِاللّٰهِ الْكَرِيْمِ الْجَوَاد। ऐसों से कहा जाए कि ऐ बे ह़या ! बे शर्मो !! ज़रा अपने गिरीबान में मुंह डालो। अगर कोई तुम्हारा बराबर वाला दोस्त तुम से हज़ार बार कुछ काम अपने कहे और तुम उस का एक काम

न करो तो अपना काम उस से कहते हुए अव्वल तो आप लजाओ (शरमाओ)गे, (कि) हम ने तो उस का कहना किया ही नहीं अब किस मुंह से उस से काम को कहें ? और अगर ग़रज़ दीवानी होती है (या'नी मत़लब पड़ा तो) कह भी दिया और उस ने (अगर तुम्हारा काम) न किया तो अस्लन मह़ल्ले शिकायत न जानोगे (या'नी इस बात पर शिकायत करोगे ही नहीं ज़ाहिर है ख़ुद ही समझते हो) कि हम ने (उस का काम) कब किया था जो वोह करता।

अब जांचो, कि तुम **मालिक अ़लल इत़्लाक़** عَزَّوَجَلَّ के कितने अह़काम बजा लाते हो ? उस के हुक्म बजा न लाना और अपनी दरख़्वास्त का ख़्वाही न ख़्वाही (हर सूरत में) क़बूल चाहना कैसी बे ह़याई है !

ओ अह़मक़ ! फिर फ़र्क़ देख ! अपने सर से पाउं तक नज़्रे ग़ौर कर ! एक एक रूएं में हर वक़्त हर आन कितनी कितनी हज़ार दर हज़ार दर हज़ार सद हज़ार बे शुमार ने'मतें हैं। तू सोता है और उस के मा'सूम बन्दे (या'नी फ़िरिश्ते) तेरी ह़िफ़ाज़त को पहरा दे रहे हैं, तू गुनाह कर रहा है और (फिर भी) सर से पाउं तक सिह़्ह़तो आ़फ़िय्यत, बलाओं से ह़िफ़ाज़त, खाने का हज़्म, फ़ुज़्लात (या'नी जिस्म के अन्दर की गन्दगियों) का दफ़्अ़, ख़ून की रवानी, आ'ज़ा में त़ाक़त, आंखों में रोशनी। बे ह़िसाब

करम बे मांगे बे चाहे तुझ पर उतर रहे हैं। फिर अगर तेरी बा'ज़ ख़्वाहिशें अ़त़ा न हों, किस मुंह से शिकायत करता है ? तू क्या जाने कि तेरे लिये भलाई काहे में है ! तू क्या जाने कैसी सख़्त बला आने वाली थी कि इस (ब ज़ाहिर न क़बूल होने वाली) दुआ़ ने दफ़्अ़ की, तू क्या जाने कि इस दुआ़ के इवज़ कैसा सवाब तेरे लिये ज़ख़ीरा हो रहा है, उस का वा'दा सच्चा है और क़बूल की येह तीनों सूरतें हैं जिन में हर पहली, पिछली से आ'ला है। हां, बे ए'तिक़ादी आई तो यक़ीन जान कि मारा गया और इब्लीसे लईन ने तुझे अपना सा कर लिया। وَالْعِیَاذُ بِاللّٰہِ سُبْحٰنَہٗ وَتَعَالٰی (और **अल्लाह** की पनाह वोह पाक है और अ़ज़मत वाला)।

ऐ ज़लील ख़ाक ! ऐ आबे नापाक ! अपना मुंह देख और इस अ़ज़ीम शरफ़ पर ग़ौर कर कि अपनी बारगाह में ह़ाज़िर होने, अपना पाक, मुतआ़ली (या'नी बुलन्द) नाम लेने, अपनी त़रफ़ मुंह करने, अपने पुकारने की तुझे इजाज़त देता है। लाखों मुरादें इस फ़ज़्ले अ़ज़ीम पर निसार।

ओ बे सब्रे ! ज़रा भीक मांगना सीख। इस आस्ताने रफ़ीअ़ की ख़ाक पर लौट जा। और लिपटा रह और टिकटिकी बंधी रख कि अब देते हैं, अब देते हैं ! बल्कि पुकारने, उस से मुनाजात करने की लज़्ज़त में ऐसा डूब जा कि इरादा व मुराद कुछ याद न रहे, यक़ीन जान कि इस दरवाज़े से हरगिज़ मह़रूम न फिरेगा कि مَنْ دَقَّ بَابَ الْكَرِيْمِ انْفَتَحَ (जिस ने

करीम के दरवाज़े पर दस्तक दी तो वोह उस पर खुल गया) وَبِاللّٰهِ التَّوْفِيْق (और तौफ़ीक़ **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ की त़रफ़ से है)।

(फ़ज़ाइले दुआ़, स. 100 ता 104)

दुआ़ की क़बूलिय्यत में ताख़ीर तो करम है : ह़ज़रते सय्यिदुना मौलाना नक़ी अ़ली ख़ान عَلَيْهِ رَحْمَةُ الرَّحْمٰن फ़रमाते हैं : ऐ अ़ज़ीज़ ! तेरा परवर दगार عَزَّوَجَلَّ फ़रमाता है :

اُجِيْبُ دَعْوَةَ الدَّاعِ اِذَا دَعَانِ ۙ
(پ۲،البقرۃ:۱۸۶)

तरजमा : मैं दुआ़ मांगने वाले की दुआ़ क़बूल करता हूं जब मुझ से दुआ़ मांगे।

فَلَنِعْمَ الْمُجِيْبُوْنَ ﴿۷۵﴾
(پ۲۳،صٰفّٰت:۷۵)

तरजमा : हम क्या अच्छे क़बूल करने वाले हैं।

اُدْعُوْنِيْۤ اَسْتَجِبْ لَكُمْ ؕ
(پ۲۴،مؤمن:۶۰)

तरजमा : मुझ से दुआ़ मांगो मैं क़बूल फ़रमाऊं।

पस यक़ीन समझ कि वोह तुझे अपने दर से मह़रूम नहीं करेगा और अपने वा'दे को वफ़ा फ़रमाएगा। वोह अपने ह़बीब صَلَّى اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم से फ़रमाता है :

وَاَمَّا السَّآئِلَ فَلَا تَنْهَرْ ﴿۱۰﴾
(پ۳۰،الضحٰی:۱۰)

तरजमा : साइल को न झिड़क।

आप किस त़रह़ अपने ख़्वाने करम से दूर करेगा ! बल्कि वोह तुझ पर नज़रे करम रखता है कि तेरी दुआ़ के क़बूल करने में देर करता है। اَلْحَمْدُلِلّٰهِ عَلٰى كُلِّ حَال (फ़ज़ाइले दुआ़, स. 98)

इर्क़ुन्निसा का दर्द जाता रहा : प्यारे प्यारे इस्लामी भाइयो ! اَلْحَمْدُ لِلّٰه عَزَّوَجَلَّ तब्लीग़े क़ुरआनो सुन्नत की आ़लमगीर ग़ैर सियासी तह़रीक, **"दा'वते इस्लामी"** के **मदनी क़ाफ़िलों** में **आ़शिक़ाने रसूल** के साथ सुन्नतों भरा सफ़र कर के दुआ़ मांगने वालों के मसाइल ह़ल होने के काफ़ी वाक़िआत हैं। एक इस्लामी भाई का बयान अपने अन्दाज़ में अ़र्ज़ करने की सआ़दत ह़ासिल करता हूं। हमारा **मदनी क़ाफ़िला** ठठ्ठा शहर वारिद हुवा, शुरका में से एक इस्लामी भाई को **इर्क़ुन्निसा** का शदीद दर्द उठता था, बेचारे शिद्दते दर्द से माहिये बे आब की त़रह़ तड़पते थे। एक बार दर्द के सबब रात भर सो न सके। आख़िरी दिन **अमीरे क़ाफ़िला** ने फ़रमाया : आइये ! सब मिल कर इन के लिये दुआ़ करते हैं। चुनान्चे दुआ़ शुरूअ़ हुई, उन इस्लामी भाई का बयान है : اَلْحَمْدُ لِلّٰه عَزَّوَجَلَّ दौराने दुआ़ ही दर्द में कमी आनी शुरूअ़ हो गई और कुछ देर के बा'द **इर्क़ुन्निसा का दर्द बिल्कुल जाता रहा।** اَلْحَمْدُ لِلّٰه عَزَّوَجَلَّ येह बयान देते वक़्त काफ़ी अ़र्सा हो चुका है वोह दिन, आज का दिन उन को फिर कभी **इर्क़ुन्निसा** की तक्लीफ़ नहीं हुई। اَلْحَمْدُ لِلّٰه उन्हें अ़लाक़ाई **मदनी**

क़ाफ़िला ज़िम्मेदार की हैसिय्यत से मदनी क़ाफ़िलों की धूमें मचाने की ख़िदमत भी मिली।

गर हो इर्क़ुन्निसा, आरिज़ा कोई सा दे ख़ुदा सिह़्ह़तें, क़ाफ़िले में चलो
दूर बीमारियां और परेशानियां होंगी बस चल पड़ें, क़ाफ़िले में चलो

(वसाइले बख़्शिश, स. 675, 677)

صَلُّوا عَلَى الْحَبِيْب! صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلٰى مُحَمَّد

प्यारे प्यारे इस्लामी भाइयो ! देखा आप ने ! **मदनी क़ाफ़िले** की बरकत से **इर्क़ुन्निसा** जैसी मूज़ी बीमारी से नजात मिल गई। **इर्क़ुन्निसा** की पहचान येह है कि इस में चड्ढे (या'नी रान के जोड़) से ले कर पाउं के टख़्ने तक शदीद दर्द होता है। येह मरज़ बरसों तक पीछा नहीं छोड़ता।

इर्क़ुन्निसा के दो रूह़ानी इलाज : ﴾1﴿ दर्द के मक़ाम पर हाथ रख कर अव्वल आख़िर दुरूद शरीफ़, **सूरतुल फ़ातिह़ा** एक बार और सात मर्तबा येह दुआ पढ़ कर दम कर दीजिये : اَللّٰهُمَّ اَذْهِبْ عَنِّيْ سُوْءَ مَا اَجِدُ (या'नी ऐ **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ ! मुझ से मरज़ दूर फ़रमा दे) अगर दूसरा दम करे तो عَنِّيْ की जगह عَنْهُ (या'नी इस से) और اَجِدُ (या'नी मैं पाता हूं) की जगह يَجِدُ (या'नी वोह पाता है) कहे। (मुद्दत : ता हुसूले शिफ़ा) ﴾2﴿ يَا مُحْيِيُ सात बार पढ़ कर गेस हो या पीठ या पेट

में तक्लीफ़ या इर्क़ुन्निसा या किसी भी जगह दर्द हो या किसी उ़ज़्व के जाएअ़ हो जाने का ख़ौफ़ हो, अपने ऊपर दम कर दीजिये اِنْ شَآءَاللّٰہ عَزَّوَجَلَّ फ़ाएदा होगा। (मुद्दते इलाज : ता हुसूले शिफ़ा)

रोज़ा तोड़ने वाली 14 चीज़ें

﴾1﴿ **खाने**, पीने या हम बिस्तरी करने से रोज़ा जाता रहता है जब कि रोज़ादार होना याद हो। (बहारे शरीअ़त, जि. 1, स. 985)

﴾2﴿ **हुक़्क़ा**, सिगार, सिगरेट, चुरट वग़ैरा पीने से भी रोज़ा जाता रहता है, अगर्चे अपने ख़याल में ह़ल्क़ तक धूआं न पहुंचता हो।

(ऐज़न, स. 986)

﴾3﴿ **पान** या सिर्फ़ तम्बाकू खाने से भी रोज़ा जाता रहेगा अगर्चे बार बार उस की पीक थूकते रहें, क्यूं कि ह़ल्क़ में उस के बारीक अज्ज़ा ज़रूर पहुंचते हैं। (ऐज़न)

﴾4﴿ **शकर** वग़ैरा ऐसी चीज़ें जो मुंह में रखने से घुल जाती हैं मुंह में रखी और थूक निगल गए, रोज़ा जाता रहा। (ऐज़न)

﴾5﴿ **दांतों** के दरमियान कोई चीज़ चने के बराबर या ज़ियादा थी उसे खा गए या कम ही थी मगर मुंह से निकाल कर फिर खा ली तो रोज़ा टूट गया। (دُرِّ مُخْتَار ج٣ص٤٥٢)

﴾6﴿ **दांतों** से ख़ून निकल कर ह़ल्क़ से नीचे उतरा और ख़ून थूक से

ज़ियादा या बराबर या कम था मगर उस का मज़ा ह़ल्क़ में मह़सूस हुवा तो रोज़ा जाता रहा और अगर कम था और मज़ा भी ह़ल्क़ में मह़सूस न हुवा तो रोज़ा न गया। (ایضاًص ۴۲۲)

《7》 **रोज़ा** याद रहने के बा वुजूद ह़ुक़्ना[1] लिया। या नाक के नथनों से दवा चढ़ाई रोज़ा जाता रहा। (عالمگیری ج۱ ص ۲۰۴)

《8》 **कुल्ली** कर रहे थे बिला क़स्द (या'नी बिग़ैर इरादे के) पानी ह़ल्क़ से उतर गया या नाक में पानी चढ़ाया और दिमाग़ को चढ़ गया रोज़ा जाता रहा मगर जब कि रोज़ादार होना भूल गया हो तो न टूटेगा अगर्चे क़स्दन (या'नी जान बूझ कर) हो। यूं ही रोज़ेदार की त़रफ़ किसी ने कोई चीज़ फेंकी वोह उस के ह़ल्क़ में चली गई तो रोज़ा जाता रहा। (عالمگیری ج۱ ص ۲۰۲)

《9》 **सोते** में (या'नी नींद की ह़ालत में) पानी पी लिया या कुछ खा लिया, या मुंह खुला था, पानी का क़त़रा या बारिश का ओला ह़ल्क़ में चला गया तो रोज़ा जाता रहा।

(बहारे शरीअ़त, जि. 1, स. 986, جوہرہ ج۱ ص ۱۷۸)

《10》 **दूसरे** का थूक निगल लिया या अपना ही थूक हाथ में ले कर निगल लिया तो रोज़ा जाता रहा। (عالمگیری ج۱ ص ۲۰۳)

---

1 : या'नी किसी दवा की बत्ती या पिचकारी पीछे के मक़ाम में चढ़ाना जिस से इजाबत हो जाए।

《11》 **जब** तक थूक या बल्ग़म मुंह के अन्दर मौजूद हो उसे निगल जाने से रोज़ा नहीं जाता, बार बार थूकते रहना ज़रूरी नहीं।

《12》 **मुंह** में रंगीन डोरा वग़ैरा रखा जिस से थूक रंगीन हो गया फिर थूक निगल लिया रोज़ा जाता रहा। (اَیضاً)

《13》 **आंसू** मुंह में चला गया और निगल लिया, अगर क़त्‌रा दो क़त्‌रा है तो रोज़ा न गया और ज़ियादा था कि उस की नमकीनी पूरे मुंह में मह्‌सूस हुई तो जाता रहा। पसीने का भी येही हुक्म है। (اَیضاً)

《14》 **पाख़ाने** का मक़ाम बाहर निकल पड़ा तो हुक्म है कि कपड़े से ख़ूब पोंछ कर उठे कि तरी बिल्कुल बाक़ी न रहे। और अगर कुछ पानी उस पर बाक़ी था और खड़ा हो गया कि पानी अन्दर को चला गया तो रोज़ा फ़ासिद हो (या'नी टूट) गया। इसी वज्ह से फ़ुक़हाए किराम رَحِمَهُمُ اللّٰهُ السَّلَام फ़रमाते हैं कि रोज़ादार **इस्तिन्जा** (या'नी पानी से पाकी हासिल) करने में सांस न ले।

(बहारे शरीअ़त, जि. 1, स. 988, عالمگیری ج۱ ص۲۰٤)

रोज़े में क़ै (Vomiting) होना : दो फ़रामीने मुस्तफ़ा

صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم : 《1》 जिस को माहे रमज़ान में ख़ुद बख़ुद **क़ै** आई उस का रोज़ा न टूटा और जिस ने जान बूझ कर क़ै की उस का रोज़ा टूट गया (کنز العُمّال ج۸ ص۲۳۰ حدیث ۲۳۸۱٤) 《2》 "जिस को ख़ुद बख़ुद क़ै आई उस पर

क़ज़ा नहीं और जिस ने जान बूझ कर क़ै की वोह रोज़े की **क़ज़ा** करे।"

(ترمذی ج۲ ص۱۷۳ حدیث۷۲۰)

क़ै के सात अह्‌काम

﴾1﴿ **रोज़े** में खुद बखुद कितनी ही **क़ै** (या'नी उलटी। Vomiting) हो जाए (ख़्वाह बालटी ही क्यूं न भर जाए) इस से रोज़ा नहीं टूटता (دُرِّمُختار ج۳ ص۴۵۰) ﴾2﴿ **अगर** रोज़ा याद होने के बा वुजूद क़स्दन (या'नी जान बूझ कर) **क़ै** की और अगर वोह मुंह भर है (मुंह भर की ता'रीफ़ आगे आती है) तो अब रोज़ा टूट जाएगा (ایضاً ص ۴۵۱) ﴾3﴿ **क़स्दन** (या'नी जान बूझ कर) मुंह भर होने वाली **क़ै** से भी इस सूरत में रोज़ा टूटेगा जब कि क़ै में खाना (या पानी) या सफ़रा (या'नी कड़वा पानी) या ख़ून आए (عالمگیری ج۱ ص۲۰۴) ﴾4﴿ **अगर** (मुंह भर) **क़ै** में सिर्फ़ बल्ग़म निकला तो **रोज़ा** नहीं टूटेगा (دُرِّمُختار ج۳ ص۴۵۲) ﴾5﴿ **क़स्दन क़ै** की मगर थोड़ी सी आई, मुंह भर न आई तो अब भी **रोज़ा** न टूटा (ایضاً ص ۴۵۱) ﴾6﴿ **मुंह भर** से कम क़ै हुई और मुंह ही से दोबारा लौट गई या खुद ही लौटा दी, इन दोनों सूरतों में रोज़ा नहीं टूटेगा (اَیضاً ص۴۵۰) ﴾7﴿ **मुंह भर** क़ै बिला इख़्तियार हो गई तो **रोज़ा** तो न टूटा अलबत्ता अगर इस में से एक चने के बराबर भी वापस लौटा दी तो **रोज़ा** टूट जाएगा और एक चने से कम हो तो **रोज़ा** न टूटा।

(دُرِّمُختار ج۳ ص۴۵۰)

मुंह भर क़ै की ता'रीफ़ : मुंह भर क़ै के मा'ना येह हैं : "उसे बिला तकल्लुफ़ न रोका जा सके।" (عالمگیری ج١ ص١١)

"मदीना" के पांच ह़ुरूफ़ की निस्बत से वुज़ू में क़ै के 5 अह़कामे शरई

﴾1﴿ **वुज़ू** की ह़ालत में (जान बूझ कर क़ै करें या ख़ुद बख़ुद हो जाए दोनों सूरतों में) अगर मुंह भर **क़ै** आई और इस में खाना, पानी या सफ़रा (कड़वा पानी) आया तो वुज़ू टूट जाएगा। (बहारे शरीअ़त, जि. 1, स. 306)

﴾2﴿ **अगर** बल्ग़म की मुंह भर **क़ै** हुई तो **वुज़ू** नहीं टूटेगा। (ऐज़न)

﴾3﴿ **बहते** ख़ून की **क़ै** वुज़ू तोड़ देती है। (ऐज़न)

﴾4﴿ **बहते** ख़ून की **क़ै** से **वुज़ू** उस वक़्त टूटता है जब कि ख़ून थूक से मग़्लूब (या'नी कम) न हो। (बहारे शरीअ़त, जि. 1, स. 306, رَدُّالْمُحتار ج١ ص٢٦٧) या'नी ख़ून की वज्ह से **क़ै** सुर्ख़ हो रही है तो ख़ून ग़ालिब है **वुज़ू** टूट गया और अगर थूक ज़ियादा है और ख़ून कम तो **वुज़ू** नहीं टूटेगा। ख़ून कम होने की निशानी येह है कि पूरी क़ै जो थूक पर मुश्तमिल है वोह ज़र्द (या'नी पीली) होगी।

﴾5﴿ **अगर क़ै** में जमा हुवा ख़ून निकला और वोह मुंह भर से कम है तो **वुज़ू** नहीं टूटेगा। (मुलख़्ख़स अज़ : बहारे शरीअ़त, जि. 1, स. 306)

क़ै का अहम मस्अला : मुंह भर क़ै (इलावा बल्ग़म के) नापाक है, इस का कोई छींटा कपड़े या जिस्म पर न गिरने पाए इस की एह़तियात़ फ़रमाइये। अक्सर लोग इस में बड़ी बे एह़तियात़ी करते हैं, कपड़ों पर छींटे पड़ने की कोई परवा नहीं की जाती और मुंह वग़ैरा पर जो नापाक **क़ै** लग जाती है उस को भी बिला झिजक अपने कपड़ों से पोंछ लेते हैं। **अल्लाहु रब्बुल इ़ज़्ज़त** عَزَّوَجَلَّ हमें नजासत से बचने का ज़ेह्न इ़नायत फ़रमाए। اٰمِين بِجاهِ النَّبِيِّ الْاَمين صَلَّى اللہ تعالیٰ علیہ واٰلہٖ وسلّم

भूल कर खाने पीने से रोज़ा नहीं जाता : ह़ज़रते सय्यिदुना अबू हुरैरा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ से मरवी है कि सुल्त़ाने दो जहान, शहन्शाहे कौनो मकान صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم का फ़रमाने आ़लीशान है : "जिस रोज़ादार ने भूल कर खाया पिया वोह अपना **रोज़ा** पूरा करे कि उसे **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ ने खिलाया और पिलाया।" (مسلم ص٥٨٢ حدیث ١١٥٥)

"वाह क्या बात है माहे रमज़ान की" के इक्कीस हुरूफ़ की निस्बत से रोज़ा न टूटने के 21 अह़काम

(1) **भूल** कर खाया, पिया या जिमाअ़ किया रोज़ा फ़ासिद न हुवा, ख़्वाह वोह रोज़ा फ़र्ज़ हो या नफ़्ल। (دُرِّمُختار،رَدُّ المحتار ج٣ص٤١٩)

रोज़ादार को भूल कर खाता पीता देखे तो क्या करे

(2) **किसी** रोज़ादार को इन अफ़्आ़ल में देखें तो याद दिलाना वाजिब

है, हां रोज़ादार बहुत ही कमज़ोर हो कि याद दिलाने पर वोह खाना छोड़ देगा जिस की वज्ह से कमज़ोरी इतनी बढ़ जाएगी कि इस के लिये **रोज़ा** रखना ही दुश्वार हो जाएगा और अगर खा लेगा तो **रोज़ा** भी अच्छी त़रह़ पूरा कर लेगा और दीगर इबादतें भी बख़ूबी अदा कर सकेगा (और चूंकि भूल कर खा पी रहा है इस लिये इस का रोज़ा तो हो ही जाएगा) लिहाज़ा इस सूरत में याद न दिलाना ही बेहतर है। (बहारे शरीअ़त, जि. 1, स. 981) बा'ज़ मशाइख़े किराम (رَحِمَهُمُ اللّٰهُ السَّلَام) फ़रमाते हैं : "**जवान** को देखे तो याद दिला दे और **बूढ़े** को देखे तो याद न दिलाने में ह़रज नहीं।" मगर येह हुक्म अक्सर के लिह़ाज़ से है क्यूं कि **जवान** अक्सर क़वी (या'नी त़ाक़त वर) होते हैं और **बूढ़े** अक्सर कमज़ोर। चुनान्चे अस्ल हुक्म येही है कि जवानी और बुढ़ापे को कोई दख़्ल नहीं, बल्कि कुव्वत व ज़ो'फ़ (या'नी त़ाक़त और कमज़ोरी) का लिह़ाज़ है लिहाज़ा अगर **जवान** इस क़दर कमज़ोर हो तो याद न दिलाने में ह़रज नहीं और **बूढ़ा** क़वी (या'नी त़ाक़त वर) हो तो याद दिलाना वाजिब है।

(رَدُّ الْمُحتَار ج۳ص ۴۲۰)

﴾3﴿ **रोज़ा** याद होने के बा वुजूद भी मख्खी या ग़ुबार या धूआं ह़ल्क़ में चले जाने से **रोज़ा** नहीं टूटता। ख़्वाह ग़ुबार आटे का हो जो

चक्की पीसने या आटा छानने में उड़ता है या ग़ल्ले (या'नी अनाज) का ग़ुबार हो या हवा से ख़ाक उड़ी या जानवरों के ख़ुर या टाप से। (बहारे शरीअ़त, जि. 1, स. 982/ دُرِّ مُختار، رَدُّ المحتار ج۳ص۴۲۰)

﴾4﴿ **इसी** त़रह़ बस या कार का धूआं या उन से ग़ुबार उड़ कर ह़ल्क़ में पहुंचा अगर्चे **रोज़ादार** होना याद था, **रोज़ा** नहीं जाएगा।

﴾5﴿ **अगरबत्ती** सुलग रही है और उस का धूआं नाक में गया तो **रोज़ा** नहीं टूटेगा। हां लोबान या अगरबत्ती सुलग रही हो और **रोज़ा** याद होने के बा वुजूद मुंह क़रीब ले जा कर उस का धूआं नाक से खींचा तो **रोज़ा** फ़ासिद हो जाएगा। (اَیضاً، اَیضاً ص۴۲۱)

﴾6﴿ **भरी** सींगी[1] लगवाई या तेल या सुरमा लगाया तो रोज़ा न गया, तेल या सुरमे का मज़ा ह़ल्क़ में मह़सूस होता हो बल्कि थूक में सुरमे का रंग भी दिखाई देता हो जब भी रोज़ा नहीं टूटता।

(رَدُّالْمُحتَارج۳ص۴۲۰)

﴾7﴿ **ग़ुस्ल** किया और पानी की ख़ुनुकी (या'नी ठन्डक) अन्दर मह़सूस हुई जब भी **रोज़ा** नहीं टूटा। (عالمگیری ج۱ص۲۰۳)

﴾8﴿ **कुल्ली** की और पानी बिल्कुल फेंक दिया सिर्फ़ कुछ तरी मुंह में बाक़ी रह गई थी थूक के साथ इसे निगल लिया, **रोज़ा** नहीं टूटा।

(رَدُّالْمُحتَارج۳ص۴۲۰)

---

1 : येह दर्द के इलाज का एक मख़्सूस त़रीक़ा है जिस में सूराख़ किया हुवा सींग दर्द की जगह रख कर मुंह के ज़रीए जिस्म की गरमी खींचते हैं।

9 **दवा** कूटी और ह़ल्क़ में इस का मज़ा मह़सूस हुवा **रोज़ा** नहीं टूटा। (اَیضاً ص ٤٢٢)

10 **कान** में पानी चला गया जब भी **रोज़ा** नहीं टूटा बल्कि ख़ुद पानी डाला जब भी न टूटा। (دُرِّمُختار ج٣ ص٤٢٢) अलबत्ता कान का पर्दा फटा हुवा हो तो कान में पानी डालने से ह़ल्क़ के नीचे चला जाएगा और रोज़ा टूट जाएगा।

11 **तिन्के** से कान खुजाया और उस पर कान का मैल लग गया फिर वोही मैल लगा हुवा तिन्का कान में डाला अगर्चे चन्द बार ऐसा किया हो जब भी **रोज़ा** न टूटा। (اَیضاً)

12 **दांत** या मुंह में ख़फ़ीफ़ (या'नी मा'मूली) चीज़ बे मा'लूम सी रह गई कि लुआ़ब के साथ ख़ुद ही उतर जाएगी और वोह उतर गई, **रोज़ा** नहीं टूटा। (اَیضاً)

13 **तिल** या तिल के बराबर कोई चीज़ चबाई और थूक के साथ ह़ल्क़ से उतर गई तो **रोज़ा** न गया मगर जब कि उस का मज़ा ह़ल्क़ में मह़सूस होता हो तो **रोज़ा** जाता रहा। (فَتحُ القدیر ج٢ ص٢٥٩)

14 **थूक** या बल्ग़म मुंह में आया फिर उसे निगल गया तो **रोज़ा** न गया। (دُرِّ مُختار، رَدُّ المحتار ج ٣ ص ٤٢٨)

15 **इसी** त़रह़ नाक में रींठ जम्अ़ हो गई, सांस के ज़रीए़ खींच कर निगल जाने से भी **रोज़ा** नहीं जाता। (دُرِّمُختار ج٣ ص٤٢٢)

फ़रमाने मुस्तफ़ा صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم : जिस ने मुझ पर एक मर्तबा दुरूदे पाक पढ़ा अल्लाह उस पर दस रह़मतें भेजता और उस के नामए आ'माल में दस नेकियां लिखता है। (ترمذی)

《16》 **दांतों** से ख़ून निकल कर ह़ल्क़ तक पहुंचा मगर ह़ल्क़ से नीचे न उतरा तो **रोज़ा** न गया। (اَیضاً)

《17》 **मख्खी** ह़ल्क़ में चली गई **रोज़ा** न गया और क़स्दन (या'नी जान बूझ कर) निगली तो चला गया। (عالمگیری ج ۱ ص ۲۰۳)

《18》 **भूले** से खाना खा रहे थे, याद आते ही लुक़्मा फेंक दिया या पानी पी रहे थे याद आते ही मुंह का पानी फेंक दिया तो **रोज़ा** न गया। अगर मुंह में का लुक़्मा या पानी याद आने के बा वुजूद निगल गए तो **रोज़ा** गया। (اَیضاً)

《19》 **सुब्हे** सादिक़ से पहले खा या पी रहे थे और सुब्ह़ होते ही (या'नी सह़री का वक़्त ख़त्म होते ही) मुंह में का सब कुछ उगल दिया तो **रोज़ा** न गया, और अगर निगल लिया तो जाता रहा। (اَیضاً)

《20》 **ग़ीबत** की तो **रोज़ा** न गया। अगर्चे ग़ीबत सख़्त कबीरा गुनाह है, क़ुरआने मजीद में ग़ीबत करने की निस्बत फ़रमाया : "जैसे अपने मुर्दा भाई का गोश्त खाना।" और ह़दीसे पाक में फ़रमाया : "ग़ीबत ज़िना से सख़्त तर है।" (مُعجَم اَوسَط ج ٥ ص ٦٣ حديث ٦٥٩٠) ग़ीबत की वज्ह से **रोज़े की नूरानिय्यत** जाती रहती है।

(बहारे शरीअ़त, जि. 1, स. 984)

﴾21﴿ **जनाबत** (या'नी गुस्ल फ़र्ज़ होने) की ह़ालत में सुब्ह़ की बल्कि अगर्चे सारे दिन **जुनुब** (या'नी बे गुस्ल) रहा रोज़ा न गया। (دُرِّ مُختار ج۳ص٤٢٨) मगर इतनी देर तक क़स्दन (या'नी जान बूझ कर) **गुस्ल न करना कि नमाज़ क़ज़ा हो जाए गुनाह व ह़राम है।** **ह़दीस शरीफ़** में फ़रमाया : "जिस घर में **जुनुब** हो उस में रह़मत के फ़िरिश्ते नहीं आते।"

(ابوداوٗد ج١ص١٠٩حديث٢٢٧, बहारे शरीअ़त, जि. 1, स. 984)

मक्रूहाते रोज़ा : अब रोज़े के मक्रूहात का बयान किया जाता है जिन के करने से **रोज़ा** हो तो जाता है मगर उस की नूरानिय्यत चली जाती है। लफ़्ज़ "**नबी**" के तीन हुरूफ़ की निस्बत से पहले **तीन अह़ादीसे मुबारका** मुलाह़ज़ा फ़रमाइये। फिर फ़िक़्ही अह़काम अ़र्ज़ किये जाएंगे ﴾1﴿ "जो बुरी बात कहना और उस पर अ़मल करना न छोड़े तो **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ को इस की कुछ ह़ाजत नहीं कि उस ने खाना, पीना छोड़ दिया है"[1] ﴾2﴿ "**रोज़ा** इस का नाम नहीं कि खाने और पीने से बाज़ रहना हो, रोज़ा तो येह है कि लग्व व बेहूदा बातों से बचा जाए"[2] ﴾3﴿ **रोज़ा** सिपर (या'नी ढाल) है जब तक उसे फाड़ा न हो। अ़र्ज़ की गई : किस चीज़ से फाड़ेगा ? इर्शाद फ़रमाया : "झूट या ग़ीबत से।"[3]

مدینہ

۱: بُخاری ج ۱ ص ٦٢٨ حديث١٩٠٣۔ ۲: اَلْمُستَدرَك ج ۲ ص٦٧حديث ١٦١١۔ ۳: مُعجَم اَوسَط ج۳ص٢٦٤حديث٤٥٣٦۔

"रमज़ानुल मुबारक" के बारह हुरूफ़ की निस्बत से मकरूहाते रोज़ा पर मुश्तमिल 12 पैरे

﴾1﴿ **झूट**, चुग़ली, ग़ीबत, गाली देना, बेहूदा बात, किसी को तक्लीफ़ देना कि येह चीज़ें वैसे भी ना जाइज़ व ह़राम हैं **रोज़े** में और ज़ियादा ह़राम और इन की वज्ह से **रोज़े** में कराहत आती है।

(बहारे शरीअ़त, जि. 1, स. 996)

﴾2﴿ **रोज़ादार** को बिला उ़ज़्र किसी चीज़ का चखना या चबाना मकरूह है। चखने के लिये उ़ज़्र येह है कि मसलन औ़रत का शोहर बद मिज़ाज है कि नमक कम या ज़ियादा होगा तो उस की नाराज़ी का बाइ़स होगा, इस वज्ह से चखने में ह़रज नहीं। चबाने के लिये उ़ज़्र येह है कि इतना छोटा बच्चा है कि रोटी नहीं चबा सकता और कोई नर्म ग़िज़ा नहीं जो उसे खिलाई जा सके, न ह़ैज़ व निफ़ास[1] वाली या कोई और ऐसा है कि उसे चबा कर दे। तो बच्चे के खिलाने के लिये रोटी वग़ैरा चबाना मकरूह नहीं। (دُرِّ مُختار ج۳ ص ٤٥٣) मगर पूरी एह़तियात़ रखिये कि ग़िज़ा का कोई ज़र्रा ह़ल्क़ से नीचे न उतरने पाए।

चखना किसे कहते हैं ? : चखने के मा'ना वोह नहीं जो आज

---

1 : ह़ैज़ व निफ़ास की ह़ालत में औ़रत को रोज़ा, नमाज़, तिलावत, मस्जिद में जाना, त़वाफ़े का'बा करना ह़राम है। नमाज़ मुआ़फ़ है मगर बा'दे फ़राग़त रोज़ा क़ज़ा करना फ़र्ज़ है।

कल आ़म मुह़ावरा है या'नी किसी चीज़ का मज़ा दरयाफ़्त करने के लिये उस में से थोड़ा खा लिया जाता है ! कि यूं हो तो कराहत कैसी **रोज़ा** ही जाता रहेगा बल्कि कफ़्फ़ारे के शराइत़ पाए जाएं तो कफ़्फ़ारा भी लाज़िम होगा। चखने से मुराद येह है कि सिर्फ़ ज़बान पर रख कर मज़ा दरयाफ़्त कर लें और उसे थूक दें, उस में से ह़ल्क़ में कुछ भी न जाने पाए।

(बहारे शरीअ़त, जि. 1, स. 996)

﴾3﴿ **कोई** चीज़ ख़रीदी और उस का चखना ज़रूरी है कि अगर न चखा तो नुक़्सान होगा तो ऐसी सूरत में चखने में ह़रज नहीं वरना मकरूह है। (دُرِّ مُختار ج٣ ص٤٥٣)

﴾4﴿ **बीवी** का बोसा लेना और गले लगाना और बदन को छूना मकरूह नहीं। हां येह अन्देशा हो कि **इन्ज़ाल** हो जाएगा (या'नी मनी निकल जाएगी) या जिमाअ़ में मुब्तला होगा और होंट और ज़बान चूसना रोज़े में मुत़्लक़न मकरूह हैं। यूं ही मुबाशरते फ़ाह़िशा (या'नी शर्मगाह से शर्मगाह टकराना[1]) (رَدُّالْمُحتار ج٣ ص٤٥٤)

﴾5﴿ **गुलाब** या मुश्क वग़ैरा सूंघना, दाढ़ी मूंछ में तेल लगाना और सुरमा लगाना मकरूह नहीं। (اَیضاً ص٤٥٥)

﴾6﴿ **रोज़े** की ह़ालत में हर क़िस्म का **इ़त्र** सूंघ भी सकते हैं और लगा भी सकते हैं। (اَیضاً) इसी त़रह़ रोज़े में बदन पर तेल की मालिश (Massage) करने में भी ह़रज नहीं।

---

1 : शादी शुदगान "मिलाप" की निय्यतों वग़ैरा की मा'लूमात के लिये फ़तावा रज़विय्या जिल्द 23 सफ़ह़ा नम्बर 385 ता 386 पर मस्अला नम्बर 141 ता 142 का मुत़ालआ़ फ़रमा लें।

7 **रोज़े** में मिस्वाक करना मकरूह नहीं बल्कि जैसे और दिनों में सुन्नत है वैसे ही **रोज़े** में भी सुन्नत है, **मिस्वाक** ख़ुश्क हो या तर, अगर्चे पानी से तर की हो, ज़वाल से पहले करें या बा'द, किसी वक़्त भी मकरूह नहीं। (اَیضاً ص٤٠٨)

8 **अक्सर** लोगों में मश्हूर है कि दो पहर के बा'द रोज़ादार के लिये मिस्वाक करना मकरूह है येह हमारे मज़्हबे ह़नफ़िय्या के ख़िलाफ़ है। (बहारे शरीअ़त, जि. 1, स. 997) ह़ज़रते सय्यिदुना आ़मिर बिन रबीआ़ رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْھُمَا से रिवायत है : "मैं ने रसूले पाक صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم को बे शुमार बार **रोज़े** में मिस्वाक करते देखा।" (ترمذی ج ٢ ص ١٧٦ حدیث ٧٢٥)

9 **अगर** मिस्वाक चबाने से रेशे छूटें या मज़ा मह़सूस हो तो ऐसी **मिस्वाक** रोज़े में नहीं करना चाहिये। (फ़तावा रज़विय्या मुख़र्रजा, जि. 10, स. 511) अगर रोज़ा याद होते हुए **मिस्वाक** चबाते या दांत मांझते हुए इस का रेशा या कोई जुज़ ह़ल्क़ से नीचे उतर गया और उस का मज़ा ह़ल्क़ में मह़सूस हुवा तो **रोज़ा** फ़ासिद हो जाएगा। और अगर इतने सारे रेशे ह़ल्क़ से नीचे उतर गए जो एक चने की मिक़्दार के बराबर हों तो अगर्चे ह़ल्क़ में ज़ाएक़ा मह़सूस न हो तब भी रोज़ा टूट जाएगा।

﴾10﴿ **वुज़ू** व गुस्ल के इलावा ठन्डक पहुंचाने की ग़रज़ से कुल्ली करना या नाक में पानी चढ़ाना या ठन्डक के लिये नहाना बल्कि बदन पर भीगा कपड़ा लपेटना भी मक्रूह नहीं। हां परेशानी ज़ाहिर करने के लिये भीगा कपड़ा लपेटना मक्रूह है कि इबादत में दिल तंग होना अच्छी बात नहीं।

(बहारे शरीअ़त, जि. 1, स. 997, رَدُّالْمُحتَار ج ۳ ص ۴۵۹)

﴾11﴿ **बा'ज़** इस्लामी भाई रोज़े में बार बार थूकते रहते हैं, शायद वोह समझते हैं कि रोज़े में थूक नहीं निगलना चाहिये, ऐसा नहीं। अलबत्ता मुंह में थूक इकठ्ठा कर के निगल जाना, येह तो बिग़ैर **रोज़ा** के भी ना पसन्दीदा है और रोज़े में मक्रूह।

(बहारे शरीअ़त, जि. 1, स. 998)

﴾12﴿ **रमज़ानुल मुबारक** के दिनों में ऐसा काम करना जाइज़ नहीं जिस से ऐसा ज़ो'फ़ (या'नी कमज़ोरी) आ जाए कि **रोज़ा** तोड़ने का ज़न्ने ग़ालिब हो। लिहाज़ा नानबाई को चाहिये कि दो पहर तक रोटी पकाए फिर बाक़ी दिन में आराम करे। (دُرِّمُختَار ج ۳ ص ۴۶۰) मि'मार व मज़दूर और दीगर मशक़्क़त के काम करने वाले इस मस्अले पर ग़ौर फ़रमा लें।

आस्मान पर से काग़ज़ का पुर्ज़ा गिरा : प्यारे प्यारे इस्लामी भाइयो ! रोज़ों के शरई अह़काम सीखने का जज़्बा उजागर करने के

लिये तब्लीग़े कु़रआनो सुन्नत की आ़लमगीर ग़ैर सियासी तह़रीक, **दा'वते इस्लामी** के सुन्नतों की तरबियत के मदनी क़ाफ़िले में **आ़शिक़ाने रसूल** के साथ सुन्नतों भरे सफ़र को अपना मा'मूल बना लीजिये। एक बार सफ़र कर के तजरिबा कर लीजिये اِنْ شَآءَاللّٰه عَزَّوَجَلَّ वोह वोह दीनी मनाफ़ेअ़ ह़ासिल होंगे कि आप ह़ैरान रह जाएंगे। तरग़ीब के लिये **मदनी क़ाफ़िले** की एक **मदनी बहार** आप के गोश गुज़ार की जाती है : एक इस्लामी भाई के ख़ानदान में लड़कियां काफ़ी थीं, चचाजान के यहां सात लड़कियां तो बड़े भाईजान के यहां 9 लड़कियां ! इन की शादी हुई तो इन के यहां भी लड़की की विलादत हुई। सब को तश्वीश सी होने लगी और आज कल के एक आ़म ज़ेहन के मुत़ाबिक़ सब को वहम सा होने लगा कि किसी ने जादू कर के औलादे नरीना का सिल्सिला बन्द करवा दिया है ! उन्हों ने मन्नत मानी कि मेरे यहां लड़का पैदा हुवा तो **दा'वते इस्लामी** के सुन्नतों की तरबियत के **एक माह के मदनी क़ाफ़िले** में सफ़र करूंगा। उन की मदनी मुन्नी की अम्मी ने एक बार ख़्वाब देखा कि आस्मान से कोई काग़ज़ का पुर्ज़ा उन के क़रीब आ कर गिरा, उठा कर देखा तो उस पर लिखा था : "**बिलाल।**" اَلْحَمْدُ لِلّٰه عَزَّوَجَلَّ एक माह के मदनी क़ाफ़िले की (निय्यत की) बरकत से उन के यहां **मदनी मुन्ने** की आमद हो गई ! न सिर्फ़ एक बल्कि आगे चल कर यके बा'द दीगरे

दो मदनी मुन्ने मजी़द पैदा हुए। **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ का करम देखिये ! **एक माह के मदनी क़ाफ़िले** की (निय्यत की) बरकत सिर्फ़ उन तक मह़दूद न रही, बल्कि उन के ख़ानदान में जो भी औलादे नरीना से मह़रूम था सब के यहां **मदनी मुन्ने** तवल्लुद (या'नी पैदा) हुए। اَلْحَمْدُ لِلّٰه عَزَّوَجَلَّ उन्हें अ़लाक़ाई मदनी क़ाफ़िला ज़िम्मादार की ह़ैसिय्यत से मदनी क़ाफ़िलों की बहारें लुटाने की कोशिशें करने की सआ़दत भी मिली।

आ के तुम बा अदब, देख लो फ़ज़्ले रब मदनी मुन्ने मिलें, क़ाफ़िले में चलो
खोटी क़िस्मत खरी, गोद होगी हरी मुन्ना मुन्नी मिलें, क़ाफ़िले में चलो

(वसाइले बख़्शिश, स. 675)

صَلُّوا عَلَى الْحَبِيب ! صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلٰى مُحَمَّد

मांगी मुराद न मिलना भी इन्आ़म ! : प्यारे प्यारे इस्लामी भाइयो ! देखा आप ने ! **मदनी क़ाफ़िले** की बरकत से किस त़रह़ मन की मुरादें बर आती हैं ! उम्मीदों की सूखी खेतियां हरी हो जाती हैं, दिलों की पज़्मुर्दा कलियां खिल उठती हैं और ख़ानमां बरबादों की ख़ुशियां लौट आती हैं। मगर येह ज़ेह्न में रहे कि ज़रूरी नहीं हर एक की दिली मुराद लाज़िमी ही पूरी हो। बारहा ऐसा होता है कि बन्दा जो त़लब करता है वोह उस के ह़क़ में बेहतर नहीं होता और उस का सुवाल पूरा नहीं किया जाता, उस की मुंह मांगी मुराद न मिलना ही उस के लिये इन्आ़म

होता है । मसलन येही कि वोह **औलादे नरीना** मांगता है मगर उस को मदनी मुन्नियों से नवाज़ा जाता है और येही उस के ह़क़ में बारहा बेहतर भी होता है । चुनान्चे पारह दूसरा **सूरतुल बक़रह** की आयत नम्बर 216 में रब्बुल इबाद عَزَّوَجَلَّ का इर्शादे ह़क़ीक़त बुन्याद है :

عَسٰۤى اَنْ تُحِبُّوْا شَیْــٴًـا وَّ هُوَ شَرٌّ لَّكُمْ ؕ

(پ۲،البقرة:۲۱۶)

तरजमए कन्ज़ुल ईमान : क़रीब है कि कोई बात तुम्हें पसन्द आए और वोह तुम्हारे ह़क़ में बुरी हो ।

बेटी के फ़ज़ाइल : याद रखिये ! बेटी की फ़ज़ीलत किसी त़रह कम नहीं इस ज़िम्न में मुलाह़ज़ा हों **तीन फ़रामीने मुस्त़फ़ा** صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم : ﴿1﴾ जिस ने अपनी तीन बेटियों की परवरिश की वोह जन्नत में जाएगा और उसे राहे ख़ुदा عَزَّوَجَلَّ में उस जिहाद करने वाले की मिस्ल अज्र मिलेगा जिस ने दौराने जिहाद रोज़े रखे और नमाज़ क़ाइम की । (اَلتَّرغِیب وَالتَّرهِیب ج۳ص٤٦حدیث۲٦) ﴿2﴾ जिस की **तीन बेटियां** हों, वोह उन के साथ अच्छा सुलूक करे तो उस के लिये **जन्नत** वाजिब हो जाती है । अ़र्ज़ की गई : और दो हों तो ? फ़रमाया : "और दो हों तब भी ।" अ़र्ज़ की गई : अगर एक हो तो ? फ़रमाया : "अगर एक हो तो भी ।" (مُعجَم اَوسَط ج٤ص٣٤٧حدیث٦١٩٩مُلَخّصاً) ﴿3﴾ जिस ने अपनी दो बेटियों या दो बहनों या दो रिश्तेदार बच्चियों पर सवाब की निय्यत से ख़र्च किया यहां तक

कि **अल्लाह तआ़ला** उन्हें बे नियाज़ कर दे (या'नी उन का निकाह़ हो जाए या वोह साहि़बे माल हो जाएं या उन की वफ़ात हो जाए) तो वोह उस के लिये आग से आड़ हो जाएंगी। (مسند امام احمد ج١٠ ص١٧٩ حدیث ٢٦٠٧٨)

रोज़ा न रखने की मजबूरियां : प्यारे प्यारे इस्लामी भाइयो ! बा'ज़ मजबूरियां ऐसी हैं जिन के सबब **रमज़ानुल मुबारक** में **रोज़ा** न रखने की इजाज़त है। मगर येह याद रहे कि मजबूरी में **रोज़ा** मुआ़फ़ नहीं वोह मजबूरी ख़त्म हो जाने के बा'द उस की **क़ज़ा** रखना फ़र्ज़ है, अलबत्ता **क़ज़ा** का गुनाह नहीं होगा जैसा कि "**बहारे शरीअ़त** जिल्द अव्वल सफ़ह़ा 1002" पर "दुर्रे मुख़्तार" के ह़वाले से लिखा है कि सफ़र व ह़म्ल और बच्चे को दूध पिलाना और मरज़ और बुढ़ापा और ख़ौफ़े हलाकत व इक्राह (या'नी अगर कोई जान से मार डालने या किसी उ़ज़्व के काट डालने या सख़्त मार मारने की सह़ीह़ धम्की दे कर कहे कि रोज़ा तोड़ डाल अगर रोज़ादार जानता हो कि येह कहने वाला जो कुछ कहता है कर गुज़रेगा तो ऐसी सूरत में रोज़ा फ़ासिद कर देना या तर्क करना गुनाह नहीं। "इक्राह से मुराद येही है") व नुक़्साने अ़क़्ल और जिहाद येह सब रोज़ा न रखने के उ़ज़्र हैं इन वुजूह से अगर कोई **रोज़ा** न रखे तो गुनाहगार नहीं। (دُرِّمُخْتار ج٣ص٤٦٢)

शरई सफ़र की ता'रीफ़ : दौराने सफ़र भी **रोज़ा** न रखने की

इजाज़त है। सफ़र की मिक़्दार भी ज़ेहन नशीन कर लीजिये। सय्यिदी व मुर्शिदी इमामे अहले सुन्नत, **आ'ला ह़ज़रत**, मौलाना शाह अह़मद रज़ा ख़ान عَلَيْهِ رَحْمَةُ الرَّحْمٰن की तह़क़ीक़ के मुत़ाबिक़ शरअ़न **सफ़र** की मिक़्दार **साढ़े सत्तावन मील** (या'नी तक़रीबन 92 किलो मीटर) है जो कोई इतनी मिक़्दार का फ़ासिला तै करने की ग़रज़ से अपने शहर या गाउं की आबादी से बाहर निकल आया, वोह अब शरअ़न **मुसाफ़िर** है, उसे **रोज़ा** क़ज़ा कर के रखने की इजाज़त है और **नमाज़** में भी वोह **क़स्र** करेगा। **मुसाफ़िर** अगर **रोज़ा** रखना चाहे तो रख सकता है मगर चार रक्अ़त वाली फ़र्ज़ नमाज़ों में उसे क़स्र करना वाजिब है, नहीं करेगा तो गुनाहगार होगा। और क़स्दन चार पढ़ीं और दो पर क़ा'दा किया तो फ़र्ज़ अदा हो गए और पिछली दो रक्अ़तें नफ़्ल हो गईं मगर गुनहगार व अ़ज़ाबे नार का ह़क़दार है कि वाजिब तर्क किया लिहाज़ा तौबा करे (और नमाज़ का इआ़दा भी वाजिब है) और दो रक्अ़त पर क़ा'दा न किया तो फ़र्ज़ अदा न हुए और वोह नमाज़ नफ़्ल हो गई। (बहारे शरीअ़त, जि. 1, स. 743 मुलख़्ख़सन) "और जहालतन (या'नी इ़ल्म न होने की वज्ह से) पूरी (चार) पढ़ी तो उस **नमाज़** का फेरना भी वाजिब है" (फ़तावा रज़विय्या मुख़र्रजा, जि. 8, स. 270 मुलख़्ख़सन) या'नी मा'लूमात न होने की बिना पर भी आज तक जितनी नमाज़ें **सफ़र** में पूरी पढ़ी हैं उन का ह़िसाब लगा कर चार रक्अ़ती फ़र्ज़ की जगह **क़स्र** की निय्यत से दो दो फ़र्ज़ लौटाने होंगे। हां **मुसाफ़िर** को मुक़ीम इमाम के पीछे फ़र्ज़ चार पूरे पढ़ने होते हैं, सुन्नतें और वित्र

लौटाने की ज़रूरत नहीं। **क़स्र** सिर्फ़ ज़ोहर, अ़स्र और इशा की फ़र्ज़ रक्अ़तों में करना है। या'नी इन में चार रक्अ़त फ़र्ज़ की जगह दो रक्अ़त अदा की जाएंगी, बाक़ी सुन्नतों और वित्र की रक्अ़तें पूरी अदा की जाएंगी, दूसरे शहर या गाउं वग़ैरा में पहुंचने के बा'द जब तक पन्दरह दिन से कम मुद्दत तक क़ियाम की निय्यत थी **मुसाफ़िर** ही कहलाएगा और **मुसाफ़िर** के अह़काम रहेंगे और अगर **मुसाफ़िर** ने वहां पहुंच कर पन्दरह दिन या उस से ज़ियादा क़ियाम की निय्यत कर ली तो अब **मुसाफ़िर** के अह़काम ख़त्म हो जाएंगे और वोह मुक़ीम कहलाएगा। अब उसे **रोज़ा** भी रखना होगा और नमाज़ भी क़स्र नहीं करेगा। सफ़र के मुतअ़ल्लिक़ ज़रूरी अह़काम की तफ़्सीली मा'लूमात ह़ासिल करने के लिये बहारे शरीअ़त ह़िस्सए चहारुम के बाब "नमाज़े मुसाफ़िर का बयान" या मक्तबतुल मदीना के रिसाले "मुसाफ़िर की नमाज़" का मुत़ालआ़ फ़रमाएं।

"اَلصَّلٰوۃُ وَالسَّلَامُ عَلَیْکَ یَا سَیِّدِیْ یَا رَسُوْلَ اللّٰہ" के तेंतीस ह़ुरूफ़ की निस्बत से रोज़ा न रखने की इजाज़ात पर मब्नी 33 मदनी फूल

(वोह मजबूरी ख़त्म हो जाने की सूरत में हर रोज़े के बदले एक रोज़ा क़ज़ा रखना होगा)

﴾1﴿ **मुसाफ़िर** को रोज़ा रखने या न रखने का इख़्तियार है।

(رَدُّالْمُحتَار ج٣ص٤٦٢)

﴾2﴿ **अगर** ख़ुद उस **मुसाफ़िर** को और उस के साथ वाले को **रोज़ा** रखने में ज़रर (या'नी नुक़्सान) न पहुंचे तो **रोज़ा** रखना **सफ़र** में बेहतर है और अगर दोनों या उन में से किसी एक को नुक़्सान हो रहा हो तो **रोज़ा** न रखना बेहतर है। (دُرِّمُختار ج۳ ص٤٦٥)

﴾3﴿ **मुसाफ़िर** ने **ज़ह़्वए कुब्रा**[1] से पेशतर इक़ामत की और अभी कुछ खाया नहीं तो **रोज़े** की निय्यत कर लेना वाजिब है। (جَوْهَره ج١ ص١٨٦)

﴾4﴿ **दिन** में अगर सफ़र किया तो उस दिन का **रोज़ा** छोड़ देने के लिये आज का सफ़र उ़ज़्र नहीं। अलबत्ता अगर दौराने सफ़र तोड़ देंगे तो **कफ़्फ़ारा** लाज़िम न आएगा मगर गुनाह ज़रूर होगा। (عالمگیری ج١ ص٢٠٦) और रोज़ा क़ज़ा करना फ़र्ज़ रहेगा।

﴾5﴿ **अगर** सफ़र शुरूअ़ करने से पहले तोड़ दिया फिर सफ़र किया तो (अगर कफ़्फ़ारे के शराइत़ पाए गए तो क़ज़ा के साथ साथ) **कफ़्फ़ारा** भी लाज़िम आएगा। (اَیضاً)

﴾6﴿ **अगर** दिन में **सफ़र** शुरूअ़ किया (और दौराने सफ़र रोज़ा तोड़ा न था) और मकान पर कोई चीज़ भूल गए थे उसे लेने वापस आए और अब अगर आ कर **रोज़ा** तोड़ डाला तो (शराइत़ पाए जाने की सूरत में) **कफ़्फ़ारा** भी वाजिब है। अगर दौराने सफ़र ही तोड़ दिया

मदीना

1 : ज़ह़्वए कुब्रा की ता'रीफ़ सफ़ह़ा 962 पर देख लीजिये।

होता तो सिर्फ़ **क़ज़ा** रखना फ़र्ज़ होता जैसा कि नम्बर **4** में गुज़रा। (عالمگیری ج۱ ص۲۰۷)

7 **किसी** को **रोज़ा** तोड़ डालने पर मजबूर किया गया तो **रोज़ा** तो तोड़ सकता है मगर सब्र किया तो अज्र मिलेगा। (رَدُّالْمُحتَار ج۳ ص٤٦٢) (मजबूरी की ता'रीफ़ सफ़्हा 1027 पर देख लीजिये)

8 **सांप** ने डस लिया और जान ख़त्रे में पड़ गई तो **रोज़ा** तोड़ दे। (اَیضاً)

9 **जिन** लोगों ने इन मजबूरियों के सबब **रोज़ा** तोड़ा उन पर फ़र्ज़ है कि उन रोज़ों की **क़ज़ा** रखें और इन क़ज़ा रोज़ों में तरतीब फ़र्ज़ नहीं, लिहाज़ा अगर उन रोज़ों की क़ज़ा करने से क़ब्ल **नफ़्ल रोज़े** रखे तो येह नफ़्ल रोज़े हो गए, मगर हुक्म येह है कि उ़ज़्र जाने के बा'द आयिन्दा **रमज़ानुल मुबारक** के आने से पहले पहले **क़ज़ा** रख लें। ह़दीसे पाक में फ़रमाया : "जिस पर गुज़श्ता **रमज़ानुल मुबारक** की क़ज़ा बाक़ी है और वोह न रखे, उस के इस **रमज़ानुल मुबारक** के रोज़े क़बूल न होंगे।" (مسندامام احمد ج۳ ص۲٦٦ حدیث۸٦۲۹) अगर वक़्त गुज़रता गया और क़ज़ा रोज़े न रखे यहां तक कि दूसरा **रमज़ान शरीफ़** आ गया तो अब **क़ज़ा** रोज़े रखने के बजाए पहले इसी **रमज़ानुल मुबारक** के **रोज़े** रख लीजिये, **क़ज़ा**

बा'द में रख लीजिये। बल्कि अगर ग़ैरे मरीज़ व मुसाफ़िर ने क़ज़ा की निय्यत की जब भी **क़ज़ा** नहीं बल्कि इसी रमज़ान शरीफ़ के रोज़े हैं। (دُرِّ مُختار ج ٣ ص ٤٦٥)

﴾10﴿ **भूक** और प्यास ऐसी हो कि हलाक (या'नी जान चली जाने) का ख़ौफ़े सह़ीह़ हो या नुक़्साने अ़क़्ल का अन्देशा हो तो **रोज़ा** न रखे। (دُرِّمُختار، ردُّ المُحتار ج ٣ ص ٤٦٢)

फ़ासिक़ या ग़ैर मुस्लिम डॉक्टर रोज़ा न रखने का मश्वरा दे तो ?

﴾11﴿ **फ़ुक़हाए** किराम ने रोज़ा न रखने के लिये जो रुख़्सतें बयान की हैं उन में येह भी दाख़िल है कि **मरीज़** को मरज़ बढ़ जाने या देर में अच्छा होने या तन्दुरुस्त को बीमार हो जाने का गुमाने ग़ालिब हो तो इजाज़त है कि उस दिन **रोज़ा** न रखे। इस गुमाने ग़ालिब के हुसूल (या'नी ह़ासिल करने) की तीसरी सूरत किसी मुसल्मान, ह़ाज़िक़ त़बीब मस्तूर या'नी ग़ैरे फ़ासिक़ माहिर डॉक्टर की ख़बर भी है लेकिन फ़ी ज़माना ऐसे त़बीब (डॉक्टर) का मिलना बहुत ही मुश्किल है तो अब ज़रूरते ज़माना का लिह़ाज़ करते हुए इस बात की इजाज़त है कि अगर कोई क़ाबिले ए'तिमाद फ़ासिक़ या ग़ैर मुस्लिम त़बीब (डॉक्टर) भी रोज़ा रखने को सिह़्ह़त के लिये

नुक़्सान देह क़रार दे और रोज़ा तर्क करने का कहे और मरीज़ भी अपनी त़रफ़ से ज़न व तह़र्री (या'नी अच्छी त़रह़ ग़ौर) करे जिस से उसे रोज़ा तोड़ना या न रखना ही समझ आए तो अब अगर उस ने अपने ज़न्ने ग़ालिब (या'नी मज़बूत़ सोच) पर अ़मल करते हुए रोज़ा तोड़ा या रोज़ा न रखा तो उसे गुनाह नहीं होगा और रोज़ा तोड़ने की सूरत में कफ़्फ़ारा भी उस पर लाज़िम न होगा मगर क़ज़ा बहर सूरत ज़रूर फ़र्ज़ होगी और तह़र्री (या'नी ग़ौर करने) में येह भी ज़रूरी है कि मरीज़ का दिल इस बात पर जमे कि येह त़बीब (या'नी डॉक्टर) ख़्वाह म ख़्वाह रोज़ा तोड़ने का नहीं कह रहा और इस में भी ज़ियादा बेहतर येह होगा कि एक से ज़ाइद डॉक्टर्ज़ से राय ले।

रोज़ा और हैज़ व निफ़ास

﴾12﴿ **रोज़े** की ह़ालत में हैज़ या निफ़ास शुरूअ़ हो गया तो वोह रोज़ा जाता रहा उस की क़ज़ा रखे, फ़र्ज़ था तो क़ज़ा फ़र्ज़ है और नफ़्ल था तो क़ज़ा वाजिब। हैज़ व निफ़ास की ह़ालत में सज्दए शुक्र व सज्दए तिलावत ह़राम है और आयते सज्दा सुनने से इस पर सज्दा वाजिब नहीं। (बहारे शरीअ़त, जि. 1, स. 382) ﴾13﴿ **हैज़** या निफ़ास की ह़ालत में **नमाज़, रोज़ा** ह़राम है और ऐसी ह़ालत में नमाज़ व रोज़ा सह़ीह़ होते ही नहीं। नीज़ तिलावते क़ुरआने पाक या क़ुरआने

पाक की आयाते मुक़द्दसा या उन का तरजमा छूना येह सब भी **ह़राम** है। (ऐज़न, स. 379, 380) ﴾14﴿ **हैज़** या निफ़ास वाली के लिये इख़्तियार है कि छुप कर खाए या ज़ाहिरन, रोज़ादार की त़रह़ रहना उस पर ज़रूरी नहीं। (جوہرہ ج١ص١٨٦) ﴾15﴿ **मगर** छुप कर खाना बेहतर है ख़ुसूसन हैज़ वाली के लिये। (बहारे शरीअ़त, जि. 1, स. 1004) ﴾16﴿ **ह़म्ल** वाली या दूध पिलाने वाली औ़रत को अगर अपनी या बच्चे की जान जाने का सह़ीह़ अन्देशा है तो इजाज़त है कि इस वक़्त **रोज़ा** न रखे, ख़्वाह दूध पिलाने वाली बच्चे की मां हो या दाई, अगर्चे **रमज़ानुल मुबारक** में दूध पिलाने की नोकरी इख़्तियार की हो। (دُرِّمُختار، ردُّ الْمُحتار ج٣ص٤٦٣)

उ़म्र रसीदा बुज़ुर्ग के रोज़े

﴾17﴿ "**शैख़े फ़ानी**" या'नी वोह मुअ़म्मर बुज़ुर्ग जिन की उ़म्र ऐसी हो गई कि अब वोह रोज़ बरोज़ कमज़ोर ही होते जाएंगे, जब वोह रोज़ा रखने से आ़जिज़ (या'नी मजबूर व बेबस) हो जाएं या'नी न अब रख सकते हैं न आयिन्दा रोज़े की त़ाक़त आने की उम्मीद है उन्हें अब रोज़ा न रखने की इजाज़त है, लिहाज़ा हर रोज़े के बदले में "फ़िद्‌या" या'नी दोनों वक़्त एक मिस्कीन को भरपेट खाना खिलाना उस पर वाजिब है या हर रोज़े के बदले एक **सदक़ए**

फ़ित्र की मिक़्दार **मिस्कीन** को दे दें। (دُرِّمُختار ج ۳ ص ۴۷۱) (सदक़ए फ़ित्र की एक मिक़्दार 2 किलो में 80 ग्राम कम गेहूं या उस का आटा या उन गेहूं की रक़म है)

18 **अगर** ऐसा बूढ़ा गर्मियों में रोज़े नहीं रख सकता तो न रखे मगर इस के बदले सर्दियों में रखना फ़र्ज़ है। (رَدُّالْمُحتار ج۳ص۴۷۲)

19 **अगर** फ़िदया देने के बा'द रोज़ा रखने की ताक़त आ गई तो दिया हुवा **फ़िदया** सदक़ए नफ़्ल हो गया। उन रोज़ों की **क़ज़ा** रखें। (عالمگیری ج۱ص۲۰۷)

20 **येह** इख़्तियार है कि शुरूए रमज़ान ही में पूरे रमज़ान (के तमाम रोज़ों) का एक दम **फ़िदया** दे दें या आख़िर में (सब इकठ्ठे दे) दें। (دُرِّمُختار ج۳ص۴۷۲)

21 **फ़िदया** देने में येह ज़रूरी नहीं कि जितने फ़िदये हों उतने ही मसाकीन को अलग अलग दें, बल्कि एक ही मिस्कीन को कई दिन के (एक साथ) भी दिये जा सकते हैं। (اَیضاً)

नफ़्ल रोज़ा तोड़ने में सिर्फ़ क़ज़ा होती है कफ़्फ़ारा नहीं

22 **नफ़्ल** रोज़ा क़स्दन शुरूअ़ करने वाले पर अब पूरा करना वाजिब हो जाता है कि तोड़ दिया तो **क़ज़ा** वाजिब होगी। (رَدُّالْمُحتار ج ۳ ص ۴۷۳)

﴾23﴿ **अगर** आप ने येह गुमान कर के **रोज़ा** रखा कि मेरे ज़िम्मे कोई **रोज़ा** है मगर **रोज़ा** शुरूअ़ करने के बा'द मा'लूम हुवा कि मुझ पर किसी क़िस्म का कोई **रोज़ा** नहीं है, अब अगर फ़ौरन तोड़ दिया तो कुछ नहीं और येह मा'लूम करने के बा'द अगर फ़ौरन न तोड़ा, तो अब नहीं तोड़ सकते, अगर तोड़ेंगे तो **क़ज़ा** वाजिब होगी। (دُرِّمُختار ج۳ص٤٧٣)

﴾24﴿ **नफ़्ल** रोज़ा क़स्दन (या'नी जान बूझ कर) नहीं तोड़ा बल्कि बिला इख़्तियार टूट गया, मसलन दौराने **रोज़ा** औ़रत को ह़ैज़ आ गया, जब भी **क़ज़ा** वाजिब है। (اَیضاًص٤٧٤)

साल में पांच रोज़े ह़राम हैं

﴾25﴿ **ईदुल** फ़ित्र या बक़र ईद के चार दिन या'नी 10, 11, 12, 13 **ज़ुल ह़िज्जतिल ह़राम** में से किसी भी दिन का रोज़ए नफ़्ल रखा तो (चूंकि इन पांच दिनों में रोज़ा रखना **ह़राम** है लिहाज़ा) इस रोज़े का पूरा करना वाजिब नहीं, न इस के तोड़ने पर **क़ज़ा** वाजिब, बल्कि इस का तोड़ देना ही **वाजिब** है और अगर इन दिनों में रोज़ा रखने की मन्नत मानी तो मन्नत पूरी करनी वाजिब है मगर इन दिनों में नहीं बल्कि और दिनों में। (ردُّالْمُحتارج۳ص٤٧٤)

26 **नफ़्ल** रोज़ा बिला उ़ज़्र तोड़ देना **ना जाइज़** है, मेहमान के साथ अगर मेज़बान न खाएगा तो उसे ना गवार होगा या मेहमान अगर खाना न खाएगा तो मेज़बान को अज़िय्यत होगी तो नफ़्ल रोज़ा तोड़ देने के लिये येह उ़ज़्र है, बशर्ते़ कि येह भरोसा हो कि इस की क़ज़ा रख लेगा और **ज़ह्वए कुब्रा** से पहले तोड़ दे बा'द को नहीं। (बहारे शरीअ़त, जि. 1, स. 1007, عالمگیری ج۱ ص۲۰۸)

दा'वत के सबब रोज़ा तोड़ना

27 **दा'वत** के सबब **ज़ह्वए कुब्रा** से पहले (नफ़्ल) रोज़ा तोड़ सकता है जब कि दा'वत करने वाला मह्ज़ (या'नी सिर्फ़) इस की मौजूदगी पर राज़ी न हो और इस के न खाने के सबब नाराज़ हो बशर्ते़ कि येह भरोसा हो कि बा'द में रख लेगा, लिहाज़ा अब रोज़ा तोड़ ले और उस की क़ज़ा रखे। लेकिन अगर दा'वत करने वाला मह्ज़ (या'नी सिर्फ़) इस की मौजूदगी पर राज़ी हो जाए और न खाने पर नाराज़ न हो तो रोज़ा तोड़ने की इजाज़त नहीं।

(عالمگیری ج۱ ص۲۰۸)

28 **नफ़्ल** रोज़ा ज़वाल के बा'द मां बाप की नाराज़ी के सबब तोड़ सकता है, और इस में **अ़स्र** से पहले तक तोड़ सकता है बा'दे अ़स्र नहीं। (دُرِّمُختار، رَدُّالْمُحتَار ج۳ ص۴۷۷)

बीवी बिला इजाज़ते शोहर नफ़्ल रोज़ा नहीं रख सकती

29 **औ़रत** बिग़ैर शोहर की इजाज़त के नफ़्ल और मन्नत व क़सम के रोज़े न रखे और रख लिये तो शोहर तुड़वा सकता है मगर तोड़ेगी तो **क़ज़ा** वाजिब होगी मगर इस की **क़ज़ा** में भी शोहर की इजाज़त दरकार है। या शोहर और उस के दरमियान जुदाई हो जाए या'नी त़लाक़े बाइन (त़लाक़े बाइन : उस त़लाक़ को कहते हैं जिस से बीवी निकाह़ से बाहर हो जाती है, अब शोहर रुजूअ़ नहीं कर सकता) दे दे या मर जाए। हां अगर **रोज़ा** रखने में शोहर का कुछ ह़रज न हो, मसलन वोह सफ़र में है या बीमार है या एह़राम में है तो इन ह़ालतों में बिग़ैर इजाज़त के भी **क़ज़ा** रख सकती है बल्कि वोह मन्अ़ करे जब भी रख सकती है। अलबत्ता इन दिनों में भी शोहर की इजाज़त के बिग़ैर नफ़्ल रोज़ा नहीं रख सकती।

(رَدُّالْمحتار ج٣ص٤٧٧، ٤٧٨)

30 **रमज़ानुल मुबारक** और क़ज़ाए **रमज़ानुल मुबारक** के लिये शोहर की इजाज़त की कुछ ज़रूरत नहीं बल्कि उस की मुमानअ़त पर भी रखे। (دُرِّمُختار، رَدُّالْمُحتَار ج٣ص٤٧٨)

31 **अगर** आप किसी के मुलाज़िम हैं या उस के यहां मज़दूरी पर काम करते हैं तो उस की इजाज़त के बिग़ैर **नफ़्ल रोज़ा** नहीं रख सकते क्यूं कि **रोज़े** की वज्ह से काम में सुस्ती आएगी। हां **रोज़ा**

रखने के बा वुजूद आप बा क़ाइदा काम कर सकते हैं, उस के काम में किसी क़िस्म की कोताही नहीं होती, काम पूरा हो जाता है तो अब **नफ़्ल रोज़े** की इजाज़त लेने की ज़रूरत नहीं।

(ردُّالْمحتار ج۳ص۴۷۸)

⟪32⟫ **नफ़्ल** रोज़े के लिये बेटी को बाप, मां को बेटे, बहन को भाई से इजाज़त लेने की ज़रूरत नहीं। (اَیضاً)

⟪33⟫ **मां** बाप अगर बेटे को **रोज़ए नफ़्ल** से मन्अ़ कर दें इस वज्ह से कि मरज़ का अन्देशा है तो मां बाप की इत़ाअ़त करे। (اَیضاً)

अब "لَا اِلٰهَ اِلَّا اللّٰه" के बारह हुरूफ़ की निस्बत से "12 मदनी फूल" उन चीज़ों के मुतअ़ल्लिक़ बयान किये जाते हैं जिन के करने से सिर्फ़ क़ज़ा लाज़िम आती है। क़ज़ा का त़रीक़ा येह है कि हर रोज़े के बदले रमज़ानुल मुबारक के बा'द क़ज़ा की निय्यत से एक रोज़ा रख लें।

"لَا اِلٰهَ اِلَّا اللّٰه" के बारह हुरूफ़ की निस्बत से उन चीज़ों से मुतअ़ल्लिक़ "12 मदनी फूल" जिन से सिर्फ़ क़ज़ा लाज़िम आती है

⟪1⟫ **येह** गुमान था कि सुब्ह़ नहीं हुई और खाया, पिया या जिमाअ़ किया बा'द को मा'लूम हुवा कि सुब्ह़ हो चुकी थी तो **रोज़ा** न

हुवा, इस **रोजे़ की क़ज़ा** करना ज़रूरी है या'नी इस **रोजे़** के बदले में एक **रोज़ा** रखना होगा।

(बहारे शरीअ़त, जि. 1, स. 989, رَدُّالْمُحتَار ج٣ ص٤٣٠)

किसी के मजबूर करने पर रोज़ा तोड़ना

2 **खाने** पर सख़्त मजबूर किया गया या'नी **इक्राहे शरई** पाया गया, अब चूंकि मजबूरी है, लिहाज़ा ख़्वाह अपने हाथ से ही खाया हो सिर्फ़ **क़ज़ा** लाज़िम है। (बहारे शरीअ़त, जि. 1, स. 989) इस मस्अले का ख़ुलासा येह है कि कोई शख़्स क़त्ल या उ़ज़्व काट डालने या शदीद मार लगाने की सह़ीह़ धम्की दे कर कहे कि रोज़ा तोड़ डाल ! अगर रोज़ादार येह समझे कि धम्की देने वाला जो कुछ कह रहा है वोह कर गुज़रेगा तो अब "इक्राहे शरई" पाया गया और ऐसी सूरत में रोज़ा तोड़ डालने की रुख़्सत है मगर बा'द में इस रोजे़ की क़ज़ा लाज़िमी है।

3 **भूल** कर खाया, पिया या जिमाअ़ किया था या नज़र करने से इन्ज़ाल हुवा था (या'नी मनी निकल गई थी) या एह़तिलाम हुवा या कै़ हुई और इन सब सूरतों में येह गुमान किया कि **रोज़ा** जाता रहा, अब क़स्दन (या'नी जान बूझ कर) खा लिया तो सिर्फ़ **क़ज़ा** फ़र्ज़ है। (دُرِّ مُختار ج٣ ص٤٣١)

﴾4﴿ **रोज़े** की ह़ालत में नाक में दवा चढ़ाई तो रोज़ा टूट गया और इस की **क़ज़ा** लाज़िम है। (اَیضاًص۴۳۲)

﴾5﴿ **पथ्थर**, कंकरी, मिट्टी, रूई, घास, काग़ज़ वग़ैरा ऐसी चीज़ खाई जिन से लोग घिन करते हों, इन से रोज़ा तो टूट गया मगर सिर्फ़ **क़ज़ा** करना होगा। (دُرِّ مُختار ج۳ص۴۳۳ مُلَخَّصاً)

﴾6﴿ **बारिश** का पानी या ओला ह़ल्क़ में चला गया तो **रोज़ा** टूट गया और **क़ज़ा** लाज़िम है। (اَیضاًص۴۳۴ مُلَخَّصاً)

﴾7﴿ **बहुत** सारा पसीना या आंसू निगल लिया तो रोज़ा टूट गया, **क़ज़ा** करना होगा। (बहारे शरीअ़त, जि. 1, स. 989)

﴾8﴿ **गुमान** किया कि अभी तो रात बाक़ी है, सह़री खाते रहे और बा'द में पता चला कि सह़री का वक़्त ख़त्म हो चुका था। इस सूरत में भी **रोज़ा** गया और क़ज़ा करना होगा।

(دُرِّ مُختار ج۳ص۴۳۶)

﴾9﴿ **इसी** त़रह़ गुमान कर के कि सूरज गुरूब हो चुका है, खा पी लिया और बा'द में मा'लूम हुवा कि सूरज नहीं डूबा था जब भी **रोज़ा** टूट गया और **क़ज़ा** करें।

(دُرِّ مُختار ج۳ص۴۳۶, बहारे शरीअ़त, जि. 1, स. 989)

﴾10﴿ **अगर** गुरूबे आफ़्ताब से पहले ही **साइरन** की आवाज़ गूंज उठी

या **अज़ाने** मग़रिब शुरूअ़ हो गई और **रोज़ा इफ़्तार** कर लिया और बा'द में मा'लूम हुवा कि **साइरन** या **अज़ान** वक़्त से पहले ही शुरूअ़ हो गए थे, **रोज़ा** टूट गया **क़ज़ा** करना होगा।

(ردُّالْمحتار ج۳ص۴۳۹ ماخوذاً)

﴾11﴿ **आज** कल बे परवाई का दौर दौरा है, हर एक को चाहिये कि अपने रोज़े की ख़ुद हिफ़ाज़त करे। **साइरन, रेडियो, टीवी** के ए'लान बल्कि मस्जिद की **अज़ान** पर भी इक्तिफ़ा करने के बजाए ख़ुद **सह़री व इफ़्तार** के वक़्त की सह़ीह़ सह़ीह़ मा'लूमात रखे।

﴾12﴿ **वुज़ू** कर रहा था पानी नाक में डाला और दिमाग़ तक चढ़ गया या ह़ल्क़ के नीचे उतर गया, रोज़ादार होना याद था तो **रोज़ा** टूट गया और **क़ज़ा** लाज़िम है। हां उस वक़्त रोज़ादार होना याद नहीं था तो **रोज़ा** न गया। (عالمگیری ج۱ص۲۰۲)

कफ़्फ़ारे के अह़काम : प्यारे प्यारे इस्लामी भाइयो ! रमज़ानुल मुबारक का रोज़ा रख कर बिग़ैर किसी सह़ीह़ मजबूरी के जान बूझ कर तोड़ देने से बा'ज़ सूरतों में सिर्फ़ **क़ज़ा** लाज़िम आती है और बा'ज़ सूरतों में **क़ज़ा** के साथ साथ **कफ़्फ़ारा** भी वाजिब हो जाता है।

रोज़े के कफ़्फ़ारे का त़रीक़ा : रोज़ा तोड़ने का **कफ़्फ़ारा** येह है कि मुम्किन हो तो एक बांदी या ग़ुलाम आज़ाद करे और येह न कर सके मसलन इस के पास न लौंडी, ग़ुलाम है न इतना माल कि ख़रीद

सके, या माल तो है मगर ग़ुलाम मुयस्सर नहीं, जैसा कि आज कल लौंडी ग़ुलाम नहीं मिलते तो अब **पै दर पै साठ रोज़े** रखे। (याद रहे ! अगर सिने हिजरी के महीने की यकुम (पहली) से शुरूअ़ करें तो दो माह पूरे रोज़े रखिये, हो सकता है कि दोनों महीने उन्तीस उन्तीस के हों तो 58 रोज़ों से कफ़्फ़ारा अदा हो जाएगा और अगर यकुम के बा'द किसी दिन से रोज़े शुरूअ़ करें तो अब पै दर पै 60 रोज़े रखने होंगे) येह भी अगर मुम्किन न हो तो **साठ मिस्कीनों को पेट भर कर दोनों वक़्त खाना खिलाए** येह ज़रूरी है कि जिस को एक वक़्त खिलाया दूसरे वक़्त भी उसी को खिलाए। येह भी हो सकता है कि **साठ मसाकीन को एक एक सदक़ए फ़ित्र** (मसलन 2 किलो में 80 ग्राम कम गेहूं या उस की रक़म) का मालिक कर दिया जाए। एक ही मिस्कीन को इकट्ठे साठ सदक़ए फ़ित्र नहीं दे सकते, हां येह कर सकते हैं कि एक ही को साठ दिन तक रोज़ाना एक एक सदक़ए फ़ित्र दें।[1] रोज़ों की सूरत में (दौराने कफ़्फ़ारा) अगर दरमियान में एक दिन का भी **रोज़ा** छूट गया तो फिर नए सिरे से **साठ रोज़े** रखने होंगे पहले के रोज़े शामिले ह़िसाब न होंगे अगर्चे **उन्सठ (59)** रख चुका था, चाहे बीमारी वग़ैरा किसी भी उ़ज़्र के सबब छूटा हो। (बहारे शरीअ़त, जि. 1, स. 994 मुलख़्ख़सन)

1 : कफ़्फ़ारे में सदक़ए फ़ित्र देने का मस्अला बहारे शरीअ़त जिल्द 2 सफ़्हा 215 पर से देखा जा सकता है।

औ़रत और कफ़्फ़ारे के रोज़े : अगर औ़रत ने **रमज़ान** का **रोज़ा** तोड़ दिया और कफ़्फ़ारे में **रोज़े** रख रही थी और ह़ैज़ आ गया तो सिरे से रखने का हुक्म नहीं बल्कि जितने बाक़ी हैं उन का रखना काफ़ी है। हां अगर उस ह़ैज़ के बा'द "आइसा" हो गई या'नी अब ऐसी उ़म्र हो गई कि ह़ैज़ न आएगा, तो सिरे से रखने का हुक्म दिया जाएगा कि अब वोह पै दर पै **दो महीने के रोज़े** रख सकती है और अगर इस्नाए कफ़्फ़ारा में (या'नी कफ़्फ़ारा के रोज़े रखने के दौरान) औ़रत के बच्चा हुवा तो सिरे से रखे। (बहारे शरीअ़त, जि. 2, स. 214)

आइसा कितनी उ़म्र में ? : कम से कम नव बरस की उ़म्र से ह़ैज़ शुरूअ़ होगा और इन्तिहाई उ़म्र ह़ैज़ आने की पचपन साल है। इस उ़म्र वाली औ़रत को **आइसा** और इस उ़म्र को "सिने अयास" कहते हैं।

(बहारे शरीअ़त, जि. 1, स. 372)

कफ़्फ़ारा वाजिब होने की एक सूरत : जो कोई रात से ही **रमज़ान** के अदा रोज़े की **निय्यत** कर चुका हो और फिर सुब्ह़ या दिन में किसी भी वक़्त बल्कि अगर **इफ़्तार** से एक लम्ह़ा भी क़ब्ल किसी सह़ीह़ मजबूरी के बिग़ैर किसी ऐसी चीज़ जिस से त़बीअ़ते इन्सानी नफ़्रत न करती हो (मसलन खाना, पानी, चाय, फल, बिस्किट, शरबत, शहद, मिठाई वग़ैरा वग़ैरा) से अ़म्दन (या'नी जान बूझ कर) रोज़ा तोड़

डाले तो अब **रमज़ान शरीफ़** के बा'द इस रोज़े की **क़ज़ा** की निय्यत से **एक रोज़ा** रखना होगा और उस का **कफ़्फ़ारा** भी देना होगा। **मेरे आक़ा** आ'ला ह़ज़रत, इमाम अह़मद रज़ा ख़ान عَلَيْهِ رَحْمَةُ الرَّحْمٰن फ़रमाते हैं : किसी ने बिला उ़ज़्रे शरई **रमज़ानुल मुबारक** का अदा रोज़ा जिस की निय्यत रात से की थी बिल क़स्द (या'नी जान बूझ कर) किसी ग़िज़ा या दवा या नफ़्अ़ रसां शै (या'नी नफ़्अ़ पहुंचाने वाली चीज़) से तोड़ डाला और शाम तक (या'नी इफ़्त़ार से पहले) कोई ऐसा आ़रिज़ा लाह़िक़ न हुवा जिस के बाइ़स शरअ़न आज रोज़ा रखना ज़रूर न होता (मसलन औ़रत को उसी दिन में हैज़ या निफ़ास आ गया या रोज़ा तोड़ने के बा'द उसी दिन में ऐसा बीमार हो गया जिस में रोज़ा न रखने की इजाज़त है) तो इस जुर्म के जुर्माने में साठ रोज़े पै दर पै रखने होते हैं। वैसे जो रोज़ा न रखा हो उस की क़ज़ा सिर्फ़ एक रोज़ा है। (फ़तावा रज़विय्या मुख़र्रजा, जि. 10, स. 519)

"या अल्लाह करम कर" के ग्यारह हुरूफ़ की निस्बत से कफ़्फ़ारे से मुतअ़ल्लिक़ 11 मदनी फूल

﴾1﴿ **रमज़ानुल मुबारक** में किसी आ़क़िल बालिग़ मुक़ीम (या'नी जो शरई मुसाफ़िर न हो) ने अदाए रोज़ए रमज़ान की निय्यत से रोज़ा रखा और बिग़ैर किसी सह़ीह़ मजबूरी के जान बूझ कर जिमाअ़ किया या करवाया, या कोई भी चीज़ लज़्ज़त के लिये खाई या पी

तो रोज़ा टूट गया और इस की **क़ज़ा** और **कफ़्फ़ारा** दोनों लाज़िम हैं। (बहारे शरीअ़त, जि. 1, स. 991)

(2) **जिस** जगह रोज़ा तोड़ने से **कफ़्फ़ारा** लाज़िम आता है, उस में शर्त़ येह है कि **रात** ही से रोज़ए **रमज़ानुल मुबारक** की निय्यत की हो, अगर **दिन** में निय्यत की और तोड़ दिया तो कफ़्फ़ारा लाज़िम नहीं सिर्फ़ **क़ज़ा** काफ़ी है। (جَوْهَرہ ج ۱ ص ۱۸۰)

(3) **क़ै** आई या भूल कर खाया या जिमाअ़ किया और इन सब सूरतों में इसे मा'लूम था कि रोज़ा न गया फिर भी खा लिया तो **कफ़्फ़ारा** लाज़िम नहीं। (رَدُّالْمُحتَار ج۳ ص۴۳۱)

(4) **एह़तिलाम** हुवा और इसे मा'लूम भी था कि रोज़ा न गया इस के बा वुजूद खा लिया तो **कफ़्फ़ारा** लाज़िम है। (اَیضاً)

(5) **अपना** लुआ़ब (या'नी थूक) थूक कर चाट लिया या दूसरे का थूक निगल लिया तो **कफ़्फ़ारा** नहीं मगर मह़बूब (या'नी प्यारे) का लज़्ज़त या मुअ़ज़्ज़मे दीनी (या'नी बुज़ुर्ग) का **तबर्रुक** के तौर पर थूक निगल लिया तो **कफ़्फ़ारा** लाज़िम है। (اَیضاً ص۴۴۴) **ख़रबूज़े** या तरबूज़ का छिलका खाया, अगर ख़ुश्क हो या ऐसा हो कि लोग इस के खाने से घिन करते हों, तो **कफ़्फ़ारा** नहीं, वरना है।

(عالمگیری ج۱ ص۲۰۲)

6 **कच्चे** चावल, बाजरा, मसूर, मूंग खाई तो **कफ़्फ़ारा** लाज़िम नहीं, येही हुक्म कच्चे जव का है और भुने हुए हों तो **कफ़्फ़ारा** लाज़िम। (बहारे शरीअ़त, जि. 1, स. 993, عالمگیری ج۱ ص۲۰۲)

7 **सह़री** का निवाला मुंह में था कि सुब्हे़ सादिक़ का वक़्त हो गया, या भूल कर खा रहे थे, निवाला मुंह में था कि याद आ गया, फिर भी निगल लिया तो इन दोनों सूरतों में **कफ़्फ़ारा** वाजिब और अगर निवाला मुंह से निकाल कर फिर खा लिया हो तो सिर्फ़ **क़ज़ा** वाजिब होगी **कफ़्फ़ारा** नहीं। (عالمگیری ج۱ ص۲۰۳)

8 **बारी** से बुख़ार आता था और आज बारी का दिन था लिहाज़ा येह गुमान कर के कि बुख़ार आएगा, रोज़ा क़स्दन (या'नी इरादतन) तोड़ दिया तो इस सूरत में **कफ़्फ़ारा** साक़ित़ है (या'नी कफ़्फ़ारे की ज़रूरत नहीं सिर्फ़ क़ज़ा काफ़ी है) यूं ही औ़रत को मुअ़य्यन (या'नी मुक़र्ररा) तारीख़ पर हैज़ आता था और आज हैज़ आने का दिन था उस ने क़स्दन रोज़ा तोड़ दिया और हैज़ न आया तो **कफ़्फ़ारा** साक़ित़ हो गया। (मगर क़ज़ा फ़र्ज़ है) (دُرِّ مُختار، رَدُّالْمُحتَار ج۳ ص۴۴۸)

9 **अगर** दो रोजे़ तोड़े तो दोनों के लिये **दो कफ़्फ़ारे** दे अगर्चे पहले का अभी कफ़्फ़ारा अदा न किया था जब कि दोनों दो रमज़ान के हों, और अगर दोनों रोजे़ एक ही रमज़ान के हों और पहले का

कफ़्फ़ारा न अदा किया हो तो एक ही **कफ़्फ़ारा** दोनों के लिये काफ़ी है। (جَوْهَره ج١ ص١٨٢)

﴾10﴿ **कफ़्फ़ारा** लाज़िम होने के लिये येह भी ज़रूरी है कि रोज़ा तोड़ने के बा'द कोई ऐसा अम्र (या'नी मुआ़मला) वाक़ेअ़ न हुवा हो जो रोज़े के मुनाफ़ी (या'नी ख़िलाफ़, उलट) है या बिग़ैर इख़्तियार ऐसा अम्र (या'नी मुआ़मला) न पाया गया हो जिस की वज्ह से रोज़ा तोड़ने की रुख़्सत होती, मसलन औ़रत को उस दिन हैज़ या निफ़ास आ गया या रोज़ा तोड़ने के बा'द उसी दिन में ऐसा बीमार हुवा जिस में रोज़ा न रखने की इजाज़त है तो कफ़्फ़ारा साक़ित़ है और सफ़र से साक़ित़ न होगा कि येह इख़्तियारी अम्र (मुआ़मला) है। (اَيضاً ص١٨١)

ख़बरदार ! ख़बरदार ! ख़बरदार !

﴾11﴿ **जिन सूरतों में रोज़ा तोड़ने पर कफ़्फ़ारा लाज़िम नहीं उन में शर्त़ है कि एक बार ऐसा हुवा हो और मा'सियत** (या'नी ना फ़रमानी) **का क़स्द** (इरादा) **न किया हो वरना उन में कफ़्फ़ारा देना होगा।** (دُرِّمُختار ج ٣ ص ٤٤٠)

اَلْحَمْدُ لِلّٰه عَزَّوَجَلَّ मैं बदल गया ! : तब्लीग़े क़ुरआनो सुन्नत की आ़लमगीर ग़ैर सियासी तह़रीक, **दा'वते इस्लामी** के मदनी माह़ोल के

क्या कहने और मदनी क़ाफ़िलों की भी क्या ही बात है ! तरग़ीब के लिये एक **मदनी बहार** मुलाहज़ा हो : एक इस्लामी भाई बेहद बिगड़े हुए इन्सान थे, फ़िल्मों डिरामों के रसिया होने के साथ साथ जवान लड़कियों के साथ छेड़ ख़ानियां, औबाश नौ जवानों के साथ दोस्तियां, रात गए तक आवारा गर्दियां वग़ैरा उन के मा'मूलात थे। इन ह़रकाते बद के बाइस ख़ानदान वाले भी उन से कतराते, अपने घरों में उन की आमद से घबराते नीज़ अपनी औलाद को उन की सोह़बत से बचाते थे। उन की गुनाहों भरी ख़ज़ां रसीदा शाम के सुब्हे बहारां बनने की सबील यूं हुई कि **दा'वते इस्लामी** वाले एक **आ़शिक़े रसूल** की उन पर शफ़्क़त भरी नज़र पड़ गई, उन्हों ने निहायत शफ़्क़त के साथ **इन्फ़िरादी कोशिश** करते हुए उन्हें **मदनी क़ाफ़िले** में सफ़र की रग़बत दिलाई, बात उन के दिल में उतर गई और उन्हों ने मदनी क़ाफ़िले में सफ़र की सआ़दत ह़ासिल की। اَلْحَمْدُ لِلّٰه عَزَّوَجَلَّ मदनी क़ाफ़िलों में आ़शिक़ाने रसूल की सोह़बतों ने उन के दिल में नेकियों की मह़ब्बत डाल दी। गुनाहों से तौबा का तोह़फ़ा और सुन्नतों भरे **मदनी लिबास** का जज़्बा मिला, सर पर **सब्ज़ सब्ज़ इमामा** सजा और सुन्नतों के मदनी फूल लुटाने में मश्ग़ूल हो गए। जो अ़ज़ीज़ो अक़्रिबा देख कर कतराते थे, اَلْحَمْدُ لِلّٰه عَزَّوَجَلَّ अब वोह गले लगाते हैं, पहले वोह ख़ानदान के अन्दर

फ़रमाने मुस्तफ़ा صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم : जो मुझ पर दस मरतबा दुरूदे पाक पढ़े अल्लाह عَزَّوَجَلَّ उस पर सो रह़मतें नाज़िल फ़रमाता है। (طبرانی)

बद तरीन थे اَلْحَمْدُ لِلّٰه عَزَّوَجَلَّ दा'वते इस्लामी के **मदनी क़ाफ़िले** की बरकत से अब अ़ज़ीज़ तरीन हो गए हैं।

जब तक बिके न थे तो कोई पूछता न था

तूने ख़रीद कर मुझे अनमोल कर दिया

बे नमाज़ियों में बैठना कैसा ? : प्यारे प्यारे इस्लामी भाइयो ! देखा आप ने ! बुरी सोह़बतों का कितना ज़बर दस्त नुक़्सान होता है। बुरी सोह़बत में रह कर बिगड़ जाने वाले आदमी पर लोग थू थू करते हैं और अच्छी सोह़बतों की भी क्या ख़ूब बरकत है कि गुनाहों से भी बचत होती और लोग भी मह़ब्बत करते हैं। हमेशा ऐसी सोह़बत इख़्तियार करनी चाहिये जिस से इ़बादत का शौक़ और सुन्नत पर अ़मल करने का ज़ौक़ बढ़े। हम नशीन (या'नी हम सोह़बत) ऐसा हो जिसे देख कर **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ याद आ जाए, उस की बातों से नेकियों की त़रफ़ रग़बत बढ़े, दुन्या की मह़ब्बत में कमी और फ़िक्रे आख़िरत में ज़ियादती हो। मुसाह़िब (या'नी जिस की सोह़बत में रहें वोह) ऐसा हो कि उस के सबब **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ और उस के प्यारे रसूल صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم की मह़ब्बत में इज़ाफ़ा हो। ग़ैर सन्जीदा ह़रकतें करने वालों, फ़ेशन परस्तों और बे नमाज़ियों की सोह़बत से बचना चाहिये। बे नमाज़ियों की बाबत किये गए एक सुवाल के जवाब में मेरे आक़ा **आ'ला ह़ज़रत** رَحْمَةُ اللّٰهِ تَعَالٰى عَلَيْه ने फ़रमाया : (बे

नमाज़ियों को) ब नरमी समझाएं, तर्के नमाज़ व तर्के जमाअ़त व तर्के मस्जिद पर कुरआने अ़ज़ीम व अह़ादीस में जो सख़्त वई़दें हैं बार बार सुनाएं जिन के दिलों में ईमान है उन्हें ज़रूर नफ़्अ़ पहुंचेगा। **अल्लाह तबारक व तआ़ला** पारह 27 **सूरतुज़्ज़ारियात** की आयत नम्बर 55 में इर्शाद फ़रमाता है :

وَّ ذَكِّرْ فَاِنَّ الذِّكْرٰى تَنْفَعُ الْمُؤْمِنِيْنَ ﴿۵۵﴾

तरजमए कन्ज़ुल ईमान : और समझाओ कि समझाना मुसल्मानों को फ़ाएदा देता है।

अल्लाह के कलाम व अह़काम याद दिलाओ कि बेशक इन का याद दिलाना ईमान वालों को नफ़्अ़ देगा। और जो किसी त़रह़ न मानें उस पर अगर किसी का दबाव है उस के ज़रीए़ से दबाव डालें और यूं भी बाज़ न आए तो उस से सलाम व कलाम, मेलजोल यक लख़्त (या'नी बिल्कुल) तर्क कर दें, قَالَ اللّٰهُ تَعالٰی (या'नी **अल्लाह तबारक व तआ़ला** इर्शाद फ़रमाता है :)

وَ اِمَّا يُنْسِيَنَّكَ الشَّيْطٰنُ فَلَا تَقْعُدْ بَعْدَ الذِّكْرٰى مَعَ الْقَوْمِ الظّٰلِمِيْنَ ﴿۶۸﴾

(پ۷،الانعام:۶۸)

तरजमए कन्ज़ुल ईमान : और जो कहीं तुझे शैत़ान भुलावे तो याद आए पर ज़ालिमों के पास न बैठ।

(फ़तावा रज़विय्या मुख़र्रजा, जि. 6, स. 191, 192)

रोज़ए रमज़ान की फ़र्ज़िय्यत का इन्कार

सुवाल : जो रोज़ए रमज़ान की फ़र्ज़िय्यत का इन्कार करे वोह कैसा है ?

जवाब : काफ़िर है। (माख़ूज़ अज़ फ़तावा र-ज़विय्या, जि. 14, स. 356)

रोज़ादार को बुरा भला कहना कैसा ?

सुवाल : जो रमज़ानुल मुबारक के **रोज़े** रखने की वज्ह से किसी मुसल्मान को बुरा भला कहे उस के लिये क्या हुक्म है ?

जवाब : ऐसे के बारे में मेरे आक़ा आ'ला हज़रत, इमामे अहले सुन्नत, मौलाना शाह **इमाम अहमद रज़ा ख़ान** عَلَيْهِ رَحمَةُ الرَّحْمٰن फ़रमाते हैं : "जो रोज़ा रखने वाले पर रोज़ा रखने के सबब ता'नो तश्नीअ़ करे (या'नी बुरा भला कहे) वोह **काफ़िर** है।"

(माख़ूज़ अज़ फ़तावा रज़विय्या, जि. 14, स. 356)

"रोज़ा वोह रखे जिस के पास खाना न हो" कहना कैसा ?

सुवाल : वलीद एक बार रमज़ानुल मुबारक में कहने लगा : "रोज़ा तो वोह रखे जिस के पास खाने पीने को न हो !" क्या वलीद ने येह **कुफ़्र** नहीं बका ?

जवाब : ज़रूर **कुफ़्र** बका। इस क़ौले बदतर अज़ बौल में रोज़ए रमज़ानुल मुबारक की तह़क़ीर के साथ साथ इस की फ़र्ज़िय्यत का भी इन्कार पाया जा रहा है। सदरुश्शरीअ़ह, बदरुत्तरीक़ह, अ़ल्लामा मौलाना मुफ़्ती मुहम्मद अमजद अ़ली आ'ज़मी عَلَيْهِ رَحمَةُ اللّٰهِ الْقَوِی फ़रमाते हैं : "**रोज़ए रमज़ान** नहीं रखता और कहता येह है कि **रोज़ा** वोह रखे जिसे खाना न मिले या कहता है : जब ख़ुदा ने खाने को दिया है तो भूके क्यूं मरें या इसी क़िस्म की और बातें जिन से **रोज़े** की हतक व तह़क़ीर हो कहना **कुफ़्र** है। (बहारे शरीअ़त, जि. 2, स. 465)

फ़ैज़ाने तरावीह़

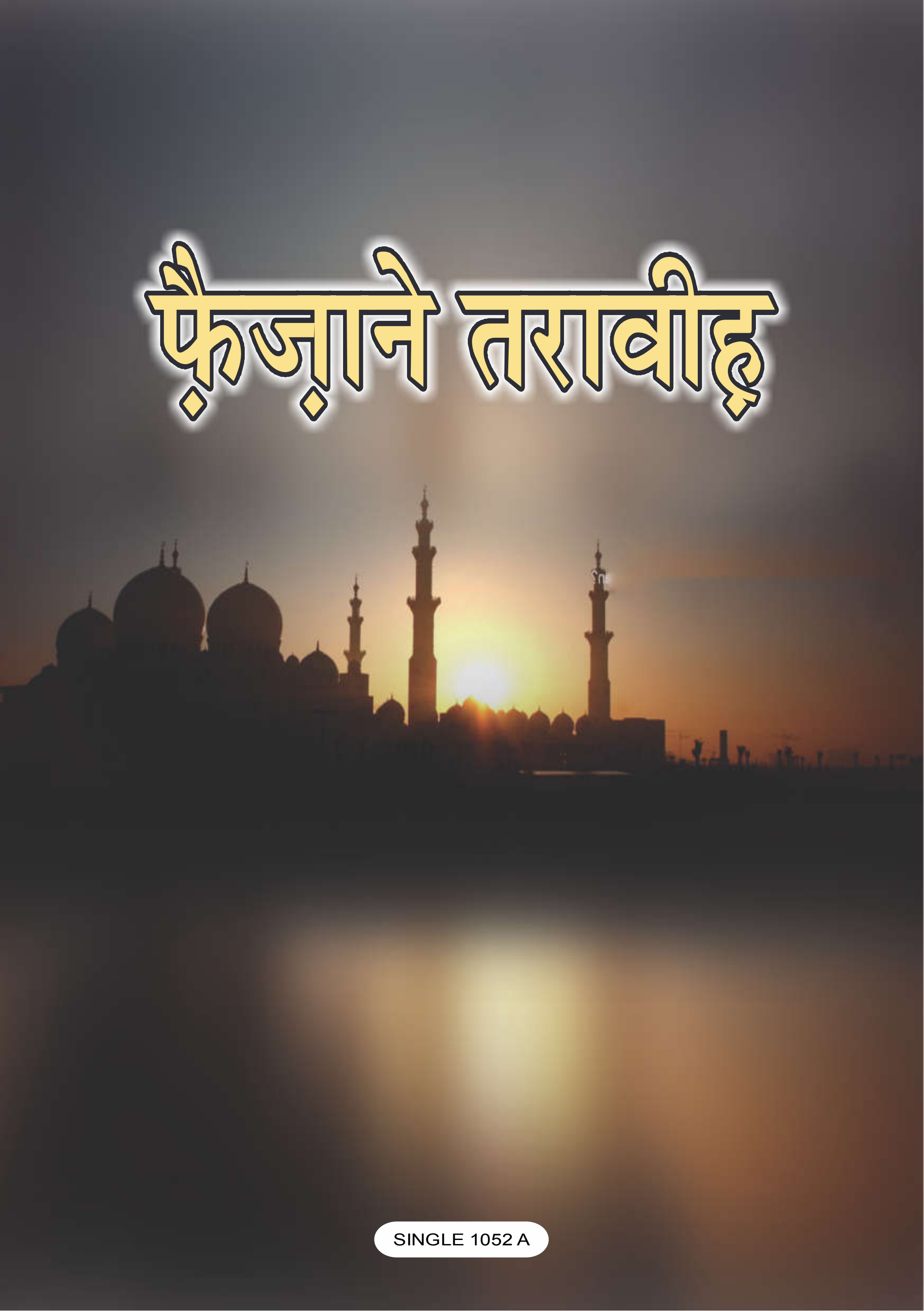

SINGLE 1052 A

फ़रमाने मुस्तफ़ा صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰی عَلَیْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم : जो मुझ पर रोज़े जुमुआ़ दुरूद शरीफ़ पढ़ेगा मैं क़ियामत के दिन उस की शफ़ाअ़त करूंगा । (جمع الجوامع)

اَلْحَمْدُ لِلّٰهِ رَبِّ الْعٰلَمِیْنَ وَالصَّلٰوةُ وَالسَّلَامُ عَلٰی سَیِّدِ الْمُرْسَلِیْنَ
اَمَّا بَعْدُ فَاَعُوْذُ بِاللّٰهِ مِنَ الشَّیْطٰنِ الرَّجِیْمِ ؕ بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِیْمِ ؕ

फ़ैज़ाने तरावीह

दुरूद शरीफ़ की फ़ज़ीलत : अमीरुल मुअमिनीन ह़ज़रते सय्यिदुना उ़मर फ़ारूक़े आ'ज़म رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْهُ ने फ़रमाया : "बेशक दुआ़ ज़मीन व आस्मान के दरमियान ठहरी रहती है और उस से कोई चीज़ ऊपर की त़रफ़ नहीं जाती जब तक तुम अपने नबिय्ये अकरम صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰی عَلَیْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم पर दुरूदे पाक न पढ़ लो।" (تِرمِذی ج۲ ص۲۸ حدیث۴۸۶)

صَلُّوْا عَلَی الْحَبِیْب ! صَلَّی اللّٰهُ تَعَالٰی عَلٰی مُحَمَّد

तरावीह़ से सग़ीरा गुनाह मुआ़फ़ होते हैं : रसूले अकरम, नूरे मुजस्सम صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰی عَلَیْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया : जो **रमज़ान** में ईमान के साथ और त़लबे सवाब के लिये क़ियाम करे, तो उस के गुज़श्ता गुनाह बख़्श दिये जाएंगे । (مسلم ص۳۸۲ حدیث۷۵۹) **मुफ़स्सिरे** शहीर **ह़कीमुल उम्मत** ह़ज़रते मुफ़्ती अह़मद यार ख़ान عَلَیْهِ رَحْمَةُ الْحَنَّان इस ह़दीसे पाक के तह़त फ़रमाते हैं : तरावीह़ की पाबन्दी की बरकत से सारे सग़ीरा (या'नी छोटे) गुनाह मुआ़फ़ हो जाएंगे क्यूं कि गुनाहे कबीरा (या'नी बड़े गुनाह) तौबा से और

हुक़ूक़ुल इबाद (**अल्लाह तआला** की बारगाह में तौबा के साथ) हक़ वाले के मुआफ़ करने से मुआफ़ होते हैं। (मिरआतुल मनाजीह, जि. 2, स. 288)

फ़रमाने मुस्तफ़ा صَلَّى اللهُ تَعَالٰی عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم : बेशक **अल्लाह तबारक व तआला** ने **रमज़ान** के रोज़े तुम पर फ़र्ज़ किये और मैं ने तुम्हारे लिये **रमज़ान** के क़ियाम को सुन्नत क़रार दिया है लिहाज़ा जो शख़्स **रमज़ान** में रोज़े रखे और ईमान के साथ और हुसूले सवाब की निय्यत से क़ियाम करे (या'नी तरावीह पढ़े) तो वोह अपने गुनाहों से ऐसे निकल गया जैसे विलादत के दिन उस को उस की मां ने जना था। (نَسائی ص ۳۶۹ حدیث ۲۲۰۷)

सुन्नत की फ़ज़ीलत : اَلْحَمْدُ لِلّٰه عَزَّوَجَلَّ **रमज़ानुल मुबारक** में जहां हमें बे शुमार ने'मतें मुयस्सर आती हैं उन्ही में **तरावीह की सुन्नत** भी शामिल है और **सुन्नत** की अ़ज़मत के क्या कहने ! **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ के प्यारे रसूल, रसूले मक़्बूल, सय्यिदह आमिना رَضِیَ اللهُ تَعَالٰی عَنْهَا के गुलशन के महक्ते फूल صَلَّى اللهُ تَعَالٰی عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم का फ़रमाने जन्नत निशान है : "जिस ने मेरी सुन्नत से महब्बत की उस ने मुझ से महब्बत की और जिस ने मुझ से महब्बत की वोह जन्नत में मेरे साथ होगा।" (ابن عساکر ج۹ ص۳۴۳)

तरावीह सुन्नते मुअक्कदा है और इस में कम अज़ कम एक बार ख़त्मे क़ुरआन भी सुन्नते मुअक्कदा।

आ़शिक़ाने कलामुल्लाह की सात हिकायात : ﴾1﴿ हमारे इमामे आ'ज़म सय्यिदुना इमाम अबू ह़नीफ़ा رَضِیَ اللهُ تَعَالٰی عَنْه **रमज़ानुल**

फ़रमाने मुस्तफ़ा صَلَّى اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم : मुझ पर दुरूदे पाक की कसरत करो बेशक तुम्हारा मुझ पर दुरूदे पाक पढ़ना तुम्हारे लिये पाकीज़गी का बाइस है। (ابو یعلی)

मुबारक में 61 बार कुरआने करीम ख़त्म किया करते। **तीस** दिन में, **तीस** रात में और **एक तरावीह़** में, नीज़ आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ने 45 बरस इ़शा के वुज़ू से नमाज़े फ़ज्र अदा फ़रमाई। (बहारे शरीअ़त, जि. 1, स. 688, 689, 695) ﴿2﴾ एक रिवायत के मुताबिक़ इमामे आ'ज़म عَلَیْہِ رَحمَۃُ اللّٰہِ الْاَکْرَم ने ज़िन्दगी में 55 ह़ज किये और जिस मकान में वफ़ात पाई उस में सात हज़ार बार कुरआने मजीद ख़त्म फ़रमाए थे। (دُرِّمُختار ج۱ ص۱۲۶، الخیرات الحسان ص ۵۰) ﴿3﴾ मेरे आक़ा **आ'ला ह़ज़रत** رَحْمَۃُ اللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہ फ़रमाते हैं : "इमामुल अइम्मा सय्यिदुना इमामे आ'ज़म (अबू ह़नीफ़ा) رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ने तीस बरस कामिल हर रात एक रक्अ़त में कुरआने करीम ख़त्म किया है।" (फ़तावा रज़विय्या मुख़र्रजा, जि. 7, स. 476) ﴿4﴾ उ़लमाए किराम رَحِمَہُمُ اللّٰہُ السَّلَام ने फ़रमाया है : सलफ़ सालिह़ीन (رَحِمَہُمُ اللّٰہُ الْمُبِین) में बा'ज़ अकाबिर दिन रात में दो ख़त्म फ़रमाते बा'ज़ चार बा'ज़ आठ। ﴿5﴾ मीज़ानुश्शरीअ़ह अज़ इमाम अ़ब्दुल वह्हाब शा'रानी (قُدِّسَ سِرُّہُ النُّوْرَانِی) में है कि सय्यिदी अ़ली मरसफ़ी قُدِّسَ سِرُّہُ النُّوْرَانِی ने एक रात दिन में तीन लाख साठ हज़ार ख़त्म फ़रमाए। (المیزانُ الشریعۃ الکبرٰی ج ۱ ص ۷۹) ﴿6﴾ आसार में है, अमीरुल मुअमिनीन ह़ज़रते मौलाए काएनात, अ़लिय्युल मुर्तज़ा शेरे ख़ुदा کَرَّمَ اللّٰہُ تَعَالٰی وَجْہَہُ الْکَرِیْم बायां पाउं रिकाब में रख कर कुरआने मजीद शुरूअ़ फ़रमाते और दहना

(सीधा) पाउं रिकाब तक न पहुंचता कि कलाम शरीफ़ ख़त्म हो जाता। (फ़तावा रज़विय्या मुख़र्रजा, जि. 7, स. 477) ﴾7﴿ बुख़ारी शरीफ़ में **फ़रमाने मुस्तफ़ा** صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم है कि ह़ज़रते सय्यिदुना दावूद عَلٰی نَبِیِّنَا وَعَلَیْہِ الصَّلٰوۃُ وَالسَّلَام अपनी सुवारी तय्यार करने का हुक्म फ़रमाते और इस से पहले कि सुवारी पर ज़ीन कस दी जाए ज़बूर शरीफ़ ख़त्म फ़रमा लेते। (بُخاری ج ۲ ص۴۴۷ حدیث۳۴۱۷ ملخّصاً)

अल्लाहु रब्बुल इ़ज़्ज़त عَزَّوَجَلَّ **की इन सब पर रह़मत हो और उन के सदक़े हमारी बे ह़िसाब मग़्फ़िरत हो।**

वस्वसा और उस का इ़लाज : प्यारे प्यारे इस्लामी भाइयो ! हो सकता है किसी को वस्वसा आए कि एक दिन में कई बार बल्कि लम्ह़े भर में ख़त्मे क़ुरआने पाक या ख़त्मे ज़बूर शरीफ़ कैसे मुम्किन है ? इस का जवाब येह है कि येह औलियाए किराम رَحِمَهُمُ اللّٰهُ السَّلَام की करामात और ह़ज़रते सय्यिदुना दावूद عَلٰی نَبِیِّنَا وَعَلَیْہِ الصَّلٰوۃُ وَالسَّلَام का मो'जिज़ा है और मो'जिज़ा और करामत आ़दतन मुह़ाल होते हैं या'नी इन का बतौरे आ़दत ज़ाहिर होना मुम्किन नहीं होता।

صَلُّوا عَلَى الْحَبِيْب ! صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلٰى مُحَمَّد

दौराने तिलावत ह़र्फ़ चबाना : अफ़्सोस ! आज कल दीनी मुआ़मलात में सुस्ती का दौर दौरा है, उ़मूमन **तरावीह़** में क़ुरआने करीम

एक बार भी सह़ीह़ मा'नों में ख़त्म नहीं हो पाता। कु़रआने पाक तरतील के साथ या'नी ठहर ठहर कर पढ़ना चाहिये, मगर ह़ाल येह है कि अगर कोई ऐसा करे तो अक्सर लोग उस के साथ **तरावीह़** पढ़ने के लिये तय्यार ही नहीं होते ! अब वोही **ह़ाफ़िज़** पसन्द किया जाता है जो **तरावीह़** से जल्द फ़ारिग़ कर दे। याद रखिये ! **तरावीह़** और नमाज़ के इलावा भी तिलावत में ह़र्फ़ चबा जाना ह़राम है। अगर **तरावीह़** में ह़ाफ़िज़ साह़िब पूरे कु़रआने करीम में से सिर्फ़ एक ह़र्फ़ भी चबा गए तो **ख़त्मे कु़रआन** की सुन्नत अदा न होगी। बल्कि दौराने नमाज़ ह़र्फ़ चब जाने की वज्ह से मा'ना फ़ासिद होने या मोह्मल या'नी बे मा'ना हो जाने की सूरत में वोह नमाज़ भी फ़ासिद हो जाएगी। लिहाज़ा किसी आयत में कोई ह़र्फ़ "चब" गया या दुरुस्त "मख़्रज" से न निकला और बदल गया तो लोगों से शरमाए बिग़ैर पलट पढ़िये और दुरुस्त पढ़ कर फिर आगे बढ़िये। एक अफ़्सोस नाक अम्र येह भी है कि हु़फ़्फ़ाज़ की एक ता'दाद ऐसी होती है जिसे **तरतील** के साथ पढ़ना ही नहीं आता ! तेज़ी से न पढ़ें तो भूल जाते हैं ! ऐसों की ख़िदमतों में हमदर्दाना मश्वरा है, लोगों से न शरमाएं, ख़ुदा की क़सम ! **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ की नाराज़ी बहुत भारी पड़ेगी लिहाज़ा बिला ताख़ीर तज्वीद के साथ पढ़ाने वाले किसी क़ारी साह़िब की मदद से अज़ इब्तिदा ता इन्तिहा अपना ह़िफ़्ज़

दुरुस्त फ़रमा लें । मद व लीन[1] का ख़याल रखना लाज़िमी है नीज़ **मद, ग़ुन्ना, इज़्हार, इख़्फ़ा** वग़ैरा की भी रिआयत फ़रमाएं । साहि़बे बहारे शरीअ़त ह़ज़रते सदरुश्शरीअ़ह, बदरुत्त़रीक़ह अ़ल्लामा मौलाना मुफ़्ती मुह़म्मद अमजद अ़ली आ'ज़मी عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللّٰهِ الْقَوِى फ़रमाते हैं : "**फ़र्ज़ों** में ठहर ठहर कर क़िराअत करे और **तरावीह़** में मुतवस्सित़ (या'नी दरमियाना) अन्दाज़ पर और **रात के नवाफ़िल** में जल्द पढ़ने की इजाज़त है, मगर ऐसा पढ़े कि समझ में आ सके या'नी कम से कम "मद" का जो दरजा क़ारियों ने रखा है उस को अदा करे वरना **ह़राम** है । इस लिये कि तरतील से (या'नी ख़ूब ठहर ठहर कर) क़ुरआन पढ़ने का हुक्म है ।"

(बहारे शरीअ़त, जि. 1, स. 547, دُرِّمُختار و رَدُّالْمُحتار ج۲ ص۳۲۰)

पारह 29 **सूरतुल मुज़्ज़म्मिल** की चौथी आयत में इर्शादे रब्बानी है :

وَرَتِّلِ الْقُرْاٰنَ تَرْتِيْلًا ﴿۴﴾

तरजमए कन्ज़ुल ईमान : और क़ुरआन ख़ूब ठहर ठहर कर पढ़ो ।

तरतील से पढ़ना किसे कहते हैं ! : **मेरे** आक़ा **आ'ला ह़ज़रत**

رَحْمَةُ اللّٰهِ تَعَالٰى عَلَيْهِ "कमालैन अ़ला ह़ाशिया जलालैन" के ह़वाले से

---

1 : **वाव, या** और **अलिफ़** साकिन और क़ब्ल की ह़रकत मुवाफ़िक़ हो (या'नी वाव के पहले पेश और या के पहले ज़ेर और अलिफ़ के पहले ज़बर) तो इस को मद और वाव और या साकिन मा क़ब्ल मफ़्तूह़ को लीन कहते हैं ।

"तरतील" की वज़ाहत करते हुए नक़्ल करते हैं : "क़ुरआने मजीद इस तरह़ आहिस्ता और ठहर कर पढ़ो कि सुनने वाला इस की आयात व अल्फ़ाज़ गिन सके।" (फ़तावा रज़विय्या मुख़र्रजा, जि. 6, स. 276) नीज़ फ़र्ज़ नमाज़ में इस त़रह़ तिलावत करे कि जुदा जुदा हर ह़र्फ़ समझ आए, तरावीह़ में मुतवस्सित़ (या'नी दरमियाना) त़रीक़े पर और रात के नवाफ़िल में इतनी तेज़ पढ़ सकता है जिसे वोह समझ सके। (دُرِّمُختَار ج٢ص ٣٢٠)

"**मदारिकुत्तन्ज़ील**" में है : "क़ुरआन को आहिस्ता और ठहर कर पढ़ो, इस का मा'ना येह है कि इत़्मीनान के साथ, ह़ुरूफ़ जुदा जुदा, वक़्फ़ की ह़िफ़ाज़त और तमाम ह़रकात की अदाएगी का ख़ास ख़याल रखना है, "تَرْتِيْلًا" इस मस्अले में ताकीद पैदा कर रहा है कि येह बात तिलावत करने वाले के लिये निहायत ही ज़रूरी है।" (مدارك التّنزيل ص ١٢٩٢, फ़तावा रज़विय्या मुख़र्रजा, जि. 6, स. 278, 279) (तरतील के अह़काम जानने के लिये फ़तावा रज़विय्या जिल्द 6 सफ़ह़ा 275 ता 282 का मुत़ालआ़ फ़रमाइये)

صَلُّوْا عَلَى الْحَبِيْب ! صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلٰى مُحَمَّد

तरावीह़ की उजरत लेना देना कैसा ? :

क़ुरआने करीम पढ़ने पढ़ाने वालों को अपने अन्दर **इख़्लास** पैदा करना ज़रूरी है अगर **ह़ाफ़िज़** अपनी तेज़ी दिखाने, ख़ुश आवाज़ी की दाद पाने और नाम चमकाने के लिये क़ुरआने करीम पढ़ेगा तो सवाब तो दूर की बात है,

उलटा **हुब्बे जाह और रियाकारी** की तबाहकारी में जा पड़ेगा ! इसी त़रह़ **उजरत** का लैन दैन भी न हो, तै़ करने ही को **उजरत** नहीं कहते बल्कि अगर यहां **तरावीह़** पढ़ाने आते इसी लिये हैं कि मा'लूम है कि यहां कुछ मिलता है अगर्चे तै़ न हुवा हो, तो येह भी उजरत ही है। उजरत रक़म ही का नाम नहीं बल्कि कपड़े या ग़ल्ला (या'नी अनाज) वग़ैरा की सूरत में भी उजरत, उजरत ही है। हां अगर ह़ाफ़िज़ साह़िब निय्यत के साथ साफ़ साफ़ कह दें कि मैं कुछ नहीं लूंगा या पढ़वाने वाला कह दे कि कुछ नहीं दूंगा। फिर बा'द में ह़ाफ़िज़ साह़िब की ख़िदमत कर दें तो ह़रज नहीं कि बुख़ारी शरीफ़ की पहली ह़दीसे मुबारक में है : إِنَّمَا الْأَعْمَالُ بِالنِّيَّات या'नी आ'माल का दारो मदार निय्यतों पर है।

(بُخاری ج ۱ ص ۶ حدیث ۱)

तिलावत व ज़िक्रो ना'त की उजरत ह़राम है : मेरे आक़ा आ'ला ह़ज़रत, इमामे अहले सुन्नत मौलाना शाह इमाम अह़मद रज़ा ख़ान عَلَيْهِ رَحْمَةُ الرَّحْمٰن की बारगाह में उजरत दे कर मय्यित के ईसाले सवाब के लिये **ख़त्मे क़ुरआन** व **ज़िक्रुल्लाह** عَزَّوَجَلَّ करवाने से मुतअ़ल्लिक़ जब इस्तिफ़्ता पेश हुवा तो जवाबन इर्शाद फ़रमाया : "**तिलावते क़ुरआन व ज़िक्रे इलाही** عَزَّوَجَلَّ **पर उजरत लेना देना दोनों ह़राम है,** लेने देने वाले दोनों गुनाहगार होते हैं और जब येह फ़े'ले ह़राम के मुरतकिब हैं तो

सवाब किस चीज़ का अम्वात (या'नी मरने वालों) को भेजेंगे ? गुनाह पर सवाब की उम्मीद और ज़ियादा सख़्त व अशद (या'नी शदीद तरीन जुर्म) है । अगर लोग चाहें कि ईसाले सवाब भी हो और त़रीक़ए जाइज़ा शरइय्या भी ह़ासिल हो (या'नी शरअ़न जाइज़ भी रहे) तो इस की सूरत येह है कि पढ़ने वालों को घन्टे दो घन्टे के लिये नोकर रख लें और तनख़्वाह उतनी देर की हर शख़्स की मुअ़य्यन (मुक़र्रर) कर दें । मसलन पढ़वाने वाला कहे : "मैं ने तुझे आज फ़ुलां वक़्त से फ़ुलां वक़्त के लिये इस उजरत पर नोकर रखा (कि) जो काम चाहूंगा लूंगा ।" वोह कहे : "मैं ने क़बूल किया ।" अब वोह उतनी देर के वासित़े अजीर (या'नी मुलाज़िम) हो गया, जो काम चाहे ले सकता है इस के बा'द उस से कहे फ़ुलां मय्यित के लिये इतना क़ुरआने अ़ज़ीम या इस क़दर कलिमए त़य्यिबा या दुरूदे पाक पढ़ दो । येह सूरत जवाज़ (या'नी जाइज़ होने) की है ।" (फ़तावा रज़विय्या, जि. 23, स. 537)

तरावीह़ की उजरत का शरई ह़ीला : इस मुबारक फ़तवे की रोशनी में **तरावीह़** के लिये ह़ाफ़िज़ साह़िब की भी तरकीब हो सकती है । मसलन मस्जिद कमेटी वाले उजरत तै कर के ह़ाफ़िज़ साह़िब को **माहे रमज़ानुल मुबारक** में नमाज़े इशा के लिये **इमामत** पर रख लें और ह़ाफ़िज़ साह़िब बित्तबअ़ या'नी साथ ही साथ **तरावीह़** भी पढ़ा

दिया करें क्यूं कि **रमज़ानुल मुबारक** में तरावीह़ भी नमाज़े इशा के साथ ही शामिल होती है। या यूं करें कि **माहे रमज़ानुल मुबारक** में रोज़ाना दो या तीन घन्टे के लिये (मसलन रात 8 ता 11) ह़ाफ़िज़ साह़िब को नोकरी की ऑफ़र करते हुए कहें कि हम जो काम देंगे वोह करना होगा, तनख़्वाह की रक़म भी बता दें, अगर ह़ाफ़िज़ साह़िब मन्ज़ूर फ़रमा लेंगे तो वोह मुलाज़िम हो गए। अब रोज़ाना ह़ाफ़िज़ साह़िब की इन तीन घन्टों के अन्दर ड्यूटी लगा दें कि वोह **तरावीह़** पढ़ा दिया करें। याद रखिये ! चाहे इमामत हो या मुअज़्ज़िनी हो या किसी क़िस्म की मज़दूरी जिस काम के लिये भी **इजारा** करते वक़्त येह मा'लूम हो कि यहां उजरत या तनख़्वाह का लैन दैन यक़ीनी है तो पहले से रक़म **तै करना वाजिब** है, वरना देने वाला और लेने वाला दोनों गुनहगार होंगे। हां जहां पहले ही से उजरत की मुक़र्ररा रक़म मा'लूम हो मसलन बस का किराया, या बाज़ार में बोरी लादने, ले जाने की फ़ी बोरी मज़दूरी की रक़म वग़ैरा। तो अब बार बार तै करने की ह़ाजत नहीं। येह भी ज़ेहन में रखिये कि जब ह़ाफ़िज़ साह़िब को (या जिस को भी जिस काम के लिये) नोकर रखा उस वक़्त येह कह देना जाइज़ नहीं कि हम जो मुनासिब होगा दे देंगे या आप को राज़ी कर देंगे, बल्कि सराह़तन या'नी वाज़ेह़ तौर पर रक़म की मिक़्दार बतानी होगी, मसलन हम आप को 12 हज़ार रुपै पेश करेंगे और येह भी ज़रूरी है कि ह़ाफ़िज़ साह़िब भी मन्ज़ूर फ़रमा लें।

फ़रमाने मुस्त़फ़ा صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم : जो मुझ पर एक दिन में 50 बार दुरूदे पाक पढ़े क़ियामत के दिन मैं उस से मुसाफ़ह़ा करूं (या'नी हाथ मिलाऊं)गा। (ابن بشکوال)

अब बारह हज़ार देने ही होंगे। याद रहे ! मस्जिद के चन्दे से दी जाने वाली उजरत वहां के उ़र्फ़ से ज़ाइद नहीं होनी चाहिये, पहले से मौजूद इमाम साह़िब दिल बरदाश्ता न हों इस का भी ख़याल रखा जाए, पूरे माहे रमज़ान में नमाज़े इशा की इमामत की छुट्टी के सबब इमाम साह़िब को मस्जिद के चन्दे से उस माह की इशा की नमाज़ों की तनख़्वाह दे सकते हैं क्यूं कि हमारे हां इसी त़रह़ का उ़र्फ़ या'नी मा'मूल जारी है। हां ह़ाफ़िज़ साह़िब को मुत़ालबे के बिग़ैर अपनी मरज़ी से तै शुदा से ज़ाइद मस्जिद के चन्दे से नहीं बल्कि अपने पल्ले से या इसी मक़्सद के लिये जम्अ़ की हुई रक़म दे दें तब भी जाइज़ है। जो ह़ाफ़िज़ साह़िबान, या ना'त ख़्वान बिग़ैर पैसों के **तरावीह़**, कु़रआन ख़्वानी या ना'त ख़्वानी में हिस्सा नहीं ले सकते वोह शर्म की वज्ह से ना जाइज़ काम का इरतिकाब न करें। मेरे आक़ा **आ'ला ह़ज़रत** رَحْمَةُ اللّٰهِ تَعَالٰى عَلَيْه के बताए हुए त़रीक़े के मुत़ाबिक़ अ़मल कर के पाक रोज़ी ह़ासिल करें। और अगर सख़्त मजबूरी न हो तो ह़ीले के ज़रीए़ भी रक़म ह़ासिल करने से गुरेज़ करें कि **जिस का अ़मल हो बे ग़रज़ उस की जज़ा कुछ और है।** एक इम्तिह़ान सख़्त इम्तिह़ान येह है कि जो रक़म क़बूल नहीं करता उस की काफ़ी वाह ! वाह ! होती है। यहां अपने आप को ह़ुब्बे जाह और रियाकारी से बचाना ज़रूरी है, बिला ह़ाजत दूसरों से तज़्किरा करने से बचना और दुआ़ए इख़्लास करते रहना ऐसे मवाक़ेअ़ पर मुफ़ीद होता है।

मेरा हर अ़मल बस तेरे वासिते़ हो कर इख़्लास ऐसा अ़ता या इलाही

(वसाइले बख़्शिश, स. 105)

صَلُّوْا عَلَی الْحَبِیْب! صَلَّی اللّٰهُ تَعَالٰی عَلٰی مُحَمَّد

ख़त्मे कुरआन और रिक़्क़त : जहां तरावीह़ में एक बार कुरआने पाक की तिलावत की जाए वहां बेहतर येह है कि **सत्ताईसवीं शब** को ख़त्म करें, रिक़्क़त व सोज़ के साथ इख़्तिताम हो और येह एह़सास दिल को तड़पा कर रख दे कि मैं ने सह़ीह़ मा'नों में कुरआने पाक पढ़ा या सुना नहीं, कोताहियां भी हुईं, दिल जम्ई भी न रही, **इख़्लास** में भी कमी थी। **सद हज़ार अफ़्सोस !** दुन्यवी शख़्सिय्यत का कलाम तो तवज्जोह के साथ सुना जाता है मगर सब के ख़ालिक़ो मालिक अपने प्यारे प्यारे **अल्लाहु रब्बुल इज़्ज़त** عَزَّوَجَلَّ का पाकीज़ा कलाम ध्यान से न सुना, साथ ही येह भी ग़म हो कि अफ़्सोस ! अब **माहे रमज़ानुल मुबारक** चन्द घड़ियों का मेहमान रह गया, न जाने आयिन्दा साल इस की तशरीफ़ आवरी के वक़्त इस की बहारें लूटने के लिये मैं ज़िन्दा रहूंगा या नहीं ! इस त़रह़ के तसव्वुरात जमा कर अपनी ग़फ़्लतों पर ख़ुद को शरमिन्दा करे और हो सके तो रोए अगर रोना न आए तो रोने की सी सूरत बनाए कि अच्छों की नक़्ल भी अच्छी है, अगर किसी की आंख से मह़ब्बते कुरआन व फ़िराक़े रमज़ान में एकआध क़त़रा आंसू टपक कर

मक़्बूले बारगाहे इलाही عَزَّوَجَلَّ हो गया तो क्या बईद कि उसी के सदक़े ख़ुदाए ग़फ़्फ़ार عَزَّوَجَلَّ सभी हाज़िरीन को बख़्श दे।

लाज रख ले गुनाहगारों की नाम रहमान है तेरा या रब !
ऐब मेरे न खोल महशर में नाम सत्तार है तेरा या रब !
बे सबब बख़्श दे न पूछ अ़मल नाम ग़फ़्फ़ार है तेरा या रब !
तू करीम और करीम भी ऐसा !
कि नहीं जिस का दूसरा या रब !

(ज़ौक़े ना'त)

صَلُّوْا عَلَى الْحَبِيْب ! صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلٰى مُحَمَّد

तरावीह़ की जमाअ़त बिद्अ़ते ह़सना है : अल्लाह عَزَّوَجَلَّ के मह़बूब, दानाए गुयूब, मुनज़्ज़हुन अ़निल उ़यूब صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰی عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने ख़ुद भी **तरावीह़** अदा फ़रमाई और इसे ख़ूब पसन्द भी फ़रमाया, चुनान्चे साहिबे क़ुरआन, मदीने के सुल्तान صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰی عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم का फ़रमान है : "जो ईमान व त़लबे सवाब के सबब से **रमज़ान** में **क़ियाम** करे उस के पिछले गुनाह (या'नी सग़ीरा गुनाह) बख़्श दिये जाएंगे।"[1] फिर सरकारे दो आ़लम صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰی عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने इस अन्देशे की वज्ह से तर्क फ़रमाई कि कहीं उम्मत पर (तरावीह़) फ़र्ज़ न कर दी जाए।[2] "बुख़ारी

---

١ بخاری ج١ ص٦٥٨ حدیث٢٠٠٩ ٢ ایضاً حدیث٢٠١٢

शरीफ़'' में है : अमीरुल मुअमिनीन ह़ज़रते सय्यिदुना **उ़मर फ़ारूके़ आ'ज़म** رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْهُ ने (अपने दौरे ख़िलाफ़त में) **माहे रमज़ानुल मुबारक** की एक रात मस्जिद में देखा कि लोग जुदा जुदा अन्दाज़ पर (तरावीह़) अदा कर रहे हैं, कोई अकेला तो कुछ ह़ज़रात किसी की इक्तिदा में पढ़ रहे हैं। येह देख कर आप رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْهُ ने फ़रमाया : मैं मुनासिब ख़याल करता हूं कि इन सब को एक इमाम के साथ जम्अ़ कर दूं। लिहाज़ा आप رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْهُ ने ह़ज़रते सय्यिदुना उबय बिन का'ब رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْهُ को सब का इमाम बना दिया, फिर जब दूसरी रात तशरीफ़ लाए और देखा कि लोग बा जमाअ़त (तरावीह़) अदा कर रहे हैं (तो बहुत ख़ुश हुए और) फ़रमाया : نِعْمَ الْبِدْعَةُ هٰذِهٖ۔ या'नी ''येह अच्छी बिद्अ़त है।'' (بُخاری ج۱ص۶۵۸حدیث۲۰۱۰)

प्यारे प्यारे इस्लामी भाइयो ! मह़बूबे रब्बे ज़ुल जलाल صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم को हमारा कितना ख़याल है ! मह़ज़ इस ख़ौफ़ से जमाअ़ते तरावीह़ पर हमेशगी न फ़रमाई कि कहीं उम्मत पर फ़र्ज़ न कर दी जाए। इस ह़दीसे पाक से बा'ज़ **वसाविस** का इलाज भी हो गया। मसलन **तरावीह़** की बा क़ाइदा जमाअ़त सरकारे नामदार صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم भी जारी फ़रमा सकते थे मगर न फ़रमाई और यूं इस्लाम में अच्छे अच्छे त़रीके़ राइज करने का अपने ग़ुलामों को मौक़अ़

फ़राहम किया। जो काम शाहे ख़ैरुल अनाम صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने नहीं किया वोह काम सय्यिदुना **फ़ारूक़े आ'ज़म** رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ ने महूज़ अपनी मरज़ी से नहीं किया बल्कि सरकारे आ़लम मदार صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने ता क़ियामत ऐसे अच्छे अच्छे काम जारी करते रहने की अपनी ह़याते ज़ाहिरी में ही इजाज़त मर्ह़मत फ़रमा दी थी। चुनान्चे फ़रमाने मुस्त़फ़ा صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم है : "जो कोई इस्लाम में **अच्छा त़रीक़ा** जारी करे उस को उस का सवाब मिलेगा और उस का भी जो (लोग) इस के बा'द उस पर अ़मल करेंगे और उन के सवाब से कुछ कम न होगा और जो शख़्स इस्लाम में **बुरा त़रीक़ा** जारी करे उस पर इस का गुनाह भी है और उन (लोगों) का भी जो इस के बा'द इस पर अ़मल करें और उन के गुनाह में कुछ कमी न होगी।" (مُسلم ص۵۰۸حدیث۱۰۱۷)

"करम या नबिय्यल्लाह" के बारह ह़ुरूफ़ की निस्बत से 12 अच्छे काम या'नी बिद्अ़ाते ह़सना

इस ह़दीसे मुबारक से मा'लूम हुवा, क़ियामत तक इस्लाम में अच्छे अच्छे नए त़रीक़े जारी करने की इजाज़त है और اَلْحَمْدُ لِلّٰہ عَزَّوَجَلَّ निकाले भी जा रहे हैं जैसा कि ﴾1﴿ अमीरुल मुअमिनीन ह़ज़रते सय्यिदुना उ़मर फ़ारूक़े आ'ज़म رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ ने **तरावीह** की बा क़ाइदा जमाअ़त का एहतिमाम किया और इस को ख़ुद "अच्छी बिद्अ़त" भी क़रार

दिया । इस से येह भी मा'लूम हुवा कि **सरकारे मदीना** صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم के विसाले ज़ाहिरी के बा'द सहाबए किराम عَلَيْهِمُ الرِّضْوَان भी जो नया अच्छा काम जारी करें वोह भी **बिद्अ़ते ह़सना** कहलाता है ﴾2﴿ मस्जिद में इमाम के लिये ताक़ नुमा **मेह़राब** नहीं होती थी सब से पहले ह़ज़रते सय्यिदुना **ड़मर बिन अ़ब्दुल अ़ज़ीज़** رَضِىَ اللّٰهُ تَعَالٰى عَنْهُ ने **मस्जिदुन्नबविय्यिश्शरीफ़** عَلٰى صَاحِبِهَا الصَّلٰوةُ وَالسَّلَام में **मेह़राब** बनाने की सआ़दत ह़ासिल की इस नई ईजाद (बिद्अ़ते ह़सना) को इस क़दर मक़्बूलिय्यत ह़ासिल है कि अब दुन्या भर में मस्जिद की पहचान इसी से है ﴾3﴿ इसी त़रह़ मसाजिद पर **गुम्बद व मीनार** बनाना भी बा'द की ईजाद है, यहां तक कि मस्जिदुल ह़राम के **मनारे** भी सरकारे मदीना व सहाबए किराम صَلَّى اللّٰهُ تعالٰى عليه واٰلهٖ وسلّم وعَلَيهِم الرِّضْوَان के दौर में नहीं थे ﴾4﴿ ईमाने मुफ़स्सल ﴾5﴿ ईमाने मुज्मल ﴾6﴿ छ[6] कलिमे और इन की ता'दाद व तरकीब कि येह पहला येह दूसरा और इन के नाम ﴾7﴿ क़ुरआने करीम के तीस पारे बनाना, ए'राब लगाना, इन में रुकूअ़ बनाना, रुमूज़े अवक़ाफ़ की अ़लामात लगाना । बल्कि नुक़्ते भी बा'द में लगाए गए, ख़ूब सूरत जिल्दें छापना वग़ैरा ﴾8﴿ अह़ादीसे मुबारका को किताबी शक्ल देना, इस की अस्नाद पर जर्ह़ करना, इन की सह़ीह़, ह़सन, ज़ईफ़ और मौज़ूअ़ वग़ैरा अक़्साम बनाना ﴾9﴿ फ़िक़्ह, उसूले फ़िक़्ह व इल्मे कलाम ﴾10﴿ ज़कात व फ़ित्रा सिक्कए राइजुल

वक़्त बल्कि बा तस्वीर नोटों से अदा करना ﴾11﴿ ऊंटों वग़ैरा के बजाए सफ़ीने या हवाई जहाज़ के ज़रीए **सफ़रे हज** करना ﴾12﴿ शरीअ़त व त़रीक़त के चारों सिल्सिले या'नी ह़नफ़ी, शाफ़ेई, मालिकी, ह़म्बली इसी त़रह़ क़ादिरी, नक़्शबन्दी, सोहरवर्दी और चिश्ती।

हर बिद्अ़त गुमराही नहीं है : हो सकता है कि किसी के ज़ेहन में येह सुवाल पैदा हो कि इन दो अह़ादीसे मुबारका (1) كُلُّ بِدْعَةٍ ضَلَالَةٌ وَّكُلُّ ضَلَالَةٍ فِي النَّارِ۔ या'नी हर बिद्अ़त (नई बात) गुमराही है और हर गुमराही जहन्नम में (ले जाने वाली) है। (صحيح ابن خزيمه ج٣ ص١٤٣ حديث١٧٨٥) (2) شَرَّ الْاُمُوْرِ مُحْدَثَاتُهَا وَكُلُّ بِدْعَةٍ ضَلَالَةٌ۔ या'नी बद तरीन काम नए त़रीक़े हैं हर **बिद्अ़त** (नई बात) गुमराही है। (مسلم ص٤٣٠ حديث٨٦٧) के क्या मा'ना हैं ? इस का जवाब येह है कि दोनों अह़ादीसे मुबारका ह़क़ हैं। यहां **बिद्अ़त** से मुराद **बिद्अ़ते सय्यिअह** या'नी **बुरी बिद्अ़त** है और यक़ीनन हर वोह **बिद्अ़त** बुरी है जो किसी सुन्नत के ख़िलाफ़ या सुन्नत को मिटाने वाली हो। जैसा कि दीगर अह़ादीसे मुक़द्दसा में इस मस्अले की वज़ाह़त मौजूद है, चुनान्चे हमारे प्यारे प्यारे आक़ा मक्की मदनी मुस्त़फ़ा صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने इर्शाद फ़रमाया : "हर वोह गुमराह करने वाली **बिद्अ़त** जिस से **अल्लाह** और उस का रसूल राज़ी न हो, तो उस गुमराही वाली **बिद्अ़त** को जारी करने वाले

पर उस **बिद्अ़त** पर अ़मल करने वालों की मिस्ल गुनाह है, उसे गुनाह मिल जाना लोगों के गुनाहों में कमी नहीं करेगा।" (ترمذی ج ٤ ص ٣٠٩ حدیث ٢٦٨٦)

बुख़ारी शरीफ़ में **फ़रमाने मुस्त़फ़ा** صَلَّى اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم है : " مَنْ اَحْدَثَ فِیْ اَمْرِنَا ھٰذَا مَا لَیْسَ فِیْہِ فَھُوَ رَدٌّ ۔ " (بخاری ج٢ ص٢١١ حدیث ٢٦٩٧) या'नी "जो हमारे दीन में ऐसी नई बात निकाले जो उस (की अस्ल) में से न हो वोह मरदूद है।" इन अह़ादीसे मुबारका से मा'लूम हुवा ऐसी नई बात जो सुन्नत से दूर कर के गुमराह करने वाली हो, जिस की अस्ल दीन में न हो वोह **बिद्अ़ते सय्यिअह** या'नी बुरी बिद्अ़त है, जब कि दीन में ऐसी नई बात जो **सुन्नत** पर अ़मल करने में मदद करने वाली हो या जिस की अस्ल दीन से साबित हो वोह बिद्अ़ते ह़सना या'नी अच्छी बिद्अ़त है। **ह़ज़रते** सय्यिदुना शैख़ अ़ब्दुल ह़क़ मुह़द्दिस देहलवी عَلَیْہِ رَحْمَۃُ اللّٰہِ الْقَوِی ह़दीसे पाक, "كُلُّ بِدْعَةٍ ضَلَالَةٌ وَّكُلُّ ضَلَالَةٍ فِي النَّارِ" के तह़त फ़रमाते हैं : जो बिद्अ़त उसूल और क़वाइदे सुन्नत के मुवाफ़िक़ और उस के मुत़ाबिक़ क़ियास की हुई है (या'नी शरीअ़त व सुन्नत से नहीं टकराती) उस को **बिद्अ़ते ह़सना** कहते हैं और जो इस के ख़िलाफ़ हो वोह बिद्अ़त गुमराही कहलाती है। (اَشِعَّةُ اللَّمعات ج١ ص١٣٥)

बिद्अ़ते ह़सना के बिग़ैर गुज़ारा नहीं : **अच्छी** और बुरी बिदआ़त की तक़्सीम ज़रूरी है क्यूं कि कई अच्छी अच्छी बिद्अ़तें ऐसी

हैं कि अगर इन को सिर्फ़ इस लिये तर्क कर दिया जाए कि **कुरूने सलासा** या'नी (1) शाहे ख़ैरुल अनाम صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم और सह़ाबए किराम عَلَیْہِمُ الرِّضْوَان (2) ताबिईने इ़ज़ाम और (3) तब्ए़ ताबिईने किराम رَحِمَہُمُ اللّٰہُ السَّلَام के अदवारे पुर अन्वार में नहीं थीं, तो दीन का मौजूदा निज़ाम ही न चल सके, जैसा कि दीनी मदारिस, इन में दर्से निज़ामी, कुरआन व अह़ादीस और इस्लामी किताबों की प्रेस में छपाई वग़ैरा वग़ैरा येह तमाम काम पहले न थे बा'द में जारी हुए और **बिद्अ़ते ह़सना** में शामिल हैं। रब्बे मुजीब عَزَّوَجَلَّ की अ़ता से उस के प्यारे ह़बीब صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم यक़ीनन येह सारे अच्छे अच्छे काम अपनी ह़याते ज़ाहिरी में भी राइज फ़रमा सकते थे मगर **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ ने अपने मह़बूब صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم के ग़ुलामों के लिये सवाबे जारिया कमाने के बे शुमार मवाक़ेअ़ फ़राहम कर दिये और **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ के नेक बन्दों ने सदक़ए जारिया की ख़ातिर जो शरीअ़त से नहीं टकराती हैं ऐसी नई ईजादों की धूम मचा दी। किसी ने अज़ान से पहले दुरूदो सलाम पढ़ने का रवाज डाला, किसी ने ईदे मीलादुन्नबी صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم मनाने का त़रीक़ा निकाला फिर इस में चराग़ां और सब्ज़ सब्ज़ परचमों और मरह़बा की धूमें मचाते जुलूसे मीलाद का सिल्सिला हुवा, किसी ने ग्यारहवीं शरीफ़ तो किसी ने आ'रासे बुज़ुर्गाने दीन رَحِمَہُمُ اللّٰہُ الْمُبِیْن की

बुन्याद रख दी और अब भी येह सिलसिले जारी हैं । اَلْحَمْدُ لِلّٰہ عَزَّوَجَلَّ दा'वते इस्लामी वालों ने सुन्नतों भरे इज्तिमाआत वग़ैरा में اُذْكُرُوا الله! (या'नी अल्लाह عَزَّوَجَلَّ का ज़िक्र करो !) और صَلُّوْا عَلَى الْحَبِيْب! (या'नी हबीब पर दुरूद भेजो !) के ना'रे लगाने की बिल्कुल नई तरकीब निकाल कर अल्लाह अल्लाह और दुरूदो सलाम की पुरकैफ़ सदाओं का ह़सीन समां क़ाइम कर दिया !

अल्लाह करम ऐसा करे तुझ पे जहां में
ऐ दा'वते इस्लामी तेरी धूम मची हो

(वसाइले बख़्शिश, स. 315)

सब्ज़ गुम्बद की तारीख़ : सब्ज़ सब्ज़ गुम्बद जिस के दीदार के लिये हर आ़शिक़ का दिल बे क़रार होता और आंख अश्कबार हो जाया करती है येह भी **बिद्अ़ते ह़सना** है क्यूं कि वोह सरकारे नामदार صَلَّى اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم के विसाले ज़ाहिरी के सेंकड़ों बरस बा'द बना है, इस की मुख़्तसरन मा'लूमात भी ह़ासिल कर लीजिये :

सरकारे मदीना صَلَّى اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم के रौज़ए अन्वर पर सब से पहला गुम्बद शरीफ़ 678 सि.हि. (1269 सि.ई.) में ता'मीर हुवा और उस पर ज़र्द (या'नी पीला) रंग करवाया गया । फिर मुख़्तलिफ़ अदवार में तग़य्युरो तबद्दुल होता रहा यहां तक कि 888 सि.हि. (1483

सि.ई.) में काले पथ्थर से नया गुम्बद बनाया गया और उस पर सफ़ेद रंग करवाया गया, 980 सि.हि. (1572 सि.ई.) में इन्तिहाई ह़सीन गुम्बद बनाया गया और उस को रंग बिरंगे पथ्थरों से सजाया गया। 1233 सि.हि. (1818 सि.ई.) में अज़् सरे नौ इस की ता'मीर की गई। 1253 सि.हि. मुत़ाबिक़ 1837 सि.ई. में इसे **सब्ज़ रंग** कर दिया गया। जो **अल क़ुब्बतुल ख़ज़्रा** या'नी **सब्ज़ गुम्बद** के नाम से मश्हूर हुवा। इस के बा'द अब तक किसी ने इस में रद्दो बदल नहीं किया। हां सब्ज़ रंग को येह सआ़दत मिलती रहती है कि वोह ख़ुद्दाम के हाथों ऊपर पहुंच कर लिपट जाता है। गुम्बदे ख़ज़्रा जो कि यक़ीनन क़त्अ़न बिद्अ़ते ह़सना है वोह अब दुन्या भर के मुसल्मानों का मरजअ़, आंखों का नूर और दिल का सुरूर है। اِنْ شَآءَاللّٰه عَزَّوَجَلَّ इस को दुन्या की कोई त़ाक़त नहीं मिटा सकती, जो इस को इनादन (या'नी बुग़्ज़ की वज्ह से) मिटाना चाहेगा اِنْ شَآءَاللّٰه عَزَّوَجَلَّ ख़ुद ही मिट जाएगा।

गुम्बदे ख़ज़्रा ! ख़ुदा तुझ को सलामत रख्खे
देख लेते हैं तुझे प्यास बुझा लेते हैं

इन जैसे तमाम नौ ईजाद नेक कामों की बुन्याद वोही ह़दीसे पाक है जो **मुस्लिम शरीफ़** के ह़वाले से, सफ़ह़ा 1068 पर गुज़री जिस में फ़रमाया गया है : "जो कोई इस्लाम में अच्छा त़रीक़ा जारी करे उस को इस का सवाब मिलेगा और उस का भी जो

इस के बा'द उस पर अ़मल करें।"[1]

दीदारे मुस्त़फ़ा صَلَّى اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم **: प्यारे प्यारे इस्लामी भाइयो !** अ़क़ाइदो आ'माल की इस्लाह़ और ज़रूरी मा'लूमात के हुसूल की ख़ात़िर तब्लीग़े क़ुरआनो सुन्नत की आ़लमगीर ग़ैर सियासी तह़रीक, **दा'वते इस्लामी** के मदनी क़ाफ़िलों में सफ़र को अपना मा'मूल बना लीजिये। इस की एक ईमान अफ़रोज़ मदनी बहार सुनिये और झूमिये चुनान्चे **दा'वते इस्लामी** के **तीन रोज़ा बैनल अक़्वामी** सुन्नतों भरे इज्तिमाअ़ के इख़्तिताम पर एक मदनी क़ाफ़िला सफ़र करता हुवा तरकीब के मुत़ाबिक़ एक मस्जिद में क़ियाम पज़ीर हुवा। शब को जब सब सो गए तो **मदनी क़ाफ़िले** में शरीक एक नए इस्लामी भाई की क़िस्मत अंगड़ाई ले कर जाग उठी और उन को ख़्वाब में **मदीने के ताजदार** صَلَّى اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم का दीदार हो गया ! वोह बहुत ख़ुश हुए, **दा'वते इस्लामी** की ह़क़्क़ानिय्यत के दिलो जान से मो'तरिफ़ हो कर **मदनी माह़ोल** से वाबस्ता हो गए।

कोई आया पा के चला गया कोई उ़म्र भर भी न पा सका

मेरे मौला तुझ से गिला नहीं येह तो अपना अपना नसीब है

صَلُّوا عَلَی الْحَبِیْب ! صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلٰی مُحَمَّد

---

1 : **मुफ़स्सिरे** शहीर **ह़कीमुल उम्मत** ह़ज़रते मुफ़्ती अह़मद यार ख़ान عَلَیْہِ رَحْمَۃُ الْحَنَّان की किताबे मुस्तत़ाब "जाअल ह़क़ व ज़हक़ल बात़िल" में बिदआ़त और इन की अक़्साम वग़ैरा के बारे में मज़ीद तफ़्सीलात देखी जा सकती हैं।

अच्छों से मह़ब्बत के फ़ज़ाइल : प्यारे प्यारे इस्लामी भाइयो ! देखा आप ने ! आ़शिक़ाने रसूल के मदनी क़ाफ़िले की बरकत से एक खुश क़िस्मत इस्लामी भाई को اَلْحَمْدُ لِلّٰه عَزَّوَجَلَّ ताजदारे रिसालत صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم की ज़ियारत हो गई। मदनी क़ाफ़िले में सफ़र करने वाले खुश नसीबों को अच्छों की सोह़बत और नेक बन्दों से मह़ब्बत करने का बेहतरीन मौक़अ़ नसीब हो जाता है। रिज़ाए इलाही عَزَّوَجَلَّ के लिये अच्छों से मह़ब्बत रखने के **आठ फ़ज़ाइल** सुनिये और झूमिये :

"मह़ब्बते रसूल" के आठ हुरूफ़ की निस्बत से अल्लाह عَزَّوَجَلَّ के लिये मह़ब्बत रखने के मुतअ़ल्लिक़ 8 फ़रामीने मुस्त़फ़ा صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم

《1》 **अल्लाह तआ़ला** क़ियामत के दिन फ़रमाएगा : कहां हैं जो मेरे जलाल की वज्ह से आपस में मह़ब्बत रखते थे ! आज मैं उन को अपने साए में रखूंगा, आज मेरे साए के सिवा कोई साया नहीं[1] 《2》 **अल्लाह तआ़ला** इर्शाद फ़रमाता है : जो लोग मेरी वज्ह से आपस में मह़ब्बत रखते हैं और मेरी वज्ह से एक दूसरे के पास बैठते हैं और आपस में मिलते जुलते हैं और माल ख़र्च करते हैं उन से मेरी मह़ब्बत वाजिब हो गई[2] 《3》 **अल्लाह तआ़ला** ने फ़रमाया : जो लोग मेरे जलाल की वज्ह से आपस में मह़ब्बत रखते हैं उन के

ـــــدينـــه

[1]: مُسلِم ص١٣٨٨ حديث٢٥٦٦۔ [2]: الموطا ج٢ ص٤٣٩ حديث١٨٢٨۔

लिये नूर के मिम्बर होंगे, अम्बिया व शुहदा उन पर ग़िब्ता (या'नी रश्क) करेंगे[1] ﴾4﴿ दो शख़्सों ने **अल्लाह** के लिये बाहम महब्बत की और एक मशरिक़ में है दूसरा मग़रिब में, क़ियामत के दिन **अल्लाह तआला** दोनों को जम्अ करेगा और फ़रमाएगा : येही वोह है जिस से तूने मेरे लिये महब्बत की थी[2] ﴾5﴿ जन्नत में याक़ूत के सुतून हैं, उन पर ज़बर जद के बालाख़ाने हैं, उन के दरवाज़े खुले हुए हैं, वोह ऐसे रोशन हैं जैसे चमक्दार सितारे। लोगों ने अ़र्ज़ की : **या रसूलल्लाह** صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ! उन में कौन रहेगा ? फ़रमाया : "वोह लोग जो **अल्लाह** के लिये आपस में महब्बत रखते हैं, एक जगह बैठते हैं, आपस में मिलते हैं"[3] ﴾6﴿ **अल्लाह** के लिये महब्बत रखने वाले अ़र्श के गिर्द याक़ूत की कुर्सियों पर होंगे[4] ﴾7﴿ जो किसी से **अल्लाह** के लिये महब्बत रखे और **अल्लाह** के लिये दुश्मनी रखे और **अल्लाह** के लिये दे और **अल्लाह** के लिये मन्अ करे उस ने अपना ईमान कामिल कर लिया[5] ﴾8﴿ दो शख़्स जब **अल्लाह** (عَزَّوَجَلَّ) के लिये बाहम महब्बत रखते हैं, उन के दरमियान में जुदाई उस वक़्त होती है कि उन में से एक ने कोई गुनाह किया।[6] या'नी **अल्लाह** (عَزَّوَجَلَّ) के लिये जो महब्बत हो उस की पहचान येह है कि अगर एक ने गुनाह किया तो दूसरा उस से जुदा हो

۱: تِرمذی ج٤ ص١٧٤ حديث٢٣٩٧۔ ۲: شعب الايمان ج٦ ص٤٩٢ حديث٩٠٢٢۔ ۳: شعب الايمان ج٦ ص٤٨٧ حديث٩٠٠٢۔

٤: مُعجَم كبير ج٤ ص١٥٠ حديث٣٩٧٣۔ ٥: ابو داوٗد ج٤ ص٢٩٠ حديث٤٦٨١۔ ٦: الادب المفرد ص١٠٩ حديث٤٠١۔

जाए। (तफ़्सीली मा'लूमात के लिये पढ़िये मक्तबतुल मदीना की मत़्बूआ बहारे शरीअ़त जिल्द 3 सफ़्ह़ा 576 ता 579)

صَلُّوا عَلَى الْحَبِيب! صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلٰى مُحَمَّد

"तरावीह़ पढ़ें और ख़ुदा व रसूल की रह़मतें लूटें" के पेंतीस ह़ुरूफ़ की निस्बत से तरावीह़ के 35 मदनी फूल

﴾1﴿ **तरावीह़** हर आ़क़िल व बालिग़ इस्लामी भाई और इस्लामी बहन के लिये सुन्नते मुअक्कदा है। (دُرِّ مُختار ج۲ ص۵۹٦) इस का तर्क जाइज़ नहीं। (बहारे शरीअ़त, जि. 1, स. 688)

﴾2﴿ **तरावीह़** की बीस रक्अ़तें हैं। सय्यिदुना फ़ारूक़े आ'ज़म رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ के अ़हद में बीस रक्अ़तें ही पढ़ी जाती थीं।

(السُّنَنُ الکبرٰی لِلْبَیهقی ج۲ ص٦۹۹ حدیث٤٦۱۷)

﴾3﴿ **तरावीह़** की जमाअ़त सुन्नते मुअक्कदा अ़लल किफ़ाया है, अगर मस्जिद के सारे लोगों ने छोड़ दी तो सब **इसाअत** के मुरतकिब हुए (या'नी बुरा किया) और अगर चन्द अफ़्राद ने बा जमाअ़त पढ़ ली तो तन्हा पढ़ने वाला जमाअ़त की फ़ज़ीलत से मह़रूम रहा।

(ہِدایہ ج۱ ص۷۰)

4 **तरावीह़** का वक़्त इशा के फ़र्ज़ पढ़ने के बा'द से सुब्ह़े सादिक़ तक है। इशा के फ़र्ज़ अदा करने से पहले अगर पढ़ ली तो न होगी।
(عالمگیری ج۱ ص ۱۱۵)

5 **वित्र** के बा'द भी तरावीह़ पढ़ी जा सकती है। (دُرِّمُختار ج۲ ص۵۹۷) जैसा कि बा'ज़ अवक़ात **29** को रूयते हिलाल की शहादत (या'नी चांद नज़र आने की गवाही) मिलने में ताख़ीर के सबब ऐसा हो जाता है।

6 **मुस्तह़ब** येह है कि **तरावीह़** में तिहाई रात तक ताख़ीर करें, अगर आधी रात के बा'द पढ़ें तब भी कराहत नहीं। (लेकिन इशा के फ़र्ज़ इतने मुअख़्ख़र (LATE) न किये जाएं) (اَیضاًص۵۹۸)

7 **तरावीह़** अगर फ़ौत हुई तो इस की क़ज़ा नहीं। (اَیضاً)

8 **बेहतर** येह है कि **तरावीह़** की बीस रक्अ़तें दो दो कर के दस सलाम के साथ अदा करें। (اَیضاًص۵۹۹)

9 **तरावीह़** की बीस रक्अ़तें एक सलाम के साथ भी अदा की जा सकती हैं, मगर ऐसा करना मक्रूहे (तन्ज़ीही) है। (اَیضاً) हर दो रक्अ़त पर **क़ा'दा** करना फ़र्ज़ है, हर **क़ा'दे में** अत्तह़िय्यात के बा'द दुरूद शरीफ़ भी पढ़े और त़ाक़ रक्अ़त (या'नी पहली, तीसरी, पांचवीं वग़ैरा) में सना पढ़े और इमाम तअ़व्वुज़ व तस्मिया भी पढ़े।

फ़रमाने मुस्तफ़ा صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰی عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم : मुझ पर दुरूदे पाक की कसरत करो बेशक तुम्हारा मुझ पर दुरूदे पाक पढ़ना तुम्हारे लिये पाकीज़गी का बाइस है। (ابو یعلی)

10 **जब** दो दो रक्अ़त कर के पढ़ रहा है तो हर दो रक्अ़त पर अलग अलग निय्यत करे और अगर बीस रक्अ़तों की एक साथ निय्यत कर ली तब भी जाइज़ है। (رَدُّالْمُحتار ج۲ص۵۹۷)

11 **बिला उ़ज़्र** तरावीह़ बैठ कर पढ़ना मक्रूह है बल्कि बा'ज़ फुक़हाए किराम رَحِمَهُمُ اللّٰهُ السَّلَام के नज़्दीक तो होती ही नहीं। (دُرِّمُختار ج۲ص۶۰۳)

12 **तरावीह़** मस्जिद में बा जमाअ़त अदा करना अफ़्ज़ल है, अगर घर में बा जमाअ़त अदा की तो तर्के जमाअ़त का गुनाह न हुवा मगर वोह सवाब न मिलेगा जो **मस्जिद** में पढ़ने का था। (عالمگیری ج۱ص۱۱۶) इशा के फ़र्ज़ मस्जिद में बा जमाअ़त अदा कर के फिर घर या हॉल वग़ैरा में तरावीह़ अदा कीजिये अगर बिला उ़ज़्रे शरई मस्जिद के बजाए घर या हॉल वग़ैरा में इशा के फ़र्ज़ की जमाअ़त क़ाइम कर ली तो तर्के वाजिब के गुनाहगार होंगे। इस का तफ़्सीली मस्अला फ़ैज़ाने सुन्नत (जिल्द अव्वल) के बाब "पेट का कुफ़्ले मदीना" सफ़्ह़ा 135 पर मुलाह़ज़ा फ़रमा लीजिये।

13 **ना बालिग़** इमाम के पीछे सिर्फ़ ना बालिग़ान ही **तरावीह़** पढ़ सकते हैं।

﴾14﴿ **बालिग़** की तरावीह़ (बल्कि कोई भी नमाज़ ह़त्ता कि नफ़्ल भी) ना बालिग़ के पीछे नहीं होती।

﴾15﴿ **तरावीह़** में पूरा **कलामुल्लाह** शरीफ़ पढ़ना और सुनना सुन्नते मुअक्कदा अ़लल किफ़ाया है लिहाज़ा अगर चन्द लोगों ने मिल कर तरावीह़ में ख़त्मे क़ुरआन का एहतिमाम कर लिया तो बक़िय्या अ़लाक़े वालों के लिये किफ़ायत करेगा। "फ़तावा रज़विय्या" जिल्द 10 सफ़ह़ा 334 पर है : قُرآن دَرْ تراویح خَتْم کَرْدَن نَه فَرْض ست و نه سُنَّتِ عین۔ या'नी तरावीह़ में क़ुरआने करीम ख़त्म करना न फ़र्ज़ न सुन्नते ऐन है। और सफ़ह़ा 335 पर है : خَتْمِ قُرآن دَرْ تراویح سنّتِ کِفایه اَسْت۔ या'नी तरावीह़ में ख़त्मे क़ुरआन सुन्नते किफ़ाया है।

﴾16﴿ **अगर** बा शराइत़ ह़ाफ़िज़ न मिल सके या किसी वज्ह से ख़त्म न हो सके तो **तरावीह़** में कोई सी भी सूरतें पढ़ लीजिये अगर चाहें तो اَلَمْ تَرَ से وَالنَّاس दो बार पढ़ लीजिये, इस त़रह़ बीस रक्अ़तें याद रखना आसान रहेगा। (ماخوذ از عالمگیری ج ۱ ص ۱۱۸)

﴾17﴿ **एक** बार بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ ط जहर के साथ (या'नी ऊंची आवाज़ से) पढ़ना सुन्नत है और हर सूरत की इब्तिदा में आहिस्ता पढ़ना मुस्तह़ब है। मुतअख़्ख़िरीन (या'नी बा'द में आने वाले फ़ुक़हाए

किराम رَحِمَہُمُ اللّٰہُ السَّلَام) ने **ख़त्मे तरावीह़** में तीन बार قُلْ هُوَاللّٰهُ शरीफ़ पढ़ना **मुस्तह़ब** कहा नीज़ बेहतर येह है कि ख़त्म के दिन पिछली रक्अ़त में الٓمّٓ से مُفْلِحُوْن तक पढ़े।

(बहारे शरीअ़त, जि. 1, स. 694, 695)

18 **अगर** किसी वज्ह से **तरावीह़ की नमाज़** फ़ासिद हो जाए तो जितना क़ुरआने पाक उन रक्अ़तों में पढ़ा था उन का इआ़दा करें ताकि ख़त्म में नुक़्सान न रहे। (عالمگیری ج۱ص۱۱۸)

19 **इमाम** ग़लती से कोई आयत या सूरत छोड़ कर आगे बढ़ गया तो मुस्तह़ब येह है कि उसे पढ़ कर फिर आगे बढ़े। (اَیضاً)

20 **अलग** अलग मस्जिद में **तरावीह़** पढ़ सकता है जब कि ख़त्मे क़ुरआन में नुक़्सान न हो, मसलन तीन मसाजिद ऐसी हैं कि उन में हर रोज़ सवा पारह पढ़ा जाता है तो तीनों में रोज़ाना बारी बारी जा सकता है।

21 **दो रक्अ़त** पर बैठना भूल गया तो जब तक तीसरी का सज्दा न किया हो बैठ जाए, आख़िर में सज्दए सह्व कर ले। और अगर तीसरी का सज्दा कर लिया तो चार पूरी कर ले मगर येह दो शुमार होंगी। हां दो पर क़ा'दा किया था तो चार हुईं। (اَیضاً)

22 **तीन** रक्अ़तें पढ़ कर सलाम फैरा अगर दूसरी पर बैठा नहीं था तो न हुईं उन के बदले की दो रक्अ़तें दोबारा पढ़े। (اَیضاً)

23 **सलाम** फैरने के बा'द कोई कहता है दो हुई कोई कहता है तीन, तो इमाम को जो याद हो उस का ए'तिबार है, अगर इमाम खुद भी तज़ब्ज़ुब (या'नी शक व शुबा) का शिकार हो तो जिस पर ए'तिमाद हो उस की बात मान ले। (اَیضاًص۱۱۷)

24 **अगर** लोगों को शक हो कि बीस हुई या अठ्ठारह ? तो दो रक्अ़त तन्हा तन्हा पढ़ें। (اَیضاً)

25 **अफ़्ज़ल** येह है कि तमाम शुफ़्ओं में क़िराअत बराबर हो अगर ऐसा न किया जब भी ह़रज नहीं, इसी त़रह़ हर शुफ़्अ़ (कि दो रक्अ़त पर मुश्तमिल होता है उस) की पहली और दूसरी रक्अ़त की क़िराअत मसावी (या'नी यक्सां) हो, दूसरी की क़िराअत पहली से ज़ाइद नहीं होनी चाहिये। (اَیضاً)

26 **इमाम** व मुक़्तदी हर दो रक्अ़त की पहली में **सना** पढ़ें (इमाम अऊ़ज़ु और बिस्मिल्लाह भी पढ़े) और अत्तहिय्यात के बा'द दुरूदे इब्राहीम और दुआ़ भी। (دُرِّمُختارو رَدُّالْمُحتار ج۲ص۶۰۲)

27 **अगर** मुक़्तदियों पर गिरानी (दुश्वारी) होती हो तो तशह्हुद के बा'द اَللّٰھُمَّ صَلِّ عَلٰی مُحَمَّدٍ وَّاٰلِہٖ पर इक्तिफ़ा करे।

(बहारे शरीअ़त, जि. 1, स. 690, دُرِّمُختارو رَدُّالْمُحتار ج۲ص۶۰۲)

28 **अगर** सत्ताईसवीं को या इस से क़ब्ल कुरआने पाक ख़त्म हो

फ़रमाने मुस्तफ़ा صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم : जिस ने मुझ पर रोज़े जुमुआ दो सो बार दुरूदे पाक पढ़ा उस के दो सो साल के गुनाह मुआफ़ होंगे। (جمع الجوامع)

गया तब भी आख़िरे रमज़ान तक **तरावीह** पढ़ते रहें कि सुन्नते मुअक्कदा है। (عالمگیری ج۱ص۱۱۸)

﴾29﴿ **हर** चार रक्अ़तों के बा'द उतनी देर बैठना मुस्तहब है जितनी देर में चार रक्आ़त पढ़ी हैं। (बहारे शरीअ़त, जि. 1, स. 690, عالمگیری ج۱ص۱۱۵)

﴾30﴿ **इस** बैठने में इसे इख़्तियार है कि चुप बैठा रहे या ज़िक्रो दुरूद और तिलावत करे या चार रक्अ़तें तन्हा नफ़्ल पढ़े (دُرمُختار ج۲ص۶۰۰, बहारे शरीअ़त, जि. 1, स. 690) येह तस्बीह भी पढ़ सकते हैं :

سُبْحٰنَ ذِی الْمُلْكِ وَالْمَلَكُوْتِ، سُبْحٰنَ ذِی الْعِزَّةِ وَالْعَظَمَةِ وَالْهَيْبَةِ وَالْقُدْرَةِ وَالْكِبْرِيَاءِ وَالْجَبَرُوْتِ، سُبْحٰنَ الْمَلِكِ الْحَيِّ الَّذِیْ لَا يَنَامُ وَلَا يَمُوْتُ، سُبُّوْحٌ قُدُّوْسٌ رَبُّنَا وَرَبُّ الْمَلٰٓئِكَةِ وَالرُّوْحِ، اَللّٰهُمَّ اَجِرْنِیْ مِنَ النَّارِ، يَا مُجِيْرُ يَا مُجِيْرُ يَا مُجِيْرُ، بِرَحْمَتِكَ يَا اَرْحَمَ الرّٰحِمِيْنَ۔

﴾31﴿ **बीस** रक्अ़तें हो चुकने के बा'द पांचवां तरवीहा भी मुस्तहब है, अगर लोगों पर गिरां हो तो पांचवीं बार न बैठे।

(عالمگیری ج۱ص۱۱۵)

﴾32﴿ **मुक़्तदी** को जाइज़ नहीं कि बैठा रहे, जब इमाम रुकूअ़ करने वाला हो तो खड़ा हो जाए, येह मुनाफ़िक़ीन से मुशाबहत है। **सूरतुन्निसाअ** की आयत नम्बर 142 में है : وَ اِذَا قَامُوْۤا اِلَى الصَّلٰوةِ قَامُوْا كُسَالٰى (**तरजमए कन्ज़ुल ईमान :** और (मुनाफ़िक़) जब नमाज़ को खड़े हों तो हारे जी से) (बहारे शरीअ़त, जि. 1,

स. 693, غنیہ ص٤١٠) फ़र्ज़ की जमाअ़त में भी अगर इमाम रुकूअ़ से उठ गया तो सज्दों वग़ैरा में फ़ौरन शरीक हो जाएं नीज़ इमाम क़ा'दए ऊला में हो तब भी उस के खड़े होने का इन्तिज़ार न करें बल्कि शामिल हो जाएं। अगर **क़ा'दे** में शामिल हो गए और इमाम खड़ा हो गया तो अत्तह़िय्यात पूरी किये बिग़ैर न खड़े हों।

﴾33﴿ **रमज़ान** शरीफ़ में **वित्र** जमाअ़त से पढ़ना अफ़्ज़ल है, मगर जिस ने इ़शा के फ़र्ज़ बिग़ैर जमाअ़त के पढ़े वोह **वित्र** भी तन्हा पढ़े। (बहारे शरीअ़त, जि. 1, स. 692, 693, मुलख़्ख़सन)

﴾34﴿ **येह** जाइज़ है कि एक शख़्स इ़शा व वित्र पढ़ाए और दूसरा तरावीह़।

﴾35﴿ **ह़ज़रते** सय्यिदुना उ़मर फ़ारूक़े आ'ज़म رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ फ़र्ज़ व वित्र की जमाअ़त करवाते थे और ह़ज़रते सय्यिदुना उबय बिन का'ब رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ **तरावीह़** पढ़ाते। (عالمگیری ج١ ص١١٦)

ऐ हमारे प्यारे प्यारे **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ ! हमें नेक, मुख़्लिस और दुरुस्त कुरआने करीम पढ़ने वाले ह़ाफ़िज़ साह़िब के पीछे ख़ुशूओ़ ख़ुज़ूअ़ के साथ **तरावीह़** अदा करने की सआ़दत नसीब कर और क़बूल भी फ़रमा। اٰمین بِجاہِ النَّبِیِّ الْاَمین صَلَّی اللّٰہ تعالٰی علیہ واٰلہٖ وسلَّم

صَلُّوا عَلَی الْحَبِیْب ! صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلٰی مُحَمَّد

केन्सर का मरीज़ ठीक हो गया : اَلْحَمْدُ لِلّٰه عَزَّوَجَلَّ दा'वते इस्लामी वालों पर **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ और उस के प्यारे हबीब صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم का बेहद करम है। बारहा सुनने में आया कि डॉक्टरों ने जिन मरीज़ों को ला इलाज क़रार दे दिया उन का मदनी क़ाफ़िलों में ख़ैर से इलाज हो गया ! चुनान्चे एक इस्लामी भाई ने एक ईमान अफ़रोज़ **मदनी बहार** लिख कर दी जिस का ख़ुलासा कुछ यूं है : एक इस्लामी भाई जो कि केन्सर के मरीज़ थे, उन्हों ने तब्लीग़े क़ुरआनो सुन्नत की आलमगीर ग़ैर सियासी तह़रीक, **दा'वते इस्लामी** के **मदनी क़ाफ़िले** में **आशिक़ाने रसूल** के साथ सफ़र की सआदत हासिल की। दौराने सफ़र बेचारे काफ़ी सहमे हुए और मायूस से थे। शुरकाए क़ाफ़िला ढारस बंधाते और उन के लिये दुआएं भी फ़रमाते। एक दिन सुब्ह के वक़्त बैठे बैठे अचानक उन्हें क़ै हुई और उस में एक गोश्त की बोटी ह़ल्क़ से निकल पड़ी ! क़ै के बा'द उन को काफ़ी सुकून मिल गया। मदनी क़ाफ़िले से वापसी पर जब डॉक्टरों से रुजूअ़ किया और दोबारा टेस्ट करवाए तो ह़ैरत बालाए ह़ैरत कि **मदनी क़ाफ़िले** में सफ़र की बरकत से उन का **केन्सर का मरज़** ख़त्म हो चुका था।

अल्सर और केन्सर अब, या हो दर्दे कमर चलिये हिम्मत करें, क़ाफ़िले में चलो
दूर बीमारियां और परेशानियां होंगी बस चल पड़ें, क़ाफ़िले में चलो

(वसाइले बख़्शिश, स. 677)

صَلُّوا عَلَى الْحَبِيْب ! صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلٰى مُحَمَّد
تُوبُوا اِلَى الله ! اَسْتَغْفِرُ الله
صَلُّوا عَلَى الْحَبِيْب ! صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلٰى مُحَمَّد

क़ीमती लिबास में नमाज़

करोड़ों ह़नफ़िय्यों की अ़ज़ीम पेश्वा, सिराजुल उम्मह, काशिफ़ुल ग़ुम्मह, इमामे आ'ज़म, फ़क़ीहे अफ़्ख़म ह़ज़रते सय्यिदुना **इमाम अबू ह़नीफ़ा नो'मान बिन साबित** رَحْمَةُ اللّٰهِ تَعَالٰى عَلَيْه रात की नमाज़ के लिये बेश क़ीमत क़मीस, शलवार, इमामा और चादर पहनते थे जिस की क़ीमत डेढ़ हज़ार दिरहम थी, आप رَضِىَ اللّٰهُ تَعَالٰى عَنْه हर रात नमाज़ ऐसे लिबास में पढ़ते थे और फ़रमाते थे कि जब हम लोगों से अच्छे लिबास में मिलते हैं तो **अल्लाह** तआ़ला से आ'ला लिबास में मुलाक़ात क्यूं न करें। (تفسير رُوحُ البَيان ج٣ ص١٠٤ ملخّصاً)

फ़ैज़ाने लयलतुल क़द्र

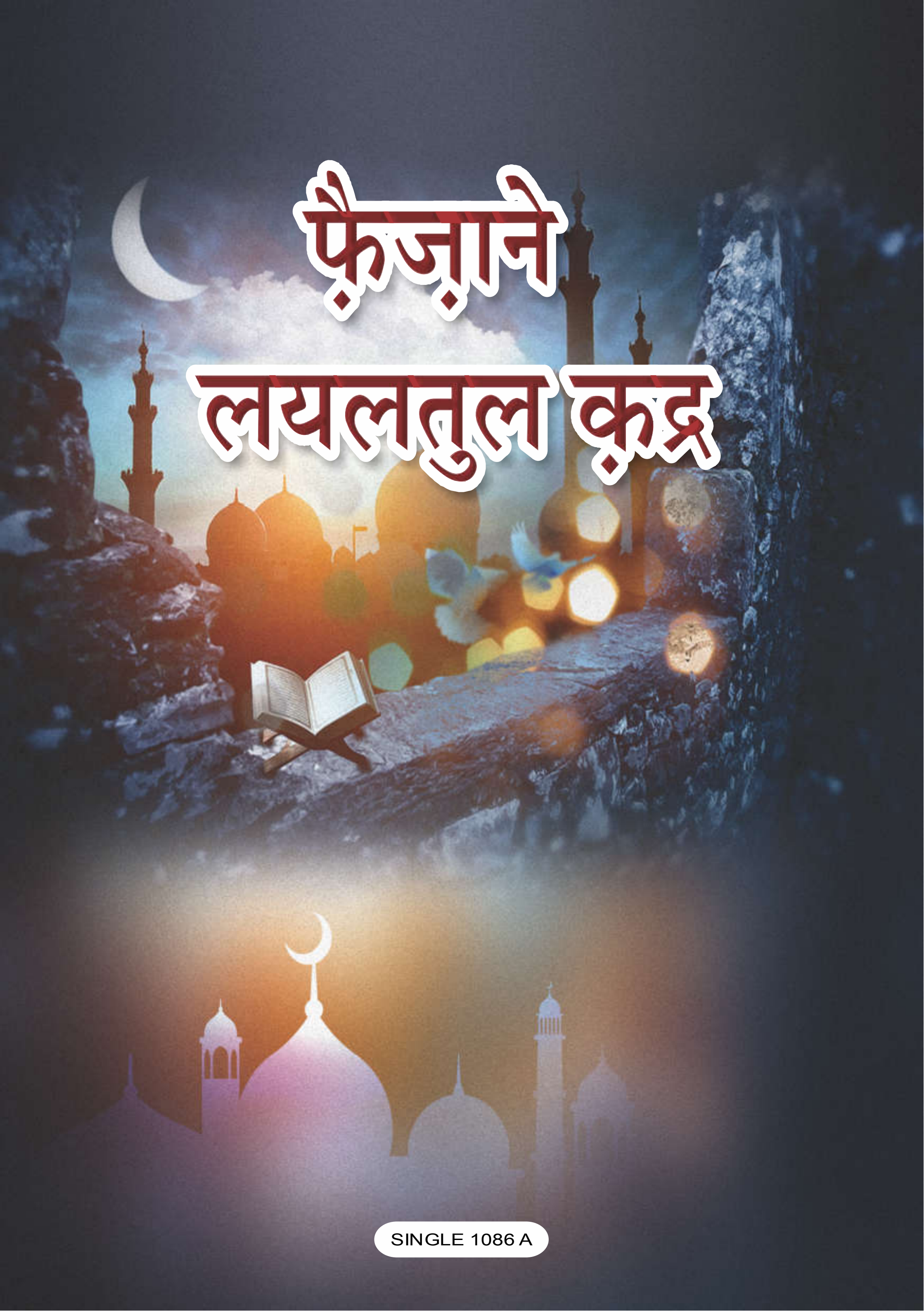

SINGLE 1086 A

फ़रमाने मुस्त़फ़ा صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم : जो मुझ पर एक दिन में 50 बार दुरूदे पाक पढ़े क़ियामत के दिन मैं उस से मुसाफ़हा करूं (या'नी हाथ मिलाऊं)गा। (ابن بشکوال)

اَلْحَمْدُ لِلّٰهِ رَبِّ الْعٰلَمِيْنَ وَالصَّلٰوةُ وَالسَّلَامُ عَلٰى سَيِّدِ الْمُرْسَلِيْنَ
اَمَّا بَعْدُ فَاَعُوْذُ بِاللّٰهِ مِنَ الشَّيْطٰنِ الرَّجِيْمِ ؕ بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ ؕ

फ़ैज़ाने लय-लतुल क़द्र

दुरूद शरीफ़ की फ़ज़ीलत : अल्लाह عَزَّوَجَلَّ के मह़बूब, दानाए गुयूब, मुनज़्ज़हुन अ़निल उ़यूब صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم का फ़रमाने जन्नत निशान है : "जिस ने मुझ पर दिन में **एक हज़ार मर्तबा दुरूदे पाक** पढ़ा, वोह मरेगा नहीं जब तक **जन्नत** में अपना ठिकाना न देख ले।"

(اَلتَّرغِيب وَالتَّرهِيب ج ٢ ص ٣٢٨ حديث ٢٢)

صَلُّوْا عَلَى الْحَبِيْب ! صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلٰى مُحَمَّد

लयलतुल क़द्र को "लयलतुल क़द्र" क्यूं कहते हैं ? :

प्यारे प्यारे इस्लामी भाइयो ! लयलतुल क़द्र इन्तिहाई बरकत वाली रात है इस को **लयलतुल क़द्र** इस लिये कहते हैं कि इस में साल भर के अह़काम नाफ़िज़ किये जाते हैं और फ़िरिश्तों को साल भर के कामों और ख़िदमात पर मामूर किया जाता है और येह भी कहा गया है कि इस रात की दीगर रातों पर शराफ़त व क़द्र के बाइ़स इस को **लयलतुल क़द्र** कहते हैं और येह भी मन्क़ूल है कि चूंकि इस शब में नेक आ'माल

मक़्बूल होते हैं और बारगाहे इलाही में उन की क़द्र की जाती है इस लिये इस को **लयलतुल क़द्र** कहते हैं। (تفسیر خازن ج ٤ ص ٤٧٣) और भी मुतअ़द्दिद शराफ़तें इस मुबारक रात को ह़ासिल हैं।

बुख़ारी शरीफ़ में है, **फ़रमाने मुस्तफ़ा** صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم : "जिस ने **लयलतुल क़द्र** में ईमान और **इख़्लास** के साथ क़ियाम किया (या'नी नमाज़ पढ़ी) तो उस के गुज़श्ता (सग़ीरा) गुनाह मुआ़फ़ कर दिये जाएंगे।" (بُخاری ج ۱ ص ٦٦٠ حديث٢٠١٤)

83 साल 4 माह की इ़बादत से ज़ियादा सवाब : इस मुक़द्दस रात को हरगिज़ हरगिज़ ग़फ़्लत में नहीं गुज़ारना चाहिये, **इस रात इ़बादत करने वाले को एक हज़ार माह या'नी तिरासी साल चार माह से भी ज़ियादा इ़बादत का सवाब अ़ता किया जाता है** और इस "ज़ियादा" का इ़ल्म **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ जाने या उस के बताए से उस के प्यारे **ह़बीब** صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم जानें कि कितना है। इस रात में ह़ज़रते सय्यिदुना **जिब्रील** عَلَيْهِ السَّلَام और फ़िरिश्ते नाज़िल होते हैं और फिर इ़बादत करने वालों से **मुसाफ़ह़ा** करते हैं। इस मुबारक शब का हर एक लम्ह़ा सलामती ही सलामती है और येह सलामती सुब्ह़े सादिक़ तक बर क़रार रहती है। येह **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ का ख़ासुल ख़ास करम है कि येह अ़ज़ीम रात सिर्फ़ अपने प्यारे ह़बीब صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم को और

फ़रमाने मुस्तफ़ा صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰی عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم : जिस ने मुझ पर एक मर्तबा दुरूदे पाक पढ़ा अल्लाह उस पर दस रह़मतें भेजता और उस के नामए आ'माल में दस नेकियां लिखता है। (ترمذی)

आप صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰی عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم के सदके़ में आप صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰی عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم की उम्मत को अ़ता की गई है। **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ कुरआने पाक में इर्शाद फ़रमाता है :

بِسۡمِ اللّٰہِ الرَّحۡمٰنِ الرَّحِیۡمِ ○
اِنَّاۤ اَنۡزَلۡنٰہُ فِیۡ لَیۡلَۃِ الۡقَدۡرِ ۚ﴿ۖ۱﴾ وَ مَاۤ اَدۡرٰىکَ مَا لَیۡلَۃُ
الۡقَدۡرِ ؕ﴿۲﴾ لَیۡلَۃُ الۡقَدۡرِ ۬ۙ خَیۡرٌ مِّنۡ اَلۡفِ شَہۡرٍ ؕ﴿ؔ۳﴾ تَنَزَّلُ
الۡمَلٰٓئِکَۃُ وَ الرُّوۡحُ فِیۡہَا بِاِذۡنِ رَبِّہِمۡ ۚ مِنۡ کُلِّ اَمۡرٍ ۙ﴿ۛ۴﴾
سَلٰمٌ ۟ۛ ہِیَ حَتّٰی مَطۡلَعِ الۡفَجۡرِ ﴿۵﴾ (پ۳۰،سورۃ القدر)

तरजमए कन्ज़ुल ईमान : अल्लाह के नाम से शुरूअ़ जो निहायत मेह्रबान रह़्म वाला। बेशक हम ने इसे शबे क़द्र में उतारा और तुम ने क्या जाना, क्या शबे क़द्र ? शबे क़द्र हज़ार महीनों से बेहतर, इस में फ़िरिश्ते और जिब्रील उतरते हैं अपने रब के हुक्म से, हर काम के लिये, वोह सलामती है सुब्ह़ चमक्ने तक।

मुफ़स्सिरीने किराम رَحِمَهُمُ اللّٰهُ تَعَالٰی **सूरतुल क़द्र** के ज़िम्न में फ़रमाते हैं : "इस रात में **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ ने कुरआने करीम लौहे़ मह़फ़ूज़ से आस्माने दुन्या पर नाज़िल फ़रमाया और फिर तक़रीबन 23 बरस की मुद्दत में अपने प्यारे ह़बीब صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰی عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم पर इसे ब तदरीज नाज़िल किया।"
(تفسیرِ صاوی ج٦ ص٢٣٩٨)

नबिय्ये मुअ़ज़्ज़म, रसूले मोह़तरम صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰی عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने

इर्शाद फ़रमाया : बेशक **अल्लाह तआला** ने मेरी उम्मत को **शबे क़द्र** अ़ता की और येह रात तुम से पहले किसी उम्मत को अ़ता नहीं फ़रमाई।

(اَلْفِردَوس بمأثور الْخِطاب ج١ ص١٧٣ حديث٦٤٧)

हज़ार महीनों से बेहतर एक रात : ह़ज़रते सय्यिदुना इमाम मुजाहिद عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللّٰهِ الْوَاحِد फ़रमाते हैं : बनी इसराईल का एक शख़्स सारी रात इ़बादत करता और सारा दिन जिहाद में मसरूफ़ रहता था और इस त़रह़ उस ने हज़ार महीने गुज़ारे थे, तो **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ ने येह आयते मुबारका नाज़िल फ़रमाई : "لَيْلَةُ الْقَدْرِ ۙ خَيْرٌ مِّنْ اَلْفِ شَهْرٍ" (**तरजमए कन्ज़ुल ईमान :** शबे क़द्र हज़ार महीनों से बेहतर) या'नी शबे क़द्र का क़ियाम उस आ़बिद (या'नी इ़बादत गुज़ार) की एक हज़ार महीने की इ़बादत से बेहतर है। (تفسيرِ طَبَرى ج ٢٤ ص ٥٣٣)

हमारी उ़म्रें तो बहुत क़लील हैं : और "तफ़्सीरे अ़ज़ीज़ी" में है : **ह़ज़राते** सह़ाबए किराम عَلَيْهِمُ الرِّضْوَان ने जब ह़ज़रते **शम्ऊ़न** رَحْمَةُ اللّٰهِ تَعَالٰی عَلَيْه की इ़बादात व जिहाद का तज़्किरा सुना तो उन्हें ह़ज़रते शम्ऊ़न رَحْمَةُ اللّٰهِ تَعَالٰی عَلَيْه पर बड़ा रश्क आया और मुस्त़फ़ा जाने रह़मत صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰی عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم की ख़िदमते बा बरकत में अ़र्ज़ किया : "**या रसूलल्लाह** صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰی عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ! हमें तो बहुत थोड़ी उ़म्रें मिली हैं, इस में भी कुछ ह़िस्सा नींद में गुज़रता है तो कुछ त़लबे मआ़श में, खाने

पकाने में और दीगर उमूरे दुन्यवी में भी कुछ वक़्त सर्फ़ हो जाता है। लिहाज़ा हम तो ह़ज़रते **शम्ऊ़न** رَحْمَةُ اللّٰهِ تَعَالٰی عَلَيْه की त़रह़ इबादत कर ही नहीं सकते, यूं बनी इसराईल हम से इबादत में बढ़ जाएंगे।" **उम्मत** के ग़म ख़्वार आक़ा صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰی عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم येह सुन कर ग़मगीन हो गए। उसी वक़्त ह़ज़रते सय्यिदुना **जिब्राईले अमीन** عَلَيْهِ الصَّلٰوةُ وَالسَّلَام **सूरतुल क़द्र** ले कर ह़ाज़िरे ख़िदमते बा बरकत हो गए और तसल्ली दे दी गई कि **प्यारे ह़बीब** (صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰی عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم) रन्जीदा न हों, आप صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰی عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم की उम्मत को हम ने हर साल में एक ऐसी रात इनायत फ़रमा दी कि **अगर वोह उस रात में इबादत करेंगे तो** (ह़ज़रते) **शम्ऊ़न** (رَحْمَةُ اللّٰهِ تَعَالٰی عَلَيْه) **की हज़ार माह की इबादत से भी बढ़ जाएंगे।** (ماخوذ از تفسیرِ عزیزی ج۳ص۲۵۷)

बा करामत शम्ऊ़न की ईमान अफ़रोज़ ह़िकायत : इन्ही ह़ज़रते शम्ऊ़न رَحْمَةُ اللّٰهِ تَعَالٰی عَلَيْه के बारे में "मुकाशफ़तुल कुलूब" में एक निहायत **ईमान अफ़रोज़ ह़िकायत** बयान की गई है, इस का मज़्मून कुछ इस त़रह़ है : बनी इसराईल के एक बुज़ुर्ग **ह़ज़रते शम्ऊ़न** رَحْمَةُ اللّٰهِ تَعَالٰی عَلَيْه ने हज़ार माह इस त़रह़ इबादत की, कि रात को क़ियाम और दिन को रोज़ा रखने के साथ साथ **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ की राह में कुफ़्फ़ार के साथ जिहाद भी करते। वोह इस क़दर **त़ाक़त वर** थे कि लोहे की

वज़्नी और मज़बूत़ **ज़न्जीरें** हाथों से तोड़ डालते थे। **कुफ़्फ़ारे** ना हन्जार ने जब देखा कि **ह़ज़रते शम्ऊ़न** رَحْمَةُ اللّٰهِ تَعَالٰی عَلَیْه पर कोई भी ह़र्बा कारगर नहीं होता तो **बाहम** मश्वरा करने के बा'द मालो दौलत का लालच दे कर आप رَحْمَةُ اللّٰهِ تَعَالٰی عَلَیْه की ज़ौजा को इस बात पर आमादा कर लिया कि वोह किसी रात नींद की ह़ालत में पाए तो उन्हें **मज़बूत़ रस्सियों** से बांध कर इन के ह़वाले कर दे। **बे वफ़ा बीवी** ने ऐसा ही किया। जब आप رَحْمَةُ اللّٰهِ تَعَالٰی عَلَیْه बेदार हुए और अपने आप को **रस्सियों** से बंधा हुवा पाया तो फ़ौरन अपने आ'ज़ा को ह़रकत दी, देखते ही देखते रस्सियां टूट गईं और आप رَحْمَةُ اللّٰهِ تَعَالٰی عَلَیْه आज़ाद हो गए। फिर अपनी बीवी से इस्तिफ़्सार किया : "मुझे किस ने बांध दिया था ?" **बे वफ़ा बीवी** ने झूटमूट कह दिया कि मैं ने तो आप की त़ाक़त का अन्दाज़ा करने के लिये ऐसा किया था। बात रफ़्अ़ दफ़्अ़ हो गई।

बे वफ़ा बीवी मौक़अ़ की ताक में रही। एक बार फिर जब नींद का ग़लबा हुवा तो उस ज़ालिमा ने आप رَحْمَةُ اللّٰهِ تَعَالٰی عَلَیْه को **लोहे की ज़न्जीरों** में अच्छी त़रह़ जकड़ दिया। जूं ही आंख खुली, आप رَحْمَةُ اللّٰهِ تَعَالٰی عَلَیْه ने एक ही झटके में **ज़न्जीर** की एक एक कड़ी अलग कर दी और आज़ाद हो गए। बीवी येह देख कर सटपटा गई मगर फिर मक्कारी से काम लेते हुए वोही बात दोहरा दी कि मैं तो आप (رَحْمَةُ اللّٰهِ تَعَالٰی عَلَیْه) को आज़्मा रही थी। दौराने गुफ़्तगू (ह़ज़रते) **शम्ऊ़न**

फ़रमाने मुस्तफ़ा صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم : मुझ पर दुरूद पढ़ कर अपनी मजालिस को आरास्ता करो कि तुम्हारा दुरूद पढ़ना बरोज़े क़ियामत तुम्हारे लिये नूर होगा। (فردوس الاخبار)

(رَحْمَةُ اللّٰهِ تَعَالٰى عَلَيْه) ने अपनी बीवी के आगे अपना राज़ इफ़्शा (या'नी ज़ाहिर) करते हुए फ़रमाया : मुझ पर **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ का बड़ा करम है, उस ने मुझे अपनी **विलायत** का शरफ़ इनायत फ़रमाया है, मुझ पर दुन्या की कोई चीज़ असर नहीं कर सकती मगर, "**मेरे सर के बाल।**" चालाक औ़रत सारी बात समझ गई।

आह ! उसे दुन्या की महब्बत ने अन्धा कर दिया था। आख़िर एक बार मौक़अ़ पा कर उस ने आप (رَحْمَةُ اللّٰهِ تَعَالٰى عَلَيْه) को आप (رَحْمَةُ اللّٰهِ تَعَالٰى عَلَيْه) ही के उन **आठ गेसूओं** (या'नी ज़ुल्फ़ों) से बांध दिया जिन की दराज़ी ज़मीन तक थी। (येह अगली उम्मत के बुज़ुर्ग थे, हमारे आक़ा صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم की सुन्नते गेसू आधे कान, पूरे कान और मुबारक कन्धों तक है, कन्धों से नीचे तक मर्द को बाल बढ़ाना ह़राम है) आप رَحْمَةُ اللّٰهِ تَعَالٰى عَلَيْه ने आंख खुलने पर ज़ोर लगाया मगर आज़ाद न हो सके। दुन्या की दौलत के नशे में बद मस्त बे वफ़ा औ़रत ने अपने नेक व पारसा शोहर को दुश्मनों के ह़वाले कर दिया।

कुफ़्फ़ारे बद अत़्वार ने **ह़ज़रते शम्ऊ़न** (رَحْمَةُ اللّٰهِ تَعَالٰى عَلَيْه) **को एक सुतून से बांध दिया और इन्तिहाई बे दर्दी के साथ उन के होंट और कान काट डाले।** तब उस नेक बन्दे ने **अल्लाह तआ़ला** की बारगाह में दुआ़ की, कि उसे इन बन्धनों को तोड़ने की क़ुव्वत बख़्शे और इन काफ़िरों पर येह सुतून मअ़ छत गिरा दे और उसे इन से नजात दे

दे चुनान्चे **अल्लाह तआला** ने उन को कुव्वत बख़्शी वोह हिले तो उन के तमाम बन्धन टूट गए, तब उन्हों ने सुतून को हिलाया जिस की वज्ह से छत काफ़िरों पर आ गिरी और वोह सब हलाक हो गए और उस नेक बन्दे को **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ ने नजात बख़्शी।

(ماخوذ ازمُکاشَفَۃُ القُلُوب ص ۳۰۶ وغیرہ)

आह ! हमें क़द्र कहां ! : प्यारे प्यारे इस्लामी भाइयो ! देखा आप ने ! ख़ुदाए रहमान عَزَّوَجَلَّ अपने महबूबे ज़ीशान, रहमते आलमिय्यान صَلَّى اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم की उम्मत पर किस क़दर मेहरबान है और उस ने हम पर कैसा अज़ीमुश्शान एहसान फ़रमाया कि अगर **शबे क़द्र** में इबादत कर लें तो **एक हज़ार माह** से भी ज़ियादा की इबादत का सवाब पा लें। मगर **आह !** हमें शबे क़द्र की क़द्र कहां ! एक सहाबए किराम عَلَيْهِمُ الرِّضْوَان भी तो थे कि जिन की हसरत पर हम सब को इतना बड़ा **इन्आम** बिग़ैर किसी ख़्वाहिश के मिल गया ! बेशक उन्हों ने इस की क़द्र भी की मगर अफ़्सोस ! हम ना क़द्रे ही रहे ! **आह !** हर साल मिलने वाले इस अज़ीमुश्शान **इन्आम** को हम ग़फ़्लत की नज़्र कर देते हैं।

मदनी इन्आमात के रिसाले की बरकत : प्यारे प्यारे इस्लामी भाइयो ! शबे क़द्र की दिल में अज़्मत बढ़ाने के लिये तब्लीग़े कुरआनो

फ़रमाने मुस्त़फ़ा صَلَّى اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم : जिस ने मुझ पर एक बार दुरूदे पाक पढ़ा अल्लाह عَزَّوَجَلَّ उस पर दस रह़मतें भेजता है। (مسلم)

सुन्नत की आ़लमगीर ग़ैर सियासी तह़रीक, **दा'वते इस्लामी** के मदनी माह़ोल से हर दम वाबस्ता रहिये। اِنْ شَآءَاللّٰہ عَزَّوَجَلَّ मुसल्मानों को नेक नमाज़ी बनाने के तअ़ल्लुक़ से इस्लामी भाइयों के लिये 72, इस्लामी बहनों के लिये 63 और त़लबए इ़ल्मे दीन के लिये 92, दीनी त़ालिबात के लिये 83, मदनी मुन्नों और मुन्नियों के लिये 40, ख़ुसूसी (या'नी गूंगे बहरे और नाबीना इस्लामी भाइयों) के लिये **25** और क़ैदियों के लिये **52** **मदनी इन्आ़मात** ब सूरते सुवालात मुरत्तब किये गए हैं। **फ़िक्रे मदीना** (या'नी अपने आ'माल का मुह़ासबा) करते हुए रोज़ाना **मदनी इन्आ़मात का रिसाला** पुर कर के दा'वते इस्लामी के मक़ामी ज़िम्मेदार को हर मदनी माह या'नी इस्लामी महीने की पहली तारीख़ को जम्अ़ करवाना होता है। मदनी इन्आ़मात ने न जाने कितने ही इस्लामी भाइयों और इस्लामी बहनों की ज़िन्दगियों में **मदनी इन्क़िलाब** बरपा कर दिया है! इस की एक झलक मुलाह़ज़ा हो : एक इस्लामी भाई का कुछ इस त़रह़ बयान है : अ़लाक़े की मस्जिद के इमाम साह़िब जो कि **दा'वते इस्लामी** से वाबस्ता हैं, उन्हों ने **इन्फ़िरादी कोशिश** करते हुए मेरे बड़े भाईजान

को **मदनी इन्आ़मात** का एक रिसाला तोह़फ़े में दिया। वोह घर ले आए और पढ़ा तो हैरान रह गए कि इस मुख़्तसर से रिसाले में एक मुसल्मान को इस्लामी ज़िन्दगी गुज़ारने का इतना ज़बर दस्त फ़ार्मूला दे दिया गया है ! **मदनी इन्आ़मात का रिसाला** मिलने की बरकत से اَلْحَمْدُ لِلّٰه उन को **नमाज़** का जज़्बा मिला और नमाज़े बा जमाअ़त की अदाएगी के लिये मस्जिद में ह़ाज़िर हो गए और अब पांच वक़्त के **नमाज़ी** बन चुके हैं, **दाढ़ी मुबारक** भी सजा ली और **मदनी इन्आ़मात** का रिसाला भी पुर करते हैं।

मदनी इन्आ़मात के आ़मिल पे हर दम हर घड़ी

या इलाही ! ख़ूब बरसा रह़मतों की तू झड़ी

आ़मिलीने मदनी इन्आ़मात के लिये बिशारते उ़ज़्मा :

प्यारे प्यारे इस्लामी भाइयो ! मदनी इन्आ़मात का रिसाला पुर करने वाले किस क़दर ख़ुश क़िस्मत होते हैं इस का अन्दाज़ा इस **मदनी बहार** से लगाइये, चुनान्चे एक इस्लामी भाई का कुछ इस त़रह़ ह़ल्फ़िय्या बयान है कि माहे रजबुल मुरज्जब 1426 सि.हि. की एक शब मुझे

ख़्वाब में **मुस्तफ़ा जाने रह़मत** صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم की ज़ियारत की अ़ज़ीम सआ़दत मिली। लबहाए मुबारका को जुम्बिश हुई और रह़मत के फूल झड़ने लगे, अल्फ़ाज़ कुछ यूं तरतीब पाए : **जो इस माह रोज़ाना पाबन्दी से मदनी इन्आ़मात से मुतअ़ल्लिक़ फ़िक्रे मदीना करेगा, अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ **उस की मग़्फ़िरत फ़रमा देगा।**

मदनी इन्आ़मात की भी मरह़बा क्या बात है

कुर्बे ह़क़ के ता़लिबों के वासित़े सौग़ात है

صَلُّوا عَلَی الْحَبِیْب! صَلَّی اللّٰهُ تَعَالٰی عَلٰی مُحَمَّد

प्यारे प्यारे इस्लामी भाइयो ! येह रात हर त़रह़ से ख़ैरियत व सलामती की ज़ामिन है। येह रात अव्वल ता आख़िर रह़मत ही रह़मत है। मुफ़स्सिरीने किराम رَحِمَهُمُ اللّٰهُ تَعَالٰی फ़रमाते हैं : "येह रात सांप बिच्छू, आफ़ातो बलिय्यात और शयात़ीन से भी मह़फ़ूज़ है, इस रात में सलामती ही सलामती है।"

तमाम भलाइयों से मह़रूम कौन ? : ह़ज़रते सय्यिदुना अनस बिन मालिक رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْهُ फ़रमाते हैं : एक बार जब **माहे रमज़ान**

फ़रमाने मुस्तफ़ा صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم : जिस के पास मेरा ज़िक्र हुवा और उस ने मुझ पर दुरूदे पाक न पढ़ा तह्क़ीक़ वोह बद बख़्त हो गया। (ابن سنی)

शरीफ़ तशरीफ़ लाया तो सुल्ताने दो जहान, रह्मते आलमिय्यान صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया : "तुम्हारे पास येह महीना आया है जिस में एक रात ऐसी भी है जो **हज़ार महीनों** से बेहतर है जो शख़्स इस रात से मह्रूम रह गया, गोया तमाम की तमाम भलाई से मह्रूम रह गया और इस की भलाई से मह्रूम नहीं रहता मगर वोह शख़्स जो ह़क़ीक़तन मह्रूम है।"

(ابنِ مَاجَه ج۲ص۲۹۸حدیث۱۶۴۴)

सब्ज़ झन्डा : एक फ़रमाने मुस्तफ़ा صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم का हिस्सा है : "जब **शबे क़द्र** आती है तो हुक्मे इलाही से (ह़ज़रते) **जिब्रील** (عَلَيْهِ الصَّلٰوةُ وَالسَّلَام) एक **सब्ज़ झन्डा** लिये फ़िरिश्तों की बहुत बड़ी फ़ौज के साथ ज़मीन पर नुज़ूल फ़रमाते हैं (और एक रिवायत के मुताबिक़ : "इन फ़िरिश्तों की ता'दाद ज़मीन की कंकरियों से भी ज़ियादा होती है"[1]) और वोह **सब्ज़ झन्डा** का'बए मुअ़ज़्ज़मा पर लहरा देते हैं। (ह़ज़रते) **जिब्रील** (عَلَيْهِ الصَّلٰوةُ وَالسَّلَام) के सो बाज़ू हैं, जिन में से **दो बाज़ू** सिर्फ़ इसी रात खोलते हैं, वोह बाज़ू मशरिक़ व मग़रिब में फैल जाते हैं, फिर (ह़ज़रते) **जिब्रील** (عَلَيْهِ الصَّلٰوةُ وَالسَّلَام) फ़िरिश्तों को हुक्म देते हैं कि जो कोई मुसल्मान आज रात

مدینہ

1 : مسند احمد ج۳ص۶۰۶ حدیث ۱۰۷۳۹۔

क़ियाम, नमाज़ या **ज़िक्रुल्लाह** عَزَّوَجَلَّ में मश्ग़ूल है उस से **सलाम व मुसाफ़ह्आ** करो नीज़ उन की दुआओं पर आमीन भी कहो। चुनान्चे सुब्ह़ तक येही सिल्सिला रहता है। सुब्ह़ होने पर (ह़ज़रते) **जिब्रील** (عَلَیْہِ الصَّلٰوۃُ وَالسَّلَام) फ़िरिश्तों को वापसी का हुक्म देते हैं। फ़िरिश्ते अ़र्ज़ करते हैं : **ऐ जिब्रील** (عَلَیْہِ الصَّلٰوۃُ وَالسَّلَام) **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ ने **उम्मते मुह़म्मदिय्यह** (عَلٰی صَاحِبِہَا الصَّلٰوۃُ وَالسَّلَام) की ह़ाजतों के बारे में क्या मुआ़मला फ़रमाया ? (ह़ज़रते) **जिब्रील** (عَلَیْہِ الصَّلٰوۃُ وَالسَّلَام) फ़रमाते हैं : "**अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ ने इन लोगों पर ख़ुसूसी नज़रे करम फ़रमाई और चार क़िस्म के लोगों के इ़लावा सब को मुआ़फ़ फ़रमा दिया।" सह़ाबए किराम عَلَیْہِمُ الرِّضْوَان ने अ़र्ज़ की : "**या रसूलल्लाह** صَلَّى اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم वोह **चार** क़िस्म के लोग कौन हैं ?" इर्शाद फ़रमाया : "﴾1﴿ एक तो आ़दी शराबी ﴾2﴿ दूसरे वालिदैन के ना फ़रमान ﴾3﴿ तीसरे क़त्ए़ रेह़्मी करने वाले (या'नी रिश्तेदारों से तअ़ल्लुक़ात तोड़ने वाले) और ﴾4﴿ चौथे वोह लोग जो आपस में अ़दावत रखते हैं और आपस में क़त्ए़ तअ़ल्लुक़ करने वाले।" (شُعَبُ الْاِیمان ج۳ص۳۳۶حدیث۳۶۹۵)

लड़ाई का वबाल : ह़ज़रते सय्यिदुना उ़बादा बिन सामित رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ से रिवायत है कि मीठे मीठे आक़ा, मक्की मदनी मुस्त़फ़ा صَلَّى اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم बाहर तशरीफ़ लाए ताकि हम को शबे क़द्र के बारे

फ़रमाने मुस्त़फ़ा صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم : जिस के पास मेरा ज़िक्र हुवा और उस ने मुझ पर दुरूदे पाक न पढ़ा तह़क़ीक़ वोह बद बख़्त हो गया।

में बताएं (कि किस रात में है) दो मुसल्मान आपस में **झगड़** रहे थे। आप صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने इर्शाद फ़रमाया : "मैं इस लिये आया था कि तुम्हें **शबे क़द्र** बताऊं लेकिन फ़ुलां फ़ुलां शख़्स **झगड़** रहे थे, इस लिये इस का तअ़य्युन उठा लिया गया, और मुम्किन है कि इसी में तुम्हारी बेहतरी हो, अब इस को (आख़िरी अ़शरे की) **नवीं, सातवीं** और **पांचवीं** रातों में ढूंडो।"

(بُخاری ج ۱ ص ٦٦٣ حدیث۲۰۲۳)

मुफ़स्सिरे शहीर **ह़कीमुल उम्मत** ह़ज़रते मुफ़्ती अह़मद यार ख़ान عَلَيْهِ رَحْمَةُ الْحَنَّان मिरआत जिल्द 3 सफ़ह़ा 210 पर इस ह़दीसे पाक के तह़त फ़रमाते हैं : या'नी मेरे इ़ल्म से इस का तक़र्रुर दूर कर दिया गया और मुझे भुला दी गई, येह मत़लब नहीं कि ख़ुद शबे क़द्र ही ख़त्म कर दी अब वोह हुवा ही न करेगी। मा'लूम हुवा कि दुन्यावी झगड़े मन्ह़ूस हैं इन का वबाल बहुत ही ज़ियादा है इन की वज्ह से **अल्लाह** की आती हुई रह़मतें रुक जाती हैं।

हम तो शरीफ़ के साथ शरीफ़ और......: प्यारे प्यारे इस्लामी भाइयो ! मुसल्मानों का आपस में लड़ाई झगड़ा करना रह़मत से दूरी का सबब बन जाता है। मगर आह ! अब कौन किस को समझाए ! आज तो बड़े फ़ख़्र से कहा जा रहा है कि "मियां इस दुन्या में शरीफ़ रह

कर तो गुज़ारा ही नहीं, हम तो शरीफ़ों के साथ शरीफ़ और बद मआ़श के साथ बद मआ़श हैं !" सिर्फ़ इस क़ौल ही पर इक्तिफ़ा नहीं, अब तो मा'मूली सी बात पर पहले ज़बान दराज़ी, फिर दस्त अन्दाज़ी, इस के बा'द चाक़ूबाज़ी बल्कि गोलियां तक चल जाती हैं। **अफ़्सोस !** आज कल बा'ज़ मुसल्मान कभी **पठान** बन कर कभी **पंजाबी** कहला कर, कभी **मुहाजिर** हो कर, कभी **सिन्धी** और **बलोच** क़ौमिय्यत का ना'रा लगा कर एक दूसरे का गला काट रहे हैं, एक दूसरे की अम्लाक व अम्वाल को आग लगा रहे हैं। आपस में एक दूसरे के ख़िलाफ़ सिर्फ़ नस्ली और लिसानी फ़र्क़ की बिना पर महाज़ आराई हो रही है। मुसल्मानो ! आप तो एक दूसरे के मुहाफ़िज़ थे आप को क्या हो गया है ? हमारे प्यारे आक़ा صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم का फ़रमाने आ़लीशान तो येह है कि : "मोमिनों की मिसाल तो एक जिस्म की त़रह़ है कि अगर एक उ़ज़्व को तक्लीफ़ पहुंचे तो सारा जिस्म उस तक्लीफ़ को मह़सूस करता है।"

(بُخاری ج٤ص١٠٣حدیث٦٠١١)

एक शाइर ने कितने प्यारे अन्दाज़ में समझाया है :

मुब्तलाए दर्द कोई उ़ज़्व हो रोती है आंख
किस क़दर हमदर्द सारे जिस्म की होती है आंख

प्यारे प्यारे इस्लामी भाइयो ! हमें आपस में **लड़ाई झगड़ा** करने के बजाए एक दूसरे की हमदर्दी और ग़म गुसारी करनी चाहिये। मुसल्मान एक दूसरे को मारने, काटने और लूटने वाला नहीं होता।

मुसल्मान, मोमिन और मुहाजिर की ता'रीफ़ : ह़ज़रते सय्यिदुना फ़ज़ाला बिन उ़बैद رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ से रिवायत है कि ताजदारे रिसालत, मह़बूबे रब्बुल इ़ज़्ज़त صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने ह़ज्जतुल वदाअ़ के मौक़अ़ पर इर्शाद फ़रमाया : "क्या तुम्हें मोमिन के बारे में ख़बर न दूं ?" फिर इर्शाद फ़रमाया : "**मोमिन** वोह है जिस से दूसरे मुसल्मान अपनी जान और अपने अम्वाल से बे ख़ौफ़ हों और **मुसल्मान** वोह है जिस की ज़बान और हाथ से दूसरे मुसल्मान मह़फ़ूज़ रहें और **मुजाहिद** वोह है जिस ने इत़ाअ़ते ख़ुदावन्दी عَزَّوَجَلَّ के मुआ़मले में अपने नफ़्स के साथ जिहाद किया और **मुहाजिर** वोह है जिस ने ख़त़ा और गुनाहों से अ़लाह़दगी इख़्तियार की।" (اَلْمُستَدرَک ج۱ ص۱۵۸ حدیث۲۴) और इर्शाद फ़रमाया : **मुसल्मान** के लिये जाइज़ नहीं कि दूसरे **मुसल्मान** की त़रफ़ **आंख** से इस त़रह़ इशारा करे जिस से तक्लीफ़ पहुंचे। (اِتحاف السّادۃ ج۷ ص۱۷۷) एक मक़ाम पर इर्शाद फ़रमाया : किसी **मुसल्मान** को जाइज़ नहीं कि वोह किसी **मुसल्मान** को ख़ौफ़ज़दा करे।

(اَبو داوٗد ج۴ ص۳۹۱ حدیث۵۰۰۴)

त़रीक़े मुस्त़फ़ा को छोड़ना है वज्हे बरबादी

इसी से क़ौम दुन्या में हुई बे इक़्तिदार अपनी

ना क़ाबिले बरदाश्त ख़ारिश : ह़ज़रते सय्यिदुना मुजाहिद رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰى عَلَيْه फ़रमाते हैं : दोज़ख़ियों को ऐसी **ख़ारिश** में मुब्तला कर दिया जाएगा कि खुजाते खुजाते उन की खाल उधड़ जाएगी यहां तक कि उन में से किसी की हड्डियां ज़ाहिर हो जाएंगी। फिर निदा सुनाई देगी, ऐ फ़ुलां : क्या इस से तक्लीफ़ हो रही है ? वोह कहेगा : हां। तब उन्हें बताया जाएगा : "दुन्या में जो तुम मुसल्मानों को सताया करते थे येह उस की सज़ा है।" (إتحافُ السّادة ج٧ص١٧٥)

तक्लीफ़ दूर करने का सवाब : हुज़ूरे अकरम, नूरे मुजस्सम صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم का फ़रमाने मुअ़ज़्ज़म है : "मैं ने एक शख़्स को **जन्नत में घूमते हुए** देखा कि जिधर चाहता है निकल जाता है क्यूं कि उस ने इस दुन्या में एक ऐसे दरख़्त को रास्ते से काट दिया था जो कि लोगों को तक्लीफ़ देता था।" (مُسلم ص ١٤١٠ حديث ٢٦١٨)

लड़ना है तो नफ़्स के साथ लड़ो ! : प्यारे प्यारे इस्लामी भाइयो ! इन अह़ादीसे मुबारका से दर्स ह़ासिल कीजिये और आपस में **लड़ाई झगड़ा** और लूटमार से परहेज़ कीजिये। अगर लड़ना ही है तो

मरदूद शैत़ान से लड़िये, बल्कि ज़रूर लड़िये, **नफ़्से अम्मारा** से लड़ाई कीजिये, मगर आपस में भाई भाई बन कर रहिये।

फ़र्द क़ाइम रब्ते मिल्लत से है तन्हा कुछ नहीं

मौज है दरिया में और बैरूने दरिया कुछ नहीं

आक़ा صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم मुस्कुरा रहे थे ! : اَلْحَمْدُ لِلّٰه عَزَّوَجَلّ

दा'वते इस्लामी के **मदनी माह़ोल** में किसी क़िस्म का लिसानी और क़ौमी इख़्तिलाफ़ नहीं, हर ज़बान बोलने वाला और हर बरादरी से तअ़ल्लुक़ रखने वाला **ताजदारे ह़रम** صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم के दामने करम ही में पनाह गुज़ीं है। आप भी हर दम **दा'वते इस्लामी** के मदनी माह़ोल से वाबस्ता रहिये और इश्क़े रसूल صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم में डूबी हुई ज़िन्दगी गुज़ारने के लिये अपने आप को **मदनी इन्आ़मात** के सांचे में ढाल लीजिये। तरग़ीब व तह़रीस के लिये एक ख़ुश गवार व ख़ुश्बूदार **मदनी बहार** आप के गोश गुज़ार की जाती है, तब्लीग़े क़ुरआनो सुन्नत की आ़लमगीर ग़ैर सियासी तह़रीक **दा'वते इस्लामी** के आ़लमी मदनी मर्कज़ फ़ैज़ाने मदीना में **मदनी क़ाफ़िला कोर्स** करने के लिये तशरीफ़ लाए हुए एक मुबल्लिग़ ने जो कुछ ह़ल्फ़िय्या लिख कर दिया उस का ख़ुलासा है कि : मैं **आ़लमी मदनी मर्कज़ फ़ैज़ाने मदीना** में सो रहा था, सर की आंखें तो क्या बन्द हुईं اَلْحَمْدُ لِلّٰه عَزَّوَجَلّ दिल की आंखें खुल

गई, आ़लमे ख़्वाब में देखा कि **सरकारे रिसालत मआब** صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم एक बुलन्द चबूतरे पर जल्वा अफ़्रोज़ हैं, क़रीब ही **मदनी इन्आ़मात** के कार्ड की बोरियां रखी हैं। सरवरे काएनात, शाहे मौजूदात صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم **मदनी इन्आ़मात** के एक एक कार्ड को मुस्कुराते हुए बग़ौर मुलाहज़ा फ़रमा रहे हैं। फिर मेरी आंख खुल गई।

मदनी इन्आ़मात से अ़त्तार हम को प्यार है
اِنْ شَآءَ اللّٰه दो जहां में अपना बेड़ा पार है

صَلُّوْا عَلَى الْحَبِيْب! صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلٰى مُحَمَّد

जादूगर का जादू नाकाम : हज़रते सय्यिदुना इस्माईल हक़्क़ी عَلَيْهِ رَحمَةُ اللهِ الْقَوِى नक़्ल फ़रमाते हैं : येह रात आफ़ात से सलामती की है कि इस में रहमत और ख़ैर (या'नी भलाई) ही ज़मीन पर उतरती है। और न इस में शैत़ान बुराई करवाने की त़ाक़त रखता है और न **जादूगर का जादू** इस में चलता है। (رُوْحُ الْبَیان ج۱۰ ص٤٨٥ مُلَخَّصاً)

अ़लामाते शबे क़द्र : हज़रते सय्यिदुना उ़बादा बिन सामित رَضِیَ اللهُ تَعَالٰی عَنْہ ने बारगाहे रिसालत में **शबे क़द्र** के बारे में सुवाल किया तो सरकारे मदीनए मुनव्वरह, सरदारे मक्कए मुकर्रमा صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने इर्शाद फ़रमाया : "**शबे क़द्र रमज़ानुल मुबारक**

के आख़िरी अ़शरे की **ताक़ रातों** या'नी इक्कीसवीं, तेईसवीं, पच्चीसवीं, सत्ताईसवीं या उन्तीसवीं शब में तलाश करो। तो जो कोई ईमान के साथ ब निय्यते सवाब इस मुबारक रात में इबादत करे, उस के अगले पिछले गुनाह बख़्श दिये जाते हैं। उस की अ़लामात में से येह भी है कि वोह मुबारक शब खुली हुई, रोशन और बिल्कुल साफ़ो शफ़्फ़ाफ़ होती है, इस में न ज़ियादा गरमी होती है न ज़ियादा सरदी बल्कि येह रात मो'तदिल होती है, गोया कि इस में चांद खुला हुवा होता है, इस पूरी रात में शयातीन को आस्मान के सितारे नहीं मारे जाते। मज़ीद निशानियों में से येह भी है कि इस रात के गुज़रने के बा'द जो सुब्ह आती है उस में सूरज बिग़ैर शुआ़अ के तुलूअ़ होता है और वोह ऐसा होता है गोया कि चौदहवीं का चांद। **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ ने इस दिन तुलूए़ आफ़्ताब के साथ शैता़न को निकलने से रोक दिया है।" (इस एक दिन के इ़लावा हर रोज़ सूरज के साथ साथ शैता़न भी निकलता है)

(مُسند إمام احمد ج۸ص۴۰۲، ۴۱۴حديث۲۲۷۷۶،۲۲۸۲۹)

शबे क़द्र की पोशीदगी की ह़िक्मत : प्यारे प्यारे इस्लामी भाइयो ! ह़दीसे पाक में फ़रमाया गया है कि **रमज़ानुल मुबारक** के आख़िरी अ़शरे की **ताक़ रातों** में या आख़िरी रात में से चाहे वोह 30वीं शब हो कोई एक रात शबे क़द्र है। इस रात को मख़्फ़ी (या'नी पोशीदा) रखने में एक ह़िक्मत येह भी है कि मुसल्मान इस रात की जुस्तुजू (या'नी

तलाश) में हर रात **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ की इबादत में गुज़ारने की कोशिश करें कि न जाने कौन सी रात, **शबे क़द्र** हो।

समुन्दर का पानी मीठा लगा (हिकायत) **: हज़रते** सय्यिदुना उ़स्मान इब्ने अबिल आ़स رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ के गुलाम ने उन से अ़र्ज़ की : "ऐ आक़ा (رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ) ! मुझे किश्ती बानी करते एक अ़र्सा गुज़रा, मैं ने समुन्दर के पानी में एक ऐसी अ़जीब बात महसूस की।" पूछा : "वोह अ़जीब बात क्या है ?" अ़र्ज़ की : "ऐ मेरे आक़ा (رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ) ! हर साल एक ऐसी रात भी आती है कि जिस में समुन्दर का पानी मीठा हो जाता है।" आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ ने गुलाम से फ़रमाया : "इस बार ख़याल रखना जैसे ही रात में पानी मीठा हो जाए मुझे मुत्तलअ़ करना।" जब रमज़ान की सत्ताईसवीं रात आई तो गुलाम ने आक़ा से अ़र्ज़ की, कि "आक़ा ! आज समुन्दर का पानी मीठा हो चुका है।" (تفسیرِ عزیزی ج۳ص۲۵۸، تفسیر کبیر ج۱۱ص۲۳۰) **अल्लाहु रब्बुल इ़ज़्ज़त** عَزَّوَجَلَّ **की उन पर रह़मत हो और उन के सदक़े हमारी बे हि़साब मग़्फ़िरत हो।**

اٰمین بِجاہِ النَّبِیِّ الْاَمین صَلَّی اللہ تعالٰی علیہ والہٖ وسلَّم

हमें अ़लामात क्यूं नज़र नहीं आतीं ? : प्यारे प्यारे इस्लामी भाइयो ! शबे क़द्र की मुतअ़द्दिद अ़लामात का ज़िक्र गुज़रा। हमारे ज़ेहन में येह सुवाल उभर सकता है कि हमारी उ़म्र के काफ़ी साल गुज़रे

हर साल शबे क़द्र आती और तशरीफ़ ले जाती है मगर हमें तो अब तक इस की अ़लामात नज़र नहीं आईं ? इस के जवाब में उ़लमाए किराम رَحِمَهُمُ اللّٰهُ السَّلَام फ़रमाते हैं : इन बातों का तअ़ल्लुक़ **कश्फ़ो करामत** से है, इन्हें आ़म आदमी नहीं देख सकता। सिर्फ़ वोही देख सकता है जिस को बसीरत (या'नी क़ल्बी नज़र) की ने'मत ह़ासिल हो। हर वक़्त मा'सियत की नजासत में लतपत रहने वाला गुनहगार इन्सान इन नज़्ज़ारों को कैसे देख सकता है !

आंख वाला तेरे जोबन का तमाशा देखे

दीदए कोर को क्या आए नज़र क्या देखे

त़ाक़ रातों में ढूंडो : उम्मुल मुअमिनीन ह़ज़रते सय्यिदतुना आ़इशा सिद्दीक़ा رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْهَا से रिवायत है : नबियों के सरताज, साह़िबे मे'राज صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने इर्शाद फ़रमाया : "**शबे क़द्र, रमज़ानुल मुबारक** के आख़िरी अ़शरे की **त़ाक़ रातों** (या'नी इक्कीसवीं, तेईसवीं, पच्चीसवीं, सत्ताईसवीं और उन्तीसवीं रातों) में तलाश करो।"

(بُخاری ج۱ص۶۶۱حدیث۲۰۱۷)

आख़िरी सात रातों में तलाश करो : ह़ज़रते सय्यिदुना **अ़ब्दुल्लाह** इब्ने उ़मर رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْهُمَا रिवायत करते हैं : बह़रो बर के बादशाह, दो आ़लम के शहन्शाह, उम्मत के ख़ैर ख़्वाह, आमिना

رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہَا के महरो माह صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم के बा'ज़ सहाबए किराम رِضْوَانُ اللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہِمْ اَجْمَعِیْن को ख़्वाब में आख़िरी सात रातों में **शबे क़द्र** दिखाई गई। मीठे मीठे आक़ा, मक्की मदनी मुस्तफ़ा صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने इर्शाद फ़रमाया : "मैं देखता हूं कि तुम्हारे ख़्वाब आख़िरी सात रातों में मुत्तफ़िक़ हो गए हैं। इस लिये इस का तलाश करने वाला इसे **आख़िरी सात रातों** में तलाश करे। (بُخاری ج ۱ ص ۶۶۰ حدیث ۲۰۱۵)

लयलतुल क़द्र पोशीदा क्यूं ? : प्यारे प्यारे इस्लामी भाइयो ! **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ की सुन्नते करीमा है कि उस ने बा'ज़ अहम तरीन मुआमलात को अपनी मशिय्यत से बन्दों पर पोशीदा रखा है। जैसा कि मन्कूल है : "**अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ ने अपनी **रिज़ा** को नेकियों में, अपनी **नाराज़ी** को गुनाहों में और अपने **औलिया** رَحِمَہُمُ اللّٰہُ تَعَالٰی को अपने बन्दों में पोशीदा रखा है।" (अख़्लाकुस्सालिहीन, स. 56) इस का ख़ुलासा है कि बन्दा छोटी समझ कर कोई नेकी न छोड़े। क्यूं कि वोह नहीं जानता कि **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ किस नेकी पर राज़ी होगा, हो सकता है ब ज़ाहिर छोटी नज़र आने वाली नेकी ही से **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ राज़ी हो जाए। मसलन क़ियामत के रोज़ एक गुनहगार शख़्स सिर्फ़ इस नेकी के इवज़ बख़्श दिया जाएगा कि उस ने एक प्यासे कुत्ते को दुन्या में पानी पिला दिया था। इसी त़रह अपनी नाराज़ी को गुनाहों में पोशीदा रखने की हिक्मत येह है कि बन्दा

किसी गुनाह को छोटा तसव्वुर कर के कर न बैठे, बस हर गुनाह से बचता रहे। क्यूं कि वोह नहीं जानता कि **अल्लाह तबारक व तआला** किस गुनाह से नाराज़ हो जाएगा। इसी त़रह़ औलिया رَحِمَهُمُ اللّٰهُ تَعَالٰی को बन्दों में इस लिये पोशीदा रखा है कि इन्सान हर नेक ह़क़ीक़ी पाबन्दे शर्अ़ मुसल्मान की रिआ़यत व ता'ज़ीम बजा लाए क्यूं कि हो सकता है कि "वोह" **वलिय्युल्लाह** हो। जब हम नेक लोगों की दिल से ता'ज़ीम किया करेंगे, बद गुमानी से बचते रहेंगे और हर मुसल्मान को अपने से अच्छा तसव्वुर करने लगेंगे तो हमारा मुआ़शरा भी सह़ीह़ हो जाएगा और اِنْ شَآءَاللّٰه عَزَّوَجَلَّ हमारी आ़क़िबत भी संवर जाएगी।

ह़िक्मतों के मदनी फूल : इमाम फ़ख़रुद्दीन राज़ी رَحْمَةُ اللّٰهِ تَعَالٰی عَلَيْه "तफ़्सीरे कबीर" में फ़रमाते हैं : **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ ने **शबे क़द्र** को चन्द वुजूह की बिना पर पोशीदा रखा है। **अव्वल** येह कि जिस त़रह़ दीगर अश्या को पोशीदा रखा, मसलन **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ ने अपनी **रिज़ा** को इत़ाअ़तों में पोशीदा फ़रमाया ताकि बन्दे हर इत़ाअ़त में रग़बत ह़ासिल करें। अपने **ग़ज़ब** को गुनाहों में पोशीदा फ़रमाया कि हर गुनाह से बचते रहें। अपने **वली** को लोगों में पोशीदा रखा ताकि लोग सब की ता'ज़ीम करें, **क़बूलिय्यते दुआ़** को दुआ़ओं में पोशीदा रखा कि सब दुआ़ओं में मुबालग़ा करें और **इस्मे आ'ज़म** को अस्मा में पोशीदा रखा कि सब

अस्मा की ता'ज़ीम करें। और **सलाते वुस्त़ा** को नमाज़ों में पोशीदा रखा कि तमाम नमाज़ों पर मुह़ाफ़ज़त (या'नी हमेशगी इख़्तियार) करें और **क़बूले तौबा** को पोशीदा रखा कि बन्दा तौबा की तमाम अक़्साम पर हमेशगी इख़्तियार करे, और **मौत** का वक़्त पोशीदा रखा कि मुकल्लफ़ (बन्दा) ख़ौफ़ खाता रहे। इसी त़रह़ **शबे क़द्र** को भी पोशीदा रखा कि **रमज़ानुल मुबारक** की तमाम रातों की ता'ज़ीम करे। **दूसरे** येह कि गोया **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ इर्शाद फ़रमाता है **:** "अगर मैं शबे क़द्र को मुअ़य्यन (Fix) कर (के तुझ पर ज़ाहिर फ़रमा) देता और येह कि मैं गुनाह पर तेरी जुरअत भी जानता हूं तो अगर कभी शह्वत तुझे इस रात में मा'सियत के कनारे ला छोड़ती और तू गुनाह में मुब्तला हो जाता तो तेरा इस रात को जानने के बा वुजूद गुनाह करना ला इल्मी के साथ गुनाह करने से बढ़ कर सख़्त होता, पस इस वज्ह से मैं ने इसे पोशीदा रखा। **तीसरे** येह कि मैं ने इस रात को पोशीदा रखा ताकि बन्दा इस की त़लब में मेह़नत करे और इस मेह़नत का सवाब कमाए। **चौथे** येह कि जब बन्दे को शबे क़द्र का तअ़य्युन ह़ासिल न होगा तो **रमज़ानुल मुबारक** की हर रात में **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ की इत़ाअ़त में कोशिश करेगा इस उम्मीद पर कि हो सकता है येही रात **शबे क़द्र** हो।" (تفسیرِ کبیر ج ۱۱ ص ۲۹ مُلَخَّصاً)

साल में कोई सी भी रात शबे क़द्र हो सकती है : शबे क़द्र

के तअ़य्युन में उ़लमाए किराम رَحِمَهُمُ اللّٰهُ السَّلَام का काफ़ी इख़्तिलाफ़ पाया जाता है। यहां तक कि बा'ज़ बुज़ुर्गों رَحِمَهُمُ اللّٰهُ تَعَالٰى के नज़्दीक शबे क़द्र पूरे साल में फिरती रहती है, मसलन फ़क़ीहुल उम्मह ह़ज़रते सय्यिदुना **अ़ब्दुल्लाह** इब्ने मस्ऊ़द رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰى عَنْهُ का फ़रमान है : शबे क़द्र वोही शख़्स पा सकता है जो पूरे साल की रातों पर तवज्जोह रखे। (تفسیر کبیر ج۱۱ ص۲۳۰) इस क़ौल की ताईद करते हुए इमामुल आ़रिफ़ीन सय्यिदुना शैख़ मुह़्युद्दीन इब्ने अ़रबी عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللّٰهِ الْقَوِی फ़रमाते हैं कि मैं ने शा'बानुल मुअ़ज़्ज़म की पन्दरहवीं शब (या'नी शबे बराअत) और एक बार शा'बानुल मुअ़ज़्ज़म ही की उन्नीसवीं शब में शबे क़द्र पाई है। नीज़ **रमज़ानुल मुबारक** की तेरहवीं शब और अठ्ठारहवीं शब में भी देखी, और मुख़्तलिफ़ सालों में **रमज़ानुल मुबारक** के आख़िरी अ़शरे की हर ताक़ रात में इसे पाया है। मज़ीद फ़रमाते हैं : अगर्चे ज़ियादा तर **शबे क़द्र** रमज़ान शरीफ़ में ही पाई जाती है ताहम मेरा तजरिबा तो येही है कि येह पूरा साल घूमती रहती है। या'नी हर साल के लिये इस की कोई एक ही रात मख़्सूस नहीं है। (اِتحافُ السّادَة ج٤ ص٣٩٢ ملخّصاً)

रह़मते कौनैन صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم की मअ़ शैख़ैन رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰى عَنْهُمَا जल्वा गरी :

اَلْحَمْدُ لِلّٰه عَزَّوَجَلَّ **दा'वते इस्लामी** के **मदनी माह़ोल** में **रमज़ानुल मुबारक** के ए'तिकाफ़ की ख़ूब बहारें

होती हैं, दुन्या के मुख़्तलिफ़ मक़ामात पर इस्लामी भाई मसाजिद में और इस्लामी बहनें "मस्जिदे बैत" में ए'तिकाफ़ की सआ़दत ह़ासिल करते और ख़ूब जल्वे समेटते हैं तरग़ीब के लिये एक **मदनी बहार** आप के गोश गुज़ार की जाती है : एक इस्लामी भाई के बयान का लुब्बे लुबाब है : मैं फ़िल्मों का ऐसा रसिया था कि हमारे गाउं की सीडीज़ की दुकान की तक़रीबन आधी सीडीज़ देख चुका था। اَلْحَمْدُ لِلّٰه عَزَّوَجَلَّ मुझे त़लबानी गाउं की मदनी मस्जिद में आख़िरी अ़शरए **रमज़ानुल मुबारक** (1422 सि.हि., 2001 सि.ई.) के **ए'तिकाफ़** की सआ़दत नसीब हो गई। दा'वते इस्लामी के आ़शिक़ाने रसूल की सोह़बत की बरकतों के क्या कहने ! **27 रमज़ानुल मुबारक** का ना क़ाबिले फ़रामोश ईमान अफ़रोज़ वाक़िआ़ तह़दीसे ने'मत के लिये अ़र्ज़ करता हूं : शब भर बेदार रह कर मैं ने ख़ूब रो रो कर **सरकारे नामदार** صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم से **दीदार** की भीक मांगी। اَلْحَمْدُ لِلّٰه عَزَّوَجَلَّ सुब्ह़ दम मुझ पर बाबे करम खुल गया, मैं ने आ़लमे ग़ुनूदगी में अपने आप को किसी मस्जिद के अन्दर पाया, इतने में किसी ने ए'लान किया : "**सरकारे मदीना** صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم **तशरीफ़ लाएंगे और नमाज़ की इमामत फ़रमाएंगे।**" कुछ ही देर में रह़मते कौनैन, सुल्त़ाने दारैन,

नानाए हसनैन, हम दुख्या दिलों के चैन, मअ़ शैख़ैने करीमैन صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم و رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْهُم اَجْمَعِین जल्वा नुमा हो गए और मेरी आंख खुल गई। सिर्फ़ एक झलक नज़र आई और वोह **हसीन जल्वा** निगाहों से ओझल हो गया, इस पर दिल एक दम भर आया और आंखों से सैले अश्क रवां हो गया यहां तक कि रोते रोते मेरी हिचकियां बंध गईं ऐ काश !

इतनी मुद्दत तक हो दीदे मुस्हफ़े आ़रिज़ नसीब

हिफ़्ज़ कर लूं नाज़िरा पढ़ पढ़ के क़ुरआने जमाल

(ज़ौक़े ना'त)

اَلْحَمْدُ لِلّٰه عَزَّوَجَلَّ इस के बा'द मेरे दिल में तब्लीग़े क़ुरआनो सुन्नत की आ़लमगीर ग़ैर सियासी तह़रीक, **दा'वते इस्लामी** की मह़ब्बत और बढ़ गई बल्कि मैं **दा'वते इस्लामी** ही का हो कर रह गया। घर से तरकीब बना कर मैं ने **दर्से निज़ामी** करने के लिये **जामिअ़तुल मदीना** में दाख़िला ले लिया। येह बयान देते वक़्त दरजए ऊला में इ़ल्मे दीन ह़ासिल करने के साथ साथ तन्ज़ीमी त़ौर पर एक ज़ैली ह़ल्क़े के **क़ाफ़िला ज़िम्मादार** की ह़ैसिय्यत से **दा'वते इस्लामी** के मदनी कामों की धूमें मचाने की कोशिश कर रहा हूं।

जल्वए यार की आरज़ू है अगर, मदनी माह़ोल में कर लो तुम ए'तिकाफ़

मीठे आक़ा करेंगे करम की नज़र, मदनी माहोल में कर लो तुम ए'तिकाफ़

(वसाइले बख़्शिश, स. 639)

صَلُّوا عَلَى الْحَبِيب! صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلٰى مُحَمَّد

इमामे आ'ज़म, इमामे शाफ़ेई और साहिबैन के अक़्वाल : **सय्यिदुना** इमामे आ'ज़म **अबू हनीफ़ा** رَضِىَ اللّٰهُ تَعَالٰى عَنْهُ से इस बारे में दो क़ौल मन्क़ूल हैं : ﴾1﴿ **लयलतुल क़द्र रमज़ानुल मुबारक** ही में है लेकिन कोई रात मुअ़य्यन (Fix) नहीं ﴾2﴿ सय्यिदुना इमामे आ'ज़म **अबू हनीफ़ा** رَضِىَ اللّٰهُ تَعَالٰى عَنْهُ का एक मश्हूर क़ौल येह है कि **लयलतुल क़द्र** पूरा साल घूमती रहती है, कभी **माहे रमज़ानुल मुबारक** में होती है और कभी दूसरे महीनों में। येही क़ौल सय्यिदुना **अ़ब्दुल्लाह** इब्ने अ़ब्बास, सय्यिदुना **अ़ब्दुल्लाह** इब्ने मस्ऊ़द और सय्यिदुना इ़क्रमा رَضِىَ اللّٰه تَعَالٰى عَنْهُم اَجْمَعِين से भी मन्क़ूल है।

(عُمدةُ القارى ج۸ ص ۲۵۳ تحت الحديث ۲۰۱۰)

सय्यिदुना इमाम शाफ़ेई عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللّٰهِ الْقَوِى के नज़्दीक "शबे क़द्र" **रमज़ानुल मुबारक** के आख़िरी अ़शरे में है और इस की रात मुअ़य्यन (Fix) है, इस में क़ियामत तक तब्दीली नहीं होगी। (اَيضاً)

सय्यिदुना इमाम अबू यूसुफ़ और सय्यिदुना **इमाम मुहम्मद** رَحْمَةُ اللّٰهِ تَعَالٰى عَلَيْهِمَا के नज़्दीक **लयलतुल क़द्र रमज़ानुल मुबारक** ही में

है लेकिन कोई रात मुअ़य्यन (Fix) नहीं। और इन का एक क़ौल येह है कि **रमज़ानुल मुबारक** की **आख़िरी पन्दरह** रातों में **लयलतुल क़द्र** होती है। (اَیضاً)

शबे क़द्र बदलती रहती है : सय्यिदुना इमामे मालिक رَحْمَۃُ اللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہ के नज़्दीक **शबे क़द्र रमज़ानुल मुबारक** के आख़िरी अ़शरे की **ताक़ रातों** में होती है। मगर कोई एक रात मख़्सूस नहीं, हर साल इन ताक़ रातों में घूमती रहती है, या'नी कभी इक्कीसवीं शब **लयलतुल क़द्र** हो जाती है तो कभी तेईसवीं, कभी पच्चीसवीं तो कभी सत्ताईसवीं और कभी कभी उन्तीसवीं शब भी **शबे क़द्र** हो जाया करती है। (عمدۃُ القاری ج۱ص۳۳۵)

शैख़ अबुल ह़सन शाज़िली عَلَیْہِ رَحْمَۃُ اللّٰہِ الْوَلِی **और शबे क़द्र : सिल्सिलए** क़ादिरिय्या शाज़िलिय्या के अ़ज़ीम पेशवा ह़ज़रते सय्यिदुना शैख़ अबुल ह़सन शाज़िली عَلَیْہِ رَحْمَۃُ اللّٰہِ الْوَلِی (मुतवफ़्फ़ा 656 हि.) फ़रमाते हैं : "जब कभी **इतवार** या **बुध** को पहला रोज़ा हुवा तो **उन्तीसवीं शब**, अगर **पीर** का पहला रोज़ा हुवा तो **इक्कीसवीं** शब, अगर पहला रोज़ा **मंगल** या **जुमुआ** को हुवा तो **सत्ताईसवीं** शब अगर पहला रोज़ा **जुमे'रात** को हुवा तो **पच्चीसवीं शब** और अगर पहला रोज़ा **सनीचर** को हुवा तो मैं ने **तेईसवीं शब** में **शबे क़द्र** को पाया।" (تفسیرِ صاوی ج۶ص۲۴۰۰)

फ़रमाने मुस्तफ़ा صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰی عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم : बरोज़े क़ियामत लोगों में से मेरे क़रीब तर वोह होगा जिस ने दुन्या में मुझ पर ज़ियादा दुरूदे पाक पढ़े होंगे। (ترمذی)

सत्ताईसवीं रात शबे क़द्र : अगर्चे बुज़ुर्गाने दीन और मुफ़स्सिरीन व मुह़द्दिसीन رَحِمَهُمُ اللّٰهُ تَعَالٰی اَجْمَعِيْن का शबे क़द्र के तअ़य्युन में इख़्तिलाफ़ है, ताहम भारी अक्सरिय्यत की राय येही है कि हर साल माहे **रमज़ानुल मुबारक** की **सत्ताईसवीं शब** ही **शबे क़द्र** है। सय्यिदुल अन्सार, सय्यिदुल कुर्रा, ह़ज़रते सय्यिदुना उबय्यिब्नि का'ब رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْهُ के नज़्दीक **सत्ताईसवीं शबे रमज़ान** ही "शबे क़द्र" है।

(مسلم ص ۳۸۳ حدیث ۷۶۲)

ह़ज़रते सय्यिदुना शाह अ़ब्दुल अ़ज़ीज़ मुह़द्दिस देहलवी عَلَيْهِ رَحمَةُ اللّٰهِ الْقَوِی भी फ़रमाते हैं कि **शबे क़द्र** रमज़ान शरीफ़ की **सत्ताईसवीं रात** होती है। अपने बयान की ताईद के लिये उन्हों ने दो दलाइल बयान फ़रमाए हैं : ﴾1﴿ "**लयलतुल क़द्र**" में नव हुरूफ़ हैं और येह कलिमा **सूरतुल क़द्र** में तीन मर्तबा है, इस त़रह "तीन" को "नव" से ज़र्ब देने से ह़ासिले ज़र्ब "**सत्ताईस**" आता है जो कि इस बात की त़रफ़ इशारा करता है कि शबे क़द्र **सत्ताईसवीं रात** है। ﴾2﴿ इस सूरए मुबारका में तीस कलिमात (या'नी तीस अल्फ़ाज़) हैं। **सत्ताईसवां कलिमा** "هِیَ" है जिस का मर्कज़ **लयलतुल क़द्र** है। गोया **अल्लाह तबारक व तआ़ला** की त़रफ़ से नेक लोगों के लिये येह इशारा है कि रमज़ान शरीफ़ की **सत्ताईसवीं शबे क़द्र** होती है। (تفسیر عزیزی ج ۳ ص ۲۵۹ ملخّصاً)

फ़रमाने मुस्तफ़ा صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم : जिस ने मुझ पर एक मर्तबा दुरूदे पाक पढ़ा अल्लाह उस पर दस रह़मतें भेजता और उस के नामए आ'माल में दस नेकियां लिखता है। (ترمذی)

गोया शबे क़द्र ह़ासिल कर ली : फ़रमाने मुस्त़फ़ा

صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم : जिस ने لَآ اِلٰہَ اِلَّا اللّٰہُ الْحَلِیْمُ الْکَرِیْمُ سُبْحٰنَ اللّٰہِ رَبِّ السَّمٰوٰتِ السَّبْعِ وَرَبِّ الْعَرْشِ الْعَظِیْمِ''[1] **तीन मर्तबा** पढ़ा तो उस ने गोया **शबे क़द्र** ह़ासिल कर ली। (ابنِ عساکر ج ٦٥ ص ٢٧٦) हो सके तो हर रात तीन बार येह दुआ़ पढ़ लेनी चाहिये।

रिज़ाए इलाही عَزَّوَجَلَّ के ख़्वाहिश मन्दो ! हो सके तो सारा ही साल हर रात एहतिमाम के साथ कुछ न कुछ नेक अ़मल कर लेना चाहिये कि न जाने कब **शबे क़द्र** हो जाए। हर रात में दो फ़र्ज़ नमाज़ें आती हैं, दीगर नमाज़ों के साथ साथ मग़रिब व इशा की नमाज़ों की जमाअ़त का भी ख़ूब एहतिमाम होना चाहिये कि अगर **शबे क़द्र** में इन दोनों की जमाअ़त नसीब हो गई तो اِنْ شَآءَ اللّٰہ عَزَّوَجَلَّ बेड़ा ही पार है, बल्कि इसी त़रह़ पांचों नमाज़ों के साथ साथ रोज़ाना इशा व फ़ज्र की जमाअ़त की भी ख़ुसूसिय्यत के साथ आ़दत डाल लीजिये। दो फ़रामीने मुस्त़फ़ा صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم मुलाह़ज़ा हों : ﴿1﴾ जिस ने इशा की नमाज़ बा जमाअ़त पढ़ी उस ने गोया आधी रात क़ियाम किया और जिस ने फ़ज्र की नमाज़ बा जमाअ़त अदा की उस ने गोया पूरी रात क़ियाम किया। (مُسلم ص ٣٢٩ حدیث ٦٥٦) ﴿2﴾ ''जिस ने इशा की नमाज़ बा जमाअ़त पढ़ी

मدینہ

1 : **तरजमा** : या'नी **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ के सिवा कोई इबादत के लाइक़ नहीं जो ह़िल्म वाला और करम वाला है, **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ पाक है जो सातों आस्मानों और बड़े अ़र्श का मालिक है।

फ़रमाने मुस्तफ़ा صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم : शबे जुमुआ और रोजे़ जुमुआ मुझ पर दुरूद की कसरत कर लिया करो जो ऐसा करेगा क़ियामत के दिन मैं उस का शफ़ीअ़ व गवाह बनूंगा। (شعب الايمان)

तह़क़ीक़ उस ने **लयलतुल क़द्र** से अपना ह़िस्सा ह़ासिल कर लिया।"

(مُعجَم كبير ج٨ص١٧٩حديث٧٧٤٥)

अल्लाह عَزَّوَجَلَّ की रह़मत के मुतलाशियो ! अगर तमाम साल येही आ़दते जमाअ़त रही तो शबे क़द्र में भी इन दोनों नमाज़ों की जमाअ़त اِنْ شَآءَاللّٰه عَزَّوَجَلَّ नसीब हो जाएगी और रात भर सोने के बा वुजूद اِنْ شَآءَاللّٰه عَزَّوَجَلَّ रोज़ाना की त़रह़ शबे क़द्र में भी गोया सारी रात की इ़बादत करने वाले क़रार पाएंगे।

शबे क़द्र की दुआ़ : उम्मुल मुअमिनीन ह़ज़रते सय्यिदतुना आ़इशा सिद्दीक़ा رَضِىَ اللّٰهُ تَعَالٰى عَنْهَا रिवायत फ़रमाती हैं : मैं ने बारगाहे रिसालत صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم में अ़र्ज़ की : "**या रसूलल्लाह** صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ! अगर मुझे **शबे क़द्र** का इ़ल्म हो जाए तो क्या पढ़ूं ?" फ़रमाया : "इस त़रह़ दुआ़ मांगो :

اَللّٰهُمَّ اِنَّكَ عَفُوٌّ كَرِيْمٌ تُحِبُّ الْعَفْوَ فَاعْفُ عَنِّى या'नी ऐ **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ ! बेशक तू मुआ़फ़ फ़रमाने वाला है और मुआ़फ़ी देना पसन्द करता है लिहाज़ा मुझे मुआ़फ़ फ़रमा दे।"

(ترمذی ج٥ص٣٠٦حديث٣٥٢٤)

प्यारे प्यारे इस्लामी भाइयो ! काश ! हम रोज़ाना रात येह दुआ़ कम अज़ कम एक बार ही पढ़ लिया करें कि कभी तो **शबे क़द्र** नसीब हो जाएगी। और सत्ताईसवीं शब तो येह दुआ़ बारहा पढ़नी चाहिये।

शबे क़द्र के नवाफ़िल : हज़रते सय्यिदुना इस्माईल हक़्क़ी عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللهِ الْقَوِى "तफ़्सीरे रूहुल बयान" में येह रिवायत नक़्ल करते हैं : जो **शबे क़द्र** में इख़्लासे निय्यत से नवाफ़िल पढ़ेगा उस के अगले पिछले गुनाह मुआफ़ हो जाएंगे। (رُوحُ الْبَيان ج١٠ ص٤٨٠)

सरकारे मदीना صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم जब **रमज़ानुल मुबारक** के **आख़िरी दस दिन** आते तो इबादत पर कमर बांध लेते, उन में रातें जागा करते और अपने अह्ल को जगाया करते। (ابنِ ماجه ج٢ص٣٥٧حديث١٧٦٨)

हज़रते सय्यिदुना इस्माईल हक़्क़ी عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللهِ الْقَوِى नक़्ल करते हैं कि **बुज़ुर्गाने दीन** رَحِمَهُمُ اللهُ الْمُبِين इस अ़शरे की हर रात में दो रक्अ़त नफ़्ल **शबे क़द्र** की निय्यत से पढ़ा करते थे। नीज़ बा'ज़ अकाबिर से मन्क़ूल है कि जो **हर रात दस आयात** इस निय्यत से पढ़ ले तो इस की बरकत और सवाब से महरूम न होगा।

प्यारे प्यारे इस्लामी भाइयो ! यक़ीनन येह रात मम्बए़ बरकात है। चुनान्चे **हज़रते** सय्यिदुना अनस बिन मालिक رَضِىَ اللهُ تَعَالٰى عَنْه फ़रमाते हैं : एक बार जब **माहे रमज़ान शरीफ़** तशरीफ़ लाया तो हुज़ूरे अन्वर, शाफ़ेए़ महशर, मदीने के ताजवर, बि इज़्ने रब्बे अक्बर ग़ैबों से बा ख़बर, महबूबे दावर صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया : "तुम्हारे पास येह महीना आया है जिस में एक रात ऐसी भी है जो **हज़ार महीनों** से बेहतर है जो शख़्स इस रात से महरूम रह गया, गोया तमाम की तमाम भलाई से महरूम रह गया और इस

की भलाई से मह़रूम नहीं रहता मगर वोह शख़्स जो ह़क़ीक़तन मह़रूम है।"

(ابنِ ماجه ج٢ص٢٩٨حديث١٦٤٤)

ऐ हमारे प्यारे प्यारे अल्लाह عَزَّوَجَلَّ ! अपने प्यारे ह़बीब صَلَّى اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم के तुफ़ैल हम गुनाहगारों को **लयलतुल क़द्र** की बरकतों से मालामाल कर और ज़ियादा से ज़ियादा अपनी इबादत की तौफ़ीक़ मर्ह़मत फ़रमा। اٰمِین بِجاہِ النَّبِیِّ الْاَمین صَلَّی اللّٰہ تعالٰی علیہ واٰلہٖ وسلَّم

लयलतुल क़द्र में मत़्लइल फ़ज्रे ह़क़

मांग की इस्तिक़ामत पे लाखों सलाम

(ह़दाइक़े बख़्शिश, स. 299)

बेटी के सात हुक़ूक़

मेरे आक़ा आ'ला ह़ज़रत इमाम अह़मद रज़ा ख़ान عَلَیْہِ رَحمَۃُ الرَّحْمٰن फ़रमाते हैं ❁ बेटी के पैदा होने पर नाख़ुशी न करे बल्कि ने'मते इलाहिय्यह जाने ❁ बेटियों से ज़ियादा दिलजोई व ख़ात़िर दारी रखे कि इन का दिल बहुत थोड़ा होता है ❁ देने में इन्हें और बेटों को कांटे (या'नी तराज़ू) की तोल बराबर रखे ❁ जो चीज़ दे पहले इन्हें (या'नी बेटियों को) दे कर (फिर) बेटों को दे ❁ नव बरस की उ़म्र से न अपने पास सुलाए न (इस के सगे) भाई वग़ैरा के साथ सोने दे ❁ इस उ़म्र से ख़ास निगह दाश्त (कड़ी देखभाल) शुरूअ़ करे, शादी बरात में जहां गाना नाच हो हरगिज़ न जाने दे ❁ किसी फ़ासिक़ फ़ाजिर ख़ुसूसन बद मज़्हब के निकाह़ में न दे। (माख़ूज़ अज़ : मश्अ़लतुल इर्शाद, स. 27 ता 28)

रमज़ान शरीफ़ को भारी महीना कहना

सुवाल : रमज़ानुल मुबारक की आमद पर इस त़रह़ कहना कैसा कि बहुत भारी महीना आ गया ?

जवाब : फ़ुक़हाए किराम رَحِمَهُمُ اللّٰهُ السَّلَام फ़रमाते हैं : जो **रमज़ानुल मुबारक** की तौहीन की निय्यत से कहे : "बड़ा भारी महीना आ गया ।" वोह **काफ़िर** है । (اَلْبَحْرُ الرَّائِق ج٥ ص ٢٠٦) हां अगर **रोज़ा** रखना उस पर मुश्किल है और इस वज्ह से येह कहता है और **रोज़े** की तौहीन इस का मक़्सद नहीं तो **कुफ़्र** नहीं । लेकिन इस त़रह़ कहना नहीं चाहिये कि **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ की इबादत से दिल तंग होना बुरा है ।

(कुफ़्रिय्या कलिमात के बारे में सुवाल जवाब, स. 379)

रोज़ों की ता'दाद से बेज़ारी का इज़्हार

सुवाल : रमज़ानुल मुबारक के रोज़ों की ता'दाद के बारे में येह कहना कैसा कि अब तो **रोज़े** रख रख कर मैं **बोर** हो गया हूं ?

जवाब : इस जुम्ले में कुफ़्रिय्या पहलू मौजूद है । चुनान्चे "फ़तावा आ़लमगीरी" में है : जो **रोज़ए रमज़ान** के बारे में कहे : "कितने ज़ियादा हैं मेरा तो दिल उक्ता गया है ।" येह क़ौल **कुफ़्र** है ।

(عالمگیری ج٢ ص٢٧٠)

अल वदाअ़ माहे रमज़ान

SINGLE 1122 A

क़ल्बे आ़शिक़ है अब पारा पारा
अल वदाअ़ अल वदाअ़ आह ! रमज़ां

(इस कलाम में बीच में कहीं कहीं मिसरए़ किसी ना मा'लूम शाइ़र के हैं, कलाम निहायत पुरसोज़ था इस लिये किसी की फ़रमाइश पर उसी कलाम की मदद से अपने मुतलातिम जज़्बात को अल्फ़ाज़ के क़ालिब में ढालने की सअ़य की है)

क़ल्बे आ़शिक़ है अब पारा पारा
अल वदाअ़ अल वदाअ़ आह ! रमज़ां

कुल्फ़ते[1] हिज्रो फ़ुरक़त ने मारा
अल वदाअ़ अल वदाअ़ आह ! रमज़ां

तेरे आने से दिल ख़ुश हुवा था
और ज़ौक़े इ़बादत बढ़ा था

आह ! अब दिल पे है ग़म का ग़लबा
अल वदाअ़ अल वदाअ़ आह ! रमज़ां

मस्जिदों में बहार आ गई थी
जूक़ दर जूक़ आते नमाज़ी

हो गया कम नमाज़ों का जज़्बा
अल वदाअ़ अल वदाअ़ आह ! रमज़ां

बज़्मे इफ़्तार सजती थी कैसी !
ख़ूब सह़री की रौनक़ भी होती

सब समां हो गया सूना सूना
अल वदाअ़ अल वदाअ़ आह ! रमज़ां

तेरे दीवाने अब रो रहे हैं
मुज़्त़रिब सब के सब हो रहे हैं

हाए अब वक़्ते रुख़्सत है आया
अल वदाअ़ अल वदाअ़ आह ! रमज़ां

तेरा ग़म हम को तड़पा रहा है
आतशे शौक़ भड़का रहा है

फट रहा है तेरे ग़म में सीना
अल वदाअ़ अल वदाअ़ आह ! रमज़ां

याद रमज़ां की तड़पा रही है
आंसूओं की झड़ी लग गई है

कह रहा है येह हर एक क़त़रा
अल वदाअ़ अल वदाअ़ आह ! रमज़ां

مدینہ

1 : रन्ज, तक्लीफ़

दिल के टुकड़े हुए जा रहे हैं
रो रो कहता है हर इक बिचारा
ह़स्रता माहे रमज़ां की रुख़्सत
कौन देगा इन्हें अब दिलासा
कोहे ग़म आशिक़ों पर पड़ा है
कह रहा है येह हर ग़म का मारा
तुम पे लाखों सलाम आह ! रमज़ां
जाओ ह़ाफ़िज़ ख़ुदा अब तुम्हारा
नेकियां कुछ न हम कर सके हैं
हाए ! ग़फ़्लत में तुझ को गुज़ारा
वासित़ा तुझ को मीठे नबी का
रोज़े मह़शर हमें बख़्शवाना
जब गुज़र जाएंगे माह ग्यारह
क्या मेरी ज़िन्दगी का भरोसा
माहे रमज़ां की रंगीं फ़ज़ाओ !
लो सलाम आख़िरी अब हमारा
कुछ न ह़ुस्ने अ़मल कर सका हूं
बस येही है मेरा कुल असासा
हाए अ़त़्तारे बदकार काहिल
इस से ख़ुश हो के होना रवाना
साले आयिन्दा शाहे ह़रम तुम
तुम मदीने में रमज़ां दिखाना

तेरे आ़शिक़ मरे जा रहे हैं
अल वदाअ़ अल वदाअ़ आह ! रमज़ां
क़ल्बे उ़श्शाक़ पर है क़ियामत
अल वदाअ़ अल वदाअ़ आह ! रमज़ां
हर कोई ख़ून अब रो रहा है
अल वदाअ़ अल वदाअ़ आह ! रमज़ां
अल वदाअ़ आह ! ऐ रब के मेहमां !
अल वदाअ़ अल वदाअ़ आह ! रमज़ां
आह ! इस्यां में ही दिन कटे हैं
अल वदाअ़ अल वदाअ़ आह ! रमज़ां
ह़श्र में हम को मत भूल जाना
अल वदाअ़ अल वदाअ़ आह ! रमज़ां
तेरी आमद का फिर शोर होगा
अल वदाअ़ अल वदाअ़ आह ! रमज़ां
अब्रे रह़मत से मम्लू हवाओ
अल वदाअ़ अल वदाअ़ आह ! रमज़ां
नज़्र चन्द अश्क मैं कर रहा हूं
अल वदाअ़ अल वदाअ़ आह ! रमज़ां
रह गया येह इबादत से ग़ाफ़िल
अल वदाअ़ अल वदाअ़ आह ! रमज़ां
करना अ़त़्तार पर येह करम तुम
अल वदाअ़ अल वदाअ़ आह ! रमज़ां

(वसाइले बख़्शिश, स. 651)

ह़स्रता वा ह़स्रता ऐ माहे रमज़ां ! अल वदाअ़

आह ! क्या माहे मुबारक हम से होता है जुदा
आह ! जब इस में नहीं हम से हुई त़ाअ़त अदा
अल वदाओ़ वल वदाअ़ ऐ माहे ग़ुफ़्रां ! अल वदाअ़
अल फ़िराक़ ! ऐ माहे रमज़ां ! अल फ़िराक़ो वल फ़िराक़ !
दर्द पहुंचाता रहेगा दिल को तेरा इश्तियाक़
फिर न क्यूं कहते रहें ऐ वक़्ते हिजरां ! अल वदाअ़
ऐ महे फ़रख़ुन्दा पे ! अफ़्सोस ! हम ग़ाफ़िल रहे
नीं हुई हैहात ! हम से नेकियां जूं चाहिये
इस लिये कहते हैं अब हम अश्क रेज़ां अल वदाअ़
तेरे आने से ज़माना चौ त़रफ़ पुरनूर था
रोज़ादारों का भी था चेहरा बड़ा रौनक़ भरा
हैं ज़बानो जानो दिल गोया हिरासां अल वदाअ़
आह ! ऐ रमज़ां ! कोई दम का तू अब मेहमान है
कोई तड़पे तो कोई तस्वीर सा हैरान है
फिर न क्यूं रो रो कहें, उ़श्शाक़े रमज़ां अल वदाअ़
आह ! अब जाता है तू ऐ माहे रमज़ां ! अस्सलाम
फिर तेरे बरकात होवें नश्र आ़लम में तमाम
अस्सलाम ऐ आ़ज़िमे दरगाहे सुब्ह़ां ! अल वदाअ़
ऐ महे रमज़ान ! मह़शर में ब दरगाहे इलाह
और हमारी मग़्फ़िरत के वासित़े हो उ़ज़्र ख़्वाह
ऐ शफ़ीए़ साइरे अरबाबे इस्यां ! अल वदाअ़

आह ! कैसा मम्बए़ बरकात दुन्या से चला
फिर वदाअ़ इस को न क्यूं रो रो करें ऐसा बजा
ह़स्रता वा ह़स्रता ऐ माहे रमज़ां ! अल वदाअ़
तेरी फ़ुरक़त और जुदाई है निहायत हम पे शाक़
तुझ से फिर मिलने का होगा या न होगा इत्तिफ़ाक़
ह़स्रता वा ह़स्रता ऐ माहे रमज़ां ! अल वदाअ़
क़द्रदानी से तेरी हम रोज़ो शब काहिल रहे
तेरी ह़ुरमत कुछ न की हम ने पशेमां ही रहे
ह़स्रता वा ह़स्रता ऐ माहे रमज़ां ! अल वदाअ़
मस्जिदो मेह़राबो मिम्बर जगमगाते जा बजा
आह ! ऐसी बरकतें अब हम से होती हैं जुदा
ह़स्रता वा ह़स्रता ऐ माहे रमज़ां ! अल वदाअ़
तेरा हर आ़शिक़ जुदाई से तेरी बे जान है
आह ! येह ग़मगीं दिलों का दर्द बे दरमान है
ह़स्रता वा ह़स्रता ऐ माहे रमज़ां ! अल वदाअ़
काश ! फिर लावे तुझे दुन्या में जब रब्बुल अनाम
हम भी ज़िन्दा रह के देखें फिर सुहाने सुब्ह़ो शाम
ह़स्रता वा ह़स्रता ऐ माहे रमज़ां ! अल वदाअ़
हम गुनहगारों के ईमां पर करम से हो गवाह
और दिलवा दे हमें नारे जहन्नम से पनाह
ह़स्रता वा ह़स्रता ऐ माहे रमज़ां ! अल वदाअ़

हुवा जाता है रुख़्सत माहे रमज़ां या रसूलल्लाह

हुवा जाता है रुख़्सत माहे रमज़ां या रसूलल्लाह   रहा अब चन्द घड़ियों का येह मेहमां या रसूलल्लाह

ख़ुशी की लहर दौड़ी हर त़रफ़ रमज़ान जब आया   हैं अब रन्जीदा रन्जीदा मुसल्मां या रसूलल्लाह

मसर्रत ही मसर्रत और ख़ुशी ही थी ख़ुशी जिस दम   नज़र आया हिलाले माहे रमज़ां या रसूलल्लाह

शहा ! अब ग़म के मारे ख़ून के आंसू बहाते हैं   चला तड़पा के हाए माहे रमज़ां या रसूलल्लाह

चला अब जल्द येह रमज़ां सताईस[27] आ गई तारीख़   फ़क़त दो[2] दिन का अब रमज़ां है मेहमां या रसूलल्लाह

फ़ज़ाएं नूर बरसातीं हवाएं मुस्कुराती थीं   समां अब हो गया हर सम्त वीरां या रसूलल्लाह

रियाज़त कुछ न की हम ने इ़बादत कुछ न की हम ने   रहे बस हर घड़ी मश्ग़ूले इ़स्यां या रसूलल्लाह

मैं हाए जी चुराता ही रहा रब की इ़बादत से   गुज़ारा ग़फ़्लतों में सारा रमज़ां या रसूलल्लाह

मैं सोता रह गया ग़फ़्लत की चादर तान कर अफ़्सोस   ख़ुदारा मेरी बख़्शिश का हो सामां या रसूलल्लाह

जुदाई की घड़ी जांसोज़ है उ़श्शाक़े रमज़ां पर   चला इन को रुला कर माहे रमज़ां या रसूलल्लाह

तड़पते हैं बिलक्ते हैं क़रार आता नहीं इन को   बहुत बेचैन हैं उ़श्शाक़े रमज़ां या रसूलल्लाह

गुनाहों की सियाही छा रही है रुख़ पे मह़शर में   मेरा चेहरा पए रमज़ां हो ताबां या रसूलल्लाह

महे रमज़ां की रुख़्सत जाने आ़शिक़ पर क़ियामत है   गदा तेरे हैं हैरानो परेशां या रसूलल्लाह

ख़ुदा के नेक बन्दे नेकियों में लग गए लेकिन
गुनह करता रहा अ़त्तारे नादां या रसूलल्लाह

(वसाइले बख़्शिश, स. 678)

اَلْحَمْدُ لِلّٰهِ رَبِّ الْعٰلَمِیْنَ وَالصَّلٰوۃُ وَالسَّلَامُ عَلٰی سَیِّدِ الْمُرْسَلِیْنَ
اَمَّا بَعْدُ فَاَعُوْذُ بِاللّٰهِ مِنَ الشَّیْطٰنِ الرَّجِیْمِ ؕ بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِیْمِ ؕ

अल वदाअ़ माहे रमज़ान

दुरूद शरीफ़ की फ़ज़ीलत : सरवरे काएनात, शाहे मौजूदात صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم का इर्शाद है : "जिस ने मुझ पर एक बार दुरूदे पाक पढ़ा **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ उस पर दस रह़मतें भेजता है।" (مُسلِم ص٢١٦ حديث٤٠٨)

صَلُّوْا عَلَى الْحَبِیْب ! صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلٰى مُحَمَّد

"अल वदाअ़ माहे रमज़ान" पढ़ना जाइज़ है : "अल वदाअ़ माहे रमज़ान" के ऐसे अश्आ़र जिन में कोई शरई ख़राबी न हो उन का पढ़ना सुनना मुबाह़ व जाइज़ है, अलबत्ता इस में सवाब ह़ासिल करने के लिये **अच्छी निय्यत** ज़रूरी है और जिस क़दर **अच्छी निय्यतें** ज़ियादा होंगी उसी क़दर सवाब भी ज़ियादा मिलेगा।

"रमज़ानुल मुबारक" के बारह ह़ुरूफ़ की निस्बत से "अल वदाअ़ माहे रमज़ान" के मुतअ़ल्लिक़ 12 निय्यतें

﴾1﴿ **"अल वदाअ़ माहे रमज़ान"** पढ़ने सुनने के ज़रीए़ वा'ज़ो नसीह़त ह़ासिल करूंगा ﴾2﴿ **अल्लाह व रसूल** عَزَّوَجَلَّ و صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم

की मह़ब्बत, **माहे रमज़ानुल मुबारक** की उल्फ़त दिल में बढ़ाऊंगा ﴾3﴿ नेकियों में रग़बत ह़ासिल करूंगा ﴾4﴿ गुनाहों से बचने का ज़ेहन बनाऊंगा। (येह **निय्यतें** उसी सूरत में दुरुस्त होंगी जब कि पढ़ा जाने वाला कलाम शरीअ़त के मुत़ाबिक़ हो और उस में वा'ज़ो नसीह़त वग़ैरा शामिल भी हो) ﴾5﴿ **रमज़ानुल मुबारक** की आख़िरी घड़ी तक बारगाहे इलाही में अपनी मग़्फ़िरत के लिये वक़्तन फ़ वक़्तन गिर्या व ज़ारी की कोशिश करता रहूंगा। (आह ! आह ! आह ! एक **फ़रमाने मुस्त़फ़ा** صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم में येह भी है : "मह़रूम है वोह शख़्स जिस ने **रमज़ान** को पाया और उस की **मग़्फ़िरत** न हुई कि **जब इस की रमज़ान में मग़्फ़िरत न हुई तो फिर कब होगी !"** (مُعجَم اَوسَط ج ٥ ص ٣٦٦ حديث ٧٦٢٧)

वासित़ा रमज़ान का या रब ! हमें तू बख़्श दे
नेकियों का अपने पल्ले कुछ नहीं सामान है

(वसाइले बख़्शिश, स. 704)

صَلُّوا عَلَى الْحَبِيب ! صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلٰى مُحَمَّد

﴾6﴿ इस निय्यत से "अल वदाअ़ माहे रमज़ान" के इज्तिमाअ़ में शिर्कत करूंगा कि नेकियों का जज़्बा बाक़ी रहे बल्कि मज़ीद बढ़े। (क्यूं कि **माहे रमज़ानुल मुबारक** में नेक लोगों के अन्दर नेकियों का जज़्बा बढ़ जाता है) ﴾7﴿ बहुत से लोग ख़ौफ़े ख़ुदा के सबब गुनाहों से रुक जाते हैं मगर

अफ़्सोस ! रमज़ान शरीफ़ जूं ही रुख़्सत होता है बे अ़मली एक बार फिर बढ़ जाती है और नमाज़ियों की ता'दाद में भी कमी आ जाती है, आह ! मस्जिदें ख़ाली ख़ाली नज़र आती हैं, इन तसव्वुरात के साथ न सिर्फ़ ख़ुद भी बे अ़मली से बचने की निय्यत से बल्कि दूसरों के मुतअ़ल्लिक़ दिल में कुढ़न (या'नी दुख) रख कर सोज़ो रिक़्क़त के साथ **माहे रमज़ान को अल वदाअ़** कर के अपना ख़ौफ़े ख़ुदा बढ़ाऊंगा ﴾8﴿ आयिन्दा साल माहे रमज़ान नसीब होने की आरज़ू और उस में ख़ूब ख़ूब नेकियां करने की **निय्यत** शामिल रख कर रो रो कर इस साल के माहे रमज़ान को **अल वदाअ़** करूंगा ﴾9﴿ तशब्बोह बिस्सालिहीन (या'नी नेक लोगों से मुशाबहत) इख़्तियार करूंगा कि सलफ़ सालिहीन (या'नी गुज़श्ता ज़माने के बुज़ुर्गाने दीन) رَحِمَهُمُ اللّٰہُ الْمُبِیْن **रमज़ानुल मुबारक** की जुदाई पर ग़मगीन होते थे ﴾10﴿ ख़ाइफ़ीन (या'नी ख़ौफ़े ख़ुदा रखने वालों) के इज्तिमाअ़ की बरकात ह़ासिल करूंगा (اَلْحَمْدُ لِلّٰہ इस त़रह़ के रूह़ परवर इज्तिमाआ़त **दा'वते इस्लामी** में देखे जा सकते हैं) ﴾11﴿ अश्आ़र की सूरत में मांगी जाने वाली दुआ़ओं में शिर्कत करूंगा कि अल वदाअ़ के बा'ज़ अश्आ़र, इस्लाहे़ आ'माल, ख़ातिमा बिलख़ैर और मग़्फ़िरत वग़ैरा की दुआ़ पर मुश्तमिल होते हैं ﴾12﴿ **अल्लाह व रसूल** और नेक आ'माल की मह़ब्बत में रोने की कोशिश करूंगा कि अल वदाअ़ पढ़ने सुनने वालों को

अल्लाह व रसूल عَزَّوَجَلَّ و صَلَّی اللّٰہُ تعَالٰی عَلَیْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم और **माहे रमज़ानुल मुबारक** की मह़ब्बत में उ़मूमन रोने की सआ़दत नसीब होती है। जो इ़ल्मे निय्यत रखता है वोह मज़ीद निय्यतें बढ़ा सकता है।

हाए अ़त्तारे बदकार काहिल — रह गया येह इ़बादत से ग़ाफ़िल
इस से ख़ुश हो के होना रवाना — अल वदाअ़ अल वदाअ़ आह ! रमज़ां

(वसाइले बख़्शिश, स. 653)

صَلُّوْا عَلَی الْحَبِیْب! صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلٰی مُحَمَّد

आमदे रमज़ान पर मुबारक बाद देना सुन्नत से साबित है : मुफ़स्सिरे शहीर **ह़कीमुल उम्मत** ह़ज़रते मुफ़्ती अह़मद यार ख़ान عَلَیْهِ رَحْمَةُ الْحَنَّان ह़दीसे पाक के इस ह़िस्से : اَتَاكُمْ رَمَضَانُ شَهْرٌ مُّبَارَكٌ या'नी "रमज़ान का महीना आ गया है जो कि निहायत ही बा बरकत है" के तह़त "मिरआत" जिल्द 3 सफ़ह़ा 137 पर फ़रमाते हैं : **बरकत** के मा'ना हैं बैठ जाना, जम जाना। इसी लिये ऊंट के त़वेले को मुबारकुल इबिल कहा जाता है कि वहां ऊंट बैठते बंधते हैं। अब वोह ज़ियादतिये ख़ैर (या'नी भलाई का बढ़ना) जो आ कर न जाए **बरकत** कहलाती है, चूंकि माहे रमज़ान में ह़िस्सी (या'नी मह़सूस की जा सकने वाली) बरकतें भी हैं और ग़ैबी बरकतें भी, इस लिये इस महीने का नाम "माहे मुबारक" भी है। रमज़ान में क़ुदरती त़ौर पर मोमिनों के रिज़्क़ में बरकत होती है

फ़रमाने मुस्तफ़ा صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰی عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم : जिस के पास मेरा ज़िक्र हुवा और उस ने मुझ पर दुरूदे पाक न पढ़ा तह़क़ीक़ वोह बद बख़्त हो गया। (ابن سنی)

और हर नेकी का सवाब 70 गुना या इस से भी ज़ियादा है। **इस ह़दीस से मा'लूम हुवा कि माहे रमज़ानुल मुबारक की आमद** (या'नी आने) **पर ख़ुश होना, एक दूसरे को मुबारक बाद देना सुन्नत** (से साबित) **है** और जिस की आमद (या'नी आने) पर **ख़ुशी** होनी चाहिये उस के जाने पर **ग़म** भी होना चाहिये, देखो ! निकाह़ ख़त्म होने पर औ़रत को शरअ़न ग़म लाज़िम है, इसी लिये अक्सर मुसल्मान **जुमुअ़तुल वदाअ़** को मग़्मूम और चश्मे पुरनम (या'नी ग़मगीन होते और रो रहे) होते हैं और ख़ुत़बा (या'नी ख़त़ीब साहिबान) इस दिन में कुछ वदाइया कलिमात (अल वदाअ़ माहे रमज़ान से मुतअ़ल्लिक़ कुछ जुम्ले) कहते हैं ताकि मुसल्मान बाक़ी (बची हुई) घड़ियों को ग़नीमत जान कर नेकियों में और ज़ियादा कोशिश करें। (मिरआतुल मनाजीह़, जि. 3, स. 137)

कोहे ग़म आ़शिक़ों पर पड़ा है — हर कोई ख़ून अब रो रहा है
कह रहा है येह हर ग़म का मारा — अल वदाअ़ अल वदाअ़ आह ! रमज़ां

(वसाइले बख़्शिश, स. 652)

صَلُّوْا عَلَی الْحَبِيْب ! صَلَّی اللّٰهُ تَعَالٰی عَلٰی مُحَمَّد

दिल ग़मे रमज़ान में डूबने लगता है : प्यारे प्यारे इस्लामी भाइयो ! माहे रमज़ानुल मुबारक की अ़ज़्मतों से कौन वाक़िफ़ नहीं ! इस

के तशरीफ़ लाने पर मुसल्मानों की ख़ुशी की इन्तिहा नहीं रहती, ज़िन्दगी का अन्दाज़ ही तब्दील हो जाता है, मस्जिदें आबाद हो जातीं और इबादत व तिलावत की लज़्ज़त बढ़ जाती है, नीज़ सह़र व इफ़्त़ार की भी अपनी अपनी क्या ख़ूब बहारें होती हैं ! येह माहे मुबारक ख़ूब ख़ूब बारिशे रह़मत बरसाता, मग़्फ़िरत की बिशारत सुनाता और गुनहगारों को जहन्नम से आज़ादी दिलाता है। **दा'वते इस्लामी** के मदनी माह़ोल में दुन्या की ला ता'दाद मसाजिद के अन्दर बे शुमार आ़शिक़ाने रसूल पूरे माहे रमज़ान शरीफ़ का नीज़ हज़ारों हज़ार आ़शिक़ाने रसूल आख़िरी अ़शरे का **ए'तिकाफ़** करते हैं, ए'तिकाफ़ में इन की सुन्नतों भरी तरबियत की जाती है, इन्हें नेकियों की रग़बत और गुनाहों से नफ़रत दिलाई जाती है, ख़ौफ़े ख़ुदा عَزَّوَجَلَّ और इ़श्क़े मुस्त़फ़ा صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم के ख़ूब जाम पीने को मिलते हैं। बहर ह़ाल क्या मो'तकिफ़ और क्या ग़ैर मो'तकिफ़, सभी माहे रमज़ान की बरकतें लूटते हैं। माहे रमज़ान से मह़ब्बत के इज़्हार का हर एक का अपना अन्दाज़ होता है, रुख़्सत के अय्याम क़रीब आने पर बिल ख़ुसूस मो'तकिफ़ीन **आ़शिक़ाने रमज़ान का दिल ग़मे रमज़ान में डूबने लगता है !**

क़ल्बे आ़शिक़ है अब पारा पारा — अल वदाअ़ अल वदाअ़ आह ! रमज़ां
कुल्फ़ते हिज्रो फ़ुरक़त ने मारा — अल वदाअ़ अल वदाअ़ आह ! रमज़ां

(वसाइले बख़्शिश, स. 651)

फ़रमाने मुस्तफ़ा صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم : जिस के पास मेरा ज़िक्र हुवा और उस ने मुझ पर दुरूद शरीफ़ न पढ़ा उस ने जफ़ा की। (عبدالرزاق)

अल्फ़ाज़ व मआ़नी : पारा पारा : टुकड़े । **कुल्फ़त :** रन्ज, तक्लीफ़ । **हिज्रो फ़ुरक़त :** जुदाई ।

दिल को येह ग़म खाए जाता है कि आह ! मोह़तरम माह अ़न्क़रीब हम से **वदाअ़** (या'नी रुख़्सत) होने वाला है ! अफ़्सोस ! मस्जिद के इस पुरकैफ़ व रूह़ परवर मदनी माह़ोल से निकल कर एक बार फिर हम दुन्या की झन्झटों में फंसने वाले हैं, आह ! अब जल्द ही हमें ग़फ़्लत भरे बाज़ारों में दोबारा जाना पड़ जाएगा, हाए हम जल्द बहुत जल्द ए'तिकाफ़ की बरकतों और **रमज़ानुल मुबारक** की रह़मतों भरी फ़ज़ाओं से जुदा हो जाएंगे ! इस त़रह़ की सोचों के सबब आ़शिक़ाने रमज़ान के दिल **ग़मे रमज़ान** से भर जाते हैं !

तेरे आने से दिल ख़ुश हुवा था — और ज़ौक़े इ़बादत बढ़ा था
आह ! अब दिल पे है ग़म का ग़लबा — अल वदाअ़ अल वदाअ़ आह ! रमज़ां

(वसाइले बख़्शिश, स. 651)

आंखों से आंसू जारी हो जाते हैं : ग़फ़्लत में गुज़ारे हुए अय्यामे रमज़ान का ख़ूब सदमा होता है, अपनी इ़बादतों की सुस्तियां याद आती हैं, दिल पर एक ख़ौफ़ सा छा जाता है कि कहीं ऐसा न हो हमारी कोताहियों के सबब हमारा प्यारा प्यारा रब عَزَّوَجَلَّ हम से नाराज़ हो गया हो ! **अल्लाह तआ़ला** की बे पायां रह़मतों पर टिकटिकी भी लगी

होती है, ख़ौफ़ो रजा या'नी डर और उम्मीद की मिली जुली कैफ़िय्यात होती हैं, कभी रह़मतों की उम्मीद पर दिल की मुरझाई हुई कली खिल उठती और रुख़ पर बश्शाशत (या'नी चेहरे पर ताज़गी) के आसार नुमायां हो जाते हैं तो कभी ख़ौफ़े ख़ुदा عَزَّوَجَلَّ का ग़लबा होता है तो दिल ग़म में डूब जाता, चेहरे पर उदासी छा जाती और **आंखों से आंसू जारी हो जाते हैं।**

कुछ न हुस्ने अ़मल कर सका हूं नज़्र चन्द अश्क मैं कर रहा हूं
बस येही है मेरा कुल असासा अल वदाअ़ अल वदाअ़ आह ! रमज़ां

(वसाइले बख़्शिश, स. 653)

अल्फ़ाज़ व मआ़नी : हुस्ने अ़मल : नेकियां। **असासा :** सरमाया।

क्या मेरी ज़िन्दगी का भरोसा : आ़शिक़ाने रमज़ान को येह एह़सास बिल ख़ुसूस तड़पा कर रख देता है कि **रमज़ानुल मुबारक** ने अगर्चे आयिन्दा साल फिर ज़रूर तशरीफ़ लाना है मगर न जाने हम ज़िन्दा रहेंगे या नहीं !

जब गुज़र जाएंगे माह ग्यारह तेरी आमद का फिर शोर होगा
क्या मेरी ज़िन्दगी का भरोसा अल वदाअ़ अल वदाअ़ आह ! रमज़ां

(वसाइले बख़्शिश, स. 653)

صَلُّوا عَلَى الْحَبِيْب ! صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلٰى مُحَمَّد

पहले के लोगों की दुआ़ में सारा साल यादे रमज़ान होती ! : एक बुज़ुर्ग رَحْمَةُ اللّٰهِ تَعَالٰی عَلَيْه फ़रमाते हैं : पहले के लोग **रमज़ानुल मुबारक** से क़ब्ल छ[6] महीने रमज़ान शरीफ़ को पाने की और **रमज़ानुल मुबारक** के बा'द छ[6] महीने इ़बादाते रमज़ान की क़बूलिय्यत की दुआ़ किया करते थे। (لطائف المعارف لابن رجب ص۳۷٦)

صَلُّوا عَلَى الْحَبِيب! صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰی عَلٰی مُحَمَّد

ईद की चांदरात आ़शिक़ाने रमज़ान के जज़्बात :

रमज़ानुल मुबारक के आख़िरी दिनों या लम्हों में माहे रमज़ान से महब्बत की वज्ह से कोई आ़शिक़े रमज़ान रन्जीदा हो जाए, **ग़मे रमज़ान** में रोए, माहे रमज़ान ग़फ़्लत में गुज़ार देने के सदमे से आंसू बहाए तो येह भी एक निहायत उ़म्दा अ़मल है और अच्छी निय्यत पर यक़ीनन वोह सवाब का ह़क़दार है। बेशक **रमज़ानुल मुबारक** में बे शुमार गुनहगार बख़्शे जाते हैं मगर हम नहीं जानते कि हमारे बारे में क्या फ़ैसला हुवा ! यक़ीनन जो ग़ाफ़िल मुसल्मान माहे रमज़ान में मग़्फ़िरत से मह़रूम हुवा वोह बहुत ज़ियादा मह़रूम हुवा जैसा कि एक **फ़रमाने मुस्तफ़ा** صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰی عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم में येह भी है : رَغِمَ اَنْفُ رَجُلٍ دَخَلَ عَلَيْهِ رَمَضَانُ ثُمَّ انْسَلَخَ قَبْلَ اَنْ يُّغْفَرَ لَهٗ ـ या'नी "उस शख़्स की नाक ख़ाक आलूद हो जिस पर रमज़ान आए फिर उस की बख़्शिश से पहले ही गुज़र जाए।" (ترمذی ج٥ص ٣٢٠ حدیث٣٥٥٦)

मैं हाए ! जी चुराता ही रहा रब की इबादत से
गुज़ारा ग़फ़्लतों में सारा रमज़ां या रसूलल्लाह !
मैं सोता रह गया ग़फ़्लत की चादर तान कर अफ़्सोस !
ख़ुदारा मेरी बख़्शिश का हो सामां या रसूलल्लाह !

(वसाइले बख़्शिश, स. 679)

صَلُّوا عَلَی الْحَبِیْب ! صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلٰی مُحَمَّد

ग़मे रमज़ान की तरग़ीब : आज (या'नी ता दमे तह़रीर) से तक़रीबन 625 साल पहले गुज़रे हुए क़ाहिरा (मिस्र) के सूफ़ी बुज़ुर्ग और मक्कए मुकर्रमा زَادَهَا اللّٰهُ شَرَفًا وَّتَعْظِيمًا के मुक़ीम, मुबल्लिग़े इस्लाम, सय्यिदुना शैख़ शुऐ़ब ह़रीफ़ीश رَحْمَۃُ اللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہ (साले वफ़ात : 810 सि.हि.) फ़रमाते हैं : ऐ लोगो ! तुम **माहे रमज़ान** की **जुदाई** में ग़मगीन हो जाओ ! क्यूं कि येह ऐसा मौसिम है जिस में तुम बारिशे रह़मत और दुआ़ओं की क़बूलिय्यत की सआ़दत पाते हो। (الروض الفائق ص ٤٠ مُلَخَّصًا)

जां फ़िदा तुझ पे नानाए ह़सनैन ! क़ल्ब है ग़मज़दा और बेचैन
दिल पे सदमा बढ़ा जा रहा है हाए तड़पा के रमज़ां चला है

(वसाइले बख़्शिश, स. 683)

صَلُّوا عَلَی الْحَبِیْب ! صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلٰی مُحَمَّد

फ़रमाने मुस्तफ़ा صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم : जिस के पास मेरा ज़िक्र हो और वोह मुझ पर दुरूद शरीफ़ न पढ़े तो वोह लोगों में से कन्जूस तरीन शख़्स है। (مسند احمد)

माहे रमज़ान की जुदाई में क्यूं न रोया जाए ! : सय्यिदुना शैख़ शुऐब ह़रीफ़ीश رَحْمَةُ اللّٰهِ تَعَالٰى عَلَيْه फ़रमाते हैं : मेरे भाइयो ! **माहे रमज़ान** के रोज़ों और रातों के क़ियाम (या'नी रातों की इ़बादत) में क्यूं रग़बत न की जाए ! उस मुबारक महीने पर क्यूं ह़सरत न की जाए जिस में बन्दे के तमाम गुनाह मुआफ़ कर दिये जाते हैं और उस बा बरकत महीने की जुदाई पर क्यूं न **रोया** जाए, जिस के तशरीफ़ ले जाने से ख़ूब नेकियां कमाने का मौक़अ़ भी जाता रहता है। (اَلرّوضُ الفائق ص ٤١)

ख़ूब रोता है तड़पता है ग़मे रमज़ान में

जो मुसल्मां क़द्रदानो आ़शिक़े रमज़ान है

(वसाइले बख़्शिश, स. 702)

صَلُّوْا عَلَى الْحَبِيْب ! صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلٰى مُحَمَّد

जुमुअ़तुल वदाअ़ के बयान में जान दे दी (ह़िकायत) : **दा'वते इस्लामी** के इशाअ़ती इदारे **मक्तबतुल मदीना** की मत़्बूआ़ 649 सफ़ह़ात पर मुश्तमिल किताब, "**ह़िकायतें और नसीह़तें**" सफ़ह़ा 96 ता 97 पर दी हुई ह़िकायत क़दरे तसर्रुफ़ के साथ बयान की जाती है : एक बुज़ुर्ग رَحْمَةُ اللّٰهِ تَعَالٰى عَلَيْه फ़रमाते हैं कि मैं माहे रमज़ान के **जुमुअ़तुल वदाअ़** के रोज़ ह़ज़रते सय्यिदुना मन्सूर बिन अ़म्मार عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللّٰهِ الْغَفَّار की मह़फ़िल में ह़ाज़िर हुवा। आप رَحْمَةُ اللّٰهِ تَعَالٰى عَلَيْه रमज़ान शरीफ़ के रोज़ों की फ़ज़ीलत,

रातों की इ़बादत और मुख़्लिसीन या'नी ख़ुलूस के साथ इ़बादत करने वालों के लिये जो अज्र तय्यार किया गया है उस के मुतअ़ल्लिक़ बयान फ़रमा रहे थे और यूं लग रहा था गोया आप رَحْمَةُ اللّٰهِ تَعَالٰى عَلَيْه के बयान के असर से ठोस पथ्थरों से आग ज़ाहिर हो रही है। बिला शुबा **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ की क़सम ! (ऐसा हो सकता है) क्यूं कि इर्शादे बारी तआ़ला है :

وَ اِنَّ مِنَ الْحِجَارَةِ لَمَا یَتَفَجَّرُ مِنْهُ الْاَنْهٰرُؕ (پ۱،البقرہ:۷٤)

तरजमए कन्ज़ुल ईमान : और पथ्थरों में तो कुछ वोह हैं जिन से नदियां बह निकलती हैं।

लेकिन आप رَحْمَةُ اللّٰهِ تَعَالٰى عَلَيْه की मह़फ़िल में न किसी ने ह़रकत की, न ही किसी ने अपने गुनाहों पर नदामत का इज़्हार किया, जब आप رَحْمَةُ اللّٰهِ تَعَالٰى عَلَيْه ने मह़फ़िल की येह ह़ालत मुलाह़ज़ा की तो इर्शाद फ़रमाया : ऐ लोगो ! क्या अपने उ़यूब (या'नी ऐ़बों) से आगाह हो कर कोई रोने वाला नहीं ? क्या येह तौबा व इस्तिग़फ़ार का महीना नहीं ? क्या येह अ़फ़्वो मग़्फ़िरत (या'नी मुआ़फ़ी मिलने और बख़्शे जाने) का महीना नहीं ? क्या इस माहे मुबारक में जन्नत के दरवाज़े नहीं खोले जाते ? क्या इस में जहन्नम के दरवाज़े बन्द नहीं किये जाते ? क्या इस में शयात़ीन को क़ैद नहीं किया जाता ? क्या इस माहे सियाम (या'नी रोज़ों के महीने) में इन्आ़मो इक्राम की बारिशें नहीं होतीं ? क्या इस बा बरकत माह में

अल्लाह عَزَّوَجَلَّ तजल्ली नहीं फ़रमाता ? क्या इस माहे मुबारक में हर रात ब वक़्ते इफ़्तार दस लाख गुनहगार जहन्नम से आज़ाद नहीं किये जाते ? तुम्हें क्या हो गया है कि इस सवाबे अ़ज़ीम से ख़ुद को महरूम रखते और लिबासे मुख़ालफ़त में इतराते हो (मतलब येह कि अ़मल नहीं करते और गुनाहों में मसरूफ़ रहते हो)। इर्शादे रब्बानी है :

اَفَسِحْرٌ هٰذَاۤ اَمْ اَنْتُمْ لَا تُبْصِرُوْنَ ۝۱۵ (پ۲۷،الطور:۱۵)

तरजमए कन्ज़ुल ईमान : तो क्या येह जादू है या तुम्हें सूझता नहीं।

(इस के बा'द आप رَحْمَةُ اللّٰهِ تَعَالٰى عَلَيْه ने फ़रमाया :) सब ख़ुदाए ग़फ़्फ़ार عَزَّوَجَلَّ के दरबार में ह़ाज़िर हो कर तौबा व इस्तिग़फ़ार करो ! तो तमाम ह़ाज़िरीन बुलन्द आवाज़ से गिर्या व ज़ारी करने और रोने धोने लगे, इतने में एक नौ जवान रोता हुवा खड़ा हो गया और अ़र्ज़ करने लगा : "या सय्यिदी ! (या'नी ऐ मेरे आक़ा !) इर्शाद फ़रमाइये क्या मेरे रोज़े मक़्बूल हैं ? क्या मेरा (रमज़ान की) रातों का क़ियाम (या'नी रातों में इबादत करना) क़बूलिय्यत पाने वाले इबादत गुज़ारों के साथ लिखा जाएगा ? ह़ालां कि मुझ से बहुत सारे गुनाह सरज़द हुए हैं, मैं ने तो अपनी तमाम उ़म्र ना फ़रमानियों में बरबाद कर दी है, आह ! मैं अ़ज़ाब के दिन से ग़ाफ़िल रहा।" आप رَحْمَةُ اللّٰهِ تَعَالٰى عَلَيْه ने इर्शाद फ़रमाया : ऐ लड़के ! **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ की बारगाह में तौबा करो, क्यूं कि उस ने क़ुरआने करीम में इर्शाद फ़रमाया है :

وَ اِنِّیْ لَغَفَّارٌ لِّمَنْ تَابَ
(پ۱٦،طٰهٰ:۸۲)

तरजमए कन्ज़ुल ईमान : और बेशक मैं बहुत बख़्शने वाला हूं उसे जिस ने तौबा की।

आप رَحْمَةُ اللّٰهِ تَعَالٰی عَلَيْه ने क़ारी को येह आयते मुबारका पढ़ने का हुक्म फ़रमाया :

وَهُوَ الَّذِیْ یَقْبَلُ التَّوْبَةَ عَنْ عِبَادِهٖ وَیَعْفُوْا عَنِ السَّیِّاٰتِ
(پ۲۵،الشُّورٰی:۲۵)

तरजमए कन्ज़ुल ईमान : और वोही है जो अपने बन्दों की तौबा क़बूल फ़रमाता और गुनाहों से दर गुज़र फ़रमाता है।

उस नौ जवान ने सुन कर एक ज़ोरदार चीख़ मारी और कहा : "मेरी ख़ुश नसीबी है कि **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ का एह़सान मुझ तक पहुंचता रहा लेकिन इस के बा वुजूद मैं ना फ़रमानियों में इज़ाफ़ा करता रहा और ग़लत़ रास्ते से न लौटा। क्या गुज़रे हुए वक़्त की जगह कोई और वक़्त होगा कि जिस में **अल्लाह तआ़ला** दर गुज़र फ़रमाएगा ?" फिर उस ने दोबारा चीख़ मारी और अपनी जान जाने आफ़रीं के सिपुर्द कर दी। (या'नी वफ़ात पा गया) येह ह़िकायत नक़्ल करने के बा'द साह़िबे किताब फ़रमाते हैं :

मेरे भाइयो ! माहे रमज़ान के फ़िराक़ (या'नी जुदाई) पर क्यूं न

रोया जाए और अ़फ़्वो मग़्फ़िरत के महीने की रुख़्सत पर क्यूं न अफ़्सोस किया जाए ! इस महीने की जुदाई पर क्यूं न ग़म किया जाए जिस में गुनहगारों को जहन्नम से आज़ादी नसीब होती है ! (اَلرَّوضُ الفائق ص ٤٥)

कर रहे हैं तुझ को रो रो कर मुसल्मां अल वदाअ़
आह ! अब तू चन्द घड़ियों का फ़क़त़ मेहमान है
वासित़ा रमज़ान का या रब ! हमें तू बख़्श दे
नेकियों का अपने पल्ले कुछ नहीं सामान है

(वसाइले बख़्शिश, स. 704)

صَلُّوْا عَلَى الْحَبِيْب ! صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلٰى مُحَمَّد

माहे रमज़ान की आख़िरी रात ख़ौफ़े ख़ुदा से वफ़ात

(ह़िकायत) : **माहे** रमज़ान इबादातो रियाज़ात में गुज़ारने के बा'द आख़िरी रात वफ़ात पाने वाली एक नेक बन्दी की **ह़िकायत** मुलाह़ज़ा फ़रमाइये और इस में से अपने लिये इ़ब्रत के **मदनी फूल** तलाश कीजिये चुनान्चे ह़ज़रते सय्यिदुना मुह़म्मद बिन अबू फ़रज رَحْمَةُ اللّٰهِ تَعَالٰى عَلَيْه फ़रमाते हैं : मुझे **माहे रमज़ानुल मुबारक** में एक कनीज़ की ज़रूरत पड़ी जो हमें खाना तय्यार कर दे, मैं ने बाज़ार में एक कनीज़ को देखा, उस का चेहरा ज़र्द (या'नी पीला), बदन कमज़ोर और जिल्द (Skin) ख़ुश्क थी। मैं उस पर तर्स खाते हुए उसे ख़रीद कर घर ले आया और कहा : बरतन पकड़ो और **रमज़ानुल मुबारक** की ज़रूरी अश्या (या'नी चीज़ों)

की ख़रीदारी के लिये मेरे साथ बाज़ार चलो। तो वोह कहने लगी : ऐ मेरे आक़ा ! मैं तो ऐसे लोगों के पास थी जिन का पूरा ज़माना ही गोया रमज़ान हुवा करता था ! (या'नी वोह लोग **रमज़ानुल मुबारक** के फ़र्ज़ रोज़ों के इ़लावा नफ़्ल रोज़े भी कसरत से रखते और दिन रात इ़बादात में मश्ग़ूल रहा करते थे)। उस की येह बात सुन कर मैं ने अन्दाज़ा लगाया कि येह ज़रूर **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ की **नेक बन्दी** होगी। مَاشَآءَاللّٰه **माहे रमज़ानुल मुबारक** में वोह सारी सारी रात इ़बादत करती रही और जब आख़िरी रात आई तो मैं ने उस को कहा : ई़द की ज़रूरी अश्या ख़रीदने के लिये मेरे साथ बाज़ार चलो। तो वोह पूछने लगी : ऐ मेरे आक़ा ! आ़म लोगों की ज़रूरिय्यात ख़रीदेंगे या ख़ास लोगों की ? मैं ने उस से कहा : अपनी बात की वज़ाह़त करो ! तो कहने लगी : "आ़म लोगों की ज़रूरिय्यात तो ई़द के मश्हूर खाने हैं, जब कि ख़ास लोगों की ज़रूरिय्यात मख़्लूक़ से कनारा कश होना, इ़बादत के लिये फ़ारिग़ होना, नवाफ़िल के ज़रीए **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ का क़ुर्ब ह़ासिल करना और उस की बारगाह में इ़ज्ज़ो इन्किसारी का इज़्हार है।" येह सुन कर मैं ने कहा : मेरी मुराद खाने की ज़रूरी अश्या हैं। उस ने फिर पूछा : कौन सा खाना ? जो जिस्मों की ग़िज़ा है वोह या दिलों की ? तो मैं ने कहा : अपनी बात वाज़ेह़ करो ! तो उस ने मुझे बताया : "जिस्मों की ग़िज़ा तो खाना पीना है जब कि दिलों की ग़िज़ा गुनाह छोड़ना और अपने उ़यूब दूर करना, मह़बूब के दीदार से

लुत़्फ़ अन्दोज़ होना और मक़्सूद के ह़ुसूल (या'नी मुराद पूरी होने) पर राज़ी होना है लेकिन येह चीज़ें ह़ासिल करने के लिये ख़ुशूअ़, परहेज़ गारी, तर्के तकब्बुर, मालिको मौला عَزَّوَجَلَّ की त़रफ़ रुजूअ़ और ज़ाहिरो बात़िन में सिर्फ़ उसी पर भरोसा करना है।" फिर वोह कनीज़ नमाज़ के लिये खड़ी हो गई, उस ने पहली रक्अ़त में पूरी **सूरतुल बक़रह** पढ़ी, फिर **सूरए आले इमरान** शुरूअ़ कर दी, फिर एक सूरत ख़त्म कर के दूसरी सूरत शुरूअ़ करती रही यहां तक कि **सूरए इब्राहीम** की आयत नम्बर 17 पर पहुंच गई :

يَّتَجَرَّعُهٗ وَلَا يَكَادُ يُسِيْغُهٗ وَيَاْتِيْهِ الْمَوْتُ مِنْ كُلِّ مَكَانٍ وَّمَا هُوَ بِمَيِّتٍ ؕ وَمِنْ وَّرَآىِٕهٖ عَذَابٌ غَلِيْظٌ ﴿۱۷﴾

तरजमए कन्ज़ुल ईमान : ब मुश्किल उस का थोड़ा थोड़ा घूंट लेगा और गले से नीचे उतारने की उम्मीद न होगी और उसे हर त़रफ़ से मौत आएगी और मरेगा नहीं और उस के पीछे एक गाढ़ा अ़ज़ाब।

फिर वोह रोती हुई इसी आयत को दोहराती रही यहां तक कि बेहोश हो कर ज़मीन पर गिर पड़ी जब मैं ने उसे हिलाया जुलाया तो उस की रूह़ क़फ़से उ़न्सुरी से परवाज़ कर चुकी थी। (اَلرّوض الفائق ص ٤١)

अल्लाहु रब्बुल इ़ज़्ज़त عَزَّوَجَلَّ की उस पर रह़मत हो और उस के सदक़े हमारी बे ह़िसाब मग़्फ़िरत हो। اٰمِين بِجاہِ النَّبِیِّ الْاَمین صَلَّی اللّٰہ تعالٰی علیہ واٰلہٖ وسلَّم

दस्त बस्ता इल्तिजा है हम से राज़ी हो के जा
बख़्शवाना ह़श्र में हां तू महे ग़ुफ़रान है
अस्सलाम ऐ माहे रमज़ां तुझ पे हों लाखों सलाम
हिज्र में अब तेरा हर आ़शिक़ हुवा बेजान है

(वसाइले बख़्शिश, स. 704)

صَلُّوا عَلَى الْحَبِيْب ! صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلٰى مُحَمَّد

"अल वदाअ़ माहे रमज़ान" का शरई सुबूत क्या है ? : "**अल वदाअ़ माहे रमज़ान**" के अश्आ़र पढ़ना सुनना यक़ीनन बहुत उ़म्दा काम है, येह फ़र्ज़ या वाजिब या सुन्नत नहीं बल्कि सिर्फ़ मुबाह़ व जाइज़ है। और मुबाह़ काम (या'नी ऐसा अ़मल जिस पर सवाब मिले न गुनाह उस) में अगर अच्छी निय्यत शामिल कर ली जाए तो वोह मुस्तह़ब व कारे सवाब बन जाता है। लिहाज़ा "अल वदाअ़ माहे रमज़ान" भी अच्छे मक़्सद मसलन गुनाहों और कोताहियों पर नदामत और आयिन्दा नेकियों भरा रमज़ान गुज़ारने की निय्यत से पढ़ना सुनना कारे सवाब है। आ'ला ह़ज़रत رَحْمَةُ اللّٰهِ تَعَالٰی عَلَيْه "ख़ुत़्बतुल वदाअ़" के मुतअ़ल्लिक़ किये जाने वाले सुवाल जवाब में फ़रमाते हैं : वोह (या'नी "अल वदाअ़" का ख़ुत़्बा) अपनी ज़ात में मुबाह़ है, हर मुबाह़ निय्यते ह़सन (या'नी अच्छी निय्यत) से मुस्तह़ब हो जाता है। और उ़रूज़ व अ़वारिज़ ख़िलाफ़ (या'नी शरई मम्नूआ़त पर मुश्तमिल होने) से मकरूह से

ह़राम तक (जैसे मर्दों और औ़रतों का एक साथ होना या इसे या'नी अल वदाअ़ के ख़ुत़्बे को वाजिब व ज़रूरी समझना या औ़रतों का राग से इस त़रह़ पढ़ना कि उन की आवाज़ मर्दों तक पहुंचे या अल वदाअ़ के अश्आ़र का ख़िलाफ़े शर्अ़ होना)। (फ़तावा रज़विय्या, जि. 8, स. 452) बहर ह़ाल **अल वदाअ़ माहे रमज़ान** के कहने का मौजूदा अन्दाज़ नया ही सही मगर शरअ़न इस में ह़रज नहीं। याद रहे ! मुबाह़ के करने या न करने पर मलामत नहीं होती। **फ़रमाने मुस्त़फ़ा** صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم है : ह़लाल वोह जिसे **अल्लाह** ने अपनी किताब में ह़लाल किया और ह़राम वोह जिसे **अल्लाह** ने अपनी किताब में ह़राम किया और जिस से ख़ामोशी फ़रमाई वोह मुआ़फ़ है। (تِرمذی ج ۳ ص ۲۸۰ حدیث۱۷۳۲)

मुफ़स्सिरे शहीर **ह़कीमुल उम्मत** ह़ज़रते मुफ़्ती अह़मद यार ख़ान عَلَيْهِ رَحْمَةُ الْحَنَّان ह़दीसे पाक के इस ह़िस्से, "जिस से ख़ामोशी फ़रमाई वोह मुआ़फ़ है" के तह़्त फ़रमाते हैं : या'नी जिन चीज़ों को न क़ुरआने करीम ने ह़लाल या ह़राम कहा न ह़दीसे पाक ने या'नी उन का ज़िक्र ही कहीं नहीं वोह ह़लाल हैं। यहां "मिरक़ात[1]" और "अशि'अ़तुल्लम्आ़त[2]" और "लम्आ़त[3]" ने फ़रमाया कि : इस ह़दीस से मा'लूम हुवा कि अस्ल, अश्या में इबाह़त है या'नी जिस से क़ुरआनो ह़दीस में ख़ामोशी

[1]: مرقاۃ المفاتیح ج۸ص۵۷تحت الحدیث۴۲۲۸۔ [2]: اشعۃ اللمعات ج۳ص۵۴۰۔ [3]: لمعات التنقیح ج۷ص۲۷۱تحت الحدیث۴۲۲۸۔

हो वोह ह़लाल है। आम, माल्टा यूं ही पुलाव ज़र्दा, फ़िरनी, यूं ही लठ्ठा मलमल। यूं ही मीलाद शरीफ़ व फ़ातिह़ा की शीरीनी सब ह़लाल हैं, क्यूं ? इस लिये कि इन्हें कुरआनो ह़दीस ने ह़राम नहीं किया, येह इस्लाम का कुल्ली (या'नी अक्सरी) क़ानून है।

(मिरआतुल मनाजीह़, जि. 6, स. 43)

अस्ल अश्या में इबाह़त है : मेरे आक़ा आ'ला ह़ज़रत, **इमाम अह़मद रज़ा ख़ान** عَلَيْهِ رَحْمَةُ الرَّحْمٰن के वालिदे माजिद रईसुल मुतकल्लिमीन ह़ज़रत मौलाना नक़ी अ़ली ख़ान عَلَيْهِ رَحْمَةُ الْحَنَّان लिखते हैं : अस्ल अश्या में इबाह़त है या'नी जिस अ़मल के फ़े'ल व तर्क (या'नी करने और छोड़ने) में शरअ़न कुछ ह़रज न पाया जाए वोह शरअ़न मुबाह़ व जाइज़ है। (उसूलुर्रशाद, स. 99 मुलख़्ख़सन) (इस क़ाइदे व ज़ाबिते़ : "अस्ल अश्या में इबाह़त है" की तफ़्सीलात "उसूलुर्रशाद" सफ़ह़ा 99 ता 116 पर मुलाह़ज़ा फ़रमाइये)

दीन में नए अच्छे त़रीक़े निकालने की ह़दीस में इजाज़त है : "अल वदाअ़ माहे रमज़ान" के अश्आ़र पढ़ने सुनने से लोगों के दिलों पर चोट लगती, **रमज़ानुल मुबारक** की अहम्मिय्यत कुलूब में उजागर होती, अपनी कोताहियां याद आतीं और गुनाहों से तौबा करने का ज़ेह्न मिलता है लिहाज़ा येह एक उ़म्दा अन्दाज़ है। बेशक क़ियामत तक

के लिये दीन में अच्छे अच्छे त़रीक़े ईजाद करते रहने की ख़ुद ह़दीसे पाक में इजाज़त मर्ह़मत फ़रमाई गई है चुनान्चे **फ़रमाने मुस्त़फ़ा** صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم है : जो कोई इस्लाम में **अच्छा त़रीक़ा** जारी करे इस के बा'द उस त़रीक़े पर अ़मल किया गया तो उस त़रीक़े पर अ़मल करने वालों जैसा सवाब इस (जारी करने वाले) को भी मिलेगा और उन (अ़मल करने वालों) के सवाब से कुछ कम न होगा और जो शख़्स इस्लाम में **बुरा त़रीक़ा** जारी करे इस के बा'द उस त़रीक़े पर अ़मल किया गया तो उस त़रीक़े पर अ़मल करने वालों जैसा गुनाह इस (जारी करने वाले) को भी मिलेगा और उन (अ़मल करने वालों) के गुनाह में कुछ कमी न होगी।

(مُسلم ص١٤٣٨،حدیث١٠١٧)

आ़शिक़ाने माहे रमज़ां रो रहे हैं फूट कर
दिल बड़ा बेचैन है अफ़्सुर्दा रूह़ो जान है
दास्ताने ग़म सुनाएं किस को जा कर आह ! हम
या रसूलल्लाह ! देखो चल दिया रमज़ान है

(वसाइले बख़्शिश, स. 702)

صَلُّوا عَلَی الْحَبِیْب ! صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلٰی مُحَمَّد

"अल वदाअ़" सुनने से तौबा व नेकी का जज़्बा मिलता है :

ख़लीफ़ए इमाम अह़मद रज़ा ख़ान, मुफ़स्सिरे क़ुरआन, साहिबे

तफ़्सीरे ख़ज़ाइनुल इरफ़ान सदरुल अफ़ाज़िल ह़ज़रते अ़ल्लामा मौलाना मुफ़्ती सय्यिद मुह़म्मद नईमुद्दीन मुरादआबादी عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللّٰهِ الْهَادِى से भी "अल वदाअ़ माहे रमज़ान" पढ़ने के मुतअ़ल्लिक़ सुवाल हुवा जिस का जवाब आप رَحْمَةُ اللّٰهِ تَعَالٰى عَلَيْه ने इतना ख़ूब सूरत दिया कि इस का एक एक लफ़्ज़ उम्मत की ख़ैर ख़्वाही, नेकी की दा'वत के जज़्बे, मुसल्मानों की इस्लाह़ व फ़लाह़ का **दर्द** और अह़कामे इस्लामिय्या की ह़िक्मतों पर मुश्तमिल है उस सुवाल जवाब के बा'ज़ इक्तिबासात मअ़ ख़ुलासा मुलाह़ज़ा फ़रमाइये : **सुवाल : रमज़ानुल मुबारक** के अख़ीर जुमुए़ को **ख़ुत़्बतुल वदाअ़** पढ़ा जाता है जिस में **रमज़ानुल मुबारक** के फ़ज़ाइलो बरकात का बयान होता है और इस माहे मुबारक के रुख़्सत होने और ऐसे बा बरकत महीने में ह़सनात व ख़ैरात (या'नी नेकियों और भलाइयों) के ज़ख़ीरे जम्अ़ न करने पर ह़सरत व अफ़्सोस और आयिन्दा के लिये लोगों को अ़मले ख़ैर की तरग़ीब और बाक़ी अय्यामे रमज़ान में कस्रते इ़बादत का शौक़ दिलाया जाता है, मुसल्मान उस ख़ुत़्बे को सुन कर ख़ूब रोते और गुनाहों से तौबा व इस्तिग़्फ़ार करते और आयिन्दा के लिये नेकी का अ़ज़्म करते हैं। मज़्कूरा बाला काम जाइज़ है या नहीं ? क्यूं कि बा'ज़ लोग **अल वदाअ़** पढ़ने से मन्अ़ करते हैं।

जवाब : सदरुल अफ़ाज़िल ह़ज़रते अ़ल्लामा मौलाना सय्यिद मुह़म्मद नईमुद्दीन मुरादआबादी عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللّٰهِ الْهَادِى ने इस ख़ुत़्बे से मन्अ़ करने

वालों के ए'तिराज़ात का जवाब दिया चुनान्चे आप رَحْمَۃُ اللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہ की इबारात का ख़ुलासा येह है कि : इन मन्अ़ करने वालों के पास मुमानअ़त की कोई शरई दलील मौजूद नहीं है और न वोह कोई एक ह़दीस या एक फ़िक़्ही इबारत इस के अ़दमे जवाज़ (या'नी ना जाइज़ होने) में पेश कर सकते हैं। मगर ऐसे लोगों का त़रीक़ा ही येह है कि वोह अपनी ज़ाती राय और ख़याल को दीन में दाख़िल कर देते हैं और अपने ख़याल से जिस चीज़ को चाहते हैं ना जाइज़ कर डालते हैं ! आप رَحْمَۃُ اللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہ मज़ीद फ़रमाते हैं : **ख़ुत़्बतुल वदाअ़** आख़िर किस त़रह़ ना जाइज़ हो गया ? ख़ुत़्बे में जो चीज़ें शरअ़न मत़लूब हैं (या'नी शरीअ़त जो चीज़ें चाहती है) उन में से कौन सी इन में नहीं पाई जाती ? या कौन सा अम्रे मम्नूअ़ (या'नी ऐसा काम जिसे इस्लाम ने मन्अ़ फ़रमाया हो वोह) इस में दाख़िल है ? तज़्कीर (या'नी कोई ऐसी बात जिस से मुसल्मानों को नसीह़त हो) ख़ुत़्बे की सुन्नतों में से एक सुन्नत है। **रमज़ानुल मुबारक** के गुज़रे हुए अय्याम (या'नी दिनों) में अ़मले ख़ैर (या'नी नेकियां रह जाने) पर ह़स्रतो अफ़्सोस और बा बरकत अय्याम को ग़फ़्लत में गुज़ारने पर क़लक़ व नदामत (या'नी पछतावा) और (इस मुबारक) महीने की रुख़्सती के वक़्त अपनी गुज़श्ता कोताहियों (या'नी गुज़री हुई सुस्तियों) को मद्दे नज़र ला कर आयिन्दा के लिये तयक़्क़ुज़ (या'नी होशियारी) व बेदारी और

मुसल्मानों को अ़मले ख़ैर की तह्रीस व तश्वीक़ का (या'नी नेकियों पर उभारने का) येह बेहतरीन त़रीक़ए तज़्कीर (या'नी नसीहत का बहुत अच्छा अन्दाज़) है और इस (अन्दाज़े "अल वदाए़ माहे रमज़ान") में निहायत नाफ़ेअ़ व सूदमन्द नसीहत व पन्द (या'नी इन्तिहाई मुफ़ीद वा'ज़ो नसीहत) है, इस का येह असर होता है कि रोते रोते लोगों की हिचकियां बंध जाती हैं और उन्हें सच्ची तौबा नसीब होती है, बारगाहे इलाही में इस्तिग़्फ़ार करते हैं, आयिन्दा के लिये अ़मले नेक का मुसम्मम (या'नी पक्का) इरादा कर लेते हैं। इस तज़्कीर (या'नी वा'ज़ो नसीहत) को फ़ुक़हा ने **सुन्नत** फ़रमाया है। **फ़तावा आ़लमगीरी** में है : (عَاشِرُهَا) اَلْعِظَةُ وَ التَّذْكِيرُ- या'नी "ख़ुत्बे की दसवीं सुन्नत पन्दो नसीहत (या'नी नेकी की दा'वत) है।" (फ़तावा सदरुल अफ़ाज़िल, स. 466 ता 482)

सदरुल अफ़ाज़िल رَحْمَةُ اللّٰهِ تَعَالٰی عَلَيْه **के फ़तवे से ह़ासिल होने वाले 9 मदनी फूल :** ۞ **रमज़ानुल मुबारक** के आख़िरी दिनों में **अल वदाअ़ पढ़ने सुनने** से नेकियां रह जाने पर ग़म व अफ़्सोस होता है जो कि निहायत मह़मूद या'नी पसन्दीदा काम है और ۞ **"अल वदाअ़"** रमज़ान शरीफ़ के मुबारक दिनों को ग़फ़्लत में गुज़ारने पर पछतावे की एक सूरत है ۞ इस से गुज़री हुई सुस्तियों को मद्दे नज़र रखते हुए आयिन्दा के लिये अ़मले ख़ैर या'नी नेकियां करने का जज़्बा पैदा होता है और ۞ येह

अल वदाअ़ मुसल्मानों के दिल में नेकियों की ह़िर्स और लालच पैदा करने का एक बेहतरीन त़रीक़ा है ۞ इस अन्दाज़ से **अल वदाअ़** में इन्तिहाई मुफ़ीद नसीह़त मिलती है ۞ **अल वदाअ़** से सच्ची तौबा की तौफ़ीक़ नसीब होती है (**दा'वते इस्लामी** के **मदनी माह़ोल** में तो इस का बा क़ाइदा मुशाहदा है बल्कि ख़ुद शिर्कत कर के इन बरकात का नज़ारा कर सकते हैं) और बारगाहे ख़ुदावन्दी में रोना नसीब होता है ۞ **अल वदाअ़** से लोग बारगाहे इलाही में इस्तिग़्फ़ार करते हैं ۞ **अल वदाअ़** की बरकत से मुसल्मानों की एक बड़ी ता'दाद आयिन्दा नेकियां करने का पक्का इरादा कर लेती है (और اَلْحَمْدُ لِلّٰه बहुत से ख़ुश नसीबों को इस निय्यत पर इस्तिक़ामत भी मिल जाती है) ۞ ख़ुत़बए जुमुआ़ में तज़्कीर या'नी वा'ज़ो नसीह़त करना **सुन्नत** है और ख़ुत़्बे में **अल वदाअ़** पढ़ना इसी सुन्नत पर अ़मल की एक सूरत है (या'नी मौजूदा हैअत अगर्चे सुन्नत नहीं लेकिन इस की अस्ल साबित है जो कि तज़्कीर है और तज़्कीर (या'नी वा'ज़ो नसीह़त) **सुन्नत** है)।

याद रहे ! सदरुल अफ़ाज़िल ह़ज़रते अ़ल्लामा मौलाना सय्यिद मुह़म्मद नईमुद्दीन मुरादआबादी عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللهِ الْهَادِى का फ़तवा ख़ुत़बए जुमुआ़ में **अल वदाअ़** पढ़ने के मुतअ़ल्लिक़ है लेकिन **अल वदाअ़** पढ़ने सुनने के जो फ़वाइदो बरकात बयान हुए हैं वोह इस ख़ुत़्बे के इलावा आख़िरी जुमुए़ की नमाज़ के बा'द सलातो सलाम के वक़्त और यूंही रमज़ान

शरीफ़ के आख़िरी दिनों में बा'द नमाज़े अ़स्र या किसी दूसरे वक़्त पढ़ने सुनने से भी ह़ासिल होते हैं।

ख़ुत़बे इल्मी में अल वदाई अश्आ़र : किसी दौर में हिन्द के अन्दर ख़ूब पढ़ी जाने वाली ख़ुत़्बों की किताब "ख़ुत़बे इल्मी" में निहायत ह़सरत के साथ **माहे रमज़ानुल मुबारक** को अल वदाअ़ कहा गया है। **मेरे आक़ा** आ'ला ह़ज़रत, मौलाना शाह इमाम अह़मद रज़ा ख़ान عَلَیْہِ رَحْمَۃُ الرَّحْمٰن ने "ख़ुत़बे इल्मी" के मुसन्निफ़ का तआ़रुफ़ इन अल्फ़ाज़ में बयान फ़रमाया है : "मौलाना मुह़म्मद ह़सन इल्मी बरेल्वी رَحْمَۃُ اللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہ सुन्नी सह़ीह़ुल अ़क़ीदा और वाइज़ व नासेह़ (या'नी वा'ज़ो नसीह़त करने वाले) और ह़ुज़ूरे अक़्दस صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم के मद्दाह़ (या'नी ता'रीफ़ बयान करने वाले) और मेरे जद्दे अमजद قُدِّسَ سِرُّہُ الْعَزِیْز (या'नी दादाजान ह़ज़रत मौलाना रज़ा अ़ली ख़ान عَلَیْہِ رَحْمَۃُ الْحَنَّان) के शागिर्द थे।" (फ़तावा रज़विय्या, जि. 8, स. 447) ह़ज़रत मौलाना मुह़म्मद ह़सन इल्मी عَلَیْہِ رَحْمَۃُ اللّٰہِ الْقَوِی अपने ख़ुत़्बों के मज्मूए़ "ख़ुत़बे इल्मी" में "जुमुअ़तुल वदाअ़" के ख़ुत़्बे में **रमज़ानुल मुबारक** को "अल वदाअ़" कहते हुए लिखते हैं :

اَلْوَدَاعُ اَلْوَدَاعُ یَا شَھْرَ رَمَضَانَ۔ فَتَحَسَّرُوْا عَلٰی اِتْمَامِهٖ وَتَاَسَّفُوْا عَلٰی اِخْتِتَامِهٖ۔ اَلْوَدَاعُ اَلْوَدَاعُ یَا شَھْرَ رَمَضَانَ۔

(या'नी अल वदाअ़ अल वदाअ़ ऐ माहे रमज़ान ! (ऐ लोगो !) इस महीने के ख़त्म होने पर ह़सरत व अफ़्सोस करो ! अल वदाअ़ अल वदाअ़ ऐ माहे

रमज़ान !) उन्हों ने अपनी इसी किताब के अन्दर उर्दू में भी **अल वदाई कलाम** शामिल फ़रमाया है, उस कलाम में से 12 अश्आ़र पेश किये जाते हैं, आप भी पढ़िये और हो सके तो **ग़मे रमज़ान** में आंसू बहाइये :

अफ़्सोस तू रुख़्सत हुवा माहे मुबारक अल वदाअ़

अफ़्सोस तू रुख़्सत हुवा, माहे मुबारक अल वदाअ़ — रो रो के दिल ने यूं कहा : माहे मुबारक अल वदाअ़

मुद्दत से थे हम मुन्तज़िर, शुक्रे ख़ुदा आया तू फिर — पर हैफ़ जल्दी चल दिया, माहे मुबारक अल वदाअ़

दोज़ख़ के अन्दर बिल्यक़ीं, था क़ैद शैताने लईं — मोमिन अ़ज़ाबों से बचा, माहे मुबारक अल वदाअ़

पढ़ता था सुन्नत कोई जब, या कोई पढ़ता मुस्तहब — पाता सवाब इक अज्र का, माहे मुबारक अल वदाअ़

जो फ़र्ज़ अदा तुझ में करे, अज्र उस को सत्तर का मिले — था युम्नो रह़मत से भरा, माहे मुबारक अल वदाअ़

आ़सीये रोज़ादार पर, पहुंचेगी जब नारे सक़र — बन कर सिपर लेगा बचा, माहे मुबारक अल वदाअ़

अब कूच है पेशे नज़र, आंखों में अश्क आते हैं भर — करता है दिल आहो बुका, माहे मुबारक अल वदाअ़

तू माह इस्तिग़फ़ार का, और ताअ़ते ग़फ़्फ़ार का — कुछ भी न हम से हो सका, माहे मुबारक अल वदाअ़

गर ज़ीस्त है फिर पाएंगे, वरना बहुत पछताएंगे — तू अब है रुख़्सत हो चला, माहे मुबारक अल वदाअ़

रुख़्सत से है दिल पुर अलम, फ़ुरक़त से जां पर सख़्त ग़म — शिद्दत से है रन्जो अ़ना, माहे मुबारक अल वदाअ़

ता'रीफ़ क्या कोई करे, ख़ाली नहीं है फ़ज़्ल से — रोज़ और शब सुब्हो मसा, माहे मुबारक अल वदाअ़

इल्मी न की कुछ बन्दगी, अज़ बस कि है शरमिन्दगी
वा ह़स्रता वा ह़स्रता, माहे मुबारक अल वदाअ़

صَلُّوا عَلَی الْحَبِیْب ! صَلَّی اللّٰهُ تَعَالٰی عَلٰی مُحَمَّد

फ़रमाने मुस्तफ़ा صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم : जो मुझ पर दस मरतबा दुरूदे पाक पढ़े अल्लाह عَزَّوَجَلَّ उस पर सो रहमतें नाज़िल फ़रमाता है। (طبرانی)

अल्फ़ाज़ व मआ़नी : हैफ़ : अफ़्सोस । **युम्न :** बरकत । **नारे सक़र :** दोज़ख़ की आग । **सिपर :** ढाल । **आहो बुका :** रोना धोना । **ज़ीस्त :** ज़िन्दगी । **पुर अलम :** ग़मगीन । **फ़ुरक़त :** जुदाई । **अ़ना :** ग़म । **मसा :** शाम । **अज़ बस :** नतीजा ।

ख़ुत्बे का एक अहम मस्अला : "बहारे शरीअ़त" में है : ग़ैर अ़रबी में ख़ुत्बा पढ़ना या अ़रबी के साथ दूसरी ज़बान ख़ुत्बे में ख़ल्त़ करना (या'नी मिलाना) ख़िलाफ़े सुन्नते मुतवारिसा (या'नी हमेशा से चली आने वाली सुन्नत के ख़िलाफ़) है । यूंही ख़ुत्बे में अश्आ़र पढ़ना भी न चाहिये अगर्चे अ़रबी ही के हों, हां दो एक शे'र पन्दो नसाएह़ के अगर कभी पढ़ ले तो ह़रज नहीं । (बहारे शरीअ़त, जि. 1, स. 769) लिहाज़ा उर्दू में अल वदाअ़ या कोई सा भी कलाम पढ़ना हो तो ख़ुत्बे से पहले या नमाज़ के बा'द पढ़ा जाए ।

"अल वदाअ़ माहे रमज़ान" की मदनी बहार : एक इस्लामी भाई **मदनी माह़ोल** में आने से पहले आ़म लड़कों की त़रह़ ज़िन्दगी गुज़ार रहे थे, नमाज़ों की पाबन्दी का ज़ेह्न नहीं था, न इस्लामी ह़ुल्ये की कोई तरकीब थी । ग़फ़्लतों में ज़िन्दगी के क़ीमती लम्ह़ात ज़ाएअ़ हो रहे थे । 1999 सि.ई. में उन्हों ने मेट्रिक का इम्तिह़ान दिया, इस के बा'द स्कूल की छुट्टियां हो गई, उन्ही दिनों "शबे बराअत" की तशरीफ़ आवरी हुई और उन के अपने अ़लाक़े **"डालमिया"** के क़रीब **"कन्ज़ुल ईमान मस्जिद"** का इफ़्तिताह़ हुवा, वहां नमाज़े मग़रिब के फ़र्ज़ व सुन्नत के बा'द शा'बानुल

फ़रमाने मुस्तफ़ा صَلَّى اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم : जिस के पास मेरा ज़िक्र हुवा और उस ने मुझ पर दुरूदे पाक न पढ़ा तह्क़ीक़ वोह बद बख़्त हो गया। (ابن سنی)

मुअ़ज़्ज़म के छ6 नवाफ़िल भी पढ़ाए गए, फिर **माहे रमज़ानुल मुबारक** में इसी ज़ेरे ता'मीर मस्जिद में उन्हें **"दा'वते इस्लामी"** की त़रफ़ से किये जाने वाले इज्तिमाई ए'तिकाफ़ में आ़शिक़ाने रसूल के साथ ए'तिकाफ़ करने की सआ़दत भी मिली, इस ए'तिकाफ़ की बरकत से बहुत सा इल्मे दीन सीखने का मौक़अ़ मिला और आख़िरी दिन रुख़्सते माहे रमज़ान के मौक़अ़ पर **"अल वदाअ़"** पढ़ी गई तो आ़शिक़ाने रसूल पर रिक़्क़त त़ारी थी, उन पर भी रिक़्क़त त़ारी हुई और वोह काफ़ी देर तक रोते रहे, यहां तक कि इस्लामी भाइयों ने उन्हें खाने के लिये बिठाया मगर उन की हिचकियां जारी ही थीं। फिर उन्हें इमामा शरीफ़ सजाने का शरफ़ मिला। वोह दिन है और आज का दिन (ता दमे तह़रीर) वोह **दा'वते इस्लामी** के **मदनी माह़ोल** से वाबस्ता हैं, कई मदनी क़ाफ़िलों में सफ़र और तीन दिन के सुन्नतों भरे इज्तिमाअ़ में शिर्कत की सआ़दत भी मिली, ता दमे तह़रीर 4 रजबुल मुरज्जब 1438 सि.हि. चार साल से मस्जिद के अन्दर मन्सबे इमामत पर भी फ़ाइज़ हैं। जामिअ़तुल मदीना में अ़स्री उ़लूम या'नी रियाज़ी और इंग्लिश की तदरीस भी फ़रमा रहे हैं। और (येह अल्फ़ाज़ लिखते वक़्त) اَلْحَمْدُ لِلّٰہ عَزَّوَجَلَّ उन्हें तीन बार आ़लमी मदनी मर्कज़ **"फ़ैज़ाने मदीना"** में **इज्तिमाई ए'तिकाफ़** की सआ़दत भी नसीब हो चुकी है। नीज़ ता दमे तह़रीर शो'बए ता'लीम (दा'वते इस्लामी) की डिवीज़न सत़्ह की ज़िम्मेदारी भी ह़ासिल है।

“मिस्वाक सुन्नत है” के दस हुरूफ़ की निस्बत से मिस्वाक के मु-तअ़ल्लिक़ 10 फ़रामीने मुस्तफ़ा صَلَّى اللّٰہ تعالٰی علیہ والہٖ وسلَّم

﴾1﴿ **मिस्वाक** कर के **दो**[2] रक्अ़तें पढ़ना बिग़ैर **मिस्वाक** की 70 रक्अ़तों से अफ़्ज़ल है[1] ﴾2﴿ **मिस्वाक** के साथ नमाज़ पढ़ना बिग़ैर **मिस्वाक** के नमाज़ पढ़ने से 70 गुना अफ़्ज़ल है[2] ﴾3﴿ चार चीज़ें रसूलों की सुन्नत हैं : (1) इ़त्र लगाना (2) निकाह़ करना (3) **मिस्वाक** करना और (4) ह़या करना[3] ﴾4﴿ **मिस्वाक** करो ! **मिस्वाक** करो ! मेरे पास **पीले दांत** ले कर न आया करो[4] ﴾5﴿ **मिस्वाक** में मौत के सिवा हर मरज़ से शिफ़ा है[5] ﴾6﴿ अगर मुझे अपनी उम्मत की मशक़्क़त व दुश्वारी का ख़याल न होता तो मैं इन को हर वुज़ू के साथ **मिस्वाक** करने का हुक्म देता[6] ﴾7﴿ **मिस्वाक** का इस्ति'माल अपने लिये लाज़िम कर लो क्यूं कि इस में मुंह की सफ़ाई है और येह रब तआ़ला की रिज़ा का सबब है[7] ﴾8﴿ वुज़ू निस्फ़ (या'नी आधा) ईमान है, और **मिस्वाक** करना निस्फ़ (या'नी आधा) वुज़ू है[8] ﴾9﴿ बन्दा जब **मिस्वाक** कर लेता है फिर नमाज़ को खड़ा होता है तो फ़िरिश्ता उस के पीछे खड़ा हो कर क़िराअत सुनता है, फिर उस से क़रीब होता है यहां तक कि अपना मुंह उस के मुंह पर रख देता है[9] ﴾10﴿ “जिस शख़्स ने जुमुए़ के दिन ग़ुस्ल किया और **मिस्वाक** की, ख़ुश्बू लगाई, उ़म्दा कपड़े पहने, फिर मस्जिद में आया और लोगों की गरदनों को नहीं फलांगा, बल्कि नमाज़ पढ़ी और इमाम के आने के बा'द (या'नी ख़ुत़्बे में और) नमाज़ से फ़ारिग़ होने तक ख़ामोश रहा तो **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ उस के तमाम गुनाहों को जो उस पूरे हफ़्ते में हुए थे, मुआ़फ़ फ़रमा देता है।”[10]

مدینہ

۱: اَلتَّرغِیب وَالتَّرھِیب ج۱ص۱۰۲ حدیث۱۸ ۲: شعب الایمان ج۳ص۲۶ حدیث۲۷۷۴ ۳: مُسندِ احمدبن حنبل ج۹ص۱۴۷ حدیث۲۳۶۴۱ ۴: جَمْعُ الْجَوامِع ج۱ص۳۸۹ حدیث۲۸۷۵ ۵: جامعِ صغیرص۲۹۷حدیث۴۸۴۰ ۶: بُخاری ج۱ص۶۳۷ ۷: مُسندِ احمد بن حنبل ج۲ص۴۳۸ حدیث۵۸۶۹ ۸: مُصَنَّف ابنِ اَبی شیبه ج۱ص۱۹۷ حدیث ۲۲ ۹: البحر الزخار ج۲ ص۲۱۴ حدیث:۶۰۳ ۱۰: مُسندِ احمد بن حنبل ج۴ص۱۶۲ حدیث۱۱۷۶۸

फ़ैज़ाने ए'तिकाफ़

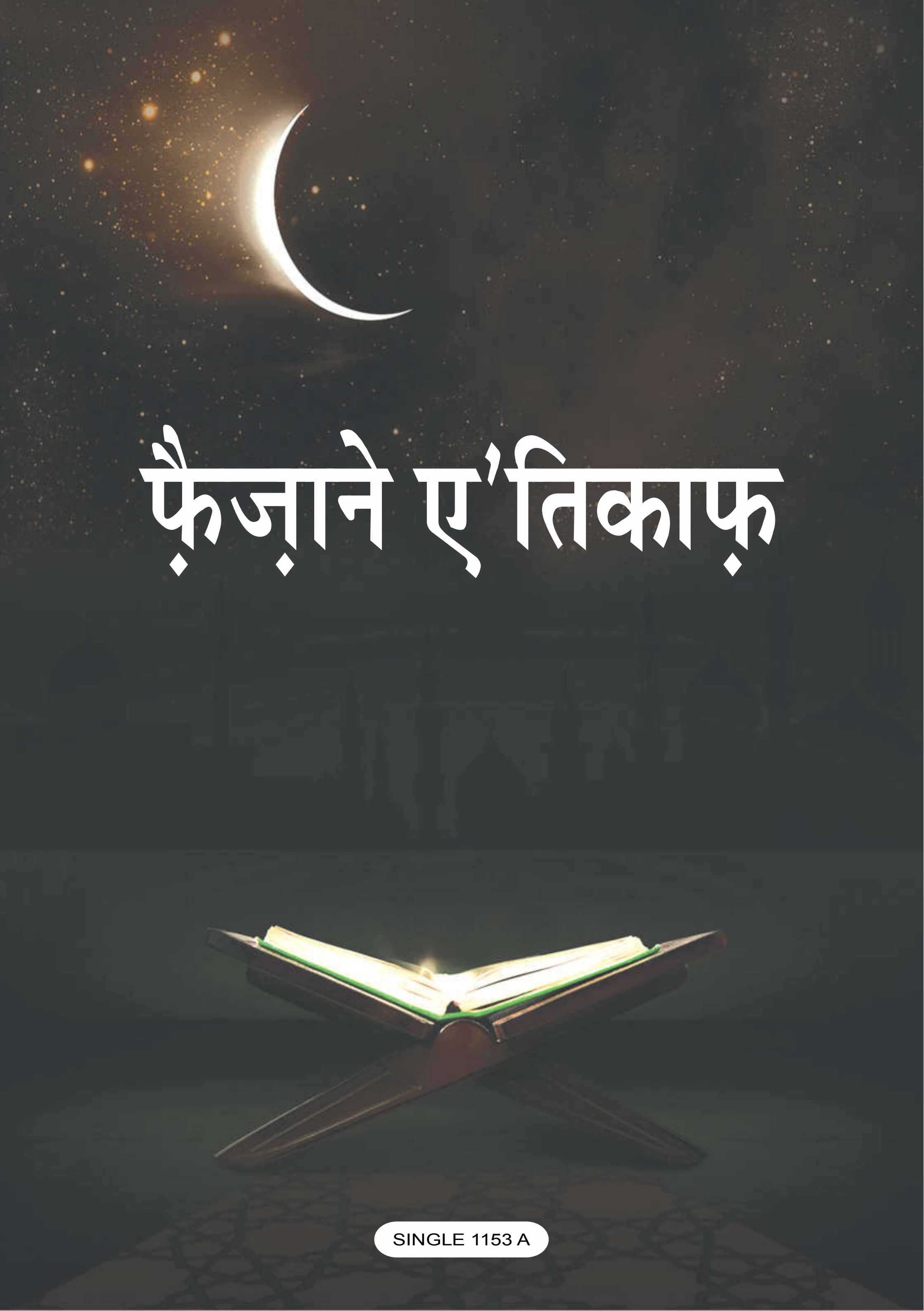

SINGLE 1153 A

اَلْحَمْدُ لِلّٰهِ رَبِّ الْعٰلَمِيْنَ وَالصَّلٰوةُ وَالسَّلَامُ عَلٰى سَيِّدِ الْمُرْسَلِيْنَ
اَمَّا بَعْدُ فَاَعُوْذُ بِاللّٰهِ مِنَ الشَّيْطٰنِ الرَّجِيْمِ ؕ بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ ؕ

फ़ैज़ाने ए'तिकाफ़

दुरूद शरीफ़ की फ़ज़ीलत : फ़रमाने मुस्तफ़ा صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم : जिस ने मुझ पर सुब्ह व शाम दस दस मर्तबा **दुरूदे पाक** पढ़ा उसे क़ियामत के दिन मेरी शफ़ाअ़त मिलेगी।

(مَجْمَعُ الزَّوَائِد ج١٠ ص١٦٣ حديث١٧٠٢٢)

صَلُّوْا عَلَى الْحَبِيْب! صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلٰى مُحَمَّد

प्यारे प्यारे इस्लामी भाइयो ! रमज़ानुल मुबारक की बरकतों के क्या कहने ! यूं तो इस की हर हर घड़ी रह़मत भरी और हर हर साअ़त अपने जिलौ में बे पायां बरकतें लिये हुए है, मगर इस माहे मोह़तरम में **शबे क़द्र** सब से ज़ियादा अहम्मिय्यत की ह़ामिल है। इसे पाने के लिये हमारे प्यारे आक़ा, मदीने वाले मुस्तफ़ा صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने **माहे रमज़ाने पाक** का पूरा महीना भी **ए'तिकाफ़** फ़रमाया है और आख़िरी दस दिन का बहुत ज़ियादा एहतिमाम था। यहां तक कि एक बार किसी ख़ास उ़ज़्र के तह़त "आप صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم **रमज़ानुल मुबारक** में

ए'तिकाफ़ न कर सके तो शव्वालुल मुकर्रम के आख़िरी अ़शरे में **ए'तिकाफ़** फ़रमाया।" (بُخاری ج۱ص۶۷۱ حدیث۲۰۴۱) "एक मर्तबा सफ़र की वज्ह से आप صَلَّى اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم का **ए'तिकाफ़** रह गया तो अगले रमज़ान शरीफ़ में बीस दिन का **ए'तिकाफ़** फ़रमाया।"

(تِرمِذی ج۲ص۲۱۲ حدیث۸۰۳ مُلَخَّصاً)

ए'तिकाफ़ पुरानी इबादत है : पिछली उम्मतों में भी **ए'तिकाफ़** की इबादत मौजूद थी। चुनान्चे पारह अव्वल **सूरतुल बक़रह** की आयत नम्बर 125 में **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ का फ़रमाने आ़लीशान है :

وَعَهِدْنَاۤ اِلٰۤى اِبْرٰهٖمَ وَ اِسْمٰعِیْلَ اَنْ طَهِّرَا بَیْتِیَ لِلطَّآىٕفِیْنَ وَ الْعٰكِفِیْنَ وَ الرُّكَّعِ السُّجُوْدِ ﴿۱۲۵﴾

तरजमए कन्ज़ुल ईमान : और हम ने ताकीद फ़रमाई इब्राहीम व इस्माईल को कि मेरा घर ख़ूब सुथरा करो त़वाफ़ वालों और **ए'तिकाफ़** वालों और रुकूअ़ व सुजूद वालों के लिये।

मस्जिदों को साफ़ रखने का हुक्म है : प्यारे प्यारे इस्लामी भाइयो ! त़वाफ़ व नमाज़ व ए'तिकाफ़ के लिये का'बए मुशर्रफ़ा की पाकीज़गी और सफ़ाई का ख़ुद रब्बे का'बा عَزَّوَجَلَّ की त़रफ़ से फ़रमान जारी किया गया है। **मुफ़स्सिरे** शहीर **हकीमुल उम्मत** ह़ज़रते मुफ़्ती अह़मद यार ख़ान عَلَیْہِ رَحْمَۃُ الْحَنَّان फ़रमाते हैं : "मा'लूम हुवा कि मस्जिदों

को पाक साफ़ रखा जाए, वहां गन्दगी और बदबूदार चीज़ न लाई जाए येह सुन्नते अम्बिया है। येह भी मा'लूम हुवा कि **ए'तिकाफ़** इबादत है और पिछली उम्मतों की नमाज़ों में रुकूअ़ सुजूद दोनों थे। येह भी मा'लूम हुवा कि मस्जिदों का मुतवल्ली होना चाहिये और मुतवल्ली सालेह़ (परहेज़ गार) इन्सान हो।" मज़ीद आगे फ़रमाते हैं : "त़वाफ़ व नमाज़ व ए'तिकाफ़ बड़ी पुरानी इबादतें हैं जो ज़मानए इब्राहीमी में भी थीं।" (नूरुल इरफ़ान, स. 29)

दस दिन का ए'तिकाफ़ : उम्मुल मुअमिनीन ह़ज़रते सय्यिदतुना आ़इशा सिद्दीक़ा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہَا रिवायत फ़रमाती हैं कि रसूले अकरम صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم **रमज़ानुल मुबारक** के आख़िरी अ़शरे (या'नी आख़िरी दस दिन) का ए'तिकाफ़ फ़रमाया करते। यहां तक कि **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ ने आप صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم को वफ़ाते (ज़ाहिरी) अ़त़ा फ़रमाई। फिर आप صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم के बा'द आप صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم की अज़्वाजे मुत़ह्हरात **ए'तिकाफ़** करती रहीं। (بُخاری ج۱ص۶۶۴حدیث۲۰۲۶)

आ़शिक़ों की धुन : प्यारे प्यारे इस्लामी भाइयो ! यूं तो ए'तिकाफ़ के बे शुमार फ़ज़ाइल हैं मगर उ़श्शाक़ के लिये तो इतनी ही बात काफ़ी है कि आख़िरी अ़शरे का ए'तिकाफ़ **सुन्नत** है। येह तसव्वुर ही ज़ौक़ अफ़्ज़ा है कि हम प्यारे सरकार, मदीने के ताजदार صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم

की एक प्यारी प्यारी सुन्नत अदा कर रहे हैं। **आ़शिक़ों की तो धुन** येही होती है कि फ़ुलां फ़ुलां काम हमारे प्यारे आक़ा صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने किया है बस इसी लिये हमें भी करना है, मगर अ़मल करने के लिये येह ज़रूरी है कि हमारे लिये कोई शरई मुमानअ़त न हो।

ऊंटनी के साथ फेरे लगाने की ह़िक्मत : ह़ज़रते सय्यिदुना **अ़ब्दुल्लाह** इब्ने उ़मर رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْهُمَا बहुत ज़ियादा **मुत्तबेए़ सुन्नत** थे और अदाए मुस्त़फ़ा को अदा करने का जज़्बा आप رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْه के अन्दर कूट कूट कर भरा हुवा था चुनान्चे एक मक़ाम पर आप رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْه ने **अपनी ऊंटनी को घुमाया,** पूछने पर इर्शाद फ़रमाया : "मुझे इस के बारे में मा'लूम नहीं, सिर्फ़ इतना याद है कि मैं ने रसूले अकरम صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم को इस मक़ाम पर ऐसा करते देखा था लिहाज़ा मैं ने भी ऐसा ही किया है।" (اَلشِّفاء ج ٢ ص ١٥)

صَلُّوْا عَلَى الْحَبِيْب! صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلٰى مُحَمَّد

मो'तकिफ़ का मक़्सूदे अस्ली इन्तिज़ारे नमाज़े बा जमाअ़त : फ़तावा आ़लमगीरी में है : "**ए'तिकाफ़** की ख़ूबियां बिल्कुल ही ज़ाहिर हैं क्यूं कि इस में बन्दा **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ की रिज़ा ह़ासिल करने के लिये कुल्लिय्यतन (या'नी मुकम्मल त़ौर पर) अपने आप को **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ की इ़बादत में मुन्हमिक कर देता है और उन तमाम

मशाग़िले दुन्या से किनारा कश हो जाता है जो **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ के कुर्ब की राह में ह़ाइल होते हैं और मो'तकिफ़ के तमाम अवक़ात ह़क़ीक़तन या हुक्मन नमाज़ में गुज़रते हैं। (क्यूं कि नमाज़ का इन्तिज़ार करना भी नमाज़ की त़रह़ सवाब रखता है) और **ए'तिकाफ़** का मक़्सूदे अस्ली जमाअ़त के साथ नमाज़ का इन्तिज़ार करना है और मो'तकिफ़ उन (फ़िरिश्तों) से मुशाबहत रखता है जो **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ के हुक्म की ना फ़रमानी नहीं करते और जो कुछ उन्हें हुक्म मिलता है उसे बजा लाते हैं और उन के साथ मुशाबहत रखता है जो शबो रोज़ **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ की तस्बीह़ (पाकी) बयान करते रहते हैं और इस से उक्ताते नहीं।" (عالمگیری ج ۱ ص ۲۱۲)

एक दिन के ए'तिकाफ़ की फ़ज़ीलत : फ़रमाने मुस्तफ़ा صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰی عَلَیْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم : "जो शख़्स **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ की रिज़ा व ख़ुशनूदी के लिये एक दिन का ए'तिकाफ़ करेगा **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ उस के और जहन्नम के दरमियान तीन ख़न्दक़ें ह़ाइल कर देगा हर ख़न्दक़ की मसाफ़त (या'नी दूरी) मशरिक़ व मग़रिब के फ़ासिले से भी ज़ियादा होगी।"

(مُعْجَم اَوسَط ج ۵ ص ۲۷۹ حدیث ۷۳۲۶)

साबिक़ा गुनाहों की बख़्शिश : उम्मुल मुअमिनीन ह़ज़रते सय्यिदतुना आइशा सिद्दीक़ा رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْهَا से रिवायत है कि सरकारे अबद क़रार, शफ़ीए रोज़े शुमार صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰی عَلَیْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم का फ़रमाने ख़ुश्बूदार

है : مَنِ اعْتَكَفَ إِيْمَانًا وَّ احْتِسَابًا غُفِرَ لَهُ مَا تَقَدَّمَ مِنْ ذَنْبِهٖ۔ **तरजमा :** "जिस शख़्स ने ईमान के साथ और सवाब ह़ासिल करने की निय्यत से **ए'तिकाफ़** किया उस के पिछले गुनाह बख़्श दिये जाएंगे।" (جامع صغير ص٥١٦ حديث٨٤٨٠)

आक़ा صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰی عَلَیْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم की जाए ए'तिकाफ़ : ह़ज़रते सय्यिदुना नाफ़ेअ़ رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْه कहते हैं कि ह़ज़रते सय्यिदुना **अ़ब्दुल्लाह** इब्ने उ़मर رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْهُمَا फ़रमाते हैं : मदीने के सुल्त़ान, रह़मते आ़लमिय्यान, सरवरे ज़ीशान صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰی عَلَیْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم माहे रमज़ान के **आख़िरी अ़शरे का ए'तिकाफ़** फ़रमाया करते थे। ह़ज़रते सय्यिदुना नाफ़ेअ़ رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْه फ़रमाते हैं कि ह़ज़रते सय्यिदुना **अ़ब्दुल्लाह** इब्ने उ़मर رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْهُمَا ने मुझे मस्जिद में वोह जगह दिखाई जहां सरकारे मदीना صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰی عَلَیْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ए'तिकाफ़ फ़रमाते थे। (مسلم ص٥٩٧ حديث ١١٧١)

प्यारे प्यारे इस्लामी भाइयो ! मस्जिदे नबविय्यिश्शरीफ़ عَلٰی صَاحِبِهَا الصَّلٰوةُ وَالسَّلَام में जिस जगह हमारे मीठे मीठे आक़ा, मक्की मदनी मुस्त़फ़ा صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰی عَلَیْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ए'तिकाफ़ के लिये सरीर (या'नी तख़्त) बिछाते थे वहां बत़ौरे यादगार एक मुबारक सुतून बनाम "उस्तुवानतुस्सरीर" आज भी क़ाइम है। ख़ुश नसीब आ़शिक़ाने रसूल उस की ज़ियारत करते और ह़ुसूले बरकत के लिये यहां नवाफ़िल अदा करते हैं।

फ़रमाने मुस्तफ़ा صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم : जिस ने मुझ पर रोज़े जुमुआ दो सो बार दुरूदे पाक पढ़ा उस के दो सो साल के गुनाह मुआफ़ होंगे। (جمع الجوامع)

सारे महीने का ए'तिकाफ़ : हज़रते सय्यिदुना अबू सईद खुदरी رَضِیَ اللهُ تَعَالٰی عَنْہُ से रिवायत है : एक मर्तबा सुल्ताने दो जहान, शहन्शाहे कौनो मकान, रह़मते आ़लमिय्यान صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने यकुम रमज़ान से बीस रमज़ान तक **ए'तिकाफ़** करने के बा'द इर्शाद फ़रमाया : "मैं ने **शबे क़द्र** की तलाश के लिये रमज़ान के पहले अ़शरे का ए'तिकाफ़ किया फिर दरमियानी अ़शरे का ए'तिकाफ़ किया फिर मुझे बताया गया कि **शबे क़द्र** आख़िरी अ़शरे में है लिहाज़ा तुम में से जो शख़्स मेरे साथ ए'तिकाफ़ करना चाहे वोह कर ले।" (مُسلم ص۵۹٤حديث۱۱٦۷)

तुर्की ख़ैमे में ए'तिकाफ़ : हज़रते सय्यिदुना अबू सईद खुदरी رَضِیَ اللهُ تَعَالٰی عَنْہُ फ़रमाते हैं : "सरकारे मदीना صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने एक **तुर्की ख़ैमे** के अन्दर **रमज़ानुल मुबारक** के पहले अ़शरे का ए'तिकाफ़ फ़रमाया, फिर दरमियानी अ़शरे का, फिर सरे अक़्दस बाहर निकाला और फ़रमाया : "मैं ने **पहले अ़शरे का ए'तिकाफ़** शबे क़द्र तलाश करने के लिये किया, फिर इसी मक़्सद के तह़त **दूसरे अ़शरे का ए'तिकाफ़** भी किया, फिर मुझे **अल्लाह तआ़ला** की त़रफ़ से येह ख़बर दी गई कि **शबे क़द्र आख़िरी अ़शरे** में है। लिहाज़ा जो शख़्स मेरे साथ ए'तिकाफ़ करना चाहे वोह आख़िरी अ़शरे का ए'तिकाफ़ करे। इस लिये कि मुझे पहले शबे क़द्र दिखा दी गई थी फिर भुला दी गई, और अब मैं ने येह देखा है कि **शबे क़द्र**

की सुब्ह को गीली मिट्टी में सज्दा कर रहा हूं। लिहाज़ा अब तुम शबे क़द्र को आख़िरी अ़शरे की ताक़ रातों में तलाश करो।" हज़रते सय्यिदुना अबू सईद ख़ुदरी رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْهُ फ़रमाते हैं कि उस शब बारिश हुई और मस्जिद शरीफ़ की छत मुबारक टपकने लगी, चुनान्चे इक्कीस **रमज़ानुल मुबारक** की सुब्ह को मेरी आंखों ने मीठे मीठे आक़ा, मक्की मदनी मुस्तफ़ा صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم को इस हालत में देखा कि आप صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم की मुबारक पेशानी पर गीली मिट्टी का निशाने आ़लीशान था। (مِشکوٰۃ ج ۱ ص ۳۹۲ حدیث ۲۰۸۶)

ए'तिकाफ़ का मक़्सदे अ़ज़ीम : प्यारे प्यारे इस्लामी भाइयो ! हमें ज़िन्दगी में एक बार तो इस अदाए मुस्तफ़ा صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم को अदा करते हुए पूरे माहे **रमज़ानुल मुबारक** का ए'तिकाफ़ कर ही लेना चाहिये। **रमज़ानुल मुबारक** में ए'तिकाफ़ करने का सब से बड़ा मक़्सद **शबे क़द्र** की तलाश है। और राजेह़ (या'नी ग़ालिब) येही है कि शबे क़द्र **रमज़ानुल मुबारक** के आख़िरी दस[10] दिनों की ताक़ रातों में होती है। इस ह़दीसे मुबारक से येह भी मा'लूम हुवा कि उस बार शबे क़द्र इक्कीसवीं[21] शब थी मगर येह फ़रमाना कि "आख़िरी अ़शरे की ताक़ रातों में इस को तलाश करो।" इस बात को ज़ाहिर करता है कि शबे क़द्र बदलती रहती है। या'नी कभी इक्कीसवीं[21], कभी तेईसवीं[23],

कभी पच्चीसवीं[25], कभी सत्ताईसवीं[27] तो कभी उन्तीसवीं[29] शब। मुसल्मानों को शबे क़द्र की सआदत हासिल करने के लिये आख़िरी अशरे के ए'तिकाफ़ की तरग़ीब दिलाई गई है, क्यूं कि मो'तकिफ़ दसों[10] दिन मस्जिद ही में गुज़ारता है और इन दस[10] दिनों में कोई सी एक रात शबे क़द्र होती है। और यूं वोह शबे क़द्र मस्जिद में गुज़ारने में काम्याब हो जाता है। एक और नुक्ता इस हदीसे पाक से येह भी मा'लूम हुवा कि रसूले पाक, साहिबे लौलाक, सय्याहे अफ़्लाक صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने ख़ाक पर सज्दा अदा फ़रमाया जभी तो ख़ाक के ख़ुश नसीब ज़र्रात सरवरे काएनात, शहन्शाहे मौजूदात صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم की नूरानी पेशानी से चिमट गए थे।

ज़मीन पर बिला हाइल सज्दा करना मुस्तहब है : फ़ुक़हाए किराम رَحِمَهُمُ اللّٰهُ السَّلَام फ़रमाते हैं : "ज़मीन पर बिला हाइल (या'नी मुसल्ला, कपड़ा वग़ैरा न हो यूं) सज्दा करना अफ़्ज़ल है।" (مراقی الفلاح ص۱۹۰)

हुज्जतुल इस्लाम हज़रते सय्यिदुना इमाम मुहम्मद बिन मुहम्मद बिन मुहम्मद ग़ज़ाली عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللّٰهِ الْوَالِى नक़्ल फ़रमाते हैं : हज़रते सय्यिदुना उमर बिन अ़ब्दुल अ़ज़ीज़ رَضِىَ اللّٰهُ تَعَالٰى عَنْه हमेशा **ज़मीन ही पर सज्दा** करते या'नी सज्दे की जगह मुसल्ला वग़ैरा न बिछाते। (اِحیاء العلوم ج۱ ص۲۰۴)

दो फ़रामीने मुस्तफ़ा صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم

दो हज और दो उम्रों का सवाब : ﴿1﴾ "जिस ने **रमज़ानुल मुबारक** में दस दिन का ए'तिकाफ़ कर लिया वोह ऐसा है जैसे **दो हज** और दो उम्रे किये।" (شُعَبُ الْاِیمان ج۳ص۴۲۵حدیث ۳۹۶۶) ﴿2﴾ "ए'तिकाफ़ करने वाला गुनाहों से बचा रहता है और उस के लिये तमाम नेकियां लिखी जाती हैं जैसे उन के करने वाले के लिये होती हैं।" (ابنِ ماجه ج۲ص۳۶۵حدیث۱۷۸۱)

बिग़ैर किये नेकियों का सवाब : मुफ़स्सिरे शहीर **हकीमुल उम्मत** हज़रते मुफ़्ती अहमद यार ख़ान عَلَیْہِ رَحْمَۃُ الْحَنَّان हदीस नम्बर 2 के तहत मिरआत जिल्द 3 सफ़हा 217 पर फ़रमाते हैं : "या'नी ए'तिकाफ़ का फ़ौरी फ़ाएदा तो येह है कि येह मो'तकिफ़ को गुनाहों से बाज़ रखता है। अ़क्फ़ के मा'ना हैं रोकना, बाज़ रखना, क्यूं कि अक्सर गुनाह ग़ीबत, झूट और चुग़ली वग़ैरा लोगों से इख़्तिलात़ के बाइ़स होती है मो'तकिफ़ गोशा नशीन है और जो इस से मिलने आता है वोह भी मस्जिद व ए'तिकाफ़ का लिहाज़ रखते हुए बुरी बातें न करता है न कराता है। या'नी मो'तकिफ़ ए'तिकाफ़ की वज्ह से जिन नेकियों से महरूम हो गया जैसे ज़ियारते क़ुबूर मुसल्मान से मुलाक़ात बीमार की मिज़ाज पुर्सी, नमाज़े जनाज़ा में ह़ाज़िरी उसे इन सब नेकियों का सवाब इसी त़रह़ मिलता है जैसे येह काम करने वालों को सवाब मिलता है, اِنْ شَآءَاللّٰہ ग़ाज़ी, ह़ाजी, त़ालिबे इ़ल्मे दीन का भी येह ही ह़ाल है।"

रोज़ाना हज का सवाब : हज़रते सय्यिदुना हसन बसरी رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْهُ से मन्क़ूल है : ''मो'तकिफ़ को हर रोज़ एक **हज का सवाब** मिलता है।'' (شُعَبُ الْاِيمان ج٣ص٤٢٥ حديث ٣٩٦٨)

ए'तिकाफ़ की ता'रीफ़ : ''मस्जिद में अल्लाह عَزَّوَجَلَّ **की रिज़ा के लिये ब निय्यते ए'तिकाफ़ ठहरना ए'तिकाफ़ है।''** इस के लिये मुसल्मान का आ़क़िल होना और जनाबत और हैज़ व निफ़ास से पाक होना शर्त़ है। बुलूग़ शर्त़ नहीं, ना बालिग़ भी जो तमीज़ रखता है अगर ब निय्यते **ए'तिकाफ़** मस्जिद में ठहरे तो उस का **ए'तिकाफ़** सह़ीह़ है। (عالمگیری ج ١ ص ٢١١)

ए'तिकाफ़ के लफ़्ज़ी मा'ना : ए'तिकाफ़ के लुग़वी मा'ना हैं : ''**एक जगह जमे रहना**'' मत़लब येह कि मो'तकिफ़ **अल्लाहु रब्बुल इ़ज़्ज़त** عَزَّوَجَلَّ की बारगाहे अ़ज़मत में उस की इ़बादत पर कमर बस्ता हो कर एक जगह जम कर बैठा रहता है। इस की येही धुन होती है कि किसी त़रह़ इस का परवर दगार عَزَّوَجَلَّ इस से राज़ी हो जाए।

अब तो ग़नी के दर पर बिस्तर जमा दिये हैं : हज़रते सय्यिदुना अ़त़ा ख़ुरासानी قُدِّسَ سِرُّهُ النُّوْرَانِی फ़रमाते हैं : मो'तकिफ़ की मिसाल उस शख़्स की सी है जो **अल्लाह तआ़ला** के दर पर आ पड़ा हो और येह कह रहा हो : ''**या अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ **!** जब तक तू मेरी मग़्फ़िरत नहीं फ़रमा देगा मैं यहां से नहीं टलूंगा।'' (بَدائعُ الصنائع ج٢ص٢٧٣)

हम से फ़क़ीर भी अब फेरी को उठते होंगे

अब तो ग़नी के दर पर बिस्तर जमा दिये हैं

(ह़दाइक़े बख़्शिश, स. 101)

ए'तिकाफ़ की क़िस्में : **ए'तिकाफ़** की तीन क़िस्में हैं :

﴾1﴿ ए'तिकाफ़े वाजिब ﴾2﴿ ए'तिकाफ़े सुन्नत ﴾3﴿ ए'तिकाफ़े नफ़्ल।

ए'तिकाफ़े वाजिब : **ए'तिकाफ़** की नज़्र (या'नी मन्नत) मानी या'नी ज़बान से कहा : "**अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ के लिये मैं फ़ुलां दिन या इतने दिन का **ए'तिकाफ़** करूंगा।" तो अब जितने दिन का कहा है उतने दिन का **ए'तिकाफ़** करना वाजिब हो गया। **मन्नत** के अल्फ़ाज़ **ज़बान** से अदा करना शर्त़ है, सिर्फ़ दिल ही दिल में **मन्नत** की निय्यत कर लेने से **मन्नत** सह़ीह़ नहीं होती। (और ऐसी मन्नत का पूरा करना वाजिब नहीं होता)

(رَدُّالْمُحْتَار ج۳ ص۴۹۵ مُلَخَّصاً)

मन्नत का ए'तिकाफ़ मर्द मस्जिद में करे और औ़रत **मस्जिदे बैत** में, इस में रोज़ा भी शर्त़ है। (औ़रत घर में जो जगह नमाज़ के लिये मख़्सूस कर ले उसे "मस्जिदे बैत" कहते हैं)[1]

ए'तिकाफ़े सुन्नत : **रमज़ानुल मुबारक** के आख़िरी अ़शरे का

1 : मन्नत के बारे में तफ़्सीली अह़काम जानने के लिये बहारे शरीअ़त जिल्द 1 सफ़ह़ा 1015 ता 1019 और बहारे शरीअ़त जिल्द 2 सफ़ह़ा 311 ता 318 का मुत़ालआ़ कीजिये।

ए'तिकाफ़ "सुन्नते मुअक्कदा अ़लल किफ़ाया" है। (دُرِّ مُختار ج ۳ ص ٤٩٥) अगर सब तर्क करें तो सब से मुत़ालबा होगा और शहर में एक ने कर लिया तो सब बरिय्युज़्ज़िम्मा। (बहारे शरीअ़त, जि. 1, स. 1021)

इस ए'तिकाफ़ में येह ज़रूरी है कि **रमज़ानुल मुबारक** की **बीसवीं** तारीख़ को ग़ुरूबे आफ़्ताब से पहले पहले मस्जिद के अन्दर **ब निय्यते ए'तिकाफ़** मौजूद हो और **उन्तीस** के चांद के बा'द या **तीस** के ग़ुरूबे आफ़्ताब के बा'द मस्जिद से बाहर निकले। अगर 20 **रमज़ानुल मुबारक** को ग़ुरूबे आफ़्ताब के बा'द मस्जिद में दाख़िल हुए तो **ए'तिकाफ़** की सुन्नते मुअक्कदा अदा न हुई।

ए'तिकाफ़ की निय्यत इस त़रह़ कीजिये : "मैं अल्लाह عَزَّوَجَلَّ की रिज़ा के लिये **रमज़ानुल मुबारक** के आख़िरी अ़शरे के सुन्नते ए'तिकाफ़ की निय्यत करता हूं।" (दिल में निय्यत होना शर्त़ है, दिल में निय्यत ह़ाज़िर होते हुए ज़बान से भी कह लेना बेहतर है)

ए'तिकाफ़े नफ़्ल : नज़्र और सुन्नते मुअक्कदा के इलावा जो ए'तिकाफ़ किया जाए वोह मुस्तह़ब व सुन्नते ग़ैर मुअक्कदा है। (बहारे शरीअ़त, जि. 1, स. 1021) इस के लिये न रोज़ा शर्त़ है न कोई वक़्त की क़ैद, जब भी मस्जिद में दाख़िल हों **ए'तिकाफ़** की निय्यत कर लीजिये, जब मस्जिद से बाहर निकलेंगे **ए'तिकाफ़** ख़त्म हो जाएगा। मेरे आक़ा

आ'ला हज़रत رَحْمَةُ اللّٰهِ تَعَالٰى عَلَيْه फ़रमाते हैं : जब मस्जिद में जाए ए'तिकाफ़ की निय्यत कर ले, जब तक मस्जिद ही में रहेगा ए'तिकाफ़ का भी सवाब पाएगा। (फ़तावा रज़विय्या मुख़र्रजा, जि. 8, स. 98) निय्यत दिल के इरादे को कहते हैं, अगर दिल ही में आप ने इरादा कर लिया कि "मैं **सुन्नते ए'तिकाफ़** की निय्यत करता हूं।" आप मो'तकिफ़ हो गए, दिल में निय्यत हाज़िर होते हुए ज़बान से भी येही अल्फ़ाज़ कह लेना बेहतर है। **मादरी ज़बान** में भी निय्यत हो सकती है मगर अ़रबी में ज़ियादा बेहतर जब कि मा'ना ज़ेह्न में मौजूद हों। "**मल्फ़ूज़ाते आ'ला हज़रत**" सफ़्हा 317 पर है :

نَوَيْتُ سُنَّةَ الْاِعْتِكَاف

तरजमा : मैं ने सुन्नते ए'तिकाफ़ की निय्यत की।

मस्जिदुन्नबविय्यिश्शरीफ़ عَلٰى صَاحِبِهَا الصَّلٰوةُ وَالسَّلَام के क़दीम और मश्हूर दरवाज़े "बाबुर्रह़मह" से दाख़िल हों तो सामने ही सुतूने मुबारक है उस पर याद दिहानी के लिये क़दीम ज़माने से नुमायां तौर पर نَوَيْتُ سُنَّةَ الْاِعْتِكَاف लिखा हुवा है।

मस्जिद में खाना पीना : याद रखिये ! मस्जिद के अन्दर खाने पीने, सह़र व इफ़्त़ार करने, आबे ज़मज़म या दम किया हुवा पानी पीने और सोने की शरअ़न इजाज़त नहीं, अगर **ए'तिकाफ़** की निय्यत थी तो

ज़िम्नन इन सब कामों की इजाज़त हो जाएगी। यहां येह बात भी समझ लेना ज़रूरी है कि ए'तिकाफ़ की निय्यत सिर्फ़ खाने, पीने और सोने वग़ैरा के लिये न की जाए, सवाब के लिये की जाए। **रद्दुल मुह़तार** (शामी) में है : "अगर कोई मस्जिद में खाना, पीना या सोना चाहे तो **ए'तिकाफ़ की निय्यत** कर ले, कुछ देर **ज़िक्रुल्लाह** عَزَّوَجَلَّ करे फिर जो चाहे करे (या'नी अब चाहे तो खा पी या सो सकता है)।"

(رَدُّالمُحتار ج۳ص۵۰٦)

اَلْحَمْدُ لِلّٰه عَزَّوَجَلَّ तब्लीग़े क़ुरआनो सुन्नत की आ़लमगीर ग़ैर सियासी तह़रीक, **दा'वते इस्लामी** की जानिब से दुन्या के मुख़्तलिफ़ ममालिक के जुदा जुदा शहरों में पूरे माहे रमज़ान और आख़िरी अ़शरे के इज्तिमाई ए'तिकाफ़ की तरकीब की जाती है, **दा'वते इस्लामी** की मर्कज़ी मजलिसे शूरा की जानिब से मो'तकिफ़ीन के लिये बा क़ाइदा तरबियती जद्वल भी पेश किया जाता है।

इज्तिमाई ए'तिकाफ़ की 41 निय्यतें : फ़रमाने मुस्तफ़ा

صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم : نِيَّةُ الْمُؤمِنِ خَيْرٌ مِّنْ عَمَلِهٖ ۔ **"मुसल्मान की निय्यत उस के अ़मल से बेहतर है।"** (مُعجَم كبير ج٦ص١٨٥ حديث ٥٩٤٢)

अपने ए'तिकाफ़ की अ़ज़ीमुश्शान नेकी के साथ मज़ीद अच्छी अच्छी निय्यतें शामिल कर के सवाब में ख़ूब इज़ाफ़ा कीजिये मक्तबतुल

मदीना की त़रफ़ से शाएअ़ कर्दा कार्ड में से सरकारे आ'ला ह़ज़रत رَحْمَةُ اللّٰهِ تَعَالٰى عَلَيْه की बयान कर्दा मस्जिद में जाने की 40 निय्यतों में से ह़स्बे ह़ाल निय्यतें करने के साथ साथ मौक़अ़ की मुनासबत से मज़ीद येह निय्यतें भी कर के घर से निकलिये, (मस्जिद में आ कर भी ह़स्बे ह़ाल निय्यतें की जा सकती हैं, जब भी अच्छी अच्छी निय्यतें करें सवाब की निय्यत पेशे नज़र रखा करें)

﴾1﴿ यक्सूई के साथ इ़बादत बजा लाने, ज़ाती मुत़ालआ़ या अहले इ़ल्म के मुयस्सर होने पर उस से इ़ल्मे दीन सीखने के मवाक़ेअ़ से फ़ाएदा उठाने, लयलतुल क़द्र की बरकतें पाने और **माहे रमज़ानुल मुबारक** के क़ीमती लम्ह़ात से मुकम्मल फ़ाएदा उठाने के लिये पूरे **माहे रमज़ानुल मुबारक** (या आख़िरी दस दिन) के सुन्नते ए'तिकाफ़ के लिये जा रहा हूं ﴾2﴿ तसव्वुफ़ के इन उसूलों (اَلِف) तक़्लीले त़आ़म (या'नी कम खाना) (ب) तक़्लीले कलाम (या'नी कम बोलना) (ج) तक़्लीले मनाम (या'नी कम सोना) पर कारबन्द रहूंगा ﴾3﴿ रोज़ाना पांचों नमाज़ें पहली सफ़ में ﴾4﴿ तक्बीरे ऊला के साथ ﴾5﴿ बा जमाअ़त अदा करूंगा ﴾6﴿ हर अज़ान और ﴾7﴿ हर इक़ामत का जवाब दूंगा ﴾8﴿ हर बार मअ़ अव्वल व आख़िर दुरूद शरीफ़ अज़ान के बा'द की दुआ़ पढ़ूंगा ﴾9﴿ रोज़ाना तहज्जुद ﴾10﴿ इश्राक़ ﴾11﴿ चाश्त व ﴾12﴿ अव्वाबीन के नवाफ़िल

अदा करूंगा ﴾13﴿ तिलावत और ﴾14﴿ दुरूद शरीफ़ की कसरत करूंगा ﴾15﴿ रोज़ाना रात **सूरतुल मुल्क** पढूं या सुनूंगा ﴾16﴿ कम अज़ कम ताक़ (ODD) रातों में सलातुत्तस्बीह़ अदा करूंगा ﴾17﴿ तमाम सुन्नतों भरे ह़ल्क़ों और ﴾18﴿ बयानात में अव्वल ता आख़िर शिर्कत करूंगा ﴾19﴿ रिश्तेदारों और मुलाक़ातियों को भी **इन्फ़िरादी कोशिश** कर के सुन्नतों भरे ह़ल्क़ों में बिठाऊंगा ﴾20﴿ ज़बान पर **क़ुफ़्ले मदीना** लगाऊंगा या'नी फ़ुज़ूल गोई से बचूंगा और मुम्किन हुवा तो इस निय्यते ख़ैर के साथ ज़रूरत की बात भी ह़त्तल इम्कान लिख कर या इशारे से करूंगा ताकि फ़ुज़ूल, या बुरी बातों में न जा पड़ूं या शोरो गुल का सबब न बन जाऊं ﴾21﴿ मस्जिद को हर त़रह़ की बदबू से बचाऊंगा ﴾22﴿ मस्जिद में नज़र आने वाले तिन्के और बालों के गुच्छे वग़ैरा उठा कर डालने के लिये अपनी जेब में शॉपर रखूंगा। **फ़रमाने मुस्त़फ़ा** صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم : "जो मस्जिद से अज़िय्यत की चीज़ निकाले **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ उस के लिये जन्नत में एक घर बनाएगा" (ابنِ ماجه ج١ص٤١٩ حديث٧٥٧) ﴾23﴿ अपने पसीने और मुंह की राल वग़ैरा की आलूदगी से मस्जिद के फ़र्श या दरी या कारपेट को बचाने के लिये सिर्फ़ अपनी ज़ाती चादर या चटाई पर ही सोऊंगा ﴾24﴿ ब निय्यते ह़या, सोने में **पर्दे में पर्दा** रहे इस का हर त़रह़ से ख़याल रखूंगा (सोते वक़्त पाजामे

पर तहबन्द बांध कर मज़ीद ऊपर से चादर ओढ़ लेना मुफ़ीद है। जामिअ़तुल मदीना, मदनी क़ाफ़िले और घर वग़ैरा में हर जगह सोते वक़्त इस का ख़याल रखना चाहिये) ﴿25﴾ मस्जिद में गन्दगी न हो इस लिये वुज़ूख़ाना फ़िनाए मस्जिद में होने की सूरत में तेल कंघी वहीं करूंगा और जो बाल झड़ेंगे उठा लूंगा (अगर कोई वुज़ू के लिये मुन्तज़िर हो तो निशस्त से हट कर तेल कंघी कीजिये) ﴿26﴾ बिग़ैर इजाज़त किसी की कोई चीज़ इस्ति'माल न कर के खुद को गुनाह से बचाऊंगा मसलन इस्तिन्जा ख़ाने जाने के लिये दूसरों के चप्पल वग़ैरा इस्ति'माल नहीं करूंगा बल्कि ﴿27﴾ जिन से पहले से लैन दैन और दोस्ती नहीं थी उन से हलकी फुलकी चीज़ें भी आ़रियतन न मांग कर खुद को ख़िलाफ़े मुरव्वत काम से बचाऊंगा और अगर वोह चीज़ उस के इस्ति'माल में है तो उसे परेशानी न पहुंचाने की निय्यत भी मद्दे नज़र रखूंगा लिहाज़ा चप्पल, चादर, तक्या वग़ैरा किसी चीज़ के लिये दूसरों से सुवाल नहीं करूंगा ﴿28﴾ वक़्फ़ इम्लाक को नुक़्सान से महफ़ूज़ रखने, नमाज़ियों को अज़िय्यत से बचाने और मस्जिद इन्तिज़ामिया को परेशानी से दूर रखने के लिये खाना फ़िनाए मस्जिद में वोह भी खाने की मख़्सूस दरी या दस्तर ख़्वान वग़ैरा बिछा कर उस पर खाऊंगा, नमाज़ की दरी पर हरगिज़ नहीं खाऊंगा ﴿29﴾ खाना कम होने की सूरत में भूक के बा वुजूद ईसार की निय्यत से आहिस्ता आहिस्ता खाऊंगा ताकि दूसरे इस्लामी भाई ज़ियादा खा सकें। ईसार का सवाब बे

शुमार है चुनान्चे ताजदारे रिसालत, माहे नुबुव्वत صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰی عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم का फ़रमाने बख़्शिश निशान है : "जो शख़्स किसी चीज़ की ख़्वाहिश रखता हो, फिर उस ख़्वाहिश को रोक कर अपने ऊपर किसी और को तरजीह दे, तो **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ उसे बख़्श देता है" (ابنِ عَساکِر ج۳۱ص۱۴۲) ﴾30﴿ पेट का **कुफ़्ले मदीना** लगाऊंगा या'नी ख़्वाहिश से कम खाऊंगा ताकि इबादत में सुस्ती वाक़ेअ़ न हो और ज़ियादा खाने की वज्ह से सिह़्ह़त में कोई ऐसी ख़राबी न हो जाए जो इबादात को मुतअस्सिर करे ﴾31﴿ अगर किसी ने ज़ियादती की तो **अल्लाह तआ़ला** की रिज़ा के लिये सब्र करूंगा और ﴾32﴿ उस को **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ की रिज़ा के लिये मुआ़फ़ करूंगा ﴾33﴿ ख़ुसूसन पड़ोसी मो'तकिफ़ के साथ और उ़मूमन हर एक के साथ हुस्ने सुलूक करूंगा ﴾34﴿ ए'तिकाफ़ के ह़ल्क़ा निगरान की इन्तिज़ामी मुआ़मलात और जद्वल के तअ़ल्लुक़ से इताअ़त करूंगा ताकि मस्जिद के इज्तिमाई नज़्मो नसक़ में कोई ख़लल न पड़े और बद इन्तिज़ामी पैदा न हो ﴾35﴿ **फ़िक्रे मदीना** करते हुए रोज़ाना **मदनी इन्आ़मात** का रिसाला पुर करूंगा ﴾36﴿ इस्लामी भाइयों के सामने मौक़अ़ की मुनासबत से मुस्कुरा मुस्कुरा कर सदक़े का सवाब कमाऊंगा ﴾37﴿ कोई मेरी त़रफ़ देख कर मुस्कुराएगा तो येह दुआ़ पढ़ूंगा : اَضْحَكَ اللّٰهُ سِنَّكَ (या'नी **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ तुझे हंसता रखे) ﴾38﴿ अपने लिये, घर वालों, अह़बाब और सारी उम्मत के लिये दुआ़एं करूंगा ﴾39﴿

फ़रमाने मुस्तफ़ा صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰی عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم : उस शख़्स की नाक ख़ाक आलूद हो जिस के पास मेरा ज़िक्र हो और वोह मुझ पर दुरूदे पाक न पढ़े। (ترمذی)

अगर कोई मो'तकिफ़ बीमार हो गया तो जितना हो सका उस की दिलजूई और ख़िदमत करूंगा ﴾40﴿ बुज़ुर्ग (या'नी उम्र रसीदा) मो'तकिफ़ीन के साथ बहुत ज़ियादा हुस्ने सुलूक करूंगा ﴾41﴿ दौराने ए'तिकाफ़ हस्बे तौफ़ीक़ रसाइल तक़्सीम करूंगा (हर मो'तकिफ़ इस्लामी भाई की ख़िदमत में दर्द भरी मदनी इल्तिजा है कि हस्बे तौफ़ीक़ या दौराने ए'तिकाफ़ कम अज़् कम 112 रुपै के मक्तबतुल मदीना के रसाइल या सुन्नतों भरे बयान की C.D. या मदनी फूलों के मदनी पेम्फ़्लेट आने वाले मुलाक़ातियों वग़ैरा में ज़रूर तक़्सीम फ़रमाएं। **रमज़ानुल मुबारक** में तक़्सीमे रसाइल का सवाब भी ज़ियादा मिलेगा)

ए'तिकाफ़ किस मस्जिद में करे ? : मस्जिद जामेअ़ होना ए'तिकाफ़ के लिये शर्त़ नहीं बल्कि मस्जिदे जमाअ़त में भी हो सकता है। मस्जिदे जमाअ़त वोह है जिस में इमाम व मुअज़्ज़िन मुक़र्रर हों, अगर्चे उस में पन्जगाना जमाअ़त न होती हो और आसानी इस में है कि मुत़्लक़न हर मस्जिद में ए'तिकाफ़ सह़ीह़ है अगर्चे वोह मस्जिदे जमाअ़त न हो, ख़ुसूसन इस ज़माने में कि बहुतेरी मस्जिदें ऐसी हैं जिन में न इमाम हैं न मुअज़्ज़िन। (رَدُّالْمُحتار ج۳ص۴۹۳) सब से अफ़्ज़ल मस्जिद ह़रम शरीफ़ में ए'तिकाफ़ है फिर मस्जिदुन्नबवी عَلٰی صَاحِبِهَا الصَّلٰوةُ وَالسَّلَام में फिर मस्जिदे अक़्सा (या'नी बैतुल मक़्दिस) में फिर उस में जहां बड़ी जमाअ़त होती हो। (جَوْهَره ص۱۸۸, बहारे शरीअ़त, जि. 1, स. 1020, 1021)

मो'तकिफ़ और एहतिरामे मस्जिद : प्यारे मो'तकिफ़ इस्लामी भाइयो ! आप को दस रोज़ मस्जिद ही में गुज़ारने हैं इस लिये चन्द बातें एहतिरामे मस्जिद से मुतअ़ल्लिक़ सीख लीजिये। दौराने ए'तिकाफ़ मस्जिद के अन्दर ज़रूरतन दुन्यवी बात करने की इजाज़त है लेकिन इस त़रह़ कि किसी नमाज़ी या इ़बादत करने वाले या सोने वाले को तश्वीश न हो। याद रखिये ! मस्जिद में बिला ज़रूरत दुन्यवी बातचीत की मो'तकिफ़ को भी इजाज़त नहीं।

अल्लाह उन पर करम न करेगा : ह़ज़रते सय्यिदुना ह़सन बसरी عَلَيْهِ رَحمَةُ اللّٰهِ القَوِی से रिवायत है कि नबिय्ये रह़मत, शफ़ीए़ उम्मत صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰی عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم का फ़रमाने ज़ीशान है : लोगों पर एक ज़माना ऐसा आएगा कि मसाजिद में दुन्या की बातें होंगी, तुम उन के साथ मत बैठो कि **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ को ऐसे लोगों की कोई ह़ाजत नहीं।

(شُعَبُ الایمان ج۳ ص ۸٦ حدیث ۲۹٦۲)

मुफ़स्सिरे शहीर **ह़कीमुल उम्मत** ह़ज़रते मुफ़्ती अह़मद यार ख़ान عَلَيْهِ رَحْمَةُ الْحَنَّان इस ह़दीसे पाक के तह़्त फ़रमाते हैं : या'नी **अल्लाह** उन पर करम न करेगा, वरना रब को किसी बन्दे की ज़रूरत नहीं, वोह ज़रूरतों से पाक है। (मिरआतुल मनाजीह़, जि. 1, स. 457)

अल्लाह तेरी गुमशुदा चीज़ न मिलाए : हज़रते सय्यिदुना अबू हुरैरा رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْه से रिवायत है कि सरकारे मदीना, राहते क़ल्बो सीना, फ़ैज़ गन्जीना, साहिबे मुअत्तर पसीना صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰی عَلَیْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم फ़रमाते हैं : जो किसी को मस्जिद में गुमशुदा चीज़ ढूंडते सुने (या देखे) तो कहे : "**अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ करे तुझे वोह चीज़ न मिले।" क्यूं कि मस्जिदें इस लिये नहीं बनी हैं। (مسلم ص ٢٨٤ حديث ٥٦٨)

तो तुम्हें सज़ा देता : हज़रते सय्यिदुना साइब बिन यज़ीद رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْه फ़रमाते हैं : मैं मस्जिद में खड़ा था कि मुझे किसी ने कंकरी मारी मैं ने देखा तो वोह अमीरुल मुअमिनीन हज़रते सय्यिदुना उ़मर फ़ारूक़े आ'ज़म رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْه थे, उन्हों ने मुझ से (इशारा कर के) फ़रमाया : "उन दो शख़्सों को मेरे पास लाओ !" मैं उन दोनों को ले आया। हज़रते सय्यिदुना उ़मर رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْه ने उन से इस्तिफ़्सार फ़रमाया : "तुम कहां से तअ़ल्लुक़ रखते हो ?" अ़र्ज़ की : "ताइफ़ से।" फ़रमाया : "अगर तुम मदीनए मुनव्वरह के रहने वाले होते (क्यूं कि वोह मस्जिद के आदाब बख़ूबी जानते हैं) तो मैं तुम्हें ज़रूर सज़ा देता (क्यूं कि) तुम **रसूलुल्लाह** صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰی عَلَیْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم की मस्जिद में अपनी आवाज़ें बुलन्द करते हो !" (بُخاری ج ١ ص ١٧٨ حديث ٤٧٠)

मुबाह़ कलाम नेकियों को खा जाता है : ह़ज़रते सय्यिदुना अ़ल्लामा अ़ली क़ारी عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللّٰهِ الْبَارِى मुह़क़्क़िक़ अ़लल इत़्लाक़ शैख़ इब्ने हुमाम عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللّٰهِ السَّلَام के ह़वाले से नक़्ल फ़रमाते हैं : "मस्जिद में मुबाह़ (या'नी जिस में न सवाब हो न गुनाह ऐसी जाइज़) बात करना मकरूह है और नेकियों को खा जाता है ।" (مِرقاةُ المَفاتيح ج ٢ ص ٤٤٩)

40 साल के आ'माल बरबाद फ़रमा दे : ❁ इमाम अह़मद रज़ा ख़ान عَلَيْهِ رَحْمَةُ الرَّحْمٰن लिखते हैं : जो मस्जिद में दुन्या की बात करे, **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ उस के **चालीस बरस** के नेक आ'माल अकारत (या'नी बरबाद) फ़रमा दे । (फ़तावा रज़विय्या, जि. 16, स. 311, غَمزُ العُيون ج٣ ص١٩٠)

मस्जिद में हंसना क़ब्र में अंधेरा लाता है : सय्यिदुना अनस बिन मालिक رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْهُ से मरवी है कि सरकारे वाला तबार, बि इज़्ने परवर दगार दो जहां के मालिको मुख़्तार, शहन्शाहे अबरार صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰی عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने इर्शाद फ़रमाया : اَلضَّحِكُ فِى الْمَسْجِدِ ظُلْمَةٌ فِى الْقَبْرِ۔ **तरजमा :** "मस्जिद में हंसना क़ब्र में अंधेरा (लाता) है ।"

(اَلْفِردَوس بمأثور الْخِطاب ج٢ ص٤٣١ حديث ٣٨٩١)

क़ब्र में अंधेरा : प्यारे प्यारे इस्लामी भाइयो ! मज़्कूरा बाला रिवायात बार बार पढ़िये और **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ के ख़ौफ़ से लरज़िये ! कहीं ऐसा न हो

कि मस्जिद में दाख़िल तो हुए सवाब कमाने मगर ख़ूब हंस बोल कर नेकियां बरबाद कर के बाहर निकले कि मस्जिद में बिला इजाज़ते शरई दुन्या की जाइज़ बात भी नेकियों को खा जाती है, लिहाज़ा मस्जिद में पुर सुकून और ख़ामोश रहिये। बयान भी करें या सुनें तो सन्जीदगी के साथ कि कोई ऐसी बात न हो जिस से लोगों को हंसी आए। न ख़ुद हंसिये न लोगों को हंसने दीजिये कि मस्जिद में हंसना क़ब्र में अंधेरा लाता है। हां ज़रूरतन मुस्कुराना मन्अ़ नहीं। मस्जिद के एह़तिराम का ज़ेह्न बनाने के लिये दा'वते इस्लामी के मदनी क़ाफ़िलों में सफ़र का मा'मूल बनाइये। आप की तरग़ीब के लिये एक मदनी बहार गोश गुज़ार करता हूं चुनान्चे

मुफ़्तिये दा'वते इस्लामी का ए'तिकाफ़ : एक इस्लामी भाई गुनाहों में डूबे हुए थे, बच्चे जवान हो चुके थे फिर भी फ़ेशन का आसेब नहीं उतरता था। **माहे रमज़ानुल मुबारक** में तब्लीग़े क़ुरआनो सुन्नत की आ़लमगीर ग़ैर सियासी तह़रीक, **दा'वते इस्लामी** के **आ़शिक़ाने रसूल** का एक माह का मदनी क़ाफ़िला एक अ़लाक़े में तशरीफ़ फ़रमा हुवा। उस **मदनी क़ाफ़िले** की ख़ुसूसिय्यत येह थी कि उस में दा'वते इस्लामी की मजलिसे शूरा के रुक्न **मुफ़्तिये दा'वते इस्लामी अलह़ाज अल ह़ाफ़िज़ मुह़म्मद फ़ारूक़ अ़त्तारी मदनी** عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللّٰهِ الْغَنِى भी शरीक थे। उस इस्लामी भाई के बड़े साहिब

ज़ादे उन्हें **मदनी क़ाफ़िले** वाले **आ़शिक़ाने रसूल** से मिलवाने ले गए। **मुफ़्तिये दा'वते इस्लामी** قُدِّسَ سِرُّهُ السَّامِي की **इन्फ़िरादी कोशिश** से वोह भी मदनी क़ाफ़िले के साथ आख़िरी अ़शरे में मो'तकिफ़ हो गए। **मुफ़्तिये दा'वते इस्लामी** قُدِّسَ سِرُّهُ السَّامِي के हुस्ने अख़्लाक़ ने उन का दिल जीत लिया, दीगर **आ़शिक़ाने रसूल** ने भी उन पर ख़ूब इन्फ़िरादी कोशिश की, हत्ता कि उन का दिल मोम हो गया और اَلْحَمْدُ لِلّٰه عَزَّوَجَلَّ उन के क़ल्ब में **मदनी इन्क़िलाब** बरपा हो गया। उन्हों ने फ़ेशन से मुंह मोड़ा, सुन्नतों से रिश्ता जोड़ा, दाढ़ी मुंडाना छोड़ा, बुराइयों से नाता तोड़ा और भरपूर त़रीक़े पर मदनी माह़ोल से तअ़ल्लुक़ जोड़ा। अल ग़रज़ उन्हों ने गुनाहों से तौबा कर ली, दाढ़ी रख ली और **इमामा शरीफ़** का ताज सर पर सजा लिया। मदनी माह़ोल से वाबस्ता होने के बा'द उन की कोशिश येह होती कि जो भी सुन्नत मा'लूम हो जाए उस पर अ़मल करें। اَلْحَمْدُ لِلّٰه عَزَّوَجَلَّ **दा'वते इस्लामी** के मदनी कामों की धूमें मचाने के लिये तन्ज़ीमी त़ौर पर **ह़ल्क़ा सत़्ह़ के ज़िम्मेदार** भी बने।

आएंगी सुन्नतें जाएंगी शामतें, मदनी माह़ोल में कर लो तुम ए'तिकाफ़
तुम सुधर जाओगे, पाओगे बरकतें, मदनी माह़ोल में कर लो तुम ए'तिकाफ़

(वसाइले बख़्शिश, स. 639)

صَلُّوا عَلَى الْحَبِيب! صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلٰى مُحَمَّد

मुफ़्तिये दा'वते इस्लामी ने बा'दे वफ़ात भी मदनी क़ाफ़िले की दा'वत दी : मुफ़्तिये दा'वते इस्लामी قُدِّس سِرُّہُ السَّامِی की भी क्या बात है ! मदनी माहोल में रह कर उन्हों ने मदनी क़ाफ़िलों में ख़ूब सफ़र किया और बे शुमार इस्लामी भाइयों की इस्लाह़ कर के अपने लिये सवाबे जारिया का ज़ख़ीरा जम्अ़ कर के 18 मुह़र्रमुल ह़राम (1427 सि.हि., 17.2.2006) को बा'दे नमाज़े जुमुआ़ रिह़लत फ़रमाई और दुन्या से जाने के बा'द भी ख़्वाब में इन्फ़िरादी कोशिश के ज़रीए एक इस्लामी भाई को **मदनी क़ाफ़िले** का मुसाफ़िर बना दिया और फिर मदनी क़ाफ़िले में पहुंच कर भी उस को **जल्वा** दिखाया और **बि इज़्निल्लाह** عَزَّوَجَلَّ मसाने के मरज़ से छुटकारा दिलाया चुनान्चे एक इस्लामी भाई को **मसाने** में कुछ अ़र्से से तक्लीफ़ थी, उन्हों ने ख़्वाब में **ह़ज़रते क़िब्ला मुफ़्तिये दा'वते इस्लामी मौलाना अलह़ाज अल ह़ाफ़िज़ मुह़म्मद फ़ारूक़ अ़त्तारी मदनी** عَلَیْہِ رَحمَۃُ اللّٰہِ الْغَنِی की ज़ियारत की, उन्हों ने उन्हें मदनी क़ाफ़िले में सफ़र का हुक्म फ़रमाया। उन्हों ने सफ़र की निय्यत कर ली मगर जुमादल ऊला (1427 सि.हि.) में सफ़र न कर सके। 24 जुमादल आख़िरा (1427 सि.हि.) को उन्हों ने तीन रोज़ा मदनी क़ाफ़िले में **आ़शिक़ाने रसूल** के साथ सुन्नतों भरा सफ़र इख़्तियार किया। क़ाफ़िले वाली मस्जिद में पहुंच कर जब लैटे तो ख़्वाब की दुन्या

में पहुंच गए, क्या देखते हैं कि **मुफ़्तिये दा'वते इस्लामी** قُدِّسَ سِرُّهُ السَّامِی **पर्दे में पर्दा** किये (या'नी गोद में चादर फैला कर रानें वग़ैरा छुपाए) तशरीफ़ फ़रमा हैं और अपने मल्फ़ूज़ात से नवाज़ रहे हैं, मगर वोह उन के इर्शादात समझ न पाए। मदनी क़ाफ़िले में सफ़र की बरकत से اَلْحَمْدُ لِلّٰه عَزَّوَجَلَّ **उन्हें मसाने की तक्लीफ़ से नजात मिल चुकी है।**

दर्द गर्चे तुम्हारे मसाने में है — दर्स फ़ारूक़ दें क़ाफ़िले में चलो
फ़ाएदा आख़िरत के बनाने में है — सब मुबल्लिग़ कहें क़ाफ़िले में चलो

(वसाइले बख़्शिश, स. 677)

صَلُّوا عَلَى الْحَبِيب! صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلٰى مُحَمَّد

"بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْم" के उन्नीस हुरूफ़ की निस्बत से मस्जिद के मुतअ़ल्लिक़ 19 मदनी फूल

(1) **मरवी** हुवा कि एक मस्जिद अपने रब عَزَّوَجَلَّ के हुज़ूर शिकायत करने चली कि लोग मुझ में दुन्या की बातें करते हैं। मलाएका उसे आते हुए मिले और बोले : हम उन (मस्जिद में दुन्या की बातें करने वालों) के हलाक करने को भेजे गए हैं।

(फ़तावा रज़विय्या, जि. 16, स. 312)

(2) **रिवायत** किया गया है कि "जो लोग **ग़ीबत** करते और जो लोग मस्जिद में दुन्या की बातें करते हैं उन के मुंह से गन्दी बदबू

निकलती है जिस से फ़िरिश्ते **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ के हुज़ूर उन की शिकायत करते हैं।" سُبْحٰنَ اللّٰه ! जब मुबाह़ व जाइज़ बात बिला ज़रूरते शरइय्या करने को मस्जिद में बैठने पर येह आफ़तें हैं तो (मस्जिद में) ह़राम व ना जाइज़ काम करने का क्या ह़ाल होगा !

(ऐज़न)

3 **दरज़ी** को इजाज़त नहीं कि मस्जिद में बैठ कर कपड़े सिये, हां बच्चों को रोकने और मस्जिद की ह़िफ़ाज़त के लिये बैठा तो ह़रज नहीं। इसी त़रह़ कातिब (या'नी लिखने वाले) को (मस्जिद में) उजरत पर किताबत करने (या'नी लिखने) की इजाज़त नहीं।

(عالمگیری ج۱ص۱۱۰)

4 **मस्जिद** के अन्दर किसी क़िस्म का कूड़ा (या'नी कचरा) हरगिज़ न फेंकें। सय्यिदुना शैख़ अ़ब्दुल ह़क़ मुह़द्दिस देहलवी عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللّٰهِ الْقَوِى "जज़्बुल क़ुलूब" में नक़्ल करते हैं कि मस्जिद में अगर ख़स (या'नी मा'मूली सा तिन्का या ज़र्रा) भी फेंका जाए तो इस से मस्जिद को इस क़दर तक्लीफ़ पहुंचती है जिस क़दर तक्लीफ़ इन्सान को अपनी आंख में ख़स (मा'मूली ज़र्रा) पड़ जाने से होती है। (جذبُ القُلُوب ص۲۲۲)

5 **मस्जिद** की दीवार, इस के फ़र्श, चटाई या दरी के ऊपर या इस के

फ़रमाने मुस्तफ़ा صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم : तुम जहां भी हो मुझ पर दुरूद पढ़ो कि तुम्हारा दुरूद मुझ तक पहुंचता है। (طبرانی)

नीचे थूकना, नाक सिनक्ना, नाक या कान में से मैल निकाल कर लगाना, मस्जिद की दरी या चटाई से धागा या तिन्का वग़ैरा नोचना सब शरअ़न मम्नूअ़ है।

6 **ज़रूरतन** (मस्जिद के अन्दर) अपने रुमाल वग़ैरा से नाक पोंछने में मुज़ायक़ा नहीं।

7 **मस्जिद** का कूड़ा (कचरा) झाड़ कर किसी ऐसी जगह न डालें जहां बे अदबी हो। (बहारे शरीअ़त, जि. 1, स. 647)

8 **जूते** उतार कर मस्जिद में साथ ले जाना चाहें तो गर्द वग़ैरा बाहर झाड़ लीजिये। अगर पाउं के तल्वों में गर्द के ज़र्रात लगे हों तो रुमाल वग़ैरा से पोंछ कर मस्जिद में दाख़िल हों। मस्जिद में गर्द का कोई ज़र्रा न गिरने पाए इस का ख़याल रखिये।

9 **वुज़ू** के बा'द पाउं वुज़ूख़ाने ही पर ख़ुश्क कर लीजिये, गीले पाउं से मस्जिद का फ़र्श गन्दा और दरियां मैली हो जाती हैं।

अब मेरे आक़ा आ'ला ह़ज़रत, इमामे अहले सुन्नत, मुजद्दिदे दीनो मिल्लत मौलाना शाह अह़मद रज़ा ख़ान عَلَيْهِ رَحمَةُ الرَّحْمٰن के मल्फ़ूज़ाते शरीफ़ा से बा'ज़ आदाबे मस्जिद पेश किये जा रहे हैं :

10 **मस्जिद** में दौड़ना या ज़ोर से क़दम रखना, जिस से धमक पैदा हो मन्अ़ है।

﴾11﴿ **वुज़ू** करने के बा'द आ'ज़ाए वुज़ू से एक भी छींट पानी फ़र्शे मस्जिद पर न गिरे। (याद रखिये ! आ'ज़ाए वुज़ू से वुज़ू के पानी के क़त्रे फ़र्शे मस्जिद पर गिराना, ना जाइज़ व गुनाह है)

﴾12﴿ **मस्जिद** के एक दरजे से दूसरे दरजे के दाख़िले के वक़्त (मसलन सह़न में दाख़िल हों तब भी और सह़न से अन्दरूनी हिस्से में जाएं जब भी) सीधा क़दम बढ़ाया जाए ह़त्ता कि अगर सफ़ बिछी हो उस पर भी पहले सीधा क़दम रखें और जब वहां से हटें तब भी सीधा क़दम फ़र्शे मस्जिद पर रखें (या'नी आते जाते हर बिछी हुई सफ़ पर पहले सीधा क़दम रखें) या ख़त़ीब जब मिम्बर पर जाने का इरादा करे, पहले सीधा क़दम रखे और जब उतरे तो (भी) सीधा क़दम उतारे।

﴾13﴿ **मस्जिद** में अगर छींक आए तो कोशिश करें आहिस्ता आवाज़ निकले इसी त़रह़ खांसी। सरकारे मदीना صَلَّى اللهُ تَعَالٰی عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم मस्जिद में ज़ोर की छींक को ना पसन्द फ़रमाते। इसी त़रह़ डकार को ज़ब्त़ करना चाहिये और न हो तो ह़त्तल इम्कान आवाज़ दबाई जाए अगर्चे ग़ैरे मस्जिद में हो। खुसूसन मजलिस में या किसी मुअ़ज़्ज़म (या'नी बुज़ुर्ग) के सामने बे तहज़ीबी है। ह़दीस में है : एक शख़्स ने दरबारे अक़्दस صَلَّى اللهُ تَعَالٰی عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم में डकार ली आप صَلَّى اللهُ تَعَالٰی عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم

ने इर्शाद फ़रमाया : "हम से अपनी डकार दूर रख कि दुन्या में जो ज़ियादा मुद्दत तक पेट भरते थे वोह क़ियामत के दिन ज़ियादा मुद्दत तक भूके रहेंगे।" (ترمذی ج٤ ص٢١٧ حديث٢٤٨٦) और जमाही में आवाज़ कहीं भी नहीं निकालनी चाहिये। अगर्चे मस्जिद से बाहर तन्हा हो क्यूं कि येह शैत़ान का क़ह्क़हा है। जमाही जब आए ह़त्तल इम्कान मुंह बन्द रखें मुंह खोलने से शैत़ान मुंह में थूक देता है। अगर यूं न रुके तो ऊपर के दांतों से नीचे का होंट दबा लें और इस त़रह़ भी न रुके तो ह़त्तल इम्कान मुंह कम खोलें और उलटा हाथ उलटी त़रफ़ से मुंह पर रख लें। चूंकि जमाही शैत़ान की त़रफ़ से है और अम्बियाए किराम عَلَيْهِمُ الصَّلٰوةُ وَالسَّلَام इस से मह़फ़ूज़ हैं। लिहाज़ा जमाही आए तो येह तसव्वुर करें कि "अम्बियाए किराम عَلَيْهِمُ الصَّلٰوةُ وَالسَّلَام को जमाही नहीं आती।" اِنْ شَآءَاللّٰه عَزَّوَجَلَّ फ़ौरन रुक जाएगी। (رَدُّالْمُحتار ج٢ ص ٤٩٨،٤٩٩)

﴾14﴿ **तमस्ख़ुर** (मस्ख़रा पन) वैसे ही मम्नूअ़ है और मस्जिद में सख़्त ना जाइज़।

﴾15﴿ **मस्जिद** में हंसना मन्अ़ है कि क़ब्र में तारीकी (या'नी अंधेरा) लाता है। मौक़अ़ के लिह़ाज़ से तबस्सुम (या'नी मुस्कुराने) में ह़रज नहीं।

﴾16﴿ **मस्जिद** के फ़र्श पर कोई चीज़ फेंकी न जाए बल्कि आहिस्ता से

रख दी जाए। मौसिमे गर्मा में लोग पंखा झलते झलते फेंक देते हैं (मस्जिद में टोपी, चादर वग़ैरा भी न फेंकें इसी तरह चादर या रुमाल से फ़र्श इस तरह न झाड़ें कि आवाज़ पैदा हो) या लकड़ी, छत्री वग़ैरा रखते वक़्त दूर से छोड़ दिया करते हैं। इस की मुमानअ़त है। ग़रज़ मस्जिद का एह़तिराम हर मुस्लमान पर फ़र्ज़ है।

17 **मस्जिद** में ह़दस (या'नी रीह़ ख़ारिज करना) मन्अ़ है ज़रूरत हो तो (जो ए'तिकाफ़ में नहीं हैं वोह) बाहर चले जाएं। लिहाज़ा मो'तकिफ़ को चाहिये कि अय्यामे ए'तिकाफ़ में थोड़ा खाए, पेट हलका रखे कि क़ज़ाए ह़ाजत के वक़्त के सिवा किसी वक़्त इख़्राजे रीह़ की ह़ाजत न हो। वोह इस के लिये बाहर न जा सकेगा। (अलबत्ता फ़िनाए मस्जिद में मौजूद बैतुल ख़ला में रीह़ ख़ारिज करने के लिये जा सकता है)

18 **क़िब्ले** की त़रफ़ पाउं फैलाना तो हर जगह मन्अ़ है, मस्जिद में किसी त़रफ़ न फैलाए कि येह ख़िलाफ़े आदाबे दरबार है। ह़ज़रते इब्राहीमे अदहम (या'नी इब्राहीम बिन अदहम) رَحْمَةُ اللّٰهِ تَعَالٰى عَلَيْه मस्जिद में तन्हा बैठे थे, पाउं फैला लिया, गोशए मस्जिद से हातिफ़ ने आवाज़ दी : "इब्राहीम ! बादशाहों के हुज़ूर में यूं ही बैठते हैं ?" मअ़न (या'नी फ़ौरन) पाउं समेटे और ऐसे समेटे कि वक़्ते इन्तिक़ाल ही फैले। (انوار القدسية لِلشّعرانی ج۲ ص٦٧) (छोटे बच्चों को भी प्यार

करते, उठाते, लिटाते वक़्त एह़तियात़ कीजिये कि इन के पाउं क़िब्ले की त़रफ़ न हों और मुताते (पोटी करवाते) वक़्त भी ज़रूरी है कि उस का रुख़ या पीठ क़िब्ले की त़रफ़ न हो)

﴾19﴿ **इस्ति'माल** शुदा जूता मस्जिद में पहन कर जाना गुस्ताख़ी व बे अदबी है। (मुलख़्ख़स अज़ मल्फ़ूज़ाते आ'ला ह़ज़रत, स. 317 ता 323)

करम अज़ पए मुस्त़फ़ा मेरे रब हो

मुझे मस्जिदों का मुयस्सर अदब हो

صَلُّوا عَلَى الْحَبِيب! صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلٰى مُحَمَّد

मस्जिदें ख़ुश्बूदार रखिये!

मस्जिद में बल्ग़म देख कर सरकार की ना गवारी :

एक मर्तबा ह़ुज़ूरे अकरम, रसूले मोह़्तशम صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने मस्जिदुन्नबविय्यिश्शरीफ़ عَلٰى صَاحِبِهَا الصَّلٰوةُ وَالسَّلَام में क़िब्ले की त़रफ़ बल्ग़म पड़ा देखा तो नाराज़ी का इज़्हार फ़रमाया। येह देख कर एक अन्सारी सह़ाबिया رَضِىَ اللّٰهُ تَعَالٰى عَنْهَا ने उठ कर उसे खुरच कर साफ़ कर के वहां ख़ुश्बू लगा दी। आप صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने (मसर्रत आमेज़ लहजे में) इर्शाद फ़रमाया : "येह कितना उ़म्दा काम है।" (نَسائی ص۱۲۶حدیث۷۲۵)

फ़ारूक़े आ'ज़म और मस्जिद में ख़ुश्बू : सय्यिदुना फ़ारूक़े आ'ज़म رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْه हर जुमुअ़तुल मुबारक को मस्जिदुन्नबविय्यिश्शरीफ़ عَلٰی صَاحِبِهَا الصَّلٰوۃُ وَالسَّلَام में ख़ुश्बू की धूनी दिया करते थे।

(اَبُو یَعْلٰی ج۱ص۱۰۳ حدیث۱۸۵)

صَلُّوا عَلَى الْحَبِيْب! صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰی عَلٰی مُحَمَّد

मस्जिदें ख़ुश्बूदार रखिये ! : उम्मुल मुअमिनीन हज़रते सय्यिदतुना आ़इशा सिद्दीक़ा رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْهَا रिवायत फ़रमाती हैं : हुज़ूरे पुरनूर, शाफ़ेए यौमुन्नुशूर صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने महल्लों में मस्जिदें बनाने का हुक्म दिया और येह कि वोह साफ़ और ख़ुश्बूदार रखी जाएं।

(ابو داوٗد ج۱ص۱۹۷ حدیث۴۵۵)

एर फ़्रेशनर से केन्सर हो सकता है : प्यारे प्यारे इस्लामी भाइयो ! मस्जिदें ऊ़द, लोबान और अगरबत्ती वग़ैरा से ख़ुश्बूदार रखना कारे सवाब है, मस्जिद को बदबू से बचाना वाजिब है लिहाज़ा दिया सलाई (या'नी माचिस की तीली) न जलाइये कि इस से बारूद की **बदबू** निकलती है। बारूद का **बदबूदार** धूआं अन्दर न आने पाए इतनी दूर बाहर से लोबान या अगरबत्ती वग़ैरा सुलगा कर मस्जिद में लाइये। अगरबत्तियों को किसी बड़े तश्त वग़ैरा में रखिये ताकि इस की राख मस्जिद में न गिरे। अगरबत्ती के पेकिट पर अगर जानदार की तस्वीर

बनी हुई हो तो उस को खुरच डालिये। मस्जिद (नीज़ घरों और कारों वग़ैरा) में "एर फ्रेशनर" (Air Freshner) से ख़ुश्बू का छिड़काव मत कीजिये कि उस के कीमियावी माद्दे फ़ज़ा में फैल जाते और सांस के ज़रीए फेफड़ों में पहुंच कर नुक़्सान पहुंचाते हैं। एक तिब्बी तह़क़ीक़ के मुत़ाबिक़ एर फ्रेशनर के इस्ति'माल से जिल्द का सरत़ान (Skin Cancer) हो सकता है। जहां उ़र्फ़ हो वहां मस्जिद के चन्दे से ख़ुश्बू सुल्गाने की इजाज़त है और जहां उ़र्फ़ न हो वहां ख़ुश्बू की सराह़त कर के अलग से चन्दा ह़ासिल कीजिये।

मुंह में बदबू हो तो मस्जिद में जाना ह़राम है : प्यारे प्यारे इस्लामी भाइयो ! भूक से कम खाने की आ़दत बनाइये, अभी ख़्वाहिश बाक़ी हो कि हाथ रोक लीजिये। अगर खूब डट कर खाते रहे और वक़्त बे वक़्त सीख़ कबाब, बर्गर, आलू छोले, पिज़्ज़े, आइसक्रीम, ठन्डी बोतलें वग़ैरा पेट में पहुंचाते रहे, पेट ख़राब हो गया और ख़ुदा न ख़्वास्ता "गन्दा दहनी" या'नी **मुंह से बदबू** आने की बीमारी लग गई तो सख़्त इम्तिह़ान हो जाएगा, क्यूं कि मुंह से **बदबू** आती हो तो मस्जिद का दाख़िला **ह़राम** है, यहां तक कि जिस वक़्त मुंह से **बदबू** आ रही हो उस वक़्त बा जमाअ़त नमाज़ पढ़ने के लिये भी मस्जिद में आना गुनाह है। चूंकि फ़िक्रे आख़िरत की कमी के बाइ़स लोगों की भारी अक्सरिय्यत में

खाने की हिर्स ज़ियादा और आज कल हर त़रफ़ "फ़ूड कल्चर" का दौर दौरा है, शायद इस वज्ह से या मुंह की सफ़ाई में कोताही करने के सबब एक ता'दाद है जिन के मुंह से **बदबू** आती है। मुझे बारहा का तजरिबा है कि जब कोई मुंह क़रीब कर के बात करता है तो उस के **मुंह की बदबू** के सबब सांस रोकना पड़ता है। अफ़्सोस ! बदबूदार मुंह वाले कई अफ़राद مَعَاذَ اللّٰه عَزَّوَجَلَّ मस्जिद के अन्दर मो'तकिफ़ भी देखे जाते हैं। याद रखिये ! शरई हुक्म येह है कि अगर दौराने ए'तिकाफ़ भी मुंह में बदबू का मरज़ हो जाए तो ए'तिकाफ़ तोड़ कर मस्जिद से चले जाना होगा। बा'द में एक दिन के ए'तिकाफ़ की क़ज़ा कर ले। **रमज़ानुल मुबारक** में कबाब समोसे और दीगर तली हुई चीज़ें और त़रह़ त़रह़ की मुरग़्ग़न गिज़ाएं ठूंस ठांस कर खाने के सबब मुंह की बदबू वाले मरीज़ों में इज़ाफ़ा हो जाता हो तो क्या अ़जब ! इस का बेहतरीन इलाज येह है कि सादा गिज़ा और वोह भी ख़्वाहिश से कम खाए और हाज़िमा दुरुस्त रखे नीज़ जब भी खा चुके ख़िलाल करने और ख़ूब अच्छी त़रह़ कुल्लियां वग़ैरा कर के मुंह साफ़ रखने की आ़दत बनाए, वरना गिज़ा के अज्ज़ा दांतों के ख़ला (Gaps) में रह जाते, सड़ते और बदबू लाते हैं। सिर्फ़ मुंह ही की **बदबू** नहीं हर त़रह़ की बदबू से मस्जिद को बचाना **वाजिब** है।

मुंह में बदबू हो तो नमाज़ मक्रूह होती है : फ़तावा रज़विय्या जिल्द 7 सफ़ह़ा 384 पर है : मुंह में **बदबू** होने की ह़ालत में (घर में

पढ़ी जाने वाली) नमाज़ भी **मक्रूह** है और ऐसी ह़ालत में मस्जिद जाना **ह़राम** है जब तक मुंह साफ़ न कर ले। और दूसरे नमाज़ी को ईज़ा पहुंचानी **ह़राम** है और दूसरा नमाज़ी न भी हो तो भी **बदबू** से मलाएका को ईज़ा पहुंचती है। **ह़दीस** में है : "जिस चीज़ से इन्सान तक्लीफ़ मह़सूस करते हैं फ़िरिश्ते भी उस से तक्लीफ़ मह़सूस करते हैं।"

(مُسلِم ص ۲۸۲ حدیث ٥٦٤)

बदबूदार मरहम लगा कर मस्जिद में आने की मुमानअ़त :

मेरे आक़ा आ'ला ह़ज़रत, इमामे अहले सुन्नत, मुजद्दिदे दीनो मिल्लत, मौलाना शाह इमाम अह़मद रज़ा ख़ान عَلَيْهِ رَحمَةُ الرَّحْمٰن फ़रमाते हैं : "जिस के बदन में **बदबू** हो कि उस से नमाज़ियों को ईज़ा हो मसलन مَعَاذَ الله गन्दा दहन (या'नी जिस को मुंह से बदबू आने की बीमारी हो), **गन्दा बग़ल** (या'नी जिस के बग़ल से बदबू आने का मरज़ हो) या जिस ने **ख़ारिश** वग़ैरा के बाइस **गन्धक मली** (या कोई सा बदबूदार मरहम या लोशन लगाया) हो उसे भी मस्जिद में न आने दिया जाए।"

(फ़तावा रज़विय्या मुख़र्रजा, जि. 8, स. 72)

कच्ची पियाज़ खाने से भी मुंह बदबूदार हो जाता है :

कच्ची मूली, कच्ची पियाज़, कच्चा लहसन और हर वोह चीज़ कि

जिस की **बू** ना पसन्द हो उसे खा कर मस्जिद में उस वक़्त तक जाना जाइज़ नहीं जब तक कि हाथ मुंह वग़ैरा में **बू** बाक़ी हो कि फ़िरिश्तों को इस से तक्लीफ़ होती है। **ह़दीस** शरीफ़ में है, **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ **के मह़बूब, फ़ातिहुल क़ुलूब, दानाए ग़ुयूब, मुनज़्ज़हुन अ़निल उ़यूब** صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया : "जिस ने पियाज़, लह्सन या गिंदना (लह्सन से मिलती जुलती एक तरकारी) खाई वोह हमारी मस्जिद के क़रीब हरगिज़ न आए।" **(مُسلِم ص۲۸۲ حدیث ۵٦٤)** और फ़रमाया : "अगर खाना ही चाहते हो तो पका कर उस की **बू** दूर कर लो।" **(ابوداوٗد ج ۳ ص ۵۰٦ حدیث ۳۸۲۷)**

मस्जिद में कच्चा गोश्त न ले जाएं : सदरुश्शरीअ़ह, बदरुत्तरीक़ह ह़ज़रते अ़ल्लामा मौलाना मुफ़्ती मुह़म्मद अमजद अ़ली आ'ज़मी عَلَیْہِ رَحمَۃُ اللّٰہِ الْقَوِی फ़रमाते हैं : मस्जिद में कच्चा लह्सन और कच्ची पियाज़ खाना या खा कर जाना जाइज़ नहीं जब तक कि **बू** बाक़ी हो और येही हुक्म हर उस चीज़ का है जिस में **बू** हो जैसे गिंदना (येह लह्सन से मिलती जुलती तरकारी है), मूली, कच्चा गोश्त और मिट्टी का तेल, वोह दिया सलाई (माचिस की तीली) जिस के रगड़ने में **बू** उड़ती हो, रियाह़ ख़ारिज करना वग़ैरा वग़ैरा। जिस को **गन्दा दहनी** का आ़रिज़ा (या'नी मुंह से बदबू आने की बीमारी) या कोई बदबूदार ज़ख़्म हो या कोई बदबूदार दवा लगाई हो तो जब तक बू मुन्क़तेअ़ (या'नी ख़त्म)

न हो उस को मस्जिद में आने की मुमानअ़त है। (बहारे शरीअ़त, जि. 1, स. 648) कच्चा गोश्त वग़ैरा पाक चीज़ की अगर इस त़रह़ पेकिंग कर ली जाए कि मा'मूली सी भी बदबू न आए तो अब मस्जिद में ले जाने में ह़रज नहीं।

कच्ची पियाज़ वाले कचूमर और राइते से मोह़तात़ रहिये : कच्ची पियाज़ वाले आलू चने, राइते और कचूमर नीज़ कच्चे लह्सन वाले अचार चटनी वग़ैरा खाने से नमाज़ के अवक़ात में परहेज़ कीजिये। इफ़्त़ार के लिये मस्जिद में लाए जाने वाले बाज़ारी छोले और समोसों में अक्सर कच्ची पियाज़ की टुकड़ियां होती हैं, इन को मस्जिद में न लाइये, बल्कि घर में भी नमाज़ से पहले मत खाइये।

मज्मअ़ में अगरबत्ती सुलगाना : मुसल्मानों के इज्तिमाअ़ में ख़ुश्बू पहुंचाने की निय्यत से अगरबत्ती वग़ैरा जलाना कारे सवाब है। अगर लोबान या अगरबत्ती के धूएं से किसी को तक्लीफ़ होती हो तो ऐसे मौक़अ़ पर ख़ुश्बू न जलाई जाए, इसी त़रह़ मज्मअ़ पर "ख़ुश्बूदार पानी" छिड़क्ने से भी बचें कि आ़म त़ौर पर इस से लोगों को कोफ़्त और परेशानी होती है।

बदबूदार मुंह ले कर मुसल्मानों के मज्मअ़ में जाने की मुमानअ़त : मुफ़स्सिरे शहीर **ह़कीमुल उम्मत** ह़ज़रते मुफ़्ती अह़मद

फ़रमाने मुस्तफ़ा صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم : जब तुम रसूलों पर दुरूद पढ़ो तो मुझ पर भी पढ़ो, बेशक मैं तमाम जहानों के रब का रसूल हूं। (جمع الجوامع)

यार ख़ान عَلَيْهِ رَحْمَةُ الْحَنَّان फ़रमाते हैं : मुसल्मानों के मज्मओं, दर्से कुरआन की मजलिसों, उ़लमाए दीन व औलियाए कामिलीन की बारगाहों में बदबूदार मुंह ले कर न जाओ। मज़ीद फ़रमाते हैं : जब तक मुंह में **बदबू** रहे घर में ही रहो, मुसल्मानों के जल्सों, मज्मओं में न जाओ। हुक़्क़ा पीने वाले, तम्बाकू वाले, पान खा कर कुल्ली न करने वालों को इस से इब्रत पकड़नी चाहिये। फुक़हाए किराम رَحِمَهُمُ اللّٰهُ السَّلَام फ़रमाते हैं : जिसे **गन्दा दहनी** की बीमारी हो उसे मस्जिदों की हाज़िरी मुआ़फ़ है। (मिरआतुल मनाजीह़, जि. 6, स. 25, 26)

नमाज़ के अवक़ात में कच्ची पियाज़ खाना कैसा ? :

सुवाल : "गन्दा दहन" को मस्जिद की हाज़िरी मुआ़फ़ है, तो क्या कच्ची पियाज़ वाला राइता या कचूमर या ऐसे कबाब समोसे जिन में लह्सन पियाज़ बराबर पके हुए न हों और उन की बू आती हो या मसली हुई बाजरे की रोटी जिस में कच्चा लह्सन शामिल होता है ऐसी गिज़ा वगै़रा जमाअ़त से कुछ देर पहले इस निय्यत से खा सकते हैं कि मुंह में बू हो जाए और जमाअ़त वाजिब न रहे !

जवाब : ऐसा करना जाइज़ नहीं। मसलन जहां इशा की जमाअ़त अव्वल वक़्त में होती है वहां नमाज़े मग़रिब के बा'द ऐसा कचूमर या सलाद वगै़रा न खाए जिस में कच्ची मूली या कच्ची पियाज़ या कच्चा

लह्सन हो क्यूं कि इतनी जल्दी मुंह साफ़ कर के मस्जिद में पहुंचना दुश्वार होता है। हां अगर जल्द मुंह साफ़ करना मुम्किन है या किसी और वज्ह से मस्जिद की ह़ाज़िरी से मा'ज़ूर है मसलन औ़रत। या नमाज़ पढ़ने में अभी काफ़ी देर है उस वक़्त तक **बू** ख़त्म हो जाएगी तो खाने में मुज़ायक़ा नहीं। **मेरे आक़ा** आ'ला ह़ज़रत इमामे अहले सुन्नत मुजद्दिदे दीनो मिल्लत मौलाना शाह इमाम अह़मद रज़ा ख़ान عَلَیْهِ رَحمَۃُ الرَّحْمٰن फ़रमाते हैं : "कच्चा लह्सन पियाज़ खाना कि बिला शुबा ह़लाल है और उसे खा कर जब तक **बू** ज़ाइल न हो मस्जिद में जाना मम्नूअ़ मगर जो हुक़्क़ा ऐसा कसीफ़ (या'नी गाढ़ा) व बे एहतिमाम हो कि مَعَاذَ اللّٰه तग़य्युरे बाक़ी (या'नी देर पा बदबू) पैदा करे कि वक़्ते जमाअ़त तक कुल्ली से भी **बकुल्ली** (या'नी मुकम्मल तौर पर) ज़ाइल (या'नी दूर) न हो तो क़ुर्बे जमाअ़त में इस का पीना शरअ़न **ना जाइज़** कि अब वोह तर्के जमाअ़त व तर्के सज्दा या **बदबू** के साथ दुख़ूले मस्जिद का मूजिब (सबब) होगा और येह दोनों मम्नूअ़ व ना जाइज़ हैं और (येह शरई उसूल है कि) हर मुबाह़ फ़ी नफ़्सिही (या'नी हर वोह काम जो ह़क़ीक़त में जाइज़ हो मगर) अम्रे मम्नूअ़ की त़रफ़ मुअद्दी (या'नी मम्नूअ़ काम की त़रफ़ ले जाने वाला) हो मम्नूअ़ व ना रवा है।" (फ़तावा रज़विय्या, जि. 25, स. 94)

कच्ची पियाज़ खाते वक़्त بِسْمِ اللّٰه पढ़ना मक्रूह है :

"**फ़तावा फ़ैज़ुर्रसूल**" जिल्द 2 सफ़ह़ा 506 पर है : हुक़्क़ा, बीड़ी,

सिगरेट पीने और (कच्चे) लह्सन, पियाज़ जैसी (बदबूदार) चीज़ खाने के वक़्त और नजासत की जगहों में بِسْمِ الله पढ़ना मक्रूहे (तन्ज़ीही) है।

नजासत की जगहों में بِسْمِ الله पढ़ना तो मक्रूहे तन्ज़ीही है अलबत्ता अ़ल्लामा शामी قُدِّسَ سِرُّهُ السَّامِی ने लफ़्ज़े قِيْلَ से एक क़ौल येह भी नक़्ल फ़रमाया है कि दुख़ान पीने के वक़्त भी بِسْمِ الله पढ़ना मक्रूह है और फिर इस की वज़ाहत में अ़ल्लामा शामी ने हर बदबूदार चीज़ मसलन पियाज़ व लह्सन का भी ज़िक्र किया है, इस ए'तिबार से इस एक क़ौल पर बदबूदार चीज़ खाने के वक़्त بِسْمِ الله पढ़ना भी मक्रूह है। (مُلَخَّص اَز رَدُّالْمُحْتَار ج ۱ص ۳۸) और अगर्चे "शामी" में तह़रीमी व तन्ज़ीही की सराह़त नहीं लेकिन यहां मुराद मक्रूहे तन्ज़ीही ही है।

मुंह की बदबू मा'लूम करने का त़रीक़ा : अगर मुंह में कोई तग़य्युरे राइह़ा (या'नी बदबू) हो तो जितनी बार मिस्वाक और कुल्लियों से उस (बदबू) का इज़ाला (या'नी दूर करना मुम्किन) हो (उतनी बार कुल्लियां वग़ैरा करना) लाज़िम है, इस के लिये कोई ह़द मुक़र्रर नहीं। बदबूदार कसीफ़ (या'नी गाढ़ा) बे एह़तियाती का **हुक़्क़ा** पीने वालों को इस का ख़याल (रखना) सख़्त ज़रूरी है और उन से ज़ियादा **सिगरेट** वाले को कि इस की बदबू मुरक्कब तम्बाकू (या'नी जिस में कुछ चीज़ें मिलाई जाती हैं) से (भी) सख़्त तर और ज़ियादा देर पा है और इन सब से

ज़ाइद अशद ज़रूरत **तम्बाकू** खाने वालों को है जिन के मुंह में उस का जिर्म (या'नी धूएं के बजाए ख़ुद तम्बाकू ही) दबा रहता और मुंह अपनी **बदबू** से बसा देता है। येह सब लोग वहां तक मिस्वाक और कुल्लियां करें कि मुंह बिल्कुल साफ़ हो जाए और **बू** का अस्लन (बिल्कुल नाम व) निशान न रहे और इस का इम्तिह़ान यूं है कि हाथ अपने मुंह के क़रीब ले जा कर मुंह खोल कर ज़ोर से तीन बार ह़ल्क़ से पूरी सांस हाथ पर लें और मअ़न (या'नी फ़ौरन) सूंघें। बिग़ैर इस के अन्दर की **बदबू** ख़ुद कम मह़सूस होती है और जब मुंह में **बदबू** हो तो मस्जिद में जाना **ह़राम,** नमाज़ में दाख़िल होना मन्अ़। وَاللّٰهُ الْهَادِى (फ़तावा रज़विय्या मुख़र्रजा, जि. 1, स. 623) **मेरे आक़ा** आ'ला ह़ज़रत इमाम अह़मद रज़ा ख़ान عَلَيْهِ رَحمَةُ الرَّحْمٰن ने सिगरेट की बदबू को हुक़्क़े और मुरक्कब तम्बाकू से ज़ाइद क़रार दिया है। येह सिगरेट की क़िस्म पर मुन्ह़सिर है। कुछ सिगरेट हुक़्क़े से ज़ियादा और कुछ कम बदबूदार भी हो सकते हैं।

मुंह की बदबू का इलाज : अगर किसी चीज़ के खाने के सबब मुंह में **बदबू** आती हो तो "हरा धनिया" चबा कर खाइये नीज़ गुलाब के ताज़ा या सूखे फूलों से दांत मांझिये اِنْ شَآءَ اللّٰه عَزَّوَجَلَّ फ़ाएदा होगा। हां अगर पेट की ख़राबी की वज्ह से **बदबू** आती हो तो "कमख़ोरी" (या'नी खाने में कमी करने) की सआ़दत ह़ासिल कर के भूक की बरकतें

लूटने से اِنْ شَآءَاللّٰه عَزَّوَجَلَّ टांगों और बदन के मुख़्तलिफ़ हिस्सों के दर्द, क़ब्ज़, सीने की जलन, मुंह के छाले, बार बार होने वाले (या'नी दाइमी) नज़्ले खांसी और गले के दर्द, मसूढ़ों में ख़ून आना वग़ैरा बहुत सारे अमराज़ के साथ साथ **मुंह की बदबू** से भी जान छूट जाएगी। भूक बाक़ी रहे इस त़रह़ से कम खाने में **80 फ़ीसद अमराज़** से बचत हो सकती है। (तफ़्सीली मा'लूमात के लिये फ़ैज़ाने सुन्नत जिल्द अव्वल के बाब "पेट का क़ुफ़्ले मदीना" का मुत़ालआ फ़रमाइये) अगर नफ़्स की हिर्स का इलाज हो जाए तो कई जिस्मानी और रूह़ानी अमराज़ ख़ुद ही दम तोड़ जाएं।

रज़ा नफ़्स दुश्मन है दम में न आना

कहां तुम ने देखे हैं चंदराने वाले

(ह़दाइक़े बख़्शिश शरीफ़, स. 159)

मुंह की बदबू का मदनी इलाज :

اَللّٰھُمَّ صَلِّ وَسَلِّمْ عَلَى النَّبِيِّ الطَّاهِرِ

मुन्दरजए बाला दुरूद शरीफ़ मौक़अ़ ब मौक़अ़ एक ही सांस में 11 मर्तबा पढ़ लीजिये, اِنْ شَآءَاللّٰه عَزَّوَجَلَّ मुंह की **बदबू** ज़ाइल (या'नी दूर) हो जाएगी। एक ही सांस में पढ़ने का बेहतर त़रीक़ा येह है कि मुंह बन्द कर के आहिस्ता आहिस्ता नाक से सांस लेना शुरूअ़ कीजिये और

मुम्किना हद तक हवा फेफड़ों में भर लीजिये। अब **दुरूद शरीफ़** पढ़ना शुरूअ़ कीजिये, चन्द बार इस तरह मश्क़ करेंगे तो सांस टूटने से क़ब्ल اِنْ شَآءَاللّٰه عَزَّوَجَلَّ मुकम्मल ग्यारह बार दुरूद शरीफ़ पढ़ने की तरकीब बन जाएगी। मज़्कूरा तरीक़े पर नाक से गहरा सांस ले कर मुम्किन हद तक रोक रखने के बा'द मुंह से ख़ारिज करना सिह़्ह़त के लिये इन्तिहाई मुफ़ीद है। दिन भर में जब जब मौक़अ़ मिले बिल ख़ुसूस खुली फ़ज़ा में रोज़ाना चन्द बार तो ऐसा कर ही लेना चाहिये। मुझे (या'नी सगे मदीना عُفِیَ عَنْهُ को) एक सिन रसीदा (या'नी बूढ़े) ह़कीम साह़िब ने बताया था कि मैं सांस लेने के बा'द आधे घन्टे तक (या कहा) दो घन्टे तक हवा को अन्दर रोक लेता हूं और इस दौरान अपने विर्दो वज़ाइफ़ भी पढ़ सकता हूं। बक़ौल उन ह़कीम साह़िब के सांस रोकने के ऐसे ऐसे मश्शाक़ (या'नी मश्क़ कर के माहिर हो जाने वाले लोग) भी दुन्या में पाए जाते हैं कि सुब्ह़ सांस लेते हैं तो शाम को निकालते हैं!

इस्तिन्जा ख़ाने मस्जिद से कितनी दूर होने चाहिएं ? :

बारगाहे रज़विय्यत में सुवाल हुवा कि नमाज़ियों के लिये इस्तिन्जा ख़ाने मस्जिद से कितनी दूर बनाने चाहिएं ? इस पर **मेरे आक़ा** आ'ला ह़ज़रत इमामे अहले सुन्नत मुजद्दिदे दीनो मिल्लत मौलाना

शाह इमाम अह़मद रज़ा ख़ान عَلَیْہِ رَحمَۃُ الرَّحْمٰن ने जवाबन इर्शाद फ़रमाया : मस्जिद को **बू** से बचाना वाजिब है व लिहाज़ा मस्जिद में मिट्टी का तेल जलाना **ह़राम**, मस्जिद में दिया सलाई (या'नी बदबूदार बारूद वाली माचिस की तीली) सुलगाना **ह़राम**, ह़त्ता कि ह़दीस में इर्शाद हुवा : मस्जिद में कच्चा गोश्त ले जाना **जाइज़** नहीं। (ابن ماجه ج ١ ص ٤١٣ حديث ٧٤٨) ह़ालां कि कच्चे गोश्त की **बू** बहुत ख़फ़ीफ़ (या'नी हलकी) है। तो जहां से मस्जिद में **बू** पहुंचे वहां तक (इस्तिन्जा ख़ाने बनाने की) मुमानअ़त की जाएगी। (फ़तावा रज़विय्या, जि. 16, स. 232) कच्चे गोश्त की बदबू हलकी होती है जब येह भी मस्जिद में ले जाना जाइज़ नहीं तो कच्ची मछली ले जाना ब दरजए औला ना जाइज़ होगा क्यूं कि इस की बू गोश्त से ज़ियादा तेज़ होती है बल्कि बा'ज़ अवक़ात पकाने वालों की बे एह़तियाती के सबब इस का सालन खाने से हाथ और मुंह में ना गवार बू हो जाती है। ऐसी सूरत में बू दूर किये बिग़ैर मस्जिद में न जाए। इस्तिन्जा ख़ानों की जब सफ़ाई की जाती है उस वक़्त बदबू काफ़ी फैलती है लिहाज़ा (इस्तिन्जा ख़ाने और मस्जिद के दरमियान) इतना फ़ासिला रखना ज़रूरी है कि सफ़ाई के मौक़अ़ पर भी **बदबू** मस्जिद में दाख़िल न हो सके। इस्तिन्जा ख़ाने इह़ात़ए मस्जिद में खुलते हों तो ज़रूरतन दीवार पाट

कर बाहर की जानिब दरवाज़े निकाल कर भी बदबू से मस्जिद को बचाया जा सकता है।

अपने लिबास वग़ैरा पर ग़ौर करने की आ़दत बनाइये :

मस्जिद में **बदबू** ले जाना ह़राम है, नीज़ हर त़रह़ के **बदबू** वाले शख़्स का दाख़िल होना भी ह़राम है। मस्जिद में किसी तिन्के से ख़िलाल भी न करें कि जो पाबन्दी से हर खाने के बा'द इस के आ़दी नहीं होते ख़िलाल करने से उन के दांतों से बदबू निकलती है। मो'तकिफ़ फ़िनाए मस्जिद में भी इतनी दूर दांतों का ख़िलाल करे कि बदबू अस्ले मस्जिद में दाख़िल न हो। बदबूदार ज़ख़्म वाला या वोह मरीज़ जिस ने पेशाब या पाख़ाने की थेली (Urine bag ۞ Stool bag) लगाई हुई है वोह मस्जिद में दाख़िल न हों। इसी त़रह़ लेबॉरेटरी टेस्ट करवाने के लिये ली हुई ख़ून या पेशाब की शीशी, ज़बीह़ा के ब वक़्ते ज़ब्ह़ निकले हुए ख़ून से आलूद कपड़े वग़ैरा किसी चीज़ में छुपा कर भी मस्जिद के अन्दर नहीं ले जा सकते चुनान्चे फ़ुक़हाए किराम رَحِمَهُمُ اللّٰهُ السَّلَام फ़रमाते हैं : "मस्जिद में नजासत ले कर जाना अगर्चे उस से मस्जिद आलूदा न हो या जिस के बदन पर नजासत लगी हो उस को मस्जिद में जाना मन्अ़ है।" (رَدُّ الْمُحتار ج٢ ص٥١٧) मस्जिद में किसी बरतन के अन्दर पेशाब

करना या फ़स्द का ख़ून लेना (या'नी रग खोल कर फ़ासिद ख़ून निकालना, टेस्ट के लिये सिरिन्ज के ज़रीए ख़ून निकालना) भी जाइज़ नहीं। (دُرِّ مُختار ج۲ ص۵۱۷) पाक बदबू छुपी हुई हो जैसा कि अक्सर लोगों के बदन में पसीने की बदबू होती है मगर लिबास के नीचे छुपी हुई होती है और मह़सूस नहीं होती तो इस सूरत में मस्जिद के अन्दर जाने में कोई ह़रज नहीं। इसी त़रह़ अगर रुमाल में पसीने वग़ैरा की बदबू है जैसा कि गरमी में मुंह का पसीना पोंछने से अक्सर हो जाती है तो ऐसा रुमाल मस्जिद के अन्दर न निकाले, जेब ही में रहने दे, अगर इमामा या टोपी उतारने से पसीने या मैल कुचैल वग़ैरा की बदबू आती है तो मस्जिद में न उतारे। चुनान्चे इस की मिसाल देते हुए **मुफ़स्सिरे** शहीर **ह़कीमुल उम्मत** ह़ज़रते मुफ़्ती अह़मद यार ख़ान عَلَيْهِ رَحْمَةُ الْحَنَّان फ़रमाते हैं : "हां अगर किसी सूरत से मिट्टी के तेल की बदबू उड़ा दी जाए या इस त़रह़ लेम्प वग़ैरा में बन्द किया जाए कि उस की बदबू ज़ाहिर न हो तो (मस्जिद में) जाइज़ है।" (फ़तावा नईमिया, स. 49) हर मुसल्मान को अपने मुंह, बदन, रुमाल, लिबास और जूती चप्पल वग़ैरा पर ग़ौर करते रहना चाहिये कि इस में कहीं से बदबू तो नहीं आ रही और ऐसा मैला कुचैला लिबास पहन कर भी मस्जिद में न आएं जिस से लोगों को घिन आए। अफ़्सोस ! दुन्यवी अफ़्सरों वग़ैरा के पास तो उ़म्दा लिबास पहन कर

जाएं और अपने प्यारे प्यारे परवर दगार عَزَّوَجَلَّ के दरबार में ह़ाज़िरी के वक़्त या'नी नमाज़ में नफ़ासत (सफ़ाई और पाकीज़गी वग़ैरा) का कोई एहतिमाम न करें, मस्जिद में आते वक़्त इन्सान कम अज़ कम वोह लिबास तो पहने जो दा'वतों में पहन कर जाता है, मगर इस बात का ख़याल रखिये कि लिबास शरीअ़त व सुन्नत के मुत़ाबिक़ हो।

मस्जिद में बच्चे को लाने की मुमानअ़त : सरकारे मदीना, सुल्त़ाने बा क़रीना, क़रारे क़ल्बो सीना, फ़ैज़ गन्जीना صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم का फ़रमाने बा क़रीना है : "मस्जिदों को **बच्चों** और **पागलों** और ख़रीदो फ़रोख़्त और झगड़े और **आवाज़ बुलन्द करने** और ह़ुदूद क़ाइम करने और तलवार खींचने से बचाओ।" (اِبن ماجه ج ۱ ص ۴۱۵ حديث ۷۵۰)

बच्चे और पागल को जिन से नजासत का गुमान हो मस्जिद में ले जाना ह़राम है वरना मक्रूह, जो लोग जूतियां मस्जिद के अन्दर ले जाते हैं उन को इस का ख़याल रखना चाहिये कि अगर नजासत लगी हो तो साफ़ कर लें और जूता पहने मस्जिद में चले जाना सूए अदब (या'नी बे अदबी) है। (رَدُّ الْمُحْتَار ج ۲ ص ۵۱۸) **बच्चे या पागल** (या बेहोश या जिस पर जिन्न आया हुवा हो उस) को दम करवाने के लिये चाहे "पेम्पर" लगा हो तब भी मस्जिद में हरगिज़ न ले जाया जाए। अगर आप ऐसों को मस्जिद में लाने की भूल कर चुके हैं जिन का लाना जाइज़ न था तो

फ़ौरन तौबा कर के आयिन्दा न लाने का अ़हद कीजिये। हां फ़िनाए मस्जिद मसलन इमाम साहि़ब के हुजरे में ले जा सकते हैं जब कि मस्जिद के अन्दर से ले कर न गुज़रना पड़े।

गोश्त मछली बेचने वाले : गोश्त या मछली बेचने वाले के लिबास में सख़्त **बदबू** होती है लिहाज़ा इन को चाहिये कि फ़ारिग़ हो कर अच्छी त़रह़ नहाएं, साफ़ लिबास ज़ैबे तन फ़रमाएं, ख़ुश्बू लगाएं और फिर मस्जिद में आएं। नहाना और ख़ुश्बू लगाना शर्त़ नहीं सिर्फ़ मश्वरतन अ़र्ज़ किया है, कोई भी ऐसी तरकीब करें कि बदबू मुकम्मल तौर पर ज़ाइल (या'नी दूर) हो जाए।

सोने से मुंह में बदबू हो जाती है : सोते में पेट की गन्दी हवाएं ऊपर की त़रफ़ उठती हैं, लिहाज़ा बेदार होने पर मुंह में अक्सर बदबू होती है। इस ज़िम्न में **फ़तावा रज़विय्या** जिल्द 23 सफ़ह़ा 375 ता 376 से "सुवाल जवाब" मुलाहज़ा हों। **सुवाल :** सोने से उठ कर **आयतुल कुर्सी** पढ़ना कैसा है ? बा'ज़ उस्ताद हुक़्क़ा पीते हैं और शागिर्द को (कुरआने करीम) पढ़ाते जाते हैं। **जवाब :** सोने से उठ कर हाथ धो कर कुल्ली कर ले इस के बा'द **आयतुल कुर्सी** पढ़े। अगर मुंह में हुक़्क़े वग़ैरा की बदबू हो या कोई खाने पीने की चीज़ हो तो बिग़ैर कुल्ली किये तिलावत न करे। जो उस्ताद ऐसा करते हैं बुरा करते हैं।

وَاللّٰہُ تَعَالٰی اَعْلَم (फ़तावा रज़विय्या, जि. 23, स. 375, 376) हमारे मुअ़त्तर मुअ़त्तर आक़ा صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم का वुजूदे मस्ऊ़द हर वक़्त महकता रहता था, मिज़ाजे मुबारक में निहायत नफ़ासत (या'नी सफ़ाई, पाकीज़गी) थी, सो कर उठने के बा'द **मिस्वाक** करना सुन्नत है। चुनान्चे उम्मुल मुअमिनीन ह़ज़रते सय्यिदतुना आ़इशा सिद्दीक़ा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہَا से रिवायत है कि सरवरे काएनात صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم के पास रात को वुज़ू का पानी और **मिस्वाक** रखी जाती थी, जब आप صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم रात में उठते तो पहले क़ज़ाए ह़ाजत करते फिर **मिस्वाक** फ़रमाते। (ابوداؤد ج۲ حدیث٥٦)

पसीने की बदबू वाले कपड़े : ख़ुसूसन गरमी में बा'ज़ लोगों के कपड़ों से नुमायां त़ौर पर पसीने की बदबू आ रही होती है, ऐसों को ऐसी ह़ालत में मस्जिद का दाख़िला ह़राम है। बा'ज़ ग़िज़ाएं ऐसी होती हैं जिन के खाने से **बदबूदार पसीना** आता है ऐसे अफ़राद ग़िज़ाएं तब्दील फ़रमाएं।

मुंह की सफ़ाई का त़रीक़ा : जो मिस्वाक और खाने के बा'द ख़िलाल नहीं करते और दांतों की सफ़ाई करने में सुस्त होते हैं अक्सर उन के मुंह **बदबूदार** होते हैं। सिर्फ़ रस्मी त़ौर पर मिस्वाक और ख़िलाल का तिन्का दांतों से मस (Touch) कर देना काफ़ी नहीं होता। मसूढ़े ज़ख़्मी न हों इस एह़तियात़ के साथ मुम्किना सूरत में ग़िज़ा का एक एक ज़र्रा

दांतों से निकालना होगा वरना दांतों के दरमियान गिज़ाई अज्ज़ा पड़े पड़े सड़ते और सख़्त सड़ांद (या'नी बदबू) का बाइस बनते रहेंगे। दांतों की सफ़ाई का एक त़रीक़ा येह भी है कि कोई चीज़ खाने और चाय वग़ैरा पीने के बा'द और इस के इलावा भी जब जब मौक़अ़ मिले मसलन बैठे बैठे कोई काम कर रहे हैं उस वक़्त पानी का घूंट मुंह में भर लें और जुम्बिशें देते रहें या'नी हिलाते रहें, इस त़रह़ मुंह का कचरा और मैल कुचैल साफ़ होता रहेगा। सादा पानी भी चल जाएगा और अगर नमक वाला क़ाबिले बरदाश्त गर्म पानी हो तो येह اِنْ شَآءَاللّٰه عَزَّوَجَلَّ एक अच्छा "माउथ वॉश" साबित होगा।

दाढ़ी को बदबू से बचाइये : दाढ़ी में बसा अवक़ात गिज़ाई अज्ज़ा अटक जाते हैं, कभी सोने में मुंह की **बदबूदार** राल भी दाख़िल हो जाती है और इस त़रह़ **बदूब** आती है लिहाज़ा वक़्तन फ़ वक़्तन साबुन से दाढ़ी धो लेना मुनासिब है और इसी त़रह़ सर के बाल भी धोते रहिये। **फ़रमाने मुस्त़फ़ा** صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم : "जिस के बाल हों उन का इक्राम करे।" (ابو داؤد ج٤ ص١٠٣ حديث٤١٦٣) या'नी इन्हें धोए, तेल लगाए और कंघी करे। (اَشِعَّةُ اللَّمعات ج٣ ص٦١٧)

ख़ुश्बूदार तेल बनाने का आसान त़रीक़ा : सर में सरसों का तेल डालने वाला सर से टोपी या इमामा उतारता है तो बा'ज़ अवक़ात

बदबू का भपका निकलता है लिहाज़ा जिस से बन पड़े वोह सर में उ़म्दा ख़ुश्बूदार तेल डाले। ख़ुश्बूदार तेल बनाने का एक आसान त़रीक़ा येह भी है कि खोपरे के तेल की शीशी में अपने पसन्दीदा इ़त्र के चन्द क़त़रे डाल कर ह़ल कर लीजिये। **ख़ुश्बूदार तेल** तय्यार है। (ख़ुश्बूदार तेल बनाने के मख़्सूस एसेन्स भी ख़ुश्बूयात की दुकानों से ह़ासिल किये जा सकते हैं)

हो सके तो रोज़ नहाइये : जिस से बन पड़े वोह रोज़ाना नहाए कि काफ़ी ह़द तक बदन की बाहरी **बदबू** ज़ाइल होगी और येह **सिह़्ह़त** के लिये भी मुफ़ीद है। (मगर मो'तकिफ़ीन मस्जिद के गुस्ल ख़ानों में बिला सख़्त ज़रूरत के न नहाएं कि नमाज़ियों के लिये वुज़ू के पानी की तंगी हो सकती है और मोटर भी बार बार चलने की वज्ह से ख़राब हो सकती है नीज़ तब नहाएं जब गुस्ल ख़ाने फ़िनाए मस्जिद में हों अगर ख़ारिजे मस्जिद में हों तो गुस्ले जुमुआ की भी इजाज़त नहीं सिर्फ़ फ़र्ज़ गुस्ल की इजाज़त है)

इमामा वग़ैरा को बदबू से बचाने का त़रीक़ा : बा'ज़ इस्लामी भाई काफ़ी बड़े साइज़ का इमामा शरीफ़ बांधने का जज़्बा तो रखते हैं मगर सफ़ाई रखने में कोताही कर जाते हैं और यूं बसा अवक़ात ला शुऊ़री में मस्जिद के अन्दर "बदबू" फैलाने के जुर्म में फंस जाते हैं। लिहाज़ा **मदनी इल्तिजा** है कि इमामा, सरबन्द शरीफ़ और चादर

इस्ति'माल करने वाले इस्लामी भाई मौसिम के ए'तिबार से या ज़रूरतन मज़ीद जल्दी जल्दी इन्हें धोने की तरकीब बनाते रहें, वरना मैल कुचैल, पसीना और तेल वग़ैरा के सबब इन चीज़ों में **बदबू** हो जाती है, अगर्चे खुद को महसूस नहीं होती मगर दूसरों को बदबू के सबब काफ़ी घिन आती है, खुद को इस लिये पता नहीं चलता कि जिस के पास ज़ियादा देर तक कोई मख़्सूस खुश्बू या **बदबू** हो इस से उस की नाक अट जाती है।

इमामा कैसा होना चाहिये : सख़्त टोपी पर बंधे बंधाए इमामे का इस्ति'माल बेशक जाइज़ है मगर ज़ियादा दिन बंधे रहने से उस के अन्दर **बदबू** पैदा हो सकती है। अगर हो सके तो मलमल के हलके फुलके कपड़े का इमामा शरीफ़ इस्ति'माल कीजिये और इस के लिये सफ़ेद कपड़े की ऐसी टोपी पहनिये जो सर से चिपड़ी हुई हो कि सुन्नत है। बंधा बंधाया इमामा शरीफ़ सर पर रख लेने और उतार कर रख देने के बजाए बांधते वक़्त एक एक पेच कर के बांधिये और इसी त़रह खोलने की तरकीब कीजिये, हो सकता है यूं बार बार हवा लगने से اِنْ شَآءَاللّٰه عَزَّوَجَلَّ **बदबू** से बचत की सूरत हो। इमामा, सरबन्द, चादर और लिबास वग़ैरा उतार कर धूप में डालने से भी पसीने वग़ैरा की **बदबू** दूर हो सकती है। नीज़ इन पर अच्छी अच्छी निय्यतों के साथ उ़म्दा इ़त्र

लगाते रहना भी बदबू दूर कर सकता है। ज़िम्नन इत्र लगाने की निय्यतें और मवाक़ेअ़ भी मुलाहज़ा फ़रमा लीजिये।

ख़ुश्बू लगाने की निय्यतें और मवाक़ेअ़

फ़रमाने मुस्तफ़ा صَلَّى اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم : "मुसल्मान की निय्यत उस के अ़मल से बेहतर है।" (مُعْجَم کبِیر ج٦ ص١٨٥ حدیث٥٩٤٢)

इर्शादे ग़ज़ाली : ख़ुश्बू इस्ति'माल करना जाइज़ है अलबत्ता इस पर सवाब पाने के लिये अच्छी निय्यत ज़रूरी है। (اِحیاءُ العلوم ج٥ ص٩٧ مُلَخّصاً)

﴾1﴿ सुन्नते मुस्तफ़ा صَلَّى اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم है इस लिये ख़ुश्बू लगाऊंगा ﴾2﴿ लगाने से क़ब्ल بِسْمِ اللہ ﴾3﴿ ख़ुश्बू लेते या सूंघते वक़्त इस निय्यत से दुरूद शरीफ़ पढ़ूंगा कि प्यारे आक़ा صَلَّى اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم इसे पसन्द करते और ब कसरत इस्ति'माल फ़रमाते थे और ﴾4﴿ अदाए शुक्रे ने'मत की निय्यत से اَلْحَمْدُ لِلّٰہِ رَبِّ الْعٰلَمِیْن कहूंगा ﴾5﴿ मलाएका और ﴾6﴿ मुसल्मानों को फ़रहत (ख़ुशी) पहुंचाऊंगा ﴾7﴿ अ़क़्ल बढ़ेगी तो अह़कामे शरई याद करने, सुन्नतें सीखने और अहम दीनी काम ब आसानी अन्जाम पाने पर क़ुव्वत ह़ासिल करूंगा (ह़ज़रते अ़ल्लामा ज़बीदी عَلَیْہِ رَحمَۃُ اللہِ الْقَوِی लिखते हैं : अतिब्बा (या'नी त़बीब लोग) इस बात पर मुत्तफ़िक़ हैं कि ख़ुश्बू से दिमाग़ को त़ाक़त व दुरुस्ती मिलती है। (اِتحاف السّادۃ ج ١٣ ص ٥٠)

इमाम शाफ़ेई عَلَیْہِ رَحْمَۃُ اللہِ الْکَافِی फ़रमाते हैं : "उ़म्दा ख़ुश्बू लगाने से अ़क़्ल

बढ़ती है।" (احیاءُ العلوم ج۱ ص۲٤٤)) ﴾8﴿ अपने बदन की बदबू से लोगों को बचाऊंगा (ख़ुसूसन गर्मियों में पसीने की बदबू से बचाने की निय्यत की जा सकती है) ﴾9﴿ लिबास वग़ैरा से बदबू दूर कर के मुसल्मानों को ग़ीबत के गुनाह से बचाऊंगा (क्यूं कि किसी मुसल्मान का लिबास वग़ैरा बदबूदार हो तो उस के पीछे से मसलन इस त़रह़ कहना कि : "उस के लिबास या हाथों या मुंह से बदबू आ रही थी" ग़ीबत है। इमामे ग़ज़ाली عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللّٰهِ الْوَالِي फ़रमाते हैं : जो बच सकने के बा वुजूद ख़ुद को ग़ीबत पर पेश करे वोह भी इस ग़ीबत के गुनाह में शरीक होगा (ایضاًج۵ص۹۸)) मौक़अ़ की मुनासबत से येह निय्यतें भी की जा सकती हैं, मसलन : ﴾10﴿ नमाज़ के लिये ज़ीनत ह़ासिल करूंगा ﴾11﴿ मस्जिद **अल्लाह** का घर है इस की ता'ज़ीम की निय्यत ﴾12﴿ नमाज़ की सफ़ में साथ बैठे हुवों को राह़त पहुंचाने के लिये ﴾13﴿ नमाज़े तहज्जुद ﴾14﴿ जुमुआ़ ﴾15﴿ पीर शरीफ़ ﴾16﴿ **रमज़ानुल मुबारक** ﴾17﴿ ईदुल फ़ित्र ﴾18﴿ ईदुल अज़्ह़ा ﴾19﴿ शबे मीलाद ﴾20﴿ ईदे मीलादुन्नबी صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ﴾21﴿ जुलूसे मीलाद ﴾22﴿ शबे मे'राजुन्नबी صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ﴾23﴿ शबे बराअत ﴾24﴿ ग्यारहवीं शरीफ़ ﴾25﴿ यौमे रज़ा ﴾26﴿ दर्से क़ुरआन व ﴾27﴿ ह़दीस ﴾28﴿ तिलावत ﴾29﴿ अवरादो वज़ाइफ़ ﴾30﴿ दुरूद शरीफ़ ﴾31﴿ दीनी किताब का मुत़ालआ़

फ़रमाने मुस्तफ़ा صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم : तुम जहां भी हो मुझ पर दुरूद पढ़ो कि तुम्हारा दुरूद मुझ तक पहुंचता है। (طبرانی)

﴾32﴿ तदरीसे इल्मे दीन ﴾33﴿ ता'लीमे इल्मे दीन ﴾34﴿ फ़तावा नवीसी ﴾35﴿ दीनी कुतुब की तस्नीफ़ो तालीफ़ ﴾36﴿ सुन्नतों भरे इज्तिमाअ़ ﴾37﴿ इज्तिमाए़ ज़िक्रो ना'त ﴾38﴿ दर्से फ़ैज़ाने सुन्नत ﴾39﴿ मदनी दौरा ﴾40﴿ सुन्नतों भरा बयान करते वक़्त ﴾41﴿ आ़लिम ﴾42﴿ मां ﴾43﴿ बाप ﴾44﴿ मोमिने सालेह़ ﴾45﴿ पीर साहि़ब ﴾46﴿ मूए मुबारक व तबर्रुकाते शरीफ़ा की ज़ियारत और ﴾47﴿ मज़ार शरीफ़ की ह़ाज़िरी के मवाक़ेअ़ पर भी ता'ज़ीम की निय्यत से ख़ुश्बू लगाई जा सकती है। उ़लमाए किराम से दर्जे ज़ैल (या'नी नीचे दिये हुए) मवाक़ेअ़ पर भी ख़ुश्बू लगाने का इस्तिह़बाब (या'नी मुस्तह़ब होना) साबित है[1] ﴾48﴿ वुज़ू करने के बा'द ﴾49﴿ एह़राम की निय्यत करने से पहले लिबास और बदन दोनों पर ﴾50﴿ ह़ज का एह़राम खुल जाने पर त़वाफ़े ज़ियारत से पहले ﴾51﴿ मर्द व औ़रत दोनों के लिये "मिलाप" से पहले ﴾52﴿ मय्यित (या'नी जो मरने के क़रीब हो उस) को नज़्अ़ के वक़्त ﴾53﴿ मय्यित को नहलाते वक़्त ख़ुश्बू सुलगाना बल्कि जिस तख़्त या चारपाई पर नहलाना हो उसे तीन या पांच या सात बार धूनी देना ﴾54﴿ मय्यित को ग़ुस्ल देने के बा'द उस के बदन पर काफ़ूर (जो कि एक ख़ुश्बूदार माद्दा है उस) का पानी बहाना ﴾55﴿ मय्यित को कफ़न पहनाने के बा'द दाढ़ी और तमाम बदन पर ख़ुश्बू मलना और मवाज़ेए़ सुजूद (या'नी बदन के वोह हि़स्से जो सज्दे में ज़मीन पर लगते हैं उन) पर काफ़ूर लगाना। जितनी

1 : इस की तफ़्सील दारुल इफ़्ता अहले सुन्नत के फ़तवा नम्बर : 7982 ग़ैर मत़्बूआ़ में मौजूद है।

अच्छी अच्छी निय्यतें करेंगे उतना ही ज़ियादा सवाब मिलेगा। जब कि निय्यत का मौक़अ़ महल भी हो और वोह निय्यत शरअ़न दुरुस्त भी हो, ज़ियादा याद न भी रहें तो कम अज़् कम दो तीन निय्यतें तो कर ही लेनी चाहिएं।

ऐ हमारे प्यारे प्यारे **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ ! आज तक हम से जितनी बार भी मस्जिद में बदबू ले जाने का गुनाह हुवा हो उस से तौबा करते हैं और येह अ़ज़्म करते हैं कि आयिन्दा कभी भी मस्जिद में किसी त़रह़ की बदबू नहीं ले जाएंगे। **या रब्बे मुस्त़फ़ा** عَزَّوَجَلَّ ! हमें मस्जिदें ख़ुश्बूदार रखने की सआ़दत दे। **या अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ ! हमें हर त़रह़ की ज़ाहिरी बात़िनी बदबूओं से पाक हो कर मस्जिद में ह़ाज़िरी की सआ़दत इनायत फ़रमा। **या अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ ! हमारे ख़ुश्बूदार सरकारे वाला तबार صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم के सदक़े हमें गुनाहों की बदबूओं से नजात दे और ख़ुश्बूओं से महक्ती हुई जन्नतुल फ़िरदौस में अपने मुअ़त्त़र मुअ़त्त़र ह़बीब صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم का पड़ोस नसीब फ़रमा।

اٰمِین بِجاہِ النَّبِیِّ الْاَمین صلَّی اللہ تعالیٰ علیہ واٰلہٖ وسلَّم

वल्लाह जो मल जाए मेरे गुल का पसीना

मांगे न कभी इ़त्र न फिर चाहे दुल्हन फूल

(ह़दाइक़े बख़्शिश शरीफ़, स. 78)

صَلُّوا عَلَی الْحَبِیْب ! صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلٰی مُحَمَّد

फ़िनाए मस्जिद और मो'तकिफ़ : प्यारे प्यारे इस्लामी भाइयो ! मो'तकिफ़ बिला ज़रूरत भी फ़िनाए मस्जिद में जाए तो ए'तिकाफ़ नहीं टूटता। फ़िनाए मस्जिद से मुराद वोह जगहें हैं जो मस्जिद की मसालेह़ या'नी ज़रूरिय्याते मस्जिद के लिये इह़ात़ए मस्जिद के अन्दर हों, जैसे मनारा, वुज़ूख़ाना, इस्तिन्जा ख़ाना, ग़ुस्ल ख़ाना, मस्जिद से मुत्तसिल मद्रसा, मस्जिद से मुल्ह़क़ इमाम व मुअज़्ज़िन वग़ैरा के हुजरे, जूते उतारने की जगह वग़ैरा येह मक़ामात बा'ज़ मुआमलात में हुक्मे मस्जिद में हैं और बा'ज़ मुआमलात में ख़ारिजे मस्जिद। मसलन यहां पर जुनुबी (या'नी जिस पर ग़ुस्ल फ़र्ज़ हो) जा सकता है। इसी त़रह़ इक़्तिदा और ए'तिकाफ़ के मुआमले में येह मक़ामात हुक्मे मस्जिद में हैं। मो'तकिफ़ बिला ज़रूरत भी यहां जा सकता है गोया वोह मस्जिद ही के किसी एक ह़िस्से में गया।

मो'तकिफ़ फ़िनाए मस्जिद में जा सकता है : ह़ज़रते सदरुश्शरीअ़ह, साह़िबे बहारे शरीअ़त ह़ज़रत मौलाना अमजद अ़ली आ'ज़मी رَحْمَةُ اللّٰهِ تَعَالٰى عَلَيْه फ़रमाते हैं : "फ़िनाए मस्जिद जो जगह मस्जिद से बाहर इस से मुल्ह़क़ ज़रूरिय्याते मस्जिद के लिये है, मसलन जूता उतारने की जगह और ग़ुस्ल ख़ाना वग़ैरा इन में जाने से ए'तिकाफ़ नहीं टूटेगा।" मज़ीद आगे फ़रमाते हैं : "फ़िनाए मस्जिद इस मुआमले में हुक्मे मस्जिद में है।" (फ़तावा अम्जदिय्या, जि. 1, स. 399)

इसी त़रह़ मनारा भी फ़िनाए मस्जिद है, अगर इस का रास्ता मस्जिद की चार दीवारी (बाउन्ड्री वॉल) के अन्दर हो तो मो'तकिफ़ बिला तकल्लुफ़ इस पर जा सकता है और अगर मस्जिद के बाहर से रास्ता हो तो सिर्फ़ अज़ान देने के लिये जा सकता है कि अज़ान देना ह़ाजते शरई है।

आ'ला ह़ज़रत رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰى عَلَيْه का फ़तवा : मेरे आक़ा आ'ला ह़ज़रत رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰى عَلَيْه फ़रमाते हैं : "बल्कि जब वोह मदारिसे मुतअ़ल्लिके़ मस्जिद हुदूदे मस्जिद के अन्दर हैं, उन में रास्ता फ़ासिल नहीं सिर्फ़ एक फ़सील (या'नी दीवार) से सह़नों का इम्तियाज़ कर दिया है तो उन में जाना मस्जिद से बाहर जाना ही नहीं, यहां तक कि ऐसी जगह मो'तकिफ़ का जाना जाइज़ कि वोह गोया मस्जिद ही का एक क़ित़्अ़ा (या'नी हिस्सा) है।"

वज़ाह़त : इस इबारत का साफ़ मफ़्हूम येह है कि मदारिस मुतअ़ल्लिके़ मस्जिद थे या'नी जिस त़रह़ मसाजिद में ज़िम्नी मदारिस लगाए जाते हैं जब कि वोह जगह जहां मद्रसा लगता है ज़रूरिय्यात व मसालेहे़ मस्जिद के लिये वक़्फ़ होती है तो दर ह़क़ीक़त उन मदारिस में जाना फ़िनाए मस्जिद ही में जाना हुवा, इस लिये इमामे अहले सुन्नत मौलाना शाह अह़मद रज़ा ख़ान عَلَيْهِ رَحْمَةُ الرَّحْمٰن ने फ़रमाया कि वहां

मो'तकिफ़ जा सकता है। यहां येह ग़लत़ फ़हमी नहीं होनी चाहिये कि मसाजिद के साथ मुत्तसिल जुदागाना मदारिस में जाना भी मो'तकिफ़ का जाइज़ है इस लिये कि जुदागाना मुस्तक़िल मदारिस पर फ़िनाए मस्जिद का हरगिज़ इत़्लाक़ नहीं होता उन की मुस्तक़िल वक़्फ़ की हैसिय्यत होती है इस लिये ऐसे मदारिस अगर्चे मस्जिद के साथ मुत्तसिल इह़ाते़ में बने हुए हों वहां जाने से ए'तिकाफ़ टूट जाएगा।

रद्दुल मुह़तार (जिल्द 3 सफ़ह़ा 436) में "**बदाइउ़स्सनाएअ़**" के ह़वाले से है : अगर मो'तकिफ़ मनारे पर चढ़ा तो बिल इत्तिफ़ाक़ उस का ए'तिकाफ़ फ़ासिद न होगा क्यूं कि मनारे मस्जिद ही (के हुक्म) में है। (फ़तावा रज़विय्या मुख़र्रजा, जि. 7, स. 453)

मस्जिद की छत पर चढ़ना : सह़्न, मस्जिद का ह़िस्सा है लिहाज़ा मो'तकिफ़ को सह़्ने मस्जिद में आना जाना बैठे रहना मुत़्लक़न जाइज़ है। मस्जिद की छत पर भी आ जा सकता है लेकिन येह उस वक़्त है कि छत पर जाने का रास्ता मस्जिद के अन्दर से हो। अगर ऊपर जाने के लिये सीढ़ियां इह़ात़ए मस्जिद से बाहर हों तो मो'तकिफ़ नहीं जा सकता, अगर जाएगा तो ए'तिकाफ़ फ़ासिद हो जाएगा। येह भी याद रहे कि मो'तकिफ़ व ग़ैर मो'तकिफ़ दोनों को मस्जिद की छत पर बिला ज़रूरत चढ़ना मकरूह है कि येह बे अदबी है।

मो'तकिफ़ के मस्जिद से बाहर निकलने की सूरतें :

ए'तिकाफ़ के दौरान दो वुजूहात की बिना पर (इहातए) मस्जिद से बाहर निकलने की इजाज़त है : (1) हाजते शरई (2) हाजते तब्ई।

(1) हाजते शरई : हाजते शरई मसलन नमाज़े जुमुआ अदा करने के लिये जाना या अज़ान कहने के लिये जाना वग़ैरा।

"करम" के तीन हुरूफ़ की निस्बत से हाजते शरई के मुतअ़ल्लिक़ 3 मदनी फूल

(1) **अगर** मनारे का रास्ता ख़ारिजे मस्जिद (या'नी इहातए मस्जिद से बाहर) हो तो भी अज़ान के लिये मो'तकिफ़ जा सकता है क्यूं कि अब येह मस्जिद से निकलना हाजते शरई की वज्ह से है।

(رَدُّالْمُحْتَار ج۳ص۵۰۲ مُلَخَّصاً)

(2) **अगर** वहां जुमुआ न होता हो तो मो'तकिफ़ जुमुआ की नमाज़ के लिये दूसरी मस्जिद में जा सकता है। और अपनी ए'तिकाफ़ गाह से अन्दाज़न ऐसे वक़्त में निकले कि ख़ुत्बा शुरूअ़ होने से पहले वहां पहुंच कर चार रक्अ़त सुन्नत पढ़ सके और नमाज़े जुमुआ के बा'द इतनी देर मज़ीद ठहर सकता है कि चार या छ[6] रक्अ़त पढ़ ले। और अगर इस से ज़ियादा ठहरा रहा बल्कि बाक़ी ए'तिकाफ़

अगर वहीं पूरा कर लिया तब भी ए'तिकाफ़ नहीं टूटेगा। लेकिन नमाज़े जुमुआ के बा'द छ[6] रक्अ़त से ज़ियादा ठहरना मक्रूह है।

(دُرِّ مُختَار، رَدُّالْمُحتَار ج٣ص٥٠٢)

﴾3﴿ **अगर** अपने महल्ले की ऐसी मस्जिद में ए'तिकाफ़ किया जिस में जमाअ़त न होती हो तो अब जमाअ़त के लिये निकलने की इजाज़त नहीं क्यूं कि अब अफ़्ज़ल येही है कि बिग़ैर जमाअ़त ही इस मस्जिद में नमाज़ अदा की जाए। (جَدُّ المُمتار ج٤ص٢٨٨)

(2) ह़ाजते त़ब्ई

ह़ाजते त़ब्ई के मुतअ़ल्लिक़ 4 पैरे : ﴾1﴿ **ह़ाजते** त़ब्ई, कि मस्जिद में पूरी न हो सके जैसे पाख़ाना, पेशाब, वुज़ू और ग़ुस्ल की ज़रूरत हो तो ग़ुस्ल, मगर ग़ुस्ल व वुज़ू में येह शर्त़ है कि मस्जिद में न हो सकें या'नी कोई ऐसी चीज़ न हो जिस में वुज़ू व ग़ुस्ल का पानी ले सके इस त़रह़ कि मस्जिद में पानी की कोई बूंद न गिरे कि वुज़ू व ग़ुस्ल का पानी मस्जिद में गिराना ना जाइज़ है और लगन वग़ैरा मौजूद हो कि उस में वुज़ू इस त़रह़ कर सकता है कि कोई छींट मस्जिद में न गिरे तो वुज़ू के लिये मस्जिद से निकलना जाइज़ नहीं, निकलेगा तो ए'तिकाफ़ जाता रहेगा। यूंही अगर मस्जिद में वुज़ू व ग़ुस्ल के लिये जगह बनी हो या हौज़ हो तो बाहर जाने की अब इजाज़त नहीं।

(دُرِّمُختَار،رَدُّالْمُحتَارج٣ص٥٠١, बहारे शरीअ़त, जि. 1, स. 1023, 1024)

《2》 **क़ज़ाए** हाजत को गया तो तहारत कर के फ़ौरन चला आए ठहरने की इजाज़त नहीं और अगर मो'तकिफ़ का मकान मस्जिद से दूर है और इस के दोस्त का मकान क़रीब तो येह ज़रूर नहीं कि दोस्त के यहां क़ज़ाए हाजत को जाए बल्कि अपने मकान पर भी जा सकता है और अगर इस के खुद दो मकान हैं एक नज़्दीक दूसरा दूर तो नज़्दीक वाले मकान में जाए कि बा'ज़ मशाइख़ फ़रमाते हैं दूर वाले में जाएगा तो ए'तिकाफ़ फ़ासिद हो जाएगा। (رَدُّالْمُحتار ج۳ص۵۰۱، عالمگیری ج۱ص۲۱۲)

《3》 **आ़म** तौर पर नमाज़ियों की सहूलत के लिये मस्जिद के इहाते में बैतुल ख़ला, ग़ुस्ल ख़ाना, इस्तिन्जा ख़ाना और वुज़ूख़ाना होता है। लिहाज़ा मो'तकिफ़ उन ही को इस्ति'माल करे।

《4》 **बा'ज़** मसाजिद में इस्तिन्जा ख़ानों, ग़ुस्ल ख़ानों वग़ैरा के लिये रास्ता इहात़ए मस्जिद (या'नी फ़िनाए मस्जिद) के भी बाहर से होता है लिहाज़ा इन इस्तिन्जा ख़ानों और ग़ुस्ल ख़ानों वग़ैरा में हाजते तब्ई के इलावा नहीं जा सकते।

ए'तिकाफ़ तोड़ने वाली चीज़ों का बयान : अब उन चीज़ों का बयान किया जाता है जिन से ए'तिकाफ़ टूट जाता है। जहां जहां मस्जिद से निकलने पर ए'तिकाफ़ टूटने का हुक्म है वहां इहात़ए मस्जिद (या'नी इमारते मस्जिद की बाउन्ड्री वॉल) से निकलना मुराद है।

"सय्यिदी क़ुत़्बे मदीना" के बारह हुरूफ़ की निस्बत से ए'तिकाफ़ तोड़ने वाली चीज़ों के मुतअ़ल्लिक़ 12 मदनी फूल

1 **ए'तिकाफ़े** वाजिब में मो'तकिफ़ को मस्जिद से बिग़ैर उ़ज़्र निकलना ह़राम है, अगर निकला तो ए'तिकाफ़ जाता रहा अगर्चे भूल कर निकला हो। यूं ही (रमज़ानुल मुबारक के आख़िरी अ़शरे का) ए'तिकाफ़े सुन्नत भी बिग़ैर उ़ज़्र निकलने से जाता रहता है।

(बहारे शरीअ़त, जि. 1, स. 1023)

2 **मस्जिद** से निकलना उस वक़्त कहा जाएगा जब कि पाउं मस्जिद से इस त़रह़ बाहर हो जाएं कि उसे उ़र्फ़न मस्जिद से निकलना कहा जा सके। अगर सिर्फ़ सर मस्जिद से निकाला तो इस से ए'तिकाफ़ फ़ासिद नहीं होगा। (اَلْبَحْرُ الرَّائِق ج۲ ص۵۳۰)

3 **शरई** इजाज़त से बाहर निकले, लेकिन फ़राग़त के बा'द एक लम्ह़े के लिये भी बाहर ठहर गए तो ए'तिकाफ़ टूट जाएगा।

4 **चूंकि** इस में रोज़ा शर्त़ है, इस लिये रोज़ा तोड़ देने से भी ए'तिकाफ़ टूट जाता है। ख़्वाह येह रोज़ा किसी उ़ज़्र से तोड़ा हो या बिला उ़ज़्र, जान बूझ कर तोड़ा हो या ग़लत़ी से टूटा हो, हर सूरत में ए'तिकाफ़ टूट जाता है। **अगर** भूल कर कुछ खा पी लिया, तो न रोज़ा टूटा न ए'तिकाफ़।

﴿5﴾ **येह** ज़ाबित़ा याद रखिये कि वोह तमाम उमूर जिन से रोज़ा टूट जाता है, ए'तिकाफ़ भी टूट जाता है।

﴿6﴾ **पाख़ाना** पेशाब के लिये (इह़ात़ए मस्जिद से बाहर) गया था। क़र्ज़ ख़्वाह ने रोक लिया, **ए'तिकाफ़** फ़ासिद हो गया।

(عالمگیری ج۱ص۲۱۲)

﴿7﴾ **बेहोशी** और जुनून अगर त़वील हों कि रोज़ा न हो सके तो **ए'तिकाफ़** जाता रहा और क़ज़ा वाजिब है, अगर्चे कई साल के बा'द सिह़्ह़त हो। (اَیضاًص۲۱۳)

﴿8﴾ मो'तकिफ़ मस्जिद ही में खाए पिये सोए, इन उमूर के लिये मस्जिद से बाहर हो जाएगा तो **ए'तिकाफ़** टूट जाएगा। (اَلْبَحْرُالرَّائِق ج۲ص۵۳۰) मगर येह ख़याल रहे कि मस्जिद आलूदा न हो।

﴿9﴾ **खाना** लाने वाला कोई नहीं तो फिर अपना खाना लाने के लिये आप बाहर जा सकते हैं, लेकिन मस्जिद में ला कर खाइये।

﴿10﴾ **मरज़** के इलाज के लिये मस्जिद से निकले तो **ए'तिकाफ़** फ़ासिद हो गया। नींद की ह़ालत में चलने की बीमारी हो और नींद में चलते चलते मस्जिद से निकल जाए तो ए'तिकाफ़ फ़ासिद हो जाएगा।

फ़रमाने मुस्त़फ़ा صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم : जो मुझ पर एक बार दुरूद पढ़ता है **अल्लाह** उस के लिये एक क़ीरात़ अज्र लिखता है और क़ीरात़ उहुद पहाड़ जितना है। (عبدالرزاق)

﴾11﴿ **अगर** डूबने या जलने वाले के बचाने के लिये मस्जिद से बाहर गया या गवाही देने के लिये गया या जिहाद में सब लोगों का बुलावा हुवा और येह भी निकला या मरीज़ की इ़यादत या नमाज़े जनाज़ा के लिये गया, अगर्चे कोई दूसरा पढ़ने वाला न हो तो इन सब सूरतों में **ए'तिकाफ़** फ़ासिद हो गया।

(बहारे शरीअ़त, जि. 1, स. 1025)

﴾12﴿ **कोई** बद नसीब दौराने ए'तिकाफ़ **मुरतद** हो गया (نَعُوْذُ بِاللّٰہ عَزَّوَجَلَّ) तो **ए'तिकाफ़** फ़ासिद हो गया और फिर अगर **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ मुरतद को ईमान की तौफ़ीक़ इनायत फ़रमाए तो फ़ासिद शुदा ए'तिकाफ़ की क़ज़ा नहीं। (ماخوذاز دُرِّمُختَار ج٣ ص٥٠٤)

मेरी कमर का दर्द चला गया : प्यारे प्यारे इस्लामी भाइयो !

ए'तिकाफ़ की अ़ज़्मत के क्या कहने और अगर ए'तिकाफ़ में आ़शिक़ाने रसूल की सोहबत भी मुयस्सर आ जाए तो क्या ही बात है ! चुनान्चे एक इस्लामी भाई दा'वते इस्लामी के मदनी माहोल से वाबस्ता होने से पहले आवारा गर्द और गन्दी ज़ेहनिय्यत के मालिक थे, दोस्तों की मंडलियों में फ़ोह्श बातें करना फिर ऊपर से ज़ोरदार क़ह्क़हे मारना उन का ख़ास मश्ग़ला था। एक ना शाइस्ता गुनाह की वज्ह से उन की **कमर में दर्द** रहने लगा था, जो किसी त़रह़ के इलाज से न जाता था।

उन की क़िस्मत का सितारा यूं चमका कि बा'ज़ शनासा इस्लामी भाइयों के इसरार पर आख़िरी अ़शरए **रमज़ानुल मुबारक** (1426 सि.हि.) में **आ़शिक़ाने रसूल** के साथ **मेमन मस्जिद** में मो'तकिफ़ हो गए, वोह गोया किसी नई दुन्या में आ गए थे, पांचों नमाज़ों की बहारें, सुन्नतों भरे पुरसोज़ बयानात, रिक़्क़त अंगेज़ दुआएं, सुन्नतों भरे ह़ल्क़े फिर ऊपर से **आ़शिक़ाने रसूल** की शफ़्क़तें और उन की बरकतें, اَلْحَمْدُ لِلّٰهِ عَزَّوَجَلَّ **दौराने ए'तिकाफ़ उन की कमर का दर्द बिग़ैर किसी दवा के ख़ुद बख़ुद ठीक हो गया** और उन के क़ल्ब में मदनी इन्क़िलाब बरपा हो गया। उन्हों ने गुनाहों से तौबा की, चेहरे को मदनी आक़ा صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم की मह़ब्बत की मुबारक निशानी दाढ़ी से आरास्ता किया और सब्ज़ इमामा शरीफ़ से सर भी सर सब्ज़ हो गया। اَلْحَمْدُ لِلّٰهِ عَزَّوَجَلَّ **41 दिन का मदनी क़ाफ़िला कोर्स** करने की सआ़दत ह़ासिल की और दा'वते इस्लामी के मदनी कामों की धूमें मचाने के लिये कोशां हो गए।

اِنْ شَآءَ اللّٰه भाई ! सुधर जाओगे, मदनी माह़ोल में कर लो तुम ए'तिकाफ़
मरज़े इस्यां से छुटकारा तुम पाओगे, मदनी माह़ोल में कर लो तुम ए'तिकाफ़

(वसाइले बख़्शिश, स. 644)

صَلُّوا عَلَى الْحَبِيب ! صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلٰى مُحَمَّد

चुप का रोज़ा : हुज़ूरे पुरनूर, शाफ़ेए यौमुन्नुशूर صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने "सौमे विसाल" (या'नी बिग़ैर सहरी व इफ़्तार के मुसल्सल रोज़ा रखने) और "सौमे सुकूत" (या'नी "चुप का रोज़ा" रखने) से मन्अ़ फ़रमाया। (مُسندِ امامِ اَعْظَم ص١٩٢)

बा'ज़ लोगों में येह ग़लत़ फ़हमी पाई जाती है कि मो'तकिफ़ को मस्जिद में पर्दे लगा कर उस के अन्दर बिल्कुल चुपचाप पड़े रहना चाहिये, बल्कि बा'ज़ तो इसे ज़रूरी समझते हैं जब कि ऐसा नहीं। अगर ज़रूरत हो और कोई रुकावट न हो तो पर्दा लगा लेना बहुत उ़म्दा है कि सरकारे मदीना صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم से **ए'तिकाफ़** के लिये ख़ैमा लगाना साबित है, अलबत्ता बिग़ैर पर्दा लगाए भी **ए'तिकाफ़** दुरुस्त है। ख़ामोशी को बज़ाते ख़ुद इबादत समझना ग़लत़ है चुनान्चे **बहारे शरीअ़त** जिल्द अव्वल सफ़हा 1026 ता 1027 पर मस्अला 32 है : मो'तकिफ़ अगर ब निय्यते इबादत सुकूत करे या'नी चुप रहने को सवाब की बात समझे तो **मक्रूहे तह़रीमी** है और अगर चुप रहना सवाब की बात समझ कर न हो तो ह़रज नहीं। और बुरी बात से चुप रहा तो येह मक्रूह नहीं, बल्कि येह तो आ'ला दरजे की चीज़ है क्यूं कि बुरी बात ज़बान से न निकालना वाजिब है और जिस बात में न सवाब हो न गुनाह या'नी मुबाह़ बात भी मो'तकिफ़ को मक्रूह है, मगर ब वक़्ते ज़रूरत

और बे ज़रूरत मस्जिद में मुबाह़ कलाम नेकियों को ऐसे खाता है जैसे आग लकड़ी को। (دُرِّمُختار ج٣ص٥٠٧)

ह़ाजत रवाई और एक दिन के ए'तिकाफ़ की फ़ज़ीलत :

हज़रते सय्यिदुना **अ़ब्दुल्लाह** इब्ने अ़ब्बास رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْهُمَا मस्जिदे नबविय्यिश्शरीफ़ عَلٰی صَاحِبِهَا الصَّلٰوةُ وَالسَّلَام में मो'तकिफ़ थे। एक ग़मगीन शख़्स आप رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْهُ की ख़िदमते बा बरकत में ह़ाज़िर हुवा। वज्हे ग़म दरयाफ़्त करने पर उस ने अ़र्ज़ किया : "ऐ **रसूलुल्लाह** صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰی عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم के चचाजान के लख़्ते जिगर ! फ़ुलां का मेरे ज़िम्मे कुछ ह़क़ है। मैं उस का ह़क़ अदा करने की इस्तिताअ़त (या'नी ताक़त) नहीं रखता।" हज़रते सय्यिदुना **अ़ब्दुल्लाह** इब्ने अ़ब्बास رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْهُمَا ने फ़रमाया : "क्या मैं तुम्हारी सिफ़ारिश करूं ?" उस ने अ़र्ज़ की : "जिस त़रह़ आप رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْهُ बेहतर समझें।" येह सुन कर ह़ज़रते इब्ने अ़ब्बास رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْهُمَا फ़ौरन मस्जिदे नबविय्यिश्शरीफ़ عَلٰی صَاحِبِهَا الصَّلٰوةُ وَالسَّلَام से बाहर निकल आए। येह देख कर वोह शख़्स अ़र्ज़ गुज़ार हुवा : "आ़लीजाह ! क्या आप رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْهُ **ए'तिकाफ़** भूल गए ?" फ़रमाया : "ना, **ए'तिकाफ़** नहीं भूला।" फिर मदनी ताजदार صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰی عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم के मज़ारे नूरबार की त़रफ़ इशारा करते हुए अश्कबार हो गए। और फ़रमाया : "ज़ियादा अ़र्सा नहीं गुज़रा कि मैं ने इस मज़ार शरीफ़ में आराम फ़रमाने वाले मह़बूब صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰی عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم से ख़ुद अपने कानों

से सुना है कि फ़रमा रहे थे : "जो अपने किसी भाई की **ह़ाजत रवाई** के लिये चले और उस को पूरा कर दे तो येह **दस साल के ए'तिकाफ़** से अफ़्ज़ल है और जो रिज़ाए इलाही عَزَّوَجَلَّ के लिये **एक दिन का ए'तिकाफ़** करेगा तो **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ उस के और जहन्नम के दरमियान तीन ख़न्दकें ह़ाइल फ़रमा देगा हर ख़न्दक़ का फ़ासिला मशरिक़ो मग़रिब के दरमियानी फ़ासिले से भी ज़ियादा होगा।" (شُعَبُ الْاِیمان ج ٣ ص ٤٢٤ حدیث ٣٩٦٥ مُلَخَّصاً)

अल्लाहु रब्बुल इ़ज़्ज़त عَزَّوَجَلَّ **की उन पर रह़मत हो और उन के सदक़े हमारी बे ह़िसाब मग़्फ़िरत हो।** اٰمِین بِجاہِ النَّبِیِّ الْاَمین صَلَّی اللہ تعالٰی علیہ والہٖ وسلَّم

अ़रबी लुग़त की मश्हूर किताब "**अल क़ामूसुल मुह़ीत़**" में है : ख़न्दक़ उस गढ़े को कहते हैं जो किसी शहर के इर्द गिर्द खोदा जाता है।[1] मुराद येह है कि वोह जहन्नम से बहुत दूर कर दिया जाता है।

صَلُّوا عَلَی الْحَبِیب! صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلٰی مُحَمَّد

मुसल्मान को ख़ुश करने की फ़ज़ीलत : प्यारे प्यारे इस्लामी भाइयो! سُبْحٰنَ اللہ عَزَّوَجَلَّ ! जब एक दिन के **ए'तिकाफ़** की इतनी फ़ज़ीलत है तो फिर "**दस** साल के **ए'तिकाफ़** से भी अफ़्ज़ल" अ़मल की बरकतों का कौन अन्दाज़ा कर सकता है ! इस **ह़िकायत** से अपने इस्लामी भाइयों की **ह़ाजत रवाई** की फ़ज़ीलत भी मा'लूम हुई। याद रहे ! ह़ाजत रवाई के लिये भी मस्जिद से बाहर निकलने से ए'तिकाफ़

مـــــــدینـــه

[1] : القاموس المحیط ج۲ ص۱۱۷۰

फ़रमाने मुस्त़फ़ा صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰی عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم : उस शख़्स की नाक ख़ाक आलूद हो जिस के पास मेरा ज़िक्र हो और वोह मुझ पर दुरूदे पाक न पढ़े । (ترمذی)

टूट जाता है। हम अगर किसी की ज़रूरत पूरी कर देंगे तो उस का दिल ख़ुश हो जाएगा और दिले मुस्लिम में ख़ुशी दाख़िल करने के भी क्या कहने ! चुनान्चे **फ़रमाने मुस्त़फ़ा** صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰی عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم है : "फ़राइज़ के बा'द सब आ'माल में **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ को ज़ियादा प्यारा, मुसल्मान का दिल ख़ुश करना है।" (مُعْجَم كبير ج١١ ص٥٩ حديث ١١٠٧٩) वाक़ेई अगर इस गए गुज़रे दौर में हम सब एक दूसरे की ग़म ख़्वारी व ग़म गुसारी में लग जाएं तो दुन्या का नक़्शा ही बदल जाए। लेकिन आह ! आज तो मुसल्मान की इ़ज़्ज़तो आबरू और इस के जानो माल मुसल्मान ही के हाथों पामाल होते नज़र आ रहे हैं ! **अल्लाहु रब्बुल इ़ज़्ज़त** عَزَّوَجَلَّ हमें आपस की नफ़रतें मिटाने और महब्बतें बढ़ाने की सआदत इनायत फ़रमाए।

اٰمِين بِجاهِ النَّبِيِّ الْاَمين صَلَّى اللّٰه تعالٰى عليه واٰله وسلَّم

"मस्जिदे नबवी" के आठ हुरूफ़ की निस्बत से ए'तिकाफ़ में जाइज़ कामों की इजाज़त पर मुश्तमिल 8 मदनी फूल

﴾1﴿ **खाना**, पीना, सोना (मगर मस्जिद की दरी पर खाने और सोने के बजाए अपनी चादर या चटाई पर खाएं और सोएं, मगर अपनी चादर और चटाई को गिज़ा वग़ैरा की आलूदगी से बचाना ज़रूरी है ताकि बदबू न हो)

मक्कतुल मुकर्रमा / मदीनतुल मुनव्वरा / जन्नतुल बक़ीअ़

2 **ज़रूरतन** दुन्यवी बातचीत करना। (मगर आहिस्तगी के साथ और फ़ालतू बातें हरगिज़ मत कीजिये)

3 **मस्जिद** में कपड़े तब्दील करना, इत्र लगाना, सर या दाढ़ी में तेल डालना।

4 **दाढ़ी** का ख़त़ बनवाना, ज़ुल्फ़ें तराश्ना, कंघी करना, मगर इन सब कामों में येह एह्‌तियात़ ज़रूरी है कि कोई बाल मस्जिद में न गिरे, तेल या खाने वग़ैरा से मस्जिद की सफ़ें और दीवारें वग़ैरा आलूदा न हों। इस की आसान सूरत येह है कि येह काम वुज़ूख़ाने या फ़िनाए मस्जिद में अपनी चादर बिछा कर करें।

5 **मस्जिद** में बिला उजरत किसी मरीज़ का मुआयना करना, दवा बताना या नुस्ख़ा लिख कर देना।

6 **मस्जिद** में बिला उजरत क़ुरआने करीम या इल्मे दीन पढ़ना, पढ़ाना या सुन्नतें और दुआएं सीखना, सिखाना।

7 **अपनी** या अहलो इयाल की ज़रूरत के लिये मस्जिद में ख़रीदो फ़रोख़्त मो'तकिफ़ के लिये जाइज़ है। मगर तिजारत की कोई चीज़ मस्जिद में नहीं ला सकते। हां अगर थोड़ी सी चीज़ है कि मस्जिद में जगह न घिरे तो ला सकते हैं। ख़रीदो फ़रोख़्त सिर्फ़ ज़रूरत के लिये हो और माल कमाना मक़्सूद हो तो जाइज़ नहीं, चाहे वोह

माल मस्जिद के बाहर ही क्यूं न हो।

(دُرِّمُختَار ج٣ص٥٠٦, बहारे शरीअ़त, जि. 1, स. 1026)

﴾8﴿ **कपड़े**, बरतन वग़ैरा मस्जिद के अन्दर धोना जाइज़ है बशर्ते कि मस्जिद की दरी या फ़र्श पर उस का कोई छींटा न पड़े इस की सूरत येह है कि किसी बड़े बरतन वग़ैरा में धोएं।

इन बातों के इलावा भी तमाम वोह काम जो ए'तिकाफ़ के लिये मुफ़्सिद व मम्नूअ़ नहीं और फ़ी नफ़्सिही जाइज़ भी हैं और उन से मस्जिद की बे हुरमती भी नहीं होती और किसी इबादत करने या सोने वाले के लिये बाइसे तश्वीश भी नहीं, मो'तकिफ़ के लिये जाइज़ हैं।

ए'तिकाफ़ क़ज़ा करने का त़रीक़ा : प्यारे प्यारे इस्लामी भाइयो ! रमज़ानुल मुबारक के आख़िरी अ़शरे का सुन्नत ए'तिकाफ़ टूट गया तो आप के ज़िम्मे सिर्फ़ उस एक दिन की क़ज़ा है जिस दिन **ए'तिकाफ़** टूटा है, अगर माहे रमज़ान शरीफ़ के दिन बाक़ी हैं तो उन में भी क़ज़ा हो सकती है, वरना बा'द में किसी दिन कर लीजिये। मगर ईदुल फ़ित्र और ज़ुल हिज्जतिल ह़राम की दसवीं ता तेरहवीं के इलावा कि इन पांच दिनों के रोज़े मकरूहे तह़रीमी हैं। **क़ज़ा का त़रीक़ा** येह है कि किसी दिन ग़ुरूबे आफ़्ताब के वक़्त (बल्कि एह़तियात़ इस में है कि चन्द मिनट क़ब्ल) ब निय्यते क़ज़ा ए'तिकाफ़ मस्जिद में दाख़िल हो जाइये

और अब जो दिन आएगा उस के ग़ुरूबे आफ़्ताब तक मो'तकिफ़ रहिये। इस में रोज़ा शर्त़ है।

ए'तिकाफ़ का फ़िदया : अगर क़ज़ा करने की मोहलत मिलने के बा वुजूद क़ज़ा न की और मौत का वक़्त आ पहुंचा तो वारिसों को वसिय्यत करना वाजिब है कि वोह इस ए'तिकाफ़ के बदले फ़िदया अदा कर दें, अगर वसिय्यत न की और वुरसा फ़िदये की अदाएगी की इजाज़त दे दें तो भी फ़िदया अदा करना जाइज़ है। (عالمگیری ج ۱ ص ۲۱٤) **फ़िदया** अदा करना ज़ियादा मुश्किल नहीं। ए'तिकाफ़ के फ़िदये की निय्यत से किसी मुस्तह़िक़्के ज़कात को **सदक़ए फ़ित्र** की मिक़्दार में (या'नी 2 किलो में 80 ग्राम कम) गेहूं या इस की रक़म अदा कर दीजिये।

ए'तिकाफ़ तोड़ने की तौबा : अगर ए'तिकाफ़ किसी सह़ीह़ मजबूरी के तह़्त तोड़ा था या भूले से टूटा तो गुनाह नहीं और अगर जान बूझ कर बिग़ैर किसी सह़ीह़ मजबूरी के तोड़ा था तो येह गुनाह है लिहाज़ा क़ज़ा के साथ साथ **तौबा** भी कीजिये।

मश्हूर बेन्ड पार्टी के मालिक की तौबा : प्यारे प्यारे इस्लामी भाइयो ! तब्लीग़े क़ुरआनो सुन्नत की आलमगीर ग़ैर सियासी तह़रीक, **दा'वते इस्लामी** के मदनी माह़ोल में आ कर बे शुमार बिगड़े हुए अफ़्राद नमाज़ों और सुन्नतों के पाबन्द हो गए, इस ज़िम्न में एक

मुश्कबार मदनी बहार मुलाहज़ा फ़रमाइये चुनान्चे **मन्दसोर** शहर (M.P. अल हिन्द) की मश्हूर **बेन्ड पार्टी** का मालिक एक मुबल्लिग़े दा'वते इस्लामी की इन्फ़िरादी कोशिश के नतीजे में आख़िरी अ़शरए **रमज़ानुल मुबारक** 1426 सि.हि. में आ़शिक़ाने रसूल के साथ मो'तकिफ़ हो गया। **तरबियती ह़ल्क़ों** में गुनाहों की तबाह कारियां सुन कर उस का दिल चोट खा गया, اَلْحَمْدُ لِلّٰه عَزَّوَجَلَّ उस ने साबिक़ा गुनाहों से तौबा की, **दाढ़ी** सजाने और **आ़शिक़ाने रसूल** के साथ एक माह के **मदनी क़ाफ़िले** में सुन्नतों भरा सफ़र करने की निय्यत की। اَلْحَمْدُ لِلّٰه عَزَّوَجَلَّ **बेन्ड बाजे बजाने का गुनाहों भरा ह़राम रोज़गार उस ने तर्क कर दिया।**

चोट खा जाएगा इक न इक रोज़ दिल, मदनी माह़ोल में कर लो तुम ए'तिकाफ़
फ़ज़्ले रब से हिदायत भी जाएगी मिल, मदनी माह़ोल में कर लो तुम ए'तिकाफ़

(वसाइले बख़्शिश, स. 639)

صَلُّوْا عَلَى الْحَبِيْب! صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلٰى مُحَمَّد

मो'तकिफ़ीन के लिये ज़रूरत की अश्या : ﴾1﴿ यक्सूई ह़ासिल करने और हि़फ़ाज़ते सामान के लिये अगर पर्दा लगाना हो तो ह़स्बे ज़रूरत कपड़ा (सब्ज़ हो तो मदीना मदीना) डोरी और बक्सूए (सेफ़्टी पिनें) ﴾2﴿ **कन्ज़ुल ईमान** शरीफ़ ﴾3﴿ अपने पीर साहि़ब का

शजरा ﴾4﴿ तस्बीह़ ﴾5﴿ मिस्वाक ﴾6﴿ मदनी इन्आ़मात का रिसाला ﴾7﴿ क़लम ﴾8﴿ इत्र ﴾9﴿ कुफ़्ले मदीना पेड ﴾10﴿ कुफ़्ले मदीना की ऐनक ﴾11﴿ डायरी ﴾12﴿ ह़स्बे ज़रूरत इस्लामी किताबें ﴾13﴿ सूई धागा ﴾14﴿ नाखुन तराश ﴾15﴿ कैंची ﴾16﴿ सुरमा, सलाई ﴾17﴿ तेल की शीशी ﴾18﴿ कंघा ﴾19﴿ आईना ﴾20﴿ ह़स्बे ज़रूरत सुन्नतों भरे मल्बूसात (मौसिम के मुत़ाबिक़) ﴾21﴿ इमामा शरीफ़ मअ़ सरबन्द और टोपी ﴾22﴿ सर पर ओढ़ने के लिये सफ़ेद चादर ﴾23﴿ तहबन्द ﴾24﴿ सोने के लिये ऐसी चटाई जिस से मस्जिद में तिन्के न झड़ें ﴾25﴿ ज़रूरत हो तो तक्या ﴾26﴿ सोने में ओढ़ने के लिये चादर या कम्बल ﴾27﴿ सोते वक़्त सिरहाने रखने के लिये सुन्नत बक्स ﴾28﴿ पर्दे में पर्दा करने के लिये कथ्थई (Brown) चादर ﴾29﴿ मिट्टी की रिकाबी ﴾30﴿ मिट्टी का पियाला ﴾31﴿ थरमोस ﴾32﴿ दस्तर ख़्वान ﴾33﴿ दांतों के ख़िलाल के लिये तिन्के ﴾34﴿ तोलिया ﴾35﴿ टिशू पेपर्ज़ ﴾36﴿ ज़रूरत हो तो टॉयलेट पेपर्ज़ ﴾37﴿ दर्दे सर, नज़्ला, बुख़ार वग़ैरा के लिये गोलियां ﴾38﴿ ह़स्बे ज़रूरत रक़म ﴾39﴿ मस्जिद के गिरे पड़े तिन्के वग़ैरा जम्अ़ करने के लिये शोपर (कुछ ज़ियादा ले लीजिये ताकि दूसरों को दे सकें)

मदनी मश्वरा : अपनी चीज़ों पर कोई निशानी (मसलन ☾ ☆ वग़ैरा)

बना लीजिये ताकि ख़ल्त़ मल्त़ (Mix) हो जाने की सूरत में तलाश्ना आसान हो, चादर वग़ैरा पर अपना नाम बल्कि कोई अंग्रेज़ी ह़र्फ़ भी न लिखिये वरना हो सकता है बे अदबी होती रहे (निशानियों के नमूने इसी बाब "फ़ैज़ाने ए'तिकाफ़" के आख़िरी सफ़ह़े पर मुलाह़ज़ा फ़रमाइये)

"रमज़ान शरीफ़ के ए'तिकाफ़ की भी क्या बात है !" के तीस ह़ुरूफ़ की निस्बत से ए'तिकाफ़ के 30 मदनी फूल

﴾1﴿ **मस्जिद** की दीवारों या दरियों वग़ैरा पर नाक या कान का मैल और चिकने हाथ मत लगाइये, फ़िनाए मस्जिद के कोने खदरों में भी पान की पीक वग़ैरा न डालिये। मस्जिद की सफ़ाई का ख़ास ख़याल रखिये, फ़र्शे मस्जिद पर गिरे पड़े बालों के गुच्छे और तिन्के वग़ैरा डालने के लिये हो सके तो एक शॉपर जेब में रख लें। **फ़रमाने मुस्त़फ़ा** صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم : जो मस्जिद से अज़िय्यत की चीज़ निकाले **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ उस के लिये जन्नत में एक घर बनाएगा। (ابنِ ماجه ج۱ص۴۱۹حديث۷۵۷)

﴾2﴿ **मस्जिद** की दरियों के धागे और चटाइयों के तिन्के नोचने से परहेज़ कीजिये। (हर जगह इस बात का ख़याल रखिये)

﴾3﴿ **मस्जिद** में अपने लिये मांगना जाइज़ नहीं और उसे देने से भी

उ़लमा ने मन्अ़ फ़रमाया है यहां तक कि इमाम इस्माईल ज़ाहिद رَحْمَۃُاللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہ ने फ़रमाया : जो मस्जिद के साइल को एक पैसा दे उसे चाहिये कि सत्तर[70] पैसे **अल्लाह तआ़ला** के नाम पर और दे कि उस पैसे का कफ़्फ़ारा हों, और किसी दूसरे के लिये मांगा या मस्जिद ख़्वाह किसी और ज़रूरते दीनी के लिये चन्दा करना जाइज़ और सुन्नत से साबित है। (फ़तावा रज़विय्या, जि. 16, स. 418)

﴾4﴿ **मो'तकिफ़** ने सिर्फ़ एक पाउं मस्जिद से बाहर निकाला तो कोई ह़रज नहीं।

﴾5﴿ **दोनों** हाथ मअ़ सर भी अगर मस्जिद से बाहर निकाल दिये तो मुज़ायक़ा नहीं।

﴾6﴿ **बे ख़याली** में मस्जिद से बाहर निकल गए और याद आने पर फ़ौरन मस्जिद के अन्दर आ भी गए फिर भी **ए'तिकाफ़** टूट चुका।

﴾7﴿ **रात** के वक़्त जितनी देर तक मस्जिद में बत्ती जलाने का उ़र्फ़ (रवाज) है उतनी देर तक उस की रोशनी में दीनी मुत़ालआ़ किया जा सकता है।

﴾8﴿ **अख़बारात** जानदारों की तसावीर बल्कि फ़िल्मी इश्तिहारात से उ़मूमन पुर होते हैं लिहाज़ा मस्जिद में इन के मुत़ालए़ से बचिये।

9 **चोर** अपने या किसी इस्लामी भाई के जूते वग़ैरा चुरा कर भागा तो उस को पकड़ने के लिये मस्जिद से बाहर निकल गए तो **ए'तिकाफ़** टूट गया।

10 **मस्जिद** में बयान करने या ना'त शरीफ़ वग़ैरा पढ़ने में एहतियात लाज़िमी है, किसी की इबादत या आराम में ख़लल नहीं पड़ना चाहिये।

11 **मस्जिद** की छत वग़ैरा अगर गिर पड़ी या किसी ने ज़बर दस्ती निकाल दिया तो फ़ौरन दूसरी मस्जिद में मो'तकिफ़ हो जाएं, **ए'तिकाफ़** सहीह हो जाएगा।

12 **दौराने** ए'तिकाफ़ हत्तल इम्कान अपना वक़्त, नवाफ़िल, तिलावते कुरआन, ज़िक्रो दुरूद, मुतालअ़ए कुतुबे इस्लामिय्या और सुन्नतें और दुआएं वग़ैरा सीखने सिखाने में गुज़ारिये।

13 **ए'तिकाफ़** के लिये अगर मस्जिद में पर्दा लगाएं तो कम से कम जगह घेरें। मेरे आक़ा **आ'ला हज़रत** رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰى عَلَيْه फ़रमाते हैं : अगर (मस्जिद में) चीज़ें रखे जिन से नमाज़ की जगह रुके तो सख़्त ना जाइज़ है। (फ़तावा रज़विय्या, जि. 8, स. 97)

14 **मस्जिद** में शोरो गुल, हंसी मज़ाक़ वग़ैरा करना गुनाह है।

15 **आप** घर से आए तो नेकियां कमाने मगर कहीं ऐसा न हो कि

फ़रमाने मुस्तफ़ा صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم : तुम जहां भी हो मुझ पर दुरूद पढ़ो कि तुम्हारा दुरूद मुझ तक पहुंचता है। (طبرانی)

मस्जिद की बे अदबियां कर के गुनाहों का ढेर ले कर पलटें। लिहाज़ा ख़बरदार ! मस्जिद में बिला ज़रूरत कोई लफ़्ज़ मुंह से न निकले, ज़बान पर मज़बूत **कुफ़्ले मदीना** लगाइये।

《16》 **अपनी** ज़रूरत की अश्या पहले ही से मुहय्या कर लीजिये ताकि किसी से सुवाल की हाजत न रहे, दूसरों से चीज़ें मांगते रहना भी अच्छी आदत नहीं। चुनान्चे दा'वते इस्लामी के इशाअ़ती इदारे **मक्तबतुल मदीना** की मत्बूआ़ 695 सफ़हात पर मुश्तमिल किताब, "**अल्लाह वालों की बातें**" जिल्द 1 सफ़हा 340 ता 341 पर है : हज़रते सय्यिदुना सौबान رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْه फ़रमाते हैं, हुस्ने अख़्लाक़ के पैकर, महबूबे रब्बे अक्बर صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने इर्शाद फ़रमाया : "जो मुझे एक चीज़ की ज़मानत दे मैं उसे जन्नत की ज़मानत देता हूं।" मैं ने अ़र्ज़ की : "**या रसूलल्लाह** صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ! मैं ज़मानत देता हूं।" इर्शाद फ़रमाया : "कभी किसी से सुवाल न करना।" रावी फ़रमाते हैं : "बा'ज़ अवक़ात हज़रते सय्यिदुना सौबान رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْه ऊंट पर सुवार होते और कोड़ा गिर जाता तो उस के लिये भी किसी से सुवाल न करते बल्कि ख़ुद उतर कर उठा लेते।"

《17》 **ख़ूब** ख़ूब तिलावते क़ुरआन कीजिये मगर येह मस्अला ज़ेहन में

रखिये जैसा कि **बहारे शरीअ़त** जिल्द 1 सफ़हा 552 पर मस्अला 53 है : "मज्मअ़ में सब लोग बुलन्द आवाज़ से पढ़ें येह ह़राम है, अक्सर तीजों में सब बुलन्द आवाज़ से पढ़ते हैं येह ह़राम है, अगर चन्द शख़्स पढ़ने वाले हों तो हुक्म है कि आहिस्ता पढ़ें ।"

﴾18﴿ **दीगर** मो'तकिफ़ीन के हुक़ूके़ सोह़बत का लिह़ाज़ रखिये उन की ख़िदमत अपने लिये बाइसे सआ़दत समझिये, उन की ज़रूरिय्यात पूरी करने की सअ़्य कीजिये और ईसार का मुज़ाहरा करते रहिये । ईसार का सवाब बे शुमार है, ताजदारे रिसालत, माहे नुबुव्वत صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم का फ़रमाने बख़्शिश निशान है : "**जो शख़्स किसी चीज़ की ख़्वाहिश रखता हो, फिर उस ख़्वाहिश को रोक कर अपने ऊपर किसी और को तरजीह़ दे, तो अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ **उसे बख़्श देता है ।"** (ابنِ عساکر ج۳۱ ص۱٤۲)

﴾19﴿ **मदनी** इन्आ़मात पर अ़मल करते हुए रोज़ाना फ़िक्रे मदीना के ज़रीए़ रिसाला पुर कीजिये और इस की हमेशा के लिये आ़दत बना लीजिये ।

﴾20﴿ **मस्जिद** के फ़र्श, दरी या चटाई पर सोने से परहेज़ कीजिये कि पसीने की बदबू और सर के तेल का धब्बा होने नीज़ गन्दे ख़्वाब की सूरत में नापाक हो जाने का भी ख़त़रा है । लिहाज़ा अपनी चटाई या मोटी चादर बिछा लीजिये ।

﴾21﴿ **घर** हो या मस्जिद, जहां भी सोएं "पर्दे में पर्दा" कर लीजिये, पाजामे पर तहबन्द बांध लीजिये या एक चादर तहबन्द की त़रह़ लपेट लीजिये और लैट कर ऊपर भी एक चादर या लिह़ाफ़ ओढ़ लीजिये क्यूं कि नींद में बा'ज़ अवक़ात कपड़े पहने हुए भी مَعَاذَاللّٰه सख़्त बे पर्दगी हो रही होती है।

﴾22﴿ **हरगिज़** हरगिज़ दो इस्लामी भाई एक तक्ये पर या एक चादर में न सोएं।

﴾23﴿ **इसी** त़रह़ मह़ल्ले फ़ितना में किसी की रान या गोद में सर रख कर लैटने से भी परहेज़ कीजिये।

﴾24﴿ **जब** 29 **रमज़ानुल मुबारक** को **ईदुल फ़ित्र** के चांद की ख़बर सुनें या 30 रमज़ान शरीफ़ का सूरज डूब जाए तो ए'तिकाफ़ पूरा हो जाने के सबब मस्जिद से ऐसे मत दौड़ पड़िये जैसे क़ैद से रिहा हुए, बल्कि होना येह चाहिये कि **रमज़ानुल मुबारक** के रुख़्सत होने की ख़बर सुनते ही सदमे से दिल डूबने लगे कि आह ! मोह़तरम माह हम से जुदा हो गया, ख़ूब रो रो कर और न हो सके तो रोनी सूरत बना कर माहे रमज़ान को **अल वदाअ़** कीजिये। काश ! कैफ़िय्यत यूं हो कि

तुम घर को न खींचो नहीं जाता नहीं जाता
मैं छोड़ के फ़ैज़ाने मदीना नहीं जाता

﴾25﴿ **इख़्तितामे** ए'तिकाफ़ पर ख़ूब रो रो कर **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ से अपनी कोताहियों और मस्जिद की बे अदबियों से मुआफ़ी त़लब कीजिये। ख़ूब गिड़गिड़ा कर अपने और दुन्या भर के मो'तकिफ़ीन के ए'तिकाफ़ की क़बूलिय्यत और कुल उम्मत की मग़्फ़िरत की दुआ मांगिये।

﴾26﴿ **आपस** में एक दूसरे से ह़क़ तलफ़ियां मुआफ़ करवाइये।

﴾27﴿ **इमाम** साहि़ब, मुअज़्ज़िन साहि़ब और ख़ुद्दामे मस्जिद को भी हो सके तो कुछ न कुछ नज़राना पेश कर के उन का दिल ख़ुश कीजिये। इन्तिज़ामियए मस्जिद का भी शुक्रिय्या अदा कीजिये।

﴾28﴿ **ए'तिकाफ़** में रोज़मर्रा के मुक़ाबले में इज़ाफ़ी बिजली का इस्ति'माल होता है लिहाज़ा मश्वरा है कि हर मो'तकिफ़ बत़ौरे चन्दा कम अज़ कम 100 रुपै मस्जिद की इन्तिज़ामिया को पेश करे। (ज़ियादा मो'तकिफ़ीन हों तो रक़म इकठ्ठी कर के भी दे सकते हैं)

﴾29﴿ **शबे** ईदुल फ़ित्र हो सके तो इबादत में गुज़ारिये। वरना कम अज़ कम इशा और फ़ज्र की नमाज़ें बा जमाअ़त अदा कीजिये कि ब हुक्मे ह़दीस पूरी रात की इबादत का सवाब मिलेगा।

﴾30﴿ **कोशिश** कर के नफ़्ल ए'तिकाफ़ की निय्यत से चांदरात उसी मस्जिद में गुज़ारिये जहां सुन्नत ए'तिकाफ़ किया है। ह़ज़रते सय्यिदुना इब्राहीम नख़ई عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللّٰهِ الْقَوِی फ़रमाते हैं : "बुज़ुर्गाने दीन

رَحِمَهُمُ اللّٰهُ الْمُبِیْن मो'तकिफ़ के लिये इस बात को पसन्द फ़रमाते थे कि ईदुल फ़ित्र की रात मस्जिद ही में गुज़ारे ताकि वहीं से उस के दिन (या'नी ईद के मुबारक रोज़) की इब्तिदा हो।"[1] ह़ज़रते सय्यिदुना इमाम मालिक عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللّٰهِ الْخَالِق ने बुज़ुर्गाने दीन رَحِمَهُمُ اللّٰهُ الْمُبِیْن का येह मा'मूल बयान फ़रमाया है कि वोह ह़ज़रात **रमज़ानुल मुबारक** के आख़िरी अ़शरे का ए'तिकाफ़ करते और चांदरात अपने घरों पर नहीं लौटते थे जब तक कि लोगों के साथ ईद की नमाज़ अदा न कर लेते। **(تفسیردُرّمنثور ج۱ ص۴۸۸)**

आ़शिक़ाने रसूल की सोह़बत ने मुझे क्या से क्या बना दिया ! :

तब्लीग़े क़ुरआनो सुन्नत की आ़लमगीर ग़ैर सियासी तह़रीक, **दा'वते इस्लामी** की त़रफ़ से जहां इज्तिमाई ए'तिकाफ़ किया जाता है, वहां चांदरात को या रात मस्जिद में गुज़ार कर ईद के रोज़ सुन्नतों की तरबियत के मदनी क़ाफ़िलों में आ़शिक़ाने रसूल के साथ सफ़र की सआ़दत ह़ासिल कीजिये, اِنْ شَآءَاللّٰه عَزَّوَجَلَّ इस की बरकतें ख़ुद ही देख लेंगे। अगर मॉडर्न दोस्तों वग़ैरा के साथ गुनाहों भरे माह़ोल में ईद गुज़ारी तो हो सकता है कि ए'तिकाफ़ की कमाई ज़ाएअ़ हो जाए। आप की तरग़ीब के लिये ईद के मदनी क़ाफ़िले की एक मुश्कबार व ख़ुश गवार

مـــــــــــــــــــــــــــــــــــدینـــه

[1] : مصنّف ابن ابی شیبة ج۲ ص۵۰۴

मदनी बहार आप के गोश गुज़ार करता हूं। चुनान्चे एक इस्लामी भाई पहले एक आ़म से मॉडर्न और बे नमाज़ नौ जवान थे, ज़िन्दगी के शबो रोज़ ग़फ़्लतों और गुनाहों में बसर हो रहे थे। **माहे रमज़ानुल मुबारक** 1423 सि.हि. में एक इस्लामी भाई ने उन पर **इन्फ़िरादी कोशिश** करते हुए उन्ही के अ़लाक़े की **फ़ैज़ाने रज़ा मस्जिद** (लाइन्ज़ एरिया) में होने वाले **इज्तिमाई सुन्नत ए'तिकाफ़** में बैठने की रग़्बत दिलाई, उन्हों ने हामी भर ली और घर वालों से इजाज़त ले कर **रमज़ानुल मुबारक** के आख़िरी अ़शरे में मो'तकिफ़ हो गए। **ए'तिकाफ़** में दस दिन तक **आ़शिक़ाने रसूल** की सोहबतों की बरकतों से ख़ूब मालामाल हुए और उ़म्र भर के लिये पन्ज वक़्ता **नमाज़ी** बने रहने का अ़ज़्म बिल जज़्म कर लिया, दीगर गुनाहों के साथ साथ दाढ़ी मुंडाने से भी तौबा कर ली, हाथों हाथ इमामा शरीफ़ भी सजा लिया और सुन्नतों भरे मदनी लिबास की भी निय्यत कर ली। ईद के दूसरे दिन आ़शिक़ाने रसूल के साथ तीन रोज़ा **मदनी क़ाफ़िले** में सुन्नतों भरा सफ़र किया और इस मुबारक सफ़र की बरकत से वोह तब्लीग़े क़ुरआनो सुन्नत की आ़लमगीर ग़ैर सियासी तह़रीक **दा'वते इस्लामी** के हो कर रह गए। **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ करे कि मरते दम तक **दा'वते इस्लामी का मदनी माह़ोल** उन से न छूटे। अब वोह फ़ेशन

एबल मॉडर्न नौ जवान न रहे थे। ए'तिकाफ़ और हाथों हाथ **मदनी क़ाफ़िले** के सफ़र के दौरान **आ़शिक़ाने रसूल** के क़ुर्ब ने اَلْحَمْدُ لِلّٰه عَزَّوَجَلَّ उन्हें क्या से क्या बना दिया ! वोह **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ के करम से अपने अ़लाक़े में मदनी इन्आ़मात के ज़िम्मेदार की हैसिय्यत से सुन्नतों की ख़िदमत करने लगे।

फ़ज़्ले रब से गुनाहों की कालक धुले, मदनी माह़ोल में कर लो तुम ए'तिकाफ़
नेकियों का तुम्हें ख़ूब जज़्बा मिले, मदनी माह़ोल में कर लो तुम ए'तिकाफ़

(वसाइले बख़्शिश, स. 639)

صَلُّوا عَلَى الْحَبِيب ! صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلٰى مُحَمَّد

अपनी चीज़ें संभालने का त़रीक़ा : اَلْحَمْدُ لِلّٰه عَزَّوَجَلَّ तब्लीग़े क़ुरआनो सुन्नत की आ़लमगीर ग़ैर सियासी तह़रीक "दा'वते इस्लामी" से वाबस्ता हज़ारों इस्लामी भाई दुन्या की मुख़्तलिफ़ मसाजिद में पूरे **माहे रमज़ानुल मुबारक** का **इज्तिमाई ए'तिकाफ़** करते हैं और आख़िरी अ़शरे में मो'तकिफ़ीन का मज़ीद इज़ाफ़ा हो जाता है। इन सब की ख़िदमत में अ़र्ज़ है : शरई मस्अला येह है कि अगर दूसरे की कोई चीज़ ग़लत़ी से तब्दील हो कर आ जाए, चाहे अपनी चीज़ से मिलती जुलती हो तब भी उस का इस्ति'माल ना जाइज़ व गुनाह है। लिहाज़ा मो'तकिफ़ीन (और मद्रसों के मुक़ीम त़लबा बल्कि हर एक) को

चाहिये कि अपनी अपनी उन चीज़ों पर कोई अ़लामत लगा लें जिन का दूसरों की चीज़ों के साथ ख़ल्त़ मल्त़ (Mix) हो जाने का अन्देशा हो। रहनुमाई के लिये कुछ निशान आगे आ रहे हैं।

(चप्पल, चादर वग़ैरा पर नाम या किसी भी ज़बान का कोई हर्फ़ मसलन A,B वग़ैरा न लिखिये बल्कि हो सके तो चप्पल चादर पर से कम्पनी का नाम भी मिटा दीजिये, चिट लगी हो तो वोह भी जुदा कर लीजिये। ताकि पाउं तले आने पर बे अदबी न हो। हर ज़बान के हुरूफ़े तहज्जी (Alphabets) का अदब कीजिये। इस मस्अले की तफ़्सील **फ़ैज़ाने सुन्नत** के बाब **"फ़ैज़ाने बिस्मिल्लाह"** सफ़्हा 89 ता 123 पर मुलाहज़ा फ़रमाइये)

ए'तिकाफ़ में बीमार पड़ जाने के अस्बाब : اَلْحَمْدُ لِلّٰه सगे मदीना عُفِيَ عَنْهُ बरसहा बरस से **मो'तकिफ़ीन** की ख़िदमतों में ह़ाज़िरियों से मुशर्रफ़ है। **ए'तिकाफ़** के दौरान कई इस्लामी भाइयों को **बीमार** पड़ते देखा है। इस का एक बहुत बड़ा सबब "ग़िज़ाई बे एह़तियात़ियां" है। घर वाले और अह़बाब वग़ैरा उ़म्दा व लज़ीज़ खाने, ख़ुश्बूदार मीठी मीठी डिशें, **कबाब समोसे**, पिज़्ज़े पकोड़े, खट्टी चटनियां, खिचड़ा और चटपटे आलू छोले और सह़री में मलाई पराठे, खजला फेनी वग़ैरा इनायत फ़रमाते हैं और बा'ज़ मो'तकिफ़ीन मग़्लूबुल ह़िर्स हो कर, अन्जाम से बे ख़बर जो कुछ सामने आया उस का ख़ैर मक़्दम कर के अच्छी त़रह

चबाए बिग़ैर ही झटपट पेट में पहुंचाते चले जाते हैं। नतीजतन क़ब्ज़, गेस, पेट में दर्द, बद हज़्मी, दस्त, क़ै, जिस्म में सुस्ती, नज़्ला, बुख़ार, सर और बदन में दर्द वग़ैरा अमराज़ लिपट जाते हैं। बा'ज़ बेचारे बड़े जज़्बे के साथ ख़ूब इ़बादत का ज़ेहन ले कर **ए'तिकाफ़** के लिये घर से चले होते हैं मगर खा खा कर बीमार पड़ जाते हैं और बा'ज़ अवक़ात तो नौबत यहां तक पहुंचती है कि नमाज़ की जमाअ़त खड़ी हो जाती है मगर येह ग़रीब सर दर्द व बुख़ार के मारे मस्जिद में लैटे कराह रहे होते हैं।

ना समझ बीमार को अमृत भी ज़हर आमेज़ है
सच येही है सो दवा की इक दवा परहेज़ है

खाने की एह़तियात़ का फ़ाएदा : اَلْحَمْدُ لِلّٰه عَزَّوَجَلَّ तब्लीग़े क़ुरआनो सुन्नत की आ़लमगीर ग़ैर सियासी तह़रीक, **दा'वते इस्लामी** के **आ़लमी** मदनी मर्कज़ **फ़ैज़ाने मदीना** में **रमज़ानुल मुबारक** के आख़िरी अ़शरे में हज़ारों आ़शिक़ाने रसूल **माहे रमज़ानुल मुबारक** में मो'तकिफ़ होते हैं। आख़िरी अ़शरे में मज़ीद इज़ाफ़ा हो जाता है। उन को पेश किये जाने वाले खाने में बनासपती घी का इस्ति'माल बन्द करवाने, तेल और मसालह़ा जात में भी आधों आध कमी लाने और कबाब समोसों और पकोड़ों पर पाबन्दी डलवाने की दरख़्वास्तें करते रहने से कुछ न कुछ अ़मल हुवा और इस त़रह़ दौराने **ए'तिकाफ़** मरीज़ों की शर्ह़

में अच्छी ख़ासी कमी देखी गई। काश ! हर ए'तिकाफ़ वाली मस्जिद बल्कि मुसल्मानों के हर घर में मज़्कूरा एह़तियातें अपना ली जाएं।

मुझे मुसल्मानों की सिह़्ह़त अ़ज़ीज़ है : اَلْحَمْدُ لِلّٰه عَزَّوَجَلَّ मैं मुसल्मानों की रूह़ानी इस्लाह़ के साथ साथ जिस्मानी सिह़्ह़तो फ़लाह़ का भी आरज़ू मन्द हूं। काश ! काश ! काश ! मेरी दरख़्वास्तों के मुत़ाबिक़ ख़्वाहिश से कम खा कर और बे वक़्त मुख़्तलिफ़ चीज़ें खाने से ख़ुद को बचा कर **मो'तकिफ़ीन** सिह़्ह़तो आ़फ़िय्यत के साथ इबादतो तरबियत में ह़िस्सा ले कर **इज्तिमाई ए'तिकाफ़** के इख़्तिताम पर चांदरात को हाथों हाथ मदनी क़ाफ़िले में आ़शिक़ाने रसूल के साथ सुन्नतों भरा सफ़र करने के क़ाबिल रहें। अगर मेरी अ़र्ज़ कर्दा गिज़ाई एह़तियातों पर उ़म्र भर अ़मल पैरा रहेंगे तो اِنْ شَآءَاللّٰه عَزَّوَجَلَّ आप की ज़िन्दगी ख़ुश गवार रहेगी। और डोक्टरों और दवाओं के अख़राजात से भी नजात मिलेगी। (बराहे करम ! फ़ैज़ाने सुन्नत के बाब **आदाबे त़आ़म** सफ़ह़ा 440 ता 451 पर खाने का जद्वल और तिब्बी मश्वरों से भरपूर मक्तूबे अ़त्तार पढ़ लीजिये) आप की तन्दुरुस्ती में मुझे यूं भी दिलचस्पी है कि इस त़रह़ اِنْ شَآءَاللّٰه عَزَّوَجَلَّ **इबादतों** का ज़ौक़ भी बढ़ेगा और सुन्नतों की तरबियत के **मदनी क़ाफ़िलों** में सफ़र का शौक़ भी बढ़ेगा। आप सिह़्ह़त मन्द होंगे तो नमाज़ों की अदाएगी, सुन्नतों पर अ़मल नीज़

वालिदैन और बाल बच्चों की ख़िदमत के लिये भागदौड़ कर सकेंगे।

ज़ालिमों के लिये दराज़िये उ़म्र की दुआ़ करना कैसा ? :

अपने मुसल्मान भाइयों पर ज़ुल्मो सितम की आंधियां चलाने वालों और गुनाहों का बाज़ार गर्म करने वालों को **अल्लाहु रब्बुल इ़ज़्ज़त** عَزَّوَجَلَّ हिदायत इनायत फ़रमाए। ऐसों की सिह़्ह़त भी अक्सर अवक़ात गुनाहों में ज़ियादत का सबब बनती है। ह़ज़रते सय्यिदुना सुफ़्यान सौरी عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللّٰهِ الْقَوِى फ़रमाते हैं : **"जो किसी ज़ालिम के लिये दराज़िये उ़म्र की दुआ़ करता है, गोया इस बात को पसन्द करता है कि अल्लाह तआ़ला की** (मज़ीद) **ना फ़रमानी हो।"** (حِلْيَةُ الْاولياء ج ٧ ص ٤٨ رقم ٩٥٤٨) हां ज़ालिमों के लिये ज़ुल्म से ताइब हो कर सिह़्ह़तो आ़फ़िय्यत के साथ सुन्नतों भरी त़वील उ़म्र पाने की दुआ़ की जा सकती है। खाने की एह़तियात़ों की निराली मा'लूमात के लिये फ़ैज़ाने सुन्नत का बाब **पेट का क़ुफ़्ले मदीना** ज़रूर पढ़ लीजिये।

मुसल्मानों की भलाई चाहना कारे सवाब है : ह़ज़रते सय्यिदुना जरीर बिन **अ़ब्दुल्लाह** رَضِىَ اللّٰهُ تَعَالٰى عَنْهُ फ़रमाते हैं : "मैं ने हुज़ूर ताजदारे रिसालत صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم से नमाज़ पढ़ने, ज़कात देने और हर मुसल्मान की ख़ैर ख़्वाही करने पर बैअ़त की।" (بُخاری ج ١ ص ٣٥ حديث ٥٧)

आ'ला हज़रत رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰى عَلَيْه फ़रमाते हैं : "हर फ़र्दे इस्लाम की ख़ैर ख़्वाही (या'नी भलाई चाहना) हर मुसल्मान पर **फ़र्ज़** है।" (फ़तावा रज़विय्या, जि. 14, स. 415) اَلْحَمْدُ لِلّٰه عَزَّوَجَلَّ ख़ुद को मुसल्मानों के ख़ैर ख़्वाहों में खपाने और सवाब कमाने के मुक़द्दस जज़्बे के तह्त दुआ के साथ साथ सिह्हत मन्द रहने के लिये चन्द **मदनी फूल** नज़्रे ह़ाज़िर किये हैं। अगर मह्ज़ दुन्या की रंगीनियों से लुत़्फ़ अन्दोज़ होने के लिये तन्दुरुस्त रहने की आरज़ू है तो बेशक पढ़ना यहीं मौक़ूफ़ कर दीजिये और अगर उ़म्दा सिह्हत के ज़रीए इ़बादत और सुन्नतों की ख़िदमत पर क़ुव्वत ह़ासिल करने का ज़ेह्न है तो सवाब कमाने की ग़रज़ से अच्छी अच्छी निय्यतें करते हुए दुरूद शरीफ़ पढ़ कर आगे बढ़िये और शौक़ से पढ़िये :

صَلُّوْا عَلَى الْحَبِيْب! صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلٰى مُحَمَّد

अल्लाहु रब्बुल इ़ज़्ज़त عَزَّوَجَلَّ मेरी, आप की, जुम्ला अहले ख़ानदान और सारी उम्मत की मग़फ़िरत फ़रमाए। हमें सिह्हतो आ़फ़िय्यत के साथ और दा'वते इस्लामी के **मदनी माह़ोल** में रहते हुए इस्लाम की ख़िदमत पर इस्तिक़ामत इनायत फ़रमाए। **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ हमारी जिस्मानी बीमारियां दूर कर के हमें **बीमारे मदीना** बनाए।

اٰمِين بِجَاهِ النَّبِيِّ الْاَمين صَلَّى اللهُ تعالٰی عليه واٰلهٖ وسلّم

कबाब समोसे खाने वाले मुतवज्जेह हों : बाज़ारों और दा'वतों के चटपटे कबाब समोसे खाने वाले तवज्जोह फ़रमाएं ! **कबाब समोसे** बेचने वाले उ़मूमन **क़ीमा** धोते नहीं हैं। उन के बक़ौल क़ीमा धो कर डालें तो कबाब समोसे का ज़ाएक़ा मुतअस्सिर होता है ! बाज़ारी क़ीमे में बा'ज़ अवक़ात क्या क्या होता है येह भी सुन लीजिये ! गाय की **ओझड़ी** का छिलका उतार कर उस की "बट" में तिल्ली बल्कि कहा जाता है कभी तो مَعَاذَ اللّٰه عَزَّوَجَلَّ **जमा हुवा ख़ून** डाल कर मशीन में पीसते हैं, इस त़रह़ सफ़ेद बट के क़ीमे का रंग गोश्त की मानिन्द **गुलाबी** हो जाता और वोह धोके से गोश्त के क़ीमे में खपा दिया जाता है। बसा अवक़ात **कबाब समोसे** बेचने वाले ह़स्बे ज़रूरत अदरक लह्सन वग़ैरा भी उसी क़ीमे के साथ पिसवा लेते हैं। अब इस क़ीमे के धोने का सुवाल ही पैदा नहीं होता, उसी क़ीमे में मिर्च मसाला डाल कर भून कर उस के **कबाब समोसे** बना कर फ़रोख़्त करते हैं। होटलों में भी इसी त़रह़ के क़ीमे के सालन का अन्देशा रहता है। गन्दे **कबाब समोसे** वालों से **पकोड़े** वग़ैरा भी न लिये जाएं कि कड़ाही एक और तेल भी वोही गन्दे क़ीमे वाला। ख़ैर मैं येह नहीं कहता कि مَعَاذَ اللّٰه हर गोश्त बेचने वाला इस त़रह़ करता है या ख़ुदा न ख़्वास्ता हर होटल वाला और हर **कबाब समोसे** वाला नापाक क़ीमा ही इस्ति'माल करता है। यक़ीनन ख़ालिस गोश्त का क़ीमा भी मिलता है और

अगर धोका दिये बिग़ैर "बट" का क़ीमा कह कर ही फ़रोख़्त किया तब भी गुनाह नहीं। अ़र्ज़ करने का मन्शा येह है कि क़ीमा या **कबाब समोसे** क़ाबिले इत़्मीनान मुसल्मान से लेने चाहिएं और जो मुसल्मान गुनाहों भरी ह़रकतें करते हैं उन को तौबा करनी चाहिये।

"या रब ! लज़्ज़ाते नफ़्सानी से बचा" के उन्नीस हुरूफ़ की निस्बत से तली हुई चीज़ों से होने वाली 19 बीमारियों की निशान देही

﴾1﴿ **बदन** का वज़्न बढ़ता है ﴾2﴿ आंतों की दीवारों को नुक़्सान पहुंचता है ﴾3﴿ इजाबत (पेट की सफ़ाई) में गड़बड़ पैदा होती है ﴾4﴿ पेट का दर्द ﴾5﴿ मतली ﴾6﴿ क़ै या ﴾7﴿ इस्हाल (या'नी पानी जैसे दस्त) हो सकते हैं ﴾8﴿ तली हुई चीज़ों का इस्ति'माल ख़ून में नुक़्सान देह कोलेस्ट्रोल या'नी LDL बनाता है ﴾9﴿ मुफ़ीद कोलेस्ट्रोल या'नी HDL में कमी आती है ﴾10﴿ ख़ून में लोथड़े या'नी जमी हुई टुकड़ियां बनती हैं ﴾11﴿ हाज़िमा ख़राब होता है ﴾12﴿ गेस होती है ﴾13﴿ ज़ियादा गर्म कर्दा तेल में एक ज़हरीला माद्दा "एक्रोलीन" (Acrolein) पैदा हो जाता है जो कि आंतों में ख़राश पैदा करता है बल्कि مَعَاذَ اللّٰہ عَزَّوَجَلَّ ﴾14﴿ केन्सर का सबब भी बन सकता है ﴾15﴿ तेल को ज़ियादा देर तक गर्म करने और इस में चीज़ें तलने के अ़मल से उस में

एक और ख़त्रनाक ज़हरीला माद्दा "फ़्री रेडीकल्ज़" पैदा हो जाता है जो कि दिल के अमराज़ 《16》 केन्सर 《17》 जोड़ों में शोज़िश 《18》 दिमाग़ के अमराज़ और 《19》 जल्द बुढ़ापा लाने का सबब बनता है।

"फ़्री रेडीकल्ज़" नामी ख़त्रनाक ज़हरीला माद्दा पैदा करने वाले मज़ीद और भी अ़वामिल हैं मसलन ۞ तम्बाकू नोशी ۞ हवा की आलूदगी (जैसा कि आज कल घरों में हर वक़्त कमरा बन्द रखा जाता है न धूप आने दी जाती है न ताज़ा हवा) ۞ कार का धूआं ۞ एक्सरे (Xray) ۞ माईक्रो वेव ओवन ۞ T.V. और ۞ कम्प्यूटर की स्क्रीन की शुआ़एं ۞ फ़ज़ाई सफ़र की ताबकारी (या'नी हवाई जहाज़ का शुआ़एं फेंकने का अ़मल)

ख़त्रनाक ज़ह्र का तोड़ : अल्लाह عَزَّوَجَلَّ ने इस ख़त्रनाक ज़ह्र या'नी "फ़्री रेडीकल्ज़" का तोड़ भी पैदा फ़रमाया है चुनान्चे जिन सब्ज़ियों और फलों का रंग सब्ज़, ज़र्द या नारन्जी या'नी सुर्ख़ी माइल ज़र्द होता है येह इस ख़त्रनाक ज़ह्र को तबाह कर देते हैं इस तरह के फलों और सब्ज़ियों का रंग जिस क़दर गहरा होगा उन में विटामिन्ज़ और मा'दनी अज्ज़ा की मिक्दार भी ज़ियादा होती है वोह इस ज़ह्र का ज़ियादा कुव्वत के साथ तोड़ करते हैं।

صَلُّوا عَلَى الْحَبِيب! صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلٰى مُحَمَّد

फ़रमाने मुस्तफ़ा صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم : उस शख़्स की नाक ख़ाक आलूद हो जिस के पास मेरा ज़िक्र हो और वोह मुझ पर दुरूदे पाक न पढ़े। (ترمذی)

तली हुई चीज़ों का नुक़्सान कम करने का त़रीक़ा : दो बातों पर अ़मल करने से तली हुई चीज़ों के नुक़्सानात में कमी आ सकती है : (1) कबाब, समोसे, पकोड़े, अन्डा आमलेट, मछली वग़ैरा तलने के लिये जो कड़ाही या फ़्राई पेन इस्ति'माल किया जाए वोह नॉन स्टिक (Nonstick) हो (2) तलने के बा'द एक एक चीज़ को बे ख़ुश्बू टिशू पेपर में अच्छी त़रह़ लपेट लिया जाए ताकि कुछ न कुछ तेल जज़्ब हो जाए।

बचा हुवा तेल दोबारा इस्ति'माल करने का त़रीक़ा : **माहिरीन** का कहना है कि : एक बार तलने के लिये इस्ति'माल करने के बा'द तेल को दोबारा गर्म न किया जाए। अगर दोबारा इस्ति'माल करना हो तो इस का त़रीक़ा येह है कि इस को छान कर रेफ़्रीजरेटर में रख दिया जाए, बिग़ैर छाने फ़्रिज में न रखा जाए।

फ़न्ने ति़ब यक़ीनी नहीं : तली हुई चीज़ों के नुक़्सानात के तअ़ल्लुक़ से मैं ने जो कुछ अ़र्ज़ किया वोह मेरी अपनी नहीं त़बीबों की तह़क़ीक़ है। येह उसूल याद रखने के क़ाबिल है कि फ़न्ने ति़ब सारे का सारा ज़न्नी है यक़ीनी नहीं।

फ़ेशन परस्त "मुबल्लिग़े सुन्नत" बन गए : प्यारे प्यारे इस्लामी भाइयो ! नुक़्सान देह चीज़ें खाने पीने की ह़िर्स मिटाने, फ़रंगी फ़ेशन से जान छुड़ाने, सुन्नतें अपनाने और अपना सीना इ़श्क़े रसूल का मदीना बनाने के लिये

तब्लीग़े कुरआनो सुन्नत की आ़लमगीर ग़ैर सियासी तह़रीक, **दा'वते इस्लामी** के सदा बहार मदनी माह़ोल से हर दम वाबस्ता रहिये। आइये ! आप की तरग़ीब के लिये एक खुश गवार व मुश्कबार **मदनी बहार** आप के गोश गुज़ार करता हूं चुनान्चे **इन्दोर** शह्र (M.P. अल हिन्द) के एक मॉडर्न नौ जवान ने आख़िरी अ़शरए **रमज़ानुल मुबारक** 1426 सि.हि. में आ़शिक़ाने रसूल के साथ ए'तिकाफ़ करने की सआ़दत ह़ासिल की। आ़शिक़ाने रसूल की सोह़बत की बरकत से क़ल्ब में **मदनी इन्क़िलाब** बरपा हो गया, चेहरे पर **दाढ़ी** की बहारें मुस्कुराने लगीं और सब्ज़ इमामा शरीफ़ से **सर सब्ज़** हो गया, हाथों हाथ 12 दिन के लिये सुन्नतों की तरबियत के **मदनी क़ाफ़िले** के मुसाफ़िर बन गए, ख़ूब मदनी रंग चढ़ा। اَلْحَمْدُ لِلّٰه عَزَّوَجَلَّ मुबल्लिग़े दा'वते इस्लामी बन गए और اَلْحَمْدُ لِلّٰه عَزَّوَجَلَّ ता दमे तह़रीर अपने शह्र के अन्दर **दा'वते इस्लामी** की एक ह़ल्क़ा मुशावरत के **निगरान** की ह़ैसिय्यत से मदनी कामों की धूमें मचा रहे हैं।

गर्चे दिल में है फ़ेशन की उल्फ़त भरी, मदनी माह़ोल में कर लो तुम ए'तिकाफ़
उ़म्र आयिन्दा गुज़रेगी सुन्नत भरी, मदनी माह़ोल में कर लो तुम ए'तिकाफ़

(वसाइले बख़्शिश, स. 639)

صَلُّوا عَلَی الْحَبِیْب ! صَلَّی اللّٰهُ تَعَالٰی عَلٰی مُحَمَّد

इस्लामी बहनों का ए'तिकाफ़ : उम्मुल मुअमिनीन हज़रते सय्यिदतुना आइशा सिद्दीक़ा رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْهَا रिवायत फ़रमाती हैं : "नबियों के सुल्तान, रहमते आलमिय्यान صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰی عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم **रमज़ानुल मुबारक** के आख़िरी दस दिनों का **ए'तिकाफ़** फ़रमाया करते थे, यहां तक कि **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ ने वफ़ाते (ज़ाहिरी) अ़ता फ़रमाई। फिर आप صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰی عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم की अज़्वाजे मुतह्हरात رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْهُنَّ ए'तिकाफ़ करती थीं।" (بُخاری ج ١ ص ٦٦٤ حدیث ٢٠٢٦)

इस्लामी बहनें भी ए'तिकाफ़ करें : इस्लामी बहनों को भी ए'तिकाफ़ की सआदत हासिल करनी चाहिये। इस्लामी बहनों को चूंकि मस्जिदे बैत (तफ़्सील आगे आती है) जो कि निहायत मुख़्तसर जगह होती है में **ए'तिकाफ़** करना होता है इस में एक तरह से क़ब्र की भी याद है, कि बहू बेटियों और मुन्ने मुन्नियों की रौनक़ों में दस दिन कोने में बैठना गिरां गुज़र रहा है तो नाराज़िये ख़ुदा व मुस्तफ़ा عَزَّوَجَلَّ و صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰی عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم की सूरत में तन्हा क़ब्र में **हज़ारों साल** किस तरह गुज़ारा होगा ! क्या अ़जब कि **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ इस ए'तिकाफ़ की बरकत और अपनी रहमत से आप की क़ब्र ता हद्दे नज़र वसीअ़ कर के नूरे मुस्तफ़ा صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰی عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم से जगमग जगमग फ़रमा दे। हर इस्लामी बहन को ज़िन्दगी में कम अज़ कम एक बार तो येह सआदत हासिल करना ही चाहिये।

"फ़ैज़ाने ख़ातूने जन्नत" के तेरह हुरूफ़ की निस्बत से इस्लामी बहनों के लिये 13 मदनी फूल

(1) **इस्लामी** बहनें **मस्जिदे बैत** में ए'तिकाफ़ करें। मस्जिदे बैत उस जगह को कहते हैं जो औ़रत घर में अपनी नमाज़ के लिये मख़्सूस कर लेती है। इस्लामी बहनों के लिये येह मुस्तह़ब भी है कि घर में नमाज़ के लिये जगह मुक़र्रर करें और उस जगह को पाको साफ़ रखें और बेहतर येह है कि उस जगह को चबूतरे वग़ैरा की त़रह बुलन्द कर लें। बल्कि इस्लामी भाइयों को भी चाहिये कि नवाफ़िल के लिये घर में कोई जगह मुक़र्रर कर लें कि नफ़्ल नमाज़ घर में पढ़ना अफ़्ज़ल है।

(دُرِّمُخْتَار،رَدُّالْمُحْتَار ج٣ص٤٩٤, बहारे शरीअ़त, जि. 1, स. 1021 मुलख़्ख़सन)

(2) **अगर** इस्लामी बहन ने नमाज़ के लिये कोई जगह मुक़र्रर नहीं कर रखी तो घर में **ए'तिकाफ़** नहीं कर सकती अलबत्ता अगर उस वक़्त या'नी जब कि **ए'तिकाफ़** का इरादा किया किसी जगह को नमाज़ के लिये ख़ास कर लिया तो उस जगह **ए'तिकाफ़** कर सकती है। (دُرِّمُخْتَار، رَدُّالْمُحْتَار ج٣ص٤٩٤)

(3) **किसी** और के घर जा कर इस्लामी बहन ए'तिकाफ़ नहीं कर सकती।

《4》 **शोहर** की इजाज़त के बिग़ैर बीवी के लिये ए'तिकाफ़ करना जाइज़ नहीं। (رَدّ الْمُحْتَار ج۳ ص۴۹٤)

《5》 **अगर** बीवी ने शोहर की इजाज़त से ए'तिकाफ़ शुरूअ़ कर दिया, बा'द में शोहर मन्अ़ करना चाहता है तो अब मन्अ़ नहीं कर सकता और अगर मन्अ़ करेगा तो बीवी के ज़िम्मे उस की ता'मील वाजिब नहीं। (عالمگیری ج۱ ص۲۱۱)

《6》 **इस्लामी** बहनों के ए'तिकाफ़ के लिये येह भी ज़रूरी है कि वोह **हैज़ व निफ़ास** से पाक हों कि इन दिनों में नमाज़, रोज़ा और तिलावते कुरआन ह़राम है। (आ़म्मए कुतुब) (औ़रत को बच्चे की पैदाइश के बा'द जो ख़ून आता रहता है उस को **निफ़ास** कहते हैं, इस की ज़ियादा से ज़ियादा मुद्दत चालीस दिन और चालीस रात है, चालीस दिन रात के बा'द अगर ख़ून बन्द न हो तो बीमारी है, ग़ुस्ल कर के नमाज़ रोज़ा शुरूअ़ कर दें। इस्लामी बहनों में येह आ़म ग़लत़ फ़हमी है कि निफ़ास की मुद्दत मुकम्मल चालीस दिन है ह़ालां कि ऐसा नहीं। हुक्मे शरीअ़त येह है कि अगर ख़ून एक दिन में बन्द हो गया, बल्कि बच्चा होने के बा'द फ़ौरन ही बन्द हो गया तो निफ़ास ख़त्म हुवा, ग़ुस्ल कर के नमाज़ रोज़ा शुरूअ़ कर दें। **हैज़** की मुद्दत कम अज़ कम तीन दिन रात और ज़ियादा से ज़ियादा दस दिन रात है। तीन दिन और तीन रात के बा'द जब भी ख़ून बन्द हुवा फ़ौरन ग़ुस्ल कर

लें और नमाज़ वग़ैरा शुरूअ़ कर दें। (यहां शोहर वालियों के लिये कुछ तफ़्सील है इसे बहारे शरीअ़त जिल्द अव्वल के हिस्सा 2 में लाज़िमी मुलाहज़ा फ़रमाएं) और अगर दस दिन रात के बा'द ख़ून जारी रहा तो **इस्तिहाज़ा** या'नी बीमारी है, दस दिन रात पूरे होते ही ग़ुस्ल कर के नमाज़ रोज़ा शुरूअ़ कर दें)

7 **अगर** माहवारी की तारीख़ें रमज़ान शरीफ़ के आख़िरी अ़शरे में आने वाली हों तो ए'तिकाफ़ शुरूअ़ ही न करें।

8 **अगर** औ़रत को हैज़ आ जाए तो उस का ए'तिकाफ़ टूट जाएगा। (بدائع الصنائع ج۲ ص۲۸۷) इस सूरत में जिस दिन उस का ए'तिकाफ़ टूटा है सिर्फ़ उस एक दिन की क़ज़ा उस के ज़िम्मे वाजिब होगी। (رَدُّ الْمُحْتَار ج۳ ص۵۰۰) माहवारी से पाक होने के बा'द किसी दिन ब निय्यते क़ज़ा ए'तिकाफ़ कर ले। अगर रमज़ान शरीफ़ के दिन बाक़ी हों तो उन में भी क़ज़ा कर सकती है, इस सूरत में **रमज़ानुल मुबारक** का रोज़ा ही काफ़ी हो जाएगा। अगर उन दिनों क़ज़ा करना नहीं चाहती या पाक होने तक **रमज़ानुल मुबारक** ख़त्म हो जाए तो किसी और दिन क़ज़ा कर ले। मगर ईदुल फ़ित्र और ज़ुल हिज्जतिल ह़राम की दसवीं ता तेरहवीं के इ़लावा, कि इन पांच दिनों के रोज़े मक्रूहे तह़रीमी हैं। (دُرِّمُخْتَارج۳ص۳۹۱)

इस्लामी बहन के लिये ए'तिकाफ़ क़ज़ा करने का त़रीक़ा

﴾9﴿ **इस** का त़रीक़ा येह है कि ग़ुरूबे आफ़्ताब के वक़्त (बल्कि एह़तियात इस में है कि चन्द मिनट क़ब्ल) ब निय्यते क़ज़ा ए'तिकाफ़ मस्जिदे बैत में आ जाए और अब जो दिन आएगा उस के ग़ुरूबे आफ़्ताब तक मो'तकिफ़ रहे। इस में रोज़ा शर्त़ है।

﴾10﴿ **शरई** ज़रूरिय्यात के बिग़ैर जाए ए'तिकाफ़ से निकलना जाइज़ नहीं, वहां से उठ कर घर के किसी और ह़िस्से में भी नहीं जा सकती, अगर जाएगी तो ए'तिकाफ़ टूट जाएगा।

﴾11﴿ **इस्लामी** बहनों के लिये भी ए'तिकाफ़ की जगह से हटने के वोही अह़काम हैं जो इस्लामी भाइयों के हैं। या'नी जिन ज़रूरिय्यात की वज्ह से इस्लामी भाइयों को मस्जिद से निकलना जाइज़ है, उन्हीं के लिये इस्लामी बहनों को भी **ए'तिकाफ़** की जगह से हटना जाइज़ और जिन कामों के लिये मर्दों को मस्जिद से निकलना जाइज़ नहीं, उन के लिये **इस्लामी बहनों** को भी अपनी जगह से हटना जाइज़ नहीं।

﴾12﴿ **इस्लामी** बहनें ए'तिकाफ़ के दौरान अपनी जगह बैठे बैठे सीने पिरोने का काम कर सकती हैं, घर के कामों के लिये दूसरों को

हिदायात भी दे सकती हैं मगर ख़ुद उठ कर न जाएं।

﴾13﴿ **बेहतर** येह है कि ए'तिकाफ़ के दौरान सारी तवज्जोह तिलावत, ज़िक्रो दुरूद, तस्बीहात, दीनी मुत़ालआ़ सुन्नतों भरे बयानात की C.Ds केसिटें सुनने वग़ैरा इबादात की त़रफ़ रहे।

या रब्बे मुस्त़फ़ा عَزَّوَجَلَّ ! हर इस्लामी भाई और हर इस्लामी बहन का **ए'तिकाफ़** क़बूल फ़रमा और इस की बरकतों से मालामाल कर। **या अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ ! हमें भी **ए'तिकाफ़** करने की सआ़दत नसीब फ़रमा। اٰمِين بِجاهِ النَّبِيِّ الْاَمين صَلَّى اللہ تعالیٰ علیہ واٰلہٖ وسلَّم

صَلُّوا عَلَى الْحَبِيب ! صَلَّى اللّٰهُ تَعالٰى عَلٰى مُحَمَّد

फ़रमाने मुस्तफ़ा صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم : जिस के पास मेरा ज़िक्र हो और वोह मुझ पर दुरूद शरीफ़ न पढ़े तो वोह लोगों में से कन्जूस तरीन शख़्स है। (مسند احمد)

"जन्नते नईम" के सात हुरूफ़ की निस्बत से मु-तफ़र्रिक़ 7 फ़रामीने मुस्तफ़ा صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم

﴾1﴿ "जो मस्जिद से महब्बत रखता है, **अल्लाह तआला** उस से महब्बत फ़रमाता है।"[1] **हज़रते** अल्लामा अब्दुर्रऊफ़ मुनावी عَلَیْہِ رَحمَۃُ اللّٰہِ القَوِی इस की शर्ह में लिखते हैं : मस्जिद से महब्बत इस तरह है कि रिज़ाए इलाही के लिये इस में ए'तिकाफ़, नमाज़, **ज़िक्रुल्लाह** और शरई मसाइल सीखने सिखाने के लिये बैठे रहने की आदत बनाना है[2] ﴾2﴿ "बेशक मस्जिदें ज़मीन में **अल्लाह तआला** के घर हैं और **अल्लाह तआला** पर हक़ है कि वोह (अपने घर की) ज़ियारत करने वाले का इक्राम (इज़्ज़त) करे।"[3] **हज़रते** अल्लामा अब्दुर्रऊफ़ मुनावी عَلَیْہِ رَحمَۃُ اللّٰہِ القَوِی इस की शर्ह में फ़रमाते हैं : या'नी मस्जिदें वोह जगहें हैं, जिन्हें **अल्लाह तआला** ने अपनी रह़मतें उतारने के लिये चुना है[4] ﴾3﴿ "मस्जिद में हंसना क़ब्र में अंधेरा (लाता) है"[5] ﴾4﴿ जो कोई जान बूझ कर एक नमाज़ भी तर्क कर देता है, उस का नाम जहन्नम के उस दरवाज़े पर लिख दिया जाएगा जिस से वोह जहन्नम में दाख़िल होगा[6] ﴾5﴿ मिस्वाक मुंह की पाकीज़गी और **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ की ख़ुशनूदी का सबब है[7] ﴾6﴿ चुग़ल ख़ोर जन्नत में दाख़िल नहीं होगा[8] ﴾7﴿ गुनाह से तौबा करने वाला ऐसा है जैसा कि उस ने गुनाह किया ही नहीं।[9]

مــدینــہ

۱: مُعْجَمْ اَوْسَط ج٤ ص٤٠٠ حديث٦٣٨٣۔ ۲: فيض القدير ج٦ ص١١٢ تحت الحديث٨٥٢٤۔ ۳: مُعْجَم كبِير ج١٠ ص١٦١ حديث١٠٣٢٤۔ ٤: فيض القدير ج٢ ص٥٦٤۔ ۵: الفردوس بما ثور الخطاب ج٢ ص٤٣١ حديث ٣٨٩١۔ ٦: حلية الاولياء ج٧ ص٢٩٩ حديث١٠٥٩٠۔ ۷: ابن ماجه ج١ ص١٨٦ حديث٢٨٩۔ ۸: بخارى ج٤ ص١١٥ حديث ٦٠٥٦۔ ۹: ابن ماجه ج٤ ص٤٩١ حديث ٤٢٥٠۔

निशानियों के नमूने

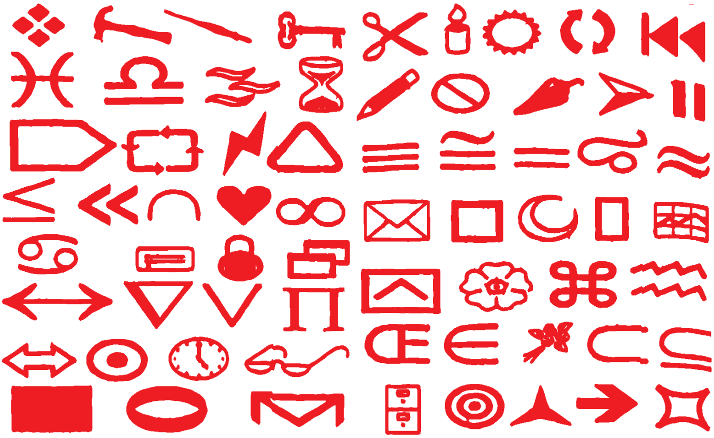

चार झूटे दा'वेदार

इर्शादे हातिमे असम رَحْمَۃُاللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہ : 《1》 **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ की महब्बत का दा'वेदार मगर **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ के हराम कर्दा कामों से न बचने वाला 《2》 महब्बते रसूल का दा'वेदार मगर ग़रीबों को अहम्मिय्यत न देने वाला 《3》 तालिबे जन्नत होने का दा'वेदार मगर राहे खुदा عَزَّوَجَلَّ में ख़र्च करने से कतराने वाला 《4》 जहन्नम से ख़ौफ़ रखने का दा'वेदार मगर गुनाहों से परहेज़ न करने वाला। (ماخوذ از المنبهات ص ٤٠)

छ तरह के अफ़राद पर भलाई का दरवाज़ा बन्द

इर्शादे यहया बिन मुआज़ رَحْمَۃُاللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہ : 《1》 अपने इल्म पर अमल न करने वाला 《2》 ने'मतों पर शुक्र न करने वाले 《3》 नेक बन्दों की सोहबत में बैठने के बा वुजूद उन के नक़्शे क़दम पर न चलने वाला 《4》 मरने वालों की तज्हीज़ो तक्फ़ीन में हिस्सा लेने के बा वुजूद इब्रत न पकड़ने वाला 《5》 दौलत होने के बा वुजूद (रिज़ाए इलाही के कामों में ख़र्च कर के) आख़िरत के लिये तोशा जम्अ न करने वाले 《6》 गुनाहों की कसरत के बा वुजूद तौबा न करने वाले।

फ़ैज़ाने ईदुल फ़ित्र

FRONT 1258 A

ईद मुबारक

बा'दे रमज़ान ईद होती है
रब की रह़मत मज़ीद होती है

जिस को आक़ा की दीद होती है
उस पे क़ुरबान "ईद" होती है

ईद तुझ को मुबारक ऐ साइम[1] !
रोज़ादारों की ईद होती है

रोज़ाख़ोरो ! ख़ुदा की नाराज़ी
सुन लो ! तुम पर शदीद होती है

तेरी शैत़ान ! माहे रमज़ां में
कैसी मिट्टी पलीद होती है !

रोज़ादारों के वासित़े वल्लाह
मग़्फ़िरत की नवीद[2] होती है

ईद के दिन उ़मर येह रो रो कर
बोले : "नेकों की ईद होती है"

जो कोई रब को करते हैं नाराज़
उन से रह़मत बई़द[3] होती है

फ़िल्म बीनों[4] के ह़क़ में सुन लो येह
ईद, यौमे वई़द[5] होती है

बे नमाज़ों की रोज़ाख़ोरों की
कौन कहता है ईद होती है !

जिस को आक़ा मदीने बुलवाएं
उस मुसल्मां की ईद होती है

मुझ को "ईदी" में दो बक़ीअ़ आक़ा
जाने कब मेरी ईद होती है !

जो बिछड़ जाए उन की गलियों से
क्या भला उस की ईद होती है !

ईद अ़त्त़ार उस की है जिस को
ख़्वाब में उन की दीद होती है

---

1 : रोज़ादार 2 : ख़ुश ख़बरी 3 : दूर 4 : फ़िल्म देखने वाले
5 : सज़ा देने की धमकी, सज़ा देने का वा'दा

اَلْحَمْدُ لِلّٰهِ رَبِّ الْعٰلَمِيْنَ وَالصَّلٰوةُ وَالسَّلَامُ عَلٰى سَيِّدِ الْمُرْسَلِيْنَ
اَمَّا بَعْدُ فَاَعُوْذُ بِاللّٰهِ مِنَ الشَّيْطٰنِ الرَّجِيْمِ بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ

फ़ैज़ाने ईदुल फ़ित्र

मौला अ़ली ने ख़ाली हथेली पर दम किया और......:

एक बार किसी भिकारी ने कुफ़्फ़ार से सुवाल किया, उन्हों ने मज़ाक़न अमीरुल मुअमिनीन ह़ज़रते सय्यिदुना मौला मुश्किल कुशा, अ़लिय्युल मुर्तज़ा, शेरे ख़ुदा كَرَّمَ اللهُ تَعَالٰى وَجْهَهُ الْكَرِيْم के पास भेज दिया जो कि सामने तशरीफ़ फ़रमा थे। उस ने हाज़िर हो कर दस्ते सुवाल दराज़ किया, आप كَرَّمَ اللهُ تَعَالٰى وَجْهَهُ الْكَرِيْم ने **10 बार दुरूद शरीफ़** पढ़ कर उस की हथेली पर दम कर दिया और फ़रमाया : "मुठ्ठी बन्द कर लो और जिन लोगों ने भेजा है उन के सामने जा कर खोल दो।" (कुफ़्फ़ार हंस रहे थे कि ख़ाली फूंक मारने से क्या होता है !) मगर जब साइल ने उन के सामने जा कर मुठ्ठी खोली तो उस में **एक दीनार** था ! येह **करामत** देख कर कई काफ़िर मुसल्मान हो गए। (راحت القلوب ص ٥٠)

विर्द जिस ने किया दुरूद शरीफ़ और दिल से पढ़ा दुरूद शरीफ़
ह़ाजतें सब रवा हुईं उस की है अ़जब कीमिया दुरूद शरीफ़

صَلُّوْا عَلَى الْحَبِيْب ! صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلٰى مُحَمَّد

प्यारे प्यारे इस्लामी भाइयो ! अल्लाह عَزَّوَجَلَّ के मह़बूब, दानाए ग़ुयूब, मुनज़्ज़हुन अ़निल उ़यूब صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰی عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने रमज़ान शरीफ़ के मुबारक महीने के मुतअ़ल्लिक़ इर्शाद फ़रमाया है कि इस महीने का पहला अ़शरा **रह़मत**, दूसरा **मग़्फ़िरत** और तीसरा अ़शरा **जहन्नम से आज़ादी** का है। (ابن خُزَیمہ ج۳ص۱۹۲حدیث۱۸۸۷)

मा'लूम हुवा कि **रमज़ानुल मुबारक** रह़मत व मग़्फ़िरत और जहन्नम से आज़ादी का महीना है, लिहाज़ा इस रह़मतों और बरकतों भरे महीने के फ़ौरन बा'द हमें **ईदे सईद** की ख़ुशी मनाने का मौक़अ़ फ़राहम किया गया है और ईदुल फ़ित्र के रोज़ ख़ुशी का इज़्हार मुस्तह़ब है। **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ के फ़ज़्लो रह़मत पर ख़ुशी करने की तरग़ीब तो क़ुरआने करीम में भी मौजूद है। चुनान्चे पारह 11 **सूरए यूनुस** की आयत नम्बर 58 में इर्शाद होता है :

قُلْ بِفَضْلِ اللّٰهِ وَبِرَحْمَتِهٖ فَبِذٰلِكَ فَلْيَفْرَحُوْا ؕ

तरजमए कन्ज़ुल ईमान : तुम फ़रमाओ **अल्लाह** ही के फ़ज़्ल और उसी की रह़मत, और इसी पर चाहिये कि ख़ुशी करें।

दिल ज़िन्दा रहेगा : नबियों के सुल्त़ान, रह़मते आ़लमिय्यान, सरदारे दो जहान, मह़बूबे रह़मान صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰی عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم का फ़रमाने बरकत

फ़रमाने मुस्त़फ़ा صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم : मुझ पर कसरत से दुरूदे पाक पढ़ो बेशक तुम्हारा मुझ पर दुरूदे पाक पढ़ना तुम्हारे गुनाहों के लिये मग़्फ़िरत है। (ابن عساکر)

निशान है : “जिस ने ईदैन की रात (या’नी शबे ईदुल फ़ित्र और शबे ईदुल अज़्हा) त़लबे सवाब के लिये क़ियाम किया, उस दिन उस का दिल नहीं मरेगा, जिस दिन (लोगों के) दिल मर जाएंगे।” (ابنِ ماجه ج۲ص۳۶۵حدیث۱۷۸۲)

जन्नत वाजिब हो जाती है : एक और मक़ाम पर ह़ज़रते सय्यिदुना मुआ़ज़ बिन जबल رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ से मरवी है, फ़रमाते हैं : जो पांच रातों में शब बेदारी करे उस के लिये जन्नत वाजिब हो जाती है। ज़ुल हिज्जा शरीफ़ की आठवीं, नवीं और दसवीं रात (इस त़रह़ तीन रातें तो येह हुईं) और चौथी **ईदुल फ़ित्र** की रात, पांचवीं शा’बानुल मुअ़ज़्ज़म की पन्दरहवीं रात (या’नी शबे बराअत)। (اَلتَّرْغِیب وَ التَّرْھِیب ج۲ ص۹۸ حدیث ۲)

मुआ़फ़ी का ए’लाने आ़म : ह़ज़रते सय्यिदुना **अ़ब्दुल्लाह** इब्ने अ़ब्बास رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُمَا की एक रिवायत में येह भी है : जब **ईदुल फ़ित्र** की मुबारक रात तशरीफ़ लाती है तो इसे “**लयलतुल जाइज़ा**” या’नी “इन्आ़म की रात” के नाम से पुकारा जाता है। जब **ईद** की सुब्ह़ होती है तो **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ अपने मा’सूम फ़िरिश्तों को तमाम शहरों में भेजता है, चुनान्चे वोह फ़िरिश्ते ज़मीन पर तशरीफ़ ला कर सब गलियों और राहों के सिरों पर खड़े हो जाते हैं और इस त़रह़ निदा देते हैं : “**ऐ उम्मते मुह़म्मद** صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ! उस रब्बे करीम عَزَّوَجَلَّ की बारगाह की

तरफ़ चलो ! जो बहुत ज़ियादा अ़ता करने वाला और बड़े से बड़ा गुनाह मुआ़फ़ फ़रमाने वाला है ।" फिर **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ अपने बन्दों से यूं मुख़ातिब होता है : "**ऐ** मेरे बन्दो ! मांगो ! क्या मांगते हो ? मेरी इ़ज़्ज़तो जलाल की क़सम ! आज के रोज़ इस (नमाज़े ईद के) इज्तिमाअ़ में अपनी आख़िरत के बारे में जो कुछ सुवाल करोगे वोह पूरा करूंगा और जो कुछ दुन्या के बारे में मांगोगे उस में तुम्हारी भलाई की त़रफ़ नज़र फ़रमाऊंगा (या'नी इस मुआ़मले में वोह करूंगा जिस में तुम्हारी बेहतरी हो) मेरी इ़ज़्ज़त की क़सम ! जब तक तुम मेरा लिहाज़ रखोगे मैं भी तुम्हारी ख़त़ाओं की पर्दा पोशी फ़रमाता रहूंगा। मेरी इ़ज़्ज़तो जलाल की क़सम ! मैं तुम्हें ह़द से बढ़ने वालों (या'नी मुजरिमों) के साथ रुस्वा न करूंगा। बस अपने घरों की त़रफ़ **मग़्फ़िरत याफ़्ता** लौट जाओ । तुम ने मुझे राज़ी कर दिया और मैं भी तुम से राज़ी हो गया।"

(اَلتَّرْغِيب وَالتَّرهِيب ج۲ ص۶۰ حديث۲۳)

कोई साइल मायूस नहीं जाता : प्यारे प्यारे इस्लामी भाइयो ! ग़ौर तो फ़रमाइये ! **ईदुल फ़ित्र** का दिन किस क़दर अहम तरीन दिन है, इस दिन **अल्लाहु रब्बुल इ़ज़्ज़त** عَزَّوَجَلَّ की रह़मत निहायत जोश पर होती है, दरबारे ख़ुदावन्दी عَزَّوَجَلَّ से कोई साइल मायूस नहीं लौटाया जाता । एक त़रफ़ **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ के नेक बन्दे **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ की बे पायां

रहमतों और बख़्शिशों पर ख़ुशियां मना रहे होते हैं तो दूसरी त़रफ़ मोमिनों पर **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ की इतनी करम नवाज़ियां देख कर इन्सान का बद तरीन दुश्मन शैत़ान आग बगूला हो जाता है। चुनान्चे

शैत़ान की बद ह़वासी : ह़ज़रते सय्यिदुना वहब बिन मुनब्बेह رَحْمَةُ اللّٰهِ تَعَالٰی عَلَیْه फ़रमाते हैं : जब भी ईद आती है, शैत़ान चिल्ला चिल्ला कर रोता है। इस की बद ह़वासी देख कर तमाम शयात़ीन उस के गिर्द जम्अ़ हो कर पूछते हैं : ऐ आक़ा ! आप क्यूं ग़ज़ब नाक और उदास हैं ? वोह कहता है : हाए अफ़्सोस ! **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ ने आज के दिन **उम्मते मुह़म्मद** صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰی عَلَیْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم को बख़्श दिया है, लिहाज़ा तुम इन्हें लज़्ज़ात और नफ़्सानी ख़्वाहिशात में मश्ग़ूल कर दो।

(مُکاشَفَةُ الْقُلُوب ص۳۰۸)

क्या शैत़ान काम्याब है ? : प्यारे प्यारे इस्लामी भाइयो ! देखा आप ने ! शैत़ान पर **ईद** का दिन निहायत गिरां गुज़रता है लिहाज़ा वोह शयात़ीन को हुक्म सादिर कर देता है कि तुम मुसल्मानों को लज़्ज़ाते नफ़्सानी में मश्ग़ूल कर दो ! ऐसा लगता है, फ़ी ज़माना शैत़ान अपने इस वार में काम्याब नज़र आ रहा है। **ईद** की आमद पर होना तो येह चाहिये कि इबादात व ह़सनात की कस्रतो बोहतात कर के रब्बे काएनात عَزَّوَجَلَّ

का ज़ियादा से ज़ियादा शुक्र अदा किया जाए, मगर अफ़्सोस ! सद करोड़ अफ़्सोस अब अक्सर मुसल्मान **ईदे सईद** का ह़क़ीक़ी मक़्सद ही भुला बैठे हैं ! **वा ह़स्रता !** अब तो **ईद** मनाने का येह अन्दाज़ हो गया है कि बेहूदा नक़्शो निगार बल्कि مَعَاذَ اللهِ عَزَّوَجَلَّ जानदार की तस्वीर वाले भड़कीले कपड़े पहने जाते हैं (बहारे शरीअ़त में है कि जिस कपड़े पर जानदार की तस्वीर हो उसे पहन कर नमाज़ पढ़ना मक्रूहे तह़रीमी है, नमाज़ के इलावा भी ऐसा कपड़ा पहनना ना जाइज़ है। (बहारे शरीअ़त, जि. 1, स. 627)) रक़्सो सुरूद की मह़फ़िलें गर्म की जाती हैं, गुनाहों भरे मेलों, गन्दे खेलों, नाच गानों और फ़िल्मों डिरामों का एहतिमाम किया जाता है और जी खोल कर वक़्त व दौलत दोनों को ख़िलाफ़े सुन्नत व शरीअ़त अफ़्आ़ल में बरबाद किया जाता है। अफ़्सोस सद हज़ार अफ़्सोस ! अब इस मुबारक दिन को किस क़दर ग़लत़ कामों में गुज़ारा जाने लगा है। **मेरे इस्लामी भाइयो !** इन ख़िलाफ़े शरअ़ बातों के सबब हो सकता है कि येह **ईदे सईद** ना शुक्रों के लिये "यौमे वईद" बन जाए। **लिल्लाह !** अपने ह़ाल पर रह़म कीजिये ! फ़ेशन परस्ती और फ़ुज़ूल ख़र्ची से बाज़ आ जाइये ! **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ ने फ़ुज़ूल ख़र्चों को क़ुरआने पाक में शैत़ानों का भाई क़रार दिया है। चुनान्चे पारह 15 **सूरए बनी इसराईल** की आयत नम्बर 26 और 27 में इर्शाद होता है :

وَلَا تُبَذِّرْ تَبْذِيْرًا ﴿۲۶﴾ اِنَّ الْمُبَذِّرِيْنَ كَانُوْۤا اِخْوَانَ الشَّيٰطِيْنِ ؕ وَكَانَ الشَّيْطٰنُ لِرَبِّهٖ كَفُوْرًا ﴿۲۷﴾

तरजमए कन्ज़ुल ईमान : और फ़ुज़ूल न उड़ा बेशक उड़ाने वाले शैत़ानों के भाई हैं और शैत़ान अपने रब का बड़ा ना शुक्रा है।

मक्तबतुल मदीना की मत़्बूआ़ "तफ़्सीरे सिरातुल जिनान" जिल्द 5 सफ़ह़ा 447 ता 448 पर इन आयाते मुबारक के तह़्त है : ﴿وَلَا تُبَذِّرْ تَبْذِيْرًا ﴿۲۶﴾ **और फ़ुज़ूल ख़र्ची न करो।**﴾ या'नी अपना माल ना जाइज़ काम में खर्च न करो। ह़ज़रते **अ़ब्दुल्लाह** बिन मस्ऊ़द رَضِىَ اللّٰهُ تَعَالٰى عَنْهُ से "तब्ज़ीर" के मुतअ़ल्लिक़ सुवाल किया गया तो आप رَضِىَ اللّٰهُ تَعَالٰى عَنْهُ ने फ़रमाया कि जहां माल ख़र्च करने का ह़क़ है उस की बजाए कहीं और ख़र्च करना **तब्ज़ीर** है। लिहाज़ा अगर कोई शख़्स अपना पूरा माल ह़क़ या'नी उस के मसरफ़ में ख़र्च कर दे तो वोह फ़ुज़ूल ख़र्ची करने वाला नहीं और अगर कोई एक दिरहम भी बात़िल या'नी ना जाइज़ काम में ख़र्च कर दे तो वोह फ़ुज़ूल ख़र्ची करने वाला है। (خازن ج ۳ ص ۱۷۲)

इसराफ़ की ग्यारह ता'रीफ़ात : इसराफ़ बिला शुबा मम्नूअ़ और ना जाइज़ है और उ़लमाए किराम ने इस की मुख़्तलिफ़ ता'रीफ़ात बयान की हैं, उन में से **11 ता'रीफ़ात** दर्जे ज़ैल हैं : ﴾1﴿ ग़ैरे ह़क़ में

सर्फ़ करना ﴾2﴿ **अल्लाह तआ़ला** के हुक्म की ह़द से बढ़ना ﴾3﴿ ऐसी बात में ख़र्च करना जो शरए़ मुत़ह्हर या मुरव्वत के ख़िलाफ़ हो, अव्वल (या'नी ख़िलाफ़े शरीअ़त ख़र्च करना) ह़राम है और सानी (या'नी ख़िलाफ़े मुरव्वत ख़र्च करना) मक्रूहे तन्ज़ीही। ﴾4﴿ त़ाअ़ते इलाही के ग़ैर में सर्फ़ करना ﴾5﴿ शरई ह़ाजत से ज़ियादा इस्ति'माल करना ﴾6﴿ ग़ैरे त़ाअ़त में या बिला ह़ाजत ख़र्च करना ﴾7﴿ देने में ह़क़ की ह़द से कमी या ज़ियादती करना ﴾8﴿ ज़लील ग़रज़ में कसीर माल ख़र्च कर देना ﴾9﴿ ह़राम में से कुछ या ह़लाल को ए'तिदाल से ज़ियादा खाना ﴾10﴿ लाइक़ व पसन्दीदा बात में लाइक़ मिक़्दार से ज़ियादा सर्फ़ कर देना ﴾11﴿ बे फ़ाएदा ख़र्च करना।

इसराफ़ की वाज़ेह़ तर ता'रीफ़ ग़ैरे ह़क़ में माल ख़र्च करना : आ'ला ह़ज़रत इमाम अह़मद रज़ा ख़ान رَحْمَةُ اللّٰهِ تَعَالٰى عَلَيْه इन ता'रीफ़ात को ज़िक्र करने और इन की तह़क़ीक़ व तफ़्सील बयान करने के बा'द फ़रमाते हैं : हमारे कलाम का नाज़िर (या'नी नज़र करने वाला) ख़याल कर सकता है कि इन तमाम ता'रीफ़ात में सब से जामेअ़ व मानेअ़ व वाज़ेह़ तर ता'रीफ़ अव्वल है और क्यूं न हो कि येह उस **अ़ब्दुल्लाह** की ता'रीफ़ है जिसे **रसूलुल्लाह** صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم इल्म की गठड़ी फ़रमाते और जो ख़ुलफ़ाए अरबआ़ رَضِىَ اللّٰهُ تَعَالٰى عَنْهُم के बा'द

तमाम जहान से इ़ल्म में ज़ाइद है और अबू ह़नीफ़ा जैसे इमामुल अइम्मा का मूरिसे इ़ल्म है رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْهُ وَعَنْهُ وَعَنْهُمْ اَجْمَعِيْن ।

(फ़तावा रज़विय्या, जि. 1 (ب), स. 937)

तब्ज़ीर और इसराफ़ में फ़र्क़ : **आ'ला** ह़ज़रत इमाम अह़मद रज़ा ख़ान رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰی عَلَيْه ने "तब्ज़ीर" और "इसराफ़" में फ़र्क़ से मुतअ़ल्लिक़ जो कलाम ज़िक्र फ़रमाया उस का ख़ुलासा येह है कि **तब्ज़ीर** के बारे में उ़लमाए किराम के दो क़ौल हैं : **(1)**...... तब्ज़ीर और इसराफ़ दोनों के मा'ना "नाह़क़ सर्फ़ करना" हैं। येही सह़ीह़ है कि येही क़ौल ह़ज़रते **अ़ब्दुल्लाह** बिन मस्ऊ़द और ह़ज़रते **अ़ब्दुल्लाह** बिन अ़ब्बास और आ़म सह़ाबए किराम رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْهُم का है। **(2)**...... तब्ज़ीर और इसराफ़ में फ़र्क़ है, तब्ज़ीर ख़ास गुनाहों में माल बरबाद करने का नाम है। इस सूरत में इसराफ़ तब्ज़ीर से आ़म होगा कि नाह़क़ सर्फ़ करना अ़बस में सर्फ़ करने को भी शामिल है और अ़बस मुत़्लक़न गुनाह नहीं तो चूंकि इसराफ़ ना जाइज़ है इस लिये येह ख़र्च करना मा'सियत होगा मगर जिस में ख़र्च किया वोह ख़ुद मा'सियत न था। और इ़बारत "لَاتُعْطِ فِي الْمَعَاصِي" (उस की ना फ़रमानी में मत दे) का ज़ाहिर येही है कि वोह काम ख़ुद ही मा'सियत हो। ख़ुलासा येह है कि तब्ज़ीर के मक़्सूद और हुक्म दोनों मा'सियत हैं और इसराफ़ को सिर्फ़ हुक्म में

मा'सियत लाज़िम है। (फ़तावा रज़विय्या, जि. 1 (ب), स. 937 ता 939 मुलख़्ख़सन)

इन्सान व हैवान का फ़र्क़ : प्यारे प्यारे इस्लामी भाइयो ! इन्सान और हैवान में जो मा बिहिल इम्तियाज़ (या'नी फ़र्क़ करने वाली चीज़) है वोह अ़क़्ल व तदबीर, दूरबीनी और दूर अन्देशी है, उ़मूमन हैवान को "कल" की फ़िक्र नहीं होती और आ़म तौ़र पर उस की कोई ह़रकत किसी हिक्मत के मा तह़्त नहीं होती, बर ख़िलाफ़ इन्सान के और मुसल्मान को तो न सिर्फ़ "दुन्यवी कल" की बल्कि इस दुन्यवी कल के बा'द आने वाली "उख़्रवी कल" की भी फ़िक्र होती है। यक़ीनन समझदार इन्सान वोही है बल्कि ह़क़ीक़तन इन्सान ही वोह है जो "उख़्रवी कल" या'नी आख़िरत की भी फ़िक्र करे, हिक्मते अ़मली से काम ले और इस फ़ानी ज़िन्दगी को ग़नीमत जानते हुए बाक़ी आख़िरत के लिये कोई इन्तिज़ाम कर ले। आह ! अब तो अक्सर लोग अपनी ज़िन्दगी का मक़्सद माल कमाना, ख़ूब डट कर खाना और फिर ख़ूब ग़फ़्लत की नींद सो जाना ही समझते हैं।

क्या कहूं अह़बाब क्या कारे नुमायां कर गए !
मेट्रिक किया, नोकर हुए, पेन्शन मिली फिर मर गए !!

ज़िन्दगी का मक़्सद क्या है ? : प्यारे प्यारे इस्लामी भाइयो ! ज़िन्दगी का मक़्सद सिर्फ़ बड़ी बड़ी डिग्रियां ह़ासिल करना, खाना पीना, और मज़े उड़ाना नहीं है। **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ ने आख़िर हमें ज़िन्दगी

क्यूं मर्ह़मत फ़रमाई ? आइये ! क़ुरआने पाक की ख़िदमत में अ़र्ज़ करें कि ऐ **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ की सच्ची किताब ! तू ही हमारी रहनुमाई फ़रमा कि हमारे जीने और मरने का मक़्सद क्या है ? क़ुरआने अ़ज़ीम से जवाब मिल रहा है :

خَلَقَ الْمَوْتَ وَ الْحَیٰوةَ لِیَبْلُوَكُمْ اَیُّكُمْ اَحْسَنُ عَمَلًاؕ (پ۲۹، الملك:۲)

तरजमए कन्ज़ुल ईमान : मौत और ज़िन्दगी पैदा की, कि तुम्हारी जांच हो (दुन्यावी ज़िन्दगी में) तुम में किस का काम ज़ियादा अच्छा है।

(या'नी इस मौत व ज़िन्दगी को इस लिये पैदा किया गया ताकि आज़्माया जाए कि) इस दुन्या की ज़िन्दगी में कौन ज़ियादा मुत़ीअ़ (फ़रमां बरदार) व मुख़्लिस है। (ख़ज़ाइनुल इरफ़ान, स. 1040)

घर ही पर विलादत हो गई : प्यारे प्यारे इस्लामी भाइयो ! शैत़ान के वार से बचने की कोशिश के ज़िम्न में ईद की ह़सीन साअ़तें आ़शिक़ाने रसूल के साथ मदनी क़ाफ़िले में गुज़ारिये। आप की तरग़ीब के लिये एक **मदनी बहार** अ़र्ज़ करता हूं : एक इस्लामी भाई ने कुछ इस त़रह़ बताया कि शादी के कमो बेश 6 माह बा'द घर में "उम्मीद" के आसार ज़ाहिर हुए। डॉक्टर ने बताया कि आप का केस पेचीदा है, ख़ून की भी काफ़ी कमी है, हो सकता है ऑपरेशन करना पड़े ! मैं ने उसी वक़्त

एक माह के मदनी क़ाफ़िले का मुसाफ़िर बनने की निय्यत कर ली, और चन्द रोज़ के बा'द **आ़शिक़ाने रसूल** के साथ सफ़र पर रवाना हो गया। اَلْحَمْدُ لِلّٰه عَزَّوَجَلَّ मदनी क़ाफ़िले की बरकत से ऐसा करम हो गया कि न अस्पताल जाने की नौबत आई और न ही किसी डॉक्टर को दिखाना पड़ा, घर ही में **मदनी मुन्ने** की विलादत हो गई।

घर में "उम्मीद" हो, इस की तम्हीद हो जल्द ही चल पड़ें, क़ाफ़िले में चलो
ज़च्चा की ख़ैर हो, बच्चा बिलख़ैर हो उठिये हिम्मत करें, क़ाफ़िले में चलो

(वसाइले बख़्शिश, स. 675)

صَلُّوْا عَلَى الْحَبِيْب! صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلٰى مُحَمَّد

हिफ़ाज़ते ह़म्ल के 2 रूह़ानी इलाज : ﴾1﴿ لَآ اِلٰهَ اِلَّا اللّٰه 11 बार किसी रिकाबी (या काग़ज़) पर लिख कर धो कर औ़रत को पिला दीजिये اِنْ شَآءَ اللّٰه عَزَّوَجَلَّ **ह़म्ल की हिफ़ाज़त** होगी। जिस औ़रत को दूध न आता हो या कम आता हो اِنْ شَآءَ اللّٰه عَزَّوَجَلَّ उस के लिये भी येह अ़मल मुफ़ीद है, चाहें तो एक ही दिन पिलाएं या कई रोज़ तक रोज़ाना ही लिख कर पिलाएं हर त़रह़ से इख़्तियार है ﴾2﴿ يَاحَيُّ يَاقَيُّوْمُ 111 बार किसी काग़ज़ पर लिख कर **ह़ामिला** के पेट पर बांध दीजिये और विलादत के वक़्त तक बांधे रहिये। (ज़रूरतन कुछ देर के लिये खोलने में ह़रज नहीं) اِنْ شَآءَ اللّٰه عَزَّوَجَلَّ **ह़म्ल** भी मह़फ़ूज़ रहेगा और बच्चा भी सिह़ह़त मन्द पैदा होगा।

ईद या वईद : प्यारे प्यारे इस्लामी भाइयो ! लाइक़े अ़ज़ाब कामों का इरतिकाब कर के "यौमे ईद" को अपने लिये "यौमे वईद" न बनाइये। और याद रखिये !

لَيْسَ الْعِيدُ لِمَنْ لَّبِسَ الْجَدِيْد   اِنَّمَاالْعِيْدُ لِمَنْ خَافَ الْوَعِيْد

(या'नी ईद उस की नहीं, जिस ने नए कपड़े पहन लिये,

ईद तो उस की है जो अ़ज़ाबे इलाही عَزَّوَجَلَّ से डर गया)

औलियाए किराम رَحِمَهُمُ اللّٰهُ تَعَالٰى भी तो ईद मनाते रहे हैं : प्यारे प्यारे इस्लामी भाइयो ! आज कल गोया लोग सिर्फ़ नए नए कपड़े पहनने और उ़म्दा खाने तनावुल करने को ही مَعَاذَاللّٰه **ईद** समझ बैठे हैं। ज़रा ग़ौर तो कीजिये ! हमारे बुज़ुर्गाने दीन رَحِمَهُمُ اللّٰهُ الْمُبِيْن भी तो आख़िर **ईद** मनाते रहे हैं, मगर इन के **ईद** मनाने का अन्दाज़ ही निराला रहा है, वोह दुन्या की लज़्ज़तों से कोसों दूर भागते रहे हैं और हर ह़ाल में अपने नफ़्स की मुख़ालफ़त करते रहे हैं। चुनान्चे

ईद का अनोखा खाना : ह़ज़रते सय्यिदुना ज़ुन्नून मिसरी عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللّٰهِ الْقَوِى ने **दस बरस** तक कोई लज़ीज़ खाना तनावुल न फ़रमाया, नफ़्स चाहता रहा और आप رَحْمَةُ اللّٰهِ تَعَالٰى عَلَيْه नफ़्स की मुख़ालफ़त फ़रमाते रहे, एक बार **ईद मुबारक** की मुक़द्दस रात को दिल ने मश्वरा दिया कि कल अगर **ईदे सईद** के रोज़ कोई लज़ीज़

फ़रमाने मुस्तफ़ा صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم : उस शख़्स की नाक ख़ाक आलूद हो जिस के पास मेरा ज़िक्र हो और वोह मुझ पर दुरूदे पाक न पढ़े। (ترمذی)

खाना खा लिया जाए तो क्या हरज है ? इस मश्वरे पर आप رَحْمَةُ اللّٰهِ تَعَالٰى عَلَيْه ने भी दिल को आज़्माइश में मुब्तला करने की ग़रज़ से फ़रमाया, "मैं अव्वलन **दो रक्अ़त** नफ़्ल में पूरा क़ुरआने पाक ख़त्म करूंगा, ऐ मेरे दिल ! तू अगर इस बात में मेरा साथ दे तो कल लज़ीज़ खाना मिल जाएगा।" लिहाज़ा आप رَحْمَةُ اللّٰهِ تَعَالٰى عَلَيْه ने दो रक्अ़त अदा की और इन में पूरा क़ुरआने करीम ख़त्म किया। आप رَحْمَةُ اللّٰهِ تَعَالٰى عَلَيْه के दिल ने इस अम्र में आप رَحْمَةُ اللّٰهِ تَعَالٰى عَلَيْه का साथ दिया। (या'नी दोनों रक्अ़तें दिल जम्ई के साथ अदा कर ली गईं) आप رَحْمَةُ اللّٰهِ تَعَالٰى عَلَيْه ने **ईद** के दिन लज़ीज़ खाना मंगवाया, निवाला उठा कर मुंह में डालना ही चाहते थे कि बे क़रार हो कर फिर रख दिया और न खाया। लोगों ने इस की वज्ह पूछी तो फ़रमाया : जिस वक़्त मैं निवाला मुंह के क़रीब लाया तो मेरे नफ़्स ने कहा : देखा ! मैं आख़िर अपनी दस साल पुरानी ख़्वाहिश पूरी करने में काम्याब हो गया ना ! मैं ने उसी वक़्त कहा कि अगर येह बात है तो मैं तुझे काम्याब न होने दूंगा और हरगिज़ हरगिज़ लज़ीज़ खाना न खाऊंगा। चुनान्चे आप رَحْمَةُ اللّٰهِ تَعَالٰى عَلَيْه ने लज़ीज़ खाना खाने का इरादा तर्क कर दिया। इतने में एक शख़्स लज़ीज़ खाने का तबाक़ उठाए हाज़िर हुवा और अ़र्ज़ की : येह खाना मैं ने रात अपने लिये तय्यार किया था, रात जब सोया तो क़िस्मत

अंगड़ाई ले कर जाग उठी, ख़्वाब में ताजदारे रिसालत صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم की ज़ियारत की सआदत हासिल हुई, मेरे प्यारे प्यारे और मीठे मीठे आक़ा صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने मुझ से इर्शाद फ़रमाया : अगर तू कल क़ियामत के रोज़ भी मुझे देखना चाहता है तो येह खाना ज़ुन्नून (رَحْمَۃُ اللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہ) के पास ले जा और उन से जा कर कह कि **"हज़रते मुहम्मद बिन अ़ब्दुल्लाह बिन अ़ब्दुल मुत्तलिब (صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم) फ़रमाते हैं कि दम भर के लिये नफ़्स के साथ सुल्ह़ कर लो और चन्द निवाले इस लज़ीज़ खाने से खा लो।"** हज़रते सय्यिदुना ज़ुन्नून मिसरी عَلَیْہِ رَحْمَۃُ اللّٰہِ الْقَوِی येह सुन कर झूम उठे और कहने लगे : "मैं फ़रमां बरदार हूं, मैं फ़रमां बरदार हूं।" और लज़ीज़ खाना खाने लगे। (تـذکرۃ الاولیاء ج ۱ ص ۱۱۷) **अल्लाहु रब्बुल इ़ज़्ज़त عَزَّوَجَلَّ की उन पर रह़मत हो और उन के सदक़े हमारी बे हिसाब मग़िफ़रत हो।** اٰمین بِجاہِ النَّبِیِّ الْاَمین صَلَّی اللّٰہ تعالٰی علیہ واٰلہٖ وسلَّم

रब है मो'ती येह हैं क़ासिम　　रिज़्क़ उस का है खिलाते येह हैं
ठन्डा ठन्डा मीठा मीठा　　पीते हम हैं पिलाते येह हैं

(ह़दाइके़ बख़्शिश, स. 482, 483)

صَلُّوْا عَلَی الْحَبِیْب ! صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلٰی مُحَمَّد

रूह़ को भी सजाइये : प्यारे प्यारे इस्लामी भाइयो ! इस में कोई शक नहीं कि **ईद** के दिन ग़ुस्ल करना, नए या धुले हुए उ़म्दा कपड़े पहनना और इ़त्र लगाना मुस्तह़ब है, येह मुस्तह़ब्बात हमारे ज़ाहिरी बदन की सफ़ाई और ज़ीनत से मुतअ़ल्लिक़ हैं। लेकिन हमारे इन साफ़, उजले और नए कपड़ों और नहाए हुए और ख़ुश्बू मले हुए जिस्म के साथ साथ हमारी **रूह़** भी हम पर हमारे मां बाप से भी ज़ियादा मेह्रबान ख़ुदाए रह़मान عَزَّوَجَلَّ की मह़ब्बत व इत़ाअ़त और उम्मत के ग़म ख़्वार, दो जहां के ताजदार صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰی عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم की उल्फ़त व सुन्नत से ख़ूब सजी हुई होनी चाहिये।

नजासत पर चांदी का वरक़ : ज़रा सोचिये तो सही ! रोज़ा एक भी न रखा हो, सारा माहे रमज़ान **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ की ना फ़रमानियों में गुज़रा हो, बजाए इ़बादात के सारी सारी रातें फ़िल्म बीनियों, गाने बाजों और आवारा गर्दियों में गुज़री हों, अपने जिस्म व रूह़ को दिन रात गुनाहों में मुलव्वस रखा हो और आज **ईद** के दिन इंग्लिश फ़ेशन वाले बे ढंगे कपड़े पहन भी लिये तो इसे यूं समझिये कि गोया एक नजासत थी जिस पर चांदी का वरक़ चस्पां कर के उस की नुमाइश कर दी गई।

ईद किस के लिये है ? : सरकार صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰی عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم की मह़ब्बत से सरशार दीवानो ! सच्ची बात तो येही है कि ईद उन ख़ुश बख़्त

फ़रमाने मुस्त़फ़ा صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم : जिस ने मुझ पर सुब्ह़ व शाम दस दस बार दुरूदे पाक पढ़ा उसे क़ियामत के दिन मेरी शफ़ाअ़त मिलेगी । (مجمع الزوائد)

मुसल्मानों का ह़िस्सा है जिन्हों ने माहे मोह़तरम, **रमज़ानुल मुबारक** को रोज़ों, नमाज़ों और दीगर इबादतों में गुज़ारा । तो येह **ईद** उन के लिये **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ की त़रफ़ से मज़्दूरी मिलने का दिन है । **हमें तो अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ **से डरते रहना चाहिये कि आह ! माहे मोह़तरम का हम ह़क़ अदा ही न कर सके ।**

सय्यिदुना उ़मर फ़ारूक़ رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ **की ईद :** ह़ज़रते अ़ल्लामा मौलाना अ़ब्दुल मुस्त़फ़ा आ'ज़मी عَلَیْہِ رَحْمَۃُ اللّٰہِ الْقَوِی फ़रमाते हैं : **ईद** के दिन चन्द ह़ज़रात मकाने आ़लीशान पर ह़ाज़िर हुए तो क्या देखा कि **अमीरुल मुअमिनीन** ह़ज़रते सय्यिदुना उ़मर फ़ारूके़ आ'ज़म رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ दरवाज़ा बन्द कर के ज़ारो क़ित़ार रो रहे हैं । लोगों ने हैरान हो कर अ़र्ज़ की : **या अमीरल मुअमिनीन** رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ! आज तो **ईद** है जो कि ख़ुशी मनाने का दिन है, ख़ुशी की जगह येह रोना कैसा ? आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ने आंसू पोंछते हुए फ़रमाया : "**هٰذَا يَوْمُ الْعِيْدِ وَهٰذَا يَوْمُ الْوَعِيْد** या'नी येह ईद का दिन भी है और वईद का दिन भी ।" जिस के नमाज़ व रोज़े मक़्बूल हो गए बिला शुबा उस के लिये आज ईद का दिन है, लेकिन जिस के नमाज़ रोज़े रद कर के उस के मुंह पर मार दिये गए उस के लिये तो आज **वईद** का दिन है (मज़ीद

इन्किसारन फ़रमाया :) और मैं तो इस ख़ौफ़ से रो रहा हूं कि आह ! "اَنَا لَا اَدْرِیْ اَ مِنَ الْمَقْبُوْلِیْنَ اَمْ مِنَ الْمَطْرُوْدِیْنَ" या'नी मुझे येह मा'लूम नहीं कि मैं मक़्बूल हुवा हूं या रद कर दिया गया हूं।" (नूरानी तक़रीरें, स. 184)

ईद के दिन उ़मर येह रो रो कर
बोले नेकों की ईद होती है

(वसाइले बख़्शिश, स. 707)

अल्लाहु रब्बुल इ़ज़्ज़त عَزَّوَجَلَّ की उन पर रह़मत हो और उन के सदक़े हमारी बे ह़िसाब मग़्फ़िरत हो। اٰمِين بِجَاهِ النَّبِيِّ الْاَمِين صَلَّى اللهُ تعالى عليه واٰله وسلَّم

हमारी ख़ुश फ़हमी : अल्लाहु अक्बर ! (عَزَّوَجَلَّ) मह़ब्बत वालो ! ज़रा सोचिये ! ख़ूब ग़ौर फ़रमाइये ! वोह फ़ारूक़े आ'ज़म رَضِیَ اللهُ تَعَالٰی عَنْهُ जिन को मालिके जन्नत, ताजदारे रिसालत صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने अपनी ह़याते ज़ाहिरी ही में जन्नत की बिशारत इनायत फ़रमा दी थी। उन के ख़ौफ़ो ख़शिय्यत का तो येह आ़लम हो और हम जैसे निकम्मे और बातूनी लोगों की येह ह़ालत है कि नेकी के "नून" के नुक़्ते तक तो पहुंच नहीं पाते मगर ख़ुश फ़हमी का ह़ाल येह है कि हम जैसा नेक और पारसा तो शायद अब कोई रहा ही नहीं ! इस रिक़्क़त अंगेज़ ह़िकायत से उन लोगों को ख़ुसूसन दर्से इ़ब्रत ह़ासिल करना चाहिये जो अपनी इ़बादात पर नाज़ करते हुए फूले नहीं समाते और बिला मस्लह़ते शरई अपने नेक

आ'माल मसलन नमाज़, रोज़ा, ह़ज, मसाजिद की ख़िदमत, ख़ल्क़े ख़ुदा की मदद और समाजी फ़लाहो बहबूद वग़ैरा वग़ैरा कामों का हर जगह ए'लान करते फिरते, ढंडोरा पीटते नहीं थकते, बल्कि अपने नेक कामों की مَعَاذَ اللّٰہ عَزَّوَجَلَّ अख़्बारात व रसाइल में तसावीर तक छपवाने से गुरेज़ नहीं करते। **आह !** इन का ज़ेह्न किस त़रह़ बनाया जाए ! इन को इख़्लासे निय्यत की सोच किस त़रह़ फ़राहम की जाए ! इन्हें किस त़रह़ बावर कराया जाए कि अपनी नेकियों का ए'लान करने में रियाकारी की आफ़त में पड़ने का शदीद ख़दशा है। और अपना फ़ोटो छपवाना ? तौबा ! तौबा ! अपने आ'माल की नुमाइश का इतना शौक़ कि फ़ोटो जैसे ह़राम ज़रीए़ को भी न छोड़ा गया। **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ रियाकारी की तबाहकारी, "मैं मैं" की मुसीबत और अनानिय्यत की आफ़त से हम सब मुसल्मानों की हिफ़ाज़त फ़रमाए। اٰمِین بِجَاہِ النَّبِیِّ الْاَمِین صَلَّی اللّٰہ تعالٰی علیہ واٰلہٖ وسلَّم

शहज़ादे की ईद : अमीरुल मुअमिनीन ह़ज़रते सय्यिदुना उ़मर फ़ारूक़े आ'ज़म رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ने एक मर्तबा **ईद** के दिन अपने **शहज़ादे** को पुरानी क़मीस पहने देखा तो रो पड़े, बेटे ने अ़र्ज़ की : **प्यारे अब्बाजान !** क्यूं रो रहे हैं ? फ़रमाया : **मेरे लाल !** मुझे अन्देशा है कि आज **ईद** के दिन जब लड़के तुम्हें इस पुरानी क़मीस में देखें तो कहीं तुम्हारा दिल न टूट जाए ! बेटे ने जवाबन अ़र्ज़ किया : दिल तो उस का

टूटे जो रिज़ाए इलाही عَزَّوَجَلَّ के काम में नाकाम रहा हो या जिस ने मां या बाप की ना फ़रमानी की हो, मुझे उम्मीद है कि आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ की रिज़ा मन्दी के तुफ़ैल **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ भी मुझ से राज़ी हो जाएगा। येह सुन कर ह़ज़रते **उ़मर फ़ारूक़** رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ने शहज़ादे को गले लगाया और उस के लिये दुआ़ फ़रमाई। (مُکاشَفَۃُ الْقُلُوب ص ۳۰۸ مُلَخَّصاً) **अल्लाहु रब्बुल इ़ज़्ज़त** عَزَّوَجَلَّ **की उन पर रह़मत हो और उन के सदक़े हमारी बे ह़िसाब मग़िफ़रत हो।** اٰمین بِجاہِ النَّبِیِّ الْاَمین صَلَّی اللہ تعالٰی علیہ واٰلہٖ وسلَّم

शहज़ादियों की ईद : अमीरुल मुअमिनीन ह़ज़रते सय्यिदुना उ़मर बिन अ़ब्दुल अ़ज़ीज़ رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ की ख़िदमत में ईद से एक दिन क़ब्ल आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ की **शहज़ादियां** ह़ाज़िर हुईं और बोलीं : "**अब्बूजान !** ईद के दिन हम कौन से कपड़े पहनेंगी ?" फ़रमाया : "येही कपड़े जो तुम ने पहन रखे हैं, इन्हें धो लो, कल पहन लेना !" "नहीं ! **अब्बूजान !** हमें नए कपड़े बनवा दीजिये," बच्चियों ने ज़िद करते हुए कहा। आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ने फ़रमाया : "मेरी बच्चियो ! ईद का दिन **अल्लाहु रब्बुल इ़ज़्ज़त** عَزَّوَجَلَّ की इ़बादत करने, उस का शुक्र बजा लाने का दिन है, नए कपड़े पहनना ज़रूरी तो नहीं !" "**अब्बूजान !** आप का फ़रमाना बेशक दुरुस्त है लेकिन हमारी सहेलियां हमें ता'ने देंगी कि तुम अमीरुल मुअमिनीन की लड़कियां हो और ईद के रोज़ भी वोही

पुराने कपड़े पहन रखे हैं !" येह कहते हुए बच्चियों की आंखों में **आंसू** भर आए। बच्चियों की बातें सुन कर **अमीरुल मुअमिनीन** رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ का दिल भी पसीज गया। **ख़ाज़िन** (वज़ीरे मालियात) को बुला कर फ़रमाया : "मुझे मेरी एक माह की तनख़्वाह पेशगी ला दो।" **ख़ाज़िन** ने अ़र्ज़ की : "**हुज़ूर !** क्या आप को यक़ीन है कि आप एक माह तक ज़िन्दा रहेंगे ?" फ़रमाया : "جَزَاكَ اللّٰه ! बेशक ! तुम ने सह़ीह़ और उ़म्दा बात कही।" **ख़ाज़िन** चला गया। आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ने बच्चियों से फ़रमाया : "प्यारी बेटियो ! **अल्लाह व रसूल** عَزَّوَجَلَّ و صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم की रिज़ा पर अपनी ख़्वाहिशात क़ुरबान कर दो।" (मा'दने अख़्लाक़, हिस्सए अव्वल, स. 257 ता 258 बि तग़य्युरिन क़लील)

अल्लाहु रब्बुल इ़ज़्ज़त عَزَّوَجَلَّ **की उन पर रह़मत हो और उन के सदक़े हमारी बे ह़िसाब मग़्फ़िरत हो।**

اٰمین بِجاہِ النَّبِیِّ الْاَمین صَلَّی اللّٰہ تعالٰی علیہ واٰلہٖ وسلَّم

वालिदे मर्ह़ूम पर करम : **एह़तियात़ों** भरा मदनी ज़ेह्न बनाने के लिये **मदनी क़ाफ़िले** में सफ़र की सआ़दत ह़ासिल कीजिये, मदनी क़ाफ़िले की बरकतों के क्या कहने ! एक इस्लामी भाई ने अपने वालिदे मर्ह़ूम को ख़्वाब में इन्तिहाई कमज़ोरी की ह़ालत में बरहना किसी के सहारे पर चलता हुवा देखा। उन्हें तश्वीश हुई। उन्हों ने

ईसाले सवाब की निय्यत से हर माह तीन दिन के **मदनी क़ाफ़िले** में सफ़र की निय्यत कर ली और सफ़र शुरूअ़ भी कर दिया। तीसरे माह मदनी क़ाफ़िले से वापसी के बा'द जब घर पर सोए तो उन्हों ने ख़्वाब में येह दिलकश मन्ज़र देखा कि वालिदे मर्हूम सब्ज़ सब्ज़ लिबास ज़ेबे तन किये बैठे मुस्कुरा रहे हैं और उन पर बारिश की हलकी फुलकी फुवार बरस रही है। اَلْحَمْدُ لِلّٰه عَزَّوَجَلَّ **मदनी क़ाफ़िले** में सफ़र की अहम्मिय्यत उन पर ख़ूब उजागर हुई और उन्हों ने पक्की निय्यत कर ली कि اِنْ شَآءَاللّٰه عَزَّوَجَلَّ **हर माह तीन दिन के लिये आ़शिक़ाने रसूल के साथ सफ़र जारी रखूंगा।**

क़ाफ़िले में ज़रा मांगो आ कर दुआ़ — पाओगे ने'मतें, क़ाफ़िले में चलो
ख़ूब होगा सवाब, और टलेगा अ़ज़ाब — पाओगे बख़्शिशें, क़ाफ़िले में चलो
जो कि मफ़्क़ूद हो, वोह भी मौजूद हो — اِنْ شَآءَاللّٰه चलें, क़ाफ़िले में चलो

(वसाइले बख़्शिश, स. 677, 672, 673)

صَلُّوا عَلَى الْحَبِيب ! صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلٰى مُحَمَّد

हुज़ूर ग़ौसे आ'ज़म عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللّٰهِ الْاَكْرَم की ईद : अल्लाह عَزَّوَجَلَّ के मक़्बूल बन्दों की एक एक अदा हमारे लिये मूजिबे सद दर्से इ़ब्रत होती है। اَلْحَمْدُ لِلّٰه عَزَّوَجَلَّ हमारे हुज़ूर सय्यिदुना ग़ौसे आ'ज़म عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللّٰهِ الْاَكْرَم की शान

फ़रमाने मुस्तफ़ा صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰی عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم : तुम जहां भी हो मुझ पर दुरूद पढ़ो कि तुम्हारा दुरूद मुझ तक पहुंचता है। (طبرانی)

बेहद अर्फ़ओ आ'ला है, इस के बा वुजूद आप رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْه हमारे लिये क्या चीज़ पेश फ़रमाते हैं ! सुनिये और इब्रत हासिल कीजिये :

خلق گوید کہ فردا روزِ عید است　　خوشی در روحِ ہر مؤمن پدید است

دراں روزے کہ با ایماں بمیرم　　مرا در مُلک خود آں روزِ عید است

या'नी "लोग कह रहे हैं, "कल ईद है ! कल ईद है !" और सब खुश हैं। लेकिन मैं तो जिस दिन इस दुन्या से अपना ईमान सलामत ले कर गया, मेरे लिये तो वोही दिन **ईद** होगा।"

سُبْحٰنَ اللّٰه (عَزَّوَجَلَّ) ! سُبْحٰنَ اللّٰه (عَزَّوَجَلَّ) ! क्या शाने तक़्वा है ! इतनी बड़ी शान कि औलियाए किराम رَحِمَهُمُ اللّٰهُ السَّلَام के सरदार ! और इस क़दर तवाज़ोअ़ व इन्किसार !! इस में हमारे लिये भी दर्से इब्रत है और हमें समझाया जा रहा है कि ख़बरदार ! ईमान के मुआ़मले में ग़फ़्लत न करना, हर वक़्त ईमान की हिफ़ाज़त की फ़िक्र में लगे रहना, कहीं ऐसा न हो कि तुम्हारी ग़फ़्लत और मा'सियत के सबब ईमान की दौलत तुम्हारे हाथ से निकल जाए।

रज़ा का ख़ातिमा बिलख़ैर होगा

अगर रह़मत तेरी शामिल है या ग़ौस

(ह़दाइक़े बख़्शिश, स. 263)

एक वली की ईद : ह़ज़रते सय्यिदुना शैख़ नजीबुद्दीन मुतवक्किल رَحْمَةُ اللّٰهِ تَعَالٰی عَلَيْه, ह़ज़रते सय्यिदुना शैख़ बाबा फ़रीदुद्दीन गन्जे शकर

رَحْمَۃُ اللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہ के भाई और ख़लीफ़ा हैं, आप رَحْمَۃُ اللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہ का लक़ब **मुतवक्किल** है। आप رَحْمَۃُ اللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہ 70 बरस शहर में रहे और कोई ज़ाहिरी ज़रीअ़ए मआ़श न होने के बा वुजूद अहलो इ़याल निहायत इत़्मीनान से ज़िन्दगी बसर करते रहे। एक बार **ईद** के दिन आप رَحْمَۃُ اللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہ के घर में बहुत से मेहमान जम्अ़ हो गए, घर में ख़ुर्दो नोश (या'नी खाने पीने) का कोई सामान नहीं था। आप رَحْمَۃُ اللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہ बालाख़ाने पर जा कर **यादे इलाही** عَزَّوَجَلَّ में मश्ग़ूल हो गए और दिल ही दिल में येह कह रहे थे : "आज ईद का दिन है और मेरे घर **मेहमान** आए हुए हैं।" अचानक एक शख़्स छत पर ज़ाहिर हुवा, उस ने खानों से भरा हुवा एक ख़्वान पेश किया और कहा : **ऐ नजीबुद्दीन !** तुम्हारे **तवक्कुल** की धूम मलाए आ'ला (या'नी फ़िरिश्तों) में मची हुई है और तुम्हारा ह़ाल येह है कि तुम ऐसे ख़याल (या'नी खाना त़लबी) में मश्ग़ूल हो ! आप رَحْمَۃُ اللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہ ने फ़रमाया : "ह़क़ तआ़ला عَزَّوَجَلَّ ख़ूब जानता है कि मैं अपनी ज़ात के लिये नहीं सिर्फ़ अपने मेहमानों के बाइ़स इस त़रफ़ मुतवज्जेह हो गया था।" ह़ज़रते सय्यिदुना नजीबुद्दीन **मुतवक्किल** رَحْمَۃُ اللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہ साहिबे करामत होने के बा वुजूद इन्तिहाई मुन्किसिरुल मिज़ाज थे। आप رَحْمَۃُ اللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہ की इन्किसारी का येह आ़लम था कि एक रोज़ एक फ़क़ीर बहुत दूर से मुलाक़ात के लिये आया और आप

رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰى عَلَيْه से पूछा कि क्या नजीबुद्दीन **मुतवक्किल** (या'नी **तवक्कुल** करने वाला) आप ही हैं ? तो इन्किसारन फ़रमाया कि भाई ! मैं तो नजीबुद्दीन **मुतअक्किल** (या'नी बहुत ज़ियादा खाने वाला) हूं। (أخبارُ الاخيار ص ٦٠ مُلَخَّصاً) **अल्लाहु रब्बुल इ़ज़्ज़त** عَزَّوَجَلَّ **की उन पर रह़मत हो और उन के सदक़े हमारी बे ह़िसाब मग़्फ़िरत हो।**

اٰمِين بِجاهِ النَّبِيِّ الْاَمين صَلَّى اللهُ تعالى عليه واله وسلّم

करामत का एक शो'बा : प्यारे प्यारे इस्लामी भाइयो ! इस **ह़िकायत** से मा'लूम हुवा कि **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ जब चाहता है अपने दोस्तों की ज़रूरिय्यात का ग़ैब से इन्तिज़ाम फ़रमा देता है। ब वक़्ते ज़रूरत खाना, पानी वग़ैरा ज़रूरिय्याते ज़िन्दगी का अचानक ह़ाज़िर हो जाना बुज़ुर्गों से **करामत** के तौर पर वुक़ूअ़ में आता है। चुनान्चे "शर्हे अ़क़ाइदे नस्फ़िय्यह" में जहां करामत की चन्द अक़्साम का बयान है वहां येह भी मज़्कूर है कि ज़रूरत के वक़्त खाने पानी का ह़ाज़िर हो जाना भी करामत ही का एक शो'बा है। बुज़ुर्गाने दीन رَحِمَهُمُ اللهُ الْمُبِين के ख़ुदादाद तसर्रुफ़ात व करामात का क्या कहना ? येह ऐसे मक़्बूलाने बारगाहे ख़ुदावन्दी عَزَّوَجَلَّ होते हैं कि उन की ज़बाने पाक से निकली हुई बात और दिल में पैदा होने वाली ख़्वाहिशात रब्बे काएनात عَزَّوَجَلَّ अपनी रह़मत से पूरी फ़रमा देता है।

एक सख़ी की ईद : सय्यिदुना अ़ब्दुर्रह़मान बिन अ़म्र औज़ाई رَحْمَةُ اللّٰهِ تَعَالٰى عَلَيْه बयान करते हैं कि **ईदुल फ़ित्र** की शब दरवाज़े पर दस्तक हुई, देखा तो मेरा हमसाया खड़ा था। मैं ने पूछा : कहो भाई ! कैसे आना हुवा ? उस ने कहा : "कल **ईद** है लेकिन ख़र्च के लिये कुछ नहीं, अगर आप कुछ इनायत फ़रमा दें तो इ़ज़्ज़त के साथ हम **ईद** का दिन गुज़ार लेंगे।" मैं ने अपनी बीवी से कहा : हमारा फ़ुलां पड़ोसी आया है उस के पास **ईद** के लिये एक पैसा तक नहीं, अगर तुम्हारी राय हो तो जो **पच्चीस दिरहम** हम ने **ईद** के लिये रख छोड़े हैं उस को पेश कर दें हमें **अल्लाह तआ़ला** और दे देगा। नेक बीवी ने कहा : बहुत अच्छा। चुनान्चे मैं ने वोह सब दिरहम अपने हमसाए के ह़वाले कर दिये, वोह दुआएं देता हुवा चला गया। थोड़ी देर के बा'द फिर किसी ने दरवाज़ा खटखटाया। मैं ने जूंही दरवाज़ा खोला, एक आदमी आगे बढ़ कर मेरे क़दमों पर गिर पड़ा और रो रो कर कहने लगा : मैं आप के वालिद का भागा हुवा ग़ुलाम हूं, मुझे अपनी ह़रकत पर बहुत नदामत लाहि़क़ हुई तो ह़ाज़िर हो गया हूं, येह **पच्चीस दीनार** मेरी कमाई के हैं आप की ख़िदमत में पेश करता हूं क़बूल फ़रमा लीजिये, आप मेरे आक़ा हैं और मैं आप का ग़ुलाम। मैं ने वोह दीनार ले लिये और ग़ुलाम को आज़ाद कर दिया। फिर मैं ने अपनी बीवी से कहा : ख़ुदा عَزَّوَجَلَّ की शान

देखो ! उस ने हमें **दिरहम** के बदले **दीनार** अ़ता फ़रमाए (पहले दिरहम चांदी के और दीनार सोने के होते थे !) **अल्लाहु रब्बुल इ़ज़्ज़त** عَزَّوَجَلَّ **की उन पर रह़मत हो और उन के सदक़े हमारी बे हि़साब मग़्फ़िरत हो ।**

اٰمِين بِجاهِ النَّبِيِّ الْاَمين صَلَّى اللهُ تعالٰى عليه واٰله وسلَّم

सलाम उस पर कि जिस ने बे कसों की दस्त गीरी की : प्यारे प्यारे इस्लामी भाइयो ! देखा आप ने ? **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ की शान भी कितनी निराली है कि उस ने पच्चीस दिरहम (चांदी के सिक्के) देने वाले को आन की आन में पच्चीस दीनार (सोने के सिक्के) अ़ता फ़रमा दिये । और बुज़ुर्गाने दीन رَحِمَهُمُ اللّٰهُ الْمُبِين का ईसार भी ख़ूब था कि वोह अपनी तमाम तर आसाइशें दूसरे मुसल्मानों की ख़ातिर क़ुरबान कर देते थे ।

क़ुव्वते समाअ़त बह़ाल हो गई : प्यारे प्यारे इस्लामी भाइयो ! अपने दिल में अ़ज़मते मुस्तफ़ा صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم बढ़ाने, सीने में शम्ए उल्फ़ते मुस्तफ़ा जलाने और ईदे सईद की ह़क़ीक़ी ख़ुशियां पाने के लिये हो सके तो चांदरात को **दा 'वते इस्लामी** के मदनी क़ाफ़िलों में आ़शिक़ाने रसूल के साथ सुन्नतों भरे सफ़र की सआ़दत ह़ासिल कीजिये । मदनी क़ाफ़िले की बरकतें तो देखिये ! एक इस्लामी भाई के बयान का ख़ुलासा है, तब्लीग़े

फ़रमाने मुस्त़फ़ा صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم : जिस ने किताब में मुझ पर दुरूदे पाक लिखा तो जब तक मेरा नाम उस में रहेगा फ़िरिश्ते उस के लिये इस्तिग़्फ़ार (या'नी बख़्शिश की दुआ) करते रहेंगे। (طبرانی)

क़ुरआनो सुन्नत की आलमगीर ग़ैर सियासी तह़रीक, **दा'वते इस्लामी** के तीन रोज़ा सुन्नतों भरे इज्तिमाअ़ में शरीक एक बहरे इस्लामी भाई ने हाथों हाथ तीन दिन के सुन्नतों की तरबियत के **मदनी क़ाफ़िले** में **आ़शिक़ाने रसूल** के साथ सफ़र की सआ़दत ह़ासिल की। اَلْحَمْدُ لِلّٰه عَزَّوَجَلَّ दौराने सफ़र ही उन की **क़ुव्वते समाअ़त** बह़ाल हो गई और वोह आ़म लोगों की त़रह़ सुनने लगे।

कान बहरे हैं गर, रख्खो रब पर नज़र — होगा लुत़्फ़े ख़ुदा, क़ाफ़िले में चलो

दुन्यवी आफ़तें, उख़्रवी शामतें — दूर होंगी ज़रा, क़ाफ़िले में चलो

صَلُّوا عَلَى الْحَبِيب! صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلٰى مُحَمَّد

सदक़ए फ़ित्र : अल्लाह तबारक व तआ़ला पारह 30 **सूरतुल आ'ला** की आयत नम्बर 14 ता 15 में इर्शाद फ़रमाता है :

قَدْ اَفْلَحَ مَنْ تَزَكّٰى ﴿۱۴﴾ وَ ذَكَرَ اسْمَ رَبِّهٖ فَصَلّٰى ﴿۱۵﴾

तरजमए कन्ज़ुल ईमान : बेशक मुराद को पहुंचा जो सुथरा हुवा और अपने रब का नाम ले कर नमाज़ पढ़ी।

सदरुल अफ़ाज़िल ह़ज़रते अ़ल्लामा मौलाना सय्यिद मुह़म्मद नईमुद्दीन मुरादआबादी عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللّٰهِ الْهَادِى "**ख़ज़ाइनुल इरफ़ान**" में इस आयते करीमा के तह़त लिखते हैं : इस आयत की तफ़्सीर में येह कहा

गया है कि "تَزَکّٰی" से सदक़ए फ़ित्र देना और रब का नाम लेने से ईदगाह के रास्ते में तक्बीरें कहना और नमाज़ से नमाज़े ईद मुराद है।

(ख़ज़ाइनुल इरफ़ान, स. 1099)

सदक़ए फ़ित्र वाजिब है : सरकारे मदीना صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने एक शख़्स को हुक्म दिया कि जा कर मक्कए मुअ़ज़्ज़मा के गली कूचों में ए'लान कर दो, "**सदक़ए फ़ित्र** वाजिब है।"

(ترمذی ج۲ص۱۵۱حدیث۶۷۴)

सदक़ए फ़ित्र लग्व बातों का कफ़्फ़ारा है : ह़ज़रते सय्यिदुना इब्ने अ़ब्बास رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُمَا फ़रमाते हैं : मदनी सरकार, ग़रीबों के ग़म ख़्वार صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने **सदक़ए फ़ित्र** मुक़र्रर फ़रमाया ताकि फ़ुज़ूल और बेहूदा कलाम से रोज़ों की त़हारत (या'नी सफ़ाई) हो जाए। नीज़ मसाकीन की ख़ूरिश (या'नी ख़ूराक) भी हो जाए।

(ابوداؤد ج۲ص۱۵۸حدیث۱۶۰۹)

रोज़ा मुअ़ल्लक़ रहता है : ह़ज़रते सय्यिदुना अनस बिन मालिक رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ कहते हैं सरकारे नामदार, मदीने के ताजदार صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم फ़रमाते हैं : जब तक **सदक़ए फ़ित्र** अदा नहीं किया जाता, बन्दे का **रोज़ा** ज़मीन व आस्मान के दरमियान मुअ़ल्लक़ (या'नी लटका हुवा) रहता है। (اَلْفِردَوس بمأثور الْخِطاب ج۲ص۳۹۵حدیث۳۷۵۴)

फ़रमाने मुस्तफ़ा صَلَّى اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم **:** बरोज़े क़ियामत लोगों में से मेरे क़रीब तर वोह होगा जिस ने दुन्या में मुझ पर ज़ियादा दुरूदे पाक पढ़े होंगे। (ترمذی)

"ईद की ख़ुशियां मुबारक" के सोलह हुरूफ़ की निस्बत से फ़ित्रे के 16 म-दनी फूल

1 **सदक़ए फ़ित्र** उन तमाम मुसल्मान मर्द व औरत पर वाजिब है जो "साहिबे निसाब" हों और उन का निसाब "हाजाते अस्लिय्या (या'नी ज़रूरिय्याते ज़िन्दगी मसलन रहने का मकान, ख़ानादारी का सामान वग़ैरा)" से फ़ारिग़ हो। (ماخوذ از عالمگیری ج۱ص۱۹۱)

2 **जिस** के पास साढ़े सात तोला सोना या साढ़े बावन तोला चांदी या साढ़े बावन तोला चांदी की रक़म या इतनी मालिय्यत का माले तिजारत हो (और येह सब हाजाते अस्लिय्या से फ़ारिग़ हों) या इतनी मालिय्यत का हाजते अस्लिय्या के इलावा सामान हो उस को **साहिबे निसाब** कहा जाता है।[1]

3 **सदक़ए फ़ित्र** वाजिब होने के लिये, "आ़क़िल व बालिग़" होना शर्त़ नहीं। बल्कि बच्चा या मजनून (या'नी पागल) भी अगर **साहिबे निसाब** हो तो उस के माल में से उन का वली (या'नी सर परस्त) अदा करे। (رَدُّالْمُحتار ج۳ص۳۶۵) "**सदक़ए फ़ित्र**" के लिये

1 : "साहिबे निसाब", "ग़नी", "फ़क़ीर", "हाजाते अस्लिय्या" वग़ैरा इस्तिलाहात की तफ़्सीली मा'लूमात फ़िक़्हे हनफ़ी की मश्हूर किताब "बहारे शरीअ़त" जिल्द अव्वल हिस्सए पन्जुम में मुलाहज़ा फ़रमाइये।

मिक़्दारे निसाब तो वोही है जो ज़कात का है जैसा कि मज़्कूर हुवा लेकिन फ़र्क़ येह है कि **सदक़ए फ़ित्र** के लिये माल के नामी (या'नी उस में बढ़ने की सलाहिय्यत) होने और साल गुज़रने की शर्त़ नहीं। इसी त़रह़ जो चीज़ें ज़रूरत से ज़ियादा हैं (मसलन उमूमी ज़रूरत से ज़ियादा कपड़े, बे सिले जोड़े, घरेलू ज़ीनत की अश्या वग़ैरहा) और उन की क़ीमत निसाब को पहुंचती हो तो उन अश्या की वज्ह से **सदक़ए फ़ित्र** वाजिब है।

(वक़ारुल फ़तावा, जि. 2, स. 386 मुलख़्ख़सन)

4 **मालिके** निसाब मर्द पर अपनी त़रफ़ से, अपने छोटे बच्चों की त़रफ़ से और अगर कोई मजनून (या'नी पागल) औलाद है (चाहे फिर वोह पागल औलाद बालिग़ ही क्यूं न हो) तो उस की त़रफ़ से भी **सदक़ए फ़ित्र** वाजिब है, हां अगर वोह बच्चा या मजनून ख़ुद साह़िबे निसाब है तो फिर उस के माल में से फ़ित्रा अदा कर दे।

(عالمگیری ج۱ص۱۹۲ مُلَخَّصاً)

5 **मर्द** साह़िबे निसाब पर अपनी बीवी या मां बाप या छोटे भाई बहन और दीगर रिश्तेदारों का **फ़ित्रा** वाजिब नहीं। (ایضاً ص۱۹۳ملخصاً)

6 **वालिद** न हो तो दादाजान वालिद साह़िब की जगह हैं। या'नी अपने फ़क़ीर व यतीम पोते पोतियों की त़रफ़ से उन पे **सदक़ए फ़ित्र** देना वाजिब है। (دُرِّمُختار ج۳ص۳۶۸)

﴾7﴿ **मां** पर अपने छोटे बच्चों की त़रफ़ से **सदक़ए फ़ित्र** देना वाजिब नहीं। (رَدُّ الْمُحتار ج ٣ ص ٣٦٨)

﴾8﴿ **बाप** पर अपनी आ़क़िल बालिग़ औलाद का **फ़ित्रा** वाजिब नहीं। (دُ رِّمُختار مع رَدِّالْمُحتار ج٣ص٣٧٠)

﴾9﴿ **किसी** सह़ीह़ शरई मजबूरी के तह़त रोज़े न रख सका या مَعَاذَ اللّٰه عَزَّوَجَلَّ बिग़ैर मजबूरी के **रमज़ानुल मुबारक** के रोज़े न रखे उस पर भी **साह़िबे निसाब** होने की सूरत में **सदक़ए फ़ित्र** वाजिब है। (رَدّالْمُحتار ج ٣ ص ٣٦٧)

﴾10﴿ **बीवी** या बालिग़ औलाद जिन का नफ़क़ा वग़ैरा (या'नी रोटी कपड़े वग़ैरा का ख़र्च) जिस शख़्स के ज़िम्मे है, वोह अगर इन की इजाज़त के बिग़ैर ही इन का **फ़ित्रा** अदा कर दे तो अदा हो जाएगा। हां अगर नफ़क़ा उस के ज़िम्मे नहीं है मसलन बालिग़ बेटे ने शादी कर के घर अलग बसा लिया और अपना गुज़ारा ख़ुद ही कर लेता है तो अब अपने नान नफ़क़े (या'नी रोटी कपड़े वग़ैरा) का ख़ुद ही ज़िम्मेदार हो गया है। लिहाज़ा ऐसी औलाद की त़रफ़ से बिग़ैर इजाज़त **फ़ित्रा** दे दिया तो अदा न होगा।

﴾11﴿ **बीवी** ने बिग़ैर हुक्मे शोहर अगर शोहर का **फ़ित्रा** अदा कर दिया तो अदा न होगा। (बहारे शरीअ़त, जि. 1, स. 398 मुलख़्ख़सन)

﴾12﴿ **ईदुल फ़ित्र** की सुब्हे सादिक़ तुलूअ़ होते वक़्त जो **साहिबे निसाब** था उसी पर **सदक़ए फ़ित्र** वाजिब है, अगर सुब्हे सादिक़ के बा'द **साहिबे निसाब** हुवा तो अब वाजिब नहीं।

(ماخوذ از عالمگیری ج١ ص١٩٢)

﴾13﴿ **सदक़ए फ़ित्र** अदा करने का अफ़्ज़ल वक़्त तो येही है कि ईद को सुब्हे सादिक़ के बा'द **ईद** की नमाज़ अदा करने से पहले पहले अदा कर दिया जाए, अगर चांदरात या **रमज़ानुल मुबारक** के किसी भी दिन बल्कि रमज़ान शरीफ़ से पहले भी अगर किसी ने अदा कर दिया तब भी **फ़ित्रा** अदा हो गया और ऐसा करना बिल्कुल जाइज़ है। (آیضاً)

﴾14﴿ **अगर** ईद का दिन गुज़र गया और **फ़ित्रा** अदा न किया था तब भी **फ़ित्रा** साक़ित़ न हुवा, बल्कि उ़म्र भर में जब भी अदा करें अदा ही है। (آیضاً)

﴾15﴿ **सदक़ए फ़ित्र** के मसारिफ़ वोही हैं जो ज़कात के हैं। या'नी जिन को ज़कात दे सकते हैं उन्हें **फ़ित्रा** भी दे सकते हैं और जिन को ज़कात नहीं दे सकते उन को **फ़ित्रा** भी नहीं दे सकते।

(آیضاص١٩٤ مُلَخّصاً)

﴾16﴿ **सादाते** किराम को **सदक़ए फ़ित्र** नहीं दे सकते। क्यूं कि येह

बनी हाशिम से हैं। **बहारे शरीअ़त** जिल्द अव्वल सफ़्हा 931 पर है : बनी हाशिम को ज़कात (फ़ित्रा) नहीं दे सकते। न ग़ैर इन्हें दे सके, न एक हाशिमी दूसरे हाशिमी को। बनी हाशिम से मुराद हज़रते अ़ली व जा'फ़र व अ़क़ील और हज़रते अ़ब्बास व हारिस बिन अ़ब्दुल मुत्तलिब की औलादें हैं।

सदक़ए फ़ित्र की मिक़्दार : गेहूं या इस का आटा या सत्तू आधा साअ़ (या'नी दो किलो में 80 ग्राम कम) (या इन की क़ीमत), खजूर या मुनक़्क़ा या जव या इस का आटा या सत्तू एक साअ़ (या'नी चार किलो में 160 ग्राम कम) (या इन की क़ीमत) येह एक **सदक़ए फ़ित्र** की मिक़्दार है। (عالمگیری ج۱ص۱۹۱، دُرِّمُختارج۳ص۳۷۲) "बहारे शरीअ़त" में है : आ'ला दरजे की तह़क़ीक़ और एह़तियात़ येह है कि : साअ़ का वज़्न तीन सो इकावन351 रुपै भर है और निस्फ़ साअ़ एक सो पछत्तर175 रुपै अठन्नी भर ऊपर। (बहारे शरीअ़त, जि. 1, स. 939)

इन चार चीज़ों के इलावा अगर किसी दूसरी चीज़ से फ़ित्रा अदा करना चाहे, मसलन चावल, जुवार, बाजरा या और कोई ग़ल्ला या और कोई चीज़ देना चाहे तो क़ीमत का लिहाज़ करना होगा या'नी वोह चीज़ आधे साअ़ गेहूं या एक साअ़ जव की क़ीमत की हो, यहां तक कि रोटी दें तो उस में भी क़ीमत का लिहाज़ किया जाएगा अगर्चे गेहूं या जव की हो। (ऐज़न)

क़ब्र में एक हज़ार अन्वार दाख़िल हों : मन्क़ूल है कि जो शख़्स **ईद** के दिन तीन सो मर्तबा "سُبْحٰنَ اللّٰهِ وَبِحَمْدِهٖ" पढ़े और फ़ौत शुदा मुसल्मानों की अरवाह़ को इस का ईसाले सवाब करे तो हर मुसल्मान की क़ब्र में **एक हज़ार अन्वार** दाख़िल होते हैं और जब वोह पढ़ने वाला ख़ुद मरेगा, **अल्लाह तआला** उस की क़ब्र में भी **एक हज़ार अन्वार** दाख़िल फ़रमाएगा। (مُكَاشَفَةُ القُلُوب ص ٣٠٨)

नमाज़े ईद से क़ब्ल की एक सुन्नत : प्यारे प्यारे इस्लामी भाइयो ! अब उन बातों का बयान किया जाता है जो ईदैन (या'नी ईदुल फ़ित्र और बक़र ईद दोनों) में सुन्नत हैं। चुनान्चे ह़ज़रते सय्यिदुना बुरैदा رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْهُ से मरवी है कि ताजदारे रिसालत, शहन्शाहे नुबुव्वत, पैकरे जूदो सख़ावत, सरापा रह़मत, मह़बूबे रब्बुल इ़ज़्ज़त صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم **ईदुल फ़ित्र** के दिन कुछ खा कर नमाज़ के लिये तशरीफ़ ले जाते थे और **ईदुल अज़्ह़ा** के रोज़ उस वक़्त तक नहीं खाते थे जब तक नमाज़ से फ़ारिग़ न हो जाते। (ترمذی ج ٢ ص ٧٠ حديث ٥٤٢) और "बुख़ारी" की रिवायत ह़ज़रते सय्यिदुना अनस رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْهُ से है कि ईदुल फ़ित्र के दिन (नमाज़े ईद के लिये) तशरीफ़ न ले जाते जब तक चन्द **खजूरें** न तनावुल फ़रमा लेते और वोह ताक़ होतीं। (بُخاری ج ١ ص ٣٢٨ حديث ٩٥٣) ह़ज़रते सय्यिदुना अबू हुरैरा رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْهُ से

रिवायत है कि नबिय्ये रह़मत, शफ़ीए़ उम्मत, शहन्शाहे नुबुव्वत, ताजदारे रिसालत صَلَّى اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ईद को (नमाज़े ईद के लिये) एक रास्ते से तशरीफ़ ले जाते और दूसरे रास्ते से वापस तशरीफ़ लाते।

(ترمذی ج۲ص۶۹حدیث۵۴۱)

नमाज़े ईद का त़रीक़ा (ह़नफ़ी)

पहले इस त़रह़ निय्यत कीजिये : "मैं निय्यत करता हूं दो रक्अ़त नमाज़ **ईदुल फ़ित्र** (या **ईदुल अज़्हा**) की, साथ छ[6] ज़ाइद तक्बीरों के, वासिते़ **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ के, पीछे इस इमाम के" फिर कानों तक हाथ उठाइये और اَللّٰہُ اَکْبَر कह कर ह़स्बे मा'मूल नाफ़ के नीचे बांध लीजिये और **सना** पढ़िये। फिर कानों तक हाथ उठाइये और اَللّٰہُ اَکْبَر कहते हुए लटका दीजिये, फिर हाथ कानों तक उठाइये और اَللّٰہُ اَکْبَر कह कर लटका दीजिये, फिर कानों तक हाथ उठाइये और اَللّٰہُ اَکْبَر कह कर बांध लीजिये या'नी **पहली तक्बीर** के बा'द हाथ बांधिये इस के बा'द **दूसरी** और **तीसरी तक्बीर** में लटकाइये और **चौथी** में हाथ बांध लीजिये, इस को यूं याद रखिये कि **जहां क़ियाम में तक्बीर के बा'द कुछ पढ़ना है वहां हाथ बांधने हैं और जहां नहीं पढ़ना वहां हाथ लटकाने हैं**। फिर इमाम **तअ़व्वुज़** और **तस्मिया** आहिस्ता पढ़ कर **अल ह़म्द शरीफ़** और सूरह जह्‌र (या'नी बुलन्द आवाज़) के साथ पढ़े,

फिर रुकूअ़ करे। दूसरी रक्अ़त में पहले **अल ह़म्द शरीफ़** और सूरह जह्र के साथ पढ़े, फिर तीन बार कान तक हाथ उठा कर اَللّٰهُ اَكْبَر कहिये और हाथ न बांधिये और चौथी बार बिग़ैर हाथ उठाए اَللّٰهُ اَكْبَر कहते हुए रुकूअ़ में जाइये और क़ाइदे के मुत़ाबिक़ नमाज़ मुकम्मल कर लीजिये। हर दो तक्बीरों के दरमियान तीन बार "سُبْحٰنَ اللّٰه" कहने की मिक्दार चुप खड़ा रहना है। (माख़ूज़न बहारे शरीअ़त, जि. 1, स. 781, دُرِّمُختار ج٣ ص٦١ वग़ैरा)

ईद की अधूरी जमाअ़त मिली तो....? : पहली रक्अ़त में इमाम के तक्बीरें कहने के बा'द मुक़्तदी शामिल हुवा तो उसी वक़्त (तक्बीरे तह़रीमा के इ़लावा मज़ीद) **तीन तक्बीरें** कह ले अगर्चे इमाम ने क़िराअत शुरूअ़ कर दी हो और **तीन** ही कहे अगर्चे इमाम ने तीन से ज़ियादा कही हों और अगर उस ने तक्बीरें न कहीं कि इमाम रुकूअ़ में चला गया तो खड़े खड़े न कहे बल्कि इमाम के साथ रुकूअ़ में जाए और रुकूअ़ में तक्बीरें कह ले और अगर इमाम को रुकूअ़ में पाया और ग़ालिब गुमान है कि तक्बीरें कह कर इमाम को रुकूअ़ में पा लेगा तो खड़े खड़े तक्बीरें कहे फिर रुकूअ़ में जाए वरना اَللّٰهُ اَكْبَر कह कर रुकूअ़ में जाए और रुकूअ़ में तक्बीरें कहे फिर अगर उस ने रुकूअ़ में तक्बीरें पूरी न की थीं कि इमाम ने सर उठा लिया तो बाक़ी साक़ित़ हो गईं

(या'नी बक़िय्या तक्बीरें अब न कहे) और अगर इमाम के रुकूअ़ से उठने के बा'द शामिल हुवा तो अब तक्बीरें न कहे बल्कि (इमाम के सलाम फैरने के बा'द) जब अपनी (बक़िय्या) पढ़े उस वक़्त कहे। और रुकूअ़ में जहां तक्बीर कहना बताया गया उस में हाथ न उठाए और अगर दूसरी रक्अ़त में शामिल हुवा तो पहली रक्अ़त की तक्बीरें अब न कहे बल्कि जब अपनी फ़ौत शुदा पढ़ने खड़ा हो उस वक़्त कहे। दूसरी रक्अ़त की तक्बीरें अगर इमाम के साथ पा जाए फ़बिहा (या'नी तो बेहतर)। वरना इस में भी वोही तफ़्सील है जो पहली रक्अ़त के बारे में मज़्कूर हुई। (बहारे शरीअ़त, जि. 1, स. 782, دُرِّمُختار ج۳ص٦٤، عالمگیری ج۱ص۱۵۱)

ईद की जमाअ़त न मिली तो क्या करे ? : इमाम ने नमाज़े ईद पढ़ ली और कोई शख़्स बाक़ी रह गया ख़्वाह वोह शामिल ही न हुवा था या शामिल तो हुवा मगर उस की नमाज़ फ़ासिद हो गई तो अगर दूसरी जगह मिल जाए पढ़ ले वरना (बिग़ैर जमाअ़त के) नहीं पढ़ सकता। हां बेहतर येह है कि येह शख़्स चार रक्अ़त चाश्त की नमाज़ पढ़े।

ईद के ख़ुत्बे के अह़काम : नमाज़ के बा'द इमाम दो ख़ुत्बे पढ़े और **ख़ुत्बए जुमुआ** में जो चीज़ें सुन्नत हैं इस में भी सुन्नत हैं और जो वहां मक्रूह यहां भी मक्रूह। सिर्फ़ दो बातों में फ़र्क़ है एक येह कि **जुमुआ** के पहले ख़ुत्बे से पेशतर ख़त़ीब का बैठना सुन्नत था और इस

में न बैठना सुन्नत है। दूसरे येह कि इस में पहले ख़ुत़्बे से पेश्तर 9 बार और दूसरे के पहले 7 बार और मिम्बर से उतरने के पहले 14 बार اَللّٰهُ اَكْبَر कहना सुन्नत है और जुमुआ में नहीं।

(बहारे शरीअ़त, जि. 1, स. 783, دُرِّمُختار ج٣ص٦٧، عالمگیری ج١ص١٥٠)

"दे दो ईदी में ग़म मदीने का" के बीस हुरूफ़ की निस्बत से ईद के 20 मदनी फूल

ईद के दिन येह उमूर मुस्तह़ब हैं :

❁ ह़जामत बनवाना (मगर ज़ुल्फ़ें बनवाइये न कि अंग्रेज़ी बाल) ❁ नाख़ुन तरश्वाना ❁ ग़ुस्ल करना ❁ मिस्वाक करना (येह उस के इ़लावा है जो वुज़ू में की जाती है) ❁ अच्छे कपड़े पहनना, नए हों तो नए वरना धुले हुए ❁ ख़ुश्बू लगाना ❁ अंगूठी पहनना (जब कभी अंगूठी पहनिये तो इस बात का ख़ास ख़याल रखिये कि सिर्फ़ साढ़े चार माशे (या'नी चार ग्राम 374 मिली ग्राम) से कम वज़्न चांदी की एक ही अंगूठी पहनिये, एक से ज़ियादा न पहनिये और उस एक अंगूठी में भी नगीना एक ही हो, एक से ज़ियादा नगीने न हों, बिग़ैर नगीने की भी मत पहनिये, नगीने के वज़्न की कोई क़ैद नहीं, चांदी का छल्ला या चांदी के बयान कर्दा वज़्न वग़ैरा के इ़लावा किसी भी धात की अंगूठी या छल्ला मर्द नहीं पहन सकता) ❁ नमाज़े फ़ज्र

मस्जिदे मह़ल्ला में पढ़ना ۞ **ईदुल फ़ित्र** की नमाज़ को जाने से पहले चन्द खजूरें खा लेना, तीन, पांच, सात या कमो बेश मगर ताक़ हों। खजूरें न हों तो कोई मीठी चीज़ खा ले। अगर नमाज़ से पहले कुछ भी न खाया तो गुनाह न हुवा मगर इशा तक न खाया तो इताब (या'नी मलामत) किया जाएगा ۞ नमाज़े ईद, ईदगाह में अदा करना ۞ ईदगाह पैदल चलना ۞ सुवारी पर भी जाने में ह़रज नहीं मगर जिस को पैदल जाने पर क़ुदरत हो उस के लिये पैदल जाना अफ़्ज़ल है और वापसी पर सुवारी पर आने में ह़रज नहीं ۞ नमाज़े ईद के लिये ईदगाह जल्द चले जाना और एक रास्ते से जाना और दूसरे रास्ते से वापस आना ۞ ईद की नमाज़ से पहले **सदक़ए फ़ित्र** अदा करना ۞ ख़ुशी ज़ाहिर करना ۞ कसरत से सदक़ा देना ۞ ईदगाह को इत़्मीनान व वक़ार और नीची निगाह किये जाना ۞ आपस में मुबारक बाद देना ۞ बा'दे नमाज़े ईद मुसाफ़ह़ा (या'नी हाथ मिलाना) और मुआ़नक़ा (या'नी गले मिलना) जैसा कि उ़मूमन मुसल्मानों में राइज है बेहतर है कि इस में इज़्हारे मसर्रत है, मगर **अम्रद** (या'नी ख़ूब सूरत लड़के) से गले मिलना मह़ल्ले फ़ितना है ۞ **ईदुल फ़ित्र** की नमाज़ के लिये जाते हुए रास्ते में आहिस्ता से तक्बीर कहिये और नमाज़े ईदे अज़्ह़ा के लिये जाते हुए रास्ते में बुलन्द आवाज़ से तक्बीर कहिये। तक्बीर येह है :

اَللّٰهُ اَكْبَرُ ؕ اَللّٰهُ اَكْبَرُ ؕ لَاۤ اِلٰهَ اِلَّا اللّٰهُ وَاللّٰهُ اَكْبَرُ ؕ اَللّٰهُ اَكْبَرُ ؕ وَلِلّٰهِ الْحَمْد

तरजमा : अल्लाह عَزَّوَجَلَّ सब से बड़ा है, **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ सब से बड़ा है, **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ के सिवा कोई इबादत के लाइक़ नहीं और **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ सब से बड़ा है, **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ सब से बड़ा है और **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ ही के लिये तमाम ख़ूबियां हैं।

(बहारे शरीअ़त, जि. 1, स. 779 ता 781, عالمگیری ج۱ ص۱٤٩،١٥٠ वग़ैरा)

बक़र ईद का एक मुस्तहब : ईदे अज़्हा (या'नी बक़र ईद) तमाम अह्काम में **ईदुल फ़ित्र** (या'नी मीठी ईद) की त़रह़ है। सिर्फ़ बा'ज़ बातों में फ़र्क़ है, मसलन इस में (या'नी बक़र ईद में) मुस्तह़ब येह है कि नमाज़ से पहले कुछ न खाए चाहे क़ुरबानी करे या न करे और अगर खा लिया तो कराहत भी नहीं। (عالمگیری ج۱ ص١٥٢)

मैं ईद की नमाज़ भी नहीं पढ़ता था : प्यारे प्यारे इस्लामी भाइयो ! हर साल **रमज़ानुल मुबारक** में ए'तिकाफ़ की सआ़दत और माहे **रमज़ानुल मुबारक** की ख़ूब बरकतें लूटिये फिर ईद में **आ़शिक़ाने रसूल** के साथ मदनी क़ाफ़िलों में सुन्नतों भरा सफ़र इख़्तियार कीजिये। तरग़ीब व तह़रीस की ख़ातिर एक **मदनी बहार** आप के गोश गुज़ार करता हूं। चुनान्चे एक इस्लामी भाई (उ़म्र तक़रीबन 25 बरस) एक गेरेज (Garage) पर काम करते थे। (अगर्चे फ़ी नफ़्सिही गेरेज या'नी गाड़ियों की

फ़रमाने मुस्तफ़ा صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم : उस शख़्स की नाक ख़ाक आलूद हो जिस के पास मेरा ज़िक्र हो और वोह मुझ पर दुरूदे पाक न पढ़े। (ترمذی)

मरम्मत का काम ग़लत़ नहीं, मगर आज कल गुनाहों भरे ह़ालात हैं। जिन को वासित़ा पड़ा होगा वोह जानते होंगे कि अक्सर गेरेज का माह़ोल किस क़दर गन्दा होता है, फ़ी ज़माना गेरेज में काम करने वालों के लिये ह़लाल रोज़ी का ह़ुसूल जूए शीर लाने के मुतरादिफ़ है।) गेरेज के गन्दे माह़ोल की नहूसत के सबब उन को पन्ज वक़्ता नमाज़ क़ुज़ा जुमुआ़ बल्कि **ईदैन** की नमाज़ों की भी तौफ़ीक़ नहीं थी, रात गए तक T.V. पर मुख़्तलिफ़ फ़िल्में डिरामे देखने में मश्ग़ूल रहते बल्कि हर क़िस्म की छोटी बड़ी बुराइयां उन के अन्दर मौजूद थीं। उन की इस्लाह़ के अस्बाब यूं हुए कि **मक्तबतुल मदीना** से जारी होने वाले सुन्नतों भरे बयान **"अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ **की ख़ुफ़्या तदबीर"** की केसिट सुनी जिस ने उन्हें सर ता पा हिला कर रख दिया। इस के बा'द **रमज़ानुल मुबारक** में **ए'तिकाफ़** की सआ़दत ह़ासिल हुई और आ़शिक़ाने रसूल के साथ तीन दिन के **मदनी क़ाफ़िले** में सफ़र का शरफ़ मिला। اَلْحَمْدُ لِلّٰه عَزَّوَجَلَّ वोह **दा'वते इस्लामी** के मदनी माह़ोल से वाबस्ता हो गए, पांचों वक़्त नमाज़ों की पाबन्दी है, **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ का करोड़हा करोड़ एह़सान कि वोह इन्सान जो **ईद** के बहाने भी मस्जिद का रुख़ नहीं करता था येह बयान देते वक़्त तब्लीग़े क़ुरआनो सुन्नत की आ़लमगीर ग़ैर सियासी तह़रीक **दा'वते इस्लामी** की तन्ज़ीमी तरकीब के मुत़ाबिक़ एक मस्जिद की ज़ैली मुशावरत के निगरान की

हैसिय्यत से बे नमाज़ियों को नमाज़ी बनाने की जुस्तजू में रहता है।

भाई गर चाहते हो नमाज़ें पढ़ूं, मदनी माह़ोल में कर लो तुम ए'तिकाफ़
नेकियों में तमन्ना है आगे बढ़ूं, मदनी माह़ोल में कर लो तुम ए'तिकाफ़

(वसाइले बख़्शिश, स. 640)

صَلُّوا عَلَى الْحَبِيب ! صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلٰى مُحَمَّد

या रब्बे मुस्त़फ़ा عَزَّوَجَلَّ ! हमें **ईदे सईद** की ख़ुशियां सुन्नत के मुत़ाबिक़ मनाने की तौफ़ीक़ अ़त़ा फ़रमा। और हमें ह़ज शरीफ़ और दियारे मदीना व ताजदारे मदीना صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم की **दीद की मदनी ईद** बार बार नसीब फ़रमा। اٰمِين بِجَاهِ النَّبِيِّ الْاَمِين صَلَّى اللهُ تعالٰى عليه واٰله وسلّم

तेरी जब कि दीद होगी जभी मेरी ईद होगी
मेरे ख़्वाब में तू आना मदनी मदीने वाले

(वसाइले बख़्शिश, स. 424)

मुझ गुनहगार पर भी करम के छींटे पड़े : एक इस्लामी भाई (उ़म्र 22 साल) बे नमाज़ी, फ़िल्मों डिरामों के शौक़ीन और बिगड़े हुए नौ जवान थे, बुरे हम नशीनों के साथ फ़ेशन की अंधेरियों में भटक रहे थे, बुरी सोह़बत की वज्ह से ज़िन्दगी के शबो रोज़ गुनाहों में बसर हो रहे थे। हिलाले **माहे रमज़ानुल मुबारक** (1426 सि.हि.) आस्माने

दुन्या पर ज़ाहिर हुवा, रह़मते ख़ुदावन्दी عَزَّوَجَلَّ की बारिशें बरसने लगीं, **उन पर भी करम के छींटे पड़े** और वोह **इज्तिमाई ए'तिकाफ़** में **रमज़ानुल मुबारक** के आख़िरी अ़शरे में **मो'तकिफ़** हो गए। उन की ख़ज़ां रसीदा ज़िन्दगी की शाम में सुब्ह़े बहारां के मदनी फूल खिलने लगे, उन को तौबा की तौफ़ीक़ नसीब हुई, اَلْحَمْدُ لِلّٰه عَزَّوَجَلَّ वोह नमाज़ी बन गए, दाढ़ी और इमामा शरीफ़ सजाने की सआ़दत मिल गई, तब्लीग़े क़ुरआनो सुन्नत की आ़लमगीर ग़ैर सियासी तह़रीक, **दा'वते इस्लामी** के सुन्नतों की तरबियत के एक माह के **मदनी क़ाफ़िले** में **आ़शिक़ाने रसूल** के साथ सुन्नतों भरा सफ़र नसीब हुवा, اَلْحَمْدُ لِلّٰه عَزَّوَجَلَّ ता दमे तह़रीर एक मस्जिद के ज़ैली क़ाफ़िला ज़िम्मेदार की हैसिय्यत से **दा'वते इस्लामी** के मदनी कामों में ह़िस्सा लेने की सआ़दत ह़ासिल कर रहे हैं।

मरज़े इस्यां से छुटकारा चाहो अगर, मदनी माह़ोल में कर लो तुम ए'तिकाफ़
आओ आओ इधर आ भी जाओ इधर, मदनी माह़ोल में कर लो तुम ए'तिकाफ़

(वसाइले बख़्शिश, स. 639)

صَلُّوْا عَلَى الْحَبِيْب! صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلٰى مُحَمَّد

रिज़्क़ में बरकत का बे मिसाल वज़ीफ़ा

एक सहाबी رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ने अ़र्ज़ की : **या रसूलल्लाह** صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰی عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ! दुन्या ने मुझ से पीठ फैर ली । फ़रमाया : "क्या वोह **तस्बीह़** तुम्हें याद नहीं जो तस्बीह़ है फ़िरिश्तों और मख़्लूक़ की जिस की बरकत से **रोज़ी** दी जाती है, जब सुब्हे सादिक़ तुलूअ़ हो तो येह तस्बीह़ एक सो बार पढ़ा करो, "سُبْحٰنَ اللّٰهِ وَبِحَمْدِهٖ، سُبْحٰنَ اللّٰهِ الْعَظِيْمِ، اَسْتَغْفِرُاللّٰه" दुन्या तेरे पास ज़लील हो कर आएगी ।" वोह शख़्स चला गया कुछ मुद्दत ठहर कर दोबारा ह़ाज़िर हुवा, अ़र्ज़ की : **या रसूलल्लाह** صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰی عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ! दुन्या मेरे पास इस कसरत से आई, मैं ह़ैरान हूं, कहां उठाऊं कहां रखूं !

(الخصائصُ الکُبرٰی لِلسُّیُوطی ج۲ ص۲۹۹ مُلَخَّصاً)

आ'ला ह़ज़रत رَحْمَةُ اللّٰهِ تَعَالٰی عَلَيْه फ़रमाते हैं : इस तस्बीह़ का **विर्द** ह़त्तल इम्कान तुलूए़ सुब्हे सादिक़ के साथ हो, वरना सुब्ह़ से पहले, जमाअ़त क़ाइम हो जाए तो उस में शरीक हो कर बा'द को अ़दद पूरा कीजिये और जिस दिन क़ब्ले नमाज़ भी न हो सके तो ख़ैर तुलूए़ शम्स (या'नी सूरज निकलने) से पहले । (मल्फ़ूज़ाते आ'ला ह़ज़रत, स. 128, मुलख़्ख़सन)

“या ग़फ़्फ़ार” के छ[6] हुरूफ़ की निस्बत से

इमामे के मुतअ़ल्लिक़ 6 फ़रामीने मुस्त़फ़ा صَلَّى اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم

❁ इमामे के साथ दो रक्अ़त नमाज़ बिग़ैर इमामे की 70 रक्अ़तों से अफ़्ज़ल हैं[1] ❁ टोपी पर इमामा हमारे और मुश्रिकीन के दरमियान फ़र्क़ है हर पेच पर कि मुसल्मान अपने सर पर देगा उस पर रोज़े क़ियामत एक नूर अ़त़ा किया जाएगा[2] ❁ बेशक **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ और उस के फ़िरिश्ते दुरूद भेजते हैं जुमुए़ के रोज़ इमामे वालों पर[3] ❁ इमामे के साथ नमाज़ दस हज़ार नेकी के बराबर है[4] ❁ इमामे के साथ एक जुमुआ़ बिग़ैर इमामे के 70 जुमुओं के बराबर है[5] ❁ इमामे अ़रब के ताज हैं तो इमामा बांधो तुम्हारा वक़ार बढ़ेगा और जो इमामा बांधे उस के लिये हर पेच पर एक नेकी है[6] ।

مـــدينـــه

۱: اَلْفِردَوس بماْثور الْخِطاب ج۲ص۲٦٥حديث۳۲۳۳۔ ۲: اَلْجامِعُ الصَّغِير لِلسُّيُوطِی ص ۳٥۳ حديث٥۷۲٥۔ ۳: اَلْفِردَوس بماْثور الْخِطاب ج۱ص۱٤۷ حديث٥۲۹۔ ٤: ايضاً ج۲ص ٤۰٦ حديث۳۸۰٥، فتاوٰی رضويه مُخَرَّجه ج٦ص ۲۱۳۔ ٥: ابن عساکِر ج۳۷ ص۳٥٥۔ ٦: کَنْزُ الْعُمّال ج۱٥ص۱۳۳ رقم ٤۱۱۳۸۔

नफ़्ल रोज़ों के फ़ज़ाइल

SINGLE 1304 A

फ़रमाने मुस्तफ़ा صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم : जो मुझ पर रोज़े जुमुआ दुरूद शरीफ़ पढ़ेगा मैं क़ियामत के दिन उस की शफ़ाअ़त करूंगा। (جمع الجوامع)

اَلْحَمْدُ لِلّٰهِ رَبِّ الْعٰلَمِيْنَ وَالصَّلٰوةُ وَالسَّلَامُ عَلٰى سَيِّدِ الْمُرْسَلِيْنَ
اَمَّا بَعْدُ فَاَعُوْذُ بِاللّٰهِ مِنَ الشَّيْطٰنِ الرَّجِيْمِ ؕ بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ ؕ

नफ़्ल रोज़ों के फ़ज़ाइल

दुरूद शरीफ़ की फ़ज़ीलत : फ़रमाने मुस्तफ़ा صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم : क़ियामत के रोज़ **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ के अ़र्श के सिवा कोई साया नहीं होगा, तीन शख़्स अ़र्शे इलाही के साए में होंगे। अ़र्ज़ की गई : **या रसूलल्लाह** صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ! वोह कौन लोग होंगे ? इर्शाद फ़रमाया : (1) वोह शख़्स जो मेरे उम्मती की परेशानी दूर करे (2) मेरी **सुन्नत** ज़िन्दा करने वाला (3) मुझ पर कसरत से **दुरूद शरीफ़** पढ़ने वाला।

(اَلْبُدُوْرُ السَّافِرَة ص ۱۳۱ حديث ۳٦٦)

صَلُّوْا عَلَى الْحَبِيْب ! صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلٰى مُحَمَّد

नफ़्ल रोज़ों के दीनी व दुन्यवी फ़वाइद : प्यारे प्यारे इस्लामी भाइयो ! फ़र्ज़ रोज़ों के इलावा **नफ़्ल रोज़ों** की भी आ़दत बनानी चाहिये कि इस में बे शुमार दीनी व दुन्यवी फ़वाइद हैं और सवाब तो इतना है कि मत पूछो बात ! आदमी का जी चाहे कि बस रोज़े रखते ही चले जाएं। **दीनी फ़वाइद** में ईमान की हिफ़ाज़त, जहन्नम से नजात

फ़रमाने मुस्तफ़ा صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم : जिस के पास मेरा ज़िक्र हुवा और उस ने मुझ पर दुरूदे पाक न पढ़ा उस ने जन्नत का रास्ता छोड़ दिया। (طبرانی)

और जन्नत का हुसूल शामिल हैं और जहां तक दुन्यवी फ़वाइद का तअ़ल्लुक़ है तो दिन के अन्दर खाने पीने में सर्फ़ होने वाले वक़्त और अख़राजात की बचत, पेट की इस्लाह़ और बहुत सारे अमराज़ से हिफ़ाज़त का सामान है। और तमाम फ़वाइद की अस्ल येह है कि रोज़ेदार से **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ राज़ी होता है।

रोज़ादारों के लिये बख़्शिश की बिशारत : अल्लाह तबारक व तआला पारह 22 **सूरतुल अह़ज़ाब** की आयत नम्बर 35 में इर्शाद फ़रमाता है :

وَالصّٰٓىِٕمِيْنَ وَالصّٰٓىِٕمٰتِ وَالْحٰفِظِيْنَ فُرُوْجَهُمْ وَالْحٰفِظٰتِ وَالذّٰكِرِيْنَ اللّٰهَ كَثِيْرًا وَّالذّٰكِرٰتِ ۙ اَعَدَّ اللّٰهُ لَهُمْ مَّغْفِرَةً وَّ اَجْرًا عَظِيْمًا ﴿۳۵﴾

(پ۲۲، الاحزاب:۳۵)

तरजमए कन्ज़ुल ईमान : और रोज़े वाले और रोज़े वालियां और अपनी पारसाई निगाह रखने वाले और निगाह रखने वालियां और **अल्लाह** को बहुत याद करने वाले और याद करने वालियां इन सब के लिये **अल्लाह** ने बख़्शिश और बड़ा सवाब तय्यार कर रखा है।

وَالصّٰٓىِٕمِيْنَ وَالصّٰٓىِٕمٰتِ (**तरजमा :** और रोज़े वाले और रोज़े वालियां) की तफ़्सीर में ह़ज़रते अ़ल्लामा अबुल बरकात **अ़ब्दुल्लाह** बिन अह़मद नसफ़ी رَحْمَةُ اللّٰهِ تَعَالٰى عَلَيْه लिखते हैं : इस में फ़र्ज़ और नफ़्ल दोनों क़िस्म के

रोज़े दाख़िल हैं। मन्क़ूल है : जिस ने हर महीने अय्यामे बीज़ (या'नी चांद की 13, 14, 15 तारीख़) के तीन रोज़े रखे वोह रोज़े रखने वालों में शुमार किया जाता है। (تفسیرِ مَدارِك ج٢ص٣٤٥)

अल्लाह तबारक व तआला पारह 29 **सूरतुल हाक़्क़ह** की आयत नम्बर 24 में इर्शाद फ़रमाता है :

كُلُوْا وَاشْرَبُوْا هَنِيْٓـًٔۢا بِمَآ اَسْلَفْتُمْ فِي الْاَيَّامِ الْخَالِيَةِ ﴿۲۴﴾

तरजमए कन्ज़ुल ईमान : खाओ और पियो रचता हुवा सिला उस का जो तुम ने गुज़रे दिनों में आगे भेजा।

हज़रते शाह अ़ब्दुल अ़ज़ीज़ मुहद्दिस देहलवी عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللّٰهِ الْقَوِی आयते करीमा के इस हिस्से : (गुज़रे हुए दिनों में) के तह़त लिखते हैं : या'नी दुन्या के दिनों में से गुज़श्ता दिनों में या उन दिनों में जो कि खाने और पीने से ख़ाली थे और वोह **रमज़ानुल मुबारक** के रोज़ों के दिन हैं और दूसरे मस्नून रोज़ों के अय्याम जैसे अय्यामे बीज़ (या'नी चांद की 13, 14, 15 तारीख़), अ़रफ़ा (या'नी 9 ज़ुल हिज्जतिल ह़राम) का दिन, रोज़े आ़शूरा, पीर का दिन, जुमे'रात का दिन और शबे बराअत का दिन वग़ैरा। (تفسیرِ عزیزی ج٢ص١٠٣) **हज़रते** सय्यिदुना इमाम मुजाहिद عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللّٰهِ الْوَاحِد फ़रमाते हैं : فِي الْاَيَّامِ الْخَالِيَةِ ﴿۲۴﴾ (गुज़रे हुए दिनों में) से मुराद रोज़ों के दिन हैं अब मत़लब येह हुवा कि तुम खाओ और पियो

उस के बदले में जो तुम ने रोज़े के दिनों में **अल्लाह तआला** की रिज़ा में ख़ुद को खाने पीने से रोका। (लिहाज़ा जन्नत में खाना पीना दुन्या में खाने पीने से रुकने का बदल हो जाएगा) (تفسیر رُوحُ البَیان ج۷ص۱۴۳)

"माहे रमज़ान मुबारक" के तेरह हुरूफ़ की निस्बत से नफ़्ली रोज़ों के फ़ज़ाइल पर 13 फ़रामीने मुस्तफ़ा صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم

(1) जन्नत का अनोखा दरख़्त : जिस ने **एक नफ़्ल रोज़ा** रखा उस के लिये **जन्नत** में एक दरख़्त लगा दिया जाएगा जिस का फल **अनार** से छोटा और **सेब** से बड़ा होगा, वोह शहद जैसा मीठा और ख़ुश ज़ाएक़ा होगा, **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ बरोज़े क़ियामत रोज़ादार को उस दरख़्त का फल खिलाएगा। (مُعجَم کَبِیر ج۱۸ص۳۶۶حدیث۹۳۵)

(2) 40 साल का फ़ासिला दोज़ख़ से दूरी : जिस ने सवाब की उम्मीद रखते हुए **एक नफ़्ल रोज़ा** रखा **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ उसे दोज़ख़ से **चालीस साल** (की मसाफ़त के बराबर) दूर फ़रमा देगा। (جَمعُ الجَوامع ج۷ص۱۹۰حدیث۲۲۲۵۱)

(3) दोज़ख़ से 50 साल की मसाफ़त तक दूरी : जिस ने रिज़ाए इलाही عَزَّوَجَلَّ के लिये एक दिन का **नफ़्ल रोज़ा** रखा तो **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ उस के और दोज़ख़ के दरमियान एक तेज़ रफ़्तार सुवार की पचास

सालह मसाफ़त (या'नी फ़ासिले) तक दूर फ़रमा देगा।

(كَنز العُمّال ج٨ ص٢٠٥ حديث ٢٤١٤٩)

(4) ज़मीन भर सोने से भी ज़ियादा सवाब : अगर किसी ने **एक दिन नफ़्ल रोज़ा** रखा और **ज़मीन भर सोना** उसे दिया जाए जब भी इस का सवाब पूरा न होगा, इस का सवाब तो क़ियामत ही के दिन मिलेगा।

(أبو يَعْلى ج٥ ص٣٥٣ حديث ٦١٠٤)

(5) जहन्नम से बहुत ज़ियादा दूरी : जिस ने **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ की राह में एक दिन का फ़र्ज़ रोज़ा रखा, **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ उसे जहन्नम से इतना दूर कर देगा जितना सातों ज़मीनों और आस्मानों के माबैन (या'नी दरमियान) फ़ासिला है। और जिस ने एक दिन का नफ़्ल रोज़ा रखा **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ उसे जहन्नम से इतना दूर कर देगा जितना ज़मीन व आस्मान का दरमियानी फ़ासिला है।

(مَجْمَعُ الزَّوائِد ج٣ ص٤٤٥ حديث ٥١٧٧)

(6) कव्वा बचपन ता बुढ़ापा उड़ता रहे यहां तक कि....:

जिस ने एक दिन का रोज़ा **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ की रिज़ा ह़ासिल करने के लिये रखा, **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ उसे जहन्नम से इतना दूर कर देगा जितना कि एक **कव्वा** जो अपने बचपन से उड़ना शुरूअ़ करे यहां तक कि बूढ़ा हो कर मर जाए। (أبو يَعْلى ج١ ص٣٨٣ حديث ٩١٧)

(7) रोज़े जैसा कोई अ़मल नहीं : ह़ज़रते सय्यिदुना अबू उमामा

رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ फ़रमाते हैं : मैं ने अ़र्ज़ की : "या रसूलल्लाह صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ! मुझे ऐसा अ़मल बताइये जिस के सबब जन्नत में दाख़िल हो जाऊं।" फ़रमाया : "रोज़े को ख़ुद पर लाज़िम कर लो क्यूं कि इस की मिस्ल कोई अ़मल नहीं।" रावी कहते हैं : "ह़ज़रते सय्यिदुना अबू उमामा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ के घर दिन के वक़्त मेहमान की आमद के इलावा कभी धूआं न देखा गया (या'नी आप दिन को खाना खाते ही न थे रोज़ा रखते थे)।" (الاحسان بترتیب صحیح ابن حبان ج ٥ ص ١٧٩ حدیث ٣٤١٦)

8 रोज़ा रखो तन्दुरुस्त हो जाओगे : صُوْمُوْا تَصِحُّوا۔

या'नी रोज़ा रखो तन्दुरुस्त हो जाओगे। (مُعْجَم اَوْسَط ج٦ص١٤٦ حدیث٨٣١٢)

9 मह़शर में रोज़ादारों के मज़े : **क़ियामत** के दिन जब

रोज़ेदार क़ब्रों से निकलेंगे तो वोह रोज़े की बू से पहचाने जाएंगे, उन के लिये दस्तर ख़्वान लगाया जाएगा और उन्हें कहा जाएगा : "खाओ ! कल तुम भूके थे, पियो ! कल तुम प्यासे थे, आराम करो ! कल तुम थके हुए थे।" पस वोह खाएंगे पियेंगे और आराम करेंगे ह़ालां कि लोग ह़िसाब की मशक़्क़त और प्यास में मुब्तला होंगे। (جَمْعُ الْجَوامِع ج١ص٣٣٤ حدیث٢٤٦٢)

10 ......तो वोह जन्नत में दाख़िल होगा : जो لَآ اِلٰہَ اِلَّا اللّٰہُ

कहते हुए इन्तिक़ाल कर गया तो वोह जन्नत में दाख़िल होगा। और जिस ने किसी दिन **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ की रिज़ा के लिये **रोज़ा** रखा, इसी पर उस का

फ़रमाने मुस्त़फ़ा صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم : जिस ने मुझ पर रोज़े जुमुआ़ दो सो बार दुरूदे पाक पढ़ा उस के दो सो साल के गुनाह मुआ़फ़ होंगे। (جمع الجوامع)

ख़ातिमा हुवा तो वोह दाख़िले जन्नत होगा। और जिस ने **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ की रिज़ा के लिये **सदक़ा** किया, इसी पर उस का ख़ातिमा हुवा तो वोह दाख़िले जन्नत होगा। (مُسند امام احمد ج۹ ص۹۰ حدیث۲۳۳۸۴)

(11) जब तक रोज़ेदार के सामने खाना खाया जाता है : हज़रते सय्यिदतुना उम्मे उ़मारा बिन्ते का'ब رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہَا फ़रमाती हैं : सुल्त़ाने दो जहान, शहन्शाहे कौनो मकान, रह़मते आ़लमिय्यान صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم मेरे यहां तशरीफ़ लाए, मैं ने खाना पेश किया तो इर्शाद फ़रमाया : "तुम भी खाओ !" मैं ने अ़र्ज़ की : "मैं रोज़े से हूं।" तो फ़रमाया : "जब तक रोज़ेदार के सामने खाना खाया जाता है फ़िरिश्ते उस रोज़ादार के लिये दुआ़ए मग़्फ़िरत करते रहते हैं।"

(تِرمذی ج۲ ص۲۰۵ حدیث۷۸۵)

(12) हड्डियां तस्बीह़ करती हैं : सरकारे मदीना صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने ह़ज़रते बिलाल رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ से इर्शाद फ़रमाया : "ऐ बिलाल ! (رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ) आओ नाश्ता करें।" तो (ह़ज़रते सय्यिदुना) बिलाल رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ ने अ़र्ज़ की : "मैं रोज़े से हूं।" तो **रसूलुल्लाह** صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया : "हम अपना रिज़्क़ खा रहे हैं और बिलाल (رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ) का रिज़्क़ जन्नत में बढ़ रहा है।" फिर फ़रमाया : "ऐ बिलाल ! क्या तुम्हें मा'लूम है कि जितनी देर तक रोज़ादार के सामने कुछ

फ़रमाने मुस्तफ़ा صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم : मुझ पर दुरूद शरीफ़ पढ़ो, अल्लाह عَزَّوَجَلَّ तुम पर रहमत भेजेगा।

खाया जाए तब तक उस की हड्डियां तस्बीह़ करती हैं, उसे फ़िरिश्ते दुआएं देते हैं।" (ابنِ ماجه ج۲ ص ۳۴۸ حديث ۱۷۴۹)

13 रोज़े में मरने की फ़ज़ीलत : "जो रोज़े की ह़ालत में मरा, **अल्लाह तआला** क़ियामत तक के लिये उस के ह़िसाब में रोज़े लिख देगा।"

(اَلْفِردَوس بمأثور الْخِطاب ج۳ ص ۵۰۴ حديث ۵۵۵۷)

नेक काम के दौरान मरने की सआदत : ख़ुश नसीब है वोह मुसल्मान जिसे रोज़े की ह़ालत में मौत आए बल्कि किसी भी नेक काम के दौरान मौत आना अच्छी बात है। मसलन बा वुज़ू या दौराने **नमाज़** मरना, **सफ़रे मदीना** के दौरान रूह़ क़ब्ज़ होना, दौराने ह़ज मक्कए मुकर्रमा زَادَهَا اللّٰهُ شَرَفًاوَّتَعْظِيمًا, मिना, मुज़्दलिफ़ा या अ़रफ़ात शरीफ़ में इन्तिक़ाल, **दा'वते इस्लामी** के सुन्नतों की तरबियत के **मदनी क़ाफ़िले** में आ़शिक़ाने रसूल के हमराह सुन्नतों भरे सफ़र के दौरान दुन्या से रुख़्सत होना, येह सब अ़ज़ीम सआ़दतें हैं जो कि सिर्फ़ ख़ुश नसीबों को ह़ासिल होती हैं। इस सिल्सिले में सह़ाबए किराम عَلَيْهِمُ الرِّضْوَان की नेक तमन्नाएं बयान करते हुए ह़ज़रते सय्यिदुना ख़ैसमा رَضِىَ اللّٰهُ تَعَالٰى عَنْه फ़रमाते हैं : "सह़ाबए किराम عَلَيْهِمُ الرِّضْوَان इस बात को पसन्द करते थे कि किसी अच्छे काम मसलन ह़ज, उ़म्रह, ग़ज़्वा (जिहाद), रमज़ान के रोज़े वग़ैरा के दौरान मौत आए।" (حِلْيَةُ الْاَولياء ج۴ ص۱۲۳)

कालू चाचा की ईमान अफ़्रोज़ वफ़ात : नेक काम के दौरान मौत से हम आग़ोश होने की सआदत सिर्फ़ मुक़द्दर वालों का ह़िस्सा है। इस ज़िम्न में तब्लीग़े क़ुरआनो सुन्नत की आलमगीर ग़ैर सियासी तह़रीक, **दा'वते इस्लामी** के इज्तिमाई सुन्नते ए'तिकाफ़ की एक **मदनी बहार** मुलाह़ज़ा फ़रमाइये और ज़िन्दगी भर के लिये दा'वते इस्लामी के **मदनी माह़ोल** से वाबस्ता रहने का अ़ज़्मे मुसम्मम कर लीजिये। मदीनतुल औलिया **अह़मदआबाद** शरीफ़ (गुजरात, अल हिन्द) के **कालू चाचा** (उ़म्र तक़रीबन 60 बरस) **रमज़ानुल मुबारक** (1425 सि.हि., 2004 सि.ई) के आख़िरी अ़शरे में शाही मस्जिद (शाहे आ़लम, अह़मदआबाद शरीफ़) में **मो'तकिफ़** हो गए। यूं तो येह पहले ही से मदनी माह़ोल से वाबस्ता थे मगर **आ़शिक़ाने रसूल** के साथ ए'तिकाफ़ पहली ही बार किया था। **ए'तिकाफ़** में बहुत कुछ सीखने का मौक़अ़ मिला और साथ ही साथ **दा'वते इस्लामी** के **72 मदनी इन्आ़मात** में से **पहली सफ़ में नमाज़** पढ़ने की तरग़ीब वाले दूसरे **मदनी इन्आ़म** पर अ़मल का ख़ूब जज़्बा मिला। 2 शव्वालुल मुकर्रम या'नी **ईदुल फ़ित्र** के दूसरे रोज़, सुन्नतों की तरबियत के तीन दिन के मदनी क़ाफ़िले में **आ़शिक़ाने रसूल** के हमराह सुन्नतों भरा सफ़र किया। **मदनी क़ाफ़िले** से वापसी के पांच या छ[6] दिन बा'द या'नी 11 शव्वालुल मुकर्रम 1425 सि.हि. 24 नवम्बर 2004 सि.ई. को किसी काम से बाज़ार जाना हुवा, गो

मसरूफ़िय्यत थी मगर ताख़ीर की सूरत में **पहली सफ़** फ़ौत होने का ख़दशा था, लिहाज़ा सारा काम छोड़ कर मस्जिद का रुख़ किया और अज़ान से क़ब्ल ही **मस्जिद** में पहुंच गए, वुज़ू कर के जूं ही खड़े हुए फ़ौरन गिर पड़े, **कलिमा शरीफ़** और **दुरूदे पाक** पढ़ते हुए उन की रूह क़फ़से उन्सुरी से परवाज़ कर गई, اِنَّا لِلّٰہِ وَاِنَّآ اِلَیْہِ رٰجِعُوْن ! سُبْحٰنَ اللّٰہ ! जिस को मरते वक़्त **कलिमा शरीफ़** पढ़ने की सआदत नसीब हो जाए اِنْ شَآءَاللّٰہ عَزَّوَجَلَّ उस का **क़ब्रो हश्र** में बेड़ा पार है। चुनान्चे नबिय्ये रह़मत, शफ़ीए उम्मत, मालिके जन्नत صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم का फ़रमाने जन्नत निशान है : **"जिस का आख़िरी कलाम** لَآ اِلٰہَ اِلَّا اللّٰہ **हो, वोह दाख़िले जन्नत होगा।"** (ابو داوٗد ج ۳ ص ۲۰۰ حدیث۳۱۱۶) मज़ीद दा'वते इस्लामी के मदनी माहोल की बरकत सुनिये : इन्तिक़ाल के चन्द रोज़ बा'द उन के फ़रज़न्द ने ख़्वाब में देखा कि **वालिदे मर्हूम** सफ़ेद लिबास में मल्बूस सर पर सब्ज़ सब्ज़ इमामा शरीफ़ का ताज सजाए मुस्कुराते हुए फ़रमा रहे हैं : **बेटा ! दा'वते इस्लामी के मदनी कामों में लगे रहो कि इसी मदनी माहोल की बरकत से मुझ पर करम हुवा है।**

मौत फ़ज़्ले ख़ुदा से हो ईमान पर, मदनी माहोल में कर लो तुम ए'तिकाफ़
रब की रह़मत से जन्नत में पाओगे घर, मदनी माहोल में कर लो तुम ए'तिकाफ़

(वसाइले बख़्शिश, स. 640)

صَلُّوْا عَلَی الْحَبِیْب ! صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلٰی مُحَمَّد

सख़्त गरमी में रोज़े की फ़ज़ीलत (हिकायत) **: हज़रते** सय्यिदुना इब्ने अ़ब्बास رَضِیَ اللهُ تَعَالٰی عَنْهُمَا फ़रमाते हैं कि सरकारे मदीनए मुनव्वरह, सरदारे मक्कए मुकर्रमा صَلَّى اللهُ تَعَالٰی عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने हज़रते सय्यिदुना अबू मूसा رَضِیَ اللهُ تَعَالٰی عَنْه को एक समुन्दरी जिहाद में भेजा । एक अंधेरी रात में जब कश्ती के बादबान उठा दिये गए तो हातिफ़े ग़ैब ने पुकारा : "ऐ सफ़ीने वालो ! ठहरो ! क्या मैं तुम्हें न बताऊं कि **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ ने अपने ज़िम्मए करम पर क्या लिया है ?" हज़रते सय्यिदुना अबू मूसा رَضِیَ اللهُ تَعَالٰی عَنْه ने फ़रमाया : "अगर तुम बता सकते हो तो ज़रूर बताओ ।" उस ने कहा : "**अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ ने अपने ज़िम्मए करम पर ले लिया है कि जो शदीद गरमी के दिन अपने आप को **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ के लिये प्यासा रखे **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ उसे सख़्त प्यास वाले दिन (या'नी क़ियामत में) सैराब करेगा ।" रावी फ़रमाते हैं : हज़रते सय्यिदुना अबू मूसा رَضِیَ اللهُ تَعَالٰی عَنْه की आ़दत थी कि सख़्त गरमी के दिन रोज़ा रखते थे ।

(اَلتَّرْغِيب وَالتَّرْهِيب ج٢ص ٥١ حديث١٨)

क़ियामत में रोज़ादार खाएंगे : ताबेई बुज़ुर्ग हज़रते सय्यिदुना **अ़ब्दुल्लाह** बिन रबाह़ अन्सारी عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللهِ الْبَارِی फ़रमाते हैं, मैं ने एक राहिब से सुना : "क़ियामत के दिन दस्तर ख़्वान बिछाए जाएंगे, सब से पहले रोज़ेदार उन पर से खाएंगे ।" (ابنِ عَساكِر ج٥ص٥٣٤)

आ़शूरा के रोज़े के फ़ज़ाइल

"शहीदे करबला" के नव हुरूफ़ की निस्बत से आ़शूरा को वाक़ेअ़ होने वाले 9 अहम वाक़िआ़त

﴿1﴾ **आ़शूरा** (या'नी **10** मुहर्रमुल ह़राम) के दिन ह़ज़रते सय्यिदुना **नूह़** عَلٰی نَبِیِّنَا وَعَلَیْہِ الصَّلٰوۃُ وَالسَّلَام की कश्ती कोहे जूदी पर ठहरी ﴿2﴾ इसी दिन ह़ज़रते सय्यिदुना आदम **सफ़िय्युल्लाह** عَلٰی نَبِیِّنَا وَعَلَیْہِ الصَّلٰوۃُ وَالسَّلَام की लग़्ज़िश की तौबा क़बूल हुई ﴿3﴾ इसी दिन ह़ज़रते सय्यिदुना यूनुस عَلٰی نَبِیِّنَا وَعَلَیْہِ الصَّلٰوۃُ وَالسَّلَام की क़ौम की तौबा क़बूल हुई ﴿4﴾ इसी दिन ह़ज़रते सय्यिदुना **इब्राहीम ख़लीलुल्लाह** عَلٰی نَبِیِّنَا وَعَلَیْہِ الصَّلٰوۃُ وَالسَّلَام पैदा हुए ﴿5﴾ इसी दिन ह़ज़रते सय्यिदुना **ई़सा रूहुल्लाह** عَلٰی نَبِیِّنَا وَعَلَیْہِ الصَّلٰوۃُ وَالسَّلَام पैदा किये गए[1] ﴿6﴾ इसी दिन ह़ज़रते सय्यिदुना **मूसा कलीमुल्लाह** عَلٰی نَبِیِّنَا وَعَلَیْہِ الصَّلٰوۃُ وَالسَّلَام और उन की क़ौम को नजात मिली और फ़िरऔ़न अपनी क़ौम समेत ग़रक़ हुवा[2] ﴿7﴾ इसी दिन ह़ज़रते सय्यिदुना **यूसुफ़** عَلٰی نَبِیِّنَا وَعَلَیْہِ الصَّلٰوۃُ وَالسَّلَام को क़ैदख़ाने से रिहाई मिली ﴿8﴾ इसी दिन ह़ज़रते सय्यिदुना **यूनुस** عَلٰی نَبِیِّنَا وَعَلَیْہِ الصَّلٰوۃُ وَالسَّلَام मछली के पेट से निकाले गए[3] ﴿9﴾ सय्यिदुना **इमामे हुसैन** رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ

مدینہ

۱: الفردوس ج۱ ص۲۲۳ حدیث ۸۵۶۔ ۲: بُخاری ج۲ ص۴۳۸ حدیث ۳۳۹۷،۳۳۹۸۔
۳: فیض القدیر ج۵ ص۲۸۸ تحت الحدیث ۷۰۷۵۔

को मअ़ शहज़ादगान व रुफ़क़ा तीन दिन भूका प्यासा रखने के बा'द इसी **आ़शूरा** के रोज़ दश्ते करबला में निहायत बे रह़मी के साथ शहीद किया गया।

صَلُّوۡا عَلَی الۡحَبِیۡب! صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلٰی مُحَمَّد

"या ह़ुसैन" के छ[6] ह़ुरूफ़ की निस्बत से

मुह़र्रमुल ह़राम और आ़शूरा के रोज़ों के 6 फ़ज़ाइल

﴾1﴿ **हुज़ूरे** अकरम, नूरे मुजस्सम صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيۡهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم फ़रमाते हैं : "रमज़ान के बा'द मुह़र्रम का रोज़ा अफ़्ज़ल है और फ़र्ज़ के बा'द अफ़्ज़ल नमाज़ सलातुल्लैल (या'नी रात के नवाफ़िल) है।"

(مسلم ص۵۹۱ حدیث۱۱۶۳)

﴾2﴿ **त़बीबों** के त़बीब, **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ के ह़बीब صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيۡهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم का फ़रमाने रह़मत निशान है : **मुह़र्रम** के हर दिन का रोज़ा एक महीने के रोज़ों के बराबर है। (مُعجَم صغیر ج ۲ ص ۷۱)

यौमे मूसा عَلَيۡهِ السَّلَام : ﴾3﴿ **ह़ज़रते** सय्यिदुना **अ़ब्दुल्लाह** इब्ने अ़ब्बास رَضِىَ اللّٰهُ تَعَالٰى عَنۡهُمَا का इर्शादे गिरामी है, **रसूलुल्लाह** صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيۡهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم जब मदीनतुल मुनव्वरह زَادَهَا اللّٰهُ شَرَفًاوَّتَعۡظِيۡمًا में तशरीफ़ लाए, यहूद को **आ़शूरे** के दिन रोज़ादार पाया तो इर्शाद

फ़रमाने मुस्त़फ़ा صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم : शबे जुमुआ़ और रोज़े जुमुआ़ मुझ पर दुरूद की कसरत कर लिया करो जो ऐसा करेगा क़ियामत के दिन मैं उस का शफ़ीअ़ व गवाह बनूंगा। (شعب الایمان)

फ़रमाया : येह क्या दिन है कि तुम रोज़ा रखते हो ? अ़र्ज़ की : येह अ़ज़्मत वाला दिन है कि इस में **मूसा** عَلَيْهِ الصَّلٰوةُ وَالسَّلَام और उन की क़ौम को **अल्लाह तआ़ला** ने नजात दी और फ़िरऔ़न और उस की क़ौम को डुबो दिया, लिहाज़ा मूसा عَلَيْهِ الصَّلٰوةُ وَالسَّلَام ने बत़ौरे शुक्राना इस दिन का **रोज़ा** रखा, तो हम भी **रोज़ा** रखते हैं। इर्शाद फ़रमाया : **मूसा** عَلَيْهِ الصَّلٰوةُ وَالسَّلَام की मुवाफ़क़त करने में ब निस्बत तुम्हारे हम ज़ियादा ह़क़दार और ज़ियादा क़रीब हैं। तो **सरकारे मदीना** صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने ख़ुद भी रोज़ा रखा और इस का हुक्म भी फ़रमाया। (مسلم ص۵۷۲حدیث ۱۱۳۰)

प्यारे प्यारे इस्लामी भाइयो ! इस ह़दीसे पाक से मा'लूम हुवा कि जिस रोज़ **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ कोई ख़ास ने'मत अ़त़ा फ़रमाए उस की यादगार क़ाइम करना दुरुस्त व मह़बूब है कि इस त़रह़ उस ने'मते उ़ज़्मा की याद ताज़ा होगी और उस का शुक्र अदा करने का सबब भी होगा ख़ुद क़ुरआने अ़ज़ीम में इर्शाद फ़रमाया :

وَذَكِّرْهُمْ بِاَيّٰىمِ اللّٰهِ ؕ
(پ۱۳،ابرٰھیم:۵)

तरजमए कन्ज़ुल ईमान : और उन्हें **अल्लाह** के दिन याद दिला।

सदरुल अफ़ाज़िल ह़ज़रते अ़ल्लामा मौलाना सय्यिद मुह़म्मद नईमुद्दीन मुरादआबादी عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللّٰهِ الْهَادِی इस आयत के तह़त फ़रमाते हैं

कि "بِاَیّٰمِ اللّٰهِ" से वोह दिन मुराद हैं जिन में **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ ने अपने बन्दों पर इन्आ़म किये जैसे कि बनी इसराईल के लिये मन्न व सल्वा उतारने का दिन, **ह़ज़रते सय्यिदुना मूसा** عَلٰى نَبِيِّنَا وَعَلَيْهِ الصَّلٰوةُ وَالسَّلَام के लिये दरिया में रास्ता बनाने का दिन। इन अय्याम में सब से बड़ी ने'मत के दिन **सय्यिदे आ़लम** صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم की **विलादत व मे'राज** के दिन हैं इन की याद क़ाइम करना भी इस आयत के हुक्म में दाख़िल है।

(ख़ज़ाइनुल इरफ़ान, स. 479 मुलख़्ख़सन)

ईदे मीलादुन्नबी और दा'वते इस्लामी : प्यारे प्यारे इस्लामी भाइयो ! सुल्त़ाने मदीनए मुनव्वरह, शहन्शाहे मक्कए मुकर्रमा صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم के **यौमे विलादत** से बढ़ कर कौन सा दिन "यौमे इन्आ़म" होगा ? बेशक तमाम ने'मतें आप ही के तुफ़ैल हैं और आप का यौमे विलादत तो ईदों की भी **ईद** है। اَلْحَمْدُ لِلّٰه عَزَّوَجَلَّ तब्लीग़े कुरआनो सुन्नत की आ़लमगीर ग़ैर सियासी तह़रीक, **दा'वते इस्लामी** की त़रफ़ से दुन्या में ला ता'दाद मक़ामात पर हर साल **ईदे मीलादुन्नबी** صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم शानदार त़रीक़े पर मनाई जाती है। रबीउ़ल अव्वल शरीफ़ की 12वीं शब को अ़ज़ीमुश्शान **इज्तिमाए़ मीलाद** का इन्इ़क़ाद होता है और बिल ख़ुसूस मेरे हुस्ने ज़न के मुत़ाबिक़ उस रात दुन्या का सब से बड़ा "इज्तिमाए़ मीलाद" हमारे शहर में मुन्अ़क़िद होता और

मदनी चेनल पर बराहे रास्त (live) टेलेकास्ट किया जाता है। ईद के रोज़ मरहबा या मुस्तफ़ा صَلَّى اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم की धूमें मचाते हुए बे शुमार जुलूसे मीलाद निकाले जाते हैं जिन में लाखों आशिक़ाने रसूल शरीक होते हैं।

ईदे मीलादुन्नबी तो ईद की भी ईद है

बिलयक़ीं है ईदे ईदां ईदे मीलादुन्नबी

(वसाइले बख़्शिश, स. 380)

आशूरा का रोज़ा : ﴿4﴾ **सय्यिदुना अ़ब्दुल्लाह** इब्ने अ़ब्बास رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنۡہُمَا फ़रमाते हैं : "मैं ने सुल्ताने दो जहान صَلَّى اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم को किसी दिन के **रोज़े** को और दिन पर फ़ज़ीलत दे कर जुस्तजू (रग़बत) फ़रमाते न देखा मगर येह कि **आ़शूरे** का दिन और येह कि **रमज़ान** का महीना।" (بُخارِی ج۱ص۶۵۷حدیث۲۰۰۶)

यहूदिय्यों की मुख़ालफ़त करो : ﴿5﴾ नबिय्ये रह़मत, शफ़ीए़ उम्मत صَلَّى اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने इर्शाद फ़रमाया : यौमे आ़शूरा का रोज़ा रखो और इस में यहूदिय्यों की मुख़ालफ़त करो, इस से पहले या बा'द में भी एक दिन का रोज़ा रखो। (مُسنَد اِمام اَحمَد ج۱ص۵۱۸حدیث۲۱۵۴) **आ़शूरे** का रोज़ा जब भी रखें तो साथ ही नवीं या ग्यारहवीं मुहर्रमुल ह़राम का रोज़ा भी रख लेना बेहतर है।

﴾6﴿ ह़ज़रते सय्यिदुना अबू क़तादा رَضِیَ اللهُ تَعَالٰی عَنْهُ से रिवायत है, **रसूलुल्लाह** صَلَّى اللهُ تَعَالٰی عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم का फ़रमाने बख़्शिश निशान है : मुझे **अल्लाह** पर गुमान है कि आ़शूरे का रोज़ा एक साल क़ब्ल के गुनाह मिटा देता है।

(مُسلِم ص ۵۹۰ حدیث۱۱۶۲)

सारा साल घर में बरकत : दा'वते इस्लामी के इशाअ़ती इदारे **मक्तबतुल मदीना** की मत्बूआ़ 166 सफ़्ह़ात पर मुश्तमिल किताब, "**इस्लामी ज़िन्दगी**" सफ़्ह़ा 131 पर **मुफ़स्सिरे** शहीर **ह़कीमुल उम्मत** ह़ज़रते मुफ़्ती अह़मद यार ख़ान عَلَيْهِ رَحْمَةُ الْحَنَّان फ़रमाते हैं : मुह़र्रम की **नवीं** और **दसवीं** को रोज़ा रखे तो बहुत सवाब पाएगा, बाल बच्चों के लिये **दसवीं** मुह़र्रम को ख़ूब अच्छे अच्छे खाने पकाए तो اِنْ شَآءَاللهُ عَزَّوَجَلَّ साल भर तक घर में बरकत रहेगी। बेहतर है कि खिचड़ा पका कर ह़ज़रते शहीदे करबला सय्यिदुना **इमामे हुसैन** رَضِیَ اللهُ تَعَالٰی عَنْهُ की फ़ातिह़ा करे बहुत मुजर्रब (या'नी फ़ाएदा मन्द, मुअस्सिर व आज़्मूदा) है।

(इस्लामी ज़िन्दगी, स. 131)

صَلُّوْا عَلَى الْحَبِيْب ! صَلَّى اللهُ تَعَالٰی عَلٰی مُحَمَّد

रजबुल मुरज्जब के रोज़े : पारह 10 **सूरतुत्तौबह** आयत 36 में इर्शाद होता है :

اِنَّ عِدَّةَ الشُّهُوْرِ عِنْدَ اللّٰهِ اثْنَا عَشَرَ شَهْرًا فِیْ كِتٰبِ اللّٰهِ یَوْمَ خَلَقَ السَّمٰوٰتِ وَ الْاَرْضَ مِنْهَاۤ اَرْبَعَةٌ حُرُمٌؕ ذٰلِكَ الدِّیْنُ الْقَیِّمُ ﳔ فَلَا تَظْلِمُوْا فِیْهِنَّ اَنْفُسَكُمْ وَ قَاتِلُوا الْمُشْرِكِیْنَ كَآفَّةً كَمَا یُقَاتِلُوْنَكُمْ كَآفَّةًؕ وَ اعْلَمُوْۤا اَنَّ اللّٰهَ مَعَ الْمُتَّقِیْنَ ﴿۳۶﴾

तरजमए कन्ज़ुल ईमान : बेशक महीनों की गिनती **अल्लाह** के नज़्दीक बारह महीने हैं **अल्लाह** की किताब में, जब से उस ने आस्मान व ज़मीन बनाए उन में से चार हुरमत वाले हैं, येह सीधा दीन है तो इन महीनों में अपनी जान पर ज़ुल्म न करो और मुश्रिकों से हर वक़्त लड़ो जैसा वोह तुम से हर वक़्त लड़ते हैं और जान लो कि **अल्लाह** परहेज़ गारों के साथ है।

हुरमत वाले चार महीनों के नाम : बयान कर्दा आयते मुबारका के तह़त सदरुल अफ़ाज़िल ह़ज़रते अ़ल्लामा मौलाना सय्यिद मुह़म्मद नईमुद्दीन मुरादआबादी عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللّٰهِ الْهَادِی **"ख़ज़ाइनुल इरफ़ान"** में फ़रमाते हैं : (चार हुरमत वाले महीनों से मुराद) तीन मुत्तसिल (या'नी यके बा'द दीगरे) **ज़ुल क़ा'दा, ज़ुल ह़िज्जा, मुह़र्रम** और एक जुदा **रजब**। अ़रब लोग ज़मानए जाहिलिय्यत में भी इन में क़िताल (या'नी जंग) ह़राम जानते थे। इस्लाम में इन महीनों की हुरमतो अ़ज़मत और ज़ियादा की गई। (ख़ज़ाइनुल इरफ़ान, स. 309)

प्यारे प्यारे इस्लामी भाइयो ! आयते मुबारका में क़मरी (या'नी हिजरी सिन के 12) महीनों का ज़िक्र है जिन का ह़िसाब चांद से होता है, बहुत से अह़कामे शरअ़ की बिना (या'नी बुन्याद) भी क़मरी महीनों पर है, मसलन **रमज़ानुल मुबारक** के रोज़े, ज़कात, मनासिके ह़ज शरीफ़ वग़ैरा। नीज़ इस्लामी तहवार मसलन ईदे मीलादुन्नबी صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم, ईदुल फ़ित्र, ईदुल अज़्ह़ा, शबे मे'राज, शबे बराअत, ग्यारहवीं शरीफ़, आ'रासे बुज़ुर्गाने दीन رَحِمَهُمُ اللّٰهُ الْمُبِيْن वग़ैरा भी क़मरी महीनों के ह़िसाब से मनाए जाते हैं। अफ़्सोस ! आज कल मुसल्मान जहां बे शुमार सुन्नतों से दूर जा पड़ा है वहां इस्लामी तारीख़ों से भी ना आशना होता जा रहा है। ग़ालिबन एक लाख मुसल्मानों के इज्तिमाअ़ में अगर येह सुवाल किया जाए कि "बताओ आज किस हिजरी सिन के कौन से महीने की कितनी तारीख़ है ?" तो शायद ब मुश्किल सो मुसल्मान ऐसे होंगे जो सह़ीह़ जवाब दे सकें ! याद रहे कि बहुत से मुआ़मलात जैसे ज़कात की फ़र्ज़िय्यत वग़ैरा में क़मरी महीनों का लिह़ाज़ रखना फ़र्ज़ है।

रजब के एह़तिराम की बरकत की ह़िकायत : ह़ज़रते सय्यिदुना **ईसा रूह़ुल्लाह** عَلٰى نَبِيِّنَا وَعَلَيْهِ الصَّلٰوةُ وَالسَّلَام के दौर का वाक़िआ़ है कि एक शख़्स किसी औरत पर आ़शिक़ था। एक बार उस ने अपनी

मा'शूक़ा पर क़ाबू पा लिया, लोगों का मज्मअ़ देख कर उस ने अन्दाज़ा लगाया कि वोह चांद देख रहे हैं, उस ने उस औ़रत से पूछा : लोग किस माह का चांद देख रहे हैं ? जवाब दिया : "**रजब** का।" येह शख़्स ह़ालां कि ग़ैर मुस्लिम था मगर **रजब** शरीफ़ का नाम सुनते ही ता'ज़ीमन फ़ौरन अलग हो गया और "गन्दे काम" से बाज़ रहा। ह़ज़रते सय्यिदुना **ईसा रूहुल्लाह** عَلٰی نَبِیِّنَا وَعَلَیْهِ الصَّلٰوۃُ وَالسَّلَام को हुक्म हुवा : "हमारे फ़ुलां बन्दे से मुलाक़ात करो।" आप عَلٰی نَبِیِّنَا وَعَلَیْهِ الصَّلٰوۃُ وَالسَّلَام तशरीफ़ ले गए और **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ का हुक्म और अपनी तशरीफ़ आवरी का सबब इर्शाद फ़रमाया : येह सुनते ही उस का दिल नूरे ईमान से जगमगा उठा और उस ने फ़ौरन इस्लाम क़बूल कर लिया। (انیسُ الواعِظین ص۱۷۷)

प्यारे प्यारे इस्लामी भाइयो ! देखी आप ने **रजब की बहारें !** **रजबुल मुरज्जब** की ता'ज़ीम करने से जब एक ग़ैर मुस्लिम को ईमान की दौलत नसीब हो सकती है तो जो मुसल्मान **रजबुल मुरज्जब** का एह़तिराम करे उस को न जाने क्या क्या इन्आ़मात मिलेंगे ! क़ुरआने पाक में हुरमत (या'नी इ़ज़्ज़त) वाले महीनों में अपनी जानों पर ज़ुल्म करने से रोका गया है चुनान्चे "नूरुल इरफ़ान" में فَلَا تَظْلِمُوْا فِیْهِنَّ اَنْفُسَكُمْ (**तरजमए कन्ज़ुल ईमान :** तो इन महीनों में अपनी जान पर ज़ुल्म न करो) के तह़्त है : "या'नी ख़ुसूसिय्यत से इन चार महीनों में गुनाह न करो।"

(नूरुल इरफ़ान, स. 306)

अल्लाह का महीना : फ़रमाने मुस्त़फ़ा صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم : رَجَبٌ شَهْرُ اللّٰهِ تَعَالٰى وَشَعْبَانُ شَهْرِىْ وَرَمَضَانُ شَهْرُ اُمَّتِىْ- या'नी रजब **अल्लाह तआ़ला** का महीना और शा'बान मेरा महीना और रमज़ान मेरी उम्मत का महीना है। (اَلْفِردَوس بمأثور الْخِطاب ج۲ ص۲۷۵ حدیث ۳۲۷۶)

रजब में परेशानी दूर करने की फ़ज़ीलत : ह़ज़रते सय्यिदुना **अ़ब्दुल्लाह** इब्ने ज़ुबैर رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ से रिवायत है : जो माहे रजब में किसी मुसल्मान की परेशानी दूर करे तो **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ उस को जन्नत में एक ऐसा मह़ल अ़त़ा फ़रमाएगा जो ह़द्दे नज़र तक वसीअ़ होगा। तुम **रजब** का इक्राम (व एह़तिराम) करो **अल्लाह तआ़ला** तुम्हारा हज़ार करामतों के साथ इक्राम फ़रमाएगा।

(غُنیةُ الطّالِبین ج ۱ ص ۳۲۴،معجمُ السّفر لِلسّلَفی ص ۴۱۹ رقم ۱۴۲۱)

दो साल की इ़बादत का सवाब : ह़ज़रते सय्यिदुना अनस رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ से मरवी है, सरकारे नामदार, दो आ़लम के मालिको मुख़्तार बि इज़्ने परवर दगार صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم का फ़रमाने मुश्कबार है : **"जिस ने माहे ह़राम में तीन दिन जुमे'रात, जुमुआ़ और हफ़्ता (या'नी सनीचर) के रोज़े रखे, उस के लिये दो साल की इ़बादत का सवाब लिखा जाएगा।"** (مُعْجَم اَوسَط ج ۱ ص ۴۸۵ حدیث ۱۷۸۹)

फ़रमाने मुस्तफ़ा صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم : जिस के पास मेरा ज़िक्र हुवा और उस ने मुझ पर दुरूदे पाक न पढ़ा तहक़ीक़ वोह बद बख़्त हो गया। (ابن سنی)

प्यारे प्यारे इस्लामी भाइयो ! यहां "माहे हराम" से येही चार माह या'नी **ज़ुल क़ा'दा, ज़ुल हिज्जा, मुहर्रमुल हराम** और **रजबुल मुरज्जब** मुराद हैं, इन चारों महीनों में से जिस माह में भी बयान कर्दा तीन दिनों का रोज़ा रखेंगे اِنْ شَآءَاللّٰه عَزَّوَجَلَّ दो साल की इबादत का सवाब पाएंगे।

तेरे करम से ऐ करीम ! मुझे कौन सी शै मिली नहीं
झोली ही मेरी तंग है, तेरे यहां कमी नहीं

صَلُّوْا عَلَى الْحَبِيْب ! صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلٰى مُحَمَّد

रजब के मुख़्तलिफ़ नाम और मआनी : "रजब" दर अस्ल "तरजीब" से मुश्तक़ (या'नी निकला) है इस के मा'ना हैं : "ता'ज़ीम करना।" इस को अल असब (या'नी तेज़ बहाव) भी कहते हैं इस लिये कि इस माहे मुबारक में तौबा करने वालों पर रहमत का बहाव तेज़ हो जाता और इबादत करने वालों पर क़बूलिय्यत के अन्वार का फ़ैज़ान होता है। इसे अल असम (या'नी बहरा) भी कहते हैं क्यूं कि इस में जंगो जदल की आवाज़ बिल्कुल सुनाई नहीं देती। (مُكاشَفَةُ الْقُلوب ص ٣٠١)

रजब के तीन हुरूफ़ की भी क्या बात है ! : سُبْحٰنَ اللّٰه عَزَّوَجَلَّ ! **प्यारे प्यारे इस्लामी भाइयो ! माहे रजबुल मुरज्जब** की बहारों की तो क्या ही बात है ! "मुकाशफ़तुल क़ुलूब" में है, बुज़ुर्गाने दीन

फ़रमाने मुस्तफ़ा صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰی عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم : जिस ने मुझ पर सुब्ह व शाम दस दस बार दुरूदे पाक पढ़ा उसे क़ियामत के दिन मेरी शफ़ाअ़त मिलेगी। (مجمع الزوائد)

رَحِمَهُمُ اللّٰهُ الْمُبِین फ़रमाते हैं : "**रजब**" में तीन हुरूफ़ हैं : ر،ج،ب, "**ر**" से मुराद रहमते इलाही عَزَّوَجَلَّ, "**ج**" से मुराद बन्दे का जुर्म, "**ب**" से मुराद बिर या'नी एहसान। गोया **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ फ़रमाता है : मेरे बन्दे के जुर्म को मेरी रहमत और एहसान के दरमियान कर दो। (مُکاشَفَۃُ الْقُلوب ص۳۰۱)

इस्यां से कभी हम ने कनारा न किया — *पर तू ने दिल आज़ुर्दा हमारा न किया*
हम ने तो जहन्नम की बहुत की तज्वीज़ — *लेकिन तेरी रहमत ने गवारा न किया*

इबादत का बीज बोने का महीना : हज़रते सय्यिदुना अ़ल्लामा सफ़्फ़ूरी عَلَيْهِ رَحمَةُ اللّٰهِ الْقَوِی फ़रमाते हैं : **रजबुल मुरज्जब** बीज बोने का, **शा'बानुल मुअ़ज़्ज़म** आबपाशी (या'नी पानी देने) का और **रमज़ानुल मुबारक** फ़स्ल काटने का महीना है, लिहाज़ा जो **रजबुल मुरज्जब** में इबादत का बीज न बोए और **शा'बानुल मुअ़ज़्ज़म** में उसे आंसूओं से सैराब न करे वोह **रमज़ानुल मुबारक** में फ़स्ले रहमत क्यूंकर काट सकेगा ? मज़ीद फ़रमाते हैं : **रजबुल मुरज्जब** जिस्म को, **शा'बानुल मुअ़ज़्ज़म** दिल को और **रमज़ानुल मुबारक** रूह को पाक करता है। (نُزْھَۃُ الْمَجالِس ج۱ص۲۰۹)

जो सारी ज़िन्दगी न सीख सका वोह दस दिन में सीख लिया : प्यारे प्यारे इस्लामी भाइयो ! रजबुल मुरज्जब में इबादत

फ़रमाने मुस्तफ़ा صَلَّى اللهُ تَعَالٰی عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم : जिस के पास मेरा ज़िक्र हुवा और उस ने मुझ पर दुरूद शरीफ़ न पढ़ा उस ने जफ़ा की। (عبدالرزاق)

और रोज़ों का ज़ेहन बनाने के लिये दा'वते इस्लामी के मदनी माहोल से वाबस्ता रहिये। सुन्नतों की तरबियत के मदनी क़ाफ़िलों के मुसाफ़िर बनिये और इज्तिमाई ए'तिकाफ़ में हिस्सा लीजिये, اِنْ شَآءَاللہ عَزَّوَجَلَّ आप के दोनों जहां संवर जाएंगे। तरग़ीबन एक ख़ुश गवार **मदनी बहार** आप के गोश गुज़ार करता हूं : एक इस्लामी भाई उन दिनों मेट्रिक के त़ालिबे इल्म थे, वोह अपने मकान मालिक जो कि दा'वते इस्लामी वाले थे उन की इन्फ़िरादी कोशिश से उन के साथ तब्लीग़े क़ुरआनो सुन्नत की आ़लमगीर ग़ैर सियासी तह़रीक, **दा'वते इस्लामी** के तह़्त ग़ौसिया मस्जिद में होने वाले **रमज़ानुल मुबारक** के आख़िरी अ़शरे के "ए'तिकाफ़" में बैठ गए। **अल मुख़्तसर उन्हों ने उन दस दिनों में वोह कुछ सीखा जो पिछली तमाम ज़िन्दगी में न सीख पाए थे।** ए'तिकाफ़ ही में दा'वते इस्लामी के मदनी माह़ोल को मज़बूत़ी से अपना लिया, वहीं से मुस्तक़िल इमामा शरीफ़ सजा लिया, **ईद** के दूसरे दिन आ़शिक़ाने रसूल के साथ मदनी क़ाफ़िले में सुन्नतों भरा सफ़र किया। اَلْحَمْدُ لِلّٰہ عَزَّوَجَلَّ उन पर मदनी रंग चढ़ता चला गया और उन्हें तन्ज़ीमी त़ौर पर "मदनी इन्आ़मात" की ज़िम्मादारी भी दी गई।

फ़रमाने मुस्तफ़ा صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم : जो मुझ पर रोज़े जुमुआ दुरूद शरीफ़ पढ़ेगा मैं क़ियामत के दिन उस की शफ़ाअत करूंगा। (جمع الجوامع)

मदनी माह़ोल में कर लो तुम ए'तिकाफ़ रह़मतें लूटने के लिये आओ तुम,
मदनी माह़ोल में कर लो तुम ए'तिकाफ़ सुन्नतें सीखने के लिये आओ तुम,

(वसाइले बख़्शिश, स. 640)

صَلُّوا عَلَى الْحَبِيْب! صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلٰى مُحَمَّد

पांच बा बरकत रातें : ह़ज़रते सय्यिदुना अबू उमामा رَضِیَ اللهُ تَعَالٰی عَنْه से मरवी है कि नबिय्ये करीम, रऊफुर्रहीम عَلَيْهِ اَفْضَلُ الصَّلٰوةِ وَالتَّسْلِيْم का फ़रमाने अज़ीम है : "पांच रातें ऐसी हैं जिस में दुआ रद नहीं की जाती ﴾1﴿ रजब की पहली (या'नी चांद) रात ﴾2﴿ शा'बान की पन्दरहवीं रात (या'नी शबे बराअत) ﴾3﴿ शबे जुमुआ (या'नी जुमे'रात और जुमुआ की दरमियानी रात) ﴾4﴿ ईदुल फ़ित्र की (चांद) रात ﴾5﴿ ईदुल अज़्ह़ा की (या'नी ज़ुल ह़िज्जा की दसवीं) रात।" (ابنِ عَساکِر ج ۱۰ ص ۴۰۸)

जन्नत में ले जाने वाली पांच रातें : ह़ज़रते सय्यिदुना ख़ालिद बिन मा'दान عَلَيْهِ رَحْمَةُ الْحَنَّان फ़रमाते हैं : साल में पांच रातें ऐसी हैं जो इन की तस्दीक़ करते हुए ब निय्यते सवाब इन को इबादत में गुज़ारेगा, **अल्लाह तआला** उसे **दाख़िले जन्नत** फ़रमाएगा ﴾1﴿ रजब की पहली रात, कि इस रात में इबादत करे और इस के दिन में रोज़ा रखे ﴾2﴿ शा'बान की पन्दरहवीं रात (या'नी शबे बराअत) कि इस रात में इबादत करे और दिन में रोज़ा रखे ﴾3,4﴿ ईदैन की रातें (या'नी ईदुल

फ़रमाने मुस्त़फ़ा صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم : जिस के पास मेरा ज़िक्र हुवा और उस ने मुझ पर दुरूदे पाक न पढ़ा उस ने जन्नत का रास्ता छोड़ दिया। (طبرانی)

फ़ित्र की (चांद) रात और शबे ईदुल अज़्हा या'नी 9 और 10 ज़ुल हिज्जा की दरमियानी रात) कि इन रातों में इबादत करे और दिन में रोज़ा न रखे (ईदैन में रोज़ा रखना, ना जाइज़ है) और ﴾5﴿ शबे आ़शूरा (या'नी मुह़र्रमुल ह़राम की दसवीं शब) कि इस रात में इबादत करे और दिन में रोज़ा रखे।

(فَضائِلُ شَهْرِ رَجَب لِلْخَلّال ص ١٠، غُنْيَةُ الطّا لِبِين ج ١ ص ٣٢٧)

पहला रोज़ा तीन साल के गुनाहों का कफ़्फ़ारा : फ़रमाने मुस्त़फ़ा صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم : "**रजब** के **पहले** दिन का रोज़ा तीन साल का कफ़्फ़ारा है, और **दूसरे** दिन का रोज़ा दो साल का और **तीसरे** दिन का एक साल का कफ़्फ़ारा है, फिर हर दिन का रोज़ा एक माह का कफ़्फ़ारा है।"

(اَلْجامِعُ الصَّغِير ص ٣١١ حديث ٥٠٥١، فَضائِلُ شَهْرِ رَجَب لِلْخَلّال ص ٧) **यहां "गुनाह का कफ़्फ़ारा" से मुराद येह है कि** येह रोज़े, गुनाहे सग़ीरा की मुआ़फ़ी का ज़रीआ़ बन जाते हैं।

जन्नती मह़ल : ताबेई बुज़ुर्ग **ह़ज़रते** सय्यिदुना अबू क़िलाबा رَحْمَةُ اللّٰهِ تَعَالٰى عَلَيْه फ़रमाते हैं : "**रजब** के **रोज़ादारों** के लिये जन्नत में एक **मह़ल** है।"

(شُعَبُ الْاِيمان ج ٣ ص ٣٦٨ حديث ٣٨٠٢)

एक जन्नती नहर का नाम रजब है : ह़ज़रते सय्यिदुना अनस बिन मालिक رَضِىَ اللّٰهُ تَعَالٰى عَنْهُ से रिवायत है कि **रसूलुल्लाह** صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने इर्शाद फ़रमाया : "जन्नत में एक नहर है जिसे

फ़रमाने मुस्तफ़ा صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم : मुझ पर दुरूदे पाक की कसरत करो बेशक तुम्हारा मुझ पर दुरूदे पाक पढ़ना तुम्हारे लिये पाकीज़गी का बाइस है। (ابو يعلى)

"रजब" कहा जाता है, वोह दूध से ज़ियादा सफ़ेद और शहद से ज़ियादा मीठी है, तो जो कोई रजब का एक रोज़ा रखे **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ उसे उस नहर से पिलाएगा।" (شُعَبُ الْاِيمان ج٣ص٣٦٧ حديث ٣٨٠٠)

एक रोज़े की फ़ज़ीलत : **हज़रते** अ़ल्लामा शैख़ अ़ब्दुल ह़क़ मुह़द्दिस देहलवी عَلَيْهِ رَحمَةُ اللّٰهِ الْقَوِى नक़्ल करते हैं कि सुल्ताने मदीना, क़रारे क़ल्बो सीना صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم का फ़रमाने बा क़रीना है : **माहे रजब** हुरमत वाले महीनों में से है, और छटे आस्मान के दरवाज़े पर इस महीने के दिन लिखे हुए हैं। अगर कोई शख़्स रजब में **एक रोज़ा** रखे और उसे परहेज़ गारी से पूरा करे तो वोह दरवाज़ा और वोह (रोज़े वाला) दिन उस बन्दे के लिये **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ से मग़िफ़रत त़लब करेंगे और अ़र्ज़ करेंगे : **"या अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ ! इस बन्दे को बख़्श दे।" और अगर वोह शख़्स बिग़ैर परहेज़ गारी के रोज़ा गुज़ारता है तो फिर वोह दरवाज़ा और दिन उस की बख़्शिश की दरख़्वास्त नहीं करते और उस शख़्स से कहते हैं : "ऐ बन्दे ! तेरे नफ़्स ने तुझे धोका दिया।" (مَاثَبَتَ بِالسُّنَّة ص٢٣٤، فَضائِلُ شَهرِ رَجَب لِلْخَلّال ص ٥٦)

प्यारे प्यारे इस्लामी भाइयो ! मा'लूम हुवा कि रोज़े का मक़्सूदे अस्ली तक़्वा और परहेज़ गारी और अपने आ'ज़ाए बदन को गुनाहों से बचाना है, अगर रोज़ा रखने के बा वुजूद भी ना फ़रमानियों का सिलसिला जारी रहा तो फिर बड़ी मह़रूमी की बात है।

कश्तिये नूह़ में रजब के रोज़े की बहार : ह़ज़रते सय्यिदुना अनस رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ से रिवायत है कि **रसूलुल्लाह** صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया : जिस ने **रजब का एक रोज़ा** रखा तो वोह **एक साल** के रोज़े रखने वालों की त़रह़ होगा, जिस ने **सात रोज़े** रखे उस पर **जहन्नम** के सातों दरवाज़े बन्द कर दिये जाएंगे, जिस ने **आठ रोज़े** रखे उस के लिये **जन्नत** के आठों दरवाज़े खोल दिये जाएंगे, जिस ने **दस रोज़े** रखे वोह **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ से जो कुछ मांगेगा **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ उसे अ़त़ा फ़रमाएगा और जो कोई **पन्दरह रोज़े** रखता है तो आस्मान से एक मुनादी निदा (या'नी ए'लान करने वाला ए'लान) करता है कि तेरे पिछले गुनाह बख़्श दिये गए पस तू अज़् सरे नौ अ़मल शुरूअ़ कर कि तेरी बुराइयां नेकियों से बदल दी गईं। और जो ज़ाइद करे तो **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ उसे ज़ियादा दे। और "रजब" में **नूह़** (عَلَیْہِ الصَّلٰوۃُ وَالسَّلَام) कश्ती में सुवार हुए तो ख़ुद भी **रोज़ा** रखा और हमराहियों को भी **रोज़े** का हुक्म दिया। उन की कश्ती **दस मुह़र्रम** तक छ[6] माह बर सरे सफ़र रही।

(شُعَبُ الْاِیمان ج۳ص۳۶۸حدیث۳۸۰۱)

सो साल के रोज़ों का सवाब : सत्ताईसवीं रजबुल मुरज्जब की अ़ज़मतों के क्या कहने! इसी तारीख़ में हमारे प्यारे प्यारे, मीठे मीठे आक़ा, मक्की मदनी मुस्त़फ़ा صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم को मे'राज शरीफ़ का अ़ज़ीमुश्शान मो'जिज़ा अ़त़ा हुवा। (شَرحُ الزّرقانی عَلَی المَواھِبِ اللَّدُنِّیۃ ج۸ص۱۸)

फ़रमाने मुस्त़फ़ा صَلَّى اللهُ تَعَالٰی عَلَیْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم : तुम जहां भी हो मुझ पर दुरूद पढ़ो कि तुम्हारा दुरूद मुझ तक पहुंचता है। (طبرانی)

27वीं रजब शरीफ़ के रोज़े की बड़ी फ़ज़ीलत है जैसा कि **हज़रते** सय्यिदुना सलमान फ़ारसी رَضِیَ اللهُ تَعَالٰی عَنْهُ से मरवी है, **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ के महबूब, दानाए गुयूब صَلَّى اللهُ تَعَالٰی عَلَیْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم का फ़रमाने ज़ीशान है : "**रजब** में एक दिन और रात है जो उस दिन रोज़ा रखे और रात क़ियाम (इबादत) करे तो गोया उस ने सो साल के रोज़े रखे, सो बरस की शब बेदारी की और येह **रजब** की सत्ताईस तारीख़ है।" (شُعَبُ الْاِیْمَان ج٣ص٣٧٤حدیث ٣٨١١)

27वीं शब के 12 नवाफ़िल की फ़ज़ीलत : **हज़रते** सय्यिदुना अनस رَضِیَ اللهُ تَعَالٰی عَنْهُ से रिवायत है कि **रसूलुल्लाह** صَلَّى اللهُ تَعَالٰی عَلَیْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया : **रजब** में एक रात है कि उस में नेक अ़मल करने वाले को सो बरस की नेकियों का सवाब है और वोह रजब की **सत्ताईसवीं शब** है। जो इस में **बारह रक्अ़त** इस त़रह़ पढ़े कि हर रक्अ़त में **सूरतुल फ़ातिह़ा** और कोई सी एक सूरत और हर दो रक्अ़त पर अत्तह़िय्यात (दुरूदे इब्राहीम और दुआ़) पढ़े और बारह पूरी होने पर सलाम फैरे, इस के बा'द 100 बार येह पढ़े : سُبْحٰنَ اللهِ وَالْحَمْدُ لِلّٰهِ وَلَآ اِلٰهَ اِلَّا اللهُ وَاللهُ اَكْبَرُ, इस्तिग़फ़ार 100 बार, दुरूद शरीफ़ 100 बार पढ़े और अपनी दुन्या व आख़िरत से जिस चीज़ की चाहे दुआ़ मांगे और सुब्ह़ को **रोज़ा** रखे तो **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ उस की सब दुआ़एं क़बूल फ़रमाए सिवाए उस दुआ़ के जो गुनाह के लिये हो।

(شُعَبُ الْاِیمان ج٣ص٣٧٤حدیث٣٨١٢, फ़तावा रज़विय्या मुख़र्रजा, जि. 10, स. 648)

60 महीनों के रोज़ों का सवाब : हज़रते सय्यिदुना **अबू हुरैरा** رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ फ़रमाते हैं : "जो कोई **सत्ताईसवीं रजब** का रोज़ा रखे, **अल्लाह तआला** उस के लिये **साठ महीनों** के रोज़ों का सवाब लिखे।" (فضائِلُ شَهرِ رَجَب ص ۱۰)

......तो गोया सो साल के रोज़े रखे : हज़रते सय्यिदुना सलमान फ़ारसी رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ से मरवी है : **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ के महबूब, दानाए ग़ुयूब, मुनज़्ज़हुन अ़निल उ़यूब صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم का फ़रमाने ज़ीशान है : "**रजब** में एक दिन और रात है जो उस दिन रोज़ा रखे और रात को क़ियाम (इबादत) करे तो गोया उस ने सो साल के रोज़े रखे और येह **रजब** की **सत्ताईस तारीख़** है।" (شُعَبُ الایمان ج۳ص۳۷٤حدیث ۳۸۱۱)

दा'वते इस्लामी और जश्ने मे'राजुन्नबी صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم **:**

प्यारे प्यारे इस्लामी भाइयो ! रजबुल मुरज्जब को एक खुसूसिय्यत येह भी हासिल है कि इस की सत्ताईसवीं शब को हमारे मीठे मीठे मक्की मदनी आक़ा صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم को रब्बुल उ़ला की त़रफ़ से मे'राज का मो'जिज़ा अ़त़ा हुवा, आप صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने सत्ताईसवीं रात मस्जिदुल ह़राम से मस्जिदे अक़्सा (बैतुल मक़्दिस) और फिर वहां से आस्मानों की सैर फ़रमाई। जन्नत व दोज़ख़ के अ़जाइबात मुलाह़ज़ा फ़रमाए। अ़र्श को अपनी क़दम बोसी का शरफ़ बख़्शा और ऐन बेदारी

के आ़लम में खुली आंखों से अपने परवर दगार عَزَّوَجَلَّ का दीदार किया। येह सारा सफ़र आन की आन में तै फ़रमा कर वापस तशरीफ़ ले आए। **रजबुल मुरज्जब** की सत्ताईसवीं शब बेह़द अ़ज़्मत वाली है। اَلْحَمْدُ لِلّٰه عَزَّوَجَلَّ तब्लीग़े क़ुरआनो सुन्नत की आ़लमगीर ग़ैर सियासी तह़रीक, **दा'वते इस्लामी** की त़रफ़ से हर साल सत्ताईसवीं शब को **जश्ने मे'राजुन्नबी** صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم के सिलसिले में दुन्या में बे शुमार मक़ामात पर **इज्तिमाए़ ज़िक्रो ना'त** का इन्इ़क़ाद किया जाता है। मेरे ह़ुस्ने ज़न के मुत़ाबिक़ जश्ने मे'राज का दुन्या का सब से बड़ा इज्तिमाअ़ सालहा साल से اَلْحَمْدُ لِلّٰه عَزَّوَجَلَّ हमारे शहर में होता है जो कि तक़्रीबन सारी रात जारी रहता और बराहे रास्त मदनी चेनल पर टेलेकास्ट किया जाता है।

ख़ुदा की क़ुदरत कि चांद ह़क़ के करोरों मन्ज़िल में जल्वा कर के
अभी न तारों की छाउं बदली कि नूर के तड़के आ लिये थे

(ह़दाइक़े बख़्शिश, स. 237)

कफ़न की वापसी : बसरा की एक नेक ख़ातून ने ब वक़्ते वफ़ात अपने बेटे को **वसिय्यत** की, कि मुझे उस कपड़े का **कफ़न** देना जिसे पहन कर मैं **रजबुल मुरज्जब** में इबादत किया करती थी। बा'द अज़् वफ़ात बेटे ने किसी और कपड़े में कफ़ना कर दफ़्ना दिया। जब वोह

फ़रमाने मुस्त़फ़ा صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم : मुझ पर दुरूद शरीफ़ पढ़ो, अल्लाह عَزَّوَجَلَّ तुम पर रह़मत भेजेगा। (ابن عدی)

क़ब्रिस्तान से घर आया तो येह देख कर ह़ैरान रह गया कि जो कफ़न उस ने पहनाया था वोह घर में मौजूद है! जब उस ने मां की **वसिय्यत वाले कपड़े** तलाश किये तो वोह अपनी जगह से ग़ाइब थे। इतने में एक ग़ैबी आवाज़ गूंज उठी : "अपना कफ़न वापस ले लो हम ने उस को उसी कपड़े में कफ़नाया है (जिस की उस ने वसिय्यत की थी) जो **रजब के रोज़े** रखता है हम उस को **क़ब्र में रन्जीदा** नहीं रहने देते।" (نُزهَةُ المجالس ج ۱ ص ۲۰۸) **अल्लाहु रब्बुल इ़ज़्ज़त عَزَّوَجَلَّ की उन पर रह़मत हो और उन के सदक़े हमारी बे ह़िसाब मग़्फ़िरत हो।**

صَلُّوا عَلَى الْحَبِيب! صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلٰى مُحَمَّد

लाड प्यार ने ढीट बना दिया था : प्यारे प्यारे इस्लामी भाइयो! रजबुल मुरज्जब के रोज़ों की मदनी सोच बनाने, गुनाहों की आ़दत छुड़ाने और इ़बादत की लज़्ज़त पाने के लिये तब्लीग़े क़ुरआनो सुन्नत की आ़लमगीर ग़ैर सियासी तह़रीक, **दा'वते इस्लामी** के **मदनी क़ाफ़िले** में **आ़शिक़ाने रसूल** के हमराह सुन्नतों भरे सफ़र का मा'मूल बना लीजिये। तरग़ीब के लिये मदनी क़ाफ़िले की एक **मदनी बहार** आप के गोश गुज़ार की जाती है : एक इस्लामी भाई अपने वालिदैन के इक्लौते बेटे थे, ज़ियादा लाड प्यार ने उन को ह़द दरजे **ढीट** और मां बाप का सख़्त ना फ़रमान बना दिया था, रात गए तक

आवारा गर्दी करते और सुब्ह देर तक सोए रहते। मां बाप समझाते तो उन को झाड़ देते, जिस पर वोह बेचारे बा'ज़ अवक़ात रो पड़ते। ख़ुश क़िस्मती से उन्हें **दा'वते इस्लामी** वाले एक आ़शिक़े रसूल से मुलाक़ात की सआ़दत मिली उन्हों ने मह़ब्बत और प्यार से **इन्फ़िरादी कोशिश** करते हुए मदनी क़ाफ़िले में सफ़र के लिये तय्यार किया। اَلْحَمْدُ لِلّٰه वोह इस्लामी भाई **आ़शिक़ाने रसूल** के हमराह तीन दिन के **मदनी क़ाफ़िले** के मुसाफ़िर बन गए। न जाने उन आ़शिक़ाने रसूल ने तीन दिन के अन्दर क्या घोल कर पिला दिया कि उन का **पथ्थर नुमा दिल** भी मोम बन गया, मदनी क़ाफ़िले से **नमाज़ी** बन कर लौटे। घर आ कर उन्हों ने सलाम किया, वालिद साहिब की दस्त बोसी की और **अम्मीजान** के क़दम चूमे। घर वाले ह़ैरान थे ! इस को क्या हो गया है कि कल तक जो किसी की बात सुनने के लिये तय्यार नहीं था वोह आज इतना बा अदब बन गया है ! اَلْحَمْدُ لِلّٰه عَزَّوَجَلَّ **मदनी क़ाफ़िले** में **आ़शिक़ाने रसूल** की सोह़बत ने उन्हें यक्सर बदल कर रख दिया और उन्हें मुसल्मानों को नमाज़े फ़ज्र के लिये जगाने या'नी **सदाए मदीना** लगाने की तन्ज़ीमी तौ़र पर ज़िम्मेदारी की सआ़दत मिली। (**दा'वते इस्लामी** के मदनी माह़ोल में मुसल्मानों को नमाज़े फ़ज्र के लिये उठाने को सदाए मदीना लगाना कहते हैं)

बेशक आ'माले बद, और अफ़्आले बद की छुटें आदतें, क़ाफ़िले में चलो
कर सफ़र आएंगे, तो सुधर जाएंगे अब न सुस्ती करें, क़ाफ़िले में चलो

(वसाइले बख़्शिश, स. 672)

صَلُّوا عَلَى الْحَبِيب! صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلٰى مُحَمَّد

सोह़बत के मुतअ़ल्लिक़ तीन रिवायात : **प्यारे प्यारे इस्लामी भाइयो !** देखा आप ने ! **आ़शिक़ाने रसूल** की सोह़बत ने किस त़रह़ एक बे नमाज़ी नौ जवान को दूसरों को नमाज़ की दा'वत देने वाला बना दिया ! इस में कोई शक नहीं कि सोह़बत ज़रूर रंग लाती है, अच्छी सोह़बत अच्छा और बुरी सोह़बत बुरा बनाती है । लिहाज़ा सोह़बत के मुतअ़ल्लिक़ तीन अह़ादीसे मुबारका मुलाह़ज़ा फ़रमाइये : ﴾1﴿ अच्छा साथी वोह है कि जब तू ख़ुदा عَزَّوَجَلَّ को याद करे तो तेरी मदद करे और जब तू भूले तो याद दिलाए (موسوعہ ابن ابی الدنیا ج۸ص۱۶۱ حدیث۴۲ مُلَخَّصاً)
﴾2﴿ अच्छा हम नशीन (या'नी अच्छा साथी) वोह है कि उस को देखने से तुम्हें **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ याद आ जाए और उस का अ़मल तुम्हें आख़िरत की याद दिलाए । (اَلْجامِعُ الصَّغِير ص ۲۴۷ حديث ۴۰۶۳) ﴾3﴿ अमीरुल मुअमिनीन ह़ज़रते सय्यिदुना उ़मर फ़ारूके़ आ'ज़म رَضِىَ اللّٰهُ تَعَالٰى عَنْه ने फ़रमाया : ऐसी चीज़ में न पड़ो जो तुम्हारे लिये मुफ़ीद न हो और दुश्मन से अलग रहो और दोस्त से मोह़तात़ रहो मगर जब कि वोह अमीन (या'नी अमानत दार) हो

कि अमीन की बराबरी का कोई नहीं और अमीन वोही है जो **अल्लाह** से डरे । और फ़ाजिर (या'नी **अल्लाह** व रसूल के ना फ़रमान) के साथ न रहो कि वोह तुम्हें फ़ुजूर (या'नी ना फ़रमानी) सिखाएगा और उस के सामने भेद की बात न कहो और अपने काम में उन से मश्वरा लो जो **अल्लाह** से डरते हैं । (شُعَبُ الْإيمان ج ٤ ص ٢٠٧ حديث ٤٩٩٥)

बुरी सोह़बत की मुमानअ़त : **बे नमाज़ियों,** गालियां बकने वालों, फ़िल्में डिरामे देखने और गाने बाजे सुनने वालों, झूट, ग़ीबत, चुग़ली, वा'दा ख़िलाफ़ी करने वालों, चोरों, रिश्वत ख़ोरों, शराबियों, फ़ासिक़ों और फ़ाजिरों नीज़ बद मज़्हबों और काफ़िरों की सोह़बत में बैठने से बचना चाहिये । **फ़तावा रज़विय्या** जिल्द 22 सफ़्ह़ा 237 पर है : मेरे आक़ा **आ'ला ह़ज़रत** رَحْمَةُ اللّٰهِ تَعَالٰى عَلَيْه की ख़िदमत में इस्तिफ़्सार किया (या'नी पूछा) गया : ज़ानी और दय्यूस (या'नी जो बा वुजूदे कुदरत अपनी बीवी या किसी भी मह़रमा की बे ह़याई के कामों को बर क़रार रहने दे) से कहां तक एह़तिराज़ (या'नी परहेज़) करना चाहिये ? जवाबन इर्शाद फ़रमाया : "ज़ानी व दय्यूस फ़ासिक़ हैं, उन के पास उठने बैठने मेलजोल से एह़तिराज़ (बचना) चाहिये ।" येह जवाब देने के बा'द आप ने पारह 7 **सूरतुल अन्आ़म** की आयत नम्बर 68 तह़रीर फ़रमाई जिस में इर्शादे ख़ुदावन्दी होता है :

وَ اِمَّا یُنۡسِیَنَّکَ الشَّیۡطٰنُ فَلَا تَقۡعُدۡ بَعۡدَ الذِّکۡرٰی مَعَ الۡقَوۡمِ الظّٰلِمِیۡنَ ﴿۶۸﴾ **तरजमए कन्ज़ुल ईमान :** और जो कहीं तुझे शैतान भुलावे तो याद आए पर ज़ालिमों के पास न बैठ।

मुफ़स्सिरे शहीर **हकीमुल उम्मत** हज़रते मुफ़्ती अहमद यार ख़ान عَلَيْهِ رَحْمَةُ الْحَنَّان इस आयते मुबारका के तहत फ़रमाते हैं, इस से मा'लूम हुवा कि बुरी सोहबत से बचना निहायत ज़रूरी है। बुरा यार बुरे सांप से बदतर है कि बुरा सांप जान लेता है और बुरा यार ईमान बरबाद करता है। (नूरुल इरफ़ान, स. 215)

इबादत में, रियाज़त में, तिलावत में लगा दे दिल
रजब का वासिता देता हूं फ़रमा दे करम मौला

(वसाइले बख़्शिश, स. 98)

صَلُّوا عَلَی الْحَبِیْب ! صَلَّی اللّٰهُ تَعَالٰی عَلٰی مُحَمَّد

शा'बानुल मुअ़ज़्ज़म के रोज़े

आक़ा का महीना : रसूले अकरम, नूरे मुजस्सम صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم का **शा'बानुल मुअ़ज़्ज़म** के बारे में फ़रमाने मुकर्रम है : شَعْبَانُ شَهْرِی وَرَمَضَانُ شَهْرُ اللّٰه । या'नी शा'बान मेरा महीना है और रमज़ान **अल्लाह** का महीना है। (اَلْجَامِعُ الصَّغِير ص ۳۰۱ حديث ۴۸۸۹)

शा'बान के पांच हुरूफ़ की बहारें : سُبْحٰنَ اللّٰہ عَزَّوَجَلَّ ! **माहे शा'बानुल मुअ़ज़्ज़म** की अ़ज़मतों पर कुरबान ! इस की फ़ज़ीलत के लिये इतना ही काफ़ी है कि हमारे मीठे मीठे आक़ा, मक्की मदनी मुस्त़फ़ा صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने इसे **"मेरा महीना"** फ़रमाया। सरकारे ग़ौसे आ'ज़म, शैख़ अ़ब्दुल क़ादिर जीलानी ह़म्बली عَلَیْہِ رَحْمَۃُ اللّٰہِ الْوَلِی लफ़्ज़ **"शा'बान"** के पांच हुरूफ़ : "ش،ع،ب،ا،ن" के मुतअ़ल्लिक़ नक़्ल फ़रमाते हैं : ش से मुराद "शरफ़" या'नी बुज़ुर्गी, ع से मुराद "उ़लुव्व" या'नी बुलन्दी, ب से मुराद "बिर" या'नी एह़सान, "ا" से मुराद "उल्फ़त" और ن से मुराद "नूर" है, तो येह तमाम चीज़ें **अल्लाह तआ़ला** अपने बन्दों को इस महीने में अ़त़ा फ़रमाता है। मज़ीद फ़रमाते हैं : "येह वोह महीना है जिस में नेकियों के दरवाज़े खोल दिये जाते हैं, बरकतों का नुज़ूल होता है, ख़त़ाएं मिटा दी जाती हैं और गुनाहों का कफ़्फ़ारा अदा किया जाता है, और ख़ैरुल बरिय्यह, सय्यिदुल वरा जनाबे मुह़म्मदे मुस्त़फ़ा صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم पर दुरूदे पाक की कसरत की जाती है और येह नबिय्ये मुख़्तार صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم पर दुरूद भेजने का महीना है।" (غُنْیَۃُ الطَّالِبِین ج ۱ ص ۳۴۱،۳۴۲)

सह़ाबए किराम عَلَیْہِمُ الرِّضْوَان **का जज़्बा : ह़ज़रते** सय्यिदुना अनस बिन मालिक رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ फ़रमाते हैं : "**शा'बान** का चांद

नज़र आते ही **सहाबए किराम** عَلَيْهِمُ الرِّضْوَان तिलावते कुरआने पाक की त़रफ़ ख़ूब मतवज्जेह हो जाते, अपने अम्वाल की ज़कात निकालते ताकि ग़ुरबा व मसाकीन मुसल्मान माहे **रमज़ान** के रोज़ों के लिये तय्यारी कर सकें, हुक्काम क़ैदियों को त़लब कर के जिस पर "ह़द" (या'नी शरई सज़ा) जारी करना होती उस पर ह़द क़ाइम करते, बक़िय्या में से जिन को मुनासिब होता उन्हें आज़ाद कर देते, ताजिर अपने क़र्ज़े अदा कर देते, दूसरों से अपने क़र्ज़े वुसूल कर लेते। (यूं माहे **रमज़ानुल मुबारक** से क़ब्ल ही अपने आप को फ़ारिग़ कर लेते) और रमज़ान शरीफ़ का चांद नज़र आते ही ग़ुस्ल कर के (बा'ज़ ह़ज़रात) ए'तिकाफ़ में बैठ जाते।"

(اَیضاًص۳٤۱)

मौजूदा मुसल्मानों का जज़्बा : سُبْحٰنَ اللّٰہ عَزَّوَجَلَّ ! पहले के मुसल्मानों को इ़बादत का किस क़दर ज़ौक़ होता था ! मगर अफ़्सोस ! आज कल के मुसल्मानों को ज़ियादा तर ह़ुसूले माल ही का शौक़ है। पहले के मदनी सोच रखने वाले मुसल्मान मुतबर्रिक अय्याम (या'नी बरकत वाले दिनों) में रब्बुल अनाम عَزَّوَجَلَّ की ज़ियादा से ज़ियादा इ़बादत कर के उस का कुर्ब ह़ासिल करने की कोशिशें करते थे और आज कल के बा'ज़ मुसल्मान मुबारक दिनों, ख़ुसूसन माहे **रमज़ानुल मुबारक** में दुन्या की ज़लील दौलत कमाने की नई नई तरकीबें सोचते हैं। **अल्लाह**

عَزَّوَجَلَّ अपने बन्दों पर मेह्रबान हो कर नेकियों का अज्रो सवाब ख़ूब बढ़ा देता है, लेकिन दुन्या की दौलत से महब्बत करने वाले लोग **रमज़ानुल मुबारक** में अपनी चीज़ों का भाव बढ़ा कर ग़रीब मुसल्मानों की परेशानियों में इज़ाफ़ा कर देते हैं। सद करोड़ अफ़्सोस ! ख़ैर ख़्वाहिये मुस्लिमीन का जज़्बा अब दम तोड़ता नज़र आ रहा है !

ऐ ख़ासए ख़ासाने रुसुल वक़्ते दुआ है उम्मत पे तेरी आ के अ़जब वक़्त पड़ा है
जो दीन बड़ी शान से निकला था वत़न से परदेस में वोह आज ग़रीबुल ग़ुरबा है
फ़रियाद है ऐ कश्तिये उम्मत के निगहबां
बेड़ा येह तबाही के क़रीब आन लगा है

صَلُّوْا عَلَی الْحَبِیْب ! صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلٰی مُحَمَّد

ता'ज़ीमे रमज़ान के लिये शा'बान के रोज़े : सरकारे मदीना, सुल्त़ाने बा क़रीना, क़रारे क़ल्बो सीना, फ़ैज़ गन्जीना, साहिबे मुअ़त्त़र पसीना, बाइसे नुज़ूले सकीना صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم का फ़रमाने अ़ज़मत निशान है : "रमज़ान के बा'द सब से अफ़्ज़ल **शा'बान** के रोज़े हैं, ता'ज़ीमे रमज़ान के लिये।" (شُعَبُ الْاِیمان ج۳ص۳۷۷ حدیث۳۸۱۹)

आक़ा शा'बान के अक्सर रोज़े रखते थे : बुख़ारी शरीफ़ में है : हज़रते सय्यिदतुना आइशा सिद्दीक़ा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہَا फ़रमाती हैं : **रसूलुल्लाह** صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم **शा'बान** से ज़ियादा किसी महीने में

रोज़े न रखते बल्कि पूरे **शा'बान** ही के रोज़े रख लेते और फ़रमाया करते : अपनी इस्तित़ाअ़त के मुत़ाबिक़ अ़मल करो कि **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ उस वक़्त तक अपना फ़ज़्ल नहीं रोकता जब तक तुम उक्ता न जाओ।

(بُخاری ج ۱ ص ٦٤٨ حدیث ١٩٧٠)

ह़दीसे पाक की शर्ह़ : शारेह़े बुख़ारी ह़ज़रते अ़ल्लामा **मुफ़्ती मुह़म्मद शरीफ़ुल ह़क़** अमजदी عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللّٰهِ الْقَوِی इस ह़दीसे पाक के तह़्त लिखते हैं : मुराद येह है कि शा'बान में अक्सर दिनों में रोज़ा रखते थे इसे तग़लीबन (या'नी ग़लबे और ज़ियादत के लिह़ाज़ से) कुल (या'नी सारे महीने के रोज़े रखने) से ता'बीर कर दिया। जैसे कहते हैं : "फ़ुलां ने पूरी रात इबादत की" जब कि उस ने रात में खाना भी खाया हो और ज़रूरिय्यात से फ़राग़त भी की हो, यहां तग़लीबन अक्सर को "कुल" कह दिया। मज़ीद फ़रमाते हैं : इस ह़दीस से मा'लूम हुवा कि शा'बान में जिसे क़ुव्वत हो वोह ज़ियादा से ज़ियादा रोज़े रखे। अलबत्ता जो कमज़ोर हो वोह रोज़ा न रखे क्यूं कि इस से **रमज़ान** के रोज़ों पर असर पड़ेगा, येही मह़्मल (या'नी मुराद व मक़्सद) है उन अह़ादीस (मसलन तिरमिज़ी, ह़दीस 738 वग़ैरा) का जिन में फ़रमाया गया : "निस्फ़ (या'नी आधे) शा'बान के बा'द रोज़ा न रखो।"

[ترمذی حدیث ۷۳۸] (नुज़्हतुल क़ारी, जि. 3, स. 377, 380)

फ़रमाने मुस्तफ़ा صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰی عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم : मुझ पर दुरूद पढ़ कर अपनी मजालिस को आरास्ता करो कि तुम्हारा दुरूद पढ़ना बरोज़े क़ियामत तुम्हारे लिये नूर होगा। (فردوس الاخبار)

मरने वालों की फ़ेहरिस बनाने का महीना : हज़रते सय्यिदतुना आइशा सिद्दीक़ा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہَا फ़रमाती हैं : ताजदारे रिसालत صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰی عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم पूरे **शा'बान** के रोज़े रखा करते थे। फ़रमाती हैं कि मैं ने अ़र्ज़ की : **या रसूलल्लाह** صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰی عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ! क्या सब महीनों में आप صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰی عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم के नज़्दीक ज़ियादा पसन्दीदा **शा'बान** के रोज़े रखना है ? तो महबूबे रब्बुल इबाद صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰی عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने इर्शाद फ़रमाया : **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ इस साल मरने वाली हर जान को लिख देता है और मुझे येह पसन्द है कि मेरा वक़्ते रुख़्सत आए और मैं रोज़ादार होउं।

(أبو يَعْلٰى ج٤ ص٢٧٧ حديث٤٨٩٠)

नफ़्ल रोज़ों का पसन्दीदा महीना : हज़रते सय्यिदुना **अ़ब्दुल्लाह** बिन अबी क़ैस رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ से मरवी है कि उन्हों ने उम्मुल मुअमिनीन सय्यिदतुना आइशा सिद्दीक़ा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہَا को फ़रमाते सुना : अम्बिया के सरताज صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰی عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم का पसन्दीदा महीना शा'बानुल मुअ़ज़्ज़म था कि इस में रोज़े रखा करते फिर इसे **रमज़ानुल मुबारक** से मिला देते। (ابوداؤد ج٢ ص٤٧٦ حديث ٢٤٣١)

लोग इस से गाफ़िल हैं : हज़रते सय्यिदुना उसामा बिन ज़ैद رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ फ़रमाते हैं : "मैं ने अ़र्ज़ की : **या रसूलल्लाह** صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰی عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ! मैं देखता हूं कि जिस त़रह़ आप صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰی عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم

शा'बान में (नफ़्ल) रोज़े रखते हैं इस त़रह़ किसी भी महीने में नहीं रखते !" फ़रमाया : **रजब** और **रमज़ान** के बीच में येह महीना है, लोग इस से ग़ाफ़िल हैं, इस में लोगों के आ'माल **अल्लाहु रब्बुल आ़लमीन** عَزَّوَجَلَّ की त़रफ़ उठाए जाते हैं और मुझे येह मह़बूब है कि मेरा अ़मल इस ह़ाल में उठाया जाए कि मैं रोज़ादार होउं। (نَسائی ص ۳۸۷ حدیث ۲۳۰۴)

त़ाक़त के मुत़ाबिक़ अ़मल कीजिये : उम्मुल मुअमिनीन ह़ज़रते सय्यिदतुना आ़इशा सिद्दीक़ा رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْهَا रिवायत फ़रमाती हैं : **रसूलुल्लाह** صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم **शा'बान** से ज़ियादा किसी महीने में रोज़े न रखा करते थे कि पूरे **शा'बान** के ही रोज़े रखा करते थे और फ़रमाया करते : "अपनी इस्तित़ाअ़त के मुत़ाबिक़ अ़मल करो कि **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ उस वक़्त तक अपना फ़ज़्ल नहीं रोकता जब तक तुम उक्ता न जाओ, बेशक उस के नज़्दीक पसन्दीदा (नफ़्ल) नमाज़ वोह है कि जिस पर हमेशगी इख़्तियार की जाए अगर्चे कम हो।" तो जब आप صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم कोई नमाज़ (नफ़्ल) पढ़ते तो उस पर हमेशगी इख़्तियार फ़रमाते।

(بُخاری ج۱ ص۶۴۸ حدیث ۱۹۷۰)

दा'वते इस्लामी में रोज़ों की बहार : मुकाशफ़तुल क़ुलूब में है : मज़्कूरा ह़दीसे पाक में पूरे **माहे शा'बानुल मुअ़ज़्ज़म** के रोज़ों से मुराद अक्सर **शा'बानुल मुअ़ज़्ज़म** के रोज़े हैं। (مُکاشَفَةُ القُلُوب ص ۳۰۳)

अगर कोई पूरे **शा'बानुल मुअ़ज़्ज़म** के रोज़े रखना चाहे तो उस को मुमानअ़त भी नहीं। اَلْحَمْدُ لِلّٰه عَزَّوَجَلَّ तब्लीग़े कुरआनो सुन्नत की आ़लमगीर ग़ैर सियासी तह़रीक, **दा'वते इस्लामी** के कई इस्लामी भाई और इस्लामी बहनों में **रजबुल मुरज्जब** और **शा'बानुल मुअ़ज़्ज़म** दोनों महीनों में रोज़े रखने की तरकीब होती है और मुसल्सल रोज़े रखते हुए येह ह़ज़रात **रमज़ानुल मुबारक** से मिल जाते हैं।

पतंग बाज़ी का शौक़ीन : प्यारे प्यारे इस्लामी भाइयो ! आप भी रोज़ों और सुन्नतों पर इस्तिक़ामत पाने के लिये दा'वते इस्लामी के मदनी माह़ोल से हर दम वाबस्ता रहिये। तरग़ीब के लिये एक मुश्कबार **मदनी बहार** आप के गोश गुज़ार करता हूं। एक इस्लामी भाई की पिछली ज़िन्दगी गुनाहों में गुज़री, **वोह पतंग बाज़ी के शौक़ीन थे** नीज़ विडियो गेम्ज़ और गोलियां खेलना वग़ैरा उन के मशाग़िल में शामिल था। हर एक के मुआ़मले में टांग अड़ाना, ख़्वाह म ख़्वाह लोगों से लड़ाई मोल लेना, बात बात पर मारधाड़ पर उतर आना वग़ैरा मा'मूलात में शामिल था। ख़ुश क़िस्मती से एक इस्लामी भाई की **इन्फ़िरादी कोशिश** पर **रमज़ानुल मुबारक** के आख़िरी अ़शरे में अ़लाक़े की मस्जिद में **मो'तकिफ़** हो गए। उन्हें बहुत अच्छे अच्छे ख़्वाब नज़र आए और

ख़ूब सुकून मिला। उन्हों ने यके बा'द दीगरे मज्ीद दो साल **ए'तिकाफ़** की सआ़दत हासिल की। एक बार मस्जिद के मुअज़्ज़िन साहिब इन्फ़िरादी कोशिश कर के उन्हें तब्लीग़े क़ुरआनो सुन्नत की आ़लमगीर ग़ैर सियासी तह़रीक, **दा'वते इस्लामी** के आ़लमी मदनी मर्कज़ फ़ैज़ाने मदीना में हफ़्तावार सुन्नतों भरे **इज्तिमाअ़** में ले आए। एक मुबल्लिग़ बयान कर रहे थे, सफ़ेद लिबास और कथ्थई चादर में मल्बूस, चेहरे पर एक मुश्त दाढ़ी और सर पर इमामे शरीफ़ का ताज वाला ऐसा बा रौनक़ चेहरा उन्हों ने ज़िन्दगी में पहली बार ही देखा था। मुबल्लिग़ के चेहरे की कशिश और नूरानिय्यत ने उन का दिल मोह लिया और वोह दा'वते इस्लामी के **मदनी माह़ोल** में आ गए और अब दो साल से आ़लमी मदनी मर्कज़ ही में ए'तिकाफ़ करते हैं। اَلْحَمْدُ لِلّٰه عَزَّوَجَلَّ उन्हों ने एक मुठ्ठी दाढ़ी भी सजा ली।

صَلُّوْا عَلَى الْحَبِيْب! صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلٰى مُحَمَّد

रमज़ान के बा'द कौन सा महीना अफ़्ज़ल है ? : ह़ज़रते सय्यिदुना अनस رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْه फ़रमाते हैं : दो आ़लम के मालिको मुख़्तार, मक्की मदनी सरकार صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم के दरबारे गुहर बार में अ़र्ज़ की गई कि रमज़ान के बा'द कौन सा रोज़ा अफ़्ज़ल है ? इर्शाद फ़रमाया : "ता'ज़ीमे **रमज़ान** के लिये **शा'बान** का।" फिर अ़र्ज़ की गई :

फ़रमाने मुस्तफ़ा صَلَّى اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم : जो मुझ पर दस मरतबा दुरूदे पाक पढ़े अल्लाह عَزَّوَجَلَّ उस पर सो रह़मतें नाज़िल फ़रमाता है। (طبرانی)

कौन सा सदक़ा अफ़्ज़ल है ? फ़रमाया : **रमज़ान** के माह में **सदक़ा** करना (ترمذی ج۲ص۱٤٥ حدیث ٦٦٣)

पन्दरहवीं शब में तजल्ली : उम्मुल मुअमिनीन ह़ज़रते सय्यिदतुना आइशा सिद्दीक़ा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہَا से रिवायत है, ताजदारे रिसालत, सरापा रह़मत صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया : "**अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ **शा'बान की पन्दरहवीं शब** में तजल्ली फ़रमाता है। इस्तिग़्फ़ार (या'नी तौबा) करने वालों को बख़्श देता और त़ालिबे रह़मत पर रह़्म फ़रमाता और अ़दावत वालों को जिस ह़ाल पर हैं उसी पर छोड़ देता है।" (شُعَبُ الایمان ج۳ص۳۸۲حدیث۳۸۳۵)

अ़दावत वाले की शामत : ह़ज़रते सय्यिदुना मुआ़ज़ बिन जबल رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ से रिवायत है, सुल्त़ाने मदीनए मुनव्वरह, शहन्शाहे मक्कए मुकर्रमा صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم फ़रमाते हैं : "**शा'बान की पन्दरहवीं शब में अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ तमाम मख़्लूक़ की त़रफ़ तजल्ली फ़रमाता है और सब को बख़्श देता है मगर काफ़िर और अ़दावत वाले को (नहीं बख़्शता)।"

(الاحسان بترتیب صحیح ابن حِبّان ج ۷ ص ٤٧٠ حدیث ٥٦٣٦)

ढेरों गुनाहगारों की मग़्फ़िरत होती है मगर......: ह़ज़रते सय्यिदतुना आइशा सिद्दीक़ा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہَا से रिवायत है, हुज़ूर सरापा नूर, फ़ैज़ गन्जूर صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया : मेरे पास जिब्राईल (عَلَیْہِ السَّلَام) आए और कहा : येह **शा'बान** की पन्दरहवीं रात है, इस में

अल्लाह तआ़ला जहन्नम से इतनों को आज़ाद फ़रमाता है जितने बनी कल्ब की बकरियों के बाल हैं मगर **काफ़िर** और अ़दावत वाले और **रिश्ता काटने वाले** और **कपड़ा लटकाने वाले** और **वालिदैन की ना फ़रमानी** करने वाले और शराब के आ़दी की त़रफ़ नज़रे रह़मत नहीं फ़रमाता। (شُعَبُ الْاِیمان ج ٣ ص ٣٨٤ حدیث ٣٨٣٧) (ह़दीसे पाक में ''कपड़ा लटकाने वाले'' का जो बयान है, इस से मुराद वोह लोग हैं जो तकब्बुर के साथ टख़्नों के नीचे तहबन्द या पाजामा या पतलून या सौब या'नी लम्बा अ़रबी कुरता वग़ैरा लटकाते हैं) करोड़ों ह़म्बलियों के अ़ज़ीम पेशवा ह़ज़रते सय्यिदुना इमाम अह़मद बिन ह़म्बल رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْه ने ह़ज़रते सय्यिदुना **अ़ब्दुल्लाह** इब्ने अ़म्र رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْهُمَا से जो रिवायत नक़्ल की उस में **क़ातिल** का भी ज़िक्र है। (مُسندِ اِمام احمد ج ٢ ص ٥٨٩ حدیث ٦٦٥٣)

ह़ज़रते सय्यिदुना कसीर बिन मुर्रह رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْه से रिवायत है कि ताजदारे रिसालत, सरापा रह़मत صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया : ''**अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ शा'बान की पन्दरहवीं शब में तमाम ज़मीन वालों को बख़्श देता है सिवाए **मुश्रिक** और **अ़दावत वाले** के।''

(شُعَبُ الْاِیمان ج ٣ ص ٣٨١ حدیث ٣٨٣٠)

ह़ज़रते सय्यिदुना दावूद عَلَيْهِ السَّلَام और शबे बराअत :

ह़ज़रते सय्यिदुना अ़लिय्युल मुर्तज़ा كَرَّمَ اللّٰهُ تَعَالٰی وَجهَهُ الْكَرِيم शा'बानुल

मुअ़ज़्ज़म की पन्दरहवीं रात या'नी शबे बराअत में अक्सर बाहर तशरीफ़ लाते। एक बार इसी त़रह़ **शबे बराअत** में बाहर तशरीफ़ लाए और आस्मान की त़रफ़ नज़र उठा कर फ़रमाया : एक मर्तबा **अल्लाह** तआ़ला के नबी ह़ज़रते सय्यिदुना दावूद عَلٰى نَبِيِّنَا وَعَلَيْهِ الصَّلٰوةُ وَالسَّلَام ने शा'बान की पन्दरहवीं रात आस्मान की त़रफ निगाह उठाई और फ़रमाया : येह वोह वक़्त है कि इस वक़्त में जिस शख़्स ने जो भी दुआ़ **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ से मांगी उस की दुआ़ **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ ने क़बूल फ़रमाई और जिस ने मग़्फ़िरत त़लब की **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ ने उस की मग़्फ़िरत फ़रमा दी बशर्ते़ कि दुआ़ करने वाला **उ़श्शार** (या'नी ज़ुल्मन टेक्स लेने वाला), **जादूगर, काहिन** और **बाजा बजाने वाला** न हो। फिर ह़ज़रते सय्यिदुना **दावूद** (عَلٰى نَبِيِّنَا وَعَلَيْهِ الصَّلٰوةُ وَالسَّلَام) ने येह दुआ़ की :

اَللّٰھُمَّ رَبَّ دَاوٗدَ اغْفِرْ لِمَنْ دَعَاكَ فِيْ هٰذِهِ اللَّيْلَةِ اَوِ اسْتَغْفَرَكَ فِيْهَا

या'नी ऐ **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ ! ऐ दावूद के परवर दगार ! जो इस रात में तुझ से दुआ़ करे या मग़्फ़िरत त़लब करे तू उस को बख़्श दे।

(لَطَائِفُ الْمَعَارِف ج۱ ص۱۳۷ مختصراً)

हर ख़त़ा तू दर गुज़र कर बे कसो मजबूर की
हो इलाही ! मग़्फ़िरत हर बे कसो मजबूर की

(वसाइले बख़्शिश, स. 96)

صَلُّوْا عَلَى الْحَبِيْب ! صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلٰى مُحَمَّد

महरूम लोग : प्यारे प्यारे इस्लामी भाइयो ! शबे बराअत बेहद अहम रात है, किसी सूरत से भी इसे गफ़्लत में न गुज़ारा जाए, इस रात रहमतों की ख़ूब बरसात होती है। इस मुबारक शब में **अल्लाह तबारक व तआला** "बनी कल्ब" की बकरियों के बालों से भी ज़ियादा लोगों को जहन्नम से आज़ाद फ़रमाता है। किताबों में लिखा है : "क़बीलए बनी कल्ब" क़बाइले अ़रब में सब से ज़ियादा बकरियां पालता था।[1]" आह ! कुछ बद नसीब ऐसे भी हैं जिन पर **शबे बराअत** या'नी छुटकारा पाने की रात भी न बख़्शे जाने की वईद है। **हज़रते** सय्यिदुना इमाम बैहक़ी शाफ़ेई عَلَيۡهِ رَحۡمَةُ اللّٰهِ الۡقَوِی "फ़ज़ाइलुल अवक़ात" में नक़्ल करते हैं : **रसूले अकरम,** नूरे मुजस्सम صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيۡهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم का फ़रमाने इब्रत निशान है : छ6 आदमियों की इस रात (या'नी शबे बराअत में) भी बख़्शिश नहीं होगी : ﴾1﴿ शराब का आदी ﴾2﴿ मां बाप का ना फ़रमान ﴾3﴿ ज़िना का आदी ﴾4﴿ क़त्ए तअ़ल्लुक़ करने वाला ﴾5﴿ तस्वीर बनाने वाला और ﴾6﴿ चुग़ल ख़ोर। (فضائل الاوقات ج۱ ص۱۳۰ حدیث۲۷) इसी तरह काहिन, जादूगर, तकब्बुर के साथ पाजामा या तहबन्द टख़्नों के नीचे लटकाने वाले और किसी मुसल्मान से बिला इजाज़ते शरई बुग़्ज़ो कीना रखने वाले पर भी इस रात मग़्फ़िरत की सआदत से महरूमी की वईद है, चुनान्चे तमाम मुसल्मानों को चाहिये कि मुतज़क्करा (या'नी बयान कर्दा) गुनाहों में से

मدينه

[1] : مرقاۃ المفاتیح ج۳ ص۳۷۵

अगर مَعَاذَ الله किसी गुनाह में मुलव्वस हों तो वोह बिल ख़ुसूस उस गुनाह से और बिल उ़मूम हर गुनाह से **शबे बराअत** के आने से पहले बल्कि आज और अभी सच्ची तौबा कर लें, और अगर बन्दों की हक़ तलफ़ियां की हैं तो तौबा के साथ साथ उन की मुआ़फ़ी तलाफ़ी की तरकीब भी फ़रमा लें।

इमामे अहले सुन्नत رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰى عَلَيْه **का पयाम तमाम मुसल्मानों के नाम : मेरे** आक़ा आ'ला ह़ज़रत, इमामे अहले सुन्नत, वलिय्ये ने'मत, अ़ज़ीमुल बरकत, अ़ज़ीमुल मर्तबत, परवानए शम्ए रिसालत, मुजद्दिदे दीनो मिल्लत, ह़ामिये सुन्नत, माह़िये बिद्अ़त, पीरे त़रीक़त, बाइसे ख़ैरो बरकत, ह़नफ़ी मज़्हब के अ़ज़ीम आ़लिम व मुफ़्ती ह़ज़रते अ़ल्लामा मौलाना अलह़ाज अल ह़ाफ़िज़ अल क़ारी शाह इमाम अह़मद रज़ा ख़ान عَلَيْهِ رَحْمَةُ الرَّحْمٰن ने अपने एक इरादत मन्द (या'नी मो'तक़िद) को **शबे बराअत** से क़ब्ल तौबा और मुआ़फ़ी तलाफ़ी के तअ़ल्लुक़ से एक मक्तूब शरीफ़ इरसाल फ़रमाया जो कि उस की इफ़ादियत के पेशे नज़र ह़ाज़िरे ख़िदमत है चुनान्चे "कुल्लियाते मकातीबे रज़ा" जिल्द अव्वल सफ़ह़ा 356 ता 357 पर है : **शबे बराअत** क़रीब है, इस रात तमाम बन्दों के आ'माल ह़ज़रते इ़ज़्ज़त में पेश होते हैं। मौला عَزَّوَجَلَّ ब तुफ़ैले हुज़ूरे पुरनूर, शाफ़ेए यौमुन्नुशूर عَلَيْهِ اَفْضَلُ الصَّلٰوةِ وَالتَّسْلِيْم

मुसल्मानों के ज़ुनूब (या'नी गुनाह) मुआ़फ़ फ़रमाता है मगर चन्द, उन में वोह दो मुसल्मान जो बाहम दुन्यवी वज्ह से रन्जिश रखते हैं, फ़रमाता है : "इन को रहने दो, जब तक आपस में सुल्ह़ न कर लें।" लिहाज़ा अहले सुन्नत को चाहिये कि ह़त्तल वस्अ़ क़ब्ले ग़ुरूबे आफ़्ताब **14 शा'बान** बाहम एक दूसरे से सफ़ाई कर लें, एक दूसरे के हुक़ूक़ अदा कर दें या मुआ़फ़ करा लें कि बि इज़्निही तआ़ला हुक़ूक़ुल इबाद से सह़ाइफ़े आ'माल (या'नी आ'माल नामे) ख़ाली हो कर बारगाहे इ़ज़्ज़त में पेश हों। हुक़ूक़े मौला तआ़ला के लिये तौबए सादिक़ा (या'नी सच्ची तौबा) काफ़ी है। (ह़दीसे पाक में है :) اَلتَّائِبُ مِنَ الذَّنْبِ كَمَنْ لَّا ذَنْبَ لَهٗ (या'नी गुनाह से तौबा करने वाला ऐसा है जैसे उस ने गुनाह किया ही नहीं (ابن ماجه حديث ٤٢٥٠)) ऐसी ह़ालत में बि इज़्निही तआ़ला ज़रूर इस शब में उम्मीदे मग़्फ़िरते ताम्मा (या'नी मुकम्मल मग़्फ़िरत की उम्मीद) है बशर्ते़ सिह़्ह़ते अ़क़ीदा। (या'नी अ़क़ीदा दुरुस्त होना शर्त़ है) وَهُوَ الْغَفُوْرُ الرَّحِيْمُ। (और वोह गुनाह मिटाने वाला रह़मत फ़रमाने वाला है) येह सब मुसालह़ते इख़्वान (या'नी भाइयों में सुल्ह़ करवाना) व मुआ़फ़िये हुक़ूक़ بِحَمْدِہٖ تَعَالٰی यहां सालहाए दराज़ (या'नी काफ़ी बरसों) से जारी है, उम्मीद है कि आप भी वहां के मुसल्मानों में इस का इज्रा कर के مَنْ سَنَّ فِی الْاِسْلَامِ سُنَّةً حَسَنَةً فَلَهٗ اَجْرُهَا وَاَجْرُمَنْ عَمِلَ بِهَا اِلٰی يَوْمِ الْقِيٰمَةِ لَا يَنْقُصُ مِنْ اُجُوْرِهِمْ شَیْءٌ[1] (या'नी

मदीना

[1]: معجم اوسط حديث ٨٩٤٦، معجم كبير ج ٢ ص ٣٢٨ حديث ٢٣٧٢

जो इस्लाम में अच्छी राह निकाले उस के लिये इस का सवाब है और क़ियामत तक जो उस पर अ़मल करें उन सब का सवाब हमेशा उस के नामए आ'माल में लिखा जाए बिग़ैर इस के कि उन के सवाबों में कुछ कमी आए) के मिस्दाक़ हों और इस फ़क़ीर के लिये अ़फ़्वो आ़फ़िय्यते दारैन की दुआ़ फ़रमाएं। फ़क़ीर आप के लिये दुआ़ करता है और करेगा। सब मुसल्मानों को समझा दिया जाए कि वहां (या'नी बारगाहे इलाही में) न ख़ाली ज़बान देखी जाती है न निफ़ाक़ पसन्द है, सुल्ह़ व मुआ़फ़ी सब सच्चे दिल से हो। वस्सलाम।

फ़क़ीर अह़मद रज़ा क़ादिरी عُفِیَ عَنْہُ अज़ : बरेली

शबे बराअत की ता'ज़ीम : शामी ताबिई़न رَحِمَهُمُ اللهُ الْمُبِين शबे बराअत की बहुत ता'ज़ीम करते थे और इस में ख़ूब इबादत बजा लाते, इन्ही से दीगर मुसल्मानों ने इस रात की ता'ज़ीम सीखी। बा'ज़ उ़लमाए शाम رَحِمَهُمُ اللهُ السَّلَام ने फ़रमाया : शबे बराअत में मस्जिद के अन्दर इज्तिमाई इबादत करना मुस्तह़ब है, ह़ज़रते सय्यिदाना ख़ालिद व लुक़्मान رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰی عَلَيْهِمَا और दीगर ताबिई़ने किराम رَحِمَهُمُ اللهُ السَّلَام इस रात (की ता'ज़ीम के लिये) बेहतरीन कपड़े ज़ैबे तन फ़रमाते, सुरमा और ख़ुश्बू लगाते, मस्जिद में (नफ़्ल) नमाज़ें अदा फ़रमाते। (لطائف المعارف ص ٢٦٣)

भलाइयों वाली चार रातें : उम्मुल मुअमिनीन ह़ज़रते सय्यिदतुना आइशा सिद्दीक़ा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْھَا फ़रमाती हैं : मैं ने नबिय्ये करीम, रऊफुर्रह़ीम عَلَیْهِ اَفْضَلُ الصَّلٰوةِ وَالتَّسْلِیْم को फ़रमाते सुना : **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ (ख़ास तौर पर) चार रातों में भलाइयों के दरवाज़े खोल देता है : ﴿1﴾ बक़र ईद की रात ﴿2﴾ ईदुल फ़ित्र की (चांद) रात ﴿3﴾ **शा'बान की पन्दरहवीं रात** कि इस रात में **मरने वालों** के नाम और लोगों का **रिज़्क़** और (इस साल) **ह़ज** करने वालों के नाम लिखे जाते हैं ﴿4﴾ अ़रफ़े की (या'नी 8 और 9 ज़ुल ह़िज्जा की दरमियानी) रात **अज़ान** (फ़ज्र) तक। (تفسیرِدُرِّ مَنثورج۷ص۴۰۲)

दूल्हा का नाम मुर्दों की फ़ेहरिस में ! : सरकारे मदीना صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم का फ़रमाने इ़ब्रत निशान : “(लोगों की) ज़िन्दगियां एक शा'बान से दूसरे शा'बान में मुन्क़त़ेअ़ होती हैं ह़त्ता कि एक आदमी निकाह़ करता है और उस की औलाद होती है ह़ालां कि उस का नाम मुर्दों में लिखा होता है।” (كَنْزُ الْعُمّال ج۱۰ص۲۹۲حدیث۴۲۷۷۳)

तू ख़ुशी के फूल लेगा कब तलक !

तू यहां ज़िन्दा रहेगा कब तलक !

(वसाइले बख़्शिश, स. 709)

मकान बनाने वाला मुर्दों की फ़ेहरिस में : ह़ज़रते सय्यिदुना इमाम इब्ने अबिद्दुन्या رَحْمَةُ اللّٰهِ تَعَالٰى عَلَيْه ह़ज़रते सय्यिदुना अ़त़ा बिन यसार

عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللّٰهِ الْغَفَّار से रिवायत करते हैं कि जब निस्फ़े शा'बान की रात (या'नी शबे बराअत) आती है तो मलकुल मौत عَلَيْهِ السَّلَام को एक सहीफ़ा (या'नी रिसाला) दिया जाता और कहा जाता है : येह सहीफ़ा पकड़ लो, एक बन्दा बिस्तर पर लैटा होगा और औरतों से निकाह करेगा और घर बनाएगा जब कि उस का नाम मुर्दों में लिखा जा चुका होगा।

(تفسیرِ دُرِّمنثورج۷ص۴۰۲)

साल भर के मुआमलात की तक़्सीम : हज़रते सय्यिदुना इब्ने अब्बास رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُمَا फ़रमाते हैं : "एक आदमी लोगों के दरमियान चल रहा होता है हालां कि वोह मुर्दों में उठाया हुवा होता है।" फिर आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ ने पारह 25 **सूरतुद्दुख़ान** की आयत नम्बर 3 और 4 तिलावत की :

اِنَّاۤ اَنْزَلْنٰهُ فِیْ لَیْلَةٍ مُّبٰرَكَةٍ اِنَّا كُنَّا مُنْذِرِیْنَ ﴿۳﴾ فِیْهَا یُفْرَقُ كُلُّ اَمْرٍ حَكِیْمٍ ﴿۴﴾

तरजमए कन्ज़ुल ईमान : बेशक हम ने इसे बरकत वाली रात में उतारा, बेशक हम डर सुनाने वाले हैं। इस में बांट दिया जाता है हर हिक्मत वाला काम।

फिर फ़रमाया : इस रात में एक साल से दूसरे साल तक दुन्या के मुआमलात की तक़्सीम की जाती है। (تفسیرِطَبَری ج۱۱ص۲۲۳)

मुफ़स्सिरे शहीर **हकीमुल उम्मत** हज़रते मुफ़्ती अहमद यार ख़ान عَلَيْهِ رَحْمَةُ الْحَنَّان मज़्कूरा आयाते मुबारका के तहत फ़रमाते हैं : "इस रात से मुराद या शबे क़द्र है सत्ताईसवीं 27 रात या **शबे बराअत पन्दरहवीं 15 शा'बान,** इस रात में पूरा कुरआन लौहे महफ़ूज़ से आस्माने दुन्या की तरफ़ उतारा गया फिर वहां से तेईस 23 साल के अर्से में थोड़ा थोड़ा हुज़ूर صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم पर उतरा। इस आयत से मा'लूम हुवा कि जिस रात में कुरआन उतरा वोह मुबारक है, तो जिस रात में साहिबे कुरआन صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم दुन्या में तशरीफ़ लाए वोह भी मुबारक है। इस रात में साल भर के रिज़्क़, मौत, ज़िन्दगी, इ़ज़्ज़तो ज़िल्लत, ग़रज़ तमाम इन्तिज़ामी उमूर लौहे महफ़ूज़ से फ़िरिश्तों के सहीफ़ों में नक़्ल कर के हर सहीफ़ा (या'नी रिसाला) उस महकमे के फ़िरिश्तों को दे दिया जाता है जैसे मलकुल मौत عَلَيْهِ السَّلَام को तमाम मरने वालों की फ़ेहरिस्त वग़ैरा।" (नूरुल इरफ़ान, स. 790)

नाज़ुक फ़ैसले : प्यारे प्यारे इस्लामी भाइयो ! पन्दरह **शा'बानुल मुअ़ज़्ज़म** की रात कितनी नाज़ुक है ! न जाने किस की क़िस्मत में क्या लिख दिया जाए ! बा'ज़ अवक़ात बन्दा ग़फ़्लत में पड़ा रह जाता है और उस के बारे में कुछ का कुछ तै हो चुका होता है। "गुन्यतुत्तालिबीन" में है : "बहुत से **कफ़न** धुल कर तय्यार रखे होते हैं मगर कफ़न पहनने

वाले बाज़ारों में घूम फिर रहे होते हैं, काफ़ी लोग ऐसे होते हैं कि उन की **क़ब्रें** खोदी जा चुकी होती हैं मगर उन में दफ़्न होने वाले ख़ुशियों में मस्त होते हैं, बा'ज़ लोग **हंस रहे** होते हैं हालां कि उन की मौत का वक़्त क़रीब आ चुका होता है। कई **मकानात** की ता'मीरात का काम पूरा हो गया होता है मगर साथ ही उन के मालिकान की ज़िन्दगी का वक़्त भी पूरा हो चुका होता है।" (غُنْيَةُ الطّالِبين ج١ص٣٤٨)

आगाह अपनी मौत से कोई बशर नहीं
सामान सो बरस का है पल की ख़बर नहीं

صَلُّوا عَلَى الْحَبِيب! صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلٰى مُحَمَّد

फ़ाएदे की बात : शबे बराअत में नामए आ'माल तब्दील होते हैं लिहाज़ा मुम्किन हो तो **14 शा'बानुल मुअ़ज़्ज़म** को भी रोज़ा रख लिया जाए ताकि आ'माल नामे के आख़िरी दिन में भी रोज़ा हो। **14 शा'बान को अ़स्र की नमाज़ बा जमाअ़त पढ़ कर वहीं नफ़्ल ए'तिकाफ़ कर लिया जाए और नमाज़े मग़रिब के इन्तिज़ार की निय्यत से मस्जिद ही में ठहरा जाए ताकि आ'माल नामा तब्दील होने के आख़िरी लम्हात में मस्जिद की हाज़िरी, ए'तिकाफ़ और इन्तिज़ारे नमाज़ वग़ैरा का सवाब लिखा जाए।** बल्कि ज़हे नसीब! सारी ही रात इबादत में गुज़ारी जाए।

मग़रिब के बा'द छ6 नवाफ़िल : **मा'मूलाते** औलियाए किराम رَحِمَهُمُ اللّٰهُ السَّلَام से है कि मग़रिब के फ़र्ज़ व सुन्नत वग़ैरा के बा'द **छ6 रक्अ़त नफ़्ल** दो दो रक्अ़त कर के अदा किये जाएं। **पहली** दो रक्अ़तों से पहले येह निय्यत कीजिये : "**या अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ ! इन दो रक्अ़तों की बरकत से मुझे दराज़िये उ़म्र बिलख़ैर अ़त़ा फ़रमा।" **दूसरी** दो रक्अ़तों में येह निय्यत फ़रमाइये : "**या अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ ! इन दो रक्अ़तों की बरकत से बलाओं से मेरी ह़िफ़ाज़त फ़रमा।" **तीसरी** दो रक्अ़तों के लिये येह निय्यत कीजिये : "**या अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ ! इन दो रक्अ़तों की बरकत से मुझे अपने सिवा किसी का मोह़ताज न कर।" इन 6 रक्अ़तों में **सूरतुल फ़ातिह़ा** के बा'द जो चाहें वोह सूरतें पढ़ सकते हैं, चाहें तो हर रक्अ़त में **सूरतुल फ़ातिह़ा** के बा'द तीन तीन बार **सूरतुल इख़्लास** पढ़ लीजिये। हर दो रक्अ़त के बा'द इक्कीस बार قُلْ هُوَ اللّٰهُ اَحَدٌ (पूरी सूरत) या एक बार **सूरए यासीन** शरीफ़ पढ़िये बल्कि हो सके तो दोनों ही पढ़ लीजिये। येह भी हो सकता है कि कोई एक इस्लामी भाई बुलन्द आवाज़ से **यासीन** शरीफ़ पढ़ें और दूसरे ख़ामोशी से ख़ूब कान लगा कर सुनें। इस में येह ख़याल रहे कि सुनने वाला इस दौरान ज़बान से **यासीन** शरीफ़ बल्कि कुछ भी न पढ़े और येह मस्अला ख़ूब याद रखिये कि जब कुरआने करीम बुलन्द आवाज़ से पढ़ा जाए तो जो लोग सुनने के लिये

फ़रमाने मुस्तफ़ा صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰی عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم **:** मुझ पर कसरत से दुरूदे पाक पढ़ो बेशक तुम्हारा मुझ पर दुरूदे पाक पढ़ना तुम्हारे गुनाहों के लिये मग़्फ़िरत है। (ابن عساکر)

हाज़िर हैं उन पर फ़र्ज़े ऐन है कि चुपचाप ख़ूब कान लगा कर सुनें। اِنْ شَآءَاللّٰه عَزَّوَجَلَّ रात शुरूअ़ होते ही सवाब का अम्बार लग जाएगा। हर बार **यासीन** शरीफ़ के बा'द **"दुआ़ए निस्फ़े शा'बान"** भी पढ़िये।

दुआ़ए निस्फ़े शा'बानुल मुअ़ज़्ज़म

اَلْحَمْدُ لِلّٰهِ رَبِّ الْعٰلَمِيْنَ وَ الصَّلٰوةُ وَ السَّلَامُ عَلٰى سَيِّدِ الْمُرْسَلِيْنَ اَمَّا بَعْدُ فَاَعُوْذُ بِاللّٰهِ مِنَ الشَّيْطٰنِ الرَّجِيْمِ ط بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ ط

اَللّٰهُمَّ يَا ذَا الْمَنِّ وَلَا يُمَنُّ عَلَيْهِ ط يَا ذَا الْجَلَالِ وَالْاِكْرَامِ ط يَا ذَا الطَّوْلِ وَالْاِنْعَامِ ط
لَآ اِلٰهَ اِلَّآ اَنْتَ ط ظَهْرُ اللَّاجِيْنَ ط وَجَارُ الْمُسْتَجِيْرِيْنَ ط وَاَمَانُ الْخَآئِفِيْنَ ط
اَللّٰهُمَّ اِنْ كُنْتَ كَتَبْتَنِيْ عِنْدَكَ فِيْۤ اُمِّ الْكِتٰبِ شَقِيًّا اَوْ مَحْرُوْمًا اَوْ مَطْرُوْدًا
اَوْ مُقَتَّرًا عَلَيَّ فِي الرِّزْقِ فَامْحُ اللّٰهُمَّ بِفَضْلِكَ شَقَاوَتِيْ وَحِرْمَانِيْ وَطَرْدِيْ
وَاقْتِتَارَ رِزْقِيْ ط وَاَثْبِتْنِيْ عِنْدَكَ فِيْۤ اُمِّ الْكِتٰبِ سَعِيْدًا مَّرْزُوْقًا مُّوَفَّقًا
لِّلْخَيْرَاتِ ط فَاِنَّكَ قُلْتَ وَقَوْلُكَ الْحَقُّ فِيْ كِتَابِكَ الْمُنَزَّلِ ط عَلٰى لِسَانِ
نَبِيِّكَ الْمُرْسَلِ ﴿يَمْحُوا اللّٰهُ مَا يَشَآءُ وَيُثْبِتُ ۚۖ وَعِنْدَهٗۤ اُمُّ الْكِتٰبِ ﴾[1]
اِلٰهِيْ بِالتَّجَلِّي الْاَعْظَمِ ط فِيْ لَيْلَةِ النِّصْفِ مِنْ شَهْرِ شَعْبَانَ الْمُكَرَّمِ ط
الَّتِيْ يُفْرَقُ فِيْهَا كُلُّ اَمْرٍ حَكِيْمٍ وَّيُبْرَمُ ط اَنْ تَكْشِفَ عَنَّا
مِنَ الْبَلَآءِ وَالْبَلْوَآءِ مَا نَعْلَمُ وَمَا لَا نَعْلَمُ ط وَاَنْتَ بِهٖ اَعْلَمُ ط اِنَّكَ اَنْتَ
الْاَعَزُّ الْاَكْرَمُ ط وَصَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلٰى سَيِّدِنَا مُحَمَّدٍ وَّعَلٰى اٰلِهٖ وَاَصْحَابِهٖ
وَسَلَّمَ ط وَالْحَمْدُ لِلّٰهِ رَبِّ الْعٰلَمِيْنَ ۝

مدینه

[1] پ۱۳، الرعد ۳۹

ऐ **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ ! ऐ एह़सान करने वाले कि जिस पर एह़सान नहीं किया जाता ! ऐ बड़ी शानो शौकत वाले ! ऐ फ़ज़्लो इन्आ़म वाले ! तेरे सिवा कोई मा'बूद नहीं। तू परेशान ह़ालों का मददगार, पनाह मांगने वालों को पनाह और ख़ौफ़ज़दों को अमान देने वाला है। ऐ **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ ! अगर तू अपने यहां उम्मुल किताब (या'नी लौहे़ मह़फ़ूज़) में मुझे शक़ी (या'नी बद बख़्त), मह़रूम, धुत्कारा हुवा और रिज़्क़ में तंगी दिया हुवा लिख चुका हो तो ऐ **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ ! अपने फ़ज़्ल से मेरी बद बख़्ती, मह़रूमी, ज़िल्लत और रिज़्क़ की तंगी को मिटा दे और अपने पास उम्मुल किताब में मुझे ख़ुश बख़्त, (कुशादा) रिज़्क़ दिया हुवा और भलाइयों की तौफ़ीक़ दिया हुवा सब्त (तह़रीर) फ़रमा दे, कि तू ने ही तेरी नाज़िल की हुई किताब में तेरे ही भेजे हुए नबी صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم की ज़बाने फ़ैज़ तरजुमान पर फ़रमाया और तेरा (येह) फ़रमाना ह़क़ है : "**तरजमए कन्ज़ुल ईमान : अल्लाह** जो चाहे मिटाता है और साबित करता है और अस्ल लिखा हुवा उसी के पास है।" (پ۱۳،الرعد ۳۹) ख़ुदाया عَزَّوَجَلَّ ! तजल्लिये आ'ज़म के वसीले से जो निस्फ़े शा'बानुल मुकर्रम की रात (या'नी शबे बराअत) में है कि जिस में बांट दिया जाता है हर ह़िक्मत वाला काम और अटल कर दिया जाता है। (**या अल्लाह** !) आफ़तों को हम से दूर फ़रमा कि जिन्हें हम जानते और नहीं भी जानते जब कि तू उन्हें सब से ज़ियादा जानने वाला है। बेशक तू सब से बढ़

कर अ़ज़ीज़ और इ़ज़्ज़त वाला है। **अल्लाह तआ़ला** हमारे सरदार **मुह़म्मद** صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم पर और आप صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم के आल व अस्ह़ाब رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْهُم पर दुरूदो सलाम भेजे। सब ख़ूबियां सब जहानों के पालने वाले **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ के लिये हैं।

सगे मदीना عُفِیَ عَنْهُ की मदनी इल्तिजाएं : اَلْحَمْدُ لِلّٰه عَزَّوَجَلَّ ! सगे मदीना عُفِیَ عَنْهُ का सालहा साल से **शबे बराअत** में बयान कर्दा त़रीक़े के मुत़ाबिक़ छ[6] नवाफ़िल वग़ैरा का मा'मूल है। मग़रिब के बा'द की जाने वाली येह इ़बादत **नफ़्ल** है, फ़र्ज़ व वाजिब नहीं और नमाज़े मग़रिब के बा'द नवाफ़िल व तिलावत की शरीअ़त में कहीं मुमानअ़त भी नहीं। **ह़ज़रते** अ़ल्लामा इब्ने रजब ह़म्बली عَلَيْهِ رَحمَةُ اللّٰهِ الْقَوِی कहते हैं : अहले शाम में से जलीलुल क़द्र ताबिईन मसलन **ह़ज़रते** सय्यिदुना ख़ालिद बिन मा'दान, **ह़ज़रते** सय्यिदुना मक्ह़ूल, **ह़ज़रते** सय्यिदुना लुक़्मान बिन आ़मिर رَحِمَهُمُ اللّٰهُ الْقَادِر वग़ैरा शबे बराअत की बहुत ता'ज़ीम करते और इस में ख़ूब इ़बादत बजा लाते थे, इन्ही से दीगर मुसल्मानों ने इस मुबारक रात की ता'ज़ीम सीखी। (لَطَائِفُ الْمَعارِف ج١ص١٤٥) फ़िक़्हे ह़नफ़ी की मो'तबर किताब, "दुर्रे मुख़्तार" में है : "शबे बराअत में शब बेदारी (कर के इ़बादत) करना मुस्तह़ब है, (पूरी रात जागना ही शब बेदारी नहीं) अक्सर ह़िस्से में जागना भी शब बेदारी है।" (دُرِّ مُختار ج٢ص٥٦٨, बहारे

शरीअत जि. 1, स. 679) **मदनी इल्तिजा :** मुम्किन हो तो तमाम इस्लामी भाई अपनी अपनी मसाजिद में बा'दे मग़रिब छ6 नवाफ़िल वग़ैरा का एहतिमाम फ़रमाएं और ढेरों सवाब कमाएं। इस्लामी बहनें अपने अपने घर में येह आ'माल बजा लाएं।

साल भर जादू से हिफ़ाज़त : दा'वते इस्लामी के इशाअ़ती इदारे **मक्तबतुल मदीना** की मत़्बूआ़ 170 सफ़्ह़ात पर मुश्तमिल किताब, **"इस्लामी ज़िन्दगी"** सफ़्ह़ा 134 पर है : अगर इस रात (या'नी शबे बराअत) **सात पत्ते बेरी** (या'नी बेर के दरख़्त) के पानी में जोश दे कर (जब पानी नहाने के क़ाबिल हो जाए तो) ग़ुस्ल करे اِنْ شَآءَ اللّٰہ العَزِیز तमाम साल **जादू** के असर से मह़फ़ूज़ रहेगा।

शबे बराअत और क़ब्रों की ज़ियारत : उम्मुल मुअमिनीन ह़ज़रते सय्यिदतुना आ़इशा सिद्दीक़ा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہَا फ़रमाती हैं : मैं ने एक रात **सरवरे काएनात**, शाहे मौजूदात صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم को न देखा तो बक़ीए़ पाक में मुझे मिल गए, आप صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने मुझ से फ़रमाया : क्या तुम्हें इस बात का डर था कि **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ और उस का रसूल (صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم) तुम्हारी ह़क़ तलफ़ी करेंगे ? मैं ने अ़र्ज़ की : **या रसूलल्लाह** صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ! मैं ने ख़याल किया था कि शायद आप अज़्वाजे मुत़ह्हरात में से किसी के पास तशरीफ़ ले गए होंगे। तो

फ़रमाने मुस्त़फ़ा صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم : जिस ने मुझ पर एक मर्तबा दुरूदे पाक पढ़ा **अल्लाह** उस पर दस रह़मतें भेजता और उस के नामए आ'माल में दस नेकियां लिखता है। (ترمذی)

फ़रमाया : "बेशक **अल्लाह तआ़ला** शा'बान की पन्दरहवीं रात आस्माने दुन्या पर तजल्ली फ़रमाता है, पस क़बीलए बनी कल्ब की बकरियों के बालों से भी ज़ियादा गुनहगारों को बख़्श देता है।" (ترمذی ج۲ ص۱۸۳ حدیث۷۳۹)

क़ब्र पर मोमबत्तियां जलाना : शबे बराअत में इस्लामी भाइयों का क़ब्रिस्तान जाना सुन्नत है (इस्लामी बहनों को शरअ़न मम्नूअ़ है) क़ब्रों पर मोमबत्तियां नहीं जला सकते हां अगर **तिलावत** वग़ैरा करना हो तो ज़रूरतन उजाला ह़ासिल करने के लिये क़ब्र से हट कर **मोमबत्ती** जला सकते हैं, इसी त़रह़ ह़ाज़िरीन को ख़ुश्बू पहुंचाने की निय्यत से क़ब्र से हट कर अगरबत्तियां जलाने में ह़रज नहीं। **मज़ाराते औलिया** رَحِمَهُمُ اللّٰهُ تَعَالٰى पर चादर चढ़ाना और इस के पास **चराग़** जलाना जाइज़ है कि इस त़रह़ लोग मुतवज्जेह होते और उन के दिलों में अ़ज़मत पैदा होती और वोह ह़ाज़िर हो कर इक्तिसाबे फ़ैज़ करते हैं। अगर औलिया और अ़वाम की क़ब्रें यक्सां रखी जाएं तो बहुत सारे दीनी फ़वाइद ख़त्म हो कर रह जाएं।

सब्ज़ परचा : अमीरुल मुअमिनीन ह़ज़रते सय्यिदुना उ़मर बिन अ़ब्दुल अ़ज़ीज़ رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰى عَنْهُ एक मर्तबा शा'बानुल मुअ़ज़्ज़म की पन्दरहवीं रात या'नी शबे बराअत इ़बादत में मसरूफ़ थे। सर उठाया तो एक "**सब्ज़ परचा**" मिला जिस का नूर आस्मान तक फैला हुवा था, उस पर

फ़रमाने मुस्तफ़ा صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم : शबे जुमुआ और रोज़े जुमुआ मुझ पर दुरूद की कसरत कर लिया करो जो ऐसा करेगा क़ियामत के दिन मैं उस का शफ़ीअ़ व गवाह बनूंगा। (شعب الایمان)

लिखा था : "هٰذِهٖ بَرَاءَةٌ مِّنَ النَّارِ مِنَ الْمَلِكِ الْعَزِيْزِ لِعَبْدِهٖ عُمَرَ بْنِ عَبْدِ الْعَزِيْزِ ـ" या'नी खुदाए मालिको ग़ालिब की त़रफ़ से येह "जहन्नम की आग से आज़ादी का परवाना" है जो उस के बन्दे उ़मर बिन अ़ब्दुल अ़ज़ीज़ को अ़त़ा हुवा है। (تفسیر روح البیان ج۸ ص۴۰۲)

سُبْحَانَ اللّٰه عَزَّوَجَلَّ ! **प्यारे प्यारे इस्लामी भाइयो !** इस हि़कायत में जहां अमीरुल मुअमिनीन सय्यिदुना उ़मर बिन अ़ब्दुल अ़ज़ीज़ رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْهُ की अ़ज़मतो फ़ज़ीलत का इज़्हार है वहीं **शबे बराअत** की रिफ़्अ़तो शराफ़त का भी ज़ुहूर है। اَلْحَمْدُ لِلّٰه عَزَّوَجَلَّ येह मुबारक शब जहन्नम की भड़क्ती आग से **बराअत** (या'नी आज़ादी) पाने की रात है इसी लिये इस रात को "शबे बराअत" कहा जाता है।

आतश बाज़ी का मूजिद कौन ? : प्यारे प्यारे इस्लामी भाइयो ! اَلْحَمْدُ لِلّٰه عَزَّوَجَلَّ शबे बराअत जहन्नम की आग से "बराअत" या'नी **छुटकारा** पाने की रात है, मगर सद करोड़ अफ़्सोस ! मुसल्मानों की एक ता'दाद आग से छुटकारा ह़ासिल करने की कोशिश के बजाए खुद पैसे ख़र्च कर के अपने लिये आग या'नी **आतश बाज़ी** का सामान ख़रीदती और ख़ूब पटाख़े वग़ैरा छोड़ कर इस मुक़द्दस रात का तक़द्दुस पामाल करती है। **मुफ़स्सिरे** शहीर **ह़कीमुल उम्मत** ह़ज़रते मुफ़्ती अह़मद यार ख़ान عَلَيْهِ رَحْمَةُ الْحَنَّان अपनी मुख़्तसर किताब "इस्लामी

ज़िन्दगी" में फ़रमाते हैं : "इस रात को गुनाह में गुज़ारना बड़ी महरूमी की बात है, **आतश बाज़ी** के मुतअ़ल्लिक़ मश्हूर येह है कि येह नमरूद बादशाह ने ईजाद की जब कि उस ने ह़ज़रते सय्यिदुना इब्राहीम **ख़लीलुल्लाह** عَلٰی نَبِیِّنَا وَعَلَیْهِ الصَّلٰوۃُ وَالسَّلَام को आग में डाला और आग गुलज़ार हो गई तो उस के आदमियों ने आग के अनार भर कर उन में आग लगा कर ह़ज़रते सय्यिदुना इब्राहीम **ख़लीलुल्लाह** عَلٰی نَبِیِّنَا وَعَلَیْهِ الصَّلٰوۃُ وَالسَّلَام की त़रफ़ फेंके।" (इस्लामी ज़िन्दगी, स. 77)

शबे बराअत की मुरव्वजा आतश बाज़ी ह़राम है :

अफ़्सोस ! शबे बराअत में "आतश बाज़ी" की नापाक रस्म अब मुसल्मानों के अन्दर ज़ोर पकड़ती जा रही है। "इस्लामी ज़िन्दगी" में है : मुसल्मानों का लाखों रुपिया सालाना इस रस्म में बरबाद हो जाता है और हर साल ख़बरें आती हैं कि फ़ुलां जगह से इतने घर आतश बाज़ी से जल गए और इतने आदमी जल कर मर गए। इस में जान का ख़त़रा, माल की बरबादी और मकानों में आग लगने का अन्देशा है, (नीज़) अपने माल में अपने हाथ से आग लगाना और फिर ख़ुदा तआ़ला की ना फ़रमानी का वबाल सर पर डालना है, ख़ुदा عَزَّوَجَلَّ के लिये इस बेहूदा और **ह़राम काम** से बचो, अपने बच्चों और क़राबत दारों को रोको, जहां आवारा बच्चे येह खेल खेल रहे हों वहां तमाशा देखने के लिये भी न जाओ।

(ऐज़न, स. 78) (शबे बराअत की मुरव्वजा) आतश बाज़ी का छोड़ना बिला शक इसराफ़ और फ़ुज़ूल ख़र्ची है लिहाज़ा इस का **ना जाइज़ व ह़राम** होना और इसी त़रह़ आतश बाज़ी का बनाना और बेचना ख़रीदना सब शरअ़न मम्नूअ़ हैं। (फ़तावा अज्मलिय्या, जि. 4, स. 52) मेरे आक़ा आ'ला ह़ज़रत, इमामे अहले सुन्नत, मौलाना शाह इमाम अह़मद रज़ा ख़ान عَلَيْهِ رَحْمَةُ الرَّحْمٰن फ़रमाते हैं : आतश बाज़ी जिस त़रह़ शादियों और **शबे बराअत** में राइज है बेशक **ह़राम** और पूरा जुर्म है कि इस में तज़्यीए़ माल (या'नी माल का ज़ाएअ़ करना) है। (फ़तावा रज़विय्या, जि. 23, स. 279)

आतश बाज़ी की जाइज़ सूरतें : शबे बराअत में जो आतश बाज़ी छोड़ी जाती है उस का मक़्सद खेलकूद और तफ़्रीह़ होता है लिहाज़ा येह गुनाह व ह़राम और जहन्नम में ले जाने वाला काम है। अलबत्ता इस की बा'ज़ जाइज़ सूरतें भी हैं जैसा कि बारगाहे आ'ला ह़ज़रत رَحْمَةُ اللّٰهِ تَعَالٰى عَلَيْهِ में **सुवाल** हुवा : क्या फ़रमाते हैं उ़लमाए दीन इस मस्अले में कि आतश बाज़ी बनाना और छोड़ना **ह़राम** है या नहीं ? **अल जवाब :** मम्नूअ़ व **गुनाह** है मगर जो सूरते ख़ास्सा लह्वो लइ़ब व तब्ज़ीर व इसराफ़ से ख़ाली हो (या'नी उन मख़्सूस सूरतों में जाइज़ है जो खेलकूद और फ़ुज़ूल ख़र्ची से ख़ाली हो), जैसे ए'लाने हिलाल (या'नी चांद नज़र आने का ए'लान) या जंगल में या वक़्ते ह़ाजत शहर में भी दफ़्ए़

जानवराने मूज़ी (या'नी ईज़ा देने वाले जानवरों को भगाने के लिये) या खेत या मेवे के दरख़्तों से जानवरों (और परिन्दों) के भगाने उड़ाने को नाड़ियां, पटाख़े, तूमड़ियां छोड़ना। (फ़तावा रज़विय्या, जि. 23, स. 290)

तुझ को शा'बाने मुअ़ज़्ज़म का ख़ुदाया वासित़ा

बख़्श दे रब्बे मुह़म्मद तू मेरी हर इक ख़त़ा

صَلُّوا عَلَى الْحَبِيب ! صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلٰى مُحَمَّد

आक़ा صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने सब्ज़ इमामा शरीफ़ का ताज सजा रखा था : प्यारे प्यारे इस्लामी भाइयो ! शा'बानुल मुअ़ज़्ज़म में इबादत करने, रोज़े रखने और मुरव्वजा आतश बाज़ी वग़ैरा के गुनाहों से बाज़ रहने का ज़ेह्न बनाने के लिये **दा'वते इस्लामी** के मदनी क़ाफ़िलों में **आ़शिक़ाने रसूल** के हमराह ख़ूब सुन्नतों भरे सफ़र कीजिये और **रमज़ानुल मुबारक** में दा'वते इस्लामी के **इज्तिमाई ए'तिकाफ़** की बरकतें लूटिये। आप की ज़ौक़ अफ़्ज़ाई के लिये एक मुश्कबार **मदनी बहार** पेश करता हूं, कॉलेज के एक इस्लामी भाई जो कि आ़म स्टूडन्ट्स की त़रह फ़ेशन के मतवाले थे, क्रिकेट का मेच देखने और खेलने का जुनून की ह़द तक शौक़ और रात गए तक आवारा गर्दी मा'मूल था। नमाज़ और मस्जिद की ह़ाज़िरी का जहां तक तअ़ल्लुक़ है

तो वोह फ़क़त़ **ईदैन** तक महदूद थी। **रमज़ानुल मुबारक** (1422 सि.हि., 2001 सि.ई.) में वालिदैन के इसरार पर नमाज़ अदा करने मस्जिद में गए, अ़स्र की नमाज़ के बा'द सफ़ेद लिबास में मल्बूस सर पर सब्ज़ इमामा शरीफ़ का ताज सजाए एक बा रीश इस्लामी भाई ने नमाज़ियों को क़रीब करने के बा'द **फ़ैज़ाने सुन्नत** का दर्स दिया, वोह दूर बैठ कर सुनते रहे, दर्स के बा'द फ़ौरन मस्जिद से बाहर निकल गए। दो तीन दिन तक येही तरकीब रही। एक दिन वोह मिलने के लिये रुक गए, एक इस्लामी भाई ने पुरतपाक अन्दाज़ से मुलाक़ात कर के नाम व पता पूछने के बा'द तब्लीग़े क़ुरआनो सुन्नत की आ़लमगीर ग़ैर सियासी तह़रीक **दा'वते इस्लामी** के मदनी माहोल में होने वाले **इज्तिमाई ए'तिकाफ़** में बैठने की तरग़ीब दिलाते हुए ए'तिकाफ़ के फ़ज़ाइल बयान किये। अव्वलन उन का ज़ेहन न बना, लेकिन वोह इस्लामी भाई مَاشَآءَاللّٰه बहुत जज़्बे वाले थे, मायूस न हुए बल्कि उन के घर जा पहुंचे और बार बार इसरार करने लगे। उन की मुसल्सल **इन्फ़िरादी कोशिश** के नतीजे में **ए'तिकाफ़** शुरूअ़ होने से एक दिन क़ब्ल उन्हों ने नाम लिखवा दिया, और आख़िरी अ़शरए **रमज़ानुल मुबारक** 1422 सि.हि. जामेअ़ मस्जिद नईमिया (लालारुख़, वाह केन्ट) के अन्दर **आ़शिक़ाने रसूल** के साथ **मो'तकिफ़** हो गए। **इज्तिमाई ए'तिकाफ़** के पुरसोज़

माह़ोल और **आ़शिक़ाने रसूल** की सोह़बत ने उन की दिली कैफ़िय्यत बदल डाली ! वहां अदा की जाने वाली तहज्जुद, इश्राक़, चाश्त और अव्वाबीन के नवाफ़िल की पाबन्दी ने गुज़श्ता ज़िन्दगी में फ़र्ज़ नमाज़ें न पढ़ने पर उन्हें सख़्त शरमिन्दा किया, आंखों से नदामत के आंसू जारी हो गए और उन्हों ने दिल ही दिल में नमाज़ों की पाबन्दी की निय्यत कर ली। **पच्चीसवीं शब** दुआ़ में उन पर इस क़दर रिक़्क़त त़ारी थी कि वोह फूट फूट कर रो रहे थे। इसी आ़लम में उन पर ग़ुनूदगी त़ारी हो गई और वोह ख़्वाब की दुन्या में पहुंच गए, क्या देखते हैं कि एक पुर वक़ार व नूरबार चेहरे वाली शख़्सिय्यत मौजूद है और उन के इर्द गिर्द काफ़ी हुजूम है। उन्हों ने किसी से पूछा तो उन्हें बताया गया कि येह **आक़ाए मदीना** صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم हैं। **उन्हों ने देखा तो सरकारे मदीना** صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने **सब्ज़ सब्ज़ इमामा शरीफ़ का ताज सजा रखा था।** कुछ देर तक वोह दीदार से आंखें ठन्डी करते रहे, जब बेदार हुए तो **सलातो सलाम** पढ़ा जा रहा था उन की कैफ़िय्यत बहुत अ़जीबो ग़रीब थी, जिस्म पर लरज़ा त़ारी था, हिचकियां बांध कर रोए जा रहे थे और आंसू थे कि थमने का नाम नहीं ले रहे थे। सलातो सलाम के बा'द **मजलिस बराए ए'तिकाफ़** के निगरान के सामने इमामे का ताज सजाने वालों की क़ित़ार बंधी हुई थी और सरकारे **आ'ला ह़ज़रत** इमाम

फ़रमाने मुस्तफ़ा صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم : उस शख़्स की नाक ख़ाक आलूद हो जिस के पास मेरा ज़िक्र हो और वोह मुझ पर दुरूदे पाक न पढ़े। (ترمذی)

अह्मद रज़ा ख़ान عَلَيْهِ رَحمَةُ الرَّحْمٰن के लिखे हुए इस ना'तिया शे'र की तकरार जारी थी :

ताज वाले देख कर तेरा इमामा नूर का
सर झुकाते हैं इलाही बोलबाला नूर का

(ह़दाइके़ बख़्शिश, स. 243)

वोह अपने क़रीबी इस्लामी भाइयों को ब मुश्किल तमाम सिर्फ़ इतना कह पाए : "मैं ने भी इमामा बांधना है।" थोड़ी ही देर में रोते रोते वोह भी इमामे का ताज सजा चुके थे। اَلْحَمْدُ لِلّٰہ عَزَّوَجَلَّ उन्हों ने **ए'तिकाफ़** ही में **एक माह के मदनी क़ाफ़िले** में सफ़र की निय्यत भी की और اَلْحَمْدُ لِلّٰہ عَزَّوَجَلَّ **मदनी क़ाफ़िले** में सफ़र भी किया, सफ़र के दौरान बहुत कुछ सीखने के साथ साथ दर्सो बयान भी सीख कर करने लगे। اَلْحَمْدُ لِلّٰہ नमाज़ों की पाबन्दी के साथ साथ **दा'वते इस्लामी** के **मदनी कामों** में हिस्सा लेने लगे। उन्हें **ज़ैली मुशावरत के निगरान** के तौर पर मदनी कामों की धूमें मचाने की सआदत भी मिली।

गर तमन्ना है आक़ा के दीदार की, मदनी माह़ोल में कर लो तुम ए'तिकाफ़
होगी मीठी नज़र तुम पे सरकार की, मदनी माह़ोल में कर लो तुम ए'तिकाफ़

(वसाइले बख़्शिश, स. 640)

صَلُّوْا عَلَى الْحَبِيْب ! صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلٰى مُحَمَّد

"ईद" के तीन हुरूफ़ की निस्बत से शश ईद के रोज़ों के फ़ज़ाइल पर मुश्तमिल तीन फ़रामीने मुस्त़फ़ा صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰی عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم

नौ मौलूद की त़रह़ गुनाहों से पाक : (1) "जिस ने रमज़ान के रोज़े रखे फिर छ6 दिन शव्वाल में रखे तो गुनाहों से ऐसे निकल गया जैसे आज ही मां के पेट से पैदा हुवा है।" (مَجْمَعُ الزَّوَائِد ج۳ص۴۲۵حدیث۵۱۰۲)

गोया उ़म्र भर का रोज़ा रखा : (2) "जिस ने रमज़ान के रोज़े रखे फिर इन के बा'द छ6 दिन शव्वाल में रखे, तो ऐसा है जैसे दह्‌र का (या'नी उ़म्र भर के लिये) रोज़ा रखा।" (مُسلِم ص۵۹۲حدیث۱۱۶۴)

साल भर रोज़े रखे : (3) "जिस ने ईदुल फ़ित्र के बा'द (शव्वाल में) छ6 रोज़े रख लिये तो उस ने पूरे साल के रोज़े रखे कि जो एक नेकी लाएगा उसे दस मिलेंगी। तो माहे रमज़ान का रोज़ा दस महीने के बराबर है और इन छ6 दिनों के बदले में दो महीने तो पूरे साल के रोज़े हो गए।"

(اَلسّنَنُ الکُبری لِلنَّسائی ج۲ ص۱۶۲،۱۶۳حدیث۲۸۶۰،۲۸۶۱)

शश ईद के रोज़े कब रखे जाएं ? : प्यारे प्यारे इस्लामी भाइयो ! सदरुश्शरीअ़ह, बदरुत्त़रीक़ह, ह़ज़रते अ़ल्लामा मौलाना मुफ़्ती मुह़म्मद अमजद अ़ली आ'ज़मी عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللّٰهِ الْقَوِی "बहारे शरीअ़त" के ह़ाशिये में फ़रमाते हैं : "बेहतर येह है कि येह रोज़े

मुतफ़र्रिक़ (या'नी जुदा जुदा) रखे जाएं और **ईद** के बा'द लगातार **छ**[6] **दिन** में एक साथ रख लिये, जब भी ह़रज नहीं।"

(دُرِّمُختار ج۳ ص۴۸۵, बहारे शरीअ़त, जि. 1, स. 1010)

ख़लीले मिल्लत ह़ज़रते अ़ल्लामा मौलाना मुफ़्ती मुह़म्मद ख़लील ख़ान क़ादिरी बरकाती عَلَيْهِ رَحمَةُ اللهِ الهَادِی फ़रमाते हैं : येह रोज़े **ईद** के बा'द लगातार रखे जाएं तब भी मुज़ायक़ा नहीं और बेहतर येह है कि मुतफ़र्रिक़ (या'नी जुदा जुदा) रखे जाएं या'नी (जैसे) हर हफ़्ते में दो रोज़े और **ईदुल फ़ित्र** के दूसरे रोज़ एक रोज़ा रख ले और पूरे माह में रखे तो और भी मुनासिब मा'लूम होता है। (सुन्नी बिहिश्ती ज़ेवर, स. 347) अल ग़रज़ **ईदुल फ़ित्र** का दिन छोड़ कर सारे महीने में जब चाहें शश ईद के रोज़े रख सकते हैं।

صَلُّوا عَلَى الْحَبِيب!   صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلٰى مُحَمَّد

ज़ुल हिज्जतिल ह़राम के इब्तिदाई दस दिन के फ़ज़ाइल : **फ़तावा** रज़विय्या जिल्द 10 सफ़हा 649 पर है : सौम (या'नी रोज़ा) वग़ैरा आ'माले सालिहा (या'नी नेक आ'माल) के लिये बा'दे **रमज़ानुल मुबारक** सब दिनों से अफ़्ज़ल अ़शरए ज़िल हिज्जा है।

फ़रमाने मुस्त़फ़ा صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰی عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم : जिस ने मुझ पर सुब्ह़ व शाम दस दस बार दुरूदे पाक पढ़ा उसे क़ियामत के दिन मेरी शफ़ाअ़त मिलेगी। (مجمع الزوائد)

"अल्लाह" के चार ह़ुरूफ़ की निस्बत से अ़शरए ज़ुल ह़िज्जतिल ह़राम के फ़ज़ाइल के मुतअ़ल्लिक़

4 फ़रामीने मुस्त़फ़ा صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰی عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم

﴾1﴿ "**इन दस दिनों** से ज़ियादा किसी दिन का नेक अ़मल **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ को मह़बूब नहीं।" सह़ाबए किराम عَلَيْهِمُ الرِّضْوَان ने अ़र्ज़ की : "**या रसूलल्लाह** صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰی عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ! और न राहे ख़ुदा عَزَّوَجَلَّ में जिहाद ?" फ़रमाया : "और न राहे ख़ुदा عَزَّوَجَلَّ में जिहाद, मगर वोह कि अपने जान व माल ले कर निकले फिर उन में से कुछ वापस न लाए।" (या'नी सिर्फ़ वोह मुजाहिद अफ़्ज़ल होगा जो जान व माल क़ुरबान करने में काम्याब हो गया) (بُخارِی ج۱ص۳۳۳حدیث۹۶۹)

﴾2﴿ "**अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ को अ़शरए ज़ुल ह़िज्जा से ज़ियादा किसी दिन में अपनी इ़बादत किया जाना पसन्दीदा नहीं इस के हर दिन का रोज़ा एक साल के रोज़ों और हर शब का क़ियाम **शबे क़द्र** के बराबर है।"

(تِرمِذی ج۲ص۱۹۲حدیث۷۵۸)

﴾3﴿ "**मुझे अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ पर गुमान है कि अ़रफ़ा (या'नी 9 ज़ुल ह़िज्जतिल ह़राम) **का रोज़ा** एक साल क़ब्ल और एक साल बा'द के गुनाह मिटा देता है।" (مُسلِم ص۵۹۰حدیث۱۱۶۲)

﴾4﴿ **अ़रफ़ा** (या'नी 9 ज़ुल ह़िज्जतिल ह़राम) **का रोज़ा** हज़ार रोज़ों के

बराबर है। (شُعَبُ الْاِیْمَان ج۳ ص۳۵۷ حدیث۳۷۶٤) (मगर अ़रफ़ात में ह़ाजी को अ़रफ़े का रोज़ा मक्रूह है,) ह़ज़रते सय्यिदुना अबू हुरैरा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ फ़रमाते हैं : सरवरे काएनात صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने **अ़रफ़े** के दिन (या'नी 9 ज़ुल हिज्जतिल ह़राम के रोज़ ह़ाजी को) **अ़रफ़ात** में रोज़ा रखने से मन्अ़ फ़रमाया। (ابنُ خُزَیمۃ ج۳ص۲۹۲حدیث۲۱۰۱)

صَلُّوْا عَلَی الْحَبِیْب! صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلٰی مُحَمَّد

अय्यामे बीज़ के रोज़े : हर मदनी माह (या'नी सिने हिजरी के महीने) में कम अज़ कम तीन रोज़े हर इस्लामी भाई और इस्लामी बहन को रख ही लेने चाहिएं। इस के बे शुमार दुन्यवी और उख़्रवी फ़वाइद हैं। बेहतर येह है कि येह रोज़े "अय्यामे बीज़" या'नी चांद की 13, 14 और 15 तारीख़ को रखे जाएं।

अय्यामे बीज़ के रोज़ों के मुतअ़ल्लिक़ 3 रिवायात :

﴾1﴿ **उम्मुल** मुअमिनीन ह़ज़रते सय्यिदतुना ह़फ़्सा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہَا से रिवायत है, **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ के प्यारे ह़बीब صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم चार चीज़ें नहीं छोड़ते थे, आ़शूरा का रोज़ा और अ़शरए ज़ुल हिज्जा के रोज़े और हर महीने में **तीन दिन के रोज़े** और फ़ज्र (के फ़र्ज़) से पहले दो रक्अ़तें (या'नी दो सुन्नतें)। (نَسائی ص۳۹۵ حدیث۲٤۱۳)

ह़दीसे पाक के इस हिस्से "अ़शरए ज़ुल हिज्जा के रोज़े" से मुराद

जुल हिज्जा के इब्तिदाई नव दिनों के रोज़े हैं, वरना दस जुल हिज्जा को रोज़ा रखना ह़राम है।

(माख़ूज़ अज़ मिरआतुल मनाजीह़, जि. 3, स. 195)

﴿2﴾ **ह़ज़रते** सय्यिदुना इब्ने अ़ब्बास رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُمَا से रिवायत है कि त़बीबों के त़बीब, **अल्लाह** के ह़बीब صَلَّى اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم अय्यामे बीज़ में **बिग़ैर** रोज़ा के न होते न सफ़र में न ह़ज़र (या'नी क़ियाम) में। (نَسائی ص۳۸۶ حدیث۲۳۴۲)

﴿3﴾ **उम्मुल** मुअमिनीन ह़ज़रते सय्यिदतुना आइशा सिद्दीक़ा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہَا रिवायत फ़रमाती हैं : "अम्बिया के सरताज, साह़िबे मे'राज صَلَّى اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم एक महीने में **सनीचर, इतवार** और **पीर** का जब कि दूसरे माह **मंगल, बुध** और **जुमे'रात** का रोज़ा रखा करते।" (تِرمِذی ج۲ص۱۸۶حدیث۷۴۶)

अय्यामे बीज़ के रोज़ों के बारे में 5 फ़रामीने मुस्त़फ़ा صَلَّى اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم

﴿1﴾ "**जिस** त़रह़ तुम में से किसी के पास लड़ाई में बचाव के लिये ढाल होती है इसी त़रह़ रोज़ा जहन्नम से तुम्हारी ढाल है और **हर माह तीन दिन रोज़े** रखना बेहतरीन रोज़े हैं।" (ابنِ خُزَیمہ ج۳ص۳۰۱حدیث۲۱۲۵)

﴿2﴾ हर महीने में **तीन दिन के रोज़े** ऐसे हैं जैसे दह्‌र (या'नी हमेशा) के रोज़े।

(بخاری ج۱ص۶۴۹حدیث۱۹۷۵) **﴿3﴾ रमज़ान** के रोज़े और हर महीने में तीन दिन के रोज़े **सीने की ख़राबी** (या'नी जैसे निफ़ाक़) दूर करते हैं। (مُسنَد اِمام اَحمَد ج۹ص۳۶حدیث۲۳۱۳۲) **﴿4﴾ जिस** से हो सके हर महीने में **तीन रोज़े** रखे कि हर रोज़ा दस गुनाह मिटाता और गुनाह से ऐसा पाक कर देता है जैसा पानी कपड़े को। (مُعجَم کَبِیر ج۲۵ص۳۵حدیث۶۰) **﴿5﴾ जब** महीने में **तीन रोज़े** रखने हों तो 13, 14 और 15 को रखो।

(نَسائی ص۳۹۶حدیث۲۴۱۷)

मरने की दुआएं मांगते थे : प्यारे प्यारे इस्लामी भाइयो !

अय्यामे बीज़ के रोज़ों, नेकियों और सुन्नतों का ज़ेहन बनाने के लिये तब्लीग़े कुरआनो सुन्नत की आ़लमगीर ग़ैर सियासी तह़रीक "दा'वते इस्लामी" का **मदनी माह़ोल** अपना लीजिये, सिर्फ़ दूर दूर से देखने से बात नहीं बनेगी, सुन्नतों की तरबियत के मदनी क़ाफ़िलों में **आ़शिक़ाने रसूल** के साथ सुन्नतों भरा सफ़र कीजिये, **रमज़ानुल मुबारक** का **इज्तिमाई ए'तिकाफ़** भी फ़रमाइये, اِنْ شَآءَاللّٰه عَزَّوَجَلَّ वोह क़ल्बी सुकून मुयस्सर आएगा कि आप ह़ैरान रह जाएंगे। **दा'वते इस्लामी** के मदनी माह़ोल में आ कर कैसे कैसे बिगड़े हुए लोग राहे रास्त पर आ जाते हैं इस की एक झलक मुलाह़ज़ा फ़रमाइये, चुनान्चे एक नौ जवान इन्तिहाई फ़सादी और शरीर थे, लड़ाई झगड़ा उन का

फ़रमाने मुस्तफ़ा صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم : मुझ पर दुरूदे पाक की कसरत करो बेशक तुम्हारा मुझ पर दुरूदे पाक पढ़ना तुम्हारे लिये पाकीज़गी का बाइस है। (ابو يعلى)

पसन्दीदा मशग़ला था, उन की शर अंगेज़ियों से सारा महल्ला तंग था और घर वाले तो इस क़दर बेज़ार थे कि **उन के मरने की दुआएं मांगते थे।** खुश क़िस्मती से कुछ इस्लामी भाइयों ने **इन्फ़िरादी कोशिश** करते हुए उन्हें **रमज़ानुल मुबारक** के **इज्तिमाई ए'तिकाफ़** की दा'वत पेश की उन्हों ने मुरव्वत में हां कर दी। और **रमज़ानुल मुबारक** (1420 सि.हि. 1999 सि.ई.) में आशिक़ाने रसूल के साथ **मो'तकिफ़** हो गए। दौराने ए'तिकाफ़ उन्हें वुज़ू, ग़ुस्ल, नमाज़ का त़रीक़ा नीज़ हुक़ूक़ुल्लाह व हुक़ूक़ुल इबाद और एह्तिरामे मुस्लिम के अह्काम सीखने को मिले, सुन्नतों भरे पुरसोज़ बयानों और रिक़्क़त अंगेज़ दुआओं ने उन्हें हिला कर रख दिया ! बसद नदामत उन्हों ने साबिक़ा गुनाहों से **तौबा** की, नेकियां करने की दिल में उमंग पैदा हुई। اَلْحَمْدُ لِلّٰہ عَزَّوَجَلَّ उन्हों ने इश्क़े मुस्तफ़ा صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم की निशानी दाढ़ी शरीफ़ सजा ली, सर को सब्ज़ इमामा शरीफ़ के ताज से सर सब्ज़ किया और लड़ाई झगड़ों की जगह **नेकी की दा'वत** के शैदाई बन गए।

आओ आ कर गुनाहों से तौबा करो, मदनी माह़ोल में कर लो तुम ए'तिकाफ़
रह़मते ह़क़ से दामन तुम आ कर भरो, मदनी माह़ोल में कर लो तुम ए'तिकाफ़

(वसाइले बख़्शिश, स. 640)

صَلُّوا عَلَی الْحَبِیْب ! صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلٰی مُحَمَّد

फ़रमाने मुस्तफ़ा صَلَّى اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم : जिस के पास मेरा ज़िक्र हो और वोह मुझ पर दुरूद शरीफ़ न पढ़े तो वोह लोगों में से कन्जूस तरीन शख़्स है। (مسند احمد)

"मुस्तफ़ा" के पांच हुरूफ़ की निस्बत से पीर शरीफ़ और जुमे'रात के रोज़ों के मुतअ़ल्लिक़ 5 रिवायात

﴾1﴿ **हज़रते** सय्यिदुना अबू हुरैरा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ से मरवी है, **रसूलुल्लाह** صَلَّى اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم फ़रमाते हैं : **पीर** और **जुमे'रात** को आ'माल पेश होते हैं तो मैं पसन्द करता हूं कि मेरा अ़मल उस वक़्त पेश हो कि मैं रोज़ादार होउं। (تِرمِذی ج ۲ ص ۱۸۷ حدیث۷۴۷) ताकि रोज़े की बरकत से रह़मते इलाही का दरिया जोश मारे। (मिरआत, जि. 3, स. 188)

﴾2﴿ **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ के मह़बूब صَلَّى اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم पीर शरीफ़ और जुमे'रात को रोज़े रखा करते थे, इस के बारे में अ़र्ज़ की गई तो फ़रमाया : इन दोनों दिनों में **अल्लाह तआ़ला** हर मुसल्मान की मग़्फ़िरत फ़रमाता है मगर वोह दो शख़्स जिन्हों ने बाहम (या'नी आपस में) जुदाई कर ली है उन की निस्बत मलाएका से फ़रमाता है इन्हें छोड़ दो यहां तक कि सुल्ह़ कर लें। (ابنِ ماجہ ج۲ص۳۴۴حدیث۱۷۴۰)

मुफ़स्सिरे शहीर **ह़कीमुल उम्मत** ह़ज़रते मुफ़्ती अह़मद यार ख़ान عَلَیْہِ رَحْمَۃُ الْحَنَّان इस ह़दीसे पाक के तह़त मिरआत जिल्द 3 सफ़्ह़ा 196 पर फ़रमाते हैं : سُبْحٰنَ اللّٰہ ! येह दोनों दिन बड़ी अ़ज़्मत और बरकत वाले हैं क्यूं न हों कि इन्हें अ़ज़्मत वालों से निस्बत है, "जुमे'रात" तो जुमुआ़ का पड़ोसी है और ह़ज़रते आमिना ख़ातून के ह़ामिला होने का

फ़रमाने मुस्त़फ़ा صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰی عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم : तुम जहां भी हो मुझ पर दुरूद पढ़ो कि तुम्हारा दुरूद मुझ तक पहुंचता है। (طبرانی)

दिन है, और "पीर" हुज़ूरे अन्वर صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰی عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم की विलादत का दिन भी है और नुज़ूले कुरआने करीम का भी।

﴾3﴿ **उम्मुल** मुअमिनीन ह़ज़रते सय्यिदतुना आ़इशा सिद्दीक़ा رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْهَا रिवायत फ़रमाती हैं : नबियों के सरताज, साहि़बे मे'राज صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰی عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم **पीर** और **जुमे'रात** के रोज़े का ख़ास ख़याल रखते थे। (تِرمِذی ج۲ ص۱۸٦ حدیث۷٤٥)

﴾4﴿ **ह़ज़रते** सय्यिदुना अबू क़तादा رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْهُ फ़रमाते हैं, सरकारे नामदार, मदीने के ताजदार, रसूलों के सालार, नबियों के सरदार صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰی عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم से **पीर शरीफ़** के रोज़े का सबब दरयाफ़्त किया गया तो फ़रमाया : इसी में **मेरी विलादत** हुई, इसी में मुझ पर वह़्य नाज़िल हुई। (مُسلِم ص۵۹۱ حدیث۱۹۸۔۱۱٦۲)

﴾5﴿ **ह़ज़रते** सय्यिदुना उसामा बिन ज़ैद رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْهُمَا के ग़ुलाम رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْهُ से मरवी है : फ़रमाते हैं कि सय्यिदुना उसामा बिन ज़ैद رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْهُمَا सफ़र में भी **पीर** और **जुमे'रात** का रोज़ा तर्क नहीं फ़रमाते थे। मैं ने उन की बारगाह में अ़र्ज़ की : क्या वज्ह है कि आप رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْهُ इस बड़ी उ़म्र में भी **पीर** और **जुमे'रात** का रोज़ा रखते हैं ? फ़रमाया : **रसूलुल्लाह** صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰی عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم **पीर** और **जुमे'रात** का रोज़ा रखा करते थे। मैं ने अ़र्ज़ की : **या**

रसूलल्लाह صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ! क्या वज्ह है कि आप صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم **पीर** और **जुमे'रात** का रोज़ा रखते हैं ? तो इर्शाद फ़रमाया : लोगों के आ'माल **पीर** और **जुमे'रात** को पेश किये जाते हैं। (شُعَبُ الْایمان ج۳ ص۳۹۲ حدیث۳۸۵۹)

صَلُّوا عَلَی الْحَبِیْب ! صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلٰی مُحَمَّد

"जन्नत" के तीन हुरूफ़ की निस्बत से बुध और जुमे'रात के रोज़ों के 3 फ़ज़ाइल

1 **हज़रते** सय्यिदुना **अ़ब्दुल्लाह** इब्ने अ़ब्बास رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُمَا से रिवायत है **अल्लाह** के प्यारे रसूल, रसूले मक़्बूल, सय्यिदह आमिना के गुलशन के महकते फूल صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم का फ़रमाने बिशारत निशान है : जो **बुध** और **जुमे'रात** के रोज़े रखे उस के लिये जहन्नम से आज़ादी लिख दी जाती है। (اَبو یَعْلٰی ج۵ ص۱۱۵ حدیث۵۶۱۰)

2 **हज़रते** सय्यिदुना मुस्लिम बिन **उ़बैदुल्लाह** क़ुरशी رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ अपने वालिदे मुकर्रम رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ से रिवायत करते हैं कि उन्हों ने बारगाहे रिसालत صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم में या तो ख़ुद अ़र्ज़ की या किसी और ने दरयाफ़्त किया : **या रसूलल्लाह** صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ! मैं **हमेशा रोज़ा** रखूं ? सरकार صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ख़ामोश रहे, फिर दूसरी मर्तबा अ़र्ज़ की, फिर ख़ामोशी इख़्तियार फ़रमाई।

तीसरी बार पूछने पर इस्तिफ़्सार फ़रमाया कि **रोज़े** के मुतअ़ल्लिक़ किस ने सुवाल किया ? अ़र्ज़ की, मैं ने **या नबिय्यल्लाह** صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ! तो जवाबन इर्शाद फ़रमाया : बेशक तुझ पर तेरे घर वालों का ह़क़ है तू **रमज़ान** और इस से मुत्तसिल महीने (शव्वाल) और हर **बुध** और **जुमे'रात** के रोज़े रख कि अगर तू ऐसा करेगा तो **गोया तू ने हमेशा के रोज़े रखे।**

(شُعَبُ الایمان ج۳ص۳۹۵حدیث۳۸٦۸)

﴾3﴿ **फ़रमाने मुस्तफ़ा** صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم : "जिस ने **रमज़ान, शव्वाल, बुध** और **जुमे'रात** का रोज़ा रखा तो वोह दाख़िले जन्नत होगा।" (اَلسُّنَنُ الْکُبْرٰی لِلنَّسَائی ج۲ص۱٤۷حدیث۲۷۷۸)

صَلُّوْا عَلَى الْحَبِيْب ! صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلٰى مُحَمَّد

"करम" के तीन हुरूफ़ की निस्बत से बुध, जुमे'रात और जुमुआ के रोज़ों के फ़ज़ाइल पर मुश्तमिल 3 फ़रामीने मुस्तफ़ा صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم

﴾1﴿ **जिस** ने **बुध, जुमे'रात** व **जुमुआ** का रोज़ा रखा **अल्लाह तआला** उस के लिये **जन्नत** में एक मकान बनाएगा जिस का बाहर का हिस्सा अन्दर से दिखाई देगा और अन्दर का बाहर से।

(مُعجَمِ اَوسَط ج۱ص۸۷حدیث ۲۵۳)

फ़रमाने मुस्तफ़ा صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيۡهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم : मुझ पर दुरूद शरीफ़ पढ़ो, अल्लाह عَزَّوَجَلَّ तुम पर रह़मत भेजेगा। (ابن عدی)

2 **जिस** ने **बुध, जुमे'रात** व **जुमुआ** का रोज़ा रखा **अल्लाह तआ़ला** उस के लिये **जन्नत** में मोती और याकूत व ज़बर जद का मह़ल बनाएगा और उस के लिये दोज़ख़ से बराअत (या'नी आज़ादी) लिख दी जाएगी। (شُعَبُ الْایمان ج۳ص۳۹۷حدیث۳۸۷۳)

3 **जिस** ने **बुध, जुमे'रात** व **जुमुआ** का रोज़ा रखा फिर जुमुआ को थोड़ा या ज़ियादा तसद्दुक़ (या'नी ख़ैरात) करे तो जो गुनाह किये हैं बख़्श दिये जाएंगे और ऐसा हो जाएगा जैसे उस दिन कि अपनी मां के पेट से पैदा हुवा था। (ایضاً حدیث۳۸۷۲)

صَلُّوا عَلَى الْحَبِيب! صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلٰى مُحَمَّد

"जुमुआ" के चार हुरूफ़ की निस्बत से जुमुआ के रोज़े के मुतअ़ल्लिक़ 4 फ़रामीने मुस्त़फ़ा صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيۡهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم

1 "**जिस** ने **जुमुआ** का रोज़ा रखा तो **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ उसे आख़िरत के दस दिनों के बराबर अज्र अ़त़ा फ़रमाएगा और वोह अय्याम (अपनी मिक़्दार में) अय्यामे दुन्या की त़रह़ नहीं है।"

(شُعَبُ الْایمان ج ۳ ص ۳۹۳ حدیث ۳۸۶۲)

फ़तावा रज़विय्या जिल्द 10 सफ़ह़ा 653 पर है : रोज़ए जुमुआ या'नी जब इस के साथ पन्ज शम्बा या शम्बा (या'नी जुमे'रात या

सनीचर का रोज़ा) भी शामिल हो मरवी हुवा कि **दस हज़ार बरस के रोज़ों के बराबर है।**

﴾2﴿ "**जिस** ने **जुमुआ** अदा किया और इस दिन का **रोज़ा** रखा और मरीज़ की **इयादत** की और **जनाज़े** के साथ गया और निकाह में हाज़िर हुवा तो उस के लिये जन्नत वाजिब हो गई।" (مُعجَم کَبِیر ج۸ص۹۷حدیث۷۴۸۴)

﴾3﴿ "**जिस** ने रोज़े की हालत में यौमे **जुमुआ** की सुब्ह की और मरीज़ की **इयादत** की और **जनाज़े** के साथ गया और **सदक़ा** किया तो उस ने अपने लिये **जन्नत** वाजिब कर ली।" (شُعَبُ الْایمان ج۳ص۳۹۳حدیث۳۸۶۴)

﴾4﴿ **जिस** ने बरोज़े **जुमुआ** रोज़ा रखा और मरीज़ की **इयादत** की और **मिस्कीन** को खाना खिलाया और **जनाज़े** के हमराह चला तो उसे **चालीस साल** के गुनाह लाहिक़ न होंगे। (ایضاًص۳۹۴حدیث۳۸۶۵) ह़दीसे पाक के इस हिस्से "उसे चालीस साल के गुनाह लाहिक़ न होंगे" से मुराद या तो उसे नेकी ही की तौफ़ीक़ मिलेगी या गुनाह सादिर हुए तो ऐसी तौबा की तौफ़ीक़ मिल जाएगी जो उस के गुनाहों को मिटा देगी।

ह़ज़रते सय्यिदुना **अ़ब्दुल्लाह** बिन मस्ऊ़द رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ फ़रमाते हैं : सरकारे मदीना صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم बहुत कम **जुमुआ** का रोज़ा तर्क फ़रमाते थे। (اَیضاً)

प्यारे प्यारे इस्लामी भाइयो ! जिस त़रह़ आ़शूरा के रोजे़ के पहले या बा'द में एक रोज़ा रखना है इसी त़रह़ **जुमुआ़** में भी करना है, क्यूं कि ख़ुसूसिय्यत के साथ तन्हा **जुमुआ़** (इस मस्अले का ख़ुलासा आगे आ रहा है) या सिर्फ़ **सनीचर** का रोज़ा रखना मक्रूहे तन्ज़ीही (या'नी ना पसन्दीदा) है। हां अगर किसी मख़्सूस तारीख़ को **जुमुआ़** या **सनीचर** आ गया तो तन्हा **जुमुआ़** या **सनीचर** का रोज़ा रखने में कराहत नहीं। मसलन 15 शा'बानुल मुअ़ज़्ज़म, 27 रजबुल मुरज्जब वग़ैरा।

صَلُّوْا عَلَى الْحَبِيْب ! صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلٰى مُحَمَّد

"फ़ज़्ल" के तीन हुरूफ़ की निस्बत से तन्हा जुमुआ़ का रोज़ा रखने की मुमानअ़त पर 3 फ़रामीने मुस्त़फ़ा صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم

﴾1﴿ शबे **जुमुआ़** को दीगर रातों में शब बेदारी के लिये ख़ास न करो और न ही **यौमे जुमुआ़** को दीगर दिनों में रोजे़ के साथ ख़ास करो मगर येह कि तुम ऐसे रोजे़ में हो जो तुम्हें रखना हो। (مُسلِم ص٥٧٦ حديث١١٤٤)

मुफ़स्सिरे शहीर **ह़कीमुल उम्मत** ह़ज़रते मुफ़्ती अह़मद यार ख़ान عَلَيْهِ رَحْمَةُ الْحَنَّان मिरआत जिल्द 3 सफ़ह़ा 187 पर "शबे जुमुआ़ को दीगर रातों में शब बेदारी के लिये ख़ास न करो।" के तह़त फ़रमाते हैं : या'नी जुमुआ़ की रात में इ़बादत करना मन्अ़ नहीं, बल्कि और रातों में

बिल्कुल इबादत न करना मुनासिब नहीं कि येह ग़फ़्लत की दलील है चूंकि जुमुआ़ की रात ही ज़ियादा अ़ज़्मत वाली है, अन्देशा था कि लोग इस को नफ़्ली इबादतों से ख़ास कर लेंगे इस लिये इसी रात का नाम लिया गया।

﴾2﴿ **तुम** में से कोई हरगिज़ **जुमुआ़** का रोज़ा न रखे मगर येह कि इस के पहले या बा'द में एक दिन मिला ले। (بُخارِی ج۱ ص۶۵۳ حدیث۱۹۸۵)

﴾3﴿ **जुमुआ़** का दिन तुम्हारे लिये **ईद** है इस दिन रोज़ा मत रखो मगर येह कि इस से पहले या बा'द में भी रोज़ा रखो।

(اَلتَّرغِیب وَالتَّرهِیب ج۲ ص۸۱ حدیث۱۱)

अह़ादीसे मुबारका से मा'लूम हुवा कि तन्हा **जुमुआ़** का रोज़ा न रखना चाहिये मगर येह मुमानअ़त सिर्फ़ उसी सूरत में है जब कि ख़ुसूसिय्यत के साथ जुमुआ़ ही का रोज़ा रखा जाए अगर ख़ुसूसिय्यत न हो मसलन जुमुआ़ के रोज़ छुट्टी थी इस से फ़ाएदा उठाते हुए रोज़ा रख लिया तो कराहत नहीं।

मुफ़स्सिरे शहीर **ह़कीमुल उम्मत** ह़ज़रते मुफ़्ती अह़मद यार ख़ान عَلَيْهِ رَحْمَةُ الْحَنَّان मिरआत जिल्द 3 सफ़ह़ा 187 पर फ़रमाते हैं : मसलन कोई शख़्स हर ग्यारहवीं या बारहवीं तारीख़ को रोज़ा रखने का आ़दी हो और इत्तिफ़ाक़ से उस दिन जुमुआ़ आ जाए तो रख ले, अब ख़िलाफ़े औला भी नहीं।

फ़रमाने मुस्तफ़ा صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم : बरोज़े क़ियामत लोगों में से मेरे क़रीब तर वोह होगा जिस ने दुन्या में मुझ पर ज़ियादा दुरूदे पाक पढ़े होंगे। (ترمذی)

रोज़ए जुमुआ़ के मुतअ़ल्लिक़ एक फ़तवा : इस ज़िम्न में **फ़तावा रज़विय्या** (मुख़र्रजा) जिल्द 10 सफ़्हा 559 से मा'लूमाती सुवाल जवाब मुलाहज़ा हों : **सुवाल :** क्या फ़रमाते हैं उ़लमाए दीन इस मस्अले में कि **जुमुआ़** का रोज़ए नफ़्ल रखना कैसा है ? एक शख़्स ने जुमुआ़ का रोज़ा रखा दूसरे ने उस से कहा जुमुआ़ ईदुल मुअमिनीन है, रोज़ा रखना इस दिन में मक्रूह है और ब इसरार बा'द दो पहर के रोज़ा तुड़वा दिया और किताब "सिर्रुल क़ुलूब" में मक्रूह होना लिखा है दिखला दिया। ऐसी सूरत में रोज़ा तोड़ने वाले के ज़िम्मे कफ़्फ़ारा है या नहीं ? और तुड़वाने वाले को कोई इल्ज़ाम है या नहीं ? **अल जवाब :** जुमुआ़ का रोज़ा ख़ास इस निय्यत से (रखना) कि आज जुमुआ़ है इस का रोज़ा बित्तख़्सीस (या'नी ख़ुसूसिय्यत से रखना) चाहिये, मक्रूह है, मगर न वोह कराहत कि तोड़ना लाज़िम हुवा, और अगर ख़ास ब निय्यते तख़्सीस न थी तो अस्लन कराहत भी नहीं, उस दूसरे शख़्स को अगर निय्यते मक्रूहा पर इत्तिलाअ़ न थी जब तो ए'तिराज़ ही सिरे से हमाक़त हुवा और रोज़ा तुड़वा देना शरअ़ पर सख़्त जुरअत, और अगर इत्तिलाअ़ भी हुई जब भी मस्अला बता देना काफ़ी था न कि रोज़ा तुड़वाना और वोह भी बा'द दो पहर के, जिस का इख़्तियार नफ़्ल रोज़े में वालिदैन के सिवा किसी को नहीं,

तोड़ने वाला और तुड़वाने वाला दोनों गुनहगार हुए, तोड़ने वाले पर क़ज़ा लाज़िम है कफ़्फ़ारा अस्लन (या'नी बिल्कुल) नहीं। وَاللّٰهُ تَعَالٰى اَعْلَم

صَلُّوا عَلَى الْحَبِيب! صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلٰى مُحَمَّد

सनीचर और इतवार के रोज़े : हज़रते सय्यिदतुना उम्मे सलमा رَضِىَ اللّٰهُ تَعَالٰى عَنْهَا से मरवी है कि **रसूलुल्लाह** صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم **सनीचर और इतवार** का रोज़ा रखा करते और फ़रमाते : "येह दोनों (या'नी सनीचर और इतवार) मुश्रिकीन की ईद के दिन हैं और मैं चाहता हूं कि इन की मुख़ालफ़त करूं।" (ابنِ خُزَيمه ج٣ص٣١٨حديث٢١٦٧)

तन्हा सनीचर का रोज़ा रखना मन्अ़ है। चुनान्चे हज़रते सय्यिदुना **अ़ब्दुल्लाह** बिन बुस्र رَضِىَ اللّٰهُ تَعَالٰى عَنْهُ अपनी बहन رَضِىَ اللّٰهُ تَعَالٰى عَنْهَا से रिवायत करते हैं कि **रसूलुल्लाह** صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने इर्शाद फ़रमाया : "सनीचर के दिन का रोज़ा फ़र्ज़ रोज़ों के इलावा मत रखो।" हज़रते सय्यिदुना इमाम अबू ईसा **तिरमिज़ी** عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللّٰهِ الْقَوِى फ़रमाते हैं कि येह हदीस ह़सन है और यहां मुमानअ़त से मुराद किसी शख़्स का सनीचर के रोज़े को ख़ास कर लेना है कि यहूदी इस दिन की ता'ज़ीम करते हैं।

(تِرمِذی ج٢ص١٨٦حديث٧٤٤)

صَلُّوا عَلَى الْحَبِيب! صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلٰى مُحَمَّد

"ऐ शहन्शाहे मदीना" के तेरह हुरूफ़ की निस्बत से रोज़ए नफ़्ल के 13 मदनी फूल

- **मां** बाप अगर बेटे को **नफ़्ल रोज़े** से इस लिये मन्अ़ करें कि बीमारी का अन्देशा है तो वालिदैन की इताअ़त करे। (رَدُّالْمُحتارج۳ص۴۷۸)
- **शोहर** की इजाज़त के बिग़ैर बीवी **नफ़्ल रोज़ा** नहीं रख सकती। (دُرِّمُختار ج۳ص۴۷۷)
- **नफ़्ल रोज़ा** क़स्दन शुरूअ़ करने से पूरा करना वाजिब हो जाता है अगर तोड़ेगा तो क़ज़ा वाजिब होगी। (ایضاًص۴۷۳)
- **नफ़्ल रोज़ा** जान बूझ कर नहीं तोड़ा बल्कि बिला इख़्तियार टूट गया मसलन औरत को रोज़े के दौरान हैज़ आ गया तो रोज़ा टूट गया मगर क़ज़ा वाजिब है। (ایضاًص۴۷۴)
- **नफ़्ल रोज़ा** बिला उ़ज़्र तोड़ना, **ना जाइज़** है। मेहमान के साथ अगर मेज़बान न खाएगा तो उसे या'नी मेहमान को ना गवार गुज़रेगा। या **मेहमान** अगर खाना न खाए तो **मेज़बान** को अज़िय्यत होगी तो **नफ़्ल रोज़ा** तोड़ने के लिये येह उ़ज़्र है बशर्ते कि येह भरोसा हो कि इस की क़ज़ा रख लेगा और येह भी शर्त़ है कि ज़हवए कुब्रा से पहले तोड़े बा'द को नहीं। (دُرِّمُختار، رَدُّالْمُحتار ج ۳ ص ۴۷۵-۴۷۶)
- **वालिदैन** की नाराज़ी के सबब अ़स्र से पहले तक **नफ़्ल रोज़ा** तोड़ सकता है बा'दे अ़स्र नहीं। (ایضاًص۴۷۷)

❁ **अगर** किसी इस्लामी भाई ने दा'वत की तो ज़ह्वए कुब्रा से क़ब्ल **नफ़्ल रोज़ा** तोड़ सकता है मगर क़ज़ा वाजिब है।

(دُرِّمُختار ج٣ ص٤٧٧،٤٧٣)

❁ **इस** त़रह़ निय्यत की, कि "कहीं दा'वत हुई तो रोज़ा नहीं और न हुई तो है।" येह निय्यत सह़ीह़ नहीं, बहर ह़ाल रोज़ादार नहीं।

(عالمگیری ج١ ص١٩٥)

❁ **मुलाज़िम** या मज़दूर अगर **नफ़्ल रोज़ा** रखें तो काम पूरा नहीं कर सकते तो "मुस्ताजिर" (या'नी जिस ने मुलाज़मत या मज़दूरी पर रखा है) की इजाज़त ज़रूरी है। और अगर काम पूरा कर सकते हैं तो इजाज़त की ज़रूरत नहीं।[1] (دُرِّمُختار ج٣ ص ٤٧٨)

❁ **त़ालिबे इल्मे दीन** अगर नफ़्ल रोज़ा रखता है तो कमज़ोरी होती, नींद चढ़ती और सुस्ती के सबब त़लबे इल्मे दीन में रुकावट खड़ी होती है तो अफ़्ज़ल येह है नफ़्ल रोज़ा न रखे।

❁ **ह़ज़रते** सय्यिदुना दावूद عَلٰى نَبِيِّنَا وَعَلَيْهِ الصَّلٰوةُ وَالسَّلَام एक दिन छोड़ कर एक दिन रोज़ा रखते थे। इस त़रह़ रोज़े रखना "सौमे दावूदी" कहलाता है और हमारे लिये येह अफ़्ज़ल है। जैसा कि **रसूलुल्लाह**

مدینہ

1 : मुलाज़मत के मुतअ़ल्लिक़ बेहतरीन मा'लूमात के लिये मकतबतुल मदीना का शाएअ़ कर्दा सिर्फ़ 22 सफ़ह़ात का रिसाला "ह़लाल त़रीक़े से कमाने के 50 मदनी फूल" का ज़रूर मुत़ालआ़ फ़रमाइये।

صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने इर्शाद फ़रमाया : "अफ़्ज़ल रोज़ा मेरे भाई दावूद (عَلَیْہِ السَّلَام) का रोज़ा है कि वोह एक दिन रोज़ा रखते और एक दिन न रखते और दुश्मन के मुक़ाबले से फ़िरार न होते थे।"

(تِرمذی ج۲ ص۱۹۷ حدیث۷۷۰)

۞ **हज़रते** सय्यिदुना सुलैमान عَلٰی نَبِیِّنَا وَعَلَیْہِ الصَّلٰوۃُ وَالسَّلَام तीन3 दिन **महीने** के शुरूअ़ में, तीन3 दिन वस्त़ (या'नी बीच) में और तीन3 दिन आख़िर में रोज़ा रखा करते थे और इस त़रह़ महीने के अवाइल, अवासित़ और अवाख़िर में रोज़ादार रहते थे। (ابن عساکر ج۲۴ ص۴۸)

۞ **सौमे** दहर (या'नी हमेशा रोज़े रखना सिवा इन पांच दिनों या'नी शव्वाल की यकुम और ज़िल हिज्जा की दसवीं ता तेरहवीं के जिन में रोज़ा रखना ह़राम है) मकरूहे तन्ज़ीही है। (دُرِّمُختار ج۳ ص۳۹۱)

हमेशा रोज़ा रखना : हमेशा के रोज़ों से मुमानअ़त पर "बुख़ारी शरीफ़" की येह ह़दीस भी है और इस का मफ़्हूम भी उ़लमा ने तावील के साथ बयान फ़रमाया है चुनान्चे फ़रमाने मुस्तफ़ा صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم : لَا صَامَ مَنْ صَامَ الدَّھْرَ۔ या'नी जो हमेशा रोज़े रखे उस ने रोज़े रखे ही नहीं।

(بُخاری ج۱ ص۶۵۱ حدیث۱۹۷۹)

शर्हे ह़दीस : शारेहे बुख़ारी ह़ज़रते अ़ल्लामा मुफ़्ती मुहम्मद शरीफुल ह़क़ अमजदी عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللّٰهِ الْقَوِی इस ह़दीसे पाक के तह़्त लिखते हैं : अगर इस ख़बर को "नह्य" के मा'ना में मानें (या'नी अगर इस ह़दीस का येह मा'ना लें कि हमेशा रोज़े रखना मन्अ़ है और जो रखेगा तो उसे कोई सवाब नहीं मिलेगा) तो (इस सूरत में ह़दीस का) येह इर्शाद उन लोगों के लिये है जिन्हें मुसल्सल रोज़ा रखने की वज्ह से इस का ज़न्ने ग़ालिब हो कि इतने कमज़ोर हो जाएंगे कि जो हुक़ूक़ इन पर वाजिब हैं उन को अदा नहीं कर पाएंगे ख़्वाह वोह हुक़ूक़ दीनी हों या दुन्यवी, मसलन नमाज़, जिहाद, बच्चों की परवरिश के लिये कमाई, और (पहली सूरत से हट कर दूसरी सूरत येह बनती है कि) अगर मुसल्सल रोज़ा रखने की वज्ह से (अगर) इन (रोज़ादारों) का ज़न्ने ग़ालिब हो कि हुक़ूक़े वाजिबा तो कमा ह़क़्क़ुहू (या'नी मुकम्मल त़ौर पर) अदा कर लेंगे मगर हुक़ूक़े ग़ैरे वाजिबा अदा करने की क़ुव्वत नहीं रहेगी, उन के लिये रोज़ा मक्रूह या ख़िलाफ़े औला है और जिन्हें इस का ज़न्ने ग़ालिब हो कि सौमे दह्र (या'नी हमेशा रोज़ा) रखने के बा वुजूद तमाम हुक़ूक़े वाजिबा, मस्नूना, मुस्तह़ब्बा कमा ह़क़्क़ुहू (या'नी

मुकम्मल त़ौर पर) अदा कर लेंगे उन के लिये कराहत भी नहीं। बा'ज़ सह़ाबए किराम जैसे अबू त़ल्ह़ा अन्सारी और ह़म्ज़ा बिन अ़म्र अस्लमी رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْھُمَا सौमे दह्र (या'नी हमेशा रोज़ा) रखते थे और ह़ुज़ूरे अक़्दस صَلَّى اللہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने उन्हें मन्अ़ नहीं फ़रमाया, इसी त़रह़ बहुत से ताबिईन और औलियाए किराम से भी सौमे दह्र (या'नी हमेशा रोज़ा) रखना मन्क़ूल है। [اشعۃ اللمعات جلد ثانی ص۱۰۰] (नुज़्हतुल क़ारी, जि. 3, स. 386 मुलख़्ख़सन)

या रब्बे मुस्त़फ़ा عَزَّوَجَلَّ ! हमें ज़िन्दगी, सिह़ह़त और फ़ुरसत को ग़नीमत जानते हुए ख़ूब ख़ूब **नफ़्ल रोज़े** रखने की सआ़दत इनायत फ़रमा, उन्हें क़बूल भी कर, हमें बे ह़िसाब बख़्श दे और हमारे मीठे मीठे मह़बूब صَلَّى اللہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم की सारी उम्मत की मग़्फ़िरत फ़रमा।

اٰمِین بِجاہِ النَّبِیِّ الْاَمین صلَّی اللہ تعالٰی علیہ واٰلہٖ وسلَّم

صَلُّوا عَلَی الْحَبِیب ! صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلٰی مُحَمَّد

रोज़ादारों की 12 ह़िकायात

SINGLE 1394 A

फ़रमाने मुस्तफ़ा صَلَّى اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم : शबे जुमुआ और रोज़े जुमुआ मुझ पर कसरत से दुरूद पढ़ो क्यूं कि तुम्हारा दुरूद मुझ पर पेश किया जाता है। (طبرانی)

اَلْحَمْدُ لِلّٰہِ رَبِّ الْعٰلَمِیْنَ وَالصَّلٰوۃُ وَالسَّلَامُ عَلٰی سَیِّدِ الْمُرْسَلِیْنَ
اَمَّا بَعْدُ فَاَعُوْذُ بِاللّٰہِ مِنَ الشَّیْطٰنِ الرَّجِیْمِ بِسْمِ اللّٰہِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِیْمِ

"र-मज़ानुल मुबारक" के बारह हुरूफ़ की निस्बत से रोज़ादारों की 12 हिकायात

दुरूद शरीफ़ की फ़ज़ीलत : फ़रमाने मुस्तफ़ा صَلَّى اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم : जो मेरी महब्बत और मेरी त़रफ़ शौक़ की वज्ह से मुझ पर हर दिन और हर रात को **तीन तीन बार** दुरूद शरीफ़ पढ़े तो **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ पर हक़ है कि वोह इस के उस दिन और उस रात के गुनाह बख़्श दे। (مُعجَم کبیر ج۱۸ ص۳۶۲ حدیث۹۲۸)

صَلُّوا عَلَی الْحَبِیْب! صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلٰی مُحَمَّد

(1) हज्जाज बिन यूसुफ़ और रोज़ादार आ'राबी :

हज्जाज बिन यूसुफ़ एक मर्तबा सख़्त गर्मियों में दौराने सफ़रे हज मक्कए मुअ़ज़्ज़मा व मदीनए मुनव्वरह زَادَھُمَا اللّٰہُ شَرَفًا وَّتَعْظِیْمًا के दरमियान एक मन्ज़िल में उतरा और दो पहर का खाना तय्यार करवाया और अपने ह़ाजिब (या'नी चोकीदार) से कहा कि किसी मेहमान को ले आओ। ह़ाजिब ख़ैमे से बाहर निकला तो उसे एक **आ'राबी** लैटा हुवा नज़र आया, इस ने उसे जगाया और कहा : चलो तुम्हें अमीर हज्जाज बुला

रहे हैं। आ'राबी आया तो ह़ज्जाज ने कहा : मेरी दा'वत क़बूल करो और हाथ धो कर मेरे साथ खाना खाने बैठ जाओ। **आ'राबी** बोला : मुआ़फ़ फ़रमाइये ! आप की दा'वत से पहले मैं आप से बेहतर एक **करीम** की दा'वत क़बूल कर चुका हूं। ह़ज्जाज ने कहा : वोह किस की ? वोह बोला : **अल्लाह तआ़ला** की जिस ने मुझे **रोज़ा** रखने की दा'वत दी और मैं **रोज़ा** रख चुका हूं। ह़ज्जाज ने कहा : इतनी सख़्त गरमी में **रोज़ा** ? आ'राबी ने कहा : हां ! क़ियामत की सख़्त तरीन गरमी से बचने के लिये। ह़ज्जाज ने कहा : आज खाना खा लो और येह **रोज़ा** कल रख लेना। **आ'राबी** बोला : क्या आप इस बात की ज़मानत देते हैं कि मैं कल तक ज़िन्दा रहूंगा ! ह़ज्जाज ने कहा येह बात तो नहीं। आ'राबी बोला : तो फिर वोह बात भी नहीं। येह कहा और चल दिया। (رَوضُ الرِّیاحِین ص ۲۱۲) **अल्लाहु रब्बुल इ़ज़्ज़त** عَزَّوَجَلَّ **की उन पर रह़मत हो और उन के सदक़े हमारी बे ह़िसाब मग़्फ़िरत हो।**

اٰمین بِجاہِ النَّبِیِّ الْاَمین صَلَّی اللہُ تعالٰی علیہ واٰلہٖ وسلَّم

صَلُّوا عَلَی الْحَبِیب ! صَلَّی اللّٰهُ تَعَالٰی عَلٰی مُحَمَّد

प्यारे प्यारे इस्लामी भाइयो ! अल्लाह عَزَّوَجَلَّ के नेक बन्दे किसी दुन्यवी ह़ाकिम के रो'ब में नहीं आते और येह भी मा'लूम हुवा कि जो आ़शिक़ाने रसूल यहां की गरमी बरदाश्त कर के **रोज़ा** रखते हैं वोह कल क़ियामत की होलनाक गरमी से मह़फ़ूज़ रहेंगे। اِنْ شَآءَاللہ عَزَّوَجَلَّ

फ़रमाने मुस्तफ़ा صَلَّى اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم : उस शख़्स की नाक ख़ाक आलूद हो जिस के पास मेरा ज़िक्र हो और वोह मुझ पर दुरूदे पाक न पढ़े। (ترمذی)

2 सच्चा चरवाहा : हज़रते सय्यिदुना **नाफ़ेअ़** رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ फ़रमाते हैं : **हज़रते** सय्यिदुना **अ़ब्दुल्लाह** बिन उ़मर رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُمَا अपने बा'ज़ साथियों के साथ एक सफ़र में थे रास्ते में एक जगह ठहरे और खाने के लिये दस्तर ख़्वान बिछाया, इतने में एक **चरवाहा** (या'नी बकरियां चराने वाला) वहां आ गया, आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ने फ़रमाया : आइये ! दस्तर ख़्वान से कुछ ले लीजिये ! अ़र्ज़ की : मेरा रोज़ा है, **हज़रते** सय्यिदुना **अ़ब्दुल्लाह** बिन उ़मर رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُمَا ने फ़रमाया : क्या तुम इस सख़्त गरमी के दिन में (नफ़्ल) **रोज़ा** रखे हुए हो जब कि तुम इन पहाड़ों में बकरियां चरा रहे हो ! उस ने कहा : **अल्लाह** की क़सम ! मैं येह इस लिये कर रहा हूं कि ज़िन्दगी के गुज़रे हुए दिनों की तलाफ़ी (या'नी बदला अदा) कर लूं। आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ने उस की परहेज़ गारी का इम्तिहान लेने के इरादे से फ़रमाया : क्या तुम अपनी बकरियों में से एक बकरी हमें बेचोगे ? उस की क़ीमत और गोश्त भी तुम्हें देंगे ताकि तुम इस से रोज़ा इफ़्तार कर सको, उस ने जवाब दिया : येह बकरियां मेरी नहीं हैं, मेरे मालिक की हैं, आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ने आज़्माने के लिये फ़रमाया : मालिक से कह देना कि भेड़िया (Wolf) इन में से एक को ले गया है, गुलाम ने कहा : तो फिर **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ कहां है ? (या'नी **अल्लाह** तो देख रहा है, वोह तो ह़क़ीक़त को जानता है और इस पर मेरी पकड़ फ़रमाएगा) जब आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ मदीने वापस तशरीफ़ लाए तो उस के मालिक से

गुलाम और सारी बकरियां ख़रीद लीं फिर चरवाहे को आज़ाद कर दिया और बकरियां भी उसे तोह़फ़े में दे दीं। (شُعَبُ الْاِیمان ج٤ص٣٢٩حدیث٥٢٩١ مُلَخَّصاً)

अल्लाहु रब्बुल इ़ज़्ज़त عَزَّوَجَلَّ की उन पर रह़मत हो और उन के सदक़े हमारी बे ह़िसाब मग़्फ़िरत हो।

اٰمِين بِجاهِ النَّبِيِّ الْاَمين صَلَّى اللّٰه تعالٰى عليه واٰله وسلَّم

صَلُّوا عَلَى الْحَبِيب! صَلَّى اللّٰهُ تَعالٰى عَلٰى مُحَمَّد

(3) निराला कफ़्फ़ारा : बुख़ारी शरीफ़ में है, एक सह़ाबी رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْهُ बारगाहे नबवी صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰی عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم में ह़ाज़िर हुए और अ़र्ज़ की : **या रसूलल्लाह** صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰی عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ! मैं ने **रमज़ान** के रोज़े की ह़ालत में अपनी औ़रत से "कुरबत" की, मैं हलाक हो गया, (फ़रमाइये! अब मैं क्या करूं ?) सरकारे नामदार صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰی عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया : गुलाम आज़ाद कर सकते हो ? अ़र्ज़ की नहीं। फ़रमाया : क्या मुतवातिर दो माह के रोज़े रख सकते हो ? अ़र्ज़ की नहीं। फ़रमाया : साठ मिस्कीनों को खाना खिला सकते हो ? अ़र्ज़ की : येह भी नहीं कर सकता। इतने में बारगाहे रिसालत صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰی عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم में किसी ने कुछ खजूरें हदिय्यतन ह़ाज़िर कीं। सरकारे नामदार صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰی عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने वोह सारी खजूरें उस सह़ाबी رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْهُ को अ़त़ा फ़रमा दीं और फ़रमाया : इन्हें ख़ैरात कर दो (तुम्हारा **कफ़्फ़ारा** अदा हो जाएगा)। वोह बोले : **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ

की क़सम ! **मदीने** में मेरे घर वालों से बढ़ कर कोई ख़ानदान मोहताज नहीं। **सरकारे नामदार** صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم सुन कर हंसे यहां तक कि दन्दाने मुबारक चमकने लगे और फ़रमाया : **اَطْعِمْهُ اَهْلَكَ** या'नी "अपने घर वालों को ही खिला दे" (तेरा कफ़्फ़ारा अदा हो जाएगा)।

(بُخاری ج ۱ ص ۶۳۸ حدیث ۱۹۳۶ مُلَخّصاً)

मुफ़स्सिरे शहीर **हकीमुल उम्मत** हज़रते मुफ़्ती अहमद यार ख़ान عَلَيْهِ رَحْمَةُ الْحَنَّان ने इस हदीस की जो शर्ह फ़रमाई है उस से हासिल होने वाले चन्द मदनी फूल पेश करता हूं : ❁ **कफ़्फ़ारे** में तरतीब मो'तबर है कि अगर गुलाम आज़ाद कर सकता है तो येह करे अगर गुलाम न पाए तो दो माह के मुसलसल रोज़े अगर येह ना मुम्किन हो तो साठ मिस्कीनों का खाना। (कफ़्फ़ारे की तफ़्सीली मा'लूमात "अहकामे रोज़ा" के सफ़्हा 152 ता 155 पर मुलाहज़ा फ़रमाइये) ❁ या'नी अपना येह कफ़्फ़ारा तू ख़ुद भी खा ले और अपने घर वालों को भी खिला दे तेरा कफ़्फ़ारा अदा हो जाएगा। येह है हुज़ूरे अन्वर صَلَّی اللّٰہُ عَلَیْہِ وَسَلَّم का इख़्तियार कि उस का कफ़्फ़ारा उस के लिये इन्आम बना दिया, वरना कोई शख़्स अपना कफ़्फ़ारा अपनी ज़कात न तो ख़ुद खा सकता है न उस के बीवी बच्चे, मगर यहां उस का अपना ही कफ़्फ़ारा है और अपने आप ही खा रहा है। (मिरआत, जि. 3, स. 161, 162 मुलख़्ख़सन) "नुज़्हतुल क़ारी" में इस हदीसे पाक के तहत है : हुज़ूरे अक़्दस صَلَّی اللّٰہُ عَلَیْہِ وَسَلَّم को येह इख़्तियार

हासिल है कि वोह जिसे चाहें जिस हुक्म से चाहें मुस्तस्ना (या'नी जुदा) फ़रमा दें, मिस्कीनों को खिलाने के बजाए खुद खाने और अपने अहलो इयाल को खिलाने का हुक्म दिया।

(नुज़्हतुल क़ारी, जि. 3, स. 335 मुलख़्ख़सन)

صَلُّوا عَلَى الْحَبِيْب! صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلٰى مُحَمَّد

(4) सिद्दीक़ा رَضِیَ اللهُ تَعَالٰی عَنْهَا ने लाख दिरहम लुटा दिये !

: **एक** बार हज़रते सय्यिदुना अमीरे मुआविया رَضِیَ اللهُ تَعَالٰی عَنْه ने **उम्मुल मुअमिनीन** हज़रते सय्यिदतुना आइशा सिद्दीक़ा رَضِیَ اللهُ تَعَالٰی عَنْهَا की ख़िदमत में **एक लाख दराहिम** भेजे, तो आप رَضِیَ اللهُ تَعَالٰی عَنْهَا ने वोह सब दिरहम एक ही रोज़ में राहे खुदा عَزَّوَجَلَّ में तक़्सीम कर दिये और अपने लिये कुछ न रखा और उस रोज़ आप رَضِیَ اللهُ تَعَالٰی عَنْهَا खुद रोज़े से थीं। हज़रते सय्यिदतुना बरीरा رَضِیَ اللهُ تَعَالٰی عَنْهَا ने अ़र्ज़ की : आप का रोज़ा है अगर उस में से एक दिरहम का गोश्त ख़रीद लेतीं तो हम उस से रोज़ा इफ़्तार करते। फ़रमाया : अगर तुम याद दिलातीं तो बचा लेती। (اَلْمُسْتَدْرَك ج٤ ص١٧ حديث ٦٨٠٥) **अल्लाहु रब्बुल इ़ज़्ज़त عَزَّوَجَلَّ की उन पर रह़मत हो और उन के सदक़े हमारी बे ह़िसाब मग़्फ़िरत हो।**

اٰمِين بِجَاهِ النَّبِيِّ الْاَمين صَلَّى اللهُ تعالٰى عليه واٰلهٖ وسلَّم

صَلُّوا عَلَى الْحَبِيْب! صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلٰى مُحَمَّد

आ़शिक़ाने रसूल से मुलाक़ात की बरकात : प्यारे प्यारे इस्लामी भाइयो ! उम्मुल मुअमिनीन رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہَا ने वुस्अ़त के बा वुजूद अपनी ज़िन्दगी निहायत सादा और ज़ाहिदाना गुज़ार दी और जो दौलत भी ह़ाज़िर हुई आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہَا ने राहे ख़ुदा عَزَّوَجَلَّ में तक़्सीम फ़रमा दी यहां तक कि **लाख दराहिम** आए वोह भी लुटा दिये और **रोज़ा** इफ़्त़ार करने के लिये भी कोई एहतिमाम न फ़रमाया और एक हम हैं कि अगर कभी **नफ़्ल रोज़ा** रख भी लें तो हमें **इफ़्त़ार** के वक़्त हमा अक़्साम के फल, कबाब, समोसे, ठन्डा ठन्डा शरबत और न जाने क्या क्या चाहिये । काश ! हमें भी उम्मुल मुअमिनीन सय्यिदतुना आ़इशा सिद्दीक़ा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہَا के नक़्शे क़दम पर चलना नसीब हो जाए। हुब्बे दुन्या से पीछा छुड़ाने और आख़िरत बेहतर बनाने के लिये **दा'वते इस्लामी** के मदनी माह़ोल से वाबस्ता रहना बेहद मुफ़ीद है । जब भी आप के अ़लाक़े में दा'वते इस्लामी के **आ़शिक़ाने रसूल** का मदनी क़ाफ़िला तशरीफ़ लाए उन की ख़िदमत में ह़ाज़िर हो कर ज़रूर फ़ैज़याब हों। आइये ! आप को एक बिगड़े हुए नौ जवान की "मदनी बहार" सुनाता हूं जो मदनी क़ाफ़िले के **आ़शिक़ाने रसूल** की मुलाक़ात के लिये आया तो उस की ज़िन्दगी में मदनी इन्क़िलाब बरपा हो गया ! चुनान्चे एक इस्लामी भाई मेट्रिक के त़ालिबे इ़ल्म थे, बुरी

सोह़बत के बाइस गुनाहों भरी ज़िन्दगी गुज़ार रहे थे, मिज़ाज बेह़द गुसीला था और बद तमीज़ी की नौबत इस ह़द तक पहुंच चुकी थी कि वालिद कुजा दादा और दादी के सामने भी क़ैंची की त़रह़ ज़बान चलाते थे। एक रोज़ तब्लीग़े क़ुरआनो सुन्नत की आ़लमगीर ग़ैर सियासी तह़रीक, **दा'वते इस्लामी** का एक मदनी क़ाफ़िला उन के मह़ल्ले की मस्जिद में ह़ाज़िर हुवा, ख़ुदा عَزَّوَجَلَّ का करना ऐसा हुवा कि वोह **आ़शिक़ाने रसूल** से मुलाक़ात के लिये पहुंच गए। एक बा इमामा इस्लामी भाई ने **इन्फ़िरादी कोशिश** करते हुए उन्हें **दर्स** में शिर्कत की दा'वत पेश की, वोह उन के साथ बैठ गए। मदनी क़ाफ़िले के आ़शिक़ाने रसूल ने **दर्स** के बा'द बताया कि चन्द ही रोज़ बा'द **दा'वते इस्लामी का बैनल अक़्वामी तीन रोज़ा सुन्नतों भरा इज्तिमाअ़** हो रहा है आप भी शिर्कत कर लीजिये। **दर्स** ने उन पर बहुत अच्छा असर किया था लिहाज़ा वोह इन्कार न कर सके। यहां तक कि वोह इज्तिमाअ़ में ह़ाज़िर हो गए। वहां की रौनक़ें और बरकतें देख कर वोह ह़ैरान रह गए, वहां होने वाले आख़िरी बयान **"गाने बाजे की होल नाकियां"** सुन कर थर्रा उठे और आंखों से आंसू जारी हो गए। वोह गुनाहों से तौबा कर के उठे और दा'वते इस्लामी के **मदनी माह़ोल** से वाबस्ता हो गए। उन की **मदनी**

माहोल से वाबस्तगी से उन के घर वालों ने इत्मीनान का सांस लिया। दा'वते इस्लामी के **मदनी माहोल** की बरकत से इन जैसे बिगड़े हुए बद अख़्लाक़ नौ जवान में मदनी इन्क़िलाब बरपा हो जाने की वज्ह से मुतअस्सिर हो कर उन के बड़े भाई ने दाढ़ी रखने के साथ साथ इमामा शरीफ़ का ताज भी सजा लिया। उन की एक ही बहन है। اَلْحَمْدُ لِلّٰه عَزَّوَجَلَّ उस ने भी **मदनी बुरक़अ़** पहन लिया, اَلْحَمْدُ لِلّٰه عَزَّوَجَلَّ घर का हर फ़र्द सिलिसलए आ़लिया क़ादिरिय्या रज़विय्या में दाख़िल हो कर सरकारे ग़ौसे आ'ज़म عَلَيْهِ رَحمَةُ اللّٰهِ الْاَكْرَم का मुरीद हो गया और उन पर **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ ने ऐसा करम फ़रमाया कि उन्हों ने कुरआने पाक हिफ़्ज़ करने की सआ़दत हासिल कर ली और दर्से निज़ामी (आ़लिम कोर्स) में दाख़िला ले लिया और येह बयान देते वक़्त **दरजए सालिसा** या'नी तीसरी क्लास में पहुंच चुके हैं। اَلْحَمْدُ لِلّٰه عَزَّوَجَلَّ **दा'वते इस्लामी** के मदनी कामों के तअ़ल्लुक़ से **अ़लाक़ाई क़ाफ़िला ज़िम्मादारी** की सआ़दत भी नसीब हुई।

दिल पे गर ज़ंग हो, सारा घर तंग हो — दाग़ सारे धुलें, क़ाफ़िले में चलो
ऐसा फ़ैज़ान हो, हिफ़्ज़ कुरआन हो — ख़ूब ख़ुशियां मिलें, क़ाफ़िले में चलो

(वसाइले बख़्शिश, स. 672)

صَلُّوا عَلَى الْحَبِيْب! صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلٰى مُحَمَّد

5 हूर ने कूज़ा गिरा दिया : ह़ज़रते सय्यिदुना सरी सक़ती رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰی عَلَيْه का **रोज़ा** था, त़ाक़ में पानी ठन्डा होने के लिये आबख़ोरा (या'नी कूज़ा) रख दिया था, नमाज़े अ़स्र के बा'द मुराक़बे में थे, हूराने बिहिश्त (या'नी जन्नती हूरों) ने यके बा'द दीगरे सामने से गुज़रना शुरूअ़ किया । जो सामने आती उस से दरयाफ़्त फ़रमाते : तू किस के लिये है ? वोह किसी एक बन्दए ख़ुदा का नाम लेती । एक आई, उस से भी येही पूछा तो उस ने कहा : "उस के लिये हूं जो **रोज़े** में पानी ठन्डा होने को न रखे ।" फ़रमाया : "अगर तू सच कहती है तो इस कूज़े को गिरा दे," उस ने गिरा दिया । इस की आवाज़ से आंख खुल गई । देखा तो वोह आबख़ोरा (कूज़ा) टूटा पड़ा था । (मल्फ़ूज़ाते आ'ला ह़ज़रत, स. 158 व تفسيرُ الْاَحلام لابن سيرين ص٦٥ مُلَخَّصاً) **अल्लाहु रब्बुल इ़ज़्ज़त** عَزَّوَجَلَّ **की उन पर रह़मत हो और उन के सदक़े हमारी बे ह़िसाब मग़्फ़िरत हो ।**

اٰمِين بِجاهِ النَّبِيِّ الْاَمين صَلَّى اللهُ تعالىٰ عليه واٰلهٖ وسلَّم

صَلُّوا عَلَى الْحَبِيب !   صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰی عَلٰی مُحَمَّد

सख़्त गर्मियों में भी पानी गर्म कर के पीते (ह़िकायत) :

प्यारे प्यारे इस्लामी भाइयो ! मा'लूम हुवा, **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ के नेक बन्दे आख़िरत की अबदी राह़तें और न ख़त्म होने वाली ने'मतें पाने के शौक़ में अपने नफ़्स को क़ाबू कर के दुन्या की लज़्ज़तों को ठोकर मार दिया

करते हैं । चुनान्चे एक **बुज़ुर्ग** رَحْمَةُ اللّٰهِ تَعَالٰى عَلَيْه ने सख़्त गरमी के दिनों में दो पहर के वक़्त एक शख़्स को देखा कि **बर्फ़** लिये जा रहा है, दिल में हसरत हुई, काश ! मेरे पास भी पैसे होते और मैं भी बर्फ़ ख़रीद कर ठन्डा पानी पीता । फिर फ़ौरन नदामत हुई कि मैं नफ़्स की चाल में क्यूं आ गया ! उन्हों ने अ़हद किया कि कभी ठन्डा पानी न पियूंगा । लिहाज़ा सख़्त गरमी के मौसिम में भी पानी को गर्म कर के पिया करते थे ।

निहंगो[1] अज़्दहा व शेरे नर मारा तो क्या मारा

बड़े मूज़ी को मारा नफ़्से अम्मारा को गर मारा

6 तीनों में बड़ा सख़ी कौन ! : रमज़ानुल मुबारक की आमद आमद थी और मश्हूर मुअर्रिख़ हज़रते **वाक़िदी** عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللّٰهِ الْقَوِی के पास कुछ न था । आप رَحْمَةُ اللّٰهِ تَعَالٰى عَلَيْه ने अपने एक **अ़लवी** दोस्त की तरफ़ येह रुक़्आ़ भेजा : "रमज़ान शरीफ़ का महीना आने वाला है और मेरे पास ख़र्च के लिये कुछ नहीं, मुझे क़र्ज़े ह़सना के तौर पर **एक हज़ार दिरहम** भेजिये ।" चुनान्चे उस अ़लवी ने एक हज़ार दिरहम की थेली भेज दी । थोड़ी देर के बा'द हज़रते वाक़िदी عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللّٰهِ الْقَوِی के एक दोस्त का रुक़्आ़ हज़रते वाक़िदी عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللّٰهِ الْقَوِی की तरफ़ आ गया : "रमज़ान शरीफ़ के महीने में ख़र्च के लिये मुझे **एक हज़ार दिरहम** की ज़रूरत है ।" हज़रते वाक़िदी عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللّٰهِ الْقَوِی ने वोही थेली वहां भेज दी ।

मदीना

1 : निहंग : या'नी मगर मच्छ ।

दूसरे रोज़ वोही **अ़लवी** दोस्त जिन से हज़रते वाक़िदी عَلَيْهِ رَحمَةُ اللهِ القَوِى ने क़र्ज़ लिया था और वोह दूसरे दोस्त जिन्हों ने हज़रते वाक़िदी عَلَيْهِ رَحمَةُ اللهِ القَوِى से क़र्ज़ लिया था। दोनों हज़रते वाक़िदी عَلَيْهِ رَحمَةُ اللهِ القَوِى के घर आए। **अ़लवी** कहने लगे : **रमज़ानुल मुबारक** का महीना आ रहा है और मेरे पास इन हज़ार दिरहमों के सिवा और कुछ न था। मगर जब आप का रुक़्आ़ आया तो मैं ने येह हज़ार दिरहम आप को भेज दिये और अपनी ज़रूरत के लिये अपने इन दोस्त को रुक़्आ़ लिखा कि मुझे एक हज़ार दिरहम बतौरे क़र्ज़ भेज दीजिये। इन्हों ने वोही थेली जो मैं ने आप को भेजी थी, मुझे भेज दी। तो पता चला कि आप ने मुझ से क़र्ज़ मांगा, मैं ने अपने इन दोस्त से क़र्ज़ मांगा और इन्हों ने आप से मांगा। और जो थेली मैं ने आप को भेजी थी वोह आप ने इसे भेज दी और इस ने वोही थेली मुझे भेज दी। फिर इन तीनों हज़रात ने इत्तिफ़ाक़े राय से उस रक़म के तीन हिस्से कर के आपस में तक़्सीम कर लिये। उसी रात हज़रते वाक़िदी عَلَيْهِ رَحمَةُ اللهِ القَوِى को ख़्वाब में **जनाबे रिसालत मआब** صَلَّى اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم की ज़ियारत हुई और फ़रमाया : कल तुम्हें बहुत कुछ मिल जाएगा। चुनान्चे दूसरे रोज़ अमीर यह्या बर्मकी ने हज़रते वाक़िदी عَلَيْهِ رَحمَةُ اللهِ القَوِى को बुला कर पूछा : "मैं ने रात ख़्वाब में आप को परेशान देखा है, क्या बात है ?" हज़रते वाक़िदी عَلَيْهِ رَحمَةُ اللهِ القَوِى ने

सारा क़िस्सा सुनाया। तो यह्या बर्मकी ने कहा : "मैं येह नहीं कह सकता कि आप तीनों में से कौन ज़ियादा सख़ी है, बेशक आप तीनों ही सख़ी और वाजिबुल एह़तिराम हैं।" फिर उस ने तीस हज़ार दिरहम ह़ज़रते वाक़िदी عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللّٰهِ الْقَوِى को और बीस बीस हज़ार उन दोनों को दिये। और ह़ज़रते वाक़िदी عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللّٰهِ الْقَوِى को क़ाज़ी भी मुक़र्रर कर दिया। (حُجَّةُ اللّٰهِ عَلَى الْعٰلَمِين ص ٥٧٧ مُلَخَّصاً) **अल्लाहु रब्बुल इ़ज़्ज़त عَزَّوَجَلَّ की उन पर रह़मत हो और उन के सदक़े हमारी बे ह़िसाब मग़्फ़िरत हो।**

اٰمِين بِجاهِ النَّبِيِّ الْاَمين صلّی اللہ تعالیٰ علیہ واٰلہٖ وسلّم

صَلُّوا عَلَى الْحَبِيب! صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلٰى مُحَمَّد

ईसार की फ़ज़ीलत : प्यारे प्यारे इस्लामी भाइयो ! अल्लाह عَزَّوَجَلَّ के नेक बन्दे सख़ी और पैकरे ईसार होते हैं और वोह अपने इस्लामी भाई की तक्लीफ़ दूर करने की ख़ातिर अपनी मुश्किलात की ज़र्रा बराबर परवा नहीं करते। इस ह़िकायत से मा'लूम हुवा कि जूदो **सख़ावत** से हमेशा फ़ाएदा ही होता है और येह भी मा'लूम हुवा कि **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ के मह़बूब, दानाए ग़ुयूब, मुनज़्ज़हुन अ़निल उ़यूब صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰی عَلَیْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم **अल्लाह तआ़ला** की रह़मत से उम्मत के ह़ालात से बा ख़बर हैं अपने ग़ुलामों की बिगड़ी बनाते हैं। **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ की राह में **ईसार** की बहुत फ़ज़ीलत है। चुनान्चे सरकारे मदीना صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰی عَلَیْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم का फ़रमाने मग़्फ़िरत निशान है : "जो शख़्स किसी चीज़ की ख़्वाहिश रखता

हो, फिर उस ख़्वाहिश को रोक कर अपने ऊपर किसी और को तरजीह दे, तो **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ उसे बख़्श देता है।"

(ابنِ عَساکِر ج۳۱ ص۱٤۲)

7 रोज़ादार की क़ब्र की ख़ुश्बूदार मिट्टी : हज़रते सय्यिदुना इमाम क़तादा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ वग़ैरा के उस्ताज़े हदीस हज़रते सय्यिदुना **अ़ब्दुल्लाह** बिन ग़ालिब हद्दानी قُدِّسَ سِرُّہُ الرَّبَّانِی शहीद कर दिये गए। तदफ़ीन के बा'द उन की क़ब्र शरीफ़ की मिट्टी से मुश्क की ख़ुश्बू आती थी। किसी ने ख़्वाब में देख कर पूछा : आप के साथ क्या मुआ़मला फ़रमाया गया ? कहा : "अच्छा मुआ़मला फ़रमाया गया।" पूछा : आप رَحْمَۃُ اللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہ को कहां ले जाया गया ? कहा : "जन्नत में।" पूछा : "कौन से अ़मल के बाइस ?" फ़रमाया : "ईमाने कामिल, तहज्जुद और **गर्मियों के रोज़ों** के सबब।" फिर पूछा : "आप की क़ब्र से मुश्क की ख़ुश्बू क्यूं आ रही है ?" तो जवाब दिया : **"येह मेरी तिलावत और रोज़ों में प्यास की ख़ुश्बू है।"** (حِلْیَۃُ الْاَوْلِیاء ج٦ ص٢٦٦ رقم ٨٥٠٣) **अल्लाहु रब्बुल इ़ज़्ज़त** عَزَّوَجَلَّ **की उन पर रह़मत हो और उन के सदक़े हमारी बे ह़िसाब मग़्फ़िरत हो।**

اٰمِین بِجاہِ النَّبِیِّ الْاَمین صَلَّی اللّٰہُ تعالٰی علیہ واٰلہٖ وسلَّم

صَلُّوا عَلَی الْحَبِیْب ! صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلٰی مُحَمَّد

इमाम बुख़ारी की क़ब्र की मुश्कबार मिट्टी : प्यारे प्यारे इस्लामी भाइयो ! इसी त़रह़ ह़ज़रते सय्यिदुना **इमाम बुख़ारी** عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللّٰهِ الْبَارِى की **क़ब्रे** अन्वर की मिट्टी से भी मुश्क की ख़ुश्बू आती थी। बार बार क़ब्र पर मिट्टी डाली जाती थी मगर लोग ख़ुश्बू की वज्ह से तबर्रुकन उठा ले जाते थे। (طبقاتُ الشّافعية للسبكى ج٢ ص٢٣٣)

साहिबे दलाइलुल ख़ैरात की क़ब्र से अम्बर की ख़ुश्बू आती थी : साहिबे दलाइलुल ख़ैरात ह़ज़रत शैख़ सय्यिद मुह़म्मद बिन सुलैमान जज़ूली رَحْمَةُ اللّٰهِ تَعَالٰی عَلَيْه की क़ब्रे मुनव्वर भी मुअ़त्त़र थी और उस से **कस्तूरी की ख़ुश्बू** की लपटें आती थीं क्यूं कि आप ज़िन्दगी में कसरत से दुरूद शरीफ़ पढ़ा करते थे। इन्तिक़ाल के 77 बरस के बा'द किसी सबब से "सोस" से "मराकश" में मुन्तक़िल करने के लिये जब क़ब्र कुशाई की गई तो आप رَحْمَةُ اللّٰهِ تَعَالٰی عَلَيْه का जिस्मे मुबारक बिल्कुल सह़ीह़ो सालिम था ह़त्ता की कफ़न तक बोसीदा नहीं हुवा था। वफ़ात से क़ब्ल आप رَحْمَةُ اللّٰهِ تَعَالٰی عَلَيْه ने दाढ़ी मुबारक का ख़त़ बनवाया था वोह ऐसे ही था जैसे आज ही बनवाया है, यहां तक कि किसी ने इम्तिह़ानन आप رَحْمَةُ اللّٰهِ تَعَالٰی عَلَيْه के रुख़्सारे मुबारक पर उंगली रख कर दबाया तो उस जगह से ख़ून हट गया और जहां दबाया था वोह जगह सफ़ेद सी हो गई या'नी ज़िन्दा इन्सानों की त़रह़ ख़ून भी जिस्म में रवां दवां था ! (مَطَالِعُ الْمَسَرَّات ص٤)

जबीं मैली नहीं होती बदन मैला नहीं होता

ग़ुलामाने मुहम्मद का कफ़न मैला नहीं होता

صَلُّوا عَلَى الْحَبِيْب ! صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلٰى مُحَمَّد

8 रमज़ान व शश ईद के रोज़ों की बरकत : हज़रते सय्यिदुना सुफ़्यान सौरी عَلَيْهِ رَحمَةُ اللّٰهِ الْقَوِى फ़रमाते हैं : एक बार मैं तीन साल तक मक्कए मुकर्रमा زَادَهَا اللّٰهُ شَرَفًا وَّتَعْظِيمًا में मुक़ीम रहा। एक मक्की शख़्स रोज़ाना दो पहर के वक़्त तवाफ़े का'बा करता, दो रक्अ़त वाजिबुत्तवाफ़ अदा करता फिर मुझे सलाम करता और अपने घर चला जाता। मुझे उस नेक बन्दे से महब्बत हो गई। वोह सख़्त बीमार हो गया मैं इयादत के लिये हाज़िर हुवा तो उस ने मुझे वसिय्यत की : "जब मैं फ़ौत हो जाऊं तो आप رَحْمَةُ اللّٰهِ تَعَالٰى عَلَيْه अपने हाथों से ग़ुस्ल दे कर मेरी नमाज़े जनाज़ा अदा फ़रमाइये, मुझे तन्हा न छोड़िये बल्कि सारी रात मेरी क़ब्र के पास तशरीफ़ फ़रमा रहिये नीज़ मुन्कर नकीर की आमद के वक़्त मुझे तल्क़ीन फ़रमाइयेगा।" मैं ने हामी भर ली। चुनान्चे उस के इन्तिक़ाल के बा'द मैं ने हस्बे वसिय्यत अ़मल किया, क़ब्र के पास हाज़िर था कि मुझे ऊंघ आ गई, मैं ने **हातिफ़े ग़ैबी** की आवाज़ सुनी : "**ऐ सुफ़्यान** (رَحْمَةُ اللّٰهِ تَعَالٰى عَلَيْه) ! इस को तेरी तल्क़ीन व क़ुरबत की कोई हाजत नहीं, इस लिये कि हम ने ख़ुद ही इस को उन्स दिया

और तल्क़ीन की ।" मैं ने कहा : इस को किस अ़मल के सबब येह रुत्बा मिला ? आवाज़ आई : **"रमज़ानुल मुबारक और इस के बा'द शव्वालुल मुकर्रम के छ6 रोज़े रखने की बरकत से ।"** हज़रते सय्यिदुना सुफ़्यान सौरी عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللّٰهِ الْقَوِی फ़रमाते हैं : उस एक रात में येही ख़्वाब मैं ने तीन बार देखा । मैं ने बारगाहे ख़ुदावन्दी عَزَّوَجَلَّ में अ़र्ज़ की : **या अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ ! मुझे भी अपने फ़ज़्लो करम से इन रोज़ों की तौफ़ीक़ अ़ता फ़रमा । (قلیوبی ص١٤) **अल्लाहु रब्बुल इ़ज़्ज़त** عَزَّوَجَلَّ **की उन पर रह़मत हो और उन के सदक़े हमारी बे ह़िसाब मग़फ़िरत हो ।**

اٰمین بِجاہِ النَّبِیِّ الْاَمین صَلَّی اللّٰہ تعالٰی علیہ واٰلہٖ وسلَّم

صَلُّوا عَلَی الْحَبِیْب ! صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلٰی مُحَمَّد

(9) रमज़ान का चांद : एक मर्तबा रमज़ान शरीफ़ के **चांद** के बारे में कुछ इख़्तिलाफ़ पैदा हो गया, बा'ज़ लोग कहते थे कि रात को चांद हो गया और बा'ज़ कहते थे कि नहीं हुवा । **हुज़ूर ग़ौसे आ'ज़म** عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللّٰهِ الْاَكْرَم की वालिदए माजिदा رَحْمَةُ اللّٰهِ تَعَالٰى عَلَيْهَا ने इर्शाद फ़रमाया : "मेरा येह बच्चा (या'नी ग़ौसे आ'ज़म عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللّٰهِ الْاَكْرَم) जब से पैदा हुवा है रमज़ान शरीफ़ के दिनों में सारा दिन **दूध** नहीं पीता और आज भी चूंकि अ़ब्दुल क़ादिर عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللّٰهِ الظَّاهِر ने दिन के वक़्त **दूध** नहीं पिया इस लिये ग़ालिबन रात को **चांद** हो गया है ।" चुनान्चे फिर तह़क़ीक़ करने

पर साबित हुवा कि **चांद** हो गया है। (بَهْجَةُ الْاَسْرار ص١٧٢) **अल्लाहु रब्बुल इ़ज़्ज़त** عَزَّوَجَلَّ **की उन पर रह़मत हो और उन के सदके़ हमारी बे ह़िसाब मग़्फ़िरत हो।** اٰمِين بِجَاهِ النَّبِيِّ الْاَمين صَلَّى اللّٰهُ تعالٰى عليه واٰلهٖ وسلَّم

छोड़ा है मां का दूध भी माहे सियाम में

सरताजे अत्क़िया को हमारा सलाम हो

(वसाइले बख़्शिश, स. 620)

صَلُّوا عَلَى الْحَبِيب ! صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلٰى مُحَمَّد

जिगर का केन्सर ठीक हो गया : प्यारे प्यारे इस्लामी भाइयो ! ग़ौसे आ'ज़म عَلَيْهِ رَحمَةُ اللّٰهِ الْاَكْرَم की मह़ब्बत और औलियाए किराम की चाहत दिल में बढ़ाने के लिये तब्लीग़े क़ुरआनो सुन्नत की आ़लमगीर ग़ैर सियासी तह़रीक, **दा'वते इस्लामी** के मदनी माह़ोल से हर दम वाबस्ता रहिये और ख़ूब ख़ूब रह़मतें और बरकतें लूटिये। आइये ! आप की तरग़ीब व तह़रीस के लिये एक ईमान अफ़रोज़ ख़ुश गवार **मदनी बहार** आप के गोश गुज़ार करता हूं। चुनान्चे **गुलिस्ताने मुस्त़फ़ा** के एक इस्लामी भाई के बयान का ख़ुलासा है : मैं ने एक ऐसे इस्लामी भाई को तब्लीग़े क़ुरआनो सुन्नत की आ़लमगीर ग़ैर सियासी तह़रीक, **दा'वते इस्लामी** के **बैनल अक़्वामी तीन रोज़ा सुन्नतों भरे इज्तिमाअ़** की दा'वत पेश की जिन की बेटी को **जिगर**

का केन्सर था। वोह दुआए शिफ़ा का जज़्बा लिये सुन्नतों भरे इज्तिमाअ़ में शरीक हो गए। उन का कहना है कि मैं ने इज्तिमाए पाक में ख़ूब दुआ की। اَلْحَمْدُ لِلّٰه عَزَّوَجَلَّ **वापसी के बा'द जब अपनी बेटी का चेकअप करवाया तो डॉक्टर हैरान रह गए क्यूं कि उस के जिगर का केन्सर ख़त्म हो चुका था !** डॉक्टरों की पूरी टीम हैरत ज़दा थी कि आख़िर केन्सर गया कहां ! जब कि हालत इस क़दर ख़राब थी कि इज्तिमाए पाक में जाने से पहले उस लड़की के जिगर से रोज़ाना कम अज़ कम एक सिरिन्ज भर कर मवाद निकाला जाता था। اَلْحَمْدُ لِلّٰه عَزَّوَجَلَّ इज्तिमाए पाक में शिर्कत की बरकत से अब उस लड़की के जिगर में **केन्सर** का नामो निशान तक न रहा था, اَلْحَمْدُ لِلّٰه عَزَّوَجَلَّ ता दमे बयान वोह लड़की अब न सिर्फ़ रू ब सिह्हत है बल्कि उस की शादी भी हो चुकी है।

अगर दर्दे सर हो, कहीं केन्सर हो — दिलाएगा तुम को शिफ़ा मदनी माहोल
शिफ़ाएं मिलेंगी, बलाएं टलेंगी — यक़ीनन है बरकत भरा मदनी माहोल

(वसाइले बख़्शिश, स. 648)

صَلُّوا عَلَى الْحَبِيب ! صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلٰى مُحَمَّد

10 दो ग़ीबत करने वालियों की हिकायत : हज़रते सय्यिदुना अनस رَضِىَ اللهُ تَعَالٰى عَنْهُ से रिवायत है, सुल्ताने दो जहान, रहमते

फ़रमाने मुस्तफ़ा صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰی عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم : मुझ पर कसरत से दुरूदे पाक पढ़ो बेशक तुम्हारा मुझ पर दुरूदे पाक पढ़ना तुम्हारे गुनाहों के लिये मग़्फ़िरत है। (ابن عساکر)

आ़लमिय्यान صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰی عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने सह़ाबए किराम عَلَيْهِمُ الرِّضْوَان को एक दिन **रोज़ा** रखने का हुक्म दिया और इर्शाद फ़रमाया : जब तक मैं इजाज़त न दूं, तुम में से कोई भी इफ़्त़ार न करे। लोगों ने **रोज़ा** रखा। जब शाम हुई तो तमाम सह़ाबए किराम عَلَيْهِمُ الرِّضْوَان एक एक कर के ह़ाज़िरे ख़िदमते बा बरकत हो कर अ़र्ज़ करते रहे : **या रसूलल्लाह** صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰی عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ! मैं रोज़े से रहा, अब मुझे इजाज़त दीजिये ताकि मैं **रोज़ा** खोल दूं। आप صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰی عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم उसे इजाज़त मर्ह़मत फ़रमा देते। एक सह़ाबी رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْه ने ह़ाज़िर हो कर अ़र्ज़ की : आक़ा صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰی عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ! दो औ़रतों ने **रोज़ा** रखा और वोह आप صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰی عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم की ख़िदमते बा बरकत में आने से ह़या मह़सूस करती हैं, उन्हें इजाज़त दीजिये ताकि वोह भी **रोज़ा** खोल लें। **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ के मह़बूब, दानाए ग़ुयूब, मुनज़्ज़हुन अ़निल उ़यूब صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰی عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने उन से रुख़े अन्वर फैर लिया, उन्हों ने फिर अ़र्ज़ की, आप صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰی عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने फिर चेहरए अन्वर फैर लिया। उन्हों ने फिर येही बात दोहराई आप صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰی عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने फिर चेहरए अन्वर फैर लिया वोह फिर येही बात दोहराने लगे आप صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰی عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने फिर रुख़े अन्वर फैर लिया, फिर **ग़ैबदान** रसूल صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰی عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने (ग़ैब की ख़बर देते हुए) इर्शाद फ़रमाया : "उन दोनों ने **रोज़ा** नहीं रखा वोह कैसी रोज़ादार हैं वोह तो सारा दिन लोगों का गोश्त खाती रहीं ! जाओ, उन दोनों को

हुक्म दो कि वोह अगर रोज़ादार हैं तो क़ै कर दें।" वोह सहाबी رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْه उन के पास तशरीफ़ लाए और उन्हें **फ़रमाने शाही** सुनाया। उन दोनों ने क़ै की, तो क़ै से जमा हुवा ख़ून निकला। उन सहाबी رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْه ने आप صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم की ख़िदमते बा बरकत में वापस हाज़िर हो कर सूरते हाल अर्ज़ की। **मदनी आक़ा** صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने इर्शाद फ़रमाया : उस ज़ात की क़सम ! जिस के क़ब्ज़ए क़ुदरत में मेरी जान है, अगर येह उन के पेटों में बाक़ी रहता, तो उन दोनों को **आग** खाती। (क्यूं कि उन्हों ने ग़ीबत की थी)

(ذَمُّ الْغِيبَةِ لِابْنِ اَبِی الدُّنيا ص٧٢ رقم٣١)

प्यारे प्यारे इस्लामी भाइयो ! इस हिकायत से रोज़े रोशन की तरह वाज़ेह हुवा कि **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ की अ़ता से हमारे मीठे मीठे आक़ा, मक्की मदनी मुस्तफ़ा صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم को **इल्मे ग़ैब** हासिल है और आप صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم को अपने ग़ुलामों के तमाम मुआ़मलात मा'लूम हो जाते हैं। जभी तो उन लड़कियों के बारे में मस्जिद शरीफ़ में बैठे बैठे **ग़ैब की ख़बर** इर्शाद फ़रमा दी। बहर हाल **रोज़ा** हो या न हो, **ज़बान** का क़ुफ़्ले मदीना ही भला वरना येह ऐसे गुल खिलाती है कि तौबा !

सरवरे दीं लीजे अपने ना तुवानों की ख़बर

नफ़्सो शैत़ां सय्यिदा ! कब तक दबाते जाएंगे

صَلُّوا عَلَى الْحَبِيب ! صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلٰى مُحَمَّد

(11) मुसल्सल चालीस साल तक रोज़े : हज़रते सय्यिदुना दावूद ताई رَحْمَةُ اللّٰهِ تَعَالٰى عَلَيْه **मुसल्सल चालीस साल तक रोज़े रखते रहे** मगर आप رَحْمَةُ اللّٰهِ تَعَالٰى عَلَيْه के **इख़्लास** का येह आलम था कि अपने घर वालों तक को ख़बर न होने दी। काम पर जाते हुए दो पहर का खाना साथ ले लेते और रास्ते में किसी को दे देते, मग़रिब के बा'द घर आ कर खाना खा लिया करते। (تاریخ بغداد ج٨ص٣٤٥)

صَلُّوا عَلَى الْحَبِيب ! صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلٰى مُحَمَّد

सय्यिदुना दावूद ताई के नफ़्स कुशी के वाक़िआत :

سُبْحَانَ اللّٰه عَزَّوَجَلَّ ! इख़्लास हो तो ऐसा ! हज़रते सय्यिदुना दावूद ताई رَحْمَةُ اللّٰهِ تَعَالٰى عَلَيْه को अपने नफ़्स पर ज़बर दस्त क़ाबू था। "तज़्किरतुल औलिया" में है : एक बार गरमी के मौसिम में **धूप** में बैठे मश्ग़ूले इबादत थे कि आप رَحْمَةُ اللّٰهِ تَعَالٰى عَلَيْه की वालिदए मोहतरमा رَحْمَةُ اللّٰهِ تَعَالٰى عَلَيْهَا ने फ़रमाया : बेटा ! साए में आ जाते तो बेहतर था। आप رَحْمَةُ اللّٰهِ تَعَالٰى عَلَيْه ने जवाब दिया : "अम्मीजान ! मुझे शर्म आती है कि अपने नफ़्स की ख़्वाहिश के लिये कोई क़दम उठाऊं।"

एक बार आप का पानी का घड़ा **धूप** में देख कर किसी ने अ़र्ज़ की : या सय्यिदी ! इस को छाउं में रखा होता तो अच्छा था। फ़रमाया : जब मैं ने रखा तो उस वक़्त यहां छाउं थी लेकिन अब **धूप** में से उठाते

हुए नदामत महसूस हो रही है कि मैं सिर्फ़ अपने नफ़्स की राहत की ख़ातिर घड़ा हटाने में वक़्त सर्फ़ करूं।

एक मर्तबा आप رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰی عَلَيْه **धूप** में कुरआने पाक की तिलावत कर रहे थे। किसी ने साए में आने की दरख़्वास्त की। तो फ़रमाया : "मुझे इत्तिबाए नफ़्स ना पसन्द है।" या'नी नफ़्स भी येही मश्वरा दे रहा है कि छाउं में आ जाओ मगर मैं इस की पैरवी नहीं कर सकता। उसी रात आप رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰی عَلَيْه का विसाल हो गया। आप رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰی عَلَيْه के इन्तिक़ाल के बा'द ग़ैब से आवाज़ सुनी गई : "दावूद ताई (رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰی عَلَيْه) अपनी मुराद को पहुंचा क्यूं कि उस का परवर दगार عَزَّوَجَلَّ उस से ख़ुश है।" (تذکرۃ الاولیاء ج۱ ص۲۰۱-۲۰۲ مُلَخَّصاً) **अल्लाह रब्बुल इ़ज़्ज़त عَزَّوَجَلَّ की उन पर रह़मत हो और उन के सदक़े हमारी बे ह़िसाब मग़फ़िरत हो।** اٰمین بِجاہِ النَّبِیِّ الْاَمین صَلَّی اللّٰہ تعالٰی علیہ واٰلہٖ وسلَّم

अपनी नेकियों का ए'लान : **प्यारे प्यारे इस्लामी भाइयो !** हिकायत नम्बर 11 से उन लोगों को ज़रूर इ़ब्रत ह़ासिल करनी चाहिये जो बिला ज़रूरत **अपनी नेकियों का ए'लान** कर के रियाकारी का ख़त़रा मोल लेते हैं, मसलन कोई कहता है : मैं हर साल **रजब, शा'बान** और **रमज़ान** के रोज़े रखता हूं, कोई बोलता है : मैं इतने साल से हर माह **अय्यामे बीज़** के रोज़े रख रहा हूं, कोई अपने **ह़ज** की

ता'दाद का तो कोई **उम्रे** की गिनती का ए'लान करता है। कोई कहता है : मैं रोज़ाना इतने **दुरूद शरीफ़** पढ़ता हूं, इतने अ़र्से से **दलाइलुल ख़ैरात शरीफ़** का विर्द कर रहा हूं। इतनी तिलावत करता हूं, हर माह फ़ुलां मद्रसे को इतना चन्दा पेश करता हूं। अल ग़रज़ ख़्वाह म ख़्वाह अपने नवाफ़िल, तहज्जुद, नफ़्ली रोज़ों और इ़बादतों का ख़ूब चरचा किया जाता है। ख़ुदा न ख़्वास्ता रियाकारी में जा पड़े तो इस का अ़ज़ाब बरदाश्त नहीं हो सकेगा।

सरकारे मदीना صَلَّى اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने इर्शाद फ़रमाया : "जुब्बुल हुज़्न" से **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ की पनाह त़लब करो ! सह़ाबए किराम عَلَیْہِمُ الرِّضْوَان ने अ़र्ज़ की : **या रसूलल्लाह** صَلَّى اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ! "जुब्बुल हुज़्न" क्या है ? फ़रमाया : "येह जहन्नम में एक वादी है जिस (की सख़्ती) से जहन्नम भी रोज़ाना **चार सो बार** पनाह मांगता है, इस में वोह **क़ारी** दाख़िल होंगे जो अपने आ'माल में **रिया** करते हैं।"

(ابنِ ماجه ج۱ص۱۶۷حدیث۲۵۶)

रियाकारी की ता'रीफ़ : रिया की ता'रीफ़ येह है : "**अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ **की रिज़ा के इ़लावा किसी और इरादे से इ़बादत करना।**" गोया इ़बादत से येह ग़रज़ हो कि लोग उस की इ़बादत पर आगाह हों ताकि वोह उन लोगों से माल बटोरे या लोग उस की **ता'रीफ़** करें या उसे नेक आदमी समझें या उसे **इ़ज़्ज़त** वग़ैरा दें। (اَلزَّواجِر ج۱ ص۷۶)

हिफ़्ज़ की ख़ुशी में तक़रीब : आज कल मदनी मुन्ना या मदनी मुन्नी अगर हिफ़्ज़े कुरआन मुकम्मल कर ले तो उस के लिये शानदार तक़रीब की जाती है, अगर इस से मक़्सूद रियाकारी और दिखावा न हो, अच्छी अच्छी निय्यतों के साथ महूज़ रिज़ाए इलाही के लिये इन्इक़ाद किया जाए तो येह एक निहायत उ़म्दा अ़मल है। हो सके तो अपने हाफ़िज़ मदनी मुन्ने की दीनी तरक़्क़ी के लिये उसे बुज़ुर्गों की बारगाहों में पेश कर के उ़म्र भर कुरआने करीम याद रहने और उस के अह़कामात पर अ़मल करने की दुआएं भी लेनी चाहिएं। اِنْ شَآءَاللّٰه عَزَّوَجَلَّ इस त़रह़ ख़ूब बरकतें मिलेंगी।

हिफ़्ज़ करना आसान है मगर हाफ़िज़ रहना मुश्किल है : मदनी मुन्नों और मदनी मुन्नियों को कुरआने करीम हिफ़्ज़ करवाना बेशक बहुत बड़ा नेक काम है, मगर **येह याद रखिये कि हिफ़्ज़ करना आसान है मगर उ़म्र भर हाफ़िज़ रहना मुश्किल है।** लिहाज़ा जो भी अपनी औलाद को हिफ़्ज़ करवाए उस की ख़िदमत में दर्द भरी मदनी इल्तिजा है कि उ़म्र भर अपनी हाफ़िज़ औलाद पर कड़ी निगरानी भी रखे और ताकीद करे कि हर रोज़ एक मन्ज़िल तिलावत करे अगर येह न हो सके तो रोज़ाना कम अज़ कम एक पारह तो लाज़िमन पढ़े ताकि हिफ़्ज़ बाक़ी रहे। "बुख़ारी शरीफ़" में है, नबियों के सुल्त़ान, रह़मते आ़लमिय्यान,

सरदारे दो जहान, मह़बूबे रह़मान صَلَّى اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم का फ़रमाने बरकत निशान है : "निगाह रखो क़ुरआन को और इसे याद करते रहो, सो क़सम है उस की जिस के क़ब्ज़े में मेरी जान है अलबत्ता क़ुरआन ज़ियादा छूटने पर आमादा है उन ऊंटों से जो अपनी रस्सियों से बंधे हों।" (بُخاری ج ۳ ص ۴۱۲ حدیث ۵۰۳۳)

या'नी जिस त़रह़ बंधे हुए ऊंट छूटना चाहते हैं और अगर उन की मुह़ाफ़ज़त व एह़तियात़ न की जाए तो रिहा हो जाएं इस से ज़ियादा क़ुरआन की कैफ़िय्यत है अगर उसे याद न करते रहोगे तो वोह तुम्हारे सीनों से निकल जाएगा, पस तुम्हें चाहिये कि हर वक़्त इस का ख़याल रखो और याद करते रहो इस दौलते बे निहायत को हाथ से न जाने दो।

(फ़तावा रज़विय्या, जि. 23, स. 644)

क़ुरआन भुला देने का अ़ज़ाब : यक़ीनन हिफ़्ज़े क़ुरआने करीम कारे सवाबे अ़ज़ीम है मगर याद रहे ! हिफ़्ज़ करना आसान मगर उ़म्र भर इस को याद रखना दुश्वार है। हुफ़्फ़ाज़ व ह़ाफ़िज़ात को चाहिये कि रोज़ाना कम अज़ कम एक पारह लाज़िमन तिलावत कर लिया करें। जो हुफ़्फ़ाज़ **रमज़ानुल मुबारक** की आमद से थोड़ा अ़र्सा क़ब्ल फ़क़त़ मुसल्ला सुनाने के लिये मन्ज़िल पक्की करते हैं और इस के इलावा مَعَاذَاللّٰہ عَزَّوَجَلَّ सारा साल ग़फ़्लत के सबब कई आयात भुलाए रहते हैं, वोह बार बार पढ़ें और ख़ौफ़े ख़ुदा عَزَّوَجَلَّ से लरज़ें। **दा'वते इस्लामी** के

इशाअ़ती इदारे **मक्तबतुल मदीना** की मत़्बूआ़ "**बहारे शरीअ़त**" जिल्द अव्वल सफ़्ह़ा 552 पर सदरुश्शरीअ़ह, बदरुत्त़रीक़ह ह़ज़रते अ़ल्लामा मौलाना मुफ़्ती मुह़म्मद अमजद अ़ली आ'ज़मी عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللهِ الْقَوِى फ़रमाते हैं : कुरआन पढ़ कर भुला देना **गुनाह** है। **जो** कुरआनी आयात याद करने के बा'द भुला देगा बरोज़े क़ियामत **अन्धा** उठाया जाएगा।

(बहारे शरीअ़त, जि. 1, स. 553)

3 फ़रामीने मुस्त़फ़ा صَلَّى اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیۡہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم : ﴿1﴾ **मेरी** उम्मत के सवाब मेरे हु़ज़ूर पेश किये गए यहां तक कि मैं ने उन में वोह तिन्का भी पाया जिसे आदमी मस्जिद से निकालता है और मेरी उम्मत के गुनाह मेरे हु़ज़ूर पेश किये गए मैं ने इस से **बड़ा गुनाह** न देखा कि किसी आदमी को कुरआन की एक सूरत या एक आयत याद हो फिर वोह उसे भुला दे। (تِرمذی ج٤ ص٤٢٠ حدیث٢٩٢٥) ﴿2﴾ **जो** शख़्स कुरआन पढ़े फिर उसे भुला दे तो क़ियामत के दिन **अल्लाह तआ़ला** से **कोढ़ी** हो कर मिले। (ابوداوٗد ج٢ ص١٠٧ حدیث١٤٧٤) ﴿3﴾ **क़ियामत** के दिन मेरी उम्मत को जिस **गुनाह** का पूरा बदला दिया जाएगा वोह येह है कि उन में से किसी को कुरआने पाक की कोई सूरत याद थी फिर उस ने उसे भुला दिया।

(جَمْعُ الْجَوامِع ج٣ ص١٤٥ حدیث ٧٨٩٤)

फ़रमाने रज़वी : आ'ला ह़ज़रत इमाम अह़मद रज़ा ख़ान

عَلَيْهِ رَحْمَةُ الرَّحْمٰن फ़रमाते हैं : उस से ज़ियादा नादान कौन है जिसे ख़ुदा ऐसी हिम्मत बख़्शे और वोह उसे अपने हाथ से खो दे अगर क़द्र इस (हिफ़्ज़े क़ुरआने पाक) की जानता और जो सवाब और दरजात इस पर मौऊ़द हैं (या'नी जिन का वा'दा किया गया है) उन से वाक़िफ़ होता तो इसे जान व दिल से ज़ियादा अ़ज़ीज़ (प्यारा) रखता। मज़ीद फ़रमाते हैं : जहां तक हो सके इस के पढ़ाने और हिफ़्ज़ कराने और ख़ुद याद रखने में कोशिश करे ताकि वोह सवाब जो इस पर मौऊ़द (या'नी वा'दा किये गए) हैं हासिल हों और बरोज़े क़ियामत **अन्धा कोढ़ी** उठने से नजात पाए।

(फ़तावा रज़विय्या, जि. 23, स. 645, 647)

नेकी के इज़्हार की कब इजाज़त है ? : तह़दीसे ने'मत (या'नी ने'मत का चरचा करने) की निय्यत से नेक अ़मल का इज़्हार किया जा सकता है, इसी त़रह़ कोई पेश्वा है और वोह अपना अ़मल इस निय्यत से ज़ाहिर करता है कि मा तह़्त अफ़राद को इस से नेक अ़मल की रग़बत मिलेगी तो अब रियाकारी नहीं, मगर हर एक को अपना अ़मल ज़ाहिर करते वक़्त एक सो एक बार अपने दिल की कैफ़िय्यत पर ग़ौर कर लेना चाहिये, क्यूं कि शैत़ान बड़ा मक्कार है, हो सकता है कि इस त़रह़ से उभार कर भी वोह रियाकारी में मुब्तला कर दे, मसलन दिल में वस्वसा डाले कि लोगों से कह दे, ‘‘मैं तो सिर्फ़ तह़दीसे ने'मत के लिये अपना

अ़मल बता रहा हूं।" हालां कि दिल में लड्डू फूट रहे हों कि इस त़रह बताने से लोगों के दिलों में मेरी इ़ज़्ज़त बढ़ जाएगी। येह यक़ीनन रियाकारी है और साथ में तहदीसे ने'मत का कहना रियाकारी दर रियाकारी और साथ ही झूट के गुनाह की तबाहकारी भी है। तफ़्सीली मा'लूमात के लिये **मक्तबतुल मदीना** की मत़्बूआ़ किताब "**रियाकारी**" (166 सफ़हात) का मुत़ालआ़ फ़रमाइये।

या रब्बे मुस्त़फ़ा عَزَّوَجَلَّ **!** हमें **इख़्लास** के साथ इ़बादत और नफ़्ल रोज़ों की कसरत की सआ़दत नसीब फ़रमा और हमें शैत़ान के उन ह़ीले बहानों की पहचान अ़त़ा फ़रमा जिन के ज़रीए़ वोह हमारे आ'माल बरबाद कर दिया करता है। اٰمِين بِجاهِ النَّبِيِّ الْاَمين صَلَّى اللّٰهُ تعالٰی علیه واٰله وسلَّم

अ़त़ा कर दे इख़्लास की मुझ को ने'मत
न नज़्दीक आए रिया या इलाही

(वसाइले बख़्शिश, स. 106)

(12) रोज़ेदारों का मह़ल्ला : ह़ज़रते सय्यिदुना मालिक बिन

दीनार عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللّٰهِ الْغَفَّار ने **चालीस साल** के दौरान कभी **खजूर** नहीं खाई। चालीस बरस बा'द आप को जब **खजूर** खाने की ख़ूब ख़्वाहिश हुई तो नफ़्स कुशी के लिये मुसल्सल आठ दिन रोज़े रखे। फिर खजूरें ख़रीद कर दिन के वक़्त **बसरा** शरीफ़ के एक मह़ल्ले की मस्जिद में

दाख़िल हुए, अभी खाने के लिये खजूरें निकाली ही थीं कि एक बच्चा चिल्ला उठा, **अब्बाजान !** मस्जिद में यहूदी आ गया है ! उस के वालिद साहिब यहूदी का नाम सुन कर हाथ में डन्डा लिये चढ़ दौड़े मगर आते ही आप رَحْمَةُ اللّٰهِ تَعَالٰى عَلَيْه को पहचान लिया और मा'ज़िरत करते हुए अ़र्ज़ की : **हुज़ूर !** बात दर अस्ल येह है कि हमारे **मह़ल्ले** में सारे मुसल्मान **रोज़ा** रखते हैं। यहूदिय्यों के इ़लावा दिन के वक़्त यहां कोई नहीं खाता, इसी लिये बच्चे को आप رَحْمَةُ اللّٰهِ تَعَالٰى عَلَيْه के यहूदी होने का शुबा गुज़रा। बराहे करम ! आप رَحْمَةُ اللّٰهِ تَعَالٰى عَلَيْه उस की ख़त़ा मुआ़फ़ फ़रमा दीजिये। आप رَحْمَةُ اللّٰهِ تَعَالٰى عَلَيْه ने आ़लमे जोश में फ़रमाया : बच्चों की ज़बान "ग़ैबी ज़बान" होती है। फिर क़सम खाई कि अब कभी खजूर खाने का नाम न लूंगा। (تذكرةالاولياء ج ١ ص ٥٢)

गोश्त की ख़ुश्बू से ही गुज़ारा कर लिया : प्यारे प्यारे इस्लामी भाइयो ! देखा आप ने ! हमारे बुज़ुर्गाने दीन رَحِمَهُمُ اللّٰهُ الْمُبِين अपने नफ़्स को किस त़रह़ मारते थे। सय्यिदुना मालिक बिन दीनार عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللّٰهِ الْغَفَّار की नफ़्स कुशी के क्या कहने ! आप رَحْمَةُ اللّٰهِ تَعَالٰى عَلَيْه बरसों तक कोई लज़ीज़ चीज़ नहीं खाते थे। उ़मूमन दिन को रोज़ादार रह कर रूखी रोटी से इफ़्त़ार का मा'मूल था। एक बार नफ़्स की ख़्वाहिश पर **गोश्त** ख़रीदा और ले कर चले, रास्ते में सूंघा और फ़रमाया : "ऐ नफ़्स ! गोश्त की ख़ुश्बू सूंघने में भी तो लुत़्फ़ है ! बस इस से ज़ियादा इस में तेरा हिस्सा नहीं।" येह कह कर वोह **गोश्त** एक फ़क़ीर को दे

दिया। फिर फ़रमाया : **ऐ नफ़्स !** मैं किसी अदावत के बाइस तुझे अज़िय्यत नहीं देता मैं तो सिर्फ़ इस लिये तुझे सब्र का आदी बना रहा हूं कि रिज़ाए इलाही عَزَّوَجَلَّ की ला ज़वाल दौलत नसीब हो जाए। (تذكرة الاولياء ج١ص٥١) येह भी मा'लूम हुवा कि पहले के मुसल्मान नफ़्ल रोज़ों से बहुत महब्बत किया करते थे कि बसरा शरीफ़ के एक पूरे महल्ले का हर मुसल्मान रोज़ ही **रोज़ा** रखा करता !

नादान बच्चों की तरफ़ से नेकी की दा'वत : हज़रते सय्यिदुना मालिक बिन दीनार عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللّٰهِ الْغَفَّار का येह फ़रमाना कि बच्चों की ज़बान "ग़ैबी ज़बान" होती है। निहायत ही पुर मग़्ज़ इर्शाद है। वाक़ेई नादान बच्चों की बातों और हरकतों में बारहा **इब्रत के मदनी फूल** पाए जाते हैं। इत्तिफ़ाक़ से बयान कर्दा हिकायत नम्बर 12 सगे मदीना عُفِيَ عَنْهُ (या'नी राक़िमुल हुरूफ़) ने एक इस्लामी भाई के घर पर 9 शव्वालुल मुकर्रम 1422 सि.हि. को तहरीर करने की सआदत हासिल की। तआम के वक़्त साहिबे ख़ाना का मदनी मुन्ना और मदनी मुन्नी भी खाने में शरीक हो गए। उन दोनों ने खाने के दौरान **हिर्सो तमअ, बे जा लड़ाई, आबरू रेज़ी, बे सब्री, चुग़ली, हसद, हुब्बे जाह, रियाकारी, मुसीबत का बे ज़रूरत तज़्किरा** और **फ़ुज़ूल गोई** वग़ैरा से मुतअ़ल्लिक़ मुझे **ख़ूब दर्स** दिया !! आप शायद सोच में पड़ गए होंगे कि ना समझ बच्चे इतने सारे उन्वानात पर किस तरह **दर्स** दे सकते हैं ! इन दुरूस का राज़ येह है कि वोह इस तरह की हरकतें करने

लगे जिस से मदनी ज़ेह्न रखने वाला इन्सान चाहे तो बहुत कुछ सीख सकता है। मसलन उन्हों ने ज़रूरत से कहीं ज़ियादा खाना अपनी अपनी रिकाबी में निकाला, कुछ खाया, कुछ गिराया और कुछ रिकाबी ही में छोड़ दिया। उन की इस ह़रकत से येह सीखने को मिला कि अपनी रिकाबी में ज़रूरत से ज़ियादा खाना डाल लेना येह **ह़िर्सो त़मअ़** की अ़लामत और नादान बच्चों का काम है, बड़ों को ऐसा नहीं करना चाहिये, गिरा हुवा खाना यूं ही छोड़ देने के बजाए उठा कर खा लेना चाहिये, खा कर बरतन चाट लेना सुन्नत है, बच्चे अगर्चे **सुन्नत** का तर्क कर दें बड़ों को ऐसा नहीं करना चाहिये। मदनी मुन्ने ने ठन्डे मश्रूब की डेढ़ लीटर की बोतल में से अपने लिये पूरा गिलास भर लिया तो इस पर मदनी मुन्नी एह़तिजाज करने लगी यहां तक कि पहले बोतल उठा कर मेरे क़रीब रखी मगर इत़्मीनान न हुवा तो वहां से उठा कर कमरे के बाहर किसी और की तह़्वील में दे आई। इस "जंग" के ज़रीए़ गोया दोनों ने ह़िर्स पर दर्स दिया। चूंकि दोनों में ठन गई थी लिहाज़ा अब एक दूसरे के "उ़यूब" उछालने लगे, गोया यूं समझा रहे थे कि देखो ! हम नादान हैं इस लिये फ़ुज़ूल गोई, आबरू रेज़ी, बे जा लड़ाई और बे सब्री का मुज़ाहरा करते और एक दूसरे के पोल खोलते हैं, अगर दाना कहलाने वाला शख़्स भी ऐसी ह़रकात का इरतिकाब करे तो वोह बे वुक़ूफ़ हुवा या नहीं ? ठीक है हम अपने मुंह मियां मिठ्ठू भी बन रहे हैं, अपनी ही ज़बान से अपने फ़ज़ाइल भी बयान कर रहे हैं, एक दूसरे

की छोटी छोटी बातों को भी उछाल रहे हैं मगर हम तो छोटे हो कर छूट जाएंगे, क्यूं कि हम अभी ना बालिग़ हैं। अगर आप भी हमारी त़रह़ की ग़लत़ियां करते हुए गुनाहों में पड़ेंगे तो हो सकता है कि बरोज़े क़ियामत फ़र्दे जुर्म आ़इद कर के जहन्नम का हुक्म सुना दिया जाए, अगर ऐसा हुवा तो आप को वोह सदमा होगा कि दुन्या में ख़ुद सदमे ने भी कभी ऐसा सदमा न देखा होगा !

मदनी मुन्नी ने मेहंदी वाले हाथ क्यूं दिखाए ? : प्यारे प्यारे इस्लामी भाइयो ! सच्ची बात येह है कि अगर मदनी सोच रखने वाला शख़्स बच्चों की दिन भर की ह़रकतों का जाएज़ा ले तो उन की हर ह़रकत व हर सकनत में से अपने लिये इ़ब्रत के कई **मदनी फूल** ह़ासिल कर सकता है। एक बार शबे ई़दे मीलादुन्नबी صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم एक इस्लामी भाई अपनी नन्ही सी मदनी मुन्नी को उठा कर मेरे पास लाए, वोह अपने मेहंदी से रंगे हुए हाथ दिखा कर मेरी तवज्जोह चाह रही थी, इस से मैं ने येही "मदनी फूल" ह़ासिल किया गोया वोह कहना चाहती है, ह़ाजते शरई के बिग़ैर बिला वासित़ा या बिल वासित़ा (Indirect) अपनी ख़ूबियों का इज़्हार भी **हुब्बे जाह** या'नी अपनी इ़ज़्ज़त और वाह वाह की चाहत की अ़लामत है जो कि हम जैसे नादानों ही का ह़िस्सा है। ज़ाहिर है बच्चियां अपने मेहंदी से रंगे हुए हाथ दिखला कर या बच्चे अपने नए कपड़ों वग़ैरा की त़रफ़ मुतवज्जेह कर के **वाह वाह** और **दादो**

तह्सीन के त़लब गार होते हैं, मगर इस में ज़िम्नन बड़ों के लिये सामाने इब्रत होता है। आज कल लोगों की अक्सरिय्यत **हुब्बे जाह** में मुब्तला नज़र आ रही है, शोहरत से मह़ब्बत और वाह वाह पसन्दी का मरज़ आज कल आ़म है। ह़द तो येह है कि मसाजिद व मदारिस की ता'मीर और दीगर नेक कामों में भी अपनी नेकनामी या'नी शोहरत ही की तलाश रहती है, येह बेह़द मोहलिक मरज़ है मगर अब इस की त़रफ़ लोगों की तवज्जोह ही नहीं। **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ के मह़बूब, दानाए ग़ुयूब, मुनज़्ज़हुन अ़निल उ़यूब صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم का फ़रमाने इब्रत निशान है : "दो भूके भेड़िये जिन्हें बकरियों में छोड़ दिया जाए वोह इतना नुक़्सान नहीं पहुंचाते जितना कि हुब्बे माल व जाह या'नी माल व मर्तबे का लालच इन्सान के दीन को नुक़्सान पहुंचाता है।" (ترمذی ج٤ ص١٦٦ حدیث٢٣٨٣)

मैं नमाज़े जुमुआ़ तक से मह़रूम था : प्यारे प्यारे इस्लामी भाइयो ! हुब्बे जाह व माल दिल से मिटाने की कुढ़न पैदा करने के लिये तब्लीग़े क़ुरआनो सुन्नत की आ़लमगीर ग़ैर सियासी तह़रीक, **दा'वते इस्लामी** के **मदनी माह़ोल** से हर दम वाबस्ता रहिये और दा'वते इस्लामी के **मदनी क़ाफ़िलों** में सफ़र अपना मा'मूल बना लीजिये। **दा'वते इस्लामी** के मदनी माह़ोल की भी क्या ख़ूब मदनी बहारें हैं ! चुनान्चे एक इस्लामी भाई फ़रंगी फ़ेशन में लिथड़ी हुई गुनाहों भरी ज़िन्दगी गुज़ार रहे थे और बुरी सोह़बत के बाइस مَعَاذَ اللّٰه عَزَّوَجَلَّ शराब पीने के भी आ़दी हो चुके थे। ह़ालत यहां तक

पहुंच चुकी थी कि नमाज़े जुमुआ तक न पढ़ते, वोह क़ुरआने करीम के **हाफ़िज़** थे मगर कमो बेश 12 साल से क़ुरआने पाक खोल कर तक नहीं देखा था, जिस के बाइस तक़रीबन क़ुरआने पाक उन्हें भुला दिया गया था। बहर हाल ज़िन्दगी के दिन ग़फ़लत में गुज़र रहे थे कि इतने में नसीब जागे और एक बा इमामा इस्लामी भाई से उन की मुलाक़ात हो गई। उन के हुस्ने अख़्लाक़ और शफ़्क़त भरे अन्दाज़ से वोह बड़े मुतअस्सिर हुए, उन्हों ने उन को तब्लीग़े क़ुरआनो सुन्नत की आलमगीर ग़ैर सियासी तहरीक, **दा'वते इस्लामी के बैनल अक़्वामी तीन रोज़ा सुन्नतों भरे इज्तिमाअ़** की दा'वत पेश की, उन्हों ने मा'ज़िरत करते हुए बताया कि मैं बे रोज़गार हूं, मआशी हालात जाने की इजाज़त नहीं दे रहे। उन्हों ने निहायत ही अपनाइयत के साथ हौसला दिया और उन के टिकट का इन्तिज़ाम कर दिया। اَلْحَمْدُ لِلّٰه عَزَّوَجَلَّ इस तरह उन की सुन्नतों भरे इज्तिमाअ़ में हाज़िरी हो गई। वहां के रूह परवर मन्ज़र और सुन्नतों भरे बयानात और रिक़्क़त अंगेज़ दुआ ने اَلْحَمْدُ لِلّٰه عَزَّوَجَلَّ उन की ज़िन्दगी को यक्सर बदल कर रख दिया। जब वोह इज्तिमाए पाक से लौटे तो उन के क़ल्ब में मदनी इन्क़िलाब बरपा हो चुका था। फिर उन्हों ने **आशिक़ाने रसूल** के हमराह **मदनी क़ाफ़िले** में सफ़र की सआदत हासिल की जिस ने उन के ज़ाहिरी वुजूद को भी सुन्नतों के सांचे में ढाल दिया। اَلْحَمْدُ لِلّٰه عَزَّوَجَلَّ **मदनी माहोल** से वाबस्तगी की बरकतों से उन्हों ने भुलाया हुवा क़ुरआने करीम भी हिफ़्ज़ कर लिया बल्कि सात साल तक इमामत की सआदत भी पाते रहे। اَلْحَمْدُ لِلّٰه عَزَّوَجَلَّ

दा'वते इस्लामी की जानिब से उन्हें "पंजाब मक्की" की मजलिस में एक ज़िम्मेदार की हैसिय्यत से ख़िदमत की सआ़दत भी मिली।

गुनहगारो आओ, सियहकारो आओ *गुनाहों को देगा छुड़ा मदनी माहोल*

पिला कर मए इश्क़ देगा बना येह *तुम्हें आ़शिक़े मुस्तफ़ा मदनी माहोल*

(वसाइले बख़्शिश, स. 648)

صَلُّوا عَلَی الْحَبِیْب ! صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلٰی مُحَمَّد

या रब्बे मुस्तफ़ा عَزَّوَجَلَّ ! हमें दा'वते इस्लामी के मदनी माहोल में इस्तिक़ामत नसीब फ़रमा। **या अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ ! हमें मदनी क़ाफ़िलों में सफ़र का जज़्बा अ़ता फ़रमा। **या अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ ! हमें इख़्लास की ला ज़वाल दौलत से मालामाल कर, हुब्बे जाह व माल और रियाकारी के वबाल से मह़फ़ूज़ फ़रमा। हमें फ़र्ज़ के साथ साथ ख़ूब ख़ूब नफ़्ल रोज़ों की भी सआ़दत बख़्श और इन को क़बूल भी फ़रमा। **या अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ ! हम को और सारी उम्मते मह़बूब صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم को बख़्श दे।

اٰمِین بِجاہِ النَّبِیِّ الْاَمین صَلَّی اللّٰہ تعالٰی علیہ واٰلہٖ وسلَّم

मोटे मोटे सांप

रिवायत में है : क़ियामत के दिन सब से पहले नमाज़ छोड़ने वालों के चेहरे सियाह होंगे और जहन्नम में एक वादी है जिसे **लमलम** कहा जाता है, इस में ऊंट की गरदन की त़रह़ **मोटे मोटे सांप** हैं, हर सांप की लम्बाई एक माह की मसाफ़त के बराबर है। जब येह सांप नमाज़ न पढ़ने वाले को डसेगा तो उस का ज़हर उस के जिस्म में 70 साल तक जोश मारता रहेगा। (اَلزّواجِر ج۱ ص۲۹۶)

मो 'तकिफ़ीन की 40 मदनी बहारें

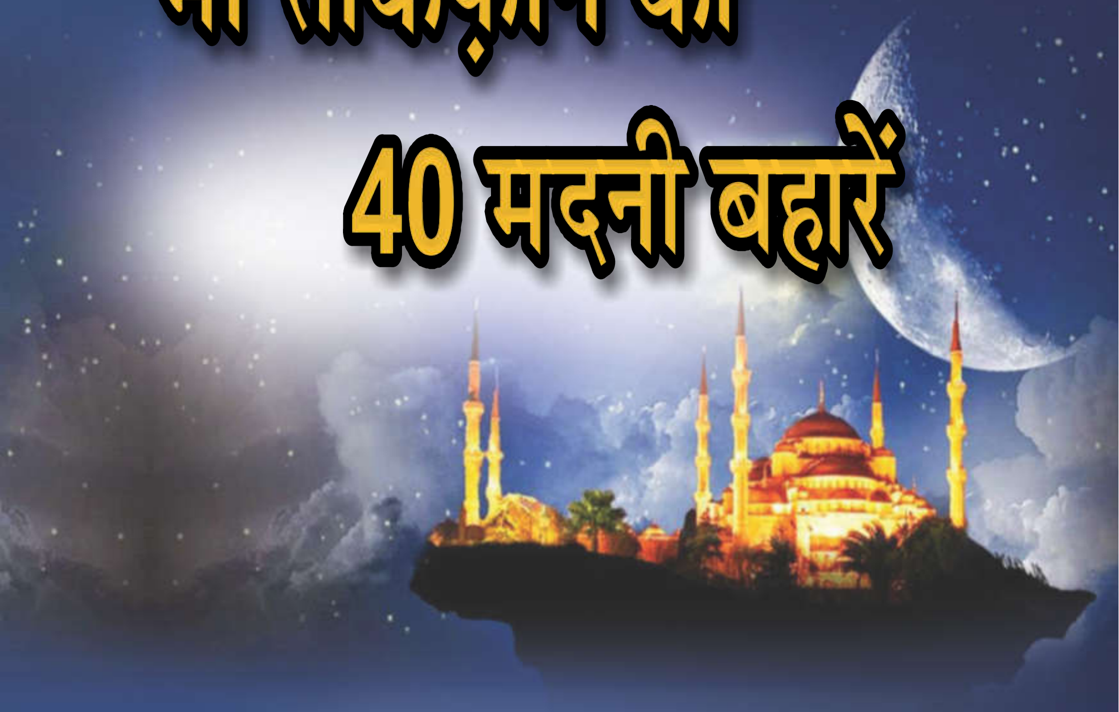

SINGLE AFTER 1430

اَلْحَمْدُ لِلّٰهِ رَبِّ الْعٰلَمِيْنَ وَالصَّلٰوةُ وَالسَّلَامُ عَلٰى سَيِّدِ الْمُرْسَلِيْنَ
اَمَّا بَعْدُ فَاَعُوْذُ بِاللّٰهِ مِنَ الشَّيْطٰنِ الرَّجِيْمِ ط بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ ط

मो'तकिफ़ीन की 40 म-दनी बहारें

तब्लीग़े क़ुरआनो सुन्नत की आ़लमगीर ग़ैर सियासी तह़रीक, **दा'वते इस्लामी** की जानिब से दुन्या के मुख़्तलिफ़ मक़ामात पर होने वाले **इज्तिमाई ए'तिकाफ़** में की जाने वाली **मो'तकिफ़ीन** की तरबियत से हर साल मुआ़शरे के न जाने कितने ही बिगड़े हुए अफ़राद गुनाहों से ताइब हो जाते और उन में बा'ज़ ख़ुश नसीब येह जज़्बा **"मुझे अपनी और सारी दुन्या के लोगों की इस्लाह़ की कोशिश करनी है"** ले कर उठते और फिर अपनी और दूसरों की इस्लाह़ की कोशिशों में मश्ग़ूल हो जाते हैं, इन की **झल्कियां** आयिन्दा सफ़ह़ात पर नज़र आएंगी। इस्लामी भाइयों ने अपने अपने अन्दाज़ में लिखा था, ज़रूरतन तसर्रुफ़ कर के पढ़ने वालों के लिये दिलचस्पी का सामान मुहय्या करने की कोशिश की गई है।

दुरूद शरीफ़ की फ़ज़ीलत : अल्लाह عَزَّوَجَلَّ के मह़बूब, दानाए ग़ुयूब, मुनज़्ज़हुन अ़निल उ़यूब صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم का इर्शादे मुश्कबार

है : जिस ने मुझ पर सो मर्तबा दुरूदे पाक पढ़ा, **अल्लाह तआला** उस की दोनों आंखों के दरमियान लिख देता है कि येह निफ़ाक़ और जहन्नम की आग से आज़ाद है और उसे बरोज़े क़ियामत **शुहदा** के साथ रखेगा।

(مُعجَم اَوسَط ج٥ ص٢٠٢ حديث٧٢٣٥)

صَلُّوا عَلَى الْحَبِيب!　　صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلٰى مُحَمَّد

1 शिकारी ख़ुद शिकार हो गया !

एक इस्लामी भाई ने जिस घराने में आंख खोली उस में जहालत का घुप अंधेरा था, सहाबए किराम عَلَيْهِمُ الرِّضْوَان को مَعَاذَ اللّٰه عَزَّوَجَلَّ बुरा भला कहना कारे सवाब समझा जाता था। वोह भी इस ज़लालत व गुमराही में पूरी तरह फंसे हुए थे, उन की तौबा के अस्बाब यूं हुए कि तब्लीग़े कुरआनो सुन्नत की आलमगीर ग़ैर सियासी तहरीक, **दा'वते इस्लामी** के मदनी मर्कज़ फ़ैज़ाने मदीना में **रमज़ानुल मुबारक** (1426 सि.हि., 2005 सि.ई.) के आख़िरी अशरे के **इज्तिमाई ए'तिकाफ़** की तरकीब थी, उन के महल्ले के चन्द लड़के भी मो'तकिफ़ हो गए थे, उन्हें तंग करने की ग़रज़ से वोह मदनी मर्कज़ फ़ैज़ाने मदीना चले आए, वहां सुन्नतें सिखाने के हल्क़े लगे हुए थे, वोह ताक में बैठ गए कि मौक़अ मिले तो शरारत शुरूअ करूं कि इतने में एक

फ़रमाने मुस्तफ़ा صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰی عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم : जिस के पास मेरा ज़िक्र हो और वोह मुझ पर दुरूद शरीफ़ न पढ़े तो वोह लोगों में से कन्जूस तरीन शख़्स है। (مسند احمد)

आ़शिके़ रसूल ख़ैर ख़्वाह ने बड़े ही प्यारे और दिल नशीन अन्दाज़ में उन्हें ह़ल्के़ में बैठने के लिये कहा, उस की नरमी और आ़जिज़ी के बाइ़स वोह इन्कार न कर सके और ह़ल्के़ में बैठ गए और मुबल्लिग़े दा'वते इस्लामी का बयान ध्यान से सुनने लगे। मुबल्लिग़ के बयान में अ़जीब कशिश थी, वोह आहिस्ता आहिस्ता बयान के मदनी फूलों के सेह़र में गिरिफ़्तार होते चले गए। आ़शिक़ाने रसूल ने उन्हें बक़िय्या दिनों के **ए'तिकाफ़** की दा'वत दी, उन्हों ने हामी भर ली और **ए'तिकाफ़** की बहारें समेटने में मश्ग़ूल हो गए। वोह तो शिकार करने चले थे मगर "लो आप अपने दाम (या'नी जाल) में सय्याद (शिकारी) आ गया" के मिस्दाक़ **ख़ुद ही शिकार हो कर रह गए**। उन के लिये **ए'तिकाफ़** में सभी कुछ नया था। दौराने **ए'तिकाफ़** उन्हें अपनी गुमराही का पता चला। اَلْحَمْدُ لِلّٰه عَزَّوَجَلَّ उन्हों ने बाति़ल अ़क़ाइद से तौबा की, कलिमए त़य्यिबा पढ़ा और दा'वते इस्लामी के **सफ़ीनए अहले सुन्नत** में सुवार हो कर जानिबे मदीना रवां दवां हो गए। उन्हों ने अपना चेहरा मदनी निशानी या'नी दाढ़ी मुबारक से और सर सब्ज़ इमामा शरीफ़ से सर सब्ज़ो शादाब कर लिया है। **63 दिन का मदनी तरबियती कोर्स** कर के दा'वते इस्लामी की तन्ज़ीमी तरकीब के मुत़ाबिक़ ह़ल्क़ा ज़िम्मेदारी पर फ़ाइज़ हुए और اَلْحَمْدُ لِلّٰه عَزَّوَجَلَّ अपनी इस्लाह़ के साथ साथ दूसरों की

इस्लाह़ की भी कोशिश करने वाले बन गए। **अल्लाहु रब्बुल इ़ज़्ज़त** عَزَّوَجَلَّ उन्हें और हमें मदनी माह़ोल में इस्तिक़ामत इनायत फ़रमाए और भटके हुवों को ह़क़्क़ो सदाक़त की राह दिखाए।

اٰمِين بِجَاهِ النَّبِيِّ الْاَمِين صَلَّى اللّٰه تعالیٰ علیہ واٰلہٖ وسلَّم

ख़त्म होगी शरारत की आ़दत चलो, मदनी माह़ोल में कर लो तुम ए'तिकाफ़
दूर होगी गुनाहों की शामत चलो, मदनी माह़ोल में कर लो तुम ए'तिकाफ़

(वसाइले बख़्शिश, स. 640)

صَلُّوْا عَلَی الْحَبِیْب! صَلَّی اللّٰهُ تَعَالٰی عَلٰی مُحَمَّد

(2) मैं ने कई बार ख़ुदकुशी की कोशिश की थी

एक इस्लामी भाई वालिदैन के مَعَاذَ اللّٰه عَزَّوَجَلَّ इन्तिहाई दरजा गुस्ताख़ थे, क्रिकेट और बिलयर्ड खेलने में दिन बरबाद करते और रात विडियो सेन्टर की ज़ीनत बनते। **माहे रमज़ानुल मुबारक** में मां बाप से उन्हों ने बहुत ज़ियादा लड़ाई की यहां तक कि घर में तोड़ फोड़ मचा दी! अपनी गुनाहों भरी ज़िन्दगी से ख़ुद भी बेज़ार थे, ग़ज़ब के जज़्बाती थे इसी लिये مَعَاذَ اللّٰه عَزَّوَجَلَّ **कई बार ख़ुदकुशी की भी सई** (या'नी कोशिश) **की** मगर اَلْحَمْدُ لِلّٰه عَزَّوَجَلَّ नाकामी हुई। **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ के करम से उन को **रमज़ानुल मुबारक** के आख़िरी अ़शरे में **ए'तिकाफ़** का

शौक़ पैदा हुवा, अपने घर की क़रीबी मस्जिद ही में ए'तिकाफ़ का इरादा था कि एक इस्लामी भाई से मुलाक़ात हो गई, उन की **इन्फ़िरादी कोशिश** के नतीजे में तब्लीग़े क़ुरआनो सुन्नत की आ़लमगीर ग़ैर सियासी तह़रीक, **दा'वते इस्लामी** के आ़लमी मदनी मर्कज़ **फ़ैज़ाने मदीना** में होने वाले इज्तिमाई ए'तिकाफ़ में आ़शिक़ाने रसूल के साथ मो'तकिफ़ हो गए। اَلْحَمْدُ لِلّٰه عَزَّوَجَلَّ **इज्तिमाई ए'तिकाफ़** की बरकतों के क्या कहने ! क्लीन शेव और पेन्ट शर्ट में कसे कसाए थे, मगर **तरबियती ह़ल्क़ों**, सुन्नतों भरे बयानात और **आ़शिक़ाने रसूल** की सोह़बतों ने वोह मदनी रंग चढ़ाया कि हाथों हाथ दाढ़ी बढ़ानी शुरूअ़ कर दी, **इमामा शरीफ़** का ताज सर पर सजा लिया और चांदरात को ख़ूब रो रो कर गुनाहों से तौबा करने के बा'द घर जाने के बजाए हाथों हाथ सुन्नतों की तरबियत के तीन दिन के **मदनी क़ाफ़िले** में **आ़शिक़ाने रसूल** के साथ सफ़र पर रवाना हो गए। उन का कहना है : **ख़ुदा की क़सम !** येह मेरी ज़िन्दगी की सब से पहली ईद थी जो बहुत अच्छी गुज़री। वापसी पर घर आ कर अम्मीजान के क़दमों से लिपट गए और इस क़दर रोए कि हिचकियां बंध गईं और बेहोश हो गए। कमो बेश आधे घन्टे के बा'द जब होश आया तो सारे घर वाले उन्हें घेरे हुए थे और तस्वीरे ह़ैरत बने एक दूसरे का मुंह तक रहे थे कि इसे क्या हो गया है ! اَلْحَمْدُ لِلّٰه عَزَّوَجَلَّ घर में बहुत अच्छी

फ़रमाने मुस्तफ़ा صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم : जिस ने मुझ पर रोज़े जुमुआ दो सो बार दुरूदे पाक पढ़ा उस के दो सो साल के गुनाह मुआफ़ होंगे। (جمع الجوامع)

तरकीब बन गई। उन्हें तन्ज़ीमी तौर पर अ़लाक़ाई मुशावरत का निगरान बनने और आ़लमी मदनी मर्कज़ फ़ैज़ाने मदीना में 63 रोज़ा **तरबियती कोर्स** करने की सआ़दत भी ह़ासिल हुई। मज़ीद 126 दिन के "इमामत कोर्स" का सिलसिला भी शुरूअ़ किया। **अल्लाहु रब्बुल इ़ज़्ज़त** उन्हें और हमें इस्तिक़ामत इनायत फ़रमाए।

बिगड़े अख़्लाक़ सारे संवर जाएंगे, मदनी माह़ोल में कर लो तुम ए'तिकाफ़
बस मज़ा क्या मज़े को मज़े आएंगे, मदनी माह़ोल में कर लो तुम ए'तिकाफ़

(वसाइले बख़्शिश, स. 640, 641)

صَلُّوا عَلَى الْحَبِيب ! صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلٰى مُحَمَّد

(3) मैं ने ईद के इलावा कभी नमाज़ ही नहीं पढ़ी थी !

एक इस्लामी भाई ने दा'वते इस्लामी के मदनी माह़ोल से मुन्सलिक होने से पहले कई "गर्ल फ्रेन्ड्ज़" बना रखी थीं, गन्दी ज़ेहनिय्यत का आ़लम येह था कि रोज़ाना ही गन्दी फ़िल्में देखा करते, ह़ैरत बालाए ह़ैरत येह है कि उन्हों ने **ज़िन्दगी में ईद के इलावा कभी नमाज़ ही नहीं पढ़ी थी** और उन्हें बिल्कुल भी मा'लूम नहीं था कि नमाज़ किस त़रह़ पढ़ी जाती है !!! उन की क़िस्मत का सितारा चमका और उन्हें तब्लीग़े क़ुरआनो सुन्नत की आ़लमगीर ग़ैर सियासी तह़रीक, **दा'वते इस्लामी** के आ़लमी मदनी मर्कज़ **फ़ैज़ाने मदीना** में **रमज़ानुल मुबारक**

के आख़िरी अ़शरे का **इज्तिमाई ए'तिकाफ़** नसीब हो गया, फ़ैज़ाने मदीना के मदनी माहोल की भी क्या बात है ! उन की आंखें खुल गईं, ग़फ़्लत का पर्दा चाक हुवा और नेकियों का जज़्बा मिला। اَلْحَمْدُ لِلّٰه عَزَّوَجَلَّ उन्हों ने नमाज़ सीख ली और पांचों वक़्त बा जमाअ़त नमाज़ के पाबन्द हो गए। उन्हों ने दो मसाजिद में **फ़ैज़ाने सुन्नत** का दर्स शुरूअ़ कर दिया। اَلْحَمْدُ لِلّٰه عَزَّوَجَلَّ इस्लामी भाइयों ने उन्हें एक मस्जिद की मुशावरत का ज़ैली निगरान बना दिया और उन पर करम बालाए करम येह हुवा कि ख़्वाब में **जनाबे रिसालत मआब** صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم **का दीदार हो गया।**

जिसे चाहा जल्वा दिखा दिया, उसे जामे इ़श्क़ पिला दिया
जिसे चाहा नेक बना दिया, येह मेरे ह़बीब की बात है
जिसे चाहा दर पे बुला लिया, जिसे चाहा अपना बना लिया
येह बड़े करम के हैं फ़ैसले, येह बड़े नसीब की बात है

صَلُّوْا عَلَى الْحَبِيْب ! صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلٰى مُحَمَّد

(4) ए'तिकाफ़ की ब-र-कत से सारा ख़ानदान मुसल्मान हो गया

कल्यान (महाराष्ट्र, अल हिन्द) की **मेमन मस्जिद** में तब्लीग़े क़ुरआनो सुन्नत की आ़लमगीर ग़ैर सियासी तह़रीक, **दा'वते इस्लामी**

फ़रमाने मुस्तफ़ा صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم : मुझ पर कसरत से दुरूदे पाक पढ़ो बेशक तुम्हारा मुझ पर दुरूदे पाक पढ़ना तुम्हारे गुनाहों के लिये मग़्फ़िरत है। (ابن عساکر)

की जानिब से **रमज़ानुल मुबारक** (1426 सि.हि., 2005 सि.ई.) में होने वाले **इज्तिमाई ए'तिकाफ़** में एक नौ मुस्लिम ने (जो कि कुछ अ़र्सा क़ब्ल एक मुबल्लिग़े दा'वते इस्लामी के हाथों मुसल्मान हुए थे) ए'तिकाफ़ की सआ़दत हासिल की। सुन्नतों भरे बयानात, केसिट इज्तिमाआ़त और सुन्नतों भरे ह़ल्क़ों ने उन पर ख़ूब मदनी रंग चढ़ाया, ए'तिकाफ़ की बरकत से दीन की तब्लीग़ के अ़ज़ीम जज़्बे का रोशन चराग़ उन के हाथों में आ गया चूंकि उन के घर के दीगर अफ़राद अभी तक कुफ़्र की अंधेरी वादियों में भटक रहे थे लिहाज़ा ए'तिकाफ़ से फ़ारिग़ होते ही उन्हों ने अपने घर वालों पर कोशिश शुरूअ़ कर दी, दा'वते इस्लामी के मुबल्लिग़ीन को अपने घर बुलवा कर **दा'वते इस्लाम** पेश करवाई। **اَلْحَمْدُ لِلّٰه عَزَّوَجَلَّ वालिदैन, दो बहनों और एक भाई पर मुश्तमिल सारा ख़ानदान मुसल्मान हो गया और सिल्सिलए आ़लिय्या क़ादिरिय्या रज़विय्या में दाख़िल हो कर हुज़ूरे ग़ौसे पाक رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰى عَلَيْه का मुरीद बन गया।**

वल्वला दीं की तब्लीग़ का पाओगे, मदनी माह़ोल में कर लो तुम ए'तिकाफ़
फ़ज़्ले रब से ज़माने पे छा जाओगे, मदनी माह़ोल में कर लो तुम ए'तिकाफ़

(वसाइले बख़्शिश, स. 641)

صَلُّوْا عَلَى الْحَبِيْب ! صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلٰى مُحَمَّد

5 मैं पक्का दुन्यादार था

एक इस्लामी भाई पर दुन्या का धन कमाने ही की धुन सुवार रहती थी, अ़मली दुन्या से कोसों दूर गुनाहों की अंधेरी वादियों में भटक रहे थे। اَلْحَمْدُ لِلّٰه عَزَّوَجَلَّ बा'ज़ **आ़शिक़ाने रसूल** की उन पर शफ़्क़त भरी नज़र पड़ गई, वोह **रमज़ानुल मुबारक** में बार बार उन के पास तशरीफ़ ले जाते और उन्हें **इज्तिमाई ए'तिकाफ़** की दा'वत देते मगर वोह टाल दिया करते। مَاشَاءَاللّٰه वोह **आ़शिक़ाने रसूल** बहुत बुलन्द हौसला थे, गोया मायूस होना जानते ही न थे, चुनान्चे उन्हों ने मज़्कूरा इस्लामी भाई को उन के हाल पर छोड़ना गवारा न किया और वक़्तन फ़ वक़्तन **नेकी की दा'वत** दे कर अपना सवाब खरा करते रहे! उन की **इन्फ़िरादी कोशिश** बिल आख़िर रंग लाई और उस पक्के दुन्यादार का दिल भी पसीज ही गया और वोह आख़िरी अ़शरए **रमज़ानुल मुबारक** (ग़ालिबन 1410 सि.हि., 1990 सि.ई.) में उन के साथ मो'तकिफ़ हो गए। ए'तिकाफ़ में उन को मह़सूस हुवा कि आ़शिक़ों की दुन्या ही कोई और होती है! **आ़शिक़ाने रसूल** की सोह़बत ने उन पर मदनी रंग चढ़ा दिया, اَلْحَمْدُ لِلّٰه عَزَّوَجَلَّ वोह **नमाज़ी** बन गए, **दाढ़ी** रख ली और **इमामा शरीफ़** का ताज सजा लिया।

वहां उन्हें येह मस्अला भी सीखने को मिला कि क़िब्ले की त़रफ़ रुख़ या पीठ किये पेशाब वग़ैरा करना **ह़राम** है। सूए इत्तिफ़ाक़ से ए'तिकाफ़ वाली मस्जिद के **इस्तिन्जा ख़ानों** का रुख़ ग़लत़ था। उन्हों ने रिज़ाए इलाही عَزَّوَجَلَّ की ख़ातिर हाथों हाथ कारीगरों को बुलवा कर अपनी जेब से अख़राजात पेश कर के इस्तिन्जा ख़ानों के रुख़ दुरुस्त करवा लिये। اَلْحَمْدُ لِلّٰہ عَزَّوَجَلَّ ए'तिकाफ़ के बा'द से अब तक उन्हें कई बार **आशिक़ाने रसूल** के हमराह सुन्नतें सीखने सिखाने के मदनी क़ाफ़िलों में सुन्नतों भरे सफ़र की सआ़दतें मिल चुकी हैं।

हुब्बे दुन्या से दिल पाक हो जाएगा, मदनी माह़ोल में कर लो तुम ए'तिकाफ़
जामे इ़श्क़े मुह़म्मद भी हाथ आएगा, मदनी माह़ोल में कर लो तुम ए'तिकाफ़

(वसाइले बख़्शिश, स. 641)

صَلُّوا عَلَی الْحَبِیْب! صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلٰی مُحَمَّد

(6) मुझे भी अपने जैसा बना लीजिये

एक इस्लामी भाई जब दसवीं क्लास के स्टूडन्ट थे, उन्हों ने अपने मह़ल्ले की बिलाल मस्जिद में **रमज़ानुल मुबारक** (1421 सि.हि., 2000 सि.ई.) के आख़िरी अ़शरे का ए'तिकाफ़ किया। वहां 14, 15 अफ़राद मो'तकिफ़ थे, ग़ालिबन 28 **रमज़ानुल मुबारक**

को बा'दे नमाज़े ज़ोहर उन के बचपन के एक क्लास फ़ेलो (जो बेचारे शराफ़त की वज्ह से उन की शरारत का निशाना बना करते थे) तशरीफ़ लाए, उन्हों ने अपने सर पर सब्ज़ इमामा शरीफ़ सजाया हुवा था, सलाम दुआ के बा'द उन्हों ने मो'तकिफ़ीन पर **इन्फ़िरादी कोशिश** करते हुए पूछा : आप में से बराहे मेहरबानी कोई **नमाज़े ईद** का त़रीक़ा सुना दे। सब एक दूसरे का मुंह देखने लगे ! इस पर उन्हों ने कहा : अच्छा चलिये **नमाज़े जनाज़ा** का त़रीक़ा ही बता दीजिये। येह भी उन में से कोई भी न बता सका। फिर मुबल्लिग़े दा'वते इस्लामी ने उन्हें **नमाज़** की मश्क़ (Practical) करवाई। इस से उन की बहुत सारी ग़लतियां उन के सामने आईं। इस के बा'द निहायत अह्सन अन्दाज़ में मुबल्लिग़े दा'वते इस्लामी ने उन्हें **नमाज़े ईद** और **नमाज़े जनाज़ा** का त़रीक़ा सिखाया। जिस से उन का दिल बहुत ख़ुश हुवा। उस इस्लामी भाई का कहना है : "सच पूछो तो हमारे लिये हासिले ए'तिकाफ़ येही था कि हमें मुबल्लिग़े दा'वते इस्लामी की बरकत से मुख़्तलिफ़ नमाज़ों के अहम अह्कामात सीखना नसीब हुए।" **ईद की नमाज़** में उन्हें मस्जिद की छत पर जगह मिली, जब इमाम साहिब ने दूसरी तक्बीर कही तो उस इस्लामी भाई के इलावा तक़रीबन सभी रुकूअ़ में चले गए ! हालां कि येह रुकूअ़ का मौक़अ़

नहीं था बल्कि इस में हाथ कानों तक उठा कर लटकाने थे। ख़ैर, वरना वोह भी अ़वाम के साथ रुकूअ़ ही में होते मगर मुबल्लिग़े दा'वते इस्लामी ने ए'तिकाफ़ में **नमाज़े ईद** का त़रीक़ा सिखा दिया था। इस मौक़अ़ पर उन का दिल चोट खा गया और दा'वते इस्लामी की अहम्मिय्यत उन पर ख़ूब वाज़ेह़ हो गई। उन्हों ने उस मुबल्लिग़े दा'वते इस्लामी से ईद की मुलाक़ात पर अ़र्ज़ किया : **मुझे भी अपने जैसा बना लीजिये।** इस पर मुबल्लिग़े दा'वते इस्लामी ने उन की ख़ूब ह़ौसला अफ़्ज़ाई फ़रमाई। اَلْحَمْدُ لِلّٰه मुबल्लिग़े दा'वते इस्लामी की **इन्फ़िरादी कोशिश** की बरकत से वोह बिल आख़िर तब्लीग़े क़ुरआनो सुन्नत की आ़लमगीर ग़ैर सियासी तह़रीक, **दा'वते इस्लामी** के **मदनी माहोल** में आ गए और दा'वते इस्लामी के मदनी कामों के लिह़ाज़ से तन्ज़ीमी त़ौर पर **शो'बए ता'लीम के अ़लाक़ाई ज़िम्मेदार** भी बने।

हां जनाज़ा व ईद इस को सीखें मज़ीद,
आएं मस्जिद चलें कीजिये ए'तिकाफ़
ख़ूब नेकी का जज़्बा मिलेगा जनाब !
आप हिम्मत करें कीजिये ए'तिकाफ़

صَلُّوا عَلَى الْحَبِيب ! صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلٰى مُحَمَّد

(7) मेरी आंखों में आंसू आ गए !

एक इस्लामी भाई ने **रमज़ानुल मुबारक** (ग़ालिबन 1425 सि.हि., 2004 सि.ई.) के आख़िरी अ़शरे में तब्लीग़े क़ुरआनो सुन्नत की

आ़लमगीर ग़ैर सियासी तह़रीक, **दा'वते इस्लामी** के आ़लमी मदनी मर्कज़ **फ़ैज़ाने मदीना** में **इज्तिमाई ए'तिकाफ़** की बरकतें लूटने की सआ़दत ह़ासिल की और बुराइयों से तौबा की उन्हें सुन्नत के मुत़ाबिक़ खाना तक नहीं आता था, **ए'तिकाफ़** में दीगर सुन्नतों के इ़लावा खाने पीने की सुन्नतें भी सिखाई गईं। बिल ख़ुसूस एक मुबल्लिग़ को सादगी के साथ सुन्नत के मुत़ाबिक़ खाना तनावुल करता देख कर **उन की आंखों में बे इख़्तियार आंसू आ गए !** और उन्हों ने भी सुन्नत के मुत़ाबिक़ खाना खाने की आ़दत अपना ली, यूं वोह दा'वते इस्लामी के **मदनी माह़ोल** से वाबस्ता हो गए।

सुन्नतें खाना खाने की तुम जान लो, मदनी माह़ोल में कर लो तुम ए'तिकाफ़
मान लो बात अब तो मेरी मान लो, मदनी माह़ोल में कर लो तुम ए'तिकाफ़

(वसाइले बख़्शिश, स. 641)

صَلُّوْا عَلَی الْحَبِیْب ! صَلَّی اللّٰهُ تَعَالٰی عَلٰی مُحَمَّد

(8) आ़शिक़ाने रसूल की शफ़्क़तों ने लाज रख ली

इन्दोर शहर (M.P. अल हिन्द) के एक फ़ेशन एबल नौ जवान आवारा और मॉडर्न दोस्तों की सोह़बत में रह कर गुनाहों भरी ज़िन्दगी गुज़ार रहे थे। **रमज़ानुल मुबारक** (1425 सि.हि., 2004 सि.ई.) के आख़िरी अ़शरे में **आ़शिक़ाने रसूल** के साथ **इज्तिमाई ए'तिकाफ़**

में बैठ गए। **आ़शिक़ाने रसूल** की **शफ़्क़तों ने लाज रख ली,** गुनाहों से **तौबा** की सआ़दत मिल गई, चेहरे पर **दाढ़ी** जगमगाने और सर पर **इमामा शरीफ़** की बहारें मुस्कुराने लगीं, सुन्नतों की ख़िदमत का ख़ूब जज़्बा मिला ह़त्ता कि **मुबल्लिग़** बन गए। येह लिखते वक़्त **अ़लाक़ाई मुशावरत के निगरान** की हैसिय्यत से सुन्नतों की बरकतें लूट और लुटा रहे हैं।

लेने ख़ैरात तुम रह़मतों की चलो, मदनी माह़ोल में कर लो तुम ए'तिकाफ़
लूटने बरकतें सुन्नतों की चलो, मदनी माह़ोल में कर लो तुम ए'तिकाफ़

(वसाइले बख़्शिश, स. 641)

صَلُّوْا عَلَى الْحَبِيْب! صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلٰى مُحَمَّد

(9) ग़ैर इस्लामी नज़रिय्यात रखने वालों की तौबा

एक अ़लाक़े में तब्लीग़े क़ुरआनो सुन्नत की आ़लमगीर ग़ैर सियासी तह़रीक, **दा'वते इस्लामी** का मदनी पैग़ाम पहुंच चुका था, मगर उन दिनों **मदनी काम** वहां बहुत कम था। **रमज़ानुल मुबारक** (1410 सि.हि., 1990 सि.ई.) में उस अ़लाक़े के अन्दर ख़ूब **इन्फ़िरादी कोशिश** कर के ज़िम्मादार इस्लामी भाइयों ने वहां के इस्लामी भाइयों को **इज्तिमाई ए'तिकाफ़** के लिये **क़रीबी शहर** आने की दा'वत दी, जिस की बरकत से उस अ़लाक़े के कसीर इस्लामी भाइयों ने **मुनव्वरह**

मस्जिद, स्टेशन रोड में ए'तिकाफ़ की सआदत हासिल की। इस से पहले उस अलाक़े में कोई इस्लामी भाई **फ़ैज़ाने सुन्नत** का दर्स देने वाला भी न था ! اَلْحَمْدُ لِلّٰه عَزَّوَجَلَّ इस इज्तिमाई ए'तिकाफ़ में **आ़शिक़ाने रसूल** की सोहबत की बरकत से 17 इस्लामी भाई मुअ़ल्लिम व मुबल्लिग़ बने, चेहरों को दाढ़ी शरीफ़ से और सरों को सब्ज़ इमामा शरीफ़ से सजाया। दा'वते इस्लामी के **मदनी कामों** के ज़िम्मेदार बने। बा'ज़ ऐसे लोग भी किसी त़रह़ से खिंच कर आ गए थे जो ग़ैर मुस्लिमों के कुछ ग़ैर इस्लामी नज़रिय्यात को दुरुस्त मानते थे, اَلْحَمْدُ لِلّٰه عَزَّوَجَلَّ उन्हों ने अपने कुफ़्रिय्या नज़रिय्यात से तौबा की, कलिमा शरीफ़ पढ़ कर मुसल्मान हुए और बक़िय्या ज़िन्दगी तब्लीग़े क़ुरआनो सुन्नत की आ़लमगीर ग़ैर सियासी तह़रीक, **दा'वते इस्लामी** के मदनी माहोल में गुज़ारने की निय्यत की। اَلْحَمْدُ لِلّٰه عَزَّوَجَلَّ इस वक़्त उस शहर के इस्लामी भाई जो कि **रमज़ानुल मुबारक** (1410 सि.हि.) में **इज्तिमाई ए'तिकाफ़** की बरकतों से मालामाल हुए थे वोह और ला दीनिय्यत से तौबा करने वाले अब बेहतरीन मुबल्लिग़ बन चुके हैं ह़त्ता कि बड़े बड़े इज्तिमाआ़त में भी सुन्नतों भरे बयानात फ़रमाते हैं और मुख़्तलिफ़ सूबाई मजालिस के अहम ज़िम्मादार बन कर अपनी और सारी दुन्या के लोगों की इस्लाह़ की

फ़रमाने मुस्तफ़ा صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم : मुझ पर दुरूद पढ़ कर अपनी मजालिस को आरास्ता करो कि तुम्हारा दुरूद पढ़ना बरोज़े क़ियामत तुम्हारे लिये नूर होगा। (فردوس الاخبار)

कोशिश कर रहे हैं। **अल्लाह तआला** हमें और उन्हें दा'वते इस्लामी के **मदनी माहोल** में इस्तिक़ामत अ़ता फ़रमाए।

اٰمِین بِجاہِ النَّبِیِّ الْاَمین صَلَّی اللہ تعالٰی علیہ واٰلہٖ وسلَّم

प्यारे इस्लामी भाई चले आओ तुम, मदनी माह़ोल में कर लो तुम ए'तिकाफ़
ख़ाली दामन मुरादों से भर जाओ तुम, मदनी माह़ोल में कर लो तुम ए'तिकाफ़

(वसाइले बख़्शिश, स. 641)

صَلُّوا عَلَی الْحَبِیْب ! صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلٰی مُحَمَّد

(10) अब गरदन तो कट सकती है मगर.....

एक इस्लामी भाई ने **इन्फ़िरादी कोशिश** कर के अपने बे नमाज़ी और क्लीन शेव 26 सालह छोटे भाई को तब्लीग़े क़ुरआनो सुन्नत की आ़लमगीर ग़ैर सियासी तह़रीक, **दा'वते इस्लामी** के आ़लमी मदनी मर्कज़ **फ़ैज़ाने मदीना** में आख़िरी अ़शरए **रमज़ानुल मुबारक** (1421 सि.हि., 2000 सि.ई.) के **इज्तिमाई ए'तिकाफ़** में बिठा दिया। बे नमाज़ी और सुन्नतों से कोसों दूर रहने वाले उन के भाई पर ए'तिकाफ़ में **आ़शिक़ाने रसूल** की सोह़बते बा बरकत से वोह मदनी रंग चढ़ा कि اَلْحَمْدُ لِلّٰہ عَزَّوَجَلَّ वोह पन्ज वक़्ता नमाज़ी बन गए और दाढ़ी मुबारक सजा ली और उन का यहां तक मदनी ज़ेह्न बन गया कि **अब गरदन तो कट सकती है मगर** दाढ़ी नहीं कट सकती।

फ़रमाने मुस्तफ़ा صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم : शबे जुमुआ और रोज़े जुमुआ मुझ पर कसरत से दुरूद पढ़ो क्यूं कि तुम्हारा दुरूद मुझ पर पेश किया जाता है। (طبرانی)

मीठे आक़ा की उल्फ़त का जज़्बा मिले, मदनी माहोल में कर लो तुम ए'तिकाफ़
दाढ़ी रखने की सुन्नत का जज़्बा मिले, मदनी माहोल में कर लो तुम ए'तिकाफ़

(वसाइले बख़्शिश, स. 641)

صَلُّوا عَلَى الْحَبِيب! صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلٰى مُحَمَّد

(11) मिरगी का मरज़ दूर हो गया

बम्बई की तहसील कुर्ला (अल हिन्द) में तब्लीग़े क़ुरआनो सुन्नत की आलमगीर ग़ैर सियासी तहरीक, **दा'वते इस्लामी** की जानिब से **रमज़ानुल मुबारक** (1426 सि.हि., 2005 सि.ई.) में होने वाले **इज्तिमाई ए'तिकाफ़** में एक ऐसे इस्लामी भाई भी मो'तकिफ़ हो गए जिन को हर दूसरे दिन **मिरगी** का दौरा पड़ता था। اَلْحَمْدُ لِلّٰه عَزَّوَجَلَّ ए'तिकाफ़ के दौरान उन्हें एक बार भी दौरा न पड़ा बल्कि اَلْحَمْدُ لِلّٰه عَزَّوَجَلَّ ता दमे तहरीर आज तक फिर उन्हें **मिरगी** की तक्लीफ़ नहीं हुई।

اِنْ شَآءَاللّٰه हर काम होगा भला, मदनी माहोल में कर लो तुम ए'तिकाफ़
दूर होगी ब फ़ज़्ले ख़ुदा हर बला, मदनी माहोल में कर लो तुम ए'तिकाफ़

(वसाइले बख़्शिश, स. 641, 642)

صَلُّوا عَلَى الْحَبِيب! صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلٰى مُحَمَّد

प्यारे प्यारे इस्लामी भाइयो ! देखा आप ने ! **आशिक़ाने रसूल** के साथ **ए'तिकाफ़** करने की बरकत से اَلْحَمْدُ لِلّٰه عَزَّوَجَلَّ आफ़तें और

बलाएं दूर होती हैं। اَلْحَمْدُ لِلّٰه عَزَّوَجَلَّ मिरगी का मरज़ भी ठीक हो गया कि उस को मस्जिद में दौरा ही न पड़ा, यक़ीनन येह उस पर **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ का खुसूसी करम हो गया। ताहम येह मस्अला ज़ेह्न में रखिये कि **मिरगी** के ऐसे मरीज़ और आसेब ज़दा जो उछलकूद करते, चीख़ते चिल्लाते हों या ऐसे मरीज़ जिन का बेहोशी में पेशाब वग़ैरा निकल जाता हो, नीज़ ऐसे तमाम अफ़राद जिन से लोगों को घिन आती, ईज़ा पहुंचती हो उन का ए'तिकाफ़ करना तो दूर रहा ऐसी ह़ालत में बा जमाअ़त नमाज़ के लिये भी मस्जिद के अन्दर आना जाइज़ नहीं।

(12) मैं क्लीन शेव था

एक इस्लामी भाई **क्लीन शेव थे,** ज़िन्दगी के दिन ग़फ़्लतों में बसर हो रहे थे, इस्लामी भाइयों की तरग़ीब और ख़ूब **इन्फ़िरादी कोशिश** के नतीजे में, उन्हों ने **रमज़ानुल मुबारक** (1425 सि.हि., 2004 सि.ई.) में तब्लीग़े क़ुरआनो सुन्नत की आ़लमगीर ग़ैर सियासी तह़रीक, **दा'वते इस्लामी** के मदनी माह़ोल में **आ़शिक़ाने रसूल** के साथ **इज्तिमाई ए'तिकाफ़** में बैठने की सआ़दत ह़ासिल की। اَلْحَمْدُ لِلّٰه عَزَّوَجَلَّ **ए'तिकाफ़** में उन का दिल चोट खा गया, साबिक़ा मआ़सी (या'नी ना फ़रमानियों) पर पशेमान (या'नी शरमिन्दा) हो कर

फ़रमाने मुस्तफ़ा صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم : उस शख़्स की नाक ख़ाक आलूद हो जिस के पास मेरा ज़िक्र हो और वोह मुझ पर दुरूदे पाक न पढ़े । (ترمذی)

बहुत रोए और आयिन्दा हमेशा हमेशा के लिये गुनाहों से बचने का अ़ज़्मे मुसम्मम कर लिया, इमामा शरीफ़ का ताज सर पर सजाया, दाढ़ी मुबारक रख कर अपने चेहरे को मदनी रंग चढ़ाया ।

اَلْحَمْدُ لِلّٰه عَزَّوَجَلَّ **दा'वते इस्लामी** के तन्ज़ीमी डिवीज़न की एक तह़सील मुशावरत के निगरान भी बने ।

सीखने को मिलेंगी तुम्हें सुन्नतें, मदनी माह़ोल में कर लो तुम ए'तिकाफ़
लूट लो आ कर अल्लाह की रह़मतें, मदनी माह़ोल में कर लो तुम ए'तिकाफ़

(वसाइले बख़्शिश, स. 642)

صَلُّوا عَلَى الْحَبِيب! صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلٰى مُحَمَّد

(13) मेरी फ़िल्मी गीत गुनगुनाने की आ़दत थी

तक़रीबन 25 सालह इस्लामी भाई ने तब्लीग़े क़ुरआनो सुन्नत की आ़लमगीर ग़ैर सियासी तह़रीक, **दा'वते इस्लामी** के आ़लमी मदनी मर्कज़ **फ़ैज़ाने मदीना** में आ़शिक़ाने रसूल के हमराह आख़िरी अ़शरए **रमज़ानुल मुबारक** के **ए'तिकाफ़** की सआ़दत ह़ासिल की । उन्हें ए'तिकाफ़ की बहुत सी बरकतें ह़ासिल हुई, मिन जुम्ला राह चलते हुए बाज़ारी लड़कों की त़रह़ फ़िल्मी गीत गाने की जो आ़दत थी वोह निकल गई और اَلْحَمْدُ لِلّٰه عَزَّوَجَلَّ इस की जगह ना'त शरीफ़ गुनगुनाने

की आदत पड़ गई। नीज़ **ज़बान का क़ुफ़्ले मदीना** लगाने (या'नी बुरी तो बुरी ग़ैर ज़रूरी बातों से भी बचने) का ज़ेहन बना और उन का ऐसा ज़ेहन बन गया कि जूं ही मुंह से फ़ुज़ूल बात सरज़द होती बतौरे कफ़्फ़ारा झट ज़बान पर दुरूद शरीफ़ जारी हो जाता।

गीत गाने की आ़दत निकल जाएगी, मदनी माह़ोल में कर लो तुम ए'तिकाफ़
बे जा बकबक की ख़स्लत भी टल जाएगी, मदनी माह़ोल में कर लो तुम ए'तिकाफ़

(वसाइले बख़्शिश, स. 642)

صَلُّوا عَلَى الْحَبِيب ! صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلٰى مُحَمَّد

(14) मॉडर्न नौ जवान तरक़्क़ी करते करते......

बम्बई (बाएकला, अल हिन्द) में तब्लीग़े क़ुरआनो सुन्नत की आ़लमगीर ग़ैर सियासी तह़रीक, **दा'वते इस्लामी** की त़रफ़ से आख़िरी अ़शरए **रमज़ानुल मुबारक** (1419 सि.हि., 1998 सि.ई.) में होने वाले **इज्तिमाई ए'तिकाफ़** में एक मॉडर्न नौ जवान ने (जो कि इलेक्ट्रोनिक इन्जीनियर हैं) शिर्कत की। दस दिन तक **आ़शिक़ाने रसूल** की सोह़बत का ख़ूब फ़ैज़ उठाया, **मदनी आक़ा** صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم की मह़ब्बत की निशानी दाढ़ी मुबारक का नूर चेहरे पर छाया, सब्ज़ सब्ज़ इमामा शरीफ़ का ताज सजाया, ए'तिकाफ़ की बरकतों ने उन को सुन्नतों का

अज़ीम मुबल्लिग़ बनाया। اَلْحَمْدُ لِلّٰه عَزَّوَجَلَّ वोह दीन की ख़िदमतों में तरक़्क़ी करते करते ता दमे तहरीर **हिन्द मक्की काबीना** के रुक्न की हैसिय्यत से सुन्नतों की बहारें लुटाने में कोशां हैं।

सारी फ़ेशन की मस्ती उतर जाएगी, मदनी माहोल में कर लो तुम ए'तिकाफ़
ज़िन्दगी सुन्नतों से निखर जाएगी, मदनी माहोल में कर लो तुम ए'तिकाफ़

(वसाइले बख़्शिश, स. 642)

صَلُّوا عَلَى الْحَبِيب! صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلٰى مُحَمَّد

(15) मैं ने नशा कैसे छोड़ा!

एक इस्लामी भाई बे नमाज़ी और नशे के आदी थे, घर वाले उन की वज्ह से परेशान थे। ख़ुश क़िस्मती से तब्लीग़े क़ुरआनो सुन्नत की आलमगीर ग़ैर सियासी तहरीक, **दा'वते इस्लामी** के तीन रोज़ा सुन्नतों भरे इज्तिमाअ़ (1426 सि.हि., 2005 सि.ई.) में हाज़िरी की सआदत हासिल हो गई, वहीं ए'तिकाफ़ की निय्यत की और वक़्त आने पर आलमी मदनी मर्कज़ फ़ैज़ाने मदीना के अन्दर आख़िरी अ़शरए **रमज़ानुल मुबारक** (1426 सि.हि., 2005 सि.ई.) में मो'तकिफ़ हो गए। तीन रोज़ा इज्तिमाअ़ में अगर्चे आख़िरत की बेहतरी के मुतअ़ल्लिक़ काफ़ी ज़ेहन बना था मगर **इज्तिमाई**

फ़रमाने मुस्तफ़ा صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم : जिस ने मुझ पर सुब्ह व शाम दस दस बार दुरूदे पाक पढ़ा उसे क़ियामत के दिन मेरी शफ़ाअ़त मिलेगी। (مجمع الزوائد)

ए'तिकाफ़ की तो क्या बात है ! बस उन के तो दिल की दुन्या ही बदल गई, उन्हों ने गुनाहों से पक्की तौबा की, दाढ़ी मुबारक बढ़ानी शुरूअ़ कर दी, हाथों हाथ सब्ज़ इमामा शरीफ़ भी सजा लिया। ए'तिकाफ़ के बा'द जब घर पहुंचे तो दाढ़ी और इमामा शरीफ़ में देख कर घर वाले और पड़ोसी वग़ैरा सब हैरत ज़दा रह गए ! اَلْحَمْدُ لِلّٰه عَزَّوَجَلَّ उन की **नशे** की आ़दत भी बिल्कुल छूट गई। अपनी बिसात़ भर **दा'वते इस्लामी** का मदनी काम करना शुरूअ़ कर दिया, **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ के फ़ज़्ल से उन की बेटी ने **दा'वते इस्लामी** के जामिअ़तुल मदीना में **शरीअ़त कोर्स** में दाख़िला ले लिया जब कि दो मदनी मुन्नों ने मद्रसतुल मदीना में क़ुरआने पाक हिफ़्ज़ करना शुरूअ़ कर दिया।

गर मदीने का ग़म चश्मे नम चाहिये, मदनी माह़ोल में कर लो तुम ए'तिकाफ़
मदनी आक़ा की नज़्रे करम चाहिये, मदनी माह़ोल में कर लो तुम ए'तिकाफ़

(वसाइले बख़्शिश, स. 642)

صَلُّوْا عَلَى الْحَبِيْب ! صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلٰى مُحَمَّد

(16) येह ए'तिकाफ़ क्या होता है !

एक इस्लामी भाई गुनाहों भरी ज़िन्दगी में बद मस्त रहते हुए ज़िन्दगी के दिन गुज़ार रहे थे। **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ का करोड़हा करोड़ एह़सान कि उन के शहर में तब्लीग़े क़ुरआनो सुन्नत की आ़लमगीर ग़ैर सियासी तह़रीक, **दा'वते इस्लामी** का मदनी काम शुरूअ़ हुवा और पहली बार **दा'वते इस्लामी** की त़रफ़ से (1416 सि.हि., 1995 सि.ई.) **शबे बराअत** का सुन्नतों भरा इज्तिमाअ़ हुवा, اَلْحَمْدُ لِلّٰه عَزَّوَجَلَّ उन्हों ने उस में शिर्कत की। इज्तिमाअ़ में **आ़शिक़ाने रसूल** के दाढ़ी और इमामे वाले नूरानी चेहरों और उन की मह़ब्बत भरी मुलाक़ातों ने उन्हें दा'वते इस्लामी से मुतअस्सिर तो किया मगर वोह दूर ही दूर रहे। हफ़्तावार इज्तिमाअ़ में भी कभी शिर्कत नहीं की ह़त्ता कि **रमज़ानुल मुबारक** (1416 सि.हि., 1995 सि.ई.) की **सत्ताईसवीं शब** आ पहुंची, उन्हों ने इज्तिमाअ़ वाली मस्जिद में होने वाली **इज्तिमाई दुआ़** में ह़ाज़िरी दी, इख़्तिताम पर इस्लामी भाइयों से मुलाक़ात हुई और किसी ने बताया यहां कुछ इस्लामी भाई ए'तिकाफ़ में बैठे हैं। उन के लिये येह लफ़्ज़ नया था, इस लिये उन्हों ने तजस्सुस के साथ पूछा : **येह ए'तिकाफ़ क्या होता है ?** इस्लामी भाइयों ने बड़ी

महब्बत के साथ उन्हें **ए'तिकाफ़** के बारे में मा'लूमात फ़राहम करते हुए **ए'तिकाफ़ की बा'ज़ मदनी बहारें** बयान कीं। दा'वते इस्लामी के **मदनी माहोल** में किये जाने वाले **ए'तिकाफ़** के अह्वाल सुन कर उन्हों ने दिल में पक्की निय्यत कर ली कि اِنْ شَآءَاللّٰه عَزَّوَجَلَّ आयिन्दा साल **ए'तिकाफ़** में ज़रूर बैठूंगा। चुनान्चे दिन गुज़रते गए और जब **रमज़ानुल मुबारक** (1417 सि.हि., 1996 सि.ई.) की फिर आमद हुई तो **आख़िरी अ़शरे** में आ़शिक़ाने रसूल के साथ वोह भी मो'तकिफ़ हो गए। दस शबाना रोज़ **आ़शिक़ाने रसूल** की सोह़बत में उन्हें बहुत कुछ सीखने को मिला।

न पूछो हम कहां पहुंचे और इन आंखों ने क्या देखा

जहां पहुंचे वहां पहुंचे जो देखा दिल के अन्दर है

ए'तिकाफ़ में किसी ने दर्से निज़ामी का ज़ेह्न दिया, उन की समझ में आ गया चुनान्चे जामिअ़तुल मदीना में दाख़िला ले लिया, ह़त्ता कि दौरए ह़दीस शरीफ़ के बा'द दा'वते इस्लामी के आ़लमी मदनी मर्कज़ **फ़ैज़ाने मदीना** में (1425 सि.हि., 2004 सि.ई.) उन की दस्तार बन्दी की गई और उन को दा'वते इस्लामी के एक जामिअ़तुल मदीना में तदरीस की ख़िदमत अन्जाम देने की सआ़दत मिली।

प्यारे प्यारे इस्लामी भाइयो ! देखा आप ने ! एक ऐसा लड़का जिस को कल तक येह भी नहीं पता था कि **ए'तिकाफ़ क्या होता है !** वोह आज **आशिक़ाने रसूल** के साथ ए'तिकाफ़ करने की बरकत से दर्से निज़ामी से मुशर्रफ़ हो कर मुदर्रिस बन कर दूसरों को इल्मे दीन के फ़ैज़ान से मालामाल करने वाला बन गया।

सुन्नतें सीख लो रहमतें लूट लो, मदनी माह़ोल में कर लो तुम ए'तिकाफ़
दीन के इल्म की बरकतें लूट लो, मदनी माह़ोल में कर लो तुम ए'तिकाफ़

(वसाइले बख़्शिश, स. 642)

صَلُّوْا عَلَى الْحَبِيْب! صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلٰى مُحَمَّد

(17) वोह चोरियां भी कर लिया करते थे

एक इस्लामी भाई दा'वते इस्लामी के मुश्कबार मदनी माह़ोल से वाबस्ता होने से पहले مَعَاذَ اللّٰه عَزَّوَجَلَّ नमाज़ों में सुस्ती, विडियो गेम्ज़ का शौक़, T.V. पर रोज़ाना उलटे सीधे प्रोग्राम देखना, झूट की आ़दत यहां तक कि चोरियां भी कर लिया करते थे। खुश क़िस्मती से आख़िरी अ़शरए **रमज़ानुल मुबारक** (1421 सि.हि., 2000 सि.ई.) में **जामेअ़ मस्जिद आमिना** में **दा'वते इस्लामी** के आ़शिक़ाने रसूल के साथ उन्हें **इज्तिमाई ए'तिकाफ़** की सआ़दत मिल गई। उन्हों ने आमिना मस्जिद की दूसरी मन्ज़िल पर दा'वते इस्लामी के

क़ाइम कर्दा **मद्रसतुल मदीना** में दाख़िला ले लिया। اَلْحَمْدُ لِلّٰه عَزَّوَجَلَّ आ़लमी मदनी मर्कज़ **फ़ैज़ाने मदीना** में हफ़्तावार सुन्नतों भरे इज्तिमाअ़ में शिर्कत करते रहे और اَلْحَمْدُ لِلّٰه عَزَّوَجَلَّ उन की कोशिशों से उन के घर में भी **मदनी माह़ोल** बन गया वोह घर के अन्दर **मक्बतुल मदीना** की त़रफ़ से जारी कर्दा सुन्नतों भरे बयानात की केसिटें चलाया करते। اَلْحَمْدُ لِلّٰه عَزَّوَجَلَّ क़ुरआने पाक ह़िफ़्ज़ कर लेने के बा'द जामिअ़तुल मदीना में दर्से निज़ामी करना शुरूअ़ कर दिया और मद्रसतुल मदीना में तदरीस की भी तरकीब रखी और अपने ज़ैली मुशावरत के निगरान के मा तह़्त रह कर तब्लीग़े क़ुरआनो सुन्नत की आ़लमगीर ग़ैर सियासी तह़रीक, **दा'वते इस्लामी** के मदनी कामों की धूमें मचाने की भी कोशिशें फ़रमाने लगे।

तुम गुनाहों से अपने जो बेज़ार हो, मदनी माह़ोल में कर लो तुम ए'तिकाफ़
तुम पे फ़ज़्ले ख़ुदा, लुत़्फ़े सरकार हो, मदनी माह़ोल में कर लो तुम ए'तिकाफ़

(वसाइले बख़्शिश, स. 642)

صَلُّوا عَلَی الْحَبِیْب ! صَلَّی اللّٰهُ تَعَالٰی عَلٰی مُحَمَّد

(18) ए'तिकाफ़ की ब-र-कत से शहर के लिये म-दनी मर्कज़ मिल गया

चित्रदुर्गा (सूबए कर्नाटक, अल हिन्द) की "मस्जिदे आ'ज़म"

के मुतवल्लियान और कुछ मक़ामी मुसल्मान तब्लीग़े क़ुरआनो सुन्नत की आ़लमगीर ग़ैर सियासी तह़रीक, **दा'वते इस्लामी** के बारे में बा'ज़ ग़लत़ फ़हमियों का शिकार थे। बहुत मुश्किल से वहां **रमज़ानुल मुबारक** में **इज्तिमाई ए'तिकाफ़** की इजाज़त मिली। दो मुतवल्लियों के साहि़ब ज़ादगान भी साथ ही मो'तकिफ़ हो गए। मदनी मर्कज़ के अ़त़ा कर्दा जद्वल के मुत़ाबिक़ सुन्नतों भरे ह़ल्क़े, सुन्नतों भरे बयानात, ना'तों की धूमधाम, रिक़्क़त अंगेज़ दुआ़एं और कसीर मो'तकिफ़ीन का हुस्ने इन्तिज़ाम देख कर मुतवल्ली साहि़बान ह़ैरान रह गए और इस क़दर मुतअस्सिर हुए कि आख़िरी दिन तमाम मो'तकिफ़ीन को तह़ाइफ़ व गुलपोशी से नवाज़ा। **दा'वते इस्लामी** इन सब की समझ में आ गई और उन ह़ज़रात ने अपने ज़ेरे तौलियत अ़ज़ीमुश्शान "मस्जिदे आ'ज़म" में दा'वते इस्लामी को मदनी कामों की मुकम्मल त़ौर पर छूट दे दी और اَلْحَمْدُ لِلّٰه عَزَّوَجَلَّ "**मस्जिदे आ'ज़म**" उस शह्‌र का "मदनी मर्कज़" बन गई। اَلْحَمْدُ لِلّٰه عَزَّوَجَلَّ दोनों मुतवल्लियों के मज़्कूरा साहि़ब ज़ादगान ने अपने चेहरे दाढ़ी मुबारक से आरास्ता कर लिये और **दा'वते इस्लामी** के **मदनी माह़ोल** से वाबस्ता हो गए।

ज़िक्र करना ख़ुदा का यहां सुब्ह़ो शाम, मदनी माह़ोल में कर लो तुम ए'तिकाफ़
पाओगे ना'ते मह़बूब की धूमधाम, मदनी माह़ोल में कर लो तुम ए'तिकाफ़

(वसाइले बख़्शिश, स. 642, 643)

صَلُّوْا عَلَی الْحَبِیْب! صَلَّی اللّٰهُ تَعَالٰی عَلٰی مُحَمَّد

(19) ए'तिकाफ़ का फ़ैज़ इंग्लेन्ड पहुंचा

रमज़ानुल मुबारक (1410 सि.हि., 1990 सि.ई.) में एक इस्लामी भाई की **इंग्लेन्ड** से आमद हुई। इस्लामी भाइयों के तवज्जोह दिलाने पर उन के एक रिश्तेदार इस्लामी भाई ने **इन्फ़िरादी कोशिश** कर के उन्हें **आशिक़ाने रसूल** के साथ **इज्तिमाई ए'तिकाफ़** के लिये राज़ी कर लिया और اَلْحَمْدُ لِلّٰہ عَزَّوَجَلَّ वोह मो'तकिफ़ हो गए। एक ख़ालिस अंग्रेज़ी माहोल में रहने वाला जब ए'तिकाफ़ में बैठा और उस ने आक़ा صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم की मीठी मीठी सुन्नतें और ज़रूरी अह़काम सीखे, क़ब्रो आख़िरत के अह़वाल सुने तो मुसल्मान होने के नाते उस का दिल चोट खा कर रह गया। اَلْحَمْدُ لِلّٰہ عَزَّوَجَلَّ **इज्तिमाई ए'तिकाफ़** की बरकत से उन्हें गुनाहों से तौबा का तोह़फ़ा मिला और तब्लीग़े कुरआनो सुन्नत की आ़लमगीर ग़ैर सियासी तह़रीक, **दा'वते इस्लामी** के **मदनी माहोल** में आ गए। चेहरे पर **दाढ़ी** सजा ली, सर **इमामा शरीफ़** से सर सब्ज़ कर लिया, **फ़ैज़ाने सुन्नत** का दर्स और बयान सीख कर दौराने ए'तिकाफ़ ही **सुन्नतों भरा बयान** करने लगे! **इंग्लेन्ड** में जा कर **दा'वते इस्लामी** के मदनी कामों की धूमें मचाने की निय्यत की। اَلْحَمْدُ لِلّٰہ عَزَّوَجَلَّ वोह **इंग्लेन्ड** में मुबल्लिग़े दा'वते इस्लामी और **बारह**

मदनी कामों के ज़िम्मेदार बने, उन के बच्चों की अम्मी भी **मदनी माहोल** से वाबस्ता हो कर **इंग्लेन्ड** जैसे ह़या सोज़ माह़ोल में रहते हुए भी **मदनी बुरक़अ़** ओढ़ती हैं, ख़ुद दुरुस्त **कुरआने करीम** सीख कर अब मद्रसतुल मदीना (बालिग़ात) में इस्लामी बहनों को पढ़ाती हैं और इस्लामी बहनों के मदनी कामों की **तन्ज़ीमी ज़िम्मेदार** हैं।

कर के हिम्मत मुसल्मानो आ जाओ तुम, मदनी माह़ोल में कर लो तुम ए'तिकाफ़
उख़्रवी दौलत आओ कमा जाओ तुम, मदनी माह़ोल में कर लो तुम ए'तिकाफ़

(वसाइले बख़्शिश, स. 643)

صَلُّوْا عَلَی الْحَبِیْب! صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلٰی مُحَمَّد

(20) मैं छोड़ के फ़ैज़ाने मदीना नहीं जाता

एक इस्लामी भाई जब नवीं जमाअ़त में पढ़ते थे। क्लास में उन का एक फ्रेन्ड सर्कल था, येह सब स्कूल से भाग जाते, ख़ूब आवारा गर्दी करते, रात गए तक क्रिकेट खेलते, इन्टरनेट क्लब में ठीकठाक वक़्त बरबाद करते, सारा सारा दिन मिलजुल कर केबल पर फ़िल्में देखते, गाने सुनने का तो इस क़दर चस्का था कि रात गाने सुनते सुनते सोना और सुब्ह़ जागते ही सब से पहला काम مَعَاذَ اللّٰہ عَزَّوَجَلَّ येही मन्हूस गाने सुनना। फ़ेन्सी लिबास पहन कर

येह लोग मिलजुल कर مَعَاذَاللّٰه عَزَّوَجَلَّ ثُمَّ مَعَاذَاللّٰه عَزَّوَجَلَّ लड़कियों के साथ छेड़ ख़ानियां और ख़ूब बद निगाहियां करते। उस इस्लामी भाई की मां कभी समझाती भी तो उलटा उसी के गले पड़ जाते। वालिद साहिब नमाज़ का हुक्म फ़रमाते तो उन को भी चक्मा दे देते। अफ़्सोस ! इस्लाह की दूर दूर तक कोई सूरत नज़र नहीं आती थी। **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ उन के बड़े भाई साहिब का भला करे जिन्हों ने उन की दस्त गीरी की और उन्हें **रमज़ानुल मुबारक** के आख़िरी अ़शरे के अन्दर **ए'तिकाफ़** में बैठने के लिये कहा। उन को सह़ीह़ मा'नों में येह भी पता नहीं था कि **ए'तिकाफ़** क्या होता है ! उन्हों ने साफ़ इन्कार कर दिया। मगर बड़े भाई ने किसी त़रह़ भी समझा बुझा कर तब्लीग़े क़ुरआनो सुन्नत की आ़लमगीर ग़ैर सियासी तह़रीक, **दा'वते इस्लामी** के मदनी मर्कज़ फ़ैज़ाने मदीना में होने वाले **इज्तिमाई ए'तिकाफ़** में बिठा दिया। चार या पांच दिन तक बिल्कुल भी दिल न लगा और येह भागने की कोशिश करते रहे मगर काम्याब न हो सके। इस के बा'द सुरूर आना शुरूअ़ हुवा, और फिर तो वोह **रूह़ानी सुकून** मिला कि चांदरात को येह कह रहे थे कि मुझे घर नहीं जाना है मैं आज की रात भी यहीं **फ़ैज़ाने मदीना** में गुज़ारना चाहता हूं।

तुम घर को न खींचो नहीं जाता नहीं जाता

मैं छोड़ के फ़ैज़ाने मदीना नहीं जाता

صَلُّوْا عَلَی الْحَبِیْب ! صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلٰی مُحَمَّد

(21) ए'तिकाफ़ की ब-र-कत से घुटनों का दर्द चला गया

जामिअ़तुल मदीना के एक त़ालिबे इ़ल्म को आख़िरी अ़शरए **रमज़ानुल मुबारक** (1426 सि.हि., 2005 सि.ई.) में तब्लीग़े क़ुरआनो सुन्नत की आ़लमगीर ग़ैर सियासी तह़रीक, **दा'वते इस्लामी** के आ़लमी मदनी मर्कज़ **फ़ैज़ाने मदीना** में **ए'तिकाफ़** की सआ़दत ह़ासिल हुई। वहां उन की मुलाक़ात एक **सिन रसीदा बुज़ुर्ग** से हुई, उन्हों ने बताया : कई साल से मेरे **घुटनों में दर्द** था, जब मैं आ़लमी मदनी मर्कज़ **फ़ैज़ाने मदीना** में **ए'तिकाफ़** के लिये आया। اَلْحَمْدُ لِلّٰہ عَزَّوَجَلَّ उस की बरकत से मुझ पर करम हुवा कि **मेरे घुटनों का दर्द दूर हो गया।**

दर्द टांगों में हो, दर्द घुटनों में हो, मदनी माह़ोल में कर लो तुम ए'तिकाफ़

पेट में दर्द हो या कि ज़ख़्मों में हो, मदनी माह़ोल में कर लो तुम ए'तिकाफ़

(वसाइले बख़्शिश, स. 643)

صَلُّوْا عَلَی الْحَبِیْب ! صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلٰی مُحَمَّد

(22) दाढ़ी सजी सर सब्ज़ हो गया

नवसारी (सूबए गुजरात, अल हिन्द) के एक मॉडर्न इस्लामी भाई तब्लीग़े क़ुरआनो सुन्नत की आ़लमगीर ग़ैर सियासी तह़रीक, **दा'वते इस्लामी** की त़रफ़ से आख़िरी अ़शरए **रमज़ानुल मुबारक** (1423 सि.हि., 2002 सि.ई.) में होने वाले **इज्तिमाई ए'तिकाफ़** (सूरत, गुजरात) में मो'तकिफ़ हुए। **मदनी जद्वल** के मुत़ाबिक़ लगने वाले सुन्नतों भरे ह़ल्क़ों, रिक़्क़त अंगेज़ दुआ़ओं और ज़िक्रो ना'त की पुरसोज़ सदाओं ने उन का दिल मोह लिया, **आ़शिक़ाने रसूल** की सोह़बत से वोह फ़ैज़ मिला कि न पूछो बात ! दाढ़ी मुबारक सजी, इमामा शरीफ़ से सर सब्ज़ हुवा और तरक़्क़ी के मनाज़िल तै करते हुए ता दमे तह़रीर अपने **शहर की मुशावरत** के निगरान की हैसिय्यत से मदनी कामों की धूमें मचा रहे हैं।

सुन्नतों की तुम आ कर के सौग़ात लो, मदनी माह़ोल में कर लो तुम ए'तिकाफ़
आओ बटती है रह़मत की ख़ैरात लो, मदनी माह़ोल में कर लो तुम ए'तिकाफ़

(वसाइले बख़्शिश, स. 643)

صَلُّوا عَلَی الْحَبِیْب ! صَلَّی اللّٰهُ تَعَالٰی عَلٰی مُحَمَّد

फ़रमाने मुस्तफ़ा صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰی عَلَیْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم : जिस ने किताब में मुझ पर दुरूदे पाक लिखा तो जब तक मेरा नाम उस में रहेगा फ़िरिश्ते उस के लिये इस्तिग़फ़ार (या'नी बख़्शिश की दुआ) करते रहेंगे। (طبرانی)

(23) अनबन ख़त्म हो गई

एक इस्लामी भाई अ़ब्दुर्रज़्ज़ाक़ अ़त्तारी जो कि टन्डो जाम एग्री कल्चरल यूनीवर्सिटी के लेब इन्चार्ज थे, उन के दो बेटे **दा'वते इस्लामी** के मदनी माह़ोल से वाबस्ता थे मगर वोह ख़ुद नमाज़ों और सुन्नतों से दूर थे और ज़ेहन मुकम्मल तौर पर दुन्यादारों वाला था। **रमज़ानुल मुबारक** में **इन्फ़िरादी कोशिश** करते हुए उन्हें **इज्तिमाई ए'तिकाफ़** में शिर्कत की दा'वत पेश की गई तो फ़रमाने लगे : मेरे बच्चों की अम्मी नाराज़ हो कर मयके जा बैठी हैं, अगर मैं ए'तिकाफ़ करूंगा तो क्या वोह आ जाएंगी ? उन्हें बताया गया : اِنْ شَآءَاللّٰه عَزَّوَجَلَّ आ जाएंगी। चुनान्चे वोह आख़िरी अ़शरए **रमज़ानुल मुबारक** (ग़ालिबन 1416 सि.हि., 1995 सि.ई.) में **फ़ैज़ाने मदीना** के अन्दर **आ़शिक़ाने रसूल** के साथ मो'तकिफ़ हो गए। सीखने सिखाने के ह़ल्क़ों, सुन्नतों भरे बयानात, रिक़्क़त अंगेज़ दुआ़ओं और पुरसोज़ ना'तों ने उन का दिल बदल कर रख दिया ! उन्हों ने गुनाहों से तौबा कर ली, नमाज़ों की पाबन्दी का अ़ह्द किया, दाढ़ी मुबारक व इमामा शरीफ़ से आरास्ता हो गए और ना'तें भी पढ़ने लगे। **ए'तिकाफ़** के दौरान ही रूठी हुई बच्चों की अम्मी भी वापस आ गई और घरेलू शकर रन्जियां भी ख़त्म हो गईं। **ए'तिकाफ़** की बरकत से

फ़रमाने मुस्तफ़ा صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰی عَلَیْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم : जो मुझ पर एक दिन में 50 बार दुरूदे पाक पढ़े क़ियामत के दिन मैं उस से मुसाफ़हा करूं (या'नी हाथ मिलाऊं)गा। (ابن بشکوال)

वोह मदनी लिबास पहनने लगे और उन्हों ने मदनी क़ाफ़िलों में सफ़र भी किये। मदनी माहोल में रहते हुए उसी साल या'नी बरोज़ जुमे'रात 27 रबीउ़ल अव्वल शरीफ़ को उन का इन्तिक़ाल हो गया।

اِنَّا لِلّٰهِ وَ اِنَّاۤ اِلَیْهِ رٰجِعُوْنَ

मदनी माह़ोल में कर लो तुम ए'तिकाफ़ गोरे तीरह को तुम जगमगाने चलो,
मदनी माह़ोल में कर लो तुम ए'तिकाफ़ राह़तें रोज़े मह़शर की पाने चलो,

(वसाइले बख़्शिश, स. 643)

صَلُّوْا عَلَی الْحَبِیْب ! صَلَّی اللّٰهُ تَعَالٰی عَلٰی مُحَمَّد

ज़िन्दगी के आख़िरी साल के मुतअ़ल्लिक़ एक इ़ब्रत नाक रिवायत : प्यारे प्यारे इस्लामी भाइयो ! येह "मदनी बहार" वाक़ेई अपने अन्दर इ़ब्रत के कई मदनी फूल लिये हुए है। मर्हूम अ़ब्दुर्रज़्ज़ाक़ अ़त्तारी عَلَیْهِ رَحْمَةُ اللّٰهِ الْبَارِی खुश नसीब थे कि वफ़ात से थोड़े ही अ़र्से क़ब्ल उन्हें मदनी माह़ोल मुयस्सर आ गया और यक़ीनन वोह बन्दा मुक़द्दर वाला है जो मरने से पहले पहले तौबा कर के राहे रास्त पर आ जाए और सुन्नतों की शाहराह पर चल पड़े और बड़ा ही बद नसीब है वोह शख़्स जो अच्छा भला नेकियां करने वाला और सुन्नतों के रास्ते पर चलने वाला हो कर मरने से थोड़े ही अ़र्से क़ब्ल مَعَاذَ اللّٰه عَزَّوَجَلَّ मोडर्न हो जाए और गुनाहों में पड़ कर **मदनी माह़ोल** से दूर जा पड़े। जब भी आप को

फ़रमाने मुस्तफ़ा صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم : बरोज़े क़ियामत लोगों में से मेरे क़रीब तर वोह होगा जिस ने दुन्या में मुझ पर ज़ियादा दुरूदे पाक पढ़े होंगे। (ترمذی)

शैतान किसी ज़िम्मेदार फ़र्द से नाराज़ करवा कर या यूं ही सुस्ती दिला कर या दुन्यवी कारोबार में ख़ूब फंसा कर या शादी वग़ैरा का जोश दिला कर मदनी माहोल से दूर होने का मश्वरा दे तो इस ह़दीसे पाक पर ग़ौर फ़रमा लिया करें : उम्मुल मुअमिनीन ह़ज़रते सय्यिदतुना आइशा सिद्दीक़ा رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْهَا से रिवायत है कि **रसूलुल्लाह** صَلَّی اللّٰهُ تَعَالٰی عَلَیْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने इर्शाद फ़रमाया : जब **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ किसी बन्दे के साथ भलाई का इरादा फ़रमाता है तो उस के **मरने से एक साल पहले** एक फ़िरिश्ता मुक़र्रर फ़रमा देता है जो उस को राहे रास्त पर लगाता रहता है ह़त्ता कि वोह ख़ैर (या'नी भलाई) पर मर जाता है और लोग कहते हैं : फ़ुलां शख़्स अच्छी ह़ालत पर मरा है। जब ऐसा ख़ुश नसीब और नेक शख़्स मरने लगता है तो उस की जान निकलने में जल्दी करती है, उस वक़्त वोह **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ से मुलाक़ात को पसन्द करता है और **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ उस की मुलाक़ात को। जब **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ किसी के साथ बुराई का इरादा फ़रमाता है तो **मरने से एक साल क़ब्ल एक शैत़ान** उस पर मुसल्लत़ कर देता है जो उसे बहकाता रहता है ह़त्ता कि वोह अपने बद तरीन वक़्त में मर जाता है, उस के पास जब मौत आती है तो उस की जान अटक्ने लगती है, उस वक़्त येह शख़्स **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ से मिलने को पसन्द नहीं करता और **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ इस से मिलने को।

(ذِکرُ الموت مع موسوعة ابن اَبِی الدُّنیا ج۵ص۴۴۳ حدیث۱۵۷ مُلَخَّصاً)

गुनह करते हुए गर मर गया तो क्या करूंगा मैं

बनेगा हाए ! मेरा क्या करम फ़रमा करम मौला

(वसाइले बख़्शिश, स. 97)

صَلُّوْا عَلَی الْحَبِیْب! صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلٰی مُحَمَّد

24 घर वाले घर से निकाल देते थे

एक इस्लामी भाई पहले पहल बहुत ज़ियादा बिगड़े हुए नौ जवान थे, रात जब तक गानों की तीन चार केसिटें न सुन लेते नींद न आती, सारी सारी रात आवारा गर्दियों और गुनाहों में बसर हो जाती, बात बात पर घर में झगड़ते, **घर वाले बेज़ार हो कर घर से निकाल देते,** दो एक दिन इधर उधर भटक्ते फिरते इस के बा'द तरकीब बन जाती। अल ग़रज़ उन की ज़िन्दगी के दिन इन्तिहाई ग़लत़ अन्दाज़ पर बरबाद हो रहे थे। तब्लीग़े क़ुरआनो सुन्नत की आ़लमगीर ग़ैर सियासी तह़रीक, **दा'वते इस्लामी** के अ़लाक़ाई मुशावरत के निगरान जो कि इन के कज़िन थे उन्हों ने इन पर **इन्फ़िरादी कोशिश** की और आख़िरी अ़शरए **रमज़ानुल मुबारक** (1425 सि.हि., 2004 सि.ई.) में अड्डे वाली मस्जिद (मुज़फ़्फ़र गढ़) में उन्हें **दा'वते इस्लामी** के **इज्तिमाई ए'तिकाफ़** में ला बिठाया। एक मुबल्लिग़ के हुस्ने

अख़्लाक़ से मुतअस्सिर हो कर उन्हों ने साबिक़ा गुनाहों से तौबा कर ली और उन्हीं के हाथों सब्ज़ सब्ज़ इमामे शरीफ़ से अपना सर सब्ज़ करवा लिया। **27वीं शब** सुन्नतों भरे बयान के बा'द होने वाली रिक़्क़त अंगेज़ दुआ़ ने दिल पर बहुत ज़ियादा असर किया, उन पर गिर्या त़ारी हो गया और वोह सुब्ह़ तक रोते रहे। **ईद** के दूसरे रोज़ फ़ज्र के वक़्त अभी आंख न खुली थी कि एक बुज़ुर्ग ख़्वाब में नज़र आए और उन्हों ने उन का नाम ले कर पुकारा : "फ़ज्र का वक़्त हो गया है और आप अभी तक सोए हुए हैं!" उन्हों ने फ़ौरन नींद ही में दोनों हाथ क़ियाम की त़रह़ बांध लिये और आंख खुल गई तो हाथ उसी त़रह़ बंधे हुए थे। इस से दिल पर बड़ा असर पड़ा और उन्हों ने मस्जिद में जा कर बा जमाअ़त नमाज़े फ़ज्र अदा की। अपने शहर के हफ़्तावार इज्तिमाअ़ में पाबन्दी से ह़ाज़िरी देते रहे। **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ ने ऐसा करम बालाए करम फ़रमाया कि जामिअ़तुल मदीना में दर्से निज़ामी करने की सआ़दत ह़ासिल करना शुरूअ़ कर दी। अपने दरजे में मदनी इन्आ़मात के तन्ज़ीमी तौर पर ज़िम्मेदार बने **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ का उन पर येह भी करम हुवा कि **त़लबा के जो 92 मदनी इन्आ़मात हैं उन सभी पर अ़मल की सआ़दत ह़ासिल हुई। अल्लाहु रब्बुल इ़ज़्ज़त** عَزَّوَجَلَّ उन को इस्तिक़ामत इनायत फ़रमाए।

اٰمِین بِجاہِ النَّبِیِّ الْاَمین صَلَّی اللّٰہ تعالٰی علیہ واٰلہٖ وسلَّم

छूट जाएगी फ़िल्मों डिरामों की लत, मदनी माह़ोल में कर लो तुम ए'तिकाफ़
ख़ुश ख़ुदा होगा बन जाएगी आख़िरत, मदनी माह़ोल में कर लो तुम ए'तिकाफ़

(वसाइले बख़्शिश, स. 643)

صَلُّوْا عَلَى الْحَبِيْب! صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلٰى مُحَمَّد

(25) मस्जिद का ख़त़ीब बना दिया

एक इस्लामी भाई ने तब्लीग़े क़ुरआनो सुन्नत की आ़लमगीर ग़ैर सियासी तह़रीक, **दा'वते इस्लामी** के मद्रसतुल मदीना में क़ुरआने करीम की ता'लीम ह़ासिल की, मगर अफ़्सोस कि फिर भी पक्के नमाज़ी न बन सके। اَلْحَمْدُ لِلّٰه عَزَّوَجَلَّ **दा'वते इस्लामी** के **आ़शिक़ाने रसूल** के साथ **रमज़ानुल मुबारक** के आख़िरी अ़श्रे के **ए'तिकाफ़** की सआ़दत मिली, दिल पर **मदनी चोट** लगी, ग़फ़्लत की नींद उड़ी, ह़क़ीक़ी मा'नों में आंख खुली और वोह नमाज़ों के पाबन्द हो गए। **ए'तिकाफ़** के सबब **मदनी क़ाफ़िलों** में सफ़र का ज़ेहन बना। वोह बे रोज़गार थे, जिस दिन **मदनी क़ाफ़िले** की निय्यत की उन के यहां की मुशावरत के निगरान ने फ़रमाया : اِنْ شَآءَ اللّٰه عَزَّوَجَلَّ आप का काम हो जाएगा। اَلْحَمْدُ لِلّٰه عَزَّوَجَلَّ मदनी क़ाफ़िले की बरकत यूं ज़ाहिर हुई कि जिस मस्जिद में उन का **मदनी क़ाफ़िला** गया वहां की इन्तिज़ामिया को उन इस्लामी भाई का

फ़रमाने मुस्तफ़ा صَلَّى اللهُ تَعَالٰی عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم : जब तुम रसूलों पर दुरूद पढ़ो तो मुझ पर भी पढ़ो, बेशक मैं तमाम जहानों के रब का रसूल हूं। (جمع الجوامع)

बयान और अन्दाज़े दुआ भा गया और उन्हों ने **उन्हें उस मस्जिद का ख़तीब बना दिया !** यूं उन के रोज़गार की भी सबील बनी। **अल्लाहु रब्बुल इज़्ज़त** عَزَّوَجَلَّ उन्हें **दा'वते इस्लामी** के मदनी माहोल में इस्तिक़ामत इनायत फ़रमाए।

اٰمِين بِجَاہِ النَّبِیِّ الْاَمِین صَلَّى اللهُ تعالٰی عليه واٰلهٖ وسلَّم

तंगदस्ती का हल भी निकल आएगा, मदनी माहोल में कर लो तुम ए'तिकाफ़
रोज़गार اِنْ شَآءَ اللّٰه मिल जाएगा, मदनी माहोल में कर लो तुम ए'तिकाफ़

(वसाइले बख़्शिश, स. 643)

صَلُّوا عَلَى الْحَبِيب! صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلٰى مُحَمَّد

(26) उम्र ग़फ़्लतों में गुज़र रही थी

मोडासा (गुजरात, अल हिन्द) के एक मॉडर्न नौ जवान की उ़म्रे अ़ज़ीज़ ग़फ़्लतों में गुज़र रही थी, गुनाहों का सिल्सिला था, ऐसे में करम हो गया ! सबबे करम यूं हुवा कि **माहे रमज़ानुल मुबारक** (1423 सि.हि., 2002 सि.ई.) के आख़िरी अ़शरे में तब्लीग़े क़ुरआनो सुन्नत की आ़लमगीर ग़ैर सियासी तह़रीक, **दा'वते इस्लामी** के **इज्तिमाई ए'तिकाफ़** में बैठना नसीब हो गया, आ़शिक़ाने रसूल की सोह़बते बा बरकत के क्या कहने ! सुन्नतों भरे बयानात और रिक़्क़त अंगेज़ दुआ़ओं और

पुरकैफ़ ना'तों के फ़ैज़ान से उन की काया पलट गई और वोह मदनी जज़्बा अ़ता हुवा कि **ए'तिकाफ़** ही के अन्दर उन को दर्सो बयान करने की सआ़दत मिल गई ! **दाढ़ी मुबारक** और **इमामा शरीफ़** सजाने की निय्यत की। **आ़शिक़ाने रसूल** के साथ **एक माह के मदनी क़ाफ़िले** के मुसाफ़िर बन गए। चूंकि काफ़ी बा सलाहिय्यत थे लिहाज़ा इस्लामी भाइयों ने मुतअस्सिर हो कर उन को **अमीरे क़ाफ़िला** बना दिया !

आ़शिक़ाने रसूल आओ देंगे बयां, *मदनी माह़ोल में कर लो तुम ए'तिकाफ़*
दूर होंगी इ़बादात की ख़ामियां, *मदनी माह़ोल में कर लो तुम ए'तिकाफ़*

(वसाइले बख़्शिश, स. 643)

صَلُّوا عَلَی الْحَبِیْب ! صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلٰی مُحَمَّد

(27) वोह तहज्जुद गुज़ार बन गए

एक उ़म्र रसीदा इस्लामी भाई को आख़िरी अ़शरए **रमज़ानुल मुबारक** (1425 सि.हि., 2004 सि.ई.) में तब्लीग़े क़ुरआनो सुन्नत की आ़लमगीर ग़ैर सियासी तह़रीक, **दा'वते इस्लामी** की त़रफ़ से होने वाले **इज्तिमाई ए'तिकाफ़** में शिर्कत की सआ़दत मिली। सीखने सिखाने के ह़ल्क़ों का बा क़ाइदा जद्वल बना हुवा था। जिन में नमाज़ के अह़काम और रोज़मर्रा

फ़रमाने मुस्तफ़ा صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم : शबे जुमुआ और रोज़े जुमुआ मुझ पर कसरत से दुरूद पढ़ो क्यूं कि तुम्हारा दुरूद मुझ पर पेश किया जाता है। (طبرانی)

की सुन्नतें वग़ैरा सीखने को मिलीं, दस दिन में उन्हों ने वोह वोह सीखा जो गुज़री हुई ज़िन्दगी में न सीख पाए थे। सुन्नतों भरे बयानात की समाअ़त और **आ़शिक़ाने रसूल** की सोह़बत की बरकत से फ़िक्रे आख़िरत नसीब हुई, क़ल्ब में **मदनी इन्क़िलाब** बरपा हो गया और **मदनी इन्आ़मात** पर अ़मल का जज़्बा मिला। اَلْحَمْدُ لِلّٰه عَزَّوَجَلَّ दूसरा "मदनी इन्आ़म" बिल ख़ुसूस मज़बूती से थाम लिया और इस की बरकत से اَلْحَمْدُ لِلّٰه عَزَّوَجَلَّ पांचों नमाज़ें पहली सफ़ में तक्बीरे ऊला के साथ बा जमाअ़त अदा करने की आ़दत बना ली, اَلْحَمْدُ لِلّٰه عَزَّوَجَلَّ उन्हें तहज्जुद पर भी इस्तिक़ामत ह़ासिल हुई। **मदनी इन्आ़मात का रिसाला** हर माह अपने ज़िम्मेदार को जम्अ़ करवाने और हफ़्तावार इज्तिमाअ़ में भी शिर्कत की सआ़दत पाने लगे।

बा जमाअ़त नमाज़ों का जज़्बा मिले, मदनी माह़ोल में कर लो तुम ए'तिकाफ़
दिल का पज़मुर्दा गुन्चा ख़ुशी से खिले, मदनी माह़ोल में कर लो तुम ए'तिकाफ़

(वसाइले बख़्शिश, स. 644)

صَلُّوْا عَلَى الْحَبِيْب ! صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلٰى مُحَمَّد

(28) आक़ा अपना दीदार करा दीजिये

एक इस्लामी भाई आम नौ जवानों की त़रह मॉडर्न और फ़िल्में डिरामे देखने के शौक़ीन थे। खुश क़िस्मती से आख़िरी अ़शरए **रमज़ानुल मुबारक** में आ़शिक़ाने रसूल के साथ **इज्तिमाई ए'तिकाफ़** में बैठने की सआ़दत मिल गई। **आ़शिक़ाने रसूल** की सोह़बत की भी क्या बात है! उन्हों ने ज़िन्दगी में पहली बार ऐसा **मदनी माह़ोल** देखा था, दिलो जान से **दा'वते इस्लामी** के शैदाई हो गए। उन्हें सरकारे नामदार صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم के दीदार का बड़ा अरमान था, **ए'तिकाफ़** में रोज़ाना दीदार के लिये दुआ़ मांगते थे। **27वीं शब** आ गई, इज्तिमाए ज़िक्रो ना'त हुवा, **ज़िक्रुल्लाह** में उन पर बेखुदी की सी कैफ़िय्यत त़ारी हो गई फिर जब रिक़्क़त अंगेज़ दुआ़ हुई तो उन्हों ने आंखें बन्द किये रो रो कर बस एक येही तकरार की : "**आक़ा अपना दीदार करा दीजिये** !" यकायक आंखों में एक बिजली सी कूंदी और एक नूरानी चेहरे की ज़ियारत हुई और उन्हें यक़ीन हो गया कि येह तो मेरे **आक़ा** صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم हैं! आह! आह! फिर चेहरए मुबारक निगाहों से ओझल हो गया। आह!

फ़रमाने मुस्तफ़ा صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم : उस शख़्स की नाक ख़ाक आलूद हो जिस के पास मेरा ज़िक्र हो और वोह मुझ पर दुरूदे पाक न पढ़े। (ترمذی)

शरबते दीद ने इक आग लगाई दिल में तपिशे दिल को बढ़ाया है बुझाने न दिया
अब कहां जाएगा नक़्शा तेरा मेरे दिल से तह में रख्खा है इसे दिल ने गुमाने न दिया

اَلْحَمْدُ لِلّٰه عَزَّوَجَلَّ उन्हों ने गुनाहों से तौबा की, दाढ़ी बढ़ानी शुरूअ़ कर दी और इमामा शरीफ़ सजाने की निय्यत भी कर ली। اَلْحَمْدُ لِلّٰه عَزَّوَجَلَّ **ईद** के दिन **आ़शिक़ाने रसूल** के साथ हाथों हाथ तीन दिन के **मदनी क़ाफ़िले** के मुसाफ़िर बन गए। जामिअ़तुल मदीना में दर्से निज़ामी शुरूअ़ कर दिया, ता'वीज़ाते अ़त्तारिय्या का भी कोर्स किया और **मजलिसे मक्तूबातो ता'वीज़ाते अ़त्तारिय्या** की त़रफ़ से सोंपी हुई ज़िम्मेदारी के मुत़ाबिक़ ता'वीज़ात का बस्ता भी लगाते नीज़ जामिअ़तुल मदीना के अन्दर अपने दरजे में **मदनी क़ाफ़िला ज़िम्मेदार** भी बने।

गर तमन्ना है आक़ा के दीदार की, मदनी माहोल में कर लो तुम ए'तिकाफ़
होगी मीठी नज़र तुम पे सरकार की, मदनी माहोल में कर लो तुम ए'तिकाफ़

(वसाइले बख़्शिश, स. 640)

صَلُّوا عَلَی الْحَبِيب! صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلٰى مُحَمَّد

(29) उन को हैरत है कि डब्बू स्नूकर कैसे छोड़ दिया!

एक इस्लामी भाई दा'वते इस्लामी के मदनी रंग में रंगने से पहले बे तहाशा फ़िल्में डिरामे देखा करते, "डब्बू स्नूकर" खेलने का

इस क़दर जुनून कि किसी के डांटने बल्कि मारने तक से भी येह लत नहीं छूट सकती थी। गुनाहों की नुहूसत का आ़लम येह था कि مَعَاذَ اللهِ عَزَّوَجَلَّ नमाज़ पढ़ने से दिल घबराता था! **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ की रह़मत से उन के अ़लाके़ की **फ़ुरक़ानिया मस्जिद** में तब्लीगे़ क़ुरआनो सुन्नत की आ़लमगीर ग़ैर सियासी तह़रीक, **दा'वते इस्लामी** की त़रफ़ से होने वाले आख़िरी अ़शरए **रमज़ानुल मुबारक** (1425 सि.हि., 2004 सि.ई.) के **इज्तिमाई ए'तिकाफ़** के अन्दर वोह भी **आ़शिक़ाने रसूल** के साथ मो'तकिफ़ हो गए। اَلْحَمْدُ لِلّٰهِ عَزَّوَجَلَّ "मदनी इन्आ़मात" की बरकत से आख़िरत बनाने की सोच बनी, गुनाहों से कुछ बे रग़बती पैदा हुई। फिर क़ादिरिय्या रज़विय्या सिल्सिले में मुरीद बने तो नमाज़ की पाबन्दी नसीब हुई, उन्हों ने **डब्बू स्नूकर** खेलना तर्क कर दिया जिस पर उन्हें भी ह़ैरत है कि मैं ने येह कैसे छोड़ दिया! इस के बा'द दा'वते इस्लामी के **तीन रोज़ा सुन्नतों भरे इज्तिमाअ़** के आख़िरी दिन ह़ाज़िरी हुई, वहां "T.V. की तबाह कारियां" के मौज़ूअ़ पर बयान हुवा। उस को सुन कर अ़ज़ाबे क़ब्रो ह़श्र के ख़ौफ़ से लरज़ उठे और येह अ़हद कर लिया कि कभी भी T.V. नहीं देखूंगा। उन्हों ने अपनी अम्मीजान को T.V. की तबाह कारियां केसिट सुनाई तो उन्हों ने भी T.V. देखना बिल्कुल बन्द कर दिया और सरकारे

ग़ौसुल आ'ज़म عَلَیْہِ رَحمَۃُ اللّٰہِ الْاَکْرَم की मुरीदनी बनने का जज़्बा पैदा हुवा चुनान्चे उन को भी बैअ़त करवा दिया। इस की बरकत से अम्मीजान फ़र्ज़ नमाज़ों के साथ साथ तहज्जुद, इश्राक़ और चाश्त भी पाबन्दी से पढ़ने लगीं। ख़ुदाए रह़मान عَزَّوَجَلَّ के करम से थोड़े ही अ़र्से में अम्मीजान को मदीनए मुनव्वरह زَادَھَا اللّٰہُ شَرَفًاوَّتَعْظِیْمًا का बुलावा आ गया, इस पर अम्मी ने ख़ुद ही फ़रमाया : येह सब बैअ़त होने का फ़ैज़ है। اَلْحَمْدُ لِلّٰہ عَزَّوَجَلَّ उन इस्लामी भाई को अपने यहां ज़ैली क़ाफ़िला ज़िम्मादार की ह़ैसिय्यत से अपनी प्यारी प्यारी मदनी तह़रीक, **दा'वते इस्लामी** की ख़िदमत की सआ़दत मिलने लगी।

सीखने ज़िन्दगी का क़रीना चलो, मदनी माह़ोल में कर लो तुम ए'तिकाफ़
देखना है जो मीठा मदीना चलो, मदनी माह़ोल में कर लो तुम ए'तिकाफ़

(वसाइले बख़्शिश, स. 644)

صَلُّوْا عَلَی الْحَبِیْب! صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلٰی مُحَمَّد

(30) कॉमेडियन मुबल्लिग़ बन गया

बाला सिनोर (गुजरात, अल हिन्द) के एक नौ जवान जो कॉमेडियन थे। उलटे सीधे चुटकुले सुना कर लोगों को हंसाना उन का मश्ग़ला था, शादियों में मीमीक्री फंक्शन के लिये उन को बुलवाया जाता

था। आख़िरी अ़शरए **रमज़ानुल मुबारक** में उन्हें आशिक़ाने रसूल के साथ **इज्तिमाई ए'तिकाफ़** में बैठने की सआ़दत ह़ासिल हुई। अब तक धन कमाने ही की धुन थी, اَلْحَمْدُ لِلّٰه عَزَّوَجَلَّ ए'तिकाफ़ के **मदनी माह़ोल** में आख़िरत बनाने की लगन पैदा हो गई, साबिक़ा गुनाहों से ताइब हो कर सुन्नतों के मुबल्लिग़ बन गए, अपने आप को दा'वते इस्लामी के लिये पेश कर दिया। ता दमे तह़रीर तन्ज़ीमी त़ौर पर तब्लीग़े क़ुरआनो सुन्नत की आ़लमगीर ग़ैर सियासी तह़रीक, **दा'वते इस्लामी** की एक **डिवीज़नल मुशावरत के निगरान** की ह़ैसिय्यत से दा'वते इस्लामी के मदनी कामों की धूमें मचा रहे हैं, दीन के लिये उन की क़ुरबानियों का ह़ाल येह है कि माहाना 25 दिन मदनी कामों के लिये वक़्फ़ हैं।

اِنْ شَآءَالله भाई सुधर जाओगे, मदनी माह़ोल में कर लो तुम ए'तिकाफ़
मरज़े इस्यां से छुटकारा तुम पाओगे, मदनी माह़ोल में कर लो तुम ए'तिकाफ़

(वसाइले बख़्शिश, स. 644)

صَلُّوْا عَلَى الْحَبِيْب! صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلٰى مُحَمَّد

(31) ह़-जरे अस्वद चूम लिया

एक इस्लामी भाई को बुरे माह़ोल और आवारा दोस्तों की सोह़बत ने गुनाहों पर दिलेर कर दिया था, शराब के अड्डों पर जाना उन के

लिये मा'मूली बात थी, लोगों से ख़्वाह म ख़्वाह लड़ाई मोल लेना, बिला वज्ह झगड़ना और मारपीट करना उन की आ़दत बन चुकी थी। इन करतूतों की वज्ह से घर का हर फ़र्द उन से बेज़ार था, वोह इसी त़रह गुनाहों की वादियों में भटक रहे थे कि उन की क़िस्मत का सितारा चमका और वोह एक आ़शिक़े रसूल की **इन्फ़िरादी कोशिश** की बरकत से तब्लीग़े क़ुरआनो सुन्नत की आ़लमगीर ग़ैर सियासी तह़रीक, **दा'वते इस्लामी** के तह़त **नूरानी मस्जिद** में होने वाले **माहे रमज़ानुल मुबारक** (1426 सि.हि., 2005 सि.ई.) के आख़िरी अ़शरे के **इज्तिमाई ए'तिकाफ़** की बहारें समेटने में शामिल हो गए। दौराने **ए'तिकाफ़** आ़शिक़ाने रसूल के दाढ़ियों और इमामों वाले नूरानी चेहरों और उन की मह़ब्बतों और शफ़्क़तों ने उन्हें **दा'वते इस्लामी** से काफ़ी मुतअस्सिर किया। اَلْحَمْدُ لِلّٰه عَزَّوَجَلَّ दस शबाना रोज़ **आ़शिक़ाने रसूल** की सोह़बत में रह कर उन्हों ने बहुत कुछ सीखा। 25वीं शब **ज़िक्रुल्लाह** عَزَّوَجَلَّ में मश्ग़ूल थे कि उन पर ग़ुनूदगी त़ारी हुई और اَلْحَمْدُ لِلّٰه उन्हों ने ख़ुद को **का'बतुल्लाह शरीफ़** के रू बरू पाया, उन पर करम बालाए करम येह हुवा कि **उन्हों ने बे साख़्ता ह़जरे अस्वद को चूम लिया। 27वीं शब** भी उन पर करम हुवा और ग़ुनूदगी के आ़लम में मदीनए मुनव्वरह زَادَهَا اللّٰهُ شَرَفًاوَّتَعۡظِيۡمًا की नूरबार गलियों और सब्ज़ सब्ज़ गुम्बद के दिल

बहार नज़्ज़ारों की सआ़दत पाई। इन ईमान अफ़रोज़ सिल्सिलों ने उन के दिल की दुन्या बदल डाली। उन्हों ने निय्यत की, कि येह **मदनी माह़ोल** अब ज़िन्दगी भर नहीं छोडूंगा। اَلْحَمْدُ لِلّٰه عَزَّوَجَلَّ रब्बे अकरम عَزَّوَجَلَّ के लुत्फ़ो करम से उन्हों ने दा'वते इस्लामी के जामिअ़तुल मदीना में दर्से निज़ामी करने के लिये दाख़िला ले लिया।

दिल में बस जाएं आक़ा के जल्वे मुदाम, मदनी माह़ोल में कर लो तुम ए'तिकाफ़
देखो मक्के मदीने के तुम सुब्हो शाम, मदनी माह़ोल में कर लो तुम ए'तिकाफ़

(वसाइले बख़्शिश, स. 644)

صَلُّوا عَلَى الْحَبِيْب! صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلٰى مُحَمَّد

(32) बुरी सोह़बत में रहने का गुनाह छूट गया

एक इस्लामी भाई बुरी संगत के सबब मॉडर्न और बुरे बन्दे बन गए थे। ख़ुश क़िस्मती से अपने अ़लाक़े की **अक़्सा मस्जिद** के अन्दर होने वाले **माहे रमज़ानुल मुबारक** के आख़िरी अ़शरए मुबारका के **इज्तिमाई सुन्नत ए'तिकाफ़** में बैठने की बरकत से तब्लीग़े क़ुरआनो सुन्नत की आ़लमगीर ग़ैर सियासी तह़रीक, **दा'वते इस्लामी** के **मदनी माह़ोल** से वाबस्ता हो गए, पाबन्दे सलातो सुन्नत भी बन गए, हफ़्तावार सुन्नतों भरे इज्तिमाअ़

में हाज़िरी की आ़दत पड़ गई, फ़िल्में डिरामे देखने की ख़स्लते बद निकल गई और اَلْحَمْدُلِلّٰہ عَزَّوَجَلَّ एक बहुत बड़ा फ़ाएदा येह हुवा कि मह़्ज़ नफ़्स की लज़्ज़त की ख़ातिर **बुरी सोह़बत** की जो आ़दत थी उस से भी उन की जान छूट गई।

सोह़बते बद में रहने की आ़दत छुटे, मदनी माह़ोल में कर लो तुम ए'तिकाफ़
ख़स्लते जुर्मो इस्यां तुम्हारी मिटे, मदनी माह़ोल में कर लो तुम ए'तिकाफ़

(वसाइले बख़्शिश, स. 644)

صَلُّوا عَلَی الْحَبِیْب! صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلٰی مُحَمَّد

(33) जज़्बे को मदीने के 12 चांद लग गए

मलाका (इलाहआबाद, यूपी, अल हिन्द) के एक इस्लामी भाई का वाक़िआ़ कुछ यूं है कि उन्हों ने मदीनतुल औलिया अह़मदआबाद शरीफ़ में हिन्द सत़ह़ के सुन्नतों भरे इज्तिमाअ़ में शिर्कत फ़रमाई, दीन की ख़िदमत का काफ़ी जज़्बा मिला। उसी साल तब्लीग़े क़ुरआनो सुन्नत की आ़लमगीर ग़ैर सियासी तह़रीक, **दा'वते इस्लामी** की त़रफ़ से आख़िरी अ़शरए **माहे रमज़ानुल मुबारक** (1418 सि.हि., 1997 सि.ई.) में नागोरी वाड़ की मस्जिद (अह़मदआबाद शरीफ़) के अन्दर होने वाले **इज्तिमाई ए'तिकाफ़** में मो'तकिफ़ हुए। **आ़शिक़ाने रसूल** की सोह़बत

उन्हें ख़ूब मुवाफ़िक़ आई, उन के दीनी जज़्बे को मीठे मदीने के 12 चांद लग गए। ए'तिकाफ़ के बा'द अपने आबाई गाउं **मलाका** (यूपी) में जा कर उन्हों ने मदनी कामों की ख़ूब धूमें मचाईं। दूसरे साल मदनी मर्कज़ की जानिब से मुख़्तलिफ़ शहरों में जा कर सेंकड़ों इस्लामी भाइयों को ए'तिकाफ़ करवाया। ता दमे तह़रीर अह़मदआबाद शरीफ़ में मुक़ीम हैं और **दा'वते इस्लामी** की तन्ज़ीमी तरकीब के मुत़ाबिक़ **तह़सील मालियात** के ज़िम्मेदार हैं।

आओ इश्क़े मुह़म्मद के पीने को जाम, मदनी माह़ोल में कर लो तुम ए'तिकाफ़

मस्त हो कर करो ख़ूब तुम मदनी काम, मदनी माह़ोल में कर लो तुम ए'तिकाफ़

(वसाइले बख़्शिश, स. 644)

صَلُّوا عَلَی الْحَبِیْب! صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلٰی مُحَمَّد

(34) 70 सालह इस्लामी भाई के तअस्सुरात

एक सिन रसीदा इस्लामी भाई बुढ़ापे के बा वुजूद مَعَاذَ اللّٰه नमाज़ की पाबन्दी नहीं करते थे, फ़िल्में डिरामे के शौक़ीन थे, दाढ़ी मुंडवाया करते थे और अंग्रेज़ी लिबास पहनते थे। तक़रीबन 60 बरस की उ़म्र में **कौसर मस्जिद** के अन्दर पहली बार आख़िरी अ़शरए **रमज़ानुल मुबारक** (ग़ालिबन 1416 सि.हि., 1996 सि.ई.)

में उन्हें **ए'तिकाफ़** की सआ़दत ह़ासिल हुई। वहां **दा'वते इस्लामी** के आ़शिक़ाने रसूल की सोह़बत मुयस्सर आई। **गुजराती रस्मुल ख़त़ में लिखा हुवा क़ुरआने करीम** पढ़ता देख कर एक इस्लामी भाई ने उन्हें समझाया कि क़ुरआने करीम अ़रबी में लिखा हुवा पढ़ना ज़रूरी है, गुजराती ज़बान के ह़ुरूफ़ अस्ल अ़रबी मख़ारिज से कैसे अदा करेंगे! उन की समझ में बात आ गई। बहर ह़ाल ए'तिकाफ़ में **आ़शिक़ाने रसूल** से उन्हें बहुत फ़ैज़ ह़ासिल हुवा। उन्हों ने तब्लीग़े क़ुरआनो सुन्नत की आ़लमगीर ग़ैर सियासी तह़रीक, **दा'वते इस्लामी** के **मद्रसतुल मदीना** (बराए बालिग़ान) में पढ़ना शुरूअ़ कर दिया। डेढ़ साल की जिद्दो जुह्द से उन के कुछ न कुछ ह़ुरूफ़ दुरुस्त हुए, اَلْحَمْدُ لِلّٰه عَزَّوَجَلَّ अ़रबी में देख कर क़ुरआने करीम पढ़ना नसीब होने लगा। हफ़्तावार सुन्नतों भरे इज्तिमाअ़ में सारी रात गुज़ारने का शरफ़ मिलने लगा, हफ़्ते में एक बार मदनी दौरे में शिर्कत की सआ़दत भी मुयस्सर आने लगी। اَلْحَمْدُ لِلّٰه عَزَّوَجَلَّ उन्हों ने एक मुठ्ठी दाढ़ी भी सजा ली। ज़ाहिरी अस्बाब कम होने के बा वुजूद करम बालाए करम हो गया और उन्हें उ़म्रह शरीफ़ और मीठे मदीने की ह़ाज़िरी का शरफ़ मिल गया। اَلْحَمْدُ لِلّٰه عَزَّوَجَلَّ हर माह तीन दिन **मदनी क़ाफ़िले** में सफ़र की सआ़दत ह़ासिल होने लगी। **72**

मदनी इन्आ़मात में से 40 से ज़ाइद मदनी इन्आ़मात पर अ़मल की कोशिश नसीब हुई। एक प्राइवेट फ़र्म में एकाउन्टन्ट हैं और सुब्ह़ो शाम आते जाते बस के अन्दर **नेकी की दा'वत** देने की चार साल से सआ़दत ह़ासिल है, एक बार **ख़्वाब** में बस के अन्दर उन्हों ने **नेकी की दा'वत** पेश की, फ़ारिग़ होने के बा'द देखा कि एक मुबल्लिग़े दा'वते इस्लामी जिन से येह बहुत मह़ब्बत करते हैं, वोह उन के सामने मुस्कुराते तशरीफ़ फ़रमा हैं। येह रूह परवर मन्ज़र देख कर येह रो पड़े और आंख खुल गई। येह ख़्वाब देखने के बा'द **नेकी की दा'वत** देने में उन्हें मज़ीद इस्तिक़ामत नसीब हुई।

सीख लो आओ क़ुरआन पढ़ना सभी, मदनी माह़ोल में कर लो तुम ए'तिकाफ़
तुम तरक़्क़ी के ज़ीनों पे चढ़ना सभी, मदनी माह़ोल में कर लो तुम ए'तिकाफ़

صَلُّوْا عَلَى الْحَبِيْب! صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلٰى مُحَمَّد

ग़ैरे अ़-रबी में आयाते क़ुरआनी लिखना जाइज़ नहीं

प्यारे प्यारे इस्लामी भाइयो ! देखा आप ने ! जब तक अच्छी सोह़बत नहीं मिलती उस वक़्त तक बसा अवक़ात इस्लाह़ की सूरत नहीं बनती। आज कल अक्सर उ़म्र रसीदा अफ़राद भी त़रह़ त़रह़ के गुनाहों में मुब्तला नज़र आते हैं, ह़त्ता कि बेचारे बिस्तरे मर्ग पर पड़े

हों तब भी उन्हें नमाज़ पढ़ने, झूट और ग़ीबत से बचने और दाढ़ी मुंडाने वग़ैरा से तौबा कर लेने की तौफ़ीक़ नहीं मिलती, इस हालत में भी مَعَاذَاللّٰه T.V. पर फ़िल्में डिरामे देखने का सिलसिला जारी रहता है, सिह़ह़त पा कर सिर्फ़ दुन्या के काम धन्दे ही करने का जज़्बा होता है । येह मुअ़म्मर इस्लामी भाई ख़ुश नसीब थे, जिन्हें ए'तिकाफ़ में **मदनी माह़ोल** मुयस्सर आ गया और ग़फ़्लतों में गुज़रने वाली ज़िन्दगी यकायक मदनी अदाओं में ढल गई । आप ने देखा कि बेचारे कुरआने करीम भी पढ़े हुए नहीं थे इस लिये गुजराती ज़बान में कुरआन शरीफ़ पढ़ रहे थे, जिस पर एक **आ़शिक़े रसूल** ने तफ़्हीम की (या'नी समझाया) तो दा'वते इस्लामी के **मद्रसतुल मदीना** (बालिग़ान) में रात के वक़्त सीख कर अ़रबी में पढ़ने के कुछ न कुछ क़ाबिल हुए । याद रखिये ! अ़रबी ज़बान के इलावा दूसरी किसी ज़बान मसलन गुजराती, हिन्दी, इंग्लिश के रस्मुल ख़त़ में कुरआने पाक लिखना जाइज़ नहीं । गुजराती, हिन्दी, अंग्रेज़ी वग़ैरा ज़बानों के माहनामों और दीगर कुतुबो रसाइल में आयात और मासूर (या'नी कुरआनो ह़दीस की) दुआएं वग़ैरा अ़रबी रस्मुल ख़त़ ही में लिखनी चाहिएं । **मुफ़स्सिरे** शहीर **ह़कीमुल उम्मत** ह़ज़रते मुफ़्ती अह़मद यार ख़ान عَلَيْهِ رَحْمَةُ الْحَنَّان के एक तफ़्सीली फ़तवे का इक़्तिबास मुलाह़ज़ा हो : "हिन्दी या

अंग्रेज़ी रस्मुल ख़त़ में क़ुरआन लिखना तो सरीह़ तह़रीफ़ है (और क़ुरआने पाक की तह़रीफ़ ह़राम है) कि अव्वलन : तो ऊपर ज़िक्र की हुई पाबन्दियों के ख़िलाफ़ है। दुवुम : سین،صاد،ثاء में, इसी त़रह़ ق और ک में, ز۔ذ۔ظ में फ़र्क़ बिल्कुल न हो सकेगा। मसलन ظاہر के मा'ना हैं ज़ाहिर और زاہر के मा'ना हैं चमक्दार या तरो ताज़ा। अब अगर आप ने अंग्रेज़ी में Zahir लिखा तो कैसे मा'लूम हो कि ظاہر है या زاہر। इसी त़रह़ تاہر और طاہر, قدیر और قادر, سائع और سمیع, عالم और علیم में किस त़रह़ फ़र्क़ रहेगा ? ग़रज़े कि औसाफ़े अल्फ़ाज़ तो दर कनार ख़ुद हुरूफ़ ही मुन्क़लिब (या'नी तब्दील) हो जाएंगे और मा'ना ही ख़त्म।" (फ़तावा नईमिया, स. 83)

करम से येह जज़्बा मैं पाऊं ख़ुदाया
मैं क़ुरआन सीखूं सिखाऊं ख़ुदाया

صَلُّوْا عَلَى الْحَبِيْب! صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلٰى مُحَمَّد

(35) घर में भी म-दनी माह़ोल बना लिया

रमज़ानुल मुबारक (1426 सि.हि., 2005 सि.ई.) में ए'तिकाफ़ के दिन बिल्कुल क़रीब थे, एक इस्लामी भाई (उ़म्र तक़रीबन 40 बरस) से मुलाक़ात होने पर एक मुबल्लिग़े दा'वते इस्लामी ने उन

को सरसरी तौर पर **इज्तिमाई ए'तिकाफ़** की दा'वत पेश की और वोह तब्लीगे़ कुरआनो सुन्नत की आ़लमगीर ग़ैर सियासी तह़रीक, **दा'वते इस्लामी** की त़रफ़ से मस्जिद में होने वाले आख़िरी अ़शरए **रमज़ानुल मुबारक** (1426 सि.हि., 2005 सि.ई.) के **इज्तिमाई सुन्नत ए'तिकाफ़** में मो'तकिफ़ हो गए। **आ़शिक़ाने रसूल** का **मदनी माह़ोल** देख कर ह़ैरान रह गए, दाढ़ी मुबारक सजा ली, इमामा शरीफ़ से सर सब्ज़ हो गया, दर्सो बयान का सिल्सिला शुरूअ़ कर दिया, **अपने घर में भी मदनी माह़ोल बना लिया,** घर की इस्लामी बहनों पर पर्दा नाफ़िज़ किया और ता दमे तह़रीर अपने शहर **की मुशावरत के निगरान हैं।**

ज़िन्दगी का क़रीना मिलेगा तुम्हें, मदनी माह़ोल में कर लो तुम ए'तिकाफ़
आओ दर्दे मदीना मिलेगा तुम्हें, मदनी माह़ोल में कर लो तुम ए'तिकाफ़

(वसाइले बख़्शिश, स. 644)

صَلُّوْا عَلَی الْحَبِیْب! صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلٰی مُحَمَّد

(36) मैं र-मज़ान के रोज़े भी कम ही रखता था

एक इस्लामी भाई बे नमाज़ी और फ़ेशन परस्त नौ जवान थे और फ़िल्में, डिरामे देखने, गाने बाजे सुनने के इन्तिहाई शौक़ीन।

रमज़ानुल मुबारक में रोज़े भी مَعَاذَ اللّٰه عَزَّوَجَلَّ कम ही रखते, अगर कोई समझाता भी तो टाल देते। एक दिन वोह किसी मुआ़मले के सबब परेशानी के आ़लम में जा रहे थे कि एक बा इमामा इस्लामी भाई से मुलाक़ात हो गई जो तब्लीग़े क़ुरआनो सुन्नत की आ़लमगीर ग़ैर सियासी तह़रीक, **दा'वते इस्लामी** के **मदनी माह़ोल** से वाबस्ता थे। वोह उन्हें इन्फ़िरादी कोशिश कर के जामेअ़ मस्जिद में होने वाले दा'वते इस्लामी के हफ़्तावार सुन्नतों भरे इज्तिमाअ़ में ले गए, मगर वोह शैत़ानी वस्वसों के बाइस कुछ ही देर में उठ कर चल दिये। दो दिन बा'द उन का एक दुन्यादार दोस्त उन को फ़िल्म देखने के लिये ले गया मगर किसी बात पर अनबन होने के बाइस वोह उस से अलग हो गए और यूं उन की क़िस्मत का सितारा चमका, हुवा यूं कि **माहे रमज़ानुल मुबारक** में उन के बड़े भाई साह़िब दा'वते इस्लामी की त़रफ़ से होने वाले इज्तिमाई ए'तिकाफ़ में मो'तकिफ़ थे, वोह भाईजान से मिलने जा पहुंचे, वहां सब्ज़ सब्ज़ इमामा सजाए आ़शिक़ाने रसूल उन्हें बहुत भले लगे। चांदरात एक इस्लामी भाई ने उन के भाईजान को **फ़ैज़ाने सुन्नत** और ना'तों की केसिट तोह़फ़े में दी, उस इस्लामी भाई ने फ़ैज़ाने सुन्नत का बाब **बे नमाज़ी की सज़ाएं** पढ़ा तो लरज़ उठे और केसिट में येह मुनाजात ...

गुनाहों की आ़दत छुड़ा मेरे मौला *मुझे नेक इन्सां बना मेरे मौला*

फ़रमाने मुस्तफ़ा صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم : जिस ने किताब में मुझ पर दुरूदे पाक लिखा तो जब तक मेरा नाम उस में रहेगा फ़िरिश्ते उस के लिये इस्तिग़्फ़ार (या'नी बख़्शिश की दुआ) करते रहेंगे। (طبرانی)

सुनी तो दिल चोट खा कर रह गया। اَلْحَمْدُ لِلّٰه عَزَّوَجَلَّ उन्हों ने गाने बाजे सुनना छोड़ दिये मगर नमाज़ की पाबन्दी न कर सके। एक आ़शिक़े रसूल की दा'वत पर दा'वते इस्लामी के हफ़्तावार सुन्नतों भरे इज्तिमाअ़ में दोबारा जा पहुंचे और आख़िर तक रुके रहे इख़्तिताम पर **आ़शिक़ाने रसूल** की मुलाक़ात के दिल नशीन अन्दाज़ ने उन्हें दा'वते इस्लामी का शैदाई बना दिया। उन्हों ने चेहरे को मदनी निशानी या'नी दाढ़ी मुबारक से और सर को सब्ज़ इमामा शरीफ़ से सर सब्ज़ो शादाब कर लिया। पांचों वक़्त बा जमाअ़त नमाज़ पढ़ने लगे और सिल्सिलए आ़लिय्या क़ादिरिय्या रज़विय्या में दाख़िल हो कर हुज़ूर ग़ौसे आ'ज़म عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللّٰهِ الْاَكْرَم के मुरीद भी बन गए **दा'वते इस्लामी** के मदनी कामों के लिहाज़ से तन्ज़ीमी त़ौर पर ज़ैली मुशावरत के ज़िम्मेदार बने और पाबन्दी से दर्स देने के साथ साथ दा'वते इस्लामी के मद्रसतुल मदीना में हिफ़्ज़ करने की सआ़दत भी पाने लगे।

आओ सुन्नत का फ़ैज़ान पाओगे तुम, मदनी माह़ोल में कर लो तुम ए'तिकाफ़
اِنْ شَآءَ اللّٰه जन्नत में जाओगे तुम, मदनी माह़ोल में कर लो तुम ए'तिकाफ़

(वसाइले बख़्शिश, स. 644, 645)

صَلُّوْا عَلَى الْحَبِيْب ! صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلٰى مُحَمَّد

फ़रमाने मुस्तफ़ा صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم : जो मुझ पर एक दिन में 50 बार दुरूदे पाक पढ़े क़ियामत के दिन मैं उस से मुसाफ़हा करूं (या'नी हाथ मिलाऊं)गा। (ابن بشکوال)

37 रीढ़ की हड्डी के दर्द से नजात

एक मुबल्लिगे़ दा'वते इस्लामी के मामूंज़ाद भाई जो कि मिल ओनर **(Mill owner)** हैं, **इन्फ़िरादी कोशिश** की बरकत से **माहे रमज़ानुल मुबारक** (1425 सि.हि.) में **दा'वते इस्लामी** के तह्त होने वाले सुन्नतों भरे **इज्तिमाई सुन्नत ए'तिकाफ़** में बैठने के लिये तय्यार हो गए। वोह अ़र्सए दराज़ से रीढ़ की हड्डी के शदीद दर्द में मुब्तला थे, कई डोंक्टरों को दिखाया और उन की तज्वीज़ कर्दा अदवियात भी इस्ति'माल कीं मगर ख़ातिर ख़्वाह फ़ाएदा न हुवा। वोह तश्वीश में थे कि दस दिन ए'तिकाफ़ में कैसे रहूंगा ! ख़ैर वोह दौराने ए'तिकाफ़ दीवार से टेक लगा कर बैठने की कोशिश करते, फ़ोम के गद्दे पर सोने की आ़दत थी यहां चटाई या दरी बिछा कर ज़मीन पर सुन्नत के मुता़बिक़ सोने की तरग़ीब दी जाती थी, उन के लिये इन्तिहाई दुश्वार था। मगर इस के सिवा कोई चारा न था। اَلْحَمْدُ لِلّٰه عَزَّوَجَلَّ चन्द ही दिन सुन्नत के मुता़बिक़ सोने की बरकत से उन्हें मह्सूस हुवा कि कमर के दर्द में काफ़ी कमी है। اَلْحَمْدُ لِلّٰه عَزَّوَجَلَّ दा'वते इस्लामी के **इज्तिमाई सुन्नत ए'तिकाफ़** की बरकत से आख़िरे कार रीढ़ की हड्डी के दर्द से उन की जान छूट गई।

तुम को तड़पा के रख दे गो दर्दे कमर, मदनी माह़ोल में कर लो तुम ए'तिकाफ़
पाओगे तुम सुकूं होगा ठन्डा जिगर, मदनी माह़ोल में कर लो तुम ए'तिकाफ़

(वसाइले बख़्शिश, स. 645)

صَلُّوا عَلَی الْحَبِیْب! صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلٰی مُحَمَّد

(38) हेप्पी न्यू यर का चस्का

जोधपूर (राजस्थान, अल हिन्द) के एक फ़ोटो ग्राफ़र (उ़म्र तक़रीबन 28 साल) जिन को 31 दिसम्बर को "हेप्पी न्यू यर" (Happy New Year) की बे ह़याई से भरपूर पार्टियों में शिर्कत का जुनून की ह़द तक चस्का था और वोह इस के लिये बम्बई पहुंच जाते थे। **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ का करम हो गया कि तब्लीग़े क़ुरआनो सुन्नत की आ़लमगीर ग़ैर सियासी तह़रीक, **दा'वते इस्लामी** की जानिब से बीच वाली मस्जिद (उदयपूर, राजस्थान, अल हिन्द) के अन्दर आख़िरी अ़शरए **माहे रमज़ानुल मुबारक** (1426 सि.हि., 2005 सि.ई.) में होने वाले **इज्तिमाई सुन्नत ए'तिकाफ़** में **आ़शिक़ाने रसूल** के साथ मो'तकिफ़ होने की उन्हें सआ़दत मिल गई। वहां लगने वाले सुन्नतों भरे मदनी ह़ल्क़ों, पुरसोज़ बयानात और रिक़्क़त अंगेज़ दुआ़ओं ने उन को झन्झोड़ कर रख दिया। अपने साबिक़ा गुनाहों से तौबा की, फ़ोटो ग्राफ़ी का काम तर्क कर दिया और पाबन्दी से

सदाए मदीना लगाने लगे या'नी मुसल्मानों को नमाज़े फ़ज्र के लिये जगाने लगे।

रंग रलियां मनाने का चस्का मिटे, मदनी माह़ोल में कर लो तुम ए'तिकाफ़
रक़्स की मह़फ़िलों की नुहूसत छुटे, मदनी माह़ोल में कर लो तुम ए'तिकाफ़

(वसाइले बख़्शिश, स. 645)

صَلُّوا عَلَى الْحَبِيب! صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلٰى مُحَمَّد

हमें हिजरी सिन का लिह़ाज़ रखना चाहिये : प्यारे प्यारे इस्लामी भाइयो ! ऐ काश ! जनवरी से नए साल के इस्तिक़्बाल के बजाए मुसल्मानों को "मदनी नए साल" या'नी हिजरी सिन के मुत़ाबिक़ शुरूअ़ होने वाले नए साल के इस्तिक़्बाल का जज़्बा नसीब हो जाए। اَلْحَمْدُ لِلّٰه عَزَّوَجَلَّ सिने हिजरी का नया साल यकुम मुह़र्रमुल ह़राम से शुरूअ़ होता है, हो सके तो हर साल मुह़र्रमुल ह़राम की पहली तारीख़ आपस में नए मदनी साल की मुबारक बाद देने का ख़ूब एहतिमाम फ़रमाइये।

(39) आ़शिक़ाने रसूल की सोह़बत की ब-र-कत

एक इस्लामी भाई दा'वते इस्लामी के मदनी माह़ोल से वाबस्ता होने से पहले "क्लीन शेव" थे, सुन्नतों भरी ज़िन्दगी से दूर ग़फ़्लतों की वादियों में भटक रहे थे। **रमज़ानुल मुबारक** का बा बरकत महीना था,

एक दिन अपने कमरे में बैठे थे कि उन के वालिद साहिब उन के छोटे भाई से फ़रमाने लगे : "जामेअ़ मस्जिद ख़्वाजगान" में **दा'वते इस्लामी** के तह़्त **रमज़ानुल मुबारक** के आख़िरी अ़शरे का **इज्तिमाई ए'तिकाफ़** हो रहा है। तुम जल्दी चलो वरना पहली सफ़ में जगह नहीं मिलेगी। येह चौंके और दिल में शौक़ पैदा हुवा कि मैं भी उन **आ़शिक़ाने रसूल** की ज़ियारत को जाऊं, उस दिन नमाज़े इशा मअ़ तरावीह़ उसी मस्जिद में अदा की। बा'दे तरावीह़ केसिट के ज़रीए़ ह़ाजी मुश्ताक़ عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللّٰهِ الرَّزَّاق की आवाज़ में येह ना'त शरीफ़ चलाई गई :

"सानी न कोई मेरे सोहने नबी लजपाल दा"

उन्हें इन्तिहाई सुरूर ह़ासिल हुवा। येह दूसरे दिन फिर जा पहुंचे तो चूंकि जुमे'रात थी लिहाज़ा वहां हफ़्तावार सुन्नतों भरा इज्तिमाअ़ शुरूअ़ हो गया। येह पहली बार शिर्कत कर रहे थे, दिल को अ़जीब सुकून व राह़त मुयस्सर हुई। तीसरे दिन भी गए तो केसिट इज्तिमाअ़ में मक्तबतुल मदीना से जारी कर्दा सुन्नतों भरा बयान **गाने बाजे की होल नाकियां** सुनाया गया, बयान सुन कर येह कांप उठे क्यूं कि इस में आ़म बोले जाने वाले गानों के कुफ़्रिय्या अश्आ़र की निशान देही की गई थी। مَعَاذَ اللّٰه येह भी कुफ़्रिय्या अश्आ़र बोलने की आफ़त में गिरिफ़्तार थे लिहाज़ा उन्हों ने तौबा की और तजदीदे ईमान भी किया। चूंकि दिल एक दम चोट खा चुका था लिहाज़ा बक़िय्या दिनों

फ़रमाने मुस्त़फ़ा صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰی عَلَیْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم : जो मुझ पर एक बार दुरूद पढ़ता है अल्लाह उस के लिये एक क़ीरात़ अज्र लिखता है और क़ीरात़ उहुद पहाड़ जितना है। (عبدالرزاق)

के लिये मो'तकिफ़ हो गए। **फ़ैज़ाने सुन्नत** में ज़ुल्फ़ें (गेसू) रखने की सुन्नतें और आदाब पढ़े तो ज़ुल्फ़ें रखने की निय्यत कर ली और 26 **रमज़ानुल मुबारक** को होने वाले इज्तिमाए ज़िक्रो ना'त में दाढ़ी रखने की भी निय्यत कर ली और सिल्सिलए आ़लिय्या क़ादिरिय्या रज़विय्या में दाख़िल हो कर सरकारे ग़ौसे आ'ज़म عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللهِ الْاَكْرَم के मुरीद बन गए। सलातो सलाम के सीग़े भी उन्हों ने वहीं याद किये और ए'तिकाफ़ से वापसी पर गानों की 100 से ज़ाइद केसिटों और T.V. को (कि उन दिनों "मदनी चेनल" नहीं था दीगर चेनल्ज़ में उ़मूमन गुनाहों भरे प्रोग्राम ही देखे जाते थे इस लिये) घर से निकाल बाहर किया। اَلْحَمْدُ لِلّٰه عَزَّوَجَلَّ **दा'वते इस्लामी** के मदनी कामों के लिहाज़ से तन्ज़ीमी त़ौर पर डिवीज़्नल क़ाफ़िला ज़िम्मादार भी बने।

ढोल बाजों को सुनने से बाज़ आओ तुम, मदनी माह़ोल में कर लो तुम ए'तिकाफ़
फ़िल्मी गाने न हरगिज़ कभी गाओ तुम, मदनी माह़ोल में कर लो तुम ए'तिकाफ़

(वसाइले बख़्शिश, स. 645)

प्यारे प्यारे इस्लामी भाइयो ! फ़िल्मी गाने सुनने सुनाने से बचिये, अपने ईमान की हिफ़ाज़त कीजिये, कई गाने ऐसे हैं जिन में कुफ़्रिय्या अश्आ़र होते हैं बराहे करम ! मक्तबतुल मदीना के मत़्बूआ़ रिसाले "गानों के 35 कुफ़्रिय्या अश्आ़र" का ज़रूर मुत़ालआ़ फ़रमाइये।

صَلُّوا عَلَى الْحَبِيب ! صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰی عَلٰی مُحَمَّد

(40) मिलावट वाले मसाले का कारोबार बन्द कर दिया

एक इस्लामी भाई पहले पहल ऐसे बे नमाज़ी थे, जुमुआ की नमाज़ भी नहीं पढ़ते थे। ख़ुश क़िस्मती से उन्हों ने तब्लीग़े कु़रआनो सुन्नत की आ़लमगीर ग़ैर सियासी तह़रीक, **दा'वते इस्लामी** के तह़त गुलज़ारे मदीना मस्जिद में **आ़शिक़ाने रसूल** के हमराह आख़िरी अ़शरए **रमज़ानुल मुबारक** (1425 सि.हि., 2004 सि.ई.) के **इज्तिमाई ए'तिकाफ़** में बैठने की सआ़दत ह़ासिल की। दस दिन में **आ़शिक़ाने रसूल** की सोह़बत ने उन की क़ल्बी कैफ़िय्यत बदल कर रख दी। اَلْحَمْدُ لِلّٰہ عَزَّوَجَلَّ उन्हों ने कुछ न कुछ नमाज़ सीख ली और पन्ज वक़्ता नमाज़े बा जमाअ़त के पाबन्द बन गए। सिल्सिलए आ़लिय्या क़ादिरिय्या रज़विय्या में दाख़िल हो कर हु़ज़ूर ग़ौसे आ'ज़म عَلَیۡہِ رَحۡمَۃُ اللّٰہِ الۡاَکۡرَم के मुरीद भी बन गए। ख़ुदाए ज़ुल जलाल عَزَّوَجَلَّ के फ़ज़्लो करम से नेक आ'माल का ऐसा ज़ेहन मिला कि 72 में से कमो बेश 63 **मदनी इन्आ़मात** पर अ़मल की कोशिश करने में काम्याब हो गए। मक्तबतुल मदीना के मत़्बूआ़ रसाइल कसरत से पढ़ने की आ़दत बन गई और ए'तिकाफ़ का एक बड़ा इन्आ़म येह भी

मिला कि येह जो मिलावट वाले मिर्च मसाले की सप्लाय का काम करते थे वोह तर्क कर दिया। उन के मसाले के कारख़ाने में तक़रीबन 44 मुलाज़िम काम करते थे, उन्हों ने वोह कारख़ाना ही ख़त्म कर दिया, क्यूं कि दौर बड़ा नाज़ुक है, बड़े पैमाने पर ख़ालिस मसाले के कारोबार में बाज़ार में खड़ा होना निहायत ही दुश्वार है। अगर्चे बा'ज़ सूरतों में मिलावट ज़ाहिर कर के बेचना जाइज़ सही मगर मिलावट का ए'तिराफ़ करें तो ख़रीदे कौन! उ़मूमन धोकाबाज़ी का दौर दौरा है। आज कल मुसल्मानों की सिह़्ह़त की किस को पड़ी है! बस दौलत चाहिये ख़्वाह वोह ह़लाल हो या مَعَاذَ اللّٰہ عَزَّوَجَلَّ ह़राम। बहर ह़ाल आ़शिक़ाने रसूल की सोह़बत की बरकत से येह रिज़्क़े ह़लाल के ह़ुसूल में मश्ग़ूल हो गए। اَلْحَمْدُ لِلّٰہ عَزَّوَجَلَّ दा'वते इस्लामी के मदनी माह़ोल की बरकत से इशराक़, चाश्त, अव्वाबीन और तहज्जुद के नवाफ़िल के साथ साथ पहली सफ़ में नमाज़े पन्जगाना बा जमाअ़त अदा करने की भी आ़दत बन गई।

छोड़ दो छोड़ दो भाई रिज़्क़े ह़राम, मदनी माह़ोल में कर लो तुम ए'तिकाफ़
आओ करने लगोगे बहुत नेक काम, मदनी माह़ोल में कर लो तुम ए'तिकाफ़

(वसाइले बख़्शिश, स. 645)

صَلُّوا عَلَی الْحَبِیْب ! صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلٰی مُحَمَّد

या रब्बे मुस्तफ़ा عَزَّوَجَلَّ ! हर मुसल्मान का ए'तिकाफ़ क़बूल फ़रमा। **या अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ ! **मो'तकिफ़ीने मुख़्लिसीन** के तुफ़ैल हमारी बे हिसाब मग़्फ़िरत कर। **या अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ ! हमें दा'वते इस्लामी के मदनी माहोल में इस्तिक़ामत अ़ता फ़रमा। **या अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ ! हमें सच्चा आ़शिक़े रसूल बना। **या अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ ! उम्मते महबूब صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم की मग़्फ़िरत फ़रमा।

اٰمِين بِجاهِ النَّبِيِّ الْاَمين صَلَّى اللهُ تعالٰی علیہ واٰلہٖ وسلَّم

हर गुनह से बचा मुझ को मौला, नेक ख़स्लत बना मुझ को मौला

तुझ को रमज़ान का वासित़ा है, या ख़ुदा तुझ से मेरी दुआ़ है

(वसाइले बख़्शिश, स. 135)

ग़मे मदीना, बक़ीअ़,
मग़्फ़िरत और बे हिसाब
जन्नतुल फ़िरदौस में आक़ा के
पड़ोस का त़ालिब

शा'बानुल मुअ़ज़्ज़म 1438 सि.हि.

मई 2017 ई.

उन्वान	सफ़्हा	उन्वान	सफ़्हा
फ़ैज़ाने सुन्नत (जिल्द अव्वल)		मोटा ताज़ा शैतान	39
फ़ैज़ाने बिस्मिल्लाह	1	नव[9] शयातीन के नाम व काम	40
अधूरा काम	1	घरेलू झगड़ों का इलाज	41
बिस्मिल्लाह पढ़ जाइये	1	खाने से पहले बिस्मिल्लाह ज़रूर पढ़िये	42
जिन्नात से सामान की हिफ़ाज़त का त़रीक़ा	2	खाने को शैतान से बचाओ	42
बिस्मिल्लाह दुरुस्त पढ़िये	2	بِسْمِ اللّٰہِ اَوَّلَہٗ وَ اٰخِرَہٗ	43
खलबली मच गई	3	शैतान ने खाना उगल दिया	43
बिस्मिल्लाह की "ب" की जामेइय्यत	4	निगाहे मुस्त़फ़ा से कुछ पोशीदा नहीं	44
इस्मे आ'ज़म	5	सिद्दीक़े अक्बर ने मदनी ऑपरेशन फ़रमाया !	45
इस्मे आ'ज़म के साथ दुआ क़बूल होती है	5	आक़ा ﷺ ने आंखों को रोशन फ़रमा दिया !	47
टेढ़ी नाक	6	आक़ा ﷺ ने गिल्टियों का इलाज फ़रमा दिया	48
आ'ला ह़ज़रत رَحْمَۃُ اللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہ की करामत	8	आक़ा ﷺ के करम से दमा के मरीज़ को शिफ़ा	
पुर असरार बूढ़ा और काला जिन्न	11	मिली	48
निय्यत साफ़ मन्ज़िल आसान	16	आक़ा ﷺ ने बरस का इलाज फ़रमाया	50
पांच मदनी फूल	17	आक़ा ﷺ ने हाथ के आबले दुरुस्त कर दिये	50
जैसा दरवाज़ा वैसी भीक	18	76 हज़ार नेकियां	53
रह़मत भरी ह़िकायत	19	ब वक़्ते ज़ब्ह़ الرَّحۡمٰنِ الرَّحِیۡمِ न पढ़ने की ह़िक्मत	54
बाग़ का झूला	21	उन्नीस[19] ह़ुरूफ़ की ह़िक्मतें	55
100 अफ़राद का क़ातिल बख़्शा गया	22	क़ब्र से अ़ज़ाब उठ गया	55
क़ाबिले रश्क मौत	24	बच्चे की मदनी तरबियत की ह़िकायत	56
"बिस्मिल्लाह" कीजिये कहना मम्नूअ़ है	26	दा'वते इस्लामी के तरबियती कोर्स की बहार	59
"बिस्मिल्लाह" कहना कब कुफ़्र है ?	27	मदनी क़ाफ़िले से रोकने का नुक़्सान	61
फ़िरिश्ते नेकियां लिखते रहते हैं	27	दरिन्दों का घर	62
हर हर क़दम पर एक नेकी	28	बुख़ार का इलाज	63
किश्ती में नेकियां ही नेकियां	28	"या नबी" के पांच ह़ुरूफ़ की निस्बत से	
ड्राइवर पर इन्फ़िरादी कोशिश	29	बुख़ार के 5 मदनी इलाज	64
बयान की केसेट तोह़फ़तन दीजिये	30	आंखें रोशन हो गईं	66
कोई माने या न माने अपना सवाब खरा	31	दर्दे सर का इलाज	68
रूए ज़मीन की सल्त़नत से बेहतर	31	बिस्मिल्लाह से इलाज का त़रीक़ा	69
ज़हरे क़ातिल बे असर हो गया	31	"या अल्लाह" के छ[6] ह़ुरूफ़ की निस्बत से	
ख़ौफ़नाक ज़हर	32	आधे सर के दर्द के 6 इलाज	70
आग थी या बाग़ ?	34	"या मुस्त़फ़ा" के सात ह़ुरूफ़ की निस्बत से	
ह़ैरत अंगेज़ ह़ादिसा	35	दर्दे सर के 7 इलाज	71
नमाज़े फ़ज्र के लिये जगाना सुन्नत है	37	नक्सीर फूटने का इलाज	73
कौन पाउं से हिलाए ?	38	दवा की ह़िकायत	73
मरते वक़्त कलिमा पढ़ने की फ़ज़ीलत	38	दवा पर नहीं ख़ुदा पर भरोसा रखिये	74

उ़न्वान	सफ़ह़ा	उ़न्वान	सफ़ह़ा
रूह़ की सैराबी	74	सादा काग़ज़ का भी अदब	117
उ़म्दगी से पढ़ने की फ़ज़ीलत	75	राह चलते हुए काग़ज़ात को लात मत मारिये !	117
नामे ख़ुदा की मिठास बाइ़से नजात हो गई	75	क़लम की छीलन	118
क़ियामत के लिये निराली सनद	76	सियाही के नुक़्ते का अदब	119
तू अ़ज़ाब से बच गया	77	दीवारों पर इश्तिहार न लगाएं	120
कफ़न पर लिखने का त़रीक़ा	77	अख़्बारात रद्दी में न बेचें	121
जा, हम ने तुझे बख़्श दिया	78	मेरे वालिद साहि़ब ज़ेहनी मरीज़ हैं	122
ख़ालिस अ़मल की पहचान	79	मदनी क़ाफ़िले पर सरकार ﷺ की करम नवाज़ी	124
आफ़तें दूर होने का आसान विर्द	80	सरकार ने खाना खिलाया	126
मुश्किलें ह़ल होंगी اِنْ شَآءَاللّٰہ عَزَّوَجَلَّ	81	हर ज़बान के ह़ुरूफ़ का अदब कीजिये	127
नई ज़िन्दगी	82	नम्बरों की निस्बतें	129
"बिस्मिल्लाह" की दीवानी	85	मुक़द्दस अवराक़ ठन्डे करने का त़रीक़ा	130
बिस्मिल्लाह लिखने की फ़ज़ीलत	86	मुक़द्दस अवराक़ दफ़्न करने का त़रीक़ा	131
ज़मीन पर लिखना	89	"लूट लो फ़ैज़ाने بِسۡمِ اللّٰہِ الرَّحۡمٰنِ الرَّحِیۡمِ" के	
हर ज़बान के ह़ुरूफ़ की ता'ज़ीम कीजिये	89	उन्तीस ह़ुरूफ़ की निस्बत से 29 मदनी फूल	132
मदीना शरीफ़ की एक दिल ख़राश याद	91	बिस्मिल्लाह के सात ह़ुरूफ़ की निस्बत से	
सियाने की दलील	92	7 ह़िकायात	139
दीवाने का जवाब	93	(1) लकड़हारा कैसे मालदार बना ?	139
शराबी की बख़्शिश हो गई	95	केसेट इज्तिमाअ़ में दीदारे मुस्त़फ़ा ﷺ	141
मग़्फ़िरत का इन्आ़म	96	झूटा ख़्वाब सुनाने का अ़ज़ाब	145
अच्छी निय्यत की बरकतें	97	बे सोचे समझे बोल पड़ने वालो ख़बरदार	145
अल्लाह तआ़ला की ख़ुफ़्या तदबीर	98	आ'ला ह़ज़रत का ख़्वाब	147
रोंगटे खड़े कर देने वाली ह़िकायत	99	आज किस ने ख़्वाब देखा ?	147
मदीने का मुसाफ़िर	102	बिशारतें बाक़ी हैं	148
शराबी वली बन गया	105	अपने बारे में अच्छा ख़्वाब देखने वाले को इन्आ़म	148
बा अदब बा नसीब बे अदब बे नसीब	106	इमाम बुख़ारी की वालिदा का ख़्वाब	149
जानवर भी वली की ता'ज़ीम करते हैं	107	(2) यहूदी और यहूदन की दिलचस्प ह़िकायत	150
अ़क़ीदत मन्दों की भी मग़्फ़िरत	108	(3) बुज़ुर्ग पहलवान	154
मुतबर्रक काग़ज़ उठाने की फ़ज़ीलत	109	(4) कूंएं से थेली कैसे निकली ?	156
मुफ़्तिये आ'ज़मे हिन्द رَحۡمَۃُ اللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیۡہِ और		(5) फ़िरऔ़न का मह़ल	157
काग़ज़ात व ह़ुरूफ़ की ता'ज़ीम	110	घर की ह़िफ़ाज़त के लिये	158
ह़ुज़ूर मुफ़्तिये आ'ज़मे हिन्द رَحۡمَۃُ اللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیۡہِ और		(6) आप इन्सान हैं या जिन्न ?	158
दुख्यारों की ग़म ख़्वारी	111	(7) ज़हर आलूद खाना	160
मुक़द्दस काग़ज़ की बरकत	113	मह़मूद ग़ज़्नवी عَلَیۡہِ رَحۡمَۃُ اللّٰہِ الۡقَوِی की	
चार दुआ़ओं की ह़िकायत	114	बारगाहे रिसालत में मक़्बूलिय्यत	164
मिट्टी का शिकस्ता पियाला	116	40 रूह़ानी इलाज	167

उ़न्वान	सफ़ह़ा	उ़न्वान	सफ़ह़ा
आदाबे त़आ़म	177	मिल कर खाने में मे'दे का इ़लाज	199
बा कमाल फ़िरिश्ता	177	एक का खाना दो[2] को काफ़ी है	199
खाना भी इ़बादत है	178	क़नाअ़त की ता'लीम	200
लुक़्मए ह़लाल की फ़ज़ीलत	179	तनख़्वाह कम करवा दी	200
खाने की निय्यत किस त़रह़ करें	180	वक़्फ़ की चीज़ों के बारे में एह़तियात़	201
खाना कितना खाना चाहिये	180	खाने वाले की मग़्फ़िरत की एक सूरत	202
निय्यत की अहम्मिय्यत	181	टेबल कुर्सी पर खाना सुन्नत नहीं	203
सुरमा क्यूं डाला ?	181	सदरुश्शरीअ़ह फ़रमाते हैं	203
खाने की 43 निय्यतें	182	कौन सा दस्तर ख़्वान सुन्नत है ?	204
मिल कर खाने की मज़ीद निय्यतें	184	हर लुक़्मे पर ज़िक्रुल्लाह	204
खाने का वुज़ू मोह़ताजी दूर करता है	185	हर लुक़्मे पर पढ़ने का त़रीक़ा	205
खाने का वुज़ू घर में भलाई बढ़ाता है	185	दाता साहि़ब की त़रफ़ से मदनी क़ाफ़िले की ख़ैर ख़्वाही	206
खाने के वुज़ू की नेकियां	185	साहि़बे मज़ार ने मदद फ़रमाई	207
शैत़ान से हि़फ़ाज़त	186	औलिया बा'दे वफ़ात भी नफ़्अ़ पहुंचाते हैं	209
बीमारियों से हि़फ़ाज़त के नुस्ख़े	186	कौन सा खाना बीमारी है ?	210
ड्राइवर की पुर असरार मौत	187	शैत़ान के लिये खाना ह़लाल	210
बाज़ार में खाना	188	खाने को शैत़ान से बचाओ	210
बाज़ार की रोटी	188	शैत़ान से हि़फ़ाज़त का नुस्ख़ा	211
बाज़ारी खाना बे बरकत होता है	189	घरेलू झगड़ों का इ़लाज	211
होटल में खाना कैसा ?	190	बिस्मिल्लाह पढ़ना भूल जाए तो क्या करे	212
मूसीक़ी की आवाज़ से बचना वाजिब है	190	शैत़ान ने खाना उगल दिया !	212
कानों में उंग्लियां डालना	191	निगाहे मुस्त़फ़ा से कुछ पोशीदा नहीं	213
मूसीक़ी की आवाज़ आती हो तो हट जाइये	192	मां चारपाई से उठ खड़ी हुई !	214
घर दर्स की बरकत की हि़कायत	193	दुआ़ मांगने के 17 मदनी फूल	217
ईमान की हि़फ़ाज़त का ज़रीआ़	194	बैठने की एक सुन्नत	220
क़ब्र की रोशनी	195	घुटने खड़े कर के खाने के फ़वाइद	220
क़ब्रें जगमगा रही होंगी	195	खाना और पर्दे में पर्दा	221
घर वालों की इस्लाह़ ज़रूरी है	196	टेबल कुर्सी पर खाना	222
मक्तबतुल मदीना के रिसाले की बहार	197	शादी खाना बरबादी के अस्बाब	222
मिल कर खाने में बरकत है	198	मैं दा'वते इस्लामी में कैसे आया ?	224
सेर होने का नुस्ख़ा	198	सादा लिबास की फ़ज़ीलत	226
मिल कर खाने की फ़ज़ीलत	199	फ़ेशन परस्तो ! ख़बरदार !!	227

उ़न्वान	सफ़ह़ा	उ़न्वान	सफ़ह़ा
लिबासे शोहरत किसे कहते हैं ?	227	टेक लगा कर खाना सुन्नत नहीं	252
टिपटॉप करने वालों के लिये लम्ह़ए फ़िक्रिया	228	टेक लगा कर मत खाओ	252
पैवन्द दार लिबास की फ़ज़ीलत	229	टेक लगा कर खाने की चार सूरतें	252
खड़े हो कर खाना कैसा ?	229	टेक लगा कर खाने के तिब्बी नुक़्सानात	253
खड़े हो कर खाने के तिब्बी नुक़्सानात	230	रोटी का एह़तिराम करो	253
सीधे हाथ से खाएं पियें	230	खाने के इसराफ़ से तौबा कीजिये	254
शैत़ान का त़रीक़ा	230	इसराफ़ किसे कहते हैं ?	256
सीधे ही हाथ से लें और दें	230	दुबले आदमी की फ़ज़ीलत	257
हर काम में उलटा हाथ क्यूं ?	231	लोगों से शरमा कर सुन्नत तर्क नहीं की जाती !	259
तेरा सीधा हाथ कभी न उठे !	232	ख़ूब इन्फ़िरादी कोशिश कीजिये	259
तेरा चेहरा बिगड़ जाए	233	औलाद को कम अ़क़्ली से बचाने का नुस्ख़ा	260
या अल्लाह ! सबाही़ को अन्धा कर दे !	234	तंगदस्ती का इलाज	260
साहि़बे मज़ार की इन्फ़िरादी कोशिश	236	शरमा कर सुन्नतें मत छोड़िये	261
ख़्वाब के ज़रीए़ घोड़ी का तोह़फ़ा	237	तंगदस्ती के 44 अस्बाब	262
सिर्फ़ अपनी जानिब से खाइये	238	गिरी हुई रोटी खाने की फ़ज़ीलत	265
बीच में से मत खाइये	239	रोटी के टुकड़े की हि़कायत	266
आप कहीं बीच से तो खाना नहीं खाते !	239	मदनी सोच	266
दूसरों को शरमिन्दगी से बचाइये	240	दस्तर ख़्वान बढ़ाओ !	267
बीच में बरकत की वज़ाह़त	241	जब मैं ने रिसाला "भयानक ऊंट" पढ़ा....!	267
खाने की पांच सुन्नतें	241	रिसाले तक़्सीम फ़रमाइये	270
डरावने ख़्वाबों से नजात	242	उंगलियां चाटना सुन्नत है	271
मुख़्तलिफ़ खजूरों का थाल	243	न मा'लूम खाने के किस हिस्से में बरकत है	271
पांच उंगलियों से खाना गंवारों का त़रीक़ा है	243	खाने की बरकतें हा़सिल करने का त़रीक़ा	271
शैत़ान के खाने का त़रीक़ा	244	उंगलियां चाटने की तरतीब	272
तीन उंगलियों से खाने का त़रीक़ा	244	उंगलियां तीन[3] मरतबा चाटना सुन्नत है	273
चमचे के साथ खाने की हि़कायत	245	बरतन चाटना सुन्नत है	273
चम्मच से कब खा सकते हैं	246	आख़िर में बरकत ज़ियादा होती है	273
हाथ से खाने के तिब्बी फ़वाइद	247	बरतन दुआ़ए मग़्फ़िरत करता है	274
APENDIX का इलाज हो गया	247	बरतन चाटने की हि़क्मतें	274
बिग़ैर बेहोशी के ऑपरेशन	248	ईमान अफ़्रोज़ इर्शाद !	275
शहज़ादे की शहादत	251	सुन्नत की बरकतें	275
ह़ज़रते उ़र्वह की सख़ावत	251	एक ग़ुलाम आज़ाद करने का सवाब	276

उ़न्वान	सफ़ह़ा	उ़न्वान	सफ़ह़ा
धो कर पीने का त़रीक़ा	276	मूसलाधार बारिश	399
धो कर पीने के बा'द बचे हुए क़त़रे	277	हाथों की चिक्नाई	301
बरतन धो कर पीने के त़िब्बी फ़वाइद	278	सांप का ख़त़रा	301
गुर्दे की पथरी कैसे निकली ?	278	दूसरों के बरतन इस्ति'माल करना कैसा ?	302
गर्म खाना मन्अ़ है	279	खाने की 25 सुन्नतें	302
खाना कितना ठन्डा किया जाए !	279	खाने के 92 मदनी फूल	306
गर्म खाने के नुक़्सानात	280	खाने की निय्यत कर लीजिये	306
खाने में मख्खी	280	पर्दे में पर्दा की आ़दत बनाइये	307
साइन्स का ए'तिराफ़	281	खाते हुए भी ज़िक्रुल्लाह जारी रखिये	309
गोश्त नोच कर खाओ	281	तीन उंग्लियों से खाने की आ़दत डालिये	310
मुर्ग़ी की टांग की काली डोरियां निकाल दीजिये	282	रोटी का कनारा तोड़ना	311
12 साल का गुमशुदा भाई मिल गया	283	दांत का काम आंत से मत लीजिये	311
दुआ़ क़बूल न होने में भी ह़िक्मतें...	284	खाना खाने में फल पहले खाने चाहिएं	312
ख़िलाल	285	खाने को ऐ़ब मत लगाइये	313
किरामन कातिबीन और ख़िलाल न करने वाले	286	फलों को ऐ़ब लगाना ज़ियादा बुरा है	313
पान खाने वाले मुतवज्जेह हों	286	खाने के दौरान अच्छी बातें कीजिये	314
दांतों में कमज़ोरी	288	अच्छी अच्छी बोटियां ईसार कीजिये	314
ख़िलाल कैसा हो ?	288	गिरे हुए दाने खा लेने के फ़ज़ाइल	315
ख़िलाल की सात निय्यात	289	खाने में फूंक मारना मन्अ़ है	316
कुल्ली का त़रीक़ा	290	पानी चूस कर पीना सीखिये	316
ख़िलाल की त़िब्बी ह़िक्मतें	291	लज़्ज़त सिर्फ़ ज़बान की जड़ तक है	317
दांतों का केन्सर	291	बरतन चाट लीजिये	317
नक़्ली कथ्थे की तबाह कारियां	292	धो कर पीने का त़रीक़ा	318
दांतों में ख़ून आने के अस्बाब	293	खाने के बा'द मस्ह़ करना सुन्नत है	319
दांतों का बेहतरीन इ़लाज मिस्वाक	294	पिछले गुनाह मुआ़फ़	320
मिस्वाक के 14 मदनी फूल	294	कितना खाए ?	322
दांतों की ह़िफ़ाज़त के लिये चार मदनी फूल	295	क़ैलूला सुन्नत है	323
मुंह की बदबू का इ़लाज	296	बरकत उड़ाने वाले अफ़्आ़ल	323
मुंह की बदबू का मदनी इ़लाज	297	किसी के दरख़्त का फल खाना कैसा ?	324
एक सांस में पढ़ने का त़रीक़ा	297	बिग़ैर पूछे खाना कैसा ?	325
पांच ख़ुश्बूदार मुंह	298	मुर्ग़ी का दिल	326

उ़न्वान	सफ़ह़ा	उ़न्वान	सफ़ह़ा
पकी हुई ख़ून की रगें मत खाइये	326	300 आदमी सुव्वर बन गए !	358
"बिस्मिल्लाह करो" कहना सख़्त मम्नूअ़ है	326	क्या सुव्वर का नाम लेने से वुज़ू टूट जाता है ?	362
सड़ा हुवा गोश्त खाना ह़राम है	327	तीसरी रोटी कहां गई ?	363
साबित हरी मिर्चें	327	माल की मज़म्मत में बुज़ुर्गों के इर्शादात	366
बची हुई रोटियों का क्या करें ?	327	मदनी मह़बूब की ज़ुल्फ़ों का असीर	368
केकड़ा और झींगा खाना कैसा ?	328	हाथों में छाले पड़ गए	369
जिन्नात की ग़िज़ाओं का बयान	329	दिल को नर्म करने का नुस्ख़ा	371
जिन्नात का वफ़्द बारगाहे रिसालत में	329	जूती सी रहे थे	372
जिन्नात इन्सानों से नव गुना हैं	330	ख़ुश ज़ाएक़ा फ़ालूदा	372
मुसल्मान के दस्तर ख़्वान पर जिन्नात	330	जैसी ने'मत वैसा ह़िसाब	373
सरकार ﷺ से सांप की सरगोशी	330	ने'मत की अक़्साम और उन के बारे में	
काले आदमी	331	क़ियामत के सुवालात	375
जिन्नात लीमूं से घबराते हैं	333	मुबाह़ कब इ़बादत बनता है ?	376
जिन्नात सफ़ेद मुर्ग़ से डरते हैं	333	लुत़्फ़ अन्दोज़ी के लिये मुबाह़ का इस्ति'माल	376
जिन्नात के जानवरों का चारा	334	आख़िरत में सो100 ह़िस्से कमी	377
जिन्नात इग़्वा भी करते हैं !	334	नाचरंग की मह़फ़िल जारी थी कि....	378
जिन्नात और जादू से ह़िफ़ाज़त के लिये	335	ज़ल्ज़ला गुनाहों की वज्ह से आता है	379
जिन्नात क़त्ल भी करते हैं	337	ज़िन्दा बच्ची प्रेशर कुकर में उबाल दी !	379
मेरे ह़राम मग़्ज़ का बल ख़त्म हो गया	340	कटा हुवा सर	380
मुझे नाबीना रहना मन्ज़ूर है	341	"या रसूलल्लाह" लिखने की बरकत	381
95 ह़िकायात	343	दुश्वार गुज़ार घाटी	382
दुरूद शरीफ़ की फ़ज़ीलत	343	शिक्वा नहीं करना चाहिये	383
तीन3 परिन्दे	343	परेशान ह़ाल की दुआ़	383
दूसरे दिन के लिये जम्अ़ रखना	344	मरह़बा ! ऐ फ़ाक़ा मस्ती !	385
मुर्दा बकरी कान झाड़ती उठ खड़ी हुई	345	फ़ुज़ूल फ़िक्रें छोड़ दीजिये	385
फ़ौत शुदा मदनी मुन्ने ज़िन्दा हो गए !	347	अ़जीबो ग़रीब मरीज़	386
सात खजूरें	350	मुसीबत छुपाने की फ़ज़ीलत	388
मैं रोज़ाना दो2 फ़िल्में देखता था	352	बीबी आ़इशा के ईसाले सवाब की ह़िकायत	389
थोड़े खाने में बरकत	353	सभी को ईसाले सवाब करना चाहिये	390
जश्ने विलादत के लड्डूओं में बरकत	355	बड़ी बी का ईमान अफ़्रोज़ ख़्वाब	391
वालिद स़ाह़िब से अ़ज़ाब उठ गया	356	इस्लामी बहनों में मदनी इन्क़िलाब	393

उन्वान	सफ़हा	उन्वान	सफ़हा
बा कमाल रूमाल	394	अब्दाल	432
अबू हुरैरा का तोशादान	395	भूके तलबा की फ़रियाद	435
सदरुल अफ़ाज़िल की करामत	397	बारगाहे रिसालत में फ़रियाद सुनी जाती है	437
लंगड़े लूलों को भी हिस्सा मिले	399	हिपेटाइटिस C से नजात	438
अक़ीदत हो तो नाम भी काम कर जाता है	400	रोशन ज़मीर नानबाई	439
ट्यूब लाइट ने इताअ़त की	401	गुदड़ी का ला'ल	440
गेहूं घुन से बचें, सरों के दर्द मिटें	402	तीन चीज़ें तीन चीज़ों में पोशीदा हैं	441
गुंधा हुवा आटा दे दिया	404	मेरी बद मआ़शी की आ़दत कैसे ख़त्म हुई ?	442
सदक़ा करने से माल कम नहीं होगा	404	दा'वते इस्लामी का अव्वलीन मदनी मर्कज़	444
कूंएं से भरने से पानी बढ़ता है	405	एक हिकायत	446
ज़कात न देने के अ़ज़ाबात	406	इमदादे मुस्तफ़ा की ईमान अफ़रोज़ हिकायत	447
क़ाज़ी साहिब का ख़मीर	409	यक तरफ़ा सुन कर फ़ैसला नहीं करना चाहिये	449
इमाम अहमद बिन हम्बल की करामत	410	चुग़ल ख़ोर जन्नत में नहीं जाएगा	450
ता'ज़ीम का सिला	411	इ़ज़्ज़त घटाने वाली चीज़ें	450
सोने की जूतियां	412	नेक बन्दे की पहचान क्या है ?	452
कोड़े की हर ज़र्ब पर मुआ़फ़ी का ए'लान	414	साहिबे मज़ार ने इमदाद फ़रमाई	453
चोर ने सब्र की तल्क़ीन की	416	मौत कौन देता है ?	455
वलियों पर अल्लाह की करम नवाज़ियां	416	ह़यातुल औलिया	456
दिमाग़ की रसोली ग़ाइब हो गई	417	आ'ला ह़ज़रत और ककड़ी	457
दिलों की बात जान ली	419	खजूर और ककड़ी खाना सुन्नत है	459
क्या हुसैन बिन मन्सूर ने اَنَا الْحَق कहा था ?	420	15 दिन तक खाना नहीं खाऊंगा !	460
मैं शराबी और चोर था	422	पहले बुज़ुर्ग खाना शुरूअ़ करें	461
क़ाफ़िलों की दा'वत देते रहिये	424	पहनने में उलटी जूती से पहल करने का कफ़्फ़ारा	462
शराब के एक घूंट का अ़ज़ाब	424	सफ़रे मदीना की सआ़दत मिल गई !	462
कलिमा नसीब न हुवा	425	जव शरीफ़ का दलिया	464
शराब के तिब्बी नुक़्सानात	426	बे बरकती का एक सबब फ़ुज़ूल ख़र्चियां	466
अन्धा शराबी	427	तीन अफ़राद की दुआ़ क़बूल नहीं	467
कपड़ा ख़ुद बख़ुद बुनता रहा	428	हाथों से किये का कोई इलाज नहीं	469
ख़रबूज़े वाला	429	मोटापे का एक सबब	470
रूहानी हाकिम	430	ख़तरे में डालने वाली 15 बातों की मिसालें	471
356 औलियाए किराम	431	आप कहां से खाते हैं ?	474

उ़न्वान	सफ़हा	उ़न्वान	सफ़हा
भुना हुवा परिन्दा	474	दुन्या को छोड़ दो	505
बेटी पैदा होने की बिशारत	476	दूसरों के माल से मायूस हो जाओ	505
दो करामतें साबित हुईं	477	किसी का माल न ही लेना भला है	505
सिद्दीक़े अक्बर को इल्मे ग़ैब था	478	किसी का मोह़ताज न हो	506
बेटा पैदा होने की बिशारत	479	पेट बालिश्त भर ही तो है	506
मज़ेदार शरबत	481	सिर्फ़ क़ब्र की मिट्टी ही से पेट भरेगा	507
12 माह की इबादत से बढ़ कर नफ़्अ़ बख़्श	482	सो100 रोटियां	508
सरकार की भूक शरीफ़	483	इलर्जी का मरज़ ठीक हो गया	509
आ़शूरा की ख़ैरात की बरकात	484	तरबियती कोर्स क्या है ?	510
आ़शूरा के फ़ज़ाइल	486	बच्चे को नाज़ेरा कुरआन पढ़ाने की फ़ज़ीलत	511
5 अहा़दीसे मुबारका	486	तरबियती कोर्स में अख़्लाक़ी तरबियत	511
सारा साल अमराज़ से हि़फ़ाज़त	487	एक के बदले दस10	513
ख़ौफ़नाक ज़ल्ज़ला	488	एह़सान का बदला	515
619 ट्रकों का सामान	489	वली की ख़िदमत रंग लाती है	518
दो2 बार मौत के मुंह में	489	एक लुक़्मे के सबब तीन अफ़्राद जन्नती	519
सूखी रोटी का टुकड़ा	491	बग़दाद का ताजिर	521
वज़ीरे आ'ज़म का दा'वत नामा	492	ख़बीस गुमान ख़बीस दिल से	523
दोनों जहां में काम्याबी	493	बद गुमानी की सज़ा	523
सरकार का बेदारी में 75 बार दीदार	493	बद गुमानी ह़राम है	524
ना'त ख़्वान को क्यूं नुक़्सान पहुंचा	494	रोने वाले को देख कर तुम भी रो पड़ो	526
शाही दस्तर ख़्वान का वबाल	496	सरीद और लज़ीज़ गोश्त	527
दो तिहाई दीन चला जाता है	497	गोश्त और ह़ल्वा	528
ख़ुशामद की मज़म्मत	497	मा'ज़ूर बच्चा चलने फिरने लगा !	531
मालीदा का सवाब भी मिला	498	मुसल्मान के जूठे में शिफ़ा है	533
अंगूर का दाना	499	मफ़्लूज की हाथों हाथ शिफ़ायाबी	533
ख़्वाब में दम की बरकत	500	सय्यिद को नोकर रखना कैसा ?	535
अनोखी शहज़ादी	501	जिसे ख़ुदा रख्खे उसे कौन चख्खे	536
इमाम बुख़ारी के उस्ताज़	503	रोज़ी का वसीला	537
क़नाअ़त में इ़ज़्ज़त है	504	बे मांगे मिले तो ...	539

उन्वान	सफ़हा	उन्वान	सफ़हा
तोहफ़ा या रिश्वत ?	540	बुढ़ापे की आसानी के लिये	577
सेबों के तबाक़	541	बिग़ैर तेल के पकाने का तरीक़ा	577
कौन किस का तोहफ़ा न ले	541	गटर की नाली का तहफ़्फ़ुज़	578
आरिज़ी तौर पर स्कूटर लेना	545	कंकरियां और सुरसुरियां	579
दा'वतों की दो क़िस्में	546	साबित गुर्दा सालन में मत डालिये	579
तोहफ़ा लौटाने की दो[2] हिकायात	552	फ़ज़ाई मछली	581
ज़िन्दा दरगोर हो गए	555	मछली थोड़ी मिक़्दार में खानी चाहिये	582
अदमे इताअत का नतीजा	556	जालीनूस कौन था ?	582
अक़्लमन्द बादशाह	557	ज़बीहा के 22 मम्नूआ अजज़ा	583
इब्ने तूलून का क़ब्र में हाल	558	ख़ून	584
दुआए मग़्फ़िरत करने वाले की मग़्फ़िरत हो गई	559	हराम मग़्ज़	584
70 दिन पुरानी लाश	561	पट्ठे	585
सुवालात व जवाबात	565	ग़ुदूद	585
दुरूद शरीफ़ की फ़ज़ीलत	566	कपूरा	585
खाना नाप कर लीजिये	567	ओझड़ी	586
छ[6] लाख क़ैदी !	568	हराम चीज़ों की पहचान किस तरह हासिल हो ?	586
मन्न व सल्वा	568	बे नमाज़ी के हाथ की रोटी	587
खाना ख़राब हो जाने की वज्ह	569	तलबाए इल्मे दीन की ख़िदमत सआदत है	588
12 चश्मे बह निकले	570	या अल्लाह عَزَّوَجَلَّ तलबा के सदक़े मुझे बख़्श दे	589
नोकर का नवाफ़िल पढ़ना कैसा ?	571	शिकायत करने का तरीक़ा	590
आप दाने दाने के अमीन हैं	571	अगर पकाते हुए खाना जल जाए तो ?	591
ख़ियानत का भयानक अज़ाब	572	तन्दूरी रोटी और खाने का सोडा	591
मदारिस में खाना ज़ाएअ होने की वज्ह	572	सख़्त गोश्त गलाने का तरीक़ा	592
फ़्रीज़र में खाना रखने का तरीक़ा	573	न गलने वाला गोश्त	593
कच्चा गोश्त काफ़ी दिनों तक ख़राब न हो	574	उम्दा गोश्त की पहचान	594
बिरयानी ख़राब हो जाए तो क्या करें	575	जानवरों की मज़्लूमिय्यत	594
सड़ा हुवा गोश्त खाना हराम है	576	ऊंट को तीन[3] जगह से ज़ब्ह करना कैसा ?	597
फटे हुए दूध का इस्ति'माल	576	ऊंट के सर पर लोहे के डन्डे !	598
वेजीटेबल घी	576	गोश्त फ़रोशों के लिये एहतियातें	599

उन्वान	सफ़हा	उन्वान	सफ़हा
अन्दाज़े से तोलने की मुमानअत	599	चाय में शहद डाल सकते हैं या नहीं ?	615
क़ीमे के बाज़ारी समोसे	600	दांतों की सफ़ाई का त़रीक़ा	615
मरी हुई मुर्ग़ियां	601	पीले दांतों की सफ़ाई	617
क़रीबुल मौत बकरी के ज़ब्ह़ के अह़काम	601	अगर आप सिह़ह़त मन्द रहना चाहते हैं तो	618
ब वक़्ते ज़ब्ह़ **अल्लाह** का नाम लेना		दा'वते इस्लामी के जामिआ़त के त़आ़म का	
भूल गया तो ?	602	जद्वल	618
हड्डी खा सकते हैं या नहीं ?	603	**मक्तूबे अ़त्तार**	619
हड्डियों से इ़लाज के मदनी फूल	604	खाने के बारे में सभी के लिये मश्वरा	621
मुर्ग़ी के गोश्त के फ़वाइद	605	दिन में दो[2] बार खाइये	623
मुर्ग़ी की हड्डियां खाना कैसा ?	605	ख़ून TEST करवा लीजिये	624
मछली की हड्डियां खा सकते हैं या नहीं ?	606	कोलेस्ट्रोल का मरीज़ इन गिज़ाओं से परहेज़ करे	625
मछली की खाल खाना कैसा ?	606	यूरिक एसिड	626
केकड़ा खाना और बेचना	607	यूरिक एसिड का पानी से इ़लाज	627
अगर सालन जल जाए तो क्या करें ?	607	**ह़ाजी मुश्ताक़ अ़त्तारी**	629
हाज़िमा कैसे दुरुस्त हो ?	608	दुरूद शरीफ़ की फ़ज़ीलत	629
बद हज़्मी के दो[2] मदनी इ़लाज	609	ह़ाजी मुश्ताक़ अ़त्तारी मदनी माह़ोल में	630
क़ब्ज़ के तिब्बी इ़लाज	610	ह़ाजी मुश्ताक़ निगराने शूरा बन गए	631
त़लबा खाना न गिराएं इस का ह़ल	610	आक़ा ﷺ ने अपने मुश्ताक़ को सीने से लगा लिया	632
रोटी तोड़ने का त़रीक़ा	611	ह़ाजी मुश्ताक़ का सरकार ﷺ के दरबार में इन्तिज़ार	633
बची हुई रोटियों के इस्ति'माल का त़रीक़ा	612	ह़ाजी मुश्ताक़ का जनाज़ा	635
दस्तर ख़्वान पर गिरे हुए दाने	612	ईसाले सवाब के अम्बार	636
खाने की निय्यत कैसे करें ?	613	ह़ाजी मुश्ताक़ के किरदार की झल्कियां	636
चाय की एह़तियातें	613	दरबारे मुश्ताक़ में मुराद पूरी हुई	638
चाय पकाने का त़रीक़ा	614	गन्दे असरात दूर हो गए	639

रह़मत का एक सबब

ह़ज़रते सय्यिदुना जाबिर رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ से रिवायत है, नबिय्ये करीम, रऊफ़ुर्रह़ीम, मह़बूबे रब्बे अ़ज़ीम صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم का फ़रमाने रह़मत निशान है, अस्बाबे रह़मत में से एक सबब नादार मुसल्मान को **खाना खिलाना** है।

उन्वान	सफ़हा	उन्वान	सफ़हा
पेट का क़ुफ़्ले मदीना	643	रोज़ाना तीन[3] बार खाने वाले की मज़म्मत	661
दुरूद शरीफ़ की फ़ज़ीलत	643	खजूर और पानी पर गुज़ारा	662
पेट का क़ुफ़्ले मदीना क्या है ?	643	सारी रात की इबादत से अफ़्ज़ल	663
इख़्तियारी भूक	644	भूक का ख़ज़ाना और उस का शुक्राना	664
जन्नत में आक़ा का पड़ोस	644	एक ख़राब लुक़्मे की तबाह कारियां	665
सरकार की भूक शरीफ़	645	चालीस[40] दिन की नमाज़ें ना मक़्बूल	666
कई कई रातें फ़ाक़ा	646	लुक़्मए ह़राम की सज़ा	666
अहले बैत का खाना	646	नूर से भरपूर सीना	666
एक साहिबे नज़र की हिकायत	647	चार[4] नसीहतें	667
पेट पर दो[2] पथ्थर	648	बुरे ख़ातिमे का ख़ौफ़	667
सामाने इज़्ज़त	649	दीन का गिलाफ़	668
दीवानगी भरे जज़्बात	649	इबादत की मिठास	669
ह़ज़रते मूसा عَلَيْهِ السَّلَام की भूक शरीफ़	650	क़ियामत में कौन भूका होगा	670
ह़ज़रते दावूद عَلَيْهِ السَّلَام की भूक शरीफ़	651	सब्ज़ खाल वाले बुज़ुर्ग	671
ह़ज़रते ईसा عَلَيْهِ السَّلَام की भूक शरीफ़	651	जनाज़े पर शकर व बदाम लुटाए गए	671
ह़ज़रते यह़्या عَلَيْهِ السَّلَام की भूक शरीफ़	651	दुन्या की कुन्जी	673
आक़ा की भूक याद कर के बीबी आइशा का रोना	652	क़ियामत में कौन शिकम सेर होगा ?	673
उश्शाक़ ग़ौर करें	652	क़ियामत की चिलचिलाती धूप	674
इस्लामी बहन की हिकायत	653	नफ़्स ने जहन्नम में पहुंचा दिया	674
दो दिन में एक बार खाने की पसन्द का इज़्हार	655	भूक के दस[10] फ़वाइद	675
दिन में एक बार खाना	655	बरोज़े क़ियामत ज़ियाफ़त	676
दिन में तीन बार खाना कैसा ?	655	जन्नत व दोज़ख़ के दरवाज़े	676
रोज़े में एक वक़्त खाना	658	बदन की इस्लाह़	677
रोज़े में एक बार खाना	659	शिकम सेरी की छ[6] आफ़्तें	677
ख़ूब रोज़े रखिये	659	ख़ुश्क रोटी और नमक	678
ज़मीन भर सोना	660	खाना अ़क़्ल को खा जाता है	678
सोने का दस्तर ख़्वान	660	दिल की सख़्ती के अस्बाब	678

उन्वान	सफ़हा	उन्वान	सफ़हा
सात[7] लुक़्मे	678	खाना ज़ियादा तो कमाना भी ज़ियादा	694
पेट भरने की परेशानियां	679	इबादत की लज़्ज़त से मह़रूमी	695
एह़तिलाम का एक सबब	679	भूक से बेहोशी	695
शैत़ान ख़ून में गर्दिश करता है	679	ना मा'लूम दर्द	697
दो नहरें	680	काश ! भूक ख़रीदी जा सकती	699
चालीस दिन का फ़ाक़ा	680	हर त़रफ़ खाना ख़रीदा जा रहा है	699
छ[6] मदनी फूल	680	ज़ियादा खाना कुफ़्फ़ार की सिफ़त है	700
पेटू ज़लील है	682	भूक में त़ाक़त	701
भूका रहने की ताकीद क्यूं ?	682	ह़ुसूले तसव्वुफ़	701
अल्लाह की ख़ुफ़्या तदबीर से बे ख़ौफ़ होना		मैं सब से बुरा हूं	702
गुनाहे कबीरा है	682	भूक से गिर पड़ते	702
अल्लाह की त़रफ़ से ढील	684	कई कई रोज़ का फ़ाक़ा	703
गुनाहों को अच्छा समझना कुफ़्र है	684	साल भर का फ़ाक़ा	704
दुआए मुस्त़फ़ा صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم	685	बिग़ैर खाए पिये आदमी कितने दिन ज़िन्दा रहता है	704
चालीस[40] हज़ार में से चार[4]	685	अ़वाम कितना खाए ?	705
सात[7] आंत	686	बीमार दिल की दवाएं	705
सात[7] आंत का मत़लब	686	एक हज़ार साल जीने वाला परिन्दा	706
मोमिन और मुनाफ़िक़ की ख़ूराक में फ़र्क़	687	मच्छर ऊंट को क़त्ल कर देता है	707
आ'ला ह़ज़रत की ग़िज़ा	687	मोटा मच्छर	708
सात[7] मदनी फूल	688	जानदार बदन की आफ़तें	708
बारह[12] दिन में एक बार वुज़ू	688	पेटू पर गुनाहों की यलग़ार	709
मदनी क़ाफ़िले का एक मुसाफ़िर	689	हलके बदन की फ़ज़ीलत	710
तीन[3] दिन का फ़ाक़ा	689	मर्द व औ़रत का वज़्न कितना होना चाहिये ?	710
दूध का एक पियाला और सत्तर[70] सह़ाबा	690	सय्यिदुना यूसुफ़ عَلَيْهِ السَّلَام का वज़्न	711
लोगों से बे नियाज़ी	693	मोटापे के अस्बाब	711
नसीह़त बे असर	694	जवानी की ता'रीफ़	713
मौत के वक़्त की बदबू	694	पिज़्ज़ा के नुक़्सानात	714

उन्वान	सफ़हा	उन्वान	सफ़हा
एक पिज़्ज़ा ख़ोर की हिकायत	716	अपनी औक़ात याद दिलाने वाले ताज़ियाने	740
मोटापे से बचने की तदबीर	718	क्या आप कम खाने की आदत बनाना चाहते हैं ?	741
पहले ख़ून टेस्ट करवा लीजिये	719	जहन्नमियों का खाना पीना	742
मोटापे का इलाज	719	सांपों के ज़हर का पियाला	743
क़ब्ज़ के चार[4] इलाज	721	बड़ी ने'मत का हिसाब भी बड़ा	744
बे वक़्त नींद चढ़ने का इलाज	722	हर ने'मत के बारे में तीन[3] सुवाल	745
मोटापे का सब से बेहतरीन इलाज	723	जहन्नम का ग़ोता	746
ज़ियादा खाने से होने वाले अमराज़	723	कम खाने की आदत बनाने का त़रीक़ा	747
तन्दुरुस्त रहने का नुस्ख़ा	724	खाने की मिक़्दार मुक़र्रर फ़रमा लीजिये	748
भूक की पहचान	724	ख़ल्त़ (MIX) कर के भी खाना खा सकते हैं	750
भूक से ज़ियादा खाना	725	दूसरों की मौजूदगी में कम खाने का त़रीक़ा	751
हर एक की ख़ूराक यक्सां नहीं होती	725	इख़्लास क़बूलिय्यत की कुन्जी है	752
ज़ियादा खाने वाले का दिल दुखाना ह़राम है	726	कम खाने वाले का इम्तिह़ान	753
डट कर पानी पीना	727	मुसल्सल चालीस[40] दिन तक कम खा लीजिये	754
पैदल चलिये	728	कम खाने पर इस्तिक़ामत पाने के लिये	755
त़ाक़त से ज़ियादा बोझ	729	कड़वी नसीह़त	756
मैं खाना बहुत कम खाता हूं	730	**52 ह़िकायात**	759
कमख़ोरी की एह़तियातें	731	(1) सय्यिदुना जाबिर رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ के घर दा'वत	759
कम खाना अफ़्ज़ल मगर झूट बोलना ह़राम	732	(2) मदनी क़ाफ़िले ने मस्जिद आबाद की	762
नफ़्स किसे कहते हैं ?	734	(3) 80 सह़ाबा और थोड़ा सा खाना	764
दिल के लिये साल भर की इ़बादत से बेहतर	734	(4) क़दआवर मछली	767
लोमड़ी का बच्चा	735	(5) अमीनुल उम्मह	769
खाने के लिये जीना	736	(6) दिल का मरीज़ ठीक हो गया	772
मसूढ़ों का केन्सर	737	(7) यह़्या عَلَیْہِ السَّلَام और शैत़ान	773
नक़्ली कथ्थे की तबाह कारियां	737	इ़बादत में कब लज़्ज़त आती है	771
खाने का मज़ा सिर्फ़ ह़ल्क़ तक होता है	738	(8) दूध उगल दिया !	774
लज़ीज़ लुक़्मे की अ़जीब ह़क़ीक़त	738	(9) भुनी हुई बकरी	776
दिल जलाने वाली ह़िकायत	739	तन्दूरी रान	776

उन्वान	सफ़्हा	उन्वान	सफ़्हा
कुफ़्र पर ख़ातिमे का ख़ौफ़	777	(30) बुख़ार में सदा बहार	817
(10) रिक़्क़त अंगेज़ ख़ुत्बा	779	बुख़ार की फ़ज़ीलत	818
(11) राहे ख़ुदा में सब से पहला तीर		(31) मसूर की दाल की फ़ीस	818
चलाया	781	(32) मछली का कांटा	820
(12) हाथ के मस्से	783	कांटा चुभने की फ़ज़ीलत	821
(13) सर्द रात में चालीस[40] बार ग़ुस्ल	785	मुसीबत की हिक्मत	821
(14) ज़मीन से चुन चुन कर टुकड़े खाना	786	(33) गाजर और शहद	822
(15) दुश्वारी के बा'द आसानी	789	(34) अन्जीर उगल दिया	822
(16) रोज़ की ग़िज़ा दस[10] मुनक़्क़े	791	(35) हल्वाई ने लुक़्मे खिलाए	823
मुनक़्क़े के हैरत अंगेज़ फ़वाइद	792	(36) गोश्त की नाकारा हड्डियां	824
किशमिश का पानी पीना सुन्नत है	793	(37) खाने से क़ब्ल ख़ौफ़	825
खांसी का इलाज	793	खा कर रोना चाहिये	826
सुर्ख़ मुनक़्क़े	794	(38) सूखी रोटी का टुकड़ा	827
(17) बैंगन की ख़्वाहिश	794	(39) उंगली की रग फड़क उठती	828
(18) ख़ूब खाओ और पियो !	795	(40) आ़बिद और अनार का दरख़्त	828
(19) खाने का मक़्सद	796	(41) महमूद व अयाज़ और ककड़ी की क़ाश	830
(20) खाने से बचने के लिये छुप गए	798	(42) ईसाई राहिब का क़बूले इस्लाम	831
(21) वली की सोहबत का फ़ैज़	799	(43) मछली चावल	833
(22) अच्छी सोहबत अच्छी मौत	802	(44) दिल के लिये नफ़्अ़ बख़्श	834
(23) बुरी सोहबत बुरी मौत	804	(45) जन्नत का वलीमा	834
(24) भूका शेर	806	(46) धूप का सूखा हुवा आटा	836
मुर्ग़ी का तवक्कुल	807	(47) 40 साल तक दूध न पिया	836
(25) मुतवक्किल नौ जवान	808	(48) गोश्त रोटी	836
(26) रिज़्क़ ख़ुद ढूंढ रहा था	809	(49) ख़ौफ़नाक आंधी	837
(27) जोशीला मुबल्लिग़	812	(50) सब्ज़ पियाला	838
(28) अन्डा रोटी	813	ईमान पर ख़ातिमे का अ़मल	840
(29) सफ़ेद पियाला	814	(51) नफ़्स के साथ गुफ़्तगू	841
शान के मुताबिक़ इम्तिहान	816	(52) सब्ज़ी नहीं खाऊंगा	842

उ़न्वान	सफ़हा	उ़न्वान	सफ़हा
फ़ज़ाइले रमज़ान शरीफ़	843	आक़ा صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم रमज़ान में ख़ूब ख़ैरात करते	868
दुरूद शरीफ़ की फ़ज़ीलत	843	क्या आक़ा की ह़याते ज़ाहिरी के दौर में क़ैदी होते थे ?	868
इबादत का दरवाज़ा	844	सब से बढ़ कर सख़ी	869
नुज़ूले क़ुरआन	844	हज़ार गुना सवाब	869
महीनों के नाम की वज्ह	845	रमज़ान में ज़िक्र की फ़ज़ीलत	870
सुर्ख़ याक़ूत का घर	845	सुन्नतों भरा इज्तिमाअ़ और ज़िक्रुल्लाह	870
नाबीना भान्जी बीना हो गई (मदनी बहार)	846	छ6 बेटियों के बा'द औलादे नरीना	870
पांच ख़ुसूसी करम	849	40 नेक मुसल्मानों के मज्मअ़ में एक वली होता है	872
सग़ीरा गुनाहों का कफ़्फ़ारा	850	बेटा मिले, बेटी मिले, कुछ न मिले,	872
काश ! पूरा साल रमज़ान ही हो !	850	हर ह़ाल में शुक्र कीजिये	872
आक़ा صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم का बयाने जन्नत निशान	850	हुज़ूर صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم की मुक़द्दस औलाद की ता'दाद	873
रमज़ानुल मुबारक के चार नाम	853	रमज़ान का दीवाना	875
13 मदनी फूल	853	अल्लाह बे नियाज़ है	875
जन्नत सजाई जाती है	857	तीन के अन्दर तीन पोशीदा	876
जन्नत कौन सजाता है ?	857	कुत्ते को पानी पिलाने वाली बख़्शी गई	877
जन्नत में आक़ा صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم के पड़ोस की बिशारत	856	अ़ज़ाब से छुटकारे के अस्बाब	878
हर शब साठ हज़ार की बख़्शिश	860	चुग़ली का दर्दनाक अ़ज़ाब	882
रोज़ाना दस लाख की दोज़ख़ से रिहाई	862	इल्ज़ामे गुनाह की ख़ौफ़नाक सज़ा	882
जुमुआ की हर हर घड़ी में दस लाख की मग़्फ़िरत	862	कोई भी नेकी नहीं छोड़नी चाहिये	882
ख़र्च में कुशादगी करो	863	गुनाहगारों की 4 ह़िकायात	883
भलाई ही भलाई	864	(1) क़ब्र आग से भर गई !	883
बड़ी बड़ी आंखों वाली हूरें	864	(2) मापने में बे एह़तियाती के सबब इ़ताब	884
दो अंधेरे दूर	865	(3) क़ब्र से चिल्लाने की आवाज़	884
रमज़ान व क़ुरआन शफ़ाअ़त करेंगे	865	ह़राम की कमाई कहां जाती है ?	885
लाख रमज़ान का सवाब	866	आग के दो पहाड़	885
काश ! ईद मदीने में हो !	866	(4) तिन्के का बोझ	886
आक़ा صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم इबादत पर कमर बस्ता हो जाते	867	गुनाह आख़िर गुनाह है	887
आक़ा صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم रमज़ान में ख़ूब दुआएं मांगते थे	868	अदाए क़र्ज़ में बिला मोहलत लिये ताख़ीर गुनाह है	887

उ़न्वान	सफ़ह़ा
तीन पैसे का वबाल	888
क़ियामत में मुफ़्लिस कौन ?	890
ज़ालिम से मुराद कौन है ?	890
माहे रमज़ान में फ़ौत होने की फ़ज़ीलत	892
क़ियामत तक के रोज़ों का सवाब	892
रमज़ान में मग़्फ़िरत न हुई तो फिर कब होगी !	893
जन्नत के दरवाज़े खुल जाते हैं	893
शयातीन ज़न्जीरों में जकड़ दिये जाते हैं	893
गुनाहों में कमी तो आ ही जाती है	894
जूं ही सरकश शयातीन आज़ाद होते हैं !	894
आतश परस्त ने माहे रमज़ान का	
एह़तिराम किया तो...... (हि़कायत)	895
रमज़ान में अ़लल ए'लान खाने की दुन्यवी	896
सज़ा	896
क्या आप को मरना नहीं ?	897
सुन्नतों भरे बयानात की बरकात	
ग़फ़्लत से नेकी की दा'वत सुनना कुफ़्फ़ार की	900
सिफ़त है	901
साल भर की नेकियां बरबाद	903
दोज़ख़ियों का ख़ून और पीप	903
रमज़ान में गुनाह करने वाला	904
दिल का सियाह नुक़्ता	905
दिल की सियाही का इलाज	906
गुनाह की मुआ़फ़ी के लिये 8 आ'माल	907
क़ब्र का भयानक मन्ज़र !	908
मुर्दों से गुफ़्तगू	910
रमज़ान की रातों में खेलकूद	911
रोज़े में वक़्त "पास" करने के लिये......	912
अफ़्ज़ल इबादत कौन सी है ?	913
रोज़े में ज़ियादा सोना	914
रोज़ाना फ़िक्रे मदीना करने का इन्आ़म	915

उ़न्वान	सफ़ह़ा
फ़िक्रे मदीना क्या है ?	917
अह़कामे रोज़ा	917
दुरूद शरीफ़ की फ़ज़ीलत	918
रोज़ा बड़ी पुरानी इबादत है	919
रोज़े का मक़्सद	920
रोज़ा किस पर फ़र्ज़ है	920
रोज़ा फ़र्ज़ होने की वज्ह	
रोज़ों के मुतअ़ल्लिक़	921
3 फ़रामीने मुस्तफ़ा صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم	922
रोज़ादार का ईमान कितना पुख़्ता है !	923
बच्चे को कब रोज़ा रखवाया जाए ?	
आ'ला ह़ज़रत को वालिद साहिब ने	923
ख़्वाब में फ़रमाया (हि़कायत)	924
रोज़े से सिह़्ह़त मिलती है	924
मे'दे का वरम	925
हैरत अंगेज़ इन्किशाफ़ात	925
डॉक्टरों की तह़क़ीक़ाती टीम	
ख़ूब डट कर खाने से बीमारियां पैदा होती हैं	926
बिग़ैर ऑपरेशन के विलादत हो गई	927
रोज़े की जज़ा	930
रोज़े का ख़ुसूसी इन्आ़म	931
नेक आ'माल की जज़ा जन्नत है	931
ग़ैरे सह़ाबी के लिये "رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ"	
कहना कैसा ?	932
मुझे मोतियों वाला चाहिये	933
हम रसूलुल्लाह (صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم) के	
जन्नत रसूलुल्लाह (صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم) की	934
जो चाहो मांग लो !	935
रोज़े के फ़ज़ाइल से मुतअ़ल्लिक़	
11 फ़रामीने मुस्तफ़ा صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم	936
जन्नती दरवाज़ा	936
साबिक़ा गुनाहों का कफ़्फ़ारा	937

उ़न्वान	सफ़हा	उ़न्वान	सफ़हा
जहन्नम से 70 साल की मसाफ़त दूर	937	रोजे़ की निय्यत	961
एक रोजे़ की फ़ज़ीलत	937	निस्फु़न्नहारे शरई का वक़्त	
सुर्ख़ याक़ूत का मकान	937	मा'लूम करने का त़रीक़ा	962
जिस्म की ज़कात	937	रोजे़ की निय्यत के 20 मदनी फूल	964
सोना भी इ़बादत है	938	दाढ़ी वाली बच्ची !	969
आ'ज़ा का तस्बीह़ करना	938	सह़री करना सुन्नत है	970
जन्नती फल	938	हज़ार साल की इ़बादत से बेहतर	971
सोने का दस्तर ख़्वान	938	सोने के बा'द सह़री की इजाज़त न थी	971
सात क़िस्म के आ'माल	939	सह़री की इजाज़त की ह़िकायत	972
बे ह़िसाब अज्र	940	सह़री के मुतअ़ल्लिक़	
यरक़ान से सिह़्ह़त मिल गई	940	3 फ़रामीने मुस्त़फ़ा صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم	973
एक रोज़ा छोड़ने का नुक़्सान	942	क्या रोजे़ के लिये सह़री शर्त़ है ?	974
उलटे लटके हुए लोग	943	खजूर और पानी से सह़री	974
तीन बद बख़्त	944	खजूर से सह़री करना सुन्नत है	975
नाक मिट्टी में मिल जाए	944	सह़री का वक़्त कब होता है ?	975
रोजे़ के तीन दरजे	945	सह़री में ताख़ीर से कौन सा वक़्त मुराद है ?	976
(1) अ़वाम का रोज़ा	945	अज़ाने फ़ज्र नमाज़ के लिये है न कि	
(2) ख़वास का रोज़ा	946	रोज़ा बन्द करने के लिये !	977
(3) अख़स्सुल ख़वास का रोज़ा	946	खाना पीना बन्द कर दीजिये	978
दाता साह़िब رَحْمَةُ اللّٰهِ تَعَالٰى عَلَيْه का इर्शाद	946	मदनी क़ाफ़िले की निय्यत करते ही	
रोज़ा रख कर भी गुनाह तौबा ! तौबा !	947	मुश्किल आसान हो गई !	978
अल्लाह عَزَّوَجَلَّ को कुछ ह़ाजत नहीं	948	क़र्ज़ से नजात का अ़मल	980
मैं रोज़ादार हूं	948	क़र्ज़ा उतारने का वज़ीफ़ा	980
आ'ज़ा के रोज़ों की ता'रीफ़	948	इफ़्त़ार का बयान	982
आंख का रोज़ा	950	इफ़्त़ार की दुआ़	982
कान का रोज़ा	952	इफ़्त़ार के लिये अज़ान शर्त़ नहीं	983
ज़बान का रोज़ा	953	इफ़्त़ार के फ़ज़ाइल के मुतअ़ल्लिक़	
ज़बान की बे एह़तियात़ी की तबाह कारियां	953	5 फ़रामीने मुस्त़फ़ा صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم	984
इ़ल्मे ग़ैबे मुस्त़फ़ा صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم	956	इफ़्त़ार करवाने की अ़ज़ीमुश्शान फ़ज़ीलत	984
हाथों का रोज़ा	957	जिब्रीले अमीन के मुसाफ़ह़ा करने की अ़लामत	984
पाउं का रोज़ा	958	सरकार صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم का इफ़्त़ार	985
K इलेक्ट्रिक में नोकरी मिल गई	959	खजूर के 25 मदनी फूल	985

उ़न्वान	सफ़ह़ा
क्या ह़दीस में बताया हुवा इलाज हर एक कर सकता है	991
इफ़्त़ार के वक़्त दुआ़ क़बूल होती है	992
हम खाने पीने में रह जाते हैं	993
ग़िज़ा से इफ़्त़ार के बा'द नमाज़ के लिये मुंह साफ़ करना ज़रूरी है	993
दुआ़ के तीन फ़वाइद	996
दुआ़ में पांच सआ़दतें	996
“يَا عَفُوُّ” के पांच हुरूफ़ की निस्बत से 5 मदनी फूल	996
न जाने कौन सा गुनाह हो गया है	998
नमाज़ न पढ़ना तो गोया ख़त़ा ही नहीं !!!	998
जिस दोस्त की बात हम न मानें	999
क़बूलिय्यते दुआ़ में ताख़ीर का एक सबब	1000
नेक बन्दे की दुआ़ क़बूल होने में ताख़ीर की ह़िक्मत (ह़िकायत)	1001
जल्दी मचाने वाले की दुआ़ क़बूल नहीं होती !	1001
अफ़्सरों के पास तो बार बार धक्के खाते हो मगर......	1002
दुआ़ की क़बूलिय्यत में ताख़ीर तो करम है	1006
इर्क़ुन्निसा का दर्द जाता रहा	1007
इर्क़ुन्निसा के दो रूह़ानी इ़लाज	1008
रोज़ा तोड़ने वाली 14 चीज़ें	1009
रोज़े में क़ै होना	1011
क़ै के सात अह़काम	1012
मुंह भर क़ै की ता'रीफ़	1013
वुज़ू में क़ै के 5 अह़कामे शरई	1013
क़ै का अहम मस्अला	1014
भूल कर खाने पीने से रोज़ा नहीं जाता	1014
रोज़ा न टूटने के 21 अह़काम	1014
रोज़ादार को भूल कर खाता पीता देखे तो क्या करे	1014
मक्रूहाते रोज़ा	1019
मक्रूहाते रोज़ा पर मुश्तमिल 12 पैरे	1020
चखना किसे कहते हैं ?	1020
आस्मान पर से काग़ज़ का पुर्ज़ा गिरा	1023
मांगी मुराद न मिलना भी इन्आ़म !	1025
बेटी के फ़ज़ाइल	1026
रोज़ा न रखने की मजबूरियां	1027
शरई सफ़र की ता'रीफ़	1027
रोज़ा न रखने की इजाज़ात पर मब्नी 33 मदनी फूल	1029
फ़ासिक़ या ग़ैर मुस्लिम डॉक्टर रोज़ा न रखने का मश्वरा दे तो ?	1032
रोज़ा और ह़ैज़ व निफ़ास	1033
उ़म्र रसीदा बुज़ुर्ग के रोज़े	1034
नफ़्ल रोज़ा तोड़ने में सिर्फ़ क़ज़ा होती है कफ़्फ़ारा नहीं	1035
साल में पांच रोज़े ह़राम हैं	1036
दा'वत के सबब रोज़ा तोड़ना	1037
बीवी बिला इजाज़ते शोहर नफ़्ल रोज़ा नहीं रख सकती	1038
“12 मदनी फूल” जिन से सिर्फ़ क़ज़ा लाज़िम आती है	1039
किसी के मजबूर करने पर रोज़ा तोड़ना	1040
कफ़्फ़ारे के अह़काम	1042
रोज़े के कफ़्फ़ारे का त़रीक़ा	1042
औ़रत और कफ़्फ़ारे के रोज़े	1044
आइसा कितनी उ़म्र में ?	1044
कफ़्फ़ारा वाजिब होने की एक सूरत	1044
कफ़्फ़ारे से मुतअ़ल्लिक़ 11 मदनी फूल	1045
ख़बरदार ! ख़बरदार ! ख़बरदार !	1048
اَلْحَمْدُ لِلّٰه عَزَّوَجَلَّ मैं बदल गया !	1048
बे नमाज़ियों में बैठना कैसा ?	1050

उन्वान	सफ़्हा	उन्वान	सफ़्हा
फ़ैज़ाने तरावीह़	1053	मदनी इन्आ़मात के रिसाले की बरकत	1094
दुरूद शरीफ़ की फ़ज़ीलत	1053	आ़मिलीने मदनी इन्आ़मात के लिये बिशारते उ़ज़्मा	1096
तरावीह़ से सग़ीरा गुनाह मुआ़फ़ होते हैं	1053	तमाम भलाइयों से मह़रूम कौन ?	1097
सुन्नत की फ़ज़ीलत	1054	सब्ज़ झन्डा	1098
आ़शिक़ाने कलामुल्लाह की सात ह़िकायात	1054	लड़ाई का वबाल	1099
वस्वसा और उस का इ़लाज	1056	हम तो शरीफ़ के साथ शरीफ़ और......	1100
दौराने तिलावत ह़र्फ़ चबाना	1056	मुसल्मान मोमिन और मुहाजिर की ता'रीफ़	1102
तरतील से पढ़ना किसे कहते हैं !	1058	ना क़ाबिले बरदाश्त ख़ारिश	1103
तरावीह़ की उजरत लेना देना कैसा ?	1059	तक्लीफ़ दूर करने का सवाब	1103
तिलावत व ज़िक्रो ना'त की उजरत ह़राम है	1060	लड़ना है तो नफ़्स के साथ लड़ो !	1103
तरावीह़ की उजरत का शरई ह़ीला	1061	आक़ा صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم मुस्कुरा रहे थे !	1104
ख़त्मे क़ुरआन और रिक़्क़त	1064	जादूगर का जादू नाकाम	1105
तरावीह़ की जमाअ़त बिद्अ़ते ह़सना है	1065	अ़लामाते शबे क़द्र	1105
12 अच्छे काम या'नी बिद्अ़ते ह़सना	1067	शबे क़द्र की पोशीदगी की ह़िक्मत	1106
हर बिद्अ़त गुमराही नहीं है	1069	समुन्दर का पानी मीठा लगा (ह़िकायत)	1107
बिद्अ़ते ह़सना के बिग़ैर गुज़ारा नहीं	1070	हमें अ़लामात क्यूं नज़र नहीं आतीं ?	1107
सब्ज़ गुम्बद की तारीख़	1072	त़ाक़ रातों में ढूंडो	1108
दीदारे मुस्त़फ़ा صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم	1074	आख़िरी सात रातों में तलाश करो	1108
अच्छों से मह़ब्बत के फ़ज़ाइल	1075	लयलतुल क़द्र पोशीदा क्यूं ?	1109
अल्लाह عَزَّوَجَلَّ के लिये मह़ब्बत रखने के		ह़िक्मतों के मदनी फूल	1110
मुतअ़ल्लिक़ 8 फ़रामीने मुस्त़फ़ा صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم	1075	साल में कोई सी भी रात शबे क़द्र हो सकती है	1112
तरावीह़ के 35 मदनी फूल	1077	रह़मते कौनैन صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم की	
केन्सर का मरीज़ ठीक हो गया	1085	मअ़ शैख़ैन رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُمَا जल्वा गरी	1112
फ़ैज़ाने लयलतुल क़द्र	1087	इमामे आ'ज़म, इमामे शाफ़ेई और	
दुरूद शरीफ़ की फ़ज़ीलत	1087	साह़िबैन के अक़्वाल	1115
लयलतुल क़द्र को		शबे क़द्र बदलती रहती है	1116
"लयलतुल क़द्र" क्यूं कहते हैं ?	1087	शैख़ अबुल ह़सन शाज़िली عَلَیْہِ رَحْمَۃُ اللّٰہِ الْوَلِی	
83 साल 4 माह की इ़बादत से ज़ियादा सवाब	1088	और शबे क़द्र	1116
हज़ार महीनों से बेहतर एक रात	1090	सत्ताईसवीं रात शबे क़द्र	1117
हमारी उ़म्रें तो बहुत क़लील हैं	1090	गोया शबे क़द्र ह़ासिल कर ली	1118
बा करामत शम्ऊ़न की ईमान अफ़रोज़ ह़िकायत	1091	शबे क़द्र की दुआ़	1119
आह ! हमें क़द्र कहां !	1094	शबे क़द्र के नवाफ़िल	1120

उ़न्वान	सफ़्हा	उ़न्वान	सफ़्हा
अल वदाअ़ माहे रमज़ान	1123	**फ़ैज़ाने ए'तिकाफ़**	1153
दुरूद शरीफ़ की फ़ज़ीलत	1123	दुरूद शरीफ़ की फ़ज़ीलत	1153
"अल वदाअ़ माहे रमज़ान" पढ़ना जाइज़ है	1123	ए'तिकाफ़ पुरानी इबादत है	1154
"अल वदाअ़ माहे रमज़ान" के		मस्जिदों को साफ़ रखने का हुक्म है	1154
मुतअ़ल्लिक़ 12 निय्यतें	1123	दस दिन का ए'तिकाफ़	1155
आमदे रमज़ान पर मुबारक बाद देना		आ़शिक़ों की धुन	1155
सुन्नत से साबित है	1126	ऊंटनी के साथ फेरे लगाने की ह़िक्मत	1156
दिल ग़मे रमज़ान में डूबने लगता है	1127	मो'तकिफ़ का मक़्सूदे अस्ली इन्तिज़ारे नमाज़े	
आंखों से आंसू जारी हो जाते हैं	1129	बा जमाअ़त	1156
क्या मेरी ज़िन्दगी का भरोसा	1130	एक दिन के ए'तिकाफ़ की फ़ज़ीलत	1157
पहले के लोगों की दुआ़ में		साबिक़ा गुनाहों की बख़्शिश	1157
सारा साल यादे रमज़ान होती !	1131	आक़ा صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم की जाए ए'तिकाफ़	1158
ईद की चांदरात आ़शिक़ाने रमज़ान के जज़्बात	1131	सारे महीने का ए'तिकाफ़	1159
ग़मे रमज़ान की तरग़ीब	1132	तुर्की ख़ैमे में ए'तिकाफ़	1159
माहे रमज़ान की जुदाई में क्यूं न रोया जाए !	1133	ए'तिकाफ़ का मक़्सदे अ़ज़ीम	1160
जुमुअ़तुल वदाअ़ के बयान में		ज़मीन पर बिला ह़ाइल सज्दा करना मुस्तह़ब है	1161
जान दे दी (ह़िकायत)	1133	दो फ़रामीने मुस्त़फ़ा صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم	1162
माहे रमज़ान की आख़िरी रात ख़ौफ़े ख़ुदा से		दो ह़ज और दो उ़म्रों का सवाब	1162
वफ़ात (ह़िकायत)	1135	बिग़ैर किये नेकियों का सवाब	1162
"अल वदाअ़ माहे रमज़ान" का		रोज़ाना ह़ज का सवाब	1163
शरई सुबूत क्या है ?	1140	ए'तिकाफ़ की ता'रीफ़	1163
अस्ल अश्या में इबाह़त है	1142	ए'तिकाफ़ के लफ़्ज़ी मा'ना	1163
दीन में नए अच्छे त़रीक़े निकालने की		अब तो ग़नी के दर पर बिस्तर जमा दिये हैं	1163
ह़दीस में इजाज़त है	1142	ए'तिकाफ़ की क़िस्में	1164
"अल वदाअ़" सुनने से		ए'तिकाफ़े वाजिब	1164
तौबा व नेकी का जज़्बा मिलता है	1143	ए'तिकाफ़े सुन्नत	1164
सदरुल अफ़ाज़िल رَحْمَةُ اللّٰهِ تَعَالٰى عَلَيْه के फ़तवे से		ए'तिकाफ़ की निय्यत इस त़रह़ कीजिये	1165
ह़ासिल होने वाले 9 मदनी फूल	1146	ए'तिकाफ़े नफ़्ल	1165
ख़ुत़बे इल्मी में अल वदाई अश्आ़र	1148	मस्जिद में खाना पीना	1166
अफ़्सोस तू रुख़्सत हुवा माहे मुबारक अल वदाअ़	1149	इज्तिमाई ए'तिकाफ़ की 41 निय्यतें	1167
ख़ुत़्बे का एक अहम मस्अला	1150	ए'तिकाफ़ किस मस्जिद में करे ?	1172
"अल वदाअ़ माहे रमज़ान" की मदनी बहार	1150	मो'तकिफ़ और एह़तिरामे मस्जिद	1173

उ़न्वान	सफ़ह़ा	उ़न्वान	सफ़ह़ा
अल्लाह उन पर करम न करेगा	1173	मुंह की बदबू का मदनी इलाज	1196
अल्लाह तेरी गुमशुदा चीज़ न मिलाए	1174	इस्तिन्जा ख़ाने मस्जिद से कितनी दूर होने चाहिएं	1197
तो तुम्हें सज़ा देता	1174	?	
मुबाह़ कलाम नेकियों को खा जाता है	1175	अपने लिबास वग़ैरा पर	1199
40 साल के आ'माल बरबाद फ़रमा दे	1175	ग़ौर करने की आ़दत बनाइये	1201
मस्जिद में हंसना क़ब्र में अंधेरा लाता है	1175	मस्जिद में बच्चे को लाने की मुमानअ़त	1201
क़ब्र में अंधेरा	1175	गोश्त मछली बेचने वाले	1202
मुफ़्तिये दा'वते इस्लामी का ए'तिकाफ़	1176	सोने से मुंह में बदबू हो जाती है	1202
मुफ़्तिये दा'वते इस्लामी ने बा'दे वफ़ात भी		पसीने की बदबू वाले कपड़े	1203
मदनी क़ाफ़िले की दा'वत दी	1178	मुंह की सफ़ाई का त़रीक़ा	1203
मस्जिद के मुतअ़ल्लिक़ 19 मदनी फूल	1179	दाढ़ी को बदबू से बचाइये	1204
मस्जिदें ख़ुश्बूदार रखिये !	1185	ख़ुश्बूदार तेल बनाने का आसान त़रीक़ा	1204
मस्जिद में बल्ग़म देख कर सरकार की ना गवारी	1185	हो सके तो रोज़ नहाइये	1205
फ़ारूक़े आ'ज़म और मस्जिद में ख़ुश्बू	1186	इमामा वग़ैरा को बदबू से बचाने का त़रीक़ा	1205
मस्जिदें ख़ुश्बूदार रखिये !	1186	इमामा कैसा होना चाहिये	1206
एर फ्रे़श्नर से केन्सर हो सकता है	1186	ख़ुश्बू लगाने की निय्यतें और मवाक़ेअ़	1207
मुंह में बदबू हो तो मस्जिद में जाना ह़राम है	1187	फ़िनाए मस्जिद और मो'तकिफ़	1211
मुंह में बदबू हो तो नमाज़ मक्रूह होती है	1189	मो'तकिफ़ फ़िनाए मस्जिद में जा सकता है	1211
बदबूदार मरहम लगा कर		आ'ला ह़ज़रत رَحْمَةُ اللّٰهِ تَعَالٰی عَلَيْه का फ़तवा	1212
मस्जिद में आने की मुमानअ़त	1189	मस्जिद की छत पर चढ़ना	1213
कच्ची पियाज़ खाने से भी		मो'तकिफ़ के मस्जिद से बाहर निकलने की सूरतें	1214
मुंह बदबूदार हो जाता है	1190	(1) ह़ाजते शरई	1214
मस्जिद में कच्चा गोश्त न ले जाएं	1190	ह़ाजते शरई के मुतअ़ल्लिक़ 3 मदनी फूल	1214
कच्ची पियाज़ वाले कचूमर और राइते से		(2) ह़ाजते त़ब्ई	1215
मोह़तात़ रहिये	1191	ह़ाजते त़ब्ई के मुतअ़ल्लिक़ 4 पैरे	1215
मज्मअ़ में अगरबत्ती सुलगाना	1191	ए'तिकाफ़ तोड़ने वाली चीज़ों का बयान	1216
बदबूदार मुंह ले कर मुसल्मानों के		ए'तिकाफ़ तोड़ने वाली चीज़ों के मुतअ़ल्लिक़	
मज्मअ़ में जाने की मुमानअ़त	1192	12 मदनी फूल	1217
नमाज़ के अवक़ात में कच्ची पियाज़ खाना कैसा ?	1192	मेरी कमर का दर्द चला गया	1219
कच्ची पियाज़ खाते वक़्त بِسْمِ اللّٰه पढ़ना मक्रूह है	1194	चुप का रोज़ा	1221
मुंह की बदबू मा'लूम करने का त़रीक़ा	1194	ह़ाजत रवाई और एक दिन के	
मुंह की बदबू का इलाज	1195	ए'तिकाफ़ की फ़ज़ीलत	1222

उन्वान	सफ़हा	उन्वान	सफ़हा
मुसल्मान को खुश करने की फ़ज़ीलत	1223	**फ़ैज़ाने ईदुल फ़ित्र**	1259
ए'तिकाफ़ में जाइज़ कामों की इजाज़त पर		मौला अ़ली كَرَّمَ اللّٰهُ تَعَالٰی وَجْهَهُ الْكَرِيْم ने	
मुश्तमिल 8 मदनी फूल	1224	ख़ाली हथेली पर दम किया और......	1259
ए'तिकाफ़ क़ज़ा करने का त़रीक़ा	1226	दिल ज़िन्दा रहेगा	1260
ए'तिकाफ़ का फ़िदया	1227	जन्नत वाजिब हो जाती है	1261
ए'तिकाफ़ तोड़ने की तौबा	1227	मुआ़फ़ी का ए'लाने आ़म	1261
मश्हूर बेन्ड पार्टी के मालिक की तौबा	1227	कोई साइल मायूस नहीं जाता	1262
मो'तकिफ़ीन के लिये ज़रूरत की अश्या	1228	शैत़ान की बद ह़वासी	1263
ए'तिकाफ़ के 30 मदनी फूल	1230	क्या शैत़ान काम्याब है ?	1263
आ़शिक़ाने रसूल की सोह़बत ने		इसराफ़ की ग्यारह ता'रीफ़ात	1265
मुझे क्या से क्या बना दिया !	1237	इसराफ़ की वाज़ेह़ तर ता'रीफ़, ग़ैरे ह़क़ में	
अपनी चीज़ें संभालने का त़रीक़ा	1239	माल ख़र्च करना	1266
ए'तिकाफ़ में बीमार पड़ जाने के अस्बाब	1240	तब्ज़ीर और इसराफ़ में फ़र्क़	1267
खाने की एह़तियात़ का फ़ाएदा	1241	इन्सान व हैवान का फ़र्क़	1268
मुझे मुसल्मानों की सिह़्ह़त अ़ज़ीज़ है	1242	ज़िन्दगी का मक़्सद क्या है ?	1268
ज़ालिमों के लिये दराज़िये उ़म्र की दुआ़ करना		घर ही पर विलादत हो गई	1269
कैसा ?	1243	हि़फ़ाज़ते ह़म्ल के 2 रूह़ानी इलाज	1270
मुसल्मानों की भलाई चाहना कारे सवाब है	1243	ईद या वई़द	1271
कबाब समोसे खाने वाले मुतवज्जेह हों	1245	औलियाए किराम رَحِمَهُمُ اللّٰهُ تَعَالٰی भी तो	
तली हुई चीज़ों से होने वाली		ईद मनाते रहे हैं	1271
19 बीमारियों की निशान देही	1246	ईद का अनोखा खाना	1271
ख़त़रनाक ज़ह्र का तोड़	1247	रूह़ को भी सजाइये	1274
तली हुई चीज़ों का नुक़्सान कम करने का त़रीक़ा	1248	नजासत पर चांदी का वरक़	1274
बचा हुवा तेल दोबारा इस्ति'माल करने का		ईद किस के लिये है ?	1274
त़रीक़ा	1248	सय्यिदुना उ़मर फ़ारूक़ رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْهُ की ईद	1275
फ़न्ने त़िब यक़ीनी नहीं	1248	हमारी ख़ुश फ़हमी	1276
फ़ेशन परस्त "मुबल्लिग़े सुन्नत" बन गए	1249	शहज़ादे की ईद	1277
इस्लामी बहनों का ए'तिकाफ़	1250	शहज़ादियों की ईद	1278
इस्लामी बहनें भी ए'तिकाफ़ करें	1250	वालिदे मर्हूम पर करम	1279
इस्लामी बहनों के लिये 13 मदनी फूल	1251	हु़ज़ूर ग़ौसे आ'ज़म عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللّٰهِ الْاَكْرَم की ईद	1280
इस्लामी बहन के लिये ए'तिकाफ़ क़ज़ा करने		एक वली की ईद	1281
का त़रीक़ा	1254	करामत का एक शो'बा	1283

उन्वान	सफ़ह़ा	उन्वान	सफ़ह़ा
एक सख़ी की ईद	1284	(6) कव्वा बचपन ता बुढ़ापा उड़ता रहे यहां तक कि......	1309
सलाम उस पर कि जिस ने बे कसों की दस्त गीरी की	1285	(7) रोज़े जैसा कोई अ़मल नहीं	1309
क़ुव्वते समाअ़त बह़ाल हो गई	1285	(8) रोज़ा रखो तन्दुरुस्त हो जाओगे	1310
सदक़ए फ़ित्र	1286	(9) मह़शर में रोज़ादारों के मज़े	1310
सदक़ए फ़ित्र वाजिब है	1287	(10)......तो वोह जन्नत में दाख़िल होगा	1310
सदक़ए फ़ित्र लग़्व बातों का कफ़्फ़ारा है	1287	(11) जब तक रोज़ेदार के सामने खाना खाया जाता है	1311
रोज़ा मुअ़ल्लक़ रहता है	1287	(12) हड्डियां तस्बीह़ करती हैं	1311
फ़ित्रे के 16 मदनी फूल	1288	(13) रोज़े में मरने की फ़ज़ीलत	1312
सदक़ए फ़ित्र की मिक़्दार	1292	नेक काम के दौरान मरने की सआ़दत	1312
क़ब्र में एक हज़ार अन्वार दाख़िल हों	1293	कालू चाचा की ईमान अफ़्रोज़ वफ़ात	1313
नमाज़े ईद से क़ब्ल की एक सुन्नत	1293	सख़्त गरमी में रोज़े की फ़ज़ीलत (ह़िकायत)	1315
नमाज़े ईद का त़रीक़ा (ह़नफ़ी)	1294	क़ियामत में रोज़ादार खाएंगे	1315
ईद की अधूरी जमाअ़त मिली तो....?	1295	आ़शूरा के रोज़े के फ़ज़ाइल	1316
ईद की जमाअ़त न मिली तो क्या करे ?	1296	आ़शूरा को वाक़ेअ़ होने वाले 9 अहम वाक़िआ़त	1316
ईद के ख़ुत़्बे के अह़काम	1296	मुह़र्रमुल ह़राम और आ़शूरा के रोज़ों के 6 फ़ज़ाइल	1317
ईद के 20 मदनी फूल	1297	यौमे मूसा عَلَيْهِ السَّلَام	1317
ईद के दिन येह उमूर मुस्तह़ब हैं	1297	ईदे मीलादुन्नबी और दा'वते इस्लामी	1319
बक़्र ईद का एक मुस्तह़ब	1299	आ़शूरा का रोज़ा	1320
मैं ईद की नमाज़ भी नहीं पढ़ता था	1299	यहूदियों की मुख़ालफ़त करो	1320
मुझ गुनहगार पर भी करम के छींटे पड़े	1301	सारा साल घर में बरकत	1321
नफ़्ल रोज़ों के फ़ज़ाइल	1305	रजबुल मुरज्जब के रोज़े	1321
दुरूद शरीफ़ की फ़ज़ीलत	1305	ह़ुरमत वाले चार महीनों के नाम	1322
नफ़्ल रोज़ों के दीनी व दुन्यवी फ़वाइद	1305	रजब के एह़तिराम की बरकत की ह़िकायत	1323
रोज़ादारों के लिये बख़्शिश की बिशारत	1306	अल्लाह का महीना	1325
नफ़्ली रोज़ों के फ़ज़ाइल पर 13 फ़रामीने मुस्त़फ़ा صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰی عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم	1308	रजब में परेशानी दूर करने की फ़ज़ीलत	1325
(1) जन्नत का अनोखा दरख़्त	1308	दो साल की इ़बादत का सवाब	1325
(2) 40 साल का फ़ासिला दोज़ख़ से दूरी	1308	रजब के मुख़्तलिफ़ नाम और मआ़नी	1326
(3) दोज़ख़ से 50 साल की मसाफ़त तक दूरी	1308	रजब के तीन ह़ुरूफ़ की भी क्या बात है !	1326
(4) ज़मीन भर सोने से भी ज़ियादा सवाब	1309	इ़बादत का बीज बोने का महीना	1327
(5) जहन्नम से बहुत ज़ियादा दूरी	1309		

उ़न्वान	सफ़ह़ा	उ़न्वान	सफ़ह़ा
जो सारी ज़िन्दगी न सीख सका वोह दस दिन		दा'वते इस्लामी में रोज़ों की बहार	1346
में सीख लिया	1327	पतंग बाज़ी का शौक़ीन	1347
पांच बा बरकत रातें	1329	रमज़ान के बा'द कौन सा महीना अफ़्ज़ल है ?	1348
जन्नत में ले जाने वाली पांच रातें	1329	पन्दरहवीं शब में तजल्ली	1349
पहला रोज़ा तीन साल के गुनाहों का	1330	अ़दावत वाले की शामत	1349
कफ़्फ़ारा	1330	ढेरों गुनाहगारों की मग़्फ़िरत होती है मगर......	1349
जन्नती मह़ल	1330	ह़ज़रते सय्यिदुना दावूद عَلَیْہِ السَّلَام और	
एक जन्नती नहर का नाम रजब है	1330	शबे बराअत	1350
एक रोज़े की फ़ज़ीलत	1331	मह़रूम लोग	1352
किश्तिये नूह़ में रजब के रोज़े की बहार	1332	इमामे अहले सुन्नत رَحْمَۃُ اللہِ تَعَالٰی عَلَیْہ का पयाम	
सो साल के रोज़ों का सवाब	1332	तमाम मुसल्मानों के नाम	1353
27वीं शब के 12 नवाफ़िल की फ़ज़ीलत	1333	शबे बराअत की ता'ज़ीम	1355
60 महीनों के रोज़ों का सवाब	1334	भलाइयों वाली चार रातें	1356
...... तो गोया सो साल के रोज़े रखे	1334	दूल्हा का नाम मुर्दों की फ़ेहरिस में !	1356
दा'वते इस्लामी और		मकान बनाने वाला मुर्दों की फ़ेहरिस में	1356
जश्ने मे'राजुन्नबी صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم	1334	साल भर के मुआ़मलात की तक़्सीम	1357
कफ़न की वापसी	1335	नाज़ुक फ़ैसले	1358
लाड प्यार ने ढीट बना दिया था	1336	फ़ाएदे की बात	1359
सोह़बत के मुतअ़ल्लिक़ तीन रिवायात	1338	मग़रिब के बा'द छ6 नवाफ़िल	1360
बुरी सोह़बत की मुमानअ़त	1339	दुआ़ए निस्फ़े शा'बानुल मुअ़ज़्ज़म	1361
शा'बानुल मुअ़ज़्ज़म के रोज़े	1340	सगे मदीना عُفِیَ عَنْہُ की मदनी इल्तिजाएं	1363
आक़ा صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم का महीना	1340	साल भर जादू से ह़िफ़ाज़त	1364
शा'बान के पांच ह़ुरूफ़ की बहारें	1341	शबे बराअत और क़ब्रों की ज़ियारत	1364
सह़ाबए किराम عَلَیْہِمُ الرِّضْوَان का जज़्बा	1341	क़ब्र पर मोमबत्तियां जलाना	1365
मौजूदा मुसल्मानों का जज़्बा	1342	सब्ज़ परचा	1365
ता'ज़ीमे रमज़ान के लिये शा'बान के रोज़े	1343	आतश बाज़ी का मूजिद कौन ?	1366
आक़ा शा'बान के अक्सर रोज़े रखते थे	1343	शबे बराअत की मुरव्वजा आतश बाज़ी ह़राम है	1367
ह़दीसे पाक की शर्ह़	1344	आतश बाज़ी की जाइज़ सूरतें	1368
मरने वालों की फ़ेहरिस बनाने का महीना	1345	आक़ा صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने सब्ज़ इमामा शरीफ़	
नफ़्ल रोज़ों का पसन्दीदा महीना	1345	का ताज सजा रखा था	1369
लोग इस से ग़ाफ़िल हैं	1345	शश ईद के रोज़ों के फ़ज़ाइल पर मुश्तमिल	
त़ाक़त के मुत़ाबिक़ अ़मल कीजिये	1346	तीन फ़रामीने मुस्त़फ़ा صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم	1373

उन्वान	सफ़हा	उन्वान	सफ़हा
नौ मौलूद की त़रह़ गुनाहों से पाक	1373	(3) निराला कफ़्फ़ारा	1398
गोया उ़म्र भर का रोज़ा रखा	1373	(4) सिद्दीक़ा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْھَا ने लाख दिरहम	
साल भर रोज़े रखे	1373	लुटा दिये !	1400
शश ईद के रोज़े कब रखे जाएं ?	1373	आ़शिक़ाने रसूल से मुलाक़ात की बरकात	1401
ज़ुल ह़िज्जतिल ह़राम के इब्तिदाई दस दिन के		(5) ह़ूर ने कूज़ा गिरा दिया	1404
फ़ज़ाइल	1374	सख़्त गर्मियों में भी पानी गर्म कर के पीते (ह़िकायत)	1404
अ़शरए ज़ुल ह़िज्जतिल ह़राम के फ़ज़ाइल के		(6) तीनों में बड़ा सख़ी कौन !	1405
मुतअ़ल्लिक़ 4 फ़रामीने मुस्त़फ़ा صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم	1375	ईसार की फ़ज़ीलत	1407
अय्यामे बीज़ के रोज़े	1376	(7) रोज़ादार की क़ब्र की ख़ुश्बूदार मिट्टी	1408
अय्यामे बीज़ के रोज़ों के मुतअ़ल्लिक़		इमाम बुख़ारी की क़ब्र की मुश्कबार मिट्टी	1409
3 रिवायात	1376	साह़िबे दलाइलुल ख़ैरात की क़ब्र से अ़म्बर की	
अय्यामे बीज़ के रोज़ों के बारे में 5 फ़रामीने		ख़ुश्बू आती थी	1409
मुस्त़फ़ा صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم	1377	(8) रमज़ान व शश ईद के रोज़ों की बरकत	1410
मरने की दुआ़एं मांगते थे	1378	(9) रमज़ान का चांद	1411
पीर शरीफ़ और जुमे'रात के		जिगर का केन्सर ठीक हो गया	1412
रोज़ों के मुतअ़ल्लिक़ 5 रिवायात	1380	(10) दो ग़ीबत करने वालियों की ह़िकायत	1413
बुध और जुमे'रात के रोज़ों के 3 फ़ज़ाइल	1382	(11) मुसल्सल चालीस साल तक रोज़े	1416
बुध, जुमे'रात और जुमुआ़ के रोज़ों के फ़ज़ाइल		सय्यिदुना दावूद त़ाई के नफ़्स कुशी के वाक़िआ़त	1416
पर मुश्तमिल 3 फ़रामीने मुस्त़फ़ा صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم	1383	अपनी नेकियों का ए'लान	1417
जुमुआ़ के रोज़े के मुतअ़ल्लिक़		रियाकारी की ता'रीफ़	1418
4 फ़रामीने मुस्त़फ़ा صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم	1384	ह़िफ़्ज़ की ख़ुशी में तक़रीब	1419
तन्हा जुमुआ़ का रोज़ा रखने की मुमानअ़त पर		ह़िफ़्ज़ करना आसान है मगर ह़ाफ़िज़ रहना	
3 फ़रामीने मुस्त़फ़ा صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم	1386	मुश्किल है	1419
रोज़ए जुमुआ़ के मुतअ़ल्लिक़ एक फ़तवा	1388	क़ुरआन भुला देने का अ़ज़ाब	1420
सनीचर और इतवार के रोज़े	1389	3 फ़रामीने मुस्त़फ़ा صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم	1421
रोज़ए नफ़्ल के 13 मदनी फूल	1390	फ़रमाने रज़वी	1421
हमेशा रोज़ा रखना	1392	नेकी के इज़्हार की कब इजाज़त है ?	1422
शर्हे ह़दीस	1393	(12) रोज़ेदारों का मह़ल्ला	1423
रोज़ादारों की 12 ह़िकायात	1395	गोश्त की ख़ुश्बू से ही गुज़ारा कर लिया	1424
दुरूद शरीफ़ की फ़ज़ीलत	1395	नादान बच्चों की त़रफ़ से नेकी की दा'वत	1425
(1) ह़ज्जाज बिन यूसुफ़ और रोज़ादार आ'राबी	1395	मदनी मुन्नी ने मेहंदी वाले हाथ क्यूं दिखाए ?	1427
(2) सच्चा चरवाहा	1397	मैं नमाज़े जुमुआ़ तक से मह़रूम था	1428

उन्वान	सफ़हा	उन्वान	सफ़हा
मो'तकिफ़ीन की 40 मदनी बहारें	1431	(22) दाढ़ी सजी सर सब्ज़ हो गया	1462
दुरूद शरीफ़ की फ़ज़ीलत	1431	(23) अनबन ख़त्म हो गई	1463
(1) शिकारी ख़ुद शिकार हो गया !	1432	ज़िन्दगी के आख़िरी साल के मुतअ़ल्लिक़	
(2) मैं ने कई बार ख़ुदकुशी की कोशिश की थी	1434	एक इब्रत नाक रिवायत	1464
(3) मैं ने ईद के इलावा कभी नमाज़ ही नहीं पढ़ी		(24) घर वाले घर से निकाल देते थे	1466
थी !	1436	(25) मस्जिद का ख़तीब बना दिया	1468
(4) ए'तिकाफ़ की बरकत से सारा ख़ानदान		(26) उ़म्र ग़फ़्लतों में गुज़र रही थी	1469
मुसल्मान हो गया	1437	(27) वोह तहज्जुद गुज़ार बन गए	1470
(5) मैं पक्का दुन्यादार था	1439	(28) आक़ा अपना दीदार करा दीजिये	1471
(6) मुझे भी अपने जैसा बना लीजिये	1440	(29) उन को हैरत है कि डब्बू स्नूकर	
(7) मेरी आंखों में आंसू आ गए !	1442	कैसे छोड़ दिया !	1473
(8) आ़शिक़ाने रसूल की शफ़्क़तों ने लाज रख		(30) कॉमेडियन मुबल्लिग़ बन गया	1475
ली	1443	(31) हजरे अस्वद चूम लिया	1476
(9) ग़ैर इस्लामी नज़रिय्यात रखने वालों की		(32) बुरी सोहबत में रहने का गुनाह छूट गया	1478
तौबा	1444	(33) जज़्बे को मदीने के 12 चांद लग गए	1479
(10) अब गरदन तो कट सकती है मगर......	1446	(34) 70 सालह इस्लामी भाई के तअस्सुरात	1480
(11) मिरगी का मरज़ दूर हो गया	1447	ग़ैरे अ़रबी में आयाते क़ुरआनी लिखना जाइज़	
(12) मैं क्लीन शेव था	1448	नहीं	1482
(13) मेरी फ़िल्मी गीत गुनगुनाने की आ़दत थी	1449	(35) घर में भी मदनी माहोल बना लिया	1484
(14) मॉडर्न नौ जवान तरक़्क़ी करते करते......	1450	(36) मैं रमज़ान के रोज़े भी कम ही रखता था	1485
(15) मैं ने नशा कैसे छोड़ा !	1451	(37) रीढ़ की हड्डी के दर्द से नजात	1488
(16) येह ए'तिकाफ़ क्या होता है !	1453	(38) हेप्पी न्यू यर का चस्का	1489
(17) वोह चोरियां भी कर लिया करते थे	1455	हमें हिजरी सिन का लिहाज़ रखना चाहिये	1490
(18) ए'तिकाफ़ की बरकत से शहर के लिये		(39) आ़शिक़ाने रसूल की सोहबत की बरकत	1490
मदनी मर्कज़ मिल गया	1456	(40) मिलावट वाले मसाले का कारोबार	
(19) ए'तिकाफ़ का फ़ैज़ इंग्लेन्ड पहुंचा	1458	बन्द कर दिया	1493
(20) मैं छोड़ के फ़ैज़ाने मदीना नहीं जाता	1459	फ़ेहरिस	1496
(21) ए'तिकाफ़ की बरकत से		मआख़िज़ो मराजेअ़	1522
घुटनों का दर्द चला गया	1461	याददाश्त	1530

مآخذ و مراجع

فیضان بسم اللہ / پیٹ کا قفلِ مدینہ

نمبر شمار	کتاب	مصنف / مؤلف	مطبوعہ
1	قرآن مجید	کلام باری تعالٰی	ضیاء القرآن پبلیکیشنز لاہور
2	کنز الایمان فی ترجمۃ القرآن	اعلیٰ حضرت امام احمد رضا خان علیہ رحمۃ الرحمٰن	ضیاء القرآن پبلیکیشنز لاہور
3	الدر المنثور	امام جلال الدین سیوطی رحمۃ اللہ تعالٰی علیہ	دار الفکر بیروت
4	تفسیر صاوی	علامہ احمد بن محمد صاوی مالکی رحمۃ اللہ تعالٰی علیہ	دار الفکر بیروت
5	خزائن العرفان	علامہ سید نعیم الدین مراد آبادی رحمۃ اللہ تعالٰی علیہ	ضیاء القرآن پبلیکیشنز لاہور
6	تفسیر نعیمی	مفتی احمد یار خان نعیمی رحمۃ اللہ تعالٰی علیہ	ضیاء القرآن پبلیکیشنز لاہور
7	تفسیر کبیر	امام فخر الدین رازی رحمۃ اللہ تعالٰی علیہ	دار احیاء التراث العربی بیروت
8	تفسیر یوسف	امام محمد بن محمد غزالی رحمۃ اللہ تعالٰی علیہ	نوری بک ڈپو لاہور
9	صحیح البخاری	امام محمد بن اسمٰعیل بخاری رحمۃ اللہ تعالٰی علیہ	دار الفکر بیروت
10	صحیح مسلم	امام مسلم بن حجاج نیشاپوری رحمۃ اللہ تعالٰی علیہ	دار ابن حزم بیروت
11	جامع الترمذی	امام محمد بن عیسٰی ترمذی رحمۃ اللہ تعالٰی علیہ	دار الفکر بیروت
12	سنن ابی داؤد	امام ابوداؤد سلیمان بن اشعث رحمۃ اللہ تعالٰی علیہ	دار الفکر بیروت
13	سنن ابن ماجہ	امام محمد بن یزید ابن ماجہ رحمۃ اللہ تعالٰی علیہ	دار المعرفۃ بیروت
14	فردوس الاخبار	علامہ شرویہ بن شہر دار دیلمی رحمۃ اللہ تعالٰی علیہ	دار الکتب العربی بیروت
15	شرح السنۃ	علامہ ابو محمد حسین بن مسعود بغوی رحمۃ اللہ تعالٰی علیہ	دار الکتب العلمیۃ بیروت
16	الترغیب و الترہیب	امام زکیّ الدین عبد العظیم منذری رحمۃ اللہ تعالٰی علیہ	دار ابن کثیر بیروت
17	کنز العمّال	علامہ علی متقی ہندی رحمۃ اللہ تعالٰی علیہ	دار الکتب العلمیۃ بیروت
18	شُعَب الایمان	امام ابوبکر احمد بن حسین بیہقی رحمۃ اللہ تعالٰی علیہ	دار الکتب العلمیۃ بیروت
19	مشکاۃ المصابیح	امام محمد بن عبد اللہ خطیب رحمۃ اللہ تعالٰی علیہ	باب المدینۃ کراچی
20	المسند	امام احمد بن حنبل رحمۃ اللہ تعالٰی علیہ	دار الفکر بیروت
21	مجمع الزوائد	امام نور الدین ہیثمی رحمۃ اللہ تعالٰی علیہ	دار الفکر بیروت
22	المعجم الکبیر	امام سلیمان بن احمد طبرانی رحمۃ اللہ تعالٰی علیہ	دار الکتب العلمیۃ بیروت
23	المعجم الصغیر	امام سلیمان بن احمد طبرانی رحمۃ اللہ تعالٰی علیہ	دار الکتب العلمیۃ بیروت
24	کشف الخفاء و مُزیل الالباس	امام اسمٰعیل بن محمد عجلونی رحمۃ اللہ تعالٰی علیہ	مؤسسۃ الرسالۃ بیروت
25	المستدرک	امام محمد بن عبد اللہ حاکم رحمۃ اللہ تعالٰی علیہ	دار الکتب العلمیۃ بیروت
26	ریاض الصالحین	علامہ یحیٰ بن شرف نووی رحمۃ اللہ تعالٰی علیہ	شبیر برادر مرکز الاولیاء لاہور
27	مرآۃ المناجیح	مفتی احمد یار خان نعیمی رحمۃ اللہ تعالٰی علیہ	ضیاء القرآن پبلیکیشنز لاہور
28	تفہیم البخاری	علامہ غلام رسول رضوی رحمۃ اللہ تعالٰی علیہ	تفہیم البخاری پبلیکیشنز سردار آباد
29	الاصابۃ فی تمییز الصحابۃ	علامہ احمد بن علی محمد بن عسقلانی رحمۃ اللہ تعالٰی علیہ	دار الکتب بیروت
30	نزہۃ النظر	علامہ احمد بن علی محمد بن عسقلانی رحمۃ اللہ تعالٰی علیہ	مدینۃ الاولیاء ملتان
31	البدور السافرۃ	امام جلال الدین سیوطی رحمۃ اللہ تعالٰی علیہ	دار الکتب العلمیۃ بیروت
32	المواہب اللدنیۃ	علامہ شہاب الدین احمد بن محمد قسطلانی رحمۃ اللہ تعالٰی علیہ	دار الکتب العلمیۃ بیروت
33	شمائل ترمذی	امام محمد بن عیسٰی رحمۃ اللہ تعالٰی علیہ	دار الکتب العلمیۃ بیروت
34	شمائل رسول	علامہ یوسف بن اسماعیل نبہانی رحمۃ اللہ تعالٰی علیہ	نوری کتب خانہ لاہور

35	وفاء الوفاء	علامہ عبدالرحمن ابن جوزی رحمۃ اللہ تعالیٰ علیہ	دار احیاء التراث العربی بیروت
36	حجۃ اللہ علی العلمین	علامہ یوسف بن اسماعیل نبہانی رحمۃ اللہ تعالیٰ علیہ	مرکز اہل سنت برکات رضا ہند
37	لقط المرجان فی احکام الجان	امام جلال الدین سیوطی رحمۃ اللہ تعالیٰ علیہ	مکتبۃ الایمان مصر
38	بحر الدموع	علامہ عبدالرحمن ابن جوزی رحمۃ اللہ تعالیٰ علیہ	دار الفجر للتراث القاہرہ
39	اسرار الفاتحہ	علامہ معین مروی رحمۃ اللہ تعالیٰ علیہ	نولکشور لکھنؤ ہند
40	غنیۃ المتملی	علامہ محمد ابراہیم بن حلبی رحمۃ اللہ تعالیٰ علیہ	سہیل اکیڈمی لاہور
41	الدر المختار	علامہ علاء الدین حصکفی رحمۃ اللہ تعالیٰ علیہ	دار الکتب العلمیہ بیروت
42	رد المحتار	علامہ محمد امین ابن عابدین شامی رحمۃ اللہ تعالیٰ علیہ	دار الکتب العلمیہ بیروت
43	بہار شریعت	مفتی محمد امجد علی اعظمی رحمۃ اللہ تعالیٰ علیہ	مکتبہ اسلامیہ لاہور
44	فتاوی عالمگیری	نظام وعلمائے ہند رحمۃ اللہ تعالیٰ علیہم	کوئٹہ
45	البحر الرائق	علامہ زین الدین ابن نُجَیم رحمۃ اللہ تعالیٰ علیہ	کوئٹہ
46	حیاۃ الحیوان الکبری	علامہ کمال الدین محمد بن موسیٰ دمیری رحمۃ اللہ تعالیٰ علیہ	دار الکتب العلمیہ بیروت
47	تنبیہ المغترین	علامہ عبدالوہاب بن احمد شعرانی رحمۃ اللہ تعالیٰ علیہ	المطبعۃ المیمنیۃ مصر
48	نزہۃ المجالس	علامہ عبد الرحمٰن صفوری رحمۃ اللہ تعالیٰ علیہ	کوئٹہ
49	المجالس السنیہ	شیخ احمد بن حجازی رحمۃ اللہ تعالیٰ علیہ	مکتبہ تجاریہ مصر
50	شرح الصدور	امام جلال الدین سیوطی رحمۃ اللہ تعالیٰ علیہ	دار الکتب العلمیہ بیروت
51	قوت القلوب	امام ابو طالب محمد بن علی مکی رحمۃ اللہ تعالیٰ علیہ	مرکز اہل سنت برکات رضا ہند
52	الرسالۃ القشیریۃ	امام ابو قاسم عبد الکریم رحمۃ اللہ تعالیٰ علیہ	دار الخیر بیروت
53	احیاء علوم الدین	امام محمد بن محمد غزالی رحمۃ اللہ تعالیٰ علیہ	دار صادر بیروت
54	منہاج العابدین	امام محمد بن محمد غزالی رحمۃ اللہ تعالیٰ علیہ	دار الکتب العلمیہ بیروت
55	کیمیائے سعادت	امام محمد بن محمد غزالی رحمۃ اللہ تعالیٰ علیہ	انتشارات گنجینہ تہران
56	اتحاف السادۃ المتقین	علامہ محمد مرتضیٰ حسینی زبیدی رحمۃ اللہ تعالیٰ علیہ	دار الکتب العلمیہ بیروت
57	روض الریاحین	علامہ عبد اللہ بن اسعد یافعی رحمۃ اللہ تعالیٰ علیہ	المطبعۃ المیمنیۃ مصر
58	الخیرات الحسان	علامہ شہاب الدین احمد بن حجر مکی رحمۃ اللہ تعالیٰ علیہ	باب المدینۃ کراچی
59	قلیوبی	علامہ احمد شہاب الدین قلیوبی رحمۃ اللہ تعالیٰ علیہ	باب المدینۃ کراچی
60	مکاشفۃ القلوب	امام محمد بن محمد غزالی رحمۃ اللہ تعالیٰ علیہ	دار الکتب العلمیہ بیروت
61	اخبار الاخیار	شیخ عبدالحق محدث دہلوی رحمۃ اللہ تعالیٰ علیہ	مکتبہ نوریہ رضویہ سکھر
62	تذکرۃ الواعظین	علامہ محمد بن جعفر قریشی رحمۃ اللہ تعالیٰ علیہ	کوئٹہ
63	کشف المحجوب	داتا گنج بخش علی ہجویری رحمۃ اللہ تعالیٰ علیہ	فرید بک اسٹال لاہور
64	تذکرۃ الاولیاء	شیخ فرید الدین عطار رحمۃ اللہ تعالیٰ علیہ	شبیر برادرز مرکز الاولیاء لاہور
65	احسن الوعاء	علامہ نقی علی خان رحمۃ اللہ تعالیٰ علیہ	مکتبۃ المدینہ باب المدینہ، کراچی
66	البرہان	مفتی محمد امین مدظلہ العالی	مکتبہ سلطانیہ سردار آباد (فیصل آباد)
67	حیاتِ اعلیٰ حضرت	علامہ ظفر الدین محدث بہاری رحمۃ اللہ تعالیٰ علیہ	مکتبہ رضویہ کراچی
68	حدائق بخشش	اعلیٰ حضرت امام احمد رضا خان علیہ رحمۃ الرحمٰن	مکتبۃ المدینہ باب المدینہ کراچی
69	ذوقِ نعت	علامہ حسن رضا خان رحمۃ اللہ تعالیٰ علیہ	شبیر برادرز مرکز الاولیاء لاہور
70	سحاب مدینہ	علامہ محمد الیاس عطار قادری دامت برکاتہم العالیہ	مکتبۃ المدینہ باب المدینہ کراچی
71	سامان بخشش	علامہ مصطفیٰ رضا خان رحمۃ اللہ تعالیٰ علیہ	شبیر برادرز مرکز الاولیاء لاہور

آداب طعام

ماخذ ومراجع

نمبر شمار	کتاب	مصنف/مؤلف	مطبوعہ
١	جامع البیان	امام ابو جعفر محمد بن جریر طبری رحمۃ اللہ تعالٰی علیہ	دارالکتب العلمیۃ بیروت
٢	الدرالمنثور	امام جلا ل الدین سیوطی رحمۃ اللہ تعالٰی علیہ	دارالفکر بیروت
٣	روح المعانی	علامہ ابوالفضل سید محمود آلوسی	داراحیاء التراث العربی بیروت
٤	تفسیر کبیر	امام فخرالدین رازی رحمۃ اللہ تعالٰی علیہ	داراحیاء التراث العربی بیروت
٥	تفسیر نعیمی	حکیم الامت مفتی احمد یارخان نعیمی رحمۃ اللہ تعالٰی علیہ	ضیاء القرآن پبلشرز لاہور
٦	روح البیان	علامہ اسماعیل حقی بروسوی رحمۃ اللہ تعالٰی علیہ	کوئٹہ
٧	خزائن العرفان	علامہ سید محمد نعیم الدین مرادآبادی رحمۃ اللہ تعالٰی علیہ	رضا اکیڈمی بمبئی
٨	نورالعرفان	حکیم الامت مفتی احمد یا رخان نعیمی رحمۃ اللہ تعالٰی علیہ	ضیاء القرآن پبلشرز لاہور
٩	صحیح بُخاری	امام محمد بن اسماعیل بخاری رحمۃ اللہ تعالٰی علیہ	دارالکتب العلمیۃ بیروت
١٠	صحیح مسلم	امام مسلم بن حجاج نیشاپوری رحمۃ اللہ تعالٰی علیہ	دارابن حزم بیروت
١١	جامع ترمذی	امام محمد بن عیسی ترمذی رحمۃ اللہ تعالٰی علیہ	دارالفکر بیروت
١٢	سُنَنُ ابی داود	امام سلیمان بن اشعث رحمۃ اللہ تعالٰی علیہ	داراحیاء التراث العربی بیروت
١٣	سُنن ابن ماجہ	امام محمد بن یزید قزوینی ابن ماجہ رحمۃ اللہ تعالٰی علیہ	دارالمعرفۃ بیروت
١٤	موطا امام مالک	امام مالک بن انس رحمۃ اللہ تعالٰی علیہ	دارالمعرفۃ بیروت
١٥	مسند امام احمد	امام احمد بن حنبل رحمۃ اللہ تعالٰی علیہ	دارالفکر بیروت
١٦	سُنَن دارمی	امام عبداللہ بن عبدالرحمٰن دارمی رحمۃ اللہ تعالٰی علیہ	باب المدینہ کراچی
١٧	مصنف ابن ابی شیبہ	امام ابو بکر عبداللہ بن محمد بن ابی شیبہ رحمۃ اللہ تعالٰی علیہ	دارالفکر بیروت
١٨	مسند ابو یعلی	امام احمد بن علی مَوصِلی رحمۃ اللہ تعالٰی علیہ	دارالکتب العلمیۃ بیروت
١٩	نوادرالاصول	امام ابو عبداللہ محمد بن علی حکیم ترمذی رحمۃ اللہ تعالٰی علیہ	دمشق
٢٠	مُعجَم اوسط	امام سلیمان بن احمد طبرانی رحمۃ اللہ تعالٰی علیہ	دارالکتب العلمیۃ بیروت
٢١	مُعجَم کبیر	امام سلیمان بن احمد طبرانی رحمۃ اللہ تعالٰی علیہ	داراحیاء التراث العربی بیروت
٢٢	مُعجَم صغیر	امام سلیمان بن احمد طبرانی رحمۃ اللہ تعالٰی علیہ	دارالکتب العلمیۃ بیروت
٢٣	المستدرَک	امام محمد بن عبداللہ حاکم رحمۃ اللہ تعالٰی علیہ	دارالمعرفۃ بیروت
٢٤	الکامل فی ضعفاء الرجال	امام ابو احمد عبداللہ بن عدی جرجانی رحمۃ اللہ تعالٰی علیہ	دارالکتب العلمیۃ بیروت
٢٥	حِلیۃ الاولیاء	امام ابو نعیم احمد بن عبداللہ اصفہانی رحمۃ اللہ تعالٰی علیہ	دارالکتب العلمیۃ بیروت
٢٦	شُعب الایمان	امام ابو بکر احمد بن حُسین بیہقی رحمۃ اللہ تعالٰی علیہ	دارالکتب العلمیۃ بیروت
٢٧	مکارِمُ الاخلاق	امام سلیمان بن احمد طبرانی رحمۃ اللہ تعالٰی علیہ	دارالکتب العلمیۃ بیروت
٢٨	الترغیب والترہیب	امام زکی الدین عبدالعظیم منذری رحمۃ اللہ تعالٰی علیہ	دارالکتب العلمیۃ بیروت
٢٩	شرح السنۃ	امام حسین بن مسعود بغوی رحمۃ اللہ تعالٰی علیہ	دارالکتب العلمیۃ بیروت
٣٠	مجمع الزّوائد	حافظ نورالدین ہیثمی رحمۃ اللہ تعالٰی علیہ	دارالفکر بیروت
٣١	الجامع الصغیر	حافظ جلال الدین سیوطی رحمۃ اللہ تعالٰی علیہ	دارالکتب العلمیۃ بیروت
٣٢	کنزالعمال	علامہ علاؤ الدین علی متقی ہندی رحمۃ اللہ تعالٰی علیہ	دارالکتب العلمیۃ بیروت
٣٣	تاریخ بغداد	امام ابو بکر احمد بن علی خطیب بغدادی رحمۃ اللہ تعالٰی علیہ	دارالکتب العلمیۃ بیروت
٣٤	الخصائص الکبری	حافظ جلال الدین سیوطی رحمۃ اللہ تعالٰی علیہ	مرکزاہل سنت برکات رضا الہند
٣٥	اشعۃ اللمعات	شیخ عبدالحق محدث دہلوی رحمۃ اللہ تعالٰی علیہ	کوئٹہ
٣٦	مرقاۃالمفاتیح	ملا علی قاری رحمۃ اللہ تعالٰی علیہ	دارالفکر بیروت
٣٧	مرأۃ المناجیح	حکیم الامت مفتی احمد یارخان نعیمی رحمۃ اللہ تعالٰی علیہ	ضیاء القرآن پبلشرز لاہور
٣٨	عمدۃ القاری	علامہ بدرالدین ابو محمد محمود بن احمد عینی رحمۃ اللہ تعالٰی علیہ	دارالفکر بیروت

۳۹	شرح الزرقانی علی الموطا	علامہ محمد بن عبدالباقی زرقانی رحمۃ اللہ تعالٰی علیہ	داراحیاء التراث العربی بیروت
۴۰	کشف الخفاء	علامہ اسماعیل بن محمد عجلونی رحمۃ اللہ تعالٰی علیہ	دارالکتب العلمیۃ بیروت
۴۱	درمختار	علامہ علاؤ الدین حصکفی رحمۃ اللہ تعالٰی علیہ	دارالکتب العلمیۃ بیروت
۴۲	ردالمحتار	علامہ ابن عابدین شامی رحمۃ اللہ تعالٰی علیہ	دارالکتب العلمیۃ بیروت
۴۳	فتاوی رضویہ (جدید)	اعلٰی حضرت امام احمد رضا خان رحمۃ اللہ تعالٰی علیہ	رضا فاؤنڈیشن لاہور
۴۴	فتاوی افریقہ	اعلٰی حضرت امام احمد رضا خان رحمۃ اللہ تعالٰی علیہ	نذیر سنز پبلشرز لاہور
۴۵	بہارِ شریعت	مفتی محمد امجد علی اعظمی رحمۃ اللہ تعالٰی علیہ	مکتبہ رضویہ کراچی
۴۶	الاشباہ و النظائر	علامہ شیخ زین الدین بن ابراھیم مصری رحمۃ اللہ تعالٰی علیہ	باب المدینہ کراچی
۴۷	شرح الصدور	امام جلال الدین سیوطی رحمۃ اللہ تعالٰی علیہ	دارالکتب العلمیۃ بیروت
۴۸	لقط المرجان	امام جلال الدین سیوطی رحمۃ اللہ تعالٰی علیہ	دارالکتب العلمیۃ بیروت
۴۹	حیاۃ الحیوان الکبری	امام کمال الدین محمد بن موسیٰ دمیری رحمۃ اللہ تعالٰی علیہ	دارالکتب العلمیۃ بیروت
۵۰	روض الریاحین	امام عبداللہ بن اسعد یافعی رحمۃ اللہ تعالٰی علیہ	المطبعۃ المیمنیۃ مصر
۵۱	جامع کرامات اولیاء	علامہ یوسف نبہانی رحمۃ اللہ تعالٰی علیہ	مرکز اہل سنت برکات رضا الہ
۵۲	حجۃ اللہ علی العٰلمین	علامہ محمد یوسف نبہانی رحمۃ اللہ تعالٰی علیہ	مرکز اہل سنت برکات رضا الہ
۵۳	شواھد النبوۃ	علامہ عبدالرحمٰن جامی رحمۃ اللہ تعالٰی علیہ	مکتبہ الحقیقہ ترکی
۵۴	مواھب اللدنیۃ	امام ابراھیم باجُوری رحمۃ اللہ تعالٰی علیہ	ملتان
۵۵	میزان الشریعۃ الکبری	علامہ عبدالوھاب شعرانی رحمۃ اللہ تعالٰی علیہ	مصر
۵۶	الکامل فی التاریخ	الامام ابو الحسن علی بن ابی الکرم الشیبانی المعروف بابن الاثیر	دارالکتب العلمیۃ بیروت
۵۷	مکتوبات	امام ربانی مجدد الف ثانی رحمۃ اللہ تعالٰی علیہ	کوئٹہ
۵۸	اخبار الاخیار مع مکتوبات	شیخ عبدالحق محدث دہلوی رحمۃ اللہ تعالٰی علیہ	فاروق اکیڈمی ضلع خیرپور
۵۹	طبقات الکبری	علامہ عبدالوھاب شعرانی رحمۃ اللہ تعالٰی علیہ	دارالکتب العلمیۃ بیروت
۶۰	مدارج النبوت	شیخ عبدالحق محدّث دہلوی رحمۃ اللہ تعالٰی علیہ	نوریہ رضویہ پبلشنگ کمپنی لاہو
۶۱	تعلیم المتعلم	امام برھان الاسلام زرنوجی رحمۃ اللہ تعالٰی علیہ	باب المدینہ کراچی
۶۲	تذکرۃ الحفاظ	امام شمس الدین محمد بن احمد ذھبی رحمۃ اللہ تعالٰی علیہ	دارالکتب العلمیۃ بیروت
۶۳	اتحاف السادۃ المتقین	علامہ محمد مرتضٰی حسینی زبیدی رحمۃ اللہ تعالٰی علیہ	دارالکتب العلمیۃ بیروت
۶۴	احیاء العلوم	امام محمد بن محمد غزالی رحمۃ اللہ تعالٰی علیہ	دارصادر بیروت
۶۵	مکاشفۃ القلوب	امام محمد بن محمد غزالی رحمۃ اللہ تعالٰی علیہ	دارالکتب العلمیۃ بیروت
۶۶	منھاج العابدین	امام محمد بن محمد غزالی رحمۃ اللہ تعالٰی علیہ	دارالکتب العلمیۃ بیروت
۶۷	کیمیائے سعادت	امام محمد بن محمد غزالی رحمۃ اللہ تعالٰی علیہ	انتشارات گنجینہ تہران
۶۸	تذکرۃ الاولیاء	شیخ فرید الدین محمد عطار رحمۃ اللہ تعالٰی علیہ	انتشارات گنجینہ تہران
۶۹	تنبیہ المغترین	علامہ عبدالوھاب بن احمد شعرانی رحمۃ اللہ تعالٰی علیہ	المطبعۃ المیمنیۃ مصر
۷۰	الرسالۃ القشیریۃ	امام ابو القاسم عبدالکریم قشیری رحمۃ اللہ تعالٰی علیہ	دارالکتب العلمیۃ بیروت
۷۱	کشف المحجوب	داتا گنج بخش علی ھجویری رحمۃ اللہ تعالٰی علیہ	نوائے وقت پرنٹرز لاہور
۷۲	اخلاق الصالحین	علامہ ابو یوسف محمد شریف محدّث کوٹلوی [redacted]	باب المدینہ کراچی
۷۳	قوت القلوب	شیخ ابو طالب محمد بن علی مکی رحمۃ اللہ تعالٰی علیہ	مرکز اہل سنت برکات رضا الہ
۷۴	تنبیہ الغافلین	علامہ نصر بن محمد سمرقندی رحمۃ اللہ تعالٰی علیہ	دارالکتاب العربی بیروت
۷۵	کتاب القلیوبی	علامہ احمد شہاب الدین قلیوبی رحمۃ اللہ تعالٰی علیہ	باب المدینہ کراچی
۷۶	احسن الوعاء	علامہ نقی علی خان رحمۃ اللہ تعالٰی علیہ	مکتبۃ المدینہ کراچی
۷۷	روحانی حکایات	علامہ عبدالمصطفٰی اعظمی رحمۃ اللہ تعالٰی علیہ	مرکز الاولیاء لاہور

مآخذ و مراجع

فیضانِ رمضان (مرمم)

کتاب	مصنف/مؤلف	مطبوعہ/سال اشاعت
قرآنِ پاک	* * * * *	مکتبۃ المدینہ باب المدینہ کراچی ١٤٣٢ھ
تفسیر عبد الرزاق	امام ابوبکر عبد الرزاق بن ہمام صنعانی رحمۃ اللہ تعالٰی علیہ	دار الکتب العلمیۃ بیروت ١٤١٩ھ
تفسیر طبری	علامہ ابو جعفر محمد بن جریر طبری رحمۃ اللہ تعالٰی علیہ	دار الکتب العلمیۃ بیروت ١٤٢٠ھ
تفسیر کبیر	امام فخر الدین محمد بن عمر رازی رحمۃ اللہ تعالٰی علیہ	دار احیاء التراث العربی بیروت ١٤٢٠ھ
تفسیر خازن	علامہ علاء الدین علی بن محمد بغدادی رحمۃ اللہ تعالٰی علیہ	مصر ١٤١٧ھ
تفسیر مدارک	علامہ ابو البرکات عبد اللہ بن احمد بن محمود نسفی رحمۃ اللہ تعالٰی علیہ	دار المعرفۃ بیروت ١٤٢١ھ
تفسیر درمنثور	امام جلال الدین عبد الرحمٰن سیوطی رحمۃ اللہ تعالٰی علیہ	دار الفکر بیروت ١٤٠٣ھ
تفسیر روح البیان	شیخ اسماعیل حقی بروسی رحمۃ اللہ تعالٰی علیہ	دار احیاء التراث العربی بیروت ١٤٠٥ھ
تفسیر صاوی	علامہ احمد بن محمد صاوی رحمۃ اللہ تعالٰی علیہ	دار الفکر بیروت ١٤٢١ھ
روح المعانی	علامہ شہاب الدین سید محمود آلوسی رحمۃ اللہ تعالٰی علیہ	دار احیاء التراث العربی بیروت ١٤٢٠ھ
تفسیر عزیزی	مولانا شاہ عبد العزیز محدث دہلوی رحمۃ اللہ تعالٰی علیہ	کوئٹہ
تفسیر خزائن العرفان	علامہ سید نعیم الدین مراد آبادی رحمۃ اللہ تعالٰی علیہ	رضا اکیڈمی بمبئی ہند
تفسیر نعیمی	مفتی احمد یار خان نعیمی رحمۃ اللہ تعالٰی علیہ	مکتبہ اسلامیہ مرکز الاولیاء لاہور
تفسیر نور العرفان	مفتی احمد یار خان نعیمی رحمۃ اللہ تعالٰی علیہ	پیر بھائی اینڈ کمپنی
تفسیر صراط الجنان	مفتی ابو صالح محمد قاسم قادری مد ظلہ العالی	مکتبۃ المدینہ باب المدینہ کراچی ١٤٣٤ھ
صحیح بخاری	امام محمد بن اسماعیل بخاری رحمۃ اللہ تعالٰی علیہ	دار الکتب العلمیۃ بیروت ١٤١٩ھ
صحیح مسلم	امام مسلم بن حجاج قشیری رحمۃ اللہ تعالٰی علیہ	دار ابن حزم بیروت ١٤١٩ھ
سنن ترمذی	امام محمد بن عیسیٰ ترمذی رحمۃ اللہ تعالٰی علیہ	دار الفکر بیروت ١٤١٤ھ
سنن نسائی	امام احمد بن شعیب نسائی رحمۃ اللہ تعالٰی علیہ	دار الکتب العلمیۃ بیروت ١٤٢٦ھ
سنن ابوداؤد	امام سلیمان بن اشعث سجستانی رحمۃ اللہ تعالٰی علیہ	دار احیاء التراث العربی بیروت ١٤٢١ھ
سنن ابن ماجہ	امام محمد بن یزید قزوینی رحمۃ اللہ تعالٰی علیہ	دار المعرفۃ بیروت ١٤٢٠ھ
مشکوۃ	علامہ محمد بن عبد اللہ خطیب تبریزی رحمۃ اللہ تعالٰی علیہ	دار الکتب العلمیۃ بیروت ١٤٢٤ھ
مسند امام اعظم	علامہ ابو نعیم احمد بن عبد اللہ اصفہانی رحمۃ اللہ تعالٰی علیہ	مکتبۃ الکوثر الریاض ١٤١٥ھ
موطا امام مالک	امام مالک بن انس رحمۃ اللہ تعالٰی علیہ	دار المعرفۃ بیروت ١٤٢٠ھ
البحر الزخار	امام ابوبکر احمد بن عمرو بن عبد الخالق بزار رحمۃ اللہ تعالٰی علیہ	مکتبۃ العلوم والحکم مدینہ منورہ ١٤٢٤ھ
بغیۃ الباحث عن زوائد مسند الحارث	امام حافظ نور الدین ہیثمی رحمۃ اللہ تعالٰی علیہ	المدینۃ المنورۃ ١٤١٣ھ
شعب الایمان	امام ابوبکر احمد بن حسین بیہقی رحمۃ اللہ تعالٰی علیہ	دار الکتب العلمیۃ بیروت ١٤٢١ھ
مستدرک	امام محمد بن عبد اللہ حاکم نیشاپوری رحمۃ اللہ تعالٰی علیہ	دار المعرفۃ بیروت ١٤١٨ھ
مسند امام احمد	امام احمد بن حنبل رحمۃ اللہ تعالٰی علیہ	دار الفکر بیروت ١٤ ١٤١١ھ
مسند ابی یعلیٰ	امام احمد بن علی موصلی رحمۃ اللہ تعالٰی علیہ	دار الکتب العلمیۃ بیروت ١٤١٨ھ
الفردوس بمأثور الخطاب	علامہ شیرویہ بن شہردار دیلمی رحمۃ اللہ تعالٰی علیہ	دار الکتب العلمیۃ بیروت ١٤٠٦ھ
معجم کبیر	امام سلیمان بن احمد طبرانی رحمۃ اللہ تعالٰی علیہ	دار احیاء التراث العربی بیروت ١٤٢٢ھ

معجم اوسط	امام سلیمان بن احمد طبرانی رحمة اللّٰه تعالٰی علیه	دار الفکر بیروت ۱۴۲۰ھ
معجم صغیر	امام سلیمان بن احمد طبرانی رحمة اللّٰه تعالٰی علیه	دار الکتب العلمیة بیروت ۱۴۰۳ھ
سنن کبریٰ	امام احمد بن شعیب نسائی رحمة اللّٰه تعالٰی علیه	دار الکتب العلمیة بیروت ۱۴۰۱ھ
الکامل	امام ابو احمد عبد اللّٰه بن عدی جرجانی رحمة اللّٰه تعالٰی علیه	دار الکتب العلمیة بیروت ۱۴۱۸ھ
مصنف عبد الرزاق	امام ابو بکر عبد الرزاق بن ہمام صنعانی رحمة اللّٰه تعالٰی علیه	دار الکتب العلمیة بیروت ۱۴۲۱ھ
صحیح ابن خزیمہ	امام ابو بکر محمد بن اسحاق بن خزیمہ نیساپوری رحمة اللّٰه تعالٰی علیه	المکتب الاسلامی بیروت ۱۴۱۲ھ
مصنف ابن ابی شیبہ	امام عبد اللّٰه بن محمد بن ابی شیبہ کوفی رحمة اللّٰه تعالٰی علیه	دار الفکر بیروت ۱۴۱۴ھ
کتاب ذکر الموت	امام عبد اللّٰه بن محمد، ابو بکر بن ابی الدنیا رحمة اللّٰه تعالٰی علیه	المکتبة العصریه بیروت ۱۴۲۶ھ
فضائل شہر رمضان	امام عبد اللّٰه بن محمد، ابو بکر بن ابی الدنیا رحمة اللّٰه تعالٰی علیه	المکتبة العصریه بیروت ۱۴۲۶ھ
ذم الغیبة	امام عبد اللّٰه بن محمد، ابو بکر بن ابی الدنیا رحمة اللّٰه تعالٰی علیه	المکتبة العصریه بیروت ۱۴۲۶ھ
الزہد	امام احمد بن حنبل رحمة اللّٰه تعالٰی علیه	دار الغد الجدید مصر ۱۴۲۶ھ
الاحسان بترتیب صحیح ابن حبان	علامہ امیر علاء الدین علی بن بلبان فارسی رحمة اللّٰه تعالٰی علیه	دار الکتب العلمیة بیروت ۱۴۱۷ھ
جمع الجوامع	امام جلال الدین عبد الرحمٰن سیوطی رحمة اللّٰه تعالٰی علیه	دار الکتب العلمیة بیروت ۱۴۲۱ھ
جامع صغیر	امام جلال الدین عبد الرحمٰن سیوطی رحمة اللّٰه تعالٰی علیه	دار الکتب العلمیة بیروت ۱۴۲۵ھ
مجمع الزوائد	امام حافظ نور الدین ہیثمی رحمة اللّٰه تعالٰی علیه	دار الفکر بیروت ۱۴۲۰ھ
کنز العمال	علامہ علاؤ الدین علی متقی رحمة اللّٰه تعالٰی علیه	دار الکتب العلمیة بیروت ۱۴۱۹ھ
الترغیب والترہیب	امام حافظ زکی الدین عبد العظیم منذری رحمة اللّٰه تعالٰی علیه	دار الکتب العلمیة بیروت ۱۴۱۷ھ
النھایة	امام مجد الدین محمد بن اثیر جزری رحمة اللّٰه تعالٰی علیه	دار الکتب العلمیة بیروت ۲۰۱۱ء
حلیة الاولیاء	علامہ ابو نعیم احمد بن عبد اللّٰه اصفہانی رحمة اللّٰه تعالٰی علیه	دار الکتب العلمیة بیروت ۱۴۱۸ھ
البدور السافرۃ فی امور الآخرۃ	امام جلال الدین عبد الرحمٰن سیوطی رحمة اللّٰه تعالٰی علیه	مؤسسة الکتب الثقافیه بیروت ۱۴۲۵ھ
فضائل شہر رجب	علامہ حسن بن محمد بن حسن خلال رحمة اللّٰه تعالٰی علیه	دار ابن حزم ۱۴۱۶ھ
فضائل الاوقات	امام ابو بکر احمد بن حسین بیہقی رحمة اللّٰه تعالٰی علیه	مکتبة المنارمکة المکرّمة ۱۴۱۰ھ
شرح مشکل الآثار	امام احمد بن محمد طحاوی رحمة اللّٰه تعالٰی علیه	دار الکتب العلمیة بیروت ۱۴۱۵ھ
عمدۃ القاری	علامہ ابو محمد محمود بن احمد عینی رحمة اللّٰه تعالٰی علیه	دار الفکر بیروت ۱۴۱۸ھ
شرح صحیح مسلم	علامہ ابو زکریا یحییٰ بن شرف نووی رحمة اللّٰه تعالٰی علیه	دار الکتب العلمیة بیروت ۱۴۰۱ھ
شرح طیبی	امام شرف الدین حسین بن محمد طیبی رحمة اللّٰه تعالٰی علیه	دار الکتب العلمیة بیروت 2001ء
مرقاۃ المفاتیح	علامہ علی قاری رحمة اللّٰه تعالٰی علیه	دار الفکر بیروت ۱۴۱۴ھ
فیض القدیر	علامہ محمد عبد الرءوف مناوی رحمة اللّٰه تعالٰی علیه	دار الکتب العلمیة بیروت ۱۴۲۲ھ
اشعة اللمعات	شیخ عبد الحق محدث دہلوی رحمة اللّٰه تعالٰی علیه	کوئٹہ
لمعات التنقیح	شیخ عبد الحق محدث دہلوی رحمة اللّٰه تعالٰی علیه	دار النوادر بیروت 2014ء
مراٰۃ المناجیح	مفتی احمد یار خان نعیمی رحمة اللّٰه تعالٰی علیه	ضیاء القرآن پبلی کیشنز مرکز الاولیا لاہور
نزہة القاری	مفتی محمد شریف الحق امجدی رحمة اللّٰه تعالٰی علیه	فرید بک اسٹال مرکز الاولیا لاہور ۱۴۲۱ھ
بدائع الصنائع	ابو بکر بن مسعود کاسانی حنفی رحمة اللّٰه تعالٰی علیه	دار احیاء التراث العربی بیروت ۱۴۲۱ھ
جوہرہ نیرہ	علامہ ابو بکر بن علی حداد رحمة اللّٰه تعالٰی علیه	باب المدینہ کراچی

غنیہ	علامہ محمد ابراہیم بن حلبی رحمۃ اﷲ تعالیٰ علیہ	سہیل اکیڈمی مرکز الاولیاء لاہور
المیزان الشریعۃ الکبریٰ	علامہ عبدالوہاب بن احمد شعرانی رحمۃ اللہ تعالیٰ علیہ	مصطفی البابی مصر
غمز العیون	شیخ سید احمد بن محمد حموی مصری رحمۃ اللہ تعالیٰ علیہ	باب المدینہ کراچی ۱۴۱۸ھ
مراقی الفلاح	علامہ حسن بن عمار بن علی شرنبلالی رحمۃ اللہ تعالیٰ علیہ	مکتبۃ المدینہ باب المدینہ
فتح القدیر	محمد بن عبدالوحد ابن ہمام حنفی رحمۃ اللہ تعالیٰ علیہ	مرکز اہل السنۃ برکات رضا گجرات الہند
درمختار	علامہ علاء الدین محمد بن علی حصکفی رحمۃ اللہ تعالیٰ علیہ	دارالمعرفۃ بیروت ۱۴۲۰ھ
فتاوی عالمگیری	شیخ نظام وجماعۃ من علماءِ ہند رحمۃ اللہ تعالیٰ علیہم	دارالفکر بیروت ۱۴۰۳ھ
ردالمحتار	علامہ ابن عابدین محمد امین شامی رحمۃ اللہ تعالیٰ علیہ	دارالمعرفۃ بیروت ۱۴۲۰ھ
جدالممتار	اعلیٰ حضرت امام احمد رضا خان رحمۃ اللہ تعالیٰ علیہ	باب المدینہ کراچی
البحرالرائق	علامہ زین الدین بن ابراہیم بن محمد رحمۃ اللہ تعالیٰ علیہ	کوئٹہ
فتاوی رضویہ	اعلیٰ حضرت امام احمد رضا خان علیہ رحمۃ الرحمن	رضا فاؤنڈیشن مرکز الاولیاء لاہور
الملفوظ	مفتی مصطفی رضا خان رحمۃ اللہ تعالیٰ علیہ	مکتبۃ المدینہ باب المدینہ ۱۴۲۹ھ
فتاوی امجدیہ	مفتی محمد امجد علی اعظمی رحمۃ اللہ تعالیٰ علیہ	مکتبہ رضویہ باب المدینہ ۱۴۱۹ھ
فتاویٰ صدرالافاضل	علامہ سید نعیم الدین مرادآبادی رحمۃ اللہ تعالیٰ علیہ	شبیر برادرز مرکز اولیا لاہور 2008ء
فتاوی نعیمیہ	علامہ سید نعیم الدین مرادآبادی رحمۃ اللہ تعالیٰ علیہ	ادارہ کتب اسلامیہ گجرات
بہارشریعت	مفتی محمد امجد علی اعظمی رحمۃ اللہ تعالیٰ علیہ	مکتبۃ المدینہ باب المدینہ ۱۴۲۹ھ
وقارالفتاوی	مفتی وقارالدین رحمۃ اللہ تعالیٰ علیہ	بزم وقارالدین باب المدینہ 2001ء
تاریخ بغداد	حافظ احمد بن علی خطیب بغدادی رحمۃ اللہ تعالیٰ علیہ	دارالکتب العلمیۃ بیروت ۱۴۱۷ھ
ابن عساکر	علامہ ابوالقاسم علی بن حسن رحمۃ اللہ تعالیٰ علیہ	دارالفکر بیروت ۱۴۱۶ھ
الشفاء	امام قاضی ابوفضل عیاض رحمۃ اللہ تعالیٰ علیہ	مرکز اہل السنۃ برکات رضا گجرات الہند
الخصائص الکبری	امام جلال الدین عبدالرحمن سیوطی رحمۃ اللہ تعالیٰ علیہ	دارالکتب العلمیۃ بیروت
بہجۃ الاسرار	علامہ نورالدین علی بن یوسف شطنوفی رحمۃ اللہ تعالیٰ علیہ	دارالکتب العلمیۃ بیروت ۱۴۲۳ھ
تذکرۃ الانبیا	حافظ قاضی عبدالرزاق چشتی بھترالوی مدظلہ العالی	ضیاء العلوم پبلی کیشنز راولپنڈی 2002ء
سیرت مصطفےٰ	علامہ عبدالمصطفیٰ اعظمی رحمۃ اللہ تعالیٰ علیہ	مکتبۃ المدینہ باب المدینہ کراچی
حجۃ اللہ علی العلمین	علامہ یوسف بن اسماعیل نبہانی رحمۃ اللہ تعالیٰ علیہ	مرکز اہل السنۃ برکات رضا گجرات الہند
تفسیر الاحلام	امام محمد بن سیرین بصری رحمۃ اللہ تعالیٰ علیہ	دارالکتب العلمیۃ بیروت ۱۴۲۱ھ
القول البدیع	امام حافظ محمد بن عبدالرحمن سخاوی رحمۃ اللہ تعالیٰ علیہ	مؤسسۃ الریان بیروت ۱۴۲۲ھ
رسالہ قشیریہ	امام ابوالقاسم عبدالکریم بن ہوازن قشیری رحمۃ اللہ تعالیٰ علیہ	دارالکتب العلمیۃ بیروت ۱۴۱۸ھ
تنبیہ المغترین	علامہ عبدالوہاب بن احمد شعرانی رحمۃ اللہ تعالیٰ علیہ	دارالمعرفۃ بیروت ۱۴۲۵ھ
احیاء العلوم	امام ابوحامد محمد بن محمد غزالی رحمۃ اللہ تعالیٰ علیہ	دارصادر بیروت ۱۴۲۱ھ
کیمیائے سعادت	امام ابوحامد محمد بن محمد غزالی رحمۃ اللہ تعالیٰ علیہ	انتشارات گنجینہ تہران ۱۳۷۹ھ
طبقات الشافعیۃ	علامۃ تاج الدین بن علی بن عبدالکافی سبکی رحمۃ اللہ تعالیٰ علیہ	ہجر للطباعۃ والنشر والتوزیع ۱۴۱۳ھ
لطائف المعارف	علامہ ابن رجب حنبلی رحمۃ اللہ تعالیٰ علیہ	دارابن کثیر ۱۴۴۰ھ
الروض الفائق	علامہ شعیب حریفیش رحمۃ اللہ تعالیٰ علیہ	داراحیاء التراث العربی بیروت ۱۴۱۶ھ

اتحاف السادۃ	علامہ سید محمد بن محمد حسینی زبیدی رحمۃ اللہ تعالٰی علیہ	دارالکتب العلمیۃ بیروت
تذکرۃ الاولیا	شیخ فرید الدین محمد عطار رحمۃ اللہ تعالٰی علیہ	انتشارات گنجینہ تہران ۱۳۷۹ھ
ماثبت بالسنۃ	شیخ عبد الحق محدث دہلوی رحمۃ اللہ تعالٰی علیہ	دہلی
انوار القدسیۃ	علامہ عبد الوہاب بن احمد شعرانی رحمۃ اللہ تعالٰی علیہ	دارالتقوی سوریۃ دمشق ۱۴۲۸ھ
روض الریاحین	علامہ عبد اللہ بن اسعد بن علی یافعی رحمۃ اللہ تعالٰی علیہ	دارالکتب العلمیۃ بیروت ۱۴۲۱ھ
الروض الفائق	علامہ شعیب بن سعد عبد الکافی رحمۃ اللہ تعالٰی علیہ	داراحیاء التراث العربی بیروت ۱۴۱۶ھ
الزواجر عن اقتراف الکبائر	علامہ ابو العباس احمد بن محمد بن حجر ہیتمی رحمۃ اللہ تعالٰی علیہ	دارالمعرفۃ بیروت ۱۴۱۹ھ
شرح الصدور	امام جلال الدین سیوطی رحمۃ اللہ تعالٰی علیہ	مرکز اہلسنت برکات رضا ہند ۱۴۲۳ھ
تنبیہ الغافلین	فقیہ ابو اللیث محمد بن احمد سمرقندی رحمۃ اللہ تعالٰی علیہ	پشاور ۱۴۲۰ھ
مکاشفۃ القلوب	منسوب بہ: امام ابو حامد محمد بن محمد غزالی رحمۃ اللہ تعالٰی علیہ	دارالکتب العلمیۃ بیروت
مطالع المسرات	علامہ محمد مہدی فاسی رحمۃ اللہ تعالٰی علیہ	دارالکتب العلمیۃ بیروت 2005ء
قلیوبی	احمد بن احمد شہاب الدین قلیوبی رحمۃ اللہ تعالٰی علیہ	ایچ ایم سعید کمپنی کراچی ۱۳۹۱ھ
انیس الواعظین	مولانا ابوبکر سندی قرشی رحمۃ اللہ تعالٰی علیہ	سیلاب پبلیشرز پشاور ۱۳۵۷ھ
نزہۃ المجالس	مولانا عبد الرحمٰن صفوری رحمۃ اللہ تعالٰی علیہ	دارالکتب العلمیۃ بیروت ۱۴۱۹ھ
درۃ الناصحین	مولانا عثمان بن حسن شاکر خوبوی رحمۃ اللہ تعالٰی علیہ	دارالفکر بیروت
راحت القلوب	خواجہ نظام الدین اولیا رحمۃ اللہ تعالٰی علیہ	دہلی
غنیۃ الطالبین	شیخ عبد القادر جیلانی رحمۃ اللہ تعالٰی علیہ	دارالکتب العلمیۃ بیروت ۱۴۱۷ھ
انفاس العارفین	علامہ شاہ ولی اللہ محدث دہلوی رحمۃ اللہ تعالٰی علیہ	فضل نور اکیڈمی گجرات
کشف المحجوب	حضرت علی بن عثمان ہجویری رحمۃ اللہ تعالٰی علیہ	مرکز الاولیا لاہور
جذب القلوب	شیخ عبد الحق محدث دہلوی رحمۃ اللہ تعالٰی علیہ	نوری بک ڈپو لاہور
اخبار الاخیار	شیخ عبد الحق محدث دہلوی رحمۃ اللہ تعالٰی علیہ	فاروقی اکیڈمی گمبٹ خیرپور
بوستان سعدی	شیخ سعدی شیرازی رحمۃ اللہ تعالٰی علیہ	انتشارات عالمگیر کتاب خانہ ایران
معجم السفر	حافظ ابو طاہر احمد بن محمد رحمۃ اللہ تعالٰی علیہ	دارالفکر بیروت ۱۴۱۴ھ
القاموس المحیط	علامہ مجد الدین محمد بن یعقوب رحمۃ اللہ تعالٰی علیہ	دارالکتب العلمیۃ بیروت
احسن الوعاء	علامہ مولانا نقی علی خان رحمۃ اللہ تعالٰی علیہ	مکتبۃ المدینہ باب المدینہ کراچی ۱۴۳۰ھ
اصول الرشاد	علامہ مولانا نقی علی خان رحمۃ اللہ تعالٰی علیہ	دار اہل السنۃ باب المدینہ کراچی
مشعلۃ الارشاد	اعلیٰ حضرت امام احمد رضا خان علیہ رحمۃ الرحمن	مکتبۃ المدینہ باب المدینہ کراچی
اخلاق الصالحین	سلطان الواعظین ابو النور محمد بشیر رحمۃ اللہ تعالٰی علیہ	مکتبۃ المدینہ باب المدینہ کراچی
اسلامی زندگی	مفتی احمد یار خان نعیمی رحمۃ اللہ تعالٰی علیہ	مکتبۃ المدینہ باب المدینہ کراچی
خطب علمی	مولانا محمد حسن علمی بریلوی رحمۃ اللہ تعالٰی علیہ	شبیر برادرز مرکز الاولیا لاہور
حدائق بخشش شریف	اعلیٰ حضرت امام احمد رضا خان علیہ رحمۃ الرحمن	مکتبۃ المدینہ باب المدینہ کراچی
نورانی تقریریں	علامہ عبد المصطفی اعظمی رحمۃ اللہ تعالٰی علیہ	اکبر بک سیلرز مرکز الاولیا لاہور 2003ء

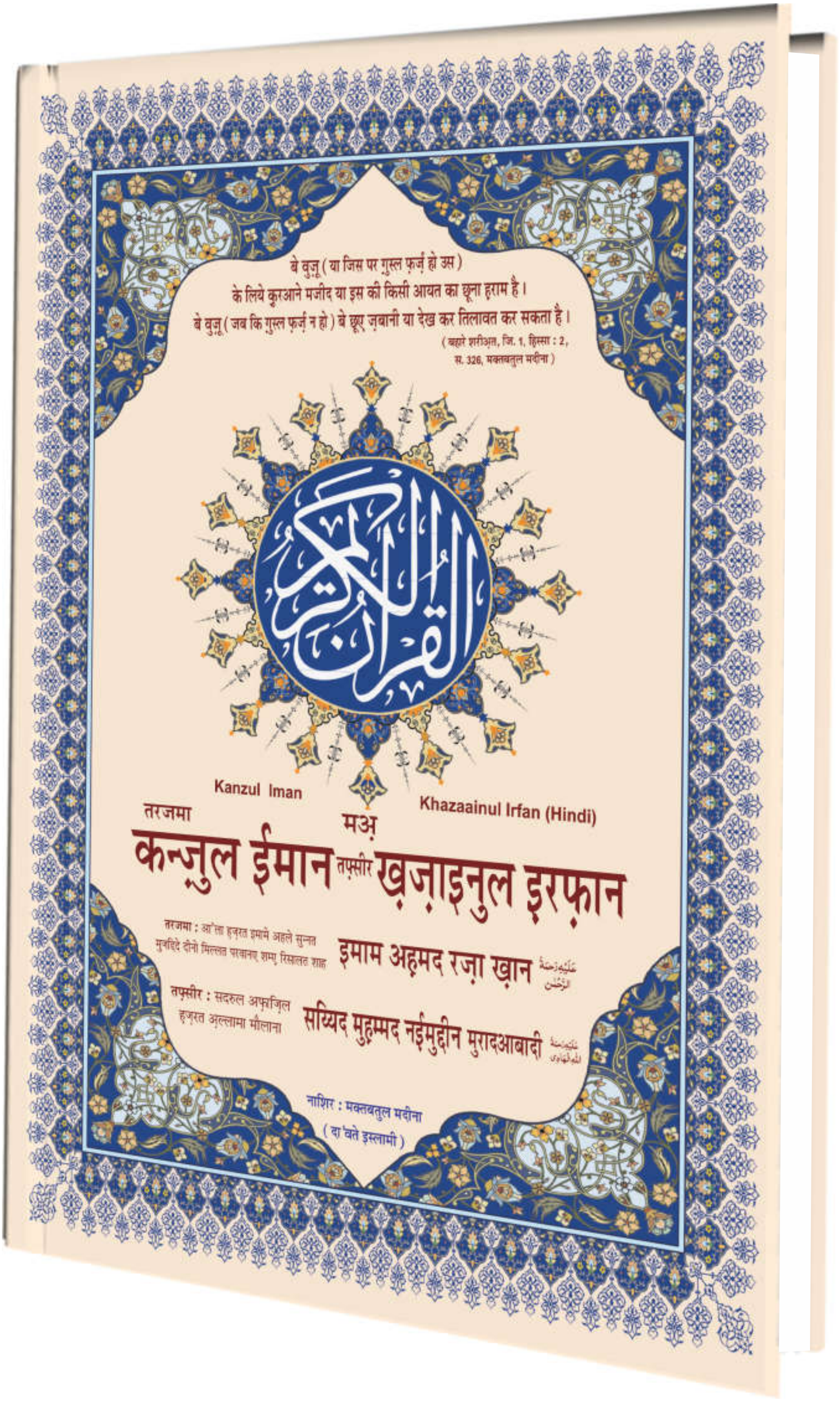
बे वुज़ू (या जिस पर ग़ुस्ल फ़र्ज़ हो उस)
के लिये क़ुरआने मजीद या इस की किसी आयत का छूना हराम है।
बे वुज़ू (जब कि ग़ुस्ल फ़र्ज़ न हो) बे छूए ज़बानी या देख कर तिलावत कर सकता है।
(बहारे शरीअत, जि. 1, हिस्सा : 2, स. 326, मकतबतुल मदीना)
القرآن الكريم
Kanzul Iman
Khazaainul Irfan (Hindi)
तरजमा
मअ़
कन्ज़ुल ईमान तफ़्सीर ख़ज़ाइनुल इरफ़ान
तरजमा : आ'ला हज़रत इमामे अहले सुन्नत मुजद्दिदे दीनो मिल्लत परवानए शम्ए रिसालत शाह
इमाम अहमद रज़ा ख़ान عليه رحمة الرحمٰن
तफ़्सीर : सदरुल अफ़ाज़िल हज़रत अ़ल्लामा मौलाना
सय्यिद मुहम्मद नईमुद्दीन मुरादआबादी عليه رحمة الله الهادي
नाशिर : मकतबतुल मदीना
(दा'वते इस्लामी)

اَلْحَمْدُ لِلّٰہِ رَبِّ الْعٰلَمِیْنَ وَالصَّلٰوۃُ وَالسَّلَامُ عَلٰی سَیِّدِ الْمُرْسَلِیْنَ اَمَّا بَعْدُ فَاَعُوْذُ بِاللّٰہِ مِنَ الشَّیْطٰنِ الرَّجِیْمِ ط بِسْمِ اللّٰہِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِیْمِ ط

नेक नमाज़ी बनने के लिये

हर जुमे'रात बा'द नमाज़े मग़रिब आप के यहां होने वाले दा'वते इस्लामी के हफ़्तावार सुन्नतों भरे इजतिमाअ़ में रिज़ाए इलाही के लिये अच्छी अच्छी निय्यतों के साथ सारी रात शिर्कत फ़रमाइये ۞ सुन्नतों की तरबियत के लिये मदनी क़ाफ़िले में आ़शिक़ाने रसूल के साथ हर माह तीन दिन सफ़र और ۞ रोज़ाना "फ़िक्रे मदीना" के ज़रीए़ मदनी इन्आ़मात का रिसाला पुर कर के हर मदनी माह की पहली तारीख़ अपने यहां के ज़िम्मेदार को जम्अ़ करवाने का मा'मूल बना लीजिये।

मेरा मदनी मक़्सद : "मुझे अपनी और सारी दुन्या के लोगों की इस्लाह़ की कोशिश करनी है।" اِنْ شَآءَ اللّٰہ عَزَّوَجَلَّ अपनी इस्लाह़ के लिये "मदनी इन्आ़मात" पर अ़मल और सारी दुन्या के लोगों की इस्लाह़ की कोशिश के लिये "मदनी क़ाफ़िलों" में सफ़र करना है। اِنْ شَآءَ اللّٰہ عَزَّوَجَلَّ

DAWAT-E-ISLAMI

0133051

फ़र्ज़ उ़लूम पर मुश्तमिल अमीरे अहले सुन्नत دامت برکاتہم العالیہ की अहम तरीन तसानीफ़

مکتبۃ المدینہ
MAKTABA TUL MADINA
MC 1286

M.R.P.
₹ 400

मक्तबतुल मदीना (हिन्द) की मुख़्तलिफ़ शाख़ें

❋ **देहली** :- मक्तबतुल मदीना, उर्दू मार्केट, मटिया मह़ल, जामेअ़ मस्जिद, देहली -6, फ़ोन : 011-23284560

❋ **अह़मदाबाद** :- फ़ैज़ाने मदीना, त्रीकोनिया बग़ीचे के सामने, मिरज़ापुर, अह़मदाबाद-1, गुजरात, फ़ोन : 9327168200

❋ **मुम्बई** :- फ़ैज़ाने मदीना, ग्राउन्ड फ़्लोर, 50 टन टन पुरा स्ट्रीट, खड़क, मुम्बई, महाराष्ट्र, फ़ोन : 09022177997

❋ **हैदराबाद** :- मक्तबतुल मदीना, मुग़ल पुरा, पानी की टांकी, हैदराबाद, तेलंगाना, फ़ोन : (040) 2 45 72 786

E- mail : hindibook@dawateislamihind.net, Web : www.dawateislami.net